





भारक विश्व

क्यर्थाट

এরদেশ স্থানত কোষাশেষশাস্ত্র সকলিতাকারাদিবর্ণ কমবিন্যত শাদ্ ভল্লিক নানার্থ পর্য্যায় পুনাণ পুষোগ ধাতু তদনুবদ্ধাভিথেয় সহিত ভত্তিক প্রাক্তিত বেদ বেদাক পুরাণিতিহাস জ্যোতি স্তন্ত্রাথ্যান কাব্যালাক্ষার ছনদঃ পুভ্তি নাম লক্ষণোদাহরণ দুব্যগুণ

রোগনিদানৌষধ স্ত্ত ক্রব্যবস্থাদি সংযুক্ত সর্দর্শন

মতানুসারি সংস্তাভিধানগুছঃ

ভত্ত

চতুৰ্থ কাণ্ডঃ

রাজ প্ররাধাকান্ত বাহাদুরেণ বিরচিত:

১৭৬০ ষষ্ট্যধিক সপ্তরশশত শকামে কলিকাতাথ্য নগরে ত্রীপ্রাণকৃষ্ণনাগেন মুদ্রাক্ষিতঃ

ख्यातः। म ह वऽक्षन ह्यू विश्वन . किन्नः। प्रति विश्वनः। प्रति विश्वनः। प्रति विश्वनः। प्रति विश्वनः। प्रति क्षानः। प्रति विश्वनः।। प्रमि विश्वनः।। प्रमि विश्वनः।। प्रति विश्

कि मिस्तवावनी ॥ तामिः। यथा तामिनामानि ह क्षित्वः छ मृक्षः हनाम ह। ইভি জ্যোভিস্তত্ত্বः ॥ कः भूः मृकाहार्युः। ইভি मেদिनी ॥ स्मतः। ইভে अपस्तवावनी ॥

कि कि व्री व्यवः । ইउप्रतः ॥ व्यथ एक नामानि नाधनः खनाकः । व्यक्त नामानि नाधनः खनाकः । व्यक्त नामः उथाक्षकः कृष्टि, कृत्रकः वीर्त्ति उः । अन्ता श्री खियाः वि-ा मिनितः भूः नि ভाषिजः॥ ॥ । पूर्योजाः उख्नान् ग्रोजाः (सार्य

পঞ্জণে পচেৎ। তজ্ঞক পুসূত্র ঞোঞ্চ বিশদ গুণ বন্মত।। ভক্ত বহ্নিকর॰ পথ্য॰ তর্পণ॰ রোচন॰ লঘু। অধৌত মস্ত শীত শুর্ ৰুচ্য কদপুদ•॥ ইতি ভাবপুকা-শঃ ॥ 🗱 ॥ হরযেনিবেদিতাল্লস্য নি-হুরযে দত্ত্ব। নিত্য নম্বঞ্চ ভুঞ্জতে । উছিষ্ট ভোজনাত্তেষা হরে দাস্য লভেমর: ।। 🕸 ।। হর্যে অদ্ত্রা ত-फक्ता (नार्वा यथा। न मञ्जा इत्राय ভক্তা ভূঞ্জতে চেন্ডমাদপি। প্রীব मम्भः वस्त्र ज्ञानः मृत्र ममः ভार्यः ।। 🗱 ।। भृषु ("ठ । त्रिङक "ठ रेनरव हु ভোজনে । जानाम रुत्राय দ্ৰু। পাক ক্রা চ খাদতি॥ #॥ जन्मनानकन यथा। यनक नईबी-বিভ্যঃ পুণ্যার্থ দাতু মর্হতি । দত্ত্বা বিশিষ্ট জীবিভ্যো বিশিষ্ট• ফল না-পুণাৎ।। অর্ভো দক্তা মানুষেভ্যে লভতে ২প্টগুণ ফল•। ততো বি-শিষ্ট শূদেভা দত্ত্বা তদ্দিগুণ ফল ॥ म्बानः रिमाजािख्य उउणा গুণ• ফল•। দত্ত্বান্ন• ক্ষরিষেভ্যো-शि रेवमाना विख्न खरवट ॥ क প্রিয়াণা• শঠগুণ• বিপ্রেড্যা **ংম**• अमाय ह। विज्ञानाक भाउखन भा-

জ্ঞত্তে ব্ৰাহ্মণে ফল•।। শাজ্ৰজ্ঞানা• শতগুণ ভক্তে বিপে লভেজুর । সচাম হরযে দত্তা ভুদ্ধে ভক্ত্যা চ সাদর•া৷ বিষ্ণবে ভক্ত বিপ্রায় দত্ত্বা माजूक यटकन । उटकन नजर ্ ভক্তব্ৰাহ্মণভোজনে॥ ভক্তে তু 😵 হরিস্থপ্তো হরে তুপ্তে চ দেবতাঃ 1 ভবন্তি সিক্তাঃ শাখাশ্চ যথা মূল নিষেচনাৎ।। ইতি বুদ্ধবৈবৰ্ত্তে একৃ क्रज्ञाथा ७२) व्यथा यः ॥ 🛊 ॥ ७२) अस्तिमाताः भाभाम्यदः जकराराः। ^{২™} যথা।একাদশার মাগতাযা• পা-व्यव्याः जगवयः। इाउदा समसाः শ্রিঃ ভবতা পাপপুৰুষ।। অমনা **ब्रि**ड) তিঠন্ত ভবন্ত পাপপ্ৰব । न इनिष्ठि नमृर्खि तियसकारणी তিথি: ৷৷ ভষাদয় ন ভোক্তব্য ক-দাচিদপি সত্তমৈঃ। আত্মনো হিত भिहास्तिः मः शुर्थ हितिवामात्र ॥ मः-সারে যানি পাপানি তান্যেবৈকাদ भी দিনে। জননাশ্রিত্য ভিষ্ঠন্তি পু· ७तीत्कक्षणङ्ख्या ॥ अर्बजा गर्ब-পাপানি নরকালিফ্তি র্ভবেৎ। ন ি 🕝 ভবেমুণা• ভুঞ্জতা• ছরিবাস-রে 🛭 মর্ভ্যা ভক্তানি বাবপ্তি ভূঞ্তে পরিবাসরে। পুতিভঁকে বুন্ধহত্যা 🕾 िज शाउक गाउँ ।। गर्रभाः পাশ্রণ ভক্তণ ত্যক্তব্যণ হল্পিবাসরে 🛚 শোহান্দে ভৃঞ্জতে রাপি তে জ্ঞেযাঃ পাপিনা বরাঃ ম ইক্নি পারে র্ক্রিয়া (यागनात्र २) व्यथ्रायः ॥ 🛊 ॥ वर्कः नीयामः यथा। नाम्राट म्ह्रमः वि-(भारमः साहाचा यमि वानहरः १ স শুদু যোনি• বুজতি যন্ত ভূঞ্জু ফ 🕀 পদি ॥ यभाजान्(या द्विद्धा कृष्टु 🍕 **দুস্যায়• বিগর্হিত•। জীবনে**র ভারত-म्(मृ। मृ उः श्वाहा जिह्नायर ।। गु। ण कि जिय विभाग मूम्मा ह गुरी 🔻 ताः। यम्प्रास्त्राम्बद्धन मृञ् अप्ना नि माशुयार ॥ बाबावः वर्जकाम्भः তক্ষে। १म क्ष्यकात्रियः। গুণাম গ निकामकः यथामिकित वस्क्रियः।। छ-কোপদীবি রজক ভস্কর গুলিনাণ তথা। গান্ধর্ব লোহকারামণ সূত্র मः विवर्क्काव्या। जनान हिळकर्यामः বা**জু যেঃ পতিত্তস্যচ।পৌ**দর্ভব ছা-ত্রিকয়ে। রভিশন্তন্য চৈব হি।। সুর্ কার শৈল্য ব্যাধিতন্যাভূরন্য হ। विकिट्नकम् देववा**मः भूः** महा पाः ভিক্ষ্য চ।। তেন নাতিক্রা রছ (एवर्वे। निम्हकम् । (जानिकविन শ্চান্ন• শ্বপাকস্য বিশেষতঃ 🗓 🖘 -र्याक्षिष्ठमारिकामः यनारकारः गिष् र्गात । उटमहमा कर्गामा लेखा स्वाहिष्टाणिकः ॥ अश्रुहाक स-सामः मञ्जाकीतम् देव हि। क्षीत-महास्तामिन कान महामासम्हर्गे देव-य हि॥ जीसम्हर्भ मिस्महर्मे आश्रकः विकास मुक्तमहर्मे । वृथामा-सन्देश कामः मुक्तमहर्मे । वृथामा-सन्देश कामः महिमान सन्द्रमहर्मे य विकास स्वाहिष्ट नामिनः विकास स्वाहिष्ट विकास स्था ॥ (भोशामः नामिका-विकास स्था महास्त्र ए । विकाशुक्तनः

ণাব্রবি**ন্ত্যন্ন মেব দ ॥ পু**ৰ र्क्ट्या जिल्लाचन छरेषव मिषियूशरछः । অবজা হফাবধুত। সরোষ। বিমা-াণ্ড ৷ গুৱাবপি ন ভোক্তব্য ম-**षः ग**८कात्रविर्द्धिनः ॥ नृष्क्**नः हि म**-ৰিষ্টা নৰ্বনমেন্ত্ৰ ক্তিত। যো বস্যা-জন হাল্ডিস তন্যাশ্মতি কিল্বিশ । ।। আভীর: সলনিত্রঞ্গোগা-ला मान नाभिछो। এতে मूत्रुव् (अञ्चादा यम्हाञ्चान• नित्वस्दयः ॥ भागी ने व मस्यातः एक अने भाग व व छ। अर्थ ल्युषु (डाङ्यामा मञ्जा बद्धाः १८११ तृरेषः ॥ इंडि कोर्प्यः छैनः ति हारम ५७ जनतायः॥ इकः वि ७९ भन्नः। इंछ (इमहन्मुः া অৰু খ্ৰিভগব্ভক লক্ষণানি।

লিমপুরাণে । ব্রুড কর্ম গুণ জ্ঞান ভোগ बद्यापि मध्यिष । रेगविश्विल চ क्कमा ज्ञाः मन्ति ज्था ज्था ॥ শ্ৰীভাগৰতে একাদশ স্বন্ধে। উত্ত-न ভক্ত। यथा। खादाकादान (य 'रैव मा॰ यावान् यक्ताम्य याम्यः। ভন্নস্ত্যদেন ভাবেন ভেনে ভক্ততম্ব নতাঃ।। মধ্যম ভক্তো যথা। ঈশ্বরে जम्बीत वा वानिल्यु हिवट मू ह। পেন মৈত্রী কৃপোপেকা যঃ করো-তি সমধ্যম:॥ প্রাকৃত ভক্তো যথা । व्यक्तिया स्मित इत्राय भूजा॰ यः भू-षायश्खा न उद्धाः कृ ज्ञाना मू म ভকঃ পুক্তঃ মৃতঃ।। ইতি এইরি-ভক্তিবিদান:।। 🗱।। অপিচ। ত-काना॰ वक्षा॰ दु र छङान्गुर का-**छत्र । ययाः स्त्रमंन अन्द्रमां स्त्रमः** গুতো নরাধ্যথা হরি ভক্তিবিহীনা-শ্চ নহা (কার সংযুতা:। স্ব পুশ ।-मा त्रा श्र्डाः मठा क माधुनिम्तकाः । भूनिष्ठ अर्घछीर्थानि (ययाः ज्ञाना-शिश्नार । शिवाक भारत्वमा मूळा भारमारका मशी ।! (य**वा॰ म**-দৰ্শন• স্পৰ্শ•দেবা বাঞ্চি ভারতে। দর্বেধাণ পরবৈ। লাভো বৈঞ্বানাণ ।मागनः॥ नश्चन्यवानि जीर्थानि न (मवा मृहिर्वान्याः । 🖚 🚾 ह्युक्काः ।

লেন বিফুভকঃ ক্ষণাদহো।। সৌভি क्वाह। यहानकी वहः भुद्धा नकी-কান্তক সমিজ:। নিগ্দ জন্ত্ৰ কথি। তুম্বি শেক্ষোপচক্রনে ॥ জীনারাব-ণ উবাচ। ভক্তানাং লক্ষণ লক্ষি গৃঢ়• শু.তি পুরাণযোঃ॥ পুণ্য **ৰ**ৰূপ• शाभग्न• সুथम• ভক্তি মুক্তিम•॥ **সা**-রভূত॰ গোপনীয় ন বক্তব্য খলে यू ह। अक्वजु विक्नात्वा यम् कर्त প্রুবিশ্যকি ॥ বেদান্ত বেদ বেদাঙ্কা **ख** भविब वरिष्ठ हि । शुक्रवागाः, শতি পূর্ব পূত তজ্ঞাম মাৰভঃ ৷৷ चर्गञ्च नद्रकञ्च वा मूक्ति नाद्याकि ७८ क्रनाट। रेयः रेकिक्षिव वा इस লব্ধ থেষু চ জন্তবু।। জীবন্মুক্তান্তে চ পূতা যান্তি কালে হরেঃ পদ'। মক্ড-ক্তি যুক্তো মৎপূজা নিযুক্তো মুদুণা বি-जः॥ महुन न्नाचनीय म मिनिक्रे म्ह. म স্তত । সগদ্ধ: সাশু, নেত্ৰ: স্বাত্মবি শুত এব চ।। न বাঞ্জি স্থ॰ মুক্তি॰ जालाकप्राप्ति ठज्क्षेय । तुत्राञ्च मनतः ত্ব বা তদ্বাঞ্চা মম সেবনে।। ইন্দুত্বঞ্চ मनुप्रक (हरवड्क मृजूर्जंड॰। यर्गता-জ্যাদি ভোগঞ্চ স্বপ্নেচ নহি বাঞ্তি ॥ दुक्षा छानि विनम्मुष्टि (मवा युक्ता-দয তথা। কল্যাণ ভক্তি যুক্তশ্চ ন জ্ঞক্তো ন পুণশ্যকি।। ভুনন্তি ভার-

তে छङ। मता बना नुमूल । रिक्रि याष्टि मही॰ भूषा नव॰ जीर्थ॰ ममा ৰায়ণ।। ইতি বুদ্ধবৈবৰ্ত্তে পুকৃতিখনে **९ जर्शायः ॥ श्री। जनितः। त्रिः क्**ष कथायाक यम्। नुभूवति । मे নে। নিমণ্ন• য**ৈস্যব স ভক্তঃ** ক**িতো**। वृरिशा भू मनाता दिक कर् कामार **ञ्चिह्दत द्रिश । आजाना** सन्त्रा विका স ভক্তঃ কথিতো বুধিঃ 🖰 দঘশনি 🎉 : **ब**ञ्**তिषु मर्ब॰ क्कमय॰** जन् । यु জানাতি মহাজ্ঞানী স ভক্ষেত্ৰ বৰী-ংগাভণ ।। ইতি বৃশ্ধবৈবত্তে আকৃষ্ণ क्रमाथ(७) व्यथ्रायः । 🛠 🗓 व्यक्त জ্ঞকা যথা। নজকা শৈব নিঃশ্রুর कर्यानम् लंकात्रकाः। र 🚈 🍍 🔫 ভক্তানা• স•হারে নিত্য দেহিলা• 🥫 ভক্তা মমানুগা নিত্যু মং শাদ্দি 🔏 **তৎপরা:। অহ: ভক্ত**ারিকে নিক্র **তেবা॰ রক্ষণ হেত**বে ৮ সংর্ম*া*প্তরি বুন্ধাণ্ডে পুভবন্ধি পুনাগুনঃ নির্মে-ভক্তাঃ পুণশ্যন্তি নিঃমালাক্ত নিরা পদঃ 🖟 ইতি তাৰৈব ৩ প্ৰচৰ্গন্ধন হরিভক গাহাম্য হ া বিভান হরিজভানাং ্ভাবে ্র্রভ শুজে (यथाः भारतु प्रक्रमः, जम्मः भुज्य वमुदाता । (अमान्य ना न तिहा के नी-र्बः उद्भाग विश्विः । उद्यक्षि ५ १००

্মারেণ তীর্থপাস পুণল্যতি॥ আ विक्रमाध महानाशाख्या गृहिष्टे त्सारमार**ा मर्णनार म्यार्णना**हित क्ष नाभाद भुगूहारा ॥ जुगता म 🦚 🎮 না যৎ পুণ্য স্থানতো ভবেৎ क्षिकाममा विश्वमा उद्भुगाः मर्मः ্নাঃ ভ**ং ॥ ইতি তত্তি**ব ২**১ অধ্**যা শুঃ । ক্রিবি**ধ ভক্ত লক্ষণ•** যথা । ভ ङाना॰ बिविधानाक वक्र न नु ি ৰঙা ি ভি । ত্ণশ্বগ্ৰারতো ভক্তো **्रभा**रत खन कीर्खिषु ॥ मत्ना नित्वण-श्रिक्श अ•भात भूथ कात्रग•। मा ७ 🚉 । बद्दोह्न अत्याक्ताकि ५-जुद्देगः ॥ रेनव निकान मुक्किक मूरा 🚈 ্ নীপ্লিত•। ধ্যায়তে নৎপদা-ব্লুঞ্জ ব্ল জবেডজি ভাবতঃ।। শ্রীহেতু 👫 🖰 🐒 দেবাঃ সক্ষন্ন রহিতস্য চ 🛚 সরসিদ্ধি ন বাঞ্চ্নতি তে পণিমাদিক মিল্লিড ।। বুক্ষত্ব নমরত্ব বা সুরত্ব ন্থকারণ। বাঞ্চি নিশ্চলাণ ভক্তিণ মধীয় মতুলামপি ॥ জ্রী পু• বিভে-🤭 🤻 স্ত্যব॰ সর্বজীবেষু 'ভিন্নতা। ियाः निष्कायद्राभाक भूवद्वाभा• तु-জেপা কুৎ পিপাসাদিকী: নিদ্যাণ ा (नाहामिक त्रिभू । जुङ्ग स्वितिंगः माथक्षायरक ह मिगवतः য় সাম ভক্তো ভ্রমো নন্দ্র শুখতা মান 🖁

४८२१६िक । 🗱 । नामकः कर्यम् गृही পূর্ব প্রাক্তনতঃ শ্চি:॥করোতি সত-উল্ণৈব পূর্বকর্ম নিক্ন্তন•। ন করোত্য-পর• যত্নাৎ সঙ্কল্প রহিত্স্য চ ॥ नर्व• क्षमा यट्किक्षिमार• कर्डा प्र কর্মণঃ। কর্মণা মনসা বাচা সভত॰ চিন্তবেদিতি ॥ 🕸 ॥ न्।नভক্ত 🔊 ন্যুনঃ সচ প্যাক্তিকঃ শুতৌ । যম॰ বা যমদূত বা স্বপ্নেন চ নপশ্যতি॥ भूक्यागाः मञ्जूक भूवं जलः ममू ब्हात्र । भु•मा• म ७• मध्यम क उहर् र्शक भारूकः ॥ ज्ङण विविध छाउ कथिउक उराद्धगा। ইতি छदिव ৮৪ অধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ কৃষ্ণভক্ত শরী-त्र जीयां नीनि यथा। পृथिवता गानि जीर्थानि भुग्रानुर्राभ ह बाङ्गित । मन च्छकानाः भतीतिषु मिष्ठ भ्रिक् मन्डः ত ।। মন্ডক পাদর রসা সদ্যঃ পৃতা বসুন্ধরা। স্দৃঃ প্তানি তীর্থানি সদ্য: পৃত অগত্তথা।। মন্মন্ত্রোপা-সকা বিপা যে নদ্ছিপ্তভোজিনঃ ! गामिय निष्ठाः भागास (व मर्भा-गांभिकाः श्वाः॥ जपूरायर्भ गाउ- गृश्वा वाय्क शावकः। कल्लर्म সহস্।ণি মড়কাঃ সন্তি ভূতলে ॥ একবর্ণা ভবিষ্ঠান্তি নাজক্তেষ্ গতে-ष्ठ। उ छ छ भ्ना भ्विती क्षिगुरा

ভক্তম

ভবিষ্যতি॥ ইতি বুন্ধবৈবৰ্ভ শ্ৰীকৃষ ाबाचा ७ २४ व्यथायः ॥ 🗯 । গবন্দ্ৰক নাহাত্ম্য । যথা। সংস্তঃ কীর্ত্তিতা বাপি দৃষ্টা শৃষ্টা **ৎপি** বা প্রিযে। পুনাতি ভগবদ্যক্ত শুচাণ্ডা-লে। ৎপি যদৃছ্যা ॥ ইতি বারাছে উপবিভাগে পুবোধিনীনাহাত্ম্য• ।। 🗱 ।। ছরিভক্ত কর্ত্ব্যানি যথা । হ্বরে শ্চরিত মীশস্য সর্বলোকেযু कीर्जन । रेक्षरवृष् ह कार्क्षृ ভक्तः क्यंत्राहरू निंभः ॥ हानी नीनाः नह य् किविष्ट चकीयः नख हान्य्रयः। কৃঞ্ভক্তস্য গাৰ্হস্থ্য নৰ্ব কৃষ্ণে নি (यमनः।। ভক্তম্য लक्ष्णाउतः यथा। প্রো সংজাত্যা ভক্ত্যা তনু মুৎ পু শকাঞ্জনঃ। বিভর্ত্যলৌকিক ভক্তো वरमञ्जञि नृज्याज ॥ शत्रभारनम् যুক্তা হসৌ স্থচিদ্বায়তি নন্দতি। ক্র-नर्जाहु ज जारवन गृतुं एम भूनः भूनः ॥ अनुनीवगठि ভঙ্কেৎ গোदिन्स भ नुरमाम् । उत्तरम्वः विकृतायाः ष्ट्रता॰ मूनि (माहिनी॰ II नर्बाख्यत ून्धा या ज्ञानिंग नगाजन । न **ज्वतानी ভक्र मर्ब** ज्व मृश्वमः ॥ া ইতি পান্মোত্তরথণ্ডে ১০১ অবস-यः॥।। ভক্ত ভ্যাগে দোষো यथा। বুক্ষহত্যা শুরো ঘাঁতে৷ গোৰংঃ জ্লী

विष ख्या। जून (गिक्ति ग्रीमाशः खक्र जागापूरा वृष्ठः।। खक्र उः खक्र गज्राक्त भष्ठः ढ ज्ञहः पूथः। तिर ग्राम् श्रम्पानि खक्षः भक्र दिवः वृक्त।। ইতি भाक्ष्य स्ताप वृतिकामुग्राभाष्ठानः॥

ভক্তকর: পুণ ক্রিমধূপ:। যথা।
বৃকধূপে ভক্তকরো গিরি: স্যাৎ
সম্গন্ধক:। ইতি শন্চন্দ্রিকা।।
ভক্তকারকে ত্রি।।

ভক্তকার: ত্রি পাচক:। ভক্ত মরণ করোতি পাত্রতি যা। তৎ পর্য্যাযা:। সৃহ: ২ ঔরনিক: ৩ গুণ: ৪ ভক্ত্যু--কার: ৫ স্পকার: ৬ স্প: ৭ আ-রালিক: ৭ বল্লব: ৮। ইতি হেম-চন্দু:।।

ভক্ততা স্ত্রী ভক্তবং। ভক্তস্য জাৰ ইত্যাৰ্থিক পুত্যবেদ নিম্নন্ধ।। ভক্তত্র্য্যুণ স্লী ভোজনকালেবাদনীয় ত্র্য্যুণ। তৎপর্য্যায়ঃ। নৃপদানং ২। ইতি ব্রিকাওশেষঃ।।

ज्ञतातः श्रु भागतमम्ब्रास्तर्भक माम्वित्पयः। यथा। ज्ञतामण विद्धार खरेशव व उवाक् कः। मृजि-(सर १भि ज्ञाकी क्जृतामाः। देखि मायकममन्युरः॥

उङ्ग् भः भू ज्ञी व्यागुर्मः ।

ভাতেরবাড ইতি ভাষা। ত**েগ**-র্যায়: । নাসর: ১ জাচান: ২ নিঃ-সাব: ৩। ইত্যের: ॥

সাব: ৩। ইভনের: ॥ ভক্তিঃ জী বিভাগঃ॥ সেবা। ইতি रम्प्रिमी ॥'रगोनवृज्तिः॥ खदी ॥ भू **द्या। इं**जिस्मिष्युः।। 🕸।। ভब ইरिड (-न रेव बाजूः (नवायाः পরिकीर्खिंडः । তুমাৎসেবা বুধৈ: প্রোক্তা ভক্তি: সাধন ভূষসী ।। ইতি গাৰুডে ২৩১ অধ্যায়:।। 🗱।। অৰ শ্ৰীমন্তক্তি ৃলক্ষণ ভৃতীবে শ্ৰীকাপিলেয়ে। (प्रवानाः खनविकाना मानुभ्विक कर्मगाः। नच व्यवक्रमगरमा वृद्धिः ৰাভাবিকী তু বা।।অনিমিত্তা ভা-গবতী ভক্তি:সিজে গরীয়সী।#। অথ বিশেষ লক্ষণানি। গ্রিগৌত-🔎 মীযতক্ষে। দেবতাযাঞ্চ মঙ্কে চ ত-থা মন্ত্রপুদে গুরৌ। ভক্তি র**ঠ** বি-था यम् उम्र कृषः भुभी प्रकि॥ छ-फक बन वार मन्। भूडायाकान् त्यामनः। जुमना अईत्यमिख्रः छए-र्थ मुख्य वर्जन ।। उटकशा मुवरन ताग छैरार्थ ठाक विकिश। छन्नू-মরণ নিভ্যুণ ব তলানো পর্মবিভি।। ভক্তি রষ্ট বিধা ছেষা যিমান্ মেছে পি ব্রন্থ:ত। সম্বিং সত্যবাদী চকী-र्खिनान् म ভবেষর:।। मधमक्राक्ष द्यी

পুৰু।দোকৌ। শুবণ কীর্ত্তন বিকোর मात्रनः शाहरमदनः। अहनः वनहनः দাস্য স্থ্য মাত্ম নিবেদন ।। ইভি · পু•সার্পিতা বিষ্ণৌ ভক্তিশ্চে মব ল কণা। ক্রিয়তে ভগবত্যদ্ধা তক্মন্যে **१वीछ मूखमः भक्षा छ**रेबव **श्रीनावह** युधिकित मञ्चारत । भुवनः कीर्जनकामः মারণ মহতা গতে: ৷ সেবেজ্যাবন-তি দাস্যু সথ্য মাত্ম নিবেদনং॥। পান্মে কার্ত্তিকমাহাত্ম্যে শ্রীযমধুমু किम मञ्चार । भूवन की खन शूना अर्वकर्षार्भभः श्रुक्तिः । भविष्टर्या नमः স্থার: প্রেম্বাত্মার্পণ হরে।। 🛊 ॥ তবৈবোভরথণ্ডে শিব পার্বতী শ-স্থাদে। আদ্যন্ত বৈষ্ণব প্রো**ক্ত শ**হ চক্রাক্তণ হরে:। ধারণঞ্চোর্ছ পূর্থা-ণা ভন্মজাণা পরিগৃহ:।। অর্চন ख्रान अज्ञान यह १० ज्या । কীর্ত্তন• শুবণক্ষৈব বন্দন• পাদ সেব-ন। তৎপাদোদক সেবা চ ভগ্নিবে-দিত ভোজন• ॥ তদীয়ানাঞ্চ স•সে-বা দাদশা বুত নিষ্ঠতা। তুলসী রো-**भगः वि**ष्णा (र्हव (एवम) भार्किन: ॥ ভক্তি: যোডশধা প্রোক্তা ভববন্ধ विमुक्ताय। ইতিচ।। 🕸।। किथा। मर्गः ন· ভগবন্মুৰ্ভ্তে: স্পর্শন· ক্ষেত্রসেবন· I व्याद्यानः धूनामगास नियान।मऽह

ৰারণ ।। নৃত্যু ভগবদগ্রেচ তথা বী गारि वारमशक्षनीनाम्। जिनयः वी ভাগৰত দেবন ৷৷ পদ্মাক্ষ নালাদি খৃতি রেকাদশ্যাদি জাগরঃ। প্রাসা-म ब्रह्माम्।न।ज्ञाञ्ज्यः माजान्मातः ত: ৷৷ লিখিতা ভগৰ্ম্বনা ভক্তানা শক্ষণানি চ। তানি জ্বেৰ।নি সর্বাণি ভক্তেবৈ লক্ষণানি স্বাতেৰুক্তেয়ানি গৌণানি মুখ্যানি চ বি:বঞ্জিভি:। বহিরস্বান্তরস্থাণি পুেনসিছ্মৌ চ তা নি ব্থাভেদাস্ত বিবিধা ভক্তে ভক্ত ভাবাৰি ভেৰতঃ। মুক্তাকলাদি গ্ৰ-ছেভ্যে জ্রেশ স্তল্লিখনৈ রলণাংপু মভক্তে চ সিদ্ধাযা সর্বে পর্থা: সে বকাঃ শ্বন্থ । ভগবাং শ্চাতিবৃশ্যঃ न्राल्लिथारङ १नाः मृतकाः ॥ #॥ অথ পুেমভক্তি লক্ষণ ৷ নাম্বদপ-🗫রাত্রে। অনন্য নমতা বিকৌ নম-ভা পুন সঙ্গতা। ভ্ৰক্তি রিত্যুচ্যুত **जीदा পुङ्गारमञ्जर नावरिः ॥ (পुभ** ভক্তেশ্চ মাহাত্ম্যু ভক্তে মাহাত্ম্যু তঃ পর•। সিদ্ধমেব যতে। ভক্তে: ফ ল পৌমৰ নিশ্চিত।। চিহ্নানি পে-মসম্পত্তে হাছাণ্যা ভ্যন্তরাণিচ। কি-যম্ভ্যল্লিথিতা তস্যা মহিনৈব বি-লিখ্যতে ॥ 🗱 ॥ অথ পুেনসম্পত্তি চিহ্নানি সপ্তমক্ষদ্ধে ञ्रीপুङ्गारम्।

वावानुभानतः। निभगः। कर्यानि छ-गानज्वागन् रीर्यागि नीवालन्जिः क् जानि । यना जिक्स्यां ट भूदा कान्यु गर्नर (शुर्कि हेन्नाय हिन्द्र ॥ यमा शुरु शुरु देव दृष्टिक सन्द्राक्-न्ति ध्रायां वन्ति हनः। वृष्ट्ः শ্বসন্বক্তি হয়ে জগৎপতে নারাষণে-ত্যাত্ম নতি গতব্প:॥ তদাংগ্ৰান্ **मुक्त ननउ वक्षन उठाव** जारान क्-তাশবাকৃতিঃ। নিদ্ম ব বীজানশবে। মহীয়সা ভক্তি পুযোগেণ সমেত্য (शक्क के ।। #।। वकान्ता है जिला ब यामियंताख्ता । मृथ्न मृ जमानि त থাকপাণে জন্মানি কর্মাণি 🤊 খানি-লোকে। গীতানি নানানি ভর্থকা नि शायन् विवारक्ता विष्ठः रजन्यः।। এব• বুত: ইপ্রিয় নান কীড়া জক্ত নুরা**পো জত চিত্ত** উ**টিঃ। হ**মত্রং^{জা} (दाहि**डि (द्रोडि गायज्**र (हर्वे हरू) তিলোক বাহাঃ৷াঞ্চাতত্রৈশ শ্রীপুরুদ্ধ বো**গেশ্বরোভরে। মরন্তঃ** মার্যন্ত**্**চ মিথোধৌধ হর হরি । 👾 🦠 জাত্যা ভক্ত্যা বিভুত্যুৎপূলক न् ॥ °कृष्टिकरञात्रुञ हिस्या कृष्टिः क्रमेडि नन्ति वहस्य श्लोक्याः। নৃতংগ্তি গায়স্তানুশীলয়স্ত 🖫 তবন্ধি ज्की· भन्नत्मजा निर्जाः ॥ 🕸 ॥ 🗐

ভগশভূষক । स्वारत है। कथा विनादी न्यक्षं मुक्का रहक्त्रा विना। दिनान मः पुत्रक्षः मुह्म् छुक्। विनागयः ্বা সদা বৈতে যস্য চিত্ত রোদিত্য ोक् इम उ वृहिष्ट । विवास्त्र ऐग्ना ম্ভিলভালে **চ মন্ড ক্রি যুক্তো ভূবন**ণ প্_{াকি সংখাকে ভক্তা}শক্তো তু ভগবছর ব্লং শির্গগেত ভাবেন ्रमु भी अपनामुख्या। ইতি हति जिल्लिकारम**ः । विषामः ।। # ॥** অণি । উত্তমা ভক্তে র্লক্ষণ বথা। । चा जिलानि अन्तर छान कर्या-क्रायात्कः । आयुक्तंनाम क्षान्ती 🐃 ्रिक्डमा ॥ उथा नात्रप्रथ ात्व। मर्खाभाषि विनिम्कि छ० अक्षरः निर्धालः। इयोक्नि इयोकः ভক্তৰচ্যতে ৷৷ শ্ৰীভাগব 🎮 স্বন্ধে চ। অহৈতুক্য ব্যব-া ভাৰু:পুৰুষোন্তমেধসালো ন্যু সংষ্টি ভাষীপ্য সাৰূপ্যৈকত্ব্ব-শ্ৰত াদী শ্ৰমান ন গৃহস্তি বিনা মৎ াৰ জনাঃ । **সত্ৰব ভক্তি যোগাখ্য** धाराज्यातक উদাস্ত ইতি॥ 🕬। সা े ज्या इकिंश यथा। द्रव्रमधी पुजरिकाकनघुजाकृष्ट अपूर्वा । नामुननस्वरममाज्या श्रीकृष्णक्यनी े मा।।।।। उदाम्याः (द्वनमृद्ः। द्व

শাস্ত্র পাপণ তদ্বীত্র নবিদ্যা চেটি তে जिथा। णूजरप् यथा। णूजानि পুণিন সর জগতামনুরক্ততা। সদুণা मृथ निजामीनाथाजान मनीव-ভিঃ।। মোকলঘুতাক্ষ্প। মনা (गव পुक्जायाः इत्रय जगवृत्ते। 'পুৰবাথান্ত চন্ত্ৰার স্থাবন্তে সমন্ত-उः ॥ अ ॥ मृत्वज यथा। माध्यो-रिव द्रनामरेङ्ग द्रवाच्छा मूहिदाप्ति। স্থানি চাখনে বৈতি দিখা সাস্যাৎ मृदूर्वा ॥ मान्द्रानन्द्रिष्णवाजा ·यथा । तुक्तानत्मा अवत्मय ८८ পরান্ধ গুণাকৃতঃ।নৈতি ভক্তি সুথা स्मार्थः भव्रमान् जूनामि ॥ 🕸 🕦 🖲 কৃষ্ণাকষণী যথা। কৃত্বা হরি (পু-মভাজ পূি্যবৰ্গ সমন্বিত । ভূক্তি ব-শীকরোতীতি শ্রীকৃষ্ণাকর্ষণী চ সা ॥ #॥ সা উত্তমাভক্তি ব্রেখা যথা। সা ভক্তি: সাধন ভাব: প্রেমা চেত্তি ত্রিধোদিতা। সাধন ভক্তি র্যথা। কৃতি সাধ্যা ভবেৎসাধ্য ভাবা সা সাধনাভিধা। নিত্য সিদ্ধস্য ভাব-न्य भावहेऽ• इपि माथ्य ।। # ।। ভাবভক্তি যথা। শুদ্ধসত্ত্ব বিশেষা-ত্মাপুন স্যা্য•শু সাম্যভাক্। কচি-ভি শ্ভিন্ত নাস্ণ্যকৃদসৌ ভাব উচ্য-তে।। 🛊।। প্রেম ভক্তি যথা। সন্যথ-

স্ণিত স্বাস্থো ননত্বাভিশ্যাকিও: । ভাব: সএব সান্দ্ৰাত্মা বুধৈ: প্রে-না নিগদ্যতে ॥ ইতি ভক্তিরসাম্-তসিন্ধৌ পূর্ববিভাগ: ॥

ভক্তিমান্ ত্রি ভক্তিযুক্ত:। যথা। खगवान् भृजवान् श्रीभान् कीर्जिमान् छिकिनान् ভবেट। ঐहित्क भन्नरेन श्वर्ग नास नाथभमः तुरब्धः ॥ इंडि শাম্ভবীতজ্ঞান্তর্গতমহাকালভৈর-व (खाब ।। जनिह । ज्ञान्तर्भ (य विकर्मशः भृमान्ता नीह काउयः। **ङ**क्जिन्छः भुनुहुरस्र कात्मन भवि সম্বা:।৷ইতিকৌর্মে ৪ অধ্যায়:॥ ভক্তিযোগঃ পু॰ পরমেশ্বরেভজনস-ম্বন্ধঃ। যথা। ভক্তিযোগপুঞ্চাশায লোকস্যানুগৃহায চ। সন্ধ্যাসাশ্ম मानिुउ कृष रिठन। नानष्क्॥ ইতি চৈতন্যভাগৰত।।। অপিচ। বাসুদেবে ভগবতি ভক্তিযোগঃ পু-याह्यिः। जनयंग्राम् विद्यागाः क्कानक यम रेहजूक II ই**ভি** খ্রীভা-গবতে ১ ক্ষন্ধে ১ অধ্যায়ঃ ॥

ভক্তিরস: পু॰ ভক্তিরেবরস:। যথা
।বিভাবৈ রনুভাবৈশ্চ সাদ্ধিকৈ ব্যুভিচারিভি:। স্বাদ্যত্ত্ব কৃদি ভক্তাশা নানীভাশুবণাদিভি:। এষা কৃষ্ণ
রতি: স্থাবাভাবা ভক্তিরসো ভ

বেং ।। ইতি ভক্তি সামৃত সিদ্ধা।
ভক্তিলঃ পু সাধান কিঃ। খখনে
পুভুতকা ভতিলা স্প্রীনেষ্ট্র লোংকটাঃ। ইতি পদ্চানুকা।
ভক্তিদাতরি বি।।

ভক্তিদাভরি ত্রি॥ खग• द्री **खीर्ट्स** । उट भन्तायः। যোনি: ২। ইত্যময় 🕕 🐠 😼 **উপস্: ८ मात्रमंनित**ाक । ইक्तिका জনির্ঘণ্টঃ ॥ রভিপৃদ্ধত হরতে 🖔 🤊 **অধর•৮ অ**বাচ্যদে 🐃 শুক্তাতঃ)• व्यभव•)) स्रात्र हुन: ३२ व्यक्-দেশ: ১০ পুক্তি: ১৪ পুর্রী 🗽 🕬 नात्रगार्थः ३१ ७७ ३५ अशागात्रः) अभव्रथ्य प्रकार राज्य अपन ब्रह्म १२ क्वाब २० जाहा २८। **ইতি শব্**রত্নাবলী ৷ তেম্য শক্ষণ यथा। विखीनंक भारति।क विकास ভগ বক্ষণ। তদুণা হথ। ক্রান্ত গজন্ধ প্রগন্ধ মু বার্ कामनः भूविखीर्गः । 🚁 🖂 গোত্তনা: ৷৷ তদেবে 🔍 🖖 🧺 वः निम् गजुष्कः (गा व्या मह्न পর•। ইত্যুক্ত: কাম ার্যক্তি ভগ त्रिष्ठ ठज्क्षेयः ॥ वि १७५ मृष्टः যোজ্য• গভীরে ব'শ ালকে। ইতি त्रिष्ठिमञ्जती ॥ 🗱 ॥ वीर्यः ॥ हेहा॥कातः॥दित्राणः विश्विः॥

ाह्यजारः ॥ वैचर्यरः ॥ यजः ॥ यमः

्याकः॥ इजिमिनी॥ शृ•ना॰ ং মুষ্ক ন্ধ্যভাগঃ। ইতি রাজনি-ं है: ॥ जी । यणः॥ (मौजागुः ॥ ्रस्टः ॥ मूर्यः ॥ मञ्जूवित्मयः ॥ ः **त्ः । इ**न्डात्नकार्थवृनिमक्षत्री. ॥ र्भक्षुनीनक्षवः। यथा। व्यक्षठा-६ ष युकाण जाता जाती उपूर्वात তি জ্যোতিস্তত্ত্ব• ॥ धः भू॰ त्रविः। ইতি मिनि।। 🏂 वश्राय•। यथा। ज्जान देवज्ञागऽ-ए र्यातो छग मञ्जी ठ् डाऋत । ইতি করে।। গ্ৰু পু• নক্তৰসমূহঃ ৷৷ শীঘুগা-িশা পুহাণা মল্লেন কালেন মন্দ-ানিনা পুহাণা মহতাকালেন পূর্ণিত্যা পাতানা পশ্চিমগত্যা 🦇 রবর্ত্ত:ননাশ্বিন্যাদি রেবত্যন্ত ন ক্ষাভোগকালঃ॥ ষষ্টিবিকলাভি: ক্লা ৰম্ভিকলাভি ভাগ ক্লিণ্টাল ৈ রাশি দ্বাদশ রাশিভি র্ভগণঃ। यः ।। भीषुग छात्र,थाः ज्ञन कारणन ্হতাল্পগঃ। তেয়ান্ত পরিবর্তেন পেশি।তে ভগণঃমৃতঃ॥ বিকলানা ক্ৰাষষ্ট্ৰ্যা ভ**্ষষ্ট্ৰ**্যা ভাগ উচ্য**ভ্ৰে**।

ত প্রশাতা ভবেদুদৌ র্ভগণো দ্বাদ-

কৈব তে ॥ যুগে স্থ্য জ্ঞ শুক্রাণা•

থ চতুষ্ক রদীণবাঃ ৪৩২০০০০। সজা-किं एक भी यानाः जननाः भ्रविगानि-নাং।। ইন্দে। রসাগ্নি ত্রিত্রীযু সপ্ত ভ্ষর মার্গণা: ৫৭৭৫০০০৬। দসু ত্র্য 🕏 রসাক্ষাক্ষি লোচনানি স্বরস্য তু ২২ ৯৬৮৩২। বুধশীঘুস্য শূন্য ভূ থাদু बाह्य नरगन्त्यः २१२०१०७०। वृह-স্পতে: থ দসু। ক্ষি বেদ ষত্বহাব তথা ৩৬৪২২০ ৷৷ সিত শীঘুস্য ষট্সপ্ত ব্ৰি यभाषि थ जूधदाः १०२२०१५। भरन ্ভুজিক ষট্পঞ্রস বেদ নিশাক-त्राः ७८७८७৮ ॥ हत्सुाइम्यान् मू-न्यासि वम् मर्भार्वत १४४२०० यूर्ण । বাম॰ পাতস্য সর্গাল্লি যমাখি শি-थि मृत्रकाः २०२२०৮। इंडि मूर्यानिः জান্তঃ।ঞ্চা অপিচ। গুহাণা মনে। **ঢ়ানা∙চলো**ঢ়ানা• গুছপাতানাঞ্**ভ**-গণান্শ্লোক ষষ্ট্েনাহ। অর্ক শৃক্র বুধ-পর্য্যা বিধে রক্তি কোটি গুণিতা র-माक्त्यः। ८०२०००००० वज्ञव भनि জীব ভূভুবা• কীৰ্ভিতাশ্চ গণকৈ শ্চ-लाइडाः ॥ ३॥ था<u>ड</u> थाड नगरा-गतिन्तिव व्याधवाषु विषया ৫११৫० ৩০০০০ হিন্দুতেঃ। বুণা বুণা শর नाग (काठन.र)।व यात्र यमाखित। मृद्धः २२৯५४२४४२२ ॥ २ ॥ मिक्नू मिक्तूत नवाई शाक यह बाक गड

अभिता ११२०७२८५८ है छ भीत জাঃ। পঞ্চ পঞ্চ যুগ ষ্টু লোচন ছঃ कि यए छ। भिजा ०५४२५४०० छ। त्वा मं जाः ॥ ७॥ वि नन्त (वनाक् गजानि लाउन विम्नरिमलाः १०२ ২০৮৯৪৯২ সিত শীঘু পর্য্যয়ঃ। ভু-कक् नमर दि नगाक वान यह कृट नत्वः मूर्याम् जमा भर्यायाः १६७८७ প্রস্তা ।। ৪ ।। খাপ্রার্কারা ৪৮০ প্রাক্ষ गालयु नियिविष्ट्रभाकाया ८৮००० ४८४ घाक यमा २०२ व्रमानुगः २०२ । শরেশ্বিভা ৮৫৫ জ্রাফ্ রসাঃ ৬৫০ হসাগরাঃ ৪১ মুঃ পুর্রগত্যা তরণে মৃ দুছজাঃ ॥ ৫॥ গজাপ্তি ভর্গ তিরদা-चिनः २०२०)))७৮ अर्जुपुनाचिनः २५१ ऋ वि भन्नाः ६२७ कन्छं वः ५०। बि नन्त नागा ४२० यूग अक्षरत्यरवा **৫৮८ निमा**कद्राष्ट्रश्चम भाउ भर्यु যা:॥৬॥ ইতি সিদ্ধান্তশিরোনণি: ॥ 🗱 ॥ गुरानाः भूर्वभगतन्त्र कल्न . এ (७ भर्य)याः । ७ था मत्नराहानाकः পায়ত্যা এতাবস্তঃ। পাতানা প-শ্চিম্গত্যা এতাবন্তো ভবন্তি । অ ভোপপত্তি: সাতৃ তন্ডাবাসশলে ন তৎ ফেত্ৰসংস্থানফুন শুক্তগো-लितिव (गु)जू भ हाउ नातान । गुरु गना भीषु भाजाः च च गार्गयू

গছন্ত এতাবতঃ পর্য্যান্ কল্পে জ-র্মনীত্যনাগন্ধ এর পুনাণ ইতি । ভটীকা ।।

ভगम्खः भू॰ नत्रकत्राजनीतकार्रेशभूथः। সত্ পালোগতিযপ্রাধিক্ষ মথা **) পত্যত্যান্ত লা**লালাণ কালেন নী ब्रकः कमाए। ज्ञामखः महानीक् मनवन् भूगाणिन्।। ठजूदा जन-যানাস পুঞা স্তা ক ক্ষিতে: সুত: । শ্রীভগবানুবাচ। ভারাবতরণে रमित नज्ञकमा वशः भुज्ञा । पुरेय প্যূৰ্থিতে৷ যমাত্তেনাসৌ নিহতো ন্যা ৷৷ পাল ফ্ৰের হস্য সন্তান• रित वृत्रहनाररः। शुरञ्जातिव **প্**ভিষেক্যানি নপ্তার- ভগদত্তক• ॥ भृथिवता नाजातिनव निरुजः কেশব স্তদা। ভগদত্ত• ভৌমসুত্ত• 🕆 পুথ্নোগতিষ পুরোত্তনে ॥ ক্ষভি-ষিচ্য তদা ভূপণ পুরমধ্যেন্যবেশ য । ইতি কালিকাপুরাণে ৩১ व्यथायः॥

ভগদৈবত লী পূর্ফল্পনীনক্ষত। তত্ত্বস্পতে জন্মনক্ষত। যথা। বিশাখানল ভোষানি বৈক্ষব্য ভ-লদৈবত। পৃষ্যা পৌক্ষো ষমঃ স-পো জন্ম ভান্যক্তঃ জনাৎ।। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব।! च्गनातः भ् जभागामा तुनाता ग বিশেষ: ৷ তস্য ৰূপ নাই ৷ গুৰুস্য দ্যকুলে কেত্ৰে পাৰ্শ্বতঃ পিডকাৰ্ডি क्ट। जिल्ली जगनत्त्रा छियः म ह পুঞ্রিধো ভবেৎ।। অর্ত্তিকৃৎ পী ভাক্ত। পঞ্চৰিধঃ বাতিক পৈত্তি ক শ্লৈঘ্যিক সামিপাতিক শল্যজ ভেদৈ: ৷৷ 🗱 ৷৷ ভগন্দর শব্দস্য নি-ৰুক্তি মাহভৌজঃ। ভগ• পরিসম-স্ভাদ্মে। গুদ বন্তী তথৈব চ। ভগব-দ্ববেদমাভমাদেষ ভগন্দরঃ॥ ভজন্ত্যনেনেতি ভগ• মেহন•। ভ জন্ত্যশ্লিষিতি ভগণ যোনি:। অত্র ভগশদেন দ্ব্যাপ কথ্যতে। ত गवट त्यानि वट ॥ अभा कृषी कः भाव निरखान नाष्ट्र कश्च कनान्यः। ভবস্তিপূর্বক্পাণি ভবিষ্যতি ভগ-**স্**রে।।কটা কপালমত্র কটীফলক। া। #॥ বাতিক শতবোনক স জ ভगन्मत्र भारु। क्यांग क्रिक त्रिङ কোপিতো ধনিল স্থপানদেশে পি-ভকা: করোতি যা । উপ্লেক্ষণাৎ **शाक न्रेशिंठ मारू १ क्वाक्** ভिमा-ৰুণ ফেন বাহিনী।। তত্ৰাগনো মূত্ৰ পুরীষ রেতসা বুণৈ রনেকৈ: শুক্ত यानकः वरहरामायनः अछिमाक गां । वृत्त द्रातिकः मूक्त्रभूतिः। म- ॥

ज्यानक म्हाननी उत्तर ॥ 🛊 ॥ পৈতি চমুপ্তগুরি নংভ্রমাই। পূরো-পণৈ: পিত্ত মতিপুকোলিত• করে৷ তির্ভা• পিডকা• গুদে পতা•। **ত**-দাশুপাকাহিন গৃতি বাহিনী ভগ न्त्रत्थाष्ट्रिनित्रायव दान्य। जान পা নাহিম পুতি বাহিনী । দীলুপা-কা॰ উন্ম দুৰ্গন্ধ বাহিনীঞ্চ তেনা ত॰ ভগন্দর• উষ্ট্র শিরোধর• উষ্ট্রণীব স• জ্ঞ• বদেৎ। উষ্ট্ৰগুীব সংজ্ঞঞ্চ। পি-फका काली गवक उत्पाष्ट्रभी वाकात-**ঁব্রেন।। #**।। শ্লৈঘ্যিক পরিদ্রাবি **স**ণ-क्छमार। कञ्चाता यन्त्रावी कठिता মন্দ্ৰেদনঃ। খেতাবভাসঃ কফ্লঃ পরিসাবী ভগন্দর: ৷৷ কঠিন: পিড कावसायाः भित्रमावी नित्रस्तरः मु-वन भीनः॥ 🕸 ॥ मानिभाठिक भन्नू-कावर्ड मण्डः नाह । वह्वर्ग क्डाः সাবাঃ পিডকা গোস্ত:নাপমাঃ। শ-ष्कावर्ख वनाजी मध्कावर्खका गजः ॥ वल्वर्गक्षा मावाः वल्माका वर्गाः দিভি: পুত্যেক সমধ্যতে। নার্ড সা-वमार्गः॥ #॥ मन्। मन्। म्यागं मः छः भार। क्रजान्नजिः भागुगजान्नियकः ए क्रुलिकना प्राः क्यारा विनार्यः ত। পুসরতে মার্গ মনেক্ষা মুখে व रिन छम्बार्भ जगमतः वाम्य ॥

ক্ষতাৎ কণ্টকাদিনা নথেন কণ্ডুয়না-দিনা বা হভিদ্যাতাৎ। গভি: সাবঃ। উন্মার্গ ভগনরে। এতস্য ক্মিক্ত भारिगः भूतीयाहि निर्गमापुर्वार्ग नः **ट्या ॥ 🕸 ॥ क्ष्ट्रेगाथ्य भगाष्यकार ।** ঘোরা: সাধ্যিতু দু:খা: সর্ব এর ভগন্দরা:। তেম্বসাধ্য জ্রিদোষো-থঃ ক্তজ্চ বিশেষতঃ।। বাত মূত্র भूत्रीयानि শूकक क्मय खवा। ভগ-ন্দ্রাৎ <u>স</u>ুবন্তস্ত নাল্যন্তি তনাতুর ।। 🛊 ।। अथ जगन्त्त्रम् हिकिट्मा। অথাস্য পিডকা মেব তথা যন্ত্ৰাদু-भारति । भृषाम् मुजि (मकार्वि যথা পাক• নগছতি।। #।। পুনর্বা-**म्डा म्डी शिक्षिका वर्रेतः क्डः।** লেপায় পিডকাবৃস্থে কল্প: শস্তো ভ गन्त्र ॥ भयः भिष्टि खि**ना**ति**हे म**् ধুকৈঃ শীতীলঃ কৃতঃ। লেপো ভগ-দরে শন্তঃ পৈত্তিকে বেদনাবতি ॥ चित्रिक्षे निष्यः ॥ 🕸 ॥ जूननायाक প্রপ্রাণি গুডুচী বিশ্বভেষজ্ঞ। সৈন্ধব॰ ভক্র সংপিষ্ট দোপাছন্তি ভগন্দরং॥ সুমনা জাভি স্তম্যাঃ পঞ্ ॥ পিড-কানা মপ্ৰকানা অপতৰ্পণ পূৰ্বক । क्यं क्यंप्रविद्यकाष्ठः जिमानाः दुर व ६ किया ॥ निषाकं भी त मिसृष भूदाध्यहननहरेनः। शिक्षं मञ्जाक्षत

रेजनः जगम्मत्र कृतः अहः । शुरत्रः। ख्युल्:। जयरुननइपाः कववीवशः थानि। निर्मारितवः।। 🗯॥ विक् লা পুর কৃষ্ণানা জিপঞ্চাইশক যো গিতা। গুটিকা শোল গুল্মা ভূ গন্দরবতা হিছা নৰকাৰিই ख्युन्ते। शामा व्यापि क्रिन् শত্রসাধ্যে ভগর 👉 সংহতে 🖮 🔾 কৰ্ত্তব্যা শঙ্কশাঙ্ক ইন্ডি 🐃 🥡 यागः रेमथूनः युक्तः भक्षानः अकृतः চ। ৰুঢ় বুণেপি যড়েন বঙ 🦠 স্ব: **নরঃ।। ইতি ভাবপুরাকে** সমস্বয় থিকার:।। 🛊 ॥ ঋপিচ। জ্বন 🛶 **एन॰ (लश विद्वार**ः विद्वारिकः : द्व-ক্তমোক্ষাদিভিঃ 🖈 🦠 গুলভা িপ **फकाः अर्थः ॥ ज**न्न ना किया क्र्याप्यथा भाकः निवशी स्थानाः বাথপত্বংবা জল্পেকাসালয় ট্রিভেণ ॥ তদভাবে তু শৃক্ষভা নিদ॰ ঐ-ক্তস্য যোক্ষণ । 👂 🗟 🕾 🕾 **ण्छी ७५०।: मश्**नवंताः - ऋहै। जू **পিডকারন্তে লেশঃ শস্তে**। ভাগভারে ॥ आगावश कि । (भारत नेदाद হা ক্রিয়েচ্যতে। 🕸 জুদেশ পাট ना कात विहासाशासिक कमेरा वि शाय वृतव कार्या यथा (मार्या यथा वलः ॥ ज.शर्कमृष्य मादी छि दे हिं

कृत् उभन्त्य । एम् ११८ मर्व महीतः হ नाडी इन्डाट भुरवागताहै॥ 🗱 ॥ ভিলাভবা লোধু নরিষ্টপঞ্ নিশা ्ठा अष्ठ भौगात्रध्मः। ভगन्तरत ना ভূগেদ শার্যান্চ দৃষ্টবুণে শোধন রো- १य॰ ।। क्षः ।। भूत्ना २ छि घृष्ठे॰ কিকলা রসেন বিডালকান্থি ত্থবা বিলেপনাৎ। চিরপুভূত বুণরোগ 🕫 🐷 গনরে নাশ মুপৈতি নূন ।। 🕸।। জতুত্রমাণসংভূজীত পুকারৈ ব্যঞ্জনা ্ৰিভিঃ৷ শৃগাল মা•স ব্যঞ্জন• খাদ্য• ্ষাথ্বা **শবূক মা•স ব্যঞ্জন• খাদ্য•** 🖖 🖰 ত্রিকটু ত্রিফ গা মুস্ত• বিউস্থান ত । वकः। শট্যেলা পিপ্পলী মূলः ङ्_ल, **जूब**शांक **छ ॥ जुन्नूक• शू**ग्रज्ञ• कर दि**नाता द्रजनी घर**ा विख• াত লক্ষারৌ সৈশ্বৰণ গজপিপুলী া াস্ত্রেতানি চূর্ণানি তাবদ্দিওণ 🥶 । (कालभूमानाः छिकाः कः करव्याधुना **मह** ॥ छगन्तवः श्वाम कार कार्यः जीर्गज्दामद्रः। नाजी 🏥 🚉 ानाइ जल्हाचारा भाती कसीन् া সেহাজ্রবৃদ্ধি হৃদ্যেগ শ্লা• শ্লীপদ ে া সগুৰি শতিকো হস্তি গুলুলু; अवस्य शिशा। इस्माग मूल मिछाव হেলার্থ শ্ল নিত্যপি পাঠঃ। সপ্ত रिभाषि शुन्: ॥ । । विवकारको

ত্রিবৃৎ পাঠে। মলপ্ হ্যমারকৌ। সুধা বচা লাক্লিকা হরিতাল मुबर्द्द**ाः ॥ জ्या**ञिच्चञीकः मःङ्ज्रः । रेजन रेवरम्या विभावस्य । अउहिन मान्ति नाम रेजन मुक्क खनन्द्र ়া। শোধন রোপণক্ষৈব সূবর্ণ করণ म्छ । विमानति उन ।। 🛊 ।। ज्ङ স্য দ্বিগুণেন শুদ্ধ বলিনা কন্যাপ-যোভি জ্ঞাহণ পিষ্টা তামুম্য সমন্ত তুলিত পাক বিধাযোপরি। স্বে-দ্য যান যুগ সভন্ম পিঠরে জনুম-रैनः मश्रशं मार्चः उ८ भृतिय८ छः গন্দর হরে৷ গুপ্তোমিডা স্যাদিতি ।। জমূজলৈ রিভার নিযুজলৈ রিভিচ भार्तः। ভगन्त्त्र इत्रा द्रमः ॥ 🐞 ॥ শুদ্ধসূত সম পদ্ধ মৃতনাগ সভু व्यंकः। जीवकः रेमद्वरः जुन्। जिक কোষাতকীদুরৈ:॥ পিঞ্চা তল্লেপনা-षञ्जि ভক্ষণায়, ভ্রগন্দরণ। রস:কা-লাগ্ৰিকদ্যে ২য় ওঞ্জৈক নৃত্যুৱিন্ত-वि ॥ कामाप्ति बस्ता त्रमः ॥ इंडि লারদীপিকাষাণ ভগন্দর চিকিৎ-माध्यायः ॥ 🕸 ॥ व्यनिष्ट । 🥸 श्रुकृः विक्ता युक्तः भीवा नत्मार जगना द्भश इंकि श्वाक्ट अन्न अध्यायः ॥ ভগভক্ষকঃ পু॰ জভাশী৷কোটনা ইকি ভাষা। ইতি স্থাভারতে

स्विक्यः । उम्राच डक्कन निर्वासी यथा। यो वाक्तिकः शिक्तिकः मा-शृक्ति वा क्रिन विश्व । स्व शामी यक्ति क्रम्यामः खळ्ला हान्यायनक्षत्वर ॥ देखि मार्कः अवशृक्षाता महाहाना-भ्रायः ॥

ভগবতী দ্রী গৌরী !! পূজ্যা ইতি (मिरिनी ।। अबुबाजी । यथा । जा मार्री পাতু সরস্বতী ভগব ী নিঃশেষ জা ত্যাপহা।ইতিপৌরাণিকাঃ॥গঞ্চা । যথা। ভগবৃতি ভবলীলামৌলি-নালে তথাম্ভঃ কণ মণু পরিমাণ পুাণিনো যে স্পৃশন্তি। ইতি শঙ্ক-রাচার্য্য কৃত গঙ্গান্তোত্র ।। 🗱 ॥ ত স্যাঃ শ্বৰূপ যথা। যথা নিত্যোহি ভগবান্ নিত্যা ভগবতী তথা। ৰ মায্যা ভিরোভূতা তত্ত্বশে পাকৃ (छ लाय।। व्या वुक्त खप्तश्रंधः मर्बः । মিথ্যৈব কৃত্রিম । দুর্গা সত্য মরুপা मा भुक्छि र्गवान् यथा।। मिषिऽ श्वर्गानिक अर्द यम् । मिछ यूरा মূগে। সিদ্ধ্যাদিকে ভগো ক্রেয়ন্তেন তগৰতী স্তা॥ ইতি বুক্ষবৈবৰ্ত্ত পুরাণে পুক্তিথণ্ডে ৫৪ অখ্যায়ঃ ।। 🛊।। অপিচ। সেব্যুক্তে যা সুরৈঃ নৰি ভাঞ্চৈৰ ভছতে যতঃ। ধাত ৰ্ছকৈতি সেবাধা ভগৰভাৰ সা

ম্ভা।। ইভি দেবীপুরাণে ৪৫ অ-ধ্যাশঃ॥ 🛊॥ তদ্যাঃ প্রতিমাবিশে- 🖫 ষস্য পূজনে ফলবিশেষে। যথা। वुष्कावाह । मृत् जम्मीः मूबाधाक আরাধন বিধি পর । বঁথা সা ভো-ব্িতা পূর্ষণ শঙ্করাদ্যৈ: ফলেপ্স ভিঃ ॥ कर्म यरछन (मृत्यम ज्थान् मिन পূজব। শস্ত্রং পূজহতে দেবী । মৃত্র শক্তিন্থী শুভা । अक्षनाना करता নিত্য তেনাদে। বিবুধায়রঃ। অছ। रेनवगयी॰ एती॰ यज्ञागि मृतमख्य ॥ তেন বুদ্ধার ঘেবের ময়। পুষ্ঠে मृद्र्वल । इन्द्रुभीवगशी (प्रवी वि-यु तर्रया जरा॥ वियुद्ध भाश वा॰ एउन बार्फ्डें किंच नना बन । (परी) • হেনম্ৰী কান্তা প্ৰদে৷ প্ৰ্যতে স-मा ।। তেনাসৌ अनत्मा तम्त्वा अत्न-**ण ३ गव**: श्रवान् । विष्यान् व। म्हा-जााता (तो भार परवी भारता इता ।। বজন্তি বিধিবজ্ঞক্ত্যা তেন বিশ্বত্ব মা-পুনু: 1 বায়ঃ পূজ্যতে ভক্ত্যা দেবী• পিত্তল সম্ভবাং ৷৷ বাযুত্ত তেন ত शुष्ठ ग्रानीभगाः एगावरः । वनवः का भिका प्रिवी श्रावराख विधानजः ॥ लाशु वरहा यहाचात्ना वमृद्धः म् बरहाहरः। अश्वितो **शा**र्थिताः स्ट वी शृष्याती विधानकः॥ जन जार-

चित्ने पत्वो मिवा (महः भंजावृत्ने । স্থাটিকা॰ শোভনা॰ দেবী॰ বৰুণো ' २६वट मना। वरूपद्राई मःग्रास তেन शक्ता निनिच्छ ॥ (परी मन ্মুণী পুণ্যা মণ্নি র্মজতি ভাবিতঃ। অণিত্ব প্রাপ্তবা তেনে (তানোর্গ नगर्विष्ठः ॥ ठागुः (तथीः नमाको **ল• ভ**ক্ত্যা দেবো দিবাছরঃ। শইতে তত্ৰ সুস্থাপ্ত ভেন সূৰ্য্যন্ত মূতন ॥ मुका रेणवमवी॰ स्तरी विकास शृक শৃতে সদা ৷ তেন সোমো হগি স ম্পুাগুঃ সোমত্ব নভতোজ্বল।। পু वानकम्यी॰ (म्वी॰ यकास ननःगा-चनाः। (उन नागाञ्च ভোগাচ্যाः পুৰান্ত্যেতে পর• পদ• ॥ কৃঞ্চাশসম-शी॰ (मवी॰ भूषयञ्जामूत्ता खगाः॥ त्रा ক্ষৃসাশ্চ মহাত্মান স্তেন তে ২মিড বিক্ৰমাঃ॥ ত্ৰপু সীসন্যী দেবী পি-শাসাঃ পূজ্যন্তি তা॰। তেন পদ্ধি वाला (भठाः भुवास्ति भव्नमः भवः॥ विद्यादिका मना (नवी गक्राय ध्य काम्यः । (जन (जागवामार्शकाः शुवाडी खत्र मनिततः ॥ वज्रु लोशः न्यो॰ प्रवी॰ यकत्त्र भाजतः भना । नाज्दः भाषा जाः नर्वाः भुंताधि পরন্ পদি ॥ এবং ছেবা: সগস্তু-রাঃ পিশাদেরেগ রান্ সাঃ। পুঞ

यस मनाकाल हिंका मुद्दनावि का ।। তथा बुगिश (भरवमु यभी इ সি পরা•গতি•॥ শিবা• মণিম্ঘী• भूबा वाज्य नगरमञ्जिलाग्। का भाव मूद्रवदायाक कार्निकः भूकि **ेिछः भरा ॥ परा**ठि नई काकानाः ठिडामि रिथा मिवा। इंडाएम् (स ব্যবতারে দুব্যবিধি পূজামাহাত্ম্যে o) अथायः॥ 🕸 ॥ अरेना ग्हरानः ज्य क्व • यथा। ऋषद खेवाह। (मव्या প্ছন্ত गঃ শুক্র করাপয়তি শোভন । 'गरब्राभक्दरेग यूंक्ड **मक्ला**डार्गनाः ব্বিত ।। তশিন্ যক। ধৃত্ত ছব বি-তাৰ দৰ্পণাৰি চ। দত্ত্বা মুব্ৰজ বংশা-मि नि**छ्यः अङ्गी**छकानि हे ॥ प्रवी শাস্ত্রার বেক্তার• পুজন• ভবনে শুভ• ৷ এবং প্রর্ত্তে যস্ত তদ্য পুণ্যকলং শূণু ।। দশ পূর্বাপরা॰ স্তাত আত্মন रैण्डक विष्णि । উज्ञा व सग পাপাবুদ্ধলোকে মন্থীয়তে॥ গছতে ভাৰতী যত্ৰ প্রাপর্য পুজিতা। তত্র কল্পান্ডর॰ যাব ডু ক্রা ভোগান স নোরমান্।। পুনঃ কালানিস্বাধাতঃ পৃথিব্যা মেকর। ভাবে । সভ্ত্য বা-হ্নোপেতঃ শাতঃ পুরপরিছ্যা ।। পুন দেব্যা বিজাতীনা তভ্জানা भित्या जावर । कन्या मन्यू स्त्री निङ्ग (पवी भाषार्थ भार्त्राः।। नভতে भारत्र ज्ञावः उपास भिवजाः
व्राह्ण । (पवतः गृहस्य यः मृक मर्याः
ह्या निज्ञानः।। म ভविष्वनवान्
रमेश्व मर्मास्त मन्मस्ति मः युजः। उपाः
ग्रहहिवा (नाकः मर्बकाम कन्त्रः)
प्रवान् निर्वा गृहस्य यः मृक (गामरम्बान् निर्वा ग्रह्स्य वा मि
वा भूः मः यशामस्य निर्वस्य ।। म
ना ज्ञा गहिति । हेज्यात्म (प्रवा वा विष्य गहिति । हेज्यात्म (प्रवा वा व्य

ख्नावान भू वृद्धः । इंडामद्रः ॥

श्रीकृषः । यथा । जगवानिम छ।

द्राजीः भाद्रामा कृष्ण मह्मकाः ।

वीका द्राजीः भाद्रामा कृष्ण स्वाग्नायाम्

गाम्जः ॥ इंडि श्री जागवर के।

इंडि सिम्नी ॥ श्री जन्म स्वाग्नी वर्णामन द्राजी हिना मह्म । जम्म वृद्धा मज्ञ भा । यह द्राप्ण मज्ञ मम्म वृद्धा भाव कृष्ण । भाम वृद्धा निका जः भद्र वृद्धा थि । भाम वृद्धा निका जः भद्धा । यह ।

ব্যক্ত মন্তর নচিন্ত্য নজ মুখ্যমণ জন নিৰ্দ্দেশ্য মৰূপঞ্চ গোণি পাৰ্যক্ষ কং যুত ।। বিভু সর্বণত দিশ্য ভ্রত यानि भकात्रभः। ब्राम्स्यावस्थान यकः मर्द्यः ७ रेव ाम्।सि महसः॥ ত্যুক্ষ তৎপর• ধা ্ তদ্যেদ্র বেশ ক্ষকাৰ্দ্ধাণ। শুভিৰ ক্যাদ্যাদ সংগ্ৰ **उद्याद्याः भत्रमः ।** १ १ । उत्य গবদাচ্য স্থক্প প্রায়াল্য 🔭 **टाका जगवहुक् र**ास्तार होस्य আনঃ। এবং নিগদি 🐠 😘 🐺 তস্য তত্ত্তঃ। ত্ত্ত 😘 😂 💐 क्टारन भवगना धर्म । या । व्यापन গোচরস্যাপি তদৈ ব্যুক্ষণো বিজঃ পূজাযা• ভগবহুদঃ 🐩 📉 🚟 🔻 চারিকঃ ॥ শুদ্ধে সহসেপ্তা 🕾 পরে বুন্ধণি বর্ত্ততে 💸 🐠 🤻 ह्यः गर्दकाद्गग काः 🔠 सः 🕬 🕸 তথা ভৰ্ৱা ভকারে৷ 👻 এক বিজ্ঞা তেনাপম্বিতা সুষ্টা ক্ষাভাৰি জাংগ मूल ॥ अश्वर्यामा मः मृत्य विद्यान य**णजः भि्यः । छ**ा । देदद्वान्यः শৈচৰ **ষ**্মাণ ভগ ইভিন্নিয়া সভি য্র ভূতানি ভূতাজ্য খিলায়ে ন **স্চ ভূতেত্বশেষেয়** এলকাল **ত**ভো হব্যয়ঃ II এব মেব 🛷 বাহো ভগ-वानि ि जलम । भन् ुक ज्वा

বাস্থেস্য নান্যা: ।। তত্ত্ব পূজ্য প্রদা্ ক্তি পরিভাষা সমন্বিতঃ। শক্ষেত্রণ নোপচারেণ অন্যত্র হ্য * । উৎপত্তি পুলयेक्षिव সূত্র নাগতি•গতি•।বেজি বিদ্যা ম্বিদ খ ন বাচ্যে ভগবানিতি।। ব্যান লক্তি বলৈশ্বৰ্য্য বীৰ্য্য তেজাণ-সংশেষ হয়। ভগবছ্দ বাচ্যানি বি-া ের র্গণাদিভিঃ ॥ ইতি বিষ্ণু-প্রচন্ত অংশে ৫ অধ্যায়ঃ ।। 🗱 ।। া 🎉 🤇 পরমাত্মা চ ভগবান্বিম্ব-ा । इतार्षनः। उन्छन्त्रमान् जाः াল্ল পণ্যৈ হি জাযতে ৷৷ ভ गवहा नालची जगवहामनिश्वयः । জগৰভক্তি মাস্থায় বংস ভাগৰতো ভ গৰান্ ভূত ভব্যেশো ভূতা-🚰 🤲 বা হব্যয়ঃ। ভাবেন ত॰ ত-ে 💢 ভব ভঙ্গকর• হরি• 🏻 ভজ-६ 🖘 ा বিভু• ভগবন্ত• ভবেশর । জ্ঞা ভাগবতো ভুত্বা ভববন্ধাৎ ্ৰ লাভ্যসি॥ইত্যাদ্যে বহিপুদাণে रेबक्थव*े* ज्यारयारण यनानुभागरना सा मध्या ः॥ अ। व्यन्ताः । मह्ञा॰क्- । छभीत्रयः पू॰ दिलीशद्राज्ञश्यः । 🚅 💯 🕶 वर्ष्या॰ क्षीविगा॰ जना । 📗 বুটা তাচ শাভাচ ভগবান্ক क्यानि है।। इंडि वृक्षरिवर्र्ड 🎒 कृष क्षम्थः । २० जवतायः ॥

७गान॰ ही न्वरहाि । एका **ण नत्रम**छक्। ऐकि अनि ८०० थतः ॥ जगना महाप्तवना पर्वाः ভূষণ নিতি বু/ৎপত্তিঃ 11 ভগালী পু• শিবঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড (भयः ॥

ভिगिनी खो मरशापत्र।। उट्भर्गायः । यमा २। ইত্যনর: ॥ ভগ॰ यङ्गः পিত্রাদিতো দুব্যদানে বিদ্যতে শ্স্যা ইতি ইনি ভগিনী।ইতি ত**ৌ**কা-**বা॰** ভরতঃ ॥ স্ত্রীনাত্র•। যথা। প রিণৃহা চ বাসাস্বী ভণিনী পুক্তি নরী। ইতি শব্দ দ্রেকা॥

ভिगिनीপতिः পু॰ समृভर्छ। उৎ পর্য্যায়:। আবুত্তঃ২ ভাম: ৩। যথা । ভগিনীপতি রাবুন্তো ভাবে। বি-ঘানথাবুকঃ। ইতি নাট্যোক্তাবম-রঃ। অছে। ভগিন্যহে। ভান ন্যা वा॰ वष्ठ भाष्मना । शृक्षाम हेवा-পত্য मूङ्का र्शिमठाः मूङाः॥ ইতি ট্রিভাগবতে ১০ ক্ষরে ৪ সা धा अवस्थ

যেন গ্ৰহ্ম আৰ্নাজা। যথা। অসক প্রস্তু ভনযো হা-শুনায়ান বিশুক্তঃ। जम् भूत्या मिनीभस मिनीना इ ভগীরথ: ৷৷ যেন ভাগীরগী পঙ্গা ভপং কুরাবভাবিতা। ভগীরথস্য ভনবো সাভাগ ইতি বিশুভঃ ॥ ভাতি মালান্য ১২ অধ্যায়ঃ ॥ ভগোর পুণ্ঠ হেভগবন্ । ইতি মুধ্ব-ভগো^ন ব্যুঠ বোধব্যাকরণ সংক্ষিপ্ত সারশ্চ॥

ভগোলঃ পু॰ ভপঞ্জর॰।নক্ষত্রচক্র॰। यथा। इनानी ज्लानमाइ। या भ्याख्य किं जिब्द मृग्र विम-थ्यानाथात्र वृद्ध यूगनः थुन यश्चि व षः। यष्टेऽहर भव मम मखन वख् তীয• নাড্যাস্থ্যঞ্চ বিষুবদ্বলয• ত-(हरा। यथा थरगारन कि जिक्क-याः ন্যোত্তরঞ্চ তদাকার মপর মাধার বৃত্ত দ্বয় প্রবর্গ স্থা করে। তদুপরি व्यन अञ्जीयः नम मख्नाकातः घटी यष्ट्रेऽ।ठाव्हिज• कार्यऽ• जमाजीवृज्ज• वियुव व्य म छ ।। 🗱।। ইरानी। ক্ৰান্তি বৃত্ত মাহ। ক্ৰান্তিবৃত্ত গৃহ।-**স্কণ** বিধেষণ ভ্রমত্যত্র ভানুশ্চ ভা-র্চ্ছে হ'ভা ভানুতঃ।ক্রাতিপাতঃ পু ভীপণ তথা পুষুটা ক্ষেপ পাতক ७८ ञ्चान कानाङ्गरयर ॥ व्यथानाः ভৎ পুমাণ মেব বৃত্ত কৃত্বা তত্ত্ भिषातीन् शुक्त्रा घातमा जानार्या **२क**्राः । ত**ে** কান্তি বৃত্ত স•জ্ঞ• । ভিমান্ কৃত্তে রবি ভু নিতি তথা রবে

ভাৰ্দান্তরে ভূভা চ। তথা তত্র কান্তি পাতো মেষাদে বিলোম ভুমতি। তথা গুহাণা বিক্ষেপপাতাঃ প্-সুটা বিলোম ভুমন্তি। অতঃ ক্রান্তি পাতাদীনি স্থানানি তত্রাস্ক্যানি ॥ . 🟶 ।। ইদানী কান্তিবৃত্ত নিবেশ মাহ । ক্রান্তি পাতে চপাতাডে ষট্ কান্তরে नाषिका वृक्त नगः विम्धानिमः। পাততঃপাক্ ত্ৰিভে সিদ্ধ ভাগৈ ক্-দশ্বিকণে তৈক্ষ ভাগৈ বিভাগেপরে । ক্রান্তি পাত চিহ্নাৎ যত্তে হন্তরে १न। हिङ्का कार्य। (उ हिस्सू नाडी বৃত্তেন সংসক্তে কৃত্ব। পাত চিহ্নাদ-পুতঃ ত্রিভে প্সরে নাডী বৃত্তান্ডাগ চতুর্বি•শভ্যা উত্তরতো যথা ভব্তি । অপর ভাগে ত্রিভে হন্তরে দক্ষিণ তশ্চ তৈ মার্গৈ র্যথা ভবতি তথা ব-शीयाद ॥ अ॥ इमानी विमखनमाइ । নাডিকা মণ্ডলে ক্ৰান্তি বৃত্ত• यथा ক্রান্তি বৃত্তে তথা ক্ষেপ বৃত্ত ন্যমেৎ ৷কেপ বৃত্তন্ত রাশ্যন্ধিত তত্ত্বচক্ষে-প পাতেষু চিহ্নানি ক্রোক্তবৎ । ক্রান্তি বৃত্তন্য বিফেপ বৃত্ত**স্য**চ **ক্ষে**-পপাতে ম যড়েচ কৃত্বা যুক্তি ৷ ক্ষেপ পাতাপুতঃ পৃষ্ঠতক্চ ত্রিভ ক্ষেপ ভारिनः अर्रेष्ठेः स्नीम्यगारम् म्राम्या-শীযুকর্ণেন ভক্তা জ্রি ভন্যা ওণাঃ সূঞ

भत्राव्ह्रभ जागा गुरुागा सुरोः । **रक्रश**ृ डानि यगा विष्धाए शृथक् बन्द् उ ज्रुमछीन्मू भूबीगुराः॥ यमऽ শ্লোকস্য সমগ্ৰা ব্যাখ্যান । যথা ক্ৰাম্ভি বৃত্ত পৃথক্ কৃত এব বিমণ্ড न मिन द्रान्। हर शृथक् शृथक् कृत्र। তত্ৰ মেষাদে ব্যস্ত স্মুট ক্ষেপ পাত• मचार्गु हिङ्कः कार्य्यः। जथ कान्नि বৃত্তস্য বিমণ্ডলস্য চ ক্ষেপপাত চি इ रागः मन्त्राउ कृदा उमा८ यर **২**স্তরে অন্যঞ্চ সম্পাত• কৃত্বা ক্ষেপ " পাতাগুত জ্রিভে ২ন্তরে কান্তি বৃত্তা দুত্তরতঃ সুটেঃ ক্ষেপভাগৈঃ পৃষ্ঠত-শ্চ ত্রিভে হন্তরে তৈরেব ভাগৈ দক্ষি ণতঃ স্থির• কৃত্বা বিমপ্তল• নিবেশ-নীয়•। অথ পঠিতা যে বিক্ষেপ ভা-গা স্তে ভ্রিজ্যা গুণা: শীঘুকর্ণে ন ভক্তাঃ सु है। (क्रियाः ॥ ऋ॥ अथानुभा उः। যদি কর্ণাগ্নে এতাবদম্ভর• ভর্হি ত্রি-জ্যাগ্রে কিয়দিতি। যতো ভগোলে जिल्डाव व्यामार्खः। এव हन्द्रा हीः ना॰ यह विमल्डलानि कार्यप्राणि। स स বিমণ্ডলে গৃহ৷ ভুন্যন্তি ৷৷ 🗱 ৷৷ ইদা-নী॰ ক্রান্তি•বিক্ষেপঞ্চাহ। নাড়িকা মণ্ডল। তিৰ্য্যগ্ৰাপনঃ কান্তি বৃত্তা-ৰবি: কান্তিবৃতাছর:। (क्रश वृज्ञा यि डियं(११व. सुर्हा नाजिका वृज्ज

থেটান্তরালে ২পদ: 🖰 🕮 🖯 🔻 शुहे शुरू इतन ७४। मधीद्रायन ত্তির্য্যগন্তর• সা ক্রান্তিঃ। অথ বিম-ওলে চ যদ্পুহ স্থান তস্য ক্রান্তি वृजा॰ यजिर्ग्रगन्तरः म विष्क्रभः । অথ বিমণ্ডলস্থ গৃহস্য নাডী বৃত্তা ন-खिर्यागन्नतः मा मुहा कान्निः ॥ **%**॥ ইদানী• কান্তিপাত নাহ । বিয়ুবৎ ক্রান্তি বল্যযোঃ সংপাতঃ ক্রান্তি পাতঃ স্যাৎ। তদ্ভগণাঃ সৌরোক্তা ব্যস্তা অযুত ত্রয়ণ কল্পেনা অথন চল-न यमुक मञ्जानारेमाः म भवाय । তৎ পকে তভগণাঃ কল্পে গোস্থ-र्जू नन्म (गा हन्मु १: ১৯৯५५৯ ॥ उर সংজাত পাত ক্লিপ্তা থেটে ২পমঃ भाष्यः। काञ्चि वना खहत मूरया कत म्ल लग्नाभाग उठः (क्रभ्राः॥ का-স্তার্থপাতঃ কান্তিপাতঃ। পাভো नाग मणाजः करगाः विषुष् कास्ति वनगरयाः। निङ् जरमा स्पंतानारवव সম্পাতঃ। কিন্তু তস্যাপি চলন মস্তি । বে অয়ন চলন ভাগাঃ পৃসিদ্ধ। छ 🕆 এব বিলোমগস্য কান্তি পাতস্য ভা-गाः। तिराद्धः गृष्ठे छावछागान्छ-রে কান্তিবৃত্তে বিষুবদ্ত তণা নিত্য-র্থঃ। নহি ক্রান্তিপাতো হস্তীতি বক্তু• ন শক্যতে। পুত্যকেণ তস্যোপলক

पार एष्ट्रमन मि श्रकात मर्गु वकाः . ि । नद् कथः पुक्रसक्षाविक वि পুনৈ রঙ্গি নোক্ত ইতি চে**ং। তদা** अनुवारेख र्ताभवकः। इनानीः वर् दार माम्मुटि बभनसः। অতএব তস্য গতি রম্ভীত্যবগত । যদ্যেব भग्रम्भवाङ्गाभि मोत्रमिषास्त्राः ক্তত্বাদাগম প্রামাণ্যেন ভগণ পরি-भारित कथ रेज मिकः। मजा । অত্র গণিতস্কদ্ধে উপপব্রিমানেবা गमः भुमान । उर्क् मत्नाह भाउ **जगना जागम शुम्मात्म्रोमन कथ**े তৈ ৰুক্তা ইতি ন বক্তব্য•। যতো গু-हागा॰ मन्तरकवाजावङ्गानानि भुज्यः **क्किरे**नरवा शल छ ऽरञ्ज जारम । व मरनरा ह স্থানানি যান্যের বিক্ষেপাভাব স্থা-नानि जात्म्य भाजञ्चानानि किन्छ ভেষা• গতি রস্তি নাস্তি বেতি সন্দি-ধ্বং এ তত্র মন্দোচ পাতানা গতি র खि। हन्मु भरम्ताह भाउविषठानुनाः নেন সিদ্ধা। সাচ কিয়তী ভদুচ্যতে। रिय जंगींग क्षाना का का का नामि का नि গণিতেনগিছন্তি। ভ**ন্দ্রগণ সম্ভ**বা वार्षिकी रेपनिपती वा गिंड रर्छया। रेनवः। यम्हरेन। द्वलि छंगरेन खारनहव স্থানানি আগছুন্তি। তদা কতরুস্যা গভেঃ প্রানাণ্য । সত্য । তর্ছি সা

ম্পুতোপলন্ধ্যনুসারিণী কালি গড়ি রস্বীকর্ত্তব্যা। যদা পুন মহতা কাকে ন মহদন্তর॰ ভবিষ্যতি তেজ ্ব मिञ्चा दुक्ष छक्षातीना, जिल्ला 🚓 মিণ এব উৎপৎস্যন্তে। তদু গলকা নুসারিণী গতি মুররী কৃত্য শাঙ্কা ণি ব্যাকরিষ্যন্তি। অতএবারং গণি **७ करका महामिजमिक्त मृ**ंद्र अस অনাদ্যনম্ভে কালেপি থিজকু 🤏 যাতি। অতো ২স্য ক্রান্তি প্রভিট ভগণা: কল্পে হযুত ত্রয়ণ তাবং 🦠 🦠 সিদ্ধান্তোকাঃ। তথা সুঞ্জান্তি দয়ন চলন মুক্তং সএব ক্রাছি প্রতিত **তে গোঙ্গ जू**.नन्त (गा हन्तु। छेर क न्ऽ-**ভে! অথচ তেবা যেবা ভগ**া াৰফ । यहा (य २०मा निभूति रू% 🕸 🖂 তদা সএব ক্রান্তিপাত ইভ্রান্ত ত• বিলোমগ• ক্রান্তিপাত• 🐃 🤫 ক্ষিপ্য কান্তি: সাধ্যা॥ 🗱 নী॰ বিক্ষেপপাতানাহ। এক 🔧 বিন্তুল সংপাতাকেপ পা 🕬 🕾 । हन्मुाहीना॰ व्यखाः (क्षश्राह्म **७ (यां ब्रा: ॥ मन्त्र सू दो।** ाव ः তিম'ণ্ডলে ধে গুহে৷ ভুমত্য ১৯ জন্য পাতঃ। পাতেন যুক্তা গণিত্র নিক্রেন गना मुहीए (थहतुन्तः माता ६०१०) ।। भारं २०वा मी पुक्त किलान **কৃত্বা,স্কুটান্ডেন যুতা ছরো ২তঃ ৷ চন্দু**া न्। कक्को वलाय कि भा छः मु हो दिए । র্মধ্যম পাত যুক্তাৎ॥তথা কান্তিবৃত্ত বিমণ্ডলযো: সম্পাত: কেপপাত:। ত গুছে পুক্ষিপ্য ক্ষেপঃ সাধ্যঃ। এতদুক্ত ভবতি কান্তিপাতঃ পুসিদ্ধঃ । যথা ত॰ গুছে পুক্ষিপ্য ক্রান্তিঃ সা ধ্যত এব ক্ষেপপাত গুছে পুক্ষিপ্য সেপঃ সাধ্য ইত্যর্থঃ। অথ বিক্ষেপ পाতा मनसमुहि यट भुक्तिभाउ **७८ कात्रा नारा नन्त**त्रु हो। पुतक् পুতিমণ্ডল ইত্যাদি। যতঃ শীঘু भुजिन खल मखन यु नेगल्या गुर्हा ভমতি তত্ত্ব চ বৃত্তে পাতঃ৷ হত্যে গ ণিভাগতপাত নন্দস্কুটে পুক্ষিপ্য ক্ষেপঃ সাধ্যতে। শেষ স্পৃষ্টার্থ ॥ 🗱 ॥ इमानी छ मुक्या विलाय মাহ। যে চাত্র পাত ভগণাঃ কথি-তা জ্ঞ ভূণ্বো স্তে শীঘুকেন্দু ভগণৈ রধিকা যতঃ সুঞা। স্বল্লাঃ সুথার্থ ম্-দিতা কলকেন্দু যুক্তৌ পাতৌ তয়োঃ পঠিত চক্র ভবৌ বিধেয়ে।। চলাদ্বি শোধ্যঃ কিল কেন্দু সিদ্ধ্যৈকেন্দু স পাতে দুচেরস্ত যোজ্যঃ। অত ক वाट भाउ यूजाट का ज्यां: मूबी ভি রাদৈঃ শর সিদ্ধি কক্তা॥ সূ-টোন শীঘোচ মুতৌ স্কুটো তথোঃ

পাতৌ ভগোলে স্কট এবপাতঃ। ম-नू ज्ज मूकरगाः भीखाः भाजगुजि॰ কেন্দু॰ কৃত্বা যো বিক্ষেপ আনীতঃ স শীঘোষ স্থান এব ভবিত্মইতি ন পুছ হুনান। যতো পুছো १ন্যত্র বর্ত্ত-তে। অত ইদ মনুগ**পন্ন মিব পুতি**-ভাতি। তথা বুক্ষনিদ্ধান্ত ভাষ্যে। क मृक्तरमाः भी याह आरम यावान् বিক্ষেপ স্তাবানেব বত্র তত্রস্স্যাপি গুহ্স্য ভবভ্যভোপলব্ধিরেব বাসনা । নান্যৎ কারণ বকু । শক্যত ইতি চতুর্বেদে নাপ্যনধ্যবসাযো *হত্র* কৃডঃ । অত্যেচ্যতে। যে ২এ জ্ঞ শুক্রযোঃ পাত ভগণাঃগঠিতা স্তে শীঘুকেন্দু ভগণৈ যুঁ তাঃ সম্ভ স্ত দুগণা ভবন্ধি। তথাচ মাধবীয়ে निकाउठ्छानली পঠিতাঃ৷ অতো হল্ল ভগণ ভবঃ পা তঃ স্বশীঘু কেন্দ্রেণ যুক্তঃ কার্য্যঃ। শীঘো-চাৰ্গুছে শোধিতে শীবুকেন্দু•তিমা-ন্সপাতে ক্ষেপকেন্দু করণার্থ গুহঃ কেপ্যঃ ৷ অত স্তল্যশোধ্য কেপক-যো নাশে ক্তে শীঘুার পাত যোগ এবাবশিষ্যত ইত্যুপপম॰ । কিঞ্চ । মনদ সুটোন শীব্রোষ্ট প্রতিমণ্ড **ल उ**नकन्तुः उरभाउ (कथुः युष्)ः তে। এব ক্তে সতি কেপ কেন্দু। मन्दक्राच नास्त्रिः न्याटः। जन्दीः

क् उ॰ । इंडद्र(कमुन)। नूनना खः । व्याज् मुन्त्कन भाउ वास (मय॰ । বভো १नुभाउ मिषा চলকেन्द्र॰ মধ্যোন শীঘুাচ্ব ভবতি । যন্তু ভ গোলে কান্তিভে তৎ কক্ষা বৃত্ত• তর यहिन ওল তর সুটগুহঃ। তৎ মুট পাত যোগো হি বিকেপ কেন্দু অতঃ যু,ট পাতস্থানে সম্পাত ক্রা **তত জ্বিভে ২**ন্তরে মুটীকৃতিঃ পরস (काशाःरेम: शुायमुख्यत मिकारा b বিন্যস্য । তথা ন্যস্তে বিমণ্ডলে স্কুট গুহস্থানে বিক্ষেপঃ সুট বিক্ষেপেণ গণিতাগতে ন তল্যে৷ দৃশ্যতে নান্য (थङ)र्थः॥ 🗱 ॥ इरानी॰ गुहरगाल বিশেষ মাহ। গুহুস্য গোলে কথি- 🛚 তাপনগুল পুকল্প কক্ষাবলয় য-থোদিত ৷ নিবধ্য শীঘু পুতিবৃত্ত ন-श्चिन् विमञ्जन ७८ शिठिर महा **শৈ:।** নধ্যো**ংত্র পাত্যো**লুসেদা• ক্ত ভূয়োঃ স্বশীষু কেন্দ্রেণ যুতৌ তু যো-জ্যাঃ।ভগোল এব তাবন্গুছ গোলঃ কল্প্য: তত্র স্কুট এব পাতঃ। অথ যদি **छम् अर्थ इरिगाला श्ला** निवस्रा छः **দা ত**ত্ৰ মথোক্ত বিষুবদ্বত ক্ৰান্তিবৃ-ত্তঞ্চ বজ্ব। কক্ষামণ্ডল॰ পুকল্প ত্ত্ৰ ছেদ্যকোক্ত বিধিনা শীঘু পুতিমণ্ড লং বন্ধা তত্ৰ পুতিনগুলে গণিতা-

গতপাত নেবাদে কিলান গৃণবি-ত্বা তত্ৰ চিছ্ল- কাৰ্য্য-। অৰ্থ ত্ৰিজ্যা-व्यामार्खास्यान्यस्ख्ः ताम्यकः विम-গুলাখ্য কৃত্বা তত্ৰাপি নেৰাদে ব্য-ন্ত পাতাগে চিহ্ন ক্ত্বা প্রিমণ্ডল বিমপ্তলযোঃ সম্পাত চিহ্নে পুথমং স্পাত। ততে। ভার্দ্ধান্তরে দ্বিতী-য় কৃত্বা পাতাদগুড়ঃ পৃষ্ঠতক্ষ ত্রি-ভে হন্তরে পরম্বিক্ষেপাংশৈঃ পঠি-**তৈঃ পু**তিবৃত্তাসূত্ররে দক্ষিণে চ বি-মণ্ডলং ন্যস্যং। তত্র নন্দ সু টগত্যু পান্ননার্থিকো গুহো ভুনতি ৷ অতে भिषापि बन्ताम मन्त्र युक्ति विष्ध ल (नयः। न उबद्यः भु उन्रखनाए যাবতান্তরেণ বিক্ষিপ্ত স্তাবান্ তৎ পুদেশে বিক্ষেপঃ। যতে। বৃত্ত সংগা-তন্থে গুছে বিক্ষেপাভাব: ত্রিভে**২ন্তরে** পরমে। বিক্ষেপো নধ্যেংনুপাতেন। অতো বৃত্ত সম্পাতপুহযোরন্তর জে য । তদন্তর পাতগৃহযোগে কৃত্তে ভবতি।পাত্স্য বিলোমগত্বাৎ।স•-यागः नदायः कन्तुः। यपि विक्रा তুল্যবা কেন্দু জ্যবা পরম শর স্তদা-ভীষ্টবা নয়া ক ইতি ফল পুতি নও-षित्रिं ७ न (य) छिर्य (१ छत्र । বিন্ওলছ গুহাড়্মধ্যা সূত্ৰ ত-फ्नस्र गुराखतः मह मीयु वर्नः।

यि ज्यभग्रे कर्नालु अजावान् वि-কেপ স্তমা ত্রিল্যাগ্রে কিবানিতি দ্বি-তীয় তৈরাশিক। আদ্যে ত্রিজ্যা হ ता विजीय स्थः। जया नीः म कृत्त (क्न्यू क्रायाः शत्र नत्र खनायाः কর্ণো হরঃ ফল কক্ষা বৃত্ত সূত্রবো खिर्याश्वर सुरिमदः॥ 🕸 ॥ हेराती নহোরাত্র ব্জনাছ। ইপ্লিত কারি তুল্যে হন্তরে সর্গতো নাডিফাখ্যাদ-হোরাত্র বৃত্তাহ্বয় তত্র বন্ধা। ঘটী नाक षष्ठेऽ। ऋरयम्मऽ विक्रस्त थे ७ मूऽ कीवा मञा। নাডীব ত্রাদুত্তরতো দ-ক্ষিণতো বা সর্বতেই ক্রান্তি তুল্যান্ত রে যদৃত্ত নিবধাতে তদহোরাত্র বৃ ন্তে বৃত্তেন তিমান্ দিনে রবি ভু'নতীত্যথঃ। তদ্য বৃত্তস্য ব্যাসা- 🕌 र्षः मुर्ज्ञा ॥ 🗱 ॥ ইमानी मन्रमारु । অথ কল্প্যা নেষাদ্যা অনুলোমণ কা-'স্তি পা তাঙ্কাৎ এষা নেষাদীনা॰ দুչ-ব্লাত বৃত্তানি বঞ্জীযা**ে। নাডী**তৃত্তো ভয়তন্ত্রীণি ত্রীণি ক্রমোৎক্রমাত্তানি । কান্তি পাতাদারভ্য ত্রি•শৎ ত্রি•-म जिर्जारेग त्रन्यान (स्वामीन् शृःह्य তংগুৰুক বদংহারাত বৃত্তানি বল্লী যাৎ।তানিচনাডী বৃত্তোভয়ভাত্ৰীণি ত্র্বাণি ভবন্তি। তান্যেব জন্মেৎ ক্রীম-**७:** नायनाः भाकन्य प्रारं भन्नाभीनाकः

। #। ইদানীমস্যোপস হার:। এষ ভগোল: কথিত: থেচরগোলো হ্যমেব বিজ্ঞেয়:। ইতি সির্দ্ধান্ত শিরোমণি:।।

ভশ্ তি পরাজিত। ইতি হেনচন্দু: ।। মুটিত। চ্নিত। ভাঙ্গ।
'তি ভাষা। যথা। চিরকালোমি
ত জীর্ণ কীট নিষ্কুষিত ধনুঃ। কি
চিত্র যদি রামেণ ভশ ক্ষণ্ডিযকাস্থিকে।। ইতি ভঞ্জি: ।।

ভগ্ন ক্লী রোগবিশেষঃ। অথ ভগ্না-. धिकातः। তত্র ভগুন্য ভেদমাহ। ভগ্ন-সমাসাদ্ধিবিধ হতাশ কাণ্ডে চ সন্ধাবপি তত্র সংস্কो। উৎপিষ্ট বিশ্লিপ্ট বিবর্ত্তি হানি তির্য্যগ্ন ত॰ ক্ষি-প্ত নৃধশ্চ ষড্ধা।। ভগ্ননত্ৰ ভাবাৰ্থে ক্ত পুত্যুয় স্তেন উণ্নু: ভঙ্গু: স চাত্র বিল্লেষে। ২ভিপ্ৰেতঃ। তেন ভগ্নন-ত্রান্থিবিশ্লেষ ,লফণ । সমাসাৎ সংক্ষপাৎ। ছতাশ ছে অগ্নিবেশ । যত শ্চরকে হগ্নিবেশস্য হৃতাশে-তি নামান্তর মুক্তণ কাণ্ডে সন্ধিপ-र्यप्रस्त अन्यत्थ। यक्षिमस्त्री हत्या ब्राखुः नहान ज्ञात । उब मक्ती উৎপিষ্টানি ভেদিঃষট্পুকার•ভগ্ন• ভৰতি ৷ যল্ল বভাৰ্যত্বেন সন্ধিভগ্ন-जाति विवद्गाः उद्धि जाि ।

ज्यः जायाङः।। 🗱 ।। मिक्र ङः। म मामान्। विक्रमार्। भुमात्रगाहकः ন বৰ্জনোগু৷ কক্ স্পৰ্শ বিদ্বেষণ মেত দুক্তণ। সামান্যতঃ সন্ধিগতস্য লিঞ্চ मूट शिष्ठे मासः ययपुः ममसाट।। वि শেষতো রাত্রি ভবা ৰুজশ্চ বিশ্লিষ্ট কেতৌ চ ৰুজা চ নিভ্যুণ। বৰ্ত্তন প तिवर्खन ।। क्षा उँ ८ भिष्ठे में विक्रमा ह । উৎপিষ্টসঙ্গে: উৎপিষ্টঃ দ্বাভ্যা মহিভ্যা॰ পিষ্ট: সন্ধি র্যস্য তস্য । সনন্তাৎ উভয় ভাগদ্যোঃ। বিশ্লিপ্ত মাহ বিশ্লিপ্ট ইত্যাদি। ভৌ উভযতঃ শোথৌ। ৰুজা চ নিত্যু সদা ৰুজা ধিকা ভবতীত্বুৎেপিষ্টান্ডেদ:।। #॥ বিবর্ত্তিতর্য্যন্তাক্ষিপ্তাধোগতানা-হ। বিবর্ত্তিত পার্শ্বক্রশ্চ ভীত্র। স্তি-ৰ্য্যন্নতে ভীবুৰুজো ভবন্তি। ক্ষিপ্তেংভি म्ल॰ वियमक मक्रयाः किल्छ व्रथा ৰুক্ বিঘটশ্চ সন্ধেঃ।। বিবৰ্ত্তিতে স-ন্ধাবমুক্তে। অস্থিদ্বযোপরিবর্তিভে পাশ্ৰজঃ সন্ধিছিতাছিখণ্ডদ্ব পা-র্ম্ববো ৰুজঃ । তির্য্যগুতে সন্ধিপতে । একদিয়ালু সন্ধিস্থান ত্যক্তা তি गुप्ताल किएथ मक्ष्याः केंबमस्त्राः । এক্ষিয়স্থি পরস্যাস্থ্র উপরিণতে । সকথোঃ অতিশ্ল তত্র বিষম कना जिम सिक॰ कमा हिम्रान॰। व्यशः ।

ক্ষিপ্তে পদ্ধিগতে এক মিম্বাস্থ্য অধো-गाउ । कक् माम दिवहेः विवहेनक ।। 🗱 ।। কাওভগু মাহ। ভগুঞ্চ কাঙে বহুধা পুযাতি বিশেষতো নাম্ভি রেব তুল্য । ভশ কাণ্ডে কাণ্ড বিষ-যে বহুধা বহুভি: পুকারৈ: পুষাতি। -অত্র বহুবিধত্ব• দ্বাদশ বিধত্ব• বো-ष्कवा । বহুবিধস্য কাণ্ডভগ্নস্য পৃ-থক্ লক্ষণ নোক্ত কিন্ত কাণ্ড না-মভি রেব তুল্যন্ত্র•া কর্কটকাদি না-মানুৰ্প নেব লঞ্চণ কিন্তু নামভি রেব বোদ্ধব্যº ॥ श्रः। তান্ পূর্কারা-নাহ। কাণ্ডে বৃতঃ কর্ক টকাশ্ব কণৌ বিচুর্ণিত পিটিত মহিছল্লিত । কাণ্ডেষু ভশ় খ্রিপাতিভঞ্ ম-ভ্যাগত॰ বিসু টিতঞ্চ বক্ত ।। ছিম। দ্বিধা দাদশধা চ কাণ্ডে। অত: সন্ধি ভগ্নানন্তর• কাণ্ডে কাণ্ডভগ্নে তদাহ। कर्क हेकः अञ्चिति भूष भूर्व का म-ধ্যে পোরতঃ পাশ্বযোরবনতঃ কর্ক-ট তুল্য नभदार कर्क हैः। जायकर्गः व्ययकर्गविष्ठभूनाञ्चि निर्ममामयकर्गः । বিচ্ণিত চ্ণিত মস্থি তह শব স্প-শভিগ্ন বোদ্ধব্য । পিচ্চিত নস্থিনি যক্রিত বহুশোথ। ছল্লিত বিশ্লি र्षे मगुक् मुव । कार्ष्य जा काष **७११ । यहाभि कर्करेकामि गर्दरग**व

কাণ্ডভগ্ন• তথা পি ইয় কাণ্ডভগ্ন স•-জ্ঞাৰিশিষ্টা। মত্ৰ ভা; ভঙ্কঃ তুটিঃ। তেন সৰ্থা তৃদ্ধিত পৃথগ্ভূত ভ্চি স্থিত যদ কাণ্ডণ তৎ কাণ্ডতগ্ৰন। অতিপাতিত অশেষেণ ছিত্বা পা-**তিত মস্থি। নজ্যাগত॰ অস্থ্য**বয[়] বো ২স্থিনধ্যে পুৰিশ্য মজ্জানং গত• ৷ বিশ্ন টিভ• স্তোকবিদীর্ণ• ব ক স্থান ভ্যক্ত্বী সন্ত্ৰীভূত । ছিন্ন দ্বিধা এক বিদীর্ণ সংলগ্ন অপরণ विनीयं। विधाज्ञः । बामभेषा ह কাণ্ডে। কাণ্ডেচ ভগ্ন- দ্বাদশ্বেড্য नुबः। उद्घाक्तरम्य कर्क हेकामि॥॥॥ কাওভগুস্য সামান্য লক্ষণনাহ। সুরাঙ্গতা শোথ কলাতিবৃদ্ধিঃ স•-পীড্যবানে ভবতীহ শব্য। স্পর্ণা-সহ• স্পান্দন তোদ শ্ল• সর্বায়ব-্স্থাস ন**্শর্ম**গাভঃ ৷৷ ভগুৰ্য কাণ্ডে थल हिंद्र (मंडिंश न्यामां मंह सि **তि** काञ्चञात्र। दिष्णवर्गः न्यामत्तरः नाफीना॰ सुत्रगः भृषाः भृषान्य व्यथा। क्जां नागाना शीछा। न विधिवंद्राम् भगगमना किषु ॥ 🗱 ॥ क्षेत्रायात्रभाष्ट्र । अन्नामिता ,श्ना আবতো জন্তো বাতাআ্রস্য হ। छेतपूरेव वी जुडेमा जुगः क्रह्म नि ধ্যতি। অনাত্মবতে। রোগপু নিকা

রে যত্নাহিতস্য। লাভ্যান্ত স্যাত वाज्युक्राः। छेन्धुदिः कृज्ञाक्षान নোহ মূত্র পুরীষ সঙ্গাদিভিঃ।। 🕸 🛚 অসাধ্যমাহ। ভিন্ন কপাল ক ট্যান্ত সন্ধিয়ুক• ভথা চু**ুত•। জঘন•** প্রতিপিষ্টঞ্চ বজ্যবন্ত দ্বিকিৎসকঃ।। কপাল জানু নিভখাস গণ্ড ভালু শন্ধ বন্ধুন শিরো হস্থীনি কপালানি তথা চ্যুত্র• তথা ফিপ্ত•। পুতিপিষ্ট• উৎ পिष्ठे ।। क्षा भून तमाया मारु। व्यमः निष्ठे कथानक बनाएं ह्रिंड-थ यट । जन्न खर खरन स्ट्रि महा মূর্দ্ধনি বজ্জদেং।। অসংশ্লিষ্ট কপা-লমিতি ভগুবিশেষণ । স্তনে স্তন্যে। রন্তরে উরসি। মৃদ্ধনি চূডাজ্বনে ॥ 🗱 ॥ जभत्र मभामाया मारु ॥ मग्रक् मः क्ञि मश्रक्षि पूर्वप्रमाष्ट्रहे वक्तनाए। अंश्का जावानि यहारहि ক্রিয়াণ তচ বর্জ্যেৎ।। সম্যক্ সংহি-ত নপি সম্যয়োজিত নপি অস্থি নু-র্ন্যাসাৎ দুঃস্থাপনাৎ সংন্যন্ত নি मुश्रेतस्तार मृत्यसमि मारकारा चिविश्वाहिना मक्ष्मनाथ यिष्ट किया शहर विकृष्ठ उविक उवर्क (१९ ॥ 🗱 ॥ यहिनि (मास) उप विष्मव मार । उक्षाशीमि नम्रास्त जिराउ गणकानि जू। कशावानि

বি ভীজ্যতে সুটন্তি কচকানি চ।। ত ॥ क्वाइनि घ्रानकर्वाक्ष श्रम् व्यागः লাস্থীন নম্যন্তে বকীভবন্তি।তেনা ত্ৰ বক্ৰতা লক্ষণ ভগ্ন•। নলকানি ন लाहीनि गांडीवट अद्रक्षांगुष्टि श-र्वानि ভिरास अङ्ग्डितानुभूतिणीः षिशीर्यप्रस्काकशाना कानू नि उम्रा॰-স গণ্ড তালু শত্ব শিরো ২ইটনি বি ভদ্যন্তেমু টভিকচকানি দখাঃ সু টভি ত্ৰটন্তি। অস্থীনি তৰণা নলক কপা ল ক্চক বল্য ভেনাৎ পঞ্চবিধানি। ভব ক্রকানি চেতি। চকারাদ্ব্যা ন্যুলি তুট্ভীতি বোদ্ধব্য । পাণ্যোঃ পাখ দুগে পৃষ্ঠে বক্ষো জঠর পাযুষ্। পাদশোরপি চান্থীনি ব**ল**য়ানি বভা বিরে।। 🗱।। অথ তণ্নস্য চিকিৎসা । তয়ে লেপায নঞ্জিষ্ঠা নধুকঞাষু-পেষিত । শতথোত ঘ্তোমিশু ना विशिष्ठक (वश्ने । विशिष्ट शि ষ্টিক লবণৈ রম্মীকা ফল রসাভ্যা ৰা। সদ্যোভিং।তজনিতা রাগক का यग्थवः भुभागानि । मघ् उका छि স হার॰ লাকা গোধ্ন মজু বি । সদ্ধি ভণ্নে হস্কিসম্ভণ্নে গিবেৎ ফী-ति वा भूनः ॥ घ्टिन भिवट की (त्र (वठ)र्थः। **ज**ञ्चित्र हातः रुष সি হার ইতি লোকে॥ রসোন।

মধু লাক্ষাজ্য সিতা কল্প: সমশ্রতঃ । ছিম ভিম চ্যুত।স্থাঞ্চ সন্ধান ম-वित्रास्ट्रवर ॥ **जाकाश्चिमः**हरू কলভাশগন্ধা চ্ণীকৃতা নাগবলা পুরশ্চ। সংভগ্ন মুক্তান্থি কজো নি-इन्डामकानि अर्येऽ। अवित्माश-মানি॥ অভি সংহ্ হরসি হার । वाकारिख्शुवुः ॥ 🕸 ॥ मा॰म॰ भारत तमः कीतरं निर्विष्यः कला-यकः। वृ•श्राक्षात्र भानस्थ (मयः छ-গা্য জানতা ৷৷ লবণ কটুক কারণ महा रेम्थन माज्यः। क्क्मनः শুনঞ্চাপি ভগ্নঃ সেবেত ন কুচিৎ!৷ ইতি ভাবপুকাশে ভগ্নাধিকার: ॥ ভগ্নপাদর্ক क्री পৃষরাখ্যনক্ষত্রষট-कः। यथा। शून वं भृखदायाता कृ खिः হোত্তঃকল্পুনী। পূৰ্বভাদু বি**শাখা** চ ষডেতে পুষুৱা: মৃতা: ॥ ভা^{নু} পাদক্ষ সংযোগাৎ দ্বিতীয়া দ্বা-म्भी यमि। जलभी ठाकं सन्ताः इ জাযতে জারজোপুর•॥ ইতি জ্যো**•** তিস্তত্ত্ব ॥

७गुन्धः न् नम् गः। ই वि विकाखः (भ्यः ॥ मृष्टिव्याक्तर्थः । यथा । छग्न् क्षे क्षि गीतः स्वाप्ति श्राधः मृथः। क्षेत्रेन विश्विः श्रुष्ठः युद्धन পরিপাল্যেশ। ইতিপুচিনিকাক্তः छग्नमिक्षः शृः मतीत्रम् मिक्षः । छत्र त्तागिति मिषः । ज्ञाने स्वरं य-था। य छ्या जिल्ला त्यादः मदि-त्ति ज्ञिः मनीक्रिः । ज्ञान छ्युन्-ना या जित्रा ज्यामिक भुमात्रकः ॥ ইতি गाक्ष ५१० यथ्यायः ॥

७गुमिक की खाल । इंडि मर्स-ठिन्मुका ॥

ভগাত্বা পুণ চন্দুঃ।ইতিশব্দ নিদুকা ভগাশঃ ত্রি হতাশঃ। দীর্ঘতৃফাভ প্রযুক্তঃ। যথা। অতিথি র্যস্ত ভগা শো গৃহাৎ পুতি নিবর্ত্ত। সত মৈ দৃষ্ত দত্তা পুণ্যমাদায় গছতি ।। ইত্যাহ্রিকতত্ত্বণ।

ভণ্নী জ্বী ভগিনী। ইতি দিবপ কোৰ: ॥

ভঙ্কারী ন্ত্রী দ॰শঃ। ইতি দ্রিকাণ্ড-শেষঃ॥

ভদ্ধাঁ ত্রি ভঙ্কবর্তা। ভন্নধাতোঃ কর্ত্তরি ভূন্পুত্যযেন নিয়মঃ।।

ख्यः भू उद्रवः। ইত্যমরः॥ भरा-बयः ॥ जिनः॥ রোগবিশেষः। ইতি মেদিনী॥ কৌটিল্যः॥ ত্यः ॥ বিছিজি:। ইতি হেমচ্দুঃ॥ রোগনাত্রং। ইতি রাজনিঘণ্টঃ॥ গানং॥ জলনির্গনঃ । ইত্যজ্য- ভक्रवात्रा जी रतिमा। ইতি শব-त्रजावणी॥

ভ**द्रभार्थः जि स**िनः। ইতি हाता वनी ॥

छन्न। ज्ञी नृक्षः वित्मयः। उৎ পर्यऽ।-**़ यः। गाज्जा**नी २। ইত্যनदः ॥ त्व **७३**गगा ७३। का भी तब् सनान থ্যাতা । ইতি সুভূত্যাদ্যঃ । ইতি ভরতঃ ॥এতস্যাঃ ফল কলাযপ রিমাণ নিতি সর্বধ। ইতি সারসু-न्त्रती।। नगार्भा नगाः। यथा। ज्या मात्र। मगास्या । इंडि मूब्रेष्ठ ब्मु: ।। 🟶 ।। विवृত।। তেউডी ইতি ভাষা। যথা। ত্রিভণ্ডীরেচনী ভঙ্গা কলিস্থা পরিপাকিনী। ইতি শদ্-**इतिमुका ॥ अयुर्वितम्यः । जा**ङ् ইতি নিদ্ধি ইতিচ ভাষা। যথা। বৈলোক্যবিজ্ঞয়া ভঙ্গা বিজ্ঞয়েন্দ্রা-**णनः** जया । इंडिंচ **ण**यः जिनुका ॥ चामा अनाः विक्या निष्कु पुष्ठेवाः॥ **७क्षानः शुः न८्म**ऽति । ভाक्रन

डक्षानः भु• सद्भागितः। जाक्रन इंजि जावा। उद्भर्यग्रायः। पीर्यकः क्रवः २। ইजि শক्ष्मावा।।

ভঙ্গারী জ্রী দশ্য:।ইতি ত্রিকাণ্ড. শেষ:।।

ভঙ্গিঃ স্ত্রী বিছেদঃ॥কৌটিল্যভেদঃ
। ইত্যনরভরতৌ॥বিন্যাসঃ।ইতি

केलिकः । करझानः । ইত্যৰুণদত্তः ।। ভক্ষঃ । ইত্যন্যে ।। ব্যাজঃ ।। ह वाने डः । ইতি র ভদঃ ।।

ভিন্নি প্ৰা ভিক্স:। যথা। অধরে ক দ্বলা চাৰ দুশো স্তামূল রক্ষিমা। প্রাণনাথ কিমেডত্তে বেশ বিন্যাস ভক্ষিমা॥ ইভি কাব্যচন্দ্রিকা॥

उन्नी जी उन्नः। यथा। जानानि नान मनमान्दि वर्हा विज्ञी । ज न्दी मंज न्यनयात्र नि हाजूती । जाजीत नन्दन मूथा पृक्ष मन्मी व मीत्र वा यहिन मा नव मीक द्वा-जि॥ इजु । जुड़े ।।

ভকুর: ত্রি ফটিলঃ। ইতিজটাখরঃ॥ ভকুরঃ পু॰ নদ্যাবস্কঃ। নদীর্থাক ইতিভাষা। ইতিশবনালা॥

ভঙ্গুরা জী অভিবিষা।। প্রিযক্ষু:। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।।

खक्रा॰ क्ली खक्राक्क्बं । जल्मर्गायः । जाक्रीन १२। इंज्रमब्र ब्राजी ।।

ভচক প্রী রাশিচক। যথা। ভুমাবর্ত্তা ভচকে প্রমন্ধুবোনাভৌ ব্যবস্থি-তঃ। আরাচকে দ্বিন্দু ভৌনৌ শুক জীব শনৈ চরাঃ।। রাহঃ কেতুরগ ভ্যাত নক্ষ নাণ্যথ রাশ্যঃ। যদা দি-ভ্যাত লক্ষ নাণ্যথ রাশ্যঃ। যদা দি-ভ্যাত লক্ষ নাণ্যথ রাশ্যঃ। যদা দি-

बित्रहाफिनः। मूर्तिर मर्। क्राना গোলক ছাযয় ভবেশা অন্যোৰ্ या ख्या (त्रव व्याक्र या (त्रव कात ণা । পু।সমোক্ষো তু ভাযেতে ত ৰাতঃ পূৰ্বপশ্চিমৌ ৷৷ তত্ৰ পূণ্য ফ লান্ডাগঃ কৃতো রাহোস্ত বিফুনা : इंड्राप्त्र विश्व भूतारा भगछि मा-माध्रायः ॥ 🗱 ॥ जथ ভচক ভুমণ वावञ्चा मारु। नित्रकारिंग किंछि মণ্ডলোপগৌ ধুবৌ নরঃ গশ্যতি मिकारिशाखाती जमान्त्रिकः (थ इन यखब्द जमा जुम क्रम कि मख-কোপরি ৷৷ উদ্মিশ যাতি যথা যথা নর স্তথা তথা থানত মৃক্ষ ন ওল । উদগ্রুব পশ্যতি চোম ত ক্ষিতে ওদন্তরে যোজনজাঃ পলাং শকাঃ৷ধোতন ৰংখ্যা ভাংশৈ ৩৬• র্গ্রিতা স্পরিধি স্তা ৪৯৬৭ ভব-स्त्राः। ज्तो ककायाः वा जाताः ভ্যোযোজনানিচ ব্যস্তণা ইতি সি-कार्सनिद्धानित्रा (गानाश्रायः ॥

ভন্ন এ ও ভাগসেববোঃ।ইতি
কবিবল্পদ্দঃ !! এ বিভন্নতি বিভততে ধন ভাতা। ও অভান্দীৎ
কুন্দ সংখ্যাইতি দুর্লাদাসঃ !!
ভন্ন ক পাদে।ইতি কবিবল্পদ্মঃ !!
ভাত্যতি ! বিশ্বাদেশই ভিপ্নাঞ্চঃ

া বিশানন দান । ইতিদুর্গাদাসঃ॥
ভন্ন ই ক ভানি। ইতি কবিকল্প ফালা ই ক ভার্মতি। ভাসি দী-প্রো। ইতিদুর্গাদাসঃ॥ ভার্ম কি ভাগকর্তা। সেবাকর্তা।
ভার্ম কি ভাগকর্তা। সেবাকর্তা।

জন ন্ধী ভাগ: ॥ সেবা । ইতি লন্ধনতো ভাঁবে অনট্ পুত্যবেন নিন্ধনাদারাস্তেবে ভলন নহাবাঃ প্রেশেস্তেবে তদ্ধনকাষাঃ। ধননপি ক্রিনিটি জনার্থ-নোচেনেতৎ স ্থিনিটি লোহমুদ্রঃ ॥

रव^{्ष}नह्म•॥

ভারত: ত্রি ন্যাগ্য । ন্যাগাগত
দুর্যানি:। ইভ্যার: ॥ ভাগকর্তা
।বে ।কের্ত্তা। ইতি ভঙ্গপাতো: ক-র্ত্তরি গান প্রত্যবেন নিয়ন্ত্র ॥

ভারতঃ বি ভঞ্জনকরা। ভনক্তিয়ঃ ইত্য র্থ ভন্নধাতোঃ কর্ত্তরি ণক পু-ভাগেন নিম্নমঃ।।

ভঞ্জন বৈ বর্ত্তমানতজ্ঞনাশ্বং। ইতি ভলাতোঃ কর্ত্তরি শত্ পুত্যবেন নিবাং।।

 ভবেদ্বস্য দম্ভভক্ষ জা ক বাত ক্তো ব্যাবি: স ভঞ্জনক সংক্তিত:।। ইতি সাধ্বকর:।।

ज्ञकः भू॰ (मवन्नाण्युज्ज्कः। ज्राप्तिः। काहिमः २। ইज्रि जिकाश्राम्यः॥

ভঞ্জা জী অন্নপূর্ণ। যথা। তীতিহা
ভযহজী চ ভাবনাবশবর্ত্তিনী।
ভীমান্ধবাসিনী ভঞ্জা ভিত্তিসংবিতি বর্দ্ধিনী।। ইতি ক্দুযাসলো সপ্তবিদ্যারহস্যং।।

ভট • ভ্তৌ। ইতি কৰিন লক্ষনঃ ॥
ভিতি বিজ্ঞান পাৰণ ৷ কৰ্মনুল্য মিতি গোবিন্দভটঃ ॥ ভটতি ভ্ত্য
শ্বামী ৷ ইতি দুৰ্গাদাসঃ ॥

ভট ন ভাষণে। ইতি কবিকল্পদ্ধনা। ন ভট্যতি। ভাষণ কথন। ইতি দুগাদাসঃ।।

ভট: পু॰ বোদা। ইত্যনর: ।। স্লেছ-ভেদ: । ইতি হেনচন্দু: ।। বীর: ।। পানরবিশেষ: । ইতি নেদিনী ।। রজনীতর: । ইতি শব্ররাবলী ॥ বর্ণসক্ষরবিশেষ: । যথা। বর্দ্ধরা-রাভটো জাতো নটিক্যা বরবাছ-কঃ। ইতি পরাশরপদ্ধতি: ।।

ভট। ত্রী ইন্দুবাফ্গী।রাথালশসা ইতি ভাষা।ইতি রত্নলামা॥ ভটিক ল্লী শ্লপন্না সাদি। কা বাব ইতি পারস্যভাষা। ইত্য-মরঃ॥

ভটঃ পু• জাতিবিশেষঃ৷ ভাটইতি ভাষা। তস্যো**ৎপত্তি র্যখা** ৷ বৈ-मारायाः मृ मुवीर्यारा भ्रमातिका वः ज़्दर । न ভটো বাবদ্ক**শ্চ সর্বে**: वा॰ स्रिञ्जाठेकः॥ ইতি वुक्ररेवर र्खि वृक्षथए७ ३० जन्नतायः ॥ जनि ह। कवियाह्मिनुकन्यायाः जरहे। জাতো হনুবাচক:। ইতি যুধিষ্ঠির পরশুরাম সংবাদে জাভিসক্ষর লক্ষণ ।। শিবিরান্তিকে রাজ্ঞা ত স্য বাসো দেয়ঃ। ৰথা। বান্ধাণ ক্ষত্রিয় বৈশ্য সমূদু গণক শূভ। ভউ বৈদ্যে পুত্রকার। স্থা-পযেৎ শিবিরান্তিকে ॥ ইতি বৃক্ষ-বৈবত্তে শ্ৰীকৃষ্ণজন্মখণ্ডে ১০১ অ-भ्रायः ॥

ভটাচার্য্য: পু॰ তৃতাতভউনত॰ নী
না॰সাশাস্ত্র॰ উদ্ধনাচার্য্যনত॰ ন্যা
যশাস্ত্র॰ এতদুভ্য শাস্ত্রবেক্তা। এ
তদুভ্যনত॰ জানাতি যঃ ইত্যর্থে
চবেকাদিতি কারকাৎ কর্ত্তরি অ
ণিতা ফ পুত্যুয়েন নিয়মঃ।।
ভটারঃ ত্রি পূজ্যঃ। ইতি ত্রিকাপ্ত
শেষঃ।।

ভটারকঃ 'পু॰ নাট্যোক্তোরাজা। ইত্যমরঃ ।। দেবঃ ।। তপোধনঃ । ইতিমেদিনী ।। প্রেড ত্রি ইতি জ-টাবরঃ ।।

ভটারকবার: পুণ রবিবার: বিথা । সথে সাযু নির্মিত পাশা উদদ্য ভটারকবারে কথনেতান্ দক্তিঃ শ্পশানি। ইতি হিতোপদেশে ১ পরিছেদেকাক পুতি ভদুকবাক্য ।। ভটিঃ পুণ স্থান খ্যাত রামকথা-

চাড়: প্ স্থানখ্যাত রামকথাশুণ মহাকান্য । ততু বল চীবান্তব্য প্রীস্থানিস্নু ভউ মহাবাৃহ্মণ নহাবৈথাকরণেন কৃত্ণ। ইতি জ্বথনঙ্গলকৃতা তউাকা।। এতৎকান্য ও ভত হরিণা কৃত মিতি ভরত মল্লিকেন লিখিত।।

ভিডিনী স্ত্রী নাট্যোক্তৌ অক্তাভি-ষেকারাজপন্নী। ইত্যনরঃ॥ ব্রাহ্মণ ভার্য্য। ইতি সেদিনী॥

ভড ইড বাচি।ইতি কবিকল্পদ্ম:

।। পরিভাষণ ইতি গোবিন্দভেউ:

।। পরিহাস ইতি চতুভু জ: ।। ই
ভণ্ডতেড ভণ্ডতে শিল্পা লোক:।
ইতি দুগাদাস:।।

ভক্ত ই ক শিবে। ইতি কল্পজনঃ॥
শিব॰ কল্যাণক্রিয়া বেদেয়ের ।
পুতারণে পুনিজো ২য়ণ। ইক ভণ্ড

यि भुजातका मूथः धनमानाशीः कारतमा रेहिः पूर्वामानः ॥

खंडः कु वर्गनेकत्रकािवित्मयः।

नेज्ञानि जीवत्र कन्यायाः कानः

क्षि। (क्षेत्रे खीवत्र कन्यायाः कन्यानीम यात्रान्। माझः मझः गाः

जत्रक ज्रष्टः (कानकः कन्मतः॥ ইতি

कुत्रतिवर्द्धवृक्ष्य (७) व्यक्यायः॥

ভিতিকঃ পু॰ সেবকঃ।। শ্র:। ইত্য-ণাদিকোকঃ।।

ত্ব প্র শদে। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ।।

শ্ব অবীভণৎ অবভাণৎ সচেহ

ব্যক্তবাক্যং। শ্রীজনদেবকৃত হরি

সেবং ভণতি পরন রমণীয়া। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

ভণিত বি শব্দিত । কথিত । যথা। জ্রীন্ধানের ভণিত নিদমন্ভূত • কেশব কেলি রহস্য । ইতি গীত-গোবিদা: ।।

ভণিতিঃ স্ত্রী বাক্যণ। ইতি ভ্রিপু-যোগঃ ত্রিকাণ্ডশেষক্ষা।

खिकी जी वार्ताकी। इंडामद्रः॥ वृश्जी। इंडिद्रद्रमाना॥

७ के के श्रेष्ट के प्रामाक के कि । इंडि इस नामा ॥ अ बिहर के क्रिकालि भार्यः ॥

ভঙঃ পু॰ স্প্লীলভাষী।ভাঁডইতি

ভাষা । ইতি সংক্ষিপ্তসাজাণাদি বৃত্তি:।। তৎপর্য্যায়:। চার্টুপট্ট২। ইতি ভূরিপুযোগ:।।

ভণ্ডकः भूः **चक्षनभक्षी। ইতি कर्राः** धरः॥

ভণ্ডন• ক্লী কবচ•॥ যুদ্ধ•॥ **ধলী**• কারঃ। ইতি মেদিনী॥

ভণ্ডহাসিনী জী গণিকা। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

खिः बी वीहिः। ইতিহারাব**দী**।।

ভৃত্তিক। की मिक्किश। ইতি नम्ह त्रञ्जावनी ॥

ভণ্ডিরঃ পু• শিরীষবৃক্ষ:। যথা। ভণ্ডিলো ভণ্ডিরো নেমীতি ভরত-ধৃত বাচস্পতি:।।

ভণ্ডিলঃ পূ• শিরীষর্কাঃ। ইড্য-মর:॥

ভণ্ডিল: বি শুভ:।। দূত:। ইত্যু-ণাদিকোষ:।। শিলী। ইতি সংক্ষি-গুসারোণাদিবৃত্তি:।।

ज्थी जी मिक्षिष्ठा। इंजानदः॥ नित्रीयद्कः। इंजि ताजनिर्यणेः॥

ভণ্ডীতকী স্ত্রী নঞ্জিষ্ঠা। ইতিভাব-পুকা**শঃ**।।

ভণ্ডীরঃ পু• সন্ধিলক্ষুপঃ। তণ্ড-লীযশাকঃ॥ শিরীষ[্]ফঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥ ভণীর ল তকা দ্রী মঞ্জিষ্ঠা। ইতি। রণত বিষ্টিঃ।।

क्रीती जी निक्षिष्ठ। ইত্যमतः॥

७ भीतः भू मिक्षिशा**इं मिक** त्राप्ति॥

ভঙ্ক: পৃ নৎস্যবিশেষ:। ভাষর
ইতি ভাষা। অস্য গুণা:। নধুরত্ব॰
। শীতত্ব॰। বৃষ্যত্ব॰। শ্লেমকরত্ব॰।
গুৰুত্ব॰। বিষ্টাত্তিত্ব॰। রক্ত পিত্তহর
ত্বঞাইতি ভাবপুকাশা:।।

ভঙ্গ: পু॰ শ্যোনাকবৃদ্দ: । ইতি রল্পালা।।

ছদ ই ড হর্ষে।। প্রীভৌ:। শুছে। ইতি কবিকল্পন্য:।। ই ভন্দ্যতে। ড ভন্দতে পণ্ডিত: সদা। ইতি দুর্গাদাস:।। '

ভদ ই ক শুভে। ইতি কবিকল্পজন:
।। ইক ভন্দে ভি। শুভ কল্যাণক্রি
যা। ইতি দুর্গাদান:।।

ভদন্ত: পু॰ সৌগতাদিবৃদ্ধ:। ইতি ক্ষেত্ৰস্ক:।। নাবাদেবী সূত:।। সু॰ তেজ:।। পৃদ্ধিতে ত্রি। ইত্যাদি-কোব:।।

ভদাক: পু: ক্লী নঙ্গল:। ইত্যানি । কোষ:।।

ভृषु॰ क्ली गव्यवः॥ मूखः॥ काक्षनः। इंडि भिनिनी॥ जुर क्षी की कत्र शास्त्र शिक्ष क्षित्र शास्त्र शिक्ष क्षित्र शास्त्र शिक्ष क्षित्र शास्त्र शिक्ष क्षित्र क्षित्र शास्त्र शिक्ष क्षित्र शास्त्र शिक्ष क्षित्र शास्त्र शिक्ष क्षित्र शास्त्र शास्त शास्त्र शास्त्र शास्त शास्त्र शास्त शा

ভदुः वि (क्षुष्ठः ॥ माथः । हेर्निः स्म िनि ॥

जनुक॰ ही जुनुउक•ार्ड श्वा नावा॥नताद्धाः राउ विका-अम्मरः॥

च्रुकः शू॰ (स्वराङ् । ইতি वेऽः त्रज्ञावनी ॥

ভদুকণ্ট: পু॰ গোক্ষ্য:।ইডিঃজে নির্ঘণ্ট:॥

जुकानी खी गर्निता काजा-यती। ইতি मिनिती।। जना उट-भीति यथा। बिश्वेद केटा मिन् पुन्न मार्नि जन्ति भीत्व भूता । शुम्ब् जा नहाजामा महिस्या

,नरेदव जू। महिवाजुद अवारमी निम्ना-या॰ निर्णिश्वर्वा ।। यग् भूमप्रण वीद्या- नाक्नी (शायम मनि । महामा-যা ভদুকালী ছিন্তা থল্পেন কাশার•॥ প্রদৌ তস্যুক্ত রক্তানি ব্যাদিতাস্যা-তিভীৰণা। ততঃ পাত ভ্ৰযুতঃ স-দৈত্যে মহিষাসুর:॥ তামেব পূজ-যামাস সুচির• সানুগ স্তদা। আরা-विजा जना (नवी महिरयना मुद्रिश देव ॥ পাুদুভূ তা ভদুকালী ভুলৈ: या-ড়শভি যু তা । ততঃ প্রণম্য মহিকো ग्रामाया जगन्मयी ।। উবাচেদ व-চো ননুমূর্ত্তি ভক্তিযুতো হসুরঃ। ম श्यि उवाठ। प्रिवि थ्राञ्जन मः हिम् শোণিতানি শিরে। মন। দ্ব্যাভুক্তা-নি দৃষ্টানি ন্যা স্বপ্নে সুনিশ্চিত ॥ অবশ্যু তত্ত্বা কাৰ্য্য ম্বা জ্ঞাতণ পুমাণতঃ ৷এতজ্বির পান• নে তরৈ-**क॰ (रुट्टि (न** वंद्र• ११ वंध्र खवा ह• ना-ত্রান্তি সংশ্বঃ পর্মেশ্বরি। নৃন্পুপি তত্র নে। দু:খ নিযতি: কেন লড্ব্যতে **৷৷ কিন্ত ত্থৈব সহিতঃ শ**ক্তু রারাধি-তঃ পুরা। মম পিত্রা মদর্থেন জাতঃ भणापरः छ**ः॥ म्यान्यात्रास्**छः শসু: পুাপ্তা ক্ষেষ্টা তথাবরা:। নব-खत्रवयः यावपानूतः ताका मूखने ॥ অকণ্টক ম্যা ভুক্ত মনুভাপো ন

বিদ্যুত্ত কৈত্যাখনেন মুনিনা শপ্তো **२२: भिया काजगाटा। मीमस्त्रिमी वि** নাশ তে করিষ্যতি ন সংশয:। পুরা মুনি তপস্যস্ত রৌদাশ নানচোত্ত-ন•11 মুনেঃ কাত্যায়নাখ্যস্য শিব্য• হিমবদন্তিকে। দিব্য জ্ঞীৰূপ মতুল क्षार कोज्का खरा॥ नया मः मा হিতো বিপো হও। জন্চ স্তদা তথা:। न म्त्रा॰ जिंदि एउनाइ॰ मूनिना का-**ত**। সূন্না ॥ জ্ঞাত্বা মাধা॰ তদা শপ্তঃ नियार्थ काथ विद्या। यमाज्या মে শিষ্যো হয় মোহিত স্তপস ক্যু তঃ ॥ কৃত স্তৃথা ক্ৰীৰূপেণ তত স্তৃত্য ন্ত্রী হনিষ্টি। ইতি নাং শপ্তবান্ পূর্ব• মুনিঃ কাত্যায়নঃ পুরা 11 তস্য শাপস্য কালো প্র মাগত্য সমুপ-श्चिः। (परवन्मुषः भया श्राधः ज्कः ত্রিভুবন• সম•॥ কিঞ্চিলশোচ্য• ত-वासि वाक्नीयं हि यम्या। जमाद्वा• दि भूभामा २३ भूषि। भाषा कि यना-ষা।। তদেহি দেবি দুর্গে ত্বং ভূয় স্বভ্যং नस्मा नमः। और द्रुवाह। श्रार्थनीया बादा य एउ उ॰ तृतृ दु॰ महामुद्र । দাস্যামি তে বর• প্রার্থ্য সংশবো , নাত্র বিদ্যুতে ॥ নহিষ উবাচ। যজ্ঞ ভাগ নহ•ভোভুনিছানি বৃৎ পুসা-**एक: । यथा याद्धव्यु अर्विष् शृह्याः**

करः मडा॰ उथा श्रवा द्रिशा प्राचित्र वादि स्वा द्रिशा वादि स्वा प्राचित्र वाद्र स्व विक्र प्राचित्र वाद्र स्व विक्र प्राचित्र वाद्र स्व विक्र प्राचित्र स्व विक्र प्राचित्र वाद्र स्व विक्र प्राचित्र विक्र विक्र

न्या २७ छ । शृज्जा मृर्डरम िव जवजाः मृक्वा जिकाः ॥ का छि उ मृर्जिणः शृष्डा यछा २८ १८ । श्वास वित्र । ज्या महिष्य पिता छ-याजार ज्या क्रा ॥ जिल्म याता । यानि नामानि हा के नि द्रायर महि-यानु । जाम निष्य मान्युष्टेः शृष्का । व्यादक जित्या जिल्म विश्व मान्युष्टेः शृष्का । व्यादक जित्या जिल्म विश्व मान्युष्टेः शृष्का । मृर्जि ज्यानी एए श्वास माम मृर्जी । जारा शृज्जा जित्या भारता मृर्गी । याना गृज्जा जित्या । जारिक्षेत्र । ভূত

ष्टिने न्रष्ट्री जु ज्वान जुम्काना।
प्रिक्तीय न्रष्ट्री जु ज्वान जुम्काना।
भया एकः ॥ मूर्गाक्री भगाध्ना जुम्काना।
प्रिक्तियामि महानूगः । किन्छ भूवं न गृहीज जुः नया भाषरया छल्या।
पश्ना भाषिज वाता गृहीज्य भाषाजुः भूवं काययाः । गृहीज्य भाषाज्ञ भाषाजुः भाषाज्ञ वाता गृहीज कानि का गृताला दे ज्वा गृहीज कानि का गृताला दे ज्वा गृत्रीया हिन् कानि वात्र भाषाज्ञ ।
पाः भाषाज्ञ व्या गृत्र विल्ला का गृताला को जुम्मु हा। हिन् का जिल्ला को जिल्ला को जिल्ला का जिल्ला क

ভদুসম্ভি: পু॰ পূর্ণসম্ভ:। ইত্যমর:।। ভদুসদ্ধিকা জী মৃস্তক•। ইতি রত্ন-মালা।।

ভুদুক্ষরঃ ত্রি নস্থলকারকঃ। তৎ-পর্য্যায়ঃ। ক্ষেনকরঃ ২ ক্ষেনকারঃ ৩ ন দুক্ষরঃ ৪ শুভক্ষরঃ ৫ অরিষ্ঠ-তাতিঃ৬ শিবভাতিঃ ৭ শক্ষরঃ ৮ । ইতি ভূরিপুযোগঃ॥

ভদুচ্ড: পু॰ লঙ্কাস্থায়। লঙ্কাসিজ ইতি ভাষা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। ভদুজঃ পূ॰ ইন্দুয়বঃ। ইতি রাজনি-ঘণ্টঃ ।।

खु उन्ने शि स्तुकृत्रः । देउि लाकन्दिणः॥

दाना मानि हास्तार !! साहिन्छेत , जुज्बन क्री कपूषी शनानववर्षाय-

र्शं उदर्शिता गरः। यथा। माणा वद्याः णिथि मधाविद्धं यख व जुमुजूतगः वस वृशाः। इकि जिला छिणाता मानी रिगाला थानः॥

खनुमिलिका की मडीवृक्ष जिमः। जनुमडी इंडि था। उट भर्यायः।
क्रिक्ष हा र जियपुन्। अवयायका है
खावर्जि के खुनाकी अवयायका न
। जन्या छनाः। कर्नुद्रः। उक्ष द्रः।
क्रिन द्रः। क्रिक्ष मृत्र क्रिकामामा
जन्मामय नाणिद्रक्ष। इंडि नाजनिर्वर्गः।।

ভূদুদাক ল্লী পু॰ দেবদাক। ইত্য নর ভরতো ॥ সরলকাগ্রু । ইতি রত্বনালা॥

भूगिर्वापिकः शृ ' छेष्धगर्गिराण्यः
। यथा। जुनाक अह रित्रमा तक्षण
कार्यक्षी वलाजिवलार्जणल कहु
ता मलकी अरवताकी वीत उक में
स्वतामिस वट्टमारत्मात्र खामारल
प्रकालकार्क मजावती भूगर्नवा वम्
क विमन्न काक्ष्मक जागी कान्ना भी विष्ठकाली भज्ज वस्त्र यव काः
ल अल्थ भुज्जीन। ইजि मुमुज मृज्जानमा मर्ग्यायन मर्ग्यमी,
वायायः॥ अ।। आभिता (एवनाकः
स्तितु एव वक्षः स्व (म्व ह। म श्विष्व नागवना न्यामनागत्राता श्विष्ठ । शिव्या वाष्ट्र । व्याप्ट्र विष्ठ । श्विष्ठ । म्याप्ट्र विक् मृतः छुट्टी शिकात्रिका ।। श्व-नवा व वास्क मृत्यावर्षक कान्छः। श्विष्ठ ।। छन्ठ प्रात्रः भ्वाप्ट्र अ नाः निकः ।। छन्ठ प्रात्रः भक्ष्य र्भुमार्ज्ञा । क्ष्या । क्ष्या । क्ष्या विक् वृष्ट्र ।। क्ष्या । क्ष्या ।

अम्नामा भू काष्ट्रस्य भक्षी। कार्ठः ' होकद्रा इंडि जाना। इक्टिबिकाख-(भवः॥

ভদুনানিকা জ্রী ত্রাযন্তীবৃক্ষঃ। বহুলা ইতি ভাষা। ইতি রণ্নমালা॥

खुनिशिः शृ महामानवित्मयः।
यथा। इन्पु उवाठ। विश्वानः त्रहि स्म
तुक्षन् मानगु। मु महामानवित्मयः। यथा
रमव वित्मार्थन् वित्का ज्ञाननः कात्रकः।। वृत्कावाठ। श्रुगाः जिथिः
श्रुश्र ज्रूशीयनामुगः ज्रूशामिश्वरगमाम मृत्रयाश्चा। हजूर्गामिश्वयन व्यय वा श्रुरवायन श्रुश्रमत स्थ वित्काः।। कर्यु। म्योज्ञ मेकु।।
। ज्यानिश्वानकः मृत्राक्षञः न्याक्षः
त्रगु जात्वा क्रुश्रम् स्थ

তো হর্চ্ছেন ভদৰ্জতো বা স্ব শক্তিতঃ वर्गलिकः भाउन । उनकं मास्यान जू विखनक्रा भनवगाम्न मर्था न छः र्य्याट ॥ তত্তামু ভাঙে কনক नि-(ध्य॰ नवज्र नीत्नाखम भन्नद्राग॰। সুমুক বৈদুর্য্য সবিজমঞ্চ তদাজত॰ পাত্র মধ্যে মূথ স্যাৎ।। এবস্ত ত॰ **ভদুনিধি॰ সুবিধান্ ক্রাসনে প্রাব**-রণোপযুক্তে। জশোত্তরে দর্পণ চা-নরাচ্য সপাদুকোপানহ ছত্র যুক্ত ।। ত॰ ক্ষোমবন্তোত্তম যুণ্ম যুক্ত॰ স म्भूकत्यसम् वरेत त्रिथङ । जाती ভূ পঞ্চান্ত মাপ্য বিষ্ণু সংস্থাপ্য সংসার তর• সমর্চ্য।। তথেশ্বর• পা-বক নেব হুত্বা আমন্ত্রযেন্ডদুনিধিণ তত তে। ত্রীথঞ্জ কপুর সমস্কুমেন भक्षाक्त नाम शियः भुविश्या নন তথোস্কার যুতঞ্পাতে তদুাজ তে হলে/ব মথা ई खेखा। ব্যাসন जानत निष्त्र यक विम्राथ्यतम् । त्रा किमदारिम्:॥ गन्नर्व िवडाञ्जर मान (वरिन्तु यू जि॰ वृज विश्विष्ट नम एउ। সনস্ত সংসারকরী ত্বনেব বিভো: नदानन्द्रयो ह्याचा ॥ मञ्ख कल्डाः निविः जनाधि र्हतिशित् जुनिष নম স্তে। এবং সংপুদ্ধ্য বিধিনা ততো विनु मथाहरद् ॥ कित्री विक्र नि-

कागुः म ७ ना जूनि जूनिः । जन ক্ত্য হরি বদ্ধৎপীত্যুদর ধর ততঃ ॥भृष्ठयम्हूउङ धत्रदाभाञ्चभातन छः ক্তিমান্। ভূদেবো হসি বিভো নিত্যুণ निज्ञानन्त भाषा रुद्धि।। रुद्र भ पूक्क র•কৃষ্ণ কৃপাকর নমো ২স্ত তে। ভূ-দেব ভগবান্ ভর্গ ভব ভঙ্করেশ্বর। ভবভূতিকরো জিঞ্চো পুভবিঞ্চো ন भा स छ। अव न्यूबा कृति भाषा ত দ্বিত্ব বুন্ধক্ষিণ ।। ততো ভদু-निधि एए प्राचारखनातन वाजव। अ शाखाहाद्रायनामि विभुनाम उर्थ ञ्चनः॥ यव দर्ভ তিলৈ: नार्ष मृদव সংপরিত্যজেশ। পিতৃ সম্ভারণার্থায निज्ञानन्त विवृष्कत्य ॥ अर्बास्योध বিঘাতায় বিঞাে দান ম্যা কৃত• তদনেন সরত্নেন ধাতুত্রয যুতেন 🗸 ॥ मह्कीनायत युक्तिन मार्म भा क्व ह ॥ भागत्वन महत्वन हाई त्राभानस्य ह ॥ महाननः निष त्नन शीयजा॰ विकृ ती अतः। এवम् हार्य। उ पर शिष्टुकाय स्तिनिशिषाः গোপ্যেন বিধিনা দদ্যাদ্ধেন সংখ্যা न कीर्जरए । भुकीर्खिङ काहि 🦖 গাযুত্ত ফল পুগোলিতে কল্পগণৈ नं मःकयः ॥ इंडीय नख्डा नज् की र्खिय मूरी निषान माध्य निश्चिक ्यहम् ॥ ७१॰ क्रि म्राग्न नृजः क्ञाः ज्ञा जर्भम्य यामत्र । क्रि ।। भुगां विकाः भर मव्याः ज्यः भिवाचाकानन्त्रमः महाथाः ॥ हे-ज्ञारमः विङ्ग्नार जुन्निधि मान नामाधाराः ॥

छपुर्णमा खी जापुर्णमा। श्रृब्जापु-शामा खत्रजापुर्णमा नक्षवः। इज्ऽ-मत्रोकायाः जायमूक्षाः॥

न्त्रमर्गा जी करेस्त्रज्ञावृक्षः। ইতি सद्देशना॥

শুদুপণী ন্ত্রী গান্তারী। ইত্যমর:॥ পুসারিণী। ইতি জটাধর:॥

छम्वननः भू• वनतामः । ইতি मदः नाना ॥

ভূদমল্লিকা স্ত্রী গ্রাক্ষী।ইতি শব্দ নালা।।

चपुगुक्कः भुः गुक्का जिल्हः। तामणत व्यक्कित्वाण केरा । ज्यक्का ।

ভাবপুকাশ: ৷৷

जुनुष्ठकः भुः नागत्रमूखकः। ইত্য-भतः॥

जुन्छ। खी **जुन्**नुखकः। ज< शर्यायः । वज्राही २ अनु । ० गुष्टिः ८ जुन কাশী ৫ কশেকঃ ৬ ক্রোডেষ্টা প ক্ষকবিন্দাখ্যা ৮সুগদ্ধি: ৯ গুছিলা ১০ হিমা ১১ বল্যা ১২ রাজকশৈকঃ **>** करहाचा >८ मूखा >८ व्यर्गामः ১৬ বারিদঃ ১৭ অস্তোদঃ ১৮ মেঘঃ ১৯জীম্তঃ ২০ অবঃ২১ নীরদঃ ২২ व्यकुः २० घनः २८ गाव्यः २**৫ १** অস্যা গুণাঃ। ক্ষায়ত্ত্বণ। তিক্তত্ত্বণ। শীতত্ত্ব । পাচনত্ত্ব । পিত্তজ্ব ক-ফ নাশিব্ব। সংগ্ৰাহিব্ঞ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ অপিচ । সুস্তক · ন-खिया॰ मूख॰ बियु वादिमना**यकः**। क्कविना क अशाखा ११४ ক্রোডকশেককঃ॥ ভদুমুস্তশ্চ গুন্দু। ह उथा नागतमुखकः। मूख कर्षू হিন পুাহি তিক্ত দীপন পাচন গ কৰাৰ কফ পিত্তাসু তৃট্ জ্বা-**क्**टि बखरू८। अन्भापतम यद्याउ॰ মুস্তক তৎ পুশস্যতে ॥ ত্রাপি •মুনিভি:প্রোক্ত বর নাগ্রগুতক। ইতি ভাবপুকাশঃ॥

ভদুরেণু: পু• ঐরাবতহন্তী। ইতি ত্রিকাগুংশয:॥

ভদুবৎ প্লী দেবদাক। ইতিরাজ-নির্বণ্টঃ।।

ভদুবতী স্ত্রী ভদুপণী ইতি জটা-ধর: ।।

ভদুবর্মা পু॰ নবমক্লিকা। ইতি শব-চন্দ্রিকা॥

जुरना जी नजिर्धिस्यः। गक्का-मानिया इंजि जावा। ज्यू भर्यप्रायः १ मद्र्या २ भुमाद्र्यी २ करेसुद्रा ८ द्राख्यना ६। इंज्यादः ॥ व्यम्प्राः भर्यप्रायास्त्रः ख्याक भूमाद्रियी का-रम् पुरेवप्राः॥ ॥ वना । इंजि द्राक्षनिर्यण्यः॥

जुरक्षिका जी गांभवक्षी। जनस् म्न इंडि जावा। इंडि तन्नाना।। जुरक्षी जी मिल्लका।। माध्वीनजा । इंडि ताजनिर्वण्डः । नजाविष्मयः । महनमानी इंडि शंभत्रमानी इंडिह जावा। जंदभर्यप्रायः। मा जुडीकः २ ज्यिमक्षा ७ अक्षेभावि का 8। इंडितज्ञमाना।।

छपुन्य॰ क्री ठन्दन॰। ইতিরত্বনালা। ড়ुन्धीः পু॰ চन्दनवृष्टः। ইত্যমরः॥ ভুদুসোম। धी शङ्गा। ইতি শুদ माला॥ जुन जी जाज्ञाश क्षा। त्रामनसे ।। তিথিভেদ:। সা কুদ্বভীয়া স-थमी सामगी है।। भुजादिनी।। कर्रे-कनः ॥ व्यन्ता । इंजि व्यक्ति ॥ की वड़ी ॥ जभना किङा ॥ भीनी ॥ वना ॥ भनी ॥ वहा ॥ मखी ॥ इ-রিদু।। শেতদুরা।। কাশ্মরী।। সারিবাবিশেষ:।।পৌ:। ইতি রা-জনির্ঘণ্টঃ । কাকোডুম্বরিকা। ইতি রত্নালা ৷৷ গঙ্গায়া জি শ্রোভো **২ন্তর্গত শ্রোভো বিশেব:। ভত্তু উ-**ভরে স্ক্রব্যী যগঙ্গা। ইতি পুরা-गः मदनाचा हो। युक्तमकिविषा-**ব:। তৎ স**র্য্যায:। তারা ২ মহা-শু: ৩ ওকারা ৪ স্বাহা ৫ 🕮: ৬ ন্নার্মা ৭ তারিণী ৮ জ্যা ৯ অন-স্তা ১০ শিবা ১১ লোকেম্বরাত্মজা >> थन्त्रवामिनी २० विनातः २४ নীলসরস্বতী ১৫ শল্পিনী ১৬ মহা-তার। ১৭ বসুধার। ১৮ ধননদে। ১৯ ত্ৰিলোচনা ২০ **লোচনা ২**১। ইতি ত্রিকাণ্ড**েশবঃ** ॥ ছাযাগর্ত্ত**র**াভা স্यं, तन्ता। यथा। यनली जू उठ ন্তদ্যা• জনযানাস ভাক্ষর:। শনৈ-क्रद्रक जुनुष्क हायाया गणिजमुऽ-তিঃ ৷৷ তথাচ তেজনা বিক্ষো স্তৃস্য-চক্ৰ নবৰ্ত্তৰ্থ। তদপুতিহতে মূদ্ধে

द्धानराष्ठ हिकीर्यया ॥ उद्धिमिनी म् খতো ভদু। নিশুকৈব বিগৰ্হিত।।। इंडि वृद्धि भूद्गीरि रेवव मञान्की र्खन॰ ॥ # ॥ ज्ज्या यथा। आवाष्ट्रा সিভে পক্ষে দ্বিতীয়া পুষ্য সংযুতা। ভস্যা॰ রথে সমারোপ্য রাম॰ মা॰ चपुरा मह।। ইতি श्वात्म जगवही कु ॥ 🛊 ॥ विश्विल्मा यथा । এका-দশ্যা• চতুর্থ্যান্ত শেষার্জে শুক্লপ-कारक। अडेमी (भोर्गमारमहास भू-ৰ্বাৰ্দ্ধে বিভি সম্ভব:।। কৃষ্ণ পক্ষে তৃ তীবাষা দশম্যাক্ষ পরার্জতঃ॥ म-धन्ताक ठजूर्मन्ताः भ्वार्ष विश्वि দ্নীরিতা।। বিহায বিষ রৌদুগণি বি-**डि॰ नर्इ**ज दर्जरय**्। दिश्टिरन**रम जि-म् ए क् भू हि कार्या क्यावर ।। #॥ কর্মপুকাশে ভস্যা অঙ্ক বিশেষে। यथा। नाष्ट्रस भक्ष्यमन गलक स থৈকা বক্ষো দলৈক সহিতা নিয-ত চতসু:। নাভি: কটি: ষডথ পুছ ष তা চ তিসে। বিস্তে ধ্রুব॰ নিগদিতো 🔫 বিভাগ এব:।। ক্ষা। অঙ্গবিশে (य कार्य) धु॰ मानि कन थथा। मूर्थ কাষ্য ধৃংসো ভবতি মরণঞ্চার্থ গল-क धम्यानि वंकमाथ कछिउछि तु-षितिनयः। किन नीजीरमण विख्य नथं श्राह ह कगमुः मजीत जुनायाः म्थिनिङ कनः मर्व म्नयः॥ ॥ मन् वम् मृनि जिथि यूग हम भिव छन मःथाम् जिथिष् म्र्बाह्यामाः । ष्यायाजि विश्वि त्रया भ्रष्ठ मृजहा भूतस्य प्राहिष् भूर्वी-गुराहि मुथः जवजीजाधः । ইडि जाजिस्र ।।

ভुष्ठाकद्रभः क्षी मूखनः। ইতি ছেন-চন্দুः॥

ভদ্যুত্মন্ত: পূ• খন্নঃ। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ।।

अमात्रकः , शृ॰ अक्षेप्रसम्भक्त पृत्तीभाष्ठ-गंजदीभविष्मयः। ইতিশব্দ गाला॥ अमालभजिका जी गन्नाली। ইতি শব্দ गाला॥

खुमानी जी शक्कानी। ইতি শদ-नाना॥

खुग्वजी खी कर्कनव्षः। ইতি ब्राजनिव्षः॥

ভদাপ শ্লী ভূবো নববৰান্তগত বৰ্ষবিশেষ: । ইতি ত্রিফাণ্ডশেষ: ।।
তদ্বিরণ যথা। নাল্যবতঃপূর্বপাশ্বে পূর্বগণ্ডিকা একশৃক্ষান্মোজন
সহসাণি নান ন্তত্র চ ভদাপা নাম
জনপদাঃ ভদুশালবনক্ষ তত্র ব্যবস্থিত কালালু ফোঃ পুরুষাঃ পেতাঃ পদ্মবর্ণিনঃ ত্রিষঃ জনুদ্বর্ণাঃ

দশ্বর্ষসহস্থানি চ তেবামাযু স্তত্তচ शक्ष्मनभर्वजाः उप्यथा रेमन्वर्गः मानाथारका रत्रकमः विभागं नीन শ্চেতি ভদ্বিৰ্গতা স্তদন্তঃ স্থিতা-না॰ দেশানা॰ ভান্যেব নামানি ভেচ দেশা: এতাঃ নদীঃ পিবন্তি তত্ম্থা भीजा भूवाहिनी रू भवजी कार्त्रती সুরসা শাখাবতী ইন্দুনদী অঙ্গার-বাহিনী হরিতোয়া সোমাবর্ত্তা শ তহুদা বনমালা বসুমতী হৃ•সা পর্ণা পঞ্গঙ্গা ধনুমতী নণিবপু। সুবু ন্ধভাগা বিলাসিনী কৃষ্ণভোষা পু **ल्यामा नागवजी मिवा रेमवामिनी** गिनिज्ही की दिवासी वक्नावजी विकृ भरी महानरी हित्रगुक्षक्रवाहा मू দ্বাবতী বামোদা পতাকান্চেত্যেতা नहानमुः এতাশ্চ शङ्काममाः की-ৰ্ত্তিতাঃ আজন্মান্ত পাপ নিনাশ-যন্তি ফুদুনন্যুশ্চ কোটিশ স্তাশ্চ নদী যে পিবন্তি তে দশবর্ষ সহসা-যুষঃ কদ্যেমাভক্তা ইতি। ইতি বা-রাহে ভূবনকোষে ৰুদুগীতা ॥ 🕸॥ অপিচ। তথৈবেলার্ত মপরেণ भ्रवंग ह गान। वम्रक्रमामनावानीन নিষধানতৌ দ্বিসহসু পপুথতু: কে-ज्ञान ज्नायरयाः जीगानः विषयाः **छ। नन्द्रतः (मक्मन्द्रः नूशार्थः**

সমুদ ইত্যযুত যোজন বিস্তারোমা-হা মেরো শতবুদ্দিশ্রমবস্ক্রমূগিরয উপক্পা:। চতুৰু এতেৰু চূত জদৃ ক-मध न्याभा कषातः भामभ भूव-রাঃ পর্বত কেতব ইরাধিসহসু যো-জনোন্নাহা স্তাবদ্বিটপ বিতত্ত্যঃ শ্-তথোজন পরিণাহাঃ। হুদা শ্চত্মা-तः शर्या मिधुक्त्रम मृष्ठेकलाः युरुश-म्मार्भिन उभरम्द्रम्भा (यारेमध्यं प्रापि ষাভাবিকানি ভরতর্যভ থারযন্তি। स्तरवाम्यानानिक खबि कषाति न-न्तनः रिठवद्रथः रिवज्राज्ञकः नर्दछ। ভদুমিতি ৷ যেম্বনর পরিবৃঢাঃ সহসু-व ननना ननाम यूथभउय छेभएहव-গণৈ ৰুপগীয়মান মহিমানঃ কিল বি-হরন্তি। নন্দরোৎসঙ্গ একাদশশত যোজনোতুক দেবচ্তশিরসো গিরি শিখরস্লানি ফলান্যস্তকল্লানি নিপতন্তি। তেষা॰ বিশীৰ্য্য নানানা মতিনধুর সুরভি সুগন্ধি বহলাকণ व्राप्तिनाक्तामा नाम नही मन्त्र গিরিশিথরামিপতন্তী প্রেণেলাব্-ত নুপপ্লাবয়তি ৷ যদুপজোষণান্ত-वान्डा अन्ह्रवीयाः भूगुज्जनवध्ना न-ব্যবস্পূৰ্ণ সুগন্ধিবাতো দশবোজন সমন্তাদনুবাসযতি। এব॰ জহুফলা-নাস্ত্যন্থ নিপাত বিশীর্ণানা মনস্থি

প্রায়াণা মিভকাযনিভানা রসেন जपूर्ने नाम नहीं भिक मन्दर्शन-भशास्यु उ धाजनास्यनिज्ञा निशन **७**डी मिक्कानाजान गाविमनाव्छ সুপস্যানতি। তাবদূভযো রপিরো-श्रामा यां मृखिका उपुरेमनान् विश्रमाः ना वागुक अ॰रयाश विशास्त्रन जुना-মরলোকাভরণ : জাম্বদ গাম সু বর্ণ ভবতি যদুহবাব বিবুধাদয়: স হ যুবতিভি মুহিট কটক কটি স্ত্রা-দ্যাভরণ ৰূপেণ খলু ধারযন্তি। যস্ত মহাকদম: সুপার্শ্ব পার্মির্ট স্থা কোটরেভ্যো বিনি.সৃতাঃ পঞ্চাযা-মপরিণাহা: পঞ্চ নধুধারা: সুপার্য निथंता भ जास्त्रा श्मात्रवाचान भिनाव्छ मनूरमामय खिरया कुर भगुछ। নানা মুখ নিৰ্বাসিতো বাযু: সম-ন্তাৎ শতযোজন মনুবাস্যতি। এব॰ ষ্পনুদ নিক্রে। यः শতবল্পো নাম বট खना ऋक्षां जो नी ही नाः भागानि भशु घ्ठ खडामाराम् म मग्रामनाज-त्रगारगः मर्ब व काम पूर्वा नमाः समु मागाए भण्ड उम्बत्राननाम् मृ शरगाइयसि गान्भजुयागानाः न कः मार्किमिश शुकानाः विभीभणिक क्रम (यन (रोर्गक) जजानवान मृज्यानी छाक देववरणांश नर्गाप्तय छात्रा बि-

শেষা ভবন্তি যাবজ্জীবং সুথ নিম্ন তিশ্য মেব সরস্থ সরর সমূদ্র रिकक्ष जिक्षे मिमित भउक् कः চক নিষ্ধ শিতিবাস কপিল শ্যু 🕆 रिवर्ग्य काक्षि रुप्तरं च नात का-वक्षत्र नीत्रमामस्या भित्रस्या (मस्त्राः কর্ণিকাষা ইব কেশর ভূতা মূলদে-শে পরিত উপকৃথাঃ। জঠর দেঘ-कृति (नकः भृत्वंगृष्टामभायाङ्ग नर्मु गूम्भागतो विमर्म् भृशृक् ক্ষোভবতঃ এব নপরেণ পবন পা-तिभावो पक्षिणन किनाम कत्रवी-রৌ প্রাগাযতৌ এব মুব্তরত জ্রিশৃ-ব্দ মকরৌ অষ্টাভি রেতৈঃ পরিবৃ-তো ংশিরিব পরিতশ্চ কান্তে কা-ঞ্ন গিরিঃ। নেরো নূ দ্ধনি ভগব্ত ্মাআযোনে মধ্যিত উপক্তা• পু-রীনযুত যোজন সাহসূী সম চত্ রসু।॰ শাতকৌদ্রৌ॰ বদন্তি। তান-নুপরিতো .লোকপালানামস্টানা যথ। দিশ । যথ। ৰূপ । তুরীয় নানে-न পুরে। २४: तूপतुश्वाः। ইতি 🗐 ভাগবতে ৫ ক্ষে ভুবনকো বৰণনে ३५ अथ्रायः ॥

ভদু।শ्यः शृ॰ চन्दन॰। ইতি শব-• চন্দ্ৰিক।।। ভদু।সন• লী নপাসন•। ইত্যারঃ॥ ভদুখর: পু॰ কল্নগু।নন্তশিব:!যথা । উভিষ্ঠ কান্ত গছাব: कन्नगुगि मु-শোভন•া তথা সাজ• জগানাথ ক-ন্নগু।ন॰ বস্ধরে॥ ভদেশর নিমিত্ত॰ হি দুব্যঞ্ক কথিত। শুভ । নিত্যঞ্ ভুঞ্জতে যত্ৰ পাত্ৰ দুব্যং সমন্দিত ৷৷৷ मृष्ट्रे। ভদেশর॰ দেব॰ চক্রতীর্থ কল॰ वाख्ट । कद्मगुष्ताहु छ छ । हक-তীর্থ বসুন্ধরে ।। ইতি বারাহে মথুরামাহাত্ম্যে চক্ষতীর্থপুক্তাবো नानाव्यायः ॥ #॥ निक्नुश्रुर्थः मुगादाधि हिमानवर भार्थित. निविष्यः। यथा । जवार्थाय गुहि-याभि गहरी न हिमयम्गृत्ह । य-শ্চেহ ক্দু শীহন্ত্যা মূন্ময শ্চেশ্বঃ কৃতঃ।। অসৌ ভদেখরেতে রেণ খ্যা-তে লোকে ভবিষ্যতি। দেব দানৰ गक्कर्वा यक्क किन्गुक्रयात्रगाः ॥ भू-জিথিৰ্যন্তি সভত ম্বানবাক্ষ শুভে-প্লব:। ইতি বামনগুরাণে ৪৬ অ-ে ধ্যাযে উদাংপুতি শিববাক্য ।।ৡ॥ গঙ্গায়াঃ পশ্চিম্ভীরে গরিট্যাথ্য গ্রামস্যোত্তরে পাষাণম্য শিবলি-क्वित्नाया गुगमवित्नयक ॥ ভদুলা জী ছুলৈলা৷ ইতি রাজ निर्घणेः ॥ च्यारनी जी वना !! नागवना।

ইতি রাজনির্ঘক্তিঃ ।। ভ**ন্দিল ভালি ভু**ভ । ইত্যাদি

ाष्ट्रण क्षा मुख्य १ क्षुआकः क्षायः ॥ कम्भः ॥ मुख्यः । इंकि म॰-क्षित्रमादागारिक्षः ॥

ভদ্দঃ পৃ• ভারতব্যস্তিন্দেশবিশেষ: ৷ যথা ৷ লক্ষা শুলার এবালি গুলাগা ভদ্ধকে মৃতা: ৷
ইতি কান্ধে স্মারিকাখণ্ডে বকেখরমাহাত্য্য নামাধ্যায়ঃ ৷৷

ভপঞ্জর॰ লী নক্ষত্রচক্রণ। ইতি সিক্ষান্তশিরোমণিঃ।।

ভগতি: शृ॰ हमुः। ইতি ছেমहमुः॥ ভদ্ত: शृ॰ ध्रः। ইতি ত্রিকাগুণেষঃ ।। মিক্ষিকা। ইতি শদ্বত্নাবলী।। ভদ্তরালিকা দ্রী ভঙ্কারী। ডাঁশ ইতি ভাষা। ইতি ত্রিকাগুণেষঃ॥ ভদ্তরালী দ্রী মিক্ষিকা। ইতি ত্রি-

ভদ্রাসারঃ পু॰ মগধরাজবিশেষঃ। , ভৎপর্য্যায়ঃ। শ্রেণিকঃ ২। ইডিং হেমচন্দঃ।।

কাণ্ডশেষঃ॥

ভয় প্লী বিভেত্যমাৎতং । ইতি ভরতঃ ।। তস্য লক্ষণ যথা ৷ রৌ দুশক্ত্যা তু জনিত চিত্ত বৈদ্লব্যদ ভয় ৷ ইতি সাহিত্যদর্গণে ৩ গ গ্লিছেদঃ ।। অপিচ ৷ রাগ বিষ্মস্য বিনাশকে সমুপস্থিতে ত্রিবারণা

मामर्था माजारना अनामानमारीम-॥ ज्याजिखिमा जु माजामभाष्ट्रः। প্ৰাছাৰ কৈছে বৃত্তি বিশেষে। ভয়। क्रि छ गर्हे कामा र व्यवप्रत्य मधु-अमन गेर्डेककी ॥ व्यन्ताः शतकः या নিষ্ট সম্ভাবনা ক্ষণা বৰ্ণা ব্যাহ্যাছি-८७ कि ब्राम्बाधीन हात्व की व सम्राप्त न-স্তাবশৃতি। ইতি ২ বুগুৎ পাতিৰাদে जन्त्रभव च्छानार्यकः॥ ख्ट्रणर्यशयः া দর: १ बाग: 🤉 ভীক্তি: ৪ ভী: ৫ नाबुन १। ইত्यादः॥ क्पानः १ ৰাধুন ভবঃ ৮ পুতিভয় ম। ইতি **अ**स्त्रज्ञावसी ॥ स्वाउकः २० स्रा-मका ३३ जिया ३२। ইতি एवम हम्मुः ॥ # ॥ व्यागत्त्र ज्या वर्जी-खब्द इंडिन्ड यथा। जावस्वम् ভেতব্য যাবন্তব মনাগত। উৎ-পন্নে তু ভবে তীব্ৰে স্থাতব্য তৈ রভীতক্ৎ।। ইতি গাকডে নীতি-मात ३७६ व्यथायः ॥ 🛊 ॥ व्यत् कः পুষ্ণ ।। বোরে তি। ইতিমেদিনী ।। त्तारम भूः। इंकि त्राम्ननिर्यक्रः॥ **ভयक्तर॰ जि ভयक्रनक॰। उৎপ**र्यशयः । डिव्रवः २ मारूनः ७ जीवनः ४ ভীমা ৫ যোর ৬ ভীম ৭ ভ্যান ক ৮ প্রিভয় ৯। ইত্যুদর: ॥ ख्यावर २०१ इंडि (इम्हन्सु: H पूर्वणकी। ইতি इ जिनियं है: 11

ইভি.পুক্রাণ ॥ ভব্ৰুতঃ ৰি জীত্যাপলাবিতঃ। छर भर्यायः। कान्सिनीकः २। ३-**ज्यकः** ॥ भ्यमानिनी जी कागमागानका। • इति आजनिर्घणेशा खगनान ककी है

क्ष्यकीणः वि वारमभावस्थिः।

যথা। একতো ভয়ভীত্স্য প্রক্রিনঃ প্রাণরক্ষণ। নাতো ওঞ্চরো থর্মঃ ় পুরাণে শিবিসাজোপাখ্যান া ভযভুঠ: ত্রি ভয়ক্তঃ। ইজিঞ্চটা-ध्रवः ॥

ভयानकः शू॰ वृश्युः॥**त्रा**ष्ट्ः॥ त्रन বিশেষঃ ৷ ইতি মেদিনী ৷৷ সতু শৃ-ব্যারাদ্যষ্ট রসান্তর্গত ষধরস:। ত-न्। नक्षा । ज्यानका ज्य-श्चायि ভावः कालाधि रेपवडः । জী নীচপুকৃতিঃ কৃষ্ণোমত ভন্তু বি-**णा**त्ररेमः ॥ यमामृ८ भम् ऽत्त्र जीजि ত্তদত্রালয়ন মত । চেষ্টা হোরত-রা শুস্ত ভবেদুদ্বীপন পুনঃ ॥ অ নুভাবে। १ত্র বৈবর্ণ্য গদ্ধদম্বর ভা वनः। भुवय (यम देशामाक कम्न रिक् (मुक्रगारयः ॥ जुखन्ना (वन न पार न जान ग्रानि मीन जाः।

শক্ষাপমার সংভুান্তি মৃত্যাদ্যা
ব্যভিচারিণঃ।। উদাহরণ যথা।
নই- বর্ষবরৈ মনুষ্যগণনা ভাষাদ
পাস্যত্রপান্ধরঃ কঞ্জি কঞ্জুকস্য
বিশতি ত্রাসাদ্য বামন ইত্যাদি
ঃইতিসাহিত্যদপর্ণে পরিছেদ।।
ভ্যানকঃ ত্রি ভ্যক্ষরঃ। ইত্যমরঃ।।
ভ্যাপহঃ পু॰ রাজা। ইভি ত্রিকাওশেষঃ।।

ভ্যাবহঃ ত্রি ভ্যক্ষরঃ।ইতি হেন-চল্দুঃ।।

ভরঃ পু• অতিশযঃ।ইত্যমরঃ।। ভরণকর্ভরি ত্রি।।

ভরট: পু• অন্তকার:।ইত্যুণাদি-কোষ:।।

ভরণ ক্লী বেতন।। ভ্তিঃ। ইতি নেদিনী।। পোষণ । যথা। ভরণ পোষ্যবর্গস্য পুশস্ত স্বর্গসাধন । নরক পীডনে চাস্য তমাদ্দত্তেন ত ভরেশ। ইতি দাযভাগঃ।।

ভরণঃ পু॰ ভরণীনক্ষত্র । ইতি শব্রজ্বাবলী।।

ভরণী গ্রী ঘোষকলতা।ইতি নে দিনী। অখিন্যাদি সপ্তবিংশতিন-ক্ষত্রান্তর্গত দিতীয়নক্ষত্র । তথ-পর্য্যায়ঃ । সুমদৈবতা ২ । ইতি হেন্চলুঃ । সা তারকাত্রয়নিত

ত্রিকোণাকৃতিঃ। তস্যা অধিষ্ঠাত্রী ्रस्वजा यमः । यथा । जात्रकाक्षेय মিতে ত্রিকোণকে মুধ্যগে দিবিষ-দ্ধুনো যমে। পক্জাফি গণিতাঃ वनीत्रजः नायकाकि जूब मःथाः काः कवाः ॥ म॰ ०। ४८। ইতি কালিদাসকৃত রাত্রিলগনান ।। সাচ উগুগণান্তর্গতা। অধােমুখ-গণাম্বৰ্গতা চ ৷ বিদ্যাৰ্ঘ্য ভূমিখন-নে পুশস্তা। ইতি জ্যোতিস্তক্ত্ব ॥ **७**व काठ कन । मनाभकी खिर्ह यक्शभवारमा नाना विरनारेमण वि-नीजकानः। कला विवामी চপनः খল: স্যাৎ পুাণি পুণীতো ভর-ণীযুজাতঃ॥ ইতি কোন্তীপুদীপঃ॥ ভরণীভূঃ পু॰ রাহুগুহঃ। ইতি হেম-हम्पुः ॥

ভরণীয়ঃ ত্রি ভরণযোগ্যঃ।পোষ্যঃ। ভূপাভোঃ কর্মণি অনীয় পুত্যযেন নিম্নমঃ।।

ভরঞ্জ প্ স্বামী । ভূপালঃ । ব্যঃ ।
ইত্যুণাদিকোষঃ । ভূঃ । ক্মিঃ ।
ইতি স-ক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ ।।
ভরগ্য ক্লী মূল্য । বেতন ৷ ইত্যমরঃ ।।

ভরণ্ডুক্ ত্রি কর্মকর: । ম্ল্ড॰ গ্হীত্বা কর্মকারক: । ইউসের: ।। खेतना जी (वजन । इजामहिन ॥ सामी।। खतनाश्चा जी भईभूमी। तामम्जी

जिथाज। ইতি শদ্চন্দ্রকা।।

जतपुरः श्रुः भतपुरः। মিত্রণ। ইতি

শদ্মালা॥ অগ্নিঃ॥ চন্দুমাঃ॥

सेখরং। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ॥

ভরতঃ পু॰ নাট্যশান্ত্রণামূনিবিশেষঃ । সতু অলক্ষারাদি শান্ত্রস্য স্ক कर्ला। निः ।। दानानुषः ।। (मोग्राधिः । ইতি নেদিনী।। শবরঃ।। ভস্তবা-যঃ। ইতি বিশ্বঃ॥ ক্ষেত্র॰॥ ভরতা-ज्रजः। ইতি (इम्हन्दुः ॥ 🗱 ॥ मृपाष्ठ রাজপুঞ্ভরতস্যপর্যায়:1**শাস**্ स्टाचिश २ (मोग्रास्तिः ० मर्बम्मनः ८ । ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥ য ক্রয়ন্ত্রি॰। শছত মখনেধ কৃতবান্। পঞ্চ দশুদুজসূষ• এবমন্যান্ নানাবিধান্ যজ্ঞানকরো । সপ্তবি শতি সহ <u>ज</u>ुवद्भातात्वह्व ताका क्ठवा न्। जाना ८ शङ्गानि र्यथा। मुग्न-ন্তো ন্গ্যা॰ যাতঃ কণ্যাশুরপদে গতঃ ৷ তত্ৰাসীনা স্বপুভ্যা মণ্ডৰ छी॰ त्रमामित ॥ तिल्लाका सामा ন্গুহে দেবনাৰা নিব জিৰ। বভা ॥ म जा नुब्राद्वाहाः चरिः किः

भरिय वृज्धि।। जम्मभन भुम्हिन्धः मण् নিবৃত্ত পরিশুমঃ । পপুছ কাম সভ-धः शुरुमम् मूक्या गिका ।। का पु॰ क-मन्भवाकि कम्याम इस्यक्त । কি-শ্বিচ্নিকীৰ্ষিত পুত্ৰ ভবত্যা নি-·র্জনে বনে II ব্যক্ত॰ রাজন্যতন্যা° বেশ্যকে ত্বা সুনধ্যমে ৷ নহি চেতঃ পৌরবাণা মধর্মে রমতে ক্রচিৎ ॥ **শ্রিশঙ্গরে**শবাচ ৷ বিশ্বামিত্রাত্মজৈ वाइ॰ ज्युक्ता (मनकया वरन । (वरेम-. ভদ্ঞগবান্ কথে। বীর কিংকরবান-खानाजा॰ श्रिविकाक गृश्ः তা মৰ্ছণঞ্চ নঃ। ভুদ্যতা॰ সন্তি নীবা-রা উষ্যতা• যদি রোচতে ॥ শ্রীদুম্ম-ন্ত উবাচ ৷ উপপন্ন মিদ• সুক্ৰ জাতা-याः স্বশিকাৰ্যে গা স্বয়ণ হি বৃণুতে রাজ্ঞা• কন্যকা সদৃশা• বর•াওমিত্যু: क्ति यथा धर्म मुनायाम मञ्जलाः॥ গান্ধর্ম বিধিনারাজা দেশ কাল বি-क्षानिद्ध। व्यायायवीर्या त्राज्ञविं र्य-हिरा वीर्यामारथ ॥ एवा ज्ञ स পুর॰ যাতঃ কালেনাসূত সা সূত॰। ক্রঃ স্মারস্য বনে চক্রে সমুচিতাঃ ক্রিয়াঃ ৷৷ বদ্ধা মূগেন্দু• তরসা জীড় **তিমা স বাল**কঃ।ত• সু**রত**্যথ বিক্রান্ত मानाय भुगमाख्या ॥ इति दःयाः শ সমূত ভতুরিতিক মাগন থাবদা

न छ ्य ज्यात जाया भुवाविनिन्त ভৌ মণ্ডুল নড্টুল ল থে বা-গাল্যকরি রণী। লাভা ভক্রা পিজুঃ পুলোলেন আড়ে স এব সংগ্রাভরের श्रुधः पृत्र, उ भावमः श्राः भाग्रखाः । রেভোধাঃ পুলো নধতি নরমেব ধনঃ क्षराधा पुरुषामा भाग गर्हिना मः ভগুণাহ শঙ্করনা ৷৷ গিত্যুর্পরতে সো ২পি চক্রবত্তী নহাযশাঃ। ন হিনা গীবতে তস্য হরে র শ ভবো जूवि ॥ ठकः मिन्। एटः १गा १मा किर्या २मा शाहरयाः। नेका नहाः ভিষেকেশ সো ২তিবিভো ২পিরা ष्ट्रिन्।। शक्ष शक्षाण न (न्देय) र्गङ् যা সুনুবাজিতিঃ। সামতেম• পুরো-ধাৰ ৰমুনা নন্ত পুভঃ ৷৷ গাই নপ্ততি सिर्धायाम् वयक्ष शुरुषवत्। छत्रछ স্য হিদৌশ্বন্তেরগ্নিঃ লাচী গুণে চিতঃ ।। সহসু বদ্লো, ব্যাক্রা গা বিভেজিরে। ত্রম ক্রি:শদ্ত ভাষান্ বজু। বিমাপবর্পান্ ॥ ८तेच ভি র-**७)भाद्याचा• (**ह्याना• **एक** नागस्ती। মৃগান শুল্লৰতঃ কৃষ্ণান ছিরণ্যেন প**্** রীবৃভান্॥ অরাৎ কর্মণি মঞ্রে , নিণুতানি চতুদ্দশ। তর্তস্যমহ্ৎ कर्धा नभूर्खि नाव रत स्थाः।। देनवा भू-रैर्वव शाञ्चा हिवाए छा। बिनिव वथा

া কি**রাত ভূ**ৰান্ হবনান্**ঞ্**ভিয়ন্ ক-रा , थमाक्तम् । ल्युन्य मृत्रीः कार्य क्षहान् निश्चितके इतिहास । धिष्ठा भुद्रा भुद्रा (५८)म् ८० वट्टो-কাণ্সিভেজিরে ॥ দেবাজ্ঞদো রসাণ নীভাঃ প্রাণিভিঃপুন রাহরৎা সর্বান্ कोगान् मृष्ट्युः शुकानाः उत्र । साम-भी ॥ भ ॥ जि नव भाहभी विक् टक म्पर्खद्दा म मगुष्टि (वाकशावाय) নৈশ্বৰ্য্য সাধিরাট্ শ্রিষণ।। চক্রপ্রান্ত লিত॰ পুশেন্যেত্যপররাম্ছ। ত-न्यारम्थ रेक्सर्छाः शङ्गा सिमुः गूज-मा जारा । उद्य खुरा ग छ्या ८ शुक्रामा-ুবাধা ইভারিতে। ইতি ছী,ভাগব-তে ৯ ফটো ২০ অধ্যানঃ ৷৷ জ্ঞা। খাষ্ ভत्तवा<ैन्त्मख जयख्रा• कन्राया• তাত পতপুপ্রান্তর্গত জ্যেষ্ঠপুশঃ। यथा। जयश जनवान् अवं छत्त्वः-স্বৰ্ণ ক্যাফেত্ৰ ননুম্ন গ্ৰানঃ পুদ্ **र्मिङ एक्कन वास्त्र। न**क्करों क्रिके ভি রনুজ্ঞাতো গৃহনেধিনা পর্মাননু- शिक्षाणा करछा विन्युक्छाया गू-ভগবিধণ ক্যাস্যাশ্বাস নভিযুঞ্জনা-অলনে নাভালনানাৰা শতং জন यानामः। ययाः चन् प्रशासाधी छ রতে৷ ক্যেষ্ঠঃ শেষ্ট্রণ আণিত ে নেং বর্ষা ভারত নিক্রিরীপারিশব্তি

য়**ি ি**, গান্দৰতে ৫ ক্ষেপ্ত জব্যা÷ इन्। ३ । शानकभूमः। वया। भा वरहार अभिकृष्टि र श्री: श्रुष्या नुमा गः ख्राः। वृद्योगना च স্তৎপুপ্রো **ভ** क्राञा नाम विभुज्ञः ॥ ই जि माथामा অগ্নি ব•শ্বোনান ৪৮ অব্যানঃ।। 🕮।। রাসানুত্র ভরতস্য জন্ম যথা। ভরতো नाम किक्नियाः इस्क मजुश्रताकमः । সাক্ষাদ্বিফা শ্চত্ভাগ: गरेर्बः স मूनित्जा कराः ॥ जनगन्गजः न বুদুঃ। যথা। ভরতস্যাপি শুরুদ্বো व्यक्तावद्रका हि मः। श्रारेगः श्रियः ভরে। নিত্যু তব্য চামীত্তথা প্রিयः ॥ म अभावृत्र कन्त्राः भाखवीः शः तिशी ज्वान्। यथा। जाजा यवीयान् ধর্মাক্ত এব রাজ। স্শধ্রঃ। অস্য থ্যান্ত্রনো রাজন্ কপেণাপুতিন• - ভূবি ।। मु डाह्वयः नत्रामुक्ष भन्न।र्थः यत्र ধ্যানহে। ভবেব মৃক্তা জনকো ভরত-ক্ষিভ্যভাষত ॥ গৃহাণ পাণি না खत्राः शानिना त्रयनन्तना न न-নিশ্যামে রাজ্য কৃতবান্। যথা। नवद्भा बहायाती मूनित्यमदतः भू जुः। तन्त्रभुत्व श्वमक्षीतः नरेम (न)। ভরত छमा ॥ भवानवाजातः ष्ट्रब**्धा**तवाज्ञा**न न हरः।** 🖂 😅 भावनं वृद्धः लान्का आः निरवन्यः

न्। ठठल छत्रकः ज्ञानिक विद्युत्ताः रा भाष्ट्रकः । उपयीन स्वा ताक्ष्रं कात्र्यामाम मर्बरा।। इठि तामाः यापदानकारण १४ । १२ ॥ १२ च यापाः। यर्याय्याकारण २८ व्यय्याः। यक्तः। अ।। उम्र विष्युत्ती यथाः। उत्र उम्राज्ञाको वीरतो उक्तः शहल वव । माजूरान मृख्यो पूष्यां। मृममाहित्तो।। उत्र उक्षाग्र उः कृद्धाः म्मारतो मवान्यां।। निरुष्ठ गः सर्व मृजान् व्य भूरत वि उद्धियुकः॥ हित तानाया पेलाकारण १०२ व्यायाः॥

ভরতথণ্ড॰ क्ली ভার उपयोष्ठर्गछनमादिकाथण्डः। यथा। जनादिक्छि
विथाजा यमा मान्नः भुक्थार्छ।
हेनः जमादिकाथणः ठजूर्वर्ग कन्न
भुनः।। यथा कृजावनीयक नामान्न
मानि कन्नमां। हेनः ভরতথত্ত।
यया ममाक भुकन्निजः।। हेि ज्ञानाथायः।।

ভরতপু একঃ পু নটঃ। ইতি **হে**ম্-চনুঃ॥

ভরতপুস্: স্ত্রী কেকনি:ইতিশব-রহাবলী॥

ভরতাগুরঃ পু প্রীরাসচন্দুঃ। যথা।

শ্বেত স চিত্ত শ্বনে মম নীন ক্র্ম কোলো হত্বন্ধ্র বামন জামদ গুঃ। যো হত্বত্ব ভরতাগুজ কৃষ্ণ বুদ্ধঃ কল্পী সতাঞ্চ ভবিতা পুহরি-ব্যতে হরীন্যা ইতি বোপদেবঃ ।। ভরথঃ পুণ লোকপালঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ ।।

পু॰ মুনিবিশেষঃ। স চ ভরদাজ: উত্তথ্য পর্যাণ মমতাযাণ বৃহস্প তি বীর্য্যাজ্জাতঃ। তস্য জন্মবিবর ণ যথা। ততো ২স্য বিতথে পুঞ্ জন্মনি পূত্রার্থিনে মৰুৎ সোম্যা-कित मीर्घ जनमा **भार्किभा खा**ष्ट्र-হস্পতি বীৰ্য্যাদূত্ত্ব্য পত্নী মমতা 🚶 সমূৎপরে। ভরদ্বাজাথ্যে নাম পু গ্রো মক্চি দক্তঃ।। অস্যাপি নাম নিৰ্বচন শ্লোকঃ পঠ্যতে ৷ মুঢ়ে ভ রদাজ নিম• ভরদাজ• বৃহস্পতে। যাতৌ যদুজ্বা পিতরৌ ভরদ্বাজ স্ত তস্তুথ খিতি ॥ ভরদাদশ্চ তস্য বিতথে পুএলম্নি নক্তি দভো বিতথ সংজ্ঞানবাপ॥ # 11 অন্য টীকা। বিভথে ব্যর্থে সতি। অতৈব নিতিহাসঃ। বৃহস্পতে রপুজস্যো-তথ্যস্য মন্তাৰ্যা পত্নী গব্ধিণ্যা-স,ৎ।তদ্যা বৃহস্পতিঃ কামাভি-**ভূতো वीर्याः वाम्बद्धः । उह गर्छः** ।

পুবিশন্ত ছেন স্কাট ড-यार भाषि शुराद्रभानी छ के हैं। পতিত মপি অমোঘ বীৰ্ষ্যত্যা বৃ-হস্পতে ভ্রদ্বাজ নান পুলো হতে। গৰ্ভস্ক বৃহস্পতিনা ভ্ৰমাদেবাল-রাধাদক্ষো ভবেতি শপ্তো দীর্যতমা নামা ভবং। তত্ত্ৰ ভরদাল নাম নি-ক্জি পর স্তৎ পিত্রো বিবাদকরে। १य भारता परियः शिष्ठ अः । ११ म्र ম্মতে দ্বাজ দ্বাভ্যা মাবাভ্যা**· জা**-ত মিমণ পুঞা ত্ব ভর রক্ষ। এবং বৃ হস্পতিনোক্তেন মমতা তগাহ হে বৃহস্পতে দাল• দাভ্যা• লাভ নিন নেকাকিনী কিনিত্যহণ ভরিষ্যানি ৷ ত্বনিমণ ভরেতি পরস্পর মুক্ত্বা তণ পুণ্র ত্যক্ত্বা যমাৎ পিতরৌ মমতা বৃহস্পাতী ততো যাতৌ। ভতো ভব্ন-দ্বাজাথ্যে **২**য•। পাঠান্তরে এব•. विवनगातो । यनुः था ८ यमिनि छः দু:খাৎ পিতরৌ যাতা বিভ্যর্থঃ 🗀 তদেব• তাভ্যা॰ ত্যক্তে। মকজিভূঁ-**७:।** नक्ट (मानात्थान ह यात्म ना-রাধিতৈ মৰ্কন্ডি স্তম্য বিত্তথে পুঞ জগ্নি সতি দত্তবাদ্বিতথ সংজা-ঞ্চাবাপ। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৪ (म) ३३ ञ्यातः ॥ श्राकः विद्वानयः । जाकर रेजि जावा। जे भेर्यप्रायः।

ভৰ্হ

वार्ष्ट्रिया इठामतः ॥ जतवाब इत्याद्धि नदत्र प्राची ॥ जतवाबकः भू वार्ष्यादेशकी। ইতি नदत्र प्राची ॥

ভরিণী জ্রী হরিদ্বর্গঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ।।

ভরিতঃ ত্রি হরিদ্বর্ণ:। ইভ্যুণাদি-কোষ:।। পুষ্ট:।। ভারযুক্ত:। ভরে। ২স্য জাত ইত্যর্থে ইত পুত্যুযেন নিয়ুম:।।

ভরিমা পু॰ ভরণ। ইত্যুণাদিকোষঃ
ভকঃ পু॰ বিফুঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌ
মুদ্যামুণাদিবৃত্তিঃ।। সমুদুঃ।। স্বামী
। ইতি স॰ ক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ।।
স্বর্ণণ। শিবঃ। ইতি মেদিনী।।

ভৰজঃ পৃ• ফুদুশ্গালঃ।ইভিছেম-চন্দুঃ ॥

ভিকটক শ্লী ভৃষ্টামিষ । ইতি হেন-চন্দু: ॥

ভর্গ: পৃ
শবং।ইত্যমরং।। জ্যোতিঃ।ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তিঃ। আদিত্যান্তর্গততেজঃ। যথা
। আদিত্যান্তর্গত বর্চো ভর্গাথ্য
তন্মুক্ষুভিঃ। জন্ম মৃত্যু বিনাশায
দুংখন্য ত্রিত্যন্য চা। ধ্যানেন পুক্ষো যুক্ত দুষ্টব্যঃ স্ব্যমণ্ডলে ।
ইত্যাহিক্ত্তন্ত্বা। ভর্জন । ইতি

ভূজধাতো ভাবে অনট্ পুত্যযেন নিষ্কম• ।।

ভর্গ্য: পু• ভর্গ:।ইত্যমরটীকাযাণ ভরত রাযমূলটো।।

ভৰ্জন• ক্লী ভৃষ্টি:। ভাজা ইতি ভাষা
। । ইতি শন্মালা।।

ভর্ত্তব্য তি ভরণীয় । পোষণীয় ।
যথা। বৃদ্ধো চ মাতা পিতরৌ সাধ্বীভার্য্যা সূতঃ শিশুং। অপ্যকার্য্য শত কৃত্বা ভর্ত্তব্যা মনু রবুবী ।।
ইতি দাযভাগ টীকাধৃত বচন ।।

ভর্বী স্ত্রী পতিবাতিনী। ইতি মহাভারত•॥

ভর্দারকঃ পু• নাট্যোক্তৌ যুব-রাজঃ। ইত্যনরঃ॥

ভর্দারিকা জ্রী নাট্যোক্তৌরাজ-সুতা। ইত্যমরঃ।।

ভত্ হরি: পু॰ স্বনামখ্যাতঃ কাব্য-কত্রাজবিশেষ:। ইতি জটাধর: ।। সচ বিজ্ঞানিত্য রাজ্জাতা।।
ভক্ল কি জঞ্জ ভক্লনে। ইতি কবি
ফল্লফনঃ।। রেকবজঃ। দন্ত্যবর্গাদ্যোপধঃ। ভল্লো ভক্লনিং। ভক্লনি
ভ্রুপকারগী রিভ্যনরঃ।। ক ড ভক্লবিভি
বতে থলং রাজা। এই ভক্লবিভি
ভক্লবিতে। অথমাজ্মনেপদীভ্যন্যে
। কদাচিত পর্বমি পদার্থো এই কাল্রাইভি দুর্গাদাসঃ।।

ভত্নন জী অপকারনীঃ। ইত্যান্দরাটোরো হলি বাং ঘাত্রিয়ানি বি ইত্যাদ্যপকারার্থ বচন । ইতি ভরতঃ ।। ভৎপর্য্যায়ঃ। দংশা ২ বিদ্যা ২ জুগুলা ৪ গছা ৫ গর্ছণ ৬ বিল্লন ৭ জংশা ৮ পরিবাদঃ ৯ পরীবাদঃ ১০ জুগুলা ১১ আক্ষেত্রাকা ১২ অব্যাঃ ১০ বির্দাণঃ ১৫ অপ্রাক্তি হার ১০ ইতি শদরক্রাবলী ।।

ভন্ন প্রিক। খ্রী. মহানীলী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

ভর্মণ শ্লী স্বর্ণ-॥ ভৃতিঃ॥ নাভিঃ। ইতি দ্বিকাপকোষঃ॥

खर्य क्री विजन । इंडि इस्माहन्युः ॥ यर्ग ॥ युख्रुत । इंडि अत्रः ॥ नािः । हैं ि नियः ॥

ष्ट्रपंत्री हो। (वहन•। **इंडि (इन**-हन्दुः॥ एउँ किया। इंडिट के स्थानः॥ अस्मानकः। उन्हेर्नि इंडिट्रिक्ट्

ভর্ষ হিংসে। ইতি ক্িল্ফনঃ ॥ ভর্ম ি। অভ্যস্থানতা ংয়ণ। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥

তল ও দানবধ নিজগণেয়। ইতি কবিকল্পকাশঃ ॥ ও ভল্ডে । ইতি দুর্গাদানঃ ॥

ভन क ए निक्शारि। ইতি কবি क्रियाम्बः ॥ क ए का श्रयः ॥ ইতি मुर्गामाभः॥

ভলভা জী রাজবলা। ইতি শব্দ রহাবলী॥

जनमनः शृ कान्यस्य एमीयन्तरविष्णयः। यथा। कनान्जी कान्यस्वाय वज्वायानि भस्रवा। ज्ञाजिनात्रा महामाधी मृन्तत्री कमना कना।।कान्यस्य नृत्राण्डी। जनम्ब छैक्कमः। म जाः मःशुःश याधी-छ यक्षस्य मयुर्थिजाः॥ इति द्वायिवदर्व क्षिक्यक्रभथर्थ ११ वर्षायः॥

ভল্ল ত দান বধ নিৰ্মপণেৰু । ইতি কেবিবল্লদনঃ ।। তা ঘণাস্থঃ । ড ভারতে । ইতি দুর্যানাজ্ঞা। ভল্লঃ পু• ভল্লাঃনাজ্ঞা। ভারে পুরি শৃত্তভোগে ভারে। ভারা । ইভি নেদিনা শব-নাবাদে।

ভল্লকঃ পু• ভদ্নকঃ।ইতি দ্বিলপ-কোষঃ॥

ভারপুষী দ্রী গবেশকা।গোরফ ততুলাইতি খ্যাতা।ইতি সদ চন্দ্রিনা।

ভানটি ল্লী শশিধ্জরাজপুর শ্রথা াসেনাগণৈ: পরিব্তঃ কল্পি নারাযণঃ পুলু: । ভল্লাট নগর পুরাণে থার থ্ক সন্তিবাহনঃ ৷ ইতি কল্পিরাণে ২২ অধ্যায়: ॥

ভল্লাতঃ পু• ভল্লাতকবৃ**দঃ। ইতি** রুশ্মালা॥

ভल्ला उतः शृ वृक्त विष्मयः। (छला हेि छाय। उट भर्यायः। अवस्व-तः २ छल्ला उः ० (भाषह्ट ८ विह्न-नामा ६ वी त उत्यः ७ दुनक्ट १ ज्ञ-नामा ६ वी त उत्यः ७ दुनक्ट १ ज्ञ-नामा ६ । हेि त त्र नामा।। छल्ला-छक्ती २ जार्म मूथी २० वी त वृक्षः १३ । हेउ प्रतः ॥ निर्म् हनः १२ छला नः १४ अनलः १२ ज्ञित्रः १२ (द्वारिकी खकः २० शृथवी जः २८ थन् वृक्षः २६ वी ल १४ विद्वार १८ विद्वार । क्यायदः ।

উঞ্জুণ কৃষি কফ বাতোদরানাহ भिरु पूर्वाम नाजिद्यः॥ उर कन खनाः। कवायद्ः। न्ध्रद्भः। (क्ष्य-ত্ব• । ফফার্ভি শুন শাসানাহ বিবন্ধ **म्न** कठेताथान कृति नानिद्यः॥ · তথ্যজ্ঞগাঃ। বিশেষে দাহ শাদা-ত্ব। পিত্তাপহত্ব। তর্পণত্ব। বা-ভারোচক হারিত্ব। দীপ্তিসনকত্ব। পিত্ত নাশিত্ঞ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।! 🕸 ॥ অপিচ । ভল্লাতক• ত্রিবু **তरेथवाशिमूची जली वीइव्कम्स्मा**-কহ্ব।। ভল্লাতক ফল• শঙ্গু- স্বাদু-পাক রস॰ লখু ৷ ক্যায়ণ পাচন• ব্লিশা তীক্ষোফ ছেদি ভেদন ॥ নেখ্য বহিকর হন্তি কফ বাত द्रुरागरतः। अक्षारमा गुरुनी खल्म भाकानाइ जुद्ध किनीन् ॥ उन्नाब्जा মধুরো ব্বেগা বৃংহণো বাত পিত্তহা । বৃত্তমাৰুদ্ধরণ স্বাদু পিত্তমুণ কেশ্য মগ্রিকৃৎ ॥ ভল্লাতকঃ ক্যাযোকঃ শুক্রলো মধুরো লঘুঃ। বাত শ্লেমা-मद्रानाच् क्षांट्या शुक्ती शमान् ॥ হন্তি গুলা জুর• চিত্র বঙ্গি সান্দ্য কৃ-নি বুণান্। ইতি ভাবপুকাশঃ ।। 🕸 II অন্যন্ত। ভল্লাতক ফল• নিখ• ফি-नि मुनाम नामनः। एउटे एर्ग्यक्र

গু।হি ক্ষায় নধুরঞ্চ তথা। ভ ন্ধাতবৃদ্ধ নধুর ক্ষায় বাত কো-পন।ইতি রাজবল্লভঃ॥

ভলাতকী স্ত্রী ভলাতকবৃক্ষ:। ইত্য-নর:।।

ভলিকা জ্রী ভল্লাতকঃ। ইতি শব: চন্দ্রিকা।৷

ভল্লী বি ভল্লাতকঃ। ইতি শক্ রত্নাবলী॥

जल्लाः भू जल्लाः। इठामतः॥
जल्लाः भू जल्लाः। इठामतः॥
इठि जाता। जर्म्भारः। स्रमः।
जलः २ ममनाः ६ मूर्यातः ६ जल्लाः २ ममनाः ६ मुर्यातः ६ जल्लाः २ मिर्या ६ मिर्या ६ जल्लाः २ मिर्या ६ जल्लाः २ जित्रायः २ म्रम्हाः २ मिर्या ६ जल्लाः २ जल्लाः २ जल्लाः २ जल्लाः १ इठि नाज्ञानिर्यणः॥
जल्लाः २ जल्लाः १ इठि नाज्ञानिर्यणः॥
जल्लाः १ जल्लाः १ इठि नाज्ञानाः भू
सत्तावना ॥ स्रा म्हानाक भू
सत्तावना ॥ स्रा म्हानाक भू
सत्तावना ॥ स्रा म्हानाक।। इठि

ভाষা। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥
ভবঃ পু॰ জন্ম ॥ শিবঃ। ইত্যমরঃ॥
স চ জলমূর্ব্তি:। যথা। ভবায জল
মূর্ব্যে নমঃ। ইতি পার্থিব শিবলি
স্প্রাপুযোগঃ॥ ক্ষেমঃ॥ সংসারঃ
॥ সন্তা॥ পুাপ্তি:। ইতি মেদিনী ॥

ভবক: भू- जामीबंदिक:। इडिं ं ग-किश्रमात:॥

ভবষমরঃ পু॰ দাবানল: ইঙি শব্দনালা।।

खर वि यूग्रपर्थः।। वर्खनानार्थः। इति भिष्ति।। अव जापप्रथं जा-धारा उत्वृ भुव्रायन निष्ठमः। ज-म्य निष्ठवय क्षः। ज्वान् ज्ववीः खर्थः।। षिठीयार्थं ज्वाराः मञ् भुज्यम निष्ठमः। जम्य निष्ठवयः क्षः ज्वन् ज्वशे ज्वरः। वनः ज्वरः श्री। इति ह भिष्नी।।

ভবতী স্ত্রী বাণভেদ:। সতু বিবাক্ত:
। ইতি শব্দরত্বাবলী ।। দীপ্তিমতী
যথা । স্বর্গারোহণ বৈজযন্তি ভব তীণ ভাগীরথীণ পুর্যাবে । ইতি বাল্ ল্মীকিকৃত গঙ্গান্তোত্রণ ।।

ख्यनाक ब्री (न्यनाक्य्कः। इति ब्राजनिर्धण्डः॥

ভবদীয় জি ভবতইদ। যুখ্য থা।

য়দ্ধা। যথা। শুক্তাতিদ্রে ভবদীয়
কীর্জি কণৌ চ তুপ্তৌ নচ চক্ষ্মী
মা। দ্বো বিবাদ পরিহুরু মি হুন্
সমাগতো ২হা তব দর্শনায়।

ইত্যুক্তটা।

ভবন ক্লী গৃহং ॥ ভাবঃ ! ইতি নেদিনী ॥ खेनानिया था। जिल्लाहर । इंडि मुख्यस्याद्याः क्रमा ।

खत्यः भू काव्याख्यः। मजू वर्खना नः। ইजुर्गारिकायः ॥ खतहस्मा भूषना वस्रवामा क्रिशा २ भर्यः ॥ खत्याः भू वर्खनानकावः। ইजुर-गारिकायः मः किश्वमाद्रागारि-वृत्तिकः ॥

खबज्जिः श्रृ किवितिष्णयः। मह खाजवाजमः शिख्यः। नाम्बी-भाषवापि नाष्टेककर्छ। ह। उट्शर्यः। यः। ज्यर्जः २। ইতি किहायहः॥ मङ्गाप्तवमः भैथर्यः ॥

ভবৰুৎ দ্ৰী প্ৰেতপটহঃ। ইতি ় ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ॥

क्वाञ्चका जी सनमारम्यी। ইতি भद्रभाषा॥

ভবাদৃক্ বি যুদ্মৎসদৃশ: । ভবাভবাদৃশ: নিব দৃশ্যতে য ইতি ব্যৎ
ভবাদৃক: পত্ত্যা ভবছদ পূর্বক দৃশ
ধাতোঃ কর্মণি ক্রমেণ ক্রিণ্টক্
সক্ পুত্যবেন নিম্নম: । ইতি
ব্যাকরণ ।।

जार जिए जियमा जार्या। मुना।

इंड्रिमद्रः ॥ अटमान काद्र १ यथा । कृत्य ज्वः मन्या । कृत्य ज्वः मन्या ज्वः मन्या ज्वः मन्या ज्वः मन्या ज्वः मन्या ज्वः कान्य ज्वः क्वान्य ज्वः क्वान्य ज्वः क्वान्य ज्वः ज्वः क्वान्य ज्वः ज्वः ज्वः ज्वः ।। इंडिं प्रती भूद्राति ६६ अक्ष्रायः ॥

ভ্ৰানীগুৰু: পু হিমাল্যপৰ্বত:। ইতি হেমচন্দু:॥

ভবাভীষ্ট: পু• শুলুলু:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:॥

ভবান্ধিঃ পু॰ সংসারন্ধপসমুদুঃ।
যথা। ধ্যেয় সদা পরিভবন্ন মভীইদোহ ভীর্থাস্পদ শিব বিরিঞ্চি
নুত শরণ্য । ভ্ত্যার্ভিছ পুণত
পাল ভবান্ধিপোত বন্দে মহাপুক্ষ তে চরণার্বিন্দ । ইতি শ্রী
ভাগবতে ১১ ক্ষন্তে ৫ অব্যানঃ।।

ভবাষনা জ্ঞी शक्षा। ইতি শব্দর্ভা-वणी।।

ভবিক শ্লী মুখ্ল ।। তদ্বতি ত্রি। ইত্যমরঃ॥

ভবিতঃ ত্রি অতীতোৎপত্তিকঃ। ভূতঃ।ইতি কটাধরঃ।।

ভবিত্রব্য • বি ভবনীয • । ভব্য • । ইতি ভবিষ্যৎকালে কর্মণি ভাবে শক্যার্হ প্রেষ্যানুজ্যা প্রাপ্তকালার্থে চ ভূষাতো ভব্য প্রভ্যানেন নির্ম • । ইতি ব্যাকরণ ।। যথা। ন ভনস্ক্যা-

गरु भारत्रा नाय ताका भताया **छि । ভবি उ**वा गतिनव (यना इ॰ নিধন• গভঃ॥ ইতি বহি পুরাণ• ॥ ভবিত্যাতা দ্রী ভাগ্যাইভিজ্ঞী। धद्भः ॥

ভবিতা ত্রি ভবনশীলঃ।ইতিভরতঃ ।। माधु छवनमीनः। इंछि मूक्रिः॥ **७**८ शर्गागः। जृकुः २ छ विकृः १। क्टामदः ॥

ভবিনঃ পু॰ কাব্যকর্ত্তা।ইতি বি-কাওশেयः॥

ভবিশঃ পু• যিন্ধঃ।ইতি ত্রিকাও-শেষঃ ॥ ভব্যঃ। ইতি **সিদ্ধান্তকৌ**-मुम्तामुगामिशास्त्र ॥

ভবিষ্ণুঃ ত্রি ভবিতা। ইত্যম্র: 11 ভবিষ্যঃ ত্রি ভবিষ্যৎকালঃ। ইতি व्यक्तमुः ॥ भूतानवित्नव क्री। বথা। চতুর্দশ ভবিষ্য স্যাত্তথা পঞ্শতানি চ ৷ ইতি প্রীভাগবতে >२ करक २० अव्यागः ॥

ভবিষ্য ত্রি কালবিশেষঃ। তস্য লক্ষণ । বর্ত্তমান প্রাগভাব পুতি-যোগিত্ব। ইতি সারমঞ্জরী।। বর্ত্ত নানকা**লোন্তরকালীনোৎপ**ত্তিক ত্রণইতি শিরোমণিকৃত পদার্থটী-কা থগুন ।। তৎপর্য্যায়: । **অনাগ**্ ত ২ শ্বন্তন ৩ পুগেতন ৪ বন্ধ্য ে ভষ । বুল্লে । পিশ্নে । ইতি

৫ বর্ত্তির দাণ ৬ আগুটো ৭ ভাবি ৮। इंडि ब्राजनियं है। अनु उत्न ভব্যে ডী দ্রভব্যে তী ইতি সাপ্র-দাবিকঃ। মথা খোভবিতা বর্ষান্ত-রে ভবিষ্যতি। ইঙি দুর্গাদা**সঃ** ॥ ভব্য• ক্লী ফলবিশেষঃ। চালতা ইতি ভাষা। তুৎপর্য্যায়ঃ। ভব•২ ভবিষ্য ৩ ভাবন ৪ বক্তুশোধন ৫ (नागकनः ७ शिह्निवीझः १। व्यमा खनाः। व्यस्तुः। कर्षुद्रः। উ-ফত্বঞ্চ।। বাল্স্য তস্য গুণঃ। ৰাত কফাপছত্ব• ৷ পদ্বস্য তস্য গুণাঃ ৷ मधुदाद्वद्वः । क्विकादिद्वः । भूम **म्वह्त्रदृष्ध । ইতি** রাজনির্ঘণ্ট: ॥ व्यभित। ভवाः सामू क्यायामः इना মাস্যবিশোধন । তদেব পঙ্গ (मायप् ॰ एक गाहि विवाशह॰।। ইতি রাজবল্লভ:।। 🗱।। অস্থি। इंडि (मिरिनी ॥

ভব্য বি শুভ ।। সত্য ।। যোগ্য ।। ভাবি। ইতিমেদিনী শব্দরত্বাবলীচ ভব্যঃ পু• কর্মারস্ফঃ।ইতি মেদি-নী।। রসভেদে পু॰ গ্লী। ইতি শব-त्रवावनी ॥

ভব্যা জ্রী উমা। গ্রচপিপ্পলী। ইতি विदिनी ॥

ভষা জ্রী স্বর্ণক্ষীরী।ইতি রত্নগলা।।
ভবী জ্রী শুনী।ইতি শবরত্বাবলী।।
ভস র লি দুডৌ। তত্নে ।ইতি
কবিকল্লজনঃ।। র বৈদিকঃ। লি
বভস্তি।ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ভসৎ জी काष्ठः॥ अश्वमाःमः॥ क्वनः। ইতি मिष्कान्डकोमून्त्रामू गामिवृज्ञिः॥

ভসং জী ভাস্করঃ॥ বোনিঃ। ইতি নেদিনী।। সাংসং ॥ কারগুবপক্ষী ॥ প্লবঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ॥ কালঃ । ইতি কিল্লান্তশেষঃ॥

ভসনঃ পু॰ ভুমরঃ। ইতি ভ্রি-পুযোগঃ।।

ভদন্তঃ পু॰ কালঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড শেষঃ॥

ভिসত क्षे जिमा ३ दि (इमहमु:॥

जम्हकः भू• रेमवङः। ইতি শद्रः ब्रद्भावनी ॥

ভद्रका जी हर्प्यशुरमिका। ইতি भद्रश्रावनी।।

ভন্তা প্রী অণিনীপকচর্মনির্মিত্যক্ত . বিশেষঃ। ভাথী ইতি যাঁতা ইতিচ ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। চর্মপুসেবি কা২। ইত্যমরঃ।। চর্মপুসেবকঃ ৩ । ইতি ভরতঃ।। ভন্তাকঃ ৪ ভন্তকা ৫ ভন্তী ৬। ইতি শব্দরত্বাবলী।। ভব্তিকা ৭। ইতি ব্যাকরণং।।

ভজাকা জ্রী ভজা। ইতি শবরণ্ণা-বলী।

ভন্তী জ্ঞী ভন্তা। ইতিশদরর্গবলী।।
ভম লী শিবাক্ত্বণ । ছাইইতি
ভাষা। যথা। অল্যাক্ত ভ্ষণ ভম
বিভ্তি ভ্তিরস্য তু। ইতি শদ্দরর্গবলী।। তড়ম কামদেব শরীরক্তা যথ । পুসীদ সর্বভ্তেশ
ভক্ত্যা যথ পুনতা বয়ণ। ইতি মা
বদতা তেষা মমরাণা তদানলঃ
।। ললাট চক্ষু: সম্ভূতো ভম্মাকাবিল্লি জালানালাতি দীপিতঃ।।
সংস্তম্ভিতো ২থ বিধিনা হরণ গন্তঃ
শশাক ন। নহাদেবে। ২থ তড়মা
মনোভব শরীরজণ।। আদায় সর্বা

গাত্রেষু ভূতিলেপ তদাক্রেণে ! লেপশেষাণি ভন্মানি সমাদায जना रुद्रः॥भगता श्रुमं**रि काली**-বিহায বিধি সমতে। ইতি কালি কাপুরাণে ৪১ অধ্যায়ঃ॥ ৠ॥ ভষা মৃক্ণ সপ্তবিধ্যানান্তর্গতাগ্নেয্যা ন । যথা। আগেুব ভষ্মনা সান वायवर् शावकः म्जः। ইजि यागः वः ॥ 🗱 ॥ निवभूकायाः ननारि ভদ্য ধারণ মাবশ্যক। যথা। বি ना जय जिलुखुन विना कृमुक्कमा ল্যা। পূজিতো হপি মহাদেবোন म्याखम्य क्वभूमः ॥ **३७**ऽ। 🏖 क তত্ত্ব- ৷৷ ঋ৷৷ তেন কা-স্য শুদ্দি ৰ্যথা । অস্ত্রসাহেমরপ্যাयः কা স্ত भू ধ্যতি ভন্মনা। অন্নৈ তানুক রৈ-ভ্যঞ্চ পুনঃ পাকেন মৃত্ময়ণ।। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ।। 🗱 ।। অশ্মরীবিকারঃ । যথা। শর্করা সিকভানেছে। ভ-স্বাথ্যে। হশ্মরী বৈক্ত। অশ্ম-য্যাঃ শর্করাজ্ঞেষা তুল্য ব্যঞ্জন বে দনা। ইতি সুশুতে নিদানস্থানে यभादी निमान ॥

ভদাদ লী রোগভেদ:। ভদানীট ইতি খ্যাত:॥ বিডঙ্গ:॥ কলাধী তে । ইতি নেনিনী॥ ভদানস্য নি-দান সংপ্রাণ্ডি পূর্বক লক্ষণ মাহ ্ ভঙ্গরে।

ा नेषानि क्या उपार नेतानाः की ने कि भाक्क वित्र मुख्ते । जा अनुका अवस्थित क्या ए। ज्या मरमो ज्या करता जि स्था ए।। ज्या मरमो ज्या क मण्डरका २ जून्।। ज्या कमा रमा भाषा मिन क्षिता जा मा मा भाषा की मा स्था पा मा भाषा की मा स्था पा मा

ভমকার: পু• রজক:। ইতি শব-মালা।।

ভমগন্ধা ত্রী রেণুকা। ইতি ভাব-পুকাশ:॥

ভমাগন্ধিকা স্ত্রী রেণকাখ্যগন্ধ্ব্য ! ইতি জটাধরঃ ৷৷

ভমাগন্ধিনী জ্রী রেণুকাখ্যগন্ধদুব্যুণ । ইত্যমর: ।।

ভমাগর্ভ: পু॰ তিনিশব্দ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

ভমাগর্ভা স্ত্রী কপিলশিংশপা। ইত্য-মরঃ ৷৷ রেণুকা নাম গন্ধ্যুব্যং ৷ ইতি জটাধরঃ ৷৷

ভश्रव्न बी वासक्षैः॥ शाःभ्वर्षनः ॥ हिनः। इति स्मिनी ॥

स्यादाश जी म्यावृक्षः। ইडि

ज्ञाकिर्धितः॥

स्मात्यकः क् त्रभूतः। इंडि नय-

ভুমাস্থ্য: পৃ• কপূর: ৷ ইতি ত্রিকা প্রশেষ: ॥

ভক্ষ ঞ ভক্ষণে। ইতি কবিকর দ্রনঃ ।। ঞ ভক্ষতি ভক্ষতে। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

ভক্ষ ক ভক্ষে। ইতি কবিকল্লড্ৰম: ॥ ক ভক্ষযতি। ইতি দুৰ্গাদাস: ॥

ভক্ষক: বি থাদক:। ভক্ষণপর:। তৎপর্য্যায:। হস্মর: ২ জন্মর: ১। ইত্যমর:।।

ভক্ষটক: পু॰ क्षृतुरगाक्तूद्रक:। ইতি द्राक्रनिर्घण्टः॥

 ইতি কর্মলোচন ॥

ভক্ষণীয় ত্রি ভক্ষ্যদূব্য ভক্ষণ যোগ্য ইতি ভক্ষধাতোঃ কর্মণ্য-নীয় পুত্যয়েন নিম্নন্ন ৷ ইতি ব্যাক-রণ ৷৷

ভক্ষপত্র। জ্রী নাগবল্লী। ইতি **রাজ**-নির্ঘণ্টঃ ॥

ভিক্ষিত বি কৃতভক্ষণবস্থ। তুৎ পর্য্যায়ঃ। চর্ষিত ২ লিপ্ত ৩ পুত্র-বসিত ৪ গিলিত ৫ খাদিত ৬ প্লাত ৭ অভ্যবহৃত ৮ অম ১ ক্রম ১০ গুরু ১১ প্লস্ত ২ অশিত ১০ ভুক্ত ১৪। ইত্যমরঃ।। জিফ্চ-ত ১৫। ইতি শব্রত্বাবলী।। ভক্ষ্য বি ভক্ষিত্ব্য । ভক্ষণীয়া

ক্ষ্য তি ভাষ্ণতব্য ভিষ্ণায়।
যথা। পুতিপদি স্থাও ন ভক্ষ্য
। দশন্যা কলম্বী ন ভক্ষ্য। ইতি
মৃতিসর্বস্থ । অপিচ। নাসনেক
নরে। যাতি দ্বো নাসৌ নৃগশ্বরী।
অহিরেক দিন যাতি অদ্যভক্ষ্যে
ধনুর্গ্রণঃ।। ইতি হিতোপদেশঃ।।

ভক্ষ্যকার: ত্রি পিষ্টকবিক্যজীবী।।
পিষ্টকশিল্পী। ইতি ভরত: ।। তথ পর্য্যায:। আপ্রিকঃ২ কান্দ্রিকঃ ০। ইত্যার:।। প্রিকঃ ৪ পূপ্রি-ক্রবী ৫ মোদকাদিবিক্রবী ৬। ইতি শব্দরবাবলী।। जक्राजकार की थान्यायान्युराः । यथा । ভक्ष्या ভक्ष्यान्य तन्त्रानि ব্ৰাহ্মণস্য বিশেষতঃ। অত্ৰ শিষ্টা यथा तुर् खथा कार्य्यविनिर्यः । हे ত্যেকাদশী তত্ত্বে শল্প বচন•॥ 🕸॥ নারদ উবাচ। ভক্ষ্য কিম্বাপ্যভ্-ক্ষ্যঞ্ছিলানা গৃহিণা পুভো। ্য্তীনা বৈফ্বানাঞ্চিব্বা বুক্ষ ্চারিণা•।। কি• কর্ত্তব্য নকর্ত্তব্য ম-ভোগ্য ভোগ্যনেব চ। সর্ব কথ্য সর্বজ্ঞ সর্বেশ সর্বকারণ।। শ্রীমহে-श्वत উवाठ । कन्धिलभन्नी विश्रुण्ड নিরাহারী চিরণ মুনিঃ। কশ্চিৎ স भीत्र शाहाती कना हात्री ह कम्हन।। ্ অন্নহারী যথা লোকে গৃহী চ গৃ-, হিণী যুতঃ। স্বো নিছা চ বা বুন্ধন্ ৰুচীনা বিবিধ। গতিঃ।। হবিষ্যা अ· वृष्मिगानाः शुम्बः गृहिगाः अहा । नावायरगाहिष्ठे निष्ठे मनिरवम्। म-ভক্ষ্যক ।। অন্ন বিধা জল মৃত্র यिष्टिका जनित्तरमः। विमृत्रः अर्व পাপোক্ত মুন্নঞ্চ হ্রিবাসরে ॥ ব্ৰাহ্মণ: কানতো হনঞ্ধ যো ভঙ্জ হরিবানরে। বৈলোক্য জনিত পাপং সো হগি ভুদ্ধে ন সংশ্যঃ॥ ন ভোক্তব্যু ন ভোক্তব্যু **ন ভো** জব্যঞ্চ নারদ। গৃহিভি ব্রান্ধিণৈ 🏻

तमने मं भारत क्रियामती ॥ नहीं रिमात्मा निक्रिक वृक्तिना उद्यान मृत वः। পুযাতি কালমূত্রঞ্ভুভু হরিবাসরে।। ক্রমিভিঃ শালমানৈ শ্চ ভক্ষিত স্তত্র তিপ্ততি। বিমূত্র ভ कनः कृष्। याविष्मु। कडकंश। क-चाष्ट्रेगीनित ज्ञाननवनी निवरम इ রে:। শিবরাত্রৌ চ য়ো ভুঙ্কে সোপি দ্বিগুণ পাতকী ii উপবাসাসমর্থ-(भ्रष्ट क्ल मूल जल भारत्य। मार्ष्ट শরীরে স ভবেদন্যথা চাত্ম ঘাতকঃ ॥ अक्ष्जुर्ह्ह इविष्ठान्नः विस्था देनरव म् । भव ह । न ভবেৎ পুত s्वायी म চোপবাসফল লভেৎ ॥ একাদশ্য মনাহারী গৃহী বিপ্যাশ্চ ভারত। তেচ তিপ্তস্তি বৈঙ্গ থাবদ্বৈ বুন্ধণো বযঃ॥ গৃহিণা॰ শৈব শাক্তানা মিদ মুক্তঞ্চ নারদ। বিশেষতো বৈঞ্চবানা• यञीनाः तुष्काठातिभाः ॥ निज्यः रेनद्य-দ্য ভোজী চ ত্রীকৃষ্ণস্য চ বৈষ্ণবং। নিভ্য শতোপবাসানা জীবন্যুকো লভেৎ ফল•॥ বাঞ্চ্নুন্ত তস্য স•স্শ-র্শণ তীর্থানি সর্ব দেবতা:। আলা-अ· मृर्भनेटिक्ष्य अर्द्ध आश भुगानन ॥ দিবিল নল পৃথুক শুজ দেশ বি-শেষকে। নাত্ত শন্ত বিপাণা **७का** ह निविद्या । श्विकंका

ষতীবাৰ বিধব। বুক্ষচাৰিলা । তা-धूनक गण पुत्रम उरेश छ दस्रमी ধুব-॥ তাদুল- বিধ্বাস্ত্রীণা-যতীনা-वुक्राविशाः। जनिवाक विर्भुमु (गामा न नम्म धुत ॥ नर्खवाः वाक्रानाक वाजकाः मृग् नातम । যদুক্ত সামবেদে চ হরিণা চাহ্লিক ক্রমে॥ তামুপাত্রে পয়ঃ পান উहि ষ্ঠে ঘৃতভোজন । দুধা লবণসাৰ্দ্ধ সদ্যে গোমা•স ভক্ষণ ।। নারিকে-লোদক কা সে তামুপাত্রে স্থিত নধু। ঐক্ব তামুপাত্র সুরাতু **ण**ु न मः भयः ॥ উत्थाय वान्रहरः ন যক্তোয়ণ পিবতি দ্বিলঃ৷ সুরাপীতী স বিজ্ঞেয়ঃ সর্বধর্ম বহিষ্কৃতঃ ॥ অ-নিবেদ্য• হরে রন্ন• ভক্ষ্যশেষঞ্চ নি-ত্যশ:। পীতশেষ জলঞ্চৈব গোমা স সদৃশ মুনে ৷৷ বাতিঙ্কন ফলঞ্বৈ গোমা•স• কার্ত্তিকে মৃত•। মাঘে চ मूनकरिक्व कनशी भगतन उथा ॥ খেতবৰ্ণঞ্চ তালঞ্চ মসুর নৎস্য এ व ह। अर्खिया॰ तुाक्षणानाव्य छ। जाकाव्य সর্বদেশতঃ ॥ মৎস্যাশ্চ কানতো ভুক্তা চোপবাস ত্ত্যহ বসেৎ মুগ্রু বশিষ্টে ভক্তঃ ক্রা শুক্তি মাপ্নোতি नुष्माः। भुविष्यम ह स्या अ खकानेथनामनः। विजीवायाक वृ-

হতী ভোজকো ন মরেন্ধরিণ!! অভ का अप भारता लक्ष भाजू वृष्टि करा भार । ভ্তीयाया क्षजूर्य्याक म्लक धन-नामकः ॥ कलक्ष कात्रगरिक्य शकः म्या वित् छक्षन । जिर्यप्रानि .প্রাপযেত্ত ষষ্ঠ্যাঞ্চ নিম্বভক্ষণ ॥ রোগবৃদ্ধি করক্ষৈব সপ্তম্যা তাল ভক্ষণ ৷ নারিকেল ফল ভক্ষ্য নষ্ট मृतः वृक्षिनामनः ॥ जुषी नवमृताः (गामा अ मन्मा । क्वा मिका। ্একাদশ্যাণ তথা শিষী দ্বাদশ্যাণ পুতিকা তথা।। ত্রযোদশ্যান্ত বার্ত্তা-की जक्षप॰ পूध नामन॰। हजूर्यमा নাষ ভক্ষ• মহাপাপকর• পর•॥ পঞ্চশ্যা তথা মা স নভক্ষ্য গ্-হিণা মুনে ৷ গৃহিণা প্রোক্ষিত भाष्त्र जक्ष्य मन्य मितन मितन ॥ না সঞ্চ রক্তশাকৃঞ্চ কা স্পাত্তেচ ভোজन। निविकाः भगत रेहत क्र्य না•সঞ্চ প্রোক্ষিত•॥ রাত্রৌ চ দধি ভক্ত **भ**यन সন্ধ্যযো দিনে। রজ-चना श्वीद्रामक शू॰मानीना नजकार-कः ॥ मृद्राणाः याककानाथः मृद्रुणाः-দাম মেব চ। অভক্ষাণাঞ্চ বিপুর্যে यस्य व्यवीপতে: ॥ वृक्षन् वाष्ट्र ষিকামঞ্চ গণকানামভক্ষ্যক। অগু-मानी विज्ञानाक विकिৎ मानातक-

স্য চ।। হস্তা চিত্রা হরে। তৈল মগু। . श्रक्षाभा उक्षाका कर । मूल मृत्य छापू. भार मा भार शामा यूनाकः।। ्छि तुक्षरेववार्ख वुक्तशाख २१ व ध्रायः भाषासर्वश्रं ७) व्यव्राय्क ।। # ।। नन्त उवाह । वर्गानाक हजूर्गाः ঞ্চ ভক্ষ্যাভক্ষ্যঞ্চ সাম্পুত । বিপা क॰ कर्मारास्थ्व महिंदा भारतान-পি ॥ কথ্যস্ব মহাভাগ কারণানাঞ্চ काরণ। पुरत्ना १ना क्ष शृहानि निजान मन्त्री यत्र ॥ श्री जगवानुवा-ह। ज्काजकार हरूरीक वर्गानाक যথোচিত ৷ বেদোক্ত শুষতা তাত जादशानः निकासय ॥ व्ययः शाख পয়: পান পব্য সিদ্ধান্ন নেব চ। ज्हादिक भर् ७७ नातिरकत्नार क ज्था।। कने मृतक यटकिकिन चक्रा भनू त्रवृती । पक्षां ए उष्ठ भोवीत मलकाः तुक्ता मलः ॥ নারিকেলোদক কাংস্য তামুপাত্রে ছিত মধু। গব্যঞ্চ তামু পাত্রস্থ সর্ব মদ্য ছত বিনা ।। তামুপাত্রে পয় পান মুছিঙে ঘৃত ভোজন । मुक्ष म नवनिष्क्व मान्तर गामा म ভক্ষণ ৷৷ অভক্ষা মধুমিশুঞ্চ ঘৃত **े अन्य १ ७७** । जानू के १९५ में -যুক্ত মভক্ষ্য শুক্তি সমাত্র ৷ প্রতি

्टक्षा अ

(मये डलर्ड्छव नाव ह म्लकं उथा । विर जी बैने थ मित्राम महात्मा (जी) জন তথা ৷৷ ভক্ষ্যঞ্জ রাত্রিশেষে চ भूतः भाकः भविजारहरा भानीयः भागमः हूर्नः घ्ठः नवनं त्वव ह ॥ अ-স্তিক লবণকৈ ক্লীর ভক্ত তথা মধু। হস্তাদ্ধস্ত গৃহীতঞ্চ সদ্যে গো-মাণ্ম ভক্ষণ।। কপ্রে রৌপ্যপা-ত্রস্থ মভক্ষ্য শুতি সমত । পরি বেশন কারী চেন্ডোক্তার• স্পৃশতে -यि ।। अञ्चल्धः उत्तर्भः मार्वया (नव अधाउ॰। नक्रमाना॰ গণ্ডकाना॰ महियागाक शक्तिगा।। जलाना भ করাণাঞ্চ গদ্ধভানা॰ বিশেষত:। भार्कावाणाः मृगानाभाः सक्वाणाः বুজেখর ৷৷ ব্যাঘাণা নিশ সিংহানাণ ত্যাক্ষ্য: भा•भ• नृगा• मना। अलोकः বাঞ্চ নক্রাণা গোবিকানা তথৈব চ ॥ मध्कानाः कक होनाः हक्ष्कानाक নিশ্চিত। গ্রাঞ্চমরীণাঞ্চ কলৌ মা॰স মভক্ষ্যক ।। হস্তিনা । হোট-কানাঞ্চ নৃণা মেব চ রক্ষসা । দ শ-শ্চ নশকশ্চৈব নক্ষিকা চ পিণীলি-का । श्रामा वाक निविकाना वाक বেদে ব্রেখর। বানরাণা ভল্লকা-नाः भवजानाः उरेथन् ।। निविद्धः म् ना जीना॰ गर्म जानाक मा॰ मकः।

ल्काज

व्य उक्त । निमानाक मू आ पि वि घ्उ॰ ॥ তথা ৷৷ ধান্তকশ তথা তক্ৰ বিপা-नाः व्यूनीञ्चार स्वान्**म मूरिहः गुरमकः ७**म्। दूषारिकः उथा।। वर्गनाकः ह- ॥ তুর্ণাঞ্চাপ্যভক্ষ্যঞ্চ শুতৌ শুত। আ जक्र भाष्ट्र करेक्षव मर्खियाक अरविर्धिः ति ॥ भयूर् विजः बनकामः विश्वानाः দুখ্বনেব চ। বর্ণানাঞ্চ ততুর্ণাঞ্চাবী-রান্নস্য চ ভক্ষণ ॥ তদমঞ্চ সুরাতু ল্য পোমা সাধিক মেব চ। অবী-রান্নঞ্ধ যোভুড়ে ব্রাহ্মণো জ্ঞান দুর্বলঃ ॥ भिञ् (नवाईन जम् निस्न मन्त <u>व</u>ुवी८ । वाञ्चणानाः रेवकवाना अख-ক্ষ্যুণ মৎস্যমেব চ II ইতরেষা মভ-ক্ষ্যঞ্প পঞ্চপর্যসু নিশ্চিত । পিতৃ দেবাবশেষে চ ভক্ষ্য মা স ন দূ-ষিত•া৷ পঞ্পর্যসূত্যাজ্যঞ্চ সর্বেষা• মনু রবুবী । অস·স্তঞ্জ লবণ তৈ-লঞ্চাভক্ষ্য মেব চ ॥ ভক্ষ্য পবিত্র• मर्खियाः वाञ्चरन विज्ञः मःकृष्ठः । একহন্তে ধৃত তোয মভক্য সর্ব সমত ।। আবিল ক্নিযুক্ত ঞাপরি-भूषाञ्च निर्मात । जा जका १° तु । का ना ঞ্চ বৈষ্ণবানা বিশেষতঃ।। অনিবে দ্যু হরে রেব যতীনা বুন্ধচারিণা । शिशी विका निर्मुउक मध् गवाः एउ॰ उँथा।। यट कि श्रिष्वस वा जाउ न

ভক্ষ্যঞ্চ শুতৌ শুত্ত ৷ পক্ষিভক্ষ্য কীটভক্ষ্য শুদ্ধ পশ্বফলন্তথা ৷৷ কাকভক্ষ্য নভক্ষ্যঞ্চ সর্বেষাণ দুব্য নেব চ। ঘৃতপক্ তৈলপক্ নিষ্ঠা-म॰ मृ मु म॰क् उ॰ ॥ वाङकऽ॰ द्वाका-गानाक मृष्ड्रे॰ हिभी हेक । ज-র্বেষা মশুচীনাঞ্জলনন্ধ পরিত্য-জেৎ।। অশোচান্তাৎ পরদিনে শুদ্ধ মেব ন শ শ শ यः। বিপাকঃ কর্মণা-মেব দুষ্করঃ শু,তি সমাত ।। ভক্ষ্যা-ভক্ষ্যঞ্চ কথিত যথা জ্ঞান বুজে-শর।। ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে শ্রীকৃফজন্ম খণ্ডে ৮৫ অধ্যায়ঃ।। 🕸।। ভক্ষ্যা-ভক্ষ্যঞ্চ তে শিষ্য বেদিতব্যু তদ্-ন্তরে। করীরস্য বধঃ শস্তঃ ফলান্যৌ দুষরস্য চ।।সদ্যো ভক্ষী ভবেত্তেন অভক্ষ্যা পূতি বাসিকা। ন ভক্ষণী-য• বারাহ• মা•স• মৎস্যস্য সর্ব-भः ॥ अज्ञां नाम्नो र्हाउ भी-ক্ষিতৈ হি ন সংশযঃ॥ ইতি বারা-হে ব্ৰান্ধণ দীক্ষাসূত্ৰ নামাধ্যায: ॥ ज्ञानावः जी दाजानावः। ইতি রাজনিঘটঃ !!

ভা ল ষ দীখৌ। ইতিকবিকল্পজনঃ।।

.ল ভাতি।য ভা! ইতি দুর্গাদাসঃ।।
ভা ন্ত্রী পুভা। দীখিঃ। ইত্যমরঃ।।
ভাঃ পু॰ সূর্য্যঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডলেষঃ।।

ভाक्रिः भू॰ मट्माविष्मयः। मधुत्रष्। मीजव्। व्याप्तः। स्न-মুকারিত্ব•। গুৰুত্বঞ। ইতি রাজ-

বল্লভ: !! **अक्टेः भू∙ भर्ब**ङ्ख्यः। म**्म**ु-(छनः। इंडि (मिनि ॥

ভাকোষঃ পু॰ সুর্য্যঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ 11

ভাক্ত• ত্রি পারিভাষিক•।গৌণ•। नाक्रिकः। ঔপচারিকः। यथा। नत्त्वर• शद्रव मधः मा**मि** कियः মাণস্য কথ• যাশ্মাসিকত্ব•। ইতি 🛛 চেন্ডাক্ত। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব।। ভক্তসম্বন্ধিনি চ॥

ভাক্তিক: ত্রি অন্ননপোষ্য:।ভক্ত নমৈ দীয়তে। ইতি সিদ্ধান্তকৌমু-म्रामुशिमवृश्विः॥

ভागः পু॰ অ॰मः। ইত্যমরः॥ क्रिगार्ककः॥ जागाः॥ वक्रानाः। ইতি শব্রত্নাবলী।। রাশেক্তি•শ-ভাগৈকভাগ:। यथा। विः माः मक স্তথা রাশে ভাগ ইত্যভিধীয়তে। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ধৃত বিষ্ণুধর্মো: खन्नवहन ॥

ভাগধেষ ক্লী ভাগ্য । ইত্যনর:।। ভাগধেষঃ পু॰ রাজকর:।ইত্যম্র:

।। मांगोहर । इंड, बर्भावः ॥५ ক্টা ইতি ভাষা। অস্য গুণা । ভাগবত স্নী অপ্তাদশপুরাণান্তর্গত भश्भभूद्रागविष्णयः। अ ६ (बहुब्राः সক্ত द्वारणकम्म द्वाविष्णः बि-**म**जाध्याय ममन्विजाञ्चाहम मर्मु শ্লোক সংখ্যাক ভগবন্মাহাত্ম্যব-र्गम भुधानका गुइः। यथाक नर माभूतारा भूतागरान भुखार । यजापिक्छ। भायजी दर्गाए**उ धर्म** বিস্তর: । বৃত্রাসুর বধোপেত ত-জ্ঞাগবত নিষ্যতে ৷৷ লিখিত্বা ত্ रया पर्नारक्तम मि श्र ममन्त्रिः। (भूविश्वमहाः (भोर्गनामहाः म या-তি পরম পদ ।৷ অষ্টাদশ সহ-সু।ণি পুরাণ তৎ পুকী ত্তিত। পু-রাণান্তরে চা গুম্বোপ্তাদশ সাহসো দাদশক্ষ সমিতঃ। হয়গুবি বুক্ষ-বিদ্যা যত্র বৃত্রবধ স্তথা ৷৷ গায্ত্র্যা চ সমারম্ভ তবৈ ভাগবত বিদু রিতি। পদ্মপুরাণে চ অম্বরীষ• পুতি গোতম বচন । অম্বরী য শুক পোক্ত॰ নিত্য• ভাগবত॰ শৃণু। প-ठेव चम्र्थनाणि यमी हिन ज्वक्र মিতৃ। ইতি শ্রীভাগবত টীকাযাণ তি ধরস্বানী !! তত্র পুথমস্বন্ধে প-রীঞ্জিলারদ্যোক্ত পাথ্যালা বি পুশাপাৎ প**্রিফতস্য প্র্রুরৌপ-**

(वभाः ! भक श्वीकिं गरारक ा विजीयकाका । यागभावनाया ক্রান্তি:। নার 🕟 যাঃ সম্বাদঃ। অ-वजातानुगीजः। महनानिकतमा म्-প্রিক। ২। তৃতীযক্ষমে। বিদুরোজ-वनवारः। ऋ वृरेमा व्यापाः नवारः। পুরাণ সংহিতা পুশঃ। মহাপুক্ষ স-স্থিতি:। প্রাকৃতিক: সর্গঃ।বৈক্-তিকা: মপ্ত সর্গা:। বুন্ধাও সমূতি: । विद्रार्हे भूकरवा८भिखः। कालमऽ স্লু সৃন্ধস্য গতিঃ। পাণ্ম সমৃভবঃ। व्यास्य जू व উष्का तथा। हित्रभाक वशः। উक् विर्यागवाक् मर्गः। कृत्मः र्गः। व्यक्तनात्रीनत्रम्। मर्गः। यउः सा यस्य मनुः जीगाः जाम्। भुक्जिः मः তর্নপা চ ৷ কর্দ্ম পুরাপতে ধর্মপ-ত্মীনা সম্ভান:। ভগবৎ কপিলাব-ভার: ৷ কপিলেন দেবহুতি সম্বাদশ্চ 🛚 10 । ठजूर्थऋस्ता । नव वुका ममूर्भः ত্তি:। দক্ষযজ্ঞবিনাশন । প্রবচরিত। । পृर्थाः भागीनवर्श्विण हित्रजः। नात्रम्म अचारम्ह। शक्षमऋस्ति। প্রিযবুত চরিত। দ্বীপ সমুদ্রাদ্বি-র্ষ নদুঃপবর্ণনং।জ্যোতিশ্চক্রসা, সং-স্থান ৷ প্রতাল নরক স্থিতি শ্চা৫৷ विष्यत्तु। एक्जिस । उर् भूशीनाः শন্ত জিল্লী যতঃ দেবাসুর নর তির্য্যন্ত্রগ

थगाम्यः। ज्ञुङ्केम् जन्म ह। ५। मध्य ऋक्ष। मिरा भू धार्या निधनः। भुङ्गाः দচরিতঞ্চ। ৭। অষ্টন ক্ষন্ধে। নদ্বরা-न्हति छ । गरजन्तु विस्माक्षण । भन्न उदावजादाः। इयमीर्यानत्या १व-ভারা:। জগৎপতে: কৌর্ম মাৎস্য नात्रिंश् वामन क्लानि। कीद्राप मथन । (मवामूत यूक्का ৮। नवम ऋक्षा व्राजवः भानूकी र्वनः। इन्वाञ्च जग **७६**•मः। जूम्/म व•मः। ইला-शायान । जारताशायान । স्र्रेर-वःभानूकथनः। भभारः नृग (मोकनऽ चर्जाठि कञ्च ए थद्देश्य मान्नाकृ সৌভরি রামাণা চরিত। নিমে রক্ পরিত্যাগঃ। জনকানাণ সম্ভবঃ। প-রশুরামজন্ম। ভূবে: নি:ক্ষেত্রীকরণ। যথাতি নহুশ ভরত শান্তনু ত**ং সূত** यम्नाः वःभान् की र्खनक । २। मभम ऋस्त । 🗐 कृष्ण्म । वमुरम्वगृरम् जम्र । গোন্দলে তস্য বৃদ্ধি: ৷ তস্য পূত্ৰা भयःभानः। भक्तिहाहिनः। जृगाव-র্ত্তবধঃ। বক বৎসযো বধঃ। অঘাসুর বধঃ। ধাতা বৎসপালাবগৃহন । ভাতাসহ ধেনুকস্য বধঃ। পুলম্ব বধঃ । থোপালানা॰ দাবাগ্নেঃ পরিত্রাণ।। कालीयस्थन । अश्राष्ट्र नंन्हरमाक-१०। कन्यानाः वुज्वर्व्या। यञ्जलञ्जीः

ভ্যः পুসাদः। विशुगामनूशा ভি গোবজনোজারণ ৷ শক্ত বৃ কর্ক কৃষণ্য যজ্ঞাভিষেকঃ র1-ত্রিযু ক্রীভিঃ ক্রীডা। শহুচ্ডস 14: । কেশিবধঃ। অক্রাগমন•। ম-क्षणार्भश्रा भृष्टानः। वुकाः 11. विलाभः। मथुतात्नाकनः। गड मू-প্তিক চানুর ক॰সাদীনা॰ বধঃ। সা ती-পনে म् उ পুঞানयनः । উদ্ধব রা ভ্যা॰ সহ হরিণা যদুচক্রস্য বি कद्रगः। बद्रामञ्ज ममानील वर्ल्स वधः। यवत्मनुभा चाजनः। जन ল্যা নিবেশন । পারিজাত হরণ ৰুন্মিণী হরণ । বাণেন সহ যুদ্ধ পাুগ্রোতিষপতি হত্বা কন্যানা त्रगः। रिक्रा (भी खुक भान्न प्रस्वक শয়র দ্বিদ পীঠ মূর পঞ্জনানা॰ মাহাত্ম্য বধশ্চ। বারাণস্যা দাহঃ । পাণ্ডবান্ নিমিন্তীক্ত্য ভূমে ভা রাবতরণঞ্। ১০। একাদশক্ষমে বিপুশাপাপদেশেন শ্বজল সংহারঃ উদ্ধব সন্থাদঃ। উদ্ধবাষ আত্মবিদ্য কর্ম বিনির্ণয কথন ৷ আত্মযোগানু ভাবতো মর্ত্য পরিত্যাগশ্চ। ১১ । माम्भक्षता । गूग नक्षा वृज्धिः। क लो नृगामू शक्षरः। हजू विश्व भुलयः। ত্রিবিধোৎপত্তিঃ। পরীক্ষিত দেহ-

ত্যাগঃ।ব্যাসকত্ ক শাখা প্র नः। भार्क (७४म) मदक्या मूर्य বিন্যাসশ্চ। ১২। ইতিশ্রীভাগা >२ ऋस्त्र अनुक्रमिकायायः॥ ত্রি ভগবন্ডক:। ব ভাগবতঃ लक्ष्णः। यथा। अर्ह्यस्यान् अद्भिः ' জ্য নিত্যু ভগবদা শুয়ঃ। রভ স্তা য সেবাযাণ স ভাূগবত উচ্যতে ইতি পাদ্মোত্তরথণ্ডে ১১ অধ্য ॥ 🗱 ॥ अठ यम मूरे छ छ । य । যে তু ভাগবতা লোকে তहिः ख८ भद्रायगाः। भृ बयि अना १ कु ए ए ए जाबाः मून्तजः॥ हे বহি পুরাণে দূতান্ পুতি যম বচ ॥ স্কান্দে শ্রীমার্কণ্ডেয ভগীরথ चारतः। तमभीरमय अःयुक्तः विः বৈশ্ব বল্পভ•। নোপাসতে মর্ছ পাল তে বৈ ভাগবতা নরা:।। পু ণাত্যযে ন চাশুন্তি দিন প্রাপ্যহা नंताः। व्यर्वेष्ठि कागतः त्राव्वो मा ভাগবতা হি তে 🛭 উপোষ্য দ্বাদ শী শুদ্ধা রাত্রৌ জাগরণান্বিতা অল্লা• তু সাধ্যেদ্মস্ত স বৈ ভাগা তো বর:।। ভক্তি র্ন বিচ্যুতা বেষ ন চ্যুতানি বুতানি চ। স্পুষ: ह পতি যেঁষা তেসু ভাগ্রতা নর

मूक्नाकाः । भूष्य खाळ तागा (य সদা ভাগবতা হি তে॥ একাদশ ऋक्ति। मर्बज्छम् यः शाम्य छगवः ভাব শান্ত্ৰ:। ভূতানি ভগবত্যা-অনেগৃষ ভাগৰভোত্তন:॥ ন যস্য ৰ পর ইতি বিত্তেম্বাত্মনি বা ভিদা। সর্ব ভূত সমঃ শান্তঃ স বৈ ভাগে বতোত্তম:।। হরিযোগেশরোত্তরে। भृही जा भी निषु सिप्त थीन (या न पहिंडे न काङ्कि । विकासीया मिनः भागान् স বৈ ভাগবভোত্তমঃ ।৷ বৃহন্নারদীযে । শিবে চ পরমেশানে বিফৌ চ পর-भाषानि । अभवका भुवर्त्वस्य छ दि ভাগবতোত্তনাঃ ।। ফান্দে। दिया॰ ভাগবত শান্ত সনা তিপ্ততি সমি ধৌ। প্ৰয়ন্তিচযে নিত্যুণ তৈসুগ্ৰ্ গৰতা নরাঃ।৷ যেষা॰ ভাগৰত শা-**দ্র•** জীবিতাদধিক• ভবে**ে। মহ**ণভা-গবতাঃ শুেধা বিষ্ণুনা কথিতা নরাঃ । देनदम् । जाजनाहामनः मर्बः यथा শক্ত্যা দদাতি যঃ। বিষ্ণু ভক্তস্য স-তত স বৈ ভাগবতঃ মৃতঃ॥ গাৰু ক্ষা যেন সর্বাত্মনা বিষ্ণু ভক্ত্যা ভা (वा निविश्वा । विकादियु क्छाना বামহাভাগবতো হি স: ॥ হৃহয়া-इति । जूनजीकाननः मृक्षा (य नमः क्ष्यिन नहाः। ७८ का हा कि उ कर्गाः

বে তেবৈ ভাগবতোত্তমাঃ ৷৷ তুলসী शक्षमाष्ट्राय मखाय· व्यर्वा जु या। তন্মূল মৃদ্ধৃতা যৈশ্চ তে বৈ ভাগৰ-ভোত্তনা:।। মৎকথা শুবণে যেষা॰ বর্ত্ততে সাভি্কী মতি:। তদক্রবি সুভক্তাশ্চ তে বৈ ভাগবতোত্তমাঃ।। ·স্কান্দে। ম**ুকথা**• জৰুতে য**ন্ত ন**ু-कुषाक मृत्गां हि । वृष्राह र क থাযাঞ্চল বৈ ভাগবভোত্তম: 11 বৃ-रमात्रनीय । मन्नानमान्य मण्डला মন্তক্তজন লোলুপাঃ। মন্নাম শুব-' ণাসকা স্তে বৈ ভাগবভোত্তনাঃ।। य श्खिननहिं नामानि श्दाः भृषि হর্ষিতাঃ।রোমাঞ্চিত শরীরাক্ষ তে বৈ ভাগবতোত্তমাঃ ॥ অন্যেষা মৃ-ं मयः मृष्ट्वा (य २ ज्जिनमः जिल्मानवाः । হুরিনাম পরা যে চ তে বৈ ভাগব-**छा**खगाः ॥ स्नात्म । (य **१** इयस्रि मना विकु वास्क्रमा वत्रन इति । দেহিনঃ পুণ্যকর্মাণঃ সদা ভাগবতা हि (७ ॥ रैनाक । विकृत्कात गूजा-ন্যেব করোতি স্নেছ সংযুতঃ। পুতি-गाक हरत निजा भूतरांट भूगजा-ত্মবান্।। বিষ্ণুভক্তঃ স বিজ্ঞেয়ঃ ক-र्याग मनना शिद्धा । नाद्वायगन्नाद्धा-নিত্য ভূপ ভাগবতো হি স: ॥ পা-দ্মোত্তরখণ্ডে। তাগাদি গঞ্চ সংস্কা-

त्री नरवज्ञा कर्मकातकः। अर्थशक বিদ্বিপ্রো মহাভাগবতো হি স: ॥ **এकार्डिन जमा विरम्भे ययाप्पर्य ज**-রাষণাঃ। তখাদেকান্তিনঃ প্রোক্তা স্তদ্ভাগবত চেতস:।। একাদ**শস্ক**দ্ধে । उद्घापा उद्घापाथ (व रेव मा॰ यावान् যশ্চামি বাদৃশঃ। ভজন্তানন্য ভাবে ন তে বৈ ভাগবতা মতাঃ॥ ন কাম কর্ম বীদ্ধানা যস্য চেত্রসি সম্ভবঃ। वामुप्रदेवक निष्यः म देव ভागवरकाः खगः ॥ कात्म् । यम् कृ ह्गउम्। পি কেশবে প্রমতে মন:। ন বিচ্যুতা চ ভক্তি বৈ স বৈ ভাগবতো মরঃ॥ আপন্নত্তস্য যস্যেহ ভক্তি রব্যক্তি চারিণী। নান্যত্র রমতে চিন্ত । ন বৈ ভाগবতো नद्रशा र दियार गर्भद्र। বিসৃত্ততি হৃদয় ন যুস্য সাক্ষান্ধরি রবশাভিহিতোপ্যযৌষনা**ল: ৷ পুণ** ষ রসন্যা ধ্তান্ত্রিপদ্ম: স ভব্তি ভাগবত পুধান উক্তঃ।। নধ্যম মাহ তবৈব। ঈখরে তদধীনেষু বা**লিশে**-यु दिवर मूठ। (भुन रेम वी क्लालाः ক্ষা যঃ করে।তি স মধ্যম:॥ কনিষ্ঠ छ देवत । अर्हाया भित्र इत्राय भ्का यः শুৰ্বে হতে। न ভজ্জেৰু চান্যে স ভক্ত: পুাক্ত: মৃত:।। ইতি वि হরিভকিবিলাসে ১০ বিলাসঃ॥

ভागिक वि भवृष्कित्रमुम्हि। मुन् টাকা ইত্যদি ভাষা। যথান ভাগে বৃষ্যাদি রশ্বিন্ ভাগ্য ভাগিক শত•। ভাগ্যা ভাগিকা বিংশভি:। ইতি সিদ্ধান্তকৌসুদী।। ভাগিনেयः भू जिभीभूयः। उट . नर्गायः । यत्रीयः २ । इज्जातः ॥ यान्यः ७। इति अक्षत्रपावनी ॥ क ह स्या ्रिमिलः । यथा। य-িবৃদ্পুলো ৬জ জুলি ভাগিনেয়ে 🗣 বিট্লতিঃ। এডি রেব হত य-ভূ ওদ্ধত খন মেৰ হি।। ইতি তি-⁻ **थ**ऽक्षिञ्जुः ।:क्क्षा जमऽाव**णऽरमा**-ব্যত্ত্ব॰ যথা। পিতৃব্য গুৰু দৌহি-बान् छर्दः स्त्रीय भाजूषान्। श्रुकः যেৎ কব্য পূৰ্ত্তাভ্যা• বৃদ্ধানাথাতি-थीन् ज्ञियः ॥ ইত্যপুত্রধনাধিকারে দাযভাগ:।। #।। ভাগিনেয দক্তক क्रनः मृमुरेग्रव नजु मिकानाः। यथा । (मोहित्वा छागिरनयण भ्रेपुस ক্রিযতে সূতঃ। ব্রাহ্মণাদি ত্রযে না-खि ভागित्यः मुजः कृष्टि।। इंजि म उक्ठिम्द्रकायाः (भीनक वहनः ॥ 🕏 ।৷ তব্যরণে মাতুলস্য পঞ্চিণ্য-(मार्ठ) यथा। शक्तिनी (पानिमञ् ্যে বান্ধবেষ ভবৈথন চ। ব্যেনি সন্ত্ৰ জ নাত্যসাথ পিত্যসূচ ভাগি

্নশেরু।। নাতুলমরণে ভাগিনেয়-ুস্যালি প্রফিণ্যশোচণা ইতিশুদ্ধি-ভদ্ধণা।

त्रिंगित्वी जी खिनिजाः जान्या । छाग्री इंकि जाता। जिंगनी नपाए জ্ঞ্যপত্যার্থে কেবে বিভাদীপ পু-ভ্যুষ নিষ্ক্রনা। ইতি ব্যাকরণ ।। , নগীরখী জী গলাইত্যমর:॥ প্রিব্যাণ তস্টার্করণ যথা। স্ত ট্টবাচ। ততে। ভগীন**থো রাজা ভ**-শংশরন দুক্র•। নাত্রা সন্তোষ্যা-नाम डिमाकाड महिश्वत । श्रावना যানুমত্বা ত জনাম বুজাণো হস্তিক• । ত:তা ভগীরথ: পুাহ शका वुकान् বিস্ক্রতা ।। স ভদুরা বচ ওস্য जबान्य विवृथिनुयः। गङ्गाः शुङ्गा প্রামাস সা পতেদুর্নণো হস্তি काट ॥ वागूना (भुगंत्रनानानि चा-কাশ পথগা নদী। বিখ্যাতাকাশ গঙ্গেতি ভত্ৰ সংসেবিতা গৱৈ: 🛭 বিকো: পদ সমাযাতা তমাদিফু भरीजि मा। भ्वामाना मूदिः मि कि मू नि विम्यास्त्वाद्ररिगः॥ भूद्रा न्य मन्भाधः जन्मारम्यनमी जू मा । তনাৎ পুপতিতা গলা শট্যোঃ भित्रति अधिमा। **ध्रेड क्रेन**ब **छन्त्री** मञ्जू । (वाशनायया। कि

ব্যু বর্ষ শতং সাগুং পুনরারাধিতেন रेव ॥ मूका क्ली तत्थरमय मणह्सी विनिर्गम । को। जूरीर निर्माखाः खु (महा समाज्ञाका २१म८ ॥ परिवः পরিবৃতা গহা হেমক্টঞ্ পর্যত। मन्दर्रक्षेत्र रेक्नामः हिम्रदङ्क शः 'ৰ্বত'।। তামাযান্তীং তু রোধায় শ্ব-नीता नाम पानवः। शार्वकः क्श মাছায় বৰ্ষাণাস্ত শতৈ ৰিজাঃ ॥ ত-তে। ভগীরথো রাজা রাধ্যাসাস कोनिकः। न जुडेः भुरतो मार्गः 'दाइनसः छगीत्रभः ॥ उमाकशाग-মন্ত্ৰত যত্ৰ ৰুদ্ধা ভগীরথী। তেন नारगन ७ रिष्ठाः माविषार्या न म-क्छः ॥ मञ्सा छाः नमावाय मूर्क-रिन/द्रावरता गन्नः। मही छन नमा-(शार जगावता गमाख्य ।। जमान्त्रा यदेना विशा अञ्चामश्रः वदः। श्रा-वयन्त्री भरी शक्त करहा त्राम्म भ-क्रागाट ॥ जा मृद्दीय भाभी मा **পি পুস্ত্য জপিতো মুনি: জ**ঙ্না मामिजा॰ मृष्ट्री गद्रा॰ जिश्रथगा॰ न-पी ।। नामाक खावयामान कडू जगीत्राथा मूनि । मूमाठ कर्नत्राकुने গৰা স দক্ষিণেন তা ৷ এতমা-জ্ঞাহ বী ভূতা সূতা তস্য সূনে স্তথা । ততः न। विविधान् (एणान् शर्वजाः

क उथानुमान्।। मन्द्रावर वाहिना ज्या जगाम भूई मागद्र । यव उ নোদক তভৌ তস্যাঃ পুণ্য মভ্দ্দি জাঃ।। সূতীর্থ সর্ব মর্ত্যানা॰ তারণ॰ পাপ নাশন । ততঃ সম্পূর্যামাস সমু দু• সর্বত্যে দিশ•া৷ পুপন্ন সাগ दिः गर्बः छजः भाजान माविनरं। मागद्राभा जाना खमाए मन्ध्रावर বারিণা ততঃ।। দেবৈঃ সংপূজ্যমা-नानि बगान दुन्नान १ डिक । बगु ত্তে সাগরাঃ স্বর্গণ বুন্ধণোপহতাক্ট य।। तकका एउ विनिफिट्टी शकाया वुक्तना सर्ग । खर्चि त्रनिर्माः स्नान কৰ্ত্তব্য ৰিম্ন নাশন ।। সূত উবাঁচ । এতদ্ব: কথিত সর্বণ ব্যাব্তরণ पियः । शक्षात्। रेक्टवः माहाजारः मु-यजा॰ भरूखा यय ॥ इंज्यास्य व-হি পুরাণে গলাবতরণ নামাধ্যায়ঃ ्रा 🐙 ा। जम्हान्युधानामानि यथा । বরাহউবাচ। ধর্মস্ত দুবকপেণ বুন্ধণা নিমিতঃ পুরা। यह গঙ্গেতি বিখ্যা-जा मृत् खावः वमूक्तता। किरेस नीम जर्रेनुस मूर्या मूर्याः जूविखेदः। यानि नामानि मूथ्यानि जानि वंक्या-मार्क्कनार ॥ गङ्गा जागीतथी भूगा क्।इ.वी मृत्निन्या । विष्णामाद्वन-

मूर्वकम्बन्गनः मृहे। ।२नाव्यक्राः मुया। णड ब्राम्सम् थवना भराशा-उकनामिनी ॥ निर्मानी जिल्लामा रिक्क वी मूत्र मूशिया। वर्षा मुवी (ভाग-वर्जी विकारभाषानमातिनी ॥ कमा শান্তি: পুজাশান্তি: পুণ্যদা পৃতিকা-, শিবা। মহানদী শতমুখী শুক্লা নক-त वाहिनी ॥ वुक्तहखाद शतिजुडी সৌম্যৰূপাতিশোভনা ৷ মুনিভিঃ পূজিত। সংৰ্द: সংৰ্ব দে বৈ ন্যস্কৃত। া৷ সহাযজ্ঞময়ী দেবী মর্ত্যানা মুপ-্ৰকারিণী। সর্বত্র দুর্লভা গঙ্গা ত্রিভি স্থানৈ বিশেষতঃ ॥ গঙ্কাদ্বারে পুযা-(ग ह शक्तानागद्रमक्त्य । इन खा-ত্ৰ ম্যা খ্যাত পূৰ্যুক্ত ৰ্যম্ভ্ৰা॥ यः भारे भार क्या ए कार निष्रे ि मूर्गिजिः। यद्भाभः त्योक्तः वार्षाः कोमात्र वार्काक ह यथ ॥ उद गर्ब॰ विषय गांजि जांगक् जांग गंभा। कीर्खि भी जि॰ महानची मायु द्वादताः गः। मस्यिः ॥ मनाजि काङ्ग्वी उद्धा नर्व ভাবেন মাধবি। ইতি বারাছে कर्त्रभाभभूमभन गक्राखदः ॥ 🗰 ॥ অপিচ। বুন্দোবাচ। শ্ৰোভ্নিছানি দেবেশ লক্ষীকান্ত জগৎপুভো। বি-का विकुशनी खाबः भाभमः भूगा-क्रुक महन्त्राः भित्रिम न क्रिणा। काद्रगः। श्रीनाद्रायग प्रेरीह । भित

ক্রিটি সামুগ্ধ এতিক্টান্ধ দুবোন্ড বাণারাধান্ধ দুব সংযুক্তাণ তাণ গঙ্গাণ शुगमामाइ ।। या अन्न मृष्टे ज्ञापी ह গোলোকে ব্লাসমণ্ডলে। সমিধানে শক্রস্য তা॰ গকা॰ প্রন্মাম্যই॰॥ त्यारेन त्यानी जि त्राकी त्यः मुर्ड রাধা মহোৎসূরে। কার্ত্তিকী পূর্ণিনা काञा जा शक् े भुगमामार ॥ रकारि रवासन विज्ञीनी रिवर्या मध ন্ডনা ততঃ। সমাবৃতা যা গোলোক তा॰ नद्रा॰ भूगमान । रिश्वक रगाजना या जला रेनर्ख्य हजूर्खना। नगर्ग या रिक्षे जा गर्ना भू-नमाम्। १ विः ननः विः वाजना या ততো দৈর্ঘ্যে চতুর্গুরা : মার্তা বুকা लाकः या जाः भक्षाः शुपदानाइः॥ वि॰मल्लक (याजना या देनर्छ) शक्ष्छ. 🕝 ণা ভতঃ। আবৃতা শিবলোক• যা তা• विकार भूगनाग्रहः ॥ लक्क याजन विद्यीनी रिर्हार्य मध्यमा उठः । व्याक् তা ধ্রুর লোক যা তা গঙ্গা পুণমা-ग्रहः ॥ वक याजन दिखीनी रिपर्ध्य শতগণা ততঃ। আব্ তা চন্দ্লোক। या छा॰ शङ्गा॰ भुगमानाइ॰॥ यश्चि न रुनु द्वा कना या रेन्टर्वा मण्डना उ छः । देशक्ञा स्थ्रात्वाकः या छाः बहाः अन्यान्। । वक् ताहन

বিন্তীৰ্ণা দৈয়ে চ ষড্ভণা ততঃ 1 আবৃতা সত্য লোক যা তা গস্থা अन्याग्रह्शा मण लक्ष रयाजना या দৈর্ঘ্যে পঞ্জণা ততঃ। আবৃতা যা ज्ञात्वाकः जाः शकाः भुगमाम्। रु ।। अरु मुर्याजनायामा रेन्र र्घं ५-শগুণা ততঃ। আকৃতা জনলোক যা তा॰ शका॰ भुगमामाइ॰ ॥ मह्म र्याजनायामा रिपर्ध्य मश्रुखना ७७: ়। আব্তা যাচ কৈলাস তা গঞ্চা **পু**गभामादः ॥ भाउरयाजन विस्तीर्गा দৈর্ঘ্যে দশগুণা ভতঃ। মৃন্দাকিনী যেন্দুলোকে তা গঙ্গা পুণমাম্য-**হ• ৷৷ পাতালে** যা ভোগবতী বি· স্তীৰ্ণা দশযোজনা তিতো দশগুণা দৈর্ঘ্যে তা॰ গঙ্গাণ প্রণমান্যহণ ॥ ক্রোশৈক মাত্র বিস্তীর্ণা ভতঃ ক্ষীণাচ ष्ठविद् । किछो ठालकनन्त्। या তা পঞ্চা পুণনান্যহ ৷৷ সত্যে বা ক্ষীরবর্ণা চ ব্রেভাষা মিন্দু সন্মিভা। দ্বাপরে চন্দ্রনাভা চ তাণ গঙ্গাণ পু-गमामाइ॰ ।! कल भु**छ। करनो या** চ নান্যত্ৰ পৃথি ীতলে। স্বৰ্গে চ নিত্যু क्षीत्रां जा जार गका भुगमामाह ।।। যস্যাঃ পুভাব মতুল পুরাণে চ শুতৌ শুকা যা পুণ্ডণ পাগহতী छाः गङ्गाः भुनमान्।इः ॥ यङ्गय

ক্ৰিকাম্পৰ্শঃ পাশিনাঞ্চ পিতানহ াব্দহত্যাদিক পাগ কোটি জ-মাজিত দহেৎ।।ইত্যেক প্ৰত• বুক্ষন গমাপদ্যৈকবি•শক্তিঃ ৷ স্তো-ত্রকপঞ্চ পরন পাপম্ব পুণ্যকার-ক ।। নিত্য যো হি পঠেন্ডক্র্যা भः भृष्क । भृ (त्र श्र ती · । अ श्र (म श ফল॰ নিত্যু• লভতে নাত্ৰ সংশ্বঃ ।। অপ্ৰো লভতে পুএ: ভাৰ্য্যাহী ना वाख्ट शिया । (द्वागाट अूमू-চ্যতে রোগী বন্ধো মুচ্যেত বন্ধনাৎ ।। অস্পষ্ট কীর্ন্তিঃ সুযশা মূর্থো ভব**্** তি পণ্ডিতঃ। যঃ পঠেৎ প্রাতৰুত্থা-य गङ्गा (साञ्जिक मिन भूज ॥ भूज ভবেত্ত দুঃষপুণ গঙ্গাস্থান ফলং ল ভেৎ।ইতি গঙ্গাস্তোত্রণ। নারায়ণ উবাচ। ভগীরথো ধনেন স্তোত্তেণ ख द्वा गक्षाक नात्रम । जगाम छा॰ गृशीदा ह यब नशाक्त मागदाः॥ বৈষ্ঠ তে य्यू खूर्ण गङ्गायाः न्यूर्भ বাযুনা। ভগীরথেন সানীতা তেন ভাগীরথী মৃতা।। ইত্যেব• কথিত• সর্ব গঙ্গোপাখ্যান মৃত্তম । পুণ্য-দ বাক্ষদ সার কি ভূয় শ্রোভূ মিছসি।। ইতি বুন্ধবৈবৰ্ত্তে পুকৃতি **খণ্ডে গল্পোপাখ্যানে ৮ অ**খ্যায়ঃ ॥ ভাগুরি: পু• মৃতিব্যাকরণকর্-

मृनिविष्णयः। ७८ ता विश्व मिछण् म्लिकः २। इंडि किंशिशः।।

छागाः की शुक्तिम् छाम् छक्मां।

छ८ शर्यायः। देव १२ दिशः ७ छाश्विष्णः ६ नियिषः ६ विदिः ७। इंछानदः॥ द्वान्यक्मां १ छागः ৮
छविछत्रछ। द्वान्यक्मां १ छागः १।

यहां १० । इंडि मस्त्रद्वावक्मा ॥
यहां १० । इंडि भस्त्राम् १।
छान्नीनः जि छल्लाक्माः। छ० भन्न

র্য্যাশঃ। ভাঙ্গ্রং ইত্যার হেম-চন্দ্রো। ভাজ ত ক পথককত্রাণ। ইতি

ভান্ধ ত ক পৃথক্কৃত্যা । ইতি কবিকল্পদ্দ : যা অবভান্ধ ংখন ভা ত্বৰ্গঃ । ইতি দুৰ্গাদাসঃ ।।

ভারন প্লী পাক। ইত্যনর: ॥

যোগ্য ইতি মেদিনী ॥ যঃ সম্বাদযতে নিত্য যো ইভিবাদা স্তিতিক্ষতি। যাচ তপ্তো নতপতি দৃচ
কো হর্থস্য ভারন ।। ইতি মৎস্য
পুরাণ ॥ আচক শ্রিনাণ । ইতি
বৈদ্যক গ্রেভাষা ।

ভাজিত হি পৃথ্যক্ত হিত্তি 1 ইতি ভাজবাজোঃ ক্যাণি জ প্র ভ্যানে নিয়ন।। ভাগে দ্লী।।
ভাগী স্ত্ৰী ব্যঞ্জনবিশেষঃ। অন্যত্ৰ ভাজা। ইতিস্ত্ৰীত্য টীকাষা• দুগা
দাসঃ।।

ভার্য বি ভাগার্হ। ভারনীয়। ইতি ভারবাতোঃ কর্মণি য পুত্র যেন নিয়ুল্য।

ভাটकः शृ ली वीतंत्राहार्थः खनकः টাদিলত ু । ভাডা ইভি ভাষা । इंडि इनागुंधः।। 🏶। ज्य गृहाित ভাটক । পর ভ্রো গহ ক্রা ভা-টধিদ্বা বসেত্ত হঃ। সাতদ্গৃহীদ্বা निर्गरहाड्न कारहेडे बाहिकशास्त्रामः বিনা বসিত্বা তু পর ভূনাবনিছতঃ। নিৰ্গছ•স্তৃণ কাষ্টানি ন গৃহীযাৎকথ• ঞ্ন।। কাতগ্ৰনঃ। গৃহবাপ্যাপ-ণাদীনি গৃছীত্বা ভাটকেন যঃ। স্বা-निता नार्शयव्यावखावष्ताश्रः म ভাটকণা বাপী পরকৃতা পুডিষ্টি-তেতি বিবক্ষিত। হস্ত্যশ্ব গো খ आि के लिए का कि लिए के प्राप्त के लिए लिए के लिए के लिए के लिए लिए के लिए के लिए के लिए लिए लिए के लिए के लिए लिए लिए लिए लिए याभिता नार्भायष्यावङावद्याभाः न ভाটकः ॥ वृष्कमनुः । या छाछे-यिदा भक्षे नीदा नानुब गहुछ। ভाটे ,त रहााफाला। १मा वन्छ-ग्राणि चार्वकः॥ मक्रि ग्वतोका म त्रभू भेर्त्यस्यः । अमृष्म्यः वाशि

তস্যাপি শক্টাদেঃ। ইতি বিবাদ চিন্তাম্ণিঃ।।

ভাণঃ পু॰ নাটকাদিদশক্পকান্তৰ্গত ক্রপকবিশেষঃ। ইতি হেমচনুরঃ।। ্তস্য লক্ষণাদি যথা। ভাগঃ স্যা-জুর্ত্ত চরিতো নানাবস্থান্তরাত্মকঃ। একান্ধ একএবাত্র নিপুণঃ পণ্ডিতো विष्टेः ॥ द्राक्ष शुकामाय (पनान्-ভূত গিতরেণ বা। সয়োধনোকি পুত্रकी **क्**र्यप्रामाका**न** ভाषिटिः॥ **ज्ञायद्वीत मृक्**राती (मोर्य) (मोज।-গ্যবৰ্ণ নৈ:। তত্ত্ৰতি বৃত্ত মুৎ পা-म् वृद्धिः भाषि जात्र जी ॥ मूर्थ निर्वाष्ट्रण मसी नाम्याकानि मनाः পি চ। অত্রাকাশ ভাষিত রূপণ পর বচন মপি স্বথমেবানুবদমুত্তর পুতু । ज्वात वीत्रतं সৌচ সৌভাগ্য শৌর্য্য বর্ণন্যা সূচ (य८। श्राय गुरुनाट कोमिकानि বৃত্তি ভ্ৰতি। উদাহরণ লীলাম-ধুকর: ॥ ইতি সাম্বিত্যদর্পণে ও পরিছেদ: 11

ভাও॰ ক্লী পাত্র•॥ বণিগুলেখন•॥ ভ্যা॥ অশ্বভ্ষা। ইতি নেদিনী॥ নদীক্লদ্বমধ্য•। ইতি হেনচন্দুঃ ॥ ভাওবৃত্তিঃ। ভাঁডানি ইতি ভাষা । ইত্যদ্বপালঃ॥ #॥ অরাজ দৈ-

বিৰু নষ্ট ভাঙ দাপ্যস্ত বাহকঃ। भुष्टान विमक्रिहव भुमारगा विख-ণা ভৃতি।। ভাঙা ব্যসন মাগ-हिट यहि वाङ्क (हाषठ: 1 हार्ग) ব্হুতত্র নশ্যেকুদৈবরাল কৃতাদৃতে ॥ ইতি গিতাক্ষরাযাণ নারদঃ॥ ভাত্তঃ পু॰ গৰ্জভাত্তবৃক্ষ:। ইতি मदहिनुका॥

ডাওপুয়ঃ পু॰ সর্পবিশেষ:। তৎ भर्यशेषः । क्लोक्किंकन्तनः २। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

थ्रः ॥

ভাণ্ডাগারঃ পু গৃহবিশেষঃ। ভাঁ **जात्रहे** जिल्ला । उर्भागाः ।

मस्तः २। इंडि भस्माना ॥

তাগুরী পু ভাগুরাধ্যক:। ভাঁডা त्री हैं जिल्ला । यथा। क्षु विजं खु विडः कामी विष्णार्थी कृषिका-রক:। ভাণ্ডারী চ পুবাদী চ সপ্ত সুপ্তান্ পুৰোধ্যেৎ। ইতি ব্যবহার भुरीभः ॥

ভাণ্ডি: পু॰ নাপিতস্যক্ষুরাদ্যাধার: । ভাঁডি ইতি ভাষ।। ইতি ভাণ্ডি वार भव मर्भनाए।।

ভাণ্ডিবাহ: পু॰ নাপিত:। ইতি मद्राला॥

ष्टाखिनः भू॰ नाभिजः। **ईिछ भद**ः गाना॥

ভাণ্ডীর: পু॰ বটবৃক্ষ:। ইতি জটা-ধর:।। বুজনগুলান্তরে বোডশ বট-বদ নধ্যে দ্বিতীয় বটবন । যথা। ' সঙ্কেত বট মাদৌ তু ভাগুরাখ্য विष् वयः। इंकि नातायगञ्जे क्ञ বুলভক্তিবিকাস:।।

ভাওপুটঃ পু॰ নাপিতঃ।ইতি জটা 🍴 ভাত॰ ত্লী পুভাতং।ইতি শদ্মালা ॥ मीरको क्षी ॥ छन्न जि ॥

> ভাতিঃ जी শোদা। ইতি রাজ-निर्घण्डः ।।

ভাতুঃ পু• স্র্য্য:। ইতি ত্রিকাও-**मियः ॥ मीछः। ইতি मः**क्विश्रमाः রোণাদি वृক্তি: ॥

ভाषुः श्रु॰ रिकाथानिद्यानभगमा-ন্তৰ্গত পঞ্চনমাসঃ। ভাদুপদ নক্ষত্ৰ युका (भोर्गमात्री यश्विन् मारम मः। **७८ १**र्यायः। नजिमाः २ (भूकि १८: ० ভाদুপरः ८। ইত্যমরः ॥ म চ দ্বিবিধঃ। সি হস্থ রবিকালঃ সৌরঃ ১। সি হ ছ রব্যারন্ধ শূরু পুতিপ-मानि मर्भाष्ट्रा गूथाठान्तः। क्ष्मभु **जिभमामि (भौर्गमामा अला (गोनहा-**पुः।२। ইতি भवमामञ्खुः॥ 🛊॥ তৰ জাত ফৰণানভস্যনামৈ খলু करा यम्। भीता गरनी छन् वता वन

। त्रिभ् भुमाथी विदिवा १ छि- || মৰ্বা পুপর ভর্তা স ভবেৎ সহাসঃ॥ ইভি কোষ্টাপুদীপঃ ৷৷ #৷৷ তত্ৰ গোঃ শুসবে নারদঃ। ভানে। সি•হ গতে किंद यम्। (गीः मम्पूम्यत्व । सद्रा॰ उन्। निर्फिष्टे॰ विषु मीरिन न नः नयः ম তত্র শান্তি পুৰক্যানি বেন সম্প² म्राउ मुङ । भुमूङा । उरक्ष गारिक छा॰ गा॰ विभाग मांभाय ।। ততো **ছোম•** পুস্বীত ঘ্তাকৈ রাজসর্য পৈ:। আহতীনা ঘৃতাক্তানা ন্যু-**७** जुर्याख जः ॥ त्राक्ष जिल्लाय-হোমঃ। সোপবাসঃ পুৰত্নেন দদ্যা-দ্বিশায় দক্ষিণ। মিতি। তথা। সি-হরাণৌ গতে স্তু গো: পুসূতি र्यमा ভবেৎ। शोरव । मध्यी मृ তে দিৰৈ বাশ্ব তরী তথা।। তদানি ঠ ভবেৎ কিঞ্চিৎ ভদ্বাস্তৈয় শান্তিক চরে । অস্য বানেতি স্কেন তদি ঞো রিতি গজত:॥ জুত্যার তিলা-জ্যেন শতমষ্টো ভরাবিক। মৃত্যুঞ্জ य विशासन जूङ्गाह उथा गुऊ।। 🗐 স্কেন ততঃ সাযাৎ শান্তিস্কেন-या भूनः। मध्यतात्वी निमीत्थ वा यमा कन्तिः कन्तिः जना ॥ गुरम वानऽ গৃছে বাগি শান্তিক পূর্ববিদ্যালে। प क्रमणिखंत्रामुख्य पश्चाक भूग्र ॥

কালভ্যন্তরে গোঃ পুসার বিপুসম্পূ मानक (गा भुमान भू बंक मां छि: का-র্য্যা ইতি বিশেষঃ। তদতিরিক্ত সি॰ रह तती लाः भुभत गानि माव॰ कर्डवंड॰ न लाः भुमानः। निर्वयनि-দুধ্তাভ্তসাগরগৃন্থীয় বচন জাত **নীমা॰সানুসায়াদিতি ॥ ৠ ॥ অথ** ভाদुक् छ। उब बना हेगी वु ज भूगा-णिथिञ्ख् २न्मास्यः । भावन-পৌর্ণনাস্যনন্তরিক ভাদুক্ফাপ্টন্যাণ द्राजि मस्य मूर्ज्ञ हेमी (द्राहिनीया-গৰূপ জযম্ভী লাভে ভবৈবোপবা-👺 । উভयरित्न (চত্তদ। পরদিনে। জ্যস্তালভে তুরোহিণী যুক্তাপ্রন্যাণ । উভयमित्न द्वाहिनी यूजाक्षेती वा ভে পরদিনে। রোহিণ্যলাভে তু निष्णीय अविक्षिन्याग्रहम्याः। উভय-**मित्र निभीय अश्वत्क उन्मयक्क दा** পরদিনে ইতি। তত্র পুযোগঃ। পূর্ব मित्न **म**॰यम॰ विधाय छिम्ह्रिस क्छ शुा छः त्रानामि त्राष्टा छः । ७ अप्राधः সোম ইতি পঠিত্বা। ওঁ তদ্বিফোঃ পরমণ পদ নিত্যদি মজেণ নারা-यन मम्बा ७ उट मट इक्षाम् উদ্মুখো দত্হত তামুপাতে স্প जिन बनान्यामाय खँ यम्य जारम् गामि क्ष्य शक्त अञ्चन्ता जिल्ली

बाग्करगावः बावम्करस्यभर्या वि ফুলোকপাণ্ডিকাম: একিফু প্রীতি কানো বা ত্ৰীকৃষ্ণ জ্বছাইমী বুতম্ব করিষ্যে ইতি সংকল্পথে । समू । स-वाम दित शुाजः मक्षमी जनाहेम्। তিথাবিত্যত্র সপ্তম্যান্তিথাবারভঃ ইতি বক্তব্য**় ৷ ততঃ সামগন্ধ ও**ঁ (मरवा रवा मुविरमामा भूगी विवडे। निङ উद्यानिक्ष**क मूनवा अुनूक मा**-मिमिरवा रमव अञ्चा ३७ भारेट 1 ७ ४म्मीय श्रम्भ थताय श्रम्भ अत्राय श्रम्भ अत्राय श्रम्भ र्ष्यमञ्जवाय भाविन्ताय नत्म। नमः। ইত্যুচার্য্য। ওঁ বাসুদেব সমুদিশ্যে मर्बनान भुगान्ययः। उनवामः की तियानि क्षाडेनाः नजमारः ॥ णरा कृषा**द्वी (एवी नज्यम् म** রোহিণী । অর্চযিত্বোপবাসেন ভো-ক্ষ্যে **ংহ মপ**রে **ং**হনি। এনসোমো-क्कारमा श्रीय याद्माविक्त जिरयानि ল। তথে মুঞ্তু মাণ তাহি পতিত। লোকসাগরে॥ আজন্ম মরণ যাব-व्यव्या पृष्ठ्ठ क्ठ । उर भूगामय গোবিন্দ পুসীদ পুৰুষোত্তম।। ইতি भारेट । उउ जाङ्सिकः ममाभ्यार्ष রাত্রে তত্তৎ পুতিমাসূ পটাদিষু বা আবাহন বিসৰ্জন সহিত শাল शास घटा भिष्ठ जल वा जावाइन

विनक्कन त्रिष्ठः भूकास्य. ब्रामः। गाकाणि दालकः मूखः न-र्ये एक स्वने भाषिन । श्रीवर्म कार्यकः भूनीकः नीतारभनम् व हिन्।। इंडि ধ্যাত্বা শ্ৰীকৃঞ্চ স্বাগতণ ইতি প্ছেৎ । इनमाजन ७ कृष्णाय नमः। इज्जा भनः हड्डा এउट भाराः ७ जीकृषाव नमः ७ यङ्गय यद्धभद्राय यङ्ग **७१४ यञ्च मञ्जर्वाय (गाविन्हाय नम्म)** নমঃ। ইত্যুদ্বার্য্য ইদমর্ঘ্যণ ওঁ শ্রীকৃষণ-य नगः। ইদ माहमनीयः ॐ 🗟 कृकाय নম:। ততো দধি মধু ঘ্তাত্মক মধ্ भक् भानीय এय मधुभकं ७ 🗐 कृष्ण-य नमः। इर माठमनीय प्रश्रीकृष्णाय नमः। लोकिक षष्टे। धिक माउन्य তোলক পরিমিতান্যুন জলমানীয **७ वागाय वाराभन्नाय वागभ**ऊ-ख यागमञ्जयाय रागविनताय नया नमः। इतः नानीय बलः ७ 🗐 कृषः। य नमः। ইদ॰ वज्रः। ইদমাভরণः। এব গন্ধঃ ইদ॰ পৃত্ন॰ এব ধৃপঃ এব मीभः इम• रेन(बम्)• 'अँ विश्वाय वि শ্বেশ্বরায় বিশ্বপত্তে বিশ্বসম্ভবাষ (गाविन्हाय मरमा नमः। इंड्रायन देन-বেদ্যুণ দদ্যাৎস্বাপ্যয়ে। ততো নমো (एरेन) भिरेयनमः। इंडि मञ्जन भिय° পুজবেশ। ততঃ মগ্নোক বিধিনাগি

িস্থাপ দূত ভিলাভ্যা । ওঁ ধ**র্মায** ॥ ধর্মেশ্বরায় ধর্মগতবে ধর্মসম্ভবায পোবিন্দায নমো নমঃ স্বাহা। ইভ্য-**ন্তেনাষ্টোত্তরশত মন্তাবি**শ্**তি মন্তৌ** বা জুহুযাৎ। ভতো ওড য্ভেন বসো बाहाः जिल्लो मन्त्रार । जला नाजी हिन जातरय । अ यहिं नम इंडि ৰধী প্ৰযে । ততো ভগবত: এ कृष्णमः नामकश्वामभुगमन हूजाकः अलाशनयत्नाहारु मःकातान् जातः रिष् । उठः भुगवाहि नमा शस्त्रन छ उमाम ভिः भू करय । ७ ५ म बर्रे क नमः ७१ वम्राह्याय यानाराय न क्ताय (दा हिर्गे) हिल्कारेय वलाह বায় দক্ষায় গৰ্গায় চতুষ্দু থায় ইত্য-নেন যথাশক্তি পঞ্চোপ্চারৈঃ পুজ যে । ততঃ শাহ্বন **জাশ পু**ল্ল চন্দ্ৰ बनान।। राय ख्यो बानूनी भाउबि-ত্বা ওঁ ক্ষীরোদার্ণব সংভূত অত্রিনেত্র সমুক্তব।গৃহাণার্য্য **শশাক্ষেদ** রো-হিণ্যা সহিতো মম ॥ ওঁ সোমায সোমেশ্বরায় সোমপত্যে সোম স-স্তবায গোবিদ্দায় নমোনমঃ। ইত্য र्घाः प्रमार। उठः भुगाम मस्यो। उ জ্যোৎস্নাযাঃ পত্তবে তুভ্যু জ্যোতি वा॰ পত্य नमः। नमस्य ताहिनी काड मूबावान नाम १ ऋ छ।। नाज।

मेखव भीभाग मित्रा त्रजाय धृद्धं है। कना छिर्दर्भना नाय नम महन्याय हात्रः বে।। উভচ্চ। অন্বণ বামন শৌরিণ रिक्थं भूक्रवाखनः। वाम्र्रिकः इ-षीকেশ॰ নাধব॰ মধুসূদন।।। বরাহণ পু अवीकाकः नृतिः इः दिन अनुमनः । দামোদর পদ্মনাভ কেশব গৰ্ড-थुजः ॥ (गाविन्स महुऽछः (मव मनष्ट न পরাজিত । অধোক্ষত জগদ্বীত মর্গস্থিত্যন্তকারিণ•॥ অনাদি নিধন• বিষ্ণু ত্রিলোকেশ ত্রিবিক্রম ৷ না-. ब्रायन• ठड्रुद्धाङ• मञ्ज ठक गमाधत्र•॥ পীতাম্বরধরণ নিত্যু বনমালা বি-ভূষিত । এবিৎসাস্ক জগৎসেতু ত্রীকৃষণ ত্রীধর হরি ।। পুসদ্যে হহ मरा (एव॰ मर्बकाम भामिष्वरय। इंडि खवः ॥ उठः भुगम्याः भुगमानि मना দেব॰ বাসুদেব॰ লগৎপতি॰। ত্রাহি-भा• नर्बरहरदण इंदा न•नात्र नाग-রাৎ।। ভতঃ পুর্থেব্যেশ্র ভাহি না॰ সর্বপাপন্ন দুঃখ শোকার্ণবাদ্ধরে। সর্বলোকেশ্বর জাহি পতিত মাণ ভৰাৰ্ণবে 🛭 দেবকীনন্দন 🗐 শ হরে স সার সাগরাৎ। তাহিমা সর্বদুঃ-থত্ন রোগ শোকার্ণবান্ধরে ॥ দুর্গতা• স্ত্রাখসে বিঞ্চোয়ে মারম্ভি সক্ৎ সক্ৎ াসো ২ছ দেবাতি দুর্ভ জ্ঞাহি না

मुःथ मानतार।। भूष्रताक निग्धिक **হ• নাথাবিজ্ঞান সাগরে।তাহি সা•** (एवरएरवण वृर्खा नात्न्राश्खित्रक्रि-**छ।।। इंछि शुर्थरयट्या यद्यारना यह** कोमादा वाष्ट्रिक यह रशेवतन। उर পুণ্ড বৃদ্ধি নাপ্নোকু পাপ হর হ-मायुषा। इंडियाम् १ । उट्टा नृज्य गीज वाहित खरेवः कालः नरयः। भवहिः নে পাতঃ স্নানাদিক কৃত্বা ভগবস্ত विक्षः यथाविधि तः भ्का पूर्णाया-क भरहा भवः कार्यः। जला का क्षान् (ভाक्ररस्ट (उरख्रा मिक्रगाः मन्त्राय भूवर्गाम् ययकिश्वितिञ्चे छ ম॰ শ্রীকৃষণে মে প্রীযতা মিতি। 🤻 य (पव (पवकी (पवी व मूर पवा पकी -कन्दा (जोमम) तुमारा। खेखा जरम वुकावात नमः॥ भू वुक्त वाग्रहिवाय গে। ৰ্ৰাহ্মণ হিতাৰ চ। শান্তি রম্ভ निद्धास इंज्रुहार्यः वित्रद्धार्थः।। ক্তক্ত শেচাপবাস পর দিবে তিথি নক্ষ व्या त्रवमान भात्र । यहा जू महा নিশাযাঃ পূর্বমেকতরস্যাবসান ম-ন্যতর্ষ্য মহানিশাযাণ তদনভরণ বা তদৈকতরাবসানে পারণ । যদা তু মহানিশায়া মূভ্য স্থিতি: তদা উ্ৎ সবান্তে পারণং জ্য্যাৎ। তত্ত্র মন্তঃ। উসর্বায় সর্বেশ্বরায় সর্বপ্রয়ে সর্ব 🛭

मञ्जयाय भाविनताय नमाः । পারণানন্তরন্ত সমাপন মত্রঃ। ওঁ ভূতায ভূতেশ্বরায ভূতপতযে ভূত जञ्जवाय (गाविन्साय नत्मा नमः । क्ठातन दुंखः ममाभरयः ॥ 🛊 ॥ ভাদু শুন্ন পঞ্চনী মধিকৃত্য ভৰিষ্যোদ ক্রে। তথা ভাদুপদে নাসি পঞ্ न्याः मुक्तरादिकः। यञ्जानिश्य नाता ভক্ত। कृष्यवर्गाहि वर्ग किः। श्वास्त्रका भूरिच्चक निर्भ र्वश्रुम् भाषरमः। उन्र जुडि जनायां अभागा खक्क कार्यः । আ সপ্তমাৎ হলাক্তম্য ন ভবং স-ৰ্পতো ভবেৎ । ভমাৎ সৰ্ব পুৰবেৰ नाभान् मः भूबत्यम् द्वः ॥ इयस्यवात्त খ্য নাগপঞ্মীতি বাচস্পতি মিশাঃ । जालका बामाः करकारिकामयः न्दं विभिजाः, मुबा हा मुख्य शक्ती विश्िक बाबाः ॥ कथ श्रतः পার্যপরিবর্ত্তন। তত্ত্র দ্বাদশ্যাণ স ক্সি সমযে নক্ষত্রাণা মসম্ভবে। আ **छा का मिउशक्कियु म**यनावर्खनाहिक निजि वृक्षभूतागारा। जामु भूक्र हार-শ্যা শ্বণ নধ্য ফুক্তাযা সন্ধ্যা সম-যে দ্বাদশ্যা মৃক্ষাভাবে একাদশ্যা-দিবু পাদযোগে তদভাবেপি দ্বাদ-শ্যা॰ কেবলায়া• বা কৃতাহ্নিকঃ সা-य मन्त्रप्राया प्रतः मध्शुक्रः अवाम्

्त्रव कशनाथ शास्त्रयः बारमी उव। পার্খেন পরিবর্ত্তর সুথ স্বপি হি মা-भद्रा। इंडि भाक्षिणः भारेट । प्रि সুপ্তে জগমাথ জগৎ সুপ্ত ভবেদিতি । भुवूष्क पृथि वृष्ष्य छ छगट नर्ब ह-बाह्य ।। इंड्रानन भूकाय ।। # ॥ व्यथ मि शार्क ठजूर्याः हन्तुमर्भन् প্রায়ণ্টিত্ত । সি স্থার্ক মধিক্ত্য वुकाभूद्रागः। नाद्रीयुर्गा ९७ मश्र स নিশাকর মরীচিষু। স্থিত শতুর্থ্যাম-দ্যাপি মন্ব্যা নাপতেছ সং ॥ অত **क्ंव्रीं क्रिक्क श्रमामाधीक मानवः** । भारतेका विका वाकाः भाष्यांथा वानुप्रग्रयः॥ जिल्लास्था निष्रा প্রীবাদ বিষ্যীভূতঃ। সো হতিশা পুঃ। অদ্যাপি মনুষ্যান্ পতেৎ। তক্ত পুৰুত্ব উদ্মুখো বা ক্ত ज़िल, जलानप्रामाय 'उँ चारमुख्यानि **নি** হাৰ্ক চতুথী চন্দু দৰ্শন জন্য পা-🥦 क्रय कारमा शांखरी वाका गरु॰ ৰ্ঠিষ্যে। ইতি সঙ্কল্প্য । ওঁ সি॰হঃ প্রনেন নবধীৎ সিংহো জাববতা হ उः। मूजनातक भारतानी छव (क्य শ্যমন্তকঃ॥ইতি বিষ্ণুপুরাণোক্ত খা-(अयी वाक) शास्त्र । । अया अथा न छ **१**७॰। छञ गिष्टिन शृजी श्वाश वाचि छिष्टि-न दुंड । উভবुদিনে हिंद शब्दिन

यूपाए। वुजानुष्ठान विविज्ञ शकाजी (छ्वयः ॥ # ॥ व्यथात्रङ्गार्घ्यः मानः । পুমাণম্ভ তিথিতত্ত্বে १नूमस्मय । সি•হন্থ রবি কর্ত্তব্যত্ত্বেন সৌর মা-नारतः। कन्याकं नःकाष्टि भ्वीपन ত্র্যাভ্যন্তরে কৃত স্থানাদি কৃতা 🚉 ক खिल अभ जनानामाय चँ उ९ मिन कुद्धार्यं ७ याम् उति नदी जिन-বিত সিদ্ধিকামো হগস্ত্য পূজন মহ• করিব্যে ইতি সহ্বন্ধ্য শাল্যামে काल वा निक्तिना मुर्थः। এउट शान्। ভ অগন্ত্যায় নম:। সিত পুস্লাক্ষত युक्त खन भाइन गृशीय। हैरमर्घाः ওঁ কাশ পুষ্প পুতীকাশ অগ্নিমাকত সম্ভব। মিত্রাবৰণযোঃ পুত্র সম্ভ-(यात्न नत्मा २ऋ 🗷 ॥ ७ व्यथकात नगः। এव माठमनीय मानीय शक्त नुष्र ध्र मीग निर्वाद प्राप्तिक मन्त्रा েওঁ আতাপি ভক্ষিতো ধেন বাতা-পী চ মহাসুরঃ। সমুদুঃ শোবিতো (यन म भ १गख्रः शुमीमञ्रु॥ इंडि **পु।र्थायः।। इंडि** क्डाउखं:।। ভाদুপদः পু॰ ভাদুনাস:। ইত্যনর:॥ ভाদুপদা खी পृर्वভाদুপদানফ্রণ।।

াপৌষ্ঠপদা ২। ইত্যমরঃ ॥ ভাদুমাভুরঃ পং সভীতন্ধঃ। সত্যা-

উত্তরভাদুপদানক্ষত্র।তৎপর্য্যयः

স্ত ভন্যে সাংমাত্র বন্দ্যুনাত্রঃ। | ইতি হেন্দ্রন্থ।।

তানুঃ পু॰ সূর্য্যঃ ।। কিরণঃ ।। অর্ক বৃক্ষঃ ! ইত্যমরঃ ।। পুভুঃ ।। রাজা । ইতি ধরণিঃ ।। বৃক্তাহৎ পিতৃবিশে ষঃ । ইতি হেমচন্দুঃ ।।

ভানুঃ স্ত্রী ভানুমতী। ইতি শব্দরত্না বলী।।

ভানুকলা স্ত্রী কদলী। ইতি জটা- । ধরঃ।।

ভানুমতী স্ত্রী বিক্রমাদিত্যরাজপত্নী

1 যথা। দেব গুরোঃ পুসাদেন জি

স্থাপুেমে সরস্বন্তী। তেনাহ• নূপ
জানামি ভানুমত্যা স্তিল• যথা।।
ইতিবর্ক্চিঃ।।

जानुमान शृ भ्यंतः। ইजिभक्त द्वा-वनी।। मीथियू जि वि।।

ভানুবার: পু॰ রবিবার:। যথ। অসাবাস্যা দ্বাদশী চ সংক্রান্তিশ্চ বিশেষত:। এতা: পুশস্তা স্তিথ্যো ভানুবার স্তথেব চ।। অত্র স্থানণ জ্ঞ-পো হোনো দেবতানাঞ্চ প্রুনণ। উপবাস স্থা দান নেকৈকণ পা-বনং ন্যুত্তা। ইতি তিথিতত্ত্বে সম্বর্জ বচনণ।।

ভানেনিঃ পু• স্ম্যঃ।ইভিত্রিকাও শেষঃ।।

ভান ড ত্রেগ্রাইডিফবিকল্ফসঃ ॥ উ ভানতে। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ ভानः भू॰ कायः॥ সূর্য্যা। দীপ্তি:। ইতি মেদিনী ॥ ভগিনীপতিঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ ভামকঃ পু• ভগিনীপতিঃ। ইতি , भव्दबङ्गावनी ॥ **छा**ना खी क्ष्यनाची। इंडि नद-ब्रञ्जावंनी॥ ভামিনী স্ত্রী কোপনান্ত্রী।ইত্যমরঃ ॥ স্ত্রীমাত্র•। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ ভামিনীবিলাসঃ পু• ভগন্নাথমিশুপ-ণ্ডিতরাজ কৃত কাব্যসুস্বিশেষঃ। তস্যান্য শ্লোকোৰ ৷ দিগন্তে শুব ন্তে নদ মলিন গণ্ডাঃ করটিনঃ করি-गुः काक्गु। म्मर मन्य भीनाः थ-লু নৃগাঃ। ইদানী• লোকে হিমন্ধনু-পন শিথানা পুন রয় নথানা পাণ্ডিভ্যুণ পুকটিযতু কমিম্গপ তিঃ:। তস্য পুষ্ণিকা। ইতি শ্রীমূৎ পণ্ডিতরাজ জনমাথ বিরচিতে ভागिनीविवारम भुग्राविकः भूषः भा विकामः। शृक्तात वर्गन• विजी-या विवाभः। 🧐 कृष्ट खनानुवर्गनः তৃ হীয়ে। বিলাসক্ষ্যা

ভানী ত্রি ক্রোবী।ইতি ভানশদা

एख्रार्थ हेन् পुछ। स्यत विज्ञनः ॥

ভার: পৃ
 বিশ্বতিত্লাপরিমাণ।
তত্ত্বপ্রসহসু তোলকারাক নিতি
বাবং । ইত্যারঃ ॥ বিবাধঃ ॥ বিষ্ণুঃ
। ইতি নেনিনী ॥ # ॥ অবিশান
বহেভারং শীতোক্ষণ্ণ ন বিন্দতি ।
স সন্তোষ স্তথা নিত্য ত্রীণি শিক্ষেত গদ্বভাং ॥ ইতি চাণক্যু

ভার এ: পু॰ উর্জ্বিন গ্**দেশজশসন** প্রনাইতি পুরণে ।।

ভার ু ক্লা গুছভেদঃ । ইতি মে দিনী ৷ তত্তু ব্যাস পুণীত লক্ষপ্লো কাত্মক মহাভারত সংজ্ঞকৈতি-হাসঃ। তস্য শ্বণাদি ফল থথা। ভারত শৃণুযান্নিত্য ভারত প-রিকীর্ত্তাহ। ভারত ভবনে যস্য তস্য হস্তগতো জয়ঃ ৷৷ যোগো শত• क्नक भृक्षभय प्रपाछि विशुप्य विष বিদুষে সুবহুন্দ্রতায়।পুণ্যাঞ্চ ভারত কথা শৃণুযাচ নিত্য তুল্য ফল ভ বতি তস্য চ তস্য চৈব।। নবনীত• यथा मध्या विश्वनाः वाकारा यथा। ट्रमाना गूमिशः (मुर्छा भो बंतिष्ठ *ठजुइमा । यथजानी छिरामाना তথা ভারত মৃচ্যতে।। यह महं न मा वर्य भाषा वाकागान् भारमञ्जः । अक्षरा मनभानः दि भिकृ स्वा

পতিষ্ঠতে ॥ ইতিহাস পুরাণাভ্যা॰ (वमः नमूभव् श्राय । विख्छान শু,ভারেদে। মাময় পুছরিব্যতি ॥ কাৰ্ম্জণ বেদ মিন্দ বিদ্বান্ শাব্যিত্বা-র্থ নশুতে। ভ্রুণছত্যা কৃতঞ্চাপি পা-भ• জহ্যाদস•**শ**य•॥ **ইতি মহাভা**-রত ।। 🗱 ॥ তদ্ ভাঙো যথা। বুন্ধো-বাুচ। ভারত সংপুৰক্ষ্যামি ভারা-বভরণ ভূবঃ। চক্রে কৃষণে ধ্যুধ্যমা-নঃ পাওবাদি নিমিত্ত হঃ ॥ বিষ্ণুনা ভানুজো বৃন্ধা বৃন্ধপুণোংতি রতিতঃ ণসোম স্ততো বৃধ স্তমাদূৰশগান্ত পু-রোরবাং॥তমাম স্তম্য প্রে। ২ভূ-দ্মবাতি ভরতঃ **স**কঃ। শান্তনু স্তস্য व॰শে २ जुन्न सायाः भाष्ट्राताः मृ जः ॥ ভীমঃ সর্বগুণে বুক্জা বুন্ধবৈবর্ত্ত পা-রশঃ। সন্তেনোঃ সত্যবত্যাঞ্ছৌ शृत्यो मःवज्वजृः ॥ हिजाक्तस्य भ-ন্ধর্বঃ পুত্রণ চিত্ররথো হবধী ে। অ-ন্যে ৰিচিত্ৰবীর্য্যে ২ভূৎ কাশিরা-জ সূতাপতিঃ।। বিচিত্রবীর্য্যে স্বর্যা-তে ব্যাসাত্তংক্ষত্রতো ভবং। धृ-তরাষ্ট্রে। হবিকাপুএ: পাণ্ডু রম্বালি-কাসুতঃ।। ভুজিষ্যাযান্ত বিদুরো গা-कार्यता धुजताष्ट्रजः। मूर्यताथन अर्थाः নাস্ত শতসংখ্যা মহাব্লা:।। পা-खाः वडााक मानुगक शक्र्यूयाः

পुषिक्तित । यूचिकिता जीमामाना **२** ज्रा नम्ल ख्या ॥ महास्व म পঞ্চিতে মহাবল পরাক্রমাঃ। ব্রু भा खवर्या रेवंद्र रे दिवर्यागाष्ठ ज्वर ॥ मूर्य्राथ्यन वीरत्र भा खवाः ममूभ জতাঃ৷ দথা জতুগৃছে বীরান্তে মুক্তাঃ সুধিয়ানলাঃ।৷ তত স্তএক চক্রায়া वाञ्चनमा निरवणान । विशुरवणा मृ হাত্মানো নিহত্য বকরাক্ষসং।। ততঃ भाकाल विषय पुरिमार अवस्व अ । বিজ্ঞায বীর্য্য শুল্লা॰ তা॰ পাওবা উপযেমিরে॥ দ্রোণ ভীমাবমত্যা চ' **ध्**उत्राष्ट्रः मगानग्र । व्यक्तं त्राकाः ততঃ পাুপা ইন্দুপুত্তে পুরোভনে।। রাজস্থ তত শকুঃ সভা ক্রা বত বুতা:। অজু নো দার বত্যান্ত সূভদা। श्राक्षवान् श्रियाः ॥ वामुएवमा छः গিনী মিত্ৰ দেবকিনন্দন ৷৷ গাণ্ডী বং নাম তদ্দিব্যু ভিষুলোকেষু বি-गु.उ । जक्षरान् गायका रेक् व उथा **ভেদ্যঞ্দ:শन:।। স তেন ধনুষা বীরঃ** পাওবো জাতবেদসং। ক্ষ্ণ দ্বিতীয বীভংসু রতর্পয়ত বীর্য্যবান্।। নৃপা न् निविद्धाय किया ब्रज्ञानतामाय देव म्कि । यूथि श्रिताय महर् जुवा नीः जिवित्त मुना ॥ युधिश्विताशिव धर्मा-ত্মা ভ্রাতৃভিঃ পরিবারিবঃ। জিডো

पूर्यि । श्रद्धा स्वतः स्वाया पृथ्**डन भामिना** ॥ কর্ণ দুঃশাসন মতে ছিতেন শঙ্ক-নে মতে। অথ দ্বাদশ বর্ষাণি বনেতে-शू र्यञ्खभः ॥ म (धोम्रा (क्रोनही म-जा मूनिवृन्ता जिनः वृजाः । ययु वि-রাট নগর গুপ্তরূপেণ সংস্থিতাঃ॥ वृर्वत्मक महाभाद्धा लागुहारि म-भानयन्। ততো खाजाः सकः दाहुः शुर्थियामाम् क्राम्किः ॥ शक्षमामा-·नर्खताबारः वीता मूर्यायनः न्शः। नाः थवडः नक्षकत्व युष्ककक् वंनानि-তাঃ।। অক্ষেইণীভি দিব্যাভি: স প্তভিঃ পরিবারিতাঃ। একাদশভি-क्ष्युका एउ रुनि मूर्य्याधनाम्यः ॥ ञात्रीष्यु**ष्तः मर्गमार्गः (**पवानृत वरनाः পন । ভীমঃ সেনাপতি রভ্দাদৌ भिर्येश्वरत वर्ष्य ।। भाखवानाः नि-থণ্ডী চ তযো যু**দ্ধ• বভ্ব হ। শক্তা**-শক্তৈ মহাঘোর দশরাত্র শরাশ-निः॥ निथ्खुः बून वारेगण जीमः শরশিতৈ শিতঃ৷ উত্তরাষণ মীক্ষ্যা-थ भाषा (कवः भनायतः॥ উक्। धः र्यान् वङ्न वर्षाः सर्भियदा शिजुन् वरुन। जानान जूशार नीता विम ल मुक किन्दिय ॥ छछ। प्राणा ययो (याष्कुः शृष्टेम् उत्मन वीर्यप्रवान्। मिनानि शक उज्रुष गामी । भारत पाक्षा।।

য এতে পৃথিবীপালা হতা: পার্থান্ত্র 🍴 नाचल। (नाक मानार) शूखा (मा-लिहि शि सर्ग भाश्र गए।। उठः कर्ता शरगे त्याक् मुक्तन महाजाना। हिन ধ্যাগ্ৰহল্জ কৃত্ৰাৰ্থান্ত সাগ-রে।। নিমগ্র: সূর্য্য কে্রেড ততঃ প্রা-भा न वीर्यप्रवास अञ्चः भाषा गर्यो **ब्याह्म भग**्रेष्ट्र बिल्लाडी। दिना ं ब्यून ऐक नालता हारेश क्रू नन मधिन किः। मूर्य्यावता १थ (वर्णन गरा-मानाय वीर्यप्रवान् ॥ अख्यकावज देव জীন কালান্তক যনোপন । অথ ্**জীমে**ন বীরেণ গদযা বিনিপাতিড: াশ্যিশব্দানা ততো দৌশিঃ সুপ্ত সৈ 🎒 ততে। নিশি। জঘান বাস্থীর্য্যেণ निजू र्वध मनुमाहन्।। ध्षेत्रुमः हावा-नाथ पुरेशस्याः क वीर्यप्रान्। (दु) ্রপদ্যাং রোদনানায়া মত্যব্যান্নঃ শি-্রিমেণি•।। ঐধীকাক্তেণ ত• জিত্ব। ্বিশাহাজুন উত্তম। যুধিষ্ঠির: সমা-খান্য জীজন শোক সন্ধুব।। সা ঁত্বা সন্তর্প্ত দেবা॰ক্চ পিতৃন্থ পিতা-महान्। जायानिका २व जीतान ैताजारिकवाकरतासहर ॥ विक्मीरज ্ ংখনেখেন বিধিবদ্দিশাবতা। রা ^{খু}জ্যে পরিক্তিত স্থাপ্য যাদ্যান্ধ বি নাশন । শুল্বা তু গৌষলে রাজা জ

छ। नाम महमुकः। विष्णाः सर्गः क গামাথ ভীমাদ্যৈ ভ্ৰা'তৃভি যু'ত:।। ইতি গাৰুডে ১৫০ অখ্যাय: ॥ 🗱 ॥ বর্ষভেদঃ। ইতি মেদিনী।। ততু জ-युषीभगः नववयान्तर्भं नवमवर्यः । তদ্বিরণ যথা। উত্তরণ যৎ সমু-पुत्र। शिमारमु रैक्टव मिक्कन । वर्ष তভারত নাম ভারতী যত্র সম্ভতিঃ ।। নব যোজন সাহসে। বিস্তারোৎস্য মহামুনে। কর্মভূমি রিয় স্বর্গ মপ-वर्गक गहुजा।। मरहत्या मनयः সহা: শুক্তিমানৃক্ষপর্বত: । বিশ্ব্য-শ্চ পারিপাত্রশ্চ সপ্তাত্র স্বল্পর্র-তাঃ ॥ অতঃ সংপ্রাশ্যতে মর্গো মৃ-ক্তি নমাৎ প্ৰান্তি চ। তিৰ্য্যক্ত্ব॰ नवक्षानि याडाउः भूक्षा नूम ॥ इंजः सर्गक भाक्तक मध्यकारक গম্যতে। ন খল্বন্যত্র মর্ত্যানাণ কর্ম-ভূনৌ বিধীয়তে।। ভারতস্যাস্য বর্ষস্য নব ভেদানিশাময় ৷ ইন্দুরী-পঃ কশেৰ ক তাৰুপৰ্ণো গভস্তিমান্ ।। नागदीन उथा मोत्मा गाइद ন্তৃথ বাৰণঃ। অযন্ত নবন ভেষা দ্বীপঃ সাগর সংবৃতঃ ৷৷ যোজনানা সহসুদ্ত দ্বীপে। २य॰ मक्किएगा उतार । পুরে কিরাতা যস্যান্তে পশ্চিমে য বনাঃ স্থিতাঃ ৷৷ ব্ৰাহ্মণাঃ ক্ষ্তিশা

'ইবশ্যা মধ্যে শূ দুৰ্ক ভাগশঃ। ইজ্যা 🛚 युक्त विश्विष्ठारित्र इर्डिवरङ्गा वर्षिः তা: ॥ শতজ শচ্দুভাগাদ্যা হিম-বৎপাদনিঃসূতাঃ ৷ বেদ সৃতি মুখা **क्हान्ताः भातिभात्वाक्त्वा गूल ॥** नर्माना मूत्रभाष्ठा भव नरम् । विका वि-নিঃসূতা:। তাপী পযোঞ্চী নিবিষ্ক্র্যা পূন্থ। ঋক্ষ সম্ভবা: ॥ গোদাবরী ভीমরথী কৃষ্ণবেণ্যাদিকা उर्था। স হুপাদোন্ডবানদ্য: মৃতা: পাপ ভ যাপহাঃ ॥ কৃত্যালা ডামুপণী পু-मूथा मनया ख्वाः। विमाना अवि-ञ्चताम् । सरम्मु ज्वाः स्वाः ॥ अविष्वा स्मार्गामाः मुकिम् भार मञ्जाः। जामाः नमू । भनर । यह সন্ত্যন্যাশ্চ সহসুশঃ॥ তাৰিনে জ্ৰু भाक्षाल मध्रादमाहरया हनाः। भूर्व रमणामिकारेक्य कामक्र निवासि-নঃ ৷৷ ওড়াঃ কলিকা মগধা দাক্ষিণা ত্যান্চ ক্ৎসুশ:। তথা ৎপরাভাঃ मोत्राष्ट्राः म्त्राजीता खया वृताः ॥ गाक्का गानवा टेक्टव भाविभाव निवानिनः। (मोवीवाः रेमक्रवा क्वाः भाषाः भाकल वात्रिनः ॥ सपु। द्वाना ख्याष्ठाः भात्रजीकाम्य ख्या। या-সাং পিবন্তি সলিলং বসন্তি সরিতাং **मरा ॥ म**मीপতো মহাভাগ হৃষ্ট

পুষ্ট জনাস্বলাঃ।চত্ত্বারি ভারতে বর্ষে যুগান্যৰ মহামূনে।। কৃত তেতা দ্বা-পর্ঞ কলি শ্চান্যত্র নক্চিত। তপ ন্তপ্যন্তি যত্তযো জুল্বতে চাত্র যজ্বিনঃ ।। मानानि চাত मीयस्त्र भत्रत्वाकार्थ मानदार। शुक्रिय र्यञ्जभूक्रा ज-मृषील मानुकाु ।। यो छ र्य छ न-তি বিষ্ঠু রন্য দ্বীপে যু চান্যথা। তত্তা-। পি ভারত শেষ্ঠ জম্দ্বীপে নহানু-নে।। যতো হি কর্মভূরেষা ততোন্যা ভোগভূমযঃ। অত্র জন্ম সহসাণা॰ मरोम् इशि मखन॥ कमाहिह्म छठ खन्ड र्मान्याः भूगा मक्ष्याः । गायनि দেবাঃ কি**ল গী**তকানি ধন্যাস্ত যে ভা রতভূমি ভাগে। মর্গাপবর্গাম্পদ মা ৰ্গ ভূতে ভবন্তি ভ্য:পুৰুষা: সুরত্বাৎ ।। কর্মাণ্য সঙ্কল্পিত তৎ ফলানি স॰-न्यम् विष्णे भव्नाज्यक्रि । व्यवा-প্যতা॰ কর্ম মহীমনন্তে তমিল্লান্ रयप्त्रलाः भुयाति ॥ जानीम रेनज्य क्वयः विवीत वर्षभुर कर्या (पर वक्षः। श्राञ्गाम धन्।ः थन् ए मन् ষ্যাযে ভারতে নেন্দ্রি রিপুছীনাঃ। नव वर्ष छ रिनरज्य कष्षु शिन निषः नया । वक्तरयाजन विखातः मःकिशार कथिङ खर ॥ अष्वीष मगावृङ नक्ष्याकन विखतः। रेन् व्वय वन्य।

কার: স্থিত: ক্ষারোদধি বহিঃ।। ইতি শ্রীবিষ্ণু পুরাণে ২ অংশ ৩ অধ্যাযঃ ।। #।। श्रिमन् वर्षा कम्म कात्र १९ ७९ नाकनाक रथा। गठबन उनः क्या জন্মেদ• ভারতে লভেৎ। করে।তি সফল জন্ম শুদ্ধা হরিকথামূত।।। व्यर्हनः वन्रतनः मञ्ज द्रशः रमवन (में व ह । स्रायन के जिन भाषातुन मुदन भी श्रिजः॥ निर्वातन अभागमान । ব্ধা ভক্তি লক্ষণ ৷ করোতি সফল জন্ম কৃত্বৈতানি চ ভারতে ॥ # ॥ অস্য পুণ্যস্থলত্ব• কর্মভূমিত্ব• পরি-মাণঞ্চ যথ।। কর্মাণা॰ কলভোগশ্চ अर्खिषाः भूत्रभूनहित्र । नित अर्ल न পাতালে নান্য দ্বীপে শুতৌ শুত্ৰ• ॥ क्दा मूडामूड॰ कर्म भूगास्काव ह ভারতে। অন্যত্র তৎকল ভুড়ে ক भी कर्यनिवन्ननाथ।। विभानवाहा-সমুদু পুণ্যক্ষেত্রঞ্চ ভারত। শুেষ্ঠ नर्बञ्चानाक मूनीनाक उनः इतः ॥ लक्षा ठव बच बोवी वाक्षिजा वि कुनाववा। मन्द्र करत्राजि विवयः বিহায সেবন হরে:।। ক্ত্রা তত্র नह १ भूगा अर्गः गहु भूगावान्। গৃহীত্ব৷ স্বৰ্গকৰ্যাশ্চ চিব্ল স্বৰ্গে পু भाराज ॥ अर्ग मागहाजि नाता वि-श्य मानवी॰ छम्॰। इंछि वुक्तरेववर्ख "

भूद्राति श्रीकृष बन्नथएउ)। ৫৯ व्यथ्रात्यो॥

ভারতঃ পুং নটঃ। ইতি জটাধ্রঃ॥ অগ্নিঃ॥ ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ ভর তস্যাপ্ত্যঞ্চ॥

ভারতবর্ষ• ङ्की अधूषीशनऽनववर्षास्डः ्रगं उत्यं विष्णवः । यथा । हिनाञ्जः मिक्किन वर्ष ভद्रजाय मामिका। তমাচ ভারত বর্ষ তস্য নামান-হাত্মনঃ ৷৷ তস্য নবভাগা ব্থাগ ভারতস্যাস্য বর্ষস্য নবভেদানি-বোধনে। সমুদান্তরিতা জ্ঞেয়ান্তে ज्ञाम 🏗 भद्रान्यात्र ।। हेन्द्र वीभः कः সেকণ্চ তামুবর্ণো গভস্তিমান্।না-গদ্বীপ তথা সৌমেরা গন্ধরো বাক-ণ স্তথা ৷৷ অযন্ত নবম স্তেষাণ দ্বীপঃ **जागद म**•वृज्धायाजनानाः **मह्मु**• रेव बीला २य-मिक्ला खताया।। পূর্বে কিরাতা যস্যান্তে পশিমে यवनाः मृजाः । वाञ्चनाः कविंगा रिवनाः मूना काष्ठः खिठा विव ॥ इका। यूक विश्वतारिनाः कर्याछः কৃত পাবনা:। তেষা সাম্ব্রক্।-রশ্চ এভি: কর্মভি রিষ্যতে ৷৷ স্থ-गीभवर्ग भाषिक भूगाः भाभक वि **७था । भरहत्मु। मलयः मञ्चः मृ** ক্তিমান্ক পর্বতঃ॥বিদ্যুক্ত পারি-

পাত্রত সপ্তৈবাত স্বলাচলাঃ। তে-॥ ষা সহসুশ দ্যান্যে ভ্রন্ন যে সমী श्राः ॥ विखाताङ्ग्येत द्वारा वि शना किञ्जानदः। कानाइनः म रेवजाङा नन्त्रा म्मू बाहनः॥ वा-**उन्नत्या देवपुर्य क रेमनाकः मूबन खं** था। जुक्र भुष्टा नामगिति (गांधुनः भार्षुत्राहलः ॥ भूझवीर्यः क्रयस्त्रि ह রেবতো হবুদ এব চ। अध्याम्कः न लामन्नः कृष्टेल्ननः कृतः मद्रः ॥ 🗐 পর্যত শ্চকোরশ্চ শতলো হন্যে হল্ল **गर्वजाः। रेज विभिन्ना जनमा दिहा** कार्यताक जाननः ॥ रेजः भीवास जित्रहरी या छाः जन्द्रीहर्वाष म । প্রক্ল। সর্বতী সিদ্ধু শাসুভাগা ত খাপ গা ৷৷ ষমনা চ শক্তফ্রণ্ট বিতক্তৈ রাবতী সহং। গোমতী গুড়পাপা চ वाल्का रु म्यबंजीता विभागा (कवि का वद्भ विभागा गलकी उथा। को শিকী চাপরা বিপু ছিমবৎ পাদ-্ষিঃসৃতাঃ ৷৷ বেদ সৃতি বেঁতলিমী রা-ত্রিন্নী সিন্ধু প্লেঘত। বেণা চ স্যন্দ্রনা रिव्य नवानीता मही उथा।। भारा চর্মারতী লুপী বিদিশা বেজবত্যপি। সিপু। হাবন্তী চ ভথা পাদ্দিপানাশু-याः मृजाः ॥ त्नाता महानम् टेन्हत नर्यरा जूतमा किया। मन्ताकिनी प-

শার্ণ। চ চিত্রক্টা তথাপগা।। চি ত্রোৎপলাথ তনসা করতোযা পি-শাচিকা। তথান্যা পিপ্ললা শোণী विभागा वक्षमा नही।। महाक्का मुक्तिमञी मक्नुनी बिरिया कनुः। शक्राम भुज्ञा देव छथान्या (वग-वारिनी ॥ निन्ता भरवाकी निर्विक्षत जानी अ निर्मारकी। त्रना देउन्नी । চৈব শিনীবালী সমুদ্বতী ॥ তোবা हिव सङ्ग्रिती है हुनी हा छः निवा छ-था। विकाशाम भुज्ञा छ। नगः भूगः बनाः मुजाः।। रगामायत्री जीनतथी ক্কবর্ণা তথালগা। তুক্কভদ্না সূপু (बागा वाक्याकार्वर्ग्याभगा॥ मक् भार विनिक्राष्टा ইना खाः नित्रपूछः माः॥ क्ष्माचा जामुनगी भूषाजा-जुर्मनावजी। मनगामि नम्स्वा नर्डः भीजकवा दियाः ॥ निर्ह्माः भवि अन्द्रा ह देकना जिम्तिनान्या । नाकृतिमी वन्नक्रा भर्मम् शुक्रवाः मृजाः॥ अविका ह ज्याती ह गम्ना मन्त्वामिनी। कृषा शवाणिनी देव শুক্তিনৎ পুত্ৰাঃ মৃষ্ঠাঃ ॥ সর্বাঃ পুণ্টাঃ সন্নৰত্যঃ সৰ্বাগঞ্চাঃ সমু দুগাঃ । विश्वमा भाउतः महाः महाः भाभ-হরাঃ মৃতাঃ।। অন্যাঃ সহসুশ শেচা-काः कृ मुनत्प्रा हिरका छम्। शुर्वे

কালবহা: সন্তি সর্বকাল বহা স্চ যাঃ । यद् महाः इन्वाः इनहाम् इडनाः কাশি কোশলাঃ ম অবু দাশ্চ পূলি क्रान्त जगकान्त वृरेकः जरु । गरा रहरण क्रमश्रमाः शुरायाः सभी श्रकी র্ত্তিতা:॥#॥ সহস্য চোত্তরে শৈল ্ব लामावती नरी। मुख्या मला 🎨 त्रायम् अनुपराजी मानात्रमः ॥ १९१० विन भुतः त्रमाः जार्गवमाः मङ्गः ,नः । वाङ्गीका वाष्ट्रेषानान्छ व्याजीबाः কালতোষকাঃ ॥ অপরান্তাশ্চ শূ দুশ্চ পত্নবা শ্চন্ম্থণ্ডিকাঃ। গা-श्वात्र। यवनारैण्डव निक्क् स्त्रोवीत ममु काः॥ भ उङ्गरा निनिर्थाक्त भावना হারম্বিকাঃ। মাঠরা রক্ষতকাঃ रिकक्या मण्यानिकाः ॥ क्वित्या-शनिरवणाण्ड रेवणा मृषु अलानि ह। कारमाका रत्रराटेन्टव वर्षत्रा शक्राली-কিকাঃ।। নীচা শৈচব ভুষারাশ্চ প হব। বাহ্তাদরা:। আত্রেযা: স ভরদ্বজাঃ পুস্লাশ্চ দশেরকাঃ ॥ वम्भकाः म्नकातामः চ्विका जाङ्ग दिः नर्। जनशा कालिन मुक्क कि রাতানাঞ্জাত্যঃ ৷৷ তাম্স৷ হ•স मार्गाम्ह कान्यीता सक्ना स्था। ह् निका इंफुका रैका डेनी माबी छरेथे व ।। ३।। अर । प्रानी हु। नी हु। स भा

। অনুবাকা মুদ্মরকা অন্তর্গিরি বহিপিরা:।। তথা প্লবহ্ন। বহেষা মৰদা মলবর্ত্তিকা:। বুন্দোভরা: পুবিষ্ণবা ভার্গবাঙ্কেষ ्नर्फकाः ॥ भारत्वतिष्ठिषाण्य महाण्ड विल्या खानुनिधकाः। मना मगध ~গে দাঃ পুচ্যা জনপদাঃ মৃতাঃ ॥**%।% ,।পরে জনপদা দক্ষিণাপথ** বংসিন:। পাও্যাশ্চ কেরলা শৈচব চোলা: জল্যা স্ত**িথ**ব চাপেতৃকা মৃ यिका टेक्टव व्यभाता वानवात्रिकाः। মহারাষ্ট্রামাহিবিকা: কলিকালৈ व नर्बनः ॥ षाजीद्राः भर्टेव्यीका আটব্যা: শবরাশ্চযে। পুলিন্দা বি· क्राभारतया रिवर्म्डा मर्ख्येकः मरु ॥ পৌরিকা गৌলিকা শৈচৰ অশ্মকা **ভোগবর্জনাঃ। তৈলিকাঃ স্বর্জা**-श्का ऐष्टिमा नामकात्रकाः।। #।। দাক্ষিণাত্যা স্ত্রিমে দেশা অপরাস্তা-ন্নিবোধ মে। সৌর্পারকাঃ কালনদা मुझा छान्।यरिकः मरु।। कात्रकता (ना-হজহ্বা বানেযা রাজভদুকাঃ। তোস-**लाः** (कामना रेम्घर देवभूद्रा विकिमा ন্তথা।। তুষারা স্তয়রা শৈচব পাটবো रिनयद्यः मरा भूजिनताण मूणी-लाक क्षमा खागीमः मह।। उथा व्यक्तिनरेक्टव मरबं रिव कब्रक्षवाः

। नामिकाथाम्ह (य हात्ना (य देव-वास्त्र नर्याताः ॥ भाक्कहाः मभार्षः याः मर्ख मात्रस्टिः मह। कहीयाम मुबाद्धाण जावना कार्त्र रिनः मरा। (उड्ड इश्वास क मृगू विका नि वाशिनः। भणकाक कक्षाक भ क्ला लाटकलाः मह ॥ উखम्र দশাৰ্ণাণ্ট ভোজাঃ কিঞ্চিদ্ধকৈঃ সহ । অনুপা স্তাণ্ডিকেরাশ্চা বীরহোত্রা-হ্বন্তবংগাএতে জনপদাঃ সর্বে বিদ্ধ্য शृष्ठ निवामिनः॥ व्यक्तारमभान् भूवः ক্ষ্যামি পর্বতাশুবিণশ্চ যে।।#।। নি-र्शता र जगार्गाके स्रभण उत्रनाः খসাঃ। লৎসাঃ পাবরণালৈব উর্ণা मर्बाः **मर्क्काः** ॥ जिगर्जा गान्याः শৈচৰ কিৱাতা স্তানসৈঃ সহ। কৃত ত্রেতাদিক শ্চাত্র চতুর্গ ক্তো বিধিঃ ।।।।। এতত্ত্ব ভারত । বর্ষ চতুঃ সম্ছ। ন সংস্থিত।। দক্ষিণে পরতো হৃস্য भ्राचिंग ह मस्मामिक्षः। हिम्यान् ख्र गाम् काम् कम् यथा खनः ॥ उत्तः ভজারত বর্ষ সরবীজ দিজোত্তন । দেব**ত্ব মমরেশত্ত্ব দেবত্ত** মর্ত্য-তা॰ তথা।। মৃদ্ধ পশ্বরচরা যোনী स्वद महीमृभाः। स्रावहानाकः म-दियामाठा दुसन् मू जामूरेजः॥ भू-गांड कर्याञ् व समाना लांकियू वि

म्। एवानामिश विशुर्ख मरेम-दिय मानावरा ॥ जानि मानुष मा-প্র্যাদো দেববাৎ পুরুজাঃ ক্ষিতৌ। ননুষ্যাঃ সকতে তত্ত্ব যদ শক্য সুরা-मुद्धिः ॥ सकर्मा निगठ गुरैन्तः सकर्म-ক্ষ পণে। শেকঃ। न কিঞ্চিৎ ক্রিয়ত ৰ্কম সুখলেশোপুৰু হিতৈ: ॥ ইতি শ্রীমার্কভেষ পুরাণে ভারতথণ্ডবর্ণন দানাব্যাফা । ক।। অপিচ। ভার-তে २९। त्रान् वर्ष मतिरह्लाः मंडि-वहदः। मनाया मन्नन भुष्टा स्मिनांक স্ত্রিক্ট খাষভ: কুটক: কোঞ্চ সংহা। (एविगिति र्थवामुकः शिलाला (वहः-ही गहिन्ता वाकियाका विकाः मू-ক্রিনান্ক গিরিঃ পারিপাত্রে দ্বোণ শ্চিত্রকূটো গোবর্জনো রৈবভকঃ ক-अरजा नीत्वा शाकामूथ इन्मुकीवः কান্সিরি রিভি চান্যে শতসহসুশঃ শৈলা তেষা নিতম্ব পুভবা নদান-দ্যক্ষ সন্ত্যসংখ্যাতাঃ। এতাসা ম-পো ভারত্যঃ পুজানামভিরেব পুন-ন্ত্ৰা নানাত্মনা চোপস্পৃশন্তি চন্দুৰ-শ। তামুগণী অবটোদা ক্তমালা रिवशायनी कारवज्ञी (वद्मा शयश्विमी শর্করবর্তা তুক্তদা কৃষ্বেং। ভীম-त्रथी (गामावत्री निर्विक्र)। शरगकी ञानी রেবা সুরসা নর্মবা চর্মাই জী

আন্ধঃ শোণশ্চ নদৌ নহানদী বেদ-॥ মৃতি খবিল্ল্যা ত্রিসানা কৌশি की मनराकिनी यमूना नत्रवंजी पृष्ट দ্বতী গোমতী সরয় রোঘবতী ষষ্ঠব তী সপ্তৰতী সুষোমা শতজ শচন্দু-ভাগা মৰুদ্ধা বিতস্তা অসিকী বি শ্বেতি নহানদ্যঃ এ অমিনেব বর্ষে পুক্ৰৈ লব্ধ জন্মভিঃ শুক্ল লেমহিত কৃষ্ণবর্ণেন স্বারন্ধেন কর্মণা-দিব্য মার্ নুষ নারক গতযো বস্ত্র্য আত্মন আ नुभूर्बित नवीरक्व नर्दिया विधीय-एक। वर्ग विकास म भीविर्ग काशि ভবতি৷যো ইসৌভগবতি সৰ্ব ভূতা-ज्ञनि जनार्जा १निकरक १निल गरम भत्रभाषानि वानुरहरवं २नन्। निनिन्छ ভক্তি যোগ লক্ষণো নানাগতি নি-निखा विम्रागृष्टि वन्नन बाद्मन यमा श्निश्राभूक्य भूक्य भूमकः। এउ (**ए**व शिएवा गायिखा आसी वेटिया। কিনকারি শোভন প্রসন্ধরামি मूञ सय इतिः। रेग जन्म नेसु গভারতাজিরে মুন্ধন সেবৌপবিক म्भूरा हि नः ॥ कि॰ मुस्रोत सं: कवू-ভি उপোदुरें ज मीना मि ভि बी मू । इस् न फजुना। न यव नातायन भारशकः **ज** म्जिः भूगूकाजिमायिद्धियाद्या वार । कन्नान्याः स्थान जनारः भून

র্ভবাৎ ক্ষণাযুষা ভারত ভূজ্যোবরঃ । ক্ষণেন মর্ত্যেন কৃত• মনস্বিনঃ স•-ন্যস্য সংযান্ত্যভদ্ধ পদ্ধ ইরে: ॥ ন যত্ৰবৈষ্ঠ কথা সুধাপগা ন সাধ-বো ভাগবতা স্তদা শুষাঃ৷ ন যত্র যজ্ঞে-শ মথা মহোৎসবাঃ সুরেশ লোকো-পিন বৈ সসেব্যতা ।। পুাপ্তানূজাতি खिन एक **ब**खरवा उद्यान किया मुव्र কলাপ সম্ভূতা ৷ নচেত্মতেরম পুন मृ जायत्व ज्या वत्नेका इव यान्डि वक्रन ।। रेयः भुक्तमा वर्शिय ভागामा ছবি নিৰ্ভণ্ড মিষ্ট বিধি মজ বস্তুতঃ । একঃ পৃথমামভিরাহতো মুদা গৃ-क्रांठि भूगः खय गानियाः भुजूः॥ मः ভ্যে দিশভ্যথিত মর্থিতো নৃণাণ নৈ-वार्थामा यट भून व्रथि जा यजः। स्रयः বিধত্তে ভজতা ম্নিছতা মিছাপি-थान निज भार भज्ञव ।। यहाज नः सर्ग मूथावः भविज विष्ठेम। मूकम। কৃতস্য শোভন•। তেনাজনাভে স্-তি मङ्जयनः म्याद्यर्थ रुति र्य**र्**डकः তা॰ শ॰ তনোতি॥ 🕮 শ্কউবাচ । अष्ती भगा ह दा जम् भवी भाना क्षे रें इ-ক উপদিশন্তি সগরাত্মকৈ রয়ান্ত্রে-ষণ ইনাণ নহীণ পরিতো নিখনজি কপকল্পিতান্ । তদ্মথা স্বণপুস্থ कन्द्र चूक् आवर्डस्ना त्रमगरका यनस

স্বিণঃ পাঞ্জন্য: সি স্লো লকে-তি। এব• ভব ভারতোত্তম ঙ্কন্থুদ্বी-প ব্ৰবিভাগো যথোপদেশ মূপব-র্ণিতঃ। ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরা ণে ৫ ক্ষন্ধে দ্বীপ বর্ষ বর্ণনা নাম ১৯ व्यथ्यायः॥

ভারতী জ্রী বচন ।। সরস্বতী 🕾 शिकारिकः ॥ वृद्धिष्ठमः । देनि 🏳 निमन्तिः ॥ মেদিনী ॥ ব্রাহ্মী । ইতি রাল ভারবিং প্রাপ্ত কবিবিংশবং। স চ निर्यण्डः ॥ # ॥ मृक्तात को मिकी वीख माइज्यात्रज्ञी भूनः। त्राम রৌদুেচ বীভৎসে বৃক্তি: সর্বত্র ভা রতী।। ভারতী বৃত্তিস্ত সংস্ত প্রা-যো বাখ্যাপারো নরাশুব:। ইভি माहि ठारर्भामा ७ भारतहरः॥ ভারদারণ ক্লী অস্থি।ইতি হেম-ठन्पुः॥

ভারদ্বাজ: পু॰ দ্বোণাচার্য্য:॥ अवि-**७५: । ३७ (मिनी ।। अगर्छ**्य-मूनिः। ইতি भदतज्ञावनी ॥ मङ्गन-**गुरः।** ইতি गुरुयक्क उत्नुः॥ वृश्याः **টপকী ।। वृ**ङ्गाउनुषः । ইতি (र्भक्तुः॥

ভারদানী জী বনকার্পাসী। ইতি मदत्र द्वावनी ॥

ভারयः পু• ভারদ্বাজপক্ষী।ভারই ইতি ভাষা। ইতি শব্চন্দ্রিকা॥

ভারণষ্ঠি: जी ভারবহনদণ্ডঃ॥ বাঁক इेंडि ভाষा। তৎপর্য্যায়ঃ। বিহু-ক্রিকা২। ইত্যমর:॥ ভারব ক্লী ধনুর্ত্তণ:। ইতি ত্রিকাও-শেব: 11

লারবাহঃ পু॰ ভারিক:। ইত্যমর:॥ कांत्रवाशी की नीनी। देखि ताज-

कित्राटाक्त्र्नीयनायकगृष्टकर्ला । **७८** भर्यग्रयः । मजनूषः २ । ইजि विकाखस्मयः॥ जम् ग्रमः भूष-म भारका २४%। भियः स्वाम-विभन्त भावनी भुकानुवृद्धि य-मगृह्ध (बिरजुः। जविर्ग लिकी वि-দিতঃ সমাযথো যুধি ঠির• দ্বৈতবনে व्यानम्बः ॥

ভারবৃক্ষ: পু॰ काकीनामकशक्तुन्वा । ইতি শব্চন্দ্রকা।।

ভারহর:) পু॰ ভারবাহক:। ইতি ভाর**হার: १ नद**त्रञ्जावनी ॥

ভারিকঃ পু ভারবাহকঃ।ভারী ইতি খ্যাতঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। ভার-वारः २। इंजामदः ॥ ভातर्दः ०। ভারহার: ৪। ইতি শদরত্বাবলী॥

ভারি: পু• সি·হ: ৷ ইতি হেন· ठन्पुः ॥

कार्तिष्टः भू भक्तिदिरमयः। उट भर्यप्रायः। भागमहर्देकः २ रेमानितः o कु चक्ककः 8। ই जित्रा कि निर्घणेः॥ ভারী পু ভারবাহক:। ইত্যমরটী-কাষা• রনানাথঃ।। ভারযুক্তে ত্রি।। ভারৌহী স্ত্রী ভারবাহিকা। ইতি मुखारवाष्ट्राकत्रगः ॥ ভার্গবঃ পু: পুরশুরামঃ ॥ শুকা-हार्याः ॥ भन्नी ॥ गङ्गः ॥ इंजित्म् भि-নী।। ভারতবর্ষমধ্যে পুটিংদেশা-ङर्गड (मनविष्मयः। यथा। वुष्काः' खताः भुविक्या ভार्गवा छ्वयमर्प काः। ইত্যाদि मार्काखरभूतापः॥ ভার্গবপ্রিয়ঃ পু॰ হীরকঃ। শুকাধি-় প্রাতৃদেবতাকত্বাৎ॥ ভাৰ্গৰী জ্ঞী পাৰ্ৰতী।। লক্ষীঃ॥ मृत्री। इंजि मिनिनी।। नीनमूर्वी।। इंडि भक्तज्ञावनी ॥ स्थिउमूदी।

ইতি রাজনির্ঘটিঃ।।
ভাগী জ্রী বৃক্ষবিশেষঃ।। বামনহাটি ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ।
গর্মভশাখী ২ ফল্লী ৩ অঙ্গারব
জরী ৪ বাুন্দাি ৫ বাুন্দাণযঠিঃ ৬ বাভারিঃ ৭ ভ্রজা ৮ পদ্মা ৯ যঠিঃ
১০ ভারস্থী ১১ বাভারিঃ ১২ কামজিত ১০ সক্রপা ১৪ ভূমরেস্টা ১৫
শক্ষমাতা ১৬ গ্রহাস্যা গুণাঃ। ক

पूर्वः । ठिळवः । উक्षदः । काम-श्राम (माक द्रुग किमि माह ज्ञ्र नामिद्धः । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ অ-नार द्राक्षणगश्चिका मास्म मुद्रेवाः ॥ ভার্মানী জ্ঞী ভারদ্বাধী। বনকার্পা-श्री। ইতি শন্বর্গবলী॥

ভार्या जी (वहविधात्मत्नाता। विश्वि-**र्मृर्यक विवाहि** छ। उৎপर्यशयः । পত্নী ২ পাণিগৃহীতী ৩ দ্বিতীয়া ও मश्यभिनी ৫ जाया ७ माताः १ म-, ধর্মিণী ৮ ধর্মচারিণী ৯ দারঃ ১০ कनवः ১১ कनवकः ১२। ইতি **म**दत्रज्ञात्वी ॥ अत्राः भूमःता यथा। मा ভार्यता या भियः तुगाः স পুশ্রো যন্ধ জীবতি। স জীবতি ख्रां यम् श्रस्मा यम् म जीविज्य। গুণ ধর্ম বিছীনো যো নিয়ুল• তস্য क्षीवन । **मा** जार्ग्या या गृष्ट् **एका** मा ভार्यता या शियहरा ॥ मा ভार्यता যা পতিপুাণা সা ভার্য্যা যা পঞ্চি বুতা। নিত্যস্নাতা সৃগন্ধা চ নিত্য-क श्रियवारिनी ।। बङ्गाज्य यङ्गाजा-বী চ সতত মঙ্গলৈ যু তা। সতত ধর্ম বহুলা সতত্ত্ব পতিপিয়া।। मञ्ज भियवञ्जी ह मञ्ज अञ् কামিনী। পিতৃদেব ক্রিয়াযুক্তা সর্ব সৌভাগ্য বৰ্দ্ধিনী॥ যসেদৃশী ভ

विकार्या (सरवरमु। न न मानूवः । 🕬।। **अ**न्द्रा त्नावा यथा। यन्द्र जार्य्द्रा वि क्रभाकी कन्मना कन हिन्या। উত্ত-রোত্রবাদা স্যাৎ সা জরা ন জরা জরা ৷৷ যস্য ভার্য্যাশ্রিতান্যক্র পর-বেশ্মাভিকাছ্মিণী। স্বক্রিয়া ত্যক্ত-**লব্জা চ সা জরা ন** এরা **জ**র্বা বস ভার্য্যা গুণজ্ঞা চ জ. ্ সুস্থান 📆 🗟 🖰 शियाशिया॥ पृष्ठां जार्या मठ । सद ज्जा (काखन नायकाः। **अमरर्भ** ह **श्ट्** वास्मा मृङ्कुरद्गव न **मःम**यः ॥ 🎚 আপৎসু মিত্র• জানীযাৎ যুদ্ধে শূর• বনে শুচি । ভার্য্যাঞ্চ বিভবে ক্ষীণে দুর্ভিক্ষেচ প্রিয়াতিথিণ।৷ ইতিগাৰু ডে নীতিসারে ১০৮। ১০৯ অধ্যায়ঃ ।। #।। वृङ्ग्याजिकवाह । यम्। नास्डि সতীভার্য্যা গৃহেষু প্রিযবাদিনী। অ-রণ্য তেন গম্ভব্য যথা রণ্য তথা **गृरः ॥ मूलीला मून्पत्री ना**खा गठा যস্য গ্ছোদরাৎ। অরণ্য তেন গন্ত-ব্যু•যথা রণ্য•তথাগৃহ•॥ ভাবানুর-ক্তা বনিতা হৃতা য**স**্যচ **শ**ত্রুণা। অর ণ্য তেন গন্তব্য যথা রণ্য তথা গৃহ ।। দৈবেনাপজ্তা যস্য পতিসাধ্যা পতিবুতা। অরণ্য তেন গন্তব্য মথা রণ্য• তথা গৃহ•॥ যস্য মাতা গৃহে 🖔

नाडि ভार्य्या ठालियवाहिनी। अतः ণ্য তেন গন্তব্য যথা রণ্য তথা গৃহণ ॥ त्रिया म्नु १ गह । यम् भूनं जी धन বন্ধুভিঃ। অরণ্য তেন গন্তব্য বথা त्रगाः खथा शृरुः ॥ जीर्याः मृना दन সমা: সভার্যাচ্চ গৃহা গৃহাঃ। গৃহি-িলিক গৃহিৎ বে্কি∙ ন গৃহ∙ গৃছ মচ্}-**७ । अ**क्षक श्रीविद्योगक देखा । । अल्लाल्यन जू मार्क विकास में विकित्ता के विकास कर न ী ৬না কৰি ভালে হা হিচাপাক্ত হীনশ্চ যথা মনেরা হুতাশনঃ : পুঞা-कीता यथा मूर्याः भाग जाहिता यथा শশী ৷৷ শক্তি হীনো যথা জীবো যথা-ত্মা চ তনু• বিনা। বিনাধার• বথা ধে-যো যথেশঃপুকৃতি বিনা ৷৷নচ শক্তো यथा यद्धः कनमा मिना। কমিণে চ ফল দাতৃ সামগ্ৰী মূল भिव ह ॥ विना चर्नः चर्नकारता यथा হশক্ত: স্বকর্মণি। যথা হশক্ত: **সলা**-লশ্চ মৃত্তিকাঞ্চ বিনা দ্বিজাঃ ii তথা গৃহী ন শক্ত চ সম্ভত• সৰ্ব কৰ্মণি। ভार्या म्लान्ड न्यान्ड ভार्या म्ला গৃহা তথা।। ভাষ্যা নূল সূথ শখ म्गृष्डानाः गृष्ट् मरा। लार्या न्वः সদা হर्ष• ভার্য্যা মূলঞ্চ नঙ্গ^ন•॥ ভाग्रा गृनक मः माता ভार्या भून-ঞ্ সৌরত । যুগা রথ চ রথিনা

गृहिनाक उथा भृहः॥ मात्रिश्च य-था (ठवा॰ गृहहाना॰ उथा शिया। मई तत्र भुधाना ह खीतज्ञः मृहमाम-शि॥ मा गृहीजा गृहहित्य्वज्ञाह कमलाख्यः। यथा कलः विना भन्नः भन्नः भानम्भूहिनाः गृहिन्यः विना १

श्रमण राजभाग । १० ०० है देशी के श्री रिक्ट के जार के किस के कि सुरुष्टिक के किस के

भूवारम वा हित्र मृत्र भूवाछि यः ।
छीर्थ वा छभरम वाभि स्नाक्षार्थ ह्या छित्र । न स्नाक्ष खम्म छन् छव ।
छ वर्ष्यम अवन ध्रुव । जिल्माशम लार्याया नत्रकथ भत्रज ह ।। हेर्ह्य ह एष्मानाम हेन्छा ह कमला ख्रुव । ।
हेि वृक्षरेव दर्ख जिक्ष कम्म थर्थ ।
हेि वृक्षरेव विकास विकास

স্বাম্য সম্ভোগজ যথা। ন তস্য স-मृणः मृःथः किंकिमनाकि विमाउ ॥ দতী মৃতুমতী জাযা যোনেবাৎ পু-क्वाधमः। अञ् घरत्रु मुख्यत्र जुनहा তস্য জায়তে ॥ ভার্য্যা স্যাদ্মাব-मारविशे जाव कान विद्धाधक। 🐣 🎢 🛪 मञ्जाम किक्किंट विश्विष्ठका-भिकारत्य ॥ বহুভার্য্যস্য ভার্য্যা-ৈ শে নাশন। ন কিঞ্ছি। দংতে কর্ম 🐃 জেণাপি যদীরিত ।। ্কাৰ ে 🤝 ভাৰ্ত্য বিধিবৎ নানে নাড**া:। তাসাণ তুই্টা তু** কল্যাণ মকল্যাণ মতো ২ন্যথা ॥ সম্ভঃষ্টা ভার্য্যয় ভর্ত্তা ভার্য্যা তথৈব চ। যিসামেতৎ হলে নিড্যুণ कन्तरान छव देव धुन ।। यया विक्षार-ए सामी (जो जाग) मन्नुधरा। ज পত্নী সঙ্গন কর্ত্তু: সাস্যাদ্বেশ্যা ভ-वाष्ट्रत ॥ ইशिश लाक श्वामु মধর্মকাপি বিন্ধতি। নচ পিতৃহলে স্বামি জল• তস্যাঃ পুমোদতে॥ বি-ৰুদ্ধমানে পত্যৌ য় সপন্ন্যা বা পু-বৰ্ত্তে। অতীব দুম্ব• ভবতি তদক-ল্যাণ ক্ত্তযোঃ।। ইতি কালিকাপু-ज्ञारा २० व्यथ्रायः ॥ 🐞 ॥ त्रकस्रवां ভার্য্যা অত্যান্ধ্যা যথা। ন বিনোতী-र (या पात्रान् त्रजमा कलूवीक्ठः।

পুত্ত পৈত্র্যান্থতে লণ্ডে রেতসাঞ্চ পিবত্যসৌ ৷৷ যো জহাতি রজঃ কৃত্বা পিত্র্য• শ্ব• তেজসা নরঃ। সোশাতি ফলাপের ধান দদ্যাদৃত্ পুনঃ।। या विज्वि न मखा वि वष्ट्रमा॰ तज-সি স্থিতঃ। রেতঃ পিবতি তমগ্রে। পিতৃ:ভ্যা যো **ংপ্যপিওদঃ** ॥ যো জহাতিহি নিদেবােণ ভার্য্যাঞ্যের-জৰলা। শুদ্ধিনান্ সংবৃতঃ কৃত্ত গ-र्द्धन। पूर्विज वरम् ॥ इंजि वङ्गि भू রাণ ৷৷ ৪ ৷৷ তস্যা কাল বিশেষে गमन निरंपरशा यथा । न मिवाशि-जिय॰ गहिए कमाहि मिह्याशि ह। न পর্যসু ন সন্ধ্যাসু নাদ্যর্ভু চত্রাত্রিষু ॥ (नामक्रा॰ न निवाशहरू न नश-ৰ্ত্তাণ ন বুতস্থিতাণ। অভিগছেদ বি-षान् य उपायुक्षय (भव ह ॥ वक्ष्या 🕸 · মে পরিভ্যাল্যা ন্বমে চ মৃত্পুজা। এकारण जीजननी जम्र खुरवा-पिनी ।। न वर्क्न शिंगम**ः स**र्यप्राट পাণিগাহী তু যোষিতঃ। স্বর্ণ্যাচেৎ পিডর স্তস্য পতন্তি রেতসো ভুঙ্ক:।। ভার্য্যাধীন সূথ পু সা ভার্য্যা ধী-নো ধনাগনঃ। ভার্য্যা ধীনা মথোৎ-পত্তি ভার্য্যা ধীনঃ সুখোদযঃ॥ यक ভार्या गृह अब ভार्या धीन गृह বংগং। ন গৃংহণ গৃহস্থ: স্যাৎ ভা-

র্য্যাকথ্যতে গৃহ।।। ইতি পরাশর মৃতিঃ ॥ ভार्यप्रार्धः श्रुः व्यन्प्रार्थः सञ्जीहाजा। ইতি ত্রিকাওশেষ: ॥ ভार्यग्राहिकः शृ खीकिउः॥ रहिन-বিশেষ:। ইতি মেদিনী।। **जा**र्याभाषी शृ भाष्ट्रभाष्ट्री। निज् विवहनात्स्य स्यः मुद्रः । उट् शर्या-্ তাভাইত্যনর:।। **र्ভार्यप्राकः भू॰ रेम**नाजिमः ॥ भूगे-**ভिमः ।। की** छवा পর ভার্য্যাযা॰ পু **(बार्शाहकः। इंकि (मिर्ह्मी ।**। ভार्यात्कः पूर भडस्र्कः। इं.जि রাজনির্ঘণ্টঃ !! ভাল ল্লী ক্ৰবোৰজ্ব ভাগঃ। ৰূপাল **इंजि ভাষা। তৎপ**র্য্যয**ः। ने**लाहिः ২ অলিক ৩ গোধিও। ইতি রাজ-निर्घण्डः॥ তেজः। ইতি মেদিনী॥ ভালদর্শন• ব্লী লিন্দূর•। ইতি শব-**চ**न्पिका ॥ ভाলদৃক্ भू भियः। हिंद्ध हम ्राष्ट्रः ॥ ভাকান্ধঃ পু॰ করপত্র•া৷ শাকভেই ।। রোহি তন্ৎস্যঃ।। মহালক্ষণ-मन्त्राम्बर्यः ॥ कह्नः॥ इतः।

इंजि भितिनी ॥ श्वादेविङ्ग थ ॥

ভাললোচনঃ পু• শিবঃ। ইতি ভা-। लम्क्नद ममना ॥ ভালুকঃ) भू॰ ভল্লকঃ। यथा। ভাল্ ভালুকঃ 🕽 কে়া ভালুকো ভল্লো ২ছভ-ল্পো ংছো ংপি ভল্লুকঃ। ইতি ভর-ভঙ্ত কোষান্তরণ।। ভাল্পকঃ) পু• ভল্লু হঃ। ইত্যমরটী ভाल्कः र्रे कार्या **'** ভরত: ॥ छावः श्रु नार्द्धारकोतिषान् प्रमा , नमित्कादः ॥ मखा ॥ यञादः ॥ विन्तायः ॥ तहा ॥ वाजा ॥ बस् । इंड्रमद्रः॥ किया।। नीना॥ 🛮 भरार्थः ॥ विভূতিঃ॥ वृक्षः॥ জन्धः ॥ त्रज्यापिः। इजि व्यक्ति ॥ भौ-রবিত: ।। অভিন্যান্তর । ইতি विका ७ म्यः ॥ शावर्थः ॥ यानिः য়া উপদেশঃ। ইতি ধরণিঃ ॥ স॰ मातः । इंज्रानकार्थकायः ॥ 🗱 ॥ नवगृहाभाः भयनापि द्वापभ (हड्ढाः । यथा । भयनत्था भारतभाष्ठ (नकः शानिः शुकान्तनः। गमनः गमतिहा চ সভাষা• বসতি স্তথা ৷৷ আগ-মন ভোজনক নৃত্য নিপ্লাচ কৌ जूरः। निन् गुरुागाः ভावाण्डं षा-দশৈতে পুণীর্ত্তিতাঃ॥ 🛊 ॥ ভা-वानवनं करमा यथा। यमारमो वि-দ্যতে খেট তেন ও পরি গুরুরে ।

পুনর শেন সংপ্র্য স্বর্কণ তত্র নিয়ে: क्राय्या का जन ७॰ जथा वर्ग (मर्की-কৃত্য সদা বুধৈ:। রবিণা ভাগ**হারে**: १ लिय॰ कार्य्य निर्या**क्र**यं ॥ ७०-শেন নবসংখ্যযা। স্বৰ্জণ গুহাণাণ জ-यन्कवः। उपया। विनाथा नन ত্রেয়ানি বৈষ্ণব॰ ভগদৈবত॰। পুষ্যা পৌষ্ণো যম: সর্পো জন্ম ভান্যর্কুতঃ ক্রমাৎ ।। খক্ষো রাশিঃ। যদা মেষে গুছ ন্তদা ১ একপ্রিত গুছ সংখ্যা कः। यहा বৃষে গুহু স্তদা ২ দ্বিপুরি-তো गुर में था कि वार्याः ॥ 🛊 ॥ জাযা সূত মৃত্যু তুক্ স্বগৃহ ত্রিকোণ স্থান স্থিত পাপ গুহাণা নিদু৷ শয-न ভाবयाः कलः। निमायाक यम। পাপো জায়। স্থানে শুভ বদে । यहि भाभः मूटि ह् हि। नामूरिजम्ह কদাচন ৷৷ যদি বা শতুগেছী স্যাছয়-(न यि (विक्रिक्तः । जना नाद्गी अप॰ তন্য নান্দ্যে ভবতি নিশ্চিত।। শু **जा गूरेज वेंना मृक्षेः मूज गुरु मग**िन्न তঃ। নারী চ মিুখতে তস্য পুথম। চ বিশেষতঃ !৷ সুত স্থানে স্থিতঃ পা-(भा निष्याः भदत भिवा । उत्र শুক্ত• ভাৰত্তস্য নাত্ৰ কাৰ্য্যা বিচারণা ॥ তু ানে স্বগৃহে বা ত্রিকোণে বা যদা ভবেৎ। অপত্যস্য তদা নাশো

কাযতে নাত্ৰ সংশযঃ।। শুভগুহো খনা তত্ত্ব কুরো বা যদি বেক্ষিত:। छरा भूथगाभञामा नामा ভवि নিশ্চিত।। মৃত্যু স্থানে স্থিতঃ পা-পো নিদ্যুয়া॰ শয়নে পিবা। তদাজ্ব নো হপম্ভুঞ স্যাদ্যজতো হপর্ভেঃ ৎপিবা।। শুভ গুহো যদা তত্ৰ সুক্ত স্থানে হলি সংস্থিতঃ। তদা চ নর্ণ তস্য মৃত্যুস্থানে বিশেষতঃ ॥ 🕬 🐃 शुरेह र्यमा मृष्टेः मुखा वा मजू वी कि তঃ। তদা তস্য শিরশেংদা ভূনিন' পরিকীর্ভিডঃ॥ এব॰ ক্রমেণ 👯 🐔 वाः गुरुजात मृतृष्किन। । वनावन বিচারেণ জাযতে চ শুভাশুভ॰ ॥ জ্যোতির্বিং সুচ সর্বেষু পরিহারঃ কৃতোময়া। **শ**যনাদিক ভাবেষু জ্ঞা छवुरक्षाभरमण्डः ॥ এकामरण वा मभगनाय वा धनानाय वा यमि वा বিলগ্নে। পাপেন যুক্তো ন শ্ভগুছ শ্চেত্তথাপি সিদ্ধি মহজী বদন্তি॥ #॥कृष्ण यथा। सन्तातिः भिख **म्**नी **চ** জाय**ত भ**यत्न नद्गः। 🕽 । উপবেশে ज्विह्नी भागमवर्ग खथा नतः ॥ २ ॥ নেত্র পাণৌ ভবেৎ ক্রো জলদো-्रवा ভবেষর:। ৩। পুণ্যবান্ शर्मिक रैक्टब धनवा॰क्ट शुकानात्व ॥ ८॥ गः গনে চ রবে জাতঃ ক্পণো ধনসংযুতঃ

। वर्ष्णावी कभी काथी न्किटिंडः
निमान खरा । १८। बिन्न हिंखः
भागी नीर्याय म् भवस्य । भूतः श्री
भाग मूर्णानक गमरमहा खरा नतः
।। ३। मण्याक तर्य क्रिंडः थरना
नाम मूर्णानक स्थान

जार कर के बनाव स्टिंग जिल्हा विश्व

हारित क्रक्या धनानिष्ः। भिता तागी पष्टम्मी काया गमान विषी ।। देश नानामि में शाकाधी मम्मिनी इ खातकतः। गमानह् विषो कार्जा धनशिना खातेखना।। छ। पाठा हथा। पिक्रमा त्राक्षा खा खाते समा।

া 👉 💎 📑 🚉 🚉 🚉 ाह प्रकार सहित्ये हैं। उक्कारी प्रका The war will be to be married to the state of the ्रिक्षा (९.) बङ्गाता (1) 新型型《**国际型型**(1)》。 🔗 🦮 📲 शो नाना विन्त्रा-ুশু 🤐 ারঃ। উৎসাহী চ মহাকো-খী জায়তে ে সুনিশ্চিত ॥ ১১॥ नि-द्वायाः मङ्गजामी महार क्लम भागः ककाति । भूयत्नाक महापूर्धी নিত্য• ভুমতি মেদিনী•॥ ১২॥ ইতি हमुर मु ।। 🛊 ।। **भ**ग्रन ह **अ**रज काला লক্ষী বহু জরকক: 1 ক্ষণকোধী ম-रामकः क्शाला कायाज नद्रः॥ १॥ উপবেশে যদাভৌমে জাযতে চনরা थमः । धनवान् क्त्रकर्मा ह निश्वरता কাতি বৰ্জিত: ॥২॥ নেৱপাণৌ চ যো কাতো ৎক্ষিরোগো ভবেষর:। পু अ मात्र धरेन यू रका मात्रिरमुहेशन म- ॥

হুতে ॥ ১॥ পুকাশনে হুজে জার্জো ধনবান্ পণ্ডিত: সুধী:। নারী চ মি ষতে তস্য পুথমা চ বিশেষতঃ।।৪।। ॥ গমনে চ যদ। জাতঃ পুবাসী নিত্য দু:খিতঃ। শরীরে চ ভবেদ্যোগঃ ক-ंक्षारि अञ्चन किरा ११ देश **भ्**वामी ग-अग्यहायाः अनुद्धानी **अद्यह मः। धन**-क्रीनेः अत् या ज करपाउ क्रिजिका চ।। সভাষাপ্ত খদা জাতো খা-র্মিকো বছ্সস্থাদঃ। গুণবাণ্ট মহা ·मान निरद्रारद्वाभी ভारव**खु**त•॥ १॥ ভানপ্রাগমনে নিজত থঞ্জে। ভব্জি या १ र त्यामा भिख्णूनी जा-যতে চ নরাধমঃ ॥ ৮ ॥ ভোজনে ভূ-মিজস্যাপি যো জাতো মা•সলুককঃ ৷ বৃহৎকাথো মহাক্রোধী নিভ্যোৎ-সাহী ধনাবিত:॥৯॥ স্বস্যন্ত্য নিপ্লাযাণ যো জাতো ধনবান্ ভবেৎ । দাতা ভোক্তা সদা মানী রাজপা-ত্রো ভবেছ সঃ॥ ১০ ॥ কৌতুকে ক্ষি-তিজ্ঞস্যাপি জাতো ভবতি প্ৰিত: । নানা ধনেন সংযুক্তো বহুপুগ্রো **ছি**-ভार्याकः॥ ११॥ निमायाः ভ्रिन्य-স্য যো জাতো মূর্থ এব সং। কলহো বান্ধবৈঃ সার্দ্ধ• শোক ক্লেশ ৰুজারি-তঃ॥ ১২॥ ইতি মঙ্গলস্য।। 🕸 🛭 বু-ধ্ন্য শ্বনে জাতো ধ্নবান্ ফুধিতঃ

अमा। अक्रहिमा ভবেদ্বাপি খঞ্জো खर्वा नानाथा ॥ १ ॥ **উ**भर्वि**म** ह या बाठः भुवामी बायल धुत्र। व-विजा खन भी यूका लोत्रवर्ला सङ्ग শয: 11 ২ ৷৷ নেত্ৰপাণৌ চ যো জাতঃ भीननामि कजादिजः। ठक्तानी विलयः महार भूधनानी ज्वब्यु ॥ ৩॥ পুকাশনে ভবেক্জাতো রাজ পাৰে। ধনান্বিতঃ। নানা ধনেন স যুকো জাযতে বেদ পারগ:।। ৪।। গমনে ধো নরো জাত: পুবাসী নিত্ত দু:খিত:। শরীরে ক্ষত নাপ্নোতি নি ত্য মৃণী ভবেছ সং॥ ৫॥ যো লাভো भमानहायाः नम्भाता मुक्टे विखदः। खीवरमा दृष्ठे जार्यप्रक कामूरका वञ् ভाষক: ॥ ७ ॥ में जायां के वूर्ध काः তো মূর্থো ভবতি পণ্ডিতঃ। ধনবান্ থার্মিনশৈচৰ চিরন্নোগী ভবেৰু সঃ ।। १ ।। জূর: খালো হতমুর্খ: পাপ भीत्वा ভবেররः। वृथम्यागमान नि-ভ্যা কাযতে চ নরাথমঃ ॥ ৮॥ ভো-बात ह खावट मोथा धनकीता छ-(रबद्रः। शद्राख्वी भ्रुवाभी ह भाष গাত্ৰ ব্যথান্বিভঃ ॥ ৯॥ যো জাতো न् ठ। विश्वायाः धनवान् गिखिङः कविः । উৎসাহी ह महाकृष्ट्री जूनिक मूर्य मक्तु ।। २०॥ को बूद्ध ह यहा जा-

(ठा ভবেৎ मर्व ः ेन्यः। खर्माः द्वागी मक्ष्युत्का ः वानम्मममुकः ॥ २२ ॥ निष्पायाक यमा क्षा छः मर्बः पूरिथक भावजाः। नाना क्ष्म मवाः श्वाजि द्वाग म्याक यमं क्ष्यः॥ २२॥ इंजि वृध्मु। ॥ अन्यान् वान्यिः मुग्रामः इत्वा कुष्कादिजः। जीः

मिर्दे ॥ १॥ छेर्भावतम् स्टा बालाः বিহুভাষী চ রোগবান্। পশ্বাভী ন হ।শিল্পী শ্লীপদী রোগ সংযুক্তঃ।।২।। নেত্ৰ পাণৌ গুৱে৷ জাতঃ কাশরোগী थनी ভবেৎ। क्षञामि महत्राम निज्रान জাযতে নাত্ৰ সংশয়: 11 ৩ 11 ওরোঃ शुकारण यनवान् विक छए क कार् दिञः। पत्का बञ्जाहे भागी ह न्याम ষর্ণো কজাহ্বিতঃ ॥ ৪॥ সর্পভীতো गृज्कर्णा जारुकी गमतासूर्थ। शद বিত্তেন ধনবান্ পুমান্ ভবতি বাক্ গভৌ॥ ৫॥ खद्माक भमतमहायाः জাতো ভব্জি মানবঃ। শ্লী ধনী পু বালীচলেবা কর্মণি তৎপর:॥৬॥ বক্তা দাতা চ ধনবান্ রাজ সেবারি-তো নরঃ। শুলরোগী ভবেমিত্য স-ভাশা• বাক্পতৌ স্থিতে ॥ १॥ খা-र्चिक छीर्थविद्यानी धनी हागम्यत ७-तिः। भवनात्वयुं मः न्ति जाया

নাত্র সংশযঃ ॥ ৮॥ ভোজনে বহু সৌখ্যাট্যো মাংসলুল্লো নহাসুর:। কামুকঃ প্রিযবাক্যক্ত ভাষতে নাত্র अ॰मयः ॥ ৯ ॥ नृज्यानात्रः भागे। वा-ग्री धनवान् माजिक खथा। महरिष्य-র্য্য সংযুক্তো জীবস্য চ ভবেমরঃ।। ১০।। কৌতুকে চ গুরো র্জাতো ধনবান ধা चिकः अमा । नृष्ठार भारी गर् महा ज्निकि-नूचमकुक ॥ ४॥ विमारास्थित या जाउ मञ्जूदरागी। ভবৈষ্ট সঃ।ক্পণো বহুভাষী চ দুঃখি-িতো ভুমতে নহী।।)২।।ইতি গুরোঃ ।। ৠ। শুক্রস্য শযনে জাতো লম্পটে। बङ्ভाषकः : प्रस्तानी महाकाशी ৰীচো ভৰতি নিত্যশ: ॥ ১ ॥ উপ-বেশে তথা জাতো বলবান্ দাস্তিকঃ जमा। निष्ठ्र भुवाजी (द्वागी ह जाय-তে নীচ সংস্থিতে ॥ ২ ॥ নেত্রপাণৌ ভূগো দু ক্ষী রোগ শোক সমন্বিতঃ। 📊 धनशीता महात्राणी गानवः मान সংশযঃ॥ ৩॥ ভূগোঃ পুকাশনে জা তে। বিদ্যা ধন সম্বিতঃ। দাতা চ ধার্মিক শৈচৰ কীর্ত্তিমান্ জাযতে নরঃ ॥।।। শক্তব্য গমনে জাতঃ পাদমূলে ৰুজাবিতঃ। নিত্যেৎসাহী মহাশি-ন্নী ভবেত্তীথ গতৌ রতঃ ॥ ৫॥ গম-निरही यहा जा**ँ जु**ङ्गाला **ज**व

ब्रुव । याजा ह य्रियत्व उत्राहेण-भारत वडाधि मःयुजः ॥ ७ ॥ मजायाः ঞ্ ভূগো র্জাতো রাজপাত্রো নহাধ-नी। व्यव भीता महामकः (कवनः मूल (जागवान्।। १।। ভृग्गा जागमत बां ा मृः थि । वहन निक्री । पक् রোগী পুঞ্জোকী জাযতে চ নরাধ-মঃ।। ৮।। শুক্রস্য ভোজনে জাতো वनवान् मास्रिकः जना । यहाधनी ভবেমিত্য বাণিজ্যেন বিশেষতঃ ৷৷ ঠ।। যো জাতো নৃত্যলিপ্সাযা• স বা-জ্ঞী জাযতে ধ্রুব•। পাণ্ডিভ্য• কবি-७। टिठ वर्ष्का कि मितन शिवन ।। यक्ति চৈব ভবেদ্বীচে মূর্থে। ভবতি নিশ্চ-য•। তুক্স স্থানে বিশেষেণ রাজপা-ত্রো নহাধনী।। কানুকো বহুকাত্ত-क পরযোবিৎ প্রিयः সদা। भागम বৰ্ণ স্তথা নানী যাক্তিকো বহুভাষকঃ ॥ ১০॥ শুক্রস্য কৌতুকে জাতো ধন বান্সাত্ত্বিকঃ সদা। নহাভ্ঠো মহা **रमुः** कोञ्की ह ভবেৎ সদা। वहः-পুএ বলত্রশ্চ নানা সূথ সমন্বিতঃ। নীচে ভদ্বিপরীতঃ স্যাৎ দুঃখ শোক ममन्त्रिः ॥ ১১ ॥ निष्नावाक ভृशाः ৰ্জাতো ভবেদ্বোগী স নিশ্চিত। নি ত্যক্লেশী মহাদুঃখী জাযতে নাৰ স<u>ং</u> भयः। जायायाक मुख्यात यि निर्मा

कृरगा खंदर । उसा मर्ब दिनाणः भाषिकुना भनिकीर्जिङः ॥ >२ ॥ इंडि मूकमुशाक्षा मयत्व ह भारत र्जा-ভো লম্পটো বহুভাবক:। ওছাহানে ভৰেদ্ৰোগী কোষ বৃদ্ধিক জাযতে 🏻 मगार मधाद्वरम रिव भयन इः न निक्तः। उमानिका भुवानी नाह क्कृयी खरवह मः॥ ५॥ উপবেশে 🧸 मा जाउः श्लीभनी मक मःगुजः। হীনো ভবেন্তস্যপীড়া ভবতি 🔠 **णः ॥२॥ (बळ्गाली यहा जारका ग**ै র্খে। ভবতি পণ্ডিতঃ। ধনবান্ ধামি क रेफ्द षि ভार्य्या वङ् ভाषकः॥०॥ পুকাশনে চ যো জাতো রাজপাত্তো ख्रतिह मः। नाना ख्रान ख्रान् था-মিকঃ পণ্ডিতঃ শুচিঃ।। মতান্তরে। জাযাস্থানে চলগ্নেচ প্রকাশনে বদা मनिः। उरा मदः विनामः महाङ्जा ভি ধৃংসো ভবেজুর ।। ৪।। গমনে চ यमा জাত: পাদমূলে ক্জান্বিত:। ভীর্গেচ পতিনামিত্য পুত্র দারৈ 🖁 বিবজ্জিতঃ।। ৫।। যো জাতো গমনে-ছাবা শ্লীপদী রোগ সংযুতঃ। দন্তা যাতী নহাকোধী কৃপণঃ পর নিন্দ কঃ ॥ ৬ ॥ সভাষাঞ্চ শনৌ জাতঃ शूध मात्र थरेन यू जः। সর্বত লভতে विक्र माना तक जनहरू । १॥ ॥

আগম্মে যদা জাতো মহাকোধী क्डाविउः। मर्भाषिङ्क मःपर्धाः ভ্ৰাতৃনাশী ভবেজ্ঞ্ৰুৰণ ৷৷ ৮ ৷৷ ভোজ-चरित्रव (या जाराजा मन्ताप्ति गहा- अभि अभितागी उथा म्ली हकू রোগী ভবে: সমস্যাবো**জার্জে** ्रिक्षण प्रकृति ५० । उस्त धीया है कि से अविभी अव ि भेड़ा वर्ष महाराज्य है भू सार्धाः । प्रात्स (छात्र प्रशासका **स**ंग्रहे का क जः हु 😘 🐧 १। बिरानाक भटन ৰ্জাতো খনবান পণ্ডিতঃ প্্রিঃ। চ क्ताभी भिज्म् के विकासी वह পুএকঃ 🛭 বিশেষতক্ষ ধ্যমত্ 🛪 🖰 र्याङ् छ कराइन । यनि देनवाख्य-নিদু। নাশে। ভষতি নিশ্চিত ।। के र्यनात्ना धर्मनानः कृधार्खा मुःथिः তঃ সদা। নিত্য পুবাসী রোগী চ কাৰ্য্যনাশঃ পদে পদে ।। স্থনিত্ৰ গে (इ या के वा कित्मु वा अग्रह श्रनः। তদা সর্ব বিচার্য্যঞ্চ বৈপরীভ্যেন **टिस्टन• ।। जायायाक मृज साति यहि** নিদু। ভবেৎ প্রঃ। তদা সর্বণ গৃতণ বিদ্যাদ্বিষ্ণুনা পরিকীত্তিত ৷৷ ১২ ৷৷ ङ्खि **न**रनः ॥ 🕸 ॥ नगरन छ य**रा** द्रास्त्रा कंद्र यम् अप्तर भूनः। उग्र

ल्लामी नक्षमुःथः बायर ह न मः শ্বঃ । ১ ।। উপবেশে চ বো জাতঃ भीभरी वाग में कुछः। वर्शन ন্রেন্দুস্য পীজা ভবতি নিত্যশঃ ॥ २॥ त्वलां भी यहा का क त्राभी अरम्, ः विशिष्ट म द्रश्रीति विकासी, व्यक्तिकारा প্রশাশনে চালে রীতে ধন্তুন শানু व्यक्तिभूकः , ५७। भूतानी करे. मारी महिका शाशिकः महिम ६। भराव केल शु. जारण मंग खरीस ं नक्ष्माः । मधायध्याः स्ट्राज्ये शिष्टुन्द श्रहानिन्द्रक हता (यो जाः (डा गमरनहायाः वर्लभूत्था मकायनः । প্रতিতো खनवान् माठा काय्रिक ह महताखनः॥७॥ गडायांक यमा का-তঃ কৃপন্মে ধন সংযুক্তঃ। নানী গুণেন গুণবান ধার্মিক: পাণ্ডিত: শুটি:।। বা আগমনে চ যো জাতো লাপটো বহু-ভাষকঃ। সুভ্ৰন্তু বিনাশঃ नामाना (क्रमण्ड कायर**छ** ॥ ৮ ॥ (ভাজনে ह नशमूरक्षा नन्ताशिक कन्नानिजः। ক্পণঃ কলছাট্যন্চ দুংথিতো নিত্য সেবকঃ॥৯॥যো জাতো মৃত্যুলিপ্লা-যা॰ খঞ্জে। ভৰতি নান্যথা। পুগ্ৰনা (मा ভবেন্তर्ग) जाया नात्मा ভবে জুন ৷৷ ১০ ৷৷ ক্রেককে চ বদা স্থাতো

छीनः मर्रेबः ममन्निजः। नीनी धानन धनवाम् व्राक्तियाम् उट्शक्षः ॥ यमि रिस्वान्डरवन्त्रमी बग्ही वा कपाठम। **उना भर्ब• विभानी छा• कायछ ह न म• गै**यः॥५३॥ यो जाउने ब्राह्म निर्मायो॰ ুংখিতঃ সৰ্বত স্তথা। নানা স্থানে েক। বাপি ঘন পুত্ৰ বিবন্ধিত:।। क्षा या**क मू**उझात यिक निमा वि-খুড়ভ**় তদা সর্ব• বৈপরীত্য• শত**-ारा मञ्जूषि**डः ॥ ५२॥ नाना माजः** 'ननःः। त्रु किया गुष्ट मणुष्टः। वनावन विठाति गुक्ता मक्छियपृष्ट थः ॥ २७ गुरागाः भवनारि हारे भ ভাব বিবেক: সমাপ্ত:।ইতি জাতরত্ন: कांश्रेश्रीशका।कक्षा व्यथ उद्मापि দ্বাদশ ভাবাঃ। তে চ নর্মণাণ জন্ম-न्याविक बारण ञ्चानानि। यथान नामर्थाः उन् कनार् नम्मार्यः विद्रः **স্টুম•** ততো বিক্রান্তি• সহজ• তৃতী্য ভ**বনে যোধঞ্চ স**ঞ্চিন্তবেৎ। বন্ধু বা**হু** সুথালযানপি ততো ধী মন্ত্ৰ পুঞা **ख** जः स्टिश्थ क्व विविधो नरंशृद्ध কান ব্রিষ বত্ম চ।। রক্ত্রাযু ম্ তথে। **৭**ষ্টমে গুৰুতপো ভাগ্যানি চিত্তম্ভ-ভো মানাজ্ঞাম্পদ কর্মণাণ দশম ভে **म**र्यप्रांख**ङ न्ष्टियनः । भु**रक्षप्रयादश চিন্তবেক্তব গৃহে ঋপ্পেতৃ সঞ্জিব্যযৌ

সৌম্য স্থানি যুতীক্ষণৈ কপচ্য স্তে-**या॰ क्व ि** सुन्युथा।। ইতি দ্বাদ**শ** ভাব বিবেকঃ।। # ॥ অরাতি বুণবোঃ ষষ্ঠে চাষ্ট্রে মৃত্যুর সুযোঃ। ব্যয়স্য দাদশ স্থানে বৈপরীত্যেন চিন্তন ।। অরা-ত্যাদি ভাবাপবাদঃ॥ #॥ অথ উ-বাদি ছাদশ ভাবস্থ গুহু ফল।। লগ্নে সূর্য্যে १ कि রোগী শশিনি বল যুতে। ৰূপবান্ বিভযুক্তো ভৌনে ব্যঙ্গ: সু বাগ্মী শশধর তন্যে সর্ব শাস্তার্থ বেক্তা। জীবে দাতা পবিত্র: সুকবি রপ গতে ভার্গবে মণ্ডলেশঃ শৌরৌ ক-ণ্ডুতি গাত্ৰ স্তমসি চ নিষত বঞ্চিতো धर्माशिनः॥ ।।। विख्तिकं रेচव রোগী সতত গদযুতো রাত্রিনাথে ধনাচ্যে ভৌনে বিত্যু পুৱাসী কৃষি সূত ধন-वान (मामभूष्य भूधानः। कीर्व वस्त्री भुरमाही विवनित ভ्षक हिर्नि : जीनिक्छः भोत्रो मीना १७नि ভ্য- ভমসি চ নিযত চৌ রিকা বিত্ত-बीवी ॥ २॥ जाउर्वर्राकं मधर्माः म ভবতি নিয়ত ভাত্সা রাত্তিনাথে হি•স্থো ভৌমে হনুজানা• সপদি ব-ধকরে। ভূমিকা বৃক্তিজীবী। সৌমে। সত্যস্য হন্তা ভবতি সুরঞ্জৌ কাম দেব স্বৰূপঃ শৃক্তে রাজ্যাধিকারী র-विक मनुकरगाञ्चा ज्रहायनाष्ट्राशाया

यार्क वाको मृदृःथी बङ्गन शतिवृद्धः भी उरगो जानू जा गी (जोरम ज्याम-বাসী ভবতি শশিসুতে ভ্রাতৃপুতা বিতো হপি। জীবে রত্নোপভোগী विष्मद्रिभूखरतो সর্বসৌখ্যাধিক। রী সৌরৌ গেহে নিবাসী ভবতি 🕶 भित्रिली मन्दक्यां बरहनः ॥ ८ ।. ् भू आइ रार्क निर्देष राजी भुषम मूज हेजः नि इतामी मून्यः माध ানাবেরানা ভবতি ধরণিজে পুঞ্ শোকান্সলে। ২সৌ। সৌম্যে সূক্তঃ मूर्तरः भुतूत्रथनयत्त्रा (एवशुरक्तः) मू পুত্র: কন্যাযুক্তো হি শুক্তে রবিল मनुकारगाः भूध (भोरेध विशेषः ॥ ৫॥ যথে থকে শত্রন্তা রিপুগণ র-हिंडः की निहत्मु गंडायुः भूर्ण मञ्ब रुन्। ज्वि ४व्रिन्स रीन परहा হতিদীন: ৷ সৌনে শাস্তার্থ যুক্ত ক্সিদশপতি গুরৌ রাজ্য সৌখ্যোপ-ভোগী দৈত্যাচার্য্যে ২তিরোগী র-विक मन्करयाः भाभ जूडिका मूःशी ।। ৬।। পত্ন্যা মর্কেচ জাবা পতি রতি বিমুখী শীতরশ্মৌ মুপুঞ: সুস্থো ভ্-যান্নরো খসৌ ভবতি ধরণিজে হীন ভागाण न्नः। (मोत्मा मूडः मूलक স্ত্রিদশ পতি গুরৌ শাস্তবেভা শতা-गुः मूरक प्रश्रामाभी अविक मनुकरमा

शैन ভार्याण न्नः॥ १॥ न्रा চার্কে সুমৃত্যু ভ্রতি চ নিযত শীত রশ্মৌ গতাযু ভূনেঃ পুত্রে সুরোগী भगवत जनस्य भृषाद्वाभी विव জীবে তীর্থে চাল্ড ভবি লোক করে शर्मिक खीर्थामा भी भी भी भी গতাযু ভৰতি বিপুরিপৌ সে ব্যুক্ত গভাযু: ॥ ৮ ।। ার্ম চার্মে, ন্র श्रमी विविध धर्यूः भी ज्ञाने भु गुरुषा वन्नीवाः भुभुष्ठ ठा उविज् थतं निरक्त (मविवरः अक्षा विभाग . **थर्माः जूनीन जि**र्देशिङ अस्ति। श्री खजूनाः मूरुषाः मूक जीर्थान्दाभी त विक प्रवृक्तयाः भाभनीतः मुर्श्यो।। a।। कर्मा १८क शुं जाभी शुह्त धनगुं उः भीनित कादमृष्टिः (मान भूषा-দ্বিতো হসৌ বিবিধ ধনযুতো ভূমি **জে বন্ধু হীনঃ। নিত্যোৎ সাহী চ** সৌ ন্যে পুচুর ধন্যুতে। দেবপ্জ্যে ২ভি. নানী দিব্যক্তীশো হ'প শুক্রে নূপতি नाधनः स्मोति रिएल्डा मूथी है।।३०।। আযে চার্কে নরো হসৌ পিতৃধন मृहि उः भी उत्भी हाकभीत्वा (हो মে নিভ্যা সরোগী শশধরতন্ত্রে ন ৰ্বন ক্ৰেষ্ডঃ। জীবে জীনান্পু দাতা করি তুরণপতি ভানিব শাস্ত্র विका भूबी तक्षिप्रका तथि मन्म

याः क्तकर्या ऋहनः ॥ ১১॥ अर्व्ह স'স্থে ব্যয়ে ২সৌ পূর ধন রহিত: जर्दताभी मृदुःथी (मात्म (थमाद्वि-ভাখনৌ ভবতি ধরণিজে দৃতেরক্তো विवृध्यः। (मोरम्) ध्यार्थकादी पिनः কর বহিতে দেবপুজ্যে হভিমানী भूटः वाजानुतानी त्रविकतनुक्रासाः জ্যুৰক্ষা হৃচেল:॥ ১২॥ ইতি জ্যো-रि उड़ ॥ 🕸 ॥ र्खाना॰ योवनकारन ন্ত জাষ্টাবি**:শত্যলন্ধারান্তর্গতা**-क्ष पृथनानकातः। यथा। योवत मबुका खामा मश्रोविःमञि मःथ्ऽ কাঃ। অলঙ্কারা স্তত্র ভাব হাব হে-লা জ্বো হঙ্কুজাঃ ॥ তত্ত্ৰ ভাবঃ । নি-রিকারাত্মকে চিত্তে ভাবঃ পুথম বি-কিযা। জন্মতঃ পুভৃতি নির্বিকারে মনসি উদুদ্ধ মাজো বিকারো ভাব: । যথা। সএব সুরভিঃ কালঃ সএব मलयानिनः । रेगर्वय मदना किस्र মনো হন্যবিব দৃশ্যতে ॥ ইতি সা-হিত্যবর্গণে তৃতীয় পরিছেদ;॥ #॥ ভাবস্য লক্ষণান্তর• यथा। শরীরে-निषुय वर्शमा विकातानाः विकासकाः । ভাবা বিভাব জনিতা শ্চিত্ত সূত্র্য ই রভাঃ।। প্রাণে নাট্যশান্তে চ ছ-গোন্ত রতি ভাবধোঃ। সমানার্থ **ভ**া या हाब ध्य रेपर्लान बक्तारा ॥ 🛊 ॥

ভগৰভাৰে। যথা। শুদ্ধসত্ত্ব বিশেষা वा(भूम न्तां भू मारा छात्। कि छि कि इ बा नृग्यक्रामी छाव উচ্য তে।। ইতি ভজিরদানৃত**দি**দুঃ।।#॥ भृद्धाक गाममविकात क्रम ভावमा दिवत्रग॰ यथा । तकः अबु उसा म-যশ্চিত্তবিকারে। ভাবঃ। চিত্তবৃত্তি বিশেৰো ভাৰ ইত্যন্যে অতএৰ ন নোবিকারে। রভ্যাদি ভাব উক্ত: 1 ভাবযতি করোতি রসান্ ভাবঃ অন্ । তথাচ ভরত:। नानाভिनय সম্বন্ধাन् ভাবগন্তি রুসানিমান্ । যুস্যাভুন্মা मभी ভावा विष्क्रया नाउँका क्रियु।। ভাবাক্ষ ত্রিবিধাঃ স্থায়িনো ব্যভি চারিণঃ সাত্ত্বিকাশ্চ। তত্র স্থাবিনো যথা।রতিহাসক্র শোরক্ষক্রোবেৎ সাহৌ ভयख्या। बुङ्क्षा विश्वय**्ट** তি স্থায়িভাবাঃ পুনীৰ্ভিতাঃ ॥ ব্য-ভিচারিণো যথা। নির্বেদ প্লানি শঙ্কা-था उथाम्या मर जुमाः। यानमा रिकाद रिप्त अब कि छ। (बार्ट्स ध्रिः স্তিঃ। বীডা চপলতা হর্ষ সাবে-গো জড়তা তথা। ভরে। বিষাদ উৎ-সুক্য নিদ্যুপস্থার এবচ। মংগ্রা বি-বোধো মর্যকাপ্যবহিত্য নহোগুতা ॥ **নতি** ব্যাবি তথোলাদ তথা নরণ **নেবচ। আস শৈচ**ৰ বিভক্ত নিত্যেন্

वा अगिति ।। अगिति भारती छ।

वाः अगिति तम गिर्डिश मान्ति

का यथा। (सरः उत्हा १थ (तामा
कः बत्र उत्था १थ (तृभथः। देवर्त)

मानु भूमा इजारो मान्ति मान्ता

हैजि॥ तजारयः श्रायता १८%।

निर्दित्तामा वाङ्गिमान अशिक्ति

निर्दित्तामा वाङ्गिमान अशिक्ति

हैन भारती वाङ्गिमान अश्रामान्त्रावा है।

जाता भूग जावः। मान्ताविकांतः
। हैजि हमागुधः॥ मलाभूत्य वि ।

हैजि गः किथमातः ॥

ভাবতঃ বি ভবনীয়ঃ। শত্রস্ত ভবৎ শব্দাংণ্পুভ্যুব নিয়মঃ। ইতি সি-জাতকৌনুদী॥

ভাবৎকः ত্রি ভবদীয়া। ভবৎ
শব্দাৎ ঠক পুত্যব নিম্না। ইতি
নিজান্তকে দুটা । যথা। ভাবৎক
দৃষ্টবৎ ষেতদমাম্বধি সুজীবিত।
ইতি ভক্তিপঞ্চনসর্গা।

ভাবন শ্লী ভব্যং। চাল্ভা ইতি ভাষা। ইতি রাজনিঘণ্টঃ।।ভাবনা । ইতি থেদিনী।।

कावना दी ही शुन्नशाश्रयंत्राचा-हः।। अव्यवाननशा**इकि समिनी** ।। क्रा. दिविया कावना यथा। जि

বিধা ভালক বিপু বিশ্বনেভমিনো-भवा । बुद्धार्था क्या म छा ह उथा চৈবোভধাগ্মিক।। নুন্ধ ভাবাগ্মি-কাছেকা কুর্ম ভাবাত্মিকা পরা। উভযান্মিকা তথৈবান্যা ত্রিবিধা ভাব ভাবনা।। সনন্দনাদযো বুন্দ ভাব ভাবনগা যুকাং। কর্ম ভাবন-या जात्ना (मवार्गाः ञ्चावता क्वताः ॥ হিরণ্য গর্ত্তাদিষু চ বুন্দকর্মাজ্যি-কা দ্বিধা। বোধাধিকার যুক্তে যু বি: দ্যুতে ভাব ভাবনা।। ইতি বিষ্ণু-'পুরাণে ৬ অ·শে **৭ অধ্যা**যঃ ॥ 🕸 ॥ ত্রিবিধ ভাবনাশুষ জীবাত্মকত্মাত্ত-দুপচারেণ ত্রিথিপা ভাবনেত্যুচ্যুতে । এ**ত দ্বি হরেঃ স্থা কপ । অতঃ**-পর ৰূপ পুাধ্যুপাযত্ত্বাৎ তত্ত্র পু-থন ননঃ সদ্ধার্য্য নিতি ভাবঃ। ভাবন' নাম জ্ঞান বিশেষজা বাস না। তা॰ ত্রিবিধা মপি সণজ্ঞা না। দিশতি নুক্ষাখ্যেতি। তা মেব বি-ষ্য হৈরিপ্রেন বিবিনক্তি নুন্ধ ভা-বনীজ্বিকেতি। ভাব ভাবনা ভা বো বস্তু তিঘিশা ভাবনা ত্রিবিখা। তত্র বর বুজৈব ভাবযাসঃ। নহা-करेगांव ज्ञाः। वयञ्च छय निष्मनूम भाषा ऐटिश्व बिविना लावना । ञानना युकान् जीवा हुन १ अधिक

नन्तामय इंडि हाडा । इंडि ड-डोका ॥

ভাবৰূত্তঃ পু• বুকা। ভাবঃ সৃষ্টিঃ তত্ৰ বৃত্তঃ পুৰ্তঃ। ইতি সন্ধ্যাব্যা খ্যাযা• ষ্তিঃ॥

ভাববোধকঃ প্ অনুভাবঃ। ইত্যমরঃ ॥ ভাবস্য রত্যাদে বোধকঃ
স্চকো গুণ কিষাদি রন্ভাবঃ ।
অনুভাব্যতে পুতীতি যোগ্যতা॰
নীযতে রত্যাদি রনেনেতি অনুভাবঃ ঘঞ্। তত্র রতে রন্ভাবাঃ লোচনচাতুর্য্য ভুফোপাদ্যঃ। হাসস্যচ
কপোলাসঞ্চনা নাসোৎ ফুলনাদযো হনু ভাবা এব্যন্যভান্যভব্যং।
কিয়া ভাবাননুভাব্যতীতি অন অন্
নুভাবো মুখরাগাদিঃ। ইতি তটীকাষাণ ভরতঃ॥

ভাবাটঃ পু॰ ভাবকঃ।। সাধুঃ।। নিবেশঃ।। কামুকঃ।। নটঃ। ইতি নেদিনী॥

ভাবানুগা) গ্রী ছাযা। ইতিকাজ-ভাবালীনা) নির্ঘণ্টঃ ॥

ভাবিতঃ ত্রি বাসিতঃ ॥ প্রাপ্তঃ ।
ইতি নেনিনী ॥ শুদ্ধঃ ॥ চিন্তিতঃ ॥
নিলিকঃ । ভূক শুদ্ধি চিন্তবো নিশুণে চ ইত্যমাৎ ঞ্যন্তাৎক্তপুত্যব
নিয়নো হয়ণ ॥

ভাবিত্র• ন্থা তৈলোক্য:। স্বর্গমর্ত্য-পাতাল:। ইত্যুণাদিকোষ:।।

ভাবিনী জী জীবিশেষ:। ইত্যমর:

।। ভাব: শৃস্বারচেষ্টাবিশেষাে বি

দ্যতে ২ স্যা: ভাবিনী। ইতি তড়ী
কাষা ভরত:।। জীমাত্র । ইতি
রাজনির্ঘট: ।। বর্ত্রমানপুগগভাব
প্রিযোগিনী চ।।

ভাবী তি ভবিষ্যৎকালঃ। বর্ত্তমানপুগাভাবপুতিযোগ্যৎপত্তিকঃ ।
যথা। বির পুতিপদানাম তব ভাবী
মহোৎসবং। ইতি কার্ত্তিক শুল্পপুতিপদমধিক্ত্য বলিং পুতি ভগবদ্বাক্যং। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বং।।

ভাবৃক প্লী সঙ্গল । তদ্তি তি। ইত্যমর:॥

ভাবুকঃ পৃ॰ নাট্যোক্তৌ ভগিনীপতিঃ। ইতিছেনচন্দুঃ।। রসবিশেষ
ভাবনাচত্রঃ। ইতি শ্রীধরম্বানী।
যথা। নিগম কল্পভারা গলিত॰ ফ
লৃ॰ শুক মুখাদমূত দুব সংযুত॰।
পিবত ভাগবত॰ রসনালয় মুছ
র হা রসিকা ভূবি ভাবুকাঃ।। ইতি
শ্রিভাগবতে সফরে ও শ্লোকঃ।।
ভাবুকঃ ত্রি ভ্বাভো ক্র পুত্য

(१व नियमः॥ नम् भनि । श्रियाक

স্ল শৃভগাচ্য শব্দোপপদ ভূধা-তোরভূততভাবাথে কর্ত্তরিবাচ্যে থুকঞ পুত্যথেন লম্মাবৃক ইত্যা-দি নিয়মঞ্যা

खाताः क्षी खरणाखितज्यः। इंडि ख्यात्वा तरणाञ्चातार्थं जात्व यात्र शुकात्वात निष्ठमः। यथा। वित्युत बूकिना जाताः। ইতি मुखताथ ताकत्रनः॥ शुर्यागमर्णनाट कर्ख-ति ह जब वि। यथा। क्ष्रमा क्रिन नाखि रिन्दाधिष्ठित कर्याः। जाती-जात्रणाः यखाताः जब तुक्ताभाताः थकः॥ इंडि कालिकाभृतातः ०৮ ख्यायः॥

ভাষণ ল্লা কথন । যথা। সংলাপো-ভাষণ মিথঃ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷

ভाষা जी जाणिगीविष्णयः। ইতি
ह्वायुषः ॥ वाक्रः ॥ वाद्यवं ॥ ।
ज भर्यायः। वाक्षी २ ভावं ।
जीः ३ वाक् ६ वानी ५ मतस्त्री १
व्याहातः ৮ উক্তি: ৯ विश्व १ २०।
ভাষিত ১১ वहन ১२ वहः ১०।
ইত্যার:॥ এবোদশ ব্চনে। পূর্ব

সপ্তক•বাগধিকৃতাযা•দেবতাযাঞ। ইতি তউীকায়া• ভরতঃ∷ৠ।শান্তী-যাষ্ট্রাদশ ভাষা যথা। সংস্কৃতা ১পু क्ञार উरीठी असाताष्ट्री 8 माग-ধী৫ নিশাৰ্দ্দিনাগধী ৬ শকাভীরী ৭ শ্বন্তী ৮ দাবিডী ৯ ওট্রীযা ১০ পা भ्हाजा XX शुाहरा XX वाङ्मिका X3 রম্ভিকা ১৪ দাক্ষিণাত্যা ১৫ গৈশাচী ১৬ व्यावडी ১१ १मोत्रस्मनी अन् । अ তাসা॰ লক্ষণোদাহরণানি পাুক্ত-न्कियंत्र व्याकत्रां मुश्चेव्यानि ॥ 🗱 ॥ অথ ভাষাবিভাগঃ। পুৰুষাণা মনী-চানা॰ সংস্কৃত স্যাৎ কৃতাত্মনা । (मोत्रामनी भुरवाक्तवता जाम्मीनाक যোষিতা ।। আসা মেব তু গাথান্ত महाताष्ट्री शुर्या जरा । व्याका मागथी ভाষা রাজান্তঃপুরচারিণা।। চেটানা রাজপুলাণা শেষ্তিনাঞা-र्जनागधी। भाष्ठा विम्यकामीनाः ध् র্ত্তানা॰ স্যাদ্বন্তিকা ৷৷ যোধ নাগরি-कामीना माक्किगाला हि मीवाला। महात्राणां भकाशीनाः भाकातीः मः পুरवाबरवट ॥ वाङ्गीक ভाষा দिवता-ना॰ मुर्गित्छी मृतिछा मिष्य। जा जी (त्रषू उथा छोती हा खानी भुक्तमा दिष्। जा ভীরী শাবরী চাপি কান্তপত্তোপ-की विषु ॥ जरेशवाकात्रवात्रारमे रेन-

শাচী স্যাৎ পিশাচবাক্। চেটীনা मभानीहानामि माड (मोतरमिन का॥ वालानाः च अकानाक नीव गुरु বিচারিণা । উম্বস্তানা নাতুরাণা সৈব স্যাৎ সংস্কৃত ক্ষ্চিৎ ॥ ঐশ্ব-র্য্যেণ পুনত্তস্য দারিদ্যোপস্তস্য চ । ভিক্ষু বর্বরাদীনা প্রাকৃত সংপু-(याज्ञायण् ॥ अंग्कृ ठ॰ अंग्लुरगक्तवा विक्निगृखगामु ह। (मवी मिल्लामु-তা বেশ্যাম্বপি কৈশ্চিত্তথোদিত• ॥ যদেশ নীচ পাত্রস্ত তদেশ তস্য ভাষিত । কার্য্যত শ্চোত্তমাদীনা কার্য্যো ভাষা বিপর্য্যয়ঃ ৷৷ যোষিৎ স্থী বাল বেশ্যা কিত্রাপ্সরসাণ তथा। विस्क्षार्थः भूमाजवाः मःकृज-काष्ठताष्ठता ॥ এया गुमारुत्रनान्ता-ক্রেষ্ বোদ্ধব্যানি। ভাষালক্ষণানি ভাষাৰ্ণবে। ইতি সাহিত্যদৰ্পণে ৬ পরিছেদঃ।। 🗱 🗓 जथ ভাষা পাদঃ। তত্ৰ ভাষা স্বৰূপ নাহতুঃ কাত্যাফ্-न वृष्टम्भाजी । পুजिक्ता (ताय निमू-ক্ত• সাধ্য• সৎকারণাব্রিতং। নিশ্চি-ত লোক সিদ্ধঞ্চ পক্ষ পক্ষবিদো বিদুঃ।। স্বল্লাকরঃ পুভূতাথো নিঃ जिन्हा भित्राञ्चलः । विद्यावि का-রণৈ মুজে বিরোধি প্রতিরোধকঃ ।। যদা দ্বেব বিদ্বঃ পক্ষঃ কথিতঃ

भूर्ववादिना। एप्राउट भक्क नम्ब পুতিবাদী তদোত্তর ॥ পুতিজ্ঞা **जाश्रा**ভिषायिका वाक् । **उन्रा** ५१ रिषः भत्रम्भत विक्षार्थ भरामि 🦁 স্ত্যক্ত নাধ্য সাধনাহাভিমত প ক্ষ• বিদুঃ। অন্যথা পুতিক্তা দোষেণ भाष्र (मायः भाषा **अउ**वताकः। বচনস্য পুতিজ্ঞাত্ব তদর্থস্য চ প রেষু বাদিভিঃ ॥ বক্তব্যে পক্ষ পুতি ত্তে পূর্বোক্তে। নারদেনাপি। সারস্ত ব্যবহারাণা• পুতিক্রা সমুদাঙ্ভা 🛭 তদ্ধানৌ হীয়তে বাদীতর স্তানুক্ত রে। ভবেৎ।। উত্তরে। বিজয়ী। यদ্য-**প্যন্যত্র সাধ্য তদিশিষ্ট ধ্যাধ্যা**ি পক্ষ ইতি ভেদঃ তথাপ্যত্র বাক্ भुजार्गर्गाति धर्याविष्णय विशिष्ठेज-যা ধৰ্মি:গা ২ধনৰ্ণ প্ৰদৈ রেব সাধ্য-ত্বাৎ সাধ্য পক্ষযো রভেদাভিধান ৷ উপসংহারে চএব বিধঃপক্ষ ইতি । নিতাক্ষরাযান্ত। ভাষা পুতিজ্ঞা পক্ষ ইতি নার্থান্তর মিত্যুক্ত• ভাষা-র্থ মৃক্ত্বা ভাষা ম্বর্প পুপঞ্চ মাছ যলাক্ষর ইতি। নিরা**হ্ল: পৌ**রা 🖟 श्रद्ध दिशय्वासामि स्नुः। ७० । मूर-তে চব্যবহারে চপুরুতে যক্ত ক-र्यात। यानि शमा जुप्तानीनाः कर्जा

তানি ন পশ্যতি ।। ইতি গৃহা সংগৃহ वहनामुमानीरनर्ज्या ज्जादा (भाष-(यट ॥ 🕸 ॥ उत्हासनमारु तृरुला-जिः। म्ऽनाधिक• भूर्वभक्क• जावहानी वित्माथ्रयः। न मम्रामूखत्रः यावर পুত্রথী সভ্য সনিধৌ।। 🕸।। তল্লি-थन भुकात मारु व्यामः। भाखल-(थन कनाक ज़्मी वा भूथम॰ नि-থেৎ! শূচনাধিকন্ত সংশোধ্য পশ্চাৎ পত্রে নিবেশযেৎ।। ফলক কাণ্ঠাদি পউকং। কাত্যাযনঃ। পূর্বপক্ষং স্ব-ভাবোক্ত প্ৰান্থিবাফো হথলেথয়েৎ । পাণ্ডুলেখেন ফলকে ততঃ পত্রে-२ जिल्ले थरय ।। भाषरय भूर्वभ-ক্ষন্ত যাবলোত্তর দর্শন•। উত্তরেণা-বৰুদ্ধ স্য নিবৃত্ত • শোধন ভবেৎ ॥ অন্যদুক্তণ লিখেমে। ২ন্যদর্থি পুত্য-র্থিনা• বচঃ। চৌরবছাসযেব্তত্ত ধা-র্মিকঃ পৃথিবীপতিঃ 🛭 স্বভাবোক্ত মকৃত্রিম । এত । স্বর বিশেষাদিনা সুজ্ঞেয় । অতএব যা জ্ঞালুঃ। ছল नित्रमः ज्रञन वावशामायम्भः। ভূতনপ্যনুপন্যস্ত হীয়তে ব্যবহার-তঃ।। ভূত তভাগ সমন্ত । নারদং। ভূত• তত্ত্বার্থ সম্বন্ধ• পুনাদাভিহি-ত ছन। किन्न ताङा िरमायग **स्थर्भ मिल्तिक उ**। ॥ मनुष्र हिन्ने वि-

চিত্র্যাৎ পরীক্ষা সাধুসাধু বা। अर्खिष्वर्थ विवासिषु वाक्ष्राणनाव-नीप्रजि॥ পश्जी ज्युगापात मा (मा) २ मार्थान शिवा**छ। मार्त**व्य दिवादिय शुर्गामा जिथात २ शि ना-বসীদতি। অত্যোদাহরণ• পণ্ডন্ত্রী· ত্যाहि। अर्थ विवाह गुरुगात्रानु : ক্ত বিবাদেষু পুনাদাভিধানে পু-ক্তাৰ্থা দপ্যথাদ্ধীয়ত ইতি গম্য-তে। যথাহ্মনেন শির্সি পাদেন তাডিতঃ ইত্যভিধায কেবল হ ত্তেন তাডিতঃ ইতি বদম কেবল• দণ্ড্যঃ পরাজীযতে চ। ততশ্চ ত্ব মহ্যুণ ধার্যসি মত্ত ঋণত্বেন গৃ-হীত তাবদ্ধনকত্মাদিতি ভাষা শ রীর•। এতঃ স·স্ত দেশভাষা ন্যতরেণ যথাবোধ বক্তব্য লেখ্য বা। মূর্থানামপি বাদি পুতিবা-দিতা দর্শনাৎ। অতএবাধ্যাপনে পি তথোক্ত॰ বিষ্ণু ধর্মোত্তরে। न क्रिंड: शुक्रि वीकि। यं: निष् मनुक्ष्रजः। (मन्जायामृश्रारियम् (वाष्यर म खकः मृजः ॥ इंजि वऽ বহারতভু• ॥

ভাষাপরিছেদঃ পু॰ বিশ্বনাথন্যায় পঞ্চাননকৃত ন্যায়পরিভাষাগুল্পঃ। ভাষ্যায়নাদ্য:শ্লাকঃ। নৃতনজলধ- রক্তবে গোপবপূটী দুক্লটোরায়।
তাষা নমঃ কৃঞায় সংসার নহীকহস্য বীজায়।। তস্যায়নন্ত্য শ্লোকঃ
। সোহয় ক ইতি বুদ্ধিন্ত সাজাত্য
নবলমতে। তদেবৌষধ নিত্যাদৌ
সজাতীয়ে হপি দশনাৎ।। অন্য
টীকা বিদ্ধান্তমুক্তাবলী।।

ভাষাপাদঃ পু• চত্মাদ্যবহারান্ত-র্গত পুথমপাদঃ। তস্য লক্ষণ• যথা । অর্থ বন্ধর্ম সংযুক্ত পরিপূর্ণ ননা-ब्दल । সাধ্যবদ্বাচক পদ পুক্তা-र्थान्विक ह ॥ श्रु मिक मविक्षक्ष নিশ্চিত সাধন ক্ষম । স ক্ষিথ निथिलार्थक (मण काला विद्राधि ह ॥ বর্ষ ব্রু মাস পক্ষাছে। বেল। দেশ भुरिक वट । ज्ञानावमय माध्रा-খ্যা জাভ্যাকার বযো যুত্ত ম সাধ্য পুনাণ সংখ্যা বদাত্ম পুত্যৰ্থি নান চ। পরাত্ম পূর্বজানেক রাজ নাম-ভি রক্ষিত ।। ক্ষমা লিঙ্কাত্ম পী-**ডाব**ৎ कथिज। इर्ज् नायक । यन। বেদযতে রাজ্ঞে ভদ্ডাবেত্যভিধী যতে।। ইতি মিতাক্ষরাযা• ব্যব-হারাধ্যায়ঃ।। অস্য বিবরণ ভাষা नाय पुष्ठवाः ॥

ভাষিত[ে] ক্লী বচন• । ইত্যমরঃ ॥ কথিতে ব্রি॥

ভান্ধরে

ভाषाः क्री हृतिः। ইতি स्वाभी॥ मृज विवत्तगुष्ठः। उमा नक्षणः। मृजा-र्था वर्गार्ड यज भरेतः मृजानुमाति-जिः। सभागि ह वर्गार्ड जाषाः जाषाविरा विषृः॥ ইতি निकापि मःगुरु होकाषाः जन्न ।। मृजा-जार्थभुभक्षकः। ইতি रूमहन्दुः॥ गृरुविर्णयः। ইতি माथवीजि मथु-द्विणः॥ कथनीय जि॥

ভाষ্যকারঃ পু॰ মহাভাষ্যকর্ত্তামুনিঃ
। তৎপর্য্যায়ঃ।গোনদী যঃ ২ পতজ্ঞালিঃ এ চূর্নিক্ৎ ৪। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। অহঞ্চ ভাষ্যকারণ্চ জশাগ্রীয় বিষা বুভৌ। নৈব শব্দাদু
থেঃ পার॰ কিসন্যে জডবুদ্ধয়ঃ।।
ইতি দুর্গসিংহঃ।।

ভাস ঋ ড ভাসি। দীপ্তৌ। ইতি কবিকল্পদ্দমঃ। ঋ অবীভসৎ অব-ভাসৎ। ড ভাসতে। ইতি দুর্গা-দাসঃ।।

ভাস্ স্ত্রী পুভা। অস্যশক্ষ্য পুথ মান্তরূপণ ভাঃ। ইত্যমরঃ॥ মযু-খঃ। ইতি মেদিনী॥ ইছা। ইতি ধরণিঃ॥

ভাস: পু॰ দীপ্তি:।। গোধিং।। স্বরুটি:
।। গৃধু:। ইতি বিশ্ব:।। স্বনামথ্যাত
পক্ষিবিশেষ:। তৎপর্য্যায়:। শ

बहः २। ইতি হেনচন্দুः ॥
ভাসঃ ক্লী দীন্তিঃ। ইতি দ্বিকাশকোষঃ
ভাসন্তঃ পৃ॰ স্থ্যঃ॥ চন্দুঃ। ইত্যুগাদিকোষঃ॥ ভাসপক্ষী। ইতি
সেদিনী॥ নক্ষত্ৰ•। ইতি হেনচন্দুঃ
ভাসন্তঃ ত্ৰি সুন্দ্রোকারঃ। ইতি
মেদিনী॥
ভাসন্তী ন্ত্ৰী নক্ষত্ৰ•। ইত্যুগাদিকোষঃ

ভाসন্তা ज्ञा नक्षवः। हें जुर्गारकोषः ভाসः भ्• সूर्य्यः। हें जिकाखः भिषः॥

ভাসর : क्षी क्रिक्षोयथ । इंडि किं। ध्रतः॥

ভাসুরঃ পু• স্কটিক:। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষ: ।। বীর:। ইতি ধরণি:।। ক-র্ত্তরি ঘুর পুত্যুয় নিয়মত্ত্বন দীপ্তি-যুক্তে ত্রি।।

ভাসুরপুষ্ণা জ্রী বৃশ্চিকালী ৷ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷

ভাস্কর ক্লী সুবর্ণ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ভাস্করঃ পু সূর্য্যঃ ॥ অগ্নিঃ। ইতি মেদিনী ॥ বীরঃ । ইতি ধরণিঃ ॥ অর্কবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ ভা-স্করাচার্য্যঃ। স চ সিজান্তশিরোন-ণ্যাদি জ্যোতিশু স্থক্তা ॥

ভাস্করপিয়া পু॰ পদারাগনণিঃ।
চনি ইতি ভাষা। ইতি কেচিৎ ॥
ভাস্করেষ্ঠা স্ত্রী আদিত্যভক্তা। ইতি

ब्राजनिर्घणेः॥

कात्रतः की ब्राक्षीयथः। ইতি भयः চন্দ্রিকা।।

ভাষরঃ পু॰ দিন । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ
।। সূর্য্যঃ । ইতি কেচিৎ ।। দীপ্তিयুক্তে ত্রি।ইতিমুগ্ধবোধব্যাকরণ ।।
ভাষান পু॰ সূর্য্যঃ ।। অর্কবৃক্ষঃ । ইত্যমরঃ ।। দীপ্তিঃ । ইতি হেনচন্দুঃ ।।
বীরঃ । ইতি মেদিনী ।। দীপ্তি বিশিপ্তে ত্রি ।।

ভিঞ্চঃ) পু• ভিঞা ক্ষুপঃ। ইতি ভিঞ্চঃ) রাজনির্ঘণ্টঃ॥

ভিত্তা স্ত্রী ক্ষুপবিশেষ: । ভিত্তী
ইতি খ্যাতা। তৎপর্য্যায়: । ভিত্তীতকঃ ২ ভিত্তঃ ৩ ভিত্তকঃ ৪
ক্ষেত্রসম্ভবঃ ৫ চত্ত্রদঃ ৬ চত্ঃপুত্রঃ
৭ সৃশাকঃ ৮ অসুপত্রকঃ ৯ করপর্ণঃ ১০ ব্রবীজঃ ১১। অস্যাহণাঃ
। অমুরসত্বং । উক্ষত্বং । গ্রাহিত্বং । ।
কচিকরত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘটঃ ।।
ভিত্তীতকঃ পুণ ভিত্তা বৃষ্ণঃ। ইতি

ভিত্ত নী খণ্ড । ইত্যমর: ।।
ভিত্তি দ্রী পৃহাদেন্দি ইকাদিন্দী
বৃতি: । আঁথ ইতি দেশাল ইতি
ভিৎ ইতিচ খ্যাতা। তৎপর্যায়ঃ
। ক্ডা ২ । ইত্যমর: ॥ ভিত্তিকা

त्राजनिर्घणेः॥

০ সভ্য : ৪ সভ্যক : ৫। ইতি শব-রত্নাবলী।। পুভেদঃ।। সম্বিভাগঃ ।৷ অবকাশঃ। ইতি বিশ্বঃ।। পুদে-শঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।।

ভিত্তিকা স্ত্রী স্বড্যং। ইতি শন্রত্বাবলী। পদ্ধী। ইতিহেনচন্দুঃ।
ভিত্তিচৌরঃ পুং চৌরবিশেষঃ ।
পিঁদালচোর ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। খানিনঃ ২ ক্ড্যছিৎ ৩।
ইতি শন্বত্বাবলী।।

ভিত্তিপাতনঃ পু॰ মহাম্যকঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

ভিৎ^দ জী পুভেদঃ। ইতি জটাধরঃ ।।ভেদকর্ত্তরি ত্রি।।

जिम इत छ अध जिम । इठि किविक्सकमः ॥ जिथ्यिक्यम्वरव वि-मात्रागः । अध जिमित्त जिल्ल कृषाः मिरी । छे जिला । इत चाजिम्थ चरिन्द्रभीय । इठि मूर्गामानः ॥ जिमकः क्री वजुः ॥ थात्र भूः । इठू।-गामिरकायः ॥

ভিদা জী বজ্ঞাদেবিদারণ । চেরা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। বিদরঃ ২ য়ৣটন ০ ৷ ইত্যানরঃ।। ধন্যাক । ইতি শক্তি দুকা।। ভেদঃ। যথা। প্যায় ভিদা তথা। ইতি পুষ্য শিক্তে জুণা।

ভিদিঃ পু॰ বজু॰।ইতি দিৰপ (कार्यः ॥ ভিদির· क्षी বজু·। ইত্যনরটীকার্যা• ভরত: ত্রিকাণ্ডশেষশ্চ ॥ ভিদু: পু: বজু:।ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥ ভিদুর ক্লী বজু । ইত্যমর: ॥ প্লক বৃক্ষে পু•। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ **ভिদ্যः शुः नम्हः। ইতি एक्स्यहन्द्रः** युषरवाध वताकत्रवश्य ॥ ভিদুঃ পু ক্লী বজু। ইতি ত্রিকাও (मयः উगामित्कायमः॥ जिम्लिशालः शृ॰ रुख्युमानकाखः। नानिकाञ्ज गिठि थ्याउ॰ । ইতি ভরত: ।। হন্তক্ষেপ্যলগুড়:। ইতি भागी ॥ जद्भर्यप्रयः। मृगः २। ইত্যমর:॥

ভিন্ন: ত্রি ভেদবিশিষ্টঃ। ভাঙ্গাইতি
ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। দারিজঃ ২
ভেদিতঃ ৩। ইত্যমরঃ॥বিদারিজঃ
৪। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ সঙ্গ তঃ॥
অন্যঃ।। ফুল্লঃ। ইতি মেদিনী॥
ক্ষভরোগবিশেষঃ। ভল্লক্ষণ যথা।
শক্তি সন্তেষ্ খন্তাগু বিষাণৈ রাশযোহতঃ। যৎকিঞ্চিৎ পুসুবেক্তজি
ভিন্ন নিত্যভিধীয়তে॥ আশ্যঃ
কোষ্টঃ।। ভল্যৌব্য যথা। ছিন্নে
ভিন্নে তথা বিজে ক্ষতে বাস্গতি

ভিষ

সূবেৎ। রক্তক্ষযান্তর করঃ করোতি প্রনো ভূশ।। স্নেহ্লান পরীষেক लिभा॰ खखाभनाइन । इवी ठ য়েহ বস্তিঞ্চ মাৰু তয়ে বিধি ভিষক।। খ্যাদি ছিন্ন গাত্রস্য তৎকাল পূ-রিতো বুণঃ। গাঙ্গেক্কী মূলরসৈঃ निष्ठः नुभाव दिलनः ॥ कवाय नथु-ताः भी जाः कियाः नवाः भुरयाक-(यट । मर्ति) वृशाना मधाहाट भ-"ठा९ भ्रह्मांक माह्रद्र९ ॥ व्यामा- . **ग**यस्य क्षितं विष्धात्रम्य नतः। **७ मिन् भक्षण**गरङ जू गृङ्गीया अ-বিরেচন• ৷৷ ক্বাথো বংশাত্বগেরগু শ্ব-**म**•्ड्राम्प्राजिमा क्ठः। शिङ्क रेमक्षव मः मुकः (काष्ठञ् नावत्यम्म्क् ॥ यव काल अल्यानाः निःश्वरहन द्राप्तः ন চ। ভূঞ্জীতান্ন• যবাগূ• বা পিবেৎ সৈশ্বৰ সংযুতা ।। জাতী নিম্ব প-টোল পত্র কটুকা দারী निশা শা-রিবা মঞ্জিষ্ঠাভ্য তিক্ত তুত্থ মধুকৈ र्नकाश्व वीरिकः गरैमः। गर्लिः जिष गतन मृत्र वहना नर्या मुजाः माविः ণো গম্ভীরাঃ সৰুজো বুণাঃ সগতি-কাঃশুদ্ধ্যন্তি রোহন্তি চা। বৃদ্ধ বৈ-(म) शामामन भातम्भार्ये। शामान । জাতী ষ্তে তৃ স•সি**দ্ধে (কৃ**প্তব্য• निक्थकः वृत्यः ॥ बाजामिष्ठः ।

ইতিভাবপুক শং ।।
ভিন্ন কঃ পাং বাজা । বথা। ভিন্নকঃ
ফুপণো লা বাকো বৈনাধিকঃ
স্তঃ বিকাপ্তশেষঃ ।।
ভিন্ন বিকাল জী ককটী। ইতি
শাক্চন্দ্রকা ।।
ভিন্ন ভিন্ন জা পুং চণকঃ। ইতি শাক্
চন্দ্রকা ।।
ভিন্ন বাজনী জী পাষাণভেদক বৃক্ষঃ

। ইতি ভাবপুকাশ: ।। ভিন্নার্থক: ত্রি অন্য:। ইত্যমর: ॥ ভিয়া স্ত্রী ভয়•। ইতি হেমচন্দু: ॥ ভিরিণ্টিকা স্ত্রী স্বেতগুঞ্জা। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

जिल्लः भू॰ (सहकाजिविष्मयः। जील ইতি ভাষা। यथा। माला जिल्लाः कित्राजाण मर्खिल (सह जाजयः। ইতি হেমচন্দুः॥ অপিচ। त्रक्रक ग्टम्प्रकात्रण निर्धा विक्ष এব চ। কৈবর্ত্ত মেদ जिल्लाण मेशिए অ-ন্ত জাঃ মৃতা:। ইতি পায়ণ্টিত্তত-কুং॥ म চ ব্যাহ্মণ কন্যায়া॰ তীব-রাজ্জাত:। यथा। পুলিন্দ মেদ ভিল্লাण প্লো মল্লাভ ধাবকঃ। কন্দেশ লো বা মৃতপো বি তীবরা-াহ্মণস্য চ॥ ইতি পরাশরপদ্ধতি: ।। ভিল্লগৰী জ্ঞী গৰ্থী।ইভিরাদ্ধ নির্ঘণ্ট: ।। ভিল্লভকঃ পু• লোধু:।ইভিরাদ্ধ

ভিল্লতকঃ পু• লোধুঃ।ইতিরাজ নির্ঘটঃ॥

ভিল্লী স্ত্রী লোধু:। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।।
ভিষ ক্রুযে। সৌত্রধাত্র্যণ। ইতি
কবিকল্পদ্দমঃ।। ভিষক্ ভেষজণ।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ভিষক্^জ পু• रिवम्यः। ইত্যন্রः॥ দ-ে গুনীযভিষম্বথা। অজ্ঞাতৌষধি স-ব্ৰস্ত যশ্চ ব্যাধে রতত্ত্ববিৎ। রো-গিভ্যো হর্থ• সমাদত্তে স দণ্ড্য শ্চৌরবন্ডিষক্ ॥ ইতি জ্যোতিস্ত-ৰু॰ ॥ তস্যান্নস্যাভোজ্যব্ব॰ যথা। শুদুাম ব্ৰাহ্মণো ভুক্তা তথা রহা-বভারিণ:। চিকিৎসকস্য **ক্রস্য** তথা जी मृगंबी,विनाः ॥ भोखि-কান্ন• স্তিকান্ন• ভুক্ত্বা মাস• বুতী ভবেৎ।বুতী যাবকেন। তত্র ধেনু-ছয়ণ। ইতি প্রায়শ্চিত্ত বিবেক:।। व्यिति। भ्यक्षिकि ८ मकमाम भू कनाउन मिनिष्य । विशे वाकु-বিকস্যান শত্রবিক্রযিণো মল।। ইতি মানবে ৪ অধ্যায়ঃ॥

ভিষক্পুিয়া স্ত্রী গুড়ুচী। ইতি রাজ: নির্যণী:।। ভিষপ্লিত লী ঔষধ । ইতি বিকা- ॥
ওদেশ ।।
ভিষণ্ড লা ভদুদন্তিকা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।
ভিষনাতা জী বাসক: । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।
ভিস্নটা জী দক্ষাম । ইত্যমর: ॥
অস্য কপান্তর । ভিস্নিটা। ভিম্নিটা
টা। ভিম্নিটা । ভিম্নিকা। ইতি
ভট্টা জী দক্ষাম । ইত্যমর লীকা
ভাস্নি জী দক্ষাম । ইত্যমর লীকা
সারসুন্দরী ।।
ভিক্নিটা জী দক্ষাম । ইত্যমর লীকা
সারসুন্দরী ।।
ভিক্নিটা জী দক্ষাম । ইত্যমর লীকা
সারসুন্দরী ।।

ইতি কবিক্লুজন: ।। অর্থো যাচনণ ালোভাদুক্তি লোভোক্তি: । ড ভি-ক্ষতে ভূমিণ নৃপাৎ পণ্ডিত: । ল-ভত ইত্যর্থ: । ভিক্ষতে দাতারণ ধনণ ভিক্ষু: । যাচত ইত্যর্থ: । ভি-ক্ষতে দাতারণ দীন: লোভাদ্বদতী ত্যর্থ: । ভিক্ষতে জন: ক্লিশ্যতীত্য-র্থ: । ইতি দুর্গাদাস: ।। ভক্ষা জী লাভ্যাচনণ । চাপ্তযা

जिक्का जी नाजगाहन । हा ख्या इंडि माना इंडि ह जाया। छ८ शर्यता याद्धा २ व्यर्थना ० व्यक्ता ४। इंडिज्यतः । शुर्थन ६ यहना ७ १इंडिज्य स्तुतावनी॥(स्वा॥ ज्डिः

। ইতি नानार्थ जनतः ॥ ভिक्किज-वस्त्र। इंडि (निहिन्।। 🛪 🛭 छेशनी ভদ্য ভিক্ষা বিধি যথা। ভিক্ষামা-হৃত্য শিপ্তানা গৃহেভ্যঃ পুষভো গ্ৰ-रः । निरवर् खन्नर्यः श्लीयाचाञ्च उ **स्टर्नु**क्कग ॥ ज्वर भ्रविधादरिक्क নৃপবীতো দ্বিলোভনঃ। ভবন্মধ্যন্ত ताबत्ना विनार्श्व जवमूखत्र।। मा তর• বা স্বসার• বা মাতু র্বা ভণিনী নিজা । ভিক্ষেত ভিক্ষা পূথন यारिनः नावमानस्य ॥ जनाञीय शृष्ट्राञ्चव जार्बवर्णिक रमव वा । रेज-ক্ষস্যাচরণ প্রোক্ত পতিতাদি বি-বৰ্জিত ।। বেদযক্তৈ রহীনানা পুশ-खानाः सकर्णम्। तुक्कारार्ग्याहरत्रोखः ক্ষ• গৃহেভ্যঃ পুযতো ২ বৃহ• ।৷ গুরোঃ **স্লে ন** ভিক্ষেত ন জ্ঞাতি **স্লল** বন্ধুষ । अवाञ्च वन्। (गरानाः भूर्वः भूर्वः विवर्जाय ॥ मर्बद्याति ठात्रन्यामः भ्र्बिकानाममञ्ज्ञत । नियम् भ्रय-তো বাচ॰ দিশস্ত্বনবলোকখন্।। স **भार्**ठा जू उरेफ कर यावनर्थ मनाय-যা। ভুঞ্জীত পুষতো নিভ্যুণ বাঞ্চতা २ नन्। भानजः ॥ रेज्यक्रग वजःयिन छाः तिकाशासी खत्वबुकी। **रेखस्क**न বৃতিনো বৃত্তি ৰূপবাস সনা সূতা !! ইতি ক্মপ্রাণে উপরিভাগে ১২

व्यक्षायः ॥ ऋ ॥ भायः भाव छि कार्टना जाता यथा । कात्रयिदा जू कर्यानि काकम्भन्धामदश्या माः য পাত গৃহ দারান ভিক্ষার্থ নাবঘউযেৎ ॥ ইতি তবৈব ১৫ व्यथायः ॥ 🗱 ॥ ना जितिशा यथा । হন্তকার মথাপু• বা ভিক্ষা• বা শক্তিতো দ্বিজঃ । দদ্যাদ্ভিথ্যে নিত্য বন্ধৈত পরমেশ্র ।। ভি ক্ষা মান্ত পুৰ্বি মাত্ৰ মণুভ্ৰমান্ত 'তৃর্গণ'। পুষলা হস্তকারান্ত' ভচতু র্গুণ মূচ্যতে॥ গোদোহ মাত্র• কা-**ल रेव পু** जी कि मि जिथि : श्रम । जा ভ্যাগতান্ যথা শক্তি পুজ্যেদ্তি-থি॰ যথা।। ভিক্ষা॰ বৈ ভিক্ষবে मन्डा वि थिव बुक्त ठा तिर्ग । मम्डाम-ম• যথা শক্তি ত্বৰ্থিভেগ লোভ ব-জিতঃ৷৷ সর্বেধা মুপ্রালাভে তু অন্ন• भारन्त्र नित्त्र । इं उ उरे व ३१ व्यथ्रायः ॥

ভিক্ষাকঃ পু• ভিক্ষুকঃ। ইতি সি-জান্তকোমুধী।।

ভিক্ষানী জী ভিক্ষ্কী।ইতি মুধ্ব-বোধব্যাক্রণ।।

ভক্তা হৈ পূ' স্থী ভিক্ষক:। ইতি সিদ্ধান্তকোন্ব ।।

क हैन ही डिकार्थगमन । यथा।

অর্জ দানববৈরিণা গিরিজ্যাপ্য-র্জ হরস্যাহ্নত দেবেল্ম জগতী-তলে মারহরাভাবঃ সমুম্মীলতি। গঙ্গা বারিধি মম্বর শশিকলা না-গাধিপঃ ক্ষাতল সর্বজ্জন্ব মধীশ-রত্ব মগনএলা মাঞ্চ ভিক্ষাটন ।। ইত্যুক্তটঃ ।।

ভিক্ষাশিত্ব নী পৈশুন্য । ইতি হারাবলী।। ভিক্ষাশী ত্রি ভিক্ষুকঃ। ইত্যুণাদি-ক্ষেষঃ।। যথা। ভিক্ষাশী বিচরে-

দ্ৰু মং বনৈ যদি ন জীবতি। ইতি প্ৰাযশ্চিত্তবিবেক: ।।

गुाम माण्यर। अश्रम क महिष्ड कारु भाषाह्य नाजि लक्षिजः ॥ রহিতে ভিক্কে গামে যাতা মাত্র মলোলুপঃ। ভবেৎ পরমহংসো বা वकम् श्री यगानि कृष्या। जिन्नायान যোগ মভ্যস্য নিতভুক্ পরাং সিদ্ধি म्बान्नू यार ॥ माजाजिथिनिर्या क्कानी गृशी भुष्कि २ शि मूहारछ। ইতি गाक्ष २०० वधायः ॥ 🛊 ॥ অপিচ। চতুর্থ শ্চাশুমে। ভিক্ষোঃ প্রোচ্যতে যো মনীবিভিঃ। তস্যস্ব-ৰূপ॰ গদভো ননশ্ৰোতু॰ নৃপার্হান॥ পুণ্র দুব্য কলত্রেযু ত্যক্ত স্নেহে। নরা-विष । ठजूर्थ मामुम ञ्चान गहिन জু ত মৎ সরঃ।। ত্রৈবর্ণিকাণ স্ত্যজেৎ সর্বা নারম্ভানবনীপতে। মিত্রাদিযু **সনো** নৈত্ৰ: সমস্তেষ্বেব জন্তবু।। জরা-युका ७ जा भी ना॰ ना जानः कर्मा छिः कु किट। युकः सदी उनामा निर्माण क्रा एक वर्जरग्द ॥ क्र ताज क्रिकि পূর্যনে পঞ্জাত্র স্থিতিঃ পুরে। তথা ভিঙেদথা পুীতি র্দ্বেষা বা নাস্য **জायउ।। পুाग या** वा निभिज्ञ वा স্থারে ভূতবজ্জনে। কালে পুশস্ত বৰ্ণানা॰ ভিক্ষাৰ্থে পৰ্য্যটেদ্গৃ**হা**ন্।। কানঃকোধ স্থা দর্প নোহ লোভা-

मगक्ता जा•स्त्र (मायान् भित्रिक)-का भित्रवादिषांमा उत्र ॥ जन्य সর্ব সত্ত্বেভ্যে দক্তায় শ্চরতে মুনিঃ । ন তস্য সর্ম ভ্তেভ্যো ভয় মৃৎ প-দ্যতে কৃচিৎ॥ কৃত্বাগ্রিহাত্র• স্বশ-রীর স•ছ• শারীর মগ্রিঞ্চ মৃথে জু-হোতি। বিপুন্ত ভৈক্ষোপগতৈ ই বিভি শিতাগ্নিশ স বুজতিমা লো-কান্ ৷৷ মোকাশুন ব করতে য-(थाक म्हि: मूमक ब्रंड दृषि यु-ক্তিঃ। অনিকান জ্যোতি রিব পুশা। ন্ত স বুন্ধলোক শুয়তি দ্বিভাতি: ॥ ইতি বিক্পুরাণে ৩ অংশ ১ व्यथायः ॥ 🗱 ॥ तृक्षाञ्चरः । इजि किंगियतः ॥ भावनी क्यूभः । ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। কোকিলাক্ষ:। ইতি ভাবপুকা**লঃ** ॥

ভিক্ষুক: পু॰ জী ভিক্ষোপনীবী।
তৎপর্য্যায়: 1 মার্গণ: ২ বাচনক: ৩
বনীযক: ৪ বাচক: ৫ ৷ ইভি জটাধর: 11 অথী ৬ ৷ ইত্যমর: 11
ভিক্ষুস•ঘাটী জী চীবর• ৷ ইভি
হেমচন্দু: 11

ভী ঞিলি ভীত্যা । ইতি কবি-কল্পদ্দম ।। ঞি ভীতো হস্তি । লি-বিভেতি। ইতি দুর্গাদাস ।। ভী গণি ভ্ত্যাঞ্চ। ইতি কবিকল্প सनः॥ ग जीनोजि। गि जिनाजि। जीनः जीनः। गिरेनव का पिष् निष्को ग गुरुषः श्वापिष् विकन्नार्थः हकात्राः जीकाश्यः। इंजि पूर्णा पानः॥

ভীঃ জী ভ্ৰণ। ইউনের: ॥ ভীত সী ভ্ৰণ ম ভ্ৰযুক্তে ত্রি॥ ইতি মেদিনী॥.

ভীতিঃ দ্রী ভষ•। ইত্যমরঃ।। কম্পঃ • । ইতি বিস্বঃ।।

ভীন তি ভগহেত্:। তৎ পর্য্যায়:। ভৈরব ২ দাকাণ ০ ভীষণ ৪ চীমা ংঘার ৬ ভগান চ ৭ ভযক্কর ৮ পুতি ভয় ১ । ইত্যার: ॥

श्रीमः भू ख्यानकत्र मः। यथा। ज्यानका ज्यक्षायिज्ञातः कालाधिदेनवः। खी नीत भुक्जिः कृष्मा
म ज खबु विभाति देः॥ इंजानकी कायाः जत्र । भिवः॥ मध्रमभा खवः॥ जन्न विज्ञाः। इंजि मिने ॥ महाद्यमा हेम् कृष्णेजाकिनी ॥ महाद्यमा छोमाय ज्ञाकाम मूर्वत्य नमः। इंजि जिथा दिन् ।

मिन भूका भूत्या गः॥

ভीমনাদঃ পু॰ সি॰ছঃ। ইতি শব্-ঠিন্দিকা॥

ভীনর্থ: পু: তাম্সনমূব শ্জাতা

मूत्रविष्णयः । म ह क्र्यंकिना इ-तिना इडः । यथा । इतिना क्र्यंक-(भन इटा जीमत्राथा १ मृतः ॥ इंडि नाकाफ नगामाशास्त्र ५५ व्यक्षायः ॥

ভीनत्रथी की जनानानवङ्गिविष्णयः । যথা। সপ্ত সপ্ততিকে বর্ষে সপ্তমে गानि मधनी। त्रावि जे मत्रथी নাম নরাণা দুরতিক্রমা ॥ ইতি শব্মালা॥ অপিচ। সপ্ত সপ্ততি वर्षाणा॰ मक्षम भागि मक्षमी। वा-ত্রি ভীমরথী নাম নরাণা মতি দু-ন্তরা।। তা মতীত্য নরো যো ২সৌ দিনানি যানি জীবতি। কতৃভি স্তানি ভ্ল্যানি সুবৰ্ণ শত দক্ষিণঃ ।। गिडिः शुपकितः विस्था जीवनः মস্ত্র ভাষণ । ধ্যান নিদা সুধা চা ন্ধ• ভীনরপ্যাঃ ফল শু.ভি:॥ ইতি रिवन्त्रकः ॥ 🕸 ॥ नतीर छनः। यथा । মুলাপহাভীমর্থী চ ঘউগা পথ্যা চ ক্ফা জল সাম্যুগা ভগৈঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

ভীনবিকান্তঃ পু॰ সি·হ॰। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ ॥ ভ্যানকবিকন বিশিষ্টে ত্রি॥

ভীনশাসনঃ পু• যম:। ইতি শ্দ-রত্নাবলী।।

जीगरमनः भू॰ मध्यमभाखवः। म जू वरीगां अवनाष्ट्रा ७:। ७८ भ र्यु। छीमः २ वीव्रावनुः २ द्राकाः ,, मतः ४ वर्कां ८ के विक्रिं छ ७ কিমীরিজিৎ ৭ জরাসম্বজিৎ ৮ হিডিম্বজিৎ ৯ কটবুণঃ ১০ নাগবলঃ ১১ **ও**ণাকর: ১২। ইতি শব্দরত্না বলী।। তস্য জন্ম বিবরণ যথা। थायिक सः मूजः वक्। भाष्ट्र साः পून ब्रव्वी । शुद्धः काव वन (कार्ष्ठः वलरकार्ष्ठः मूजः वृत् ।। उज ন্তথোক্তা ভব্ৰা তুবাযু নেবাজুহাব সা। তমাজ্জজে মহাবাহু ভী মো ভীন পরাক্রম: ৷৷ তম্প্রতি বল• জাত॰ বাভবাচাশরীরিণী। সর্বে-ষা• বলিনা• শুেষ্ঠো জাতো ২য নি-তি ভারত।। ইদমত্যভূত ঞ্চাসী ब्हाउगाव वृत्कानत्त्र । यनकाट পতিতো মাতৃ: শিলা•গাৰৈ রচ্ণ-য<।। সত্তী ব্যায় ভযোদিশ্না সত্ত সোৎপতিতা কিল। নানুবুখ্য উত সৃপ্ত মৃৎসঙ্গে যে বৃকোদর :.. বজু স•হননঃ সো ২থ জনারো ন্যপত

। পভতা তেন শতধা শিলা গাঁত্রে বিচ্নিতা।।ইতি মহাভার-ভে আদিপর্বনি পাগুবোৎপত্তি-নামাধ্যায়ঃ।। ৠ ।। কপূরভেদঃ। যথা। পোতাসো ভীমদেন স্থান্ত শিতকর: শক্ষরাবাস সংজ্ঞ: পাংশৃং পিঞ্জো প্রসার স্তদনু হিনযুত।
বালুকা জুটিকা চ। পশ্চাদস্যা ক্ষার স্তদুপরি সহিন্য শীতলাং গ্রত্রিকাথ্যা কপুরিসেটি ভেদা গুরুষ নহসা বৈস্ফুশ্যন দ্ল্যাং।
ইতি রাজনির্ঘটঃ।

भिन्दामः क्षी हेन्द्र्वः । वृश्वित्र मुख्य हेठि ভाषा। हेठि मदत्र हावकी । शुग्राहामम् शिकारोः ।।

जीना जी मूर्ना। इंडि मदद्र द्वादि ।। (द्वाहनाथ) गक्तन्व ।। इंडि मद्र हाना।। हिन्म प्रामा।। जीना एती जी मूर्ना। यूपा। भूनण्डा- रुग्या जीना कार्या । यूपा। भूनण्डा- द्वाहण्डा मक्र विष्णानि मूर्नाना । व्वाप्त काद्र ना जाता ।। जहां माः मून्यः मद्र (खाय । उद्या नम् मूर्वयः। जीना एती - जित्य ।। इंडि मार्क्ष्य भूद्रात एती मार्श्वाः। हिन मार्क्षय भूद्रात एती मार्श्वाः।

जीरिनकामभी खी रेजभी। मा ए भार मूर्विकाहभी। जीसवामभी दिनश्री जा है। यथा। मट्मर उँदाह्। भूता तथब्रद्ध करम्न भित्रभूक्षी महाखेना। नन्दद्रह्मा महास्यः भिगाकी दुन्ननी

बर ।। व्रक्तावाह । कथ भारताग्र॥ भिषर्यम् भनत्व भनात्रभत्र। सङ्गन छ-भगा (मव ভবেমোকো १थ वा नृगां॰ ।। किम्बाउ भयादिव प्रशुनाना-দধোক্ষজ। স্বল্পকেনাপি তপসা ন-হৎ ফল মিহোচ্যতে ॥ মৎস্য উ বাচ। ইতি পৃষ্ট: স বিখাত্মা বুন্ধণা লোক ভাবন:। উমাপতি ক্বাচেদ॰ মনসঃ প্রীতিকারক ॥ ঈশ্বর উবাচ । অমাদুথন্তরাৎ কল্লাৎ ত্রযোবি भे-তিমো যদা। বারাছো ভবিতা কল্প ন্তস্য মনুন্তরে শুভে।। বৈবশ্বতাখ্যে স•ক্ষাতে সপ্তনে সপ্তলোক ধৃক্। দ্বी-পর খ্যে যুগণ ভিমান্ সপ্তবিংশতি-त्म उमा।। उन्तराख न महानी ला बामुप्तरवा बनार्मनः । ভারাবতর-শার্থায় ত্রিধা বিষ্ণু ভবিষ্যতি ৷৷ দ্বৈ भागता मूनि उद्घरिए। १९ (कणदः। कः माहि हर्भ मथनः (कण-वः भाक नामनः ॥ भूत्री हात्रवजी नाम जाम्जुङ या बन्धली। दिव्य ৰুভাব সংযুক্তা মধিবাসায শার্কিণঃ ।। पृष्टा मना ज्ञया तुन्नन् कतियाजि জগৎপতেঃ। তস্যা কদাচিদাসীনঃ म्बाया गमिजमुजिः ॥ जायग्रहि ৰ্ ফি ভি: সাৰ্দ্ধ ভূভূতি ভূরি দক্ষি रैनः। व्यक्ति (पंदमक्ति त्रि जिल्हे |

কৈটভার্দন: ॥ পুবৃত্তাসু পুরাণীবু ধর্ম সম্বন্ধিনীযুচ। কথাস্ভীমসে त्नि পরিপৃষ্টঃ পুতাপবান্ ॥ दुया **পৃষ্টमऽ धर्ममऽ त्रङ्मऽमऽ।मऽ (७५-**क्८। ভবিতা স उमा वुकान् कर्छा रैहव वृरकारतः॥ श्रुवर्ज्यका २ मऽ धर्म-न्र পाञ्चमृन् यंश्वतः। यम् जी-**क्या** वृत्का नाम कठेख स्वर्वासनः ॥ गया पदः म धर्माद्या एवन हारमे বৃকোদরঃ। অতীবালাদশীলক্ষ না-পাযুত বলো নহান।। ভবিষ্যত্যজরঃ माकाट कनरर्भ हैव वृष्टिमान्। था-র্মিকস্যাপ্যশক্তস্যতীব্রাগ্নিভাদুপো-ষণে।। ইন•বুত মশেষাণা• বুতানা মধিক যতঃ। কথ্যিষ্যতি বিশ্বা ज्या वामूप्रत्वा कगृहुकः।। ज्यामव य-कु कलम् मानवाच विनामनः। य-শেষ দুষ্ঠ শনন নশেষ সুর প্রন ।। পবিত্রাণা পবিত্রঞ্চ মঙ্গলানাঞ্চম-হ্বল । ভবিষ্যঞ্চ ভবিষ্যাণা পুরা-भानाः श्रुताञ्चः॥ वात्रुत्तव उवाह। यम् द्वेनी हरु मंभार बाम्भी वृष् छा-রত ৷ অন্যেম্বলি দিনর্জেমু **ন শক্ত** স্তুনপোষিতৃ•॥ ততঃ পুণ্যা মিমা• জীনভিথি পাপ পুণাশিনী। উ-পে, তুর্বিধিনানের গছেছিফোঃ প-तः भारता मान्याजना रभागी यका

শুল্লা ভবেত্তদা। ঘৃতেনাভ্যঞ্জন ক্রা **िलः** गानः मभाव्यतः ॥ **उरिष** বিষ্ণুনভ্যচ্য নমো নারাযণায চ। क्-कार्य नारमो मः भूका निदः मर्वाञ्च-নেতি চ ৷৷ বৈঙ্গগ্রাযেতি বৈক্ণ সুরঃ প্রীবৎসবারিণে। শান্ত্রনে চক্রিণে **७** इम्न क्ति व व व ता य देव ।। ज्यार्व नाताः यगरेमारा मः भृजा वाह्यः क्रमा । দানোদরাযেভুগের পাতৃ পঞ্পরা-य रेव ॥ अक स्मो जागानाथाय कानुनी **ज्**ठधादिए। नःमा नीनाय रेव करहू. भारती विश्वमृरक भूनः ॥ नरमा रहरेवऽ नमः मारिष्ठा नत्ना लिख्या नमः जि्रिय । नमः भूरिष्ठा नम खरिष्ठा व्रिष्ठा व्रिष्ठा उथा भिरेय ॥ नत्य। विक्क्रनाथाय वायुत्वगाय शक्कित्। विष भूगाथित निठ्यः गरूप्रकाञ्जिभूद्यर्थः ॥ ७४॰ সংপ্জ্য গোবিন্দ মুমাপতি বিনায-को। गरेक्क मारिका ख्या ध्रेल छ रिक नीना विरेष खथा।। गरवान भएना मिका॰ कृभदा मथ वायुजः। मर्लिया **সহ** ভুক্তা চ গত্বা শতপদ• ব্ধঃ।। ন্য <u>र्णुाधनसञ्चयवन यथ वा थासितः वृधः।</u> गृशीषा थावायक्या नाहायः शालकः ष्यथः ॥ युगा ८ मा वस्ती • क्ता मक्ता भे अभित्व बादी। नत्ना नादायभारम তি ত্বান্হ শরণ গতংগ্রেলদশ্যে 🛚

নিরা**হার:** সম্ভ্রচ্র চ কে**শ**ব•। রা-ত্রিঞ্চ সকলা ছিত্তা স্নানঞ্চ প্রসা-शि ह।। **म**र्शिवा विश्वहरून ख्दा ता-ऋग भूक्रेवः। मर्ह्य भूख्त्रीकाक দ্বাদশ্যা ক্ষীর ভোজন ॥ করিব্যা-মি যতাত্মাহ• নির্বিদ্নোস্ত **ত** দে। এবমুক্তৃ। **ৰপে**ভূমাবিতিহা**স কথা**• পুনঃ ॥ #॥ শুদ্ধা পুভাতে সংজাতে নদী গত্বা বিশাম্পতে। স্নান কৃত্বা মৃদা তদ্ধং পাষ্ডানভিবৰ্জ্যেৎ।। উপাদ্য সন্ধ্যাণ বিধিবৎ কৃত্বা চ পিত্ তপ্ন ৷ পুনম্চ হ্ৰীকেশ गननकाभारनीयतः ॥ ग्रमा भूतः তো ভক্ত্যা মণ্ডল॰ কারণেদুধং। দ-**ण इस नथा**छी वा कदान व्यर्गिषि-**শাস্পতে** ॥ চতুর্হস্তা॰ শুভা॰ সর্য্যা॰ (वरी मित्रिनिम्रन। ठजूर्ड **भु**मा ११ বিন্যদেত্তত্র তোরণ ৷৷ আরোপ্য কলস তত্ত্ৰ দিক্পালান্ পূজ্যেৰতঃ ৷ নাস নাত্রেণ সংপূর্ণ নথঃ কৃষণজি-নে স্থিতঃ ৷৷ তস্য ধারাঞ্চ শির**সা** ধার্যেৎ সকলা নিশা। ধারাভি ভূরিভি ভূরি ফল বেদবিদে৷ বিদুঃ ॥ रसाउमार क्रक्ष्मुष्ठ शाता शार्गाः স্ব শক্তিতঃ। তথৈব বিফোঃ শিরসি की तथाताः भुशा उत्यथा। जत्रिना-ত্ৰ হত্প ক্ৰাত্ৰ তি দেখল।

रानि रेकुक उ॰ क्इ। वास्तरे। येव ज्ञिनी ॥ जिलाः क विकृ रेसवरेजा र्भ खि द्रकान्नि वंखना। कृष्ना চ वि क्षतः मग्रक् हकः (गाक्षीत मःयुजः॥ निम्नावार्क अमाना रेव धाता मा का मा भाजरम् । जनऋग्रान् महावीत्र ञ्चाभिषञ्चा बरयामम ॥ ज्येक नीना विरिध यूकान् मिछवरिख तनस्ठान् । যুতানৌডুষরৈ: পাত্রৈ: পঞ্রর স-মবিতান্।। চতুৰ্ভি ৰিস্থৃচৈ হোম শুৰ कार्य उत्रायः। बनुकान करू र्ভिक यजुर्सिए शत्रायरिः ॥ विकवा-नि ह मागानि हजू तः माग्रविष्नः। অরিষ্ট বন্ধ সহিতান্যভিতঃ পরি भार्राय ।। এव॰ हामम जान विशान दञ्ज भानागनतनभरेनः। शृङ्खरमञ्जू नोरियक कंटरिक हिंग जूबरिकः ॥ वा (माजिः भयनीरेयक विख्मार्ग्धाव-গীত মঞ্ল নিষ্কনৈ:।। উপাধ্যাযস্য **ष्ट भू**न मिंखन• मर्बामव जू ।#॥ **७**जः প্রভাতে বিমলে সমূত্থায় ত্রোদশ । गा ति मन्। अक्ष्मु अनिवर्ग मूथ म॰वृजाः॥ शयविनीः भी ल्वजीः का ना पार्न म युजाः । द्वीमायू রাঃ সবজাশ্চ চল্দনেনাভিষেচিতাঃ ।। তা॰ स তেব। ততে। ভক্ত্যা ভক্ষ্য

ভোজ্যেন তর্পিতান্। ক্ত্বাথ ব্যক্ষ-गान् अर्दानरिम नीना विरेष खथा।। ভুক্তা চাক্ষার লবণ মাজ্মনা চবিস-र्जायट । अनुगम् अमान्यको भूव ভार्या नमन्त्रिः ॥ श्रीयजामक (ए-বেশঃ কেশবঃ ক্লেশনাশনঃ। শিবস্য क्रनरय विकृ विकाम इनरय मिवः॥ যথান্তর• ন পশ্যামি তথা মে স্বস্তি हायूरः। এव मूहार्यं जान् अञ्चान् গাকৈব শ্যনানি চ ৷৷ বাসাংসি চৈ-়ব সর্বেষা• গৃহাণি প্রাপযেদ্বুধঃ। অ-ভাবে বহুশয্যানামেকা মপি সু স॰-क्ञा ॥ भग्रा मन्राम्ख्रा जीम সর্বোপক্ষর সংযুতাং । ইতিহাস পুরাণানি বাচযিত্বাতিবা**হ**যেৎ ॥ उफिन नत्रभार् व य ইहिष्मूना শ্রিষণা তমাজুণ সত্ত্ব মালম্ব্য ভীম-সেন বিমৎসরঃ।। **স**ৰু বুত মিদ• স-मार्क (स्रशाब्दाका भीतिजः। इया কৃত মিদ• বীর ত্মামাখ্য• ভবিষ্যতি ।৷ সা ভীন্দাদশী ছেষা সর্বপাপ-इता भूछ। । याजू कन्यानिनी नाम পুরা কল্পেষু পঠ্যতে ॥ 🗱 ॥ ত্বনাদি কর্ত্তা ভব সৌকরে ংমিন্ কল্পে মহা-বীর বর পুধান। যস্যাঃ মারণ কীর্ত্তন नश्राणय विनष्ठेशीश जिएणाधिशः म्राट्या मृद्धा ह या मञ्जूबना बनीना

বেশ্যা কৃতা মন্য ভবান্তরেষু। আ-भीतकत्रिक अञ्हलन रेगदाईमी সম্পুতি নাকপৃধি।। জাতাপি সা বৈ भ। बलाखवानि भूलाम कन्। भू-ক্তৃত পত্নী। তত্রাপি তস্যা: পরি চারিকেয়• মম প্রিয়া সম্পুত্তি সভ্য ভামা।। স্থাতঃ পুরা মণ্ডল মেব ত ছত্তেলোময় দেব শরীর মাপ। অ স্যাঞ্চ কল্যাণ তিথো বিবস্বান্ সহ-সু খারেণ সহসু রশ্মিঃ ॥ ইদমেব কৃত সহেন্দু মুখ্যৈ বসুভিলেব পুরা সুরাদিভিশ্চ। ফল মত্র ন শক্যতে **e**ভিবকু যদি জিস্থা যুত কোটযো मुर्थमुरः।। कलिकन्मय विषाद्रशी मः নন্তা নিভি কথ্যিষ্যতি যাদবেন্দু সূনু: । অপিনরক গ**তান্ পিতৃন শে**-বানল মৃদ্ধু মিহৈব যঃ করোতি ।। य ইম মনধ• শ্ণোতি চাতিভ-ক্ত্যা পরিপঠভীহ পরোপকার হে-তোঃ। তিথি মিহু সকলার্থভান্নরে ন্দু স্তব চরণেন স সান্যতা মুপৈতি ।। কল্যাণিনী নাম পুরা বভূব যা ছা मभी गांचितित २ जिन्दा। मा भी-ণ্ডুপুণ্ৰেণ কৃতা ভবিষ্যত্যনম্ভ পুণ্যা-নঘ ভীম পূর্বা।।ইতি মৎস্যপুরাণে ভবিষাধ্রভোদেশে ভানদাশীনান ৯৫ व्यथ्यायः ॥

ভীকঃ ত্রি ভ্যশীল:। ডৎপর্য্যায়:। ত্রসূঃ ২ ভীকক: ৩ ভীলুক: ৪। ইত্যমর:॥ ভীলু: ৫। ইতি শন্ধ-রত্মবেলী॥

जीकः खी जयमीमाजी। जयभुक्-ভিকা। ইত্যমরভরতৌ ।। **শ**তাব-রী। ইতি ধরণি: অসরক।। কণ্ট-कात्री। ইতি भद्रातमुका ॥ भउ-शारिका। ইতি भदद्रज्ञाली॥ व्यक्त ॥ ছाया॥ जी। इंछि রাজনির্ঘণীয়া ভीकः शृ॰ भृगानः। ইতি भद्राना ।। व्याष्ट्रः। इंजि ब्राङ्गनिर्घणः।। इंक् ভেদঃ। ইতিরত্নমালা।। অস্যগ্রণাঃ । শ্লেম্মকারিত্ব•। স্বাদূত্ব•। অবিদা-হিবৃ•।গুকবৃঞ্চ। ইতিরাজবল্পভঃ॥ ভীৰুক ক্লী বনণ ইতিশব্যস্থাবলী৷৷ ভীৰকঃ পু॰ পেচকঃ। ইতি শব্দয়য়া-वनी ॥ इक्कुर्जिनः । जात्रत्री इंडि हिन्ती जाया। यम् थगाः। वाज পিত্ত পুশমনো মধুরে। রস পাক-ध्याः। मृमीতा व् श्रा वनाः भी-প্ৰুকো ভীৰুক স্তথা।। ইতি ভাব-পুকাশঃ ॥

ভীক্কঃ ব্রি ভ্যযুক্তঃ। ইত্যমরঃ॥ কাতরঃ। ইতি সংক্ষিপ্তসারে।ণাদি বৃত্তিঃ॥

जिक्मवी खी मञ्जूली। ३०,भत्रशा

পু• ম্গঃ।ইতিজটা ॥ *जीक्*श्रंश ध्यः ॥

ভীৰঃ জ্ঞী ভয়শীলানারী। ইভ্যু-भवरीकायाः खतः ॥

ভীলভ্ষণা জৌ ভঞ্জা। ইতি রাজ निर्घण्डः ॥

ভीनुः वि ভीकः। उरमीनः। ইতি भद्रज्ञावनी ॥

ভীল্কঃ ত্রি ভীৰং। ইত্যনরং॥ ভল্লকঃ। ইতি শব্রজ়াবলী।।

ভীষণঃ পুণ ভগানকরসঃ । ইত্য-মর টীকাষা• ভরতঃ নেদিনী চ 🕦 ञ्रमूककः॥ करभा जः। हिलानः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শিষ:। ইতি नदत्रावनी ॥ नलके 🖟 इंठि (मिनिनी।।

ভীষণঃ ত্রি গাটঃ।। দাৰুণঃ। ইতি (मिनि ॥

ভীম্ম• ত্রি ভনানক•। ইত্যমরঃ॥ ভীমঃ পু• ভগানকরসঃ।ইত্যমর " টীকাষা• ভরতঃ॥ শিবঃ॥ রাক্ষ-স:। ইতি হেমচন্দু:।। গাঙ্গেয়:। স চ সান্তনু রাজচক্রবর্ত্তিনো গঙ্গ। ভার্য্যাশা॰ জাতঃ। স পর্মধ্র্যা 🥼 বিবাহার্থ পিত্রাজ্য ত্যক্ত যঃ ষশ্য বিবাহণ ত্যক্তা উল্ব রেতা জা-

তঃ। ইতি খ্রীভাগবত ।। তস্যোৎ-পত্তি র্যথা। অথ তামষ্ট্রমে জাতে পু-গ্রেপুহসতী মিব।উবাচ রাজাদু:খা-র্ত্তঃ পরীপ্পন্ সূত মাজানঃ।। মাবধীঃ ক্বাসি কস্যাসি কিঞ্চ হণসি সুতানি-তি। পুএগ্নিসু মহৎ পাস সণ্প্ৰাপ্ত তে সুগহিতে॥ জুऽবাচ। পুএকাম ন তেহমি পুণ্রণ পণ্রবতাণ বর। জীর্মস্ত মন বাসো ংবং যথা স সন্যঃ কৃতঃ।য় অহ• গঙ্গা জহু সুতা মহর্ষিগণ সে-विजा। (पवकार्य) र्थ निकार्थ मूबि-**छारु** द्वा मरु ॥ याद्वी (य वमत्वा দেবা মহাজালা মহৌজস:। বশিষ্ঠ শাপ দোবেণ নানুষত্ব মুপাগভাঃ।৷ তেষাণ জনবিতা নান্য স্তৃদ্তে ভুবি বিদ্যতে। মদিখা মানুষী ধাত্রী লো-क नाखि कपाइन ॥ (उषाक जननी হেতো মানুষত্ব মুপাগতা। জনবিত্য वम्नाष्ट्री किंठा (लाका खुरा करा: 11 (प्रवानाः भगगरसुष वम्नाः भःभूत्ः) ম্যা। জাত জাত নোক্ষ্যিয্যে জ-ন্সতে। মানুষাদিতি ॥ তত্তে শাপা-দ্বিন্যুক্ত। আপবস্য মৃহান্মনঃ। ষ্তিতে ২স্ত গমিষ্যানি পুঞা পাহি নহাবীরঃ। যেন পিতু দাসকন্যা 🆟 মহাবৃত্ত ।। এষ প্র্যায় বাসো নে वज्ञा॰ मिल्लो कृष्ठः। स् शुज्रुः विकाभी हि शक्षामेख मिन मुकः।।

ইত্যাদিপর্বণ ভীয়োৎপত্তিনান।। ১০০ অধ্যায়ঃ।।

ভীব্যজননী জ্রী গঙ্গা। ইতিরাজ নির্ঘটঃ।।

ভীমপঞ্ক লী কার্ত্তিকশুল্লপক্ষী रेयकारणाहि भूनिंगा अक्षितिथ कर्डव्य वु छवित्मयः। यथा। श्रीनातः म उवाह। जगवन् यट व्या (भाकः ভীশ্মস্যচ দিন• মহ্ৎামাহাত্ম্য শ্রোত্মিছামি তস্য মে কথ্য পু-ভো॥ কথ• সানঞ্চ কি॰ দান• কো-বিধিঃ কস্য প্জন•। কি॰ ফল•কেন বা কারি তন্মে কথ্য বিস্তরাৎ।। বুন্দোবাচ। ভক্তীমপঞ্চকস্যেদ॰ নাহাত্ম্য বিধি প্রকে। বক্ষ্যানি ফল সংযুক্ত থেনেদঞ্কৃত পুরা।। অযোধ্যা নগরী যাচ কলি কলাব नानिनी। देवकवी यर्ग त्रम्या ह क-निकलाय नामिनी ॥ इस्य अथ পত্ত্যাট্যা বিষ্ঠক পুতি প্রতা। ত-স্যানাসীমর বরঃ সূর্য্যবংশোক্তবো মুনে ৷ং অতিথি নাম দেবর্ষে ধর্মা-जा रिक् यक्ड क्या उन पत्र भूता রাজা কৃত যুক্ত মনুত্র না ভাষ্ঠ-যা চন্দু ভাবিন্যা সাদ্ধ ভীমুস্য भक्षक । **हिकोर्यः भ**तिभभुइ व শিষ্ঠ তদিধি দিল।। 🗱।। বশিষ্ঠ

উवाह। मृण् ब्राह्मन् भूपक्रामि बुजः নৌভাগ্য দাকে। রহস্য ভীষা शकाथाः दिशु जुडि शुमानकः॥ का-जिंक गामि तार्केन्द्र शुाद्र ७ उकार-भी जिथि । याव भक्षमभी त्रम्या ভবিতা চন্দু পূর্ণিতা॥ পঞ্চভীয় মি-তি খ্যাত তিথ্য: পুণ্যদাঃ মৃতা:। প্রাতঃকালে সনুত্থায় শৌচ কৃত্ব। যথা বিবি ॥ স্নাত্বা সভার্য্য: পুৰুষো नन्तरात्रे विगत्न बत्न । उर्भयकी শ্ম বৰ্মাণ জৰুব শ পিতাম হ।। পি-ত্তি ভিলযুক্তিশ জলাঞ্জিতি स क्टिः। देवराघुनम् । गावाय नाक् তি প্ররায় চ।। তিলতোয়াঞ্জলি॰ **ज्या भुगाहकी पार्व्याण । मस्त्री** कोत्रव (मुक्षः व्ययं)ामाहमनः उउः ॥ व्यर्हियञ्चा विशासन हन्द्रनाहि जिन्न-বৃতঃ। স্ঘ্যু দদ্যামতাত্মা চ মস্ত্রে-ণানেন ভূপতে ॥ বস্নানবভারায भाग्रता ताजा जाय ह। व्यर्यः हरानि ভীব্যায় আজন্ম বুন্ধচারিণে ৷৷ ইত্থ স্মাপবেদ্বৎস ভীম্মপঞ্বিধি নরঃ ৷ নিযমেনোপবাসেন পঞ্চসব্যেন বা भूनः ॥ भारता मूल कना शदित र्वे विश र्नाना विदेव द्रिशा नाता वा यि वा नातो मुक्त भारमा पिव पुरहाए ॥ जुर्द्ध म विभूषान् जागान् कार्जिकः

নত্যজন্তি। অতোহশক্তোনােহ " भक्ष ज्याथा इति भूगेंड ॥ भ ৈত্বতদ্বিষ্ণু ভক্তো সৌ ভক্ত্যা ত্বচল या नर । एम्प डी ह यथा जीया वक् তৌ তুমহাফল। স্বল্লাগাদেন বি পেন্দু ক্ত॰ ভাভ্যা॰ হি তৎপুরা। প্ৰাপ্ত রাজ্য মহীনেহা সমুদু বল यावि डा॰ ॥ পু जु ज । পু চু রান্ কামান্ ব্রকামৌ যথা মুনে । দিবগামরা ভর (गो (ठो रिव) मान्यान्तिशिको ॥ দিব্যদেহ বিসানেন সর্বকিন্নর সে-বেতৌ। অপ্লয়ে। গীত নৃত্যেন স্বতৌ দেবনহযিভিঃ ৷৷ সম্পাুুুুেণ্ডৌ বিফুলো কঞ্ ভীষাপঞ্ বুতান্মুনে। বুন্দোবাচ । ইত্যেতৎ কথিত বংস মাহাত্ম্য কার্ত্তিকোন্ডব•। ভীম্মপঞ্চক মাহা-জ্য্যু॰ সেতিহাস• পুরাতন•।। তৎ সর্ব• অক বিপ্সেন্দু যদি তে ভক্তি র-চুুুুুতে। নিশ্চলঃ কাব মনসা বচসা সু মনী ভব।।ৠ।। শৃবৃদ্ধি মর্ত্যাশ্চ পঠ-স্তিয়ে বৈ ভূথগু মধ্যে ভগবন্ধুণামুনে । মতিঞ্ লব্ধা ভগবত্য **শেষতঃ** ক-था ग्रानम् मा भूतः भुया छ।। कलि-নল নপ**ভ্তঃ প্রাণিনো দেব দেব**• " সুভগসকল ভোগান্ভোজযিত্বা চ गांखि। इतिभूत नगतिमा नी उ ৰাদ্যৈ বিশালৈ বিহিত সকল কৃত্যা 🎚

(खायवास र्वित विधा अउद कार्निक नाहाजाऽ ভक्ता यः मृत्यामतः। न ৰ্ব পাপ বিনিম্ভি: সক্ষে লভতে-রতি•॥ ইতি পাদ্মোত্তরথণ্ডে কা-र्खिक माहारचार २०२ व्यवतायः ॥#॥ অপিচ। সদা হরে বু ত শেষ্ঠ ততঃ म्याप्तिकागयन । हार्ज्याम्य उठ समाद कार्जिक जीपानक्षक ॥ ততঃ শুেষ্ঠ তন• শুক্ল একাদশ্যা• স-माहरत्र । मायाधिकालः भिवामीन् यदारिन अर्हरयक्ति ।। यरकत्योभी घ्-তাদ্যৈন্ত পঞ্চগব্যেন বারিভিঃ। সা-প্ৰিস্থাথ কপুর মূথৈ শৈচবানুলেপ-यत ॥ घृजाक छ्युत्वा धूं भः विज्ञः भक्षमिनः म्रह्य । रिन्दिम्यः भन्नः भागस्य ब्राप्य एके विषय में उ नमा वामूप्तवाय घृ उ वीशि जिल्लाः দক । ষডফ্রেণ ম্ব্রেণ স্বাহান্তেন जू रहामराय ।। भुषाम शक्कि हातः পাদৌ যজেৎ পদ্মৈ দ্বিতীযকে। বি-লুপৰৈ জানুদেশ• নাভি• ভৃঙ্কেণ চা-পরে।। কন্ধৌ বিশ্বৈ র্জবাভিশ্চ পঞ্ म रिक्स निर्द्याइरएय ॥ मानुकृत ज्निनायी माराप्तामयः शामुद्रीर कं মাৎ।। গোন্ত ক্রি দর্গিচ পঞ্নে পঞ্চ गवाहः। नकः **ज**ां। ८ शक्र र-শ্যা॰ বুতী স্যা ডুক্তি মূক্তি ভাক্॥

इंजि गाक्ए जीयूगक्षामि तुजः नान ३२० अधागः॥ ভীষ্যরর ক্লি হিনালবোত্তরদেশজা-ভ শুরুবর্ণপুত্তর বিশেষঃ ভসেতাৎ-পত্যাদি যথা। মূত উবাচ। হিম-বত্যুত্তরে দেশে বীর্য্য পতিত সু-রদ্বিষ শুস্য। সম্পুঞ্জ মুক্তমানা নাকরতা॰ ভীমারত্বানা॰।। শুক্লাঃ শহ্বাব্র নিভাঃ শ্যোনাক সন্নিভাঃ পুভাবন্ত: । পুভবন্তি তত স্তৰুণা বজুনিভা ভীম পাষাণাঃ॥ হিমাদু পুতিবদ্ধ শুদ্ধ মপি শুদ্ধয়া বিধত্তে यः। ভीग्रन्नि॰ ग्रीवाहिषु ममण्यान সর্বদা লভতে ॥ গুণ্যুক্তস্য তসৈত ৰ ধারণামুনিপৃঙ্কব । বিষাণি তা-नि नम्पुष्टि সর্বাণ্যেব মহীতলে।। বিষমানা বাখন্তে যে তমরণ্য নিবা[.] সিনঃ সমীপে হপি। দ্বীপি বৃক শ রভ সঞ্জর সিংহ ব্যাঘাদযো হি• সাঃ।। তস্যোৎকবলিত কৃতিনো ভবন্তি ভয়• ন চাপি সম্পঙ্হিত• । ভীম্মণি র্গ্রন্তঃ সম্যক্ সংপ্রা প্ৰাক্ললি ত্ৰিত্যঃ পিতৃতপ্ণে পিতৃ-ণী ভূৱি বহু বাৰ্ষিকী ভৰতি॥ শা गांब्राक्रेंद्रेनाशि मना ७ बा थू वृन्धि ক বিষাণি **লিলাগ্নি বৈ**রি ভক্ষর ভ्यानि जीनानि नमाजि ॥ रेमदन

वनाङ्कालः शक्यः शील्युलः शु-लाङीनः ॥ मिन मूर्णिः विवर्गः मृताः शिववर्जातः शुक्तः। मृत्रुः शुक्तः (भयाः विव्यवरेत्र (मंभकाम विद्धानाः ॥ मृत्र ज्ञानाः वर् किञ्जिकि भूमृतानाः। ইति गा-क्षि जीयात्र श्रीका नाम १५ व्यशायः॥

ভীমুস্: জ্রী গঙ্গা। ইত্যমর:।। जीवारेमी जी मावमृक्षारेमी। उक् **जोगामा उर्लगारिक** कर्डवाः यथा । ভবিষ্যোত্তরে। শুলাইন্যান্ত না-**थम**ऽ प्रमुशिद्याय (यो क**ल**ा अञ्च**८** সর কৃত॰ পাर्भ॰ उৎ क्रगाम्य न-শ্যতি ।। ধবল ধৃতা স্তিঃ । অষ্ট-ম্যান্ত সিতেপক্ষে ভীম্মায তু ভি-लामकः। अम्रक विधिवम्ह्राः अ-র্বে বর্ণা দ্বিজাত্যঃ ।৷ সর্বেবর্ণা ই-ज्रुभामाना जाञ्चन म् प्रा त्रभा-ধিকার:। দ্বিজাত্য ইতি **সংখাধ্ন•** । মৃতিরহাকরে বিফুধর্মোত্তর• । नधाइ वािशनी गाशा मास ভीग्राष्ट्रेभी जिथिः। म्रा त ह जर्भाग मात गु। श। मूर्यप्राम्यी भन्ना।। यमा कपाहिए अग्राःमः गजाम्यं। प-যী পর।। পূর্বস্যা মেব কর্ত্ব্য ত-र्भाष भाष भाष ।। यरिकमिन्

डरव्यामि कनावियाकती खय॰। जीगार्डनी हरमानि उना गुारा পর। তিথি:।। ব্রাহ্মণ স্তুন্য বর্ণানা॰ यः कात्राराजीक् (पश्कि॰। उद्यर्ग ত্বমসৌযাতি ইহুলোকে পরত্র চা৷ ইতিমরীচিবচনন্ত ভীমক্ত্যেতর-भद्र•। उथाह सृष्ठिः। द्राञ्चभारतास्त्रः ॥ य वर्गा पर्नु जी गायता जन। मः षटमद्र क्ष भूगाः उदक्रगापिय নশ্যতি।৷ অসবর্ণ জলদান নিষেধস্ত পুকরণ বলাদপি ভারাদি বিষয ইতি প্রীদন্তঃ। তর্পণ মন্ত্রন্ত । বৈয়া-যুপদ্য গোত্রায় সাঞ্তি পুররায় চ 🖫 । जानुभाग पराम्बाउट मिलन ভীম বর্মণে া ভীমা শান্তনবো বী**র: সভ**্যবাদী জিতেন্দ্রিয়: ৷ আ ভি রন্ডি রবাপ্নোত্ পুত্র পৌত্রো-চিতা কিয়া। ইত্যাশ সামস্তঃ ৷ পুত্ৰ পৌৰোচিতা: নিত্যভিধা नाट निज् कर्मती जा। वाक्षणः नि তৃত্তপ্ণানম্বর ফাত্রিযন্ত তৎ পূর্বণ তর্পবেৎ। ইতি সম্বৎসর পুদীপ। **मयः ॥ इंडि डिब्यामिङङ्ग**ा।

ज्ञर्भगानस्तरः क्वियस उट भूर्वः
 जर्भरयट । इंजि. मस्ट मत भूमीभा
 म्यः ॥ इंजि जिथापि जुः ॥
 ज्जः वि जिका अर्माः ॥
 ज्कागक्षी। ইंजि विका अर्माः ॥
 ज्कागक्षी इंजि विका अर्माः ॥
 ज्कागक्षी इंजि विका अर्माः वट ।
 ज्कागक्षी इंजि विका अर्माः वट ।
 ज्कागक्षी इंजि विका अर्माः वट ।
 ज्कागक्षी इंजि विका अर्माः वट ।

তৎপর্য্যায়:। ফেলা ২।ইত্যমর: ।। পিণ্ড॰ ১ ফেলি: ৪। ইতি ভরত ধৃত রভসঃ।।

ভূক্তি: দ্রী ভোজন । ইভি শব-রত্বাবলী।। ভোগঃ। যথা। ভুক্তি ক্সি পুৰুষী সিজেদপরেষাণন সংশ-যঃ। অনিবৃত্তে:সপিওত্ত্বে সঞ্চল্যা-না॰ ন সিদ্ধ্যতি ॥ আহৰ্ত্তা শোধ-यिखुकि मागमक्षाणि मःमि তৎসূতো ভুক্তি মেবৈকাণ পৌত্রা-**मियु न किक्षन।। ইতি माय** उदु॰ ।। রবি ভুক্তি यंथा। সার্দ্ধ সপ্ত কসে মেষে বসুঃ সার্জো ঘটে ব্যে। দ-শৈব মকরে দ্বন্দ্বে পলানি পুতি-वामद्रशाञ्जलीत मिश्च भुमना जू-वानि काम् (क्षृ ह। शनात्मकार-শ তথা রবিভুক্তি পুচক্ষতে।। ইতি জ্যোতী রত্নমালা ॥ ভূক্তিপুদ: পু॰ মুদ্দঃ। ইতি রাজ-নির্ম্বণটঃ॥ভোগদাতরি তি ॥ ভুग: ত্রি রোগাদিনা স্টিলীক্ত:। उर्भिग्रायः। कग्नः २। इ ब्रुन्दः ॥ वकः। ইতি ভূজধাত্বৰ্থদুৰ্ঘদি।। ভিদ্ৰ ও শ ত বক্স। ইতিকবি কল্পভনঃ।।বক্রণার্মিতি বক্রণ করে। তীতি ঞৌ ৰূপ। ও ভূমঃ। শ ভন্নতি লতা বায়ঃ ৷ ঔ ভোকা

ইতি দুর্গাদাস: ।। ভুজ প ঔ ত্রাণে।।ভক্ষে। ইতিকবি:

কল্পদাং ।। ধ ভ্নকি । ঔ অভৌ
দীং । ত্রাণ পালন উপভোগদ
তমাং পালনে পর্মেপদ । ই তি
বোধ্য । ভুনকি পৃথিবী রাজা
পালবতীত্যথঃ । উপভোগে তু
বৃদ্ধো জনো দুঃখ শতানি ভুল্পেইতি
। দিব নকল্পানিব ভোক্ষ্যতে নহী
মিতি রঘুঃ । এব সুথমুপভ্ত্তে
ভ্যাদি চ বোধ্য । ভুজো হশর্নে
ইত্যত্র ভক্ষণ মাত্রস্য গৃহণেপি
উপভোগস্য ভক্ষণজন্য তৃণ্ডিজন
কল্প বিবক্ষ্যা সিদ্ধি রিতি বিদ্যা-

निवामः। ইতি দুগাদাসः॥
जूकः भू खी जूकारं ज्ञानमः।
जद्भर्यायः। वादः २ भूवदः ०
राः ८। ইত্যারः॥ করः। ইতি
বেদিনী॥ তদ্য শুলাশুভ লক্ষণ
यथा। কক্ষা চাখালো শুষ্ঠা সুদা
क्रिम् खू (রামিকা। অন্যথা অর্থহী
নান্য নসৌ নিঃস্বদ্য রোমশৌ॥
বিশ্বলৌ জুজৌ। আজানু লিম্বিটি
বাহু বৃত্তৌ পীনৌ নৃপেশ্বরে॥ নিঃ
স্বানাং রোনশৌ হুয়ৌ শুষ্ঠো করি

কুর পুভৌ : ইতি গাব্দডে ১১ অ<u>-</u>

धागः॥ गुरुम्मश्ची कद्रगार्थः द्रानि-वयार्न (कम्पू ग्रहापिः। द्राणिवया-मित विक्र नवश्रां प्रस्ति विक्र निवास स्थाप । नव्दाम्मिट ज्रा १ धिकः (ह८ जना षात्रभ दानि जाः भाषा**ण** जुजः म्राट् । यथा । (मा जिल्लान जि-ভোদ্ধ বিশেষ্য রসৈ শকতে। **२**का दिकः महाक्तृत्वानः विख्ः। কোটি রেকৈক ক' ত্রি ত্রি ভৈ: স্যাৎ भरः म्यं नत्नाह मञ्जापुरयाःमा ভবেৎ। ইতি गुरुवातवः॥ क्विन-म् अविमागिविष्णयः। यथा। काहि শ্চতুষ্টন যত্র দোস্ত্রয়ণ তত্র কা শু,তিঃ াকোটি দো: কর্ণত: কোটি শু.তি-ভ্যাঞ্চ ভুজ वन ॥ ইट्टा वाङ् र्यः म्याख्य म्यार्किन्याः पिन्नी उरहा वा-হুঃ। ত্রাসে চতুরসে বা সা কোটিঃ कीर्जिञा जबरेक्कः ॥ उद कृत्जा र्याग भरः कर्गः रहाः कर्ग दर्गरा বিবরাৎ। মূল কোটিঃ ভছ্তি क्তा बखबार भर वालः॥ इंडि **मीनावज्याः (क्र**बव्यव्यातः ॥ ভুজকোটরঃ প্• কক্ষঃ। ইতি হেন_ি ठन्मुः ॥ ভুলগঃ পু• সর্পঃ। ইত্যমরঃ॥ ভুলগদারণঃ পু॰ গৰুডঃ।ইতি বি-

কাও.শ্য:॥

निर्णः ॥ ভুজগাভোদ্ধীপু মধ্রঃ। ইতিরাজ ুজক্ষ। পুণ গক্ডঃ। ইতি ত্রিকাও-विघंषः ॥

কাওশেষঃ॥

ভুজকঃ পু॰ সর্পঃ।। বিজ্ঞঃ ইত্যমরঃ (मिरिनी ह।।

जुङक्षाजिनी जी वृक्षवित्मवः। কল্বালিকা ইতি খ্যাতঃ। তৎপ-र्यायः। मृतिः २ मर्भाकी ७ कुटक-त्री ८ म्प्रहा **८। इंडि म**प्रविमुका ॥ अर्भनामिनी ह।।

ভূজক্জিস্থা জী মহাসম্বা।ইতি दाक्रनिर्दण्डः ॥ मर्भद्रमना ह ॥

जूकक्रुयाउ॰ क्ली चारमाक्त्रशार-हम्तः। यथा। यमान्। १९ जूर्य खया मधनत्थखेषयाक्षतः दूब भिकार-भाष्ठाः। भारहन्त् विष्विष वज्तात वित्म उमूक कवीत्म चू कक्ष्म भूया ত াা ইতি কালিদাসকৃতশুত্রবোধঃ ভূজস্তুক্ পু• গৰুড:। ইতি শব-রত্নাবলী ।। ময্র:। ইত্যমর:।। ভুনদভোগী পু• রাজসর্পঃ। ইতি

(इग्जन्दुः॥ **ভুরঙ্কনঃ পু• সর্পঃ।ইত্যমরঃ॥** নীসকে জা। ইতি রাজনিঘটঃ॥

ভুলগান্তকঃ পু• গক্ডঃ।ইতিরাজ ভ্রস্কতা জ্ঞা নাগবলী।ইঙি द्राक्तिविष्यः॥ শেষঃ ॥

ভুজগাশন: পু॰ গৰড:।ইতি তি ভুজস্বাথ্যঃ পু॰ নাগকেশর:।ইতি भक्ताना ॥ त्रभंनान्त वि॥ जूबकाकी खी तात्रा। ইত্যনর:॥ जूबिकाः ज्ञी कतः। ইত্যনর:॥ जुका खी वादः॥ कतः। इंडि (मिनिनी।। ज्जाकणे: भू॰ इखनथः। ইতি হেম-

> ठन्पुः ॥ । ভুলাদলঃ পু• হস্তঃ। ইতি ত্রিকাপ্ত-(भवः॥

ভূজান্তর• ল্লী কোড•।ইত্যনরঃ॥ ञ्ख्रपुष्डमण ॥

ভূজिः श्रु॰ वङ्गिः। ইত্যুণाদिকायः॥ ভূজিষ্যঃ পু॰ য়ৢতয়ঃ।। হত্তসূত্র॰।। मानः। इंडि प्रिनी ॥ तागः। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ।। ভুজিষ্যা স্ত্রী দাসী॥গণিকা।ইতি (मिनि ॥

ভুরুঃ পু॰ ভোজন । ইত্রা हिन्दि वि ॥ ভাষন ।। অ 🖫। ই 😇 স कि छ া সারোণাদিবৃত্তিং <equation-block> ভুঞ্জন্তি ভোগকর্তা। ভুজধাযোর শত্পুত্য্য নিয়ামা १४ ॥

ভুঞ্জান: পু॰ ভোগকর্ত্তা। ভুজধাতো: "কর্ত্তার শান পুত্যুয় নিয়ুয়ো হয়। যথা। ভুঞ্জানো বর্দ্ধায়েৎ পাপ ম-সত্যু সংসদি ব্রুবন্। ইতি প্রায়-শিক্ত ভর্ত্ত ।।
ভুরিক্ জী পৃথিবী। ইত্যুগাদি-কোষ: ॥

जूवन॰ क्री खगए॥ मिवव॰॥ गगन॰ ॥ बनः। इंजि मिनि॥ ठज्मम ভুবনানি যথা। চতুর্দ্দশ বিধণ্ছেত-फ्उमर्गः भुकी खिंउः । ज् जू वः 'स র্মহৈশ্বে জনশ্চ তপএব চ ।। সভ্য লোকক্ষ সপ্তৈতে লোকাস্ত পরি-কীৰ্ত্তিতা:। জয়ু: শাক: স্বশ: জৌ कः नाताला (मर भूइतः ॥ मर् षीणाः भुषानानि गृश्य ही शिख मः-যুতাঃ। লবণ: ক্ষীর সংজ্ঞ চ ঘৃতো-मा पवि म छकः ॥ मूरतापक्त्र সোদৌ চ স্বাদ্দ: সপ্তমো ভবেৎ। চত্ত্বার: সাগরা: খ্যাতা: পুষরি 😃 ণ্ডেন্ডা: মৃতা:।। উত্তরা: স্রবো त्रागु वर्ष रहमवङ छथा। छुन्। र्दुः (कृञ्भावक उथा वर्व भिनाव्-छे।। केञ्च छ इति वर्षक छथा कि;-পুৰুষাবৃত্তি এতান্যপ্তৌ তু বৰ্বাণি পুণ্যানি কথিতানি তু ॥ ইন্দুদুগুর; কলেকণ্চ তামুবর্ণো গভন্তিমান্।

नागवीथी उथा (जोत्मरा गन्नर्ता वा-क्ष ख्या ॥ जागदाथा ख नवस्मा ভেদে। ভারত বার্ষিকঃ। ইদস্ত ভা-রত॰ বর্ষণ কর্মভূমি রিতি স্ত॰।। শেষাণি দ্বীপব্যাণি ভোগস্থানা নি সন্ত্যপি। ভাগীরথী পাবনী চ कुषिनी कुषिनी उथा ॥ जीज दः द्भ मा निष्नुमा मधगकाः भुकीर्खः তাঃ৷ সুপুভা কাঞ্চনী চৈব বিশালা मूग्या दुनाः ॥ मत्रम्याज्याचनामा ह সুবেণু বিমলোদকা। এতা গঙ্গান্ত विथ्राजाः मधन्गपुनाः मूजाः॥ হিমবান হেমক্ট চ নিষ্থো নীল भर्वजः। । । । । । । भृक्वास्मक मा-व। वान् गक्तभाषनः ॥ मरहत्नु। म-**णयः म्यः म्**किमान्कवानशि। বিষ্ণ্যক পারিপাত্রক কৈলাসো मन्द्र खथा।। (वाका वाका महा॰ स्टियु उरेथरवा दत्रमानमः । এতে বি•শতি বিখ্যাতা: পর্বতা স্তম্বা• বরা: ৷৷ অতলং সূতলক্ষৈব বিত-লঞ্চ গভন্তিম । মহাতল রসা তল পাতাল সপ্তম মৃত ।। ক ক্মভৌন• শিলাভৌন• পাতাল• নীলম্ভিক । রক্ত পীত খেত কৃষ্ ভৌনানি চ ভবস্ত্যপি ॥ পাতালা-नाक मधाना (जाकानाक यम् अतः।

ভূকর্

শুষির• তানি কথ্যম্ভে ভূবনানি চতু-র্দশ।। ইতি বহি পুরাণ।। ्वितकायः *शु* ज्रागानः। जन्र বিবরণ শ্রীভাগতে পঞ্চমক্ষদ্ধে ১৬ 1 291 2 अंशारय मुश्चेवाः ॥ ्वनुः शु म्याः॥ विशः॥ हन्ः। **इंडि** मिनी ॥ शुङ्कः । इंड्रागि नि (कायः॥ ব্রলোকঃ পু• ভ্রাদিসগুলোকান্ত-र्गठिषठीयरनाकः। यथा। ज्ञि म् য্যান্তর যা সিদ্ধাদি মুনি সেবিত । ভূবর্লোকস্ত সোপ্যক্তে। দ্বিনীযো মুনি সত্তম ॥ ইতি বিষ্ণুপুরাকে ১ । ২০ ি িদু•॥ কালঃ। ইতি মে-जारान न जाशायः॥ স যঃব্য আকাশঃ। ইতিভেচন্দ্র ভিডি ছে স্কলারঃ। ইতি শব্দ विः क्री अभूपुः। ইত্গোলিকে 🕾 🍴 ্ক উ প্রাপ্তৌ। ইতি কৰিক ক্ষা । জনস্ব । কাক ।। ক ড ভাব্যতে। ইতি দুর্গাদালঃ।। । ঞ পাণ্ডৌ।ইতিকবিক্তম্মঃ। 🐠 ভবতি ভবতে ধন ধী 🕾 । 🐨 🖐 ত্যের সত্তাযা পুরাপ্তি সম্পন্ন জনা **স্বিতি ভউম্ল: 🛭 ভবতে** দ্বিচেধ্ য' যথোক্ত কতুভি ভাব্যতে চ

কলোক মিতি হলাযুধ:।। কেডি?

मु जाम । जान शिका निम निम निम शिक्षो

পরবৈশপদ সভার্থ সৈর্বানেকার্থ

दा । मगाथा । इंडि मूर्गामामः ॥

ভূক শুদ্ধি চিন্তবোঃ।। মিশুণে। ইতি কবিকল্পক্ষম: !৷ ক তৃণ বন্দ্যাবযতি षियः नर्वान्। ज्या र्थाः। ইতি मुर्गामानः ॥

ভূ সভাযা। ইতি কবিকল্পফনঃ।। সত্তেহ দ্বিবিধা। উৎপত্তি বিদ্য-মানতা চ। ভবতি মনুষ্যে হথবা বিষ্ণুঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ ভূ ব্য রসাতল। ইতি ছেমচন্দুঃ॥ जुः जी পृथिवी। इं**उ**प्रदः॥ इन-মাত্র । ইতি মেদিনী।। यজারিঃ। ইতি জটাধরঃ ॥

495年4

👯 🤌 ভাষা। ইতি রন্ননালা॥ ্ৰ 🖓 😘 🦿 থবানী। ইতি রাজ-42

🏸 🐃 अञ्चलाविका। थून-স্বাৰ্গ 🦪 ভাষা। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ ज्रुक्त्पात्तः शु त्कविष्णयः ছোটালদোডা ইতি হিন্দী ভাষা । ७८-अयायः । क्षुम्रान्याष्ट्रकः २ ज्रानवः अन्यरमन् १ वयुनिहिनः **৫ लघू भी ७: ७ म्या**फ नः १ नघु ज् उ- ्र भगा।

रहा विकास करिया । विकास करिय । विकास करिय । विकास करिय । विकास करिया । विकास करिया । विकास

ভূকদ্পঃ পু॰ ভূমিকম্পন•। সচ আ-ভূতবিশেষ:। যথা অভূতসাগরে । নেষে বৃশ্চিক ভে গন্ধ: পুচলতি व्यामामि जिः कथ्या हार्य भीन বলীর ভেচ বৃষভে সত্যু চলেৎ कह्भः। यूक अञ्चल्य म्रानम् निथूत कन्। न्रा भन्ग (उया মেকতমো যদি পুচলতি ক্ষোণী তদা কম্পতে॥ কছপে মরণ জ্ঞেয• भद्र १ भारत । भई व मूथर-ঞ্চৈব পৃথিব্যা• চলিতে গজে॥ প্র-থিত নরেশ্বর নরণ ব্যসনান্যাগ্রেষ মাৰুতযোঃ.৷ ক্ষুদ্ভয় মতি বৃষ্টিভি-ৰুপপীড্যন্তে জনাশ্চাপি। ত্ৰি চ-जूर्थ शक्षम दित्न मारम शक्क जि পক্ষকে। ভবতি যদা ভূকন্স: পু , **ধান নৃপনাশন স**ক্তে। স চ ভূ ্নিজোৎপাত বিশেষঃ। যথা। চর 'স্থির ভব ভৌন ভ্রম্প মপি ভূমিজ । জলাশ্যানা বৈকৃত্য ভৌন স্তদপি কীৰ্ত্তিত ়া ভৌন

ত্যতে। হ ক্রাক্রেক্টা ভুকলঃ পৃণ দুকিন্নিধাইতি রাজ-নেখণ্টা।। ভূকশ্যপঃ পুণ বসুদেবঃ। ইভি ত্রিকা-গুশেষঃ ।।

ज्काकः भू॰ यन्नक्षः॥ क्वोकः॥
नीवकरभाजः। ইতিশদর নাবলী॥
ज्यक्षे की ज्भावेनी। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥
ज्यमाधी की दिराती। ইতি শদরন্নাবলী॥
ज्यभी की ज्यसुकः। ইতি নেদিনী॥

ज्यक्ती की कृपुशक्ती। उर्भयंग्रयः। ज्युका २ तम्र्धायक्तिका
० ज्ञिथक्ती ८। जम्ग खनाः।
मध्तपः। निनित्रपः। मारु भिख
स्त्रपः। निनित्रपः। मारु भिख
स्त्रपः। देवि ताक्रनिर्विः।।
ज्यतः त्री विषः। ইতি ताक्रनिर्विः
ज्यकः शुः ज्यक्िः। मह मान
जी गायवाहिनाहिककर्जा। ইতি क्रहायतः।।

জাপ্য ফল জেয় চিরেণ পরিল ্ব ভূগোলঃ পু ভুবনকোষঃ ভস্যবিবরণ

्रज्यान

यथा श्राह्म स्थान कार्य । ता प्रकारः श्वः। जना वास सम् काबाद अपः गाओ १थ क्वक ।। রসো গন্ধ क शिक्षव खना नाम পুकी खिंठाः। शक्ष्मानि महा छ। গ মহাভূতানি সংগুহাৎ ॥ তেভ্য এব পুজাতানি সর্বাণি গুণবন্তি চ। ভূমি রাপ স্তথা বাযু রগ্নি রাকাশ মেব চা। গুণোত্তরাণি সর্বাণি তে ষা॰ ভূমিঃ পুধানতঃ। শদঃ স্পর্শক ৰূপঞ্ প্ৰসো গন্ধশ্চ পঞ্চমঃ॥ ভূমা বেতে গুণাঃ প্রোকা দুসতি শর 💸 ক্রনাৎ। চত্ত্বারো হপ্প গুণা বুন্ধন্ গন্ধ স্তত্ৰ ন বৰ্ত্তে॥ শবঃ স্পৰ্শক ৰূপঞ্চ ত্ৰয় এব হি তেজসি। শদঃ ল্পাশা ২৭ বাবোম্ভ আকাশে শদ এব হি॥ এতে পঞ্চ গুণাঃ প্রোক্তা মহা ভূতেষ্ পঞ্সু। বর্ত্তে সর্বভূ ভেষু যেষু লোকাঃ প্রভিষ্ঠিতাঃ ॥ অন্যো ২ন্য নাতি বৰ্ত্তন্ত সন্যুত্তবি বৈ তদা। যদা তু বিষম• ভাব মবি-শস্তি পরস্পর•॥ তদা দেহ বিযোগঃ अहाराप्त्रिना॰ नानुथा विज्ञ। जानू-পূৰ্ব। বিনশ্যন্তি জায়তে চাপি সৰ্ব শঃ ৷৷ সর্বাণ্যপরিমেযাণি তদেষা ৰূপ নৈশ্ব । তত্ৰ তত্ৰ হি দৃশ্যন্তে थाउदः পঞ্জৌতিকाः ॥ उषाः

মনুধ্যা ওকেন পুমানানি পুচকতে! शक्ति । । चार्र काता न जा खर्कन (याज्ञरय ।। পुक् उंडड्रः भद्रः यबु তদচিন্ত্যস্য লক্ষণ । 🟶 । জমুদ্বীপ• পুৰক্ষ্যানি বাৎস্যায়ন মহামূনে।। পরিমণ্ডলো মহাভাগ দ্বীপো হসৌ চক্রবৎ স্থিতঃ। নদী গিরি পুতিছমে। विविदेशः शखरेन द्रिश ॥ वरेन र्जनशः रित् व्रिक खथा भूच्च कत्वाभरेगः। লবণেন সমুদুেণ সমস্তাৎ পরিবারি-তঃ ধা পুাগায়তা মহাভাগ যড়েতে প্রপর্বতাঃ । অব্ণাটা হুত্র্যতঃ সাগরৌ পূর্ব পশ্চিমৌ॥ হিনবাৰ্ ছেনক্ট *চ নিষধ *চ নগো ভনঃ। नी-লঃ শ্বেতঃ শৃঙ্গবা॰ক রত্নধাতু বিচি-ব্ৰিতা:।। অযুতানি যোজনানি উ-हाया স্তেষু কীৰ্ত্তিতাঃ। পৃথুত্বে চ বি· সাহসুযোজনা স্তেচ পর্ব হাঃ ॥তে-ষানন্তর বিষ্কান্তোনব সাহসু যোজনঃ । বৰ্ষে ব্ৰষে পুনাণন্ত বৰ্ষাণি ত্ৰীণি দক্ষিণে।। তত্ৰ পুণ্যা জনপদা স্তেতু বৰ্ষেষ্ তাপস। বসন্তি তেষু সর্বাণি সল্তানি বিবিধানি চ ॥ দক্ষিণে ভা রত॰ বর্ষ মুত্তরে লবণোদংখঃ। ফুলা-দের নহাভাগ তস্য সীমা হিমাল-यह ।। ততঃ কি পুৰুষ বর্ষ ছেনকু-होतिभ छजः। इतिवर्षः छछा छायः

নিষধো হবধি ৰুচ্যতে।। এব মেবে। স্তরে ত্রীণি বর্ফাণি চ তপোধন। স্বৰু বর্ষ সিন্ধু ক্লাৎ শৃক্ষবানবধিঃ মৃতঃ য়। হিরণ্ময° ততো বর্ষণশ্বেতাবধি নি গদ্যতে। রম্যকঞ্চ ততো বর্ষণ নীল স্তস্যাবধিঃ মৃতঃ।। দক্ষিণেন তু नी-**লস্য নিবধ্সে**গান্তরেণ তু । পুণগায-তো মহাভাগ নাল্যবালাম পর্বতঃ 11 পশ্চিমে তু তথৈবাস্তে পর্বতো গ[্] क्रमापनः। भूदि ममू पृक्वा खु छ पृा-अ॰ नाम वर्षक॰ ॥ मान्य वानविष छ-স্য কেতুমালঞ্চ পশ্চিমে। গন্ধ মাদ न সীমান্ত নবসাহসু বোজন ॥ 🗱 ॥ পরিমণ্ডল স্তবোর্মধ্যে মেৰুঃ কনক পর্বতঃ। আদিত্য তব্দণা ভাসে। বি-थ्म इव भावकः ॥ वाक्य याजन উहु।-या मूर्ष्क् चावि भवत ह। या जनाना॰ সহস্যুণি মৃলে চাপি তু ৰোডশ ॥ বিস্তৃতঃ স মহাভাগ ভূমি 🛪 মূলম-मा जू। भुविष्टे मञ्ज ज्राः देव वाफ শৈব সহসুক ।। উদ্ধৃ মন্ত তির্য্য-কু চলোকানা বৃত্য তিষ্ঠতি। তৃস্য চেলাব্ত বর্ষ সর্বতঃ পরিকীর্ত্তিত ।। বিহুগঃ লুমুখো যস্ত সুপর্ণস্যাত্মজঃ किन। अरेव विविष्ठशाताम मोक्तान् (भुक्त) दायमान् ।। (भक् क्खम मध्री ना गदवागायः शिक्तगाः । ज्यूर्विष्णेव

করে। যমাভিমাদেন ত্যজাম্যহ ॥ ত্যাদিত্যো ধ্রুপর্য্যেতি সভকে জ্যো তিবা॰ বরঃ। চন্দ্রনান্চ সনক্ষরো वायूरेक्टव शुरुक्तिन ।। न भई छ। म-হাভাগ নিব্য পুষ্ণ সমৃদ্বিত:। ভব-নৈ রাতৃতঃ সর্বৈ জান্দুনদ নয়েঃ শুভৈঃ ॥ তত্র দেবগণা বুন্ধন্ গন্ধর্রাসুর রা-क्रमाः। अञ्चरत्रागन मःयूकाः रेगल কীডন্তি সর্বদা।। অবষ্টম্র করা স্তস্য मनरत्रा भिक मनरतः। मूलार्यः **सेम्** দশ্চেতি চতুর্দিক্ষু স্থিতা দ্বির্গা অযুত যোজনোয়াহা ভাবদিভার সংযুতাঃ । চতুর্বেতেষু ধর্মজ্ঞ চ্ত জদু কদখ-কাঃ ৷৷ ন্যগোধ কাপি চত্বার: পাদ্ भा नाक्ष १ व महम् (याका नामा हा স্তাবদ্বিস নিস্তৃ ভা ।। কেতু ভূতা: পর্বতানা॰ বিশালাঃ শতযোজন•। ভূদাক্ত ভত্র চত্ত্বারঃ পথে৷ মধ্বিক্ষু বা-त्रिमाः ॥ (मरवाम्यानानि छञ्जाति ह्व-চৈত্ররথ নন্দনে। সর্বতোভদু নিত্যে-ব॰ তথা বৈভাজক বন ॥ তেমু দেব ল্রিযো নিত্য বিহরন্তি সুরৈ: সহ। গধ্বাঃ কিমরাকৈচব তথান্যে সিজ চারণাঃ ॥ গামন্তো মুধুরণ দিব্যং ন্ত্ৰীভিঃ ক্ৰীডন্তি তাপস। চ্তো যো मनम्द्राध्यादम् २ गृज (या इ.न मृहि-তः ॥ कवान,ग्ठेकन्नानि পত्रसुत्र ्र भाग

छ। (उषारे विन्धीर्यामानानान) ं क्रियानिशो अक्लाना नाम ाश्उ मन्त्रताहनार । यद्धन ভিনাত্তেণ ভবানী শিৰ্যো গ্ৰণঃ॥ ং সৌরভেণাপি সমন্তাদশ । । সুগন্ধযন্তি বাতেন বাৎ-া তদ্ভত গা এব জঘূফলানা-हुजाः भिक् मन्द्रि । इंखिकाय ানা॰ রসৈ জাতা মহানদী ॥ গৰূনদী নাম দক্ষিণেন ই**লাব্ত**• য়ণো কভযো রেব জ**মূরস প**ন े हो ॥ मृश्विकव मृदर्गः महाद इं कि व क्षित्र । अब जाष्ट्रमः नाना उत्त मर्ग क्र उ॰॥ (मर्दा-त् गण्डी शहराति मर दिया। 🚁 বৈ মহাকদয়*চ সুপার্শ্যে।পরি-শস।। তৎ কোটরে ভ্যঃ পর্ট্ণেব ः दाताः जुनिष्ठि देव । शक्षायाम 🕾 🊈 ।ছোঃ পশ্চিমেন ইলাব্ত ।। বা ः । दशाःम् जुङ्गानाः मृत्र्याद्या [ना। मृशक्षयंखि धर्मक मन्द्रां * इत्यां कर ॥ अधूमायु निकारः य उवला वर्छ। महान्। इ.स्इ. े । मा नमा स उ खेखर इन इना वृ छ ।। भ .. देशी विश्वार मृहस्मा महुमूदाः अप्रमुक्ति शेष्ट्रा यामा॰ इम रबक्षर ॥ वजी अभि छाति छ रहीर्भका ॥

জরা দোষো ন বিদ্যতে। স্বরস্থ স ররঃ শত্ত্বঃ লসুম্রঃ লিখর তথা।। বৈ-কক্ষশ্চ ত্ৰিকৃটশ্চ পৰ্বতৌ ৰুচকৰ্বভৌ । পতক নিষধৌ নাগ সিতিবাস ত্রি-ক্টকা: ।৷ হ•স বৈদুর্য্য কপিলা দ্বৌ कालक्षत काक्षी। भित्रया मृत দেশে তু সুমেরোঃ পরিকল্পি**তাঃ** । क्षटेरता (मवक्षेण एको नरणो भिक পূর্বতঃ। অষ্টাদশ সহস্যাণি যোজ-নানুদেগাযতৌ ॥ পৃথু তৃঙ্গৌ দ্বিসা-হসু যোজন তাপসর্যভ । পবনঃ পারিপাত্রশ্চ নেরোঃ পশ্চিমতঃ স্থি-তৌ॥ তথা পুনাণৌ কৈলাস করবী-রৌ তু দক্ষিণে। প্রাগাযতাবুত্তরেণ ত্রিশৃত্ব মানরৌ তথা।। অস্ট্রাভিরেতৈ র্গিরিভি ভাঁতি কাঞ্চন পর্বতঃ। নে-রো মূর্জনি বিপ্রাগ্র্য মধ্যে বিশ্ব সূজঃ भूती ॥ ठजूतम्। माउदि सि । নায়ত বিস্তৃতা। দিক্**পা**লা**না**॰ ভথা भूर्याः भूदीमियु वथा कमा । युन्भू-য্যা ভতুর্থন ভাগেন পরিক্রেডা। তত্র বুন্ধাচ ক্ষুড় 'ক্রেডাপি সু রেশ্বরঃ।। সনেত্য বিধিধৈ যঁ জৈ র্য-बाड जूबि हिन्दिनः। जुदुक नीबर-কৈবে নিশ্বাবসু হাহাহুমুঃ॥ অভিগ म्या सत्राम्धः स्वि विदित्यः खरैवः। रेडिस्या नराजानः कणाशण रू

জাপতি: ৷ তিৰ গছন্তি ভদু তে সদা " পর্বণি পর্বণি। তসৈত্র মূর্দ্বনুগশনা कार्त्वित परेन्द्र गंशीयरन ॥ जन्द्र रह-মানি রত্নানি তদ্যেমে রত্ন পর্বতাঃ। ভিমাৎ স্বেরো ভগবা শ্চতুর্থ ভা-গ মশুতে॥ ততঃ কলা॰শ॰ বিক্তস্য मनुरवर्जाः भुगह्छि। भार्यं उरम्रा-खरत पिवाः महंबू वमूमान्जिः॥ कर्निकात्र वन त्रमा मिनाकान म মুদ্ধত ৷ তত্ৰ সাক্ষান্মহাদেবো ভীমৈ **जू** कि: नमाव्जः ॥ भाईजा नह দেবেশো রমতে ভূত ভাবন:। কর্ণি-कात गरी गाला प्रमानामलिक ৰী ।। তস্য শৈলস্য শিশরাৎ ক্ষী-র ধারা মহামতে। বিশ্বরূপা পরি-মিতা ভীন নিৰ্ঘাত নিশ্বনা ॥ পুণ্যা পুণ্যতমৈ জু है। गङ्गा ভাগীরথী শু **छ। ठा॰ धा**त्रयामाम उना मुर्खद्रा॰ পৰ্ব তৈ রপি ॥ শত বৰ্ষ সহসাূূুণা • मित्ररेमव शिनाकथ्क्। (मात्रास मि-थवाष्ट्रवी ভिদ्यमाना ठजूर्विथा ॥ সীতা চালকনন্দেতি বন্ধু ভন্দেতি कीर्खिंग। भीजा जु तुक्षमहना८ কেশরাদি মহাচলান্।। অতিক্রম্য भुमुवंडी गन्नगामन मृष्टम् । পতিত্ব। দ্বিদ্য বর্ষঞ্চ ভদাশ্ব পুনতী ক্রমাণ-া। পুচ্যা দিশি মহাভাগ পুরিম মধ

वर्णामिक शान् अहि ध्रताप्यः भ তিত্বা কেডুমাল্ডি॥ পূতীচ্যা দি-শি বিপেুত্র পুনিরেশ সরিৎপতিশ ভদু৷ চোত্তরতো মেক লিখরাৎ প-তিত। গিরীৰ্।। অতিক্রন্য স্ক্রত: **म्हा**(ह(गन भाजूका । উखद्रा॰क व्यक्तन् भाषाः भ्विष्ठा व्यवगार्गवः ॥ **उरियरालकनन्ता ह भ** उन्ही निति स्-ৰ্দ্ধসূ। হিমালয় বিনিভিদ্য ভারত। বর্ষ মেন্ড্র চা। লবণামুধি মভ্যেতি **एकि १ म् १ कि ।** (ग्रांस পশ্চিমে পার্শ্বে কেতুমালো মহাম-**তে॥ यायू मंन मह्मा** गिवर्गाना उड बानत्व । जुदर्भ दर्भाक्त नद्गाः ज्ञियका-প্রবেশপনা: ॥ বীত রোগ শোক ভरा निक्र भाननर वर्खिनः। कारास्ट নানবা ন্তত্ৰ পুতন্ত কনক পুভাঃ॥ৠ। গন্ধনাদন শৃঙ্কেযু ক্রবেরঃ সহ রাক্ষ-रिमः। व्यञ्जदा गग मक्तरेर्व स्मान्ट ভহ্যকাধিপঃ।। গদ্ধনাদন পাম্বেতু गर्खेनवाः नर्नुनः। এकारन न-হসাণি বর্ষাণা পরনাযুব: ॥ তত্ত वृष्टे। नद्राः मर्ख वल वीर्यं भद्राक्रमाः । ব্রিয় শ্চোৎপল পণ্রাভাঃ সর্বাঃ স্থ্ शिय पर्णनाः ॥ # ॥ উखरः अत्र শৈচব ভারতঞ্চ মহামতে ৷ ধ্নঃ স•-**ए महा जाग हि**वर्ष मिक्स्पा खरहा।

हेनावृत्रः भ ार्यक् शक्षद्यानि हिव हि। छेन्द्रतान्त्रत्र देगलान्ता वर्ष मू-ष्ट्रिहारक की मा ता जन त्यू हा वर्षियू नर्बिषु ভারত विना। बागूः भुनातः (बाकाना में वर्ष महमुक ॥ वर भिया महाजांग भृषिवी भर्व छि শ্চিতা। ইতি পদ্মপুরাণে ভূমিথণ্ডে जूर्गाम वर्गन ३२৮ वर्गायः ॥ 🗱 ॥ শেষ উবাচ। নবস্বেতেষু বর্ষেষু ভগবান্ ভূত ভাবনঃ। অনুগুহায লোকানা भारि भाषा वशूर्षा द्वा ।। इनाव्रि ज् ভগবান্ ভবএক: সহোম্যা। আস্তে विशाद निवरंछ। नान्। छव श्रूमान् দ্বিজ ৷৷ ভবানী শাপতো বুন্ধন্ পু-বিশেন কদাচন। যত্র পুবিষ্টো নো-হেন সুতো বৈবশ্বতস্য বৈ ॥ ইলঃ ন্ত্ৰী ভাব মাপন্নে। যস্যা• জাতঃ পু-ব্যুরবা:। তত্র সন্ধর্যণ দেব কলা। বিক্ষো মহাত্মনঃ।। ভবো ভবান্যা সহিতঃ স্তৌতি ভক্তি সমন্বিতঃ।ঞ্চ। ভুদাশে দিল বৰ্ষে তু হ্যশীযাক্তি र्हितः ॥ त्रमा्ड दर्य भूक्षा सः स्वविष्ठ कगृहुक । # । इद्रिवार्य जू छगवा **সুরসিণ্ছ বপুর্ধরঃ॥ স্ত্**যতে দৈত্যপ उना भुद्राप्तन गराजाना। *। र्कर्गाः छगवान् कामरम्व म्रक পবান্।। 🎨 াপতে দুহিত্ভিঃ স

रेश्व त्रमया मूना । ख्याज नित्रया छ-क्रा जगसाहन क्रध्क्॥ अ। अन्। কে ভগবানান্তে মৎস্যৰূপী দ্যাপ-র:। মনু বৈবিশ্বত স্তঞ্চ স্তৌতি ভক্ত্যা क्रिः खरेवः ॥ #॥ हिक्गरय ज् जगः वानारः क्र्यं जन् मध्य । (भुजाधि রাজ স্ত স্তৌতি ভক্ত্যা পরম্যা যুক্তঃ ॥ 🗱 ॥ व्यक्तर्य व जगवान व्याहः সেব্যতে উনৈঃ। ত দেবী যঃ ক্ষিতিঃ স্তৌতি তদ্বৰ্য পতিভিঃ সহ।।
ৠ।। বৰ্ষে কি পুৰুষে বুন্ধন্ ভগবানাদিপূৰ্ব: । সীত্র্যা বিহরমান্তে সত্ত ত লন্ধ-शागुकः ॥ उक कि भूकरेयः मार्क ভক্ত্যা মাৰ্ড নন্দন:। পাৰ্ফিসে-নেনচ সহ স্তৌতি ভক্ত্যা বিভাবি-তঃ ৷৷ 🛊 ৷৷ ভারতে চ তথা বর্ষে নর-নারাযণাবৃষী। নারদঃ স্তৌতি ভগ-বান্ ভগবস্তৌ কৃতানতিঃ ॥ 🗱 ॥ দ্বী-পে হিমান্ বহুবঃ সন্তি গির্যঃ সরি-ত তথা। দেশাশ্চ বহুবো বুক্ষণ্ডা॰ ख वक्षामानुकमार्।। (माता क्छ-त्रञः नर्वान् शर्यप्रायन तुरीनप्रशः। मिक्कारान जू नीलमा (नारताः भार्यः তথো बत्त ॥ উ बताः अत्रत्या नाम পুণ্যাঃ সিদ্ধ নিষেবিতাঃ। তত্ৰ বৃক্ষা মুপুকুলা নিত্য পুত্র ফলোপগাঃ॥ कृष्धि विष्ठ भूत्राणि कलानि द्रमविष्ठ

চ। সর্বে কান্দ্যা বৃক্ষা লতাঃ কান পুপ্রিকাঃ॥ অপরে ক্ষীরিণো নাম **ज**রবো মুনিপুঙ্গব। यে সুবন্তি সদা ক্ষ্যি রদৈ রমৃত সমিভ ৷৷ বস্তাণি চ পুস্যতে ফলেয়াভরণানি চ। স-ৰ। মণিমণী ভূমিঃ সুক্ষহাটক বালু का॥ मई ब्र् मूथरा निष्ठाः शक्त मर्कत्र | বিজ্ঞিতা। স্বৰ্গভোগাবশেষেণ জায-ষ্টে তত্র মানবা:।। শুক্লাভিজন সস্প माः সর্বে চাক মুখাঘুজাঃ। মিথুনা নিচ জায়ন্তে জ্রিয়: সূর সুতোপমা:॥ **ভেষা** । को तिना॰ को त॰ शिवर्ष्ठी मृ-ত সন্নিভ । নিথুন জাযতে কালে সমন্তান্ত পুৰন্ধতে ৷৷ ত্ল্য ৰূপ গুণো-(পত ज्लऽ (वभ वय खथा। निज्ञान-या निदावाधाः महानन्त विवर्जिनः॥ একাদ**শ সহ**সাণি তত্ৰ বৰ্ষাণি বৈ জ নাঃ। জীবন্তি তে মহাভাগ ন চান্যো-ন্য হনন্তি চ 🏻 তাক্**ণা নাম শঙ্গ**না खीक् वृक्षा सञ्चित्वाः। ठाविद्देखी **३ न्**जान् मतीयु भूक्षिश छि ।। উखः রাঃ স্বরবো বুন্ধন্ ব্যাখ্যাতা ভে স-সাসতঃ। #। হ্রিশ্রযে রন্যকে চএয थर्मः পুকी छिं जः।।(मादाः भार्थ महः भूर्ब विकार तुकान् यथा उथा जन्। जन्ना व अनुगुदा नाग अब दुष्यन् महीलः जिः॥ अनुनाल वन यव कानामुक

गराक्रमः। कालाया नाम क्ला श्यो निक हार्त्र (मिविजः॥ याज-নৈক সমুৎসেধো নিত্য পুত্ৰ ফলঃ শুভঃ। তত্ৰতে পুৰুষাঃ শ্বেতা সেজো युका महावलाः ॥ असम्माजाः जिम उव ठाकनामाः मूर्लाठनाः । हम्मू। छ ठाक्क्शाम्ठ भूर्णन्तृ मम्माननाः॥ न् ग्र गी व कवा जि छ। भ न्यू भी वृत्र কান্তবঃ ৷ দশ বৰ্ষ সহসু।ণি ভতাযু वृञ्जिगर्व छ।। कालामु द्रम भारतन नि-छाः मुक्ति शोवनाः । मक्तिरान ज्-नीन मर्मे निष्यास्त्रता खात्रग जु॥ सूमर्भः নো নাম মহান্ জগুতৃক্ষঃ সনাতনঃ ৷ সর্বকাম ফলঃ পুণ্যঃ সিদ্ধ চারণ সেবিতঃ।। দ্বীপ খ্যাতিকরঃ শ্রীমান্ সহসু ষোজনোট্ডিঃ। অরত্নীনা• **সহসুঞ্চ শ** তানি দ**শ** পঞ্চ ।। পরি-ণাহস্ত বৃক্ষস্য রসানা বসভেদি-ना । छक्गाहिल्य वर्गान्य जागरस ত্র মানবা:।। #।। তথা মাল্যব্তঃ শ্লে দৃশ্যতে হ্ব্যবাহনঃ। নাম্ব मञ्जलका नाम कालाग्निः भुलाय १ छ কৃৎ ॥ তথা মাল্য বতঃ শৃঙ্গে পূর্বে পূৰ্বানুগণ্ডিকাঃ ৷ যোজনানা সহ म्रांगि शक्षवभाना वान् विका। गरातः জত সক্ষাশা জায়ন্তে তক্ৰ মানবাঃ I বুন্ধলোক চ্যুতাঃ সর্বে জায়ন্তে তত্র

নরা: ।। তপ উ্প্যন্তি তে ভীবু विष्ठ दूरकृ (त्र उमः । त्रक्र नार्थस ভানা ন বিশন্তি দিবাকর ॥ य-ংস্তানি সহসাণি ষ্ঠিরেব শতানি : অৰুণস্যাগুতো যান্তি পরিবার্য্য বাকর ।। বস্তি বর্ষ সহসাণি ব :ম্ব শতানি চ। আদিত্য তপ্তা ্রেরে বিশন্তি শলি মণ্ডল•।।ইতি । দ্ম ভ্নিখণ্ডে ভ্গোলে ১২৯ অ-भुःयः॥ अ।। भ्या उवात। मिक्स्याः 🔻 তুঁ খেতস্য নিষ্ধস্যোত্তরেণ তু। বৰ্ণ রমণক নাম জাযন্তে তত্র মান-वाः ॥ मृङ्गाञ्जिन সম्भक्ताः সर्व मु-প্রিয় দর্শনাঃ। দশবর্ষ সহসাণি শ জানি দশ পঞ্চ।। জীবন্তি তে ম ছাভাগ নিত্য মুদিত মানসাঃ। 🗱। ৰ তু॥ বর্ষণ হির্প্রয়ণ নাম তত্র হৈ-🍇 বী নদী। যত্ৰ চায় মহাভাগপ-🐓 ৽রাট্ পতগোত্তনঃ 🛭 যক্ষানুগা 🕫 া হবে। ধনিনশ্চ মহাবলাঃ। একাদ-। সহসুাণি বর্ষাণাণতে মহামতে।। াযুঃ পুমাণ জীবন্তি শতানি দশ ্পুচ। শৃসাণিচ বিচিত্রাণি তী ्रेव वाक्तवर्ष ।। এहः निगयः उ-विञीय (दोग्ध मणुजः। मर्ब तङ्ग ধক্ষৈৰ ভূতীয়• তত্ৰ শোভতে॥ যত্ৰ স্বযম্পু ভা দেখা নিত্যু বসতি শাণ্ডি-नी। (श्नक्षेत्र मूमश्न रेकनात्मा नान পर्वजः॥ यब रेव भवत्ना ताजा গুহুকৈঃ সহ মোদতে। অন্ত্যুব্তরেণ কৈলাশ মৈনাক পর্বত পুতি।! হিরণ্য শৃঙ্গঃ সুমহান্ দিব্যো মণিম-যো গিরি:। তস্য পার্শ্বে মহদ্ব্যে• णुज्काक्षन वालूकः ॥ तमाः विन्तू मः রো নাম যত্র রাজা ভগীরথ:। দৃষ্ট্য পুণ্যাপগা গন্ধা মূবাস বহুলাঃ স-নাঃ ।। যুপা মণি ময়া শুত্র চৈত্যা-শ্চাপি হিরথ্যা:। তত্তেঞ্চী তু গতঃ निकिः गर्माका गरायणाः ॥ मुद्रा **ज्**ठभिं र्यव मर्दालारिकः मनाजनः । উপাস্যতে তীত্মতেজা যত্র ভ্রৈঃ भगख्यः ॥ नत्रनात्रायः ते नुका मनूः স্থাণুশ্চ পঞ্চমঃ। তত্র দিব্যা ত্রিপ-থগা পুথনন্ত প্তিধিতা।। বুন্ধলো-कारभकां छ। मध्या भुजिभम्। छ। वाद्याकना दा निवनी शावनी ह नद्र-भ्रजी ॥ जमृत्रही ह मीजा ह गन्ना मि कुक्त मध्यी। অधिस्त्रा निवा मङ्गा-मा भू जारेवक मन दिजा। उभामाउ वक मबः मङ्गु गुगलर्ग्य । मृभ्।-দৃশ্যা চ ভবতি তত্র তত্র সরস্বতী।। এতা দিব্যাঃ নপ্তনঙ্গা স্তিষ্ লোকেষু विन्जाः। तकाः नि वि हिनवि

হেমকুটে তু: শুহ্নকাঃ।। সর্পা নাগা-শ্চ নিষ্ধে গোকর্ণঞ্চ তপোবন• ৷ দে-বাসুরাণা• সর্বেষা• শ্বেতপর্বত উ-**छाउँ ॥ शक्तर्वा नियाप निर्छा नीत्न** तुकार्यय उथा। मृत्र्याः क महाजान দেবানাণ পুতিসঞ্চর:।। ইত্যেতানি মহাভাগ সপ্তবর্ষাণ্যনুক্রমাৎ। ভ্ তান্যপি নিবিষ্টানি গতিমন্তি ধুরা-ণি চ।। তেষা মৃদ্ধি র্বহু বিধা দৃশ্যতে रिम्व मानुषी । जामका भित्रमाथा-তু শুদ্ধেয়া তু বভুৎসনা ।। ইলাবতে তু ভগবান্ ভবান্যা সহ মোদতে। ইত্যেব মঙ্গৌ বৰ্ষাণি কথিতানি ত-বানঘ ॥ 🗱 ॥ কর্মা ক্ষেত্র মহা পুণ্যু ভারত॰ শৃণু সাম্পুত । প্রিয মি-न्तुमा (एवमा) मत्ना दैर्ववश्वना ह १। भ्रामञ्जू मन् दिन्। म। ত्रायक्वारका র্মহাত্মনঃ। য্যাতে রম্বরী**শস্য**া **ऋा**ञ् र्नञ्यम्। ह।। उ**रेथ्य गृह्यन्सम्।** শিবে রৌশীনরস্য চ। সোমকস্য চ त्राजर्स्य गी(धरे*हव गराजान: ।। शव-ভস্য তথৈলস্য দিলীপস্য মহাত্ম नः। अगिकमा ह धर्मा छ न्गमा न् পতে তথা ৷৷ অন্যেশ মহাভাগ क्र विशागाः वलीयनाः। भृगु भ गमः তো বুন্ধন্ সর্ব পাপ পুণাশন ।। ন (रुत्मु। ननाः मशः भूकिमान्कवाः

নপি। বিহাশ্চ গা্যুরিপাত্রশ্চ সপ্তৈতে ष्टन পর্বতাং॥ভিষা পহসুশো বু-ক্ষন্ গির্যস্ত সমীপ ২ঃ পাত চিত্রা: সভ্ৰত্তা মহাত শিচত্ৰধানব:॥ আ-ৰ্য্যা মেছাক্ষ ধৰ্মজ্ঞ তৈ মিশ্ৰাঃ পুৰু ষা দ্বিজ। 🕸 ৷ নদী পাবিস্তি বিপ্লা 🕈 গঙ্গাণ সিম্ধুণ সরস্বতীণা শতক্ষণ চন্দু ভাগাঞ্ विभाभा॰ झ्ल वालुका॰। (गानावतीः नर्यमाथः यमुनाथः महा-नहीं ।। ह्मव जी विशासाक्ष वास्ता সরিতাম্বরাণ। নদীণ বেত্রবতীঞ্চৈব পযোষ্গী দেবিকামপি 11 বেদমূতি (व्हिनी हिज्यमाथ निन्गा । করীষিণী চিত্রবহা কৃষ্বেশ সুপু ণ্যদাণ।। ইরাবতীণ বিভস্তাঞ্চ ত্রিদি-বা নিক্ষাণ ক্মিণ। গোনতীণ পূত পাপাঞ্চ নিচিতা লোহিতাবনী ॥ কোশিকী ত্রিদিবা কৃত্যা সরযুঞ্চ মহামতে । চৰ্ম্মণ্বতী বেত্ৰবতী চ-न्त्रनाव्य महानती ॥ त्रह्मा नाज ब्रह्माक रुडि मामा हिम्ब्रथा। শরাবতী• পযোফীঞ্চ বাজিনী• পুর-मालिनी ।। পূর্বাভি রামা ধীরাঞ্ वाशी॰ भी उवली मिशा शला 🗐 -नी পा भहता मृ भूरया भा गरा मरं उ ।। কাবেরী ঞুল কাঞ্চাপি বেশ্বা• ভীম-तथी गिषा तरमाः भवस्याक

ल्महीवाः मश्नमहीः॥ शलामिनीः পাপহরা হেমা হৃতবতী তথা। मक्जी भुवद्राः (मलाः नरहिन्ताः भावेनावजी ॥ भूतावजी मनुकाक क्रणक्षताः गरानि। जनानीता मः খ্য্যাঞ্চ তথা চীরবতী মপি।।করী বিণী নশিক্লীঞ্চ বিপুলা সহির্থায়ী 1 महाकाञ्चा॰ निवारिक्षवः शक्ष्मीक **अङ्गनही॰।।** विद्या॰ वीत्रकत्राक्षानि বিশ্বামিত্রা কপিঞ্জলা । বসু সুৰ ন্ত্রা॰ গৌরীঞ্চ স্ববেরা নমুবাহিনী॰।। রথচিতা জ্যাতিরথা তুক্রেয়া महानही । दिवन्ही शिक्षेवारिक्द जुङ्गरवश्वा महानिष्ठी ॥ विषिणाः কৃষ্বেশ্বাঞ্চ হবিঃসাবা নহাপগা। সন্ধ্যাণ সমাসাণ বেদায়াণ ভারদ্বা জীঞ্চ নিমুগা ।। শীঘুাঞ্চ পিছিল। रिक्षव को निकी॰ निम्नगमि । मूर्गा मञ्ज निलारिक्षव वृज्जत्मध्याः मृभवञीः গরাক্ষান্থ রোহীঞ্চ সানান্যা॰ বরণামসিণা সুরসাণ তপসাণ দাসীণ পণাসাঞ্মহানদী ।। মালৰী বৃষ-ভা॰ ভাসা॰ বুন্ধমেধ্যা॰ বৃহদ্বতী॰। এতা শ্চান্যাশ্চ বস্থ্যো বৈ মহান-<ে । কি জর্ম ভ।। সদা নিরাম্যাকৃষ্ণা মন্দ্ৰাহিনী। চিত্ৰোপ্ৰা চিত্রথ। দুর্গাপি পাপছারিণী।। বু

ন্ধাণী চ মহাগৌরী কোষা চাপি ম-शनही। भुक्तिमञी मनका ह मक्षना साहिनी उथा ॥ अभाती अविञ्ला **চ नरीमनराकिनी उथा।** जूनर्गा ठ **७था गन्ना भातिया ह जतस्र**ी ॥ লৌহিত্য• করতোযা চ তথৈব ব্য-कास्त्रया । विश्वमा भाजत रैक्टजाः **गर्हा टेन्ड**व महाकलाः॥ তथा नहे उन्नु-পুকা**লা: শতল**ক সহসৃশ: ৷ ইত্যে তা: সরিতো বুন্ধন্ সমাখ্যাতা স্তবা নধ ।৷ ঞা৷ বক্ষ্যানি পর্বতা কালি ভারতে সম্ভিয়ে দ্বিজ। মলযো মঙ্গল-शुः हो रेमनाक महिन्हिकः ॥ याय छः **জ**টক: কোল্ল: সহো দেবগিরি তথা । शिलाला अया भ्रवकार मुक्तिमान्क কঙ্গভ স্তথা। গোবদ্ধন শ্চিত্রকূটে। नीला भाकर्ग এব हा। का का मूर्थ है-न्पुकील उथा कामगिति विंक। #1 অতঃপর• জনপদান্ বক্ষ্যামি দ্বিজ-সত্তম ৷৷ বিখ্যাতাঃ অকপাঞ্চালাঃ भाक्षा गापुर बाक्ष्याः। गएनाः হৃশউ। মৌদ্বল্যা ভোজাঃ নিস্কু স্ব-लिन हाः ॥ मृतरमनाः भू लिन्हा मह ञ्चरः কেশি কোশলাঃ। পাঞ্চালাঃ कोमनारेम्हव (वादा याना छरेथव ह ।। চেদি মৎস্য কর্ষাশ্চ নৈকপৃষ্ঠা

যুগন্ধরাঃ। উত্তনাশ্চ দশার্ণাশ্চ কা भार्या २ शत्रका भयः ॥ अस्र स्व-स्योक्तव मनजा विजया ख्या। जा-ধিরাজ্যাঃ সঙ্গটাশ্চ চক্র বক্রাত্যঃ শকাঃ॥ মানবাস্যোপবাহাশ্চ যকৃ स्नामान এব চ। वाङ्गीका वार्रशना-क नक्षा नम् ५७काः ॥ मझाः मूरिकाः भुद्रामा महियाः मिका ত্তথা। অপরান্তাঃ পরান্তাশ্চ আ-ভীরা: কালভোযকা: ৷৷ অটবী শি-, থরা শৈচৰ মেক ভূতা শচ মারি**ব** । ष्ठेशाविकानुविकाण क**क्लाः कं**क-वर्गकाः ॥ अष्ठाः भवाष्ठा माह्या মাগধা মালবজ্জটাঃ। অন্ত্ৰাশ্চ বছ-(वा वुक्षन् ककाः भागूमु निष्ठ्रे ।। विहिर्निर्येऽ। इशन्ति। अञ्चर्नियंऽ खेर्थ-व ह । जङ्गुखद्राः शुाव्ययाः जुप्तिश यामूना ख्या।। भका नियामा नियधा ভার্গবাক্ষ দিক্লর্যভ। পুঞা ভোগা: कित्राजाक उत्थिवान हे रेनर्थजाः ॥ তীরগুহাঃ স্রসেনাঃ সভলাঃ সশ-ना ख्या। जिन्नावा मनावाम्ह गाकात्रा पर्मका ख्या।। कान्यीताः সিন্ধু সৌবীরা ইজিকা কন্যকা গণাঃ । অভীসাহা জল্তাম্চ মধুনভাঃ **ब्रह्मन** हाः॥ तङ्गव**छ। म्ह ध्रम** छः स्त्री हना वाङ्गि उथा। म्बी वत्रा नवा 🖟

र्स्ताः जुरायानः जुयक्तिकाः॥ वनाः यत्वारुणाः भार्यस्त्रायागः अणिका স্তথা। রত্নবউাশ্চ ধর্মজ্ঞ বাড যাঃ त्रत्थात्रगाः ॥ त्रमुाः कत्रीयकाण्ठा मनिष्मा(भञ्जका खथा। कहा (भा शालकहाक म्विका वानवात्रिका ।। কিরাতা বর্ষরাঃ সিদ্ধাঃ পার্মতী याक भातिय। अपु श्लिहाः गरेगति क्षा रेवत्तरा खानः लिखकाः ॥ उप পরে জনপদা দক্ষিণা ব্রাহ্মণর্যভ पुर्विषाः (कंत्रलाः श्राह्या विक्न्न श्र्व কা তথা।। কোবেউকা তথাচোলা (त्रोवृता भवका भवाः। वृजिनुऽ वमः (कडा (काइ (वइ हे भागवाः। **ए**खकाः कात्रकाः शुग्राः स्मत्रा कात्रभातिकाः। ज्येथव विका ह्वि का जिगर्डाः माल्ल (मनयः ॥ मनत्रा कवकारेक्ट व जरेशवाभन्नवर्खकाः । मृ यका खनवालाग्ठ भूलिन्स। वर्व देव **नर् ॥ गूनिवाठीः शिवाठीक न**ः **(दगवना उथा । दिनर्छा अविका** কাকজনাশ্চ বুক্ষেণ্যভা। যবনাশ্চ শকান্তোজা ওল্নাঃ পরতঙ্গনাঃ 🖟 मक्वराः अन्याग्र नाक्ना (सहजः তंगः॥ উত্তরাশ্চাপরে শ্লেছা হুনাঃ পারসিকৈঃ সহ। তথৈব চ নলা শ্চী ना मणाना पणानिकाः।। अश वश

क्लिकाण्ठ शश्वा गितिगञ्जाः। भानीका काउठावाक विकार मृम् হ্বলানি চ।। শূদাভীরাশ্চ দৰদাযে-हात्नि (सह ज्नयः। **आ**खियान्ह जन-बाका खरेबद खनलायकाः ॥ (दुव-काण्ड किलाकाण्ड कित्राजानाक का-ত्यः। তোমরা হন্যমানাশ্চ তথ্বৈ করভঞ্জকাঃ॥ এতে চান্যে জনপ माः शार्वितानीका खरेश्व ह। উদ्দ **(**भन ग्या (५भा खत म की र्डिंग দ্বিজ।। বর্ষে তু ভারতে বুন্ধন্ তিবর্গ স্য ফল• ভবেৎ। দুহ্যতে কামধুপো-নু ভূ নিঃ সম্যুগনুষ্ঠিত। ।। তিমান শু-ভাশুভ क्या यथोक कलम न्गा। অন্যানি বানি বর্ষাণি ভূমিম্বর্গাণি তানি বৈ ॥ ভারতে বিহিত্ত কর্মা याग ध्रानामि वक्क ११। कव । कन्य (७ मभऽक् विकर्य नत्रकागऽशि ॥ তত্র সিদ্ধা নরা বুহ্মন্ তপসা রাধনে-ন চ। পুযান্তি পরম লোক মপবর্গঞ্চ নারিষ।। কৃত তেতা ছাপরঞ্চ কলি। শ্চ ব্ৰাহ্মণৰ্যভ। ভারতে তু ক্রমেণৈব॰ ভবন্তি হি যুগানি বৈ ॥ চত্ত্বারি চ স **रु**मानि वर्षानाः दुाक्रनवञ् । आगृः **সংখ্যা কৃত্যু**লে সংখ্যাতা ভারতে দ্বিজ।। ত্রীণ্যের তু সহস্যাণ ত্রেতা-যা ভারতে নৃগা। ছেনহসে ছাপ-

রে তু শত নেক কলৌ মৃত ।। ত-वानि ह शिंख नीखि करनी वासन সন্তন। পর্ত্তহাক মিুখন্তে চ তথা জাতা মি্যন্তি চ ৷৷ মহাবলা মহা-मञ्जा उद्यानिता धर्म उद्भद्राः । তপিষ্বনো খ্যান নিষ্ঠাঃ কৃতে জায-স্তি মানবাঃ॥ত্রেভাষা• সর্ব বর্ণা 🕫 স্বধর্ম নিরতাঃ সদ। । দ্বাপরে চ নহাভাগ কুরাশ্চ পরহি সকা:।! লুন্ধা শ্চানৃতিকাশ্চৈব কোখনা দুষ্-তে রতাঃ। কলৌ খলু ভবিষ্যম্ভি ভারতে তাপস পুজা: ৷৷ সর্বেষা মপি বর্ষাণা ভারত পুবর দিজ। সিধ্যন্তি মানবা হাত্র হরিভক্তি প-त्रायगाः ॥ भाषा जागवजाः मर्स ভারতে দ্বিজ সত্তম। নানা ক্রপাণি ञीर्थानि कनमानि नृगाम**ि**शा**कपू**-দ্বীপো ন্যা প্রোক্তো লক্ষ্যোজন বি-স্তৃতঃ। সমানেন পুনাণেন বেপ্টিতো नवनासुमा ॥ अक्षादक উপদ্বीमामू-নিভিঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ । সিম্বুনধ্যে মহাভাগ নানাবিধ জনাশ্রিতাঃ ৷৷ নানানি তেষা বক্ষ্যানি শৃণু বাৎ-স্যায়ন দ্বিজ। সাগরস্য সূতি র্**খা**-त्वरा পরিতো মহी।। খনজিঃ - कल्लिजा विश्व घीशा जाडी महार्गत वित्रर्भ भूष म्हन्तूम तः निम्हना वर्खनो

ख्या ॥ भक्षक्रमा ख्या नन्तर्त्रिता রমণ চান্ত্রযঃ। লঙ্কেতি কথিতা বিপু জমুদ্বীপস্য তে ২ন্তরা।। ইতি পাদ্মে ভূমিখণ্ডে ভূগোল বর্ণনে ১৩০ ক্ষ্যা यः॥ # ॥ (नव उवाठ। श्रक्षवीनः शवक्तां म्नू वाट्मायन विका यमान जमूबी भन्। उरेषव वावरण-मर्सः ॥ ज्ञा विख्न नाता श्लो প্লকদ্বীপো মহামতে। যমুদ্বীপস্য চ यथा (वर्डन वर्गास्त्रमा।। मनात्नन अभारान भूतः भतिथ्या यथा । भति খাষা উপবন• বথা ভবতি বেপ্টন•॥ भूक्षिन खेंथवारमो मः(वष्ट) वतः लाक्ष्या विवक्त (याजनायात्मा व ৰ্ক্ত-দ্বিল সত্তন।। তত্ৰ জন্পুনা-ल्यांखि घीम थ्यां जिनद खकः। क्ष (का नान नक्षाजाण वर्गवर्णा ९११) बान ह ॥ जब वर्षाणि मरिक्षव मू छपुः ব্বসং শিবং। অমৃতাক্ষম শাস্তানি क्रवाप्डिय भिज्रिश ।। मरेक्षव नीमा **গির**যোনদ্য: সপ্ত চ কীর্ত্তিতা:। নণি কু:টা ব্ৰুক্টো জ্যোতিমানিন্দুসে: নকঃ ৷৷ হিরণ্যগ্রীবো মেঘনালঃ সুপ ণঃ সেতুশৈলকা। অৰুণন্মণা চৈব সাবিত্র্য সিব্দী তথা।। সত্যস্ত্রবা সুপুভাচ বাৎস্যায়ন ধৃতন্ত্রের। এ -**छाः मध**गरानाम् । एर्नानाम् भाव ॥

নাঃ॥ বর্ণনো• ব্রাহ্মণাগীনা• ভত্র না मानाज्यभार । इन्मरेक्टर भाउद **म्हार्जायगण उड़ीयकः॥ मडा**ा क ठजुर्था वि नर्स धर्मार्थकाविह !: । व्यानात शर्वता खंब नम्हेरण्डव म-राकनाः ॥ शुर्गायाञ महाजान মলযো নাম পর্যতঃ। ততো নেখাঃ পুবৰ্ত্তে পুভৰন্থি চ সৰ্বতঃ।। ততঃ भारत विरमुद्ध कवशातस भाईकः। **छमाम्गृ**ङ्गाठि वि छाय॰ वानैवः পৃথিবী কৃতে॥ বর্ষাম হি ভভো বৃষ্টি **छ उः मम् अगू** ख्यः । रेतवला माम তত্রাথ গিরি র্যত্র পুভিষ্ঠিতঃ । রৈব-**ी नाम नक्षजः म्म**ुट्ड निवि भा-দিতা। উত্তরেণ তু তস্যাথ শ্যামো नाम गिति मंद्रान् ॥ शुः भुः श्रीमात्रः शासक भुङ्खाङ्गल विगुहः। यम् শ্রিয়া শ্রামবর্ণাঃ পুরা স্তত্র মহামতে ।। অভঃপর• মহাভাগ দুর্গো নাম নহাশিরিঃ। কেশরী কেশর যুতো ययाद्वाजः भुगर्खेल ॥ श्लाका नाम নহাদ্বীপো যত্র পূজ্যন্ত শক্ষর:। তত্র গছন্তি সিদ্ধাশ্চ চারণা দৈবতানি চ ।। ধার্মিকাশ্চ পূজা বুক্সন্ জরা নৃত্যু বিবজিতাঃ। দীর্ঘাযুষঃ সত্যপরা ব র্জন্তে ভোগ বৃদ্ধিতাঃ ৷৷ নদ্যশ্চান্যা নহাপুণ্যা গৰা চ বহুধা মতা। মহা

मरी मनिक्रमा भी जामी (विनाः च्या ॥ ॥ मुख्याती धनाती हर्द्ध वंश्वनिका छथा। अङ्ग्रानाः भंजात्म्यः महाः প'ৰ্ব্যা ন শক্যতে।। তত্ৰ পুণ্যা জন-পদা শচ্বারোলোক সমতাঃ। মগা क्ट मन करिक्ट मानना मन्स्भा उपा । भगा वाका ज्याका ज्याका ৰিজ। মশকেষু তুরাজন্যা ধার্মিকাঃ नर्कामराः ॥ मानस्य ह महाजाग रैवण । भर्म निरम्बिनः। न नरागमु उथा भूमाः भूता क्यार्थ निक्ठिः॥ न **उ**ब ब्राह्म विरम्नु मन्द्रशान् प्रश তা। সৰ্যয়ে ণৈব তে সৰ্বে রক্ষন্তি চ शतुम्भातः ।। # ।। श्रक्षतीश अनारनन সমুদ্রেণ বৃতো বহিঃ। ইক্ষুরস জলে। বৈৰ নানারত্নবতা দ্বিজ।। শাদ্মলো-**नि उ**थः ही भः श्लक्षाप्तृ खन मानउः। **চ** ठ्र्वक या जात्म मृत्रास्नावृत्जा गरान्।। यक देव भानानी नाम हिन ক্ষোজনোছ্ত।।দ্বীপ খ্যাতিকরে। वृक्षः मूनर्लन क् जालयः॥ ठव वर्षानि नरिश्चव कथ्रार**७ २**७ जूरद्वाहन । भी-गनभा त्रभाक एक्ववर्ष भिक्ति क गाए ॥ भार्तिजापु नाभाग्यन मि জ্ঞাত মিতি দ্বিজ। সেতু শৈলাশ্চ नेरिक्षत मुद्रामः भा ज मृक्षकः ॥ वागरम ব**ণ্চ অ**নদেশ্চ জনুদঃ পুষ্লবর্ষকঃ। সহ

नु, जि दि जि तुक्तम् महिंद्रः गरिश्वं की-র্বিভাঃ॥ অনুসতিঃ সিনীবাগী নন্দা-त्राका अतस्जी। त्रजनी ह अङ्गिहत महानम्यः मूल्ग्रमाः ॥ छ वविशा-परिया वर्गा क्रमामामानि विज्ञि । चाम् ५: भुज्यस्या वर्ग छल्जा वीर्गप्रवः म्जशा वमुक्तत्र स्ठीयस हज्शस हरू-**দরঃ। সরেতে সোন নারান**ণ ভগ-**बन्डः गक्रस्थि हि ॥ जूरत्रामः भति**रदरश्चेत হথ ততো দ্বিগুণ সানকঃ। 🛊। সুশ দ্বীপো ঘৃত্যোদেন সমানেনাকৃত্যে দ্বিজ ।। সশস্তায়ো মহা• স্তত্র দ্বীপ থ্যাতি• करतां कि है। का ज़ून उनारना भीरिश्व মহাজ্বনরাশিব্ ।। তত্ত্র বর্ষাণি স रिश्व ममानानि भूगाग जः। वमुहानः দৃঢ় কৃচি নাভিভপ্ত মহানতে ॥ সত্য ৰুত্ত বিপু নাম দেব নামেতি সপ্তম• । नरिश्वन नीमाणिक्रयः कीर्खिङ। विज সত্তম ৷৷ বক্রশৈচব চতুঃ শৃষ্ঠঃ কপি-ল শ্চিত্রকূটকঃ। দেবানীক উত্ব্রো-मा पुरिनाम्हि मिश्रमः ॥ मङ्गिन् **क्र मेरिश्व मर्बभाभभूगामनाः। तन** জল্যা নধুজল্যা নিত্রবিন্দা চ মান-म ।। भु त्रविन्तः। (मवगद्धाः राखगः। ষ্তচুতা। তত্র বিপাদ্যো বর্ণা না 🗅 ্রান্তর ভৃতো দ্বিজ।। দশলঃ পুথনো दर्भः (काविषस्र विजियकः। अञि

মুক্ত ত্তীয়ন্ত চত্র্থ: সলক: স্ত: ॥ তে সর্বে জ্ঞান সম্পন্না জাতবেদ স্বক্পিণঃ 11 ভঙ্গন্তে ভগবন্ত বৈ কর্ম কৌশলবাজিনঃ।।ৠ। ঘৃতোদা চতথা দ্বীপো বিগুণ: ক্রেবি স জ কঃ। की-রোদেন সমানেন বেপ্তিতো ব্রাহ্মণ-র্যভ।। ক্রৌঞো নাম গিরি র্যত দ্বীপ খ্যাতিকরো মহান্। মহাসেন **শ** রাঘাত ক্তছিদুো ম**হামতে।। ফ**ী রোদেনাভিষিক্ত*চ সতত বীচি সঞ্চয়ে:। বৰ্ষাণি তত্ৰ সম্ভৈৰ তেষা• नानानि मि मृत्।। आस्त्रा मधूकरहा নেঘপৃষ্ঠশ্চাপি বনস্পতিঃ। লোহি-তাৰ্ণ: সুধামাচ ভ্ৰাজিষ্ঠ শ্চাপি সপ্ত-नः॥ निद्रयम्हानि मेखिद दर्वनीमा করাদ্বিজ। শুক্লোহথ বর্জনানশ্চভো-जन **उभवर्ङ्गः ॥ नन्तरमा नन्त्रन**िष्ठव সৰ্বতোভদু ইত্যপি। সপ্ত তত্ৰ মহা-নদ্যঃ পাবনা ব্ৰাহ্মণৰ্যভ ।। অভ্যা চামৃতৌবা চ তৃপ্তিৰূপৰতী তথা। ভীর্থবত্যার্য্যকা শুক্লা পবিত্রবত্যপি म् जा।। विश्वानय खथा वर्नाः श्वाजा নামান্তরেণ ভূ। পুৰুষঃ পুথমো বর্ণো দ্বি গ্ৰাথাৰ ভঃ মৃতঃ। তৃতীযো দুবি-লো নান দেব স•জ্ঞ *চতুর্থকঃ। মূর্ত্তি• । कलनगी विद्या क्षेत्रयंखि ह यज्जि ह ॥ 🗱 ॥ वनः शत्राः कीतानारः

শাক্ষীপো দিজ্যত। আযামেন স विरक्तरा चाजि॰महाक्ररगर्जनः ॥ मिश्रिय अम्बार्य स्थापन स्थापन स्थापन রূনা। পরীতো ভাতি তঁহাতি 🤫 কোনাম মহীকৃহঃ ৷ দ্বীপথ্যািক রঃ গ্রীমান্ বাস্থন্ দ্বীপনেৰ ত বর্ষাণি তত্র সম্ভৈব পুরোজব মনেজ-वो।। धूम्।नीका विश्वाना विश्वान ধারশ্চ নারিষ। বহুক্প শ্চিত্রেই কা গির্যোপি চ সপ্তবৈ ॥ ইশান উক্ শৃঙ্গত বলভদ্যে নহানসঃ। শতাক-শব নামা চ সহসু সোত এব চাাদে বুপালোপি সপ্তৈতে বুষসীমা পুর-ৰ্ভকাঃ। নদ্যঃ সম্ভৈব বিখ্যাতা 🥯 যুদ্ধাপ্যনহা দ্বিজ।। সহশু,তিঃ 🔫 নদী নির্মাত রপরাজিতা। বিখ্যা তোভ্য সৃষ্টিশ্চ নহাপুণ্যা নহাফ-नाः ॥ विश्राम्य ख्या वर्गा थाउा নামান্তরেণ তু। আদের ঋতবুকো নাম ভতঃ সভ্যবুতঃ মৃতঃ॥ দান বুতানু বুতো চ তৃতীয়ক চতুর্থকঃ ভগবন্ত বাযুৰপ ভজতে চ যজনি চ ॥ #॥ जरेथव मधिमाखामा भव-छाट भूष्करता नहान्। हि छतन भूना-ণেন দ্বীপঃ স্বাদ্দকেন তু॥পরিবী-তঃ সমানেন সিন্ধুনা ব্ৰাহ্মণৰ্যভ ৷ ব্ৰ পুষর নত্ছে জ্বজ্বন সমিত ॥

দ্বীপ্থ্যাতি কর পত্র সহসাযুত শোভিত ৷ যদীভ রাসন বিশ্বসূত্র স্তস্য পুৰু।পতেঃ।। ছী পমধ্যে হবধি গিরি রেক এব নহানতে। স নান-সোভরো নান পাকার ইব বেষ্টকঃ । उग्र भृबीभाती भाष्यी (पवार्य <u> जब गार्त्रय। गिल्हा (श्रेन गरेबकः</u> গিরে বেষ্টনক পর ।। রন্ণক ধাত কৈণ্ড দ্রে বর্ষে নাসতঃ মৃতে । নান• তস্য গিরে বিপায়ত ্যেজন মৃছিত• ॥ ञार्याप्य ज्थागान साम्राभित পুরাণি চ। চত্ত্বারি লোকপালানা निन्तातीना॰ ছिডर्वछ ॥ यः शकिः कामानमा (सकः विश्व विवर्ध । गृष्ट्या वि इर्खि रेगालनम् महा मयू -সরাত্মক ।। অধ্যাসতে চ বৌপা খৌ পুজা শুস্ত নহাবলাং । তত্ত সংজ্ঞান্তরং নান্তি বর্ণানাও ব্রাহ্মণর্যভ ।। স্বাদ্দক্ষ্য পরতো লোকালোকা-চলে। মহান্। লোকস্ ঢাপ্যলে। কস্য নধ্যে গিরি রবস্থিতঃ॥ প্রা কার ইব সংবেষ্ট্য লোকান্ সর্বামহানতে । (वाकारवाकाहरवा नाम (ठनारशे পরি নির্ভিতঃ॥ নানসোভর নেরোঁ। ন্তু অন্তরে দাব**র্ডা মহী। তাব**হী काक्षी ज्ञि ल्याकालाका शत বিজ।। যত্ৰ পূণিছিত। বস্তা কথঞ্চি

मार्शनভাउ । भोरगी कास्ति क फोछा मर्ब वर्ग भुनाथिनी ॥ जाउः সরাণি সত্তানি তাণ্ ভূনিণ বর্জযন্তি-हि। लाकालाका नित्र यंस ला-কান্তে বৰ্ততে মহান্।। আবৃণোতি न তেজा॰ ति मृर्यप्राभीना मिल विका। তমতিক্রন্য জ্যোতী বি ক্ষনন্তে ন পুरविञ् ॥ তাবদুয়ाহবান বুজয়া-यात्म ह जाम्मः। आयाम विख्रत शृथी श्रकाण एका हिता जना।। ज-স্যা শ্চতুর্থ ভাগো হয় লো দালো-কাচলো শিরিঃ৷ তস্যোপরিষ্টাচ্ত্বা-রো গজেল্যা: সূনহাবলা:।। नियुका त्रुज्ञना ভূমি॰ करेत ताक्षा म•ऋ · তাঃ। ভগবানপি তত্ত্রিব বিশ্বক্সে-नामिভि व् जः॥ शार्थम भुद्रेत व् कान् ভূজৈ বহুভি ক্ছুতৈঃ। ধার্যন্জগ-তী মান্তে আকল্প মণি মারিষ ৷৷ যো হন্ত বিস্তার এত্স্যা ভ্ন্যা **স্তে পরি**-বর্ণিতঃ। তাবতী ভূরলোকাথ্যাসা-न्तु मञ्जनमावृज्या। उट्या त्यारमध्त গতি যোগিনা পুৰ্ণ্য মুন্তন। স্থা-ন ভগৰতঃ সাক্ষাৎ শ্বেড্ৰীপ **ই** তীর্য্যতে ॥ ইতি তে কথিত বুক্ষর্ **ভূ: गाल (म)। गवर्गन भवराम के वाह**ा रेय इहर मृत्याट मृ उ ज्राविम्। न्-বৰ্ণন ।। পুদক্ষিণীক্তা তেন সংশল

ভূগোল

वन कानना! म मागदा ह महीशा म বর্ষা চ বসুদ্ধরা।। ইতি 🗐 পদ্মপু-রাণে ভূনিখণ্ডে ভূগোল বর্ণনং নাম ১৩১ व्यव्यायः ॥ 🗱 ॥ (ज्ञार्जिय শাস্ত্রোক্ত ভূগোল যথা। সিদ্ধি সাধ্য মূপৈতি যৎ মারণতঃ ক্ষিপু भुनाराख्या यम्ता किंब भरायनः क्ञित्रनः नानि छ। नीनाव छी । न्-ত্যন্তী মুখরস্থােব কৃতিনা দ্যান্তা-রতী ভারতী। ত॰ তাঞ্চ পুণিপত্য **रगान मगनः** वानावरवाशः बुर्व ॥ # II (गानगुष्ट कथ्रान कात्र नार् I মধ্যাদ্য দ্যুসদা খদত্র গণিত ত-স্যোপপত্তি বিনা পৌচি পৌচ স-ভाসু नৈতি গণকে। निःमः मरया न **च**य•। গো**লে সা** বিনলা করানলক-व পুত্যক্ষতো দৃশ্যতে । তমাদ ম্যুগপপত্তি ৰোধ বিষয়ে গোল পুব-क्षार 53: 11 \$ 11 अथ (गान भूम•-স্থা গোলানভিক্ত গণকোপহাস খাহ। ভোজ্য• যথা সর্ব রস• বিনা-काः त्राजाः यथा ताज विविर्क्ति उक्ष সভা নভাতীব সুবক্তৃ হীনা গো ল্যানভিজ্ঞো গণক স্তথৈব ॥ বাদী ्वप्रक्रित्र विदेनव विमू**षाः शृष्टः श्रु**वि-् ই: সভা॰ জল্পলুন্তি: স্বাৎ পট্ট বটু জুভঙ্গ বকোজিভি: ৷ হ্রীত: স

মূপহা স মেতি গণকেং গোলানভি-ক্ত তথা জ্যোভিরিৎ সদসি পুগল্প গণক পুশু পুপঞ্চোভিভিঃ॥ #॥ অথ গোল चक्न मारा म्कार এবা বনিভ গুহাণা॰ সংছান মান পুতি পাদনার্থ । গোল: মৃত: কেতা বি শেষ এব প্রাক্তৈরতঃ স্যান্নণিতেন গন্যঃ ॥ # ॥ তাথ গণিত পুশংসা মাহ।জ্যোতিঃ শাস্ত্রফল পূর্বীণ गर्गो द्वारिक इंग्रिक्ट न्नः नः বলাশ্রি: পুন রয়ণ তৎ স্পৃষ্ট থেটা-শুষ্ ৷ তে গোলাশুবিণো হন্তরেণ গণিত গোলোপি ন জ্ঞায়তে ত ষাৎ যো গণিত ন বেন্তি স কথ शानामिक जागाजि॥ 🕸॥ व्यथ জ্যোতিবশাস্ত্র শুবণাধিকারি লক্ষ-ণমাহ। দ্বিধ গণিত নুক্ত ব্যক্ত মব্যক্ত সংজ্ঞঃ তদবগনন নিষ্ঠঃ শ ৰশান্তে পটিষ্ঠঃ। যদি ভবতি তদে-দ• জ্যোতিষ• ভূরি ভেদ• পুপঠিতু मधिकात्री (म। १नऽथा नाधिकात्री ॥ #॥ वृशक्त्रन वर्गन माइ। त्रा विह বেদ বদন সদন ছি সন্যুগ্রাক্ষ্য সবেদ নপি বেদ কিনন্য শাস্ত্র•। यमार छः भूषा ति उन्धी छ। वीमान् শাস্ত্রান্তর্ন্য ভবতি শুবণে প্রিকা-त्रो॥ #॥ अथ (भाषगृह्मा भुट्खा

र्थ ग्राङ नुकासिगाइ ! भान **ल्नाकु उ**द यमि पति अस्ति। मृगु द्व तेम् गः किछा ना वहव्या । विखन्नः माञ्ज्यः । नीवाभगः मृ विविक भरः भूभैत्रभाः भ यका विवन বিদ্বৎ সদ্সি-পঠতা পণ্ডিতোকি वानिक । क्षा व्य ज्म हान भूग স্নোক, ঘিষেনাহ। ভূম দ্ভচক চকান্ত পদিনে গুগণেচরৈ:। বৃতা ধৃতা বরা रकन (यन (नय नियामधः ।। किमा-कात्रा कियन्त्रामा नाना भाज वि हात्रभाट । की नृग्धी श व्यवा पुरिन्तु अमृदेन मृ निर्जाहाजाः ॥ 🕸 ॥ अथ গুহয়ুটীকরণোপপত্তি পুশু• শ্লোক-म्वरयनारु। नः निष्का मुज्ञान्युगानि ভ गरिः थरहानुभाउन यः महा खमहा দু,টতা কথ কথমভ্ৎ স্পষ্টাকৃতি देनिकथा। कि॰ मिणाडेत्र मुन्नमाडेत মহো বাস্বন্তর• কিঞ্চর• কিঞ্চোচ মৃদু চঞ্চলক তদিদ কন্তাত পাতঃ म्जः ॥ कि कम् कम् कम् कम् किमू ठल किशा ठल छ ए कल ক্মাত্ত সহিতঃ স্তশ্চ রহিতঃ (थि दुष्टी जायल ॥ कि॰ मृक् कर्म उत्थाप्रयाख जनस्य हिंदा वि-म्बु र्वाः। अर्बः त विभवः वमा नन नन शान विज्ञानाम एट

!। %।। अथ जिल्लासिंख निनेनान क्तर भूषे । स्त्रीक घरपेगार ॥ वर्ष-च् किल्**रक्। ब्रह्ममी उन्** विनगरियेन ণকোন্তর গোলগে। ননু তনু দিবসে। मञ्जी निना वेले विष्ठक्रन एकिन कि গতে।। ভবতি কি॰ দুচনিশ॰ দুচনিকা সিনা • দুগ্মণি বর্ষ মিতঞ্চ সুর্দ্বিশা ।। পিত্যু কিং শব্দি নাসনিত তথাযুগ मह्रम् यूगः कहिनम् किः ॥ # ॥ অথ রাশ্যুদ্য নান কাল ভেদ পুশ্-काई। ভरत्यमा किनाक नवाः म-भाः किमनरमः मगरेयः थल् तामवः । भम्भयास्प्रस्यं किम् लामविद्यः विवेद इथित इपि उ नमाः॥ क ।। जर्थ पूजित अंजीिक में इनि ं भूमें वृद्धार्षनार । मृज्जा वजा ९ श्रम मम नेत्रागुम्म वसारिकानाः विषम् (गाल वियि हि यंथा पर्मय-(क्क ज मण्डा। अथ वन्त्रार्क ग्रह गरेगा र्मिकाल (असाम् अभिष्ठि भूगान् स्त्रा-कालतार्क्षनार । जिथारल एट গুহ উডুপতে: কিয় ভানো স্তদানী ইন্দোঃ পাচ্যা• ভবতি হি রবেঃ भुगुरः कि॰ भुजीह्या ॥ व्यानः বদ কি॰ কাচ নতি মতিমতা। বর। [্]তৎ সংস্তি স্তিথৌ বাণে কিং তে সিন্ধে হতঃ হতঃ॥ 🛊॥ স্থ শৃ

क्षांबा हिन्तुमा भूतमा क्य वृष्ति পুশুমাহ ৷ শুকুস্য দ্বিজ রাজ এব भर्ता रान्।ः अर्खः अ उः मधृख ত্বগতোপ্যহোভুমবশাদেবাতি স कारिय। मः भाषा । भून खरी जन् गठ उन्नामुख रेनव कि॰ मृक्षमा क মশ স্তথিব মহসো বৃদ্ধ্যৈতি সদ্স্ত তা ।। ৠ ।। অথ পুথম পুশ্নস্য প্-থিবী সংস্থানোপপত্তে ক্তর বিব-क्रुतारि मार्ग भृषियानीनाः उद्धानाः भारि छक्नुः निथिन जगन्जनिनंक वी कः भन्न वुक्त मन्त्रा भूगिभ उत्राही তাবৎ ভজ্ঞৰ নাহ। যুমাৎ ক্ষুদ্ধ পুকৃতি পুৰুষাভ্যা মহানস্য গৰ্ভ্তে **২ছ**•কারে। ভূৎ থ ক শিথি জলে। র্ব্য-ন্ততঃ সংহতেশ্চ। বৃন্ধাণ্ড॰ যজ্জ্ঠরগ गरी शृष्ठ निष्ठा वितिधि विश्व गय স্কৃতি পরমৃ• বুন্ধ তত্ত্ব মাদ্য• ।। #।। यथ ज्यः यक्ष मार। ज्यः शिएः ममाइ छ कवि इवि क्रा জ্যার্কি নক্ষত্র কক্ষা বৃত্তি বৃ্ত্তো বৃতঃ সমূদনিল সলিল বেগ্রান তেজোন (या १यः। नान्।। श्रादाः श्रमाकः। वि-যতি চ নিয়ত তিষ্ঠী হাস্য পৃষ্ঠে ्रिनिष्ठः विश्वकः **मध्यः म**न्नुक मनुका मिछारेम्छाः मग्डाट्॥ मर्बछः भ^री बंग्राम भाग हिन्। करेग किनः।

क्रिक् अन्व शृष्टिः (क्रिक्त भुक्रतः व।। 🗱 ।। जय भूतातम् ज्तात পরম্পরা যা পঠিতা ভার নিরাহ্ মাহ।মূর্ত্তো ধর্তা কেজরিক্সা ওদঃ उन्राम्यात्या श्ल्रिव मञा नवश् অন্ত্যে কল্প্যা চেৎ স্বশ্বজ্ঞিঃ কিন্ कि भा ज्ञिः माष्ट्रे मृर्खेन म ।। 🗱 ।। जाथ कथितयः ज्रानः देव রিত্যা শঙ্কা॰ পরিহরমাছ। এ **क्ष जा**का नवारा मह मी जला विर्ध তিঃ কে কঠিনত্ব সম্মান। মক্ষ ভুরচলা স্বভাবতো যতো বিচিন্দ খলু বন্ত শক্তয়: ।। আকৃষ্ট শক্তি 🤭 मरी उरा यद श्रष्ट्र खक् बाजिमूथः **স্থাক্ষ্যতে তৎ পত্ত**িব ভাতি সনে সমস্তাৎ স্করিয় হড়ঃ থে ॥ # ॥ অথ বৌদ্ধানা গুক্তিনা ছ 1.ভ পঞ্জরস্য ভূমণাবলোকাদাধা ার শ্ন্যা করিতি প্রতীতিঃ। খাই न मृष्ठे । धक व कामा ७: (थ २ थ: नुयः जीजि वरिंख (वो**षाः ॥ (हो (हो ३** বীন্দূ ভগণৌচ তদ্বদেকান্তরৌ তাবু एयः वृष्क्रजाः । वस्तुत्रामय गनर्थवा मान् वृदीमा छ जान् शुविष् कि युकः ।। 🗱 ।। अथ (उषा • युक्ति जक्रनारः। ভৃঃখে হবঃ খলু যাতীতি বুদ্ধি বৌদ্ধ मू धा कथ । या जाया उक्ष मृक्षा शि (थ

বং কিপ্ত' গুৰু ক্ষিতি । । 🕸 । অথ किराना युक्ति छक् म ह। कि॰ ११-गुरक्तु रेवखन एडिस्टन ए या वृथा क् भार है स्वाह्मा विकाका है। धु राष्ट्रभा भरिष्ट्र- । स । ज्यानमा जनजाः निदाकि छ मेर । यपि नमा ৰুক্রেদের সঁলিভা ভগবতী ধরণী ভরণিঃ ক্ষিতে: ৷ উপরি দূরগভোপি পরিভূমন কিয়ুন্তি রম্বর রিবনে-क्टिक्स यमि 🎨 😘 अन्तरः यनकाठ-লঃ কিমূ ভদন্তরগঃ স ন দৃশ্যতে । উদগय॰ नन् निक तथा॰ मुमान कथ म्राहि ज हिक्किंग ভाগতः॥ 🕸 🛚 1 অথ পুত্যক্ষ বিরোধ শঙ্কাণ নিরস্য নাহ। সমো যতঃ স্যাৎ পরিবেঃ শ তা শঃ পৃথী চ পৃথী নিতরা ত্রী-যান্। নর 🏗 তৎপৃষ্ঠ গতস্য ক্সা স মেব তস্য পুতিভাত্যতঃ সা॥ 🗱 ॥ ষোক্তম্য ভূপরিধি পুমাণম্য উপ-পত্তি মাহ। পুরান্তর চেদিদমূত্তর नऽ। ९ जमक वित्त्रय वरिव समा कि । চকা শকৈ রিত্যনুপাত যুক্ত্যা যুক্ত নিক্তি॰ পরিখে: পুনাণ•॥ #॥ ত लव मृती**ञ्चन्तार। नित्रक्र-एन्धा**८ ক্লিতিবোডশাংশ ভবেদবন্তী গণি (जन स्याधा जनस्य । व्यासमा न• ध्यः म्यान्डमान ममाद्द किः उर्

कः॥ म्रह्मात्ति गुरुप्ठि गुरुरा मयाख हायामिकः भविधिन। घटेट १मूनं। हि। नात्मान (उन क्र क्र क्र মহী পুমাণ প্রামাণ্য মন্বয্যুজা ব্য-তিরেককেণ।। 🛊 ।। অথ ভূগোল शूत्र निर्देश मार । लक्षा अ मर्थि य-মকোটি রস্যাঃ প্রাক্ পশ্চিমে রো-मकभावनकः। यथ उठः गिष्कभूतः मूरमकः (भीरम) थ यारम। व उवानन-শচ।। সব্ত পাদান্তরিতানি তানি ञ्चानानि यु (भावविष्मा वम् छ । **दमञ्ज (ग**रहो जुड़ मिष्क मःघा श्रेरद ह मर्ख नज्ञकाः मरेम्जुाः॥ या यञ তিপ্তত্যবনীতলস্থ মাত্মান নস্যা উ-পরি স্থিতঞ্। স মন্যতে হতঃ সং চতুর্থ সংস্থা মিথক তে তির্য্যগিবা गनिख्या व्यथः भित्रका अरुवास्त्रक्रा ছाया भन्षा इत नीव्रजीत्व । अना ফলা স্থীর্য্যাথঃ স্থি তাশ্চ তিপ্তরি তে তত্র বয়• যথাত্র II 🗱 II অথ দ্বীপা-नाः जब मार्गाक जः श्रान बाह । ज्य तर्कः कात्रनिका करकङ अयुषी १ शुक्त ताहार्य। वर्षाः। वाष्ट्रान्यम् দ্বীপ ষট্কস্তথান্যে ক্ষার ক্রীরাদ্য श्रुवीना॰ निरवणः ।। **लय**ण कलि त्रामी पृथ गिन्ह क जमानम् अम् अ রশ্মিঃ আশি ক্ষাদ্ভুব। নহিত

ভূগোল

চরণপদ্ম: পদ্মজন্মাদি দেবৈ র্ষসভি अकल वारमा वामूरस्व क यब ॥ मध्य ঘূতসেঃজুরসস্য তমান্মদ্যস্য চ স্বা ছুজলস্য চাস্ত্য:। স্বাদ্দকান্ত বঁডবান· লো ংসৌ পাতাল লোকা: পৃথিবী-श्रुटानि ॥ हक्ष्ट क्ना मनिश्रनाःमु কৃত পুকাশা এতেষ সাসুরগণাঃ ফ शिता वमस्ति। मीवास्ति मिवा तम्भी রম্ণীয় দেছৈঃ সিদ্ধাশ্চ তত্র হি ল সৎকনকাব ভাসৈঃ ৷৷ শাক ততঃ শাল্মল মত্র কৌশ কৌঞ্চঞ্চ গোমে দক পুষরে চ। ছযো র্ছয়ে রন্তর নেক নেক সমুদ্যো দ্বপি মুদাহরভি ।। 🗱 ।। অথ জন্মরীপ মধ্যে গিরি নি-रिका वर्षान नव्यक्षानाह । जङ्गा দেশাদ্দিমগিরি কদক্ ছেমকুটশ্চ ত **মাত্তমা**দ্বান্যে নিবধ ইতি তে সি-म्नू भर्याञ्च रेपर्याः। এवः निष्कापूष्ण-शि भूताए **म्क्**वहुक्त नीला वर्षाराऽ या॰ जछ तिरु वृथी चछति (मेनिरनः भान्।। ভারত বৃষ্ নিদ হু দুগমাৎ কিন্নর বর্ষ মতে। ছরিবর্ষ । সিদ্ধপু রাচ তথা সক তমাদিকি হির্মায ब्रम्यक वर्षि ॥ मान्यवाः मह यमकाहि পত্তনাদ্রোমকার কিল গন্ধমাদনঃ। नील रेनल नियवायवी ह छो अख्रा न मन(या दिवार्डः ॥ मान।वब्जनः

ধি মধ্যবর্ত্তি যত্তত্ত ভদুত্তরগণ তত व्थाः। गन्न रेमल जेलदामि मध्यमः क्तिज्ञानक भिना कनाविषः॥ नि-यथ नील जूगक जूमाल दिक जैल मि-লাবৃত মাবৃত মাবভৌ অমর কে-नि अनाय मम्भन न किंत काक्षन हिज मही उन ।। 🗱 रा व्यथ मिक म॰ इान भार । इह हि सिक् रिविश किल मध्रगः कनक त्रज्ञम्य जिम्मे । ल-যঃ। জহিণলগ্ম সপদাল কৰিকৈতি **চ**_भूतां विषः समयवंग्न् ॥ विऋस्र रिननाः थन् मन्द्रताम् जूगक् रेन-লো বিপুল: সুপার্খঃ। তেষু ক্রমাৎ সম্ভি চ কেতৃবৃক্ষাঃ কদম্ব জন্বট পিপ্রলাখ্যাঃ ॥ জঘুফলামল গল-দুসতঃ পুর্ত্তা জামূনদী রসযুতা মৃদ-ভূৎ সূবর্ণ। জাম্বনদ হি তদতঃ সূর সিদ্ধ সংঘাঃ শখৎ পিবস্তুয়্তপান পরাছ্মথা স্তে ॥ বন• তথা চিত্ররথ• विठिब॰ (७ श्रुञ्जद्रा नन्सन नन्सनश्रः) ধ্ত্যাহ্বয় যুৎ ধৃতিক্ৎ সুরাণা ভা নিষ্ণু বৈভাৱ মিতি পুসিদ্ধ।। সরাণ म्रोथा उञ्चल भानमः सहाकृतः ম্বেতজল• যথা ক্রম•। সর:সু রামা-রমণ শুমালসাঃ সূরা রমন্তে জলকে: लि ला**लगाः॥ अ**नुष्ट्र काश्वनययः नि-খর এয়ঞ্চ মেরৌ ম্রারি ক পুরারি

পুরাণি ভেষু। ভেষামধঃ শতমথ अन्तराष्ठकानाः अक्तापुर्वानिन् **म** मीम भुद्रांशिकार । # 11 उब य-न् विरमेश भारा विकृशनी विकृश-দাৎ পতিত্য মুম্বের চতুর্বাসীৎ বি ক্ষমাচল মন্তক শন্তসভঃ সংগতা গ-ক। বিশৃপ্তি। সীতাখ্যা ভদাুখ সা-व्यक्तनेक है ए अ अ वर्ग । ठक्क क কেতুদাল ভদুখ্যা চোত্তরান্ হক ন্যাতা !! যা কৰিতাভি**লসিতা** দৃ**ষ্টা** শ্টাবৃশাহিতা পীতা। উক্তামৃতা **স্তত। বা পুৰাতি ব্**ল্যা**পি পাপিনঃ** পুক্ষান্।।যা চলিতে দলিতাথিল বন্ধে। গছতি বল্গতিতৎ পিতৃস য:। পুাপ্ত তটো বিজিতান্তক দৃতো যাতি नरत्रा नित्रयाथ जूत्रालाकः ॥ #॥ ज्य ভারতবর্ষ মধ্যে নবখণ্ডানি সপ্তব্ধ- " नाहना॰ काइ॥ अनु॰ करमक म কল কিল ভামুপর্ণ মন্যুলভস্তিমদ-ভশ্চ জ্মারিকাখ্য। নাগঞ্চ সৌম্য **মিহ বাৰুণ মন্ত্যথণ্ড• গান্ধৰ্ব স**•জ্ঞ-মিতিভারতবর্ষ মধ্যে ৷৷ বর্ণ ব্যবৃস্থি-তি রিহৈব জ্মারিকাথ্যে শেষেষু চান্ত্যজনা নিবসন্তি সর্বে। নাছে · ন্দু শুক্তি মলয র্ফক পারিপারা: স 'হুঃ সবিদ্ধ্য ইহু সপ্ত স্বলাচলাখ্যাঃ ॥ 🗱 ॥ व्यथ (वाक वाक्र वाक्र भार ।

ज्लाकात्था मिकल वाकामणाम-माट (मीत्मा १य जूदः सक त्मकः । वजाः भूरिगाः (थ मरः माइक्राना-**ভো रुनन्नानरेन्नः रेव छनः म**ङ्ग्य-स्तरः ॥ 🛊 ॥ नियुष्त्रहा मारः। नहाः পুরে २र्कम् यामामयः म्याखमा मि-नार्कः यमकाठि भूर्यताः। यथः खजः সিদ্ধপুরে হস্তকালঃ স্যান্ত্রোমকে রা-बिन्दा छरित्य।। यद्यानित्ञ १र्कः কিল তত্ৰ পূৰ্বা তত্ৰাপরা যত্ৰ গতঃ স চান্ত । তন্মৎ স্যুতোন্যে চ ততো थिनाना मूरक् शिखा भिक विकि शुनिकः॥ 🛊 ॥ यथ वित्नव भारु। অথোজ্জিয়িন্যা: স্ব চত্তর্পভাগে প্রা-চ্যা॰ দিশিস্যাম্মকোটি রেব। ত **७ म भ**क्षाम ভবেদবন্তी लरेक्षय छ-न्याः कष्टि श्रुकीह्याः ॥ उरिष्द সর্বত্র যতে৷ হি যৎ স্যাৎ প্রাচ্যা• তত তত্ত্ব ভবেৎ পূর্তীচ্যা । নিরক দেশাদিতরত্র তমাৎ পুাচী পুতী-চ্যে চ বিচিত্র সংস্থে॥ ৠ। অথ ভ-**চক্র ভুমণ ব্যবস্থা মাস্থ।** নিরক্ষ দে-শে ক্ষিতি মণ্ডলোপগৌ প্রবৌ নরঃ পশ্যতি দক্ষিণোত্তরৌ। তদাশ্রিত থে দলমন্ত্ৰ বত্তথা ভুমন্ডচক নিজ মস্তকোপরি॥ উদগ্রিশ যাতি যথা यथा नद्र उथा उथा था इंड नृक न उ

লং। উদপুরং পশ্যতি চোন্নতং ক্লি-তে उपस्रात (याजनजाः भवाः नकाः ।। যোজন সংখ্যা ভাণলৈ ৩৬০ গুণি-তা স্পরিধি জ্তা ৪৯৬৭ ভবস্ত্যু-শাঃ। ভূমৌ কক্ষাযা• বা ভাগেভ্যে यासनानि ह वृद्धः ॥ 🗱॥ अथ (एव দৈত্যানা॰ প্রক্র সংস্থান নাষ্। সৌম্য পুর মেঞ্চগতাঃ থ মধ্যে যা-माक रेमजा निज मस्तकात्म् । म-व्याभमवा जुमम्क ठक विलाक যন্তি কিতিন্ন পুসক।। 🕸 🛭 উত্তর গোলে কি ভিজাদ্দ্র পরিভো ভুমন্ত मारिजाः। मेदाः विहमाः मेज्जः পশ্যস্থা অপসব্য গামের।। দ্ব-ব্দুান্ত মারোহতি থৈ: ক্রমেণতৈরেব वृद्धि त्रवाता हुडी नः। यदिव मृष्टेः পূথন• স দেবৈ স্তবৈব তিষ্ঠমবিলো-कारा कि।। हिन भूताना भगन ग-দুভর পনিশেতর এসা হিতিকৈ: পু-की खिंउ। हित्मा मूर्थ शर्क हिन्दान्व তমত নিশা তথা তৎ ফল কীৰ্ত্তনা যবৈ।। বিধৃদ্ধ ভাগে পিতরে। বসন্তঃ স্বাধঃ সুধা দীধিতি সামনন্তি।পশ্য-डि **७ ९र्कः निज्ञ मन्डरकारक्व** मर्स्म याजा श्यामू प्रता जिस्या ।। क्रय দলে পক্ষদলে হভুগদৈতি শুক্তে হস্ত লেত্য তথ্ব সিদ্ধ । ভার্দ্ধান্তরত্বান [॥]

বিধাে রধ:স্থ্ তমামিশীথ: খড় পৌর্ণমাস্যা ।। যদতি দুরগভো 🕾 হিণঃ ক্ষিতেঃ সভত মাপুলয় রবি মীক্ষিতে। ভবতি তাবদ্ধ • শবি তস্য তদ্মুগ সহসু গ্রগ দ্যু নিশা विर्धः ॥ # ॥ जय हु भितिधि मानः भाक्षिण मिन विस्मिवार्स मार প্রোক্তো যোজন সংখ্যয়া ই পরিবিঃ मधाक नन्तास्य ६२५१ उद्योगनः म जुनक नायक जुनः निकाःनाद नाषिकः ১৫৮১। २८ शृष्ट (क्रज़ कन यथा यूग छन जिम्महत्राष्ट्रापुर्या 🕪 ৫০-০৪ ভূমে: कन्मूक जानवर 🖛 🔫 রিধি ব্যাসাহতে: পুসুট গা 🕸 🛚 🖰 शृष्ठ कणमा जालाकमा म्यग माम मुष्ठे॰ कन्मुक शृष्ठ कान दिन्ता (११) कन बन्निङ नस्त्रनाम् नडाः न কোপি ন ভবেদ্যমাৎ কল বাস্তব । ७९ भुजाक विकक मुक्का भिष्ट নৈবাস্ত ৰা চাস্ত বা হে পৌঢ়া গণ 🐃 বিচারয়ত তল্মধ্যন্থ বুন্ধ্যা ভূশা ।। 🗱 ।। व्यथ मन्युक्ति भाक्। यद् भः রিখ্যন্ধ বিষয়ে বৃত্ত কৃত্য কিলা কেন। তেনাৰ্ছ্ণ ছাদ্যতে গোদ িঞ্চিত্ৰপ্ত শিষ্যতে ৷৷ গোল কে क्वाङ्गाष्ठ (क्व क्व॰ यडः । সাৰ্চ্জ দ্বিশুণিতাসন্ন তাব্দেবাপরে

ान ।। এवः भक्ष छेनाट (क्व क शट शृष्ठकन थन् । नाविक जाय-ত **তেন পরিধিমু• স্বর্তঃ** কৃত•॥ বৃ*ক্ত* াচ্ছ ফল শ্রুমাৎ পরিধিন্ন ন যুক্তি र । मूक्षेषाम् अशिवमारामाः मूक्षे ज् 🛚 ाष्ठिकः कनः ॥ 🗱 । अथानाथा भुवि পাদ্যতে। গোলাদ্য পরিধিঃ কল্পের। विषय कार्यनिष्ठ मिंजः। मूथ वृक्षगति খাভি ফুৰদামলকে স্থিতঃ ॥ দৃশ্যন্তে বপুকা ঔষৎপাত্তক পরিধে মিতাৎ । উদ্ধাধিঃ কৃত রেখাভি গোলে ব পুান্পুকল্লযেৎ॥ তত্ত্রিক বপুকক্ষেত্র কল থতৈঃ পুসাধ্যতে। সর্ব জ্যৈক্যণ বিভন্ত্যাৰ্দ্ধ হীন• বিন্ত্যাৰ্দ্ধ ভান্তিত• ।। এव॰ व शुक्ल॰ उৎ महासाल वहान সন• যতঃ। পরিধি ব্যাস ঘাতোতো लानभृष्ठ कनः कृष्टेः ॥ 🚁 ॥ व्यथ ज्राः भूवय (जरान् भूवयक्षारः। वृक्ति विं(ध तक्ति जूवः मगन्नार मान् বোজন ভূ ভব ভূতি পুরি:। বুলেস্ত-लाय रयाजन माज तृष्ट्व नाला जुदः পাकृञ्जिक २ थिवायाः!! प्रित्न प्रित्न यश्चियाञ हि जुल्ज रेमनन्तिन ज॰ शुनगः वरिष्ठ। वाक्षः वनः वुक्तिना-ভ গলে ভূতানি বদ্ৰুক্তন্-ৰুক্তি । वृक्षाकारव यद शुक्षि भुवान्ति সরণ্যতঃ পুাক্তিক কৃতীন্দুঃ।

वीनान्। कथाभू हो छत्र वाट भ्यक् ক্রিয়ত্তে পুক্তে বিকারে:।। জ্ঞানামি **एका थिल भूग्र भाभा मनः मनाधाय** इत्तो भत्तरभ। यम्रयागिरना यास्त्रि নিবৃত্তি নমাদাত্যন্তিক চেতি লয় শ্চ তুর্না।। #।। অথ বুন্ধাও গোলমাই । ज् ज्थत जिल्म मानव नानवाम्। বে যাশ্চ ধিষ্ট্য গগণেচর চক্র কক্ষ্যঃ। লোক ব্যবস্থিতি কপয়ুর্গরি পুদি-ষ্টা বুক্ষাও ভাও জঠরে তদিদ সন-ख॰ ॥ 🗯 ॥ व्यथात्म्यान्तिज• तुक्काखः यान भ्रातीक यशि भुमक्षाम्बुवम-जिया काहिरिय नंथ नन्त यहेक नथ ভ্ভ্ছ্যভুলস্বেদুভি জ্জোতিঃ শাস্ত্ৰ विद्या वर्षा जना क्या विभाग्या-**इटिनः ১৮৭**১२०७৯२००००००ः । छम् বুক্ষাও কটাহ সম্পুট তটে কেচিজ্জ-গু বেস্টন কেচিৎ প্রোচু রদৃশ্য দৃশ্য; ক গিরি পৌরাণিকাঃ সূর্যঃ ৷৷ কর-তল কলিতাগলক ব্যম্প সকল • विषष्ठि (य (भाषा । पिन इत कत नि কর নিহত তমসো নভসঃ পরিবি कपिछ रिष्ठ ॥ वृक्षा ७ मार्च वि व मा स (ना वा कल्ल पुरः कामा उ (गाज-नानि। याविष्ठ शूखि तिरु ७८ शुनागः পোক্ত থ কঞাথ্য নিদ । নত । नः॥ ইতি সিদ্ধান্তশিরোমণৌগোলাখ্যা-

থে উ্বন্ধেনি, সন্তার ।।
ভূছাবং ি প্র জারনার: । ইতি
শাস্তার ।

्राडः पुर जूनागः । ই छि রাজ-ि निर्यण्डेः ॥

ভূজদুঃ স্ত্রী গোপ্নঃ।। বিকল্পতফল । । ইতি মেদিনী।। ভূমিজদুঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

ভূত॰ क्वी युक्तशामागामा श्वापिः। পৃথিব্যপ্ তেজো বায়াকাশ পঞ্চ ক ।। খত । সত্য ।। ইত্যমর ভ রতৌ।। পিশাচাদি।। জন্তঃ। ইতি व्यक्ति भयत्रज्ञावत्न्यो ॥ वस्रञ खानुग<u>त्र । यथा। इन</u> नित्र म ভূতেন ব্যবসারায়্যেয়্প:। ভূত-মগ্যনুপন্য স্ত॰ হীযতে ব্যবহার-**उः॥ ছল• পুমাদাভিহিত•। नि** রস্য পরিভ্যজ্য। ভূতেন বস্তু ত-জ্বানুসরণেন । ব্যবহার। মধেদন্ত• নৃপঃ। যশা ভূত নিপ বস্ত তন্ত্ব-পি অনুপন্যস্ত মনভিহিত হীয়-তে হানি মুপগছতি ব্যবহারতো ব্যবহারেণ সাক্ষ্যাদিভিঃ। তম্মা क्ञानू मद्गा कर्जवार । यथार्थि भू ত্যন্তিনৌ সভ্যনেব বদত স্তথা স মভ্যে<mark>ন সভাপতিনা</mark> যতিভ্ৰুণ সাণাহিতি কুপাথৈ তথা নতি

भाक्षामि विज्ञालकरेगव निर्नाश ভবতীতি। অথ সর্বথাপি ভৃতানু-< সরণ[্]ন শক্তেকভূ^ন ্থা সভি भाक्यापि जिल्ला कर्मा है छानु-**कन्नः। यथा छ॰। जू**ं हवानु मादि ত্বাদ্বিগতিঃ সমুদ্ধীসূতা। ভূতভজ্ব र्थ युक्क नद मुद्दिमा जिक्किक एक নিতি।ত্রভূতানুষারীর দেহারে: मूथाः हजानुमाती द्वन्तेतः। इंडि মিতাক্ষর। যা ব্যবহার প্রানঃ II **ज्**ठ• वि जुतीरहासकोउ•। বৃত্ত ।। সম । সদৃশ ।। ইত্যমর ভরতৌ ৷৷ পুাপ্ত• ৷৷ সত্য• ৷ ইতি (मिनि) भदत्रज्ञायलाते ॥ ভূতকা-**लम**ऽ भर्यऽारमा यथा। वलः २ यः তীত ৩ হ্যন্তন ৪ নিভূত ৫ গত ৬। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। উত্তরপদ-স্থ এব ভুত শব্য: সমার্থ ইতি শা **क्तिकाः। यथा (न्व ज्**टा **१**य•। ইতি ভরতঃ ॥

जुः शृ (प्रविधानि विष्मवः। म ह

 जायामूर्शाक् मूर्थापिः शिमाहिल
 प्रा कृषान्ह्रया वालगुरुः। ইउप्रयं
 ज्वलो ॥ स्रमातः। ইতি व्यक्ति ।।

 गिर्याहिन्तुः। ইতি भयत् वाली ॥

 कृषहर्जूमंगी। ইতি विकाद्यस्यः

 ॥ ॥ जुङ्गाभकीयदः स्था ।

শ্বেতাপরাড়ি জান : পিষ্ট তণ্ডু-ल वाहिना । 😘 नम् भूषानः। भाष्कु छ वृन्तका हिन्द्रिशी व्यवस्त श्वाने म्। १ । अन्दीष्ठण ज्उर्ध। जुजक दर्भेरंत हिन्नु निम्न भणानि ির ব্বাঃ ।। কীর্ম্বগ এভিঃ স্যা ল্লেপ্সেক্ গ্রহরঃ কৃতঃ গোরোচনা जन्मिन जिल्ला रेनकव मधु।। শঞ্জন• কৃত ফেভিঃ স্াদ্পুছ ভূত-হল শৈব। অপিচ।বচা ত্রিকটুক-रेक्ष्य जनकः (त्रनाकः ह। निक्षिश ত্ৰিকল তেওঁ, শিব্নীৰো **রজনী**দ্বয ় প্রিত জেল কিডটু লামূত্রেণাব-য্বিত। ১৯১ নালেখনঞ্চৈব স্থান मूद्र र्डन॰ उथा ॥ अभयात विषा-মাদ শোষলেক্ষী জ্বাপহণা ভূতে ভ্যশ্চ ভয়• হন্তি রাজদ্বারে চ শা-সন• ॥ ইভি গাৰুডে ১১২। ১৯১ व्यथायः॥ ॥ मञ्जूगगज् जा यथा। হতে বরাহস্য গণে ভর্গ নাসাদ্য তে গণাঃ । চতুর্ভাগাঃ স্বয় ভূত্বা ভূত• কর্মেতি বৈ জ্ঞা। ভূতত্ব ম ভৰত্তেষা॰ চতুৰ্ভাগৰতা॰ তদা। বচনাৎ পদ্মজাতস্য ভূত গুলাম তো মৃতাঃ ॥ বো লোভ বিদিডঃ পূর্ব ভূত গুান ক্চতুরিখঃ। যভ ख्टिं १ १ विका. यदि छ छ उनुमा উচ্যাত । ব্রি বং সর্ব নাগ্রাণ ভূতাঃ শার্ম নথা।ইতি কালি কাপুরাণে ২৯ অধ্যায়ঃ ॥

ज्वत्मः शृ यनामथा। उठ्न ।
ज्वत्मः शृ यनामथा। उठ्न ।
ज्वत्मी १ । इठ ।
नवः ।। ज्वत्मी २ जन्न कमी १ ।
रुक्ति १ इठ प्रद्याना।। ज्ञाना। दिम इत ज्वत्मः क्षेत्र । व्या प्रता ज्वत्मा। विवामित्र । इठ प्रद्या व्या । विवामित्र ।
ज्वत्मी क्षी ज्वत्मा। विवामित्र ।।
ज्वना ।। विवामित्र ।।
ज्वना ।। विवासित्र ।।
ज्वना ।। विवासित्र ।।
ज्वना ।। विवासित्र ।।
ज्वना ।।

ভূতগন্ধা জী মুরানামগন্ধব্য । ইতি জটাধরঃ।।

ভূতমু: প্ উষ্ট্রাইভি হেনচন্দুঃ।।
লশুনঃ ।। ভূর্ত্কঃ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।৷ ভূতনাশকে তি ।।
ভূতমী ত্রী তুলসী । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।৷ মুণ্ডিতিকা । ইতি রত্ত্বনা

ज्राह्म ही (भीनकार्डिकक्ष-हर्ण्यनी। ना এर यमहर्ण्यनी। उटक्राप्याभाग्याहरूमाना

धर्मत्राज भूजा कार्यता भुगवुकः। नान गावणाक कार्या नेत नंतक ভीक्जिः ॥ অকণোদ্যতো १नाउ রিকাযা• সাতি যো নরঃ। তস্যা-ক্ষিক ভবো ধর্ম্মো নশ্যত্যেব ন স•-শযঃ। স্থান্দে চ তবৈব। কার্ত্তিকে क्षभाक्ष जू ठजूर्मभाराः विश्रमाय। অবশ্য মেব কর্ত্ব্য স্থান নরক ভীক্ভি:।। কিঞ্চ পাদ্মে তবৈব। তত্ত্বত তর্পণ কার্য্য প্র্যারাজস্য नामिंडः। जीवर भिठा न सरी उ **७**र्भग॰ यम जीग्रारयाः ॥ यरद्धाः পবীতিনা কার্য্য প্রাচীনাবীতিনা তথা। দেবত্বঞ্চ পিতৃত্বঞ্চ যমস্যা-স্তে দ্বিৰূপতা ॥ নক্ত• যম চতুর্দ্দ-न्याः यः अर्ग्याहिव अमिर्धा। न ७९ ক্রতৃ শতেনাপি প্রাপ্যতে পুণ্য থী-দৃশং ৷৷ সমারী বটুকান্ পূজ্য তথা रिगव जलांधनान्। त्राजम्य कनः তেন প্রাপ্যতে নাত্র সংশয়ঃ।। কা র্ত্তিকে ভৌম বারেণ চিত্রা কৃষ্ণা চ তুর্দশী। ত্রস্যাণ ভূতেশ নভ্যর্চ্য गाह हिवभूत नतः ॥ किथा यमा वामा कञ्चलंगाः शुक्ताय पीश मानञ्शयमभार्गाञ्चका'अ**रञ्**राम्हऽ তে কার্ত্তিকেনরঃ 🏿 ইতি 🎒 হরি ভ क्तिविना मः ॥क्रा। जिल्हा विवास

। কার্ত্তিকে কৃষ্ণাক্রিচ চতুদীলার विस्मान्त्य । ज्यान्त्र (स्व कर्डवर् हार न- नवक ीक जिः। । यहा गार्श शहा ব্দ ভারবেছিরসোপরি 🏴 🕏 🕬 ভগণ কার্য্য **ধর্মরাজ্মী নাম**ি ॥ नत्रकाय भुगाउत्य भिनः अन् का (एवजाः। नत्रकार्यं स्वक् निव् । অর্থো হভিধেয়ে রৈ বস্ত প্রাব্রীয 📑 নিবৃত্তিযু। ইতি নির্ত্তাবিপ তাঁ 💥 ইত্যনেন চতুথী বিধানা ত मार्ग ज्ञागन मजः। मीजलारः 🕆 गायुक नक्छेक म्लान्चि । इंत^{्र} मभागार्ग ज्ञागामानः भूगः भू **ততঃ পুদোষ স**নযে দীপান্দদ পুযরুতঃ। বুন্ধ বিষ্ণ শিবাদীনা 🕟 नरमयु मार्थयु ह ॥ ভविष्यु । का ভৌনবারে চ চিত্রা কৃষ্ণ চত্দ# 🖂 তস্যা নারাধিতঃ স্থাণু নবৈছিব 🦘 পুর•।। যা॰ কাঞ্চিৎ সরিত• 💯 🔆 কৃঞ্পক্ষে চত্ৰ্দশী । যমুনায শেষেণ নিয়ত স্তর্গয়েদ্দান্ !. মাধ ধর্মরাজায মৃত্যুবে চাতকার জ ।বৈবন্ধতায কালায সর্বভূতক্ষ **চা∡ই ডুম্রায দপা্য নীলায প**রান हित्। वृक्ताम्बाय हिजाय 🗁 **७**छाय रेव नमः ॥ এकिकम् । 🖑 🥫 निपु । खी छ ममा जना अने 🖰 ।

मय्दमत्र क्छः भाभः उदक्रा (एव प्रणाडि ॥ १३। वाध्वाप्त ্যতুদ্দাশ শাক ভক্ষণ কর্ত্ব্যণ। তত্র নিৰ্বা**মৃত্য**ুপ্তল কেমুক বাস্ত্ৰণ अर्थन कालक्षित्य करा भावि भी शिनामा जिलाक शहूक लोड खपूरी सुर्वा जिल्लाकी मूनियाकः भिविदिन थाम् छ (य मानवाः (भू **७५॰ क शांडि** कां जिंक मित्न कृष्य ए पूर्ड जिस्थो ॥ अयाः अयश्वीः शः ট্ক পটোল শৌলু শুলফা ইতি ्या**उ॰ मृ**नियाक॰ मृयनिमा रिक শ্যাত । ইতি তিথ্যাদিতভু• । की की की ना भी। इंजि नय ाला ॥ गञ्जना॰नी । ইতি बाज-्निर्घणे: ॥

্ব্ৰী পুণ ত্ডাভ্গ্ৰ্জঃ॥ রক্ত রবীর:। ইতি রচজনির্ঘটঃ॥ ক্ষমঃ পুণ শ্রেমান্তক্তঃ। ইতি জনির্ঘটঃ॥ বাত্রী জী পৃথিবী। ইতি তিকাও

वाशः भः निवः। **३७ भद्र**वदः

न्यः ॥

ह्याधिका जी मूर्ग **रेडि। (रुम** हेर्मु: ॥

र्डन्**मन क्री क्प्राक**ा हेलि बाख

निर्यण्डः ॥

ज्ञनामनः भू जञ्जाकाः। ३७ রত্ননালা॥ সর্বপ:। ইতিরাজ-নির্ঘণ্ট:॥

ভূতপ**ী জী তুলসী**। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টা।

ভূতপুস্থ: পু॰ শেগানাকনৃষ্ণ:। ইতি বহুনালা॥

ज्ञन्निम खी जाविनीन्निम ।
ज्यभग्नी ४ मजन वादिनीन्निम ।
ज्यभग्नी ४ मजन वादिनीन्निम ।
ज्यभग्नी ४ मजन वादिनीन्निम ।
क्विज्ञानिम विक्रा देखि महानिम ।
ज्वज्ञानिस न्य प्रक्रम सम्मानिक

ভারতোক্ত ত্রা সহসুনানান্তর্গত নান ।। বট্কভৈরবঃ । ইতি বিখ-সারতজ্ঞাক ত্র্যাঞ্চোতরশত-নানান্তর্গতনাম ॥

ভূতভূৎ পূ• বিষ্ণু:। যথা। ভূত-কৃৎ ভূতভূজাবো ভূতাল্বা ভূত-ভাবন:। ইতি তস্য সহসুনাম স্তোক•।।

ভূতমারী **ত্রী চীডানামণন্ধদুব্য ।** ইতিরাজনির্ঘ**ট: ।।**

ভূতৰজ্ঞ: পুণ ভূতৰ্লি:। স তুপক্ষ সহাযজ্ঞান্তগত বলিবৈশ্যদেব ক-মণী। যথা। ভূতেভ্যোবলি হরণ ভূত যজ্ঞ:। ইতি হারীভদ্রণ।। জন্ম ক্রান্থ **ইব্যা** ভূগনিন জী প্রা । ইতি রাজ নিয়ণ্টঃ !!

ভূতবাসঃ পু॰ কলিজনঃ।ইত্যমরঃ॥ ভূতবিজিলা স্ত্রী অপসাররোগঃ। ইতিরাজনিঘটঃ॥

ভূতবৃক্ষঃ পু• শাথোটবৃক্ষঃ ।। শেরা নাকনৃক্ষঃ । ইতি নেদিনী ॥ ভূতবেশী জী শেতশেকালিকা । ইত্যনুৱঃ ॥

ভূতবুका পু (स्वलः । ইকি শ্य-

ज्ञभूकिः छी भृकारने वीकविरणय দ্বারা বামক্ষি স্থিত পাপপুৰুষ দহন পূর্ব । শরীর শোধন । তৎ পুযোগো যথা ৷ রনিতি জলধার্যা বরি প্রাকার• বিচিন্ত্য স্বাঙ্গে উ ভানৌ করৌ কৃত্বা সোহ মিতি की वाजान इम्यञ् भीभ क नका কার• মূলাখার হ সলসগুলিন্যা সহ সুদুমা ব্রানা মূলাধার স্বাধি-প্তান মণিপ্রানাছত বিশুদ্ধাজ্ঞা খ্য ষট্ চক্রাণি ভিত্ত্বা শিরোবস্থি-তাথোমুথ সহসুদল কমল কর্ণি-কান্তৰ্গত প্রমান্মনি সংযোজ্য ত তৈব পৃথিব্যপ্ তেজো বায়াকাশ গন্ধ রস কপ স্পর্শ শব্দ নাসিকা

জিলা চফ স্থ गान असम्भाव । इ.स. १५ १५ হকার ৰূপ চতুদ্ধ 📝 জ্যানি লীনানি বিভাব্য যদ্যিত বাৰ বীজ श्रुवर्गः वामनाज शृद्धे विविष्ठ उना বোডশব ্যপের ক্রমা ছেই স্ট भृर्य) नाजार के इस्त हिना हुन्य है বার জপেন সহাত ব্রতিনাক্ষি-इ कृष्वर्ग भाभभून्यम् सर (५३° সংশোষ্য তস্য দাত্রিংশদার জ্পেন मिक्किन नामया वायुः व्यवस्थि । प्र-ক্ষিণ নাসাপুটে রনিতি বহিবীক রক্তবর্ণ ধ্যাত্ম তস্য যোডশ বার জপেন বায়না দেহ নাপ্র্র নাসাপু-টৌ ধৃত্বা তস্য চত, য'ষ্ট বার জপেন সম্ভান্ত কৃত্বা পাপপুক্ষেণ সহ দে इ ग्लाबाद्यात्यि विद्या मञ्जा তস্য দাত্রিংশদার জপেন বামনাস খা ভদ্মনা সহ বাসু রেচনে । ঠ মি তি চন্দুবীজ শুক্লবর্ণ বাননাসাযাণ খ্যাত্বা তস্য ষোডশ বার জপেন ववारि हन्तु॰ नीवा नामा शुरी १वा ব নিতি বৰুণ বীজস্যচতুঃষ'ষ্ট বার ্জানে ত্যাললাটছ চন্দুাদ্লিত সুধ্যা মাতৃকা বণাজ্মিক্ষা সমস্ত (नइ॰ विव्रष्ठय) न निजि शृर्थीवी सम् দ্বাত্রিংশদার জপেন দেহং স্দৃতং

ेण्डि पिक्तियन वायु तहीय । া পুসংখ্যায় ব্যক্তি। তদুক্ত গৌত ্ন্ৰ হৈ সমূল। ই ল্লনা সোহ নিতি मस्त्र त्युक्त्य । मङ्गुर्व निव-ञ्चात भत्रभाञ्चिति पि मिकः ॥ धूम्-वर्ग जा वार्रे वी जः यहिन्तू वा कि ত। পূর্বেদিডয়া বায়ণ সুষ্টা যোড भ नार्वशा। नावश ठ् ठठः यश्वरा **ञ**् अयह जुजूनवा । वाजि मनाज्या म खी (ब्रहरय शिक्षना थ)या।। भूतरय **ए**नया ट्रेटिव मिक्खिडा नीलगाक्**छ।** त ক্তবৰ্ণ বহ্নিবীজ ত্ৰিকোণ স্বস্তিকা ব্রিত ।। তেন পূরক যোগেন নাত্রযা (वाउनाथ)या। हजूःवष्ट्रा भावया ह निर्प्यार्ट अञ्चलन ह ॥ वामभार्चः श्चिष्ठ भाभभूकष कड़न भूछ । বুক্ষহত্যা শিরস্কঞ্চ স্বর্ণস্তেয় ভুজদ্বয• ।। मूदाभान इतायूक धक्उन्न कि हरा ७८ मार्ग शरहन् मक् शु ত্যঙ্গ পাতক ॥ উপপাতক রোনা ণ রক্ত নাশু, বিলোচন । থয় চর্ম ধর• ক্রন্ধ নেব• সক্ষৌ বিচিন্তযেৎ।। मृलाधाः तार्षिः उत्ति व विद्याने विद्य হে ত । এব স দহ প্রিভোরা বিংশনাত্র্যা ততঃ।। ভষ্মনা সহি-उ गखी (त्रहरयिष्ठया भूनः। वाम नाष्ठाः हम्द्रीकः झामल्युङ मभु

ভ•॥ ভাবেङ्गाङ्क ीका करा या**ডम गा**वगा। সুসুगुगा ठळु:यष्टि মাত্রবা তোষ বীজক• ॥ ধ্যাত্বামৃত ম্যীঃ বৃষ্টিঃ পঞ্চাশদ্বৰ্জপিণী । ত্যা দেহু বিচিষ্ট্যের নন্সা পি-क्लाधुना ॥ हाजिः भद्मा ज्या मञ्जी नः वीषान मृष्टः नत्यः । श्रष्टान इ॰म मख्यम भून खरेनव वर्जामा ॥ कीव• उन्नानि ठानीय मेखाति छा-পযেন্ততঃ। ইতি কৃত্বা ভূতশুদ্ধি• न्। क्रान्याम गाठत्व ।। 🗱 ॥ **म**॰-क्किन ज्जमूबि यंथा। भूतम्हत्तन-**हिन्दु काया । अथ्वान्य भुकाद्म**न ভূতশৃদ্ধি বিধীযতে। ধর্ম কন্দ স-মৃভূত জ্ঞান নাল সুশোভন ॥ ঐর্ঘর্য্যাপ্ত দলোপেত পর বৈরা গ্য কৰ্ণিক । স্বীয় হ্ৎকনলে ধ্যা-ति भुगतिन विकामिङ ॥ कृषा उटकर्निका मण्ड भूरीभ कलिका नि छ॰। জीवाञ्चान॰ ङ्कि श्राञ्चा मृ ल मिक्छ। म धनी ।। मूम्या वर्जा-नाजान शत्रगाजान (याजरप् । ইতি তন্ত্রসারঃ॥

ভ্তৰঞ্চারঃ পু• ভ্তোনাদরোগঃ। তৎপর্যায়ঃ। আবেশঃ ২ ভ্তকা-স্তিঃ ৩ গুহাগমঃ ৪ । ইতি রাজ-নির্দিঃ।। ं क्उनकाती श्री मानानमः। इंडि भद्रमाना॥

्र ज्ञान श्री ज्ञान हैं। यथा।

वान भूजान शिष्ट भोगा रेमन्तु

स्थित ह। गाम्पर्व मथ कोत्यन मण्ड निकस्य कार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ किस्स्य कार्य मार्थ मार्थ किस्स्य कार्य मार्थ मार्थ किस्स्य कार्य कार्य

ज्उरकी हो। वक्ताकार्लाहेकी ॥ नीवपूर्वा। इंडिताक्रमियफंड ॥

ভূতহর: পু• ওপূলু: ইতি রাজ-নির্ঘট:॥

ভ্রহারি ব্লী দেবদাক। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

ख्ठा की क्काइज्ली। यथा।
कात्मा व्यात्भारकामत्र मर्था ज्याः
नि जीर्थानि मिक्क दि। প्रक्रिजानि
खवडी इ ज्ञायाः भातत्य क्छ।।
खालहा निवज्ञा बिवु उ ज्ञाः काः
मिक्याः विवर्ज दिश् । ইতি তিথা।
দিক্ত

ख्टाख्यः भ् सनानथाउत्कः। ख्टभर्यायः। क्रवकः २ क्रुवकः ० क्रिकः ३ क्रुवः ६ क्रवः ५ वालाय पनमः छः १ ए ज्यानी ४ म्हान्यः २ विम्र छनीः । जीवनक्षरः । हिट करेषः । जैक्षः । कर्म ब्राव्यक्षः रामि (माय प्रषः । कर्म ब्राव्यक्षः ।। ख्वाचा भू परः ॥ निवस्ति ।। इति ममत्रवावनी ॥ विक्रः । यथाः ख्वाक्षः । ज्वल्याः । इति ममत्रवावनी ॥ विक्रः । यथाः ख्वावः। इति महाखात्रात मान्याः ।।

ভ্তারি স্লী হিন্ধ। ইতি রাজনিঘ^ন ভ্তার্ক্ত: তি ভ্তাবিষ্ঠ:। ইতি হেন্দ চন্দ্র:॥

ভূতালী জী ভূপাটলী ৷ মুষগী ইতিরাজনির্ঘট: ৷৷

ज्ञावामः भू विजीजकद्षः। ই कि ताजनिर्विषः॥ तिष्णः। यथा। ज्ञा वातमा वामूरितः मर्वाम् निवाया व वः। ই कि मराजात्रकः गानधर्मः॥ ज्ञाविष्ठः जि शिमात्रभुखः। ज्ञा वि वस्त्रभाभाषः (ज्ञानारः) ज्ञाने ज्ञानवस्त्रभाष्ठः स्त्रभारतः ज्ञाने

क्षमाण ज्या । इजीएक विश्वान

দিশি দৌ যোডশে শু,জিং ে এছা 🖯

> 25 72 6 8 5 7 72 8 5 7 7 8 7 7 7 8 8 9 0 0 0 0

ভূতাবিষ্ট: বি ভূতকান্ত:।ভূতাদিনা রোগগুল্ত:। যথা। ভূতাবিষ্টেমুপ-ঞ্চাশন্তাপত্যাসু বৈ শত•। ই-ভ্যাদি জ্যোভিস্তত্ত্ব•।।

ভূতাবেশ: পু॰ ভূতসঞ্চার:।ভূতে পাওয়া ইতি ভাষা। অস্য পর্য্যা-যা আবেশ শব্দে দুষ্টব্যা:।।

ভূতিঃ স্ত্রী নহাদেবস্যক্রনিয়াদ্যষ্ঠপুকার বৈ ভবং ইত্যনরঃ ॥ শাস্ত্রক্রন্তা হ বানারীকাষা ভরতঃ
ভিত্র ৷ বিশ্বা বিশ্বারঃ ৷

ইতি মেদিনী।। জাতি:। ইতি বিশ্ব।। বৃদ্ধিনামৌষধণ।। রোহিষতৃণণ।।
ভূতৃণণ। ইতি রাজনিঘণ্ট: ।। উৎপ্রি:।। সন্তা। ইতি ভূপাতো
ভাবে জি পুত্যবেন নিয়মণ।।
ভূতিকণ ক্লী ভূনিয়ঃ।। কভূণণা।
ইত্যনরঃ।। কট্ফলণা। যমানী।।
ঘনসারঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।।
ভূতিকঃ পুণ যমানী। ইতি রক্ত্রমালা রাজনির্ঘণ্টো।।

ভূতিকামঃ পু॰ রাজমন্ত্রী ॥ বৃহস্পতিঃ ৷ ইতি কেচিৎ ॥ ঐশ্বর্যাভিলাষিণি ত্রি ৷ যথা ৷ বাযব্য৽
শ্বেতমালভেত ভূতিকামঃ ৷ ইত্যথিকরণমালাযা॰ দ্বিতীয়পাদে কাম্যপশ্কাণ্ডে বিধ্যর্থবাদ বোধিকা
শু.তিঃ ॥

ভূতিনিধান• লী ধনিধানক্ষত্র•। ইতি ভটাধুরঃ।।

ভূতিমান্ ত্রি ঐশ্বর্য্যুক্তঃ। ভূতি রস্তঃস্ট্রত্রেগেন্তু পুত্রেগেনিয়নঃ॥
ভূতীক॰ ক্লী ভূনিমঃ॥ বমানী॥
ভূত্বণঃ॥ কর্ত্বণ। ইতি মেদিনী॥

ভূত্ন শ্লা গদ্ধত্ন গদ্ধথড ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়: । গদ্ধথেড ২ রৌহ্য ৩ গোন্যপূর্য ৪ । ইতি রজনালা।। পট ৫ রানকপ্র ৬ ৬ সভ্ন ৭ শর ৮ শ্যানক ১ ধ্যা-মক ১০ পৌর ১১ দেবজন্ধক ১২ । ইতি রক্নালান্তর ।।

ভৃতৃণ: পু॰ ভৃত্তণ। সুগন্ধরোহিষ
ইতি পরিনলদগন্ধনি ইতি চ আক্রাদেশে পুসিদ্ধা: । তৎপর্য্যায়ঃ ।
রোহিষ: ২ ভৃতিঃ ৩ ভৃতিকঃ ৪ জ
টুম্বকঃ ৫ নালাতৃণঃ ৬ সনাল্মী
৭ ছত্রঃ ৮ অতিমৃত্তকঃ ৯ গুহুবীজঃ
১৯ সুগন্ধঃ ১১ গুলাঃ ১২ পুণস্তৃবিগুহুঃ ১৩ বধিরঃ ১৪ অতিগন্ধঃ ১৫
শৃন্ধরোহঃ ১৬ করেনদুকঃ ১৭। আস্যগুণাঃ । কটুবুণ। তিক্তবুণ। বাত্ত
সমূহ ভূত্যুহাবেশ দাকণ বিষ
দোষ নাশিব্রা । ইতিরাজনির্ঘটঃ
আন্দেশ্ধা প্রাক্তিরাজনির্ঘটঃ

ভূতেশঃ পু॰ শিবঃ।ইত্যমরঃ॥ ভূত্তম॰ ক্লী সুবর্ণ•।ইতিহেমচন্দুঃ॥ ভূবরীভবা স্ত্রী আখুকণী ।ইতি ভাবপুকাশঃ॥

ভূদার: পু॰ শৃকর:। ইত্যমর:।। ভূদেব: পু॰ বাক্ষা। ইভ্যমর:।। ভূধন: পু॰ রাজা। ভূরেবধন যস্য স:। ইতি কেচিৎ।। ভূষরঃ পু•্পর্তঃ। ইতি হের্মচন্দুঃ ।। यदास्यः । यथा । कल कह्न পাতাল দোলা ভূধর বল্কিঃ। वकारा। यञ्च जिलाञ्जूर वेजुनक्षारा-"क गृषकाः ॥ ३७ नग्रहित्त्वा ॥ ज्याकी जी ज्नागनी। इंजि ताज-निर्चग्रेः।। बहुकरे छत्रवः। ইতি विশ সারতত্তে তস্যুশতনানভোত্র ।। ভূষঃ পু• পর্বতঃ টেডি ছেম্চন্দুঃ ॥ ভূনাগঃ পু উপরস্বিশেষ: 1 তৎ পর্য্যায়: াক্ষিতিনাগঃ ২ ভূজস্তঃ ৩ রক্তরন্তক: ৪ ক্ষিতিজ: ৫ ক্ষিতি-জন্তঃ ৬ রক্ততু ওকঃ ৭। অস্য গণাঃ । वजुगातकष्। नाना विज्ञानकात-कवु । त्रमकात्र १ उ९ मजुम् विषाशक्ष्य । ₹ि ज्ञाकनिर्घणेः ॥ ভ্নিম্বঃ পু॰ ফুপবিশেষঃ। চিরাতা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাযঃ। অনা-র্য্যতিক: ২ কৈরাতঃ ৩ রামসেনকঃ ৪ কিরাততিক্তঃ ৫ হৈনঃ ৬ কাণ্ড-তিক্ত: ৭ কিরাতক: ৮। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ কটুতিক্ত: ১। ইতি ভাবপুকাশ: 11 অস্য গুণাঃ 1 বা-তিকন্ধু । তিক্তত্ব । কফ পিও জ্ব-রাপহত্ত্ব াবুণ সংরোপণত্ত্ব প থ্যব্ৰণ। স্বস্ত কণ্ডুতি শোফ নাশি বৃঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। অপিট

কিরাতকোন্যে নেলাল: সৌদ্ধ তিক্নে জ্বান্তক: । কিরাত: সার কোকক: শীতলান্তককো লঘু:।। সমিপাত জব খাস কফ পিতাসু দাহনং। কাস শোষ ত্যা স্বন্ত জ্বর বুণ ক্মি পুণুং।। ইতি ভাব পুকাশ:।। অস্য গুণ প্যাযান্তবে কিরাততিক শাদে দুষ্টব্যে।। ভূনীপ: পুণু ভুনিকদম্ব:। ইতি রাজ নির্ঘট:।।

ভূপতি: পু• বর্টুকভৈরব:। যথা।
ভূপরো ভ্ধরাধীশো ভূপতি ভূধরাত্মক:। ইতি বিশ্বসারত জ্রেজি
ভৈরবস্তোত্র•।। রাজা। যথা। ভূ
পূত্রী যস্য পত্নী স তু ভবতি কথ
ভপতী রামচনং: (ইতি রামাযণে

(ककरीवाकऽशास्त्र राज्य स्था इंडि झाल्लानिक छैं।। ज्य सः भू॰ वृक्षः। ইতি में स्व जिलुका ज्य से जी सिका। ইত্য स्वः।। ज्य नामः भू॰ वृक्ष रूपः। विमानी ইতি ভাষা। यथा। ज्या का एकः सुकन्न क्षा ज्या विमान । क्षा कृष्ट । ইতি রল্প না।।

ज्यारेनी खी वृक्षविश्वाः। ज्याज-नि इंडि (न नवाप्यी इंडिट हिन्दी ज्या। ज्य मर्यायः। ज्यसी २ ज्ञानी ३ तक्ष्यक्षिका ६। ज्याता ख्याः। कर्षेष्यः। ज्यादा भ्रायाक कष्यः। देखि द्वाकि निर्यर्षः॥ ज्यानः भुः ताना। इंडि भप्ताना ज्यानः श्रोता। इंडि भप्ताना ज्यानः श्रोता। इंडि भप्ताना ज्याना खी जीठा। इंडि भप्ताना वनी॥

ভূপেষ্ঠ: পু• রাজাদনীবৃক্ষ:। ইতি রাজনিঘণ্ট:॥

ভূভর্জা পু॰ পৃথিবীপতি:। ইতি সিজান্তকৌমূদ্যা তৎ পুক্ষসমাস:।।
ভূভুক্ পু॰ রাজা। ইতি জটাধর:।।
ভূভুৎ পু॰ রাজা।। পর্বত:। ইতি
মেদিনী।।

ভৈরবস্তোত্র । রাজা। যথা। ভূ
ভূম্যী ক্রী ছামা। সাত্র স্থ্পন্নী।
পূত্রী যস্ত্র পন্নী সভ্তুত্বতি কথ
ভূম্যী ক্রী ছামা। সাত্র স্থ্য ভূমা
ভূমা পু
বহুত্ব। যথা। ভূমা ভূম

ু ভ্ৰিষ্ঠা:। বংহারিয়ঝিন ইষ্ঠান্তস্য এতে নিপাত্যন্তে। ইতি মুক্ষবোধ वताकद्रभा स्थाता र्यम् स्यसारमी वरहा ज्वारमः। देगश्रिः वा वारि लाभः । ইঙে यकाताभन्छ नि-পাত্যন্তে। অতিশ্যেন্বহুঃ ভূষান্ । বহোর্ভবিঃ ভূবা । অতিশ্যেন বহুঃ ভূষিষ্ঠঃ। ইতি ভট্টীকাষা• দু-গাদাসঃ॥ বহুত্ববিশি**টঃ।** ভত্র বা ह्या हुन । इंचा । ज्यः ज्न । इंजि भुच् उभद भर्गारय अमत्रविकाया॰ त्रभानाथः॥ # ॥ वितार्भ्यूक्यः। যথা। যত্ৰ নান্যৎ পশ্যতি নান্যৎ শ্লোতি নান্যদিদ্ধানাতি স ভূনা या ज्ना उनम्डः। ইত্যাদি भुः जि ভ্যো বৃন্ধনিত্যত্ত্ব সত্ত্ব শুদ্ধস্য পু-তিভাতি। ইতিবেদান্তসারটীকা॥ ज्ञिः छो शृथिवी ॥ इनमाजः । ইতি মেদিনী।। জিহ্বা। ইভি স॰-किश्वमादांगारिवृद्धिः ॥ यात्रि-नाभवङ्गविष्णयः। यथा। निकष्क চেত্রসি পুরা সবিকল্প সমাধিনা। निर्विकन्न मभाधिख ভবেদত তিভু-নিকঃ ৷৷ ব্যুক্তিপ্ততে স্বত স্থাদেঃ দি-তীয়ে পরবোধিতঃ। অ**ন্তে** ব্যুত্তিষ্ঠ **७ रेनव महा ७वि उत्त**यः ॥ **७**व॰ পুাগ্ভুমি সিদ্ধাবপুগতকোত্তর ভূ-

ময়ে বিশেষ ভগবন্তক্তি স্তাং বি-না সা ন সেংগতি।। ইতি 🎢 🔊 🦅 **ঢायरी शिकाना॰ मधुम् मन** महस्र्ती ॥ 🗱 ॥ ভূনেঃ পर्यप्रायापयः 🤊 🍳 🕆 **मर्त्पमुश्चेवताः ॥ जनता रामः । ज्**रहाः रिष्ट्रगु॰ खक्ष्वक काठिनु ॰ भूनवा॰ তা। গন্ধো গুৰুত্ব• শক্তিশ্চ দ•ঘ তঃ হাপনা ধ্তি: H ইতি ম**হ**ু ভারতে নোক্ষমান্য অস্বর্থা रिष्ट्रयोऽ सहा**थकाऽः ३। एकप्**रशास्त्र शुक्तियागः खनः २ । काछिन 🏞 🤊 **পুসবার্থতা ধান্যাদ্যুৎপত্তি** 🐯 🕫 ত। ৪। গন্ধ: ৫। গুৰুত্ব• পিপ্পপুঞ্চি ৬। শক্তিঃ গন্ধগুহণসামর্থ্যণ 🖖 🌁 ষাতঃ শ্লিষ্টাব্যবত্ত্ব ৮। স্থা नुष्राम्रामुयद्वः ৯। ধৃতিঃ পাঞ্চাভী ত্তিকে মনসি যে। ধৃত্যুণশঃ । ইভি তউীকা।। 🗱।। ভূনি দান সাহাজ্য यथा। मर्खिना भिव मानानाः ज्ञि मान मनुख्यः। या मनाजि मही व्राजन् विशागाकिकनाग वि ॥ अकृष्ठ মাত্র মথবা স ভবেৎ পৃথিবীপতিঃ। ন ভূমিদান সদৃশা পৰিত্ৰ মিষ্ট বিদ্যা তে॥ ভূমি॰ যঃ পুতিগৃহাতি ভূমি॰ ষশ্চ পুষছতি। উভৌ তৌ পুণ্য মা भागो नियंजः अर्गगानित्नो।।यंदः कि किछ्मिमानर्डं नंबराता उत्मान्येन।

্গীপতে নরঃ কোপি ত্নিদৌঁ ভূ-ा नार्त्रेगाए।। जूमिनान नन नान बाख्य शृथिनी उत्न । उमाएल मनरिक्त जुलि मुक्ति म्थश्रूषः ॥ যথা তথা পুকারেণ ভূমিদাতা ভু कृभिनः। मूथी महा८ मईकालम् हारिष्ठ मर्ग गवान् वाट ॥ वृश्य ভর॰ বালি ভূমিদান॰ মহতম॰। য়ঃ কন্চিব্ৰাহ্মণে দত্ত্ব। ভবতী**হ ন** 🗟 भेजिः ॥ अर्वेषा अर्वेना (नया 🛚 देवी तुंग्क्रामा তू। श्रानास्त्र रेनव क्वालि इंद्रशीया डरेन द्रिशा क्द्रा । उनिक कर्म विशु ভृभि नरत्र। নাৎ। করোতি যদি রাজেন্দু তৎ ः वं नियुन् खरव ॥ तु मानामान ্ হণ॰ বিনানুজ্ঞাঞ্চ পার্থিব। তথা उ८ পরিতোষঞ্চ তত্তমূল্যাদিক। িনা।। বিশুভূনৌ ভূনুরোপি দৈব• পত্র• তথাধুর•। হরি সদ্ম তথা मि शुरमार मध्य गृह ।। थाउा-'খনন' সেতু বন্ধন' ভবন' গবাং। थान। कन मृनाहि भाकाहि (क्रञ रव ह ॥ शकाज् वशनः शः श्वास्त्रानः ্কানি রে**গেণ । স বটাপি**খ তুল খিবাতী বিল্বাবি ক্লোপণ ।। নিত্যু निভिद्य काग्रः हान मक्तानिकः था। शक्ष युद्धः उत्यक्षेत्रं विक

নেতভু চাপ্যা শ্রীকৃষ্ণবেন ভক্ত ভক্তি যোডশ পূৰ্ৱকং। কা কথা বে-তরেষান্ত ন জর্ব্যাৎ পারনার্থিক:।। यः क्यां कनकारमञ्जू नं करता छ। व-কর্ম চ। স্বৰুতে সম্ভতা নোহাদজ্ঞা-नाषा जुनापिकः ॥ नृभरक अर्बजा भ्य उर मर्बः न्या निष्कृतः वृतः। यक्तुः নি রথবা তস্য সংগূর্ণ ফল সেবচ।। অভো লোকে ছি ধর্মাত্মা জ্ঞানী চ नर्ब धर्मविष् । दिखकी धर्मणाञ्च छः भूतांगागम (वस्विष् ॥ (वसाम्राख्डा मृनिः भाषुः कार्कापि द्यां मशीभाउ। न अर्य) प्लिनि एवन वाक्त नी एव क्या ষণ।। ইতি পাদ্মোত্তরথণ্ডে ৪৯ অ-श्वातः॥#॥ अभिष्ठ। तृङ्ग्गि**ः। य**-ষ্টি• বর্ষ সহস্যাণি স্বর্গে ভিষ্ঠতি ভূমি-দঃ টিছেক্তা চানুসস্তা চ তাবস্থি নর-কে বদেশ। তথা। ভূমি দত্ত্বা তু यह পত अर्गाइन्तुर्क काविकः। अना-हिर्ग ननाक्षार्याः सान व्यथा उपि দুঃ।। মহাভারতে। অপি পাপকৃ-তো রাক্ত: পুতিগৃহন্তি **সাধ্ব:। প্**-थियी॰ नान्। मिह्नि भावनी॰ सन्नी॰ यथा।। नामा श्रमाः श्रियमखि **७ज्॰ (म्युगः मनाजन•। माप्त बा-**প্रथ् वारात नागाम्याः श्रव्यः श्रि-य ।। मानामान कारन य श्रियम छ।

নানান্যা: পরন প্রিয় নিত্যক তে न नियम छ। निज्रहार्य प्राज्य । भुः जिग्रशे जवडा हा। ज्राः भृ**बा**या॰ मा-নবাক্যে চ প্রিয়দন্তেতি বিশেষণ । ভূনি विंकू (দৰতাকা। य**8** वर्ष সহ ञावहित्र बर्गवामः कनः। পুতিগুহে **ত फ्रा: शुरिकिश माबः।** जूस दशः রিধানে ভামুদিশ্য পুদক্ষিণ । ইতি मुधिउदु ॥ 🗱 ॥ जान्नी त्रभार्ष রবৌ ভূদী রঙ্গোযুক্তাভবতি তৎকা ल भाठानि निरम्यायथा छा। जिरम । तः जागुक् म्बाष्ट्रवाधी ह (बोमुगर) शा-দগে রবৌ। তদ্য পাঠো বীজবা-(भा नाहिजी पृथितानकः।। द्राका-युक्त्रा अञ्चली भृथी। ज्याजिय । यिमन् वादा मह्माः भू यं काल বিথুন• বুজেৎ। অব্বাচী ভবেমিত্য भून ख॰ काल वादायाः॥ म**०**म्। ক্তে। ধরণ্যা নৃত্ নত্যাঞ্চ ভূনিকস্পে। **७रेथ**व ह । अञ्जागमान हेव्य विम्रा• নৈব পঠেবুধঃ।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব• ॥ # ॥ न बाधायः वयर्कातः न एव পিতৃ পূজন । হলানা থোজনক্ষৈব বীজানাণ বৃপন্ তথা ৷৷ দিন ত্রয়ণ ন क्री व यावट भृथी तकत्रना। यकि-নো বুতিন শৈচৰ বিধ্বা চ বিদ্ৰ স্থথা ।। अषुवाधी मिलितिय भाकः कृषा न

७क्रियेटी म्रशाक शतशाक वा य-भूवाही नित्न उथा।। उक्कन रेनव ल-वीं उ हा थानाच मतः मृष्ठः। ইতি ताजमाउँ७:॥ #॥ यणुकाः ज्भि भाष्ट्र (मनवाः । ना चरमध्य भनि-না দুষ্টা এতপ্রিত্যান্যত্রমা ভব্তি। অত্রানেধ্যা যথা । পুসূতে গর্ভিণী যত নিুৰতে যত্ৰ মানুষঃ। চাণ্ডালৈ ক্ষিত• যত্ৰ যত্ৰ বিন্যুল্যতে শব: 11 বিগুৰোপহত যতু জ্বপো যুঁত দূ **শ্যতে। এব॰ কশ**্ল ভূমিষ্ঠা ভূরমে ধ্যেতি লক্ষ্যতে ॥ অণসঃ শবঃ ॥ मुक्टी यथा। क्ति की है भरक्षिण पूर्-विजा यव मितिनी। पुञ्जाल हैव रैन्ड किरिष्ठ वीरिक्ष हुई जा॰ दुरहर ॥ मु-श्ना वनीज्ज (भ्रया।। मिनना यथा। नथ रष्ठ उन्झ वृक् जूष शाः भू इरका মলৈঃ। ভদা পহ্ন তৃণৈ রাগি পুচুনা गिना जित्र ॥ 🗱 ॥ जात्राक मृद्धि মাহ। দহন খনন ভূমে কপলেপ न वाश्रान । शर्यका वर्षगरेक्षव (भोड॰ পঞ্বিধ মৃত ৷৷ বাপন মৃদন্তরেণ <u>পূরণ ৷ অত্রামেধ্যায়া শচতৃষ্ক পঞ্চে</u> कः वा। हुई। याः हिकः जिकः वा।। मिलनायाः मह्नामीना (मक्या ल्या-धन बाह (प्रवत्ः। श्रथःश वा हर्जुली বা ভু রনেধ্যা বিশুধ্যতি। দ্বিধা দুঞা

ত্রিষা বাপি শুষ্যতে নলিনৈকধা।। व्यन्त्रभक्ष भुकात मारु मन्। मसा र्जाननाञ्जानन (माक्तालिश्वन ह । গ্রাঞ্পরিবানেন ভূনিঃ শৃদ্যতি भक्षश्वा । अम्पार्कन ज्वाम् । অঞ্জন গোমযেনোপলেপন । নে কো জলেন পুক্ষালন । উল্লিখন ত ক্ষণ । পরিবাসে। গবোপস্থাপন । অত্র সেক পরিবাসযো নির্লেপ স্থা-शंन विषयपुर। यान)या ग्रामश्र लिश्र े विषयंत्रः। युक्तभूतातः। गुमामस्थ শতশ্ভ জ্বি। ারাই চতুর্থণ । তুনেঃ সর্ব শ্রিঃ স্যালত লোকো ন বি দ্যতে।। দণ্ড॰ চতইতঃ। নগর॰ নহা-প্রানঃ। ইভি গোপাল পঞ্চানন কৃত मुक्तिनिर्गयः ॥ # ॥ जूनो वर्ग व्यथ नाहि निर्वादश यथा। न जूरो वि निथिष्वर्गः भञ्जः न भूखकः निथिए। ন মুক্তা পুস্তক স্থাপ্য ন মুক্ত নাহ রেবু তৎ 11 ভুকম্পে গুহণে চৈব অ-ক্ষরণ বাধ পুস্তকণ। ভূমৌ তিপ্ততি रिरविण बचा बचाजू मूर्थे छ।।। छमा ভবতি দেবেশি তমাত্ত পরিবর্জ त्य ॥ इकि रिगामिनी जस्त ज् जीय जिल्नि १ भटेनः ॥ /

ভূনিকদম: পু॰ , বৃদম্বিশেষ:। তৎ পর্য্যায়:। ভূনীপ: ২ ভূনিজ: ৩ ভূকবল্লভ: ৪ লঘুপুল: ৫ বৃত্তপুল: ৬ বিষয়: ৭ বুণহারক: ৮। অস্ত গুণা: । জি কদ্বাঃ কট্ফান্ট বৃষ্টা নোবহর। হিনাঃ ৷ ক্বায় ভিভা: পিত্তম্বা নীর্য্য বৃদ্ধিক্রাঃ প্রাঃ ॥ ইভিরাজনিষ্টা: ॥

ভূনিকা জ্রী রচনা।। বেশান্তরপরি-পুহঃ। ইতি মেনিনী।। পাত্রানি নাট্যে পধিকৃতা স্তত্ত্বেশাস্ত ভূনি-কাঃ। ইতি হেমচস্দুঃ।।

ज्निंथर्ज् तिका खो कृन्थर्ज् ती। उट भर्यप्रायः । साधी २ मूजात्जाङ्। ७ মৃদ্ছদ। ৪। অস্যা তেদাঃ গুণা 🕫। ভূনিখজুরিকা স্বাদী দুরারোছা মৃ-मुहरा। यथ कक्कना काक क्र्य हो चापूमखका॥ मिछ्यज् विका ज्ना मा (मराम शनिहान ভবেए। খর্রী (गाउनकात्रा भतान्द्रीभाषिष्टाग-তা।। জায়ন্তে পশ্চিমে দেশে সা ছোহোরেতি कीर्खिंग। थर्ज़्ती-विख्यः भी उ॰ मधुतः त्रमभाकर्याः ।। त्रिक्षः क्रिक्तः इम्राः क्रज क्य হর । ওকা। তপণ রক্তণিভয়। পুष्टि विश्वेष्ठि गुकर ।।(काष्ट्र गाक् उ कृष्वाः वास वाज ककाशहः। जुः রাভিঘাত ক্রু তৃষা কাশ খাদ निवाद्यनः॥ समः सृह्। सक्ट शिङ মদ্যোদ্ত গদান্তক্থ। মহতী ভ্যাণ গুণৈরল্লা স্বল্পজ্রিকা স্থৃতা ।। থজ্রী তক্তোযদ্ভ মদ পিত্ত করণভবেথ। বাত শ্লেমহরণ ক্চ্যণ দীপনণবল শ্ক্র ক্থা। ইতি ভাব-পুকাশঃ ।।

ভূমিথজ্রী জী ভূমিথজ্রিকা।ইতি রাজনির্ঘটঃ।। অস্যা গুণপর্য্যাবাঃ ভূথজ্রীশব্দে দুষ্টব্যাঃ।।

ज्ञित स्पाकः भू॰ भूञ्च वृक्ष विष्मयः।
ज्य है हैं । इंजि जाया। उट भर्याः
यः। जामू भू झः २ मि क्वाः ३ कवनः
है। इंजि संयह स्मिका।। ज्य मुम् मुन्।
युगमान कात्रकः।।

ভূমিজ॰ ক্লী গৌরসুবর্ণ-। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

ভূমিজঃ পু॰ মঙ্গলগৃহঃ ।। নরকরাজঃ
। ইতি নেদিনী ।। ভূমিকদয়ঃ ।। মনুষ্টঃ ৷ ইতি রাজনির্ঘটঃ ।।
ভূমিজ্ঞালঃ ৩০ আখোলবঞ্চলঃ ।

ज्ञिजखगुनः शृ जामाभूतखगुनः।
ज्यभागः।रेम्छारमम्बः २ दूर्गाः
व्यः ० जामाभूतमञ्जदः ८ मञ्जातः
व प्रमङः ७ महिवाम्यमञ्जयः १।
भागः एपाः। जिङ्काः। कर्रुदः।
जिङ्काः। क्क दाङ मामिदः। एमाः
श्रिपदः। ज्यादः। स्वश्रदः। सी-

ज्निज्यः की क्रुड्डा उर्भिश्यः नार्मिका २ नार्ति १ ठ ज्रुब्यः ८ ज्निज्युका ८। ইति सम्बद्धादणी ॥ काकज्यः ७ की उगल्यान । ইति बज्ञाना ॥ नार्दिका ४ नार्ति । ज्जय ज्ञिज्याः । ज्ञिजयू न-जायाः महार किन्तु ज्ञिज्याक ॥ ইति सम्बद्धावनी ॥

ज्तिकष्ः छो ज्ज्ञपुः । ज्यु प्राप्तः । ज्यु प्राप्तः । प्राप्तः ।

ভূনিজা স্ত্রী সীতা। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ মেদিনী চা।

ভূনিজীবী প্রণ বৈশ্যঃ। ইতি শব্দ রত্নাবলী।!

ভূমিদেবঃ পু• ব্রাহ্মণঃ ৷ ইতি হলা-

ভূনিপঃ প্• রাষ্। ইতি জটাধরঃ। ভূনিপক্ষঃ পু• \বাতাখঃ। ইতি হারাবলী।। ज्मिनिभावः भू जानग्कः। इंडि श्वावनी॥

ज्ञिम ७: १९ जन्ने शामिका। सम्बन्धः सामिका । सम्बन्धः सामिका । समिका ।

ভ্নিমঙ্পভ্যণা জী মাধ্বীলতা। ইতি রাজনির্ঘটি:।।

ভূমিরক্ষকঃ পু• বাতাখ:।ইতি ভূরিপুরোগ:।i

ভূনিলাভঃ পু॰ মৃত্য়:।ইতি ভূরি-পুনেগঃ॥ভূনিপুাঞ্চিদ।।

ভূনিলেপন ক্লী গোনয় । ইতি হেনচন্দু:।। ভূনের্লেপশ্চ ।।

ভূমিবর্ম্বনঃ পু•ক্লী শবঃ।ইতি হেন। চন্দুঃ।।

ভূনিসম্ভব। জ্রী সীতা।ইতিজ্ঞা-ধর:।।

ভূনিস্পৃক্^{নী} পু॰ নানৃষঃ।। বৈশাঞ়। ইতি নেদিনী।। চৌরবিশেষঃ॥ অন্ধঃ। খঞ্জঃ।ইতিশন্দরত্বাবলী॥

ভূমী জ্রী ভূমি:। ইতি ভরত দ্বিক-পকোষ:।।

ভ্নীন্দুঃ পু• রাজা। ইতি শবর্ত্বা-

ज्नीकड़ः के वृक्तः। यथा। भीषा उपाय विविध्या विविध्या स्था उपायामवा यादिना म्हणना यथा জলবধু দৃষ্টি: সরোষা প্রিয়ে।ছায়া বাঞ্চ তনা নবােচ বনিতা বাণীক ভ্নীক্ষা নিয়ন্দাঃ সুচিরাদ্মথা নিলিত্যাে স্নাে মিথাে দৃষ্টকঃ ।। ইত্যুক্তটিঃ শ্লোকঃ ।।

ज्मीन इः शृ वृक्क विश्वायः। जुः त्रमङ् इिंठ हिन्सी जाया। उद्श्वयायः। बात्रमाजुः २ नत्रमाजुः ० श्वत्रहृमः ८ । जाना खनाः। मिमित्रष्। त्रक शिख शुमामन द्र्यः। इिंठ जाव-श्वकामः।

ज्न प्रामनको जी क्यू भवित्मयः। ज्ँ३यामना **३**ि जाया। उ**८**१-র্য্যাশঃ। বহুপুল্লী ২ জড়া ৩ অধ্যঞ্জা ৪ তালি: ৫ ভামলকী ৬ অজটা ৭ সূত্রফলা ৮ কেত্রানলকী ৯। ইতি রত্ননালা।। বিতুষকঃ ১০ ঝটা ১১ व्यमन। १२ व्यङ्गीता ३० जानी ४८ শিবা :৫। ইভ্যমর: ॥ বাটা ১৬ ম্লা ১৭ কাটাম্লা ১৮ অমলাল্প-টা ১৯। ইভ্যনুর্নীকাবাণ ভরতঃ ॥ ভূग्राप्तवकिका २० **मिनामवकी** ২১ বহুপুগ্ৰা ২২ বহুফ্লা ২০ বহু-বীৰ্য্যা ২৪ ভূষাত্ৰী ২৫। অস্যা**গুণাঃ** । বাত কারিজ্-। তিজজু-। **কষায**-द्या र्पट्य । हिमद्य । शिथामा-काम भिडाम्क क्क शाधु कर

নাশিব্ধঃ। ইতি ভাবপুকাশঃ॥ ज्रगाननी दी ज्नग्रमनकी। अक-নেলী ইতি হিন্দীভাষা। ভূঁইমা-भना इंडि वक् ভाষा। তংপर्यायः । उनानी २ जानी ७ जगानिका ८ উচ্টা ৫ দৃঢ়পাদী ৬ বিভুমা ৭ বি-তুনিকা ৮ ভূষাত্রী ১ চারটী ১০ वृष्रा ১১ বিষয়ী ১২ বহুপ প্রিকা ১৩ বহুবীৰ্য্যা ১৪ অহিভয়দা ১৫ বিশ্ব-পণী ১৬ হিমাল্যা ১৭ অজুটা ১৮ वीता १२। जमा खनाः। कवायदः । অনুত্রণ পিত্ত মেহ দাহ নাশিত্বণ । শিশিরত্ব॰। মূত্ররোধার্তিশমনত্ব॰ ঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ च्म्राल्वाः क्री क्रूशिविष्यः। जूबिः-তথড় ইতি হিন্দীভাষা। তৎপ-र्य्यायः । স্বস্তকেত ২ নার্কভীয়ণ ৩ মহৌষধ ৪়। অস্য গুণাঃ। তিক্তত্ত্ব• । करूँ दः । जुत क्षाम मिथा नानिः पुष्ठ। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ ভূষঃ ব্য পুনরর্থ । ইতি শব্দরত্ন।-वनी ॥ ভূষাन्^ग वि वङ्खतः। ইতি मिनि ॥ ভূষিষ্ঠ• ত্রি পুচুর:।ইত্যমর:॥ ভুযুক্তা ভ্রী ভূমিথজুরী। ইতিরাজ-निर्घक्तः॥

ভূরি ক্লী স্বর্ণ।ইত্যমরঃ॥

ভূরিঃ পু॰ বিফুঃ॥বুকা॥ শিবঃ॥ इंडि (मिनि) ॥ वागवः । देंडि **म**फ्तज्ञावली ॥ भुठूद्र वि । ইउऽ-यदः ॥ ভূরিক জী পৃথিবী। ইতি সিদ্ধান্ত-कोगुम्यामूना रिवृज्धिः॥ ভূরিগন্ধা জ্রী পুরানানগন্ধুবুব্য । ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ।। ভূরিগমঃ পুং শর্মাজ্য 📆 🗟 রাজ निर्घक्षः ॥ ভুরিদাব। পু• ভূরিনদগাননং, পুতৃক माजा। इंडि जू श्राद्या कर्नु कुरा । ভূরিদুখা ত্রী ব্রিক্রনাইতিরাজ निर्घण्डः ॥ ভুরিপলঃ 🦿 উথাবলত্ণ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। ভূরিপলিতদা স্ত্রী পাণ্ডুরফলী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। ভূরিপুয়া জী শতপ্য়া।ইতিরাজ-निर्घण्डः ॥ ভূরিপেুনা পু• চক্রবাকঃ। ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥ ভূরিফেনা জী সপ্তলাবৃষ্ধ টোলাই কসা ইতি ভাষা। ইভ নরঃ 🕦 ज्तिमली खी, जायश्री ि इं। ज निर्घणेः ॥ ज्तिमायः शूः जी ज्यामः ।

ইত্যমরঃ॥ ভূরিবলা স্ত্রী অতিবলা। ইতিরাজ निर्घणः ॥ ভূরি**नः** वा वहनः। वहनार्था ८-কাচ্শস্বেতি কারক ভূরি শবাৎ চশস্ পুত্যুব নিম্নমো १य॰ শবः। ইতি নুপ্রবোধব্যাকরণণ।। ভূরিশুবা পুণ চন্দুবণশীয় সোনদন্ত রাজপুঞঃ। সতু অজ্রুনেন হতঃ। ইতি মই।ভারত ॥ र्कं भी जी बीश्खिनीवृकः। शाजि 📲 ীতি ভাষা। ইত্যমরঃ ॥ ल्ह्यः हु। उक्तः। **३७ मद्याना ॥ जूर्जः** भू स्वाग्यताञ्क्विरम्यः। ভোদ্পপ্ৰ ইতি হিন্দী ভাষা। তৎ পর্য্যায়: । বল্পজনঃ ২ ভূর্জঃ ৩ সূচ-ৰ্মা। ৪ ভূৰ্লপঞ্কঃ ৫ চিত্ৰত্বক্ডবি ন্দুপত্র: ৭রক্ষাপত্র: ৮ বিচিত্রকঃ ৯ ভূতন্নঃ ১০ ন্দুপত্রঃ ১১ শৈলেন্দু **স্থঃ ১**২। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ ভূর্জ পত্রঃ ১৩ চম্মী ১৪ বহুলবল্লুলঃ ১৫ । ইতি ভাবপুকাশঃ॥ ছত্রপণ্রঃ ১৬ শিব: ১৭ স্থিরছদ: ১৮। ইতি রত্ন भाना ॥ मृरूषक् १२ । इंडामदः ॥ পর্নিকঃ হেনাইতি ভরতপ্ত স্পু:।। ভূজ: ২১ বহু-। पक्षः २० মৃদ্দৃদৃ ২৪। ইতি ভরত 🛚

ष्**ठ या**नी ॥ जन्म खनाः। द रका-রিত্ব•। কফ রক্ত নাশিত্বঞ্চ। ইনি ताकवल्ला छः ॥ कर्षेषः । क्षायवः । উঞ্ব । ভূতরক্ষাকরব্ । ত্রিদোষ শমনত্ব॰। পথ্যত্ব॰। দৃষ্ট কৌটিল্য नानिद्रक्ष। इंडि द्राजनिर्घण्टः ॥ কর্ণরোগ পিত্ত রাক্ষন মেদ বিষ হরত্ব। ইতি ভাবপুকাশঃ।। ভূক্তকিগ্ডক: পু॰ বর্ণসঙ্করজাতি-

বিশেষঃ। ইতি জটাধরঃ।। ज्रुक्त्भमः পू॰ ज्रुक्त्यकः। ই**ठि त**ञ्च-गाना॥

ভূণি: জ্রী পৃথিবী।। নৰুভূনি:। इज्रुगामिरकाषः ॥

ज्रलाः भु• अष्ठतीकारसारमाकः । মর্ত্রলোকঃ। তস্য লক্ষণ যথা। भामगमाध्य यटकिक्षिट राष्ट्रेडि भ्-थिवीनय•। **म ज्**र्लाकः मनाच्छा-তো বিস্তারো ২স্যম্যোদিতঃ॥ ইতি বিষ্ণুপুরাণে ২ অংশে ৫ অ-श्रायः ॥ চরণ সঞ্চার যোগ্য গি-রি শিথরাদি যাবৎ তাবদুৎসেধো ज्र्लाक **इं**ज्रथः । विद्यादा न्याः रिंठ: मर्बाठा लाकालाकाविधः পঞ্চিশতি কোটি পুমাণঃ ৷ ইতি ততী দাবা স্বামী ॥ অস্য বিবরণ তেৰৈৰ দ্বিতীয়াদি চতুৰ্থাখ্যায়েষু ভূগোলশদেত দুষ্টব্য ।।
ভূগণা জ্ঞা শত্ত্বপুষ্মী।ইতি রাজনির্ঘণী:।।
ভূগতা জ্ঞা কিঞ্জুক:।ইতি হেম-

ज्ला जी किथुन्कः। हेकि हिम-हन्दुः॥

ভূবদরী জ্রী ফুদুকোলী। ঝডবের इंडि हिन्ही जाया। उर्थ्यायः। क्विजिवनदी २ वज्ञीवनदी ७ वनद वल्ली ८ वङ्किनका ৫ नमूवमती ७ वरत्रक्नी १ मृद्यवरत्री ৮। व्यम्रा গুণাঃ।মধুরামুদ্ধ•। কফ বাত বি-कात्र शांतिषुः। श्रथप्रद्वः। मीश्रनषुः । পাচনত্ব•। কিঞ্চিৎ পিত্তাসু কা-রিত্ব•। ৰুচ্যত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘটঃ ज्ययः अ॰ नञ्चलाभाषानिः। विन-শাযিত্বা । এতে যা॰ মা॰ ম গাঃ । धकष्। उक्षत्। मधुत्रप्। त्रिः ধারু । বাযুনাশির । শুক্রকারি র্ঞ । ইতি রাজবল্পভ:।। বিষ্ণু:। শবা । ভূশযো ভূষণো ভূতি বিশোকঃ শোকনাশনঃ। ইতি মহাভারতে তস্য সহসুনান ভোত্র• ॥

ভূশেলু: পূ॰ ভূকরু দারকঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

ভূষ কি ভূষণে। ইতি কবিকল্পফনঃ

। কি ভ্ৰযতি ভূবতি হারে। স্থনং।
ইতি দুর্গাদাসঃ ।!

ভূষণ• ন্নী অলকারঃ। ইতি হেম-**ठन्मः** ॥ (मवस्य ভ्यनामि यथा। ভোগ্য ভ্ৰোত্তমং নিত্যং ভ্ৰণানি मृगुष्या । कित्रीहिक भिरतात्रक अ-खनक नना हिका ॥ जानभगक शतक रेग्रवयक गर्था चिंका। शा-विधिका রহুসূত্র মুক্তংস্থাথক্ষা-লিকা॥ পার্স্থলে জান্থলে তো श्क्रुनीहारक र या अहिनाय साग-বকো মূর্ভতারা ললন্তিক 🔢 এক (मा वाङ्वलयः शिक्षाण २५ वि अन्) का। भाग ७ वसः जम् 🔑 🚈 🖼 **भूदा १थ मानिक**ः। अङ्गाल व्यक्षित पष्ठभाश्यक वर्ग 🔠 🖫 क्रिम्बन क नीवी ह मृष्टिवकः भूकी कि ॥ शाहाक्षर र अवश्य नृश्दर क्षू पृ যণ্টিকা। সুথপউ মিতি প্রোক্তা অলঙ্কারাঃ সুশোভনাঃ ৷৷ চত্ত্বারি• শদনী প্রোক্তা লোকে বেদে চ সৌ **थ**ऽहाः। अनकात्राः श्रुहात्मन हर्जुः ৰ্বৰ্গ পুদাযকা:।। এতেষা॰ পুজম॰ क्षा भुमम्यामिष्ठे निष्कारा। তেयाः रेन्दक मूहार्य) भूजायख् विष्ठक्याः ॥ শিরোগতানি চাদদ্যুৎকুর্বর্ণানি कु मर्बना। ठूडावज्ञानिकानी र जूव-गानि जुरे छत्र ।। रेग्ययका पि इ॰-**সান্ত• সৌবর্ণ• রাজতঞ্চ বা ৷** নিবে-

ু**ৰু দে**বেভ্যো নান্য তৈজস সম্ভ রীতি বহাদি সংজাত পাতো **त्रगा**रिक । रहारायम वर्जे ज् 'न कराहन ॥ घषी हामत्र कर्छा-পারোশকরণাদিক। তভূষণা त्र रम्प्राव्ययाखमूभज्यगः ॥ मर्बः মুদ্য দদ্যাত্ত কিঞ্চিদ্যণাদি-। সূর্বত স্বর্ণবত্তানু নর্ঘ্যপাত্তে जाधिक ॥ পृजायाभाव तेनव-प्रशासन्त्रभावक भानक । उपुत्रत मा विस्थाः भी जिमः (जायमः जमा अध्य (त्वाः शुरमानः जारम् (म ाः गमा ऋ जाः। मर्व भी जिक्तः **ভামু•** তমাত্তামু• পুযোজ্যে ।। সো शस्यारम नतः ऋग्रारफ्याना मि ভৈরব। গ্রীবোদ্ধ্ব দেশে রৌপ্যস্ত ন কদাচিছ ভূষণ ॥ প্রাবারঃ পানপা-দ্ধার্ক গেওক গৃহ মেব চ। পর্য্যক্ষাদি য়দন্য সর্ব তদুপভ্ষণ।। অযোন ষ্ট্রাত কা স্যান্ত যা ভূবণ ভবেৎ **ার**র্ণ রৌপ্যদ্য চাভাবে ত্বথ: কাযে मफाजः मकाराज नितः। उत्तम्मा निर्द्धाव ज्म**ब्रोभन मुर्रा**भाषट् ॥ ह-ত্ত্ৰৰ্গপুদ• নিত্য• ভূষণ• সৰ্ব সৌখ্য-দ॰। তৃষ্টি পুষ্টি প্রীতিকর॰ যথা শ জীষ্টাল সূজেৎ ॥ ইদ তে ভূষণ ॥

(भाकः मर्द (एवम) ज्रिहरः । ইতি কালিকাপুরাণে ৬৮ অখ্যায: ॥🗭॥ অথালস্কার্যুক্তি:। তদ্ধারণ দিন মু-চ্যতে। রেবত্যখি ধনিষ্ঠাসু হস্তাদি-युशि शक्षम् । एक मुक वृषम्। इर বস্ত্রালন্ধার খারণ ৷৷ অনিষ্টেম্বপি निर्फिष्ठे॰ वज्जानकात्र शात्रनः। উদ্বा-হে রাজ সম্মানে ব্রাহ্মণানাঞ্চ সম্মতে ॥ শিরস্ত্রণ মুসটণ হার: সণ্ডলঞ্চাঙ্গ-म्ड्या । कक्षा॰ वानकरिक्षव (मशनाः ষ্টাবিতি ক্রমাৎ।। পুধান ভ্ষণান্যেষু यथा ऋ याजि निक्तयः। शम्पद्रागकः বজুঞ্চ বিজয়ে গোবিদ স্তথা ৷৷ সূক্তা रिवर्म्या नीलक्ष यथा सत्रकरः कना**८।** व्यानिज्ञानि नभाजानाः मर्व मम्मद्धि मायकाः ॥ जूदर्शनाशि घटेना अरई-ষা নুপযুজ্যতে । পুধান ভ্ষণেশ্বেব नशुषात न निर्गयः ॥ श्रुषान ভूषा॰ পাৃয়ঃ শিরসো হু ভিধী্যতে। তস্য **পুধান ভ্তত্বাদিত্যা** ভ্তনন্দনঃ ॥ সুথদা মণযঃ শুদ্ধা দুঃখদা দোষশা-লিনঃ ॥ ইতি যুক্তিকল্লতকঃ ॥ 🗱 ॥ **उद्धा**तन कले यथा। ज्वन ज्वरा-मक् यथा (याग्र विश्वानजः । शूहि সৌভাগ্য সন্তোষ দায়ক কাঞ্চন মৃত । গুহ দৃষ্টিহর পুষ্টিকর দুঃখ পুণাশন ৷৷ পাপ দৌভাগ্য শনন

রত্নাভরণ ধারণ । মাণিক্য তর-ণে: সূজাত্য নমল শুক্তাফল শী তগো নাহেযস্চ বিচ্নো নিগ দিত: সৌম্যস্য গাৰুত্মত । দেবে জ্যস্য চ পুষ্করাথ মসুরাচার্য্যস্য वजुः मान नी ल निर्मल मन्।रगाक গদিতে গোমেদ বৈদ্য্যকে ৷৷ বাসঃ সুগ্নশ্ব রহ্নানা পারণ পুরীতিবদ্ধন । রক্ষোমু মর্থ্য মোজস্য সৌভাগ্য করমুত্তমণ।। ইতি ভাবপুকাশঃ।। जुषतः भू विकः। यथा। ज्याया ভ্ৰণো ভূতি বিশোক: শোকনাশ-নঃ। ইতি তস্য সহসুনামস্তোত্র।। ভূষা জ্রী অলঙ্কিুবা। ইত্যনর:॥ ভূষিত: **ত্রি অলস্ক্ত:। ইত্যমর:॥** ज्युः वि ज्वनमीनः। उৎ भर्यायः। ভবিষ্ণু: ২ ভবিতা ৩। ইত্যমর:॥ সাধুভবনশীলঃ। ইতি তড়ীকাথা• त्रायमूब्रहेः ॥ ভূস্ত: পু॰ मऋलगुर: 1ইতি **শ**पः भावा॥ भीठायाः जी॥ ভূস্ণ ক্লী ভূত্ণ । ইত্যমর: ।। অস্য भर्याय खगा यथा। खश्र नी कथ ज्-তীক• সুগন্ধ• গোম্যপ্রিয•। ভূষ্ণ ন্ত ভবেছতা মালাত্ণক মিত্যপি ॥ ভূত্বণ কটুক তিক্ত তীক্ষোঞ

ব্লোচন লঘু। বিদাহি দীপন কক

মনেত্র্যু মুখশোধন ॥ অব্যুক্ত হুবিট্কঞ্চ পিত্ত রক্ত পুদূষণ ইতি ভাবপুকাশ:॥ ज्ग्म्क श्रु भन्याः। इंडि (इमहन्मुः ভূ**র্গঃ পু॰ সুনেৰুপর্বত:। ই**ি क्रिवाधकः ॥ ভূক্ষিৎ পু॰ শ্করঃ।ইতি ত্রিকাও ভ লি টু ড্ঞা ভ্তিপুষ্ঠোঃ ৷ ইতি ভূ ঞ । কবিকল্লফনঃ।। ভৃতি र्छत्र भृष्टिः (भाष्य । वि अ বিভৰ্ত্তি শশিন শস্ত্ৰ বিভূঠি জন-कः भूजः । द् जत्रथः । ए ज्विमः । ভাবিপক্ষে ভৃতিঃ প্রণ। ঞ ভ-রতি সম্ভনন্ডিজনঃ।ভরতে। ইতি **पूर्णामामः** ॥ ज्ञः भः भू•) ज्ञानः। जीतमधाः ज्ञानाः भूः) तीनविश्वयः । ३७₎-भविष्याग्या व्यानायः ॥ ভূদ'नकः शू' जन्न'मः। ইতি मद-ब्रङ्गावनी ॥ ভূমটি: জ্রী ভুমটি:। যথা রচিত ज्ञिति वक्षः निस्ता द्वाति कष्मः। ইতি ভর উপ্ত হর বিল্লাসীঃ ॥ 💘 ज्मिती जी जुमितः। इठानवरी-

कागा ভরত: । ভৃস্টী স্টিলান-

् तो। इंडि मार्काधमभूताल (मवी

नाहाजा,क ॥ ীভেণ্ডঃ পু॰ মুনিবিশেবঃ। সত্বুদ্ধণ .खुटाजाउः। यम् । ভार्या कर्पन मूनिकन्रा थ्याजिः। भूषः धाजा विशाजा ह। कन्या निः। इंडि नि ভाগবত। অপিচ। মুন্যউচুঃ। कथिउ ए यहा नर्गः भृष्टेः मृ उ द्वा **eধুনা**। ভৃগু সর্গাৎ পুভ্ত্যের স-র্গো ন: কথ্যতা পুনঃ।। সূত উবাচ । ज्राः थाउाः मनूरभन्ना ञाः भू र्व मृत्रक्षः भूनः। उथा था जा वि-ধাতঃ চ তস্যা• জাতৌ ভূগোঃ সু তৌ ।। আঘতি নিযতি শৈচৰ মেক-কন্যে নহাপুভো: । ধাতু বিধাত্ ত্তে ভার্য্যে যথো জাতৌ সুতাবুভৌ ॥ भागरेक्टर म्क ख्रम मार्क खरग মৃকণ্ডৃতঃ। ততো বেদশিরা যজ্ঞে পুাণস্য দু্যতিনান্ সূতঃ ॥ ভতো বংশো মুনি শুেষ্ঠা বিস্তরণ ভার্গবো 🛚 গভঃ। ইত্যাদ্যে বহ্নিপুরাণে বর-जर्ग नामाथ्यायः ॥ 🗱 ॥ निदः ॥ শুক্রপুহ:।। ইতি মেদিনী।। সানু:।। যমদগ্রিঃ। ইতি ছেমচন্দুঃ।। নির-व्नर्धन शर्बेजोिं भाषः । वाति ইতি খ্যাত । যন্মার্থপতনে অব-স্থান ক্রিয়া বিশেখো নান্তি। অত-**এব.ভৃগুপতন নি**ত্ত্যাদি প্যোগো

দৃশ্যতে। ইতি ভরতঃ ॥ তৎ পর্ব্যা-যঃ। পুপাতঃ ২ অতটঃ ৩। ইত্য-নরঃ॥

ভৃত্তপতিঃ পু॰ পরশ্রামঃ। ইতি শব্রহাবলী॥

ভ্ওস্ত: পু॰ শুক্রঃ। ইতি শব্রক্না-বলী।। পরশ্রানশ্চ।।

ভূগ্লাপতিঃ পু॰ পরশুরান:।ইতি শব্রহাবলী।। ভূগ্ণাম্পতি রি-ত্যপিপাঠ:।।

ज्र॰ क्री वृहः। खडव्क् ইलि श्राजः । ইত্যমরঃ॥ অভুকः। ইलি রাজ-নির্ঘণ্টঃ॥

क्रिंश हेि जाया। हें उप्तरः ॥
 क्रिंश हेि जाया। हें उप्तरः ॥
 क्रिंश हेि जाया। हें उप्तरः ॥
 क्रिंश हों जार श्रिकाः
 क्रिंश हों । क्रिंश । स्टूर्स हें ।
 क्रिंश हों । क्रिंश ॥ हिंश ॥ ज्ञान हिंद हों । सिंहः ॥ ज्ञान हिंद । हिंद हों हों।
 ज्ञान हिंद । हिंद ने हिंद हों हों।
 ज्ञान हिंद हों हैं जा हिंद हों हों।
 क्रिंश हों हैं जा हिंद हों हों।
 क्रिंश हों जा हिंद हों हों।
 क्रिंश हों जा हिंद हों हों।
 क्रिंश हों।
 क्रिंश हों।
 क्रिंश हों।
 क्रिंश हों।

ভঙ্গা

ज्र्भार्गका श्री म्रेश्वना । ইতি भव्दिन्तुका ॥

ভূদপুৰা স্ত্ৰী নাধবীলতা। ইতি বাজনিৰ্ঘণীঃ।।

ভূম্নৃলিকা জ্ঞী ভূনরছক্ষী।ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

ভূষরজঃ পু॰ ভূ**ষরাজঃ। ই**তি ভাবপু**কাশঃ**॥

ভৃষরজাঃ পু• ভৃষরাজঃ। ইত্যমর টাকাযা• ভরতঃ।।

ভৃদ্বাজ: পু· क्कूशविष्मय:। (क्**गू**-রিয়া ইতি বঙ্গভাষা। ভেগরিয়া ইতি হিন্দী ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। (क्नज़ाजः २ ज़्रुः ७ পख्रः 8 मार्कद्र: ৫। ইতি রত্নমালা॥ ভৃসা-স্থা: ৬ কেশরঞ্জনঃ ৭ পিতৃপ্রিয়ঃ ৮ অস্থারকঃ ৯ কেশ্যঃ ১০ সম্ভলবর্জ-নঃ ১১। অস্য গুণাঃ। তিক্তব্ব॰। উঞ্জ্বণ চক্ষুষ্যত্ত্বণ কেশরঞ্জনত্ত্বণ। কফান শোফ বিত্র নাশিত্ব। তত্র नीत्ना त्रगायनः। इंडि त्राजनिर्दण्यः ॥ অপিচ। ভৃত্বরাজো ভৃত্বরজো भाकरता जृङ्ग এवह । जृङ्गात्रकः (क-শরাজো ভূসার: কেশরঞ্জনঃ ॥ ভূপরাজঃ কটু স্তিক্তো ৰক্ষোফঃ ক ফ বাতনুৎ ৷কেশ্য স্তৃচ্যঃ কৃনি খাস কাস শোথাস্যাপ^{তু}্যা দন্ত্যে র- ^{li} ভৃসার

সাযনো বল্যঃ স্বষ্ঠ নেত্র শিরোর্ত্তি-জিং । ইতি ভাবপুকাশ: ॥ # ॥ পক্ষিবিশেষ:॥ ভুনর:। ইতি মে-দিনী॥ যজভেদ:। ইতি ধরণি:॥

ज्य ति दिः भू । भिवषात्रभावः ।
ज्यति दे भू । इठि ज्तिभूर्यागः ॥
ज्यति वः भू । की दिर्देश्यागः ।
ज्यत् इठि जाया । जर्भ्यागः
विषम्का २ व्यति वः । ज्यमेद्रभावः
हा इठि जिका अस्मयः ॥

ভৃষ্বল্লভ: পু: ধারাকদম্ব;।। ভূঞ্ কদম্ব:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। ভৃষ্বল্লভা জী ভূমিজমু:। ইতি রা নির্ঘণ্ট:।।

ভূঙ্গসোদর: পু॰ কেশরাজ:। ই 🦠 ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

ভূঙ্গানন্দা জ্রী যূথিকা। ইতি রাজা নির্ঘণটঃ ।।

ভ্সাভীষ্ট: পু আমুবৃক্ষঃ।ইতিরা নির্ঘণ্ট: ॥ তন্মসলফলযো: শ্লী ভ্সার জী লবসং ॥ সুবর্ণ । রাজনির্ঘণ্ট: ॥

ज्यातः श्रु॰ यर्गरिउतातिभावः। जर्भग्रामः।कर्नकाण्कारेडिङ स्तः॥ ७५कः २ गड्कः ८। ইजि भवत्रावणी।। ज्यताकः। ইजि कोषतः॥#॥यथज्यातास्मः। রচেন্তা ইভিষেক পাত্রণ যভূঞ্বার 🍴 🔠 ভন্মত । তদষ্ট্রা তস্য নান ন। বৃত্তি শ্চাপি চাষ্ট্রধা ॥ সৌবর্ণণ রাত্ত ভৌন তানু স্থাটিক নেব চ ;नरन॰ (कोइङ॰ **भाक्र** (म उपश्चेः ं • মত•॥ ভানু দির্ব সপ্তাষ্ট ক্দু ্ৰ ক সুরোন্মিতাঃ। অপ্টাবস্থৌ সমা-🛪 ।তা আযান পরিণাহযোঃ ॥ দ্বি ় বাণ বেদান্ধি বাণ সপ্তাতা বৃত্তি-ं। यथा कम॰ সমুদ্দিষ্ট माদিত্যা-দশা।ভ্যা॰॥ পদারাস তথা বজু॰ र्येs भोक्कि उथा। नील भातः **उरिक्**व मुक्ता ह मछ की खिंठाः ॥ শার সপ্তকে ন্যাস্যান ভৌনো ণি মহতি। কানক মৃথ্য বাসি র্ষেষা নুপযুদ্ধতে ॥ কানকন্ত ক্ষি-**া**ন্ত্ৰ পদ্মেন্দ্ৰ কল্লান্ন• প্ৰভ্যসু• বিন্য-**:স**ৎ ক্রমাৎ ।। চতুর্বিধানা• ভূপা-না চান্দুঃ সর্বর শস্যতে। খেত ক্ষে তথা পীত কৃষণ চন্দন মূচ্যতে ॥ এতেষা সলিলৈঃ সেক শ্চতর্ণা॰ म्। मही जुड़ा । नली भग्न नील ए उथ। क्कानता जिला। वया - भू-ল্লাণি কেশেষু চত্ৰ্জাতি নহীভূজা• । शिवकः अमातार्गम्छ रेवमूर्यं भोन लिश ह ॥ हजारता मनत्या (ध्या कः

তुर्ना॰ (महनाञ्चिम ॥ ইप्य॰ निन्हि-ত্য यः ऋर्ग्यामृপि जिः (मक माजानः । म हित्रायू ज (वर्ण्डाभी देखान) खुग्यशहतन ॥ इंजि युक्तिक इंद्रो ज्ञाताएमः॥

ভূসারি: দ্রী কেবিকাপুস্ল•। ইতি রাজনিঘণ্টঃ।।

ভূ**স**ারিকা ত্রী ঝিল্লিকা। য**থা।** ঝিল্লীকা ঝিল্লিকা বর্ষকরী ভূ**স**া-রিকাচ সা। ইতি হেনচন্দু:।।

ভূসারী জ্রী বিল্লী। ইত্যার: ॥ ভূসার: পু॰ জীবকঃ॥ ভূসারাজ: । ইতিরাজনির্ঘট: ॥

ভূকান্তা জী ভুমরছল্লী। ই**তি** রাজনির্ঘণ্টঃ।।

ভূকি: পু॰ তৃস্পী। যথা। প্রাপ্তা গণা-বিপত্য ও নামা ভূকি রিতি মৃতঃ । ইতি বামনপুরাণে ৪৫ অধ্যাযঃ।। ভূকিণী জ্রী বটীব্কঃ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

ভৃশী জ্রী অতিবিষা। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ!৷

ভূসী পৃং বটবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ।। শিবদারপালবিশেষঃ।
তৎপর্য্যায়ঃ। ভূক্তেরিটিঃ ২ ভূস্বরীটঃ ০শলঃ ৪ নাডীকেকঃ ৫ অস্থিবিশৃহঃ ৬। ইতি তিতা ওশেষঃ।।

ভৃকরিটি: १। ইতি ভ্রিপুযোগ:।। তস্য জন্ম কারণ যথা। ঈশ্বর উবাচ । ब्रिजिगाद्मि (नामायाः मर भूषः স-ভবিষ্যতি। মহাগৈথুন স্ত্যা-গাৎ স্যাদপুত্ৰী চ পাৰ্বতী।। তৃষা-**मरुख** (मवाना॰ वहनाषुक्रन खथा। ত্যক্ষে মহানৈপুনন্ত কিন্তেক হক তা নরা: ॥ যেন যে সুনহতেজো সহামৈথুম কারণ। বার্য্য তেজবি न॰ दिव भागपञ्चवहार छ॰।। यो नि **घटला निविकारत जून टब्टरा गू** शेष्र्रिः। उत्य दास जिल्ला छ **ক্ষ্যে তেজঃ শ**রীরজ• ৷৷ ি\ঔর উ বাচ। ব্যধ্জ বচঃ শ্রন্না দেবা বুজ-পুরোগমা: 1 হরতেজো গুহাযাথ[া] वीजिरहातः ययू द्विया।। यथ युकान মামন্ত্র্য তথানুজ্ঞাপ্য পাবক । দে ন্দা দেবগণাঃ সর্বে হর মৃচু রিদ• वहः ॥ श्रीतम्या डिहुः । अषरिययानद्रः **এিমান্ ভূরিতেজোম্যো বলী। মহা** মৈথুন বীজন্ত তত্তেজ: সংগ্ৰহীষ্যতি ৷ ইত্যুক্তা ত্রিদশাঃ সর্বে বীতিহো-**बः भूतः क्षित्रः । जरेम निरम्म**यानाः সু: শস্ত্রবে সর্ব হেতবে।। ততঃ যড **ञ् य** (तर्रा वर्रामिष्ठ मञ्जानरन। **উৎসম**র্জ মহাবাহ মহানৈথ্ন क রণ•॥ অগ্লা বুৎ সূজ্যমানন্য তেজমঃ

শশভৃক্তঃ। অণুদ্ব মতিষল্প গি-রিপুছে পপাত হ ॥ তযো: কারণ-থোঃ সন্য: সমূতৌ শঙ্করাত্মজৌ। একো ভূস সমঃ কৃষ্ণো ভিন্নাঞ্জন নি-ভো ২পর:।। ভৃক্বী তস্য তদা বুক্ষা नान जुकी जिहा करता था महाक्रिकः ক ৰূপস্য নহাকালেতি লোকভূৎ॥ তত रही नानगामा**न महातः भू**न-(थाएकरेद्रः। जनर्गग जानि ज्था ক্ৰনাত্তাৰভিৰদ্ধিতৌ॥ পুৰুদ্ধৌ তৌ नश्जामि श्रामा भुजिशालिजी । ক্রাদ্রণেশৌ কৃত্বা তৌ হরো দ্বারি न्याजय ॥ इंडि का निका शुद्रात 82 व्यव्यायः ॥ अ॥ जग्र वानत्रमुथञ्च কারণ তৎশাপেন হ্রপার্ত্যো मनुष्ठ जन्मगृह्भक यथा । यहां मा নগণে যাতা গৌরী স্বর্হরান্তিক। তদা ভব্দি নহাকালৌ দাঃস্থৌ দারি পুতিষ্ঠিতৌ ॥ নর্মাবসানে সা দেবী মুক্ত ধমিল্ল বন্ধনা । নিঃস্তা রতি সঙ্কেত শালায়া জলজাননা ৷৷ তা নি:সরস্তা সহসা তথা ভূতা মনি-ন্দিতা। অযোগ্যাণ বীক্ষিত্র চান্য व्यथुक गृर्ङ भिर्वे ॥ ममर्गेजू मेंश-जातो नाजिङ्क्षेत्र नानमो। जुङ्गी চাপি মহাকালঃ প্রাপ্তকালক কো পতঃ ॥ দৃষ্টা তৌ মাতর দীনৌ তদা

ভূতা বধোমূখৌ। চিম্বাঞ্চ রশ্মতু छी:- ॥ ব্যু- নিশশ্বসভু ক্তম- ॥ তৌ পশ্য-स्त्री उस्। (सर्व) सम्म क्रियव पूर्व।। চুকোপ চ ভদাপর্ণা বাক্যঞ্চৈভদুবা 🔏 চ হ।।এব মৃতান্ত মা॰ কমাদ সম্বদ্ধা म्थभार्जाः। ज्वस्ति जनस्यो भूष्को ত্রী মর্য্যাদা বিবর্জি:তী ॥ তম্মাদিমা-মুনুর্য্যালা ভবস্তো নিরপত্রপৌ। অ্বর্রভাণ ততো ভূগান্ডবতো র্জন मान्त्य ॥ मान्यी वानि मानारः ंभगारकान (नायजः । ভবিষ্যতো ভবন্তৌ তু শাখামৃগ মুখৌ ভুবি 🖰 ॥ ॥ । । जो भारत संस्था जे जमा वि-সনকৌ হ্রাত্মজৌ। **শাপ**ণ তস্যা ন সেহাতে গ্ৰেচত্ শ্চেদ মদুকা।। नियाजिएो यथा बाजि मरहरमन प्र या সহ। তথা निरंगाग**॰ ञ**त्रस्त्रो তि-ষ্ঠাবো দারি সংযতৌ! হঠান্নিঃসরণ গে**হাত্ত**বৈব **নহি যু**জ্ঞ চেয়াভত্ত্ৰ পুতীকার• শৃণু নাতর নিন্দিতে। দ্ব• মানুষী ক্ষিতৌ ভূগা হরো ভবতু গা न्यः ॥ मान्यमा इतमावा जागा যা॰ ভুর তেজুনা। ভবতগ্রন্চাপি মা-নুষ্যা ভবিষ্যাব শুপোদরে।। অথ কা লে ব্যতীতে তু সর্বজ্ঞে। ব্য ভধ্ব জঃ **ज्रांवि कम्म छा**द्वित मान्या श्र् वट स्रयः ॥ तुष्माता पक्तिना क्षाप

ক্ষো বৃদ্ধসূতো ২ ভবৎ। অদিতি স্তৎ সুতা জাতা ততঃ প্ৰাস্যোহভবৎ ।। প্ষঃ পুগ্ৰো ২ভবৎ পৌষ্যঃ সর্ব-শাস্তার্থ পার্গঃ। যস্য তুল্যো নৃপো ज्यो न ज्रा न जित्राजि॥ **म भ्** धशीता द्राषा जृद लीखा नृপতि সত্তমঃ। শেবে ব্যসি সংপ্রাপ্তে ভা র্য্যাভি স্তিস্ভি: সহ।। পৌষ্য: পর-भया ভक्ता वृक्षानः भर्यप्राठाषदः । তষ্য পুসলো ভগবান্ বুন্ধা লোচ পিতানহঃ।। বুক্মোবাচ। শৃণুপৌষ্য যথা ভাবী পুত্ৰ স্তব সলোদ্বই:। ত-**দर॰ ७ विषयाभि ভार्याछि छ८** সনাচর॥ ইদ॰ ফল॰ গৃহাণ বৃ॰ নযা-**म्ख॰ नृ**रभाड्य। অधीर्न• व्हर्ण का-লে প্রাপ্তেপি সুরস সদা।। ফল মে-তৎ मगानाग गाव**र म**॰वर्मत ख्य॰ । यात्राक्षा नहारितः मूनुमाना छ বিষ্যতি ৷৷ যথা সংভাষতে ভৰ্গঃ ফ্-ল গেতত্তথা ভবান্। করিষ্যতি ফ ল রাজন্ ভার্য্যাভি থিস্ভি: সহ।। ইত্যক্ত। পুষযৌ বুন্ধা রাজাপি স-ভক্ত্যা পরম্যা যুতঃ ৷৷ সত্ বর্ষ দ্বযে २ जी उ महाप्तरा बग भि ने । পৌষ্যস্য নৃপতেঃ সম্যক্ পুসসাদা र्थ मिक्स्य।। उठः भूषार्थिन जूशः

भुमात्रा वृष उथुकः । वृक्षरख कलः श्ख क्रइ**म॰ उ**नुवाह **श। से**श्वरूष বা । ইন • ফল • বুক্ষদ ভ • বিভজ্য নৃপতে ত্রিধা। ভোজ্যে স্তাঃ স্ব জায়। खुः পुरुष्टेः मुख्यानमः ॥ এकम्या जः ঠরে শীর্ষ• ভার্য্যায়। স্তে ভবিষ্যতি। অপরস্যা তথা হৃক্ষৌ মধ্যভাগো ভবিষ্যতি॥ অধোনাভ্যাস্তধো ভা-গঃ সো হপরস্যাণ ভবিষ্যতি ৷ ততঃ খণ্ডত্রয়ণ ভূপ যথা স্থানণ পৃথক্ পৃ-থক ৷৷ যোজযিষ্যসি পশ্চাত্তে পুঞ একো ভবিষ্যতি। ততঃ ফলে শ্বয়ণ (प्रवः भ्वितम वृष्युकः। उरक्षार তৎফল ভুত • ত্রি ভাগ স্বয়নেব হি। ততঃ সন্চিতে কালে প্ৰাপ্তে তাভিস্ক ভক্ষিত ৷৷ তৎ ফল নৃপশাদূল গব্রা শ্চাপ্যাহিতাঃ শভাঃ। সম্পূর্ণ পত্তকালে তুঁ পত্তেভ্যঃ সমজায়ত।। খণ্ড মণ পৃথক্রালা যথা ভর্লেণ ভাবিত । তह খণ্ডত্রব পৌষ্টো যথা স্থান• নিযোজ্য চ ॥ এক• পিগু• চকারাশু তত্র পুণ্নো ব্যজায়ত। ত मार्यं उमा बाइन् महरहना क-না শৃভা ৷৷ তস্য নানাকরোত্রাজা <u>त्राक्षतः देवः भूरत। हिरेजः। हन्मूरण-</u> থর ইভেরে কান্তর চন্দু সমপু হং।। এব তিঘূণা মন্ত্রানা পরে লাভো 🚶

যতো হর:। অত জ্ঞান্তক নানা ভূৎ भूषिত। लाक (एवरवाः ॥ इं कि का-লিকাপুরাণে ৪৬ অধ্যায: ॥ 🛊 ॥ অবতীর্ণে মহাদেবে পৌষ্য জাযাসু ষেह্যা। মানুষেণ পুনাণেন তেন স-ष्ट्रत्रव्राय ॥ गित्रिजाभि कञ्रट्-স্বাজে। ভার্য্য স্বলায়ত।। #॥ ইফ্বান্সবংশজো রাজা কল্পপ্রে: না-ম ধার্মিকঃ। তস্য ভার্য্যা নহাভাগা ভर्गाप्तवमा भू भिका ॥ मा मानाम-থিনী নামা প্জিতা পতিবল্ল ভা। পুণ্ৰী ন বিদ্যুতে তদ্যা স্তদৰ্থ সা গৃহান্তরে ।। নিভূত ছণ্ডিল কৃত্রা **হা**দেবী চণ্ডিকা রাজভার্য্যা। **পা**-ৰ্বভ্যপি শ্বশু তম্যা গৰ্জ্বে কালে বি-(त्म र ॥ मा माना मानि। एवी मुमु-বে তনযা• শুভা•। তা• দৃষ্ট্র হার স• যুক্তা॰ সরজ্জ্যেৎস্নোপনা। শৃভা।।। কঙ্গৎস্থো ভাৰ্য্যা সাৰ্দ্ধ নত্যন্ত মু-দিতো ২ভবৎ ৷ তেনৈব হারচিয়েন তস্যা• ভারাবতীতিবৈ ॥ নাম্না ক-রোৎ পিতা কালে যথোক্তে নূপ স-छन । जनगन्त सोनत्नात्छन्रे मृक्षु ताजा नरे**ः मह**॥क्**म**९ 🌠ः कात्रयाः नाम नगरम रथ सम्बद्धः। स्वरः सा शार्व जी पत्वी वर्षु ह हन्मुरमथा ।।

हिं ब्रय गराप्ति गानुषी पानि দৃশ্ভিঃ। পাৰ্বতী চ স্বয়ণ জাতা विरामा विनिस्छा ॥ यथा जुङ्गी ছোকাল এতথো রভবৎ সূতঃ। ত । पु॰ मृन्तारजन्तु कथरामि नमुख ।। অংথান্য। সন্ধ দেবে। বিষতা मुर्मथतः। আজগান उमा गहन् गित्रामः भुजि जः न्म ॥ मम्ला १थ त्रष्ठीः जा मूमायाः मम्मीः छोतः। विकासन मार्ग्ना॰ सायवरमाव साय-িণা তা॰ দৃষ্টা ন্যুগদদেবীণ গৌর্হ ৰভকেতনঃ। ইয় তে নানুষী মূৰ্তিঃ भूरय जीवावजीजिया।। ज्ञानिका নলযে। তে জন্ম নিহিতা স্বন । ভো ছনন্য কান্তো হছ নান্যা 😮 गिर्हा ८ मरह।। व निमानी वयः गम्रा॰ मूर्ड्या॰ भूविण ভाविति । उ उँभारियग्रागि महाकान्य क्रिनः।। बीरत्वु वाह। गरेनव मानुः ্মূর্ত্তি রিয়ণ ব্যভকেতন। বিশা-িতে ২ত বচনাদুৎপাদ্য সূত দ্বত পুরিবেশ ভতো দেবী শ্বয়ণ তারা-গী তনৌ। নহাদেবোপি তস্যান্ত ামার্থ• সমুপস্থিতঃ ॥ ভতঃ লাপ गाविशे (पवी जातावजी मजी। भ्ययान सहारत्व श्रेगरम्बाज्यम । ॥ कानावनात्न उन्नाउ नात्र

जाउ॰ मूछ प्रय॰। অভবয়्পশাদ্ব তথা শাখামৃগানন ॥ তত ভয়ে র্নাম চক্রে নারদো বচনামূপ।জ্যেষ্ঠে ভৈরব নাগাভূৎ ভীরোঃ পুশ্রো ভ यक्रतः ॥ বেতাল সদৃশঃ কৃষ্ণে বে-তালো হভূত্তথা পরঃ। ইতি চকে তথে। नीम (एवर्षि वृञ्जानः मुखः॥ व्यन्तराभ्यः मर्च मःकाद्रामाद्रस्य मृति সত্তম:। চকার কনশো বাক্যাছন্দু শেথর ভূভ্তঃ ॥ ইতি কালিকাপু-রাণে ৪৭: ৪৮। ৪৯ অব্যাযে ভ্যঃ স•-কলিতথা#!। তস্য জন্মনঃ পুকারাত্ত র• মথা। বেণউবাচ। পুপদে দেব भी-भानः ज्ञानकः एन्द्रच्ननः। सङ्गारः ব মহাত্মান বিশ্বস্য জগতঃ পতি• ॥ व्यथन नव्वीष्म्य द्वित्वाक्राधिः পতি র্ত্তরঃ। আখাসনকরঞ্চাস্য বাক্যবিদ্বাক্য মৃত্তম়ং ৷! অছে৷ ভুষ্টো <িনাতে রাজ·স্তবেনানেন সুবুত। বহুনাত্র কিমৃক্তেন মুৎসমীপে বৃদ্ধি-ষ্যসি।। উষিত্ব। সূচির॰ কাল॰ মম গাত্রোন্ডবঃ পূনঃ। অসুরো হান্ধকো নাস ভবিষ্যানি সুরান্তক্ৎ ॥ হির-प्राक्त गृह्ह जना शाना वृक्तिः गनि यानि । भूबीयार्या धारता तम নিন্দ। কৃতেন চ ॥ সাভিলাসো জগ-त्राञ् ভবিষ্যান यहाः छमा। हरू

শূলেন হত্ত্বাতে পাত্যিয্যা**নি সাধি**-ম• II তত্রাপ্যকল্বো ভ্ত: স্তত্ত্বা-মা• ভক্তিতঃ পুনঃ। পুাপ্তা গণাধিপ-ত্যে বং নামা ভৃঞ্চি রিতি মৃতঃ॥ মৎ সমিধানে স্থিত্বা ত্ব• ততঃ সিন্ধি• গ-भिष्रभि ॥ 🗱 ॥ ততঃ कालान्टतः 🔊 -ন্ধক কৃত ত্তবানম্বর• নহাদেব বাক্য• गथा। निष्का १ नि मानवश्राज्ञ शक्ति জুং ঠাংমিতে হক্ষম। বরণ বরঘ ভতু (७ यग्निहिन दिनाचिकाः ॥ अञ्चल উলাচা অবিকা জনৱী মহা• ভগবা• क्ष १४ नः शि छ।। यस्ति हत्ती मा-তু बन्हिनीया मनाधिका ॥ दब्राह्मान যদীশান তাঘাতু বিলয়ং ময়। শা। রীর• মানস• বাগ্লু• দুষ্ত• দুর্বিচিন্তি-ত ৷৷ তথা নে দানবো ভাবো অপ যাতু নহেশর। স্থিরা তু তব ভক্তিস্ত বর নেত॰ পুনছ নে।। নছেশ্বর উবাচ। এব• ভবতু দৈত্যেন্দু পাপ• তে যাতু **স-ক্ষ**য•। মুক্তোসি দৈত্যভাবায় ভ্-স্বীগণপতি ভব ॥ ইত্যেব মৃক্ত্বা বর-**मः म्**लागुारवजार्य उ । निर्माङ निष एएउन ठाक निर्नु । सज्जनः ॥ ততঃ স্ব দেহতো দেবান্ মুজাবীনা-जुराव मः। (५ नित्मक् र्वताचा । नवभुष्ठ जिल्लाहनभागकान नक्ति हाकू। मसिद्धमा छत्यु 🕫 । ज्किनः 🛚

मर्भवामात दुत्रस्वा १ सक्छि हि ।। उ मृष्ट्री मानवश्चिः सः भूष शि निकः तिशुः। गगाधिशक्य माशवः शुन्नभः तृ व्यथुकः।। ইकि वामन शृतारा ८८। ५१ अथ्यायक्यः नःक्षविकः।।

ভূসীফলঃ পু॰ আমাতকবৃক্ষঃ। ইতি
রাজনির্ঘটঃ॥

ज्ञीनः १ गशाप्तदः। इजि. मप्तः त्रञ्जावनी ॥

ভ্ঙ্গেরিটিঃ পু॰ ভ্র্গা। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ ॥

ভ্ষেপ্তা জী চৃতসন্যানী। ভাগী।।
তক্ণী ।। কাকজমূ: । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

ভূজ ঈ ড ভর্জনে। ইতি ক্বিকল্পজনঃ

।। ভর্জন পাক্বিশেষঃ। ঈ ভূকঃ।

ড ভর্জতে তপুলান্জনঃ। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

ভূজন: পু॰ অম্বরীম:। ভাজনাথো-ল। ইতি ভাষা। ইত্যাহিকেয়ে:। ভূতঃ ত্রি ভরণীয়:। ইত্যাহিকতত্ত্বণ ।। পূপ্ত:। ইতি ভূ ধাতো: কর্মাণি জ্ব প্রত্যেন নিয়ম•।।

ভূতকঃ পু॰ বেড়নোপঞীবিক্ষ(কুর্তা! তৎপর্যায়ঃ! ভূতিভূজ ২ কমান্ত্রঃ তবৈতনিকঃ ৪। ইত্যায়ঃ !! ख्िः खी विजनः। ইত্যমরः॥ मृत्राः
॥ जानः। ইতি मिहिनी॥ ভ্তি
विजनः कृष्ठकस्तां महा। उत् मश्च
विश्व हस्तान्तं छ हस्त विल्लाः। यथा
मात्राहन्त । एतः मश्चविश ल्याः
महत्वः वाष्ट्रणाद्याः सङ्गाः विज्ञः
भाषाः मस्ताहत्याः सङ्गाः विज्ञः
। भग्रम्लाः ভ্তি स्ट्रीः। सङ्गाः
थ्राः मुद्रांभकात्रकः। खीमद्राम् गृहार्थः
थ्राः मुद्रांभकात्रकः। खीमद्राम् गृहार्थः
थ्राः मुद्रांभकात्रकः। विल्लाः ॥ ইতি
मिञाक्रता ॥

ভৃতিভৃক্ 'পু' ভ্ उकः। ইত্যমর:॥ ভূত্যঃ পুঁ• দাসঃ। ইত্যমরঃ ॥ তস্য **लक्ष १ वर्षा । मृ** उ उ वाह । ज् उ ऽ। বহুবিধা জেগা উত্তনাধন নধ্যনা: । নিষোক্তব্যায়থার্থেষু ত্রিবিধেয়েব কর্মসু।। ভৃত্য পরীক্ষণ বক্ষ্যে যস্য যস্য হি যোগুণঃ তে নিন• স•**-**পুৰক্ষ্যানি যত্মদা কথিতানি চ।। যথা চতুর্ভিঃ কনক্ত পরীক্ষতে তু লাঘৰ্ষণ ছেদন তাপনেন। তথা চ তুর্ভি ভ্তিক পরীক্ষতে শুতেন শালেন জলেন কর্মণা ৷৷ জল শীল ख्रालि उः मन् श्रम भ्रम्भागः। क्लिन मू भू नम क्राक्रावाद्याका वि. धीयरक ॥ मृताः वी । भर्त। का कृष्ट (वपुथभानीककः। दवावन भनिः

জ্ঞাতা সেনাধ্যকো বিধীয়তে।। ইঙ্গিতাকার তত্ত্বজ্ঞা বলবান্ প্রি-यरमभः। अभुवाही भुवाशी ह भुः তীহার: স উচ্যতে॥ মেধাবী বাক্ পরু: পাজঃ সভ্যবাদী জিতেন্দ্রিয়ঃ । সৰশান্ত সনালোকী ছেষ সাধুঃ नः लथकः॥ वृक्षिपान् म जिना 'रेन्डे ব পরচিত্তোপলক্ষকঃ। কুরো य-(थाकवारीह এय मृत्छ। विवीयत्ड ।। সনস্ত কৃত শাস্ত্রন্তঃ পণ্ডিতো **२थ जिर्जिन्द्राः । (भौर्य) वीर्य) छ**न ণোপেতো ধর্মাধ্যক্ষো বিধীয়তে॥ **लिठ् लि जागरश मकः भाजकः** সত্যবাসকঃ। শৌচ্যুক্তঃ সদাকারী **স্পকারঃ স** উচ্যতে ॥ আযুর্বেদ क्ञान्त्राप्तः मर्बद्धः श्रियम्भनः। আৰ্ग্যশীল গুণোপেতো বৈদ্য এষ विवीयर ॥ (वन (वनाक उनुरक्ता জগ হোন পরাবণঃ। আ শীর্বাদ পরে। নিত্য নেষ রাজপুরোহিত: ॥ इंजि शाक्एफ ४३२ व्यस्तायः ॥ ज्**ठ**ा खी (वडन । इंड्रनद्रः॥

जान है जिल्ला । जन कि जून का है जा कि जा । जन कि जा क

ভ্নি: भ्• वायुवि (भवः। घृत्रभावा-

मी ८ । भूषाि द्वाभिग्रं । उर्हे हैं जुड़ि श्री क्रिया क्रिया कर्षा करिया करिय

ভ্শ লী অতিশ্যঃ। তদ্বতি ত্রি। ইত্যমর:।।

ভূশন্ ব্য পুকর্ষার্থ:।। মূল্রর্থ:।।
শোভন । ইতি শব্রত্নাবলী।।
ভূষৎ পু• পাষাণ:। ইতি শব্রত্নাবলী।।
বলী।।

ভৃষ্ট: ত্রি জলোপসেক বিনা পদ্ব:।
ভারাইতি ভাষা।ইতি হেনচন্দুঃ
ভৃষ্ঠ এওলঃ পু॰ ভর্জনবিশিষ্টধান্যনিকর:। চাল ভারা ইতি ভাষা।
অস্য গুণাঃ। সুগদ্ধিং কফহা কক্ষঃ
পিত্রলো ভৃষ্ট ত গুলঃ।ইতি রাজবল্লভঃ।।

ज्हेगवः भू॰ जर्जनविभिष्ठेगवः। यव-जाका हेजि जामा। जद्भर्यशायः। धानाः २। हेज्यमतः॥ वाक्रक•०। हेजिभदान्त्रका॥ जन्य खना धा-नाभाद्य पृष्ठेवशः॥

ज्हेतः क्री ज्हेज्ञः। मृष्ठि हैज्ञि जारा। ज्यभर्यद्वाः । स्वतः २ नद्राकदः २। हेजि सद्रान्द्वितः।। ज्हेरः ज्ञी जर्जनः।। स्नद्रवादिका। हेजि मिर्मा।।

কবিকল্পজনঃ॥ গি ভূণাতি 🛒 📨 र्गिः। ভূজি ভর্জন। ইতিদুগ लाग्या ভেকঃ পু॰ জন্তবিশেষঃ। ব্যাদের **ভाষा। उৎপ**र्यतायः । म*्र*कःः वर्षाज्ः २ भाज्यः ८ श्रयः ८ नम् 🚌 ७। ইত্যমরঃ ॥ वृश्चिज्ः १ मान्तः ৮। ইতি তটীকা।। প্লবক্ষম: 🗅 वाकः २० क्षवगः २२ महाः २३ नुन्त नः १० गृहवहाः १८ जाज्याः १८ जिन्नारगाइनः ७। ইতি भग देशी-वली ।। नन्तकः ১१ क्ञालयः ১৮ রেকঃ ১৯। ইতি ত্রিকাপ্তশেষঃ !। **मुखः २० इतिः २) लू** तृ हिः २२ वृ ि भुष्ठक न्नकाशि भ है। भा 🔫 ২**০** কটুরবঃ২৪। অস্যস্য•**স গু** गरिरावनकत्त्वः। भाग ज्छ्ना इ (गर्किय अष्ठहिष्टि ना निव्यक्षा इ রাজনির্ঘণ্টঃ।।নেঘঃ। ইতিমেদিই **७**किं शू॰ म् न्यार्डिनः। स्थ তুল্যো ভে ফট বেকটো। ইতি ছি পকোষঃ !!

(छकनिः श्रु॰ म्ट्नातिस्मयः। छाष्ट्रस् इछि छाषा। यमा छगाः। मधुत्रः । मी उद्गः। तमाद्वः। तस्यकत् व् एकद्मशः। इछि ताद्वतस्य छः॥ एक किव इछित भाठेः॥ ভেকপণী স্ত্রী মণ্ড্কপণী ইতি কেটিশ্ব।।

ভেকভূক**্পু• সর্গঃ। ইতি** ত্রিকাণ্ড-শেষঃ॥

েকী প্রী ভেকপুশা। তৎপর্যায়ঃ
। শ্রী ২ গঙ্গদী ১ বর্ষাত্বী ৪।
ইত্যারঃ ॥ অন্যেপীবন্ত ভেকপ
র্যায়া এতদ্বাচকাঃ॥ মণ্ডুকপণী বৃ
, শ্রী ভিত্তমালা॥

ি উড়ি পূ॰ নেধঃ। অস্যভাষা ভেডা ॥ । ইতি হেলান্দুঃ।।

দুপান্তনা । তানিক লবণ মাদ্ দুপান্তনা । তানিক লবণ মাদ্ সিপোক্ষ্ তালিক লবণ মাদ্ সিপোক্ষ্ তালিক শুক্র পিন্ত ককপুদ কলক কলে শুক্র পিন্ত কবলে চালিলে বরণ ইতি ভাবপুকাশাঃ। ভেতা ত্রি ভোলেকা। যথা। সদাল পাণি বিজ্ঞেয় সেতুভেত্তা সমীপ-তঃ। ইতি ব্যবসাধ্যতক্ত্বণ।

ভদঃ পু॰ শত্রশীকরণোপায়চতৃ স্থান্তর্গত তৃতীযোপায়ঃ। তৎপ র্য্যায়ঃ। উপজাপঃ ২। ইত্যুদরঃ॥ পুরতো বিশ্লেষ্য আত্মসাৎ করণ ভেদঃ। ইতি ভরতঃ॥ তদিশোষা। যথা। মৎস্য উবাচ। পরস্পরস্ত যে দুখ্রাঃ কুল্লা ভীতাবনানিতাঃ।

তেষা ভেদ পুযুঞ্জীত ভেদ সাধ্যা হি তে মতাঃ ॥ যে তু যেনৈব দো-ষেণ পরমাদ্বাপরাধ্যতি। তে তু তদোষ পাকেম ভেদনীয়া ভূশং ত-णः ॥ व्याजीयः मर्भायाम्। यः भद्र-माफ्रभाय खरा। এवः हि प्रभायिकः म् यथावष्म नानाय ।। স হতা হি বিনা ভেদ শকেণাপি সুদু:সহা:। ভেদ মেব পূশ-সন্তি তমান্নয বিশা-त्रमाः ॥ समृत्थं नामायास्करः (छरः পরমুখেণ চ। পরীক্ষ্য সাধু মন্যন্তে ভেদ• পরমুখাৎ শুভ• ॥ ভেদ্যাঃ স্বকার্য্য মুদ্দিশ্য জশলৈ র্যে হি ভে-দিতাঃ ভেদিতা স্তে বিনিদ্দিষ্টা নৈব রালার্থ বাদিভিঃ ৷৷ অন্তঃ কোপো বহি:কোপো যত্ৰ স্যাতা মহীক্ষি-তাণ অন্তঃকোপো নহাণ্ডত্র নাশকঃ পৃথিবীক্ষিতাণ।। সামন্তকোপো বা-হুদ্ধ কোপঃ প্রেগক্তো মনীযিভিঃ। নহিষী ব্বরাজাভ্যাণ তথা সেনাপ-তি विकः॥ अभाजा मञ्जिप रेम्ह्य রাজপুতা তথৈব চ। অভঃকোপো বিনিৰ্দ্দিষ্টো দাৰুণঃ পৃথিবীক্ষিতাণ ॥ वाश्काल मगूट भाम मूमक्छऽ পি পার্থিবঃ। শুদ্ধান্তন্ত নহাভাপ শীঘুনেব জগী ভবেৎ ॥ অপি শক্ত সমো রাজা অন্তঃকোপেন নশ্যতি।

অন্তঃকোপে সমূৎপল্ল তথাদুক্ষে-মহীক্ষিতা।। পরতঃ কোপ মূৎ भार्। ভেদেন विद्यिगीयूगा। उद्धाः তীনা ভেদন কার্য্য পরেষা বি-किगीयूना ।। तक्रिकित भुगायुन द्धाः তিভেদ **স্তথাত্মন:।**জ্ঞাতয: পরি-তপ্যম্ভে সতত পরিতপ্য য় ৷৷ ত-থাপি তেষা কর্ত্তব্য সুগম্ভীরেণ (**६** इमा । गुरुष मान मानान्त्राः **ভেদ एउ: ७**१ ७ एक्द्र : ।। न क्लां ७ রনৃগৃহাতি ৰ জ্ঞাতি দ্পু নিছতি। জ্ঞাতিভি ভেঁবনীযাস্ত বিপব স্তেন পার্থি বৈঃ॥ ভিন্না হি শক্যা ব্লি-পবঃ পুভূতাঃ স্বল্পেন সৈন্যেন নিহ-স্ত মাজৌ। সুস•হতানা• হি ততস্ত ভেদ কার্য্য রিপূণা নযশাস্ত্রবি-ডিঃ॥ ইতি মাৎসে রাজধর্মে ১৯৭ व्यश्रायः ॥ 🗱 ॥ देवशः ॥ वित्नायः ॥ विरात्र १ इंडि (मिनी।। विद्यकः । যথা। কাশে ধূম স্তবাণা বলবতি गक्र (इस (अराभवामा वरहा-মন্দে চ পিষ্ট• সপিশিত ন্নিশ• বারিপান কফান্তৌ। ইতি হা म्रार्वनारेक ।।

जित्रः वि विमातकः॥ विद्याहरको स्थापिः॥ भृथक्कातकः। यथा। ভেদয্তি অন্যপদার্থ পৃথক্করো जीि जिस्क नामा निवः गांखन गार्गः। इठि कात्रक होकायाः मूर्गाः मामः॥ जिम्हा । जिम्हा जिम्हा । निष्ठे मञ्चा । श्रान्ह निम्हा । विक्षा यम्हा मम्बा सम्ह । जिम्हा । इठि कनामहीकाष्ठ जिङ्का ।

ভেদন ক্লী হিস্কু। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ
। বিদারণ । ইতি ভিদ্বাতা
ভাবে ২নট্পুত্যযেন নিয়ন।।

ভেদনঃ পু॰ অমুবে তসঃ। শূকরঃ। ইতি রাজনিঘণ্টঃ।।

ভেদিতঃ ত্রি ভিষং। দারিতঃ। ইত্য-মরং॥

ভেদী পু॰ অমুবেতসঃ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।। ভেদকর্ত্তরি তদ্বিশিষ্টেচ ত্রি॥

ভেদ্র ক্লী ভিদ্র । বজু । ইতি দ্বিকপকোষঃ।।

(जद्रः भू भेट्रः॥ (जद्री॥ पून्प् जिः ॥ इति म किश्व माद्राभा ितृ जिः ॥ ज्वानकः २ पून्प् जिः ०। इत्रामदः॥ जनकः २ पून्प् जिः ०। इत्रामदः॥ विद्री ४ व्यानकम् न्य जिः ० व्यानकः पून्प् जी ७। इति उष्टीकाया जनकः द्वा ।।

ভেরী জ্রী ভেরিঃ।ইত্যনর টীকাষাণ

ख्किथा खी प्रविश्वित्वाविष्णवः॥ य-किगोल्हः। इंडि मिनि॥ ना प्रविश्वाकानी। यथा। विकागनि-न्या निड्डा भ्रमाम्डद्रक्षिडा। महाविष्ठ्रभ्रती (यंडा ख्किथा क-न्युन्पती॥ इंडि कानीक्नमर्वस्य श्वीनिवभद्रभूताम महाप्त श्वाहः।।

ভেনঃ পু॰ প্লবং॥ মুনিবিশেষং। ইতি

মেদিনী ॥ ভেলক । ইভি সংক্ষি-গুদারোণাদিকৃতিঃ ॥

(जनकः भू क्षी नम्प्राम्जित्रगमाथन वस्त । (जना हेजि जाया । उट भर्यप्रायः। भ्रदः र कानः ० উড्क ८ উড्क ६ उत्रमः ७ जातगः १ जा-त्रकः ৮ । ইजि सम्बद्धावनी ॥ उ-त्रीयः ৯ । ইजि क्षितः॥

ভেষ স্বাঞা ভবে। ইতি কবিকল্পজনঃ ।। শ অবিভেষৎ। ঞ ভেষতি ভে-ষতে বিভেষে। ইতি দুর্গাদাসঃ।। ভেষজ ল্লী ঔষধ। ইত্যমরঃ॥ অথ ভেষর ভক্ষণ সম্যাঃ। ভৈষ্ का मंडावहातर भुजाउ भागामा বুধ:। কবাযাণস্ত বিশেষেণ ভত্ৰ **ए**डिन स मिनि ३: ।। (द्धियः शक्षित्यः कारणः टिचका शुरुरा नृगाः । कि-ঞ্চিৎ স্র্য্যাদয়ে জাতে তথা দিবস ভোজনে। সাণ্যনে ভোজনে চ মুহু শ্চাপি তথা নি শ। 🗱। তত্র পুথ गः कालः। शुगः शिख करकारम्रक বিরেক বমনার্থগোঃ। লেখনার্থে চ रै छवका । भू जार जान माहरत् ॥ 🗱 ॥ जथ विजीयः कानः । रेज-ষজ্য বিভণে ২পানে ভোজনাগু পু**শস্যতে।** অৰ**ৌ চিত্ৰভৌজ্যৈ**চ निवः करित माश्रत् ॥ मगान

वाउ विच्रा मान्त्राम विक्रिमी পন•। দদ্যান্তোজন মধ্যে চ ভৈ-ষ্ক্র্য স্পালে। ভিষক্ ॥ ব্যানকো-পে তু ভৈষজ্য ভোজনান্তে সনাহ-রে । হিক্না ক্ষেপক কম্পেষ্ পূর্ব নন্তে চ ভোজনাৎ ॥ 🐞 ॥ অথ তৃ ভীয়ঃ কাল:। উদানে স্বলিতে বা তে শ্বরভঙ্গাদি কারিণি। গ্রাস গ্রা-**সাদিক দেয• ভৈষজ্য• সাধ্য ভো**-জনে ॥ পুাণে পুদুষ্টে সাধ্যস্য ভুক্ত-म्याख भूमीया । 'ঔषथ' भागामा-ধীরৈঃ কালো ২য়ণ স্যাৎ ভৃতীয়কঃ ।। 🕸 ।। व्यथ ठठुर्थः कालः । मूङ् मू 🕫 क जृदे इ कि शिक्षा आम गरम्यू ह। সামঞ্চ ভেষজ দদ্যাদিতি কাল চ जूर्थकः ॥ 🗱 ॥ **जय शक्षमः कानः।** উদ্ধৃ গন্ত বিকারেষু লেখনে বৃংছণে **७था। भा**ष्टान भगत (एय मनस्र ভেষজ নিশি ॥ ইতি পঞ্মঃ কালঃ ।। 🕸 ।। नित्रमम्। (ভ्यक्रम्) रूप मार् । বীৰ্য্যাধিক• ভবতি ভেষত্ৰ মন্নহীন• ङ्न्याखनामय नमः **म**य माणू रेह्य ॥ ভদাল বৃদ্ধ যুবতী মৃদুভিশ্চ পীত• গ্লানি পরা নযতি চাশু বলক্ষযঞ ॥ 🕸 ॥ नाबन्। (ভय्जन• धननार्। শীঘু বিপাক মুপপত্তি বল ন হি 🖠 ग्राम्माव्छ । नह मूङ् वंदनाभिति । ॥

এতদ্ধিত স্থবির বাল কৃশাক্ষনভেঃ প্রাণ্ডোজনাত্মদশিত কিল তাতে-**দ্ব ৷৷ তদ্ব অমা**কৃতব্ব ভেল্ল নিতি শেষঃ॥ ঔষধ শেষে ভুক্ত ভোজন শেষে যদৌষধ• পীত•ান করোতি গদোপশন• প্রকোপযক্ত ন্য রোগাংশ্যা পীত মিত্যুপ জক্ষ-१९। नीजिह हा! अनुतासम्बन्ध वः याष्ट्राः कुल्काम् मनः क्रः। न यू इ निन्द्रियाम । इ मृष्कि की रिगेरि 🐇 कृजि: ॥ क्रमा मार्श शृक्षन ভুন মূর্ছ। শিরোক্জাঃ। অরতি 🤉 হানিশ্চ সাবশেষৌয়ধাকৃতিঃ॥ 🐣 অথ ভেষজ ভক্ষণ বিধি মাহ ে कः। पिवान् एकः खथा विभान् । বিত্বাপুণম্য চ। আশিষশ্চ সমাদ শুদ্ধবা ভেষজ ভজেৎ ॥ রসা নিব্ধী পা• দেবানানিব চামৃত•া 🤫 ধেবোত্তম নাগানা ভৈষ্জ্য মিদ্য स्र (७॥ वृक्ष मकायि कर्मुन्मु ज् न्तुार्कानिनाननाः। श्रययः भोवि পুনো ভূমিদেবা**শ্চ পাস্ত বঃ॥ ইভ**্যা म्रा•िषः‼ঔষ**य• (**হ्म রজত মৃদ্ভ⊹ জন পরিস্থিত:। পিবেদ্যজ্জনস্য शु भूमत वरत्यक्यः ॥ भूमा उस्प বিশ্যাথ পীত্বা পাত্র মধোনুখে। নিঃ किन्। हम्। निवनः जाष्वापृत

वाडरर् ॥ 🗱 ॥ व्यथ (ভवडानाः विधानानि। खत्रज्ञण उथा क्यूः दृष्य हिन काण्टिको। (ज्ञ्याः क्यायाः निष्धां वात्र मार्थः मृश्यां वा वा वा विकास वा वाफी ब्रह्म विधिः। जार्जाख्य क्ताक्ट्रांट मुवांट क्यांट नम्खाव ্বস্ত্রনিগ্লীডিতো যুক্ত স্বরুসোরস উচ্যতে ॥ 🗱 ॥ অথ কল্প বিধিঃ। দুব্য মাদু • শিলা পিষ্ট• শৃষ্ব•বা সজ-্ল नः ভবে । পुक्तिभागानयमञ् ভন্মান কর্ম মাতে ।৷ কল্পেনধ ঘৃত তৈল•ুদেয়• দ্বিত্তণ নাত্রয়া। সিতা• **७**७• ज्ञामः परताष्ट्रवा (परा) • छञ्छ-णाः ।:का। अय इत्य विकित्तः। शानीमः বোডশ গুণ-ক্লুণ্ন দুব্য পলে ক্ষিপেৎ । गृष्टभावि द्वाधयम् ग्राम्य महमाः भावत्मविछ ।। कर्याको जू भव या-वफ्रां (वाउनिकः बनः। (वाउ-শিক বোডশগুণ ।৷ গ্লা। অথ হিন বিধিঃ। ক্ষুণ দুব্য পলং সম্যক্ষি नी त्रभरेलः भ्रु ७ । निल्मावि ७ । हि-भः म महाख्या भी छ क्यायकः।। 🏶 !! व्यथ काले विश्वः। क्यू पुवा भाषा अन्।क् जलमूकः विनिःक्तिःश्रट।मृट भारभञ्ज उत्वाचानः उउत्र मावरय शूरोर ॥ त्र त्रार हुर्ग पुरः कान्रे छ-মান দিপলোমিত। ক্ষৌদু সি

তা গুড়াरी·स कर्यमाबान् विनिः**कि**-পে ।। # ।। অথ তণ্ডলজল বিষিঃ । কণ্ডিত• তঞুল পল• জলে ২ই ও-ণিতে ক্ষিপেৎ। ভাৰযিত্বা জল• গ্ৰা-श्र (त्र अर्वेव कर्पामू ।। अ।। व्यथ মন্ত্রিধিঃ। জলে চতুয়লে শীতে ফু-न पुरा भन किर्भर। मृर्भाव मञ्चरायः सम्बद्धक जमाह विश्वन नि (व् ।। 🗱 ।। अथ ह्र्न विधिः। अज्रुष्ठ শুষ্ক বন্দুব্য: সুপিষ্ক বন্ধগালিত।। उ९ महार्ग तबः क्लाम खबाजा কর্য সন্মিতা।। চূর্ণেগুড: সন্মে দেব: শর্করা দ্বিশুণা মতা । চুর্ণেযুক্ত জিঙ क्षिक (मरा नाट क्षिम कृष्डावट ॥॥। ষ্মথ ভাবনা বিধি:। দুবেণ যাবুক্তা नगडक् हूर्नः नर्बः भ्रुष्ठः ज्वद्रा स्त्रः वनायाः भुमागञ्ज हूर्त (भुक्तिः जि सगुरेतः ॥ 🗱 H. जय भूषेभाक विश्वः । भूटे भक्ता क्लुमा यज्ञामा गृश्ट যতং। অতস্ত পুটপাকানা যুক্তি द्र-ত্রোচ্যতে ন্যায় পুটপাকস্যপাকো-য় লেপস্যান্ধার বর্ণতা 🗗 লেপঞ্চ ष्ठक्रनः कृतः अर्येऽ। वाक्षुक्षः गाउकः॥ कामती वर्षे अग्रामि शरेव वर्षेत्र मू-जमः। भन्नाजा त्रामा गु। श्रः कर्य-बाब॰ बधु किलिद्राक्त्रकृतं मुताम्।-স্ত দেয়া: কোল মিতা বুধৈ: ॥ 🕸 📭

व्यापारकारक विशिः। वाश्वेरम्मा-भ শেবেণ চতুর্থেনার্ছকেন বা । জ্বথ वा कृथितिनव निष्कं मुक्तामक व (म् ।। 🛪।। ज्ञा कीत्रभाक विधिः। कीत महे खन मुक्राए कीत्रामीत क-ज्र्वन । क्षीवावरमाष उर भी उ भून गामान्व कार्य ॥ ॥ विश्वावि र विधिः। कृथारम र्यट् भूनः भाकाट ॥ यनदः ना द्रम किया। त्मावत्वरूक (वर्क उगाडा मार भरना शिका । 🗱 ।। व्यथ वर्षिका विधिः । विक्रिका व्यथ कथारङ जमान विका वही। स्मा-দকো ভটিকা পিণ্ডী গুড়ো বৰ্জি গু-থোচ্যতে।। লেহ বৎ সাধ্যতে বয়ে खेरा वा न क्रांच वा। ख्युन् वी कि পেত্ৰত চূৰ্ণ ভিন্নিৰ্যিতা বটী।। # 11 व्यथ मन्नान विविः। मृत्यम् छित्रकालः इ॰ मृत्रु॰ यद मिक्त ॐ छत्वद । जा সবাগ্নিষ্ট ভেদৈ তথ পোচ্যতে ভে ব্ৰোচিত ৷৷ 🏶 ৷৷ অথ ধাত্না পো খন সারণ বিধিঃ। তত্র শোধন বি ॥ ধি:। প্ৰজ্লীকৃত্য প্ৰাণি হেনে। বক্লো পুতাগণে । নিষিঞ্চেত্তপ্ত তপ্তানি তৈলে তক্তে চ কাঞ্জিকে॥ श्याम् व ह स्वयानाः कवारय उ ত্রিধা ত্রিধা। ত্রব হেনুঃ পরেষাঞ্চ था ज्ञा (भाषन जित्र ॥ अथ

" ৰুগ্ৰাৰ মারণ বিখিঃ। স্বৰ্ণ স্থা দ্বিভন। ज्ङ महान अरु मम्बद्धः। उत्तानक नमान नका बिम्य। इश्ता छत्र।। (गा-ण स्थः उराङा कष्मा नताव एए अ॰-भूटि। विश्मवताभरेक र्माट भूहै। ন্যেক চত্তদেশ। নিৰুখ ভাষতে ख्य गास्ता (त्यः भूनः भूनः ॥ 🗱 ॥ व्यथ (सहनाम विविः। (सङ् कुर्वि-**यः (शास्त्रा घ्उः डिनः प्रमा उंधा।** শক্তা চ তৎ লিবেন্নৰ্ত্যঃ কিঞ্চিদ ्रज्ञाति । क्षाः व्यथं शक्षकर्याः शि। भूथमः वमनः भन्ठाम्विसकः म्हा-न्वामनः। এडानि भक्षः हर्माणि निकः (र्राच्या जय कत বর্জিবিবিং। ষ্তাভ্যক্তে অদে কিপ্তা भूका बाक्ष मिछ। । नव भूवर्जिनी-विक्तः कववर्जिक मा म्या ॥ # ॥ व्यथ नमागुरुव विधित्ति नमाः उट कथारङ भीरेत नामा गाञ्च सामीयथः । लावन॰ नस कार्याङ उत्र । नाम ष्य॰ म उ॰ ॥ #न। यथ ध्मभान विविः। ष्मछ यहिशः (भुक्तिः समाना वृष्ट्र खथा। (ब्रह्मः कात्रका हिव वागता वुनव्भनः॥ 🛊 ॥ जथ ग्रुव कवन পুতিসারণ বিধি:। তত্র গভিষ:। त्त्रह कीत कषायानि मुदेवः जन्मूर्न-गान्म । जाभ्यं। श्रीय छोव विवि

र्माञ्च स्राज्यामः ।। जय कदनाः। वाक लिख क्यान्य) मुवाना कतवा खुरबं। अर्क निश्किना मन्त्रवं निही रवर करान दिविः ॥ 🕸 🗓 वार्थ भूछि मात्रगः। मन्ड जिल्हा म्थामाः गर्ग क्नुभ्यत्व रिकः । मरिन सर्वेन मक्नुता তদক্ত পুতিসারণ ॥ ক্ল। অথ ষেদ রিধি:। বেদ শচত্রিধ: পোক তা ल्गाक (धर मः छिडः । উপनारमा দুবঃ দেন: সর্বে বাতার্ত্তি হারিণঃ 11 # 11 व्यथ कर्नभूत्रन विविः । स्वर स्थि कर्ग (मणा कि कि कु भार्य मा- ॥ विनः। गृरिकः (मुरेश द्वरिम क्रिकः का रिकः (माञ्चः भुभूत्र(यटः॥ कर्षः भू রিত রক্ষেছত পঞ্শতানি বা। স হ্সু বাপি নাত্রাণা শ্রোত্র কণ্ঠ শি-(द्वागटेन: ॥ द्रजाटेन्ड: भूद्रग॰ कर्त ভোজনাৎ প্রাক্ পু**লস্যতে। তৈলা** দ্যৈঃ প্রণণ কর্ণে ভাক্ষরে হস্ত মুপা-গতে।। #।। অথালেপ विश्वः। ष-থালেপস্য নামানি লেপ লেপন লি-श्रुगः । (नाषाः मा विषशा वर्गः म ह লেপ ব্রিধা নতঃ ।৷ ন রাত্রৌ লেপন व्यर्गा मृयामानः न शात्राय । #!। व्यर्थ (मानि ज्यावन विक्षिः। (मा-निजः भावत्यब्द्धत्य द्रावयः भुनती कार्छ। पुष्टः भुष्टार्क नथना भुष्टा-

खाक म्याभियाता मद्रश्कारम य-ভাবেन लागिङ भावत्यम् देश । प् द्याय नुष्ट्र (भाषाम्। म न्। क्वित्र भा-তनार ॥ ॥। व्यथारम्हाउन विश्विः। शाय क्लो मानव स्तर विनम्ना॰ यजु **भाउ**मः । ष्ठाञ्चरणात्रीणिष्ठ स्मर्ज পোক মাশ্চ্যোতন হিত ॥ # ॥ অর্থ বিডালক বিধিঃ। বিডালকো বহি র্লেপোনেত্রে পক্ষ বিব্রজ্জিতে। ভস্য মাত্রা পরিজ্ঞেষা মুখ্যলেপ বি-थान वर्षा 🗱 ॥ व्यथ उर्भग विधिः। বাতাতল রজো হানে বেশ্মনুগ্রান नारिनः। व्याधाती नाष हर्तन क्रि-सिन भित्रिम खिट्डो ॥ मस्मी मृहादम-चारियो कर्नुत्रो (नेज कायरयाः। भू-अरयम्भ्ज भरेखन विनीतन मूरथा-मर्कि । क्या अन विश्विः। अय नगरगरमावनार शास मखन माठ-**दार । जलन॰** किय**ा**ज न्तर्वि जम्मूर्व ५-ক্ষাঞ্জন॰ মত ।। #।। অথ প্তাঞ্জন বিধি: ৷ গত দোষ নপেতালু, পুপ-मा९ नगागञ्जना । न्यानामा যথা দোষ• কাৰ্য্য• পুত্যঞ্জন• তত্তঃ ॥ ইতি ভাবপুকাশ:॥ 🕸 ॥ অথ ভেষজ করণ ভক্ষণ দিন**া ভত্র ভি**-থয় বিষ্টিভিন্নাঃ শোভনাঃ। বারাঃ রবি সোম বৃধ বৃহস্পতি শুকাণা । नक्क जानि भू बंक हुनी भू बंगिता भू बंजा पूर्ण ज्ञान ज्ञान जिल्ला थाना जिमानि । जञ्च क्ष्म निर्मान । वाद्यानि निथून कन्या थन् गीन न॰ ज्ञानि। जञ्च छक तूथ वन्तु भू क्ष्मु ज्ञानि। जञ्च छक तूथ वन्तु भू क्ष्मु ज्ञानि। जञ्च छक तूथ वन्तु भू क्षमु ज्ञानि। उञ्च छक तूथ वन्तु भू क्षमु ज्ञानि। उञ्च छक तूथ वन्तु भू क्षमु

ভেষজাক্ত ক্লী অনুপান্। ইতি শব ্ল চন্দ্ৰিকা ৷৷

रिज्ञी जी जीरेनकामणी। यथा। ্অথ ভৈনী। বিষ্ধ্যমেতিরে। মৃগ भीर्य मगध्य गायगामि भूजाश তে। একাদশ্যাণ সিতে পক্ষে স্কো প্রাসো জিতেন্দ্র: ।। দ্বাদশ্যাণ যট্তিলাচার ক্রাপাপাৎপুমুচ্য उ। जिल्लायी जिल्लाव की जिल्ला ्रहामी जिलामकी।। जिलमा माजा ভোকা চ ষট্তিলী नावभीपि । . सथ्मारभुद्राण । यम्रह्रेनाः हजुर्म শ্যা॰ দাদশ্যা মথ ভারত। অন্যে স্থাপি দিনক্ষেষু নশক্ত স্তুমুপোষিতু ॥ ততঃ প্ণ্য মিমাণ ভীম তিথিণ भाभ भुगामिनी । উপোষ্য विश्वि नातन ग्रह् विकाः श्रदः श्रहः।। जी-মতিথি ভৈনীত্বেন খ্যাতা একাদ मी ।। ইত্যেকाम्मी जबु ।। #॥ श्री । शिजाम् कृताह। माप्नाः

ति भूत्रभाक न्यंत्रकं गुरु। भूता একাদশী তথা চৈষা ভীমেন সমূ विजा। जाम्बर्ध दुउं क् द्वा भि गा नन्ता जल्द । जीम बाहर्भ 🗇 विथाना भाषाना भूगाविक्ती वक ক্ষত্রেণ বিরাপ্যেকা বুক্ষহত্যাদি না শ্বেৎ। বিনিহ্ভিমহাপাপ অনৃত্যা विषय थ्या ॥ अन्यन अल रहर क जार्या ह न जि॰ यथा। जनमंश यद थर्म क्रमञ्जी हयथा नृशः ॥ व्यक्तास ন যথা জ্ঞান শোচঞাশোচতা ফ विष्युक्यायथा भाका जिल्ला । र्था ।। इस यथाक मान्धानार्थ-कार्थ मक्षयः । यथ। नुकीर्खनामः 🗝 ख्ला वि विश्वयात्वथा ॥ जिल्हा ্যথা পুণ্রো সাবে৷ দূরগতে র্যথ 📑 कार्यन ह यथा भाख यथा विख वर्षनाट ॥ यथा म्यीहनाज्ञाः कनानाक यज्युजाः । তথিব প নাশায় পোক্তেব দাদশী শুভা বুকাহত্যা সুরাপান তেয় গুরহান গন:। যুগপদুপজাতানি নহি হ बिপुष्कतः ॥ न চাপি निमियक्षिकः अक्षा कर के कि की का कि की विक्ती य-मूना शक्रा न (क्षेत्रा न अवस्त्रीं।। नरें>ठ সর্বতীর্থানি একাদশ্যাঃ সমানি 🖘 न दानः न जल्मा (हासा न हान्। भूक्ः

ार्वियामहाः साहाराजा म**रा**-भूगाः ईयस्यकारमी सद्धाः ॥ अस्यन् स्वाह्दभुषः कृषा (मण्ड हार्षेकः। रिजतवः भूः मह्नद्रः। ইতি मिनिशि

तिस्ति पर भएड ह्या वि जामु ভাননো মর্রবীজন্ততে বিপাঃ সিত বস্তাবভঠিতে। সহিরণ্যে সুদীপা-रिन्द्रः कृञ्बाभूजाः भुयञ्च उः ॥ वज्ञाशाय নমঃ পাদৌ কোডাকৃতে নমঃ কটি॰ **মনাজ্যি গট্টার গোরায উর: শ্রী**-वर भक्षा परगा । वराष्ट्र **महमू लि**त्र-श्म शेष्ठी महर्षभ्रवाय है। मूथः मर्बाः ক্সনে পূজ্য ালটি পুভবাৰ **চ**া। কেশার শতমন্থান প্রগ্র দেবস্গ চক্রিণঃ . বিধিনা শ্**জ্যিত্বা তু কৃত্বা** গাগরণ নিশি।। শুরা পুরাণ দে-বস্য মাহাত্ম্য পুতিপাদকশা প্রাত विभाग म्खा जू वाहकाय मुजाय ह া কনক কোড সহিত সন্নিবেদ্য পরিছদ । পশ্চাত্ত্র পারণ সর্য্যা মাতি তৃপ্তঃ সুহৃদৃতঃ॥ এব॰ কৃত্বা नाता विशान ज्यः सनाभा जादर। िलारिवाकामणी॰ भूगा। मूहारङ व अभ जियाद ॥ मत्मा जिल्लाविजाः ाधिः क्या मर्गुजामिकः। इंडि क्छ अकारमी गाहाल्या ३२१ । श्रायः।।

কুচিং বিষ্ণান বিক্রা ভৈরবং তি ভ্যানকং। ইত্যারঃ।। अन्ध भर्याशाः **ভरक्त मस्ति नु**क्टे-व्याः ॥

> ভযানকরসঃ। ইত্যনর টীকাযাণ ভরত: ।। নদবিশেষ: । ইতি শব্দ-রত্নাবলী।। রাগভেদঃ। ইতি হেম-हम्मुः॥ ॥ अष्टे रे छत्रवानामू ८ भिक्त যথা। দৈত্যাধিপঃ সমুৎপত্য হ-রোরসি গদা ক্লিপৎ। সংস্থিত स মহাযোগী সর্বাধারঃ পুজাপতিঃ॥ গদাপাত ক্ষতা ভূরি চতুর্ধাসৃগথা-পত্। পূর্ধার। সমু ভূতো ভৈর-বো হগ্নি সমপুভঃ॥ বিদ্যারাজেন্ডি বিখ্যাতঃপদ্মনালা বিভূষিতঃ। ত-থা দক্ষিণ ধারোপো ভৈরব: প্রেক্ত-মাস্থিতঃ॥ কানরাজেতি বিখ্যাতঃ কৃষ্ণাঞ্জন সমপুভঃ। নাগরাজেতি বিখ্যাত শক্তনালা বিভূষিতথা ক তজাফবিরাজ্জাতো ভৈরব: শূল ভূ-ষি জঃ। সম্ভূনরোজেতি বিখ্যাত ই न्ताग्य ममभुजः॥ ভ्यिष्ठाक्षित्रा-জ্জাতো ভৈরবঃ ফল ভূষিতঃ খ্যা-তো লম্বিত রাজেতিশোভাঞ্জন স মপুভঃ॥ ততো ভূদে বরাজেতি ভৈ-वनः क उनार्थ। उनुवादना वच्यायः क उन्नारे खत्राया २ भतः ॥ वयः हि

সপ্তৰূপো হলৌ কথ্যতে ভৈরবো মু 🍴 নে। বিষুরাজো ২%নঃ প্রোক্তো ভৈ ক্লবাষ্টক মৃচ্যতে ॥ ইতি বাম**নপু**রা-ণে অন্ধকবর পুদানে ভৈরব প্রাদুর্ভা (व ७% अथ्यायः ॥ 🗱 ॥ भाजनीय मूर्गा পুরাবাণ অস্ট্রো পূজ্য ভৈরবা যথা। े चारिन महारेख्य तथ्य म॰हात्ररेख्य व ন্তথা। অসিতাঙ্গ ভৈরবঞ্চ কক্ ভৈ-রব মেব চ॥ ততঃ কাল• ভৈরবঞ্চ ক্রোপভৈরবমেব চ। ভামুচ্ড চন্দুচ্ ড॰ অন্তে চ ভৈরব দ্বয় ।। এতান্ স॰ পুজ্য মধ্যে চ নবশক্তীশ্চ পূজ্যেছ। ইতি বুন্ধবৈবৰ্ভে পুকৃতিখণ্ডে দুৰ্গো-পাথ্যানে ৬১ অধ্যাयः॥ তানুচ্ড চ मृत्रुप्राः ञ्रात क्लानरेज्य कृत् হৈ ব্যবে জেয়ে। ইতি তবৈৰ গণগ তিখণ্ডে ৪১ অধ্যানঃ॥ 🗱 ॥ অপিচ। অসিতাঙ্গে¦ৰুক্ শ্চণ্ড: ক্ৰোপ্ উন্মন্ত **স**•জ्कः। कशानी जीयन रेम्हर म• হার শ্চাষ্ট্রা:মৃতঃ।। ইতি তন্ত্রসার: 1 # ।। শিবগণাধিপ ভৈরবে। যথা 🛭 । नन्ती ज्ञ्री महाकात्वा (वजात्वा) **ভৈ**রব স্তথা। তা**হ্ণ** ভূত্বা মহেশস্য वीज जीजा खरणाथनाः॥ रेग मानूष শরীরেণ পুাগিরে তগসো বলাৎ। গণানামাধিপত্যস্ত তে জানন্তি হরণ পর•া ইতি কালি চাপুরাণে ৪৪ অ-

धायः ॥ #॥ कत्रवीत भूद्रवाक हन्यु-শেখরপত্নী তারাবতী গর্ভে,মহাদে-वाब्हा व भूयः। म ह भू दा र्व्यी वज् व পार्बे जी भाषा एवा ने बसूर्य। जूजा ভৈরব ইতি নামাখ্যাত: ।, বথা। পুৰিবেশ ততো দেবী স্বয়ং ভারাব-जी जत्नो। महारादा रिश जम्मान কামার্থ সমুপস্থিতঃ॥ কামাবসানে তস্যান্ত সদ্যোজাত• সূত হয়•১ অভ-वश्रभाष्ट्व उथा भाषामृगानन ॥ **७७ उ**र्या नाम हर्कि नात्रस्त वहनाः म्भाष्ट्राष्ट्री रेज्यव नामाजूट जीवाः পুথোভযকরঃ॥ বেতাল সদৃশঃ কৃ-ক্ষোবেতালো হভূত্তথাহপর:৷৷ ইতি कालिकाभूद्रार ६२ व्यस्तायः ॥ # ॥ অপিচ।যোৎসৌ ভৃঙ্গী হরসুতো ম-হাকালোপি ভর্গ র:। তাবেব গৌরী भारभन अञ्चय नद्र यानिको॥ ८८-**जान रे** जता वी जार जो श्री विद्या निर्म বেশ্মন। यथा ভृक्ति महाकालाकू -भारती भाक् उथा भृग्।। (या श्लो भशरे छत्र वा थाः म का यः मात्र छ। इ-तः। टेब्द्रवः भृष्राचायः गनायः स्का হরাক্সন্ধ: ॥ ইতি কালিক:পুরাণে ८৫ अधायः ॥ 🗱 ॥ मुद्धयाचा गि-ति**ष्ट रे**जताया । एका 🖏 रेजिन বোদেবো ভর্গ সঙ্গন সম্ভবঃ। দুর্জবা-

(نر

(थ) वत निरती वर्गमा भग ज्ञिनाः।। বোহসোঁ শরভ ৰূপস্য মধ্য খণ্ডা **हि रेज्य वः। ज**वव रेज्य वास्थ्य १४° পঞ্বভূ;স্য মন্ত্রকৈ: ॥ সংপ্রা তত্র মতি।।ন্স যাতি শিব লোকতা।। ইতি কালিকাপুরাণে ৮১ অধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ভৈরবস্য মজে। যথা। কেব-ল: স্পরো হাদি: ষ্ট্রর সমন্তি: । हन्मुविन्यू मभायुकः इयगुविना वी ककः।।रेভद्रवः शाखुनाथस्र वनगानि স্বৰ্পিণ । বারাহেণ তু বীজেন পূ क्रायञ्जीविधानञः ॥ मभारती चावनू-স্বার বিদর্গভেগ্র সমন্বিভৌ। মহা ভৈরৰ মজ্রে। **২**য• ভৈরব• তেন পুজ-যে ।। ইতি কালিকাপুরাণে ৬২ অ-श्रायः ॥ # ॥ व्यम् श्रानः यथा। ভৈরবঃ পাণ্ডনাথক্ষ রক্ত গৌর ক তু ভূ জঃ। গদা॰ পদাঞ্চ শক্তিঞ্চ চক-ষ্ণাপি করেণ চ॥ বিজ্বদ্ব্যাঃ পুরে। ভাগে প্জ্যো হয় বিষ্ণু ৰূপধূক্। ইতি তত্ত্রৈব ৬০ অধ্যায়ঃ।। 🛊 ।। অ-भाग की यथा। सङ्गेट छत्रव विमा ছে কেলিৰূপাৰ্য ধীমছি। তন্ন: কা-(म) टेंडब्रवस्र प्हनी निडा॰ भूटाहः यार्।। এवा रे इत्रंव क्षत्रमु गाय्जी (मृश्विष्ठिजा। यत्यष्ठे मा॰म मन्त्रानि **ভোজনাय भया धृठः ॥ महा**रेख्तव

क्ला १४॰ ज्था जी तजि मङ्गा । অযন্ত বাম্য ভাবেন প্জ্যো মদ্যা-দিভি: সদা॥ ইতি কালিকাপুরাণে 99 অধ্যায়ঃ।। 🛊 ।। অথ মহাবিদ্যা-मीना टेंड इव निक्र भग यथा। निव উবাচ। শৃণু চার के শু ভগে কালি-কাথাক ভৈরব । মহাকাল দক্ষি गाया एक जारम भुभुक्तरय ।। महा কালেন বৈ সার্জণ দক্ষিণা রমতে স দা ৷ তারায়া দক্ষিণে ভাগে অকো-ভ্য॰ পরি পূজ্বে ।। সমু দু নথনে দে-বি কাল কূটি সমূত্যিত। সংৰ্ব দেবাঃ সনারাক মহাক্ষোভ নবাপুযু:॥ क्षाञामि द्रश्चि उ॰ यमाए भी उ॰ इ।-লাহল বিষা। অভএব মহেশানি অক্ষোভ্যঃ পরিকীর্ত্তিতঃ ৷৷তেন সা-র্জ নহানায়। ভারিণী রনতে সহ:। मशाबिभ्रम्नत्वा पक्षित भूकत्व শিব•।। পঞ্জু জু• ত্রিনে এঞ্চ পুতিব-ক্তে সরেশ্বরি। তেন সান্ধ্রণ মহাদেবী সদা কাম সত্হলা।। অভএব মহে-শানি পঞ্চনীতি পুকীর্ত্তিতা। শ্রীম-फ्यनमुन्दर्येश प्रक्षित्व ब्राम्न हः गर्छे ॥ স্বর্গে মতের চ পা ভালে যা চাদ্যা ভূবনেশ্বরী। এত্রবা রনতে তেন ত্র্যু-ম্বক স্তেন কথ্যতে।। সশক্তিশ্চ সং নাখ্যাতঃ সর্বতন্তে পুপ্রিতঃ। ভৈ

व्यवता पिकारा जारा पिकारा गूर्खि সংজ্ঞক।। পুজ্ঞেব পদ্ধবরেন পঞ্চ বকু॰ তনেব হৈ। ছিন্নমস্তা দক্ষিণা॰. ल कवक शृंकरयः निवः ॥ कवक পূজনাদেবি সর্বসিদ্ধীশ্বরে। ভবেৎ। धूनावजी नहाविष्ठा विषवा क्रल धाः ,রিণী ।। বগলাযা দক্ষভাগে এক ব-ক্তু-পুপ্রযেৎ। নহাকদেতি বিখ্যা-ত জগৎ স হার কারক ॥ মাতঞ্চী দক্ষিণাংশে চনতঙ্গুণ পূজ্ঞেং শূেব । তনেব मिक्शामूर्जिः कर्गमानम् काः त्रकः ॥ कमलाया मिक्काःमा विक्रुः क्र निर्माणियः। भूकत्यः भवत्र-শানি স সিদ্ধো নাত্র সংশযঃ॥ পূজ यिरमभूनीया पिक्का । एक ठ क्थक । नहारमाकशूर• (नव• मनवकु• मरहः अंत्र ।। पूर्णाया पिक्लिए (पर्ण नातपः পরিপূর্বেए। नकातः সৃষ্টিকর্তা চ मकातः भानकः मना ॥ (त्रकः मःश-র ৰূপত্বাদারদঃ পরিকীভিতঃ। অ न्। मू नर्विष्। मू अधि यंः भविकी-র্ত্তিত্যা সএব তস্যা ভর্ত্তা চদক্ষভাগে পুপুজয়েৎ। ইতি ভোডলতক্ষ পুথ মুপটলঃ ॥##॥ অথ ভৈরব রাগ স্য বিবরণ । হনুনন্তে ষ্ডাগ ন-ব্যে পুথন রাগঃ। মহাদেব মুখানি গতঃ। অস্য জাতিঃ ঔডবঃ। অর্থাৎ

रिषर छ निवास य छेष गाव्यात । श्रामः মিতি পঞ্চর মিলিডঃ অ্স্ট্ছ ধৈবত ৰয়:। শরদূভো পুঞ্চে: ाल व्यत्र भाग मन्यः। द्वः भन्। वार 🎉 न्याकात वर्षाप्रवाकात्रव (१) विल नुन्द्रवस्य भी। एका मृक्तिलंद किं। विकास क्रिया अनुभाकतः **क्र** ट्रिक रुखः। यनाहे। **क्र**ि। बित्य क्षेत्र हो स्टब्स स्टब्स् ভাল ভিলক: ১ ১৯৫ ইতিচা व्यथना बीलिहरणाञ्च वृष्टे । शब्द । भावः। बिम्बर्यः। अथन् भावा (भाषि । किष्वर । भाषं स् त्य **ाम**ऽसः । १००० वस्ति १४ स्था । हेस रैवडाही नव्या भारतानी **। अ**न्याद्धा श्रृद्धाः । वशा ६वः । **जकः शू**र्वोषः स्टायः मृहः द**जाः** गयुः भक्षाक ॥ कथानः धराज ভৈরব চেড গ্রেমন। প্রসং রাজিং यहै। यन रिज्यवी उद्यक्ती ज বিলাবলা ক্লাটা এলভাসা বড়যু পীতি চলে চিংনা এত**য়তে পূ**ৰণ অষ্ট্রে পু 🐃। কিন্তু ভিলক পুর্বা । পঞ্জ সূহ হচনৰু দেবশাথ লৱি ভ गानकोग विज्ञातमा विविध्या भारत रेह राज रेशि व्यक्तिया म यथा। रे डावी खड़ाजा दिवा खनकर्ज

वक्षानी बहरी । उगाउ ब्राणि-नतः महाका ान 🦠 हिम्रुद्धः॥ क्रवर्भिक ना वा वा नाः शक भवन विश्वय करत को उना वजाबी शक्तां स्वां है विकास के विद्यालया अभारहो क अहा यहा उत्तवनाथः वाजकः देशः तिता हा नाधवः व-क्राकः िजामः अध्यक्ता वरा बरही जीन्छा यथा। सूक्ष विवादनी कात्रती ऋग्नाती अन्तारी वङ्ग শক্ষরী গ্রনপ্তরী নির্নীচ। ইতি নস্থী নগা**ল্ডা । মতালয়ে ভৈ**রব ल्ला युक्त . **< क्वाबी रिछ**ः ववी नवाड़ी सक्षान वश्राधवी मि ्री हे। एट भूबी वर्ष (कानकः प्रमुण्यातः स्ट्रांस २, जानः म् ्राप्ता अपन्य विकास समिति । अही खन के कि कि दिनी **त्रास्त्र**-লী সূহাচ অত্ৰ শা ইতি সাধু भाके । इंडि नास्युत्रानः ॥ चित्रवी की ठामुका स्था। नामुखा া এলা চগাসুস্থান ভিন্ন লগাক।ক र्वानी बर्जन रेज्यवी ह कथा-बिना। रेडि ६२० स्ट्रा १**रेडब्र**ी विस्मया एक । किनुवरे प्रविश्व वी अम-म्या भूनरिकानी र तो विभरिजन वीं अन्तवाभक्षितार वरी ८ जयन

विश्व-निमी रे जबवी ৫ हिजन्ररे जबवी ७ कारमध्रवीरे छत्रवी १ वर्षे कृति छत्र-वी ৮ निज्यारेज्यवी २ कमुरेज्यवी २० जूरानभर्तीर जनती >> विभूतवाली-ভৈরবী ১২ নবক্টাভৈরবী ১৩ অম-**न्**र्नाटेंब्द्रवी ७८१ षामा॰ मञ्जा यथा। অথ ত্রিপুরভৈরবী।বিযদ্গুভভ্তা**শ**-স্থে। ভৌতিকো বিন্দুশেখর:।বিযক্ত দাদি কেন্দ্ৰাগ্ন স্থিত বামাক্ষি বি-ন্দু মৃৎ ॥ আকা**শ** ভৃগু বহি স্থে। ম-नुः गर्शनम् थ अवान् । शक्षक् हो जिस्का বিদ্যা বেদ্যা ত্রিপুরভৈরবী ৷৷ ১ ৷৷ **जब मम्मर भुमारे जुरी। यथा (मो** बिপুরাবালা তথা बिপুরভৈরবী। जन्मर भुरा नाम जम्हाः मृत् निर्यंत भानतम्।। निवहत्नु विद्यम्। स्रोवा-খুব॰ তদনম্বর•। কানরাজ• তথা দে-वि निवहन्त्रान् उ॰ उठः ॥ भृथीवी-জান্ত বহুগাচ্য• তান্ত্রী য• শৃণু বল্লভে। শক্তিবীজে মহেশানি শিববহুী নি-र्याक्रर्यः ।। जनार्याः भन्नरमानि ছিত্বা সর্গন্ত বৈন্দব•। ত্রিপুরাভৈর-वीरनवी महामण्यं भुना भुरय।। २।। जय कोलमारे अत्रवी । जन्म ९ शुमा-टेडब्रवीविष्म कोलम्मटेडब्रवी । হসাদ্যা সৈব দেবেশি ত্রিযু বীজেযু পাৰ্বতি॥ ইযন্ত স হ রাদ্যা স্যাৎ

পূজা ব্যানাদিক তথা ৷ ৩॥ অথ স-কলসিজিন ভৈরবী। এতস্যা এব বিদ্যাবা আদ্যন্তে রেফ বর্জিতে। ত-দেয় পরমেশানি নামা সকলসিদ্ধি मा।। मन्न ८ भूमारे छत्र वीव ८ ४ प्रान भू জাদিক তথা।৪।৷ অথ ভগবিধ্ব সি नीरे **डद्र**वी । मम्मष्युमारे ভद्रवी या-দ্যন্তে রেফ রহিতা চেত্তদা ভযবিপ্ন• সিনীভৈরবী ভবতি। দক্ষিণা মুর্ত্তৌ उथा पर्मनार। भृजात्कि मन्त्रर भुरावट ॥ द ॥ अथे हि उन्दर्शेखंती । वागुत वीक्रमूहार्य) कीव नुान मनिन ত। সকলাভ্বনেশানী দ্বিতীয় বীজ মুদ্ধ্ তংগা জীবং প্রাণং বহিসংস্থং শক শ্বর সন্বিত । বিস্গাচ্য নহেশানি विन्ता वित्वा का भाक्ता ॥ श्रवतानिः न्त्रामः। भित्रति पश्चिगाम् उत्य अय-रा नगः। गूर्थः शृद्धिहन्स्रान्नगः। कृषि रिष्ठमा रेखनरेत्र (एवं कारेंग नमः । ७ । यथ कारमध्ये हिन्नवी। का-प्रयद्गो ठ क्रानी भूव नि शामति छि छ।। अञ्चा भारतिरामा वीजवन मुराष्ट्र ७:।। उरस्य श्रद्धानानि निक्र ক্লিয়ে নদদুৰে। এতস্যা এব তান্তী 'য' क्रुार्भ भव्रतम्यदि ॥ १॥ अथ वर् क्षे। रेडब्री। एकिनी ब्राकिनी वी-क बाकिनी काकिनी युगः। माकिनी

शकिनी वीर्ष वाङ्ठा मूत्रमुन्हिता। षारा निकात अधुक नगुरीकात নপ্তিত । শক যরান্বিত দেবি তা-खीय वीषमानित्थ ॥ शिनमू नाम কলাকান্ত ত্রিত্য শৈলসমূর চো অথ নিত্যাভৈরবী। এতস্যা এব বি-দ্যাযা: বৰ্ণান্ জনশঃ ভিতান্। বি-পরী তান বদ প্রেটি বিদ্যেশ ভোগ भाक्ता।। न्यान भूका दिक नर्व न-न्याः भृत्रविषाठात्य । ३॥ वय वम्-ভৈরবী। শিবচন্দ্রৌ মাদনার্থ ফান্ত॰ বিহ্নিন্দ্রিত। শক্তি ভিন্ন বিন্দু नाम कलाए। वागुव श्रिय ॥ जम्म -भूराया टेड्डब्याः काम**त्राजः** जःहव शि। महाशिवमऽवीबस्र महामिः हा-जनमा हा। এया विद्या नर्मानि বণিতু নৈব শক্যতে। ১০।। অথ ভূ वत्तश्वती रेख्नवी । इमाम्र वायुव-ঞাদ্য° হসকান্তে স্রেশ্বরি। ভূবীর° ভূবনেশানী দ্বিতীয় বীজনুষ্কৃত।।। निवहत्तु गर्मान जूवतमी ह टेडब्री।ऽऽ।।अथ्डिनुब्रवानाटेडब्री । अथः ता विनम नामान्तरः वृत्त्रनमुद्रः मनी यूजः। विजीयः ज्ख मर्ग्राष्ट्रा भन् खाडी य भोति छ।।। এषा वार्ण-তি বিখ্যাতা বৈলোক্য বশকারিণী 1 > २ ॥ व्यथ नवक्षावाना । वानावी -

क जरेपारि कड़े चरा नवाकती। विष्युक्ते विष्याक्षित जित्रवा। न कृते में ॥ ३०॥ जायान मृतारे छत्रवी। अल्या के अस्ति भी व्यक्तिक काम ने कुछन कराब मण जाउड नाएक শ্ৰত শাৰ 🤧 💖 জন্ম পুণে ঠ যুগল• ় দি সে• বিশ্প কেরী ॥১৪॥ ইতি क्षणा के अधिय भतिएकः॥ ্র প্রামিণ্ডিলে**শ:। সাচ** १९ कर अक्टा अ**व्याहिन्स्य। रिजर्स** १८ 🔫 इस्टिन भाषात्वनावनी ज প্রান্তর করে ১ জন গণের ভৈর-कर्रे अर्थ ११ च ११ व । खरत मानव 🕾 🔫 👌 🔧 १ धाननी गाल-বর্মক রাচ বিষ্ণুড়া। আ ्रेड्यवी छ बा**नवन्र श्रि**या ्या १ रू । प्रश्नुपन् भया। जता-বুরস্থা সূটিকস্য অন্দ্রে সরোক্-িং শঙ্কর মর্চ্যতা । তাল প্রযোগ ্ তিবন্ধ গতি গোরীতন্ নারদ ै छद्र श्रेषणा एका का**नमगयः श्**-% 🖫 শল । যথা। বিভাষা ললি-क्षेत्रव कार्यामः शवेमञ्जूती । जा मध्ये बागककी (बलागाती ह श्किती। क्षित्या ह मुख्या श ক্ষমিচ গড়াতু জা। ভৈরবী চাথ ्रिकारी वाभित्या ६ म शक् ह।।

वजाः भूबीइ काल क् गीयरड গায়নোত্তমৈ:। ইতি সঙ্গীতদা-(मारतः ॥ # ॥ इन्नग्रां वरा সম্পূর্ণজাতি:। অস্যা: সপ্তম্বর বি-ন্যাস ক্ৰমঃমধ্যমপঞ্চম ধ্ৰৈত নি ষাদ ষ্ট্র খন্ত গান্ধারান্তঃ। অস্যা गृष्टः गध्यम खदः। भद्रमृत्जो भुजा-তে অস্য গানসন্য:। রাগনালা-याः अन्।: यक्षाः। अञ्चवयका। मुक्ला। मूरनवा। विखातवहना। পিঙ্গলকেশা। কোনলান্ধী রক্তব-র্ণা। শ্বেতবসনা। গলশোভিত চ-म्भक्राला। পुकूझभन्यगुक भई उ গুহাযা॰ শিবপুজাপরায্ণা। তত্র मञ्जीत्रवाषका भागिष्ठ ह।। # 11 क-লনাথ সোমেশ্বর ভরতমতেত্বেবা। ভৈষজ ক্লী লাবকপক্ষী।ইতি জটা-ধরঃ॥ভেষতঞ্চ ॥

ভৈষজ্য ক্লী ঔষধ ৷ ইত্যমর: ॥
তৈক্ষ ক্লী ভিক্ষাসমূহ: ৷ ইত্যমর:
॥ অপিচ ৷ ভিক্ষাশন মনুন্দোগাৎ
পাক্ষেনাপ্যনিমন্তিত ৷ অযাচিত
ভ ততৈক্ষ ভোক্তব্য ননু রবুবীৎ
। ইতি প্রাযশ্চিত্ত তত্ত্ব্ত উশনসো
বচন ॥

ভৈক্ষজীবিকা স্ত্রী ভিক্ষ্যাজীবনো-পায়: 1 তৎপর্য্যায়: 1 পৈণ্ডিন্য: ২ रइबहमाः॥

रहागावानः भू॰ वामगृहः। ইতি श्रातावनी ॥

ভোগিক: भृ व्यथतककः। ইতি
भक्षभागा।

ভোগিকান্তঃ পূ[•] বাযুঃ। ইতি ত্রিকা-ওশেষঃ॥

खाणिनी खी महिषी जिन्न मृश्री। इंडाजन हा।

ভোগিবল্লভ গ্লী চন্দ্ৰ-। ইভিরাজ-নির্ঘণ্ট:।।

ভোগী পু॰ সর্প:। ইত্যময়:॥ গু।ন-পাত্র: ॥ নৃপ:। ইতি মেদিনী॥ নাপিত:॥ ইতি বিখ:॥ বৈষাকৃ-ভিকর:। ইতি হেনচন্দু:॥

ভোগीन्दः) भू॰ व्यनस्राद्धाः। ইতি ভোগीनः) नदत्रञ्जावनी॥

खागाः क्री थनः॥ थानाः। इंडि ताक्षनियंद्रः॥ जिगार्ह कि॥ व्या-शिख्मः। यथारु नात्रमः। विश्वसु रह्ज् द्वावक शुक्जिज् ताथि द्वव ह। व्यश्चित्रक हेजाशिः न विख्वरा दिनक्षनः॥ क्जकात्वाशत्वयक यावर्ष्मरागार्ग ख्या। न शून वि विदः (शुक्जा गार्मा खागाः । खा-गाजार्थः क्वाखागाश्चर पृष्ठेताः। उप्यथा। काल काल क्लानाणीट कलाजाराजा न नमाजि । कला जाराजार यमाजाराजा कलाजाणाः का जाराजारिः म न कनाजित्लि न-माजि । देखि भिजाक्तरायम् राव-दाराधायः ॥

ভোগ্যা জ্রী বেশ্যা । ইতি রাজ-নিঘণ্টা ॥ ভোগ্যা ভূং। ইতি বো-পদেবা ॥

ভোজঃ পু॰ बनानथ्याज्यमाः। ভো-क्रभूत इंडि ভाषा। उर्भर्यायः। ভোলকট: ২। ইতি শদরত্বাবলী ॥ ধারনেপরস্যরাজবিশেষ্য:। ত-স্যুক্তান্তো যথা। ধারা নাম নগ-र्याः निक्रन मरखा बाह्य चानीर তস্য রাজ্ঞী সাবিত্রী তথো বৃদ্ধা-বহাযা ভোজ নাম পুলো জাত: স यहा भक्षवर्ष वयक्ष खना उद्भिजा আত্ম সরণ কাল বিদিত্বা ভাত্রে मुखाय बाकाः माने जम्दमान ভোজঞ্চ মুমোচ। ততে। রাজ্ঞি প-त्राता है शास्त्र किय् कानानस्तर **সভাষা: কণ্চিদুদরস্কুরি জ্যোতি**র্বি দাগত্য মূঞ্জণ পাহ রাজন ভোজ-স্য ভাগ্যোদয় বক্তৃ বিরিঞ্জি ম-পি ন সমর্থ: কোহণ বরাফ উদর-ম্রার ব্রাপ্সণ: তথাপি বদানি ভো-

ন্ধ নিউঃ পূেব্য । ততো রাজাজ্ঞ্য। क्षांत्व १ व्यवमाना॰ शुाख **वार** यथाः भक्षान्य भक्षवर्यानि मध्यामा **मिन**ङ्गे । ভো**जत्रात्त्रन** (ভाক্তব্য বৰ পোঠাত দ্বিষ্ণা প্ৰত।। ইতি শুনু। शुक्ति है। १८ छय८ यपि ता जनस्वी 🛪 🕾 মৃডঃ। ততো রাজা নজ্রবিত্বা ভুক্তভাষী ধর**ু নহাবলু, বং স**রাজ শ্ৰুণ নির্জনে ত পুাহ বৎসরাজ च्या (इ.स. जिल्लामात्री विनितन ফ্লেরু জাসরাজ: ভোজ স্মারো-পানুষ মাহ্য প্রাহ বিপু ভোজ মান্য ! জভে। বিদিত্রু**ভান্তোভো**রে 🍇 🕅 🧸 शुष्ट्र আः भाभ द्राद्धः 🛪 লাব॰ বহিরা**নেতু** তব কা শক্তিঃ 🍉 अताब हत**ा शाम्कामामाय (छा**-) েন ভাষাধেশে হতো বৎসরাজ: 🎮 व्यादासमात्र वयः त्राजापः 🏲 ক্রাজ্বলা ইত্যুক্তা বধার্থণ বলাৎ ব্যানহাজে: নিশাবা• বিপিনে ভো• ্জ নীক্টে ব**েসরাজস্য ভ্রাত্রা ভো**-জন্য বংখ্যাদ্যন সমধ্যে এক এব সূজ্-ष्ट्रभा िश्वनश्रन्याजि यः। मही-ি ধুরণ করে নাশা সর্ব মন্যান্ত গছতি।। ্রিকে- নশম্য বৎসরাজো বৈরা-্ষ্য নাগমে। ভোজ ক্ষমম্বেত্যুক্ত্ব।

পুণন্য ত॰ রথে নিবেশ্য গৃহমাগত্য ভূনি গৃহান্তরে ভোল রক্ষিত্বা কৃত্রি-ন• ভোজ নস্তক• কার্যিত্বা রাজান नागठ। नदा शुारु भिगठा यहा हिष्टे. তম্বা কৃত । রাজপুতা ব্য জ্ঞাত্ম রাজা ত॰ পুাছ বৎ সরাজ পুলেণ থয় भुरात्रावनात किम्लि डेक्क•। वट्न-রাজঃ পাছ দেব কিমপি পএ প্রে ষিত মক্তি তদিদ গৃহাণ শিরশ্চ দর্শবতি । ততো ভোজনস্তক দৃষ্ট্র। রাজা করোদ। নান্ধাতেতি মহীপ-তিঃ ক্তযুগে ২লম্বার ভূতো গতঃ সেত্র্যেন মহোদধৌ বিরচিত: ক্বাসৌ দশাস্যান্তকঃ। অন্যে চালি যুধিষ্ঠির **পুভূত**या यावज्जवान् ज्लाउ रेनकः নাপি সমংগতা বসুমতী মন্যে ত্ব্যা যাস্যতি।। ইতি ভোজকৃত শ্লোক॰ পঠিত্বাপপাতচ!ততোরাজাপণ্ডি-ভমানীয় ন্যা পুলো হতঃ প্ৰায় শ্চি-ন্ত মুচ্যতা মিত্যুবাচ। তত ত্তে উচুঃ রাজন্ সবাসা বহি गाविस। ততো রাজ্ঞো বহি পুরেশে নিশ্চিতে সতি তৰাত্তা শুরা নৃপদার মাগত্য বৎ-সরাজো বুদ্ধিসাগর• প্রান্থ তাত ন-যা ভোজো ন মারিত: বৃদ্ধিসাগর*চ ভস্য কর্ণে কিম্পি কথ্যভি। ভতো বংসরাজো নিস্নান্তঃ ৷ তত তুরু হুর্তেন

गाकागरम्थत हैव এकः काभाषिक আগতঃ। ত॰ বীক্ষ্য বৃদ্ধিসাগরঃ পাহ যোপিন সত আগন্যতে কা-भावित वृषि जगहम एका ती कना বিশেষ শ্চৌষধি বিশেষো ৰা অন্তি । उत्जा ताकाभाग्य मया महना इ-ত॰ পুল রক্ষ। কাপালিক: পুাহ রাজন্ নাভৈষী: পুত্র স্তে নাথ পু-সাদেন ন নরিষ্যতি পুাত স্তব গৃহ• স্বয়নের সনেষ্যতি পরং শাশান ভূ নৌ বৃদ্ধিসাগরমজ্রিণা সহ ধোম-मुवाः (भुषय। काभानिकनः यमुक्कः তৎ সর্ব' রাজ্ঞা সম্পাদ্য বৃদ্ধিসাগ-রঃ পুেষিতঃ ততশ্চ রাত্রৌ গ্রেত্যা বৎসরাজ গৃহান্ডোজ ন্তত্র নদী পু লিন• নীতঃ যোগিনা ভোজদ্বনারে৷ জীবিত ইতি কিংবদন্তী সৰ্বতোপ্য জাগত। ততঃ পৌরামাত্যৈ: পরিবৃ-তো ভোজো রাজভবন নাগতঃ। তত खना निक्र करन मुक्षः निवार्य)(छा-জঃ পৌতি। ততো রাজা লজ্জাবনত পুৰিঃ সন্ নিজ সি•হাসনে ভোজ মূ-পবেশ্য রাজ্য দত্ত্বা বন গতঃ। ত তো মুঞ্জে বন• প্রাপ্তে বুদ্ধিসাগর• মু থ্যানাত্য বিধায ভো**ল: স্ব**য• রাজ্য সুখ বৃভ্ছে। ততে। রাজসভাষা। जरुजुरमा दूधवदा दिशुः नगाकगुः

ততো রাজা অমাত্য মাহ। লক্ষ• মহাকবে দেখি তদৰ্শ বিৰুধস্য চ ৷ দেয় শুনা কুৰে ৰ্ছ স তস্যা প্য-দ ॰ ত্বযান্ত নিতি। ততঃ ক্রমেণ वज्ञक्ति मूवक वागामज जामरएव रतिवःभ भक्त कलिक कर्त्र विनायक समन विम्यानिस्मीम (का-কিল তারেন্দু পুমুখাঃ সর্বশাস্ত বিচক্ষণা: সর্বজ্ঞা ইব রাজসভা **नर्शनम् नवः स**र्वस्य । किय्एका-बानखत्र काविमामकरवी अभाग-তে তেন সাদ্ধ রাজ্ঞ: পরনা প্রী-তি রজাযত। অন্যে বিদ্বাণসঃ কা-विषात्र (वन्त्रावस्त्रिः विषिद्या त्र-র্ব ভাবেন বৈরঞ্চকুঃ ন কম্চিৎ স-ভাষা শ্ৰেশতি ন কোপি বদতি। কিন্ত ভোজন্পতি স্তেন সার্জণ প-রমপীতো বভূব। অন্যেষাণ পঞ্জি-তানামাগনন তেকা পদ্যানি স্ মস্যাপুরণানি তেভ্যোবহুলক্ষ মূ-मुनिनामि वर्गनक गुइल्मिष भर्गाष्ठ মস্তি। তদ্গুস্থ বিস্তরভযান লিখি-ত । ইতি ভোজপুবন্ধ পুস্তকাৎ मक्षविजः॥ ॥। अन्युकानिक वि-म्राः ভোজবিদ্যাः বদন্তি॥ ভোষকটঃ পৃ• ভোমদেশ:।ইভি मद्रञ्जावली ॥

ভোজনे क्ली किठनपूर्वामा गलायःक রুণ্যাতৎপর্য্যায়: 1 জধ্বঃ ২ জেনু-ন ৩ লেশ: ৪ আহার: ৫ নিঘ্নঃ ৬ न्त्रापः १। ইত্যনরং।। जननः ৮ ্ বিঘদ: ৯। ইতি ভটীকা।। অভ্য বহার: ১০ পুত্যবসান ১১ অশন ১২ স্বদন্ং ১৩ নিগর: ১৪। ইতি রাজ নিৰ্ঘণ্টঃ ॥ # ॥ অথ ভোজন গুণ বি धानारि। (ভाजनाशु जरा १९५) জিন্তা কণ্ঠ বিশোধন । অগ্নিসন্দী ्रशनः क्रमा नवशाम्क छक्रणः॥ ্ আযুষ্ঠিত গুড়েরোগা মৃত্যু দী নো বিদানিষু লামে গ্যাপকটু তিজেষু वल भारम भग.मृह॥ व्यक्ता 🕏 खन भिद्रे भिद्रा हिखन भयः। **भयस्माह्रे ७१**॰ मा॰म॰ मा॰माइहे ⊶**ভণ• ঘৃত•**া৷ ঘৃতাদৡভণ• তৈল• मफ्नाबह जङ्गार । जाशातः श्रीवनः भएता वलक्ष्महश्रात्रशः ॥ क्षा वाय्वाः भीदात्या दृष्ट व माताः मिक्तान्यः। मित्रः भुजा মুখো কৃত্ব পাত। কৃত্তি কৃত্য আবং ।।। ব্দুক্ত রন্ধেন ভাগে দ্বাবেক প। तन श्रवाद । वारयाः जक्षात्वार . ११ ह जूर्य श्वरणयरम् ॥ १ ॥ ५ राउ वादशाउक्त वादशावादा । वादशावकार वादशावादा । ोनुः। यक्षानिर्म**ङः उन्नि मूथ्म**ता

নিষ্ট পদ্ধতা । ৷ ৷ ৷ ভুকু৷ পাণিতল ঘৃষ্ট্র। চক্ষুষো র্যদি দীয়তে। অচিরে-ণৈব ভদ্বারি ভিমিরাণি ব্যপোহতি ।। ভূক্তাচন্য কর॰ বাম॰ দত্বা সংক্ষী ততঃ পঠে: । ভুক্ত মহেন্দু হন্তেন বৈশ্বানর মুখেন চ।। গৰুডস্য চ ক-থেন সমুদুস্য চ বহিনা। বাতাপি র্ভাক্ষতো যেন পীতো যেন নছো-मिथः। यन्राया शामिजः भीजः छ-দগন্ত্যে। জরিষ্যতি ॥ পঠিবৈতৎ मुथामीनः ऋगः जित्हरनाञ्चः ॥ जुक्। शामण**ङ ग**द्या वानशार्यन সম্বিশেশ । এবং ছাধোগতং চামং সুথ• তিষ্ঠতি জীৰ্য্যতি ॥ ভূজ্বে**প**-विশ্ उ खन्तः भवानम् वशुर्ज्दरः। আয়ু শচক্রনমাণস্য মৃত্যু ধাবতি ধাবতঃ । ইতি রাজবল্লভঃ ।। 🗱 ।। অপিচ ৷ ততো ভোজন বেলাযা<mark>় স</mark>্ব-र्याग्रज्जनमानः । उत्राः शुनिक्शः निङ्य भायू थया दिवकार ॥ बादि श्यान् नव नान १६ छी वासारा लो हर् তাশনঃ। হিরণ্য সন্সিরাদিভ্য আ-পো রাজা তথাষ্টমঃ ॥ পাদ্কারো-হণ স্ব্যাৎ পূর্ব ভোজনতঃ পরণ । भारताग इतः वृष्ण वस्तूष्ण ठा-যুষে হিত ।। 🕸 ।। শরীরে জাগতে निज्र वाक्ष नृगा ठजू विधा। वृज्या

ह भिभामा ह म्यून्नः मूत्र उल्पृशः ॥ उडाक्रसहाविषाडाट महाम्बराफी श्कातः भूगः। जन्मा (कावनामोर्सः लाः थाजूनारकः। वलक्षयः॥ विघाः কেন পিপাসায়াঃ শোষঃ কঠাস্যয়ো र्ভाव । भूवगम्यावादाध्य दक्षा ষে। হৃদি ব্যথা ॥ নিদ্যবিঘাততো জ্ঞ। শিরোলোচনগৌরব । অঙ্গ बर्फ खथा जन्। भग्रहमाभाक वर চ।। বু ভূক্ষিতো নবো হস্নাতি তদ্যা-হারেশ্বন ক্ষযাৎ। মন্দীভবর্তিকা-यान्नि र्यथा हान्नि नित्रक्षनः ॥ आहातः পচতি শিথী দোষাননাছারঃ পচ-তি৷ দোৰক্ষে চ ধাতুন্ পচতি খা-जुक्तरा शुागान् ॥ 🗱 ॥ याहादः श्री-**गनः जर्ह्या वलकृष्ट्य वात्रगः । अ्** ত্যায়ু: শক্তি বণৌ জ: সত্ত্ব শোভা বিবর্জন: 11 যথোক্ত গুণ সম্পন্ন মুপ-(मत्व ভाजन । विहार्ग्य (नाय कानारीन् कानारा ब जाराद्रिशा **উভযো: कानाया: श्राज: भायक** ॥ ख्वाह। नायः भा उ मन्याना मननः শুকি বোধিত। নান্তরা ভোজন। व्यर्गामप्रीरहात मरमा विविः॥ शुक्रः পুথন যামাদুপরি দ্বিতীয় যানাদ-ৰ্বাক্। তথাচ। যাম মধ্যে **ন ভো**ক্ত बार यानयूपाः न वाह्यस्य । याम म

(क) द्रामार शिंख यांन युग्राधनक्यः ॥ অন্যন্ন ক্রু সম্ভবতি পদ্বেষ্ রস-साय मलाव् **छ। काला वा यहि वा**-काल भा श्रमकाल উपाक्उः॥ 💵 রুবাদীনা পাক জ্ঞাত্নাহ। উরাশ র শুদ্ধি কৎসাছে। বেগোৎসর্গো য-থোচিত:। লব্ত। কুং প্রিপাসাচ यहा कावाः म (ভाषान ॥ 🛊 ॥ हान नार। आहात विज्ञान सर्वेशिक्शी-রম্পি সর্বর।। উভাভ্যা লম্ম্যুপে তঃ স্যাৎ পুকাশে হীয়তে ক্রিয়া!! নির্হারো মলমূত্রোৎসর্গঃ। অন্যচ্চ । व्याहात निर्हात विहात यागाः म দৈব সন্ডি বিজনে বিধেয়া ইতি॥#॥ ভোজনে যেষাণ দৃষ্টি নিবারণীয়া ভা-नारु। शैन रीन कृथार्जानाः भाभ येखिन (ब्रामिनाः । इन्क्रहोहि भूनाः पृष्टि (जी ब्राव्य निव (मार्जना ॥ 🗱 ॥ यिया मृष्टिः भू जना जानाह । शिकृ নাত্ সৃহ্দ্বৈদ্যাপাপক্ষণস ৰহিণাণ া সারসম্য চকোরস্য ভোজনে দৃষ্টি कडगा ॥ 🗱 ॥ कषक्षित्रपृष्टे मृष्टिभा-তে তদোৰ শান্তবে বুক্ষাদীন্ মায়েৎ । তদ্মথা। অন্ন• বৃদ্ধ রুসে। বিশ্বভা-ক্তা দেবো নছেশ্বর:। ইতি সঞ্চিত্ত্য ভূঞ্জানো দৃষ্টিদোষো ন বাৰ্গতে ॥ অঞ্জনা গৰ্ম্ভ সম্ভূত• স্বনার• বুক্ষচ়া-

विन• । मृंष्टि (माय विनामाय रुन्नस्र• || भवामार्यः ॥ # ॥ जावन नार् । स्मिर रुष्डिमः পथाः रेश्मः (जाजन ভান্ধন । রৌপ্য ভবতি চক্ষ্ব্য े পিত্তহৃৎ কফ বাতকৃৎ ॥ কা॰স্য॰ দুজি পুদ কচ্য রক্তপিত্ত পুসাদন । পৈত্রলং বাভ ক্রুক্ক মুঞ্চ ক্মি কফ পুণুৎ ৷৷ আযসে কান্তপাত্রে চ ভো-জন সিদ্ধিকারক। শোথ পাঙ্ হর বল্য কানলাপহ মুভন ॥ ৈগ্ৰেকে নৃত্যণে পাতে ভোলন• গ্ৰী-নিবারণা। দকেন্দ্রবে বিশেষেণ ক চিদ শ্লেমকারি চ ॥ পাত্র পত্রম यः र्क्टरः मीभनः विष भाभन्ए। #1 মুলপাত্রম্ভ তামুস্য তদভাবে মৃদো-হিত ৷৷ পৰিত্ৰ লীতল পাত্ৰ ষ টিত• ন্মটিকেন য<। কাচেন রচিত• खब्र हथा विमूर्येऽ **मञ्ज**य•॥ #॥ खा-्॥ क्रनार्ग् मरा भथाः वदगाप् क ज्ञः १९ । यश्चि मनरोभन क्ट्राः किन्ना क्थे विरमाचन ॥ नवन रेमक्रवन ক্ষেয় । আদু কন্ত কটুকমপি ন পিত্ত বিরোধি মধুরপাকিত্বাৎ ॥ 🟶 ॥ व्यक्षीवाङ्यना ज्वा भूबंख मधुव तन सः। मध्य १ स नवर्गा नकार कर्रे िक क्यायकान्॥ कनानप्रास्ते अन भीगाद माजिनामीनि तुष्किनान्। वि-

नात्नाठाकः च उद्यहर्क्तनीया ठ कर्न्नः ही ।। मृशान वित्र नान्क करम्रक् পুভ্তীনপি। পূর্ষমেব হি ভোজ্যানি नकू जुङ्ग। कमाठन ॥ एक शिक्षेमय॰ দুব্যু তভুলান্ পৃথ্কানপি। ন জাত্ ज्करान् थारियाका॰ थारिषु ज्किः जः॥ घ्जन्दं मनन्तिगए कठिन° পাক্ততো মৃদ্। মন্তে পুন দু বাশী তু वनात्रारगः न मुक्षिति ॥ व्ययमर्थः । পাক यु अ भूबं क छिन अभी या । **यथा'काम**हाहिवा**मिनः शुथमः ग**वह-জ্ঞনা• ঘৃত্ত পূর্বা• রোটিকা• ভুঞ্জ-তে। ততো মৃদুসপূপাদিক মোদন° ভূঞ্জতে। অন্তে পুন দুবাদী ভোজ নাম্ভে দৰি তক দুঞ্জাদি ভ্ঞাতে । यम्बर बामुख्यः छन्ति विनव्यामुख-(द्वाखद्व•ा ভुक्व। य<्भार्थऽएउ ভ्य</p> স্তদুক স্বাদু ভোজন ॥ স্বাদ্বন্তস্য खनगर्। भोननगुः वनः भूषि ग्र-नारः त्रमनामूथः। याम मः जनगः ত্যন মধাদু চ বিপণ্যৰ ॥ অভ্য-कान वल रुडि भो उ॰ मृद्धक पूर्कत । । অভিক্লিম॰ প্লানিকর॰ यুक्त एक । इ ভোজন ৷৷ অতিজতাশিক ক্রেরা खगान् (मायाम विनम् क्रि । 🖙 अङ् শীত মহাল্ঞ স্যাছিলভিড মশ্তঃ ।। 🟶 ।। গুৰু ত্ৰিবিশ্ব ভূমি ্রক

। मन्तानला नाता पुराधः माजा एक विवद्धारित । सञ्चिका 'एक्य ত্রেখা সংস্কারতো গুরু ৪ মাত্রা গু-🍅 স্ব মূদ্ধাদি মাসাদিঃ পুক্তে গুৰুঃ। সংস্কার শুক পিষ্টান্ন প্রোক্ত মিত্যু পলক্ষণ ৷৷ # ৷৷ আহার ে ষড়িধ চ্ৰ্যুণ পেয় । লেহা তথেব চ। ভো-**জ্যু ভক্ষ্য তথা চর্ব্য । শু**ক বি म्रामः था खतः ॥ ह्य ५ रेक् मा जि बाहि। (भयः भानक नर्काद्राहकाः দি॥ লেহা• রসালা কুথিতাদি।কু-থিতা কটা ইতি লোকে। ভোচ্যু• ভক্ত সূপাদি। ভক্ষ্য লন্তু ক মণ্ড कामि। ठर्बाः विभिन्ने ठनकामि ॥॥॥ সভাব গুৰু সংস্কার গুৰুণো: স্বভা-ৰলঘুনশ্চ ভক্ষ্যস্য ভোজন পরি মাণনাহ। গুৰুণাম্ভ সৌহিত্য ল্যুনাং তৃতি রিষ্যতে। অযমর্থ:। गाय शिक्षामामि जिल्ला भी हिन्। ফর্ত্তব্য: মুদ্ধাদি ভিঃ স্বাভাবিক্যা মা-वया जृष्टिः कर्जरबाजार्थः। मुर्दा मुरदा खत्रकाि न गावा धक्तिया । দুবঃ পেযাদি । দুবোন্তরঃ তক্রাদ্য **धिक अर्नामि भावार्छ। २ धिः**काशि माजा ७ वर्ष में महत्रः । (भगमा ने র্বতো লঘুত্বাৎ। উক্তঞ্চ সূলুতেন। ' বাব লেহাদ্যভক্ষাণা ভক বিদ্যা-

দ্মথোত্তরমিতি। পেয় প্রয়াদি। विशः त्रभावामि । अम्। अन् भू शानि । जक्कार भानकानि । मुवाछ मिन महत्रः सम्यागित्राभाष्य । বিশৃষ্ক ময়নভ্যন্ত নপাক সাধু গ ছতি।। অয়নর্থঃ। শুষ্ক নপি শ্রো-তোরোধকরমপি দুবাঢ্য সম্যক্ পাক যাতি ৷৷ কেবলস্য শুম্বস্যান-न्य (नायमाञ् । विभुद्ध सम्मनिज्यानि ৷৷ ঋ৷৷ অপত্ব• তৎ কি• ভবতীত্যপে-ক্ষাণা নাহ। পিণ্ডীকৃত নসুংক্রিন বিদাহ মুপগছতি। পিণ্ডীকৃত অ-ষ্ঠীলাবন্ড্ত । অস কুন্ন অসম্যগা-দু•। বিদাছ মুপগছতি বিদৰ্শ্ব• ভ-वजीजार्थः ॥ 🗱 । मुझानीनाः रेवलगाः मार । भूषः विकक्षः विश्वेष्ठि विहे-व्याभाममावरङ् । मुझ हिभिद्रोसि । विकक्षः कीत्र मध्नप्राप्ति। विष्टे-**क्कि ठ** व मुज़ानि विज्ञानार क-र्य्याए।। न जुका न ब्रोहिन्द्रा न नि-শাযা॰ নবা বহূন্। ন জলান্তরিতাম-षिः मञ्जूनम् । म किवनान्।। श्रूनकीनः পৃথক্ পান সামিষ প্যসা নিশি। म्डाइम्न मुक्क मञ्जूष् वर्डाय् ।। 🗱 ।। विवयाणनम् । वक्षा माह । বহু স্তোক মকালে বা জ্ঞেয় তদ্ধি-यमानन । वल्लाञ्चम जिन्हम्

দোক মাহ। আলম্য গৌরবাটোপ **শবা•*চ স**ৰুতে গ্ৰিক•। হীননাত্ৰ• তনোঃ कार्मां) करता कि व व क्य ॥ अधिक अम ।। 🗱।। अकात जुक ना दावमार। अभाषकाला जू क्षारनाभारममर्थं उन् नंतः । जाः सान् व्याधीनवाद्याञि मद्रगक्षाधिगह्छि॥ व्यभाश्वकानः कानापि भाक जु ঞ্জানো ংসনর্থ শরীরো ভবতি। ত था मिं जा जान् व्यासीन् मिला वार्था विमृहिकः श्लमक विलक्षिका-দীন্ প্যাপ্যোতি। তেকা মাধিক্যেল**ু** 🚁 মাল পাপেডৌভ্যর্থ: ॥ কালে: **২তীতে ২গুতো জন্তো র্বাযুনাপহতে २नता ।** क्ष्याधिशहास्य जुक्यान म्रात्काकुः भूनः स्था भा भा भा ভাগদ্ব ভৌদ্ধৈ স্তীয় বারি পু त्रस्यः। वारयाः मक्षत्रभाषीय ठजूर्थ भवत्भवत्य ॥ ज्ञाननामन् ज्ञनना পুথমেনোপতর্গিতা ৷ ন তথা স্বাদু মাপ্নোক্তি ততঃ সেচ্যান্থনান্তরা ॥ অত্যবু পানান্ন বিপচ্যতে হন মনস্থ পানার সএব দোব:। তথানরো ৰহিং বিবন্ধনাৰ মুভ্ মুভ ৰাৱি পি বেদভ্রি॥ ভুক্তস্যাদৌ জল পীত কার্শ্য মন্দাগ্নি দোষ ক্থা মধ্যে প্রি दीभन (मुक्ट नास स्टोन) कक भूत-

।। यन। इ। तम इत क्षा जुङ म भार भुषमात्रभाः । इंडि वाएँदः ! ভুক্ত॰ ভোজন•। তৃষিতস্ত নচাশ্নী-যাৎ ক্ষুধিতো ন পিবেজ্জল। ত্ষি उस ज्वानुनी क्षिउस कलामती ॥ 🗱 ॥ नन् भिष्ठा (ভाজनात्र पृथाः পিবন্তি তৎ কথ মুচিত। যত জিধা বিভক্তস্য ভোচন কালস্য পুথনো ভাগো বাতস্য দ্বিতীয়ঃ পিত্তস্যতৃ-তীয় কফস্যা অতত্র বাহ। সশ্নী-याखग्रना ভূত্বা পূর্বন্ত মণ্রণ রসণ । मर्थ्य १म्नवराने भन्तार कर्ते जिक क्यायकान् ॥ व्यन्तरायम् छिन्।यः ॥ ভোজনে পূর্ব ভুকো মধুরো রসো ৰুভুক্ষিতস্য বাত পিত্তবো: শমকো ভবতি। ভোজনমধ্যে ভুক্তাবন্ন লব-ণৌ পিত্তাশ্বে চ বহি বৃদ্ধি স্ক তঃ। ভোজনান্ত্য সমযে ভুক্তাঃ কটু তিক্ত কৰায়া রসাঃ ককে শন্যন্তী-তি। অতো ভোজদাবসান সম্যস্য ৰফ কাল হাভত্ত কথা শ্লেম জনকা দুখ পাত্মুচিত ভবতি। যত উক্ত। । দুখ- স্বাদুরস- শ্লিঞ্চ মোজস্য- ধাকু ৰন্ধন । ৰাত পিত্ত হর বৃষ্য দ্র-মল ওক শীতল মিতি ॥ উচ্যক্তে । विषाशीन अभागानि यानि जुर्ह्या है মানবঃ। তদ্বিদা**হ পূলান্ত**্যৰ্থ ভৌজ

नारु भरः भिरार ॥ वाठवा वृक्तः शूबारा। वर्ग्राट क्विवास नाकातः मध्यः न क्रमाहरन्छि ॥ व्यवनास कर् कानि विराहोन। जि गानि जू। ज-দোৰ: হৰু নাহার মধ্রেণ সমা-প্রেল্যা ভোজনাবদান সমযে দুখা-দি মধুর ভোজনেনৈব বন্ধিত কফো व्यवश्रम् कर्षे (ভाङ्गन छनिञा॰ পিख∙ ∥ স্যুক্তি নাশ্যতি পিতৃত্তি নাশ নেন ক্ফস্যাপি বৃদ্ধি ৰুপক্ষীণা ভ 📗 विक की १ करु वृद्धि ब्रियानर प्राप्तीन् व्याधीन उर्भाविक् न मार्क्षाक ॥ 🗱 ॥ ७वः जुङ्गा मगाजात्वर क्र गुरु পूर्वकः। ভোজনে मस्मगानि নির্স্ক্রিচন্দঞ্জেৎ । দন্তল্ম স্নি-ৰ্হাৰ্য্য লেপ॰ নন্যেত দম্ভবৃৎ । ন **ভ**ত্ৰ বহু**শ: স্**র্য্যান্ডর-নির্হরণ•পুতি।া#॥ আচন্য অল্কাভ্যাণ পাণিভ্যাণ **ठक्षुषी म्मृष्मिः ।** जुन्न भागिउल म्द्री हक्कृरवा यीन भीयाज ॥ चहित्र-গৈব তথারি ভিনিরাণিব্যগোহতি। जुक्। ह मः मारतिव । नगरा । नि मृथावहान्। विकृदाजा उरेथवानः পরিণায়ক্ষ বৈ যথা। সভ্যেন তেন बच्कः क्षीर्वाजाम भिषः ख्या।। शः পতিরার বিডালেল চ ভুক্ত ন্নামণ स्वगद्र[≭]रः । नुश्क भिज्र भिति-

गान नस्रवः यहद्वागः वनः हाक् দেহে ॥ অঙ্গারক নগতিঞ্চ পাবক স্र्या नियाने । योकाना सम्बद्धाः विठाः जुकः जनाम् क्षेयां छ। है-जुद्धार्यं ब्रहास्य शतिमार्कः उत्था-मतः। व्यनायाम भुनायीनि सर्येऽाट कर्मागुञ्जिष्ठः ॥ षञ्जिष्ठः जागु खिष्ठिय ज् मूनद्रार । ज्ङ्माक्यद्र जू बशाबनागिः बशिजः करु इंडि व-हनाए।। जीर्ल शर्म वर्ष्ट्रा वायू विन. ধ্বে পিত্ত মেধতে। ভুক্ত মাৰে.কফ শ্চাপি কনো ধ্য ভোজনে পরি ।। বিদপ্তে কিঞ্চিৎ পক্ষে পিত্ত নেখতে কিঞ্চিপত্বে কফঃ॥ 🗱॥ ভুক্তমাত্তে সংজাতকক্ষ্য পুতীকারমাহ। ধূমে-नालाश करिए वी कषाय करूं जिक्क-रैकः। পूग कर्भ्त्र कख्ती जवक मूम-नः करेवः॥ करेवः कर्त्रू कदारेय द्वा মূথ বৈষদ্য কারিভি:। তাদ্লপত্র महिरेक: मुगरिक्त दी विष्ठकन: ॥ धु-মেন অভরাদি ধুমেন। অপোহ্য क-कः मूत्रीक्छ। कषाय कर्ने जिन्हें कि करेनः कश्रत कख्ती नवकारि जिः। शृरिगः कमुरिकः। सूमनः करनः का ी क्रिनः। करिनः अना रती जन्मा किरानः ।।রতেসু গুাত্মিতে সাতে ভ্রে বান্তে ह अक्रात । अञ्चायाः विषुषाः त्राञ्जाः

প্ৰ্যান্তাঘূল ভক্ষণ ।। জা। তৃত্বা শ-छशती शहहरेम एउन जु जायरछ। আন সংযাত শৈথিল্য গুীবা জানু कठीनुंबर ॥ जुङ्गाशाहण इ समर भाषानम् जू भूकेजा चायू कंकम মানস্য মৃত্যু ধাবতি ধাবতঃ ॥ চ॰ क्रममानम्। श्रिम् ७॰ मरिन ग्रह ७: । 1# ।। यामानको ममूखान छान् दिः ^{।।} भार्ष जू मिक्ता। उठ खिम्खनान् বামে পশ্চাৎ সুপ্যামথা সূথা। বা-মধিশায়ামনলো নাভে কল্বো পিত্তি কভুনা- তমাত বামপার্শে শ্বীত ভুক্ত পুপাকার্থ।। ত্রিদোষ শমনী খই। তুলী বাত কফা পহা। ভূশয্যা ক হণা ব্য্যা কাষ্ঠ পউ। তু বাতুলা।। ইতি ভাবপুকাশ:॥ ##॥ অন্য । স্নাতো য়থা বৎকৃত্বা চ দেবর্ষি পিতৃ তর্গণ। পুশস্ত রত্ন পাণিস্ত ভূঞ্জীত পু্যতো গৃহী॥ কৃতে জপ্যে হুতে ব 👭 क्लो मुद्धवञ्च थाता न्**ल**। पद्धा १७ থিভ্যো বিশ্বেভ্যে গুৰুভ্যঃ সংশ্ৰি তाय जू ॥ भू १५ शक्क भूतः भ्य माना थात्री नत्त्र थर्ते। रेनकवज्ज थर्त्रा ५ थापूर् शानिभारमा नरत्रश्वत ॥ विमुख्त वसनः পুীতোভুঞ্জীতন বিদিজ্মধঃ। পুঃমু (थाम्बार्था वालि नरेहवान) मना नदः ॥ 🗱 ॥ व्ययः भूभन्छः भव्यक्ष

(शाकिक श्राक्त भारति। न स्ट-সিতাহতকৈব জুতপ্পাবদস স্ত ।। দত্ত্ব ভক্ত শিষ্যেভ্য: ক্ৰিডে-ভ। उथा गृशी। **भुणउ मृद्य**भाखियू ज्ञीजाञ्चलित्जा न्ना । नामकी ন ছিতে পাতে নাদেশে চ নরেশর। नाकात्म भाजिमकीर्ग पकुागुक्ष नः (त) १५१ए ॥ जामनी माक्यय जि-**श**मी ॥ सञ्जाजिमञ्जिङ । मस नह-পযুৰ্গ বিত॰ নূপ। অন্যত্ৰ ফল না॰-সেভ্যঃ শক্তু **শা**কাদিকা স্তথা ॥ ত-দ্বন্ধরিতকেভ্যশ্চ শুড়পক্বেভ্য এব চ । ভূঞ্জীতোজ্ত সারাণি ন কদাচিম⁻ রেশ্বর 🛚 হরিতকেভ্যঃ অপকৃলেছা-দিভ্যঃ।।

*
। নাশেষ পূক্ষো হল্লীযা -মন্যত্র জগতীপতে। নধৃদু দধি সর্পি-**ভ্যः শ**क्कु ज्रुष्ठ वित्वकवान्।। अन्ती-যাত্তমযো ভ্রা প্রন্ত নধুর রস।। লবণাল্লে তথা নধ্যে কটু তিকাদি-का॰ खडः ।। शुक् मुव॰ शृक्रवा १ भी-याचार्षा ह कठिनानन । वार भून-मुवामी जू वनारतारगर न मूक्षि।। অনিন্দ্য ভক্ষযেদিপ্য বাণ্নতো ২ন मञ्चरमयम्। शक्ष्यामः महायोनः পুरागाम प्रामप्रायना कि उर ॥ 🛊 🏺 🙀 मग्रगथाहम् शुष्ट्रात्थाम् द्यार्थान-रा। यथा वट भून जाजातमट भागी

श्कान। म्लाजः॥ यहः श्रां । हि- ॥ ত্তক কৃতাসন পরিগৃহঃ৷ অভীষ্টদে- ∥ वजानाक कही ज सहग नद्रः ॥ ज ग्रितामग्राययञ्चमः भाषिवः भवरमद्रि-छ:। मङावंका**मः नङ्म। ज**त्रयञ्च নে সূথা ।৷ অন্ধ বলায়মে ভূমে রপা নগ্ন্যনিলস্যচ। ভবত্ত্বেতৎপরিণতৌ मनाख्वग्रहकः मूथः ॥ भागामान **ज**मानाना मूरान व्यानत्या ख्या। आ-**ন• পুঠি করঞ্চা**স্তমমাস্ত্র্যাহত• সু **थः।। वग**िष्ठ द्रिः विख्वानवक ज्रुके নযান্নণ জরযত্ত্বশেষণ। সুথঞ্চ মৈতৎ পরিণাম সম্ভব বছত্বরোগ মম-**ठा** छ (५८२ ॥ विकु: সমস্তেन्দुय (५२ দেহি পুধানভূতো ভগবান্ যথৈকঃ । সভ্যেন তেনাল্ল মশেষ নেতদারো-প্যদ•মে পরিণান মেতৃ॥ বিফুরন্তা তথৈবাদ পরিণাম চবৈ তথা। স ত্যেন তেন নে ভুক্ত• জীৰ্য্যত্ত্বন্ন মিদ• তথা।। ইত্যুদ্বার্য্য স্বহন্তেন পরিমৃদ্যু তথোদর•। অনাযাস পুদাযীনি স্ব-र्य्याप कर्यागुजन्तु जः ॥ महासानि वितारमन मन्मार्गामविद्याविना। मि ন• নযেত্ততঃ সন্ধ্যা মুপতিষ্ঠেৎ সনা-ছিতঃ।। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৩ অংশ **>> व्यक्षायः ॥ ५५ ॥ व्यन्तदकः । जू** জীত পুষতো নিভ্যুণ বান্বতো হনন্য

भानमः। रेज्यक्रग वर्ज्यमञ्जः रेनः कामानी ভবেদুতी।। ভৈক্ষেণ वृज्ञि-নো বৃত্তি ৰুপবাস সমাম্তা। পূজ-বেদশন নিত্যসদ্যালৈ মহ্সৎস্ব-न् ॥ मृक्ष्म ऋरवऽ० भुजीतम् भुजिन-ल्ल्ह नर्बनः। यनादाग्र मनागूर्वः মম্বৰ্গ্য ঞ্চাতিভোৱন•।৷ অপুণ্য•লো• क विविष्ठे॰ जमा खट भित्रवर्जायट । **পু**। द्यार्था २ वानि यूक्षी उ স्र्या जिम्-খ এব বা ॥ নাদ্যাদুদ্মুখে। নিত্যু विधित्रव मनाउनः। श्रुक्तावाऽ शागी পাদৌ চ ভুঞ্জানো দ্বি ৰূপস্পৃশেৎ ॥ भूको परम मनामीता जुङ्गा ह ष्टिक्लम्म्(में । नाभीयान्डार्याश नार्षा तिनाभी क्षिञ्ज (सङ्जी ।! न **७क्करपर छक्का** नि नारभय वा शि्रव-দ্বিজঃ। অভক্ষ্যায়ন্ত ভক্তশদে দুষ্ট-ব্যং॥ 🗱॥ ভুঞ্জীত বন্ধুভিঃ সার্ধ্ব वाग्रात्वा २म मञ्च नगर्। यक्दा ज् षिकः शक भश्यकान् षिकाउम । ভুঞ্জীত চেদম্ঢাত্মা তির্য্যয়োনি স গছতি ৷৷ বেদাভগ্রাসো হ্বহণ শক্ত্যা महायकः कियाक्य।। नामयज्ञाम् भाभानि प्रवानामहम ख्या ॥ (य) भाशास्थवालम्यासकृत्वा (स्वजाई-न । जूषु त्र याजि नत्रकान् म्करत्रवः ভিজাৰতে ৷৷ ভষ্মাৎ সৰ্ব পুৰব্লেন

क्षा कर्मां गिरेव विजः। जुक्षी उ वजः रेन: जार्क म याजि भद्रना गिल्।। ইভিকৌর্মে উপব্লিভাগে ১৭ অধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ व्याम छेवाठ। नाष्ट्राव्याश्यानि ভূঞ্জীত সুৰ্য্যাভিনুখ এব বা। আসীন खानत नुष्क ज्यां भाषी निशायः ज्॥ वायुराः भाद्याया जुद्ध यनमाः मिक्गाम्थः। मिन् भुजुद्भाय। ज् (इ इ। उ॰ जुर हु जिन्दा थः ॥ शकार्षा ভেক্সেন স্ব্যাভ্নৌ পাত্র নিধায তু। উপবাসেন তত্ত্ব্য ননুরাহ পু জাপতিঃ॥ উপলিপ্তে শুচৌ দেশে। भारमी भूक्षान्। देव करत्री। व्याहम्। দুনিনা খকোধঃ পঞ্চাদুে। ভোজন ঞ্_{টে}্॥ নহাব্যাছতিক ভিন্ন প রিধায়ে দকে**ন তু। অমৃত্যেপস্তরণ** ্সাত্রপোশান কিয়াঞ্জেৎ ॥ স্বাহা গুণব সংযুক্তা প্রাণাপানান্ত্ তিৱত:। অপানাশ্তত: ক্রা ব্যা-नाय जरनस्तर ।। উरानाय जजः स य्या**्ननानारयाजि नक्षमी ।** विक्काः য তত্ত্বভেষা• জুহুযাদাত্মনি দ্বিজঃ ।। (भवनमः यथाकक जुक्की उ वर्रः न यूं छ॰। ध्राद्वा जन्मनमा (नव নাত্মান বৈ পুজাপতি ॥ অমৃতা-পিধাননীস্ত্রপরিষ্টাদপ: পিবেৎ।

ष्पाठान्डः भून द्वाठात्मनायः शोद्वी-

তি নজত: ৷৷ ফপদা বা বিরাবাহ্য जर्बभाभ भुगामिनी । भुगाना गुहि त्रत्री**ज्ञान**(ভ**ष्कृ**ष्यस्र**ः** ॥ व्याप्टन्।। কুষ্ঠ নাত্রেতি পাদাকুষ্ঠে ২থ দক্ষিণে ৷ নি:সুবেযেজন্তজল নৃত্ত্ৰহন্ত: সনা-হিত: ॥ হত্তান্ন মন্ত্রণ স্বর্যাৎ স-স্ক্যাযা নিতি নন্ততঃ। অথাক্ষরেণ স্বাত্মান ধােজয়েদ্বান্ধণাে পতিহি।। সরেষা মেব যোগানা মাত্মযোগঃ পর: মৃত:৷ যোহনেন বিধিনা স্বর্যাৎ न गाँछ तुकाः क्रयः॥ 🗱 ॥ यङ्जा-পৰীতী ভূঞ্জীত সুগ্নন্ধালস্কৃতো নর:। नाय॰ পুত नाष्ट्रता वि नक्तायान विष्मय ७: ॥ नाना । मूर्गमुहार भूबं मिक्स नायः मामगुहार ॥ गुरु-काल जू नानीयाए नाजानीयाङ् মুক্তবো:। মুক্তে শশিনি ভূঞীত যদি ন স্যান্ত্রানিশা।। অনুক্রযো রন্ত গতযোঃ সাত্বা দৃষ্ট্বা পরে ২হ-नि। नानीयाए (পुक्रमागाना नभूमा-रियव मूचाजिः ॥ ना यक्क मिश्रापन । हा न क्ष्मा नान्यानमः॥ । । । वाञ्यायः ভোজন यम। রত্যথ यम। रेमथुन । বৃত্যর্থ• যস্য চাধীত• নিয়ুল• তস্য জীবিত ।। যন্তরে বৈষ্ঠিত শির। यहः जुःह्न छेन्ड्यथः। (माभानएकम्ह य ख्यु नर्बः विन्धा खनामूतः ॥ नार्ष

त्रांख न नश्रांक्र नाजीर्ण नाम् वज्र ধূক্। নচ ভিনাসনগতো ন শ্যানঃ श्रिकाशिवा॥ न जिन्न जाज्ञतन रैप्टर न ভ্ন্যা নচ পাণিষু। নোছিঙো ঘৃত নাদদ্যার মুর্জনে স্প্লেদ্পি।। न तुन्न की खंरयद्याशि न निः श्विर न ভार्यप्रा । नामकार्य व नाकारण नव দেবালযাদিষু।। নৈকবস্ত্রন্থ ভঞ্জীত নচ্যানস্থিতো প্পিবা ৷ ন পাদুকা-নুগতো বা ন হসন বিলপ । ভু ক্রৈবণ সুখনাস্থায় তদন্ধণ পরিণান-(य८। इंडि क् र्या डेन दि जारग रेक्ट व्यव्यायः ॥ 🗱 🛊 ॥ व्यश्वत्रवः। मञ्जा ह হুরা পিত্ দেবতাভ্যে ভূরাতিথীন্ ভূত্যজনাবশিষ্ঠ । তুষ্ট: শুচি: শুদ্ধ ধানোক্তি যো ২ম• ভদ্যামূত• দ্যাৎ 🖔 সপুনান্ ভাৰতি ৷৷ সাধি পুাত মনু-ষ্যাণা মশন দেব নির্মিত । বৈদি কেলৌকিকে ২গ্নৌতু পুত্যক্ষে জাঠরে ७था।। উপলিপ্তে সনে रिटम मूहिः শুদ্ধাননবিত:। পাতের্থানুক্পেষু পুএ শিষ্যাদিভি বৃ তঃ ॥ সুস•ফৃত হি ত স্নিধা ভূঞীতাল নসৎস্যন্ যেব গোপুন শাল্যাচ্য না-স শা-কাদিভি যুঁ ত•া৷ কট্টুমু লবলৈ স্তিভৈ র্ব্যঞ্জনৈশ্চ সগন্ধিভিঃ। ভক্ষ্য প্রা अान् विविधान् कन्म म्ल कनानि ह।।

পাত্র ভূমৌ পুতিষ্ঠাপ্য যো ভূষ্টে বাগ্নতঃ শুচিঃ। ভোজনে ভোজনে চৈব তিরাত্র ফল নশুতে ॥ যত্ত্বেন ধার্যেদ্বিশু: পবিত্র• দক্ষিণে করে। जुक्षानस्र विश्नारम वामारारिय न লিপ্যতে ॥ # ॥ যাত্বানাঃ পিশা-চাশ্চ অস্রা রাক্ষসা তথা। মৃত্তি क्विन सम्मा मखनगा विवर्जना ॥।। जारिका वमरवा कृना वुका हिव পিতানহ:। মণ্ডলান্যুপজীবন্তি ত-मा८ करी ७ मखन ॥ हज्रहान দ্বিজাগুস্য ত্রিকোণ ক্ষত্রিয়স্য তু। দ্বিকোণাকৃতি বৈশ্যস্য শূদুস্য ব-र्जु न॰ मना।। न नोए मृग्राय नाज ভিন্নে হশ্বীযাৎ কটে হয়রে ৷ আপঃ পুনন্তিতি মন্ত্রেণ ভুব্যাস্তীর্য্য সমা-সনং ॥ ৠ ॥ প্রুরা দ্যৌ রিত্যুগবিশ্য পাত্র• পুক্ষাল্য মূজান• দিবে৷ হ্র-তি মিতিপাত্রণভিমন্ত্র্য ভূম্যা বৃত্বা यति ज्तो भावः भुविधाभायः। আহতবাসাঃ শূলুবাসা বা পবিত্রা-বা। কঃস্তাবা। পুঁাড়াথ আসীনঃ পা-गी शुक्कान। समारका जात्र विगरमा जि ধ্যাফেদব্যক্ত•পুৰুষ•।ততগুজোসী-ত্যাদ্য মাজ্যিমাণ পুতিপভ্রেৎ। एटा मीठ्यामिना প্রতিগৃহ্য অহম-मार्ग दर्भाव्या मिनवारि ।

উদ্ধ্যমেতি জাঠরা শ্রমন্তর হ॰ পুরো-श्राष्ट्र। ज् उत्रक्षा नगः ज्वनभज्रा ননঃ ভূতানা প্ত্যে ননঃ ইভি নম-ऋत्राष्ट्र विन्त्रयः ज्या मन्। । व्यथादेववास्त्रानः हिन्द्रयः। अन्त्रान म् अत्यः अनि मनामम् अतः । जनाता नाजिताल जु उतानः क প্রনাশিতঃ।। প্রাঞ্চনঃ স ত্রিজ্ঞো वतानः नर्वाक् निक्षाताकीत नह-णः, शुर्ता क्रत्य निज्य निश्वः।। তস্যাধভাদপানন্ত স বৈ গোক্ষীর ज्ञानः । नाज्यानस्य ज्ञानस्य विराक्ता नमभूखः॥ भूगरम्॥ भारतान्छ **इन्द्रील समभू**खः। 🔖 ভ্লিয়া নথ শাখাভ্যা নথবাপেরক শান বা শান্ত পাত্ৰ স্বাতি এবং रः निर्न ाया । श्रष्ठ भव्रति ज् <u> ज्यु खरायाः विश्वाला मृथ ॥ द्वः य</u> **७** इ॰ वष्ट्रेकात सु॰ विस्थाः भन्नम॰ পদ• ৷ৠ৷ অন্তোপস্তরণ নসীত্যপঃ ग्शृं भाराभञ्चाय विषठ॰ नियह्ट । नऽ-স্ত নহাব্যাহৃতিতি রক্তি: পুদক্ষিণ পরিষিচ্য সব্যের পাণিনা পাত্র ন বিমুঞ্জ মৃতোপস্তরণ মসীতি পুর खाम्भः भीदा भक्षा रेखः भागा স্থা জ্থৈতি। পাণে নিবিঞ্চা হয় ত कु इानि नियाना विना भुना हाय

शुंगित काहा । जाशान निविद्धा र्गू उ॰ ज्रामि निर्वाग। विना नु-माश्याभागाय बाहा। वंशान नि-্বিষ্টো ৰম্ভদল্পছোনি শিবোনা ৰি-मा शुनाहाय जनानाय बाहा। ইতি তৃকীং ভ্যো দুত্যেশ। পুলাপতি ম-नमा अप्राप्त । 🛊। भागाय बार्ल्ड পুণ স্থগ্যতি । পুণণে তৃপ্যতি চক্ষু ্স্ত্প্রভি'। চফুদ্দি ভ্প্যতি সাদিত্য ন্ত্ৰ্যুত্তি। আছিত্যে তৃপ্যতি দ্যৌ स्नार्जि । मिविज्नास्त्रा यथकि-क्षिरम्होन्छा सिक्रान्छ। विकिष्ठ छ छ প্যক্তি ত্স্যানুক্ষি অনুতৃপ্যতি ॥ ব্যানায় স্বাহেতি ব্যান ন্ত্প্যতি 1 ব্যানে তৃপ্যতি শ্বোত্ত ত্প্যতি। শো্তে তৃপ্যতি চন্দুমা স্থাতি। **ठन्तुम्मि ज्भाजि दिश ख्भा**छि । मिक्क ज्नाडीय यद्किकिकिनः श চন্দুনাশ্চাধিতিষ্ঠন্তি। তবুণাতি ত-স্যান্ত্ প্তি অনু ত্প্যতি পূজ্যা প-শুভি तद्याराज्य ८ ज्ञाना तुक्तवहर्रान-নেতি॥ অপানায স্বাহেত্যপান স্ত্[.] প্যতি । অপানে তৃপ্যতি বাক্ তৃ· প্যতি ৷ বাচি ত্প্যন্ত্যা• অগ্নি স্তৃপ্য-তি। অণ্নৌ ত্প্যতি পৃথিবী তৃপ্যতি । भृथिवताः ज्भाजाः यटकिक्षिट প্থিবী বাণ্ম দাধিতি গ্ৰত্ত স্তৰ্প্যতি

তস্যানুত্ধি অনুত্প্যতি। ত্প্যতি পুর্বা পশুভিরনাদে নেতেলসা বুক্ वर्ह्र(मत्नि ।। मनानाय शास्त्रि मः নান স্তুপ্যতি। সমানে তৃপ্যতি মন স্থপ্যতি। মনসি তৃপ্যতি পর্য্যন্য স্ত্⁻ প্যতি। পর্য্যন্যে তৃপ্যতি বিদ্যুত্প্য তি। বিদ্যুতি তৃপ্যস্ত্যা॰ যৎকিঞ্চি बिनृ ८ भर्याना का विकिश्व छ ख्ना-তি ত্ৰুগানুত্ধি অনুত্প্যতি পুল্যা পশুভি রহাদেরে তেজসা বুক্ষবছসে निज्ञ ॥ উদানাय आरहि উদান ত্প্যতি। উদানে তৃপ্যতি বাযু স্ভ প্যতি। বাথৌ তৃপ্যতিআকাশ স্ত্ প্যতি । আকাশে তৃপ্যতি যৎকি \cdot " ঞিলাযু শ্চাকাশ শ্চাধিতি গ্ৰত স্তৰ্ভূ প্যতি। তস্যানুত্ধি মনুত্প্যতি পু-ভাষা পশুভি রম্বাদ্যেন ভেলসা বুক্স बहरमस्निक्त ॥ 🗱 ॥ जूरक १८म (क চিৎ কাৰ্দ্ধন্ত ভুক্ত.শৰ ভুবি ক্লি-(भए। (कहिए कां सुप्र) नाकी वाः (क एट क्यवनानुगाः॥ जुङ्गक मन চোৎসৃষ্ট পাত্রে বাথ তবি স্থিতে। **षम् अशिवानम् मोजूश्मितिश्वारम्यः** গিবে ।। অহি প্রোপরিপ্তাচ বন্ত্র। शुगिभा निर्वार । ভृक्ता भी दाह यः काम्हर म्ना भाव मन्रम्हर।। স পুনঃ কুংপিপাসাভো ভবেজ্বন

নি জন্মনি। অমৃতাপিধানমসীতু প্ विशेषणः भिष्य ।। 🗱।। व्यथः भीष् हाष्टः भाग ज्ञानामास्टिः स्पृष्ठि। भागानाः श्राष्ट्रतमी छ इपय मानज क्लि । भागांनाः गुंधित्रनि इंडि भागामण । विकासिक मनीजिनी-ভিদে**শ-**। या দেবানামধিপতীতি भूनव्रिम क्रम्य (मण्या गण) बर्गाज । माविबीकान् जारा विद्राला तमा-না॰ রসভূক্ তত্রাত্রা কমেষ্টি: প্রীय-তা॰ বিশ্বভূগিতি ধ্যাযেদব্যক্ত• পুৰু-ব াঞ্চা আহিতাগ্লিরনত্বা স্ক্র চারী চ তে ত্রয়:। অশ্বন্ত এব সিদ্ধ্য डि रेनवा॰ निष्कि तनन्तराः ॥ गृरुष्ट्रा वुकाठाती ह रश १नमुन्छ उभाकतिय । भुगाग्निकाब लालन व्यक्तीरी ভবেন্তু স: ॥ অন্তরা প্রাতরাশক্ষ সা-यगाणञ्जेष्य ह। मत्ताभवामी ज्व-তি या न जूडूकराहन॥ श्रागाद्मि হোত্র নস্তাণা নিকক্ষে ভোজনে জ**-**(भए। (वर्षाग्नर्शांव नखा ख पुरा)-नाः जन जनार्य ॥ यथारि नन নৈষীক নগ্নিপোত্ণ পুহ্যতে বত্বৎ **नदा**नि भाभानि निम्हस्राञ्ज याजिः নঃ।। যথেহ ফুধিতা বংল। মাতর॰ প্যুপাসতে। এবং সরাণি ভূতানি অগ্নিছোত্র মুপাসত ইতি॥ 🛊 ॥

়**্ভাত্রন্স্য নিবে**ধন্ত প্রক্রান্যনূপ্ ৰ্মশঃ। নোছিতো ভক্ষহেৎ কিঞ্চি शहन् वा कराइन ॥ श्रीकः हा न ज् **क्षी छ न পा शिष्ट्र कमा** हन। हन्मु सूर्यश **भद्राश्य ह भुखार्ख हम्द्र म्**र्ग्याः ॥ গো বান্ধাপেবাদেন ন বাজীর্ণে ত্ *ভোরনে । निमी*थि निकवामास न नत्माहिष्ठे ভाक्त्र ॥ न त्राबो जिन नवंकि पवि नर्क्त्याकिक ।। का विमात विषये कनामि न कमाहन। চণকঞ্কোসুম্ভ করম্থিতঞ্চ যদ ধি॥ বেদ্যা বহিঃ পুরোডাশ তুল্য গোনাংসভক্ষণে। নোছিষ্টেন ঘৃত• গ্ৰাহাং শক্তন্ বাপন্নতোপি সন্। প নাধ্র লশ্ন বাপি ভূঞ স্তৎপাপ र्रं सुयार । नानामु गुथ शाशिख है ु छेदार्क भोक्षायट । जुझन अर्हन ष्रमुक्षानः स्पृष्टा न कीर्वायट ॥ নাৰুবাসাঃ শিরঃ ব্রিক্ত বেলসান্ত का निज्ञाननः । अर्थः नः क्लोल्या मण्ड क् इ। टिकावसक्षेतः । नामीयाम शिरवरेहव क्षा भ्यंत्रिका॰ नतः। পাদ পুসারণ ক্ছা নচ বেষ্টিত ন-र्खकः ॥ निष्ट भाषाना यहिन्ने गुर्ह न যুৰ্ণষিত্ৰঞ্চ বৃধ । দম্পত্যে ভুক্ত শো-ৰ্জ ন স্ঞ্জীত সাচন।। নাতিচরি ত স্পীষ্ণ ভূ জ্বা শেষ বিবর্জাষ্ট।

ন ভক্ষযেন্তু নিংশেব মন্যত্র দলি স লিযোঃ।। প্যসো নধু শক্ত্না তি-लाना (भारतम् । निहत्का भिष्ठ মশ্ৰীযান্ন বহুনাঞ্চ পশ্যতা॰।। বহু-বস্থান ভুঞ্জন্তি তথা চৈকস্য পশ্যতঃ । ওংধী চ ন লিছেৎ পাণি নাঙ্গুলি॰ পাত মেব চা৷ শ্ন্যাল্যেশ্লিশালা-या॰ मिवागात उरेबिय ह। वागू नि-রস্যতে তাস্য নিষ্টেকস্য বুভূক্ষিতঃ ॥ व्यक्षु भाषा वित्युच्छाः समात्रा-यान्यायिषु। একো १ मः भिष्ठे गमा छि उट्टा श्रमित नास्त १ शूग्रव्या ग ত্ত্বেক পঙ্গু্যা বিষয় দদাতি স্বেহা-ভ্যাদ্ব। যদি ধার্থ হেতোঃ। বেদেযু দৃষ্টা মৃবিভিন্ত গীতা॰ তা॰ বুকাই-ত্যা॰ মুনযো বদস্তি॥ একপড্জ্যুপ-विश्वानाः मुङ्जानाः मूद्राजानाः। जः स्विंग ७८ मग जावणावट मङ्कि ৰ্ন ভিদ্যতে।। এবং যো ব্ৰাহ্মণো ভুঙ্ সন্তর্গ্য পিতৃ দেবতাঃ। স দ্বে জলে नमूक्ठा वका नायुका माशू यां ८॥ ইতি বহি পুরাণে ভোজন বিধান ।। 🗱 ।। ত্রিবিধ ভোজন• যথা। উ-ছিষ্ট নবশিষ্ট বা পথ্য পূত নভী-প্দিত। ভক্তানা ভোজন বিঞো र्नित्रहा॰ माजिक॰ मठ॰ ॥ इन्तिय পীজিনন শক্ত শোণিত বৰ্দ্ধন ।

८ अञ्चन शाजन मृब नायू द्वारताग्र বন্ধন ।। অতঃপর তানসানা কই দ্লোষণা বিদাহিক। পূতি পযুৰ্গ বিত॰ জ্ঞেয়ণভোষন তামস প্রিয়ণ ॥ ইতি किन्नुद्राति २६ व्यव्यायः ॥ क्ष्म ॥ শুদ্ধাদিযু নিমব্রি তস্যান্যত্র ভোজ-(न (मार्या यथा । निमञ्जिक्ता १**न**ऽः তো ভুঙে শুজে দৈবে স পৈতৃকে। স ষ্বিজ্যে নরকে বাস• লভতে নাত্র স•- 🍴 **ण**यः ॥ **#** ॥ (५वजारिञ्चज्ञुक्त**र**्जू ভোজনে দোষা যথা। দেবতা পিতৃ मर्छिष् महत्मू ताकालम् ह। अजु জ্বৎসূ যে **২শুন্তি বাল পিত্র**ণ্নি মা[্] ত্যু॥ দৃষ্টা স্তে প্যনিচযে নিপাত্য-उ १४मा १४मा: । म्जेम्थाफ सा याख क्षार्खाः किति विश्रहाः॥ 🗱॥ এ চপড্জু)পবিষ্ঠাশ্চ সমূত্থায পুষা-खि (य । विष्डाबन द्राक्तामम् नद्रकः ए भूगांबि हि॥ #॥ **७**क मार्थ भुः याज्यः তথান্যঞার্থিত॰ নরা:। স সংবিভন্তঃ ভূঞ্জন্তি তে যান্তি শ্লেমু ভোজন ।। #॥ পাযস কৃশর মা न• व्था जुरू**क रिय नं देतः।** তেষाम-যোগুড়া স্তপ্তঃ: ক্ষিপ্যন্তে বৃদ্দে ୧৮৮ **जाः॥ इं**जि वामनभूतारा ३२ व्यक्षा यः।।≉#॥ঔবধাতিরিক্ত কিঞ্চিডো ছনবতো নিত্য নৈনিত্তিক কিয়া নি-

विश्वा विश्वा मृत्व । भूति । जुल्क खुक्कीर्ल ह रैनर ज्ञा ह किथन। कर्म अर्यं प्रामिद्रा নিভ্যুণ সূত্ৰকে মৃতকে তথা ॥ পত্ৰণ পুস্লঞ্ তাষ্ল ভেষনবেন কল্পিড । কণাদি পিপ্লল্যন্তঞ্চ ফল• ভূক্ত্বা নচা-চরে । बनम्याभि नর मुक्त । जनम्य নান্ডেষজাদৃতে। নিত্য ক্রিয়া নিবর্ত্তে-**उ मह निमिन्ति कि: मुन्।।। इंछि का-**मिका भूत्रात ०८ व्यथ्रायः ॥ ॥ ॥ ।। ভোজনে পাক বিধৌ हिड्नियमा यथा। প्रदामा जिमूरथा ज्त्रा छेडः রাশা সুখেন বা। পচেদন্নঞ্চ নধ্যা-इ नागाङ्क व विवर्जायः ॥ व्याप्ताः শাভিমথে পজ্৷ অন্তাল বিজা-नीहि। প्राम्त्था ध्याकामः (भाक-शनिष्ठ पिक्ता ॥ श्रीकामतक्री छ-রমুথে পতিকাম চ পশ্চিমে / ঐশা-ন্যাভিনুখে পক্তা দরিদ্রো জাযতে নর:।। 🗱 ।। পাক পাত্র নির্পণ यथा। यहा जू दे। यस्म भाव भक्ता व्यमाजि रेव विक्रः) ज नानिरहा १ नि ভূঙ্কে ২ম॰ রৌর্বে পরিপচ্যতে ॥ जारम् भक्। हक्ष्रीन र्मान जवि বৈ ক্ষয়ণ। পিত্ভ্যা॰ পদ্মন্নঞ্চ পি-ভ্বেত্ৰন যশস্থিনি ৷৷ পুগুরীকস্য য-জ্ঞান্য লভতে ফল মীপ্লিন্ত চবাডু-লেন তুষৎপত্ন ভগিন্যা চ কনি ধ্বং

ঃ অসুগোৰেণ গ্ৰেপন্থ শোণিত ড अभि भाउन।। वा उत्किन ह यद शक् প্রিয়া পক্ত ভথৈব চ। পর্পাতে চ অংপত্তং, সর্ব্ধ নিয়ুল ভবেৎ 🎎 🛊 🛘 भाककांश्व निक्मनः यथा। छेज्यदान कारधन करधना परान ह नात्नन कत्रमार्फन छेरतावर्ज्यन ह।। भ्रक्षाम रेज़ेन जुङ्गीठ जुङ्गा द्रा-विश्वभावतम् ॥ #॥ निविषामः ন্ত্। : ে হতাৰ মবীরারণ ভুকু। চা-मुन्यप्रायत् । व्यनुष्ठा या जू वनिजा मान्त्रीयंगम्य उत्गृह्म ॥ नामकाञ्चनऽ ज्यका जिल्लीयक**म्रहित हि। काव्य**-্রাক্সেরে বজুবারণকস্য চ্যা क्षित्रक काल्ये**ल** वीशि शङ्गाम शर्कि 🎮 শৃত 🤫 🗱 পাকপাত্র ত্যাগকা-लिहे अप यहा मृद्ययभाव जु भवः वि कर्निक्षिक । भारत श्राक्त उशा-क्षेत्रम् उर करक विस्ताद्यम्भकी ॥ धनूः-भार ७५ मिन्स् मील **ाव वज्रान** स अस् रिकासन (निव क्र्इ रेवन विक्र जाकिया भाकार्थ बन मान गया अकृतां जु जल मन्त्राट त न राभाय ! बिजाग भू व्रायल्भाः भण्ठाखायः न माभः (पृष्या अपा अपा । अपा । अपा । उन्नि निष्ध मूको प्राम भाषो भु

काला वायुकः। भौजूरभोवानि ज्-জীত শুচি: পীঠ মবস্থিত: ॥ 🛊 ॥ भीवेनिकभग यथा। नाष्ट्र हर् দ্বোণে সহকার বিনির্মিতে। চাম चमु माकनाय शामाणाह्य मःगूउ ।। वक्गामान ভरवष्ट्रिय जेंनुरक निय माभ्या । हारम थन विवृष्तिः म्या-क्य वृक्षित्र जनुष्क ॥ मानाभाग क-শেককে কি॰ শুকে মরণ ভবেৎ। 🛊। ভোজনে দীপ নিৰূপণ যথা। ঘৃত-मीछा यक्ककन रेज्यन (धन् कन **मृ**डि निर्वादा यथा । यमा (ভाजन কালে তু চাণ্ডালৈ: পতিতৈ তথা। শ্ব লক্ষুট বরাকৈন্চ শ্লেছৈন্চ অন্ত্য**ৈন** त्रिशा अम् वान्यथ भान वा मृष्टे-नाब॰ পরিত্যজেৎ। #। রজয়লা-याः मःग्रेडी वीठः नुद्रा भुमारुः ॥ বুতছে। বর্জায়েদেবি অবুতে প্রোক্ষ-गक्षात्र । 🛊 । (म्यानाय उथा जीर्ष निषद्भाव ह नक्ति॥ वान्नाना॰ नभाषि जू जुङ्गा कजू कवा वाजि । 🗱 । व्याहारस (ञाबन अर्थ) हना-मायाः श्रिक्षाः युक् ॥ जूरानंन न्यूष्ण-ममः जनमकाम् जः विमृ: । तकः न्यूनः যদমঞ্চ ভুক্ত। ভবতি কিশ্বিষী ॥ (भी झरकन म्भूरमपत्र नन्न विधानन

खर्वर । रिवृह्यपुन मानिरकान इति किन म्म्रामिन ।। सर्गन मःम्म्रामिन ন্ধ তদন শুচিতা নিযাৎ। #। ভো कत्न किड्नियरभा स्था । जायूयुः शुनुस्था जुरू ताबो रेठव छेरदायः ।। यमसी मिक्कार रेव्य शिक्ति जू विवर्जाय । # । ভোজনে মঙলানি ব্ধা। মণ্ডল ভোজনে কালে চত্ **इा**ग॰ विक्रम् हा। क्वियम् ভবে-रिएर्च रिवगामा अर्था हक । जी म् ুদাণা• ভবেষ্বৃত্ত**•শ**কটাকান্ন মেব বা ।। #।। অথ ভোজনকাল:। সায॰ প্রাত র্দ্বিজ্ञাতীনা মশন দেব নির্মি ত ৷ নিত্য মহি তমমিন্যা সার্চ্চ পু-स्त्रवाभाषः ॥ त्रात्वो वाभववात्त ह मक्रार्या नं कराइन। व्यकान ভाज ন॰ কৃত্বা প্রাণাযামেন শুব্ব্যক্তি।। অ-হো রাত্রেক সন্ধ্যাযাণ ভুক্তা কৃ हु॰ नमाहत्वर । #। (मामकामि जक्का-নম্ভর মন্ন ভোজন বিধি বঁথা। মোদ-ক কন্দুপদ্ধ গব্যাচ্য ঘৃত সংযুক্ত ।। পুনঃপুন ভোজৰে চ পুনরম্ব। ন দু-य्राठि । विभन्नाः जूकवान् यञ्च नम सार्थ दिनः किट्।। जुक्वा ताजि मूश्रास क्षुराकन मुक्ता । #। कोल श्रिकी स्मोवीत मत्रीह का তি কোষক ॥ गुड्रिभर्गाहिक मई

गक्तपुर्वाः তথোरधिः । भूमञ्जू सिर्वा मामाम विम्छानि न पृष्ठि ।। 🏶 🚼 ষটুয় ভরণাথায় পাক্ষ পশ্চামিবে-म्रायद्य । देवश्वरम्यात्र मुक्छ । ভाक-(यम विठातस्य ॥ 🗯 ॥ नामीया 🗢 কেবল রাত্রো বিশ্বব্দৈব তথা দবি। অঙ্কেন তৃণ গুছেন কাপ্তথণ্ডেন বঙ্কি-ना ॥ भिद्धालिए इतः सूर्याए भ-का कुछी उ वाइउ:। इस सं यह मक म्मारखः न जक्षरार ॥ स ॥ घृउ टेउनक नवन भानीय शा**वतः** দধি। রবিবারে তথা ষষ্ঠ্যা ভৌম-वात िनक्राय।। भईकाल हसार-শ্যা• দ্বিজ গুক্তি ন ভক্ষবেৎ ১৯। ন বামেন পিৰেক্তোয় ন **রস**ংজ্জ মেব চ। ভেকাখু শিশু মার্ছারৈ কুরী। भातावरे उत्तरि । कवाविरेक्षः भूवेरिश-क भारक न्शृष्ट्रीश मुनर्ति ॥ रशाध-या वनमार्जादेवः भाकः न विमृत्कः दः চিৎাঞ্চাষণরৌপ্যময়ে পাত্রে পাষা-ণে বুন্ধপত্ৰকে।। সকৃজ্জ্ব। তু দেবে-नि भराकमा क्ला लाउट। भूदी-যা স্বৰ্ণপাত্তে চ ভাজন যা সনাচ রেং।। পুগুরীকস্য বজ্ঞস্য লভতে কলমাপ্লিত। #। স্বৰ্ণাত্তে পশ্চি-নাযা• উত্তরাভিন্থেন বানাং উদ_ি ন্ধ লৌকর মাংসং ভুক্তা দেলুরুষণ

भू कात्रहा नई हामः वर्गणाळ यणवी র্ম রম্ চ। গদ্মপত্তে ভবেৎ পৃষ্টি इतिष्ठाकी जू भूगातान्॥ ऋगी खर-তি ভানেুচ কাচপাত্তে দরিদুতা। ত্ তগত্তে ভবেত । কদলে কীর্ত্তি মা भू सार ।। मधुशाब ह त्रागः नाष्ट्र পত্রে তু বৈষ্ণবঃ \ শালপত্রে ভবেৎ कारी अन्यान हेड (सर्गिज्यः ॥ निन्ना-পারে পুরোহে চ পুন: সংস্কার মর্হতি া উতি নৎস্যসূক তত্তে ৪২ পটলঃ 🛚 🐲 🏗 শ্রু মৃত্যুক্ত ভোজনবিধি: विश्विक्षान उंशानिशास्वराम রত্বপ^{াতি} দিবালা দিরাচান্তো গোম-ব্যেক্তির ৪ পুর্যুক্তে দেশে শুলাং শুলা नीक्ष मदना शिविष्टि। धर्मा वृष्किका मः श्रा-মুখ্ উদ্মুলো বা য**শস্কানো জীব**ৎ পিতৃহাত্তেরা দক্ষিণামুখে ধন कासः लुक्ताल्य ज्यित्र्वेष्टमिक्त भार कानना ' कराशास्तः ९उ-रीव करता में अविक्रिज्ञानीयशा-ाता महिलावर उन्हें इसन में **उन**• स्वा तोर कर नुश्रम छन हि मुहे ख्युवारमः। या नाइहिन्नजन्हे **नम्** शंकाण १. इन्त्र शादः निवाम शु अवगु उ एविवान शावक मिक জ্ব তিলেন বেষ্টবিত্ব। ভদুপরি -এদে ক্ষণাঁ বাস্তরেণ হস্তাভ্যা• পু

जिल्हाज्य ममारिकः शाशिद्ध **२ म• मृष्ट्वे। পুরুষ্যেৎ। অম্মা**ক• नि-ত্য নেকা হস্ত ইত্যভিদ্মপ্য সংপ্ৰেঃ-ক্য আচারাচত্যোণ মণ্ডলাভ্যন্ত রে জল লিখিত চকোপরি ওঁ নারা-যণায় নম ইত্যন্ত সজল নধ্যে দ-म्यादः। उद्भार्षः ७ जुरःभउरय ৰাহা ওঁ ভুবন**প**ত্যে ৰাহা ওঁ ভূ-তানা পত্তে স্বাহা ইতি বলি চ-जुर्रेयः मन्त्राट । जिनमः (मानकद्रा मझ ७ विकाय नम इंजु ८ मृहा छ-म्युः किक्षिट ७ विश्वक्रमनाय नम ইতি দত্ত্বা অল্লোপরি বিষ্ণু নির্মা**ল**্য তুলসীপত্র পুক্ষিপ্য বিষ্ণুপাদো-मक भुता न गृशी उर्क्षमिमानी · ७ँ কৃষ্ণ নহাবাহো ভক্তানানাৰ্ভি नामन। अर्रभाभ भूमजन भारताह-क' भुषह (म।। इंठि गृशीदा इंश्वेरम-বতানাম পরেরিত শুদ্ধা স্বয়ণ ত্রি ক্চার্য্য বা ওঁ অমৃত্যোপত্তরণন্সি ৰাহা ইত্যনেন পীড়া ওঁ অকাল ग्जू इत्रा नर्वगाधि विनामन । विष्याः भारतानकः भूगाः नित्रमा धादराभारहः ।! इजादनन भारमानक म्मिन मिन्निम पथ्राट । अँ उहि ভোজিন শুস্তব্য মুছিষ্ট কাল্কিণঃ। যেন জীলাবরাহেণ হিরণ্যক্ষে। বি-

পাতিত:। ইত্যুজ্য অঙ্গুধানানিকা-ভ্যা• ঘৃত প্লুত ন্তোক মন্ন নাদায महाभोनी मात्र्र मदीकृषि छ। ওঁ পাণায় স্বাহা ইত্যনেন মুখে দত্বা व्यम् छिम् । निगित्तर । এव 🤫 অপানায় ৰাহা ওঁ সমানায় স্বাহা 'ॲ 'উদানায স্বাহা ॲ व्यानाय सा-रु। उতा वीर्यकाता मोनी जू জীত। ততঃ পূথম॰ দুব যুক্ত মধুর भारत्य कठिनाम वायानि व्याख पुर যুক্ত কটু তিক্তানি যথা লাভ কী त्राष्ठः माक्रेष्ठ मंक्र हत्र मर्दाक्षाण রনভিত্পত ভুঞ্জীত। পশ্চাদধি চণ कवारिकः न भाउद्याः। जन कोत्र দধি ঘৃত নধ শাক শকু নাংসেতর ুদ্ব্যাণা• **শেষ•** রক্ষণীব•া ভো**জ**ৰে সম্পূর্ণে তু মা•স ভোজনে কর• **পুক্ষা**-ना उर अञ्चल जु कत्रम शुक्कारेना व नामिन श्खन जनः गृशीदा अ वम् তাপিধানমনি শ্বাহা ইতি জলগ-ख्यः गृशीदा नामः उद्धनामयः उ (द्वोद्राद १भूग)निनाय भग्नाद्व् म निः ৰাসিনা•। উদ্বিষ্ট ভাগিনা মন্ন মক্ষ য্য মুপতিষ্ঠত। মিতি ভূমৌ নিকি পেৎ।ভোজনকালে তু বিভাল কর্ম **কম্প**ৰ্ভ্যাগ**:**। বিডাল কভাক স্পা **८र्भ न (नाय: 1 ७७: इ**गनाउत्र न

গছেৎ। পরাবৃত্য মৃক্তি মুপ্ত হস্ত লেপ মপনীয় তৃণাদিনা জ্বিস্থা ঘর্ষণ যোগ্যণ দন্তেভ্যে গৃহীত রসদুব্যণ র ক্তপাত ক্ষতাদিক বিনা অপনযেৎ । যত্নে কৃতে যদি ন নি:সরতি তদা ন দোৰ:৷ ততো জিহ্বাঞ্চ সংঘ্ৰঃ জল গভূষৈ মু ৰাভ্যন্তর সংশোধ্য পাণী পাদৌ চ প্ৰফালী আসম্ভ এৰ ভূ भाशासी पद्म। विवाहमा मूथ जून-সীপতাদিনা সংশোধ্য দক্ষিণ পা-দাঙ্গু দক্ষিণ হস্তেন ওঁ অঙ্গুড়মাত্র পুৰুষে। হাঙ্গুঞ্জ সনাপুত:। ঈশ: সর্বস্য জগতঃ পুভঃ প্রীণাতু বিশ্বপৃক্ 1 ইতি মন্ত্রেণ জল• দদ্যাৎ। ক্তো नशिमार्द्धना जारव व्यम् हिद्यारित-বায় নেব ভোজন পাত্র মুজ্তু তৈৎ ञ्चान महिन्छे नशनीय (गामर्गीपका-ভ্যাণ সংমূজ্য সিঞ্চেৎ। সৃস্থ: পুশান্ত চিত্ত আসনে উপবিশ্যা ভীপ্তদেবতা नाम सृदा ७ अप्नितामग्राययद्वनः পাথিব প্রনিয়িতঃ। দ্বাবকাশো নভদা জর্যর্স্ত মে সু**খ**া আরু বলাব মে ভূমে র পুমেণ্ডি**ল্স্ড চ।** ভারে হৎ পরিণতৌ মমাস্ত্র্যা**হত**• म्य । भाषाभान मन्त्राना मूरी न वतानत्या उथा। 🚈 🗀 उर्भेन्त-कास मनास्वाहर मूर्यो चर्गा उ

) त्र_{िर्क}ष्ठवानव क जुक भगाम बत राजुल्या । भृष्य मरेमज्य भिर्माम শন্তুৰ ভচ্তুরো**গ মম চাস্ত দেহে** ।। विकः अभरक्ष निष्य (एक एरिक् पुर क्षान इत्छ। छणवान् यरेथकः। माछान তেমার নালেষ নেতদ্যরোগ্যদে নে পরিণাম মেতু।\বিশ্**রন্ত। তথৈবাম**ণ শরিণানুশ্র বৈ(যথা। সত্যেন তেন इक्टुक्ट विकास मिष्ट ज्या। इंडुऽ १ वृत्ति वानक्तिस्तापत्र शतिम्हार ্ক্জ, 🐃 শভ বুলনান্তর• বাম প্ৰায়েশ্ব কি:ক্ৰ**্কাল পৰিতৰ্য ।** কাৰ বিজ্ঞাতি মুখবা**স দুব্য ভো**ন 🎭 🚈 ইত্যাহ্ল কাচারে পঞ্চন যা-क्षेत्रक १०%। यथ ভाजनारि कीव् कनः। (जाजनाहारनः रखा रः প্রা ছিলেন্ডে। দ্বি**জঃ। স স্বর্গ লোক**• क्ष्यक्ति भवेशाया १व कागर ॥ ार प्राप्त कि वि**भूगाहृत्यः भवः वृक्ष**ाऽ क्ति विष्टा विर्देशिर्थान ह विशुव 1. 21 × 1/2 1/2 ्राक्षन**्नद्रः ॥ व्यद्यः शु**ा া ভ্রাক্ত গেঃ প্রাণ ক্ষোবধ মুচ্যতে ्डश्राण्येयथ सात्म मखाःमू द्र জ্বো লিভাঃ ॥ ইতি পরাশরমূতি: াঞ্জ।। জাননে পুতিবেখে। যথা। ্ভালুপাৰে পাৰ পাৰ মুছিঙে ঘৃত जिल्लामा मृत्य ह नवनः मन्त्राय म

(म्रा (भागान जकनः ॥ यः म्र्न्न সমাহতো ভোজন সফতে দিজ:। সুরাপশ্চ স বিজ্ঞেষঃ সর্বধর্ম বহিষ্কৃ তঃ ৷৷ স্থান বলকতীর্থেষু ভোজন गणिकानारा। भयन भूई भार ह वुक **२७**९। दित्न दित्य।। इंडि कर्यालाहनः ।। ##।। অপ শিশ্না পুথমান্ন ভো-क्रमिनामि। यथा यमः। उठा १ म शानन भानि यहि कार्याः यथा विधि । অষ্টমে বাথ কর্ত্তব্য: যদ্বেষ্ট: নহল। ছলে।। ষষ্ঠ ইতি মুখ্যঃ কল্প: প্রাণ্ড-क्रन्यायाट।क्रुडिशमर्गो। व्यवस्र প্রাশন প্রোক্ত মাসি ষষ্ঠে ২ইমে व्रेषः। जीगाख भक्षा मामि मक्षा शुक्राणी मूनिः।। #।। वादनी मध्यी नन्त। तिकान् शक शहमू। यल भायू র্যাশে। ছন্যাৎ শিশ্নানন্ন ভোজন ।। ভুত্রবলভীমে। বঙ্চে মাসি নিশাকরে শুভকরে রিক্তেভরে বৈ তিথো সৌ-मामिछा मिराउनम् कीव मिवरम श-क्कि ह क्ष्कडात । शुर्किमापिडि (भोक रेक्क यूरेग इंडामि यहां छ-রৈ রাগ্নেগপ্পতি পিএভৈন্চ নিতরা **মন্নানি ভক্ষে শুভ•**।। যুগৈরিতি পাূ-কেশানে পুত্যেক সম্ব্যুতে অতা-नि जिथाक्यानि विकाकः विवर्जाय । व्य बन्द धनु मी न कन्। नाः १म

जक्रनः। बिकानाष्ट्रेक ग्कास्य गुरु। यब उथा कल ।। पृष्ठेः ममध्या न ग्राट् यश्राष्ट्रा १म जकता। मार्कः ভেষ পুরাণ । দেব**তা পুরত ন্তম**্য পিতু রঙ্কণভদ্য চ**। অলস্ক্**তদ্য দাতব্য নম• পাত্তে চ কাঞ্চনে ৷৷ ম-ধ্বাজ্য কণকোপেত প্রাশ্বেৎ পা-यमञ्जः । कृष्ठ भूष्मन मूर्मस्य माज् वीनस ७ जात्वर॥ (प्रवाग्-তো হথ বিন্যস্য শিল্প ভাণ্ডানি **সর্বশঃ। শা**জ্ঞাণি চৈব শজ্ঞাণি ত **७: शम्मु ज् नक्ताः ॥ श्वानः यट** স্প্ৰেদাল: শিল্প ভাও ৰয় তথা । জীবিকা তস্য বালস্য তেনৈব তু ভবিব্যতি।। সোমবারে দোব মা-ह (ভाজরাজ: । বাচালো বলবান্ দিনে দিনপতে রত্যন্ত দীপ্তানলো দেহী হীন হুতাশনঃ শিশিরগৌ কৌজে ৰুজা পীডিড:।বৌধেভোগ **সু**থোদ্যী পুথমভুগ্নীবে চিরাযু: সূ থী শুক্তে সৌথ্য বলান্বিতো **হ**তি-সুভগো মন্দে চ মন্দানল: ॥ ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ॥

ভোরপতি: পু॰ ক॰সরাজ:। যথা। মল্লানামশনি নৃ ণা॰ নরবর: দ্রীণা॰ মরো মূর্ত্তিনান্ গোপানা॰ স্বরনো ২সভা॰ ক্ষিভিত্তুরা॰ শাস্তা স্বপি- বো: শিশু: । মৃত্যু র্ভোজপতে বি-রাড বিদুষাণ তত্ত্বণ পরণ যোগিনা বৃষ্ণীনাণ পরদেবতেতি বিদিতো র-ব্রুণ গতঃ সাগুজ: ।। ইতি প্রভাগ-বতে ১০ ক্ষমে ৪৩ অধ্যান: ।।

ভোজপুর॰ ক্লী স্থনামখ্যাতদেশঃ।
আজি রভ্ডোজপুরে সাক মসুর
বরিঃ।হরেরেবাং হরে ক্রবলো নুন
ভে লহীযাংসঃ।। ইতি বিদ্যমুখমণ্ডন•।।

ভোজবিতা বি ভোজসকার্যিতা।।
ভোগপুযোজক: । যথা । কর্তা চ
দেহীভোকা চ আত্মাভোজবিতা
সদা। ভোগো বিভব ভেদশ্রনিস্কৃতি মুক্তি রেব চ।। ইতি বুক্ষাবৈবর্ত্তেপুক্তিখণ্ডে ২০ অধ্যাদ: ।।
ভোজাধিপ: পুণ কণসরাজ্যা ইতি
শব্দব্রাবলী।।

ভোজ্য বি ভোজনীয় ব্যা থথা।
ভোজ্য ভোজ বিভাগ লৈ কি বিভাগ লোক কি বিভাগ লোক কি বিভাগ লোক কি বিদ্যান্থ পানক ক্ষেত্ৰ কি বিশ্ব পানক ক্ষেত্ৰ কি বিশ্ব পানক ক্ষেত্ৰ ক্ষিত্ৰ কি বিশ্ব পানক ক্ষেত্ৰ ক্ষেত্ৰ কি বিশ্ব পানক ক্ষেত্ৰ ক্ষিত্ৰ কি বিশ্ব পানক ক্ষেত্ৰ কি বিশ্ব কি বি

লেখ্যু রসাল বৃথিতাদি।ভোজ্য 🛚 र्ड ङ मृभामि ! चक्रा वडु क न उ कार्षि । ठर्बार हिमिहे हनकापि । ইভি ভালপুকাশ:॥#॥শুদ্ধিস্যা-*(मो एका वास्ता)* जिक्छन छ। य-था। 😚 गांक नामि अगुरक भाग वा । वृत्थी वामुक भाव नः भिद्धाः (एव नर्याः) अकाः चिड्ड निधि जात्रदमदिक **माफ** বাসুরে অমূত পাত্রস্থ পিতৃরমূক (में? भू प्रेशा किय वर्गका**न रेंप**॰ লগ্ড কংলোপকরণানার ভোজ্য াতিক আবিষ্ণ দৈবত যথা সম্ভব ाष्ट्र है , बुश्चनायाइ॰ ननानि। नें अध्यक्ति । अँ जाराउजारि ক্রিড বিষ্**ত স**বস্ত্রোপকরণা নাম 🧽 🤫 দান কর্মণঃ সাঙ্গতা यः हरिता अमः काल्या प्नारः ं वित्यू रिवः । यथा मञ्च ााज मारम् द्वाका । श्रुक एट स्मृज मर्वाञ्चाभकद्रभागाम . लाका पा कर्माहिमुमस्र। ইতি

भाषायुक्ता हुए । रेकाका महारक हुए भारती तक्**तमशाहः** हिन्द भक्काम्बर्गाः

ভেট্রাক্টিঃ পুঁ• দেশবিশেষঃ। ভো-ইন্ট্রিভাবা। ইতি শদর্মা- বৰ্ণী ।। ভোভোব্য সংশাধন । ইতি হলা-যুধ: ।। ভোলিঃ পু॰ উষ্ট্ৰ: । ইতি ত্ৰিকাণ্ড-শেষ: ।।

ভৌত: পু॰ দেবলঃ। ইতি শব্দালা

। ভূতৰজ্ঞ: । বলি কর্ম । যথা। হোনা দৈবে৷ বলি ভৌতি। নৃযজ্ঞে।

হিতিথি পূজন•। ইত্যাহ্নিকতভূ॰।।
ভৌতিক• ক্লী মুক্তা এ ইতি রাজনির্যন্টঃ।। ভূতসম্বন্ধিনি ত্রি।।
ভৌতিকঃ পু৽ মহাদেবঃ। ইতি
ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

ভৌতী জ্রী রাজিঃ। ইতি ছেনচন্দুঃ।।
ভৌত্যঃ পূণ ভূতিমুনিপ্রশতনুদ্দশো
ননুঃ। যথা। মার্কণ্ডেন উবাচ।
অতঃপরস্ত ভৌত্যস্য ত্ব মুৎপত্তিণ
নিশানয়। দেবান্ষীণ স্তথা পুলাণ
স্তথের বস্ধাধিপান্।। বভ্বাঙ্গিন
রসঃ প্লো ভূতি নামাতি কোপনঃ
। তস্য ভ্রাতা সুবর্চা ভ্রাত্তে তেন
নিমজিতঃ।। যিযাসুঃ শান্তি নান্
দান্ণ শিষ্য নাহ নহামুনিঃ। সন্
দোল্মুক্ত সদাচার মুনারণ মুনি সন্
ভোন্ ভূতি ক্বাচ। অহণ যৃত্তঃশান্তে স্বর্চানঃ।।
তেনাত্ত স্ত্বা চেহ্ ব্থ ক্র্ব্যুণ

मृत्य उर । অতি का गत्र । वर र खुगो कार्याः समाम्या ॥ ज्या ज्या भूगालन यथा १ न भग दुराबर । **ই**ত্যাক্তপে তথেত্যুক্ত: म তু मि বে)ণ শান্তিনা।। জগাম যুক্ত ত॰ ভাুুু রাহূত: সন্ যবীযসা। পুশান্ত স্তাবদনলো যো হসৌ ভৃতি পরিগু इः॥ ७॰ मृष्ट्री (मा १नवा भाष भाषि রত্যন্ত দুঃথিতঃ। ভীতক্ষ ভূতে র্ব ল্ধা চিন্তুযন্ স মহাদ্যুতিঃ ॥ মার্ক **८७**य. छेवाह। वर्क्टेश्वव विहिन्नप्राप्ती ভীত স্তম্য তদা গুরোঃ। যযৌ মতি মতা॰ শুেষ্ঠ; শরণ• জাতবেদ**স•** ॥ **স** চকার তত স্তোত্র• সপ্তা:ছ র্যতমা-नमः। ज्रेष्क हिट्डा (मिन्ताः नाउ জানু: কৃ ভাঞ্জলি: ॥ স এব সংস্কৃত खिन ভगवान् ह्वावाहनः । ज्ञाना মালাবৃত তনু স্তম্যাসীদ্পুতো মুনে ।। পরিভূষ্টো হমি তে বিপু ভক্ত্যা যত্তে স্তা। বর• দদানি ভব-তঃ পুৰ্ণে তা যত্তবেপ্পিত ॥ ভগ-বন্কৃত কৃতে গামি যত্বাণ পশ্যামি ৰূপিণ• ৷ তথাপি ভক্তি ননুস্য ভগ· दन् भूयका॰ मन । भना भनावादा স•ভ্যক্ত• যত্তে হ্ধিষ্ট্য• বিভাবসো। তভুষাধিষ্ঠিত সেন্যে পূৰ্বিৎ পশ্য তাং দ্বিজঃ।। তথান্যদলি নে দেব পু

नामः क्रकरव यमि। भूत्या विलिक्षि। ভবতু নিরপত্যস্য মে গুরোঃ ॥ येथा চ নৈত্রী তনযে স করিষ্যতিমে গুৰুঃ । তথা সমস্ত সজেুষু ভবত্বস্যমনো मृमू ।। अधिक्वाह । खता तर्थः जुरा वुकान् याठि छ॰ यहात ह्य । ना कार्य তেন মে প্রীতি স্তৃগ্তীব মহানুনে।। ভবিষ্যত্যে उपर्थितः खुत्। यं भा-र्थिङ प्रग। मिन्नी ममस ज्लिक् भूक স্তম্য ভবিষ্যতি ॥ মন্তরাধিপঃ পু-ত্রো ভৌত্যো নাম ভবিষ্যত্তি। মহা বলো মহাবীর্য্যো মহাপ্রাক্তো গুরো স্তব ॥ ইত্যুক্ব। ভগবানগ্নি: পশ্যুত खन। व ज्यान । व ज्यान मनः ज्ञानः भूमीरभा निवृ (छ। यथा ॥ এ**छ**स्रोबस्डः রে সোপি ওক স্তস্য মহাত্মন্ঃ৷ জ্ঞা-তু ৰ্যবীয়সো যজালাজগান, ধুমাশু-ম্ ৷৷ তদ্যাগত্স্য শিষ্টো হসৌ চক্রে পাদাভিবন্দন । গৃহীতাসন পুজশ্চ ভমাহ্ন ভদা গুৰু:।। বং-সাতিহার্দ• বৃথি মে তথান্যেম্বপি-জন্তুষু। ন বেদ্মি কিনিদ ব্বঞ্চেছ ে-সৈতৎ কথ্যাশু মে।। ততঃ সশান্তি ख्ट मर्ब माधार्याय महाजात । ज-গ্নি নাশাদিক বিপু সমাচষ্ট যথা ত-থে ৷৷ তৎ শুত্রা স পরিয়জ্য স্নেহা-मुनियाना खकः। नियाप्तरः शुक्ता (वः

मान् नाव्हाभाकान् महाजात ॥ ভৌত্যো নাম মনু স্ত**শ্য পু**ত্রো ভূ ্ড রজায্ত। তস্য মন্বরে দেবা-নৃষীন্ ভূপা॰ চ মে শ্ণু।। #।। ভ-বিষ্যুস্য ভবিষ্যা•স্ত গদতো মন বিস্তরাৎ ৷ দেবেন্দ্রো যশ্চ ভবিতা তস্য বিখ্যাত ক্মাণ: ॥ চাক্ষ্ৰাত ক্রিষ্ঠাক্ত পধিতা ভারিরা তথা। বজো বৃকাশ্চ ইত্যেতে পঞ্চ দেব-গণাঃ মৃতাঃ ৷৷ শুচিরিন্দু স্তথা ভে যা•় জিদ**শানা• ভবিষ্যতি। মহা**-याना गरावीर्याः मोर्स तिन्तु छोन य्जः ॥ जानेषु महानिवाल्म मुहि যুক্তা হথ নাধবঃ। শুকো জিতъ সপ্তৈতে তদা সপ্তর্যয়: মৃতা: ॥ . ভক র্গভীরে। বুপ্নশ্চ ভরশ্চানূপু এব है। जीमानी ह श्वीतक विकुः न॰ ক্ৰন্দ্ৰ তথা।। তেজম্বী সুবল শৈচব ভৌত্যসৈতে মনো: সুতা:। চত্ र्ष्म भरेगछल्ड भन्नस्त्र मूमाङ्ख ॥ তি মার্কণ্ডেযপুরাণে মন্বন্তরানুব-र्गन नामास्त्रायः ॥

ভৌন: পু॰ মঙ্গুলগুহ: ॥ নরকরাজ:

॥ ভূনিভবে ক্রি ইতি মেদিনী ॥
অন্বরং। ইতি ধরণি: ॥ রক্তপুনর্বা
ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

छोग्डल॰ क्ली ভृगिमञ्जिनिता।

তণ্ৰিবিধণ যথা। ভৌম মন্তো নিগ-দিত পুথম তিবিধ বুধৈ:। জাল-ল পরমান্প ততঃ সাধারণ ক মাৎ।। তেষা । লক্ষণানি গুণাস্চ । অল্লোদকো হলুবৃক্ষণ পিত্রকা ন্যান্তিঃ। দেশো হন্প ইতি খ্যা-ত আন্পণ তন্তবণ জলং॥ মিশু চি॰ হুস্ত যো দেশ: সহি সাধারণ: মৃতঃ । তিমান্ দেশে যদুদক ভত্ত সাধা রণ স্তা। জাহল সলিল কক नवनः नघु उखनु । विहाक्ट कफ इट १९४९ विकातान् चक्छ वर्न् ॥ यान्भः वार्यः जियः नित् साम् निकः ঘন ওক। বহিছেৎ কফ কৃষিত্য বিকারান্ সকতে বহুন্।। সাধারণস্ত মধুর• দীপন• শীতল• লঘু।। তর্পণ• রোচন ভৃষ্ণা দাহ দোষ এয পুণুৎ ॥ 🛊 ॥ अथ (ङोमानाम्बर नारम्या-দীনা॰ লক্ষণানি গুণাশ্চ। তত্ৰ না-(रयम् वक्षा ख्राम्ह। बहु। बहु-म) वा नीतः नारमय मिछि कीर्खिछः। नारमय गुमकः क्षकः वा उलः लघू मी-পন• ৷ অনভিষ্যনিদ বিশদ• কটুক• কফ পিভনুৎ।। নদ্যঃ শীঘু বহা ল-घुः नर्वा या म्हानत्नाहकाः ॥ छर्द्रः रेमवल अध्हमा सम्प्रभाः कलूषाण्ड याः। नभी मत्र खडागाइ क्ल भुमु-

वर्गानिका। उनक एम जिस्स स्थान (मायाः म सम्बद्धः । इंडि जावश्रुकामः ॥ जोमनः श्रु॰ विश्वकर्षा। इंडिश्वराणः॥ स्योगवरः की श्रवासः। इंडिश्वरासः

ভৌমন: পু॰ विश्वकणा। হাতপুরাণ।। ভৌমরত্ন॰ ক্লী পুবাল। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

छोनिकः जि ज्याधिकात्री। ज्यि-मधिकाताजि यः। ইত্যর্থে ফিক পুত্যবেন নিম্নমः॥

टोभी खी जीजा। ই**डि मद**त्रङ्गा-वनी॥

ভৌরিক: পু• কনকাধ্যক্ষ:। ইত্য-মর:॥

ভাস ও ভাষে। ইতি কবিকল্পদ্দা।।
অন্তঃস্থাদ্যযুক্ত:। ওভাসতে। ইতি
দুর্গাদাসঃ॥

जुझ नाः श्रः श्वीत्य भाषात्री नर्खक शूक -यः। इंछानत होका ॥

जुनः नः नृ जीविनशात्री नर्जक नृकः यह । जिद्य नर्गायः । जुन्नः २ । जुन्नः २ । इज्यातः ॥ ज्नः नः ८ जुन्नः १ । इज्यातः ॥ ज्नः नः ८ जुन्नः १ । इज्याति । ।

ভুকটি: জ্রী কোধাদিনা ভুর: কৌটিল্য:। ইত্যমর:॥ অস্যা কপান্ত রাণ। ভুকটি:। ভুকটি:। ভ্কটি: ভুকটী। ভুকটী। ভুকটী। ভ্কটী। ইতি ভরত:॥ जुन निष्म। ইতি কবিকন্নজন: ।

त्रिकयुकः। जुनिछ। ইতিদুর্গাদাসः

जुन देत हाल। ইতি কবিকল্লজনঃ

।। ইর অতুনৎ অতুনীৎ। ইতি
দুর্গাদাস:।।

जुनः श्रु॰ निथ्याक्कानः। उद्भर्यायः

। जुन्धः २ निथ्यामिकः २ । इज्यः

नदः ॥ जद्दिन्त्रं नः ॥ क्रन्तः ॥ जुः

नगः। इठि मिनि ॥ क्ष्मा न्यायनः

उज्नम्यनामान्द्रः अञ्चा। जुःमाः

विविदः । विभर्यामः मंग्मयण् ।

वारिया यथा। स्ट्रि याजा वृक्तः।

শহ্বাদৌ পী ততা মক্তি। সা নিক্ষয क्रा। विजीया यथा। कि बिट नात्री वा छापू वी इंज्यानि वृक्ति। ডস্য কারণ । পিত্ত দূরত্ব মোহ छ्याहि नानाविश्व (मानः। यथा। অপুমা চ পুমা চেতি জ্ঞান দ্বিবি-ब मूह्य । उट भूत्म उत्प्रिक सी महाद्रभुगा मा निक्रिण छ।।। ७८ ∥ भुभक्षा विभर्गामः मः मर्याः **रा**भ भुकी विंठः। जात्मा (मार्क्स व्याजाः বুদ্ধি: শহ্বাদৌ পীতত। মতি:॥ ভ विकिष्ठय क्षा मा मः भर्या १४ পুদর্শ্যতে। কি•স্বিমরো বা হাণু-র্বেভ্যাদি বৃদ্ধিস্ত সম্পথঃ।। তদ-ভাবা পুকারা ধী ভৎ পুকারা তু निम्हयः। ज जन्मत्या छत्वन्यः। थीः রেক্তা ভাব ভাবযোঃ।। **সাধা**র-ণাদি ধর্মস্য জ্ঞান সংশ্ব কারণ । स्रार्था २ श्रुभाया अनकः भ्रुभाया-**স্ত**ণো ভবে**ং ॥ পিত্ত দ্রত্বাদি** क्ला (नारवा नानाविषः म्फः। ইতি ভাষাপরিছেদ: ॥

जुमगः ही गमनिविध्या शर्याहेन। रुखाय तथ (कालानि काता जुमग खगाः। चाठ (काशनजः। जुमरेक् र्या कतजः। वलागि विवक्षनजुकः। देशि दाक्षवञ्चलः।। जुमनी की कात्र खिका। अधीन जूः-की फार्रेश। इंकि मिति।। जुम बरों की ज्ञानिह्य । उट. नर्ग । कावाती २ बक्स करें। ०! इंकि विकाश्य नरा।

ज्ञ तः श्र की देविष्ण यः। उट् श्रांगः

। सथ्युः प्र सथ्कतः र सथ् लिहे अ

सथ्यः ८ स्वे प्र स्व र प्र स्व र स

जुमनकः भू वनाविन्धि छत्न छनः।
इंडामनः । ज्वः॥ वानम् विकः।
इंडि मिनि ॥ अम्जुमः। ইতি
विश्वः ॥

खुनव्रकी छै: भू॰ की है विश्मयः। अन् -द्रालाका इंडि जाया। यथा। जीव-युक्तिस उ विवान मार्यालाधि छना॰ स्टाइट। महिरानम् धर्मद्रास्टाह জুমরকীট বং ।। ইত্যান্মবোধং ।।
ভুমরছল্লী জা লতাবিশেষ:। তং
পর্য্যায:। ভূসান্তা ২ ভূমরা ৩ ভূসা মূলকা ৪ । অস্যা গুণা: । ভূস্ছ ল্লীচ কটুকা তিক্তা দীপন রোচনী
। ইতি রাজনির্ঘট: ।।

ञ्ज्ञत्र श्रुप्त श्राक्षण्यः। ইতি त्रज्ञाना ॥

जुनतभाती जी मानवरम्भ निक भू अव्कविर्णयः । ज्र भर्यायः । जुनतातिः २ ज्ञातिः ७ ज्ञाती ८ मा मभू भ्रिका ६ क्ष्ठातिः ७ जुन् भती १ विष्ठेन जा ৮। ज्यम्या खनाः । जिङ्का । भिष्ठ स्मया ज्ञत माणिषः । १ भाक कथ् जि क्ष्ठ वृग्राम वि साय माणिष्यः। ইতি রাজনির্বণীः

ভুমরা জ্রী ভুমরছল্লী। ইতিরাজ নির্ঘটঃ।।

ভুনরাতিথি: পু• চম্পক:। ইতিরাজ নির্ঘট: !!

जुमद्रानमः भु वस्रवः॥ व्यक्तिम्कः कः॥ द्रकाञ्चानः। ইতি द्राजनिष्ठः जुमद्रावकः भू वनावेश्चि उर्ह्गक्ष्य वः। ज्रद्रशर्यागः। जुमद्रकः २ क्रकः वः। व्यव्यक्तिम्हः॥

ভূমরী জী জতু চা।। পুঞ্চাত্রী।। বট্পদী। ইতি রাজনিঘণ্টঃ।। ज्ञाबिक वाक्षित्राक्षित्र । विक्षित्राक्षित्र ।

ভূনরেষ্টা জী ভাগী। ভূমি**জদ্:।** ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

ख्राजार मता की गांधनी। इंडि ज्ञाजनिर्धणेः॥

ভুমাসক্ত: পু॰ পদ্ৰমাৰ্ককঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।।

खुमिः जी खुमगः। छ० नर्गायः। जुमः२। ইত্যমরः॥ जुमी २। ইতি ভরত:॥

ভূমী ক্রি ভূম বিশিষ্টঃ ৷ ভূমো বিদ্যু-ভে অম্যোভি অস্ত্যুর্থে ইন্পুড্যুয়েন নিক্লমঃ মা

ভূশ য'ত অধ:পতনে। ইতি কৰি-কল্লক্স:।। য'ভূশ্যতি। উ ভূশিত্ব ্ৰভুষ্টা। ইতি দুৰ্গাদাস:॥

जुष्टै कि हु जि । अमा मार्गा गां गां नि ज नाम पुष्टे नहाः ॥ अ ॥ अर्था छुटे खोर्थगां वास्तु गरहर मार्गा छुटे मा उत्र जिस्तु गरहर ब्राक्त । स्था गर्छे मा गया दे नुरक्त ॥ इकि गां कर जी जिस्तु ।।

ভুষ্ন প্ট ঞ শ পাকে। ইতি কবিকল্প শ্বনঃ ॥ রেক্যুক্তাদি দন্ত্যোপথঃ। বিপি সংযোগাদি লোপে ভূট্।

পাক ইছ ভর্জন । এ শ ভূজ্জতি ज्ञाज मध्याः म्नकातः। अ चजुक्ती । इंडि मूर्गामानः॥ ভ্ৰান্ধ ণ শটু ভাগি। ইতি কবি কল্পকম:।। রেফ্যুক্ত:। ড ভ্রান্ধতে ा जुदब व जुदब । जन्दब वनाथ **সং**यामाहिएद्वम् ताकात्रम् ताल्युङ्ग अयिनुइ८ वर्गाइ८। हे जाक थुः। ३७ मुर्गा मानः॥ ভ্ৰান্তক•় ল্লী পিত্ত•। ইতি শব-हिम्मिका ॥ ज्ञाबिकः वि जनकातारिनारी छि যুক্তঃ। ইত্যমর:।। বিক্ষোপু । মখা । ভাূানিফু ভোঁনন ভোকা দহিফু क्रांगिकः। ইতি তস্যসহসুনান স্তোত্ৰ• ॥ ভাতরৌ পু ভাতৃতগিন্যে। নিড্য-

ন্দ্ৰাৰ্ভা পৃ• একগৰ্তনাতঃ। ভাই-ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। সহোদরঃ হ नगरिनापर्याः ७ (नापर्याः ८ नगर्थः ৫ गर्बः ७ (मापतः १। देखि एम-চন্দুঃ।। পিতরি মৃতি জ্ঞান্ত ভাতুঃ পিতৃত্ব্ব্যস্থ যথা। জ্যেষ্ঠো ভ্ৰাতা পিতাত্ল্যো মৃতে পিতরি শৌনক । সরেবাং স পিতা হি স্যাৎ স ब्रिया मनुभावकः ॥ कनिष्ठ एउयू

मर्दिव् ममरद्भानृदर्क्छ । मरमाभ ভোগ बीदियू यरेथर उनग उथा ।। ইতি পাকড়ে ১৯৪ অধ্যাব:॥ # 💵 जना जार्या इतरा उट्टेम नायानात চ দোকো বথা। ভাত্তাবাপহারী ই মাতৃগামী ভবেন্নরঃ। তদ্মাদুস্তীর্য্য পাপী চ বিষ্ঠান্য জাবতে কৃনি: 11 वर्षकाहि मर्गाप जब शिदा ह ্পাত্তী। ভজে ভবেন্নহা পাপী क्वं दकाहि बह्मुका। श्रूणिनी खा-नि गार्छ ह क्सिक्षिय भूबन्सत्। गृथुः কোটি বহুসুদি শতক্ষানি জন্তর: ।। जाञ्जायाशहतनार मञ्जनानि भ्कद्रशाक्ष ॥ (या महाजिन मायक यविक्षी मुब्जाय है। म साउ ब्रही-भावक यायहन्त्र हिवाकस्त्रो ॥ मा ভূক কাযতে কর্ম কল্পকোটি শতৈ-রপি। অবশ্য নেব ভোক্তব্য কৃত কর্ম শুভাশুভ ॥ ইভি:বুদ্ধবৈবর্জে **जुक्** जिथएं ७७ व्यक्तायः ॥ # ॥ ভাতুরমেষণে ভাতা ন গছে । यथा । नात्रमः উवाह। (इ इर्ग) श्वा महावी -र्याः भुका यूषः कत्रियाथ। केन्रमा লক্ষ্যতে যব্বে৷ ভবতা: শ্রুযতা মিদং ll বালিশা বত যুয• যেনাস্য: জানী-**७ रिव ज़्दः । अन्न कक्व मध रेक्टव** कथः जुकाश विभुकाः॥ উष्क् ं छिर्याः

পথকৈব যদাপুতিছতা গতিঃ। তদা कमाष्ट्रता बाउ॰ जर्स पुक्काण वानि শা: 11 তে ত্ তদ্বচন শুদ্ধা পুৰাতাঃ সর্বতে। দিশ-। অদ্যাপি ন নিবর্ত্তরে नमूर्ष्ट्र इंबानगाः ॥ इर्ग्रायद्ये नार्डेयू एकः शाहा जनः। वित्रि ণ্যামথ পুঞাণা॰ সহসু মস্জদ্বিভূ:।। विवर्षविवव एउ ज् नवनाथाः भुकाः भूनः। भ्रांबिकः वहनः वुकामात्ररमेन भुरादिणाः॥ यान्यान्य मृह् एउ मर्द नम्रागार महामूनिः। जाजूनाः शर-ৰী চৈব গম্ভব্যানাক্ত সংশ্যঃ। জ্ঞাত্বা भुभागः भ्यास भुबाः मुक्तप्रस् भूनः । তেপি তেনৈব মার্গেন <u>পু</u>ষা ভাঃ সর্বতো দিশ•॥ অদ্যাগি ন নি বৰ্জন্ত সমুদ্ৰেভ্য ইবাপগাং। ভতঃ পুভৃতি বৈ ভাতা ভাতু রমেবণে দিজ ।। भुयारका नमाऽठि ज्या उन्नकार्यः বিজানভা। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ১ অ॰-(म >> व्यथ्ऽायः ॥ क ॥ जिल्ह । **ততः পু**ভ্তি न ভাতুः कनीयान् मार्ग মিছভি। অগ্ৰিন্ দুঃখ মাপ্লোভি তেন ত পরিবর্জবেৎ 🛭 ইতি মাৎ-স্যে ৫ অধ্যায: ॥ #।। জ্যেষ্ঠ ভ্রাত্রা-ए र्ख्यु॰ यथा। উপाध्यायः পिতा জ্যে ভাতা চৈব মহীপতি:। মা তুলঃ খশুর জাতা মাতামহ পিতা

নহৌ।। বন্ধু র্জ্যেষ্ট পিতৃব্যক্ষ পু• স্যেতে গুরুব: সৃতা:। ইতি কৌর্মে উপব্ৰিভাগে ১১ অধ্যাৰ: ॥ 🛊 ॥ বিভক্তানা তেষা ধ্**ৰ্য** বৃ**দ্ধি ৰ্যপা**। ব্যাস:। ভ্ৰাতৃণা জীবতো: পিৰো: সহবাসে। বিধীয়তে। তদভাবে বি-ভক্তানা প্ৰ্যা স্থেষা বিবৰ্জতে 11 ভুাতৃণা যন্ত নেষ্ঠে ধন শকঃ ম-কৰ্মণা। স নিভা জ্যঃ শ্বকাদ শাৎ किकिएरंबाशकीवन ॥ #।। (काई জুাতৃ পুশ·সা যথা। বিভ্**ষাদ্বেছতঃ** সর্বান্ জ্যেংहা ভ্রাতা বথা পিতা 🛭 ভাূতা শক্তঃ কনিষ্ঠো বা শক্ত্যপেক্ষা ब्राल शिक्तिः ॥ अद्भैशार्थियु कान्युक ख कार्या क्रकार जू यह । म जुनज्-ভি वृ र शीरवा गुामाहाहन वाहरेनः ॥ অন্যোন্য ভেদে। ভ্রাতৃণাঁ• সূহ্রদাশ বা বল্ধান্তক। ভবত্যা নন্দক্দেব দ্বি-यजाः नाज नः भरः ॥ 🗱 ॥ जुाजृ नः स्वातन्त्रावन्तरुकष् यथा। नात्रमः। বেবান্ত ন কৃতাঃ পিত্রা সংক্ষার বি-**५१: कग्**र क्वर्रा जावृधि स्ट-**বা॰ পৈতৃকাদে**ব তত্ত্বনাৎ ।। অবি-म्यात् . बर्थ याः नामूक्छ् वा भूनः। অवশ্य कार्यप्राः मःकाता ज्रा-ত্ভি: পূর্ব সংস্কৃতি: ।। # ।। বিভ-काना॰ তেষা॰ माकि दापि यथा।

े সাক্ষিত্ব পুণতিভাব্যঞ্চ দান পু হণ মেব চ। বিভক্তা ভাতরঃ স্ব-যুর্ত নাবিভক্তাঃ পরস্পার ।। ইতি দাযতত্ত্ব ।।

ভাতৃনঃ পু জী ভাত্রপত্য। তৎ পর্য্যায়: । ভাত্রীয়: ২। ইত্যমর: ॥ ভাত্ব্য: ১ ভাত্পুত্র: ৪। ইতি শন্রত্বাবলী ॥

ভুত্জায় জী ভাত্ভার্যা। তৎ পর্য্যায়ঃ। পুলাবভী ২। ইত্যমরঃ॥

ভাতৃপত্নী স্ত্রী ভাতৃ জাবা। ইতি
শবরত্বাবলী॥

ভাতৃপুত্র: পু• স্ত্রী ভাতৃন্ধ:। ভাইপো ইতি ভাষ।! ইতি শব্দরদাবলী।।

ভাত্ভণিনের জী ভাতরৌ। বিক্ চনান্তোয়•। ইত্যমরঃ।।

ভাত্ব্য: পু॰ ভাত্পুণ:॥ শত্ঃ। ইঙি হেমচন্দু:॥

ভূত্খশ্র: পু পতিজ্যেষ্ট্রান্তা। ভাশুর ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। খশুরকঃ ২।ইতি শব্রত্নাবলী।। ভূতিঃপর্যাঃ পিতা চ্যা - ঠু

ভারীয় পু ভাতৃপুর:। ইত্যার:॥ ভাতৃসমন্ধিনি বি ॥ ভাতঃ বি ভুন্যমুক্তঃ॥ ভাতিবিশিষ্টঃ । ভুনধাতো: কর্ত্তরি ক পুত্রবের নিয়ন: ।। ভুনণে ক্লী । যথা। ভুন্তি দেশ ননেক দুর্গবিষন পুরাপ্ত ন কিঞ্চিৎ ফল । ইতি বাভট পশু-পতিভ্যা ব্যাখ্যাত ।। ভুন্তঃ পু রাজধুজুর: ।। মতহতী। ইতি রাজনির্ঘটে: ।।

ভুনিঃ জী ভুমঃ। ইত্যমরঃ।। সা তু নরাণাণ ষষ্ঠনাসে জাযতে। যথা। ষাথাসিকে তু সংপ্রাপ্তে ভুান্তিঃ সং জাযতে যতঃ। ধাত্রাক্ষরাণি সৃষ্ঠা-নি পঞাক্টান্যতঃ পুরা॥ ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বং॥ ভুমণং। ইতিমেদিনী ॥ অনবস্থিতিঃ। ইতি বিখঃ।। ভুান্তিহরঃ পুণ মন্ত্রী। ইতিশন্দ্রীলা ।। ভুমনাশকে ত্রি॥

ভূমিক: পু॰ শৃগাল:॥ ধূর্ত্ত:॥ স্য্যা-বর্ত্ত:। পুস্তরভেদ:। চুম্বকপাতর ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী ॥ ভূম-জনকে ত্রি॥

ज्ञानतः क्री मध्। इंडि स्मिनी।।

उड़ ज्ञानतक्ष्य ज्ञा छ्गाः। शिहिन दः। कक्षदः। मध्तदः। मृथकाण्ड नाम् द्रुकः। इंडि त्राक्षनिर्धिः
।। ज्ञानि । शिह्निडा साम् ज्यखु। ज्ञानतः एक की खिंडः। इंडि
त्राक्षवद्याः। ज्ञानहः। कि स्थि,

ষ্ট্র: পুসিদ্ধে ভ্যঃ পুয়েভ্যেংলি-ভিশ্চিত ৷ নিৰ্মাল শ্লটিকাভ বত্ত অধু ব্লামর শৃত ।। ভ্রামর রক্তি खन्। ग्र बाए। कत्र एक। यापृशाक मिडिया कि विषया थि हिन हिन ্ল্'।।ইতি ভারপুকাশ: ॥ নৃত্যবি শেষঃ।তৎপর্য্যায়ঃ।রাসঃ২মওল-न्का ७ इल्लीम । ८ इंडि नद्भावा।। ভুনর সমৃদ্ধিনি তি। यथा। তদাহ॰ ্ভামর• ৰূপ• কৃত্বা স•থে/ৰ ষট্প मः। ইতি रिवीमाश्वारः॥ ভ্রামর: পু: পুত্তরভেদ:। চুৰক পাত র ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী ॥ ভানরী জী পার্বতী। ইতি ত্রিকাও-(भवः ॥ अभिष्ठ। यनाक्गाक रेज-(लारक) गरावाधाः कतिष्ठि। তদাহ ভূমের কপ ক্রা সংখ্য य ষট্পদ• ॥ ত্রৈলোক্যস্য হিতা-র্থায় ৰধিষ্যামি নহাসূর । ভ্রাম-ব্লীতি চ মা• লোকা স্তদা স্তোষ্যন্তি नर्बछः ॥ इंछि मार्क्ए वयुत्राए **(**म्बीमाशाखाः) नात्रायगीस्रजिः ॥ ज़ुम अडगर्) जान। इंडिकिति ভূাশ यष १ कन्नक्रमः ॥ य ७ ভাশ্যতে। ৰ ভাবভাশ্ । মনতে অনযোঞ্যজি হুম বিকল্পনেপি সপ্ত म खतान्याका श्लाका मनुद्राधाय । ণ জুশে বজুশে। টু জুশেথু: । ড জুশেতে। ভাসি দীন্তৌ। ইতি দুর্গাদাস: ॥

जुाड्रे॰ क्री जाकामः॥ जयतीयः।
इंडि मः क्रिश्वमात्रागातिवृद्धिः॥
जुाड्रेः श्रं यञ्ज कलाय हनमानिकः जुब्ह्याङ मः। जाकनात्थाला इंडि
थ्याङः। उद्भर्यप्रायः। जयतीयः २
। इंड्यान्यः॥

जुाम य ७) जामि। ইতি कवि-जुाम थ ७ १ है) कन्नकमः ॥ य ७ जुाम (७ । ७ जुाम ७ । भ जवजुा-मर्। १ (ज्यम वजारम । है जुाम थुः । ইতি দুর্গাদাসঃ॥

क्षाः भू जीत्यभवातिनर्वक्षू-क्षः। इष्टामतः॥

क्रमिं:) खी काशामिना जुनः की-क्रमिं) िंगाऽ। ইত্যমन्नः॥

ज्ञः ज्ञी म्युराम्क् जागः। ७९ भर्यरायः
 रिल्लिका २ नयत्नार्क् जागरत्नाम त्राकी २। ইতি রাজনির্ঘণ্টः।। তল্ল कृतः यथा। বিশালোমতা সুখিনি
 मतिष् विषम जुनः। धनी मीर्या मः
 मके जु र्वालिनम् स्व मुज्दः। ज्ञा एता नियम थण्न मंद्राम्ह विनव
 जुनः। ইতি গাক্ডে৬৬ অধ্যাযः॥
 क्षा अव यहेहका स्वर्ग जाक्का थ्य हक

দল পদ্মাকার । তন্ত হ ক বর্ণ দ্ব যুক্ত
দল পদ্মাকার । তন্মধ্যে মন ন্তি প্র
তি । যথা। আজ্ঞানামানুক্ত তিকি
নকর সদৃশা ধ্যান ধান প্রকাশা
হক্ষান্ত্যা বৈ কলাভ্যা প্রবিলা নিত বপুর্নেত্র পত্র স্মুভূ । তা মধ্যে হাকিনী সা শশিসম ধ্বলা বজু বট্ট দ্বানা বিদ্যা মুদ্য ক পাল ডম্ক জপবটী বিভুতী শু ক্ষান্তি ।। এতৎ পদ্মান্তর্রালে নি বসতি চ মন: সূক্ষ্মপ প্রসিক্ষ । ইতিশ্রিতত্ত্বিস্তামণোষপ্রপ্রকাশা।। ভুকান পু জীবেশধারিনর্ত্ত্বপূক্ষ য:। ইত্যমর:।। ভুকটিঃ স্ত্রী কোধাদিনা ভুবংকোটি-

ল্যং। ইত্যমর:॥
ভূণ কড আশা বিশঙ্কবো:। ইতি
কবিজ্লুজ্ম:॥ রেফ্যুক্ত বস্তম্বরী।
কড ভুণবতে ভূমুণ লোক: আশা

বিষয় করোতাত্যর্থ: । ইতি দুর্গা-দাস: ॥

ত্রণঃ পু॰ বালকঃ॥ জীগর্জঃ। ইত্য নরঃ॥ *।। অথ গর্জাধান দিন। রজাে দর্শনাবধি বোড শদিন প্র্যুক্তু শতু কালঃ। তত্রাদ্যা শিচ্ত স্থোনিশাঃ প রিত্যজ্য চতুর্দ্দশ্যপ্তমী অমাবাস্যা প্রিমা স্ব্যসংক্রান্তিঃ পর্বাণ্যতা- नि পরিত্যকরে স্থানার রাতির চল্টাদি শোভনে কালে ভার্য্যা মুপপাছে । র্থারাত্রির গমনে পুরো ভারে । অর্থারাত্রির গমনে কন্যা ভারে । অর্পুশস্ত নক্ষ্রানি পুর্যঃ হতা মৃগলিরা আদা পুনর্সঃ প্রাবাদা উত্তরাষাদা শুবণা প্রভা দুপদৃত্রভাদৃপত। তর নিষিদ্ধ নক্ষরাণি জ্যেষ্ঠালেবা ম্যা ম্লো রেবতী ক্তিকাখিনী উত্তর্ফল্লনী। তর তিথ্যঃ নন্দা ভদ্যঃ পুশস্তাঃ। রিকা নিষিদ্ধাঃ। তর রবি মক্ল বৃহস্পতি বারাঃ পুশস্তাঃ। ইতি সম্যপুদীপঃ।।

জুণহত্যা স্ত্রী গর্ভস্থবালকছনন ।
যথা। ত্রি বিবাহ কৃত থেন ন ক-রোতি চতুর্থক । স্বলানি পাত্তবেৎ
সপ্ত জুণহত্যা বুতঞ্চরেৎ। ইতু জুল জুণ্ড জুণ ।

ভূণহা নি গর্ভ হবালকহন্তা। ভূণ•
হিন্ত ইতি ভূণশদোপপদ হনধাতো প্রপৃত্যযেন নিম্নমঃ। ইতি সংকিপ্তসারব্যাকরণ• ॥ তস্য প্রাযকিন্ত• । তত্র পুণ্ডেন জ্ঞাতে পুণ্
বধ প্রাযশ্চিত্ত• জীত্বেন জ্ঞাতে জ্বীবধ প্রাযশ্চিত্ত•। অবিজ্ঞাতে তু পু
বধ প্রাযশ্চিত্ত নাহ ননুঃ। হত্বা গ-

ग

র্দ্তনিবজ্ঞাত মেতদেব বুতঞ্চরেই।। গর্ভহাচ যথা বর্ণ তথাত্রেয়ীনিস্ দনঃ॥ ইতি প্রায়শিক্তবিবেকঃ॥

ভুভন্ন: পু॰ ভুরংকোটিল্যে। যথা।
কুদা: সজাস নেতে বিজহত ইর
যো ভিন্নশক্তেভ সম্ভা যুদ্মদেহে যু
লজা॰ দংতি পর মনী শাযকা নি
স্লতন্ত: । সৌনিত্রে তিন্ত পাত্রণ ত্ব
মপি নহি ক্ষা॰ ননুহ॰ মেঘনাদঃ
কিঞ্চি ড্রেভন্স লীলা নিযমিত জল্বিং রাম মনেষ্যামি ।। ইতিকা
ব্যপুকাশ: ।।

ভুেন্ধ ঋ ড ভাসি। ইতি কবিকর জনঃ॥রেফযুক্তঃ। ঋ অবিভুেন্ধ। ড বিভেন্ধে। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

ভূবণ ক্লী চলন । ইতি ভূেষধাতো ভাবে ২নট্ পুত্যথেন নিম্নম ।। ভূক ঞ ভক্ষণে। ইতি কবিকল্পফনঃ ।। অন্তাস্থ তৃতীযোপধ:। ঞ ভূক তি ভূক্ষতে। ল স্থানে সপ্তমম্বর इैंडि पूर्गिनिष्दः। ইडि पूर्गामानः 🕦 🛝

মকার:। স ত পঞ্চবি শতিতম वाञ्चन वर्गः। यामाइ। इतन सान মোষ্টাইতি ব্যাকরণ।। অস্য স্বৰূ-भ ग्यथा। मकातः मृत् हाई वि स्यः शत्रम इ ७ ली। उक्ना मिठा महा-**म**• ठेजू र्द्धर्ग भुरायक ।। भक्षराय-भयः वर्गः भक्ष्णाग भयः मना। इंडि कामाधनु उत्तर।। # ।। यम् । ताथन পুকার:। উদ্ধাধ: ক্রমতো রেখা हजुरहानमयी मुखा। नात्रायल**म**-বিধ্য স্তাসু তিপ্ঠ নিত্যশ:।। মা-ৰা স্বৰ্গুলিনী ক্ৰেয়া ধ্যান নস্য পু-চক্ষ্যতে। ইতিবর্ণোদ্ধারতন্ত্রণাঞ্চা তস্য নামানি। মঃ কালী ক্লেশিতঃ কালো মহাকালো মহান্তকঃ ৷ বৈ-व्यार्थे। वज्या हन्द्री इतिः भूक्य द्रा-ककः ।। काल जिल्ला क्या तिथा विश्व-मा मीथ**म**•छकः। कठेत्र**कः** जुना मा-न लक्षी माञागुरक्षानी।। विषः শিবো মহাবীরঃ শশিপুভা জনে-यक्ते । भूगजः भियम् कपः मदीत्र। **व**ङ्गि अन्य ।। भाज्य भानिनी वि-न्तुः मुवना ভत्तरथा वियट । ०५ । ইতি তন্ত্ৰোক্ত বৰ্ণাভিধান•॥

भू॰ भिवः॥ हम्पुभाः॥ वुका।
इत्जाकात्रकायः॥ यमः॥ मअयः॥ विष॰॥ मधूमूरनः। ইতি
भिरिनी॥

মক ই ড ভূষে। গভৌ । ইতি । কবিকল্লফনঃ।। ই মক্ক্যতে। ড ম-ক্ষতে হারো মূন•। গত্যর্থো ২প্যয় মিতি রামঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

अक्तः भू• कलक्छविष्णवः। ইত্যমরः ।। নগর ইতি গঙ্গাযা বাহনত্বেন र्थाउः। ইতি সারসুন্দরী॥ यथा। সিত মকর নিষয়া শুভুবর্ণা জিনে ত্র। মিত্যাদি ষ্তৃত্ত গঙ্গা ধ্যানণা স চ কানদেবস্য ধুজচিক্ল•। মকর-धुक हे ज्याबरकाय मध्यना ८!। (सया-দি দ্বাদশরাশ্যন্তর্গত দশন রাশিং৷ **ভ**ংপর্যায়ঃ। আকোকে**রঃ ২। অ**-্স্যুক্ষত্থেবত। মৃগাস্য নকর: । ীতরবিটো াঃ শেষপাদ ত্র্য শু वना जन्मायः धिक्षायाः भूबीर्षाः এতমবপাদেন ভবতি। স চ পৃষ্ঠো-দ্যঃ ভ্নিরাশিঃ অর্শ্ক্করঃ দ किन पिक् म्।भी निक्वनवर्गः ककः ज्यहार्वा भी उनस्कारं श्राह्म স্তানঃ অলুস্ত্রীসঙ্গংবাতপুক্তিঃবৈ শাব্ৰৰ্ণঃ শুথাঞ্চ। অত্ত জাতস্য ফল। সদাননঃ। পিতৃ মাত্ ভক্তঃ

। শুবণা মকর জাতক্ষেৎ বহু বিবা-रः। ইতি काउकान्यः ॥ 🗱 ॥ व्यथ রবিযুক্ত মকর জাত ফল। সদাটনো নিত্রগণো বিপক্ষতা পুষাতি ন্ন थन वर्षिजः नार्थः। यमुख्यतिमा र्म-करताभगः मता भुम्जिकात्व म जू ভाग्रहीनः ॥ 🗱 ॥ ज्ञथ् हन्मुयुक्त म-কর জাত ফল•। কলিত শীতভযঃ কিল গীতবিত্তম ৰুবা সহিতো ম-मनाजूतः। निष्ठणलाख्य वृखिकतः পর• হিনকরে মকরে পুক্ষো ভ-(व८ ॥ 🛊 ॥ व्यथ नक्ष्व मुक्त मक्त জাত ক**ল**। পরাক্রম প্রাপ্ত বর: পু-जिक्ट: महत्रना शुक्षि वद्राक्**नः म**हार । শ্রিযা সমেতো মকরে মহীজে পু-সূতিকা**লে হ্বপাল**কক্ষ ॥ 🗱 ॥ অথ বুধগুহ ছিত মকর জাত কল• । রিপুভ্ষেন যুতঃ জমতি নরঃ মার বিহীন নরঃ পর কর্মঠঃ। মকরগে সতি শীতকরাত্মজে ব্যসনতঃ স ন-जः शृक्रा अत्र ॥ ॥ व्यथ छ-ৰাশ্ৰিত মকর জাত কল। নমনো-র্থ সি**ন্ধি মুগৈ**তি নরো বচসা মধি-পে মকরোপগতে। ভব যুক্ জন-তিঃ পর কর্মরতো বহুতোষ যুকেঃ মদনাপছতঃ।। #।। অথ শুকাশ্রিভ মকর জাত ফল•। অতি রতি র্জননে

वृक्षनत्न नृगाः वर्रयञ्यः कृष्णठा रङ् हिश्चया । ज्ञुश्चमूर्ज मृगद्गाणिः गाउ महा कविष्ठान विष्ठानिण मिठ र्जावट ॥ ॥ । व्यथ णनिगुरु श्चिज मक्त्र काठ कलः । मक्त्याभगजः थल् जानुमूञः कृभया महिर्जान्भ मान युजः। वद्ग गक्ष विज्यग ज्यिज ह गाज खक्गी द्रमगः भक्ष्कात्नवः ॥ (१ हेजि क्षिशेभुहीभः ॥

মকর দণ্ডল প্লী মকরা কৃতিকর্ণ ভূ বৃণ । যথা । বন্দালা নিবীতাকে। লসৎ প্রীবৎস কৌস্ত ভঃ । মহা-কিরীট কটকঃ সুরু রুমকর দণ্ডলঃ ।। ইতি প্রীভাগবতে ৬ ক্ষমে ৪ অধ্যা-যঃ ।। সুরুতী মকর দণ্ডলে যস্য সঃ । ইতি তট্টাকাযা গ্রীধরমানী ।। মকরকেতনঃ পুণ কন্দ্পঃ । ইতি

भीनत्क उन नय होकायाः जत्र उन

সঙ্কেতিত ।।

भकत्रधृकः भू॰ कामरिवः। इज्यातः

11 त्रमिन्तृत्विर्णयः। उम्या ना
भारतः हिन्दुारयः। उम्या कद्रग भू
काद्रा यथा। भनः मृत् वर्ग पनः
त्रस्मृ॰ भनाश्चेकः याउम गक्ककः
म्या भारतः मूकाभाम ख्य भूम्
देनः मदः विभक्ताथ स्नातिकान्तिः
१। उद् काह स्यु निह्छः मूगारह

म्टकर्न हे उपित्रम खर्मः। भरह ক্রমাণ্ট্রৌ সিকতাখ্য যন্ত্রে ততোরজঃ পল্লব রাগ রম্য ।৷ নিগৃহ্ হৈডল্য भनः भनानि छ्वादि कभूत दब खरेथव। बाजीकन भाषा भिन्तुः भूब्रः कस्त्रिकाया इंस् भाग वकः ॥ हिस्ताम् । १व॰ किथ्रा १ म । वा जूका शहरली पन मरावडी । 🐞। ज्ञा खगाः। मरनाचानानाः भूगना मञानाः गर्वाधिकष्ः सूथ्य-ত্যকাণ্ডে॥ শৃত যনীভূত নতীব দু **षः मृ**ष्टि माः भानि भन् ७कानि। भा সানি মিষ্টানি ভবন্তি পথ্য মানন্দ-দাঘীন্যপরাণি চাত্র ॥ বলী পলি ত নাশন ভনুভূতা ব্যস্তম্ভন: সমস্ত शह थ्खनः भुष्ट्र याग भक्षाननः। গৃহেষু রসরাড়য় ভরতি যস্য চ-त्नुप्रयः न भक्षभद्र प्रभित्नं म्गप् भाः ভবেষদ্পভः॥ ইন্দুপৃদ্ধ ववसः । উক্ত পরিনাণ লক্ষণ মুপলক্ষণ । দাক্ষিণাত্যাঃ শোণ কার্পাস পুত্র-पुर (नर गृह छि। भाग्ठा छाः निर्ख ७८ भूख्निगव यावमामु जुः मर्मयन्ति । উভয়ু**থর নি্**ল্লন্তে রদোষ:। তথৈ-বেতি नर्बवादयः। 🗱। শাজান্তরা দ্বিশেষে। লিখ্যতে । রতি কালে র-তান্তে চ পুনঃ সেব্যে রসোত্তনঃ।

সংগ্রনত পুত্রপুরসং। ইভ্যমরং॥ গ্রনপুরবৃক্ষং॥ কিঞ্জল্পে দ্লী। ইভি রাজনিঘণ্টং॥

हत्वनस्व जी खी शावेमाशृङ्गः। ই जि च प्रविक्ति । स्थ्विणिक्षा व ॥ च न्युट्य भू सकताकात्रसम्बद्धाः न्युप्यः भू सकताकात्रसम्बद्धाः न्युप्यः। ই जिस्सा जात्रजः॥ प्रकारकाः भ् समुद्धः। ই जिस्सा कमुरुः॥

सक्तकातः भू यस्श्रः। काँठीकरक इं जिला । इं जिला ।
कि ज्ञा । सन्द्रमण्डिक ।।
स्क क्ष्रः भू कामस्यः॥ समूनुः।
के ज्ञानभावः॥

मान्यालयः क्षाम् मृतः। ইতি जिकाश्व-्यस्यः। मक्ती क्षाम्य पृः। मक्ति। श्रमान्ति-

তি বুঙ্গেশভাগ **ইন প্রভাব নি**ন্ন**নো** ংখা বুলালী বুলা নক্ষেণ **হস্যা**ন্তা-

খিবির জঙ্গ বিষণ জঙ্গন বিষ । নমটি জী নুমটে । ইতি ভরত গ্ত

मझिं जी मृदुणामनः। ইতি जि-काल्यामः॥

मनदः भ्॰ समामन्थः॥ वत्रनः॥ काद्रकः॥ त्यामर्गः। ইতি হেম हन्दः॥

मक्तः शुः क्षी वन्ननः ॥ गूननः । इंडि मक्तकः वि

मल्डेकः भू॰ वनकाउनुमः। (मार्ठ हेि हिन्ही जावा। मूगानि हेिंठ वक्ष जावा। जेंद्र गर्यग्रायः। मयक्षः २ रनमूमः ० क्मी लकः ८ व्यम् छः ६ व्यमग्रमूमः ७ वल्ली मूमः १। व्यमग्र खनाः। क्षायदः। मध्यदः। तकः श्वित ज्ञ हार हत्रदः। भथ्यदः। क्वितात्रिदः। मर्वाप्तः। मञ्जी वाज्या गृशि क्य भिज्ञ द्या लघुः । वादि किम्प्यूनः भारक क्मि कृष्ण्य त्र नामनः॥ हेि जावभुकामः॥ , मक्षः भूः वीक्षिज्यः। मञ्जा वि। हेिंद्र भित्ती॥

मक्षकः भू॰ वनमृतः। ইতি ভরতः॥
मक्षकः भू॰ मूक्तकः। मञ्जीवृक्षः।
ইত্যমরটীকাষা॰ রমানাথঃ॥
मङ्ग ७ গতৌ। ইতি কবিকল্লজ্মঃ॥

(काभथ: । उ मक्ट । ইতি पूर्गाः माभः ॥

मक्रा श्र म्वातागिविष्मयः। यथा
। म् जाया क् हित्राविष्ठ म्वः मक्रा
भः ब्रिजः। यवकात्रः शित्व ब्रमः
स्वात्काम् कि व्याप्ति। विष्ठ व्याप्ति।
स्वः ॥

मकूल॰ क्ली भिनाष्ठज्। ইতি नदः त्रज्ञावनी॥

माह्यानः भू॰ थिति। यथा। माह्या ता वर्गत्वथा ह किनी कञ्ची थिते। । इंडिल्नेनवर्ग जिका अल्मेषः ॥ मथे हे मर्गरा। इंडि किविक्सक्तमः॥ हे मह्या है जि दूर्गा हा माः॥ मथे मर्गरा। है जिक्तिक्सक्तमः॥ मथे मर्गरा। है जिक्तिक्सक्तमः॥ मथे मर्गरा। है जिक्तिक्सक्तमः॥ मथे मर्गरा। है जिक्तिक्सक्तमः॥ मथे मर्गरा। है जिक्ता । सावा। दि मथे जां जो जो जायाः भि किन् जानाः भू॰ यक्ता प्रिः। है जिक्ती। भये । विका थर्मवः॥ मथाननः भू॰ यक्ता प्रिः। है जिक्ती। भक्ति । है जिक्ता थर्मवः॥ मक्ति । है जिक्ता थर्मवः॥

নথান ক্লী খান্যবীজভেদঃ। নাখানা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। পদ্ম-বীজাভ•২ পানীয়ফ**ল•৩।** মখান্ন•

পদ্মবীজস্য গুলৈ স্বল্যু বিনিদ্দি

শেশ ইতি ভাবপুকাশ:

মথাসুক্দ পুং শিবঃ। মথস্য দক্ষ

যজ্ঞস্য অসুক্শ শত্রু:। ইতি ক্মেচন্দুঃ।

मण हे नर्भाग हें कि किविक्स कमः।।
हे मक्राउ। हें जि पूर्णा पानः।।
मणयः भू॰ की कि एक माः। अथूनी(वहाता थ्राप्तमान्य प्रक्रिण जाताः।।
जल्म एक भू॰ जृत्ति। हे जि मक्त क्रान्ति।। वन्ती। हे जि एहम हम्मुः।।
मणया जी भिश्रमी। हे जि ब्रह्म मा।।।
मणया जी भिश्रमी। हे जि ब्रह्म मा।।।
मणया जी भिश्रमी। हे जि ब्रह्म मा।।।
मणया जी भिश्रमी। हे जि ता जन्म

নির্ঘটা । মগধদেশজাতে ত্রি ।।
মা
ত্র ব্রি ক্রাতা । জলান্তঃপুনিষ্টা ।
ডোবা ইতি ভাষা । মল্লখাতোঃ
কর্ত্তরিক পুত্যবেন নিম্নন্ধ: ।।
মধ ই ও কৈতবাষ্যপ্থিয়া: । ইতি

य इ ७ किउवाया प्रायाः। इ। उ कविक मुक्तमः।। किउव मिरु किउव किया अक्तकी उना पिः। इ मङ्गार्ड उ मङ्गार्ड अक्तिः किउवः। अद्यार्था गाँउ निम्हात्र स्नु कवाः। किउव सन् वर्षा (त्रवाय मिर्ड किटि । इंडि पूर्ण प्रायः।।

নষ ই ভূব। ইতি কবিকল্পদ্ধা।। ই মন্ত্ৰ্যতে। ইতি দুৰ্গাদাসঃ॥ म्बर्धः श्रृष् वी श्रित्रां । इंकि स्विती ।

।। (मण्डिरां वा । म जू मग्नामक ।। (महाना हान ।। भू म्विरां वा ।। हिंछ मप्ता हावनी ।। हिंछ मप्ता हावनी ।। व्यवी जी देनु ।। हिंछ मुप्तवाध वा कहा ।। व्यवी जूर हेनु । हेछ प्रतः।। किनाना । वा कहा हिंछ (हन हनु ।। व्यवी प्र हेन्द्र । हेछ (हन हनु ।। व्यवी प्र हो हेष्ठ व्यविष्य ।। होता की हेष्ठ व्यविष्य ।। हेला की हेष्ठ व्यविष्य ।। हेला की हेष्ठ व्यविष्य ।। हेला की हेष्ठ व्यविष्य ।।

্ব। 🖄 ঔষধবিশেষঃ। ইতিধরণিঃ ্ৰ শ্বিনাটিদসপ্তবিংশতি নক্ষত্ৰা-াগভ দশান নক্ষত্র। ততু লাস্থলা-কৃতি পঞ্তারাত্মক। গৃহাকৃতি াত কেচিৎ। অস্যাধিধাত্দেবতা ুগজুগণঃ। যথা। লাঙ্গলাকৃতিনি প্ৰকৃত্যাকে চাৰকেশি পিতৃভে ंभक्षा १८**७। नी व नी तक विनिन्ति** লোচাৰ বৃশ্চিকাদ্বিগলিত কলা শুক্ত 📳 ১। ৪০। ইতি কালিদাস ক্ষুভ রাইলগ্ন নিৰ্পণণ।। তত্ৰ জাত জ্ল_ে সঠারচিত্তঃ পিতৃ মাতৃ ভ 🌝 🐬 🏸 ভাব স্ট্রন্বন্ধবিদ্যঃ। চে-জ্ঞান ভাষা মহানহী স্যান্তিঃ খদার। তি বিনাশদক্ষা।। ইতিকো-<u>িনুদীপঃ।। মহা শব্দে । বহুবচনা ।</u>

ভো ইপি দৃশ্যতে। যথা। কৃষ্ণক্ষে

ন্যোদশ্যা নহা স্থিন্দু: করে রবি:।

যদাতদা গজ ছাযা শাজে প্লৈয়রবাল

প্রতে । অপিচানবোদকে নবামে

চ গৃহপুছাদনে তথা। পিতর: স্প্রতিথ্যাদিত ভুণা একবচনান্ত পুযোল্লা বিশ্যালা পি গুদানেন

জ্যেপ্রপ্রা বিনশ্যতি। ইতি মলান্দ্রি ।

মাসত ভুণা।

मधाजरयामभी जी मधानकवयुकः ভादुक्क बरगामनी। यथा। (भुोक्षेत्र-मृष्कुं क्षव्यामण्डा नचायूका-যা অনিষিদ্ধ য় কিঞ্চিদ্ধুবে গুণ শা क्षमात्माकः। महापि विधिवारकार ষু নক্ষত্র বিশিষ্ট শুডে:। ততক (कवन वर्यापनी (कवन मधा ना-দ্ধার্থবাদা অপি কুগু বিশিষ্ট বি-ধিপাপ্ত কর্মণো নিত্যত্ব বোধকা ন তু কেবল বিধ্যন্তর কল্পকা গৌর-বাৎ। তথা চ শঙ্গঃ। প্রৌধ্নসদ্যা মতীতাযা• নধা যুক্তা• ভ্ৰযোদশী• । পাুপ্ত শাুদ্ধ হি কর্ত্ব্য নধুনা-भागरमन ह ॥ मनुः । यट्किक्किन-धुना निमु॰ भुनन्ताबु बरगानमी॰। তদপ্যক্ষণ নেবস্যাদ্ব্যসূচ নথা সু চ।। বিজ্বর্মোত্তরে। প্রৌধপদ্য

মতীতাঘা তথা কৃষ্ণা ত্রযোদশী। এতা श माक्षकानान् देव निज्यानाः হ পুরাপতিঃ॥ **শাতাতপঃ। পিত** तः म्यराष्ट्राम मञ्जनाम् मधाम् ह। जः সাদদ্যাৎ সদোদ্মকো বিদ্বৎসূ বা শাণেযু চ।। অতান মাত্র শুতেঃ মনু वहरन यदकिष्य भुरुक भारत्वाक भाष**मः** क्वाजिम्यार्थः खन वित्मः (य क्व विष्णयः मुत्रामि कि नुत्राया । ব্যক্ত বিকৃধর্गোত্তরে। মঘা যুক্তা চ তত্রাপি শস্তা রাজ ক্রযোদশী। ত वाक्य जिंदर मुक्ति मधुना भाष সেন চ ।। তত্ৰ অখযুক্ কৃষ্পক্ষে । অত্র যৎ শাৃদ্ধ তন্মধ্যোগেন পায়-স যোগেন বা অক্ষয• ভবেৎ । অত **७व मन्**वहरन यट्किक्षिन्त्रधूना निः भू মিত্যনেন মধুমাত্র যুক্তব্ব মুক্ত•। অ-তোংত্র সূতরা॰ শ্দুস্যাধিকারঃ।ৠ। অত্ৰ গজ্যায়া যোগে ফলাতিশয:। তথা কৃত্যচিম্তামণৌ মৃতি: । কৃষ্ **शक्क बर्यारम्याः भयाश्विन्दृः** करत রবি:। যদা তদা গজছাযা শাুদ্ধে পু-ণ্যৈ রবাপ্যতে ॥ করে হস্তা নক্ষত্রে। কন্যা দশমাংশোপরি সপাদত্রযো वि मा में इंडि यावट् ॥ #॥ व्यवि छ-ক্তানানপ্যত্ৰ পৃথক্ শান্ধ মাবশ্যক• । यथा भाषि विद्यामर्गी मृजिः। विভ

ক্তা অবিভক্তাবা স্ব্যু: শুদ্ধ নদৈ বিক•। মঘাসুচ ততো **২ন্যত্র নাধি**: कातः भृषश्चिना ॥ चरिनविकः भू-**उ**राष्ट्रिकरकाष्ट्रिष्टे•। अन्रब कृष्ट-**পक्षा**रि नाधिकातः न निज्यादि-কার:।। সপি গুকরণান্তানি যানি শুাদ্ধাণিষোডশ। পৃথঙ্নৈব সুতাঃ अयुर्: भृषग् मुवरा याना कृति मि-ত্যবাপিনা সমুচিতস্যাপ্থণ্ দু-वामा भूभः मिश्वीकद्रभाषानी-তি বিশেষণান্তদুত্তর শান্ধানা প্-থক্ত্বমপি পুতীযতে।। # ॥ মঘা बर्यापनी निभिन्नक मास्त्र भूधः বতা পিণ্ডা ন দেযাঃ। ভৌজঙ্কীণ তিথি गामान्। यावहन्तुकं मक्रम॰ । তত্রাপি নহতীপুজা কর্ত্রব্যা পি-ত্ रेनवरछ।। अरक शिख भुनानक জ্যে**পু**ণ্ডী বিবর্জযেদিতি ুদেবী-भूतागए। (छोजकी भक्षमी। ह-न्मुकं मक्स्या श्यावाम्या । পिতृ-দৈৰতে থক্ষে মঘাযা।। শাভাত-পঃ। পিওনির্বাপরহিত যতু শাু-क्ष विधीयर्छ। यथा वाहन लाला। **২ত্র বিকিরস্তি ন** জুপ তে।। **অক্ষ**য্যুণ पिक्त विश्व क्षित्र मामनमा विश्व विश्व कि । ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ॥ ম্ঘাভব: পু॰ শুক্রগুহঃ।ইতিহেন

চল্:।। মহানক্ষরনাতে তে।। ভূলাভঃ পু শুকাচার্য্যঃ। ইতি বি-কাশাশ্যঃ।

হয়। জী ধান্য সং। ইতিনেদিনী।। হ্যোনী গ্রী ইন্যাণী। ইতি মুগবোধ ব্যাকরণং।।

মকুরঃ প্• মুসর**ঃ। ইত্যমরটীকাযা•** ভরতঃ।।

ন্তু । ত্রি সানকর্তা। ইতি মস্ত্রপাডোঃ কর্ত্তি ত্ন পুত্যথেন নিষ্ণ ।। মইং পুরু নৌকাশির:। ইতি হেম-চন্দু:।।

ক্রিন্তাদিত কুণ ॥ তদ্বতি ত্রি। ইত্যাদিত কুণ ॥ তদ্বতি ক্রিণ ৫ শুভণ ৬

ক্রেন্তা ক্রিন্তা ৪ ভবিকণ ৫ শুভণ ৬
ক্রেন্তা করিছে ৮ ভদুণ মন্বদ্বেশ
ক্রিন্তা মনু মনু মনু লক্ষণ হথা ।
ক্রিন্তা করিছে নিত্যা সর্বার্থ রক্ষণণ। ইতি
ক্রিন্তা করিছে নিত্যা সর্বার্থ রক্ষণণ। ইতি
ক্রিন্তা করিছে নিত্যা অপুশস্ত বিব্
ক্রিন্তা করিছে নিত্যা করিছে ক্রিন্তা করিছে নিত্যা করিছে করিছে নিত্যা করিছে করিছে নিত্যা করিছে করিছে নিত্যা করি

भूञ्च मृद्याक्क उराम ७ ।। १ वर गाजि न्दुः जूद्र गः ज्ञनम् गिः मूर्यनं कः। शर्यक পরিপত্বানি ফলানি বিবিধানি চ।। পতিপুএবতী• নারী• পুদীপ• মণি मुख्य । मुका अभूनमालाक म (म्रामा॰मक हन्तन ।। पर्ने किंजानि वख्निमक्लानि भूत्रा मूत्। मृगा-ল নসল চাস শব বানে শুভা-वरः ॥ त्राबरः मः भग्तकः थञ्जनकः শুক॰ পিক•। পারাবত• শন্ত্রচিল্ল• ठकवाक**क अञ्चल ।** क्षमात्रक मूत्र-ভী চমরী শেতচামর ॥ ধেনু বং-স পুযুক্তাঞ্চ পতাকাণ দক্ষিণে শুভাণ । नानाशुकात वाम्यक मृमाव मल-व ध्विः॥ इतिभद्दम् मक्वीउः घ-की मञ्जूदनि उथा । मृक्ष्मी मुद्धा **म** ज-গাম হর্ষেণ তাত মন্দির ।। ইতি বুন্দবৈবৰ্ত্তে গণপতিখণ্ডে কাৰ্ত্তিকা-भगन• नाम ४७ व्यव्धायः॥ **#**॥ व्य-शि छ। एएम वर्जात्युवक मक्लाई॰ म् जनुर । वाक्ष कलनुर व्या भूदा मक्ल मृहकः ॥ वात्म भवः शिवाः भूर्व**ञ्च अन्य वा**त्व ह। शिष्ठ পুএবতী সাধী দিব্যাভরণ ভূষি-जा ॥ मूझभू इक माना क थान। क थञ्जन॰ मूज॰। एकिए। कुलप्रीक বিপুঞ্চ ব্যভ গজ ॥ বৎস পুযুক্তা

(ध्रम्थ (थंजाथ त्राबह नकः। (वः শ্যাঞ্ পুস্লমালাঞ্ পতাকা দ্ধি পাযস।। মণি সুবর্ণ রজত মুক্তা मानिका मीञ्जिष्ठ । मानामा माने ह न्तनक माधीक पृठ मुखम ।। कृकमा त्र· कवा· वाजान् त्रिश्वामः मर्भग ख्या। বিচিত্রিত বিশালঞ্চ সুনীপ্তা পুতি भा ख्या ॥ क्रम॰ ममर्भ (मय॰ ७॰ शक्ष वकुः विलाहनः। भूक ग्रहिक मङ्गा-मः नागत्राकि र्विताकिरः ॥ मुक्तार পল পদাবন শায়চিল্লঞ্চ কোরক।। মার্জার• পর্বত• মেঘ• ময্র শুক সা-রসং॥ শহ্রকোকিল বাদ্যানাং ধনিং णुणाव मक्ल । विविधः क्षमकी ত হরিশবং জ্বধ্বনি ।। এব ভূত শুভ• দৃষ্টা শুত্রা পুহৃষ্ট মানসঃ। পুবি-বেশ হরি মৃত্বা পুণ্য বৃন্দাবন বন ॥ ইতি বুদ্ধবৈবর্ত্তে ত্রীকৃঞ্জন্মথণ্ডে १० ज्रापः ॥ 🛊 ॥ जन्धः। लात्कः श्चिन् सङ्गलान १८ छै। दु। ऋत्। (गो र्ल्-ভাশনঃ। হিরণ্য সর্পি রাদিভ্য আপো রাজা তথাষ্ট্রমঃ।। এতানি শতত॰ পশ্যেমমসে দুর্ঘরতঃ। পুদক্ষিণন্ত জ্বী ত তথাচাযু ৰ হী-या ।। पूर्वा मिश्र मिर्ल द्रायान क्या (धनु नव ना न्य छ न्यर्ग । म्रा ম্ব স্বাভিক মৃক্তানি লাজা মুধু বা

ন্ধণ কন্যকা শ্চা থেতানি পুত্লাণি তথা শমীঞ্চ হুতাশন চননে মর্ক্-বিম্বণ অখত্থ বৃক্ষঞ্জ সমালভেড ততশ্চ স্বৰ্য্যাদ্ধি জজাতি ধৰ্মাণ।।ইতি মংস্কু মহাতত্তে ৪০ পটলঃ ॥ #॥ वर्गाखाम मक्त भूगाखामा यथा। द्वाक्रगान् अन्त नः शृहि क्व वक्रु मनामयः। विनातः कमः नमाः गम् मुमारताग्र स्व जू ॥ इंडि কৌমে উপব্লিভাগে ১১ অধ্যায়:॥ মক্ল: পু॰ গুহবিশেষ:। তি পিযান यः। जङ्गातकः २ (छोभः ० द्र इः ८ বকঃ৫ মহীসুতঃ ৬ বর্ষার্চিঃ ৭ লো-হিতাক: ৮থোনুথ: ১ ঝণান্তক: ১০। ইতি শব্র রাবলী।। আরঃ >> क्त्रम्क् >२ जावत्नयः >०। ইতি জ্যোতিষতত্ত্ব ৷৷ স চ রক্ত-शोत निर्मुख वर्गः । मक्किनिक् পুৰুষ ক্ষত্ৰিয়জাতি সামবেদ ত মোগুণ তিব্রুরস মেষ্রা**শি পু**বা-লাবন্তিদেশানামধিপতিঃ ৷ মেষ[্] বাহনঃ। চতুরঙ্গুলপুমাণঃ। আর-ক্ত মাল্যবসনঃ । ভরদ্বাজমুনি স-ন্তান্: । চতু ভুজি:। শক্তি বরাভব गरावाती। मूर्गान्मियः। यम्।-ধিদেবতা কার্ত্তিকেয়: । পুত্যধিদে: বতা পৃথিবী। সতু পিত্ত পুক্ডিঃ।

वृता। क्तः। वनहात्री। मध्राङ्काल ্পুৰল:। গৈরিকাদিধাত্রামী। চ ভর্যানা॰ পূভ:। চতুষোণাক্তি:। जुनर्वहातानीयाः सामी । जुनिउ ज् भिष्ठाती। किक्षिपत्रशीनः । करूतमः প্রিয়ঃ। ভাগুবর্ণ রক্তদুব্যমানী চ। ইতি গুহ্যাগতত্ত্ব লবুজাতকাদযঃ ॥#। অস্যো**ংপত্তি র্যথা। উপেন্দ** বীকাৎ পুথুৱান্ত **নক্লঃ সমজায়ত**। বসুধ্বরংখা বলবান্ তত্মে ব্যাখ্যাতু अहिनि। देने कि ब्याह। छिलमु बन প মালোক্য কানার্ভাচ বসুন্ধরা। বিধাৰ জুলাই বে**শ নক্ষতাপৌচবৌ**-বুরা ৷ প্রফিডা **তস্য তল্পেচ সহসা** সমপ্রিতা। সুরম্যাণ মাল্ডী মা ाः महो उरेम दहानना ॥ উপেन्द्रु ं স্তন্মন। জ্ঞারা কামী মন্মপ পীডিতঃ । नाना शुकाब मृक्षांब काता ह उसा गर्।। उपक् नक्रगामका गृही पु। ল সতী তদ।। মৃতেব নিদ্রিতা বাং को वी गंशकारन इति कृष्ठ॥ विश्व छव वर्भ जगाम भूकरवा छमः। ंबंसी अधि ग्रष्ट् डी (वृष्यामान जान म्द्रन ।। मा 5 शर्मह वृह्यक कथरा-मान ज्ला जा । वीरो ने महत्र क िल के कि का ह पूर्वना ॥ भूवान স্থানৰে **জ্ঞাৰী**্যন্যাসণচকার সা

। তেন পুবালবর্ণ চ জনারঃ সমজা-যত।। তেজসা সূর্ব্য সদৃশো নারাযণ সুতো মহান্। ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তপুরা-ণ ।। 🛊 ॥ অপিচ। ততো হস্কারক লোকো হি বসত্যত্র মহীসূতঃ। উৎ-পত্তিঞ্চাস্য বক্ষ্যানি যথায় ভ্সুতো **২**ভব< ।। পুরা হি ভুনতো বিঞোঃ (स्वर्गिन्तू: পপाउ হ। गङा॰ खउः স্বনারে। ংসৌলোহিতাকে। মহীত লাথা জাতঃ স্নেহেন মেদিন্যা বৃদ্ধিতঃ পৃথিবীপতে। তপসারাধ্য বৃহ্মাণ পুহত্ব মুপসেদিবান্।। ইতি পাদ্মে त्रर्भथए७ >> ञ्रशायः ।। 🗱 ।। ञ्रशतः ঞ্চ। পুরা দক্ষ বিনাশায় স্পতিস্য ত্রিশূলিনঃ। অপতন্তীম বক্তুস্য স্বে-निवन्तू र्वनारेजः॥ ভिज्ञा **সমস্ত পা**-जानानम्ह अ**अ भाग**तान्। यान-कवकु नयमा जुनब्बुनन शिष्गः ॥ বীরভদু ইতি খ্যাতঃ করপাদাযুকৈ যু তিঃ। কৃষ্বা স যজ্ঞ মথন পুন ভূ ত-ज मसुदः ॥ जिज्ञगनिष्यं इनु यः भि বেন বিনিবারিতঃ। কৃত॰ ত্ব্যা বীর-**जम्** मक्षयञ्ज विनामन ॥ इषानीः মল মেতেন লোক দাছেন কর্মণা 1 শান্তি পুদানাৎ সর্বেষা পুহাণাণ পুথনো ভব।। পুকিষ্যন্তি জনাঃ প্-জা॰ করিব্যন্তি নত॰ নম। অকারক

ইতি খ্যাতি গনিষ্যতি ধ্রাত্মজ॥ **म्बर्गाक विजीयक उर क्र अ॰ ज** বিষ্যতি ৷ যে চ ত্বাণ পুল্লযিষ্যন্তি চ जूर्था । दफ्तिन नदाः ॥ क्रम मादाः গ্য নৈ মুৰ্য্য তেম্বনন্ত ভবিষ্যতি। এব মুক্ত স্তদা শান্তি মগমৎকানৰ श धृक् ॥ भ•का उ उ एक गामुक न् गुः হত্ত্ব মগমৎ পূনঃ। ইতি মৎস্যপু-রাণে অস্থারক বুত্ত নান ৬৮ অধ্যা-यः ॥ 🗱 ॥ कन्न(ज्ञार अन्नकामुत्रवर्थः কালে তস্যোৎপত্তি র্যথা। যো ভূ म्याः न्या छित्र (स्वतिन्तुः भिवाः ননাৎ। তমাদস্বার পূঞ্জাভো বাল-কঃ সম জায়ত ৷৷ স বাল স্থাতে৷ হত্যর্থণ পপৌ কধির মান্ধক । ক ন্যাচোৎস্বেদ সংজাতা সাস্থি লিলি হে १ জ্তা॥ তত স্তা মাহ বালার্ক পুভা ভৈরব মৃর্ত্তিমান্। শঙ্করো ব রদে। লোক শ্রেযার্থায় বচে। মহৎ ॥ ত্বা প্রবিষ্যন্তি সুরা অব্যঃ পিতর खथा। यक्क विम्राध्वारेक्टव मानवाः শ্চ শৃভক্রি॥ ত্বা॰ স্থোষ্যন্তি সদা (मिव विन शृह्माएकरेत्रः दरेत्रः। চর্চিকেতি শুভ নাম যমাজধির চ ৰ্হিতা ॥ ইত্যেব মুক্তা বরদেন চহিকা। ভূতানুযাত৷ হরিচর্ম বাসিনী , মহী•়া खमसाबिष्ठात मुन्दती स्व॰ गठा।

रिक्न मार्। मूखमः ॥ उन्।। गजा-या॰ वत्रमः अजग्र शामावतः अर्व व রোভন যতঃ। গুহাধিপত্য জগতঃ শু ভাশুভ• ভবিষ্যতি ত্বদ্বশগ• মহা-जान्।। ইতি বামনপুরাণে ৬৭ অধ্যা-यः॥ 🗱 ॥ व्यम् (छ। वः यथा। ध्रनी গৰ্ম্ভ স•ভূত• বিদ্যুৎ পুঞ্জ সমপুভ• । श्रमात्र मिकि इसक (वाहिजाञ्च ননাম্যহ• ৷৷ ইতি ব্যাসোক্ত নবগুছ **ভোত্রান্তর্গত•।। #।। খণপরিশোধ-**नार्थ (छाज॰ यथा। नक्ष्तां कृतिनु-ত্রশ্চ খণহন্তা ধনপুদঃ। স্থিরাসনো **भश्**कायः मर्बक्षाविद्याषकः॥द्या-হিতো লোহিতাক্ষ সান্গানা কৃপাকর:। ধ্রাত্মল: স্কো ভৌমো ভূমিজো ভূমিনন্দনঃ ৷৷ অঙ্গারকো যমকৈব সর্বাগাপহারকঃ। বৃষ্টি-कर्ना हर्ना ह मर्नकाम कल्पुमः॥ এতানি স্বজনামানি প্রাত ৰূত্যায यः পঠে । ঋণ ন জাযতে তস্য ধননাপোতি পৃষ্ধল ।। রক্ত পুষ্ণৈ চ गरिक्ष में भूभ भीभाषि छि खेथा। म-क्वः পृष्ठायुक्तकः। भक्षा १३नि नर्बम्।। अगुद्रशः भुकर्त्वता यन् त्तन नर्गो वृर्धः। (शृक्ष्यद्वानं शारत-ৰ ঋণ তস্য বিনশ্যতি ॥ মঙ্গলায नमञ्जु नमस्य विश्वादिता। भूय

পৌ প্রপূর্ণতে চ নক্লায নমোন-मः ॥ कार्य द्र भुभाषात्र नया 🖟 क 🖓 বিভো। এতৎ ক্ত্বা न १ 🔻 😕 🐃 रुष ह्या धनी ज्या हित्त एक्ट्रियान ॥ 🗱 ॥ मक्त म । को क्या कनः यथा। **উगुः भु**-🌼 - 🗽 िर्भावमञ्जी त्रर्गानुया 🤏 👫 ः अस्थायः। अङ्गान्जिः णू র*াণ*ুণেত**্ত জন্ম**রবারে পুভবো 🦚 🌣 ইডিকোণ্ঠীপুদীপ: ॥ 🥶 • 🕾 द्वी मङ्गन हुन्छ। यथा ্রুরাণে । বৈসা **ললিত** अस्वी सङ्ग्वा जिका। वः 🖅 🚜 হস্তা চ দ্বিভূজা গৌর দে 🎨 🎺 শ্বন্ধাসনস্থ। চ রত্ত্ব 🐣 💎 🔠 রক্তকৌষেয় বন্ধা চ 🕖 🍕 ञानना ॥ नवरयोवन म व्यक्षि विविज्ञुन। उ **िक ३॰ मख॰ य८ পূ**र्वस्त्रुक েশ্বনস্যাস্থ তজ্জেঞ্ ि पून्**जारयट् । এक मक्क**र ি ৰূপ•। অপ্তম্যাঞ্চ নব. ा अर अूका कार्यता विवृद्धाय ॥ श-जिनाया वा शहे अञ्चलह-ि वे । यह श्रृज्ञत्यक्तिमनितम् ্ৰাক্তিঃ শুভাগাসতত সা-कः मानि काम मिष्ठे गवान्नुयाए॥ । #। मक्नवात क्कार्रेनी हरूप्रत्मे तिहर भूगा जता जवि । यथा
। भरिनम्द्रमा वात्त्र व्याः विकार व्याः विकार व्याः विकार व्याः विकार विकार व्याः वात्त्र व्याः विकार व्याः विकार व्याः वात्त्र व्याः वात्र व्याः वात्त्र व्याः वात्त्र वात्त्र व्याः वात्त्र वात्त्य वात्त्र वात्त्र वात्त्र वात्त्र वात्त्य वात्त्य वात्त्य वात्त्र वात्त्र वात्त्य वात्त्य वा

मक्त विशे जी पूर्ण। यथा। नातायग उताव। कथिङ यशुभाधानः
युक्तभू यथागनः। प्रिती मक्त वहः
श्री या जराधानः निमानय॥ छमहाः भूजारिकः मर्बः धर्म तर्जुन
यू भूङः। भुष्ठि मस्य तर्जुन
यू भुङः। भुष्ठि मस्य तर्जुन
यू भुङः। भुष्ठि मस्य तर्जुन
वर्ज्ञ वश्री कन्यात्मक् ॥ प्रकाशः
वर्ज्ञ वश्री कन्यात्मक् व मक्तः।
मक्त व्यव या प्रका मा व मक्त वा ।
मक्त व्यव या प्रका मा व मक्त वा ।
मक्त व्यव या प्रका मा व मक्त वा ।
स्वा भूषा भूजायाः वर्ज्ञ व छी मक्त विश मा वा मक्त विश्वा ॥ मन्
व्या मध्यः भुषः मक्षत्वीभ ध्वाभजिः। जम् भूजाङीक्षेत्पती रजन
मक्त विष्ठा ॥ मृर्जिः छरन मा

मूर्ना मूलभुक् छ तीयती। क्लाक ॥ পা প্তিপুৰ্জ্ঞা যোষিতা মিষ্টদে-বতা।। পুথমে প্রিতা সাচ শ-इरति भूतः भूता । जिभूतमा वर्ष ঘোরে বিফুনা প্রেরিভেন চ ॥ ব্রহ্মন্ दुक्ताशामामा पूर्वभुष्ट्रन गद्धि । আকাশাৎ পতিতে যানে দৈত্যেন পাতিতে ক্ষা।। বুন্দবিফুপদিইশ্চ मूर्गा॰ जूडाव शक्तः। ना व नक्त চণ্ডী চ বভূব ৰূপভেদত:।। উবাচ পুরতঃ শস্তে। র্ভশ নান্তীতি তে বি-छा। छगवान् व्यक्षभण्ड मर्द्धभण्ड বভ্বহ।। যুদ্ধ শক্তি ন্বৰপাহ ত বিষ্যানি তদাজ্ঞবা। ম্বা ৎমুনা চ **रुद्रिश महारयन वृषध्रुक ॥ क्रिस्टिन छाक भ**ज्क **मृ**जागाः सम्वाजदः। ইত্যুক্তান্তৰ্হিতা দেবী শস্তো: শক্তি ৰ্বভূব সা।। বিষ্ণু দক্তেন শক্তেণ জঘা ন তম্মাপতিঃ । মুনীন্দু পজিতে रिहारका मर्स (नवा मर्स्यः ॥ जुरूदः ৃশঙ্করণ দেবণ ভক্তি ন্মাত্মকন্ধরা:। जिन्द्राः भित्रति भारताम्य शुञ्जवृहि वं ्ভ्व ह ॥ वुका दिशु ह मखरक्षे एरही ত্যৈ শুভাশিষ। বুক্ষ বিষ্পদিষ্ঠক সুমাতः गहरः मृहिः॥ প्रवेगनाम न्छाः शक्तिः (मवीः स**ङ्गा**ठ **७काः** । शाम्यार्यप्रकमन्तियक विविक्ति विवि-

रिथ त्रिशि ॥ श्रृञ्ज हन्त्व रेनरवरेषः इ ৰ্ভক্ত্যা নানা বিধৈ ম'নে । ছাগৈ র্মে-বৈশ্চ মহিবৈ গ ৈও মাগাভিভি স্তথ: ॥ वद्यानकात गारेनाम भागरेनः পিষ্টকৈ রপি। মধুভিশ্চ সুধাভিশ্চ भरेकु नीनाविरेषः करेकः ॥ अस्रीरेजः नंखं रेन वारिना बर्नितर कृष्य कीर्ख-বৈঃ। ধ্যাত্রা মধ্যন্দিনোক্তেন ধ্যানে-न ভক্তি পূৰ্বক ।। দদৌ দুব্যাণি মৃ-लन मरखरेग्द ह नात्रम । अङ्गी श्री ক্লী॰ সৰ্ব প্জ্যে দেবি মঙ্গল চণ্ডিকে। ङ्• ङ्• कहे बाह्हएअत्रकालाऽकवि•-भाक्तरता सनुः। भृजाः कन्न उक्टेम्हवः खळाना॰ मर्मामपः ॥ **मणाक् ज**-পেৰৈব মন্ত্ৰ সিদ্ধি ৰ্ভবেষ্ণাণ। মক্ত সিজ্ব ভবেদ্মস্য স বিফু: সর্বকামদঃ ॥ श्रानक न्या । व्यान (वासीकः नर्व नम्प उ॰। (एवी॰ (वाउभ वर्षी बा॰ **भ**ष्य गृह्यि योवनाः ॥ मर्वेक्श গুণাট্যাঞ্চ কোমলাঙ্গী । মনোহরা ।। খেত চম্পক বৰ্ণাভা চন্দুকোটি সম্ भुजा॰ ॥ वहि मूका॰ म्काशाना॰ वज ভূষণ ভূষিতা। বিভূতী কবরী ভা-त• महिकामान) ज्**षिउ• ॥** दिखा-हो मुन्जी मुद्धाः मथ्य भग्न नि-ভাননাণ। ইবজাস্য পুসন্নাস্যাণ 📜 नीतारभवताहनाः॥ कगकावीक

शाबीक मार्बछाः नर्व मम्मानाः । ॥ স্পার সাগরে ঘোরে পোতকপা ব্রুণ ভ্রুছে 🗄 দেব্যাশ্চ ধ্যান নিত্যে 🤻 💌 🕾 শুৰ্তা: মূনে। পুৰাতা: সভ্টিত্ত পে**ন তুষ্টাব শন্ধর: ॥** . क्रिलेश्च किन्छ। त्रक तक जगन्माः ও 🚈 । মুখ বচপ্তিকে । হারিকে शिक्षा करिन **इर्स मुक्ता**शिक इ. एक अक्ट म्ह्या व क्र व क्र मञ्जाव िक्षक । भूगाल अवस्य एक व भूजी अक्टिक ।। मक्टल मक्नार्ट ह १८८ म्हिस **मङ्ग्या मङा॰ मङ्** खन हार्ड पर्स्वया॰ **भक्रणानरय ॥** 🎐 াবারে চ মঙ্গলাভীষ্ট ে পুরু ম**ক্লভ্পস্য মনু** ব'ল বচ্চাইই'॥ **নঙ্গলাধিষ্ঠাতৃ দে**-१८ - ४ तस्यक् **गक्ता भः भाद्र भ**-🕮 👓 🕾 🕾 भाक्ष मक्तरायिनि ॥ ুংক ন 🕬 নাধারে পারে চ সর্ব-े जिस्त्र निवास के भूका 🗝 📉 ॥ ভোত্রেনানেন শ-नङ्गा नङ्गा । भूजि ক্ষা ক্রাপ্ত প্রাণ ক্রা গভঃ শিবঃ ं अवत्याः म्**त्रने छोळे तः म्**लाः ं असि है । उसक्ष । जार व े व्यवस्मक्षाः॥ भूषाम भू-

তীয়ে পূজিতা দেবী মহলেন গুছেণ চ।। ভৃতীযে পুৰিত। ভদা নকলেন ন্পেণচাচতুর্থে মঙ্গলে বারে সুন্দ রীভিক্ত পুজিতা॥ মঙ্গলে মঙ্গলা। कार्ड्स न देव मक्ल हिला। श्री তা পুতিবিষেয়ু বিষেশ পুজিতা সদায় ততঃ সৰ্বত্ত সংগ্ৰহা সাব-ভূব সুরেখরী। দেবাদিভিক্ষ সুনি-ভি মনুভি মানবৈ মুনে॥ বদ্ধতে ७८ भूध भोखा महत्वक मित **मित्न । इंछि वुक्तरेववर्ख महा**नू-রাণে পুকৃতিখণ্ডে নারায়ণ নার-मीय मञ्जाविकाशायान उट স্তোত্র কথন বাম ৪১ অধ্যায়ঃ ৷৷ नक्वहायः शुः श्रक्षत्कः। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ !! भक्षार्थकः भुः वन्ती। इं**डि ए**हमः ठन्मुः ॥ मक्तपुरा जी रुद्धि। इंडि क চিৎ।। নক্লদাতরি তি।। यक्षा जी भार्तजी।। मूक्रम्बा।। পতিবুতা। ইতি শবর্রাবলী॥ করঞ্জভেদঃ। ইতি শব্চন্দ্রিকা।। বৃত্ত্যার্হমাত্বিশেষ:। ইতি ছেন-वन्तुः ॥ इतिषा ॥ नीयमूर्वा । इंडि রাজনিঘণ্টঃ ॥ ा भिरवन मर्बन्यना । वि. मस्नाधक क्री अथक्ठ जूडेगार्ड गर्डाः

खक्विणवः। यथा। नङ्गा मिल कागका मक्नाखंक वाहकाः। न-क्ना छक् भिनित्रा गक्काछा या-गवाहिका॥ ইতি त्रांकिनचंकः॥ मिला क्री मिथा ইতি मिनिनी॥ हम्तनः॥ मक्नाछक्॥ धर्नः॥ मिनावः। ইতি त्रांकिनचंकः॥ मिकावः। ইতি त्रांकिनचंकः॥ मिकावः। ইতি त्रांकिनचंकः॥ । क्रितः। ইতি हमहन्मुः॥ माधः । ইতি ধরণিः॥

मंद्रनाः भू जायगाना।। अथयः॥ विदः॥ मम्द्रकः। ইতি मिन्नि॥ जीवंकः॥ नादिक्तनः॥ किनयः॥ द्रीठांकद्रक्षः। ইতি द्राजनिर्धकः॥ मद्रनाऽकः भ् नम्द्रः। ইত্যাदः॥ मद्रनाऽसम्मा जी मङ्गभूष्री। ইতি ভাবপুকामः॥

मक्नागायया जी कीवडी। ইতি कहारतः॥

भक्षा जी मिल्लिका शक्ष गृज्ञा छक।
इंडा नद्राः ॥ मिनी ॥ व्यवः शृज्ञी ॥
मिनी ॥ मृङ्गविष्ठा ॥ द्राष्ट्रना । इंडि
द्रिति नि । स्विष्ट्र ॥ मह्मि ॥ क्रिक्ष ॥ विष्ठा ॥ हिन् ॥ हिन ॥ हिन ॥ हिन ॥ हिड वाकि निर्यन्ते ॥ मृन् । इंडि
वेज निर्यन्ते ॥ मृन् । इंडि
वेज निर्यन्ते ॥ मृन् । इंडि

नि ह (मुर्छ। निया (स्वी मम्स्ड इस्त्र । ভক্তोन। मार्खिइति मझन्ता एउन ना म्या ॥ इंडि (स्वी भूतात ४६ व्य थ्यायः॥

मिनी जी मोका। ইতি एमहन्दुः॥ मङ्ग्रा॰ क्री कड्यांजानः। ইতি हाताः वंनी॥

মদ্রু 'ব্য জন্ত । ইত্যমন্ত ॥ ভূশার্থ• । ইতি মেদিনী ॥

মন্ত্রণ প্লী জন্তাত্রাণ । ইতি ত্রিকাণ্ড শৈব:।।

নচ ইউ উদ্বাধ গৃত্যদ্বা ভাঃসু। ইতি কবিকল্পজন: ।। ই নঞ্চতে। ড ন-ক্ষতে । উদ্বাধ উদ্বীভাব: । ইতি দুর্গাদাস: ।।

मह ए ह कन्नत्।। म्हिं ॥ भारित ।
इंडि कविकन्नक्रमः ॥ कन्नन मिडि
कन्नः करताजीडि क्षि क्षेत्रः ह्गीकर्तन मिडार्थः । ए महत्व उख्नाः
भिना । हकाता महि ए । इंडि
मूर्गामामः ॥

महिका खी भूमछ । इन्जान द्वा । । । इन्जान द्वा । विकास विकास । । इन्जि मद्भ द्वा । विकास विकास ।

নজ্জকৃৎ ক্লী অস্থি।ইতি হেশচন্দুঃ।। মজ্জন• ক্লী সান•।ইতি জটাধ্রঃ 🎉 মজ্জ।ইতি শব্দচন্দিকা।। মঙ্জসমুদ্ভব• দ্বী শ্কে। ইতি হেন ठन्तुः ॥ मुख्ये पू॰ वृक्तारिक खन दिव जागः। সার ইতি খ্যাতঃ। ইত্যমর ভর (जो।। कन भक्त खरना यथा। यन। যস্য ফলসেংহ বীর্য্য ভবতি যাদৃ শং তৃষ্য তইম্যুব বীর্য্যেণ মজ্জান মভিনিদিশেশ। ইতি রাজবল্পভঃ ॥ अ ॥ जाङ् मध्इल्न्इविष्णवः ्र 🥫 भर्यतयः। (के शिकः २ शुकः ক্রঃশ অভি**সেহঃ ৪ অভিসম্ভবঃ৫** ে উড়ি কেম্য**নুর: ।। অস্থিসার: ৬** তিজং ৰ বীজ**ে৮ অস্থিজং ৯ জীবদং** ৯০ কেন্সার: ১১। ইতি রাজ-निवकः । अथ मङ्ज स्क्रमार्। অহি বং সাগ্রনাপক্ব তস্য সারো मुर्व धनः । यः स्वरव भृषगु जः স মজেড্যভিধীয়তে॥ অথ মজ कान नाह। इनाक्त्रि विल्यायन মদল বুভান্তরে স্থিতঃ। ইতি ভাব-भुक्ताला अम्। थनाः । वन मूक अभ भूष भारता मञ्ज विवर्षनः। मञ्जा विरेनियं एडा १ द्या १ वनक्ट <u> श्रह्माई उः॥ देखि हेन्नकः॥ मञ्जा</u> म्बर् भावरत्ताति। यथा । मनाङ्मी ाहिरे खुं जि मून्जः। हरामवाह !!

ত্রিকাণ্ডে ভাগুরিঃ।। শক্তাবদার বর্মজ্ঞা মাশসসারাছিসার্থা রি-তি। ইত্যমর টাকাযাণ ভরতঃ।। মজ্জা জ্রী অছিসারঃ। ইত্যমরটী কাষাণ ভরতঃ।। অস্যাগুণাঃ। বাত নাশিস্বং। বল পিত্ত কফ পুদত্বং। মাণস তুল্য গন্ধ কপস্ক্ষ।। অন্ত্রী-রমহিশ মজ্জা গুণাঃ। মন্ত্রসত্বং। বৃংহণত্বং। বল্যত্বঞ্চ।। মজ্জসত্ব গুণো যথা। শৈত্যং। উফত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্পতঃ।।

मङ्जाबः पू॰ ज्ञिबस्युष्ट्यः। इंडि त्राबनिर्वण्टः॥

মক্জারসঃ পু• শুক•। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

मङ्जानाद्र॰ द्वी काठीकनः। ইঙি दाजनिर्वण्टः॥

मञ्जूषा जी मञ्जूषा। ইত্যমরটীকা-या রাযমুক্ট:।।

मक्त प्रजास हिन्दा हैन्जि जात निक्ष प्रणास । यह मुक्त स्था । यह मुक्त स्था । यह स्था

ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

नक्षकानुगः श्रुः मि द्वाः। इति द्राकः निर्विषः॥

मक्ष्मख्भः भूः भग्रत्नकार्थक्रितः। हैः हेडि ভाषा। उद्भर्गायः। व-पुकः२। ইडि हात्रावनी ॥

মঞ্জর ক্লী, মুক্তা।। তিলকবৃক্ষ:।। বল্লী। ইতি শব্যত্তাবলী।।

मञ्जूतिः खी वज्ञतिः। ইত্যমরः॥ বল্লতে বৃণোতি তৰু• বল্লরি:বলমি বল্লড ভ্তৌ নান্নীতি অরি:। মঞ্জু মনোজ্ঞতা রাতীতি মঞ্জরিঃ প্ र्खि फि: मनीया दिवा मूका द्रमा अ-কার: পাছোণাদীতি ইপি মঞ্জরী বল্লরী চ। বল্লরি র্মঞ্জরি র্ঘণোরি जिमापिकः॥ विस मूक्षि भाव। মঞ্জরি মঞ্জরী মঞ্জি মঞ্জর • তিযু वल्ल द्री। वल्ल द्रश्व विष् विष् क विः প धना निष्ठि र पुष्ठन्यः॥ न তামাত্রে হলি বল্পরিঃ। অতোবা ভ্ৰল্লবীতি পুষোগ ইতি মুব্দ টাদয়ঃ। বল্লরী মঞ্জর্য্যে র্ভেদনপ্যাহু:। যথা অভিনৰ নিৰ্গতা আযতা সুন্দ্ৰণা ता **नक्रम्या अक्रम्या ह म**खितः। যথা চ্তনঞ্জি: কদলীনঞ্জি:। বল্লরি: পুন শিচরভূতাপি। যথা ভালনজ্জরি: গুরাকবল্লরি রিতি

मिक्षिश

দ্বযমেব নবে চিরম্ভনে ২পীতি কৃষ্ণ সাঞ্জো। ইতি ভরত: ॥

নঞ্জরী জ্রী মুক্তা। তিলকবৃক্ষঃ।। লতা। ইতি শব্দরত্বাবলী।। মৃঞ্জরিঃ । ইত্যমর টীকাষা• ভরতঃ॥ তুল-সী। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

মঞ্জরীন্ম: পু॰ বেওসবৃক্ষ:। ইভি রাজনির্ঘণ্ট:।।

মঞ্জা দ্রী। ইতি ত্রিকাঞ্ছেশবঃ ॥ মঞ্জরী। ইতি হেম্চন্দুঃ॥

মঞ্জিঃ পূ: মঞ্জরী। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ।!

মঞ্জিকা স্ত্রী বেশ্যা। ইতি হারাবলী মঞ্জিফলা স্ত্রী কদলী। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।।

मिक्षिश जी सनामशाजतकवर्गनाजा विष्णयः। मजीठे ইতি हिन्सी जाया । एट পर्यायः। विक्रमां २ किसी ० मम्सा ८ कानस्मिकाद मञ्कूष्ण-भी ७ ज्ञीत्री १ ज्ञि ४ द्यायमन-स्त्री ३। ইত্যमतः॥ कानस्मित्री ३० काना ३० किसिः ३२ ज्ञित्री ३० ज्ञीका १८ ज्ञित्री ३० तका ३० ज्ञीत्री ॥ इतिभी ३७ तका ३० भीती ३४ रगाजनविक्षका ३० वशा २ (ताहिभी २० विज्ञना २० विज्ञा २० विज्ञानी २८ किनो २८ विज्ञा २० विज्ञानी २८ कननी २८ विज्ञा

२५ मध्यू या २१ ब्रक्टयष्टिका २৮ ত্রিণী ২৯ রাগাঢ়্য ৩০ কাল ভাণ্ডি-কা ৩১ অৰুণা ৩২ জুর হন্ত্রী ৩৩ ছত্রা ৩৪ নাগন্ধনারিকা৩৫ ভঞ্জীরপতি-কা ০৬ রাগান্সী ১৭ বন্ধ ভূষণা ০৮। व्यापात खनाः। मधुद्र ्यायद् । **উक्छन्। ७३०न्। तुग**ः = जुन्न सूप्र विष भिजात्य ना निर्काश मा ठेवू र्विषा। (চা 🕟 एग ईनी २(कोन्डी १ निः हली ह । ेर के बाजनिर्ध है। ॥ क्षेत्रका नाच नानि द्वा वर्गा-্রি চারিত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভঃ॥ অপিচ। মঞ্জিষ্ঠা মধুরা তিক্তা ক-बाग इनं वर्ग क्टा एक का विष েহন্নী শোথ যোন্যক্ষি কর্ণকৃত্। बकाजीनात अधागु। विमर्भ वुन নেহ নং ॥ ইতি ভাবপুকাশঃ॥ मकी जी मछत्री। इंडि एमा न्मः ত্রিকাওঁ শ্বশ্চ॥ मङीष्टर्री ही मूर्वः। इंड्रायवः॥ मक्षीरता रक्षी ज न्शृतः । ইভি इस मः मक्षीतः भ् नहानम् अब्रह्मवक्षनार्थः उम्रः। उर्भिग्रायः विक्रसः २ व्यवेत । इंडि (इमहन्मुः॥

जि मत्ना**छ**। ইত্যনর: ॥

শৌ প্ একৃষঃ। ইতি হলা-

युथः॥ जुनस्त्रत्वम विभिष्टे बि॥ নঞ্গননা জী হ সী।ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥ जूनस्त्रगानिनि जि ॥ মঞ্ঘোষঃ পু॰ পুর্বজিনভেদঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥ উপাস্যদেবতা-विष्णयः। अन्य मञ्जामि यथा। জাড্যোয তিমিরপ্রণসী সংসারার্ণব তারকঃ। শ্রীমঞ্জঘোষো জযতা॰ माध्कानाः मूथावहः॥ उजागसाः ত্তরে। নাতৃকাদি সমৃদ্ধ্ত্য বহিং वीजः अमूकादा । वामाः मः कूर्य স•জ্ঞঞ্চ ততো মেবেশ মুদ্ধরে**ৎ**॥ भीतिमध्य ७७: क्यां तामतिव-न्तू मःयूजः। यजकाता मनुः श्राका नञ्जू रवायम्। भासुना।। इयस मी भ-নী প্রোক্তা নূলমন্ত্রন্ত কথ্যতে। অঙ্কুশ শক্তিবীজঞ্বমাবীজ ত তঃ প্রিয়ে।। বীজত্রযাত্মকো মস্তো জাড্যোহ ধ্বান্ত নাশানঃ। শব্দিবী**জ**ণ রমাবীজ কানবীজ তথা পূিযে।। বিদ্যা শু,তিধরী প্রোক্তা এষা বর্ণ ত্রযান্মিকা। হকারো বহিনাকটো বামনেত্রেন্দু ভূষিতঃ॥ প্রোক্তা সা-র্বজ্ঞ বিদ্যেশ একবর্ণাত্মিকা প্রিষে সিক্ষঃ সাধ্যঃ সসিক্ষো বা সাধ্ক-স্য রিপুশ্চ বা।। তদা নজ্ঞো ভবে-ভক্তা শুভদো বুদ্ধিদো ভবেং।

मध्राङ्क मिलाम हिन्द ভार्कान छा-क्तत उथा ॥ गामाय ज् वहिप्पंष्य निश्रुत दम्भी बहा। भारि ह नि শি গোমুণ্ডে বত্র ডমুক সমিভ ।। विविधा मञ्जवर्गाः क विन छ एक् व्यक्ष ख्या । विष्यहन्तन विथन्। পুरज़ाट माध्रकाखनः ॥ উद्दार्धन লিখেমন্ত্র গোচর্মাণ বিশেষতঃ। সলিলে বিজয়ী নিত্য ভোজনে চ নহেশ্বঃ।। গোন্যে বাবদূকঃ স্যা-দ্যোষ্ঠে সৰ্বজ্ঞতা• বুজেৎ। সচে শু,তি-ধরে। নিভ্যুণ গোমুণ্ডে চ মহাকবিঃ॥ গোমূত্র বদরী মূল চন্দ্র পাংশু মেব চ। একীক্ত্যাষ্টধা জপ্ত্বা তিলক• ধার্যেৎ সদা।। নমস্ত্ত্যবর প্রা পুাথযেজক্তি তৎপরঃ। বর পুাপ্য **চ उत्रादि दिश्दा**कु यथा সুখ• ॥ नान। (हवाईन मान भुगत्वाहात्रण ন তু। বস্ত্রাঞ্লেন দন্তানা শোধন লবণেন বা।। রাত্রিবাসোন মুঞ্ছেত न मुिंहः महा८ कराठन। वदः कृत्रा भुराद्भन उडादा एक मूथाए मृशीः॥ भारिमत्कन कवीन्तुः महाद विभारम নৈব ঈশবঃ। ত্রিভি র্মাসৈ ভ্রেমর্ত্যঃ সর্বশাস্ত্র বিশারদ:॥ পুগ্রাথী লভ তে পুঞ ধনাথী বিপুল ধন ৷ আ যু রারোগ্য কামস্ত সর্বান্ কানান 🍴

वाञ्च या८ ॥ ७७: कत्रात्रनऽारमे । काः नाः अक्षाच्याः नमः। ইত্যाहि এব॰ হৃদযাদিষু। তথা চ তন্তে। স ম্বৰ্ভকো বকেশশ্চ দ্বৌ বণৌ কথিতৌ পূ্যে । ৰড় বিৰ্ভাগ্যা মেতাভ্যা• यप्रकानि मभाहरत्या मञ्जू कान तः वरकणः भकातः।। शाध्रान•। शंभ -ধর মিব শুভু>খন্ন পুস্তাহ্ব পাণি• সু-ক্চির মতি শান্ত পঞ্চুড জ্মার• । পৃথুতর বরমুখ্য পদাপত্রায়তা-कः अन्नि प्रश्न प्रकः मञ्जूर्यायः न-मामि॥ शीठे भूजाः उठः सर्यप्रामाश রাদ্যাদি **শ**ক্তিত: । ভূত প্রেতাদি-ভি: **স**র্য্যাৎপীঠাসন মনন্তর•॥ জ্ঞा নদাত্তে নমঃ পাদ্য বুদ্ধিকত্তে তথা हमः । जाए। नामाय शक्तः मामर्घाः म्याप्यक्रभाय वि ॥ मर्दनिष्किश्रुमा-यि श्रिष्ठ भूत्र मन्त्राष्ट्रिष्ठकाः। स्नात-পুষ্ণ সনাদায ভৈরবান পুজযেত্ততঃ ।। অসিতাঙ্গো ৰুক শণ্ডঃ ক্যোস্টেই মত্ত সংজ্ঞকঃ। কপালী ভীষণশৈহৰ স·হার শ্চাপ্টন: সৃতঃ II ততো ধূপা-**किक पद्धा शुज्जानि विजर्जाय**ः। रिजः भूक्षिः भृजायमस्त्री यक्किशीन्त्र विष्णयं ७: ॥ भूताहि भूनहती देव ग-নোহারিণ্যনম্বর•।কনকাবতী তথা কানেশ্বরী চ রতিকর্য্যথ।। পদ্মনী

मक्ष् न

अनुता गिना नस्त । श्र्मे वी का अवस्था गिना क्रिकाः ॥ अव अ अ अ अ अ प्राचित्र । ध्वाक विक क्रिकाः क्रिक

গ্রন্থ পাঠক: পু শালা ইভি शाक्तिर्वाग्रेशः सुम्पद्र**शा**ठेकरः े**वि॥** য়ঞ্পাণঃ খু বুক্ষ। ইতিজটাধরঃ॥ খ্রু জড়; 🛒 জিনবিশেষঃ। তৎ-প्रयासिक अधि अधि अधि । श्रद्धाः । इत्रात्रः । इत्रात्रः । इत्रात्रः । 💴 ৬ 🌝 রচক্র: ৭ বর্জ্বর: ৮ পু-अवस्थित > दामित्राष्ट्र > • नीत्नाय-अली 👍 बहाताकः १२ नीनः १० ्रभान् होहिनः ३८ वियाम्प्रिः २० শ্বিকিলাত খন্নী ১৭ দণ্ডী ১৮ বি ভূলা 🧓 বালবুতঃ ২০ পঞ্চীরঃ २५ 🗀 १५६ जि: २२ मिथाधदः २० ব্য নি অরঃ ২৪। **ইতিত্রি<u>কা</u> ওংশবঃ।।** अ की जनाकन ।। निक्छ। ইড়ি হেদিনী।। শবলঃ।ইতি বিশ্বঃ 🖔 🏗 भू॰ जनत्रक्रभक्की। ইতি 🛚

মেদিনী।। সুন্দরে তি । ইত্যমর: ।।
নপ্ত ক্রী: প্ মঞ্জু ঘোষ:। ইতি তিকাণ্ডশেষ: ।।

মঞ্বা স্ত্রী মঞ্বা।পেট্রাইতি ভাষা।যথা।মঞ্যাপি চ মঞ্যা পেটা চ পেটিকেত্যপি।ইতি **শ** মরত্রাবলী।।

মঞ্যা জী পিটক:।ইত্যনর:॥ পাষাণ:।ইত্যোদিকোষ:॥ ন-ঞ্জিঃ।ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

महे नारि। ইতি কবিকল্প क्याः। स्मोजधाजूतयः॥ ज्याः शुर्यागः। महेरः। ইতি দুর্गानानः॥ महेरी जी भाषानवृष्टेगः॥ त्रक्तवर्ग क्षुप्रकीविष्णयः। ইতিগোবিন্দ-

ভাষ্যধৃত ছান্দোগ্য: ॥ মটয়ৢটিঃ পু• দর্পারস্তঃ । ইতি জটাধর: ॥

মউক॰ ক্লী গৃহস্যশিরোভাগঃ। মট্কা ইতি ভাষা। ইতি কেচিৎ ॥
মঠ বাসমর্দ্যোঃ। ইতি কবিকল্পফ্রমঃ॥ মঠতি। বাসো নিবাসঃ।
মর্দ্যং কৈশ্চিমনন্যতে। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

মঠ ইড আধ্যানে। ইতি কবিকল্ল জনঃ ।। ই মগ্যতে। আব্যানং শ্বন উৎকে ইত্যত্ৰ ব্যাখ্যাতং । ইতি न्टे

ृदूर्माम् भः ॥ गरेः भू हाजामिनिनयः। इउप्रदेशा मठेडि वमडि ছाত्रामस्या २० मठेः। मठे वाम नष्ट्याः जन्। इब भीजा বিদ্যাথিন শ্বাত্রাঃ। ছত্রেণ গু**ৰুসে**বা नक्षात्र एक्षायहामना एव॰ ভচ্চীলত্বাৎ ছাত্র: বিকার **সংযেতি** কঃ। আদিনা পরিবাজক ক্ষপণকা-मीनाः गुरुः । छाजाभीनाः निल्या गृहः ছाजामिनिनयः। व्यर्थ कथन (मञ् । नामा(भ) उति (कि ६०)। ছাত্রশালা পুতিশুবকাত্তিব। ইতি ভরতঃ॥ গদ্রীরথঃ। ইতি হারাবলী ॥ #॥ जथ मठानि भु जिक्षा भुरया गः। যদি তদিনে পুভিমাদি পুভিণ্ঠা ক্রি-যতে তদা তল্লেণ বৃদ্ধিশাদ্ধাদিক বিধান দেবপুতিষ্ঠাতত্ত্বোক্ত বিধিনা দেব পুতিষ্ঠা• বিধায গৃহ পুতিষ্ঠা ক র্ত্তব্যা। যদি গৃহ পুতিষ্ঠা মাত্র• তদা পুাতঃকৃতনিত্যক্রিয়ঃপুক্ষালিতপা निभार जाहातः भाग्यथ उन्माया वा स्मयुकामत উপবিশ্য বান্ধণ ত্রয়ণ গন্ধাদিনা পরিভোষ্য অমিন্ বিফুবেশা পুতিষ্ঠা কর্মণি ওঁ পুণ্যাহ• ভবন্তো হধিবুবস্ত ইতি ত্রি: শাুুুুব্যুুুু । ওঁপুণ্যাহ নিতি ত্রি ধৈ কক্তে অ মিন্ বিফুবেশা পুতিষ্ঠা কর্মণি ওঁ |

স্বত্তি ভবন্তে। ২ধি*নুৱী*ক্ত ইতি^{*} নিঃ শাুুুুুব্বেৎ ওঁ স্বস্তীতি ত্রি তৈ করে। অশ্বিন্ বিকৃবেন্য পুতিষ্ঠা কর্মানি উ শদ্ধি ভবস্তে। হবিব্ৰস্ত ইতি তিঃ শাব্যেই। ওঁ ঋজ্যতামিতি তি র্ব (म्युः। यजुरबंदिनाः ७ बिखन इत्नाः वृष्यभूवाः श्रस्थिनः शृषा विश्वविषाः স্বস্তিন তাক্সে। অরিষ্টনেমিঃ স্বস্তিনো वृक्षाविद्यां वा । इंडातना क्रांचा किरम् । मानगानाडीं ७ वास সোনো **২য• সুতঃ পিবন্তস্য ম**ৰুতঃ। উত্তৰরাজো অশ্বিনা। অস্তি সোম্যে অয়• সূতঃ। পিবস্তুস্য মুক্তো হা-ই। উতম্বরাজো বা। হাইনো হাই। इंडि गीयमातमाक्क जान् किल्र । गानामाको विशा अठ॰ वाहरयर ! ততঃ নৃষ্ঠঃসোমোযন: কাল: সদ্ধ্য ভূতান্যহঃ ক্ষপা প্রনা নিক্পতি ভূমি রাকাশ খচরামরা:। বান্ধ नामनमाञ्चाय दन्नद्विम् विश्विप्र ইতি পঠিবা। তত ওঁ তদ্বিকাঃ গ রম পার সদা পশ্যন্তি শূরবঃ। দিবীব চফুরা ততম্বইতি বিষ্ণু मृद्धा नाउप्राण नमक्छ। ७ ७९ निक्रिष्ट्रार्थे जनवग बन क्न भू-य्वानागाय ७ जाराम्यक नामामूक পক্ষে ২মুক তিথো অমুক গোতঃ

🖲 অস্থ দেব শর্মা এতত্ত্ব কাপ্তা- 🛚 भिज्ञर (स्व প्रकार् महावाद) । व ८ कर्नुम हेन सर्गताक मिन्छद्रका भः 🚉 कु भी जिकारमः विकृत्वाक পুঞ্জি নোবা বিকৃবেশন পুতিষ্ঠা म्हः क तेस्यः । **इंडि नःक**न्नस्यू । इद्वेक मेनरा 🤌 अविविद्धेकारि न-य (यूनः भवनः । मन मे) थ। वर्ष मः रुम् । उन- व-किंग रर्गःनाक মৃতি কিল ভ্তি বিশেষ:। পা-ষ্ণে ে িন জু তদশগুণ কালাব দ্ধিল । প্রভাগতি বিশেষঃ। দেব তালৰ 🐃 পৃতিষ্ঠাযান্ত তদুহেন পু र्ग्_{रिका क} उ ू **স कल्ल मूकः পঠে** । 🕶 🚋 🦸 उन्यथा। ७ (मरवारवा ্দুন্তি । জুল বিবস্ত্যাসিচ । উদ্বা-াস্ঞ ব পূণ্ধু মাদিছোদেব ও-হতে 🧼 👾 দাক্ত যথা। ওঁ যজ্জা শুন্ত ক্রিন্ দৈব তদুস্থস্যত-ক্রিণ সম্প্রন জ্যোতিষা জ্যো-্িল্ দৈৰ তদুস্থস্তত ्रिट 👉 ः यस्नः भिव मङ्गन्न मस्त्र ॥ . ए. 🚁 व्यवसंद्रि**श भीर्येशिक (वाउन**) ুল্*বভা প্*জাবসোধারা সম্পাতনা ্ধা 👚 🐃 💯 ভূচেবিক শুদ্ধানি ক-े विश्वासि । क्षा व्यागृया म**्डा यथा। ७**ँ व्यामुक्तियाय विषय विश्व नायू तिना। मिरि पुजाबुद्धाता विनिध्य एया मे

ত জীবেন শরদোব্যন্তে ॥ ওঁ আ যুবো নে প্ৰশ্ন বচুসো নে প্ৰশ্ন ুবিদুঃ পৃথিব্যা দিবোজনিত্র্যা শৃখুস্ত্যা পোধঃ ক্রন্তী সোনোছোদ্বায় মনা युष्य गग वृक्षवर्षमाय यज्ञगानमार्ष्क्रा অমুকস্য রাজ্যাব।। # ।। তত্র বিফু-বেশ্ম পুতিষ্ঠাভ্যুদ্যার্থ মিতি বাক্যে বিশেষঃ। এবনন্য বেশ্মনি। ভত উত্তরাভিমূথ ব্রাহ্মণ মুপবেশ্য তৎ मभील जामन मानीय शुद्धारथा यजनानः भाक्षिण बर्रिट । ७ मापू ভবানান্তা । ওঁ সাধুহমাসে ইতি পুত্ৰিচন দত্বা তদাসনে উদ্যুখ উপবিশতি। ততো যজমানঃ ওঁ অর্চ যিষ্যামে। ভবস্ত ইতি বদেৎ । ওঁ অৰ্চযেতি পুতিবচন । ততে। গন্ধ পৃষ্ণ **जामृनानका**रेत तं अष्ट्रीमिक्त कान् ग्रृष्ट्री ७ व्याम उत्रामि व्यमुक (भाव **गम्क्श्रुवत ममूक्रावन्मर्गाव• ७व-**ন্ত অমিন্ সন্ধল্লিত বিষ্ণুবেশা পু. তিষ্ঠা কর্মাঙ্গ ভূত হোম কমণি বুন্ধ-কর্মকরণায় গন্ধপুয় তাদৃলালস্কার বস্ত্রৈ রহ• বৃণে। ওঁ বৃংতা হর্মাতি পু ভিব্চন । यथावि**হिত : तुक्क क्यां अ** का धँयथाञ्जान कরবাণীতি পুতি বচন ৷ স্বয় হোমাসানর্থ্যে হোতৃ-র্বরণ নৃপি তথৈব কার্য্য । ত অবার-

কত্বেৰ আচাৰ্য্যস্যাপি তথৈব কাৰ্য্য• || । শক্তেন সদস্যস্যাপি। ভরো বরণে তৃ সংকল্পিতে হ্মিন্ বিষ্ণুবেশ্ম পু তিষ্ঠা কর্মণীতি বক্তব্যণা#। ততো য कगानः खरताः भारने युदा भरहे । নারায়ণ স্বরূপ স্তু সংসারাতাহি याः भरता। वट भुनामाट खाता यः জ্ঞ• প্রাপ্নোনি যন্মযোদিত•॥ ত্রাহি নাথ পুপন্ন• মা• ভীত• স•সার সা-গরাৎ। দেবতা স্থাপনে হাদ্য মম শান্তি সৰু পুভো॥ ততো গুৰু:। ও উত্তিপ্ত বৎস ভদুন্তে মৎ প্রসাদা-ख्यानवः शुाखवाः धर्म कामार्थः मुझू।-প॰ যৎ সুরাসুরৈ:॥ #॥ ততো ভক: । ७ नावनानीः ऋखायनीः मृन्धाहि ঘ্তশ্চুতঃ। ক্ষিভিঃ শস্তুতো রসো বু।ক্ষণে ৰম্ত॰ হিত•। ইতি পাবমা-নী সূক্ত । অসপত্ন পুরস্তায়: শিব॰ দক্ষিণতঃ কৃধি। অভয় সতত প-শ্চাৎ ভদু মুত্তরতো গৃছে। ইতি শাসন সূক্ত। ওঁ রক্ষো হনো বল शहनः (भाक्षामि विक्यान् प्रका इरना वल गइरनः १ वनयानि विक्थवान् রক্ষো হনোবল গছনো হবস্ত্নামি रिक्षतान्। त्राक्षा इस्तो वनगरुनात् भरधानि देवकवी। तस्काहरने वन গহনৌ পণ্য হালি বৈষ্ণব্যসি বৈষ্ণ

বাঃছঃ। ইতি রক্ষাস্ত্রণ। ইতি পি-ঠিয়া বেতালাশ্চ পিশাচাশ্চ রাক্ষ সাশ্চ 'সরীস্পাঃ । অপসর্গন্ত তে ভূতা যে ভূতা ভুবি স স্থিতা: ॥ वि নাযকা বিঘুকরা মহোগা যক্তদিবো य शिमिजामनाम्छ । शिकार्थ कि र्वज्ञ मभान करेल्ल भया निवला विषिणः পুगास । ইতি খেতসর্যপান্ বিকীর্য্য रिव रिष्ठ मा किन्मक गन्य ना साय । 🗱। তৎ (भाषन नज्या यथा। 🗳 ७९ नविज् बंद्रिगुः ভर्गादिवम् श्रीमहि ধিয়ে। যোনঃ পুচোদযাৎ। ইতি গো-মূত্র । ওঁ গন্ধদারা দুরাধর্যা নিত্য-পুষ্ঠা করীবিণী। ই ধরী সর্বভ্তা-না তানিহোপস্থ্যে শ্রিয় ।৷ ইতি গোময়•। ওঁ আপ্যায়স্ব সমে তু তে বিশ্বতঃসোমবৃষ্ণ্য ভবাবাজস্যসন্ধ-থে। ইতিদ্ধা•। ওঁ দধিক্রারে। অকা-রিষ• জিঞ্চোরশ্বস্য বাজিকী: মুর ভি নো মুখাকরৎপুণআয়্ণিস তারিষৎ। ইতিদ্ধি।'ওঁতেজোসি শুক্রমস্যমৃত মসি ধামনামাসি প্রিয়ন্দেবানা মনা **পৃষ্ঠ**'দেবয<u>্জ</u>ননসি। ইতিঘৃত•াওঁদেব म्या मित्रुः भुमाति श्विता वीङ् छ्याः भृत्का इस्राज्या• इस्राम्स 🖟 ইতি क्रामामक ।। 🗱 ।। अँ (वम्रा (विहिः अ-মাপ্যতে বহিষাবহি রিন্দ্রিশ: অপন

খুঁপ আপ্যতে পুণীতো অগ্নিরগ্নিনা। ইতি মজেণবেদীণ সংগ্ৰোক্ষ্য পঞ্চব-টান্ঘটস্থাপন ক্রমেণ সংস্থাপ্য।#। यदेशाननभञ्जायथा। जामगाना । ७ মহিত্রীণা মবোস্তদ্যক্ষ• মিত্রস্যার্য্যস্ত্রঃ 'দুরাধর্ষণ বঞ্চন্য। ইতি ভূমে:। ওঁ ধানাবন্ত করম্ভিন ম্পূপবন্ত মুক্ত্রি-ন ইন্দুপাত জু ষশ্বনঃ) ইতি ধান্য স্যা উ অাহিশ•কলর্স সুতো বিশ্বা অর্ধন্নভি শ্রিয ইন্দু রিন্দুায ধীযতে। ইতি কলসম্য। ওঁ অ্যমূর্জাবতো বৃ क उँ भी व क निनी छव । अर्थ वन ম্পতে নূত্বা নূত্বাচ স্যতা রিয়। ইতি পল্লবস্যা ওঁ আনোমিত্রাবৰণা ঘূ তৈ গ্ৰুগতি মুক্ষত মধারজা সিসু कर्। ইতি জলস্য। ७ इन्द्रमदा त्मिष्ठा इवस्ड यू भार्या यनयञ थियखाः भूता न्याजामुवनक काम আগোমতি বুলে ভলাবৃদ:। ইতি ফলস্য। ওঁ সিন্ধো কছাসে পত্ৰস্ত মুক্ষণ হিরণ্ডপাবাঃ পশু মাশু গিভ তে।ইতি ষিদ্ধুরস্যাওঁ ত্বাবতঃ পুরু বসো ব্য মিন্দু পুণেতঃ মাচিস্থাতর্হ রীণা•। ইতি স্থিরীকরণস্যা। ওঁ প-বমানো ব্যশ্ববৃদ্মিভি বাজসাভমঃ । দ্র্রাস্তোত্তে সুবীর্য্য:। ইতি পুষ্লস্য । अध्या यज्याः । उ ज्यमि ज्यनमः

দিতি রসি বিশ্বস্য ধাযা বিশ্বস্য ভূ রণধত্রী 🕶 পৃথিবী • যদ্ব পৃথিবী • দৃষ্ট হ পৃথিবী• মাহিওঁসীঃ। ইতি ভূনেঃ। ওঁ ধান্যমসি ধিনুছি দেবান্ ধিনুছি যক্ত ধিনুহি যক্ত পতি ধিনুহি না যজন্য । ইতি ধান্যস্য । ওঁ আ**রি** यु कलम मशादा विमञ्जून्यदः भूनः क्रजी निवर्ख समानः। महमु धूकाः ক ধারা প্রয়তী মাবিশতাদুথি। ইতি ঘটস্যা ভঁৰকণস্যোজন্তন মসি বৰুণস্য স্কন্তঃ সৰ্জনীতঃ বহুণস্য শভ जरनऽजि वक्शनः খত সरनम्शि व-ৰুণস্য শ্বত সদনী মাসীদ। ইতি জ-विम्राज्यस्यागा धनुना जिञ्जरयमधनु ना जीताः जनमा अस्य । धनुः गायात পকাম ক্ণোতৃধন্বনাসর্বা:পুতিশো ক্ষেম।ইতি পল্লবস্যাওঁ যাঃ ফলিনী ৰ্যাঅফলা অপুস্থা যাশ্চপুষ্কিণীঃ বৃহ-ञ्जलि भुगू जाखाता गूक्ष छ ए मः। ইতি क्लम् । ज्यान क्लिश्नय वादि मर्वत्र-ব সম্বিত ৷ ইম ঘট সমাৰ্ছ তি **४ (**एवगरेग: मह। इंडि बल प्रारी ওঁ ছিরো ভব বিশ্বস্থ আশুর্ভব বাহ্য त्र्व्यूर्डिव मुमम्खु भाग्न तीय वाह-নঃ। ইতি স্থিরীকরণস্য। ওঁ সিদ্ধো রিব পাধ্বনে শ্ঘনাশো বাত পুনিযঃ ।পতবন্ধি বস্থায় তস্যধার। অক্ষোণ

বান্ধী কাধা ভিন্দ মুর্মিভিঃ পিমনানঃ । ইতি সিন্তুরস্য। ও শ্রীকতে লক্ষী শ্চ পর্য়া বহোয়াত্রে পার্শ্বে নক্ষ্রাণি ৰূপ•অশ্বিনৌ ব্যাপ্ত•ইষ্টমনিবাণস-র্বলোক ননীযাণ।ইতি পুল্লস্যাঞ্চা। ত হঃ ফল পুষ্প যুত্ত বিতান ওঁ বি মাৰ এক দিবো মধ্য আন্ত আগ পুৰা **त्राप्त्री गरुत्रीकः। সবি স্বাচী রভি** চঙ্েঘৃতাচীরস্তরা প্র নপরঞ্কেতু া। সামৃগানাস্ত। ওঁ উদ্ধু উষুন উত্তযে তিষ্ঠাদে বোন সবিতা উদ্দ্যে বাজস্য সনিতা যদঞ্জিভি ৰ্বা ষচ্ছি বিশ্বযা मारा इंजिमाञ्चन वद्गीयादाक्षां इ রণ্যগর্ভ্ত: সমবর্ত্তভাগ্রে ভৃতস্য জাতঃ পতিরেক আসীৎ। সদাধার পৃথি-বী দ্যামুতেমা কমৈ দেবায় হবিৰা বিধেম । ইতি মজেণ মণ্ডল মধ্যে जूर्वर्भ भद्मा • पञ्जा अर्ग भन्ताकशा मना-नु ८ कीर्य। मखन माथ। ताजाी नु তিমাণ ওঁ সূত্রামানণ পৃথিবীণ দ্যা-মনেহসং সুশর্মান মদিতিং সূপুণি-**जि॰। रे**म्बी॰ नाव॰ ऋतिजामा नागः সমসুবন্ধী নাৰুছে মাসুস্তবে। ইতি सरज्ञन निःक्षिभा घरिष् एरवान् भूक-(यटा क्षा भूषम चढिंगराष्ट्रभूर्ग्र हि-ভীবঘটে শিব-দুর্গাণ তৃতীৰ ঘটে বিস্ণুণ লন্ধী সরস্বতী চতুর্থে আমি ৰাজপু

क्ष किवेशानान् कि विवाद हि नीक्रमाङ्गो शक्ष्य गुरुष (उपकार) ना॰करेष्ठरेष मं रिख हार व्यवस्था व 1**क्ष) उट्टा ७३ (५४ - १** । नाहार **লগ্রামেবাযথোক্তবি**লিনা ক্রাম্বর ঠ **जिन्**करमा जिल्लाम् वास्त्र हर । सह यह **बाक्ष क्रियाः।** ि 🖰 🗸 🕏 📆 🤻 **७॰म**७म्डि(र्मामः १८०५ १०० १८६ । ইতি মন্তেশ নিষ্কের একে জিল্ল खें सवानः मुख्य मुर करिया की वृक्षा ना के के व्यक्ती ते 🚕 भव । इंडि गर्डिंग भूका 🚧 🦠 প্ৰেৎ। ওঁয়ত বতীকি প্ৰেন্ড 🤭 । ওঁ অতো দেবা অব্ভরে 👙 👙 答 ষ্ণু বিচক্রমে। পুথিবুদেঃ সংস্থাক সং াইতি মস্র চুর্ণেনোছর্জন 🗀 🕾 🦠 वादा मिश्रः मधिक्षः , १६० वयः সপ্তবাম প্রিয়াণি সপ্তহোজ্য সভ্তর **द्धा यज्ञस्त्रि। अश्रंत्यानी**प्राधः केन्द्र 🕾 । ইতি উঞ্চো কেন সংগ্ৰেছ 📲 🖰 शनामित्र गूगूठानः श्विमः द्वारका स्टाट দিব পূত পবিতেশে ক্রে क्ष स्थानमः इंडि हन्त्र स्थापिक है আপোহিধানযোভুষ: 🔧 🦠 🦈 দ্ধাতনঃ মহে রণায় ১৪ 🙉 🕒 🗀 নদীতোয়েন স্থাপয়েৎ 🗀 শ্রেল্ডাদে-वी तिन्द्रेय जात्मा कार्याक्ष

শংযোরভি সুবন্ত ন:। ইতি তীর্থ মৃৎ কলসেন স্থাপিয়িরা গায়ত্র্যা গন্ধযুক্ত कलन नाभारय । ७ श्रितगु वर्गाः শুচ্যঃ পাবকাংযা সূজাতঃ কশ্যপো या विनुः। अभीया गर्जनस्थित विक পাতান্ আপঃ শগু শোচানা ভবস্ত ৷ ইতি পঞ্চসূত্তিক্যা। ওঁ ইম•মে গঙ্গে যমনে ারস্থতি সভূদ্রি স্থাস্ম্**সচতা** গ্ৰিকা অসিক্স সক্ষিত্ৰ বিভস্ত ালা নাল পৃণ্ছা স্বাদ্যা ইতি মত্রেণ থিক্তা জঙ্গে। ও তদিকোঃ পরম॰ পদ॰ সদা পশ্যন্তি সূর্য:। দিবীব চক্ষুরাততম্। ইতি বল্গীক ভোষেন। ভিঁষা ওষধী: সোমরাজ্ঞী বিষ্ঠিতাঃ পৃথিবী মনু। তানহা ম মিন্ন।সনে ২ছিদু॰ শর্ম যুহত। ইতি अत्वे विश्वज्ञानः। 'अ यङ्गा यङ्गाता रद्भारय गिङ्ग िद्धा ह एक्स्प्र । भूभू ব্য মমূজ্ঞাজবেদসং প্রিয়ং মিত্র: मभाः भिषः। ই जिक्षाययुक्त उत्वन । **११क्षणाला, मेरेले हें से से हेन्द्रः (अहरफ्ट** । एँ शनः श्ंाा **भरका बीवू भ**न যে। দিব্যস্ত রিল**ুপযোধাণ। প্রযন্ত**ী পুদ্ৰ 🐃 🐃 হা সন্মাস্লানি প ষ্ঠাংমুভে*ং সং*্যুহা**ন্যপহঃ। ইতি** श्रिणा । । विषायकार मर्व .इ.ज. १५% विकास युद्धिता **हन्ता**॰

সি যক্তিরে ত মাদ্দজু স্তমাদজায়ত । ইতি পঞ্চামূতেন। ও যাঃ ফলিনী-**তि क्रलामरकन। ७ नहमु भीर्यि**ङ वकामान माञ्चन जर्जुवातया । ७ এতো দ্বিন্দু মিতি প্ৰোক্ত মন্ত্ৰেণ তু-वनी हन्सन युक्त जलन। ७ यात्रा॰ রাজা বৰুণো যাতি মধ্যে সত্যানৃতে व्यवश्राक्षानाः। नधून्तु उठः नृहरय। যাঃ পাৰকা স্তা আপোদেবী রিহ্মা-মবস্ত।ইত্যনেনবেদাদি চতুষ্টযেন।ত-घया उँ वारा नी त्व भूरता हि उ॰ यक्त-স্য দেবমৃত্ত্বিজ হোতার রজ্পাতন म्। ४। ७ इत्मञ्जा र्ज्ञा नायव इत्र বোব: সবিভা প্রার্থভু শুেষ্ঠতমায क्यांगारा ७ जन्न जागारि वीज्य গৃণানো স্ব্যুদাত্ত্যে নিস্মেতা সং-সি বর্হিষি !৩ ৷ ওঁ শলোদেবী রভিষ্ট-य मामा जवस भी जाय मारावाज <u> अ्</u>वछ नः । ८ । वक्षाना शृक्षम् अ न व वकामी कि घटिः मानरद् । অশক্তো অস্টাবিংশতি ঘটৈ রপ্তথটে ৰ্বা সাপ্যিত্বা ধৌতবাসসা জলনপ-নীয় যথোপচা**রৈঃ সংপূ**ল্য মণ্ডলে व्याक्षात्र मेळ्डामीनि भूषरग्र । 🛊 । **७ जाधातमञ्ज्य नमः। ०व॰ मर्ब-व পु**गवाहि नस्मा १एउन । भुक्रिक कूर्याय अनलाय भृथिरेवा कीत्रमञ्

मार हृत्तीभाय त्रङ्गा**ज्ञ्य अहि** । गहागिष्यथाय कल्लव्काय त्व रविकारेय द्रञ्जि शामनाय। या-्रायप्रा॰ धर्माय रेनर्थाञ्जा॰ उद्धानाय वावव्याः देवज्ञान्याय अन्यान्याः अन्यः য্যায়পূর্বস্যাণ অধ্যায় পশ্চিমাযাণ অবৈরাণ্যায উত্তরস্যা• অনৈশ্বর্যা-য। নধ্যে অ॰ অর্কনগুলাঘ উ॰ সো:-गमखनाय मः विज्ञानखनाय। मः সত্বায় র॰ রজসে ত॰ তমসে। আ॰ আত্মনে তা অন্তরাত্মনে পা পরনা-ञ्चात क्षे छानाज्यत । भूबी पिरकणः রেষু প্রাদক্ষিণ্যেন ওঁ বিমলাথৈ নমঃ । এব॰ উৎকৰ্ষি গৈয় জ্ঞানাথৈ ক্ৰিযা-रेय त्यागारेय शुरेख जड़ारेय वेशा-नारेय। कर्निकायाः अनुशुक्रारेय। क র্ণিকোপরি ওঁনমো ভগবতে বিষ্ণবে সর্ব ভূ হাত্মনে বাসুদেবায় সর্বাত্ম সংযোগ যোগগীঠাত্মনে নমঃ। 🕸। ততো মগুলে দেব সংস্থাপ্য পৌ-রা ণিক মন্ত্রেণ পুৰুষসূক্তেন বা ষো-उत्मानहादिः भूकत्यः। उप्यथा। अं गर्मु भीयां शृक्यः गर्मुाकः गः হসুপাং। স ভূমি সর্বতো বৃত্বা **जा**ठ्या ७ ४५ माञ्चल २ । नर्ब ५: স্থানে বিশ্বতঃ বৃত্বা স্থানে স্পৃত্বা ই 📗 ত্যপি পাঠ:। ইতি পঠিত্বা ভগবৃন্

বিক্ষোইছাগছ ২ ইহভি ৪ ২ ইছ স-মিক্সৰৰ মন প্লা গৃহাণ। ততো ব্থাবিধ্যাসন নানীয় ব্দিতি ব্ৰুণ-বীজেনার্য্যান্তসা সংপ্রোক্ষ্যাসন ম-खाई। अंभूक्ष कावम मर्ब बर्फ-ত যা ভাব্য উতাম্ত ব্সেগশানো যদদেনাভিরোহভিহ। ইতি পঠিত্বা ইদ মমুকাসন ও নমো ভগবতে वामूप्तवाय श्रीविकात नगः। এव॰ नर्वक मार्ति। ७ ७ गवन् विरक्षा चा-গত•। ইতিস্বাগত পুশুঃ। ওত স্তামু পাত্রত পদা শ্যানাক দ্রাপরা-জিতাদি যুক্ত॰ জল• গৃহীত্বা ওঁএ-তাবানস্য মহিমাতো জ্যাযাণ্চ পূ ক্ব: পাদোস্য বিশ্বা ভ্তানি ত্রি-भारमाग्रञ दिवि । ইতি পঠিবা हेन भारा भूईवश्रालन भारता ৰ্দ্দগেং। ততো গন্ধ পুল্লাক্ষত যব ष्मागु जिल मर्यभ पृर्वायुक कल॰ শহ্বাদি পাত্তে কৃত্বা ওঁ ত্রিপানুদ্ধ উ-रिन्ट भूक्यः भारता श्रमाञ्चा ज्वट পুনঃ। ততো বিশ্বস্ত্ব্যক্ষান্থ শাস নানশনে অভি:৪৷ তত্তঃ স্থানে তমা-দিত্যপি পাঠঃ। ইতি পঠিত্বা সাম गानामिन मर्घा मत्तर्या (मास्। २र्घः ইতি শিরসি দদ্যাৎ। জাতী লবক কক্ষোল যুক্ত কেবল বা পাত্র জ

मः गृहीदा ७ उत्ता विद्राप्रकायं বিরাজো অধিপূক্ষ: সজাতো অভ্য রিচ্যত পশ্চান্ড্মি মথোপুর:৫!ইতি পঠিবা ইদ্যাচননীয় ওঁ নমে৷ ভ-शवरङ वामुद्रवाय श्रीविकदव स्रश ইতি দদ্যাথ। ততঃ কা॰স্যপাত্রস্থ• দধি মধু ঘৃতাত্মক কাংস্যেন পিছি-ত মধুপর্ক গৃহীত্বাওঁ তমাত্মজ্ঞাৎ नर्वत्वः नस्ठः প्यताकाः भम्। खाःक्रक वायवतानावनता गुम्मत শ্বে পা ইতি পঠিত্বা এষমধুপর্ক: ওঁ মমে। ভগবতে বাসুদেবাৰ প্ৰীবিশ-< ब बाहा है जि हम्यार । उ डः भूर्बम-अ शिवा भूनद्राहमनीयक मन्। । কপুর বাসিত জল গৃহীত্বা ওঁ ত याष्यकार मर्बङ्ड यहः मागानि জব্রিরে ছন্দা•িস জব্রিরে তখা দ্মজ স্তন্মাদ জায়ত ৭। ইতি পঠিবা छेल मानीय छल मृ**लन एर्डा** । भूर्वतर, पुरुषक्रमनीय मद्मा व**ङ**। ्र्िः 🧐 ज्यान्या व्यकारत (र-কেচে৷ ভৰাৰ*ং* গাবো**ছ জজিরে** ভদ্যবিষ্ণাজ্ঞাসাস্থ্যবয়ঃ ৮। ইতি भिष्ठि हेर नेशः मूलन मम्हार। এব মৃত্রীমন্ত্র যজ্ঞোপবীত পূ बंहराहन्नीय पदा आ जंदगः गृशी-क्षा है जन एक विश्व (भू) कन भू

ৰুষ ভাত্ৰগুতঃ। তেন দেবা অযজ-ম্ভ সাধ্যা ঋষয়ক্ষ যে ৯৷ ইতিপঠি হ্বা म्राजन प्रारा । 'उँ यर भूक्य वार थुः किवश वाक्रम्भरम् मूथः कि मना मी कि वाष्ट्र कि मूक भाषा उँछाऽ ७ > । अएए म आयमायन भाशा-यास मूथ किममातको वाष्ट्र काव्-क भागं উচে एउ ইতি ভেদः। ইতি পঠিত্বা মূলেন গন্ধ । एउँ वृा-कारा ९मा मूथ मानी ८ वाङ् बाजनाः क्ठ:। উक उनमा रहिमाः পन्छा। শৃদ্যে অজাযত ১১।ইতি পঠিত্বা মূলেন भूत्र परतारा ७ ठम्तुमा मन्त्रमा हा-ত শক্ষো: সূর্য্যে অজাযত। শ্রোতা-দ্বায়ুশ্চ পুণেশ্চ মুখাদগ্নি রজাযত ১২। म्था दिन्द् का निक भागा हा यु इडाय-ত ইতি চ পাঠঃ৷ ইতি প'ঠত্বা মূলেন **ध्न• ए**म्यादाखँ ना छ्या गानी पछ्ति-कः भीर्कारहाः ममवर्ज्ञ। भक्ताः ভূনি দিশঃ শো্তাত্তথা লোকান-কল্পান্ ১৩। ইতি পঠিত্বা নূলেন দীপ॰ मम्प्राट । उ.ठा देनव्यक्ताभित्र मट-স্যুদ্যা মূলমজ্ঞ দশধা জপ্তাভ্য-र्छ। (धनुशु मा॰ श्रुममा अँ यटशुकरयण হবিষা দেবা যক্ত নতন্ত।বসন্তো २म्।भीपाङ्गः गुीय हेन्द्रः भत्रक्षविः ১৪। ইতি পঠিত্বা নৈবেদ্য মূলেন

मम्राट । उँ मश्राम्यामम् भतिष्य ব্রি: সপ্ত সমিধ: কৃতাঃ। দেবা যদ্ম ক্তঃ তদানা অবধন্ পুৰুষণ পশুং ১৫। ইতি পঠিবা কপ্রাদি বাসিত পা-नीयः जामृषः भूनद्राहमनीयः मर्भागक मन्त्रा< । ७ यङ्किन यङ्क नयङ्ग । १ व वा छानि धर्माणि भुषमान्यामन्। उर নাক মহিমান: সচন্ত যত্ৰ পূৰ্বে সা ধ্যাঃসম্ভিদেবাঃ ১৬৷ ইতিপঠিত্বাত্ম-ঞ্জলি ত্রয়ণ পুত্রণ দত্ত্বা আবরণানি সং-প্রাম্লমন্ত্রণ যথাশক্তি উপ্লাপুণ-(मर । क्षा वाय त्म्राचनायन माथा-যান্ত যৎপুৰুষেণ হবিষা ইত্যাদিনা न्नानीय ७ ७ यक्क वर्स्वी ज्यामिना বস্ত্র• ৭ তমাৎ যজ্ঞাৎ সর্বহুতঃ সং ভূত মিত্যাদিনা যজ্ঞোপবীত ৮ তমাৎ যজ্ঞাৎ সর্বহৃত খচঃ সামা নীত্যাদিনা চন্দ্রণ ৯ তম্মাদশ্বা অ-জাযন্ত ইত্যাদিনা পুষ্ণ ১০ ষ্ৎ পু ৰুষ ব্যুদ্ধু ব্লিত্যাদিনা ধুপ ১১ বাু-ऋराग म्थना मी कि जा कि ना की श **)२ हन्द्रमा मनस्मा का**छ इंख्याहिना रेनरवर्ड ३० नाज्य जामीरस्त्रक মিত্যাদিনা তাঘুল ১৪ সপ্তাস্যাসন্ পরিধ্যইত্যাদিনা নীরাজন ১৫ইতি ভেদः অন্য**ে স**মান•।#। ততো **७**कः व अ शिक्तम डेशिविना ब्राख इ खि

লে বা ব্ৰাহ্ম বিধিনা তদজ্ঞানে স্বগৃ-ছোক্ত বিধিনা সাহস নামান মগ্নিং সংস্থাপ র্কাস্থাপনানন্তর আভিষে-कार्थः अभानाः नव मयुग मणागः বহি দ্ধ্যক্ষত ভূষিত চূতাখথ ন্য-গোধোডুমর প্লক পল্লবছ মমুথ ফল বস্ত্র যুক্ত অন্তঃ ক্ষিপ্ত পঞ্চরত্ন নির্মল क्षनभूगं मृत कलमः यक्षजानामू भिन्न ওঁ আজিঘু কলসূমিত্যাদি মস্তেণ शांभारयः। उत्र वक्षामाज्ञ नम সীতি বৰুণ ন্যসেৎ। 🕇 গঙ্গাদ্যাঃ সরিত: সর্বা: সমুদাশ্চ সরা সি চ। । সর্বে সমুদাঃ সরিত স্তীর্থানি জল-मानमाः। वायास यज्ञमानमा मूत्रि छ ক্ষয় কারকাঃ। ইতি তীর্থানি চ ন্য-সেএ। তবৈৰ কলসে অশ্বস্থানান্তৰ भागाय विश्वीकाय अवसाय कुराय भाञ्रला द्रवशाया जानीय मध मृतः किरभए। महो यशीका क्षा उउ कर मुन्ना॰ कर्गाए। याः कडात मानून বিস্তারাগুণে প্রাদেশপরিনিতোডুম্বর নিৰ্মিত দ্বী • সাৰ্চ্চাঙ্গুষ্ঠ বিস্তাৱাণ্যু প্রাদেশ পরিমিতোডুম্বর নির্মিত্রে क्रन हरू होती चाजा हाती हेरू थत মুষলে সুর পূর্ণহোমার্থ সূচ সমি-ध जाकामीन উप्ताना क्षास शाकः विनियाग करमगानशः अजि ।

সংস্থাপ্য যবান বুহিনি বা তদভাবে 🖰 **७**७ जान् मूर्ल निशाय। मानगः। 🔘 বিশ্ববে ত্ব। জ্ঠ নির্বপানি । ইতি ধ্যাদি পুসৃতি মেকা চৰুস্থাল্যা कृदा উদূখল सक्ष्य ऋाभायटा यङ् र्वभी जु ७ विकरत दा बुडे॰ गृहानि ওঁ বিফাবে ত্বা জুষ্ট নিৰ্বপামি চমস-श्चा करणन 'उँ दिक्यत द्वा **बुष्टै॰ (शुक्का** भी कि जम अर्थाए। भाषमी जु ७ বিশ্বুৰ বাজুই নিৰ্বপামি ওঁৰিক বে ভা-জ্ঞ প্রোক্ষামীতি নির্বাপ পোল্প নাভ্ৰং। যস্য গৃহ প্তিষ্ঠা अमवत्रे कुट्टे गुरुगः। वदः सर्वः। ঞানগ্ৰাদিয়ু েওঁ অগ্নবে ত্বা জুষ্ট নি-इन्हरीय अवन्यायात मूर्यप्राय विः विन क्षर ाः गद्य वायत शूनअपूर्य क क्षणाच भूनत्रि अग्रद्य मूर्यताय भुकाः अञ्चल **लड्डीकाय म्हारत् तुन्नल श्**-श्रितः वसावाजाय त्यामाय **रुम्**ताय भाषि यशाय देन**र्भाग यस्पारावाय**-रव क्रावहाय **वेनानाय वुकाण जन** सार या विख्तय मानाय महनाय বুগাল বুলালৈ কৰে পুকাৰ প্ৰিন্দ র ৮ ১৮ জেত্ভ্য ইপ্রণ নব জিশ্ 💶 🐺 जीः साभागरा । वि खुकी • 🕏 গড়ি কৃত কৰিব বান মৃষ্টিভ্যা• মূস ंशियरः म्लि भुयादिर । ||

এবনপর বার্দ্ব মবহত্য শূর্পেণ পুক্ষোটযেত্র তথা কর্ত্তব্য যথা বা র ত্রযেণ তওল নিম্নত্তি ভ্রবিত ৷ তদশক্তো সংস্কারমাত্রার্থণ তণ্ডুলে-ष्विवः। उउ उउवान् विः शुक्रावः। **व्यक्तान्य भगञ्जक कृत्वाख्वागुर्** পবিত্রণ নিঃক্ষিপ্য তত্ত্ব তণুলান্ নি-भाय किनाया मूग्न निःकिना जन-ভাবে অন্য (सरना पूर्न्यः निःकिश्र पः र्वाः भागामि शुरक्षिणभीयम् भ स्य 🗗 यः । अराहर यथा नारू काः विन्राजित्मिथिना मखगानम त्रहि-তো ২ম্বৰুমা পদ্ম শ্চৰ ভ্ৰতি। জ্ল मुन्प्रात्वन ज्ञानी मश्रज्ञ हकः मृश्व। उ তদ্বিক্ষাঃ লব্ধ্যুণ পদ পদা পদা/স্তি :স্রথঃদিবীব চফু রাতত নিত্যনেন মজেণ ওঁমিভ্যনেনচ ঘ্তেন সিক্তা मर्द्या मकिनावर्स्टन मः मिनुरयः। ভতো হয়ে কভরতো হবভার্য্য পুন ख् जनुन्मारकन सानी नथास॰ मृष्ट्री পুন ঘৃতিনাভিঘারদেৎ। #। ততঃ প্যু/ক্ষণান্তা॰ অশাগুকা॰ সমাপ্য সামগন্ত কাম্য কর্মাঙ্গত্বেন তপশ্চ তেজক শুদ্ধাচ হ্ৰীক্ষ সত্যঞ্চাক্ৰোধ-শ্চ ত্যাগশ্চ ধৃতিশ্চ ধ্র্মশ্চ সভুঞ্ বাক্চ মনশ্চাত্মা চ বুন্ধচ তানি পু-পদ্যেতানি মামবন্ত। ইতি জপিত্র

विक्राक वर्ग प्रयोहः। उउः शुक् তে কল নিওঁ পিক্তু মশু কেশাক্ষঃ भीनाक इठेदराक्षाः। ছागदः नाक সূত্রে। হগ্নি: সপ্তাদি: শক্তিধারক: ॥ ইভ্যাদিভ্যপুরাণীয় ধ্যাত্মা বিষ্ণুবে: শাপুতিষ্ঠা কমণি অগ্নেত্ব সাহস না মাৰ্মতি নাম কৃষাৰাছ্য সংপ্ৰাপ্ৰা-দেশ পুনাণা ঘৃতাক্তা সমিধ তৃকী भाषी छन्ना मिक्सान हरू गृहीचा अं ভদিকে। বিত্যাদি স্বাহ্যন্তেন কুত্যাৎ সর্বত্র সামগানা মন্ত্রান্তে দেবতো क्ष्म् नास्ति। अत्नायाः हेमः विकः व इंडि। उं जुः बाहा इनमग्रय छ ज्वः बाहा हेन वागत अंबः बाहा हेर मूर्याय ७ जू जूवः वः उ८ निव जू वं(त्रगु॰ ज्रानी (हरमा) धीमिन्। बिया या नः भुकामया आशा है দ স্ঠ্যায। ওঁ তদ্বিপাসো বিপন্ত-বোজাগ্বা দ: সমিদ্ধতে বিকো র্থ পারন পদ স্বাহা ইদ বিষ্ণবে। উ বিশ্বত শক্ষুক্ত বিশ্বতো মুখো বি খতো বাহুৰত বিশ্বতম্পাৎ **স**ণ্বা হভ্যাণ ধমতি সংগঠৰৈ দ্যাৰা ভ্ भी कनरन (मर्वकः बाहा हेन वि শ্বে। ওঁ অগ্নিদীলে পুরোহিত য জ্ঞন্য দেব মৃত্বিজ হোতার রহু ধা **७म॰ श्वाहा इम्म**ाया । ७ इस्याद्वा

ৰ্জেত্বা ৰায়বস্থ দেৰে৷ বঃ সবিতা প্ৰদ-भ्यञ् (भुष्ठञ्जाय कर्मात साहा है-म॰ वायत्। **७ वन् जागाहि वी** छ्रां গ্ণানো হব্যদাত্যে নিহোতা সং नि वर्शिष साङ्। इत्याप्ता ७ न-ন্ধোদেবী বভীষ্টযে শন্মোভবস্ত পী ত্ত্যে শৃংখা রভিসুবস্ত নঃ স্বাহা ইদ• বৰুণায়। 'ওঁ ভূ রণ্নয়ে স্বাহা ওঁ সুৰ্য্যাৰ স্বাহা ওঁ পুজাপত্তৰে স্বাহ। **७ जड़तीकाय साहा ७ (म्रो: साहा** उ दुकारा बाहा उ शृथिरित बाहा ওঁমহারাজায স্বাহা এলুপি সাম-গেতরৈ স্তত্তদেবতোদেশঃ পশ্চাৎ কার্য্য: । ওঁ সোমণ রাজানণ বৰুণ মগ্নি মন্বা রভামছে আদিত্য বি कु मूर्या वुकानक वृहम्मि । श्राहा ইদ• সোমায়। #। ততো দিক্পাল ছোম:। ওঁ ত্রাভার মিন্দু মবিতা-त्र भिन्तुः हरव हरव मूहवः मृत्र भिन्तुः স্বামি শক্ত পুৰুত্ত মিন্দু স্বতি-ता मचवा थाजिन्मुः बाहा इमिन्मु। য। ওঁ অগ্নি॰ দূত॰ বৃণীমছে হোতা-त्र विश्वविषयः व्यम् यञ्चमः मूक्कर् श्वारु। इत्माप्त्य । अ नात्क मुनर्ग मू भय १ जन्न इमारवन हो। अन्। इ ক্ষত ত্বা হিরণ্য পক্ষণ বৰুণস্য<u>ুদু</u>ত• यमना (यात्नी नमन् जूबगाः स्त्रीहा

इमार बनाय। एँ विश्वा हि निय जी-শা বন্ধুহন্তঃ পরি বুজ অহরহঃ সি क्षु প্রিপদা মিব बाहा ইদ॰ নিশ ভাষ। ওঁ ঘৃতবতী ভবনানা মডি जित्यादी शृथी मधुम्रय मृरमणाः দ্যাবা পৃথিবী বহুণস্য **ধর্মণা বিষ্ক**্ ভিতে অন্তরে ভ্রিরেতসা শাহা ইং• বৰুণায়। ওঁ বাত আবাজু ভেষজ भारतमा जुरना **ङ्ग्र भुग जाग्रवि जातियट मारा हेन** वायत् । उ সোম কাজান বৃক্ণ মণ্নি মন্বারভা सरह जारिका विद्यु मूर्या वुकारक বৃহস্তি ৰাহা ইদ সোমায। ওঁ भिष्य मृत्रान्या १मुका हैव ध्यत्यं देशान मन्तर बगठः च पृश्य बीनान निन्तु उच्चरः बाहा हेम्बी- विष्य । ७ वृक्षयज्ञानः भृथमः জুবস্থানিশী মতঃ সুৰুচোবেণ আবঃ ! সুব্ধ্যা উপনা অস্য বি**ষ্ঠাঃ সত**্ শ্চ যোনি মসতশ্চ বিবঃ স্বাহা ইদ• जुकारण । उं हर्यगीष्ठ भववान मुक् 🖘। মিন্দু- গিরে। বৃহতী রভান্যত ার্পার পরুহ্ত সুবৃক্তিভি রম-र्छ्य अवभाग मित्र मित्र साहा। **ইদমন**ন্তায়। ইতি সামগোজুহ্যাৎ। ভত্তদেবক্তেদেশস্ত ন কর্ত্তব্যঃ। ত ভাদেবতা পুকাশনায়চ দেবতা বি (नमा উकाः। #। यम्(र्वमीजू। उ ত্রাতার মিন্দু মবিতার মিন্দুওঁ হবে श्रव मृश्वर्थं मूत्रशिम्तुः श्रवन् भकः পুৰুষ্ত মিন্দুওঁ স্বন্তিনো ন্যবা খা-जिन्मुः बाहा इह मिन्मुाय। ७ दि-স্থানরো ন উত্তয় স্থাপুয়াতু পরাবতঃ অগ্নিৰক্থেন বাছসা উপযাম গৃহী-ভোসি বৈশ্বানরায় দ্বৈষতে যোনি दिविधानद्राय द्या चाहा हेम्सग्राय । अञ्चानियसा २मानिएजा २ इम-সিত্রিতো গুছেন বুতেন অসি সো-মেন সম্যাবিপ্ক আহু তে ত্রীণি **मिबि वक्षनानि बाङ्। इनः वनाय।** ওঁ য তে দেবী নির্মাতি রাববন্ধ পা-**ण**• ग्रीवाम् विभु, छ । उत्तर विवास । युर्वा नमध्य मरेथङ शिखम्बिनुम् **७:।** नत्मा ज्रेजा अम्भकात सामा । रेर॰ निर्मे ठरव ॥ माथा छरत्र छू 🧉 যত্তে দেবী নিশ তি রাববন্ধ দাস গ্রী-বা ৰবিচ শুৰ্ত্য ইদন্তে ভদ্বিয়াম্যা-যুষে৷ নমধ্যাদথা জীবঃ পিতৃ মৃদ্ধি भुम् क साहा हेम॰ निया जिया । **उ** বৰণস্যোত্তম্ভন মসি বৰণস্য ক্ষম্ভ সর্জনীছ: বৰুণস্যুপত সদন্যসি বৰু-ণস্য পাত সদন মসি বৰুণস্য খত-जननी जाभीन बाहा हैन वक्नाय। 🥰 वात्जा वात्वा मत्ना वा भक्षद्राः

সপ্তবিশতি তে হণে সমযুজ্ঞত তে श्मिन् यवमा मधुः याश इनः वायत । ७ व्यविष्यययमस्य यविष्या मान्डान्भूर्बः विगृयः । ইएट रेट्वाः কৃণুছিভোলনানি যে বৰ্ছিষো নম উ कि नज्याः साहा हेन अवदारा । ত্যীশান জগতভঙ্ষপাতি ধিষ किन्नमवरम क्में एक वया भूवारण यथा विष्माभगवृत्व द्रक्तिजा नागू तपद बरुत्य बाङ्। इनबीनावार। उँ जा-ৰুসন্ বান্ধণো বুন্ধবৰ্চনী জাবতা মা-রাষ্ট্রেরাজন্য শূর ইম্বেগ্রভি ব্যাধী महात्राया जात्राः हेर् वुकारा उ नत्। २ स मर्ल्सल्या (य क्रिक् भृथियी मन् (य जाउतीरकार्य दिवि उडा अ (र्भएक्रा नगः चार्। इत्यनचाया 🚓। পার্যেদী তু।ওঁ আতার মিন্দু মবিতার মিন্দু: হবে হবে সুহব শ্রমিন্দু হ্ব-যানি শক্ত পুৰুত্ত মিন্দু ৰস্তিনো-मधवा थाजिन्तुः बारु। इतिननुष्राय । र्धं अन्। मुंडः भूरतामस हव।वाह भूभतुत (हवा जामाम्याहिक बाहा इन्द्रभूरय । ७ यमाय (मामः मूजनूज ৰমায় জুহুতা হবিঃ যম হ যজো গছত্যগ্ন দূতো অর কৃত: স্বাহাই-দ । যনা । ওঁ এষতে নিশ্বতে ভাগ-**ন্ত জুবস্থ বাহা অগ্নিনেত্রভে**য় দে

বেভ্যঃ পুরঃ সম্ভ্যঃ বাহা কমদেত্রে-ভ্যোদক্ষিণা সজ্যঃ বিশ্বদেব নেক্রে-ভঃ দেবেভ্যঃ স্বাহা পশ্চাৎ সম্ভ্যঃ স্বাহা মিত্রাবৃষ্ণ নেব্রেভ্যে দেবা मानावग्र উषद्रा**मक्तः साहा (नाम** নেত্রেভ্যো দেবেভ্য উপবিশক্ত্যো **पूत्रः मन्धाः बाहा हेमः निर्वा**जाय। व्याधनायन माथायास ए यात्रुनः পরাপর। নির্থতি দুর্হণাবধীত্। न मीडे ज्यामर बाहा इन रेनसंकार । ७ जदायामि तुकामा वनस्मानसः দাশান্তে বন্ধমানো হবির্ভিঃ অংই-ড মানো বৰুণে ছবোধ্যু ৰুশ • সমা-नवाबुः भूमावी साहा हैम 🛰 भगाय । ७ वर्गाका वात्वा मत्ना वा गक्तर्वाः সপ্তবিংশভি স্তেগ্রে হস্বনযুপ্তাং স্তে श्रिन् यवगामधः श्राक्ता। इन व-यत । जाचनायन भावायास छ ত্য বাধ বৃত্তম্যতে দ্বষ্টু জামাতর-জুত। ভাৰা স্গা বৃণীমহে স্বাহা इप श्वायत । ७ स्विम्स्यवम्सा यविकिष्यथा मास्त्रन् भूई विय्य ३१६ হৈষা কৃণুছি ভোজনানি যে বহি-(य। नरमा वृक्तिः नजग्राः स्रारः। इनः ক্বেরায়। ওঁত্নীশান জগত শুসূ ষম্পতি ধিয় জিল মবসে ভূনছে दगः भूषाता यथा (दर ना ननव्य

'ब्रिकि**ल। भागू तरक संख्या सा**रा उत्तरी शानाय। ७ वृक्त बक्तान पुः थंगः अवसाधियीम् मूक्टा वन वादः अव्या उंशमा वामा विशे मः জন্চ যোদি খলতন্চ বিবঃ স্বাহা ই **क**ुक्ता । ও নমো **१**ड् সর্পেভ্যে দিবি ভেডাঃ ল**র্গে**ভ্যো নম: স্বাহা॥ ্রিদম্বলাশ। 🕸 । ততো নব্পুহ হো-স্ক্রে আক্ফেন রজসা বর্তদানো বিভেশ্বরমূত মর্ত্যঞ্চ হিরণ্যযেন সভিতা রখেনা দেবো যাতি ভূবনানি अभा 🖰 ऋ। हो । ७ व्याभग्रयस मस्म-ত ে বিষ্ণতঃ সোমবৃষ্ট্য ভবাবাজ 📗 कः अकृत्य साहा । ७ व्या में की দিবঃ কজৎপতিঃ পৃথিব্যা অয় অ পা: বেডা: দি জিম্ভি স্বাহা। ওঁ শ্রম্মে বিবশ্ব দুখ **সন্দিত্র রাধো ২নর্ত্য** জ্ঞালাশুষে জ্ঞাতবেদো বহা ব্মদ্যা ংদ্রা• উষর্ধিঃ স্বাহা। ওঁ বৃহস্পতে প্রতিদীয়া রথে**ন রক্ষোহা নিত্রা• অ**-গবাধ মানঃ পুভঞ্জৎসেনা পুমৃণো न्द्रा एकम्याक् **(म्ध्रविका त्रथाना** গ্ৰাহ্য 🐰 ব্ৰ শুক্তে হ্ন্যৱেজতত্তে व्यवश्चिष्वस्थ व्यञ्जी (एउ) विवासि বিষা হি নায়৷ অবসি স্থাবন্ ভদা-श्यविश्वाि त्रिष्ठ् माशा । ७

শলোদেবী রভীষ্টবে শলো ভবস্ত পী তথে শংযো রভিসুবস্ত নঃ স্বাহা। ওঁ ক্যান শ্চিত্ৰ আভূব দৃতী সদা বৃ• ধঃ সথা ক্যা সচিধ্যা বৃতা স্বাহা। ওঁ কেতু• কৃষদকেতবে পেশো মর্য্যা অপেশসে সমুসন্ডি রজাযথা: স্বাহা । #। यजुर्बिनी जू। ७ जाक्रकरन-जाि इन म्र्गायै। ७ इम (नवा অসপর গুসুবদ্ধ মহতে ক্ষতায় ম-इरा देवा का का मार् ममुका भूध ममूर्याः भूञ मरेमा विष्म साहे । इन लागाय। उँ वारी म्का निवः রেতাওঁসি জিনতি স্বাহা। ইদ ম-ক্লায়। ওঁ উরুধ্য স্বাণে পুতিলা-গৃহি ত্ব মিপ্তাপুর্ত্তে সর্গু সূজেথা মযঞ্চ । অधिन् मश्रष्ट् अधु ऽ खद्रिमान् वित्य দেবা যজনানক সীদ**ত স্বাহা। ইদ**॰ वृक्षाय । 'अं वृङ्ग्लाट व्यक्ति यहर्रात्रा অহাদুগ্ৰিভাতি কতুমজ্জনেষু । यमीन्य इत्रम अञ भुकाञ जनमा সু দুবিণ ধেহি চিত্রও স্বাহা। ইদ॰ বৃহস্পত্রে। ওঁ অন্নাৎ পরিশুতে। রস•বুন্ধণা ব্যপিবৎ ক্ষত্র• পয:সো-ম- পুরাপতিঃ। খতেন সত্য মিন্দ্রি-য' বিপানওঁ শুক্রমন্ধস:। ইন্দুস্ে-न्द्रिय गिष्टः भाषामृजः मध् याहा ।

हेम भूकाय। इंगामाति वे ब्रेडिय জাপো ভবস্ত পী স্থে শংখা রভি भ्यस नः याहा। **हरः न्यानः हार।** ও কাণ্ডাৎ কাণ্ডাৎ পুরোহয়ী পৰু यः भक्यः भित अवासा मृद्धं भुजनू সহসেণ শতেনচ স্বাহা।ইদ রাহবে ৷ ওঁকেতৃ ক্লমকেতবে পেৰো নৰ্য্যা অপেশসে। সমূসন্তি রজাবথা: স্বা-হা। ইদ কেতুভাঃ।। প্রেদীতএভি (त्रव मरिख क्र्रश्याः । #। उत्ताः मिक्कन मधी मुक्किल्ट । बद हरू হোন সমাপ্য চক্শেবেণ দিখ্যো विनित्रार। उपाया। अयं भारम ৰলিঃ ওঁপুটিচ্য দিশে নমঃ। এবমা-(ग्रेग) अवारिहा निषा रेडा भुड़ीरिहा वायरेवा जैनीरेहा अनारेना जेक् कि শে অধোদিশে। #1 ততো ঘৃতাক পলাশ সমিধা অস্টোত্তরশত জুহূ-যাদনেৰ নজেণ। ওঁ তাহিক্ষারি-ত্যাদি স্বাহাইন বিক্ষবে। ততঃ পু ৰ্বোক্তি শ্চক্ছোম**নপ্ৰৈ স্তৰ্ভদে**ৰতা-**छाः मु**रविभाक्षाल् शे क्र्रार। उउ আল্যেন পৃক্ষসূক্ত নবভি মাঁ সে: नामाना जुरुवार । यथा । उँ रेन বিষ্ণুর্বিচক্রমে ত্রেধা নিদপে পদ স মূচনস্য পা॰ শুলে য। হ। ১। ওঁ পুক-न्। विष्णागक्षमा, न्मशः भुगवाह

विष्णा काउरवष्ट्याः देवश्वानदाय ग-তি নব্যসি শুচি: সোম ইয় পহতে চাক तर्राय बाहा २। ७ अक्वीबर मूर्याव दुवारा (हरता रहवाना अ নিমা বিবজ্জি মছিবুত: শুচিব্দু: পাবক: পদা বরাছো ত্যেতি রেভন্ ৰাহা ০। ওঁ সহসুশীৰ। পুক্ষ: সহসাক: সহস্পাৎ। স ভ্নি॰ স ৰতো বৃত্বা অত্যতিষ্ঠ দশাঙ্গুল খা-श 81 उँ जिलान्ष्य मुरेन्ट श्रूक्यः भारता १८माहा खबर भूगः। उठा বিশ্বণ ব্যক্তান্ত শাসনান্দনে অভি बाहा ৫। ७ भूकर अवन अर्वन যজ্ত যা ভব্য উতাম্ত ব্বেস্ नाता यहरतना जिल्लाङ् आहा ৬। ওঁ এতাবানস্য নহিনাতে৷ জ্যা याःक भूक्यः भारतः २मः विषा **ভূতানি बिপाদস্যা মৃত• দিবি স্বা**-হা 🕈। 🕹 ততো বিরাডজাযত বিরাজো অধিপ্কযঃ। স জাতো অত্যবিচ্যত পশ্চাভূমি মথো পুরঃ बाश। ৮। ७ क्यान फिब णाजूव मृजी जरा वृदः जथा कया जिल्हेया वृजा साहा । #। यङ्दिनीजू। ষোডশোপচারপ্জোক পুক্বসূক্ত বোডশ মক্তৈ রাজ্যেন বোডশাহুতী ब् र्या । अयमिना मा (१८४०।। 🛊 ।।

ভঙ অভ্যানিশিতান ডিলান্ গৃ ছিলে 🐣 ইরাবতী বেনুনতীহি ভ্ छभ्जूयानिमी भन (वरणमा। वाडः জু: রোবসী বিষ্ণুরেতে রাবত পৃথি-वी बिंडा मग्रेथः बाहा। इर॰ विकात। इंडि मक्छ्यूशार। उ द-**आनुवाविख्यः सादा। ७** विकृन्याः विख्य श्राहा। ७ देणानान्यावि-वित् र्गिरिक्शामभेखक नक्ट सक्द -कुर्गाद । এव॰ পर्वाउछाः भ्या । ए नरी छाः स्राहा । उँ मम् জুলাঃ স্থা : এব• তিলহোন• স স্থাল শ্লেষণ মহাব্যাহৃতি**ভি রাজ্য** 🗝 🔑 🕾 ७७: शुायण्डिएशन अन्तर कहा भी जातादः विश्वनामाः জিতি নাম করা আবাহ্য পূজ্যিত্বা লারিভাষা দি**ন্ধ: স্বশাথোক্ত: প্রায**় কিন্ত হোমাদি কৃত্বা পৃণাহত্যা মৃ-भवन प्रानमान भूत्रविद्या घ्डभूनेमुः हा दियाय यक्षमारननाद्वातकः उ उ 👯 জাঃ পর্ম মিত্যাদি বৌষট্ ইত্যু ু 🦖 পূর্ণজ্জি ত্রয় দদ্যাৎ। তত াচারােঐশান্যা পৃথ্যি ত্ব শীত-चा उर इन्डायं। मुकारि किथु। मुन न्या ज्याना कमार्भमा बाग्य रहे जि ष्पित्रभि । 'अं यनमञ्ज खुरायूष' कछि ।

अयाक्षवानाः अप्रयूषः वाष्ट्रम्लायाः। ७ उत्म २ स ब्रायूव॰ इमि । यन् उन-ত্ক পক্ষে তৃতত্তে ২ন্ত ত্ৰ্যাযুষ মি-তি বিশেষ:। ততো যজমান: পঞ্-गवाः हकानवक शाना मादा वा भूर्गभाजामिकाः मिक्नाः तुकारा দদ্যাৎ ততো হেমযুক্ত সবজ্ৰ তিল পাত্ৰ অলক্তগ্ৰী তম্ল্ড যা এতকোম कर्म शुिकार्थ माहार्याग দদ্যাত। অন্য হোতৃ পক্ষে হোত্রে मन्त्राट । এउट क् उ कर्मना भीयठाः ভগবান্ বিষ্ণু রিতি বিষ্ণবে সনর্প-(यटाक्रा उठ: शुमार मम्यूथ उँ उ-ব্ৰিষ্ঠ বুহ্মণ স্পতে দেবা যজন্তত্তে ম**হে উপপু**याख सक्छः मृतानव हेन्तुः श्रा-শুর্বাসচা ইতি মজেণ দেবতানা-बीय विकृश्हम। मःभूत्थ शक्षः निव গৃহস্য ব্ৰণ দুৰ্গা গৃহস্য সিণহ সাপ-(१८। ততো गञ्ज नान्। वज्राहिन। इ পতি পরিভোষ্য ওঁ ইদ বিষ্ণু রি-চজনে ইত্যাদি পঠিত্বা ওঁচকায নম ইতি চক্র সংপ্রা গ্হোপরি यथा (यागार ठका मिक विनामा गृह বস্ত্রেণাছাদ্য গৃহদ্বারানুরপণ তোর-ণ বিধায গৃহানুৰূপ ঘণ্টা চানর কিঙ্কিণী জাল বৰ্ছিপত্ৰোপেত• স-वञ्ज यश्चि माना शुक्र गृहामाना

কোণে বাযুকোণে বা স্থাপয়েৎ। #1 **छा विक् भानगामाती यथाई** গৃছ সমীপে নীত্বা পঞ্চবিংশতি ষটি नीत्रिकत्वामरेकः शक्षात्र शक्षाम् ेठ छीर्थामरेकः मानः कात्रियु (बाउएमाभठात्रामिनिः भूकायर। वक्रामान मञ्जानाः लोब्रानिकरद्वन म्मागामभाविकातः। अवार्घा भाः बास्त्रमा (भाक्तिजः चामनः गृशीदा ইদনাসন ওঁসর্বান্তর্যামিনে দেব नर्व वीक भयः ७ छः। आञाङ्गाय পর भूक मामन कन्नयामाइः॥ 'अं विकाय नम इंजि मूर्लन प्रकार ว । उउ: क्ठाक्षिः । 'उँ यम् रम्म न भिष्ठां (नवाः अञ्चिष्ठ निष्ठाय । তথ্যৈ তে পর্মেশায স্বাগত• স্বাগ उकरम ॥ क् अर्थानूगृशीः अधि সফল জীবিত মম। আগতো দেব দেবেশ সুস্থাগত মিদ• বপুঃ।৷ বিষ্ণো স্বাগত মিতি স্বাগত পুশঃ২। তামু-পাত্ৰস্থ শ্যামাক দুৰ্বা পদ্মাপরাজি-ত। युक बनः गृशेषा। अयस्किता শ সম্পর্কাৎ পরমানন্দ সম্ভবঃ। ত মৈতে চরণাব্রায় পাদ্য শৃদ্ধায় কল্প य।।इज्रुहार्य्यभ्तनभामस्यापन्त्रार **এটেদনাসন মিতীব মন্ত্রস্য পূর্বমে**-তৎ পान्। निि शुर्याका त्व मूख

রত্রকথা যোগ্য মুল্লেখঃ। গদ্ধ পুত্রা-क उ यर समाग् जिल प्यं उन्यंभ म्बीञ्चक **मर्थाः भ**ङ्गञ्च गृशीव्¥ि ७ তাপত্রয় হর দিব্য পরমানন ল-ক্ষণ। তাপত্ৰয বিনিমুক্ত তবাৰ্ঘ্য कञ्जयामाइ॰।। इंडि म्रावन नित्रनि पर्पा 8। जाजी नवक करकान गू-ক্ত কেবল বা জল গৃছী ব্বা ৷ ওঁ দে-वानामिश (एवाय (एवानाः (एवछ) जात्। जाजायः कन्नयामीणः मुखाः না শুদ্ধ হেতবে।। ইভি মুলেন मन्। १८ १ का माइ मिल मधु मृ-তাত্মক কাংশ্যপিহিত ন্ধুপর্ক भृशीचा। ७ मईकन्त्रवशीनाय भविभून मुराजात । मधुनकं मिम (प्रकन्ने-यानि भुत्रीर भा हेि म्लन प-म्। ८ १ भूनद्राहमनीयः गृही द्वा । अ উছিষ্টোপ্যসূচি ৰ্বাপি যস্য মরণমা ত্ৰতঃ। শুদ্ধি নাপ্নোতি তমৈ তে পু-नद्राह्मनीयकः॥ इंडि मृत्वन मम्। পালৌকিক ষষ্ট্যধিক **শতত্ৰযভোল**-कान्।न॰ छीर्थङ्गल॰ गृहीद्या। ७ न-त्रगानन्त्रवाधाकि निमग्न निकम्खंय । जारकाशाक भिष् ज्ञान कल्ल्या-ম্যন্থ নীশ তে॥ ওঁ তদ্বিফো ব্লিতি म्लन पराष्ट्र ৮। भूर्वती छा। भूनः बाहमनीयक पर्गाट । व्यर्गाञ्चमा

প্রেক্ষিত বর গ্রীজা। ওঁ মাযা চিত্র পট इন্ন নিজ গুছোক্তেজসে। নিমাবরণ বিজ্ঞায বাস স্তে কল্পযা म्बार्डि मूलन मन्त्राया २ । উত্তরীয়বন্ত্র-গৃহীত্বা। ও যমাশ্রিত্য महामाया खग ८ मः स्माहिनी मना। ভদ্মৈ তে পরনেশায কল্লযামু/ভরী যুক্ত । ইতি মুলেন দদ্যাৎ ১। ততঃ ाण्डवः भूनदाव्यनीय**कः मन्त्राट** । भुवर्षम् प्राच्दतः सर्वे । स्थास्य । **७ यज्यव मृन्स्त्राक्षाय नानामक्रा**-শুষ্ম তে। ভূষণানি বিচিত্রাণি ক ল্পথান্যমরার্চিত ॥ ইতি মূলেন দ म्राट २०। (शाकिक अञ्चन गृशेदा । ওঁ পরমানন্দ সৌরভ্য পরিপূর্ণ দিগন্তর। গৃহাণ পরমণ গন্ধ কৃপ या भवसम्बद्ध ॥ इंडि म्लान म দ্যাৎ ১১। তত্তদ্বেতা পূ্য পুত্ন-मानाय। ७ जुतीय वन मसुख नाना छ। मताङ्यः। आनन्त सोज्ञाङः পুল্ল॰ গৃহতা॰ পরমেশ্বর ॥ ইতি म्लन पर्शा २२। ध्रा (शाका ঘটা সংপ্জা। ও বনম্পতি রসো **क्तित्रा गन्ना**ढ्डः नूमत्नाङ्तः। जा ध्युयः मर्ब (पवानाः ध्रामा २यः भुजि गृश्वा ।। ইতৃ।हार्य। वास इरखन व ण्डाः वास्यम् मूलम् सम्प्रादः २०।

ততো ষ্তাদি পুদীপমাদায। ওঁসু পুকাশো মহাদীপঃ সরত ভিমিরা পহ: ৷ সবাস্থাভ্যন্তর জ্যাতি দী-পো হয় পুতিগৃহ্য তাং ॥ ইতি মূ-লেন দদ্যাৎ ১৪। প্রোক্ষিত নানা-विश्व देनविष्ठाशित्र न न ग्रम पुरा मू ल मिथा जञ्जा २ छ। ई। (धनुशुपुरा-মৃতীকৃত্য৷ ওঁ সৎপাত্র সিদ্ধ সৃহ-বি বিবিধানেক ভক্ষণ । নিবেদ্যানি দেবেশ সানুগায গৃহাণ তৎ ॥ ইতি म्राचन मन्त्राट २० । जनमानाय उ সমস্ত দেবদেবেশ সর্বতৃপ্তিকর পা-त•। अथ्छानम् **म**र्ण्ण गृहान जन मुख्य-॥ इंडि म्रावन मन्त्राट २०। भू ईदर भुनताहम नीयका जामृषः गृ-की वृ। । ७ जा मृत्र । प्रवास्त्र म कर्न् রাদি সুবাসিত । কল্লযানি তবেশা-न वहनास्त्राङ्ग ভূषभः ॥ ইতি মূলেन मम् १९ १८ । उठ खल्पास्व । नगः कान्नमरेख वंन्सन अर्यप्राथ। ७५। छै-भठात मुव्याथातमात माधातरद्वताः **ह्मिथः পृथ**्वा **उ**क्तानः। # । उउ उँ বিষ্ণবে ননঃ ইতি ত্রি: সংপ্রা ঘণ্টা বিভান ভোরণ যুক্ত• বস্ত্রাদিছাদিত• বেশ্ম প্রোক্ষ্য ওঁ বিষ্ণবে নম ইতি ব্রিঃ সংপ্রা ওঁতদ্বিষ্ণে রিত্যনেন विकु मृद्। उँ उर मित्रुहार्य। वान

इरउन एदा भग जिल जलान्यारा-। ষ অদ্যেত্যাদি অমুকণোত্রঃ ত্রীব্দ-যুক দেব শর্মা এভভূণ কাণ্ঠাদি ম-যবেশাপরমাণু সনসংখ্যবর্ষ সভ্ সাবছিল স্বৰ্গলোক নহি তত্ত্ব কালো বিষ্ণু শুনিভিকানো বা এতত্ত্ব কাঠা **मिमगति । विक्षु मिन्छ । दिक्शत क्** खा अष्ट् अल्लाम्हाम । इजुर्म्हाहर । इक्षेत्रामिया जु अजिम्ब्रेकामिया (वन्य भवगान नगमः । वर्षमञ् দশগুণ কালাবছিম সুৰ্গলোক মৃহি তত্ব কাম এতদিষ্ট নাদীতি বিশেষঃ । এতং পুতিষ্ঠার্থ সুবর্ণ তল্ল্য या प्रक्रियाः विकास प्रमाट । भन्ना দাচার্য্যানৌ পুতিপত্তি:।#।জভো (मव॰ सय॰ गृशीदा गृश शुप्तकिय॰ कात्रयिद्वा ७ जुनु कर्लिङ: भृगुराम দেবা ভুবু• পশ্যেনাকিভি র্যন্তরাঃ ছিরে রকৈ স্তষ্ট্রাণস স্তন্তি ব্যসে म (म विश्व : यमागृ: 1 ইত্যনে ना ভि নিব্ৰিত দেব গৃহ পুবেশহে । ওঁ দেবস্যত্বাসবিতুঃ পুসবে ৎশ্বিনোর্বা ञ्जाः भूका रुखाजाः रुखनाम्त ইতি নত্ত্বেণ পিণ্ডিকোপরিন্যাস্থ। ওঁ স্থিয়ে৷ ভব বীডদ্ব আশু র্ভব বা-क्ष्यंन् भृष् चंव मृत्रस्युत्व भूशीय वाहनः। इंडापन स्त्रीनवीयः।

পুন দেবি সংপ্জ্য যথাশক্তি চান্ত্র ষণ্টা বিভাৰ গো হিরণ্য গ্রাম বা-म ज्ञाखामिक मम्बार । उञ्च खँ यावश्वद्राथः बादिया स्वविश्वश्विक्षः দিনী। তাৰদত্ৰ জগন্ধাথ সন্নিধী ভব কেশব।। ইতি মন্ত্ৰণ পঠেং। ততে। ধুর সমী পং গড়া সংগ্রোক্ষ্য তনা-রোপযেদনেন মন্ত্রেণ ওঁএছেহি ভগবদীশর বিনির্মিত উপরিচর वायूमार्गानूमादिन् बीकद्र शिनिवाः म त्रिभूष गक्त मूजनाधिलग मर्ब-(१व ठात्रस्य ठ व्यक् माडि॰ ऋस्रुयन-খ নে ভবতু সর্ব বিম্নান্ হর হর ৰাহা ও পুজায নন ইতি ধুজ সংপ্-জ্য ওঁবিষ্ণবে নন ইতি ত্রিরভার্ষ্ট্র धूज मार्शाका वागहा अन्यः ব্যেভ্যাদি অমুক গোত্র: এঅমুক **দেবশর্মা নহাপাতকাদি বহুপাপ**-ক্ষমকানো বিষ্ণুপ্রীতিকানো বা বিষ্ণু বেশ্মনি ইম॰ ধুজ॰ विक्रुरेमवज॰ विक् व ज्ञा भरु में भूपार । हेज्र्र मृहा এত পুতिशाय मिक्का विकाद मन्। भकामाठार्यप्राप्ती भुजिभ-ৰি:। ততো গৰুডহুস্তু- সমারোগ্য ওঁসুপণাংসি গৰুত্মাণ জ্বিবৃর্ত্তেশি-রো গাযত্ত্য চক্ষু वृ श्रूष खरत शको १रखाम व्याका हन्सा माञ्चानि वहू .

बिनाम मागल उन् दीमरमनाः य-खाविख्य शृह विद्वाण मकाः मूंअर्ला शति गक्जानिस्व गह सः পতে ।। যজুর্বেদী ত । 🗸 সুগর্শে। **ৎসি গৰুজ্যান্ ত্রি**য়ুক্তে শিরো গাযত্র° চক্ষু স্তোম আবা। সানতে তনু বান (एत्र) तृक्षुथञ्जत शाकी यञ्जाय-क्तिय भूहकृत्याः मध्यानि विकियाः শ্কাঃ যজ্ওঁ বি নাম 1 সুপর্ণোসি গৰুব্বানিবে গছ সুবংপত ইতি পঠিবৃঃ। ওঁ গৰুডাথ নম ইভি ঞিঃ সংপ্রহ্য ওঁ নম তে পত্রগ শেষ্ঠ প भगान्त्र भूता। वृद् भुगानाच श्वाताः भारतयः मिनि प्रविद्या যথা বৃ সংপুটকরঃ সতত নতক भद्रः। जरेषव भूद्राउ। विष्का खुट भुमानाख्यानाइ॰ ॥ ইতি भूटोख-निः भार्थायः । #। उठः भिष्ठे भु मीशारिना निर्माक्तः **म**र्यप्राट । ততा বি শান্যন বাহ্মণেভ্যোভোজ্যানি দ म्राट् । मीनानाथ क्षण विश्वत्छ्रा यथामकि महादा ७७: शीयठाः भूखदीकाक मर्बराक्तयादा इति:। ভিমা-স্তাষ্টে জগৰুষ্ট পূৰ্ণীনিতে পূৰ্ণি **७ कार।। उ**छ। मृत्र भी त्वा मिल नियरेन मंहा ८ मव क्त्रा यहि मात **पात्र १ क् द्वा दिख्गु मनादानार्थः छ- ॥**

ছিকো ব্লিভি বি<mark>কু॰ মারেৎ 1 #</mark> 1 এব॰ কৃদাহি মঠাহি পুতিষ্ঠাবা আসনা-দিকন্ত ভতন্মস্ৰ বিহাব কেবল পু-শবাদি নমোন্তেন তত্তমামা দত্ত্বা যথা যোগ্য ভত্তং কর্মশেষ যবাপ-বেং ক্লেক গো**লখানি প্রতিষ্ঠা**খা उट मभील (विषकाः कृषा उखट कनकारमा विष्कृतीिककारमा वा छ-ত্তৎ পুভিষ্ঠা• করিষ্যে ইতি সঙ্কল্প্য বৃদ্ধিশালাদিক বিধাৰ পাশুক্ত বি-बिना ग्रेष्टाभनामि এउ८ कर्माण श्री-যতা ভগবান্ বিষ্ণু রিভান্ত কর্মা कृदा कृशानिय मर्बज्या छैट जुड़ा मिक्का॰ मन्त्राट । 🛊 । निगम বুতাদি পৃতিষ্ঠাবান্ত বিষ্ণুরিত্যন্ত ক र्थाक्षा वुजान्धान क्षा मिक्षणामि-क अर्था । 🗱। उठा घटेश हालन यजनान मिल्किट । उप्तथा। ७ मूता ख्वा न ভिषिक्छ तुका विक् ग्रह सदाः । वामूप्रदा जगभाय खया मक्षर्या विज्ः॥ भुम् । भागिकका जवस বিজ্যায় তে। আখণ্ডলে। ২গ্নি র্ভগ-वान् गत्मा देव रेनर्था उ खथा ॥ वक्नः श्वनरैक्टव धनाभाक ख्रथा कियः। বুন্দণা সহিতঃ শেষো দিক্পালাঃ भान (७ मरा॥ कीर्जि वंकी ध् कि (स्था পुष्टिः गुषा क्या मिडिः। दृषि

र्याङ्गा वशुः मास्रि स्रिष्टेः शूक्षिण ं माठतः॥ এठ। खा मिंचियः छ দেবপন্ন্য: সনাগতা:। আদিত্য শ্চন্দুনা ভৌনো বুধ জীব সিতার্ক-জা:।। গুহা স্থা মভিষিঞ্জ রাহু: কেতৃশ্চ ভর্পিতা:। দেব দানব গ-ञ्चर्डा युक्क द्राक्षम श्रम्भगाः ॥ स्थर-থো মুনথো গাবো দেব মাতর এবচ । (नवश्राङ्गा २४वा नामा देनजा শ্চাপ্পরসাংগণাঃ ॥ অস্ত্রাণি সর্ব-শাস্ত্রাণি রাজানো বাহনানি চ। **अयथानि** विविज्ञानि कालम्यावयः বাচ্চ যে ৷৷ সরিতঃসাগরাঃ শৈলা खीर्थानि जलरा नराः। এতা खा गिक्षिक धर्म कामार्थ निष्करंग ॥ # ॥ इंडि मठाहि পु डिक्षा भुर्या ग তত্ত্ব সমাপ্ত ॥

মঠর: পু॰ মুনিবিশেষ:। ইত্যুগাদি কোষ:॥

মৃড ই ক মোদে। ইতি কবিকল্প জনঃ।। ই মণ্ডযতি। ইতি দুর্গা দাসঃ।।

नि इ कि ज़्रि। इठि किविक्तक्रमः व्हानुः। অलिङ्गतः। इठि मिस्ती ।। मध्यि मध्यि स्थित हात्रा कनः। ।। यान्रागुजागः। इठि मस्त्रज्ञा विद्या । इठि मस्त्रज्ञा विद्या । विद्या । इठि कि कि स्वा । स्विक्तः। इठि हिन्द्रा। स्व क्ष्या । इन्थ्रा हिन्द्रा। स्व क्ष्या । इन्या हिन्द्रा। स्व क्ष्या । इन्य क्ष्य । इन्य क्ष्या । इन्य क्ष्य हिन्द्रा । इन्य क्ष्या । इन्य क्ष्य हिन्द्रा । इन्य क्ष्य

३७ मूर्गामानः ॥

मफकः पू॰ भन्गु (छनः। (मफुरा ३७)

छारा। ३७ कि विश्वतः॥

मुट्टुक ३७ वाम्य विष्मासः। ३७ प्रमाः॥

मुट्टुक ३७ व्याकः। विष्मु (लाफनकः

मञ्जुः प्रविकासः॥ मफ ३७ दो छि

३७ मञ्जुः प्रविकासः॥ मफ ३७ दो छ।

३७ मञ्जुः प्रविकासः॥ मफ ३७ दो छ।

इठ मञ्जः प्रविकासः॥ मफ ३७ दो छ।

इठ मञ्जः प्रविकासः॥ मफ् ३७ दो छ।

इठ मञ्जा प्रविकासः॥ मफ् ३७ मन्।

पार्युक मा छ।

विश्वति मुक्ति विभावा दा। ३७ छ।

छत्रकः॥

भडुकः शृ भडुवार्गः। ইछि विका-अःगरः॥

মণ কুজে। ইতি কবিকল্পজম:।। মণ-তি। কুজে **ং**ব্যক্ত শব্দে। ইতি দুর্গা-দাস:।।

শণিকর্ণিকা দ্রী কাশীস্থতীর্থবিশে-र वः। उद्दर्भाख र्यथा। दिक्रुः भुजि **नि**व वाक्रा । वृत्तीयम्राम् उभरमा भरहा भाष्ट्रय मर्भाना । यद्मयारम्ता-লিভো মৌলি রহি শুবণভূষণ: । ভদান্দোলনতঃ কর্ণাৎ পপাত ম-ণিকর্ণিকা।। সণিভিঃ খচিতা রম্যা ততোহন্ত মণিকর্ণিকা।চক্র পুষরি-ণী তীর্থণ পুরা খ্যাত মিদণ শুভণ।। चुयो फूटकन अननाइइ ठक गमाध्य । মম কর্ণাৎ পপাতেয়• যদা চ ম-ণিকণিকা।। তদা পুভৃতি লোকেত্র খ্যাতান্ত মণিকর্ণিকা। প্রীবিষ্ণুক-বাচ। মুক্তাঙ্গগুল পাতেন তবাদ্রি তন্যা পুরুণ। তীর্থানাণ পমরণ তী র্থ•মূক্তিক্ষেত্র মিহাস্তবৈ।।কাশতে **ৎ**ত্ৰ যতো জ্যোতি স্তদনাখ্যেয় মী শ্বর। অতো নামাপরঞ্চাস্ত কাশী-তি পুথিত বিভো।। অন্য বরণ বরে দেব দেয়ঃ সোপ্যবিচারিত । সতেপরোপকারার্থ জগদুক্ষা মণে শिव II जा तुका सञ्च भर्याञ्च॰ य**८** কিঞ্চিজ্জ সংক্ষিত। চতুৰ্ ভূত-গ্রামেষু কাশ্যা॰ তন্মুক্তি মাপ্ল্যতি॥ তমিং ভীর্থবরে শস্ত্রো নণিশুরণ-ভূষণো সন্ধ্যাণ স্থানণ জপণ হোমণ विषाधायम मूखन ॥ उर्भन शि

अरानक (रवजानाक भूजन। (भा ভ্ তিল হিরণ্যাখ দীপান্নাম্বর ভ্ यगः॥ कन्यामानः भ्याङ्गन अञ्चल्छ नत्नकणः। बुर्जाट्मर्गः वृरमार्मनः লিঞ্চাদি স্থাপন তথা।। করোতি या महाशुर्वि जा द्वायुः कन ग-ত্বর॰। বিপত্তি বিপুলাঞ্চাপি স-ম্পত্তি মতি ভঙ্গুরাণা অক্ষয়া মুক্তি রেকান্ত বিপাক স্তম্য কর্মণঃ। অ-नाहािश मुङ कर्य यम्द मुक्तया হুত ৷৷ বিনাম্মঘাত মীশান ত্যক্ত্বা भारयाभरवणनः। तिः भ्यम्। भि-या एड्जू उरस्र जगरी यत्र ॥ नानू-**লোচতি নাথ্যাতি ক্ত্রা কালান্ত** রে ২পি য়ং। তদিহাক্ষযভামেত্র जरमान प्रतृश्हार ॥ **जव भूमा**नाः खानाङ् मर्व मक्षय मञ्ज ७८। यह-স্তি যন্তবিব্য**ছ যন্তৃতঞ্চ সদাশি**ব ।। जमारिकः नर्यमाट क्लबम्ब শুভোদ্যণা ইতি কাশীখণ্ডে মণি कर्निकार्थान नाम २७ व्यथायः ॥ নণিকানন ল্লী কণ্ঠঃ। ইতি শব্রত্মা वनी ॥ রত্মবनकः॥ ন্দ্রিকার: পু॰ ম্ণিনির্মিতালক্কারা-**मिकर्जा। जोरुद्रि हे** जि जारा। उ९

भय्यायः। देवकिकः २। ইতি एका

हन्मुः ॥ न्राय्हिसाग्निक्ला हा।

মণিকুটঃ পু॰ পর্তবিশেষঃ।যথা। मिक्टेम्याथ जिद्ध र्वस्मामनकम् চ। নধ্যে সুবতি লোহিত্যো ৰুকা-পুত্র: সমাস্থিতঃ।। হত্ত্বা জ্রণ তথা विक उर्व वान गथाकरता । नव (एवा जुतामीना॰ यथा **ভव**ि देव हि-ত ।। জ্রেণাপীডি চ তনু জুরি হ-ত্ব। নহাদুর•। সর্বলোক হিতার্থা য সো হগদসান মাচরেখাে অগদ সুনে সংভূত সংজাতঞ্ মহাসরঃ। **७**म् अयः नाम চক्रে इयग्रीताश्त्रुन র্ভব॰॥ न পুন জায়তে য়ম্বাৎ ভতঃ क्षाञ्चा नरताखगः। অপুনর্ভব সং জ্ঞ• তৎসরস্ত পরিকীত্তিত ॥ মণি क्रीहल विक इंग्जीव अक्स ध्का। गठ व्याम भूमारान विखाः द्वरान স•স্থিত:।। ইতি কালিকাপুরাণে ৮০ অধ্যায়ঃ ॥

নিথিনিঃ পু॰ মণেরাজরঃ।যথা। নণেঃধনিঃ। ইতি নুধ্ববোধব্যা করণং:।

भिग्नीयः भः स्वतंत्रभवः। ইতি भदः तञ्जावनी ॥ तञ्जकातंत्र जि ॥ भिक्षितां जी स्मानामोषयः॥ श्र-यजार्थनोषयः। ইতি स्मिनी ॥ भिन् क्षं सिथनकानीनवाकाः । उद्भिश्चाः। त्रक्तिः १। ইতি श्चिम्पुः ॥ मिन्नातः भ् मात्रमभाषे ॥ देखि त्राजनिर्यणः॥

মণিছীপঃ পৃণ লী ক্ষীরসমূদুমধ্যে পদ্মরাগাদিমণিম্যান্তরীপঃ। স চ ক্রিপুরস্কারী বাসস্থানং। বথা। সৃধাসিকাে মধ্যে সূর্বিটপিবাটী পার্নির নণিছীপে নাপোপবন্বতি চিন্তামণি গৃহে। শিবাকারে মধ্যে পরমশিব পর্য্যন্ধ নিল্যাণ্ড জন্তিত্ব গোণ্ড ধন্যাঃ কতিচন চিদানন্দেহ নরীং।। ইত্যানন্দলহরী ।।

मिनर्बिछः शृ भितिविष्णयः। यथा
। ज्ञा श्रञ्जा प्रितिविष्णयः। यथा
मिनर्बिछः। ज्ञा श्रृणा वर् बीछा
स्मान्य । ज्ञा श्रम्णा मिन्राः
स्मार्गामा मिन्रम् प्राचा । मिन्रम् प्राचा । स्मान्यः
।। माजात्रम भागामा प्राचा । स्मान्यः
।। माजात्रम भागामा प्राचा । स्मानि । विम्रम् मुश्चिछ भावाछः
भूवाछो मिन्रम् मुश्चिछ भावाछः
भूवाछो मिन्रम् भूविछ भावाछः
भूवाछो मिन्रम् भूविछ भावाछः
स्मान्यः ।। भावा बीम्रम् मिन्रम् भूवा
स्मानिः मान्यका गिति कन्मरत्।। मान्रस्य भूवा
रम्।। मान्रस्य स्मानिति कन्मरत्।। मान्रस्य स्मानिति क्षानिति कन्मरत्।। मान्रस्य स्मानिति क्षानिति कन्मरत्।। मान्रस्य स्मानिति क्षानिति कन्मरत्।। मान्रस्य स्मानिति क्षानिति क्षानिति क्षानिति क्षानिति स्मानिति क्षानिति क

ত:। ইতি নহাভারতৈ হরিব শে। প্রক্রবধান্যায়:॥

মণিপুর ল্লী ষট্চক্রান্তর্গত নাভিমধ্য **इ ठ्डीग**ठक•। यथा। उन्द्र्यं नाजि (मरम जु मिर्न नह ८ भू छ। । । । -याङ विमुत्राङ्क वङ्ख्डामयः **७ जः॥ गांग विख्यः उ**९शम् भ-ণিপ্র• তথোচ্যতে। দশভিশ্চ দ रिन ग् कि छानि का डाका ता नि छ।।। নিবেম্বাধিপ্তিত পদ্ম বিশ্বালোকন काরगः। ইতিতস্ত্রণ।। তৎসাধিধান शर्दिगाञ्च (मत्म ভिष्ठे छि। यथा। এতং পদ্মস্যোদ্ধ দেশে নহাপদ্ম• সুৰুল ভাগ । দশপত্ৰ গীলবৰ্ণ সজ षः (यात्र क्षत्रकः ॥ जानि कारिष्ठः महरेनु क शक्क इक्षा जिल्ला छनः। তন্মধ্যে বীজকোষে নিবসতি সত ভ বহিবীজ সুসিদ্ধ। বাহে তগ্ৰৈ পুরাখ্য নব তপন নিভ স্বস্তিক ত্রভাগে ৷৷ স্বর্ণকাখ্য মিদ দেবি **मर्वापव পুপ্**জि**छः। সাকার** বङ्कि वीज्ञक्ष मरिष्व (सव वारुन ॥ कृष्)-ল্য-ছি ত্ত্ৰৈব নহানোহস্য নাশ नः। जनुकाली महाविष्ठा वामजा-গে সুশোভিতা।৷ইতিনিৰ্বাণভক্তে ৬ পটল:।। তত্ৰ দেবতীৰ্থণ যথা। स्विभूत (मव्जीर्थः भक्षक्र ७ म तावतः। তত্র প্রকামনান্তার্থ বাতি গো মুক্তি গিছতি।। ইতি কণুयानवः।। খনামখ্যা उरमण्ण ।।
নিবিদ্ধঃ পুং প্রেছপাণ্যাঃ সন্ধিছানং। কল্লা ইতি ভাষা। ইত্যনরটাকাষাং ভরতঃ।। মন কর ম্যাদিভাগঃ। তৎপর্যায়ঃ। মণিঃ হ।
ইতি হেনচন্দুঃ।। কর গুদ্ধিঃ ও করগুদ্ধিঃ ৪। ইতি শব্দর হাবলী।।
তম্য শুভাশুভ লক্ষণং যথা। মণিবলৈ নিগ্তৈশ্চ সুমিষ্ট শুভ সন্ধিভি:। নূপ। ছানিঃ করছেদ নশব্দে
ধন বক্রিভাঃ।। ইতি গাক্তে ৬৬
অধ্যায়ঃ।।

भिनिष्टुः श्रु जिनानाः शृबंयक्र वि-(भिषः । उ९ शर्यप्रायः । जस्रुनः २ शृबंयक्षः ० जलन्तुः ८ । ইঙি তিকাওশেষः ॥

भिष्ट्रिः जी तन्नग्थिनः। उद शर्यप्रायः। अधिनः २। ইতি শব-तन्नावनी ॥

মণিন গুপঃ পু॰ রত্ন নগৃহ । যথা।
মধ্যে সুধান্ধি মণিন গুপ রত্নবেদী
সি•হাসনোপরিগতা॰ পরিপীতবর্ণা॰। পীতায়রাভরণ নাল্য বিভ্
বিতাহ্বী॰ দেবী॰ নমামি পৃত মুদ্ধ
বৈরিজিস্থা॰ ।। ইতি ক্দুযানলে

वगनालाजः॥

मिन्गरः क्री रेमक्षवणवणः । ইতি

जाक्रिविष्टः ॥ शर्व उतिरमयः । ইতি

भागिभञ्चमद होकायाः ভরতः ॥

भगिभान् वि भगिविमिष्टः । जञ्जू
विजः । भगि ज्ञुषीि भज् भुजुरयन

निञ्चमः ॥

भिगाना जी हातः॥ महक्विति भियः। ইতি भिमिनी॥ नक्तीः। ইতি भिमित्रज्ञावनी॥ मीथिः। ইতি भिम्माना॥

মণিরাগ• ক্লী হিস্কুল•। ইতি রাজ নির্ঘণ্ট:।। মণের্বর্ণে পু•॥

भिन्दः श्रू॰ नागितिष्मयः। भिन्दा-मखुर्श्य व भुजुरयन निज्ञमः। ইजिः मिकास्टरकोमूनी ॥

মণিবীজঃ পু॰ দাডিমবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

নশিসর: পু॰ মুক্তাহার: । যথা।
ঘটযতি সঘনে হৃচযুগ গগণে মৃগ
মদ কৃচি কৃষিতে। মণিসর মনল
ভারক পটল নথ দশ শশি ভূষি
তে।। ইতিগীতগোধিনে ৭ সর্গঃ।

মণী স্ত্রী মণিঃ। ইতি ভরত দ্বিকপ কোষঃ।।

भगीठक की हम्मुवर्गक्ष भाग । उट शर्यायः । इन्मूका छः २। इंडि बि- কাওশেষঃ ॥

मगीवनः भृ मद्मात्रक्षकी। यथा
। याणाणी मद्मात्रकः माङ्कलमम्खर्मगीवनः। ইতি হারাবলী।।
मगीव वा मगिज्लाः। मगिणस्म
मह हेव णस्मा यशे उद्भुक्ष ममामः॥ भृथम। द्विववनास्त्र मिणसाद हेवार्थ व ण्युस्त वा णस्मारणावः क्षाः। यथा। मगीवाद्धःमाः
वि कु हेवार्थिव णस्मा वा गर्मा वा
राधाः। हेि मिकास्त्रकोम्भी।।
मगीवनः क्षी भूमः। हेि हिम्मव्युः।।

मशेः भू॰ वहेकविष्णवः। गाँछ। ইতি
हिन्दी ভाषा। यथा। मिन्छा॰ मर्फरयहारेका कंट्याभि ह मसरयर ।
व्यमास वहेक॰ कृषा भटिर मिर्भिष नीत्रमः।। এला लवस कर्भृत मित्रहारेदा तलस्छ। मब्बिया मिर्छाभारक उठ उद्ध ममूब्दार ।।
व्यथः भूकातः मः मिर्खा मशे ইত্যভिदीय । व्यमा खगः ममधुदा खकः
। भिजानिल हदा कहिं।। हीकानीनाः मूभ्किजः॥ भुकाता छतः यथा
। मिर्छा मिर्छा । भुकाता छतः यथा
। मिर्छा । भुकाता छतः यथा

অপরেপি যে। পুকারা অনুনা তু ল্যা স্তে প্লি চৈতদ্ভণাঃ মৃতাঃ।। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

মণ্ড॰ দ্লী পু॰ সর্বেষামন্নদণ্যদীনা-মগুরসঃ। মাঁড় ইতি নাত্ ইতিচ ভাষা। ইত্যমর ভরতৌ।। সারঃ॥ পিছে। ইতি মেদিনী॥

मुख् क्ली मुखा इंजि (मितनी।। मुखः भृ॰ এর গুরুক্ষঃ।। শাকভেদঃ। ইঙ্ মেদিনী ॥ मस्र ॥ ভ্ষা ॥ সার্ ।। পিছ । ইতি হেমচন্দু:।। দুর্দ্র:॥ ভক্তাদিভবরস:। তস্য লক্ষণ । ভক্তৈ র্বিনা দুবো মণ্ডঃ পেয• ভক্ত সমন্বিত•। ইতি রা**জ**-निर्घण्डः ॥ 🗱 ॥ व्यथ न ७ म ५ लक्क १० বিধি র্গণাশ্চ। তণ্ডুলানাণ সুসিদ্ধা-না॰ চতুদশ গুণে জলে। রসঃ সি-ক্লৈ বিরহিতে৷ মণ্ড ইন্ত্যভিধীয়-তে।। শুগ্রী সৈদ্ধব সংযুক্তো দীপনঃ পাচনক্ষ সঃ। অন্নস্য সম্যক্ সি ষ্ক্যাত্র জ্ঞেষা মণ্ডস্য সিদ্ধতা॥পে-या गृष गवाग्ना॰ विल्लभी ভক্তरा রপি। তস্য গুণাঃ। মঞ্জো গুাহী লঘুঃ শীতো দীপনো ধাতু সান্য-क्८ । जुत्र इ उर्भाग वन्ताः भिज শ্বের শ্নাপ ইতি ভাবপুকা अक्षा अक्षान्य । अर्षा श्रुष्का थरना व

স্তি বিশোধনক্ত প্রাণপুদঃ শোণি-ত বৰ্জনশ্চ। জ্বাপহারী কফ পি-ख रखा वायू॰ जायमधे खाना हि म खः ॥ 🗱 ॥ लाजन(७। २०१ जनता मारु তৃষ্ণা নিবারণ:। জুরাতীসার শন-ता रुष्पयकायाम भावनः ॥ 🖚 ॥ বাট্যমণ্ডো হগ্নিজননঃ শ্লানাহ বি-नामनः। भाहत्ना भीभाना वृष्ठः भि-ख (स्यानिनाभशः ॥ वाष्ट्रेप्रत्था ভৃষ্ট যবমণ্ড:। ইতি রাজবল্পভ:।। মণ্ডকঃ পু॰ পিষ্টকবিশেষঃ। মাঁডাইতি हिन्ती ভाষा। यथा। शाधुमा ध्वला থৌতাঃ স্বিতীয় শোষিতা স্ততঃ। প্রোক্ষিতা যন্ত্র নিশ্লিষ্ঠা শ্চালিতাঃ সমিতাঃ মৃতাঃ।। বারিণা কোম-लाः क्वा मिञाः माधू मर्प्रायः । **হ**স্তগলেন যা তস্যালোপ্রী সম্য-क् भुमात्रराष्ट्र। याथामूथ घरिमाः **७** विख्ड॰ পुकिरभद्दिः ॥ मृद्ना বক্লিনা সাধ্য: সিন্ধো মণ্ডক উচ্য-ত। लाश्री लही इंडि लाक।। पूर्विन माज्य थएउन मधक छ-कृर्यम्बद्धः। व्यथवा त्रिकः गाःसन সতক বটকেন বা।। তস্য গুণা:। मखरका व्रश्रा व्राच्छा कि

করে। ভূশ। পাকে ২পি মধুরো-

गारी वयु (फीरवगाशरः ॥ ইভि

ে ভাবপুকাশঃ। গ্লা গীতা স্বিশে यः। यथा। कर्राभुगः कलाभण क भवः मुन्स्त उथा। भक्षा वहा उ শেতি মণ্ডবা: ষট্পুকীন্তিতা:॥ ভ্রমপ্রিয়ো হ•সতালে লঘুমধ্যে য मा ७कः। উनविष्ण ठाक्करेत्र यु क्ति। द्राप वीदि न व इंटि ॥ नघू खंक नंघू যত্র হংসভাল: স উচ্যতে। ১। कनारभा तक जारन यूरका (तरे मू রসে হি সঃ। দ্বাবিংশত্যক্ষরৈ যু-का वधु तारि। एक **द**ग्।। वधु ता-দৌ গুৰু দ্বন্দৃ• রঙ্গ ভাল ইতীরিত: । २। वव घमुः ७क रेन्ट्राका श्री-লোহত সগণাত্মকঃ। পঞ্চবি শত্য-क्रदेतः भाष कमनः भाष शमाः (या: ॥ ७॥ ७क (त्रका नघु वन्दृ॰ ত্রিপুটে ভগণাত্মকে। অষ্টাবি**-শ**্ **७**ऽक्रदेवस मृक्षात मृन्तरत मञः॥ 8 !। आफ्रो छक वयु र्मार्थ्य क्षा छ। **ং**ত্ত ভূ**ন্ধ** তালকে। একরি:শত্যক্ষ रित्रस वींद्र मक्त मखकः ॥ ६ ॥ ষ্ডমিতা পুএকে তালে গলসাগল গাত্মকে। চতুক্তি শদক্ষরে। ২য॰ বল্লভো রৌদুকে রসে॥ ৬॥ ইতি मङ्गी उतारमामद्रः ॥

মতান ক্লী ভূষণা। অলঙ্করিফুনি ত্রি ইতি নেদিনী। চতুর্ধা মণ্ডনা वारमा ज्या मान्यानू (नश्रीनः। ইঙি महा ভারতে দোকধ্যা: ॥

गखनः न् क्षी जनिष्णामगृहः।
उৎ नर्यायः। जनाण्यः २। इठानतः॥ प्रवापित् उप्या। इठि णपत्र वावणी॥ मखनानक उति जि॥
मखना जी निञ्चावी। इठि ताजनिर्यण्यः।

नखरडः পू॰ व्यवः॥ तथ्रनःघः॥ निः ॥ व्यवद्यातः। ইতি निष्णान्नकोगू-प्रामुगाप्तिनृज्ञिः॥

মণ্ডযন্তী জ্রী যোষিৎ। ইতি নিকাণ্ড-শেষ:।।

मखती जी ष्रपूती। इं छ हातावनी
मखनः क्री हम्पुम्यंऽर्यावंहरवंश्वनः।
हम्पुम्यंऽर्या क्र भाजक त्राम्यकः
न्यायवावार्या मण्याक्र मण्या । व्याप्त मण्या । व्यापत मण्य । व्यापत मण्या । व्

ইবার্থেক:। ইভি ভরত:॥ 🗱 ॥ চক্র বালা ইভামর:।। তভু মণ্ডলাকা ্রেণ পরিণত• সমূহ নারণা মণ্ডলা-কার দিক্ সমূহ:। ইতি নাধবী।। চ ক্সেব্ৰ বালে৷ ব্লন মৃস্য চক্ৰবাল• वरन र्चाक वानः मनीयानिदार न স্য ডত্ত্বে চক্ৰবাডঞ্চা কি**স্বা** চক্ৰেণ চ কাকারেণ বাডতে চক্রবাড বাড্ড আপ্লাবে অল্। ইতি ভরতঃ।। 🗯॥ (काठेरत्रागः।।(एणः। साम्भात्राक्रकः। ইতিদৈদিনী ৷৷ সচদে**শ:** সমস্তাদ্বি• শতিযোজন• চত্ত্বারি•শদ্মোজন• বা। ইতি কেচিৎ।। গোল। ইত্যনেকার্থ কোষঃ॥চক্র•। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ॥ সংঘাত:। ইতি হেন্চন্দু:॥ নথাষা ७ । ইতি भद्रभाषा ॥ ४ द्विना श्रान পঞ্চনান্তৰ্গত স্থিতি বিশেষঃ। যথা। নাওলা লার পাদাভ্যা• মণ্ডল• স্থান র্গারিত । ইতি প্রবরত্বাবলী।। ব্যা শ্রনখাখ্য গদ্ধুব্যা । ইতি শব্দ দিরু ব্ভিক্ত নপুঃ স্যান্ডোগে৷ হরাবৃত্তি-রে ক্রিন্ড সর্বতো বৃত্তিঃ পৃথ গ্রুভি রুশংহতঃ ॥ ইতি ভরত ধৃত নানত কিঃ। পুৰা নিং নওল সংস্থান তৎ াম্যাঞ্চ বথা। সর্বে भारतम्भागा े िनखाइतरञ्जतिः ॥

। রবে **কঞ্** কিতঃ সোম: সোমান্ন ক্ষত্ৰ মণ্ডল ।। নক্ষত্ৰেভ্যে বুধ স্ত্ৰু व्यामृष्ट्व छार्गदः। उत्यामकात्रकः শ্চোদ্ধ তম্য চোদ্ধ বৃহস্পতিঃ।। তমাৎ শনৈশ্চর শ্চোদ্ধ • তস্যোদ্ধ ম্বিনওল । খবিভাগ্ট প্রবাদ্যান্ধ্র মাযান্ত ত্রিদিব খ্রুবে। আদিত্য निवाया द्राष्ट्रः क राहिष्ट (मान नार्ग-**७: ॥ সূर्यर्थ मञ्जल मः इ**स्त निज्रुः কেতু: পুসর্গতি। নবগোলন সহসা-ণি বিস্তারো ভাক্ষরস্য তু ৷৷ বিস্তারা-গ্রিভণঞ্চাস্য পরিণাছে তু মণ্ডল। विख्नः সूर्य्य विखात्राविखातः मन्नि-नः मृजः ॥ विच्या मञ्ज्यामा ग-থৈব সবিত্য স্তথা। চন্দুত: বে:ড.শা ভাগে। ভাগবস্য বিধীয়তে।। ভার্গ-वा८ भारशेनस विद्खारा वि वृह-म्माजिः। वृष्टमाजः भारशीतो वक সৌরাবুদাছতৌ।। বিস্তার মণ্ডলা-ভ্যান্ত পাদহীন তথে৷ ৰূ ধঃ ৷ বুধ তু-ল্যানি ঋকাণি সর্বে 🙅 নি যানি তু ।(याजनार्क পুনাণানি তেভ্যো হুस॰ न विष्ठाः । ब्राष्ट्रः भूगं। भुगागस्र कः দাচিৎ সোম সম্মিত:।। তমাৎ পুহ পুমাণস্ত কেতৃ ত্ত্বিযত: মৃতঃ। इंजिएवी भुद्राण गुरुगिज नी ना था-यः ॥ #॥ क्षिम म खन विधिर्यथा।

· ठज्रंस॰ সমারভঃ যাব**দ্ধ । শত**• · ভবে<। मण्डन· তত্র কর্ত্তব্য মত উष्कु '• न कातरय ।। विभवः विषयः छनु विमान मुजद मिव । वर्षमा नक रिन्यक लाजाकः कामनायकः॥ ৰুচক• স্বন্তিকাখ্যঞ্জ দ্বিদ**শ**• ইতি মণ্ডলাঃ। সিতাদি হরিতান্তান্চ র-जाः कार्ग्याः **जूष्णा**जनाः॥ **णाणि** ষ্ঠিক কৌসুদ্র রন্ধনী হরিপত্রজাঃ । মণি বিজ্ঞম রাগাশ্চ ভেম্মনা হ্ম ভি-মজিতা:।। সিতসর্বপ ধুপাঢ্যা র-কা: কৃত্বা তু পাতবেং। অন্তরাজ ন্যদেশান্ত্রী সম্ভবেতি পদ পিবা।। जत्मान्यानः मुञ कृद्गारगम्यस्मानाः লেপিত ৷ চন্দ্ৰাগুক্ কপুর কোদ ধ্পাধিবাসিত ॥ ভ্ভাগ সুমিত। সিদ্ধ পূর্ব পশ্চিম কোত্তর । যাম্য শ্বন্তিক নৎ স্যাদ্যৈঃ সূত্রে বোর্ণাণ্ড পত্ৰলৈঃ ৷৷ পদ্মপত্ৰাষ্টক মধ্যে দ্বি-গুণ ত্রিগুণ পিবা। দ্বারাণি সম-সূত্রাণি কর্ণিকা কেশরোজ্জ্বণ।। প-ন্য তথাবশেষাণি মন্তিকান্যুৎপলা নি চ। সব্যাবলম্ব হস্তম্ভ ব্লজঃপাত॰ भगाहत्त्र**्॥ मध्यानामिका भूरि** क भित्र हो न्यार श्रिया । व्यार श्रिया कृषि • ক্রা পাত্যে বু বিচক্ষণ: ।। সমারে থা তুক ভব্যা ধ্বিছিমা পুঞ্চি বজ্জিতা।

। जाकुष्ठ भई रेनभूग्रा मना कार्य्या वि-জানতা।। সংসক্ত বিষম্প স্থল বি ছिम क्वताव्छ । भर्या मर्भिष्ठ कुष मालित्थम कमाठन ॥ ज॰जाक कनरः विम्याषञ्च (त्रस्थ ज् विगुरः। অতিস্থানে ভবেদ্যাধি নিত্য পীড়া विभिन्ति ॥ विन्तृ चि र्चय मार्था তি শত্পকালসংশযঃ। ক্যাযাঞা-र्थशिनः न्या विहित्स मत्रण धुव ।। বিযোগান্তু ভবেক্তস্য ইপ্ট্রবুব্যসূত্রস্য वा। यविषिद्या नित्यव्यस्त्रः श्रव्धनस्र यथ्यभ्रम ॥ मर्ब मायानवार्थानि যে দোবা: পূর্ব ভাবিতা:। ইতি দেবীপুরাণে পুস্লাভিষেকচিন্তানামা-थ्यायः ॥ 🛊 ॥ সূर्य्य म ७८न (म्दानाः हि जि यथा। अहरमन् भू बयम् (एव॰ ज-পেচুরবি মণ্ডলে। আদিত্যমণ্ডলে দেব প্যাত্বা বিষ্ণু মূপৈতি ত ।। ঞ্চা। ভোজন মণ্ডল॰ যথা। যাতু ধানাঃ **भिष्मा**हाण्ड व्यमूत्रा द्राक्षमा उथा । মুন্তি কেবল ময়স্য মণ্ডলস্য বিবর্জ-নাৎ।। আদিত্যা বসবো কুদাবুন্ধা চৈব পিতানহঃ। মণ্ডলান্যুপজীবস্তি তমাৎ সর্বন্তি মণ্ডল ৷৷ চতুঃকোণ षिजाशुम्र जिरकानः क्ववियम् जू। षिकागाक् कि विभागा म् पुत्रा वर्खु-नः नरा ॥ इंडात्राः विद्यभूदात

আহি কতপোনানাধ্যাযঃ॥ মণ্ডল । এ বিষণ। ইত্যমরঃ॥ ছে চন্দুসঃশরীরে উপচারাদাদিত্য: স্যাচ।বেতি শোভতে বিশ্বঃ বী**ল**া কান্তি গত্যাদৌ নান্নীতি ডিম্ব:। বিশ্বতি ভাতি বিশ্বঃ। সৌত্রো ২য नििं सामी । मुख्यि मुख्य नामीि जनः जियाः नमामिषाट মণ্ডলী চ। ইতি ভরত:।। मञ्जाः **भू॰ अ**क्रुतः। ইতি मिनी ॥ नर्भाष्ट्राभाष्ट्रः। इंडि विषः॥ भृष्डनैंक क्वी विष्यः ॥ व्यक्षः छपः ॥ मर्भा•। ইতি মেদিনী ॥ মণ্ডলাকা· র ব্যহঃ। ইতি জটাপরঃ॥ मुखनकः भू॰ अक्रतः। ইতি ধরণিঃ॥ मखन्वुः क्षी मखनाकात्रम्बुः। उৎপर्गायः। रुज्ञीयः २। ইতি শ-द्यामा ॥ ग ७ न भ कि । अपने विकास मिल्या । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। मखनागुः 🛫 ५५३:। ইত্যমর:॥ মঙালাবিজ লৈ। তু**ল। ইতি শদ**্

ा नी ।

F. LL.

भ अः वाष्ट्र**ाव्यक्षः । उ**ट

भरतायः । १५३ है। **इंडि (इम**-

প্ৰতিটি লং সং ১ইতি ত্ৰিসাও

ब अ । श भ

(भवः ।। विखानः। इंकि भक्ताना ।। জাহক:। খটাশ ইতি ভাষা ইভি হেমচন্দু:।। বটবৃক্ষ:।। গো নাশ সর্পঃ। ইতি রাজনিঘট:।। मखनी जी मृर्वा। ইতি ছারাবলী। মওলেশঃ পু॰ মওলেশ্বর:। তৎপ-र्यायः। এक बन्ना २ ज्या श्रहः १। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ मुख्रलाचेतः भू॰ जृत्याकारमाधिभः। অন্যে ভূম্যেক দেশাধিপো মণ্ড लियदः महा८। मखनमह व्यति सि-ত্রাদিরূপস্য দেশস্য ঈশ্বরো মণ্ড-লেশ্বর:। একদেশাধিপ ইত্যর্থ:। স্যামপ্তল হাদশরাজকে চ দেশে চ বিম্বে চ কদম্বকে চ। ইতি বিশ্বঃ। ইত্যমরটীকাষা• ভরতঃ ॥ তস্য লক্ষণান্তর•। চতুর্যোদ্ধন পর্য্যন্ত ম-ধিকার নৃপস্চ। যোরাজা তৎ-শতগুণ: সূত্রব মপ্তলেম্বর: ॥ ইতি वुकारेववर्ख बीकृष्ण्डमथए ৮७ व्यथ्रायः ॥ मखरात्रकः शृ मोखिकः। ইउ।-गतः॥ ন্তা জী সুরা।ইতি হারাবলী।। আমলকী। ইতি মেদিনী।। मिखिजः शृ॰ (वोक्षगनाधिभविरमयः। हैि हिमहन्मुः ॥ ভূবিতে वि

के जाता है।

भिक्षः श्रुष्ट (जिकः । ইত্যমরः ॥ भागकः ॥ मूनिविष्णयः । ইতি भिक्षिते ॥ शाम्यक्षाः । ইতি णयः त्रद्वावनी ॥ वक्षविष्णयः क्षी । ইতি विश्वः ॥

मञ्कर्णः भृ (मातानाकवृक्षः। इंडा महः॥ (मानकः। इंडि (मिन्नी॥ मञ्कर्णा जी मिक्षिष्ठा॥ वृक्ष्मी। इंडि सिन्नी॥ यानि उठ्डका। इंडि हाक्रमिष्ठः॥ अम्बितिष्णयः। प्रकृषि इंडि जावा। जर्णार्थाः। प्रकृषि इंडि जावा। जर्णार्थाः। १ (जकी २ मञ्जूषि ३ मृण्णार्थाः। १ (जकी २ मञ्जूषि ३ मृण्णार्थाः। इंडि हाक्ष्माणा। मञ्कर्णार्थाः व। स्माणा महा हिमा॥ भागेष्ठतः। मञ्जूष्रार्थाः नी हिमा॥ भागेष्ठतः। मञ्जूष्ठाः । इंडि हाक्ष्मकः।।।

মণ্ড মোতা স্ত্রী বান্ধী।ইতিরাজ নির্ঘণী:॥ভেক্যাতাচ॥

न । स्वी मिक्षिशायथा। मिल्का ह न गर्भिह (ईन पृज्ञी ह जिल्जी। इंजिमद्गाना॥

মপুকী স্ত্রী মপুকপণী । ইতি মেদিনী ।। আদিত্যভক্তা ।। ব্রাক্ষী ।
ইতির।জনিঘন্টঃ ।। দুপবিশেষঃ ।
পুলস্টা ইতি ভাষা । ইতিরত্ন

भाना ॥ षृष्ठेरगाविष् । इंडि नेपः तञ्जावनी ॥ मञ्जूकशङ्गी । इंडि व्रा-कत्रगः ॥

নভুর লী পু লৌছমল ৷ ডৎপ-র্য্যায়ঃ। শিহ্বাণ ২। ইত্ত্যমরঃ॥ সি॰হান• ৩ সি॰হাণ• ৪॥ মঙাত-लाइ (वश्रुट जानुमार लाइ।-দ্বি ভক্তে বা মণ্ডয়তি ভূষয়তি ঔ শধ্বাদ্যোগিণ মিতি বা মণ্ডুরণ কি-मिष जूर मिष्ड विजादा (वार्ड নাশ্নীতি উরঃ। ইতি তট্নীকাযাণ **छत्र ३:** ॥ अम् छनः । लिहिस्ति-ত্ল্য:। শ তবর্ষোদ্ধ নশুর মূভন• । অশীতি ব্যবিণ নধ্যমণ। বঙ্কি ववी य नथन । जाउ। न् । विव-जुन्। यथा। यह्नारु यहुनः (भूः क उट किष्ठेकानि जुहून म-তোদ্ধ মুক্তন কিউন্সধ্যঞ্চাশীতি वार्षिक ।। जभन विश्वविधि ७-তে। হীন বিবোপন। ইতি রসে-मुहिन्डाम्निः॥

নণ্ডোদক স্নী চিত্ররাগঃ। বিচিত্র-বর্ণঃ ॥ আতর্পণ । আলিম্পনা । ইতি মেদিনী ॥

মং ব্য অন্ধ্নহণ। অত্ব ত্ব ভবতি ত্বভবতি অন্ধ্যাহণ মুক্তবজীতি সংশিপ্তসার ব্যাকরণণ।। অস্ক্ भदाहि भुजार क्रि उझ कि य **छोकायाः** गायीहन्तुः ॥

न**ुः** ज्ञी जयाजः। जल्मग्रीयः। ছন: ২ অভিশায়: ৩ আকৃত 8 ভাবঃ ৫ আশ্यः ৬। ইতি হেন-हन्मः ॥

মতঃ ত্রি সমতঃ।। জ্ঞাতঃ। ইতি (मिर्मिनी ।। **यहिं ३३ । इंजि** (**ए**न-

মতক্ষঃ মূপু মুনিভেদঃ ।। মে**ঘঃ** । 🎤 র্তুগ্রাদিকোব: ।।

मञ्जूषः भू॰ रुखी। ইত্যমর:॥ **ग**डिंद्रका जी शुल्खः। इंड्रिगदः॥ स्वि: जी वृक्तिः। हेन्त्रभवः॥ हेहा ॥ मृजिः। ইতি मिनि॥ चार्गाः॥ भाकर छनः। ইত্যু जरमानः॥ 🗱 ॥ বিপেন্দু কা পূশ'সেয' জন্মতে বুক্ষ भानतम । यम् । यम इता कवा उचा তি ভাদৃশী ভবেৎ ॥ ইতি বুক্ষ-रिवराङ बीकृष्ण्वनाशाः । अक्षायः ।। #।। মতিকরৌষধ• যথা। পাঠা দ্বে জীরকে জন্ত মখগন্ধাজমোদকং । बहा जिक्दे के अब जवन हुन मूख-र्भ्यू अबद्धितः। हाद्यार उक्तितः ज

गाक्ष ।। अध्यायः ।। यम्भद नऽ नमारम्भाविष्ठवं। ইতি । निष्ना की कार्जियां । निष्न् **फोक्ष्यः। ইতি রাজনির্ঘণ্টः।।** मि जिज्ञाः भृ•) वृष्ति कुः भः । खर भ-मिं जुलि: जी र्रायः । जुमः ० मि-থ্যানভি: ৪ ভান্তি: ৫। ইতি শব-ब्रङ्गावकी ॥

मिडिबिजुः मः पू॰ উच्चान्दरागः। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

मिलिष्ठः जि व्यक्तिगरवृक्तिगान्। इंडि मुक्तवाषवताकद्रगः ॥

म्बद्धः भू॰ मि अपः। इति भद्ध-नाना।। मर्नमिति वि। ইडि व्याकद्रगः ॥

अ्छनः भू कीवेदिष्णयः। हात्र-পোকা ইতি ভাষা। তৎ পর্য্যায:। ज्ञक्रायी २ ज्ञकाकः ७ मक्षकामु-যঃ ৪। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। উদ্দ:শঃ ৫। निर्विषाण्ड्डी ॥ निः मानुशुक-বং। মান্দন্যে ইতি ভাষা।। না-রিকেল:। ইতি মেদিনী।। জন্ত্বাত্রা-ণণ। ইতি ছেমচন্দুঃ।।

मर्मा की जजाउलान्छन । ইতি শব্রব্রাবলী।। ম॰ র ব্রাজ্যার বা ভাবিতঞ্চ সর্পি । মৎজণারিঃ পুণ ইন্দুশেনঃ। সিদ্ধি ইতি ভাষা। ইতি শব্দনালা॥

ं शाबिरिययः पठिः श्रवाः ॥ ইতি । भखः श्राम् अत्मार्यकी। भाउ अगावा

इाजी इंडि ভाषा। उद्भर्यप्रायः। পুভিন্ন: ২ গর্জিত: ৩। ইত্যুসর: ॥ धुखुतः॥ (काकिषाः॥ महिषः। ইতি রাজনিষ্টঃ।।

মত্তঃ ত্রি হৃষ্ট:।। মত্ততাবিশিষ্ট:। তৎপর্য্যায়ঃ। শৌত্তঃ ২ উৎকটঃ ৩ ক্ষীব: ৪। ইত্যমর: ॥

মত্তকাশিনী/ স্ত্রী উত্তমন্ত্রী।ইত্যমরঃ মত্তকাসিনী । মত্ত ইব ক্ষীব ইব ক-সতি গছতি মন্তকাসিনী কসজ প (ठो गुशानिज्ञातिन् मस्य मध्या ॥ नः ৰেব কাশতে ভাতি মন্তকাশিনী তালব্য মধ্যাপি। ইতি ভরত: ॥ মত্তকীশঃ পু॰ হন্তী। ইতি শক माना॥

মত্তরঃ পু॰ দ্যাধিক:। মত্তো ৎতি मयः। अमर मदार उउत्रभ् भु-ত্যযেন নিম্নন্ধঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌ मृती ॥

मखवाद्र १ क्षे शुमारवीशीना वदः ওঃ। কোঠারবারাণ্ডা ইতি ভাষা।। अशाम्यः। भाक्तनावद्रनः। इंडि (इनहन्तुः विश्वन्ह।। भात्राम वीशी-नाः अधृक वृज्ञिः। अन्सवृक्षवृज्ञि इंडिंচ भार्थः। इंडियामिनी ॥ भूग ष्ट्रीः। **३७ि मद्दाना**॥ मछवात्रभः शुः शुक्तिमक्षेत्रक्षात्रः। ॥

मखरुखी। इंजि मिनिनी (इन-ठनमुन्छ॥

মতা দ্রী মদিরা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ मङानम्नः भुः भुाक्तावद्गपः। ७८ भर्यप्रायः । ज्यभाभुयः २ भुशीदः ० মন্তবারণ ৪। ইতি হেমচন্দু:।। नखिनगमना की की विष्णयः। मख-गबगामिनी। इंडि (इमहन्तः॥ क्री माबामीना गृष्टिः। उट भर्यशयः। वन्हेः २। इजिह्महन्मुः॥ मब इंड क खरशाको। ईंडिकवि. कन्नुक्रमः ॥ पञ्जवर्गाप्तज्ञाभधः १ इ ক উ ইতি পুর নম্রয়তে নৃপো হয-মিতি মুরারিঃ।। মজইত্যনৌনবেপ্ত সিজে ইদনুবন্ধো বেদেযুদ্বারণ 🖘 नाथः। ইতি দুর্গাদাসः॥

म् अः श्रु॰ म् अर्गः। इंजुर्गानि-कायः॥

म् नगणः भु वाञ्जनविष्मयः। म् -न्रावक इंजि थ्याजः। उद्भर्यायः । गनगुरु:२। ইতি শব্চন্দ্রি।। মৎসরঃ পু• অন্যশুভদ্বেয়:।ইত্য-মরঃ।। ক্রোধঃ। ইতি নেদিনী।। মৎসরঃ ত্রি অনহাপরসম্পতিঃ। मा (मर्यापुष्टः ॥ क्षाः । ইত্যমর निनिकत्त्रे॥ आञाधिक्कावृति-(भवः। यथा। निनति मारे जन:

লোকা বিগন্ধ নন জীবনং। ইত্যা-আনি ভবেদ্যন্ত ধিক্লার: সচ নৎ সর:॥ইতি পাল্মে ক্রিয়াবোগসারে ১৬ অধ্যাম:॥

म्बर्भा की मिकिका। इंडि मिनिनी मिट्रमा कर्ण व्यन्त मुख्य हो। उट्ट भर्य प्रायः। कर्णक्रभः २ पूर्वनः २ मि मूनः ४ मूहकः ६ नीहः ५ विकिखः १ थवः ৮। ইंडि इमहन्द्रः।।

मर्गः) गृ• भ्री जनकस्रविष्णवः। माह्री कि जाया। उद्भर्यायः। **अ्**थ्रामा २ सनः ७ मीनः ४ रेनमा রিণঃ ৫ অগুজঃ ৬ বিসারঃ ৭ শক-नी ৮। ইত্যনরঃ ।। मक्तनी अवयः ১০ আত্মাশী ১১, সম্বর ১২ মূকঃ २० जलमयः २३ कणेकी २० मही ১৬ महः ১৭ जनिमियः ১৮ । **३**जि **भ**क्तवावनी ॥ ७मा खगाः । वृ•स गद्धा अक्द्भा मुक दक्षनद्भा व-नायुः। त्रिकाद्यः। उक्षयुः। भष्तः ष्। कक भिखः कब्रष्ः। व्यायानाः ধুরত দীপ্ত শ্রীনাণ পূজিতত্বণ। বা **ए**द्राभ र्वेष्य ॥ ॥ व्रक्षः खनाः। ७ व द्वना मुक्क व द्वना व व वस्त कातिवृक्षाक्षा कर्माट्ना ह्याः 1 वनुष्रः शामिक्या पुरुगीतात्मः रिक्रिका अ॥ ्कार्ना राजा

লযুত্ত। ক্লিঞ্জ্ব । বাতমুত্বণা বহিং-বর্জনত্বঞ্চ।। 🗱 ।। পাওর মৎ স্যগুণাঃ । स्वावन् । त्रि**शक्ः। स्य**वन् । নলভেদিত্বশা **ধ**া কৃথিত নৎস্য मा वर्षा भृजिम्हमामा खाः i लायवादुः ॥कः॥ मृह्मयू मा खानी ह विश्वेसिष् । मूर्जेतप्ष ॥ 🗱 ॥ नदगः ভাবিত নৎস্য গুণাঃ। কক পিত্ত कরবुः। সারকত্ব। 🕸 ॥ সামৃদু मद्भा द्वाः। लगुक्वाव्याक्रामः धूतद्रश्यन्नवकात्रिद्धाः मामूपुः গুরবোব্ষ্যা: ক্লিকাকা বাত নাশঃ नाः। इंजि भाठास्त्रः॥ #।। नात्यः নত্স্য ভগাঃ। শ্লেম্মলত্ত্ব । ব্যাহ্ব ।। मध्ददः। वाङ्म मनस्करकद्यकः॥ 🛊 ॥ সর প্রডোগ ভব মহ স্য গুগৌ। স্থিত্ব । चानुतगद्थः॥ अपि महाहुत छर न ८ न 🍱 । विज्ञ क छवाः 🔊 -वनाः ॥ 🛊 ॥ प्रकार नाः । सः क्षन्। वृष्रक्षः। वृष्ट्रभक्षः। वन वर्षाः नद्क ।। #।। रेडल नवन युक म्थमर-স্যুগ্ণঃ। ক্ষীণশুক্র ভগ্নজর্জরিত নি ভ্যন্ত্ৰীসবি ক্ষীণভেম্বসাণ হিত কা-तिष् ॥ #॥ भवाव (विष्ठे कर्पन লেপিতাকার দক্ষ সলবণ বেশবার পুরস্ত সাদুক কটুতৈল সম্ভোলি छ न र मा हिंगाः। सामूदः। कक वाङ

रत्रवः। मूकनवः । वनः वसंनद्भः ॥ 🕸 ॥ ना कन्नु। था वाङ्गन छनाः । ङ्म्रद्भः। व्यर्द्धः। शृष्टिमद्भः॥ 🛊॥ म**्म**) घणे एगाः। वलकत्रवुः। वाज হরত্বণ অভিশয় রোচনত্বঞ্চা 🕸 🛭 **লিরসি খ**ণ্ণ কে**শখা**রি ম**েস**্যগুণাং।' मृथि প्रियद्व । इरुद्ध । भुः खुवा छक द्वक । ইতিরারবল্লভঃ॥ ঋ॥ অপিচ। নি:-मन्नानिन्ति जा मर्माः मर्व मन्गुजा हिजा:। वशुः हिर्याकद्र। वीया वल शृष्टि विवर्षा भा ॥ भा भूम स्वाजन निवांत उडाग वाली बालवू (य मर-ण्याः। (७ २ जिङ्गणः नारम्या यस्थाः खद्र॰ वयु उदास्त्र नारम्याः ॥ 🗱॥ काताचु न ८ नता खत्रादा विकाशिता विश्वेष्ठरा (ख नवनार्गवानिकाः। नाना শ্ৰিতাঃ স্বাদুহল স্থিতা অপি জেযা কডা তে হলি তথালিত। ইমে ॥ 🗟 ि द्वाङ्गिनिर्घण्डः ॥ 🗱 ॥ व्यथः ऋ मु- 👭 মংস্য তথাঃ। ক্ষুদ্ৰৎস্যাঃ স্বাদুর-আ দোষ এয বিনাশনাঃ। লঘুপাকা क्रिक्ताः गर्बरा ८७ हिजा मजाः ॥ # ॥ व्यथा जिक्क नुस्ट मा अंशाः । আতি সূক্ষাঃ পুণস্তুহরা কচ্যাঃ কা का निवाशकाः। 🛊 ॥ व्यथम ८ महा-ণ্ড ওণা: । মৎন্য গর্ভো ভূশ বৃষ্য: शिकाः शृहिकता एकः। कक सम

পুলো বলেয়া প্লানি কৃন্মেছ নাশনঃ ।। 🛊 ।। অথ শৃষ্ক নৎস্য গুণাঃ। শৃষ্ক-गएनता न वनताः महम् र्जदा विधिव-क्षिनः। 🗱 ।। व्यथं मथा नूष्ट्रमुख्याः। **एश्व मट्रम्या खरेगः (मुक्टः भूष्टि कृष्टन** दर्जनः । 🗱 ।। जाय क्षजामि मूट्मु खगाः। क्षम् मर्गः मुक मृब क्ष त्युचा विवर्षनाः । नाताका नथूताः সিপা বল্যা বাত বিনাশনায়।। #11 मार्त्तरा वृष्ट्रण मध्ना श्वरा १वि ल नामनाः। त्रक शि उकती ्यप्रः त्रित्काकाः बन्न वहमः ॥ 🗱 ॥ कि **ড্যা: পিত্ত হ্রা: त्रिश्वा मध्**रा **वघ** त्वा हिमाः। जाषाणा खत्रता वृष्शः শীতলা বল মৃত্রদা: ॥ তাডাগ বন্ধি র্মরজাবলাযু মতি দৃক্করাঃ। 🗱 🛚 । অথ্পতু বি:শবে মৎস্য বিশেষগুণঃ । হেমন্তে কুপজা মৎস্যাঃ শিশিরে দারুসা হিতা:। বসম্ভেতে তু নাদে-যা গ্রীয়ে চৌঙ্য সমুদ্ভবা:।। তডাগ জাতা বৰ্ষাসূ তাম্বপথ্যা নদীভবাং। নির্মরয়ঃ শরদি শুেষ্ঠা বিশেষে। হয-मूमाङ्जः॥ ইতি ভাবপুকাশः॥ 🗱॥ মৎস্যোৎপত্তি কারণ কথা। ডভ-ন্তু নিত্রাবকণে ভাতরৌ বুক্ষচারি-নৌ। তন্ত দেশ- গতৌ দেবৌ বিচর-छो यम्ह्या ॥ जान्याः जब केमः

দৃষ্ঠ। উর্বদী তু বরাপ্সরাঃ। তপস্তী সহিতান্যাভি: সথীভি: সা বরান না।। সৃদ্বারণ হি গীতেন উর্বশ্য মধু রেণচ। ইক্ষিতৌ চ কীক্ষেণ স্বন্দ ত স্থাসুভাবপি ॥ তণ্ডিধা পতিত॰ (व्रड:क्याल २० इल हला। क्य লে হথ বশিষ্ঠন্ত জাতো হি নুনি স खभः॥ इत्व द्वानुः मग्रुखा बत्व ম্ৎস্যে মহানতে। ইতি নারসি হ পুরার্থে ৬ অধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ নৎস্য **छक्रन**्रीनिरम्राक्षा यथा । रंगा यम्। স্রান্দি মশ্বাতি স তথ্যা সাদ উচ্যতে । মৎস্যাদ: সর্ব্যাশ্যাদ স্তমান্সং-अज्ञान् विवर्जारायः ।। इंडि मानत्व ६ काश्रायः ॥ अ ॥ जल इल ठ द्रा (य ठ পুাণিন স্থামৃতানপি । ন ভক্ষো-নবো জ্ঞানী হস্তা তেবাশ ভবেন্নহি॥ ছত্বা হত্বা তু মৎস্যাশী সর্বেষাণ যো বিশেষতঃ। মাণসাদঃ প্রাণিনাণ **ধ্যা হলি ভমান্মৎস্যু পরিভ্যৱেৎ** ॥ ইতি পাদ্মে:ভরখণ্ডে ১ ৫ অখ্যা यः ॥ 🗱 ॥ वर्जनीय मूट्जा यथा। শৃণু দেবি পুৰক্ষ্যামি মাণসভেদানি বোধ মে। নাদেয়ণ তিক্তকমঠণ পশ্ শৃঙ্গিণ মেব চ II গোমীন চক্রশঙ্গল । बुखाल ब्राह्मव ख्या। वाशीन हल ৰ প্ৰ সচক চেক্স মেব চ।। ভূবিল।

कानिकक्षक भाव्ययानि दियन्त्रीय ॥३७ म८न/नृक महा छ छ । 🗱 !। রবিবারে ম**্স্য ভক্ষণ** নিষেধাে যথা । আনিষ রক্তশাকঞ্চ যো ভূছে চ রবে দিন। সপ্তজন্ম ভবেৎ স্বণ্ঠী দ-রিদুস্টোপজাযতে।।ইতি ভবিষ্য-প্রাণ ৷৷ মাব মামিব মা কঞ্মসূ त॰ निम्न भ धकः। ভক্ষ বেদ্যোর বের্রারে সপ্তরমান্যপুশ্রক:।। ইতি তিথ্যা-**मि**जबुः॥ #॥ कार्खिक म् मा छः क्का निरुद्धा यथा। न मार्माः ভक्क-বেন্সা॰স॰ নকৌর্যা• নান্যদেব হি ।চ-গুলো জাযতে রাজন্ কার্ত্তিকে মাণ্-न जक्रनार ।। ইতি नात्र रीयभूत्रानः ॥ #॥ भाष देवनाथरया ईविया तुम्म-চর্য্য বিধানাৎনৎস্যভক্ষণ নিতরাণ निविष्कि मि छि क्छ। छङ्ग मर्भना ८। 🗱। জন্মতিথৌ মৎস্য ভক্ষণ নিষেধাে यथा। आभिषः कलरः हि॰ मा॰ वर्षः वृष्को विवर्जाय । अभिन। जुरु गस्त নিরামিষ সহি ভবেজ্ঞান্তরে প-ণ্ডিত:। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব• ॥ 🕏 ॥ শৈবস্য নৎস্য ভক্ষণ নিষেধাে ধথা । কুনদ্য কু শিবে ভক্তি: কুনা সে কু **लिवाईनः। ब**८मा नाःम तलानाः दि দ্রে ভিঠতি শহুর: ।। ইতি কাশী-थु ।। 🕸 ॥ ना ७ कार देन (विद्रार्श्व

ज्यक्ष व निश्वी कीत वर्जाय । পঞ্চনথ নৎস্য বরাহু মাণসানি চ। ইত্যাহ্নিকত ভৃষ্ত বিষ্ণুসূত।। #॥ বিদ্যু পর্বত্যু পশ্চিমে নৎস্যভ क्कृ न निरवरका यथा। विकास मार्जिः নে ভাগে মৎস্য ভুক্ পতিভোনরঃ৷ ইতি পুরাণ ॥ #॥ কামজো মৎস্য ख्कु भारक्षित यथा। मद्मा ক্ত কামতো জখা সেপেবাস জ্ঞাহণ वामः । वाद्धानं उपर्यः । ইতি भागिक खित्वकः ॥ 🗱 ॥ मर्ग छ ক্ষণ প্রতিপুসবো যথা। মৎ স্যান্সং শল্পান্ ভুঞ্জীত মাণসং রৌরব মেব চ 1নিবেদ্য দেবতা ভ্যান্চ ব্রা**ন্ধ**ণে ভ্যা**ন্** নান্যথা।। সফর সি স্তুগুঞ্চ তথা পাঠীন রোহিতৌ। নৎস্যা স্ত্রেও সমুদিষ্টা ভক্ষণায তপোধনৈ: ॥ প্রোক্ষিত ভক্ষযেনেষা না সঞ্চ **चिक्र**काम प्रया । यथा विधि नियुक्त क প্রাণানামপি চাত্যযে॥ ইতিকৌর্ঘে উপরিভাগে ১৬ অধ্যায়ঃ॥ অপিচ । পাঠীন রোহিতাবাদ্যে নিযুক্তৌ र्वा कवारयाः । त्राजीवान् निःर्जू ভাশ্চ সশন্ধাশৈচব সরশ:।। ইতি मान्दव ६ व्यथुरायः ॥ 🗱 ॥ व्यन्दिर्हर न (जा क्वर्रः मूट्मरः माः मक्ष यक्त (२८ । अम विक्षा भाषा मूब यहि-

কোর নিবেদিত । ইত্যাহ্নিকতত্ত্ব • ।। ধা পুতশান্ধে নৎ স্যাদান বিধি র্যথা! সপিগুকিরণ ফাবৎপ্রেড্রা-**ष** छ (या उभा• । शक्वा (स्रोतन व कर्ड्य) • সানিষেণ দ্বিজাতিভি: 11 ইতি শাদ্ধতত্ত্ব ধৃত কামধেৰু বচনং ॥ न ८ माः श्रु भीनविष्णयः॥ विद्राष्टेः (दण: 11 नाजायन: 1 देखि (द्या**टम्**रः ।। দেশবিশেষে বছৰচনান্তঃ। ইতি (निरिनी ।। जामभाताभाः ए यथा। मट्राभिष्ठी न् मिथु नः जर्गरः जवीः **१ । इउर्राप्त (ब**र्राठिखन् ।। **के** 11 অপ্তাদশ পূরাণান্তর্গত পুরাণ কি भियः। यथा। भूगुः भविक गागुकः निमानी मृग्ठ विकाः। नाए मा भूतान मिथल यङ्जगाम गमाध्तः ॥ ইতি নৎস্যপুরাণে ১ অধ্যায়ঃ ॥ #॥ দশাবতারান্তর্গত পুথমাক-তার:। যথা। সূত্রউবাচ। পুরারা-का मन नाम भीगवान विभूष उभः । भूटा ताडा भगाताभा कना-वाज्वविनन्तनः ॥ भवशिभाकरमा তু সহাত্মগুণ সংযুত:। সমদুংথ मूर्या वीदः भाखवान् याग मूखम्याः বভূব বরদ শচাস্য বর্ষায়ত শতে গতে। বর বৃণীয় প্রোবাচ প্রীতঃ স , कराना मनः।। এव मूर्एका २ व्वीमुन्छ।

পুণম্য স পিতামহং ৷ একমেবাহ-িছানি ব্ৰোবর মনুত্রম॰॥ ভ্ত গুলেস্য সর্বস্য স্থাবরস্য চরস্য চ। ভবিতা রক্ষণে যান পুলযে সমুপ **স্থিতে** ৷৷এব মস্তিৃতি বিশ্বাত্ম**৷ ত**ৰৈ-বাস্ত্রধীয়ত। পুস্ত্রিক নহতী-থাত্ পপাত সুরার্গিতা॥ কদাচি-माभुत्र उम्र कर्वतः भिन् उर्भाः। পপাত পাণ্যে ৰূপরি শফরী জল স•যুকঃ ।। দৃষ্ট্য তছফরী ৰূপ• স দ্যা-লু মুদ্বীপতিঃ। রক্ষণাযাকরোদ্মত্র॰ ্স তথিন করকোদরে ॥ অংহারাত্তে ণ চৈকেন যেডিশাঙ্গুল বিস্তৃ য়:। সো ২ভবন্নৎস্য ৰূপেণ পাহি পাহীতি চাবুবীৎ॥ স তনানায মলিকে প্রা-ক্ষিপজ্জলচারিণ। ভত্তাপি চৈকরা-ত্রেণ হস্তত্রয় মবর্জত ৷৷ পুন: পুাহা-র্ত্তনাদেন সহস্কিরণাত্মজা। সমৎ-স্যঃ পাহি পাহীতি ত্বা মহণ শরণ গত: ॥ ততঃ স ক্পে ত॰ মৎস্য॰ প্রাহিণোদুবিনন্দন:। यहा न মাতি তত্রাপি কুপে মৎস্যঃ সরোবরে ॥ किएडा श्मी भृथूजा मागाए भून র্যোজন স্থিতঃ। তত্ত্রাপ্যাহ পুন-দ্বী নঃ পাহি পাহি নৃপোত্তম ।। ত-তঃ স মন্না ক্ষিণ্ডো গঙ্গাযা মপ্ত विश्वा यह। जहा मनुष्यु जः श्राकिः

পরেদিনীপতিং ॥ যদা সমূদু মথি-ল ব্যপ্যাসৌ সমূপস্থিতঃ। তদা-পাহ মনু ভী তঃকোপি জ নসুরেখ-**त्रः ॥ অ**थवा वाजुत्मव छ गन्। त्रेम्क् কস্য তুল্য॰ ভবেদ্বপু: ।। জ্ঞাত স্তৃ॰ म् अ क्रिंग मा कि प्रमि कि नि ক্ষীকেশ জগলাথ জগদ্ধান নমো **ৎস্ত তে**।।এব মুক্তঃ স ভগবান্মৎস্য ৰূপী জনাৰ্দনঃ। সাধু সাধিতি চো-বাচ সম্যক্ জ্ঞাত স্তুযান্য।৷ অচিৱে-रैं व कार्लन (मिनि) (मिनि) शाहरी ভবিষ্যতি জলে মগ্ন৷ সশৈল বন কা-नना ॥ तो ब्रियः अर्व (एवानाः निका-यन दिनिर्भि ३। महाजीनिकायमऽ রক্ষণার্থণ মহীপতে ৷৷ বেদাওজো-फिल्डाय देव (यह जीवा जतायुकाः। অস্যাণ নিধায় সর্বাণ স্তাননাথান্ পাহি সুবুত।। যুগান্ত বাতাভিহত। ষদা ভবতি নৌ নৃপ। শৃঙ্গে হিমন্ मम द्रारकन्द्र उरह्मा॰ म॰यियामा। ততো ল্যান্ডে সর্বস্য স্থাবরস্য চর-স্যচ। পুজাপতি স্তৃ• ভবিতা জগত পৃথিবীপতে ॥ এবং কৃত্যুগস্যাদৌ সর্বক্তো ধৃতিমাদৃপঃ। মন্তরাধিশ ৈচব দেব প্জ্যো ভবিষ্যসি।। ইতি मद्र मार्थ द्वारा मन् विकृत्र वात शुर

্মে সর্গে পুথমোধ্যাযঃ ॥ বিভারন্ত গ্রীভাগব**তে ৮কদ্বে২৪অধ্যায়ে দৃষ্ট**-ব্যঃ॥ৠ।তস্যমন্ত্রপ্রান প্রাদি যথা । শঙ্কর উবাচ। এক অবা ভব্মৎ স্যা-বভার: কল্ল আদিমে ৷ **ভস্য মৃক্ত**• পুৰক্ষ্যামি ভক্তি মুক্তি পুদাযক ॥ তারো ননো ভগরতে ম• মৎস্যায় র नाः वरम् । चामनाक्षत्र मस्त्रा १य॰ मूनि वुक्ता मभीविजः ॥ गायबीहम्स উদিত (দৰতা মীনবিগুছ:। ভগ-वान् भवंबीनात्था वीकः 🗐 शक्की-লক ।। নাভ্যধোরোহিত সম আ-কণ্ঠঞ্চ নরাকৃতি:। ঘনশ্যাম শ্চতুর্বা-হুঃ শত্ত্ব চক গদাধর:।। শৃক্ষীনৎস্য নিভোমুর্জা লক্ষ্মী বক্ষো বিরাজিত:। পদাচিছিত সর্বাস্থ: সুন্দর শ্চাক <লাচন: II জপেদ্বাদশ সাহ্সু· বি मधारिक खिरेन ह्र (न८ । भुजाइ॰ তদ্দাংশন বৈশাথে ক্লান্তিকে ত থা। নাষে চ নাৰ্গশীৰ্ষে চ হবিষ্যাশী জিতেন্দ্রিয়ঃ ॥ আরভ্য ভাদু বহুল गष्टे वा (याउभाइकः। लक्षी मन्ः ৰূপেন্নিত্য নিদ্ঞাপি কলাশত ।। **उरेथर (हाम: कर्डर) खथान**ऽ मिराम-যু তু। তর্পযেদ্যাদশ শত্ত তিল ত थुन वन्तिः।। আक्रा ख्या **नजा**रही চ তর্পবেছ তথা শ্রিষণ। রক্তোৎপ-

रेन की भरेषा की मानजारिमाः मून-দ্বিভিঃ।। এবং কৃতে বর্ষমেকং মজ্ঞ-সিধ্বিঃপুজাযতে। নিত্ত্য দ্বাদশ বি-शुःक ञ्रीक्राक मुवामिनीशाला-करयद्भ कनका मा हत्त्र को वा भारयद नेमा । बद्धेव कर्निकायाक अयुज्ध (रिव सर्हरायः ॥ यदेशब्वतु यख्यानि যরেদ্বাহ্য চতুর্দলে। মণ্ডুক মকর क्यां भिण्यातक প्रंजः॥ जन्नारम **५डेम्टन भूकप्रः कात्राम्याः मध्यिक्र**-वः। उद्याश्यक्षमध्य भूड्या र्। मूक्या-म्ताः क्षीत्रद्राः ॥ जम्र वाःश् अङ्ग मल त्रज्ञानि जु ठजूर्भन । अमृ मुकानि পুৰ্যানি লক্ষ্মী কৌস্তভকানি চ।। गक्राम्याः (याउभ ७७) महानम्यः भुभू खर्य । उठ का द्वेषता (वरानू-পবেদ সমন্বিতান্।। দিগীশাংশ্চ ত-मञ्जानि नवावत्रन भूजनः। এवः मि-क मनू र्यञ्जी कायर७ जिक्कि ভाकनः॥ এতদুক্ত শতং মস্ত্রণ জপেদঙ্কোত্তরণ শত। তদ্বেতা দিনে সিদ্ধঃ পুস্ত-কাদেব জাযতে ॥ অঙ্গঠিত প্ৰো-গেষু ন পুন স্তস্য সংস্কৃতি:। এতৎ পল্লবিতামজা মম সিল্যুডি পার্ব-তি।। এত**ং সংপু**টিতাঃ সর্বে বৈদি-काः निष्माः कलो। ज्ञानन गुण्-তা জপ্তা: কলেশ্চ জত সিক্ষিণা 😢 🔫 न् माजि

ইতি নেক্তজে ২৬ পুকাশঃ।।

নংস্যকর জিকা জী নংস্যরক্ষণপাত্রণ। থালুই ইতি ভাষা। তং
পর্য্যায়ঃ। নংস্যধানী ২ কবেণী ৩
। ইতি জটাধরঃ।।

মৃৎ্স্যুগন্ধ। জী লাক্লীযুক্ষ:। সচ জলপিপুলী। ইতি জটাধ্র: রাজ নির্ঘটিশ্চ ।৷ ব্যাসনাতা । ইতি ন-হাভারত ।।

स्नाम्याहकः भू खनामयाहम्माहम् वाक्षकः । उद्भग्रायः । गलगुरुः २ अविकासम्बद्धाः ।।

प्रशास कर निष्कृता ॥

अर महान कि जाना गर्श । भारत्य ता काल हे जि जाया। हे जिर महन्मुः॥

अर महित है जि जाया। यथा। लगीका काणि छुड चुछ मर महिल्कामिजाः। निर्माणा निर्माण कर का काणि छुड चुछ मर महिल्काविवाः। निर्माणा निर्माण कर का यथा यरेषयाः रेनमाः जर्महिलाः । यथा यरेषयाः रेनमाः जर्महिलाः । अभा विवाः । हे जि जानवा छुडः ॥ अ॥

ज्ञा है जि हिन्मी जाया। जमुलकाः

गः यथा। हे का ज्ञा ज्ञा यः मः भरत्य यनः कि विक्षम् वान्तिः। भन्मः यर महन्महिलाः। भन्मः यर महन्महिलाः। अभा अभा छनाः। अभा

वन्। नश्ची भिङानिनाभर्।।

शर भंडी

मधुत्रा त् र शी व्या प्रजितिमी मिरा ख्डा श ইতি ভাবপুকा**ने** शि^{-5%} म् मा की चलिकातः। इन्डा गदः॥ इक्षिणचम्।द्रम्भात्म थ-अर्याम् नात्रज्ञ यो खेडिकाका-রা জাযতে সা মৎস্যক্রী বিশ্বশা-লুক মিছিরী ইভি খ্যাতে নগাত্ ইতি খ্যাতালি মুখ্যোতি কে-চিৎ। মৎ স্যাপ্তাকার ত্বাং মংল্য-श्री मनीयानिद्वामन्त्र नगाहिद्या-দীল্ মুখ্ন্যে মনিতি মুখ্ন্যুতী অন প্রাণনে ডঃ ইত্যান্য। মদ স্বান্তে মংস্যপ্তীতি কেচিৎ। ইতি ভন্নত: भए माधानी हो मए महस्कार्यमावः াখার্যী ইতি খালুই ইচ্চিচ্ ভাবা ा छ८ भर्यतायः । जल्लानी र । इंछ्र-মরঃ।। মৎস্যকরপ্তিকা ৩ খার্থি-का 8 मध्यावसनी व अरेतिनः ७ হ্রবেণা ৭ হ্লপিনী ৮ হ্লপিনিঃ ১। ইতি ভরতঃ॥ সামন্নাচেৎসপিনী . **ভবে** । **ইতি শ**বর্ত্বাবলী ॥

बर्मानाकः पृः स्त्रत्रप्रकी। ইতি
ভূतिপুযোগः॥ मर्मानाकर्उति
वि॥

মৎস্যনাশন: পু॰ স্বরপক্ষী। ইঙি হেমচন্দুঃ॥

म< मात्रिङा जी करूँ (वाहिशी i

मराम्

१५ इंडाप्रतः ॥

गटमानकी भू॰ धीवतः। गथा। किवर्त्ता धीवरता मामा मटमानकी व कालिकशाहिक हनायुः ॥

गटमानकिती की मटमानती। हैकि
हनायुः ॥

गटमानकः भू॰ सटमानक्षिणी।

गटमाद्रकः शृ शकिवित्मवः। गाह् द्राक्षा इंडि ভाषा। उट्शर्यायः। देशामी २ जनमृतः २ मनिहरः ८ । इंडि इत्रावनी ॥ मट्मप्राध्मनः द भीनद्रकः ५ मट्मप्रद्रकः १ मूहि-वकः ৮। इंडि भद्मद्रद्रावनी ॥ मट्मप्रद्राजः शृ द्राञ्चिमट्मप्रः। ईंडि दिकाश्रत्भवः॥ विद्रादेद्राजः । ইंडि महाভाद्रञः॥ मट्मप्रदिष्ठा जी कर्ष्ट्रका। ईंडि

ইতি ভ্রিপুযোগ:।।

रेवरऽकः।।

मध्यप्रतिथनः ज्ञी विष्णः। ইত্যমরः

मध्यप्रतिथनी ज्ञी महुशकी। ইতি

कोराधितः।। विष्णः। ইতি শব্द
तज्ञावनी।।

बर्म् महानिकः भू बर्मावाङ्गनः विष्मयः।यथा। मध्या १कातः मन वर्णावम्याति कशक्रः। माप्कः कर्षे देशस्य बर्मामङ्गिकः (वए।। इंडि मस्टिन्स्का।।
निकाश्यामा खी हिन्स्माहिका। इंडि
बिकाश्यामा खी बनिश्रनी। इंडि
निकाशिको खी बनिश्रनी। इंडि
निकाशिको ॥
निकाशिको ॥
निकाशिको ॥
निकाशिको ॥
निकाशिको ॥

ইতি ত্রিকাণ্ড**শে**ব:।। মৎস্যভক্ষ-

कि वि ॥

भए महाकी जी वाकी। इंड्रमद्रः॥

मा ह मानवाशाः। वृक्षीणाक

दें कि कि हिए। इंडि ड्राइः। क्था।

वाकी वयष्टा मर महाकी भीन्यकी

कामवल्लद्री। मर महाकी नि निवा

कहा वृश्याय क्रयाश्रहा ॥ इंडि

दाक्रिवंदेः॥ श्रुप्त्री। इंडिद्राल्लविवंदेः॥ विवासाहिका ॥ वृक्षीभाकः। इंडि द्रुपाला ॥

मृश्वत्वाथ वहाकत्र १।।

मट्रिका की मठ हिन्छ। न ह

वहान मान । इन्छ के हि। श्वतः।। काभी इन्छ विश्वतः।। काभी इन्छ विश्वतः।। कामी इन्छ विश्वतः। वशारेकनानामुः ममायानाः मध्यकाहि मिनामुः ममायानाः मध्यकाहि मविश्वताः स्वाति म्यानि म्यानि स्वाति ।।।।

विश्वति चिहानहानि मर्वकिम्हिः

म्न्री की खीम्द्र मुखाउि:। ইতি

তান্যপি। ততঃ শৈল• মহাদুর্গ• তৈঃ।। काभी পরিতঃ কৃতে।। পরিথানি क् डा निन्ता भ ८ (म्राप्तर्ग) कनावि-मा। मट्रिगाम्बी दिश कां विश् द्रयुक्त श्नः ॥ उम्र डीर्थः सहर 💖 ্যাত • মিলিত • গান্ধ বারিণি। যদা িসংভার মার্গেণ গ**ঙ্গান্তঃ পু**সরেদি-হ।। তদা মৎস্যোদরী তীর্থণ লভ্য-**उ भू**ग्रागोत्रवाट । मूर्या वन्तुमामाः शर्ब छेरा क्यांटिच्या भेजा। अर्ब পৰ্যাণ ভৱৈৰ সৰ্ব ভীৰ্থানি ভত্ৰ বৈ ्रकेर्डिय मर्स **लिकानि गका स्टाम**्रा मती य जः॥ मद्रामा मर्गाक (य ना-তা যত্ৰ জ্তাপি নানবাঃ। ক্ত পিও शुपाना (उन माजू करात मायाः॥ অবিমৃক্ত নিদ• ক্ষেত্র• মৎস্যাকারত্ব মাপুযাং। পরিতঃ স্বর্নী বারি সংসারে পরিবীক্ষতে।। মৎস্যোদ-र्यऽा॰ क्ञ माना (य नक्ना (छ नक्नान्त-মাঃ। ক্ত্বাপি বহুপাপানি নেক্ষন্তে ভান্ধরে: পুরী•॥ কি• স্বাদ্বা বহু তী-র্থেষু কি॰ ভন্না দুম্বর॰ তপঃ। যদি মৎস্যোদরী• স্নাতাঃ স্বতো গর্ভ ভয়• खडः ए वांच यव **हि निकानि नृ (ए**-व्य क्लानाशि। उब न्दरम्ताम्तीः ্ণ্গ্র স্মাতো নোক ভারন ॥ अधिजीधानारनकानि जृतुर्वः सर्गः

ভান্য পি । ন সমানি পরণ তানি কোট্য শেনাপি নিশ্চিত ।। ইত্থ তীর্থ কৃত তেন বিভো কৈলাস বাসিনা। গণাধিপেন সুমহৎ সুম-হোদর কর্মণা।। ইতি কালীখণ্ডে ৬৯ অধ্যায়ঃ।।

মথ জ এ গাহে।ইতি কবিকল্লজনঃ
।া জ মস্থ: মথ:। এ অমথীৎ। ইতি
দুর্গাদাস:।!

নথ ই সংস্থাইতি কবিকল্পদনঃ।। ইনস্থাতে। সংস্থা বধক্লেশৌ।ইতি দুর্গাদাসঃ।।

মথন ক্লী বিলোডন । ম'ওয়া ইতি
ভাষা। যথা। ক্লাহ • মন্দ্ৰতিঃ ক্লেদ • মথন • ক্ষীরবারিখে: । কি • তত্র
পরমাণু কৈ যত্র মজ্জতি মন্দ্রে:।।
ইতি শ্রীধ্রস্বামী।।

নথন: পু• গণিকারিকাতৃক্ষ:।ইতি ় রত্নমালা।।

মথিত শ্লী নির্জলঘোল। ইত্যনর:।। অস্য গুণা:। কফ পিত্ত নাশকত্ব। রোচনত্ব। ধাত্তপুষ্টিদত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্পত:।। বিলোডিতে ত্রি।।

মথুরা জী স্থনামথ্যাতপুরী। অধুনা আগরা ইতি খ্যাতস্যাগুবনস্যন-গর•। তৎপর্য্যায়ঃ। মধ্পম্ব॰ ২। ইতি তিকাওশেষঃ।। মধ্পরী ৩

মধুর। ৪। ইতি শব্দরত্নাবলী।। সা চ भाक्तरायक**ीर्थ•। यथा। व्याध**ा मथुत्रा माया कामी काक्षी व्यवश्विका। পুরী দারবতী চৈব সম্ভিত।মোকদা विकाः॥ व्याप्तिश्रा त्रामनगत्री मधूता কৃষ্ণ পালিতা। এতান্ত পৃথিবী মধ্যে ন গণ্যান্ত কদণচন।। শ্রীরানধনু রগুন্থা অযোধ্যা সামস্থাগরী। মথুরাকেশ বোৎসৃষ্ট সুদর্শন বিধারিতা॥ইত্যা দি ভৃতশুদ্ধিতন্ত্ৰ• ॥ 🗱 ॥ তত্ৰ বিষ্ণু मर्गन माहाजार यथा। यदिकार मूक्र हारमा अञ्चा देव यमूना कला। मथू রাযা• ছরি• দৃষ্টা প্রাপ্রোতি পরমা• গতি॰।। যমুন। সলিলে স্নাতঃ পুৰু-ৰে। মনিসভন। জ্যেষ্ঠা মূলামলে প क्क चारमा गूभवामक् ।। नन-ভাষ্ট্যাচ্যুত সন্যক্ मध्वाया समा হিতঃ॥ অশ্বমেধন্য যক্তন্য প্রাপ্নোo प्रिक्**षण कार्यः ।। किल्फ्स्यः अ**र ल जानः कानिकी मनिनाञ्ज् उः। অছযিষ্যতি গোবিন্দ মথুরায় মু পোৰিভঃ ৷৷ জ্যেষ্ঠা মূল সিতে পক্ষে ख्रिनवः वयमभूष्ठ । श्रतामृष्कि भवा-প্ল্যান স্তারিতাঃ সমলোডবৈঃ৷৷ইতি বিফুপুরাণে ও অংশে ৮ অধ্যায়ঃ la । जन्या भाषाज्याः यथा। वताक् উব্চে: ন ব্দ্যতে চ পাতালে নাভ 🍴

जीत्क न मानृत्य । जमपुः मरद्राया हि भिरा भन घमुन्नता ॥ मृउडेवाह । ভদুত্বা বচন ভস্য প্রণন্য শিরসা छमा। शूग्रानाः भन्नमः भूग्रः शृषी वहन मत्वी ८॥ भृषिवृ । वाह। शु इतः দৈনিয়ণ চৈব পুরী বারাণসী তথা। এতা হিত্বা মহাভাগ মণুরাং কিং পুশ-সসি।। বারাছ উবাচ। শূনু-কাত্রেন বসুধে কথ্যমান স্বান্য । মথুরেতি চ বিখ্যাত নান্তি ক্ষেত্র পর নম ।৷ সা রম্যা চ সুশদ্ধা চ জ-अञ्भिः शिया मन । मृत प्राचे यथा खोमि मण्दाः भाषशादिगी।। ७-মিবাসী নরো যাতি নোক্ষণ নাস্ত্যত্র नः नयः। नहामायाः भुवात जुव ফল• লভতে নরঃ॥ তৎফল• লভ **८७ (एवि अथूतायाः** नितन हितन । कार्जि ह्यास्किव यद भूगा भूष्ट्रात जू वमूक्तत ॥ ७९ कनः नज्ज पित मथुताया॰ फिरन फिरन। भूर्ल वर्व मइ-भु जू वाद्रागमप्रास्त यट कन । जट कनः न ज्ञा एति मथूतायाः कान-ন হি।। নথুরাঞ্চপরিত্যজ্যযোৎন্যত্ত্র অকতে রতি। মূঢ়ো ভুনতি সংসা রে নোহিতো মায্যা ম**ন**া৷ যঃ **শৃ**-ণোতি বরারোহে মাথুর মন মৃত্ত ল । অন্যেনালারিত শ সন্ক্রা

क्लि भारेनः भुमूह्यत्व ॥ भृषिवताः। যানি তীর্থানি আসমুদু সরাংসি চ। मण्दाया॰ गमिष्ठान्ति मूखि हिव बनाः फर्टन ॥ मधुद्राः भमनुभूषि भुष्तः কৃত্বা যথা বিধি। ভূপ্তি যান্তীহ প্রিতরে। যাবৎ স্থিত্যপুরুষনঃ ॥ ে বসন্তি মহাভাগে মথুরা মিতরে ভ্রমাঃ।তেপি যান্তি পরাণসিদ্ধিণ মৎ शुत्रातात नः नयः ॥ ज्यागुरक (नो-কর্বে মথুরাযা• বিশেষতঃ। বিনা-সাংখ্যের যোগেন মৃচ্যতে নাত্র সং-শ্রঃ ৮েন্থুরায়া• মহাপুর্ব্যা• যে ব मंडि मुहित् अञ्च विविध्यकाशुमा-জারে। যে বা তে নরবিগুছাঃ ॥ ভ-বিষ্যানি বরারোহে দ্বাপরে যুগ সং-স্থিতে। নথাতি ভূলবংশাচ্চ ক্ষত্ৰিয়ঃ ञ्चवकानः । ভবিষ্যানি বরারোহে মগুরাযাণন সংখ্যঃ। মূর্ভ্তি চতুরি-ধা কলা জ্বলেনি **প্ৰিভিঃ স্বতঃ।।** शामनानि या मात्र **णाउः गुरक्षम् कृ**ठ रिम्छ्यः अध्यक्तम् **मकामा दि** कात केक्ट्र गा वालाक जम्ला জান্য শ্ৰন্ধত**ংপল সমিভা। তত্ৰ** अयान क्यानि उतिष्ठ विभ नि যে ৷৷ পুণতানি চ পবিত্রাণি সংসার ছে৯নটন চা ব্ছ**ংহ• ঘাত্যিষ্যামি** ্রাজ শতি বসুজরে ॥ দৈত্যান্থে।

রান্ নহা ভাগে ক**ংশা**দীন্ **যোরদর্শ** নান্। যমুনা যত্ৰ সূবহ। নিভাঃ সমি-হিতা প্রব ।। বৈবয় তম্ব সারস্যা যমুনা যত্ৰ বিশুতা। ভা• নদী• যমু-নাং গঙ্গাং পুৰাগে সঙ্গ বিশুক্তাং ॥ পকা শতত্ত্বা পুণ্যা মথুরে মম মও ल। यमुमा विभुजा परि नाव कार्यत বিচারণা ৷৷ তহ তীর্থানি গুছানি **ভবিষ্ঠান্ত ম্মানছে ॥ येवृ न्नानश**-রো দেবি মম লোকে মহীযতে। অ-থাত্র মুঞ্তে প্রাণান্মম কর্ম পরা-য়ণ:।। ন জায়তে স মর্ত্যেষু জায়তে চ চতুভুজ:। অবিমূক্তে নর: স্নাত্মে মুক্তি॰ প্রাপ্নোত্যসংশয়ং।। তথাত মুঞ্তে প্রাণাম্মলোক স গছতি। বিশান্তি সংজ্ঞকং নাম তীর্থং বৈলো-ক্য বিশু, হ॰ ॥ য:মিন্ স্নাতো নরে। দে-বি মমলোকে মহীযতে। সৰ্ৰতীৰ্থেৰু यट्यान मर्बडीर्ध्यू यट्कन ॥ उट क**न॰ न**ভতে দেবি দৃষ্ট্বা দেব॰ গত-শুন•। নচ যক্তৈ ন তপসা ন ধ্যানৈ र्ने में गरियः ।। उद् क्वा व बाउ (ह. বি ন্নাতো বিশান্তি সণজ্ঞকে। কাল-ত্রযন্ত ব্যুপে যঃ পশ্যতি গত**শুন** । ৷ कृद्व। शुरक्षिण एव जु विकृत्वाक अ গছতি। অন্তি চান্যৎপর• গুহু• সর্ব जि॰ जात (नाक्ष्य ।। यिवन त्राउ।

नाता (हिव मम लात्क महीयाउ। भु याग॰ नाम जीर्थं छ (एवानामिन पूर्व छ॰ া ভিমান সাভো নরো দেবি অগ্নিষ্টো-म कनः नाउट । हेन्युत्नाकः मना-माम्। नाता देव उत्र भामत्य।। जाथाव मूक्ष जुागान् गम (लाक म गह्र जि। তথা কন্থল ভীর্থ নাম ওছে পর মম।। স্থান মাত্রেণ তত্রাপি নাক প্-😘 স মোদতে। অন্তি ক্ষেত্রণ গরণ **ওহ্য • তিন্দুক • নাম নামত: ।। ত**িমান্ ব্নাতো নরে৷ দেবি মম লোকে মহী: यতে। অম্দি স্তীর্থে পুরা বৃত্ত ত ह পুষ বসুন্ধরে॥ পাঞ্চাল বিষয়ে দেবি क्रान्त्रिवाधः भूताखमः। धन धाना সনাযুক্ত• বুন্ধনত্তেন পালিত• ॥ ত याः स वमाउद्दि जिन्दू को नाम ना মত:৷ তৃষ্মি স্তু বসত স্তস্য নাপিক স্যু পুরোত্তমে।। কালেন নহতা ত স্য হুটুন্ন• ক্ষ্য মাগত•। ক্ষীণে হুটু ম্বে তু তদা সূভৃশ• দুঃখ পীডিত: ॥ সর্বসঙ্গ পরিত্যাগী যো গছম্মথুরা भूदी । द्वाञ्चणावमाथ (माणि वमः মানো বসুদ্ধরে॥ তস্য কর্ম শত॰ क्दा मारिवय यमूना॰ नही॰ । তত मा নঞ্চ অক্তে নিত্য কাল দৃঢবুত: ॥ তত: কালেন মহতা পঞ্জবু সমুপা গভঃ৷ ভস্য ভীর্থ পুভাবেন জাতো 🎚

ংনৌ ব্ৰাহ্মণোক্তনঃ ।। তিমিন্ বরগৃ-ए एनि वृाक्ताना रयाणिना वद्रः। জাতিমরো মহাপ্রাজ্ঞো বিফুভক্তো বসুন্ধরে।। তস্য তীর্থ পুভাবেন প্রা-প্তা মূক্তিঃ সূদুর্লভা। ততঃ পর॰ সূর্য্য जीयः **मक्त्राम भूगा**हनः। रेवाहाः চনেন বলিনা সূর্য্য স্থারা ধিতঃ পুরি।।। जुष्टेत्राष्क्रान विना धनकारम् देव-भूता ॥ উष्कृ वाङ् निताशात उत्तरा-নুত্তন॰ তপঃ। সাগু॰ সহৎ সর॰ দেবি **७** : काम नवाशु यार ॥ उन्ना भूम-(म) छगवान न्रुपिः भु उर्डाय् । কি কারণ বলে বুহ্ছি তপস্যাস ম-रखभः॥विव्यक्तातः। जुरेत्राक्तामाः (मरवन भाजात्न निवमागुइ॰। वि-ৰেনাপি বিহীনস্য স্টুম্ব ভরণ **স**্ णः ॥ मु**ञ्**ठीखम् देव मृत्यं। एति हि-স্তানণি ততঃ। চিম্তানণি সনাসা-দ্য পাতাল মগমন্তদা।। তিমা• छी-র্থে নর: স্থাত্বা সর্বপালে: পুমুচ্যকে । তত্রাপি নুঞ্তে পুাণান্ ননলোক॰ স গছতি॥ আদিত্যে হুছবি স্নংক্রা। ভৌ গুহণে চন্দু সূর্য্যোঃ/ তিমিন্ স্নাতো নরে৷ দেবি রাজসূগ ফল• ল_ং ভেৎ ॥ শত্র ধ্রুবেণ সম্ভপ্ত ইছবা **পর**-ম• তপঃ। অত্র বৈ ম্নান নাত্রেণ প্রুব লোকে নহীয়তে।। তত্ৰাপি ক্ষুক্ত

প্রাণান্মম লেকে মহীযতে। প্রবতী-(र्थ ह बनुर्द्ध यः **मान्तः अ**क्ट नदः ॥ াপতৃণভাষ্ণতে **সর্বান্ পিতৃপক্ষে** বি শেষতঃ !৷ দক্ষিণে প্রবতীর্থস্য তীর্থ ্রাহ: পুকীর্ত্তিত ।। তিমা:সাতো নরো रपति मन (नारक महीयरछ। उजाय মুঞ্জে পুাণান্মমলোক স গছতি॥ ভদ ক্ষিণ মহাদেবি ক্ষিতীর্থ পর ম্ম ডব্ৰসাতো নরোদেবি ঋষি লো-ক পুলদ্যতে ৷৷ অথাত্র মুঞ্তে পা-गामन लाक महीयछ। मिक्त मश्रा जी मथ्रा। इंडि विक्न-অ্ষিতী্থদ্য**েলাক্ষতীর্থণ পরণমন।।** मान मादान वमुख माकः भारतीः তি মানবং। ভত্তাথ মুঞ্চতে প্রাণাম-ম লোকে মহীযতে॥ তবৈব কোটি তীর্থাই তীর্ণানানপি দুর্লভ । তত্ত্ ज्ञातन नातन मन लाकि महीयाज া কোটি ভীর্থে নর: স্নাতঃ সম্ভর্গ্য পিঠু এবেডাঃ । **তারিডাঃ পিতর**-ত্তেন তথিব পুপিতামহাঃ॥ কোটি জ্বার্থ্যেনরঃ স্নাতো বুন্ধলোকে মহী-যতে তিৰেৰ বায়তীৰ্থন্ত পিতৃণাম-लि मुर्जिह्न शिखा मम्बाजु वेमूर्य शिवृत्वाके न गहिं ॥ गरा निख शुक्रातन यद्कृतः नज्ञ नद्रः॥ ज् योगः ग छठि (स्वि कि प्रक्षिमाना म अ--भिने ।। हारिण जानि जीर्थानि एक-

বানা• দুৰ্লভানি চ। স্থান• দান• জ-পো হোম: সহসু গুণিত ভবেৎ।। এবা মরণ মাত্রেণ সর্বপালৈঃ পু-मूह्य । मुद्रा जीर्थम्य माहाजाऽ॰ **न**र्बान् कामानवाश्च्याट् ॥ इंज्रान দি বরাহপুরাণে মথুরাতীর্থ পুভা-বঃ।। 🗱 ।। ইতঃ পুভৃতি সগুবি•শা-ধ্যাবেৰূ মথুরামাহাত্ম্য জ্ঞেন ॥ মথুরেশ: পু॰ 🖺 কৃষ্ণ:। ইতি শব্দ-त्रञ्जावनी ॥

(कायः॥

भर के जगहेत थि इर्था इंडि কবিকল্পজন: ।। ই ঞি নত্তোৎস্তি। ভ य माम् ऽ । इत जमम् जमा-मीट। अमाट भुषामिद्राट निजुः **उ ই**ত্যন্যে। ইতি দুর্গাদাস: ॥

মদ ম গর্বে॥ গ্লেপনে। ইতি কবি-কল্পজন: 11 গর্বো ২হস্কার: গ্লেপন रित्न्य । स समयित नीष्टः सम्मिडिः । মদযতি শত্রু• শ্র:। ইতি দুর্গা-माजः॥

मम क ७ ज्छिरगार्ग। ই जि कवि-कन्नकनः ॥ क ७ मनागामयाञ् य-न्। नाजान्याम त्रमायनां । ইতি मूर्गामानः ॥

मर दे उ अर्था जाउ।। गर ॥

মোদে ॥ স্ততৌ ॥ গতৌ । ইতি কবিকল্পক্ষমঃ ॥ ই মন্দ্যতে । ড মন্দতে জনঃ মণিতি জড়ো ভবতি মাদ্যতি মোদতে স্তৌতি গছতি বা ইত্যৰ্থঃ। ইতি দুৰ্গাদাসঃ ॥

यहः भृ इखिगखन । उद्भर्गा यहः । कार १ । इयः । उद्भर्गायः । व्यापा । व्यापा

মদকট: পূ॰ বগুঃ। বাঁড্ইতি ভাষা

। যথা। ইত্বনো গোপিতঃ বণ্ডো

কৃষো মদকটো হলঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।।

भनकनः भृ॰ गखश्खी। उद्देशयः । भाषाद्यकोः २। ইত্যमदः॥ व्य-द्याल्युनाभी। ইতিশন্তব্যবনী॥ भरावाङ्गवाहिनि जि। ইতিমেদিनी भरणकः श्रु॰ मश्रह्मवृक्षः। ইতি রাজনিঘটঃ॥

भरगक्षा जी भिरता। अडिनी। इंडि तालिमियंगः।।

मम्बी खी পुं छिका। इं छि करें। ध्रां मननः পु॰ कामरन्यः। ইত্যমরः॥ **७**ग्र नामा वृष्ट्रशिख यंथा। अवय উচুঃ।যমাৎপুমথ্য চেত স্তৃ: জাতো ৎমাক তথা বিধে:। তমামমথ নানা ত্ব লোকে গেয়ে ভরিষ্যসি ॥ জগৎসু কামৰূপু खुः ত্বৎ সমো-নহি বিদ্যতে। অত স্তু কাম নামা-পি খ্যাতো ভব মনোভব।। নদ-नाबारनाथ) छु॰ मास्त्रा र्रभाट मर-र्भकः। उथा कन्तर्भ नामाशि लाक খ্যাতো ভবিষ্যসি॥ ইতি কালি-काभूतात् २ व्यथ्यायः॥ #॥ तुक्तन म्यादशिख यंथा। **পু**ङ्केमानमः भूधः करेनाकाक ममर्क्कर । रूक्षेमा কামিন: পুঞ: কানদেবো বভুব হ।। कन्ता (बाज्यवर्षी या बङ्ग्र्यंग ज् বিতা। উবাচ পুঞ সু বিধিঃ সুদী-थ भूत्र डः क्रिड ।। मूर्मियार्थं मूट कलाः मः साजात्रामः मताहतः। बुक्तावाह। जी शृरमाः की पूना-थाय मूनाव्य विनिधिकः हिंदि যোগে। সর্বেশ। মধিষ্ঠান করিষ্যান। ৷ শন্মাহন সমুদ্বেগ বীল স্তম্ভিত काव्रभः। उग्रस्य वीकः ज्वनः नश्रः চেত্রন হারক• II **পুগৃহৈতাদ্মযা দ**-कान् प्रदीय अस्माहनः अकः। पूर्निः বার্ষ্যাে মম বরাজ্ব বৎস ভবেষু চ स वानामरे द्वय पृक्ता ह शुरू हेण्ड जग-বিধিঃ । দৃষ্টা বাচণ দুহিতরণ বর ্রে সমুদ্রে।। ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে बैज़न्द्रकारङ ၁৫ व्यथ्जायः ॥ 🗱 ॥ 🖟 ৰসঙ্গা গুল্পুর্য । **সিক্থক । ইতি** (भारती ॥ वृद्ध व्हरः । स्यना हेि ভागा। उद्भर्गायः । भिष्ट्कः २ म्-চুন্দ্র একটকী ৪। ইতি রন্নমালা n পিশ্ৰী ভকঃ ৫ মুক্তবকঃ ৬ **খসনঃ ৭** ক্রক্তিক ৮ **শল্য: ১। ইত্যমর:**॥ ভুন্ধঃ ইভি জটাধ্রঃ॥ মাৰঃ।ইভি रङ्भ्रहन्तुः ॥ श्**रित्र**वृ**कः ॥ ইতি শব**-हिन्द्रिका ॥ नरकाठेव्कः ॥ वक्वव्कः । বৃক্ষ বিশেশ**। ম্যন্ফল ইতি ভাষা** । एड शुम्रामः । भनाः २ रेकर्रेगाः ० শিশুঃ हे ধারাফল: ৫ তগর: ৬ কর-্ৰুটিঃ ৭ গিণ্ডীতকঃ ৮ খসন: ১ম क्कि: ३०। अग्र छनाः। विभकात्र-कृत्वः। ि ज्ञात्वर्। उँकवीर्यप्रदः। त्वः थ्रेष्ट्र । नग्द्र । क्कद्र । क्र क्का মাই শোফ গুলা বুণাপহত্বঞ্চ ইতি

वाजनिर्घण्टः ॥ चानिक्रनिर्धण्यः । उज्ज्ञकाः नायका नायिकायाः कर्छ इसः हवा विजीयहसः उन्तरा नथ्र रहरण हवा यहान्त्रियकि । ইতি कामणातः ॥

মদনক: পু॰ দমনকবৃ**ক্ষ:।ই**ভিরত্ন-মালা॥

महनकाक्त्रवः भू॰ भात्रावजः। ইতি त्राक्षनिर्घण्डः॥

महनरगानानः भू श्रीकृषः। यथा वस्त्र भरन रगानानः किल्नाद्राका द्र मञ्जूष्ठः। ইতি नास्य नाळान चरखे अवशायः॥

महनहजूर्मो की रिज्यमुक्क हुर्मो।
यथा। ज्ञाथ महनहजूर्मो ठाव महनः
मह भूका कार्या। स्वन्त भूजान (मीद्राणम्याः। मधुगारम ठू मः भुारथ
म्बल्यक हुन्मो। (भुाका महन
चुक्की ठि मिक्का ठ न स्वार्थ स्व स्व भस्वरिष्ठ शिक्का ठ न स्वार्थ स्व स्व भस्वरिष्ठ शिक्का ठ न स्वार्थ स्व स्व भस्वरिष्ठ शिक्का भूका स्व स्व स्व भस्वरिः। (ठ या छि भव्रमः स्वानः महनम् । भूका व जः।। रिहाव मा नि ह जूप्रमार भवनम् महार मवः। स्व
अञ्चला का स्व स्व स्व वित भुकि
स्व भी व मम्बिकः। वित भुकि
स्व भी व मम्बिकः। वित भुकि
स्व भी व मम्बिकः। वित भुकि

माहनः मानवाधमाः। (छवाः भृगुः कलः हलः भया (छ हिजमानिकः॥ हित्र मुङ्गाउष्टूर्ण्णाः यः न्नायाहित निव्धारो । निमाहदः न छम् मुग्रेष्ट्र श्रेष्ट्रायाकः विस्मयजः ॥ ইতি ভিশ্বিজ্বः॥

भरनज्यारणी जी रिज्जण्डाज्यार-শী। তত্ৰ নদনস্যুত্ত কৰ্ত্ব্যুণ। य থা ভবিষ্যে। চৈত্র শুক্লক্রযোদশ্যা• मनमः समनाजाकः। क्षा भःभूका বিধিবদ্বীজযেদ্ব্যজনেন তু ৷৷ তত্ৰ সমূক্ষিতঃ কামঃ পুত্র পৌত্র বিব र्ष्वनः। कामरम् व खर्यामभागः भूजः নীযো যথা বিধি।। রভি প্রীভি সমাযুক্তো হুশোক মণি ভূষিতঃ। मग्रामा मग्रमेकवृक्षः मञ्जूक्षि**ः** श्री ণিতঃ। কামদেব ধ্যানন্ত। চাপেষ্ शृक् कामारिता क्रियान् विश्वाना रनः। ७७ स्रुठि अञः। भूक्रधन्न নম স্তেম্ভ নমস্তে মীনকেতন। মূনী 👍 ना (लाकभाषाना दिश्य हू। जिक् তে ননঃ ৷৷ মাধ্বাত্মজ কন্দর্গ সম্ব-রারে রতিপুয়। নমস্তভ্য জিতা-শেষ ভুবনায মনোভুবে।। আধযো गग नना छ वा। यग न न तो त जाः। সম্পদ্যতা মভীষ্ট নে সম্পদ: সন্ত म श्रिताः॥ नामा नामाय कामाय

(स्व (स्वम) मूर्खिय । वृं मा विकृ मि-(वन्तुगा ननःका छकताय ह।। अ ব বং সকতে প্রামনস্স্য মহা-ত্মনঃ। ভবন্তি নাপদ শুস্য তমিয়া-দে কদাচন॥ ইতি তিথিতত্ত্ব• ॥ मनवादभी जी रिज्जुक्वांदर्भी। অত্র নদন বুত • কার্য্য । যথা পাষ্য উচুঃ। শ্ৰোত্মিছামছে সূত মদন षामणी वुंज । मुजानकानशका শৎ যেন লেভে দিতিঃ পুনঃ ৷৷ সূত উবাচ। यहिंगिशकिः भृद्ये हि-তেঃ কথিত মুক্তমথ বিস্তরেশৈতদে বেদ শংশকাশান্নিবোধত ৷ চৈ-**ত্রেমাসি সিতে পক্ষে দা**ক্স্যাণ নিযতবুতঃ। স্থাপযেদবুণ স্বস্তুণ সিত তণ্ডুল পূরিতে ।। নানা ফল যুত • তদ্বদিক্ষু দণ্ড সমন্বিত । সিত বন্ত্ৰ যুগছন্ন• সিত চন্দ্ৰ চৰ্চিত• ॥ নানা ভক্ষ্যফলোপেত সহিরন্যঞ্চ শক্তিত:। তামুপাত্র• শুভোপেত• **उरम**्राभित्र निर्वत्रयथ्या <u>ज्या</u> मृ পরি কামন্ত কদলীদল দ। ছিত।। অ্ব্যান্ত্ররযোপেতা ব্তি তস্য চ বামতঃ ৷৷ গন্ধ ধূপ ততো দ্ধ্যাৎ भी उ वान । क का ब्रह्म र । उन्जार कथा अर्था कामतम्भवत्य नंतः ॥ कान नाम हरत तहां मार्निय नुष्ट

বারিণা। শুক্লপৃষ্ণাক্ষত তিলৈ রর্চযে चारुम्हन ।। कानाय शासी मःभूडा कर्ष (जो जाग्रहार हा छक् स्रजा-গেতি পুনর্মশ্বথাযেতি বৈ কটি ।। স্ব ছোদরাযেভূদের অনস্থাযেভূরে। খ্রেঃ। মুখ• পদামুখাযেতি বাছ্প- " ्षंभवाय देव ॥ नमः भर्बाञ्चात भोनि মৰ্চ্যেদিতি কেশব॰। ততঃ পুভাতে छ ब्रम्भ वुष्ट्राभाग निविषय ॥ ব্ৰাহ্মণান্ ভোজযেক্তক্ত্যা স্বয়ঞ্চলব-गाम् छ। ज्**काथ मक्तिगाः मम्**रामिनः मञ्ज मृतीत्र्यया भुग्नीयका मञ्ज छनः वान् कामक्षी क्रनाफ नः। इम्रय मः र्ब ज्ञाना नानत्नि। त्या विश्वीयत्ज ॥ व्यत्न विश्विना मर्बर नामि गामि म भाग्द्र । उभवाभी ज्यामण्या **ष**र्द्दाविकु नव ।। कल (नकक नः প্রাশ্য দ্বাদশ্যা॰ ভূতলে স্বপেৎ। ত ज अरगाराम मानि घ्ठ॰ (धनू ननः न्वि ७ ।। भग्रा॰ मम्रामनङ्गाय ऋर्ताः পাক্ষর সংযুতা। কাঞ্চন কামদেবঞ্চ শুল্লা প্রাঞ্জ প্রস্থিনী ।। ব্যসোভি विकासिमा की भूका मुका , विजूब-रिका महारा भवानिक नन्तर श्री र्वेष्टा अधिकत्वर ॥ स्थान महिल खिँदाः जयंग्रद काम नामानि की खंग-न्। गरवान मांध्या देवव भाग्रामन ह

वर्षावि ॥ विष्ट्रा । विष्टु । विक्रं । वेक् म्डावि मार्टेड विविद्धि । वेक् म्डाविश्व मार्टेड विविद्धि । वेक् म्डाविश मर्डेड व्यापा म्हाविश । यः व्यापा विविश्व । यः व्यापा विविश्व । येक् म्हाविश गियाः। मर्वेषा प्र विविश्व । येक्ड श्राप्ट्रा विविश्व म्हाविश म्हाविश्व । येक्ड म्हाविश्व म्हाविश्व । येक्ड म्हाविश म्हाविश । येक्ड म्हाविश । येक्ड महनेष्ठा थेड । येक्

त्राकिनर्यकः।।

त्राकिनर्यकः।।

त्राकिनर्यकः।

त्राकिन्यक्रिकः।

त्राकिनर्यकः।

त्राकिनर्यकः।

त्राकिनर्यकः।

त्राकिन्यक्रिकः।

त्राकिनर्यकः।

त्राकिन्यकः।

त्राकिनर्यकः।

गहनमाना की कारमाफी भरकीयथः।। সারিকাপকী। ইতি মেদিनी।। কোকিলা। ইতিশদর বাবলী
মদনসারিকা জী পক্ষিভেদ:। সা
লিক্ ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়:।
শলাকা২ সারিকা ৩ চিত্রলোচনা
৪ স্বণপী ৫। ইতি কটাধর:।।

महना जी मुता। इंछि (इनहन्मः॥ महनाक्ष्मः भू॰ लिङ्गः। इंछि जिका-अल्परः॥ नथ॰। इंछि कानाक्ष्म भद्र हर्मनाद्। यथा। कामाक्ष्माः স্কুশিত কামি মতঙ্গজেন্দু। ইতি খু, তবো**ধে কালিদাসঃ।**।

নদনাপুকঃ পু॰ কোদুবঃ। ইতি রাজ নিঘণ্ট: ॥

मनगग्धः शृ ७ग । ইতি **भप**ः ठिनम्का ॥

লদনাযুব: পু॰ কানবৃদ্ধিক্স্প:। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

महनालयः भू जगः। महन भर्यायक শব্যেত্তর গৃহপর্য্যায়ক শব্দেন ভ-গস্যোক্তত্বাৎ। যথা। স্বপুষ্নে রা-कीर्न अनुन्धन्या मनिएत महा भूरता श्रायन् श्रायन् यपि क्रशि ভক্ত ত্তব মনুং। ইতি কপ্র স্তবঃ । जन्म नगाविष मधम सानः। उडू कागाञ्चान । यथा। मूर्यता मूत्रहान् किय व्य गृग जी घनीता छ। गृतक भियशी ন্দু দ্বয তিথি শরান্ সপ্তবি শা • শ বি শান্। অ শানে সান্বদতি य-বন *চান্ত্য তুকান্ সুতুকান্ তানে-বাংশান্মদনভবনেম্বাহ নীচান্সু नीठान्।। इंडि भी शिकायाः महन **ज्यन गद मर्मना**ए॥

भननावङ् । जी कामावङ्गा माजू मम छिनी जी भाजपूर्णी। इंजि উদ্বেগৰূপা। বিরহ ইতি যাবং। রাজা নিঃখন্য। জানে তপসো বী 📗 রহাবলী।।

র্য্য**• সা বালা প**রবতীতিমে বিদি-ত ৷ নচ নিশাদিব সলিল নিবৰ্ত্ততে ততো নে হৃদয•॥ ইত্যভিজ্ঞা**নশ**• ञ्डलायाः ० अकः ॥ मरनावङ् ইতি রাজ্ঞো ২ত্র উদ্বেগন্ধপা পঞ্চ মী কামাবস্থা। যদাহ ভরতঃ। উ-দ্বেগঃ পঞ্চনঃ প্রোক্ত ইতি। সঙ্গিন্ত মিতি কেনোপাযেন মন শব্দস্তলা-লাভো ভবিষ্যতি। ইতিভটীকা॥ मन्नी खी मुद्रा। ইতি श्वावली॥ কন্তুরী।। অতিমূক্তক:। ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥

महत्महांकनः श्रु अष्दत्रभानः। इंडि রাজনির্যন্টঃ।।

महत्ना अनः भू उदमवित्मयः। हानाका इंडि थ्याञा । उट्भ-র্য্যাথঃ। সূবসন্তকঃ ২। ইতি হারা-नी।।

महाना हो अर्गात्मा। इंडि नद्रज्ञावनी ॥

नम्भूरवागः भू• कद्रिभा•मामामः। **७८**भर्गायः । व्यञ्जाः ३.1.३७ ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ 🛝

भद्रानमुका ॥

यथा। ততঃ পুবিশতি মদনাবস্থো মদযন্তিকা স্ত্রী মল্পিকা। ইতি শব-

अपराशे जो वनमिला। कार्निला इंडि ভाষা। ইंडि व्रद्भाणा।। म लिका। ইंडि व्राक्षनियंग्टे:।। भरिषद्भ की भर्डि। ইंडि मिरिनी।। भरिषद्भः भू॰ कामरहवः॥ (मोखिकः । ইंडि मददद्भावणी।। मर्युकः। इंडि मदद्भावणी।। मर्युकः। इंडि मिर्देशिति।। (नयः। ইंडि जि कार्खःमयः।।

মদবিক্ষিপ্ত: পু• মত্তহস্তী।ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

बनमाकः पृ॰ উপোদকী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

भन्नातः भू•- जूनवृक्तः। ইতি রাজ-নির্ঘণীঃ।।

भुष्ट्यिनी खी भ्रहाकब्रक्षः। ইঙি ब्राजनिर्घणेः॥

মদহেত্: পু: ধাতকী।ইতিবৈদ্যক:
।। মন্ততাকারণঞ্চ।।

भिष्ण के सम्भानः। यथा। व्यवः प्रश्नः मूद्राभानः मूखाभानः सप्रः स्रवः। ইতি सप्तद्रद्रावनी ॥ भिष्णुनः के सप्रभानस्थानः। उट-भर्युर्वः। सुकाभानः २। ইত্যমद्रः॥

মুদাচ্যঃ পূর্ণ তালবৃক্ষঃ।ইতিরাজ-ক্রিটিঃ।। মুদুযুক্তে ত্রি।। মদাচ্যা স্ত্রী লোহিত্রিণ্টা।ইতি

भंद इन्द्रिका ॥

नमाज्यः भू॰ नमाज्यवागः। ইতি वाजनिर्णः॥

मनाजायः भू॰ मनाभानानिकनारताः गित्रियः। उट्भर्यप्रायः। समाज-कः २ भानाजायः ७ मन्द्राधिः ८ न मः ৫। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ अथ महाजुराहीनाः निहानानग्रह। वि-বস্য যে গুণা দৃষ্ঠাঃ সন্মিপাত পু-(कांभनाः । ७ वतः माम् पृम्पुरस বিষে তু বলবন্তরা:।। তন্মাদবিধি পীতেন তথা মাত্রাধিকেন চ। যু-ক্তেন চাহিতৈ রগ্নৈ রকালে সেবি **उन** है।। मर्रिन थेलू जायर मही-ত্যব মুখা गनाः। 🗱। অবিধি পুযু क मन् विवादा खत्र मन् १८ ना न-যতীত্যাহ। নির্ভক্ত মেকান্তত এব मम् ५ निरमव । मान् । मन् । निरु । । উৎপानराए कष्टे जमान् विका-वानुरभारवहाभि मबीब्राख्य ।। क्तां खरा देवत खर्या प्रविकादान् म-**माज्यातीन्। मतीत्रम्य (७५॰ ना-णः** ॥ # ॥ महाज्यातीनाः **(रु**ज्-ম্বরমপ্যাহ। ক্রুদ্ধেন ভীতেন পি-পাসিতেনশো কাভিতপ্তেন বৃভূক্ষি-তেন। ব্যাযান ভারাধ্ব পরিক্ষতে-ন বেগাবরোধাভিহতেন বাপি।। অত্যন্ন ক্ষাব্ততোদরেণ সাজীর্ণ

ভূকেন তথা হবলেন। উফাভিত (धन ह (मन्।मान करता कि मन्। विविधान् तिकाजान् ॥ 🗱 ॥ তानिव বিকারান্ বিতৃ:ণাতি। পানাত্যय॰ পর্বদ পানাজীণ ম্থাপি বা। 🕸। ভপান বিকারান্ বিব্ণোতি । পান বিশ্ন নৃগ্ঞতেষা বক্ষ্যানি লক্ষণ 🏨 তের ন্বাত্যব্দ্য সামান্য লক্ষ্ণ ्भाइ। भतीत्र पृःथः वलवट शुर्भारहा হ্ববে ব্যথা। অৰুচিঃ পুতত তৃঞা জুর: শীতোঞ্চ লক্ষণ: ৷৷ শির: পা ,শ্বাস্থি সন্ধীনা বেদনা বিক্ষতে হথা। জানতেতি বলাৎ জ্যা স্কুরণ বে भनः भुगः॥ উরে। বিবন্ধ: कामक স্থানে। হিক্কা পুজা শরঃ। শরীরকস্পঃ কর্ণাক্ষি মৃথরোগ। স্ত্রিকগুহঃ॥ ছর্দি বিছেদ উৎক্লেশা বাত পিত্ত কফা-আকঃ। ভুনঃ পুলাপো ৰূপাণা মস তাক্ষৈব দর্শন• ॥ তৃণ ভষ্ম লতা পর্ণ পাংশুভি শ্চাবপ্রিত। পুথর্ষণ বি-**হ'ক •**চ ভ্ৰান্ত চেতা: সমন্যতে। ব্যা-क्लाना मण्डानाः स्थानाः पर्णनाः नि ह। महाज्यम् क्शांनि महीत्र তানি লক্ষ্যেৎ ॥ # ॥ স্থ নদাত্য-यभ्र वाञ्चिम्म निमान गार । जी-শোক ভয় ভারাধ্ব কর্মাভি র্যো ২তি क्षिजः। क्षान भूभिजामी ह यः

পিবত্যতিনাত্রবা।। কৃক্ণ পরিণত• মদ্য নিশি নিদা নিহন্তি চ। ক রোতি তস্য ভদ্বীষু বাত প্রায়ণ ন-माजाय ।। उट समा ॥ **१। अध** তস্য লক্ষণ মাহ। হিক্কা খাস শিরঃ कला भाषांग्वा भुजागरेतः। विष्ठा-ছত্ পুলাপশ্চ বাত পুাব মদাত্যব ॥ #॥ अथरेन छिक्ता निमानगाइ। তীক্ষোঞ্চ মদ্য সমুঞ্চ যোতিমাত্র নিষেবতে। অশ্লোফ তীক্ষ ভোদ্ধী চ ক্রোধনো ২গ্ন্যাতপপ্রিয়ং ৷৷ তস্যো-প जायत्व जीवुः शिख्युारया समाo प्रः ॥ 🗱 ॥ व्यक्ष्य जार विक्रा नाह । তৃঞ্চা দাহ জুর স্বের নোহাতীসার বিভুনৈঃ। বিদ্যাদ্ধরিত বর্ণস্য পিত भाग नमाज्यना का जब देशीय-कम्। नमाज्यम्। निमान मार्। म-পুর স্নিত্ত গুর্বাশী যঃ পিবভ্যতি না-वया।। अव्यायान मिवाक्ष्य भय्याभ-ন সুথে রত: ৷ মদাত্যয় কফ পুায় স নরে৷ লভতে প্রবং ॥ৠ॥ অথ ভস্য वक्त गह। हर्माद्वीहक क्**ला**न जम्। रेउगि डा भोते वः। विमाही ত পরীতস্য কফ প্রায়ণ মদাতৃঃমণ ॥ #॥ व्यथ नामिला जिक्न र्गमा ত্যयम् निमान वक्षाश्या । जि (माष (एक्) छः नोर्बः नोर्ब वि दि अपनाला ॥

মদাস্থ: প্• কন্ত্রী। ইতি বিকাও-শেষ:॥

मितः পू॰ त्रक्तथितः। ইতি শদ-চন্দিক।।।

यमित्रा जी यखशकाः। ইতি भद-अञ्चावनी ॥ भारकमुव्यविष्ययः । अम् इंकि ভाषा। जद्भर्गायः। সুরা ২ হলিপুিয়া ৩ হালা ৪ পরি-শুং ৬ বৰুণাত্মজা ৭ গদ্ধোত্তমা ৮ ' भुभन्ना ৯ इंद्रा २० काम्पदी २२ भः तिमुखा १२ कमा १ २० महा १८ १ ইত্যনর:।। শানিকা ১৫। ইতি 🖷 मत्रज्ञावनी ॥ किन्मी ७५ गन्नमा मनी ३१ मान्ती ३४ करखायः ३३ মদঃ ২০ কাপিশায়ন ২১। ইতি कराध्यः ॥ वाक्री २२ मुखा २० সীতা ২৪ চপলা ২৫ কানিনী ২৬ প্রিয়া ২৭ মদগন্ধা ২৮ মাধ্বীক ২৯ ग्रथ् ०० मक्कानः ०) जामवः ०२ অমৃতা ৩৩ বীরা ৩৪ মেধাবী ৩৫ महरी १५ मृशुं छिं । ११ माना छ। or विधानुप्रकासामिनी 80 इनी েও) গুণারিষ্ট ৪২ সরক: ৪৩ মধু निका ८८ महान करे। ८८ महान ন্দা ৪৬। ইতি রাজনির্বন্টঃ ।। সীধুঃ - ৪৭ মৈরেয়• ৪৮ বলবল্লভা ৪৯।

ইতি ভাবপুকাশ:।। কারণ ৫০ তত্ত্ব• ৫১। ইতি কৈবল্য তন্ত্ৰ•॥ ম-দিষ্ঠা ৫২ পরিপ্লু তা ৫৩ ক**ল্ল**ণ ৫৪ **খা**-मूत्रमा (१) मूखो (४) शात्रकृतः ११ माधी कः १४ मनना १० (एवम्डा ७० কাপিশ ৬১ অব্ধিন্ধা ৬২। ইতি (रूमठन्द्रः ।। 🕸 ।। ना चारण विशा यथा। मादीकः भानमः मुाकः था-ब्जू त॰ जान रेमकत । रेमरत्रय मा किकः টोक्षः मध्कः नातिरकलकः ॥ मूथ्र मम विकाद्मान्यः मन्त्रानि चार-শৈবচাইতি জটাধর:।।#।। অস্যাঃ नामान्य छ्वाः। नूमध्रामुष् । कक माक्छनामनद्यः। लघुद्यः। भू श्वेकत्रद्यः 1 ऋरऽद॰। भावकद॰। भराव**रु**द्ध ॥ 🛊 ॥ शाउकी द्रम छडा दि क्ञा म-দিরা গৌড়ী। ভূদুণা যথা। ভীক্ষত্ত। উक्षद्व । सधूतद्व । वाठ नामिद्व । शिख वन काद्रिष्। मीशनष्। श-থ্যব্র•। কাম্ভি তৃপ্তি কারিত্বঞ্।। #।। भूञ्जम्वानि मधुमातमयी मनिता माधी। खुना यथा। मधूतद्वः । नाजू।कद्वः । পিত্ত বাত নাশিব। পাণ্ডু কামল खन्यार्भः भुरमङ् भगनवृष्धाः #॥वि· বিধ্বান্যজাতা মনিরা পৈপ্তী। ত-দুণা যথা। কটুত্ব•। অমুত্ব•। ভীকুত্ব• । গৌডীসনত্ত্ব। বাতহরত্ত্ব। কফ

করত্বণা ইবৎ পিত্ত করত্বণা মোহ नज्ञ ॥ 🗱 ॥ जाना मित्र मनिर्याम क्ञा मित्रा रेमसी हाला ह। उनुगा यथा। मी उद्गः। कषायद्गः। ञासद्गः। পিত্ত হরত্ব• । বাতদাতৃত্বঞ্চ ॥ 🗱 ॥ गर्ब ज्न वृक्ष निर्याम क्रश मित्रा छ। गाः। भी उलद्रा धक्द्रारमाञ्चद्रा वलरवः। इत्रदः। ত्या मसाशूनाः. भक्ष ।। सः।। नानामुव्यक्षस्य कृञा निरित्रा कारम्रती । जन्नुना यथा 🚉 🔻 ধুরত্ব•। পিত্ত শুন হরত্ব•। নদকারি-पुष्धाश्चा अक्षत्र मित्रा छलो। भि-**नित्रद्रश्रम्मा** यद थान।कृ उ मित्राखरो। धक्य प्राविश्वे स मायकद्था 🗱 !। मक्ता धाउनी जाय कृ ज नित्र। खली। भी जद्गः । ग्राह्म द्रुष्ट ।। 🗱 ।। भार्कत्र ग्रह 🥴 गाः। वृष्रद्वः। मीशनद्वः। साइन पुष्ध । इंजि नाना मन् र ध्याः ॥ # ॥ খ তুবিশেষে পেয় মদিরা যথা। গৌ-**डी जू मिमित्र (भग रेभ** श्रे । इन उ दयरियाः। भद्रम् शीया बमछ्यु नाश्ची गुग्या नहान अथा।। 🛠 ।। कार पत्री न क्तकारिमम्। मूभी उत्तर वृष्ठ कव्नः भनाष्ट्रः। साक्षी समः महा ८ ज्न वृक्षः का छ॰ नम्र नुमी छ॰ छक छर्नाक ।। 🛪 ।। অন্যথা অকতে পান सम्र

महाश भाग्म । अन्नाम मना-जाि कातक गृहन्थ एए ॥ # ॥ नव कीर्न नम्रारमा र्खनाः। नम्र नवः সর্ব বিকার হেতৃ সর্বস্ত-বাতাদিক माय मायि। बीर्वञ्च मर्बः मकला-नयमः मूर्वभूषः त्या कत्रक ही भ-न॰।। अ:।। व्यन्ष्रह । श्रृपुर्विक मञ्जूः ্নেলন মন্ন বা পিছিল বিগন্ধ।। (मायावश् निविश्वाचामप्रः ऋम्प्रः वि-बर्ब्बायर ।। मन् भूयागः अवंडि मू मुारिय गरार्डियु। घिरैक खि छि न গ্ৰাহ্য ৰদ্যপ্যজ্জীব্যেমৃত ।। ইতি मन् वर्ङ्गावर्ङ्यः॥ 🛊 ॥ जात्म घा-ममेथा मन्। जिनानाल् मनीविः। উক্তস্যান্ত ভ্ৰম্ভীতি নান্যেষা পৃথ-গীরিত।।। ইতি রাজনিঘণ্টে মদ্য भुकत्रन•।। 🟶 ।। यथ गठास्तत्र सहरः मा लक्षन खनामह। (भय यसामरेक র্লোকৈ স্তন্মদ্য মভিধীয়তে। যথা রি 🕉 मुद्रा मीधू ज्ञामवास्य मत्मकक्षा 🔢 মদ্য সর্ব ভবেদুঞ পিত্তকৃৎ বাত-नामनः। (अत्नः मीतृश्रात्थः ककः कक रतः भवः॥ अन्नक्तीभनः क्टरः পাচন চাশুকারি চ। ভীক্ষ সূত্র্ঞ विभापः वादारिक विकाशिक ॥ #॥ ञथात्त्रार्ग नक्रगः खना रा शाकी-यक्षासू निषः यग्रमा उट्नामितः

र्मनाज्यः। 🕸। जय, शत्रमन मारु। শ্লে মাছ্যোক ওজতা বিরসাস্ত চ বিশুত্রসক্তি রথ তন্দ্রিরে চক ক । লিঙ্গুণ পর্ম্য ত্রদ্ম্য বদন্তি ত জ্জা স্ফা কলা শির্সি সদিযু णि (७२:॥ ७निषु उन्मू।॥ 🗱 ॥ भागाजीर्ग मारु । जाधान मृगु मथ বোদ্ধিরণ বিদাহঃ পানে ত্বজীর্ণ মুপ-গছ তি লক্ষণানি। উদ্নিরণ বাজিঃ উদ্ধারে। বা । পীয়ত ইতি পান ম-एऽ'॥ ₩॥ পानविज्य गारु। क्र्-গাত্র:ভার কলনাসুব কপ্রথম মূর্ছা বনী জুর শিক্সাঞ্জন পুদেহাঃ। ছে-ষ: সুরান্ন বিক্তেষ্ চ তেষু তেষু ত° পানবিভূগ মূবভ্যখিলেষু ধীরাঃ॥ कथेश्नः कथे। जूननियंग इव । शुरमः হঃ কফেন লিপ্তাস্যতা। দ্বেষঃ সুরা **म**विक्टियु भृताविकातियु अम विका-दिव ह (इयः। अथि लियु न मे दि-কারেষু ॥ 🕸 ॥ অসাধ্যানা• নদাত্য यातीना॰ लक्षण मारु। मीता उत्ताक्ष निक भी अंग्निम मारु। रिजन भु ভাস্য নৃত্রিশান হত ত্তুজেছ। জি ব্বোষ্ঠ দম্ভ নসিত ত্বুথবাপি নীল•। পীতেচ যুস্য নগনে কবির পুতে চ ।। হিক্ক: জ্রো বন্থু বেপথু পার্যশ্ লাঃ। কাস ভুনাবলি চ পানহ उ॰

ত্যজেত্ত• ॥ 🗱 ॥ অথ মদাত্যুয়াদী-ना॰ চিকিৎসা। মদোত্থানাস্ত রো॰ গাণা• মদ্য মেব হি ভেষদ্র•। যথা **म्हन प्रकाना॰ प्रहैन (श्रुपन॰ हिंउ॰।।** भिष्या विश्वीन मरहान या व्यापि कः পজাযতে। সমেনৈব নিপীতেন ম-দ্যেন স হি শাম্যতি।।#।।বীজপুরক বৃক্ষান্ন কোল দাডিন সংযুত । যবা नी रुপुषाजाकी मृक्षयत्रावर्ग्वि ।। मामुरिः শক্তভি गुंक गवमः । "४-রোপ্ডিত। एम्। नगरा मन्। পৈপ্তিক• বাত শান্তযে।। 🗱 ॥ মদ্য• সৌবর্গল বেগ্রাষ যুক্ত কিঞ্ছিজলা ব্বিত া জীণ মদ্যান দাতন্য বাত পানাত্যথাপহং ।।

১৯ চব্যং সৌবর্চ-ल शिक्षु भूतक विश्वभीभारक। ह्र्न মদ্যেন পাতব্যং পানাত্য্য ক্জাপ-হ•॥ৠ। লাব তিত্তিরি দক্ষাণা•র-रैजन्ह निथिना गिला। शिक्तिना गृग .মৎস্যানা মানূপানা॰ তথৌদকৈঃ।। সিংক্ষাঞ্চ লবণায়েশ্চ বেসবারৈ মুখ পুথৈঃ। স্নিথে গোপুনিকৈ রয়ৈ র্যাত मह्या ७४४ ! ज्ञास्य शक्षा ना दी शा (यो-वत्नाकानाः निष्ठित कश्रृक्तेनः । **भागुक क**ठ ভाরिक मण्यासाया मुथ भुरेमः ॥ भगनाहामरेन करिक कः कि महाउर् हिः मूरियः। उदमा

মাকতাৎ দীঘু পুশাম্যতি মদা-**७**ऽतः॥क्रा शिख्भाना**७**ऽत्यत्याज्ञऽाः সর্বতশ্চ ক্রিয়া হিমা:। সিতা মা-ক্ষিক সংযুক্ত মধ্য মৰ্জ্জোদকং পি-বেৎ।। মদ্যু থজুর মৃদ্বীকা পর্ব क इरेन गुँउ। नहाडिम इनः भीउः সক্তাভ শ্চাবচ্র্ণিত• ৷৷ সশ্বর্র• বা 🖫 माधीक मध्यक मथवा भवः। प्रपा-षष्ट्रकः काल्य भावः भिख्यमानु (य ॥ # ॥ ममान् किशक्षवारानाः ন্লাবানসিতপুছকান্। মধুরামান্ পুरুজीত ভোজনে শালি यश्विकान् ।। পটোল যৃষ মিশু॰ বা ছাগল॰ क-ল্পবেদুস । সভীল মৃদ্ধ মিশু বা माजियामनकादिङ ॥ मुक्कामनक খজুর পর্ষক রসেন চ। কল্ল্যেৎ তপণান্ যুষান্রসাং চ বিবিধাঅনু-কান্য শীতানি চালপানানি শী-তশাগ্যসনানি চ। শীত বাত জল क्लार्याः भी अनु अवनानि ह।। क्लीन পদ্মেৎ পলালঞ্চ মণীনা মৌক্তি কস্যুচ চন্দ্ৰোদক শীতানা স্পা मा मन्तु।म् मीउलाः॥ कक् उर्भग जःयुक्तः यवानी (व्याय जःयुक्तः। यव গোপ্ৰা কাল ক্ল যুবেণভোজযেৎ । अन्यानाक म्हाभा म्वकाना রলেন বা! পু ভূত কটু সংযুক্ত যবাম । নদালাপী পু কোকিলঃ। ইতি

वा भुनाभाद्य ॥ अ॥ ज्ञाननाः म त्रनः क्षक रमः वा काक्रवः दनः। विशव य्य॰ मनाश्त्रः शिव्ट व्यक मराजारम ॥ ज्ञानग्रम्थ कथात वा ज्क्षे क्वा जू नीव्रमः। द हेन्न न-বণ মা সংখাদেৎ কফ মদা ভ্য-य ॥ भाठकमुव्य यूक्तिन मरम्हाना-**(झर्थन• गुज•। ममाजुर्य करका-**फ्रुं छ लड्डन्थ यथा दल ।। 🕸 ।। य-দিদ কম নিদিষ্ট বাত পিত্ত ক-কান্ পুতি। সৱজে সর্বাম বেদ॰ পুযোক্তব্য চিকিৎসকৈ: ॥ ইতি ভাবপুকাশ: ॥ 🕸 🗓 গৰুডপুরা-ণোক্ত মদাত্যয় নিদানাদিক ত-रेकिव ३५० व्यथ्यारय मुश्चेवार ॥ মদান্নাতঃ পু॰ গভঢক্কা। হাতীরউপ-

রে রডক্ষা ইতি ভাষা। ইতি হারা। वनी ॥

মদাম্বরঃ পু• মন্তহস্তী।ইতি ত্রিকা⁻ ওপে यः॥

मनातः पु॰ रुखी।। ध्र्वः। ইতি विश्वः ॥ म्कद्रः॥ कामूकः ।। केन्ए छपः ॥ मखश्खी ॥ न्পा ७५:। ইত্যাদি-কোৰঃ ৷৷

मनार्यातः भुः कनकम् गाः। इंडि ত্রিকাওশেষ:॥

🕏 ক । অৱিষ্ট মৃদ্য নিতি লোকে। यथी, हाकाविष्ठे । मंगम्नातिष्ठे । বগুলীবিহু মিজি: অবিষ্ঠ লঘুপাকে न नर्बः कृष्ट अविदेशः । व्यक्तिष्टेगः **एना** (अंडमं नोक पून) खेला लगाः ॥ 🗱 ॥ व्यवस्था व्यक्त अल्ला नानि यष्टिक शिक्षापि कृष्ट महा नुता मृजा। नृता छदी ८८ उरे १ पृष्टि मिनः कक भूता॥ भू। हिनी (भार 🖓 न्यार्गा गुर्गी म्बक्ह्नूर। #। य থ সুরাভেদো বাৰুণী তস্যা লক্ষণ रुगाण्ड । भूनर्गवा मिला शिक्षे वि হিতা বাৰণী মৃত্যু। সংহিতৈ তাল থক্ত্র রসৈ যা সাপি বাৰণী।। সু-त्र। वदाक्षी लघी शीन**माध्यान म्ल** নুৎ। সুরাতো ভেনার্থ• লম্বীতি।#॥ व्यथ भीधु द्वयम् वक्कनः खनाम्ह । ইক্ষো: পক্বৈ রসৈঃ সিদ্ধ: সীধু: প कु तमक मः। व्यारम देखत्वत् यः भी ধু: 🐃 সীতরসঃ মৃত: ।। সীধু: প वृत्रेमः 📆 🕾 ाति वन वर्ग क्टा বাত পিত্ত সুখা হৃদ্যঃ গ্লেহনো রো-हता र विशेषितक त्यमः लाका नः (नारकार्तत्र ककामयान् । उमा-দল্ল গুণঃ স্বাত রসঃ সংলেখনঃ মৃতঃ । 🛊 ।। ज्ञानवन् वक्षा ख्या ह । ्यर भरहोयवाष्ट्र जाः निषः मराः न

আসবঃ ৷৷ আসবস্য গুণা ক্রেয়া বী-क मुवुखरेगः मभाः ॥ # ॥ व्यथ नव পুরাণ মদ্য গুণাঃ। মদ্য নব মভি-य्यानित जित्ताय जनकः अतः। व्यक्तः म् १ व र र १ मि मूर्गक्ष विभाम छक ।। জীর্ণ তদেব ব্লোচিফু কৃমি প্লেন্মা-নিশাপহ•। হৃদ্য• সুগন্ধি গুণবল্লঘু श्रुग्रका विष्माथन ॥ 🛊 ॥ अय जा-ত্বিকানা মদ্য পিবভা চেষ্টা বি-**ल्याः। नाजिक गीउ हाम**प्राप्ति রাজ্যে সাহসাদিক। তাম্সে নি-न्त्रकर्याणि निमुक्षि मित्रा हरत् ।। व्याहरत्र अर्येऽ१८ । विधिना माजग कारन शिंख ब्रोम यंथा वन । भुक्-(क्टे। यः शिर्विद्यम् ५ उम् अगम्बृड• यथा ॥ किन्छ मम् । श्रञादन यरेथवा-ন্ন তথা মৃত । অযুক্তি যুক্ত রো-পায় যুক্তি যুক্ত॰ যথামৃত॰ ॥ 🗱 ॥ व्यथः भरः भक्तनात्रानाभागः । भूरेष्ठ-व्याव गर जीवक धान रेकवा यक ৰ্বিন্সদসি বাচ মভিব্যনক্তি। স্বা-ভাবিক মুখল মুজ্ঝতি পৃতিগন্ধ शक्तक नम्। लम्नामि खरक न्न॰॥ ইতি ভাবপুকাশ:।। 🗱।। অগিচ। পুক্ত্যা মন্য মত্যুক্ত মন্নক্ষোক্ত বি-পাকতঃ। সর্বসামান্যত শুস্য বি-**। क्यानाः मञ्जा**

मृजानाः गुरुगुरम्। विकातिनाः। मृ রা পুশস্তা বাতেষু রক্ত**পিত ক্ষ**থে ষ্ট ॥ পুসন্না গুল্ম বাতার্শো বিব-क्षानार नानिनी। भूल भुवाहिका-টোপ কফ বাতার্শসা হিতা॥#॥ জগলো গ্ৰাহি ৰক্ষোঞ্চঃ শোথয়ো ভক্ত পাচনঃ। শোথাশো গুহণী (मायान् इन्ड) विष्ठेः ककामयान् ॥ व्यतिष्ट्री मन्द्रियायः ॥ 🕸 ॥ 📆 🕒 यात्रा १ जिनवः सम्रा ७ व्य मायन মীরিত। সোতসা। শোধন জীর্ণ भीभन वयु (ताठन ॥ इर्यन श्री-ণন বল্য মদ্য শোক শুমাপছ। পাগল্য পুতিভা পৃষ্টি বীর্য্য তুষ্টি **चत्रशुद•॥ इं**ठि ताबवञ्जञः॥ **#**॥ **जनः नम्यास पुष्टेवाः ॥**

মদিরাগৃহ॰ ক্লী মদ্যস্থগৃহ৽। মদ্যসন্ধানগৃহ৽। তৎ পর্য্যায়:। গঞ্জা ২
। ইত্যমর:। গুঞ্জা হারথা। ভাগুা
গারে বিদুর্গঞ্জ খনৌ খঞ্জাসুরাগৃ
হো মদ্যভাণ্ডে মৃতা গুঞ্জা গুঞ্জাদ্যাৎ কাকদ্বঞ্চিকা।। ইতি ভরত
ধৃত হন্তচন্দু:।।

भित्रामथः शृ वागुर्कः। ইতি किरोधतः॥

अफिताकी खी मिक्तिविक्तिगीय-न्याःना। मङ्ख्याहना। यथा। ख- विषित मुथ पृःशः निर्स्तः वस कि-विष्कु मिल तिह कि कि स्माक है-उताहहरका। ममजू में ममक स्था-त्र जातना पूर्वमार केन मिताकी नीविरमास्का हि स्माकः ॥ हेजूर-रूष्टिः॥

भिष्ठी अपित्रा। ইতি रूगठन्तुः भिष्ठी ह्यकवस्त्र। ইতি नानार्थ रूगहन्तुः॥ क्यकवस्त्र। ইতি বৈশ্य वर्ण क्रोध्यः॥

मिन् जि सम्हेन । आमात्र है जि जामात्र है जि जामा। अमहमानीय भुजुर्य अक वहनार्थ सनारमः मन् निम्न सिन् । है जिस्कारवाधवानत्र निम्न ।

मरमाध्किष्टः भू मखरुखी। इंज्र

मरमाथक है। खी मिन्द्रा। ই जिद्राक निर्यण्डेः॥

মদোদগুঃ ত্রি মন্তঃ। ইতি জটাধরঃ॥ মদোদগুঃ জ্রী নারী। ইতি শহ-মালা॥

মদু: পু: পক্ষিবিশেষ: । পানিকৌডি
ইতি ভাষা। ইত্নির: ॥ অস্ত মা:স গুণা:। বাযুনাশিত্ব:। স্থি-ত্ব:।ভেদকত্ব:। শুক্রকারিত্ব:। রক্ত পিত্ত নাশিত্ব:। শীতত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভ: ।। महुतः शृ॰ मह्मादिष्मयः। माखत है जि जाया। हे जाताः॥ जामाद्र केलाः। मधुतद्रशा निकाद्रशा मण्या किलाः। मधुतद्रशा निकाद्रशा है जि निकादः। क्षाद्रशा है जि नामवा जिला

मृतुकः श्रुः भ्रुः भ्रूः मेश्रः हेलि सम-त्रज्ञावनी ॥

महुत्रमी जी मृक्षीमट्माः। है ज्याद

भर्षः क्री भूता। इंड्रामदः॥ जम् खन भर्यप्रायो मिन्द्रा मस्य मुश्रेरवरी 11 % 11 उर् माम्मविषः यथा भूनः खाः। भान्म पूर्क भाष्क था-र्कतः कः रिम्मवः। माधीकः 🚜 🏗 🕡 भे रेगद्रय॰ नाद्रिक्न ानि विकानीयात्राम्। ্ৰ 🎋 😗 তু। দ্বাদশন্ত সুরা-া মধম• স্ত•॥ 🛊 ॥ 🕥 🗵 - 🚈 পশানা• সুরাত্ত্ব• নিষে 🦠 🐗 अपदा भराष्ट्र पुरा ু দব বচনাৎ নতু মদ্যু . गदार्थः। उथा तृहम्भ श्वान विश्वान न विश्वः नगाहत्त्र । उश्वक् हः शास्त्र अन्त्रायन मन्कनार ॥ व्यक्ति राष्ट्र करमन शुरामिक ख ে সস্তাম। তথা ভবিষ্যে। সু

রা তু পৈষ্টী মূথ্যোক্তা ন ওস্যান্ত্রি তরে সনে। পৈষ্টীতি তণ্ডুল বিকার মাত্রোপলক্ষণ ইতরে গৌডী মা-ধ্যে) অতা ২ম বিকার এব সুরাশ দ্দ্য মুখ্য হ্বাৎ ত্রিবিধা সুরে তি গৌ-ডী মাধ্যো গৌণ সুরাত্বজ্ঞাপনা· র্থণ। তেন এতৎ পানেপি মহাপা-তক্ত্ৰ মতিদিশতি যথৈ বৈকা তথা ञर्का इंडि रिषष्ठेताः পूर्व भुनिष्कः ए-শ্যতি। যথা পৈষ্টা সুরা তথা সর্বা গৌডী মাধী চেতি পূৰ্ববচনোক্তা তু পৈষ্টা দৃষ্টান্তত্ত্বেনাত্র দর্শিতা। নপা-তব্যা দ্বিজোভ্রীন রিতি ব্রাহ্মণৈ রি-ত্যর্থ:। ত্রৈবর্ণিক পরত্বে উত্তম পদা-নর্থক্যাৎ বহুবচনান্থক্যপরীহারা-র্থ মুত্তস প্রাতিপদিকানর্থ ক্য মযুক্ত• অত্যেরাক্ষণস্য ত্রিবিধৈব সুরা মহা-भाजकरहजुः । कविय रेवनाऽरयास्त जुद्रा रेव भनगमाना भिक्ति वहरनन পৈষ্ট্যেব ইতি স্থিত•। অতএব একা মাধী চ গৌডী চ পৈষ্টা চ ত্রিবিধা সুরা। দ্বিজাতিভি র্নপাতব্যা কদা-**हिम्लि** क्शिंट ॥ इंडि यनवहत्न দ্বিজাতি পদ ব্যক্ষণ পর্যেব। অ-তএব দ্বিবিধ সূরাপানে ন ক্ষত্রিযা-**मीनाः মহাপাতকः। # । তাবদস্ত** দোষাভাব মেবাহ বৃদ্ধ যাজ্ঞবহঃ।

काशानिशिहः ब्राज्यन्तरा रेवस्मरा वा পিকথঞ্চন। মদ্য মেব সুরাণ পীত্র। न (मायः भू जिभम्) एउ।। उत्मयः रेभ श्री निरवश देखवर्गिकाना॰ भोजी मा थ्री नित्वध् ख द्राञ्चणाना (भव ॥ 🗱 ॥ ভজ্জাতেঃ স্ত্রীণা মৃ**পি সুরাপান নি**-বেব:। ত'থা ভবিষ্যে। তন্মান্ন পে-य वित्नुत जूदा महा कथका । वा-ऋग्रालि न लिया रेव मृता शांगः ख्यावहा।। या वाक्रानी मुद्रानी महा ম তা॰ দেবাঃ পতিলোক স্পাতি ইতি শু.ভিঃ ॥ পতত্যৰ্দ্ধ শরীরেণ ভার্য্যাণ যস্য সুরাণ লিবেৎ । পতি তার্দ্ধ শরীরস্য নিষ্কৃতি নোপপদ্য उ॥ नेटिव॰ क्विय दिभाऽ जीनाम-नित्वयः। द्राञ्चणी अपम्र निविश्व मूत्रा পান কৰু['] ভার্য্যোপ**লক্ষ**ণত্বাৎ ভা র্য্যা যৃষ্য সরা পিবেদিতি সামান্য <u> भ</u>ुवनाह ॥ **#॥ भानक मु**वी ভ্**ञ**म्राः **ভ** रवहादः। म ठ क्छे (समाप्तिश नयः ন নতু বকু মাত্র পুবেশ: ৷ নিষ্ঠাবনা র্থ কলোল ধারণে পান শব্দ পুদ-क्षार । यद्वाकः। बियुमहि मूद्राः क শ্চিৎ পিৰতীত্যভিধীয়তে। যাবন্ন ক্রিয়তে বক্তে গণ্ডুষস্য প্রবেশন ॥ অত্র পঞ্ষ পুনাণ অবিবঞ্চিত। গণুবাৰ পানেপি লোকে পান শব

भुरियाशार । अञ्जव मूर्य भुरियानः অতাবিবক্ষিত কিন্ত মুখ পুরেশে क्शांरक्षा नान खर्कि व्यक्र उत्ति বোপলক্ষ্যতি অতএব ওপ্তর্গাত্র লে-পে ন পান নিষ্ণুতিঃ! এত স্তৰোত্ত-माक्रणार्भ भुःगिष्ठितः ॥ 🛊 ॥ व्यथ সুরাপান পুগাবশ্চিত্ত । তত্র মনু: 1 সুরা প্রীব্রা দ্বিজো নোহাদগ্রিবর্ণা ं भूतीं शिवटः। उया मकार्य निर्माक মুচ্যতে কিল্বিষাক্তঃ ॥ গোমুত্র ম-গ্নিবর্ণম্বা পিঞ্ছেদক মেব বা । পথে। ঘৃত বামরণাৎ গোসকৃদুস মেববা । অগ্নিবর্ণা॰ অগ্নি সূমস্পূর্ণা॰ । পথে। ষ্ত• গোরেব আনাবন্তে চ গো: কী-র্ভনাৎ : নোহ শব্দো হত্ত বৃদ্ধি পরঃ । দেবল:। সুরাপানে ব্রাহ্মণো ক্প্র তামু সীসকানামন্যতম মগ্ন কল্প•় পীত্ব। শরীরভ্যাগাৎ পৃষতে । ক-প্যাদযো **ৎত্র দু**বীভূতাঃ পীত্বেতি निर्फ्लाए। ऋयमणकावीना त्रि মুখে সেচনীযা। যথা গোতমঃ। मुत्राभमा द्वाक्षणमा उष्णामानिक्ष्युः সুরামাস্যে মৃতঃ শৃধ্যেত। অতএব নসেচকানা বধ্যে বিহিতত্ত্বাৎ স্বৰ্য • পান ইব। এতচ মরণ পুাষশ্চিত্ত॰ कामकृष्ठ । यथा वृश्स्त्राजः । मूत्रा-পানেকামকৃতে জ্বলম্ভী• তা• বিনিঃ-

किए के भूत्य न हि विनिर्फाका मू-क्षा अब्ब 💛 याट्या कथिए जि अ १९६ क्ष्रश्री कि े **ाः। सूत्राभानः** अक्. 🖖 🛷 🔧 अत्राः भि-(क भन्न हा। भूगाभारन भागाहि 💎 🍇 পৈষ্টীপানে তু ঋষিভি 🗷 🖂 🖰 কথঞ্চন।৷ শল্পেনাপি মহাবাহে৷ ্ যশ্চিত্ত মুদাছত । সুরাবাঃ কামতঃ भारत म्थायाः भाग नामनः ॥ भूनः भूनः रेभश्ची विषयज्ञा**ञ्चिशानः जि**क् था जूता मूच्या इंडि जुमनितामार्थः। कथक्षन मक्षिजार्थः। 🗱। ইতরাসাং षामुद्रानाः गोजी बाधी भुज्जीनाः क्कानजः मक्ष भारत गत्रगाष्ट्रिकः न ভবতি গৌড়ী মাধ্যোম্ভ জ্ঞানতো হভ্যস্ত পানে গৌড়ী মাধ্বী ব্য**তিরি**: ্ক্রায়ণ্ড নুরায়। **অত্যন্তাভ্যন্তপানে** 🗝 এন মুক্ত॰ ভাববের। গৌডী মাধ্যে। खकाञ्चारम **भागांडिक मूनाङ्डः।** च छ**्रम प्रश्नागाञ्च जामवाद्यिन**ः জা• সির্বে<u>ন্ট ড্রে**থেতি জ্ঞানত ইত্য**়</u> र्था व अत्र अनकृष्य क्वानकः भी জা বাৰ ী পত্তি ছিল:। মরণ তস্য নিদ্মিষ্ট পুৰ্যশ্চিত্ত বিধীয়ত या देखि ग्रायह**न मिश এछ। द्विष्यत्मव**

অত্রাভ্যাদে মরণ বিধানাৎ দ্বিভীষ वात्र वव मत्रनः कार्यप्रः। गोडी माः থ্যো: কামত: সক্ৎপানে ভবিষ্যে । অসুরা মদ্যপানে তু কৃতে বিশুস্ত कामञः। हानुग्रयः नमञ्जानाः मुक्तिकामः समुक्तरय ॥ यदास्मित्तय ियरा भानवीयः अकन्नरायः। कणान् **प्रथमदः भिगाकः वा मक्**-🌬 🕆 ্ৰাপানাপনুত্যৰ্থ• বাল া ে বে বিশ্বাক থলি 🛊 ড 🖟 জনপোল আয়সেন পাৰেণ ইত্যাহ 🙉 থায়সে ভারনে তপ্তা: बाक्षा वाक्गी भारत । भावान চীরবাসসা তৎ কর্ত্তব্য আহ উশ্দ ना। लावान ही त्रवामाः मुद्राभः मूत्र। মণ্ন বর্ণা পীত্বা প্তো ভবতি। 🗱। অজ্ঞানত: সক্ৎ পৈঙীপানে ব্ৰাহ্মণ न्य बादमवार्थिकः। यथा वृक्ष्रञ्जा বুভানুবৃক্তো যমঃ ৷ চরেভা মেতদে-বোভৌ সুরাপ ওকতল্পগৌ। সংগা-बाम्यकरेकव मुवर्गस्यय कृषदः॥ #॥ ভবিষ্যে। অকান্তঃ সূরাণপীত্বা পৈ-क्षे गटकन नमन । कृ हा जिक्र हो क्दा रेव भूनः म सात्रजः मृहिः॥ क्गान् वा ज्ञायम्यः भिगाकः वा সক্ষিশি। সুরাপানাপনুত্যর্থ বাল वामा करी धुकी।। भा मूद्राभान माजा

भारतय (द्वागम) (द्वागित्वा २ ब्ह्वान ७: পান বিষয় মিদং ইত্যুক্ত ভবিষ্যে। খথা ভথা শিলেব বিষয়ে বাশিষ্ঠ প त्रिकीर्ভि**ण**। यमि द्रारेगः ভবেদ্ছো। निउद्गार केरावन ॥ कृ हुण्वाब जूब-**(मुं** उछ ह्हु উमाज्ञः। क् ह्वा िक् হুবিভাত ক্ চুপদ ন পাজাপত্য-পর কিন্তু উপ্তক্ हुপর । 🗱। অজ্ঞা-नङा भोडी नार्वृहाः मक्ट्भारन উক্ত॰ ভবিষ্যপুরাণে। সক্ৎ পীত্ব। তথা গৌড়ী মজ্ঞানাৎ সূর সন্তম। কুটাতিক্টো বিহিতৌ ঘত পাশ্ৰ <মব সা অজ্ঞানাভ্যালে উৰেবোক্ত• পৌড়ী ম জ্ঞান হঃ পীত্বা ব্যক্ষণো ব্যু-भागित्रा ७७ हृ हु हित क्दा श्नः म॰-कात्रकः पृष्टिशा माधीः शीखानकावाः হে। অজ্ঞানাৎ দিন্দ সত্তমঃ। শুক্ষ্যে ত উপ্ত দুৰ্ণ বিক্লাভ্যাসনাত্ত্থা।। রৈতো মূত্র পুরীকাণাংগীড়ী মাথের শ্চ প্রাখনে : ক্রব্যান পশু বিধানা সংস্কারাম্ভ দ্বিরিষ্যতে 🛚 প্রাণান্তিকে **চ পारहार्य तमञ्जदा** कविय वि **প্**রয়োর পি বথোক মরণাতিক পুা খশ্চিত্ত খেব। ছাবেশ বার্ষিকাদৌ পা দপাদ হানিবভান ভক্ষণে ফ্রিয়া मीना॰ गुराय नर्गभारः। दिर्लु जू मकः वाः ५२ शासानः क्वादियं नजः।

रेवरमार्च- शाम्रामयञ्ज म् एकाञ्चि नगुर्छ ॥ 🗱 ॥ भानगामि सम्रभा-নে তুকাননা কৃতানেক সম্যাভ্যস্তে भागांडिक गूक दास्तामं कामनम সক্ৎ কৃতে ত্ পরাশরঃ। অগম্য गमरन दित्र सम्। (गानाःका जन्मरण। मुरेका हान्सायन अर्गाट मही गड़ा **সমু** ধুগাং।। চান্দায়ণে তত চীর্ণে **স** र्यापुरक्षश काबन । अनपृष् नहिः जाः गाकः रन्धा हिन्ताम् सक्किनाः ॥ হ্মকান **জ স**ক্ৎপানে বিষ্ণ: ৷ পীত্ৰা भुनाराजा भरा गिक् हु॰ ठाउ कि ল:। কার্যেৎ পুন: স'কার' ভক্তর বিপাণ্ড ভোজবেৎ ৷৷ কামতো হ্কান্তক্ষাভ্যানে বুতাবৃত্তি মাহ यमः। लाय विवि तः कन्न कानुता-শ্বনথাপি বা। অভ্যাসে তু তয়ে। র্থ স্তত: শুদ্ধি মবাপু আৎ ॥ অপ-गुर्विज्ञानमारम्यकाम्भविध सम्र शात बिद्राबः। शानमः मुक्क साधू ह মিত্যাদ্যভিধায় পুলস্ত্য:। দ্রাক্ষেক্ষু টক্ষ থজুর পনসাদেশ্চ যোরসঃ । সদ্যোজাতন্ত ত॰ পীত্বা बार्श्य मुष्कृष्ट विद्धाखनः ॥ 🗱 ॥ भूषाः ककारोनाः भार भार कान मुख्या ।।वाल वृक्त जीवानकारिक भाविकः ত্ত•। ইতি পুষোঁশ্চত্তবিবেকঃ॥ 🛊 🛚 :

क अंद्रात वृद्धिगम् वप्रभागित िमान, मना। जातुग कानार्रगयक ः १४७ १७७, अन्य है। विवाजीनामः মংক্রেণ ক্রেন্স প্রান্ত মিতি স্থিত ্য়া ভঙ্গাং 🔻 🤫 🖂 🖰 ৫ বিড্যুণ विवृद्धांष्ट्र। भी ताला निवासी का ত্বসম্ভাব্যে বিজ্ঞেন জন জন জ ্**ভাূপ্যভক্ষাণিপীত্বাপে**্ড*ি* 🎫 । নাধিকারী ভবেত্তাবদ্ জহাত্যধঃ ॥ ডকাৎ পরিহরেমিতঃ न ज्ञानि পुरञ्जः। जालगानि ह विल्या देव भी द्वा छन्या छि स्त्री ववर ॥ ইতি শ্রীকৃষ্পুরাণে উপরিভাগে ১৬ व्यव्यायः ॥ अ ॥ सन्द्रभन् दिक्षा क्शनर्भाग स्वामि यथा। वदाङ् উব। চ। মদ্য পীত্বা বরারোহে যস্ত মাম্পদর্শতি। তত্র দোষ পুরক্ষ্যা-भि म्यः तुनस्त्रि छष्ठः। सद्या वय লহসুপি দরিদ্রে জাবতে পুনঃ। জাতা ভারেং দ প্তাত্মা নম্ভক্ত ৰ **সংশ্**ৰং ব্যস্ত **ভাগৰতো ভূবা** কাম রাগেও লো**হিত:। দীক্ষিতো** পিবতে মদ্যা প্রাথশ্চিত্তান বিদ্যুত ৪ অন্ছ তে পুৰক্ষ্যানি ভদ্ণুস্ব বসু-भारता अव्यवक **मृताः भीदा (उन** मुक्ता किल्यार ॥ अवरेक्ष्याभन्ना शानि त्यन चूका (ड किन्या ८। य ० ,

তেন বিধানেন প্রায়ন্দিত্ত সমাচ-त्रद्राप्त म विभागि भारतम मन्त्राः व्रक्षन गहि ॥ इंडि ववाहभूवात নদ্যপানাপরাধ প্রায়শ্চিত্ত।। #॥ व्यशिष्ट । व्यशम्याशमनः क्वा मम् (गानाःन जक्षनः। मूल्क्ष्रहानुस्यना-দ্বিপঃ প্রাজাপত্যেন ভূমিপঃ ॥ বৈ-া সাম্বনাছুদুঃ পঞ্চাহোভি রি-🦈 🕒 ় ইতি শাক্ততে ২২ অধ্যা-💛 😘 पी नाष्ट्राः कामजः া া া া বিশ্বাস্থ মিতি প্রাথশ্চিত্ত विष्यः 🗝 ः८ ॥ 🗱 ॥ म्रिजनऽ भू-कारने मरामान विधानुकन्न निरम्धा यथा। मनिदाः भृष्ठाः प्रमाट यः नार कानस वागजः। व्यवनार कि হিত' যত্ত মদ্য' তক্ত দ্বিজ: পুন: ॥ नातिकन सन का रमा जाय है वि-म्(इच्यु । नाभर)भि दिहा मर्। কদাচিৎ বিস্জেদিপ ৷৷ খতে পুল্লা সবাদুক্তাদ্যঞ্জনাদ্য বিশেষতঃ। রা-জপুত্র তথা নর্ত্যঃ সচিবঃ দৌণ্ডিকা-मयः ॥ ममूर नंतर्वालः ज्ल गणजा বিভবাষ চ। ভূপালানমতে নদ্য॰ দদৎ পাপ নবাপুষাৎ।। ইতি কা-লিকাপুরাণে ৬৬ অধ্যাম: ॥ 🛊 ॥ व्यथ् नुष्मानम् मर्भामनित्यक्षक्ष्य भारमा यथा। दिन्यन्मायन উवाह।

जुद्राभानाइकनाः भागा विद्यान् मः জ্ঞানাশ॰ প্রাপ্য চৈবাতি ঘোর॰। দৃষ্টা কচঞাপি তথাভিৰূপ পীত। তথা সুর্যা মোহিতেন ॥ সমনু ৰুত্থায় মহানুভাব স্তদো**শ**না বিপু-श्चि । कावाः स्यः वाका भिनः बगान जुदाशानः शु**ि** व का-**७ मकः** ॥ या वाकाला १मा भुज्. তীহ কলিৎ মোহাৎ সুরাণ পাস্য তি मन्तवृष्तिः। অপেত धर्मा वृद्धश हिव नन्यानियाल्लाक गर्हिन: न्यार পরে চ ।। মযা চেমাণ বিপুর্যোক্ত সীমাণ মর্য্যাদাণ বৈ স্থালিতাণ সর্ব-লোকে। সম্ভোবিপা: শুশুরা সো ও क्षा (प्रवा लाका काश मृथ्छ म-র্বে॥ ইতি নহাভারতে আদিপর্বণি ৭৯ অধ্যায়ঃ ।। 👙 ।। অথ তত্ত্বে ম-म्रांभान निर्वास्था यथा। नात्रिरकन्नक थाड्य् तः भनमक उरेषव ह। अक्कवः मधुकः होन्हः जालरिक्षव ह मान्किकः ॥ माक्ष मन्मन (ख्रय लोउ है) কাদশ স্ত। পৈষ্টস্ত দ্বাদশ পো-**खः नार्विषा मध्मः मृजः ॥ मध्मः** মধুজ গৌড শেষঞ্চাত্তন মিষ্যতে 1 এত**ে দ্বাদশক নদ্য ন সাতব্য** षिरेजः कृष्टि ॥ क्वांचियानिः नित्र मर्बः रिषष्टरम्काष्ठ वर्ष्करप्र । मुद्राः

পীত্বা দিলোমোহাৎকামাৎ ভক্রা-पि विभिजाः॥ देववार्षिकः वुजः अर र्यामीयभिर्मु जू वार्षिकः। इकारि भिर्मुजा किक्टि मुद्रा भीवा छ-कामणः ॥ क् हुन्स भार मुहर्ग्। भूनः मःकात मर्गेछ। मूथ शुरवस माज्ड शुर्गिक शंच माहरत्य ॥ व्यनुभनी-ा तित्विभ वुछ विवार्थिक हेत्रूट्र । ठ वृर्थ का वा हा जी जा वृक्त वर्ग मथा-शिवा ॥ वा शक वर्ष त्क्षश छानाम-र्छ विनिर्फिरम् । मृपुम् ह विरम्-(यग गठिक् हु छय । ठरत्र ।। यजाि সাধিতে তিমান্ তদৰ্দ্ধ পুত নাচরেৎ । देभक्षीभारम कुष्क्षभम्। मत्रभाष्टिक मूठारङ ॥ माथी शोडी मुताशास द्यानभादः विधीयत्त । ইতরেষাস্ত शानिन भूषि कान्यु।यशन जु॥ द्रा-बन्ध रिकारिया कालि लोजी माधी ন শস্যতে। মোহাৎ ক্ষত্ৰক বৈশ্য-क भीषा क् हु बग ठाउर।। मूर्पाधि গৌড়ী পৈষ্ট্ৰীঞ্চ ন পিবেদ্ধীন সংস্কৃ-তাং। কামাৎ পীত্বা সুরাং বিশ্বো म्त्रपाष्टिक माठात्र ।। ठात्रहान्मुपरपः द्धाना कि जिर्या विना अव ह। रेश-ষ্ঠীপানে তু শুদুন্য প্রান্ধাপত্য বি-বিদিশেশ। জ্ঞানামভ্যাস যোগে তু व्यानुविश्वयः भ्यः। नाहित्कवः उथा

क्लामां विश्व महाम्यायान जू। कविष् किव्यविष्याण शागायायम भ्याजि ॥ 🗱 ॥ व्याः अनमोक्षत व्यानुक ब्ह्य ७४।। । । । । । । घर्ष । घर्छ निक्र मगुरम्बद्धः श्राः श्रीवरः । व्यापाकः विक्रमारिका मा कृतामः उत्पाद 👇 विक्रिक खडा मन्त्रद मनानद म इ मीति उ ।। एषि मनुष्ठकानि गा ক্তিছ- ভিক্তক তথা। অনুসানে ত্ (मर्ताल मुक्त मन्। मूर्निक्छ ॥ विकार भालाया भूण ম্পুনা সহসংস্থাপ্য শেষসাক স-गाइसार ।। शिश्राणी नवनः पञ्च मेर्न ম্দ্রেরিত : পানসং পর্ক ইজ্রং আৰু সোন্যতা রুদ্যা একীকৃত্য कि नक्षानाः था**र्क्क् वेश्वनक्षेत्र भीति** ত । গর ভাল **দক্তিশাক কর্মভঞ্** क्रिया है।। ब्रेंड (त्रव मंगर्की दें। ब्रे खान समार भूकी खिंडन हे ईंग्कृतिखन स्वारक तमञ्च उंची मिन्सि जु लदनः मृद्ध। **इक्. भएउः भू केन्डिंड**ः

मा नित्र तथा क्षिर शक्ष मा महान्य कार्या निव्य कार्या महान्य कार्या महान्य कार्या कार्या कार्या कार्या निव्य कार्या कार्

ावा **(मक्ख म**कानार मित्रमः मम्) नीतिष्ठ । रुपुिक्या भवसाबी ना-िक्व अवस्था। करणी क्व जन्नाः जात्रामा **उमादिक्तिका ।। मधिदिन** ााधिवन्या उरेथक ह कदीकेंगा। क्षा **नर नक्षानाट लोजीनम्**ड পুঞ্জী ভিতৰ ।। শক্ষা মৰ্ম সিধায় मुक्तामक मगनिङ । यक्ती महाभा विश्व किकिट इंग्लियेज्ञा मिन घरणा। শেবেছনি তু সংপ্রাপ্তে জীরনণ তত্ত্র निःकिश्यः। मृक्रवतः भन्नी एक नाः जुनद्र• ज्रेथर ह ॥ এउंचारमद न-काना रिमेडी महा भुकी खिंउ। ইতি:শ্রীনৎস্যস্তে নহাতত্ত্রে চতু र्बिन्नाङ्गार्गु ७७ महनः॥ 🗱॥ অপিচ। সিদ্ধদক্তী ভবেদ্বীরো ন वीरता भर भामका करनो कु जा-রুষ্টে বর্ষে লোকা ভারত বাসিনঃ विन्दं ग्रह न्या नीवा वर्ष्ट्रा ভৰম্ভি হি। ইভি উৎপত্তিতত্ত্বে ७८ भेडेना ॥ 🕏 ॥ स्वित् वीत भरगा ভावः करनी नास्त्रि कप्ताप्तन । रक्त ল পশুভাবেন মজসিদ্ধি ভবেষ্ট্রাট ॥ ইতি মহানির্বাণত 💇 । 🛊 ॥ विकरमः। न पर्गाष्ट्राष्ट्रांशा मर्गः मन शालरेका कथकन। वामकारमा मी-वरणा क् मन्त्रः मान्यः न उक्तर्देशः

रेज्यवज्या नावित्वतामक का॰ (म) जायु गर्। उथा गथ्। त्राक्त। दिव्युरशा (पर्यः न विवन्ध कर्ताच्न॥ **बर भुरान मार्जिंग होनायू द्रा ऋ**रा। ভবেং। ইতি সাগমতত্ত্ববিলামঃ । 🗱। मृत्जे कती मम्प्रभामामि नि (यक्षा यथा। या छ्ढवद्गः) मी भक्षा का याः वृक्तभूत्रागः। नद्राच्यस्यस्य मन् अ करनो वर्ज्जा विकाछिन्छः। निःवध विषयः नाडेया डिलमा । मन्तर म (एय नात्मय निन्तुर्किः। अनिन्र्रिकः मसीकार्य) भिष्ठि कन्नज्यः। काबि কাপুরাণেপি। স্বগাত্র ক্ষিরণ দত্ত্ব। আতাহত্যা মবাপুষাং। মদ্য मः षा वाक्षणञ्च वाक्रणालव शेया ।। মৃতিঃ। ভামে চেফুরসো মন্পপা-স। যবচুৰ্কে। গ্ৰাঞ্চ তামুপাত্ৰস্থ মন্যতৃল্য স্থত বিনা ॥ অভোদ্ধন্য পুতিনিধি দান মিপ ন যুক্ত। ইতি । **তিথ**्रापिङकु ॥ # ॥ मर्।ज्वाः यथा। নারিকেলোদক কাংস্যে তা সুপারে ছিত নধ্। পর্ঞ তামু भावस् नराजूनाः मृजः विना ॥ इंडि कर्यामाठनः ॥ 🗱 ॥ ष्यथ महाशाना॰ ज्≩ार्थ॰ कोनाना॰ " নহ্যপান বিধি লিখ্যতে। দলাচা इक्टा वीवः वनमशी जना छाद

। मितरास्मियन अयुग्र सामिश्रामः न्रष्ट्रि ।। नर्त्रथा व्यक्ट पिर्वि बीव (काष्ट्रक्यानमः । पिरास (प-वजा भुत्रय कम्स्नाध्य (त्रशीन: ।। व्रक्षान्त्व गरेषाण मुनित्या नाज त्र·भनः । ज्ञाक ध्माता वीत उ-শ্বত্ত ব্রহিচেপ্টিড: ॥ সুরাপান রতে। নিত্য বলি পূজা পরাযণঃ। नब ।। मम्बः महाकी भाषा थड़ी क् सा দশ স্তাঃ। বানর স্চ থর সৈচব গল্ঞা-चामि विरुष्माः ॥ हेन्।। एस वास र्फातिः भूषरायः (ब्रष्टरम्वजाः । निः खाः सिनिखिकः कामाः शुभगीह मित्न मित्न ॥ व्यवसादा व्यवस्थि ह ঠিথৌ চ বলকে তথা। ভৈরব্যা: ক-निकः ठकः मः इ। भः भ्रवंद शिर्य । भूतानाः भाषनः अर्गाव्यया वट श्रद्धान्यद्भा भुवृत्त्व रेख्द्रवीवत्क मः (वं वर्ग विकालनाः ॥ निवृत्त रेजन-बीहरक मर्ख वर्गाः भृषक् भृषक् । विक्रयाकान्कन्नक विका पर्शाष्ट्र যুগে ॥ ইতি উৎপত্তি তত্ত্বে ১০ প-छेनः ॥ पुराजात छानूकरेनः भूज-্যেৎ পরদেবতা। সুরা ছাবে চ গো-क्रीत शिक्षा रम्। प्राप्ता गृत्र ।। इंडि নিক্তরতক্তে ৫ পটল: 11 🕸 11 🕶 -

সংস্কৃতা সুরা পীত্ম ব্রাহ্মণো বুদ रा अवर । मःकृजान मुत्राः भीषा <u> वाकाला ज्वमधिवया । त्रोजाम</u> गाः क्लागंत वाकाः भूभित्र সুরাণ। অন্যত্র কামতঃ পীত্বা ব্রাহ্ম-ণ্যাদেব হীয়তে॥ ইতি উৎপত্তি-তন্ত্ৰ ।। # ।। বাহ্মণস্য মহানেংক भर्गात श्रियम् ए । तुः स्राः शतः (ननानि यपि भागापिकः हरत्र ॥ তৎক্ষণাৎ শিবৰূপো হসৌ সভ্যু সত্য হি শৈলকে। তোষে তোষ यथा लीन रेऊ कर्र रेड करन यथा ॥ यहि ভগ্न यथ। काण वाखी बागू र्यथा भिर्य । उरेथन नर्मे नारनन वाकाला वकालं शिरा ॥ नीयाउ ना व जान्म इंद शहरा जा नि रेण गांक। সাযুল্যাদি নহানোক দিয়ক ক · वियापियु ॥ भए अभानः विना एवि ্ৰজ্ঞান ন লভ্যতে। অতএৰ হি दिशु अम् अभाव ज्ञाहात्र ॥ विषयाजा कर्णितव वाकाणा नहि देणकाः विक्रमानः यहा स्वि उहा त्।कार्वाकार विकास व ो मूता। मूतद् रहा 7 ानाव्या भूता (उन भूकी खिंठा ॥ मः व्यव्यः जना भावे। वृक्षमाभानि (मा धनः। शुक्षश्रास्त्र हि (यरिनव छन। वृ-

ক্ষন্থী সুরা।। হবি রারোপ নার্ভেশ विद्या भी शिक्षा यथा खराया । भाने भावन गार्खन मूता मूकि नुनायिनी ।। गठ १ १ (५ (दिनि वृक्ति शः भान मान्द्रद्र । म वाञ्चनः म विष्ठः (म। ९१:इाबी न मीकिंड: ॥ नङ् कि॰ कथ्राउ पिति गवत निर्श्वाञ्चकः। मुक्ति मार्ग भिरा (पवि (गास्त्र) भन् मकरिं॥ भुकामार मिकि शनिः न्धामिन्द्रनीर्या न्हान्ध्या । इस्ति मा-তৃকাভেদভক্তে ৩ পটশ:॥ #॥ ञ-**न**ञ्जो (भवन अर्य)। १८ अर्द्यश भन्नाम-শ্বরি।রমতে যুবতী রম্যা কানো-चार विवासिनी ।। नहीं काशानि का विष्णा रहिशाना वदास्मा। म् पुरिनी रहाहत्रमी अवनी अत्राम्य-রি॥ মাতৃযোনি বিচারে। ഉস্তি মাতৃ-त्यानि॰ विना शिर्य । ज्ञाह्यत्र शात्रा वीद्रः स्व भ्दाभद्रायगः॥ जगनि क् गभारयागानाक्वर क्रम नाठाइ८ । নিশ্বন্ত ভবেছিত্ত কোটিস্ঠ্য গু-रहन कि ॥ हरन हिस्त अत्वहासि निकल निकल यंथा। भवाना गा-**ध्यः** (हिव बाजानाथन मृखमः ॥ हि-ভাষা: সাধন দেবি সিঞ্জিরন্তি কলৌ ग्रा। इज्रूट পত্তি उद्धः ॥ 🗱 ॥ काः **विका उारिगी भीका। गृशीपा मन्**र

সেবন । ন করে।তি নরে। यस्त्र म करमा পতিতো ভবেৎ ॥ বৈদিকে ভাজিকে চৈব জগ হোম বহিষ্তঃ৷ অব্যক্ষণঃ সএবোক্তঃ সএব হতিমূ র্থকঃ।। শুনী মূত্র সমণ তাম্য তর্পাণ यट পিতৃত্বপি । काषी जादा मन् **পূপে** রবীরাচার করে তিন শে<u>সুরু</u>ণ্ उहत्रीद्रण भाभू गार म नहान्या।। ু ইতি কামাখ্যা তত্ত্বে ৫ পটল:।।। सम्ब्रह्मायन भुकारता यथा । भिन উবাচ। শৃণু পার্রতি বক্ষ্যানি ভেকা॰ रिव (भाषन किया। भाषानामहनक मः विना कत्रभूष्ठे अभाष्ट्रद्र ॥ वास्म গুরুষসস্কৃত্য দক্ষিণে গণপতিং স রেছ। মধ্যে দেবী॰ নমস্কৃত্য প্রাণা-ষ্ণান ত্রযঞ্জেত ॥ শরীরে মাতৃকা नामाः वायापिनाम नाठावरः। स कालाक विधानन युज्याम गाउ-तिया। शकास्त्रामी बिकान वा व ্ট্রোণ বা মহেশ্বরি। বিলিখ্য মও-ল শুদ্ধ তল্যোপ রি ঘট ন্যেস ।। বহুধা প্রোক্ষণ কৃত্বা ফট্কারেণ পুন নঃপুন:। তত স্তব্দিন্ কারণন্ত মূলে। निव ह ज्ञानराए।। बाक् गर्लन एक বেশি বিপরীতেন চৈৰ হি।প্র: ফট্ কার মত্রেণ প্রোক্ষণ কারবেৎ সূ **থীঃ।। ততো বিহৎ শক্তিবীজ চতু** फ्रम खत्राण्डिकः । नाम विनम् युड কৃত্বা অন্যোপরি শত হপেৎ।। उठा मूनः **काशनाञ**ः नायावीकः ততঃ পর । বেরু বোনি গালিনীঞ্চ विश्व भीन मः छकः ॥ प्रमंगिदा বরারোহে ঘট• ধূত্বা পঠেমনু• ॥ ওঁ একংনব পর• <u>ব</u>দ্ধ সূত্র সূত্র ময• প্রব• িকচোভবা বুকাহত্যা তেন তে नामगामाइ ।। 🗱 ।। 🧸 जूर्रा मखन সমুতে বৰুণা**লয সম্ভবে। অ**মাবী জমযে দেবি শুক্রশাপাদ্বিগৃচ্যতা ।। **७ (वहाना॰ भूने**(वा दीडा॰ वृक्काननर मदः यपि । एउन मर्छान एउ (परि বুক্সহউপ্তিপোহতু ॥ ততঃ বডক্ यू कथ वकात विम्मू मध्य छ । এव॰ नकातकका नि वर्गाकत नमन्त्रि छ।।। बध्धा मञ्जो उट्टा भ्रायट च मञ्ज इन मुन्दिति वाननर रेख्यव ध्रारय-ष्येषाः उद्यामुनीवजः ॥ वद्यवर्गः ह-जूर्बाल् जित्नज वत्रम मिन्। जिं। জ্ট ধরং দেবং বাস্কী কণ্ঠ ভূষিত্রং ।। एशक्य क्लालक रूप्तर शाम মুক্তর । ধারিণ ত বছেদেব ব্যা-ষুচমান্তর: শিব।। এবং ধ্যাত্বা নছে-मानि उत्र । गर्भ भूशृज्ञयः । भाषा বীন্ধ ভতো হু কট্ মন্ত্রেণানেন সংভ্যান্ত ।। ভত ন্তি আৰু হেশানি

व्यानन्तर जाति। मात्रदा वानन्तर व द्रवी॰ (हवी॰ वद्राज्य समद्यक्रा॰।। বোরক্পা• বরারোহা• ত্রিনেত্রা• র জ বাসসং। রক্তবর্ণাং মহারৌদুীং সহসু ভৈরবান্বিতা ।। বুদ্দা বিষ্ণু ম-(स्मारिनः खूगमानाः निवाः ज्या ইতি ধ্যাত্বা মহে**শ্য**নি তেনৈব মনু-না যজেৎ ৷৷ ভংষা বৈক্যে বিভাবৈ্য ব গায়গ্রী দশধা জপেৎ। ভৈরব ডে রকঞ্চোজ্রা বিদ্যাহে তদনন্তর ।। লুধা দেবৈ। **ওতঃ পশ্চাদ্মীমহীতি** ততো বদে<u>ে। ভূমে।</u> দেবী ততঃ भागावमस ह भूकात्याए॥ इंडि তে ক্থিতা াবী গাব্সী প্ররমাক রী। তস্যাঃ স্বরণ মাত্রেণ দুব্য শুদ্ধি-क जायरक ॥ **उत्र भूतानानीत्ना ২**হু: সত্য: জ**ত্য: ন স:শ**য:। তস্য माध्य मृता नजा वितृति विरिध् **ज**क्ट ॥ ब्रक्त्रवाज्ञ न भूका जूषा বজেণগোপথে ।। 🛊 ।। ধর্মার্থ কা-ন সোক্ষাণা বিষয়ানঞ্ছে পার্বতি। अरविषाः कार्ताः यमार कार्ताः भः मानुवामिनी स्त्री भाउकीतृकः। इंडि রিকীর্তিত ।। **অমার্ক্ণ মহেশানি** শলীর কারণ **হি ত**ে। মৃত্যঞ্জা '२२' वीखि**न्य वीतकार्य्य भुनामकः।।** निविकादागास्य निविकासन १६ छनाः स्वरामानः भवः उद्ग जूकि

মুক্তি পুদাশক ।। নির্বিকল্পো মছে-শানি মুক্তিভাগী ন সংশ্य:। স-বিকল্পে বরারোহে রৌরব॰ যাতি নিশ্চিত ।। ইতি কৈবল্যতন্ত্রে ২ পটল:।। 🗱 🛭 এতানি শুতি মৃতি বিৰুদ্ধত্বাহ্মাহনাৰ্থানি শিষ্টে: ক-माहिमिन नाहत्रीयानि॥ मन्डिकाः पु॰ माउन्कः। ইতি রাজ-नियंग्डेः॥ मम् । भू भूताकतः। (भय। इंडि ভाষা। তৎপर्यशयः। सम्बः ३ बगवः १। इंडि (इमहन्दुः ॥ महाभामन क्षी भानकृष्ठक छक्ष । **७८ न**र्गायः। উপদ मः २ व्यवपः শঃ ৩ চক্ষণ ৪। ইতি হেমচনদুঃ ।।। মদ্যপুষ্কা জী ধাতকী। ইতি রাজ-निर्घण्डेः ॥ महरमधः भूः महरक्तः। उ९भ-র্য্যায়:। কারোভ্রমঃ ২। ইতি হেন-**हन्दुः ॥ कात्राखत्रः ० সू**त्राम ७: ८ া ইত্যমরঃ।। त्रञ्जान। ताजनिर्घएछो ॥ गम्जीक• क्ली नानामुव्यक्**छ नु**वादीः

জ। বাথর ইতি ভাষা। তৎপ-

र्यायः । किन्न २ नन्न ३ ० नन्न ६ ८ ।

ইতি হেনচন্দুঃ॥

भन् प्रकार की म्रामब्बी कर्ता । व शासूत्रक वामी न् तल्का नः मञ्चा य य ८ किया उ उ ८ । उ ८ भर्या गः । वामुकिः २ वामवः ० व्यक्तिवः ॥ १ इंडि एक्स हम्मुः ॥

नम्प्रारमामः भू॰ वजनवृक्तः। ইতি त्राजनिर्धणेः॥

मृदः श्रुः पिणविष्णवः ॥ हर्षः। इ जुशामित्कायः ॥ जप्पण विवत्तगः यथा। विद्रावे भाखात्मा स्था भूर्व पक्ष क्राम् जा मृद्दिणः ममाधाः जा मानुहा जब जिक्षेति ॥ हेलि शक्तिमङ्गालाख १ शहेलाः॥

মৃদুকঃ ত্রি মৃদুবেশভবঃ। ই**ভিসি** জান্তলৌমুদী।।

भमुकातः वि भमुक्ततः। यथा (कम लिय भमुष्ट सर्वि भूकारवाधः वर्गकृतभः॥

मपुक्तः वि गक्नकात्रकः। यथा।

क्रिम्ब्रांशिश्रिजािजः म्याग्रक्षः

त महातो। ইতি विकाश्रिम्यः॥

गमुम् ठा जी मपुताककन्या। मा भाश्र्

ताजम्य विठीया जार्यता नक्षणम्यः

क्रित जननी हा ইতি मप्तत्रात्नी॥

गम्भी १३

न्या भू भिनः। ইতি निवास्तो मूम्याम्यापिवृज्धिः॥ मध् क्षी मन्तरा। क्षीतरा। जनरा इंडि विभः (२१०नुष्ट ॥ त्रमाखनः । भ्युत्रत्रत्र इंडि गावर । इंडि **गद**ः त्रज्ञावनी ॥ भूञ्चत्रभः । फूलात स्मी इंडि ভाषा। उट्मर्यायः। मक्त्र-न्तः २ । इंड्रायतः ॥ यत्रन्तः ७ यत्र-ন্দকঃ ৪। ইতি শহরত্নাবলী।। স্কু-দ্যুভি মঞ্চিকাভি: কৃত । মৌ ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। ক্ষেট্র•২মা-क्किक । इंड्याय ।। भाक्षीक । 8 দসুনাসব ৫ পুস্নাসব ৬ পবিত্র ৭ পিত্র্য ৮ পুন্নরসাস্থ্য ৯। ইতি ब्राडनिर्वण्डेः । माधीक > > मात्रवः ১১ নক্ষিকাবাস্ত ১২ বরটীবান্ত ১৩ **ভৃষ্**বান্ত॰ ১৪ পুয়রসোদ্ভব॰ ১৫ । ইতি ভাবপুকাশ; ॥ অস্য সামা-ন্য গুণাঃ। শীতবৃ•। মৃদুবৃ•। স্বা-मुद्धः। बिरमाय दुग नामिद्धः। कवाः यानूतमञ् । क्ष्कृष् । व्यक्षुराष । শাস কাস নাশিত্বগাঞ্চাতিদ-ষ্টবিধণ যথা। পৌত্তিকণ ১ ভাূুুুুয়ারণ रको हु॰ ७ माक्रिक॰ ८ हा ध॰ ৫ व-र्या ७ ७ छिल्। बक् १ मान । । अ (उदा॰ लक्षणानि यथा: शिक्षा म-ক্ষিকা (জ্ঞয়া মহত্যন্ন। চ না দিখা।

মহতী পুড়িকা নামী-ৰয়া কুদুতি कथारङ ॥ श्रेष्टामा मिक्का नीना गाकित्वप्रिं । । প্রিকা তু भत्र कृता मकिका मस्रवः मधु॥(भी ব্রিকাদ্যুচ্যুতে ছাত্র বরটীছ্র সম্ভ-ব। তপোৰ্যে জরৎকারে। রষ্ঠ্য भ्रत् उक्छन्।। अप्रामक्छ वसी क काति की विविधिष्ठः। मान नि-ভ্যাভিনিদিষ্ট বৃক্ষকোটর কীটল ।। 🕸 ।। এতে हाः वर्गा यथा । साक्रिः क रेडनदर्भ महाट घडर्भऋ (भी-किकः। (को। के भवारः अप्राह-ए जावब मू १८५ ॥ 🕸 ॥ वर्ष-भार छना यथा। उत्तेखिक **उप् वी** (गुरायः कषाः जूबुनाद्वराष्ट्रा वाजा-म्क लिख क्ः पि विमाशि गमक्यः बु 🖟 रेश हिन्छ। - यानू ज्यञ्जा हु। नव• গুৰু কীৰ্ত্তিত। ক্ষেণু বিশেষতো জ্ঞেদ শীতল **লঘু লেখন•।। তথা**-ল্লবু ভর: কক্ষণ মাক্ষিক: পুবর: মৃত: । খাসাদির্গরোগে**রু পুশস্ত ওদি** শেষতঃ : ছাঞ পিত্রি কিনিছর क्रक लि इत छक। व्यर्धाः ठक्क्षा মানুষ্ট কক পিত্তান্বাভিত্তি ॥ छेन्नान हर जनाताक करे कर व यालहर मान कक्ट्य क्रक मी **म**न्द्रिक अस्तुर ॥ उक मुकार्ड॥

भूरिकम्ह इन्डामध् वियान्याए। मध् न्। कि विकथार वर्क्क विदार्घ। मः कि ত ।। উঞ্চি: রৌদুৈ: করণৈ: উঞ্চ মধু উষ্ণাৰ্ভ রৌদুপীডিত জন বিষার-याद विषज्नादाद स्नार ॥ #॥ नव शूद्राग नधू खगाः। वृ•रूनीय• **मध्** নবং বাত শ্লেম হরং পরং। পুরাণং লগুসংগাহি নিৰ্দেশি ছৌল্য নাশ-न ।। (हाय जय इत भक्त माम मन्न जिएगि क्ट ॥ अब (किमिश्रूरान) **ৎ**শ্লিন'যোগাভাবাৎ কালপত্বভা नाहः॥ 🗱॥ मधुकाउ मर्क्ता छनाः। নধুলা শর্ক্রা কক্ষা তৃকা ছর্দ্যতিসা-त्रिष्ट । ইতি রাজবল্লভে নধুবর্গঃ ॥ 🗱 🗱 ॥ यि निष्ठा । माकि 🗫 जुर्मित्रः ক্ষৌদু॰ পৌত্তিক ছাএক তথা। व्यार्थ्य (मोम्हानक मान मिन्त्राष्ट्री স্পুজাত্য:।। 🕸 ।। নানা পুল্ল রসা-, হারাঃ কপিলা বন মক্ষিকা:। যাঃ ख्ना खां कि कर भन्न मध् माकिक मूठ्ऽ 🗷 🗱 ॥ (य त्रिकाञ्जनरंगानाः **ভाः भूग्नामद भ**तायगाः । ज्यदेत-র্জনিত তৈক্ত ভ্রানর নধু ভন্যতে ॥ 🛊 ॥ तिञ्च। मिक्काः मृद्धाः ফ্দু ইতি হি বিক্লুসা:। তাভি क्रमाहिक यंख उर क्लोर् मध् क्षप्रज ॥ 🗱 ॥ म्हाजा मिक्काः

मुनाइउ ।। 🗱।। ছ धाकात्रस्र भेष्टन मत्रवाः भीज भिक्षमाः। य अर्वस्रि **उ**ष्ट्रश्यः मध् ছाधकः मीतिङः ॥ 🗱 🛮 নিক্ষকা স্তীক্ষ তুণ্ডা যাঃ পীতাঃ यदेशर जिल्ला छाः। छर्ष्कुछः यस्र्यताः र्श्न कतार्घाः सम् खनारको। 🛊 ॥ छै-मानाः किनाः की । जूम कम-वनाः मृजाः । यन्त्रीकाष्ठ समूर्भः भोष्रावक मुरीर्यप्रत्य ॥ 🛊 ॥ हेन्सुनी-ल मलाकाताः সূজ्या निध्निष्ठ सक्ति काः । यष्क्र कार्षेत्राष्ठ खम्भू मान মিদ[,] ক্ৰমাৎ ॥ # ॥ ইত্যেতস্যাষ্ট্ৰ (छोर क्रभिंड: क्षिडा क्रमार। व्यथ वक्कानाइ (द्वा: वर्ग वीर्या: দিক ক্ষাৎ।। তদ্মথা। মাঞ্চিক তৈল বর্ণ স্যাৎ খেত• ভাুমর মুচ্য: তে। ক্ষৌদুন্ত কপিলা ভাস• পৌ-बिक पृष्ठ महिन ॥ जाभी उ वर्ग ह्य गार शिव्यक्षार्य नामक । केमान बर्ग माम्मा भाभीक मान নুচ্যতে ॥ 🗱 । নাকিক নপুর 🛪 🆚 🖠 লঘু খাসাদি দোষনু । ভানর পি ছিল ৰক্ষ মধুর মুথ জাড্যজিৎ।। को मुख भी छ ठेकुरा। शिह्ल शि ন্ত বাতহুৎ৷ পৌত্তিক মধু ৰক্ষোঞ 📗

भित्राः भृष्ठिका इंडि कीर्लिजाः । । कृम्ण निष्ठ मारुक् ।। श्वि मिरु ভজ্জाত• नथु बीम फिः পৌ खिक• म- |िक् मिश्रक विम्राहाण श्राण्यत । অৰ্য্য নম্বতি চক্ষুষ্য ক্ষ্ পিত্তাবি रिष्क्रिशालिक अक्षानि दि। यम गर्ब मिषित। नाल करू कवा-যান্ন• নধুর• পিত্তদাযি চ ॥ #॥ নব• मधु ভবেৎ ছৌল্য॰ नाजिएनु य इतः পর। দেহ স্থৌল্যাপহ। গাহি পু-রাণ মধু লেখন ।। 🛊 ।। পদ্ধ দোষ ত্রয় পুষ্ বিবিধ কজা জাড্য জিল্লা-ম্যাদি শ্ব:সা খন্তে চ ক্চ্যা বল মতি পৃতিদ॰ বীৰ্য্য কৃদ্ধি॰ বিশ্বত্তে ।। 🛊 ।। व्यागस्थिमाम रुल्याम्य भवन कडा शिख राष्ट्राम् (साय गामा न्।मः वि-শোষ জন্মতি নুম্তি ধু স মৃপ্যুঞ্ वृष्तः॥ 🗱 ॥ वृष् भिष्येन महात्व वृष সংরোপণাদিষু। সাধারণার্যপুর্ভিত তত্ত্ব্য মধুশর্করা: ।। 🗱 ।। উঞ্চ সহোক্ষ কালে বা স্বয়ম্ব নথাপি-वा । ज्यानः मध् मनुष्ठानाः विषव-खाश मायक ।। 🗱 ।। की वैकामि युक মন্ন দুবিত যহ পয়্য বিভক্ত মধু স্ব-তঃ। কণ্ঠকোটর গভঞ্চ মেচক তই গেহজনিতঞ্চ দোষকৃৎ ৷৷ 🗱 ৷৷ দণ্ড॰ নিহত্যযদুপাত্ত মূপাস্যদংশাং স্তঃ मृश्विशः अधु तनायन रयाण स्वरम् । रिका अनासूत विल्लाक दक दुना रि

(मीयाशव जांक ब्लावन मनाथा) क्षेत्र विश्व नाश्वीमिजा नश्ट नहीं मक्का ्रेनक्त्रा । नाक्रीकणक्त्रा रेठया कि नुबा कोनु भक्ता। यहुन॰ यन स् (भाक क्षुना उन्। भक्ताः। विक्षियावन न्या ह उर्भन कीन त्रश्चिगा। इंजि द्राजनिर्घणः॥ * *॥ ম জান্তরে মধু গুণাঃ। মধু শীক্ত লঘু अ कि वित्वार्यन । विक्रूपं मीरानः वर्गाः युग तमाधन (ब्रामनः ॥ भोक्रनार्यक्रः मुक्कः शतः (ग्राटका विल्गाथनः। वायानुद्रमः झानि अ चरत इनकर १ द्वरा। यहार (म्थाकद्रर त्यक वियक गाठम रखा त्र शार्मः काम भिखाः कम विश्व द्वा किमीन् ।। মেদ সূফা ्মি স্থাস হিক্লাজীসা-त विख्युशान्। नाष्ट्र कठ कयाः স্তমূ যোগবা**হাল বাতল ।। 🗱 ।।** थाय मधुरक्ताः ॥ **माकिकः जानतः** ক্ষেদ্র পৌরিক ছাত্র নিত্যপি। আর্থ্য নৌদ্যালক দাল মিত্যপ্তৌ ম্গুজাত্যঃ॥ 🛊॥ অথ তেষা॰ ল ক্লানি গুণাশ্চ। ভব্ৰ মাক্ষিকস্য। माक्काः शिक्षवर्णात्र महरङ्या मधु मंक्षिकाः। जानिः क्उ॰ रेडमदर्ग॰ মাজিক তৎ পুচক্ষতে॥ মাক্ষিক• के वु (मुंध मञागय रदा वध्। काम-

नार्भः कठ थान काम क्रम विनो भन• PMII अथ ज्यानत्रम्। कि विष्ट म्बिः नुनिष्क्षः भूष्ट्राख्या वि ভি শ্চিত । নিৰ্মাল সুটিকাভ যন্ত-মধ্ ভানর মৃত ।। ভানর রক্তি खन्न मूबबाए।कद्र धक् । सामूनाक मिंचित्रानित विश्मयाथ शिहिन हि-म॰ ।। 🗱 ।। व्यथ (कोपुन्। मक्कि-काः किनाः मृताः कृताथा ख কৃত্ত॰ নধু। মুনিভিঃ ক্ষৌদু মিত্যক॰ जन्नर्गाट कशिल॰ ज्राद्य II खरेन मी-किक्द को पु वित्नवाद्य नी-**#**न•। **#। जब (भोखिक्म्य)। याः** क्का यनकाशमा वय्उद्राः शासा মহাপিণ্ডিত। বৃক্ষাণান্তক কোটরা-স্বাসক দৰ্তে॥ তা स-**ब्हेड दिश्म प्**लिका निगरिता छा-ভিঃ কৃত• সর্গিষা। তুল্য• যম্পু ত-·द्यत्मव्यक्रदेनः मःकीर्ङ्जः भोखिकः ।।পৌত্তিক• মৃধু ৰক্ষোঞ্চ পিত্ত দা-**হাসুবাতক্**থ। বিদাহি মেহ কৃ हु⁻ মু• গুছ্যাদি কত শোষি চ॥ 🕸 ॥ অথ ছাএস্য। বরুটাঃ কপিলাঃ পীতা: প্রায়ে ছিম্বতো বনে। স্ব ৰ্ত্তি ছ একাকার ওজ্জ ছাএ মধু मृजः।। ছाधः कशिन भीजः म्याद शिह्बि भीउन एक। बामुशाकः

ক্রিনি থির রক্তপিত পুমেহ্রিং। **ভুম** তৃড মোহ বিষষ্ट ত ৰ্পণঞ্চ ও नाथिक । 🗱 । वाथार्यात्रा । मध्क व्-कानिर्गामः अत्रक्षात्री भुष्मा ख्वाः। সুবন্ত্যাৰ্য্য তদা খ্যাত্ত শেতক মা-লবে পুনঃ ৷৷ তীক্ষ তুগুন্ধ যা: পীতা भिक्त काः विदेत्रामात्रामाः। व्यर्धाः सा ख क् उ च य ज राघं। मि जा भारत अ खः ॥ वार्चा गधुं ठि ठक्क् या कक शिख इतः भतः। कषायः कर्वूकः भाक जिकक वन भूष्टिक्ट ॥ 🗱 ॥ जाया फालकम्या शार्या वन्त्रीक मध्यक्ताः किनाः बन्न हो देकाः। अर्बन्ति क शिलः बन्नः उৎमहारोष्ट्रानकः मध् মা ঔদালক কচিকর স্বর্য্য সপ্ত বি ৰাপহ। কৰায় মুক্ষ মন্নঞ্চ কটুপাক। क भिखक्ट।।।।। वाय मानग्राम॰ শু, ১১ পতিত পুষ্লাৎ যকু পণ্ডোপ-রি স্থিত। নধুরাম্ল ক্ষাযঞ্চ তদাল। क मीलनीय कका शहर। कवायान् त्रमः क्रकः क्राः इपि भुरम्हि ११ जिस्कि मधूत जिल्ला क्रिका विष्टा ভারিক•। লঘু পাকে। গুৰু ভারিক• গুণাঃ।। নব॰ মধু ভবেৎ পুষ্টে। নাতি श्लिय रूत अव । भूतान गुार्क मधूकतः श्रृ पुमतः । हेरामत्रि

নপু 🔻 न्मद भारतिम् वास्ति । भन् । भना मधुनः नर्कतायाम्हा छ विवासिन (भवजः। किंहम वट् महा विज भू-त्रागष् अं क वृद्धिः ॥ अथ म-धुनः निष्ठिम्। खनाविक्र, मूक्छाया निरवशः। विष भाग्नामिश द्रञः जः विवा जुमतापयः। गृशिषा मधु अ-बिष्ठ छही छ॰ छ । विवास या अपूक्ष पुरवादागात्कन वा अस्। उक्तास्त्र प्रकाल ह म्ड॰ विश সম• মধু॥ ইতি ভাবপুকা শঃ॥ मपुः भुः मयुक्तमः। মউলগাছ ইতি ভাষা মাবসম্ভর্ত্ত ।। দৈত্যভেদঃ। यः रुष्टा विक् र्यथुत्र्दता २७ू८ ॥ हिन मानः। इति समिती ॥ **अ**न (माकवृक्षः। इंडि (रुगह्मुः ॥ य-প্রিমধ্। ইঙিশবর্গাবলী । সমূর-বিশেষ:াংসচ শত্রুত্মনহতঃ ৷ যস্ত নামা মৃথুরা নধপুরীতি খ্যাতা।। मध् कीर्खिउ ।। मान मध् नम् ल्या । मक् जी बीवडीर्कः। ইত্যনর:॥ मध्कः क्री यष्ट्रिमधुका। ইত্যমর:॥ ্ত্রপু। ইতি ছেমন্দ্র:।। 💆 🚶 স্থুক: পু• বনিতেদ:॥ যষ্ট্যান্তঃ 📜 বিহুগান্তর:। ইতি বিশ্ব:খা ত্লিত ।। ৠ।। অথ নব পুরাণ মধ্ সধুকণ্ঠ: পূ॰ কোকিল:। ইতি ক্ৰিন ওশেষ:॥

भी । 🖟 ध्विष्ठिता-पून्वाकः 🍴 ह अस्याना ॥ अक्षूक 📝 🖹 नपूत्र अधीत्र विष्णयः 🗆 🔻 प्रेक हैं, 🕸 😇 ভाষা। তৎপৰ্ব্যা-्रेशक्षा २। ইडिश्वरिक्ति॥ নপুথ দ রিকা। ইতি রাজনিঘট:॥ मधुक्कही खी मध्वीखनु दः। इंडि ্রজেন্ফিটা মধুক: ভা মুধ্যস্তিকা। ইত্যমর: ॥ मधुश्राने वृक्तः । इति (मिनि ॥ কৃষ্ণবৰ্ণকন্ত্ৰী। ইতি হেমচন্দুঃ ।। भक्षत्रकृष्टि की अधीव विरम्पयः । নখুর ইতি মহুর स्यू अक्र **३७५ च्या ७८ भर्या यश माज्** खुक्। २ २ का ठ विश्विष्ठा **८ প्**जि-**পু**ল্লিকা_ই শক্তম্ন ৬ দেব**ন্তী ৭** । केंकि बेहि ना । जन्मा ख्याः । णीरुवः। स्त्रम्यवदः । याम्।भू नामनव् । स्ठाव् । सामृष् । स्कः ছ । স্থিজ । বাত পিত্ত বিনাশি জ্ঞ। ইতি রাজবল্পভ: ॥ मधुक्द- भू . जुमतः। इंडि (इम्हन्सुः ন্ধুক্ৰটঃ পু ভুমরঃ।ইতি ত্রিকা-अम्बद्धः ॥ मण्टिकरेट शृ अमृतिकारो । ्री कट्शन्तामि यथा। रेमन निर्मात ज् भूवाय भूमाख गरू प्रश्रुक

া ত্ৰস্য শ্ৰণ বিড্লাতা বসুরৌ মধু-किंद्रे ।। क्यंशृष्ठ गठा मृष्टी वि-'नीरनवा खबब्बरेनः। **ठा॰ वीमीर्ना**॰ (यागनिना सरामाया वादलाकय ॥ তা বৈ দ্টভরা কত্ত পৃথী পুতি-**उत्पद्धो।** डेशायः हिस्यामान कथः श्थी जरवष्षा।। इनाने मान्यर भृथी भुवृद्धा (कामवा करेतः। मृश्चि-কোলে জনান্বোঢ় কথ শক্তা ভ-বিষ্যতি ॥ ইতি সঞ্চিন্ত্য সা गाउ। - রুগভা• সৃষ্টিকারিণী। উপগন্য তদা বিফুমাসসাদ সুনিদ্রিত। তম্ভ সুপ্ত॰ मगामान् बगबायः बगद्भिष्ः। বামহন্ত কনিষ্ঠাগু• তম্য কর্ণে ন্যবে-भव ।। निर्वम् नथत्रार्ग्न (भाक्-ভ্য শাবণ নল। চ্ণীচকার সা रमवी यागनिम्। जगर शुमूः ॥ ७८ কর্ণমল চূর্ণভ্যে মধু নামাসূরো ভ-বং। ভতো দক্ষিণ হস্তস্য কৰিগ্ৰা-शुद्ध प्रकार ॥ कर्ल न्यात्रभयत्त्वी ক্তমাদপুঞ্ছ ত॰ মল॰। তদাপি কো-দ্যামাস করশাথাগুজেন তু ॥ ত-তো হভূৎ কৈটভো নাম বলবানসু-রো মহান্। উৎপন্ন: স চ পানার্থ• যমান্দ্রিবার্ধু॥ অত उन्। ম-शास्त्री मधु नानाकरता खना। उँ९-भमः की विद्धाि ग्रहाभाषा करतः

(मवी जनाकरतार । जाव्वावः महा-गागा गृथाजाः एतिना गर ॥ ग्वाती मुक्तियवाञ ভवछो निरुनिष्ठि। मना गुवा॰ भुजारमध्य जाना॰ विद्या वधागलो ॥ जरेनवायः युकाः इष्ठा मान्धा इति त्रभाष । महाभाषाताः ছিতো তৌ বিক্সাত্রে ভ্রদা মুহু:।। जुममार्गो पम्भजु माजिभद्म इड-বিধিণ তমূচতু জৌ খাডারণ ছনি-य्यात्वा २म्। नानि उ ॥ जु जागज्ञ्य रिवन्न थे॰ यपि जीविज् भिद्दान । एउन বুন্ধা মহামাযা বোগনিদা জগৎ भून् ॥ भूमाप्यामाम उत्ता खि**छि** ৰ্মতিভি ভিৰা। চিব্ন• স্তভাপ সা দে-वी वुक्तना जगराजाना ॥ भुजना छव-হত্যৰ্থ মূবাচ চ যথা বি**ধিং :কিম্**ৰ্থণ স-স্তুতা চাহ্ কি করিব্যান্যহ্ জ বা তদ্বদ্বাভাগ করিব্যাম্যহ মিদ্যতে।তত তেন মহামাযাপ্যোক্তা याजा महाजाना ॥ शुरवायन कगमा-থ বাবলো মা হ্নিব্যতঃ। সংমো-र्रेग को पूर्विश वमुत्री मधू किछि छी ॥ इंजुड़ा मा उदारियी वृक्षण अगः काञ्चना। (वाध्यामान विञ्ले॰ मा **হ**যানাস তৌ তলা।। ততঃ পুরু**দ**ঃ क्कः महरमं उयभाविनः। वृक्षानः

भश्रुति वडः॥ व्यव छ॰ किंदिजाशाह बन् । (छो ह्रमा क्वांता वम्रति । धरेक्टिंडी गि उठे डाजा म गुर्द अभावका। जनार्षनः । नामकद्वाविक् तिता य-সুরৌ মধুকৈটভৌ ॥ অনস্তো ৎপি क्गार्गुन जात्वाथबुं क्रामा १७१८ । युष्प्रभागाचारावीज्ञान् रेवन्छ मधु-रेक्टें जान्॥ जय तुका निनास्तरा স্থিতি শক্তি তদাকরোৎ। অর্দ্ধ-যোজন বিস্তীৰ্ণা॰ সাৰ্দ্ধ যোজন মায जा[ः] ॥ जन्माः भिनायाः देवस्राक्षे যুযুথে নৃপ সত্তম। সহ তাভ্যা । भि-ৰ। সা তু পুবিবেশ জলান্তর ।। ত ন্যান্ত শক্ত্যাণ নথাগাণ ভোষেষু যু-यूर्य इतिः। शक्ष्यर्य महमानि वाच-यूटेक भित्रस्तर भाराषा देनवा भक्कास তৌ বিষ্ণু র্জগতা॰ পজি:। পরা॰ চিন্তা তদা বাপ বিধাতা কি কয়া-ভভঃগা ভভ ভাবেব ত॰ বিকু মূচভূ र्चनपर्भिष्ठो । भूनः भून रही गर्जस्ही महाभागा विमाहित्वो ॥ जुरहोस স্তুমিযুদ্ধেন ৰব্ন বর্ম নাধ্ব। তবেষ্ট **मः भु**षोम्यादः मञ्जासम्बद्धाः । खरा छन्नहन भुन्ना जगवान् भक्न ধুজ:। উবাচ তৌ যুবা প্রধ্যে ভ विजा म गरावानी।। देखिए हि वतः मञ्चः माठवाः यमि विघातः । ভৌতদা প্রাহ মুম্মক্তো নোগেটা দা

॥ उका । हि त्य (म्पेडरन) निपामस्त्रा 💛 🧵 वि 🔀 छिली **सद्या ।** भाषा भाषायाक्रमञाः भजिः ॥ वृक्षानः भावाभीष्युन शाहमकाचा मः अस्। वृध्यम् कि निवाः नी यु मू-क् अ थीयकः विषा। **उत्र हि दा भरा** ধারে হ্নিধ্যানি নহাবলৌ। ভতো বুক্ষা হয় টিলং ট্রেন্ডিটেড 🕏 🖯 ্প্রভাগে হাস্ পর্ত ॥ ७५ व हैं देश भिवार छि-ৰূপ হ'ছ षा 💮 🔑 🔞 🗈 भागत प्रकार अंदर रहते ने-to hear a state of the हेमन्द्रभा । क्षित्र क्षार्ट, क्षार्ट । प्रतिपुद्ध स्टब्स्ट **स्टब्स्ट स्टब्स** শক্তিনি প্রায় রুপর জন · 大学校 唐春 李/安 **মেশ্বর**ঃ। 342 B 化二甲磺基二甲基酚 हक्रम बग ्याचि । श्का किना ৰ্বপ্তত্যুব 🧸 ব্যেক্সালে বিলেরোপ্য শিরসী ত-🔑 ा बगनाथात ज्उः न नर्व यर्वन भृश्युकः । अर्ह्स वं रेषः अभाक्रमः। हिर्हर म भ्यक् भ्यक्। मश्रुक्रेक (सा भगक् वीत्रायाः भ्षिवी म्राज्या प्रकाकना। म•स्नाना मुक्तमा कि तरका

गञा । ध्रियमानानि (मरवीरेघ येद्राः मिन मूछ मू रः।। उठ खरगास म्छ-বো: শরীরে অগতা॰ পতি:। বুক্ষ শক্তি সমৃষ্ত্য ন্যান্তস্যাণ পু-वज्ञ उः ॥ উष्।याः পৃতিথব্যাম্ভ छ-(यार्ष्यामा विरामभौनः। जुप्हा मकः রোৎ পৃথী কেদিতা তোৰ রাশি-ভিঃ ৷৷ মেদো বিলেগিতা সমান্নীয়-তে मिहिनी ि मा। यह । भि भृषि वी (पवी (पव गानुष त्राक्ररेनः ॥ इंडिकालिका भूतात ५० व्यथायः॥ মধুকোষঃ পু॰ মধুমক্ষিকাকৃতকো-यः। (मोठाक् इंजि छावा। छ८-भर्य)। यशुक्रमः २। ইতি नद् **ठिम्दिना ॥ इंगिन्इ इंडि ना॰ना**-मिता वम्खि॥

षुक्रमः भ् भूनःभूमर्थध्भानकमः। षट भर्यायः। मध्वात्रार। ইত্য-मतः॥ मध्कायः। ইতি नक-চন্দ্রিका॥

जिस्तानिका । वा-जिस्तानिका जिन्न कर्व द । वस्वीयं। विवर्षनद्कः । काष्ट्रभवः।। इति ब्राकनियंग्रेः॥ वसूर्वी की •

मध्यायनः भूः (काविषः । ইতি त्राविनर्यणेः॥

मध्यक्षनः प् लाखाक्षनवृक्तः। इति नदमाना॥

मध्यायः भुः (काकिनः। ३७) नद्माना॥

निष्हरा की निष्द्रिण्या है छि छात-পুকाणः॥

मधूब॰ क्री मिक्नुकः। ইতি রাজ নির্ঘণটাঃ।

मधूडबीतः भ् मधूतकबीतः। ইতি त्राजिमधंग्रेः॥

নধুরা দ্রী পৃথিবী। ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা।। সিতা। তৎপর্য্যায়:। মহাখেতা ২। ইতিত্রিকাওশেষঃ॥

भवृहिष् भ् विकृः। ইতি **भय**त्रज्ञा-वली ॥

मध्रुतः द्वी हेक्ः। ইতি बिकाखः (भवः॥

নধুত্ব: পু॰ ইক্:।ইতিরাজনির্ঘট: নধুত্রয় লী নধুর্ত্রয় ।ইতিরাজ নির্ঘট:॥

शरूपीशः शृ॰ कामाप्तवः। ই**তি हिम** हिन्द्राः

মহুৰ্ত: পু॰ আমুব্দঃ। ইতি ত্ৰি

नवूर्ण की शादेगार के ुर्स

छावभुकामः॥

মধ্ দ: প ভ্ৰমর:। ইতি ত্রিকাপ্ত-

ुत्नवः ॥

ন্ধুদ্ধঃ পু• রক্তশিশুঃ। ইতি শব-রব্রাধনী।।

মধুজনং পু॰ বৃক্ষবিশৈষ:। নৌলগাছ ইতি ভাষা। তৎপর্য্যয:। মধুক: ং শুডপুল্ল: ৩। ইত্যমর:।।

निष्ठां भ् नाकिकः। ইতি রাজ-নিষ্টাঃ।।

मध्र्मिः की थएः। थाँए ইতি ভাষা । ইতি হেমচনঃ।।

मध्रवनः ज्ञा मानार्थमधामिनिर्मिड

मवर्गाणीः। रथा रहाराजानाः

1 नध्रवनः পुषक्रामि मर्शाउक

नाणिनीः। जन्निरक्ष महीन्रिक्

काजिन मर्गाउतः॥ स्वनः मध्रनः
वीः कृषा मःभूगोः धर्मराप्रणीः।

हज्र्यन ज्याः लिन वर्गकः भनिः

कन्नरर ॥ स्निर्मेख मुक्तः स्वाः मुक्तः

कृषा मानाः भजन्यीः ख्या ॥ श्र
कृषा मानाः भजन्यीः कृषा निजवन्ताः स्राः

चनाः। मथः छज्यः कृषा । स्राः

चनाः। मथः छज्यः कृषा । स्राः

चनाः। मथः छज्यः कृषा । स्राः

क्रिता एडी: क्लमगाः म्बार् । प ভর্মিধরা देवनी রৌপ্যক্র विভ্ विज्या भूमे उभयम्वना भूमानार পরিত গুড়া। সর্ব লক্ষণ সংযুক্তা সপ্তধান্যাবিতা তথা।। চত্তারি তি-লপা বাণি চতু দিন্দ্রপি স্থাপথে । ছানিতা॰ বজ্রযুশ্মেন ঘণ্টাভরণ ভ্ विञाः॥ काःम्यानाराह्नाः क्षा গদ্ধপুষ্ণৈস্ক ধূপিতা ৷ অযনে বি ষুবে পুণ্যে ব্যতীপাতে দিনক্ষযে ।। শ-কান্ত্যা মুপরাগে চ সরকাল য मृह्या । मुवर बुष्क्षा सम्पन्ति मृङ्का তান্ত পুদাপয়েত।। বাহ্মণায় দরি <u>দায শেু তিবায়াহিতার্থে। আর্য্যা-</u> বর্ত্তে সমূৎপান্ন বেদ দেশিক পার-গে ৷৷ ভাদুস্থাৰ প্ৰদাতব্যা মধ্ধেনু र्नात्रुहर । भूइएए। भविष्ठेख गक्ष धूलामि शुक्किछ ॥ आहाम् वज्जम् শ্মেন মূদ্কি। কর্ণপশ্ৰকৈ:। স্বশক্ত্যা मिक्ना॰ मञ्जा विज्ञाना विविधितः ।। कनभ्बंख कर्बराः भागामानः म नर्शारः । रमञ्जा मर्व (म्यानाः मर्व ভূ্ হৈতে রতা ॥ প্রীযন্তা পিতৃ (मृवाम्म मृथूर्थन। नरमास छ । এव बुद्धार्गः छा॰ (धनु॰ वुष्ट्रिभाष नित्व मार्थ ॥ व्यष्टः शृङ्कामि दाः पाव ह ्तर्थ विष्णवजः। कामः काम

मूघ कामा॰ मधुर्यस्मा नरमा २ छ।। মুখুবাতেভি মজেণ দদ্যা দা শু নিকে ग ज्राम का (धन् भरात्रा **ब र** शका-পানহৌ তথা।। এবং যা স্কক্তে ভি-क्रानश्रधन् नता थिन। मञ्जा मान॰ भागत्मन नथूना ह हिन• नत्य<ः ॥ ব্রান্ধণো হপি ত্রিরাত্তম মধুপায়স भःगृतः। এवः कृष्ठ जू यदःभूगाः **छबिरवाध नदाधिश**ा यञ्जलहा नध्वरा यज भाग्य कर्पगाः। अयः ংফা মূন্য: সিদ্ধা স্তত্ৰ গছস্তি বেদুদাঃ ॥ उत्र किशिनत्था जुल वृक्तताति স তিষ্ঠতি। ক্রীডিশ্বা স্চির• কাল• পুন মত্য মুপাগতঃ। স তৃক্। বি-পুলান ভোগান বিফ্লোক সগ-ছতি।। দশপুৰান্দশপরানাত্মা-নঞ্চৈক বিংশতিং। নণতে বিষ্ণুসা-युकार मशूरधन् भुनाम छः ॥ य देन॰ मृग्या खळा मुाव त्यहा शि मानवः । गर्ने भाभ विभिन् रिका विकृतनाः क म गहि ॥ इंड्रामि यदाई भू-রাণে খেতোপাখ্যানে মধুধেন ं भाषाञ्जाः॥

মধুনালিকেরক: পু॰ নধুনারিকেল:। এরনারিকৈল ইতি কোকণে পুসি॰ কাণ মোহানারল ইতিচ খ্যাতং। তৎপর্য্যাবঃ। নাধীককল: ২ মধু-

मध्यः

कनः ० जनिठवकनः ४ गामिकः
कनः ६ गृक्वः ७ वहक्छः १ इयकनः ६ । जन्य छनाः । मध्य छ॰ ।
निनित्र छन्य छनाः । मध्य छ॰ ।
निनित्र छन्य छन्य छन्य छिन्य छ।
विश्वः । वन निष्ठः एन्छकाछि काञ्रिः
छ॰ । वीर्यः विवर्षमञ्जः। क्ष्रः प्रमा ।
भानित । जाश्वीकः नानिक्तः कन
भानित्र । जाश्वीकः नानिक्तः कन
भानित । जाश्वीकः नानिक्तः कन
भानित्र । जाश्वीकः । जाश्वीकः
वाक्षित्र । जाश्वीकः । जाक्षित्र ।
पन कन। जाक्षिनः । जाक्षित्र ।
विश्वी किक्शित्र । जाक्षित्र ।

मधूनी की क्रुशिव (श्रामः। भाक्षका ठा इंडि भाक्षका छेनी इंडि ह जाया। छर शर्यायः। म्डम धा २ वाया मानी ० म्यक्ना ६। इंडि इन्याना॥

नश्तरा श्रुः ज्ञातः। इकि अक् इन्द्रिका ॥

নুখুপঃ পু॰ ভুনর:। ইত্যমর:।।
নধুপর্ক৽ ক্লী দধিসংযুক্তনধু। তৎ
পর্য্যায়:। নহোদয়: ২। ইতি হেম
চন্দু: ।। আপিচ । মনুপর্ক দধি
মধুষ্ত নপিহিত কা স্যোনতি।
অপিহিত মাহাদিত । ইত্যেকা

मण्गिज्ञास्त्र कार्जायमम्बन्धाः मध्यकः भूः साउल्लानहात्रम् सर्गं व रहा नहा हा । एका नुवान यथा। निव निर्म संतर क्रिक्टि जिन তৈ ভাভিত্ত পঞ্চি:। প্রোচ্যক্তে भश्नकं मर्दापतीय जूडेरम ।। अ লক্ত সর্বতঃ ধন্ন দিতা দধি ঘৃত नमः। नर्द्धवा मधिकः किष्टुः मञ् भक्तं भूरगां जारा । जम्म हार का॰ স্যূপাত্তেণ রৌশ্ম খেত ভবেন ব ख्याजिरहामायमधामी भूरई छ-(हे भूभूबत ॥ ग्रांकें भूजिति ्रभ्यः स्वरंतितीय ःासः। धर्मार्थः काम (माकाला॰ मा हः भविनोर्डि **णः**॥ हेल्याच्य (में ा) (जाग) जुद्धि शु श्रिषायकः। हे ह कानिकानु-द्वार्ष ७१ व्यक्षाः 🗱 िण्लिहाः आबा मिश्रम्भिम् भश्भकः वि ष् ৰুখা:। ইতি তরসার:।। 🟶 ॥ क्यात मूम् वर्णाः मःगूलानानि-काक्षा जिल्ला १नाः मं शुनाति छाः। मधुभार्ति । मा मुहा नियु जि পরিকীর্তিতা ॥ ইতি হরিতীয়-विनामः॥

মধুপর্ণিকা জ্ঞী পদ্ধারী নি নি নি বৃক্ষঃ। ইভ্যমরঃ॥ বরাহন বি ত ইতি পদ্চিল্পিকা ॥ ওড়ুটা ।।

क्लम्बा विश्वाप्त निर्विष्टेः ॥ वक्षा किन्ति। इन्तरः ॥ नक्षित्रात्यम् । मोनीद्मः । इंडि क्षिनिर्गा सप्रीजन्तः। देखि व्राक्षियणीः ॥

क्ष्याम जो क्ष्जुन। ই जिन्नान निर्धकः ॥

অস্ত্রপানি পু॰ জুনর:। ইত্যমর ही कामा: बामानुनः ॥ मधुनान-**表**自 第二章 是

২বশাল্য জা শন্তারী। ₹ 🤊 國本司部 计

भक्षा न मर्गिन् : इंडि अ अभिवक्तिः।

मर्भती को य जा। रेडिन स्वता वनी ॥

ম্বাস্থ্য 🔑 । বুজনার। ইতি 🖂 भाषा ॥ (म., व क्ष.) अल् क् वृक्तः ॥ दान ववृक्तः। ইভি রাজ विष्कृति ।।

गत्थकः यो वजीहकः॥ नागरश्चे वृक्ता है का जान है।

म्य हिंदी वृष्ट भागवातः। इति जिला ुं श्रीताषकः तुर्भिताकष्टा स्था। भारतः रेवियो में वर प्रश्नाच्या नक् रिक स्ट्रिक की तकत

जाजिमियीः।। विकल्प उत्कः। इंडि भक्तिका।।।

मध्कणिका जी मध्यक् त्रिका। इंडि त्राकनिर्घकः॥

मध्यहना क्षी वामकी गटा। ३७ द्राङ्गिर्यक्रै: ॥

मद्य हिंदी भू॰ दिक्श । ইंडि संपन्नद्राः वकी ॥

म्बास्त भू जार्थावेत्कः। इकि রাজনির্ঘণী: !!

मध्यजी जी कान्यतीर्कः॥ नती-विष्णवः। जम्मा हन स्नाः। हम् छात खननात्रहर छल किय नाष् মৃত্ত মশ্মিদীশ্মণ। উভি রাজনিহণ্ট: ।। উপात्र। नाविकाविष्णयः। नथा । তথা মধুমতী নিজি জায়তে নাজ भागाः। (हवरहती भाज भारत खन् । वमात्रा खब खिहि ॥ सार्ग गाउँ। ह পাতালে যা হল গড় নিছ্তি ৷ ত ত্রৈব চেটি নাঃ অর্থা নয়ন্তি নার সং-भाषः॥ ऎडि कृत्वा**म**ी शिक्षया* ৩ পটলঃ ॥

मण्यथनः लः विकारि रेगिरेगी ग्धः ॥

ংখ্যনী খ্রী নালগী।ইতি দদ-जाया।।

गर्थ 🤝 शुः पर्यानित्तयः। देखि । मथ्यदन ही निद्धितिस्परः। गर्भा

। नध् रिज्ञ घ्रेज संस्थ (विश्वेजाः निम्नाक याः । मधूमलक स्किश्वे छम्याध्या भद्रिमार्जनः ॥ इजि भन्न हिन्दुका ॥ जन्य स्वाः निश्वेभावः मुद्रेव्याः ॥

মধুমক্ষিক। জ্রী কীটবিংশব: । মৌ মাছী ইতি ভাষা । তৎপর্য্যায়: । সর্বা ২। ইত্যমর: ॥

मध्माधीक क्ली महा । इंडामत्र होकाया छत्र ।।

মধুমারক: পু: ভুমর:। ইতি রাজ-নির্ঘট:।।

মধুন্ল ক্লী আলুক । মৌ আলু ইতি ভাষা। ইতি শব্চন্দুকা।। মধুনষ্ঠি: জ্লী ইক্ষ্:। ইতি শব্দ চন্দুকা।।

মধুষষ্টিকা জী যপ্তিনধু । তৎ পর্য্যায়: । মধুক ২ ক্লীতক ৩ যপ্তিনধুকা ৪
। ইত্যমর: ।। মধুষষ্টা ৫ । ইতি
ভরত: ।।

मधुयक्षी जी मधुयक्षिका। ইতি भद्यः भावा॥

স্থ্র॰ ক্লী বঙ্গণ ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।।বিষণ ইতি নেদিনী।।

নপুর: পু॰ নিষ্টরসঃ। সচ ইন্দাদৌ লক্ষতে। ইত্যমরঃ॥ তৎপর্য্যাযঃ াগৌল্য: ২। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥ नधुत

त्रमाक्ष्रिः ७ एनाः ह नामूः के शब् वर्कः ७। ইতি (स्याहम्सः। उम् खनाः। श्रीननद् । वत्राद् । म्र ত্ব॰। বাযু পিত্ত নাশিত্বশ রসায-नव्। धक्वः। त्रिक्षव्। ठक्क्याव् । छर्भगद्भः। नत्रद्भः।। व्यन्तरहाः त्र-সো নধুরক: শীতো ধাতু স্তন্য বল পুৰ:। চক্ষ্যো বাত পিত্ৰ: य-र्ग्राथ स्थोना कक कमीन्।। माजि যুক্তো জ্বর খাস গল গণ্ডাদি রোগ कृष्। ইতি রাজবল্লভ: ॥ অপিচ। মধুরস্করস শিংনোতি কেশান্ব; भूवः रेश्यं यः वाज वीर्यापायी। व्यञ्जियनञः भुराह रेमञ् छ-एका शान्तु मुथान् करवाकि प्रा-ষান্ ॥ ইতি বাজনির্ঘণীঃ ॥ জীবকঃ য়া রক্তশিশুঃ।। রাজাটুঃ॥ রক্তে-कुः॥ ७७:॥ भाविः। ইতিট রার্জ-निर्घणेः॥

मधुतः जि मधुत्रत्र मिनिशः। साम्ः।।

श्रियः। ইতি মেদিনী।। পারিভাবিক মधुत्राणि यथा। বিদধ্যোকিঃ।

श्रियादत क्रामिः। ममी। दिगः॥

वालाकिः। ইতি কবিক্লপতা।।

गधुतकः পু॰ জীবকক্ষঃ। ইত্যমদ্না।

मधुतकरोकः জী মৎস্যবিশ্বং।

তৎপর্য্যায়:। কজ্জলী ২ ব্রু

1756

शर्यतार्थः। मध्कम् : २ मध्कम् नः ० त्रमृत्वी ८ मर्क्रत्रकः ৫ शिखपुति ৬। অস্য ওলাঃ।। মধুরত্ব•। শিশি-রবৃ । কফ পিত্ত শোফ শুম নাশি-ष् । छर्णा द्व । व्याप् । भूष्टिकाद-क दुक्ष ॥ इं जि द्राव्य नियण्डः ॥

সপুরক্ষঃ পু॰ ধববৃক্ষঃ।ইভি ত্রিকা-अल्ब ।।

ন্বুর্ব্ব ্রা বিতামাক্ষিক সর্বিশ্চ 1ইতির ायः हेः ॥

मधुर्वकत हो मुक्तकन हाना র্কিলঞ্চ : ইতি রাজ ें हैं अध्यु हैं।

ब्ह्विक्ट्रिक्ट म्यूत्रम्त्रयूकानाती। ংহতি 🔻 🦠 ংশেষঃ 🛭

গ্রেম্প 🦠 : রাজবদর:। ইতি अपक्रियक्तेः॥ .

अणुकतक्की की नश्वी**कश्वः। इं**डि 对南南流。11

महन्तिः न' हेकः। ইতि भद्रभाना स्टिन्स के जित्राजनियंके: II

मध्या छी मूर्वा । इङ्ग्रवः ॥ भुष्टि । पृष्टिका । इंडि संस्ति॥ প্রার্থাইতি ভাবপুকাশ:॥

क्षत्रे अभाषी ए। इंडि भनाजा । मध्यम्या की निखयक्त्री। इंडि त्राजनियग्रः॥

मभूद्रक्षयं तः। भु• मथ् अश्वीतः। ७०- मभूदा जी भ उभू हा।। निर्मुवा।। मथुदानगद्गी ॥ मधुकर्कित ।। (म-मा।। मध्नी। मध्यक्षिका। ই ডि (मिनि ।। काकाली ।। भेजावती ।। वृश्कीवडी।। भानकामाकः। देखि द्राजनिष्ठं ।।

> मध्राप्तकः भू षामु छकः। ইঙি भक्ठिन्द्रिका ॥

> म्ध्रापुकनः भ्ः दिकनः। उर्भ-र्यु।यः। यातः २। ইতি রত্ন। ना।। जी नातिका। इंडि মধুরালাপা द्राजनिघण्डः।।

> मधुतालावु-ी जी बाजालावः। ইতি त्राजनिर्घण्टः ॥

> মুধুরিকা ত্রী ক্ষুপবিশেষঃ। মৌরী ₹िं ভाषा। उ९ পर्यायः। **भारत**-যঃ২শীতশিবঃ ৩ ছগ্ৰা ৪ নিশী ৫ भिर्मुया ७। इंड्रान्द्रः ॥ नार्लयः १ মিলি:৮ মিসী ৯ নিশি: >০ ৷ ইতি ভটীকা॥ অবাক্পুশ্লী ১১ মঙ্গল্যা ১২ মধুরা ১০। ইতি রত্ননালা।। मधुती १८। ইতি শন্বরাবলী॥ অস্যা গুণাঃ। রোচকর্•। শুক্রকা-রিত্বণ দাহ রক্তপিত্ত নাশিত্বঞ। इंजि ब्राबव्ल जः ॥

स्पृतिन्ः श् िक्ः। ইप्रामतः ॥ । हिन्तिना ॥ स्पृतिन्ः श्रुतिना की विश्वतिकः । देखि नित्रति की दिन्ति ।

मध्यारकः पुः क्षणम्म द्रशासञ् चार्रक्षणः शृक्षप्रशीशस्त्रिकः म अत्रम्भागः श्रम्भागः । २किक विद्याः ॥

मध्यः श्री भर्षः। ইতি भद्यान्ति ।।।
स्थानः श्री द्वारणा जाङ्गः। ইতি
द्वारणा ॥

মধুলতা জী শ্লীতৃণ ৷ ইতিরাজ ় নিহণ্টঃ ৷৷

मृश्विका श्री दाशिका। ইতিরাজ-নির্ভ:।।

बश्वादे भ् जुन्दः। इंड्रगदः।। मश्रवही श्र् जुनदः। इंडिम्स द्वादवी।।

नश्रमाण्यः मू॰ जुमन्नः। ইভি রাজ-नियणः॥

स्था। जन्ना मधुद्रावाः वस्ति स्वयः। स्था। जन्ना जन्न छन् (जन्माः) स्था। जन्ना जन्न अपूर्वः स्व नास्तिः निज्ञा एताः॥ है जि दिज्ञान एत अपूर्वः । हिन् दिज्ञान एत अपूर्वा । स्वतापः॥ १ जन्म वा स्वर्गा । स्वर्गा । स्व विकास ॥

विकास की महीनम् जीउनकः

विकास की महीनम् जीउनकः

विकास का मुख्या विकास स्थापित स्थाप स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित

मध्यो जिश्वः शृ मध्यकं िका। नीकां विक्षीता इंडि क्लिनि डाया। छट-भयावः। मध्यवि र मध्यकं हैं। ० व्युत्रक्षी अवस्यकं है। द मध्यकं हा। ७ वहाकका १ वस्त्राना है। स्मार्थ स्वाः। मध्यक्। निश्चित्रक् । माह काशितुः। जिल्लान स्वानिक् । क्राञ्चः। भयोदः। स्कृष्। मूर्के-त्रद्वकः। इंडि द्वाकि विक्षित्रः।

मध्युणः शृष्ट्यद्वः। इक्यम्ब्रः। वि सञ्ज्ञा जी मध्याक्षण्या। वि खारक इक्टि कार्या स्था। नाष्ट्री भिज सञ्ज्ञा हिया को ज्ञास्की। स् वि न्यारता हिया को जातको स्वारता । यात्रा स्वार्थ श्राह्म के त्वा कराव्य विकास विभयावन है। स्वाह स्वत्र के स्वाह स्वाह । इक्टि

हार्मः पूर त्यक्षितः एकिया । एत्यावः पूर म्यक्षियः । विकि

भार्ति कि ।।

ৰধুশিগঃ বু^ট রক্তশোভাপ্তনবৃক্ষঃ। ইতনেহঃ/।৷

শধুশেষ জা । শক্থক । ইতি রাজ । নির্ঘণীঃ ।।

মঙ্গেশুণী জী মূর্বা।ইত্যমর:।। স্বন্ধাসা জী জীবন্তীবৃদ্ধ:।ইতি রাজনিঘটঃ॥

मधुष्ठीतः भू॰ मधुकवृक्तः। ইত্যারः॥ मधुमश्चः भू॰ कामाप्तदः। ইতি হলा-यूषः॥

मधूमाविशः भूः कागरम्यः। ইঙি विकाश्रक्षयः॥

मधुनिक्षकः तुः खारतित्या छम्। इंडिक्स दः। मधुमुक्तः काम्यस्यः। हो।

(कहिंद्र ।

मधुम्भनः कृष्ण जुमनः। इकि कर्ता-शतः ॥ जिक्कः। इकामन्रतिकायाः छत्रकः ॥ उमा त्रुट्शिख र्या । स्वतः सभूरेमकामा यमार म मधु-स्वतः सभूरेमकामा यमार म मधु-स्वतः सभूरेमकामा वर्षामा । स्वतः स्वतं मी द्विकः ।। मधु क्वीवक्ष मा-श्वीतः क्रक्यं मुजामा । ज्वा-स्वतः स्थारिकं म्राम्य । ज्वा-स्वतः स्थारिकं म्राम्य । ज्वा-स्वतः स्थारिकं म्राम्य । ज्वा-स्वतः स्थारिकं म्राम्य । ज्वा-स्वतः स्थारिकं म्राम्यः ।। म अव मधुमृत नः ॥ इं ि वृक्ष विवर्ष क्रिक्ष क्षम्र थए ३०० व्यथायः ॥ उत्र म्यात क्ष्म । महाविभाको मण्मात यः मात्र मधुमृत नः । विभाक्षो जगात यः मात्र मधुमृत नः । विभाक्षो जगात यः मात्र मधुमृत । विभाक्षो जित्र मण्य ज्ञा जित्र मण्य ज्ञा ज्ञा विभाव । विभाव विभाव । विभाव विभाव । विभा

নপুসুবঃ পু॰ মধ্কবৃক্ষ:।। মোরট-লতা। ইতিরাজনির্ঘট:।।

মধুসুবা জী মধুগঞ্চিকা। ইতি লটা ধর: ।। ধীবন্ধী। ইতি লম্চিল্মিকা ।। মূর্বা ।। হংসপদী। ইতি রাজ-নিঘণ্টা ।।

मशुज्याः शुः मध्कर्कः। ३७ करे। धरः॥

মধুষর: পু॰ কোকিল:। ইতি শদ্-রজাবলী।।

मधुरु। नु॰ विकुः। ইতি (इमहन्पुः॥ मधुक्तीतः পु॰ थब्ह् तत्कः। ইতি হারাবলী॥

मध्क॰ क्री यश्रीमध् । इंভि রাজ-निर्धिः।।

मध्कः भूः वृक्षविष्मयः। मङ्ज इंडि भोज इंडि गङ्गा इंडिह ভाষा। उৎপर्य्यायः। ७५भृद्धाः २ मधुक्रमः ०वानभुष्टः ८ मधुष्टीनः ৫

ः है है छ। मन् ।। मन् कः ७ मनुः १ मन् 'मधमुनः ।। इंजि कहाषतः॥ वयु-वृक्तः ३० कार्यमुद्धाः ३३ माष्यः ३२ । यम्। स्याः। मध्यक्त मीउक्। পিত দাহ শুনাপহত্ব। বাতলত্ব । बन्दरमाबद्धनः । वीर्याः भूष्टि विव क्रिन्द्रकः।। अम्। भूम्रखनाः। नधू बद्भाव्याद्भा कृराद्भा विभद्भा পিত্ত বিদাহ কারিব্রঞ্চ। অস্য কলগুণাঃ। বাতাম্য পিত্ত নাশি षः !। ट्या नश्चव (गव (गठ० । ইতি রাজনিঘণ্ট;।। 🗱।। অপিচ। মধু দপুল্ল মধুর শীতল গুৰু বৃং হণাবল শুক করা প্রোক্তাবাত পিত্ত বিনাশন ।৷ ফল শীত গুৰু ষাদ শুকল• বাত পিভনু**ে। অহ**-দ্যু হন্তি ত্লাসু দাহ খাস ক্ত ক্ষবান্।। ইতি ভাবপুকাশঃ।। 🛠 ॥ অপরঞ্চ। মধ্ক পুয়ঞ্চাজ্দ্য ত র্পণ বৃংহণ পরে। নধ্কস্য ফল। পত্ব বাত পিত্ত পুণাশন ।। তদ্মজ্জ खना उरक्न छन वर। यथा। यन्। यम् कल्लोन्य वीर्याः खवि या-मृ**न्। ७** म् ेरिनात् वीर्यात सङ्काः न मिलिकिकिटमेर ॥ उत्र प्रभूषाः। মপুক রক্তিপিডয় বুণ শোধন রোলা

भग•। ইতি द्राक्षत्र हा अः।। पुत्रः ৮ । हेडि चक्तवावनी ॥ | मध्हिरे क्री मव्यन्ति है। याम हैडि **ভाষा। उ**९ भर्यायः।\मिक्षक•२ া ইত্যমরঃ॥ শিক্থক• ০ শিক্থ• 8। ইতি **म**स्त्रज्ञावली ॥ মধ্থিত ক্লী নিক্থক। ইভি রাস-निर्घकः॥ मध्यमवः भ् हिजीभूर्निमा । इंडि

किंगिथ्रः ॥ मध्भन्न क्री **मध्**दा। ইভি ছেন*চ*न्द्रः মধ্পন্ন: পু॰ মথুরা। ইতি জটাধর: মধ্লঃ পৃ• জলজ গিরিজ নথ্কব্**ফৌ**। इंडि किंग्यतः ।ो

मध्नकः भू॰ जनकमध्कर्कः। उद भर्य) यः । नीर्यभन्नकः २ । हेि किंग्यतः ॥ भीतमाकः २ मथ्यः ८ बन्नभगकः ৫। ইতি রব্ধালা ॥ স্যাম্বধ্কে তু জলজে গিরিজেংপি মধ্লক:। ইতি শদরত্বাবলী।। व्यम् ७ थनाः। नष्क ७ । जुन्ताः ॥ মধুররসং। ইতি হেনচন্দু:॥ তদ্ব-তি ত্রি॥

मध्निका छी मुर्वा। ইত্যের: 📊 🧵 नश्ली जी जी उनके ।। नशुक्क ही ॥ আনু:। ইতি রাজনির্যটিঃ।। ন্ধ্যু লী দশাস্ত্যসুংখ্যা শতসাগর

म·श्ता इंडि(इन्हन्द्रः। अवगान॰

ा उद्भार्ग्यः । विद्रानः २ । इंडि बिकाल्यम्बः ॥ नम्द्र मीयुद्धाः ভবেতরজ্বুক নৃত্য विষयक গনন विष्मयः । ইতি ভরতः ॥ स्यविः শেষः । ইতি मधुः ॥ मधुमातृ्खिः । ইতি সাঞ্জः ॥ यथा । विस्त्रित्रं कः ত मधुः ভज्जु ।। यथा । वस्त्रित्रं क्रमाद्। हेर्जुमदः ॥

সধ্যঃ পৃ• ক্লী দেহসধ্যভাগ:। মারা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়:। মধ্যম• ২ অবলম়• ৩। ইত্যমরঃ।। বিলম়• ৪। ইতি মেদিনী ::

भशः भू पुरुष्ठे महार प्रविक्षियः। न ह अस्पान का उत्पन्धाः वर्षतं मः स्वातः तस् अक्ष्यपुरुः । ेडि क्यां लियः॥

मध्यः जि निर्माशः ॥ यहतः ॥ अध्यः ।
। इठि भवाद्मावना ॥ नध्यः ।
यथा । উত্তমাধ্য मध्यानि वृद्धाः
कार्यमानि भार्थितः । উত্তমাধ্য मस्वर्म कुन्यत्व निर्माष्ठरणः ॥ इठि

ন্ধ কেঃ প্^{*} আ**গুর্ক:। ইতি শব** ভাগুক:।।

নধ্য নি নধ্য । নধ্য । ইতি নিজ্ঞান্তকোনুধী ॥ স্যাদেঃ স্থানে ভসাদযোয়ে আদেশা তেয়া নদ खद् मवायद् नििं शुक्तः । स्वन मञः मञः यागञः कोञ्कूछः । ইত্যজাব্যব্বাৎটি লোগः। ইভি দুর্গাদাসः ॥

मध्राप्तणः शृ॰ प्रणिविष्णवः। छरशर्यायः। नथ्रमः २। इज्रमः ॥
जम्र भीमा यथा। हिनविष्मग्रया
स्वरु॰ यः शुपिनणनाप्ति। शुज्राप्तव भूगागाह मध्रप्रणः शुकीविजः॥ इजि मन् स्विः॥ विनणन॰ जीर्थाज्यः। न॰ श्रापि स्वजीजि कम् जि म्हापि स्वजीजि कम् जि मह्मापि स्वजीजि क्माजि मह्मापि स्वजीजि क्माजि स्वजी हि ज्ञीकाया।
ज्ञावः।

नश्रातमाः वि नश्रात्तास्वः । यथा । भकारेक्य मः ममका मध्र-एम्भा जनास्त्रियः । ইতি वामनभू-द्वार्ति ३० व्यक्षायः ॥

सक्षानितः ल्युः वस्कृतव्कः। ই उ

নধ্যপঞ্চন্লক নী পঞ্চন্লপাচন-বিশেষ: । যথা । বলা পুনর্ন বৈর-গু স্প্পণী ছিয়েন তু । এ হত্ত গো-জিতেনৈব স্যান্মধ্য পঞ্চন্লক ।। ইতি রাজনির্ঘণী: ।। मध्रम

ন্ধ্যন লী পু দেহ্মধ্যভাগ:। ইভ্যমর:॥

मध्यः शुः जश्यद्रागाः मध्यः शक्षम ৰরঃ। ইত্যনরঃ।। গানশান্ত্রমতে চতৃর্থ ধর:। সতু ক্রৌঞ্ধরত্ল্য:। चार्त्राहात्र शानः वकः व्याकत्र मण्ड व्यद्भः। व्ययः विभुवर्गः। वा न्। नःङ्गा चहतः। चर्था८ हजुः ৰর মিলিতঃ। তস্য তানা শুতু বি শতিঃ তেষা পুত্যেক দ্বাত্তিংশ চ্ছেদেন ৭৬৮ তানা ভবন্তি।ইতি সংগীতশাস্ত্র•॥ উপপতিভেদঃ। **७**म। न्यायाः भुकाल यः भुकाभ गन्द्रागः वा न भुक्रयः তি চেইনা মনোভাব গৃহাতি স म्ध्रमः। यथा। याम्र यम्रि शामा विद्धिंग शिष्तः वारमान शीनः মচো নেত্রে শোণ সরোত্রকান্তি ক্ हित्र कृष्णि क्रग श्रीया । माना-याः कतरामित्रम् भकतिकात्रसः ऋः हास्त्राह्मा ध्रभः व्यक्ष्म सात्र-नीयू ज्ञानाः भायर्जना मृ**ण्डा** ॥ ইতি রসমঞ্জরী।। মধ্যদেশ:।ইত্য মর: ॥ গুহাণা সাম্যক সংজ্ঞা বিশেষ: । যথা দ্যুচর চক্রহতো দিন সঞ্ধ: কৃহ হতো ভগণাদি কল পুহঃ। দশশিরঃ পুর নধ্যন। **মধ্য**ম

ভাস্করে ক্ষিতিজ স্মিথিগে স্তি মধ্যন: ৷৷ ইতি সিদ্ধান্তশিরোনণিঃ ৷৷ মৃগভেদ: ৷৷ রাগভেদ: ৷ ইতি ধ্রণি: ৷৷

नथानः वि नथाज्यः। ইতি मिनी
।। उ९ भर्यायः। नाथान २ नथानीयः २ नाथान्तिनः ८। ইতি हिनहन्तः ॥

मध्यमभाखवः भू व्यक्तः। हेडि कठावदः॥

मध्याताकः पुः मृथिवी । ইভি विकाल्यामयः ॥

নধ্যমভ্তক: পু॰ কৃনীবসভ্তক:।
ক্ষাণ ইতি ভাষা। যথা। উত্তমশ্চাযুধীযো, ২ত্র নধ্যমন্ত কৃষীকশ:। অধ্যো ভারবাছী স্যাদিত্যেষ দ্রিবিধো ভ্তঃ॥ ইতি মিতাক্ষরা॥

नियान निर्वाश्वः श्रु खीन गुरुगार्थाः विवान विराणकः । त्रज्ञ गक्त नालाः वज्ञ ज्ञानि (পुत्र निर्वाशः । यथा । श्रुथन नारुगानि म् अनुष्ठा श्रुथं । व्या । श्रुथन नारुगानि म् अनुष्ठा विवृष्ठः । विविधः ज्य नार्था ज्ञानि विवृष्ठः । विविधः ज्य नार्था ज्ञानि विविधः । व्यामार्था विविधः । विविधः । व्यामार्था विविधः । व

ख्रा । (भुष्यः गञ्ज नाग्रानाः युन ।
ज्या वाममाः । भुलाङ्क्षाः ।
भारेन मंद्रमः मगुराक् उः॥ महाः
मनः विविद्धिष् भृतस्य मभाभूगः
। (क्नार्किन गृहरेम्हव मम्रक् मः
गुह्नः मृठः॥ हेठि नि ठाक्नतायाः
खीमः गुह्नभुक्तनः॥

गथानाहनः की वनहिन्दिनवानः
भयानातिनाः ज्ञास्कालान
निक्तिनः महना कियनाः कर्या।
यथा। कन मृत्नाहकाहीनाः क्षाः
व्यानकानाः ह। ज्ञास्कालानः क्षाः
वानकानाः प्रथान नाहनः ग्राञः॥
वानः भया शानानाः ग्राणकतः
नन् ह। এতে देन्द्र भुकादा मथाः
मः नाहनः ग्राञः॥ हि निजाः
क्षाः।।

मध्यमाहमः श्रुष्ट प्रखितिष्यः।

मञ्जू भक्षणज्ञभग त्रभः। यथा। भः

गानाः (वणाज्ञ मार्ष्यं भ्रुथमः मारुः

मः मृजः। मध्यमः भक्ष विष्क्रमः

मङ्गूरञ्ज (ठाड्यः॥ (लाजाः मः

स्मुः प्रख्य (माङ्गः भृतंय मारुः

मः। ज्याषा नय्यमे प्रखी विष्तु मारुः

मः। ज्याषा नय्यमे प्रखी विन्

जाद शृतं ठजूर्थनः॥ इति मान्यः

मध्या छो पृद्धेन ज्ञानान्नी॥ कर्निना

मध्या छो पृद्धेन ज्ञानान्नी॥ कर्निना

मध्यानिक। खी मृद्धेत जकानाती। इंडि शक्त ज्ञावकी।। मध्यानीय॰ जि सध्या॰। इंडि इन-हम्मः।।

িক (এই ইয়**র্থপ গ্রিন্**ণি*) এই বিষ

্ত লাক্ষ্য **স্ক্রাই:** ত্রান্থ স্থান্ত স্থান্ত

নধ লোকঃ পু॰ পৃথিবী। মত্যলোক ইতি হাবং । বন্ধ্যমাণ শবः । প্দ শনাং ।।

ম্ব্যক্ষেশঃ পু॰ রাজা। ইভিছেন-চন্দুঃ ॥

म उष्टः जि स्वरुष्टायी। जः नर्यं ।
। निरुष्ठः २। ইতি जिका छ लियः।।
छ ज्यलक हीनः। यथा। मुद्दा यूष्का
म उपः त्रायः स्वरुषः मह ना छोदः
। जोशं जित्यक वं आहत स्वरुष्टः
नुग्रहो किन्।। ইতি जी जागवर्छ
२० स्वरुष्ट १५ लायु ।। यार्था वि
द्वार्थन न्रत्रार्थ ये विद्वार्थ । यार्थ वि
द्वार्थन न्रत्रार्थ ये विद्वार्थ । यार्थ न ।
वार्थन या प्रद्याः नत्र की य कार्य ।
सार्थ जा व्याप्त वा स्वरुष्ट । नत्र की गान्य वा स्वरुष्ट । नत्र विद्वार्थ । यार्थ वि स्वर्थ । यार्थ वा स्वर्थ । विद्वार्थ । विद्वार्थ । सार्थ वा स्वरुष्ट । विद्वार्थ । विद्वार्थ । सार्थ वा स्वरुष्ट । विद्वार्थ । विद्व

भधाउदा की किंदिन शायशाञ्चा की मित्र मित्र

नश्राहः श्रुः दिशविङ्कतिनग्धः जागः। मह प्रमाखा छाए शहर प्रमा द्वार शहर प्रमा कर्षा शहर प्रमा प्रकार । हे जि मुज्जूकः जागदा । कर्षा । भक्ष्य विङ्क पिन ज्ञी विङ्क पिन ज्ञी विङ्का है। मिल्र विङ्का है जा विश्व कर विषय विषय विषय विश्व कर विषय विषय विषय विषय विश्व विश्

भिव है।। न 🖂 ये (मवशास्त्रव एफ) গেবু সরিং দু চ। মুন প্রনারের া মিত্যং গান্ত পুলুবণেধু হয়। পরকীয निशास्य न माशदि केमाइन। शक পিণ্ডান্ সমুজ্ত্য স্থোদা সম্ভবে भुनः ॥ मृरेषक्या भितः क्वालाः वा ভ্যা• নাভে স্তথোপরি। সবশ্চ ভি **সৃভিঃ** कार्या **भारती य**िष्ठ खे. थव ह ॥ 🗠 मृखिका ह अमुम्हिश वाष्ट्रा मनक मा-নি হা। গোম্বন্য পুমাণন্তত্তেনাঞ্ লেপণেত্ত হঃ ॥ সেপবিত্বাথ তীরস্থ रु ब्रिक्टिन वज्र जः। भूकान्याहम्। विधिवत्त कः नागा नगाहिकः ॥ অভিনন্ত্ৰ্য জল• নত্ৰৈ শুৱি*ৰৈ* ৰ্বা करिः भूटिः। ভावभू उत्रव्हः श्रायम् देव विष्णु गव।यः॥ श्रायश নারাযণো ভূতা ভা এবাস্যায়ন• পুন: ৷ ভনায়ায়ায়ণ দেব স্থান कारण स्वात्र बुवः ॥ (भूकः) भाक्षात गारिकाः वि निरस्क्षिनागय । शुनः भून तथाहाराचारखनारनन मञ বিং ॥ अंक्रफत्रमि ভূতেমু গুহামাণ विश्वरं मुगः। दः यक्त सुः वयहे কার আশো জ্যো হী রসো ৎমৃত ।। षितात्रधा जिंतलारमा९ द्याङ्खि পুণবাল্বভা। সাবি ी বা জপেদি षाः ख्या हिनावन्यंनः ॥ उउः म

याजन वर्गानालानिह गरा छ वः। ইरगाशः श्वर्ठ व्याकृति স্তথ্যের হয়। ততে। হাতনজ্ঞাত জ্বীর্থ মাপোহিষ্ঠানি ন্ত্রক:। অভজলে ত্রিরাবর্ত্য সর্বলাপাৎ পুমৃত্যতে ॥ व्यथः शाली समाना बहा देव मा-জনে কৃতে । বিৰয়স্য মূদ্ধি ততোষ मुड्डार**ड স**र्देशाडेरिकः ॥ वयाच्यान्यः ক স্রাট্ সর্পাপাপনোদ্ম:। তথা-यगर्गः मृङः मग्रंभाभागानापनः॥ वार्थाविङ्कति हिड्ड नृष्ट्वि भूमा-वि जञ्जिनि । शुक्किश्वाता हयत्मर-व पतृन्तर देवस्टिकः शतः ॥ छेतृ्डरः চিত্রণ দেবান। নিত্যা হিভি রুমন্যবীঃ । হংল: শুটিষনেতেন সাগিত্য। চ विश्वष इः ॥ व्यत्मान्य विकित्त मं-खिः मोदिः भाग भूगामदिनः। मा-বিত্রী বৈ জপেৎ পশ্চাজ্ঞপ বজঃ স বৈ মৃতঃ।। বিবিধানি পবিত্রাণি **७ इ** विन्या उरेश्व ह। मा छ क्षुिय नथः র্বশির: সৌরন্ত্রাণ্চ শক্তিত:।। शुक्क्रवर् मनामीनः ज्ञाम शु-द्मथः भृतिः । जिष्ठः भविभागाणा २कः जाभाः ज्यार मनाविजः॥ म्वाजित्कम् । क न्युक शुवकीय मः मूछरेतः। कछ।। यक्रमाना वी উত্তরাদুভ্না মৃতা।। জপকালে न

ভাষেত मान्यानि (भुक्तर्यपूर्वः । नः कम्भारयहित्राशीवानस्डारेमव शुका-শ্যেৎ ॥ গুহুকা রাক্ষ্ সাঃ সিদ্ধা হরন্তি পুসভম্ভবাৎ। একান্তেযু শু-ভে (দশে তমাজ্জপ্য সনাচরে<u>e।।</u> हु छाला (भोहि शक्ति) न् मृश्वाहम् । পুন র্জাপে । তৈরেব ভাষণ কৃত্বা नाज्। हिन करभष्यः ॥ जाहमा भु-याजा निजा कार्शमण्डि मर्मान । সৌরান্ মজ্ঞান্ শক্তিতো বৈ পা-वभानीस कामजः ॥ यमि मा 🌊 क्रि-মবাসো বৈ বাবিমধ্যগতো জপেৎ। অন্যথা ত শ্চৌ ভূন্যা দৰ্ভেষু স্-नगरिजः ॥ भुपकिषः नगात्जा নমস্ত্রা ততঃ ক্ষিতৌ। আচম্য চ यथा नाञ्चः नज्जा साव्याय माहरत् ॥ ততঃ সন্তর্পযেদেবান্ধীন পিতৃগ-गान् क्रमार् । जानारवाक्रात मूहाय नमा २एउ उर्भयामि ह ॥ एक्वान् वृ ज्ञश्यवीः टेम्क्य उर्शायमञ्जालतिकः। जिलामरेकः शिकृन् छक्ता यग् ত্রোক্ত বিধান**তঃ** ॥ অন্বারন্ধেন স বেরন পাণিনা দক্ষিণেন চ। দেবধী • खर्भायक्षीयानुषकाञ्ज**लाञ्डः शि**ठ्न् ।। বজ্ঞোপৰীতী দেবানা॰ নিৰীতী খবি ভপণ । পুচীনাবীতী পৈত্ৰের তু ষেন তীর্থেন ভাবতঃ ॥ নাপীড্য

স্থান বন্ধ বৈ সমাচন্য চ বাহুতঃ : स्त्रि में द्वि तर्हराप्यवान् भूदेनः भोद त्रथाम्बृज्धिः ॥ तुक्तानः भक्ततः मूर्यप्र তথৈব মধুসুদন । অন্যা • • চাভি-भ जात्म् वान् ७ छ। हा का श्राम पु तः ॥ शुरुरप्राष्ट्राथ शृञ्जानि **স্**কেন পক্ষেণ তু। আপো বা দেবতা: স-র্বা স্তেন সন্যক্ সন্ছিতাং ॥ ননস্থা-त्त्र भृञ्जानि विन्यासिष्ट भृथक् भृथ-क्। न विकृतावायमा श्रूगार विम्राउ कर्य रेविषकः॥ उद्यापनापि मध्यासः निज्य मात्राथ्यम्बति ॥ जिव्हरका রিতি সজেণ স্কেন পুক্ষেণ্ ভুঁ॥ নৈতাত্যা সদুশো সুভো বেদৈযুক্ত **क्ट**बुर्वात्र । विस्तितस्य समाज्यान• বিশাবমল তেজসি ৷৷ তদাল্মা ভশ্ম-নাঃ শান্ত ভাদ্ধেশ রিতি মজতঃ! অথবাদেব মীশান ভগবন্ত সনা-**७**न• ॥ ञात्राध्यमञ्हात्व• ভाव পূতো মহেশর । নজেণ কদুগাযত্যা शुव्यवनाथ वा शुनः ॥ द्वेनात्न नाथ বা কদুৈ জায়কেন সমাহিতঃ। পুষ্নৈঃ পত্রৈ রথান্ডিশ্চ চল্দনাদ্যৈ মহে ব-র• ॥ অথোনদঃ শিবাবেতি মন্ত্রেণা-নেন যোজদেখা নন্ফুর্গ্যাল্লহাদেব मृष्ठ शत्र विशिषद्या नित्वस्यीक স্বাত্মনে যে ব্যক্ষণ নিভীশরে ।

अरकिन विकः अर्गाट शक वाकन रिव जन्मन् ।। ध्राया**ङः (न**वमी**मानः** द्वान मन्। गञ• भिव•। अथावरनाः ক্ষেদ্ক ইংসঃ শ্চিষ্দিত্যা।। व्यर्गाट भक्ष महायक्तान् गृहः क्वा পনাহিত:। দেব্যক্ত পিত্যক্ত श्वियञ्जः उरिथव छ। नान्याः वुका यद्धक शक्षयद्धान् भ्रकः ।। यमि न्या छ भूगारबीक् वृक्षयछः कृत्वा न हि। कृ इ। भनूष । यद्भः देव उठः अल्ह्याय माठलक् ॥ **अल्वः भन्छिन**-ে একে ভ্রাক্তান্ত এব বা। স मानविक असीनः **ज्ञाना**शिः ग्रान हि 🗻 .. 🔫 व 🖫 लोकिकाक्षी वा कल ভূर्যा मथाभिना। रेनचरहन निभिन्छ रेव (ह्वयक्कः मरेव म्राजः॥ यि ना द्यो किएक भन्न ७ ७। १ म তত্ৰ হ্ৰতে। শালাগ্ৰে তত্ৰ দেবান• বিধি রেষ সনাতনঃ ৷৷ দেবেভ্যস্ত ज्ञान्तरप्राथ **(শ**यान् ভ्**ञ्**वनि• **रु** রে । ভুরুষজ্ঞ: স বৈ জেযো ভৃতি-ে গর্বেছিনাং॥ শ্বভ্য**ন্চ শ্বলচেভ্য**় শ্চ বযোভ্যো নিভ্যমেব চু । দদ্যা-ভূনৌ বলি ত্বন্ধ পদ্ধিভ্যো হথ विकाउनः ॥ मान् हानम् न्य व्यव्याप्ति । सञ्च्या अधिक विश्व । सञ्च्या उद्य স্বব• নিত্য• সায়• পূতে বিধীয়তে।। 🏻

একন্ত ভোজযেদ্বিপু• পিতৃনুদ্দিশ্য স-ত্তন•1 অথবায• যথাশক্তি কিঞ্চিদয়• সনাহিতঃ:৷বেদতত্বাথ বিদুষে দ্বিজা-रेयरवाभभानस्य । भूक्रस्यम् जिथि॰ निज्यः नगरमा पहरियोद्धिकः ॥ गरनाः বাক্কর্মভি: শান্ত নাগত• স্বগৃহস্ত-ত । হন্ত দার মথাগু বা ভিক্ষা। वा निकल्ज विकः॥ मन्त्रमिञ्जियय নিত্য বৃদ্ধা ত পরনেশ্ব। ভিক্ষা भार ग्राम गाव गगुः महा उह उख १९॥ **भुद्रलः इंड**कात्रञ्ज उहाउर्छन् मू-**ह्याद्यादाह माब** काल देव পুতীক্ষ্যো হৃতিথিঃ স্বয়ণা অভ্যা-গতান্ যথা শক্তি পূজ্যেদতিথি यथा। ভिक्षाः देव ভिक्षदंव मन्त्राः দ্বিধিবদ্বক্রচারিণে।। দদ্যাদ্ম থথা শক্তি ত্বৰ্থিভ্যো লোভৰজ্জিতঃ। সর্বেষা মপ্যলাভে তু অন্ন• গোভ্যো नित्वप्रत्य ॥ जुक्षी ज वक्कु जिः नार्षः षिजः **পঞ্ মহা**यक्তान् षिष्ठा उनाः ॥ ভূঞ্জীত চেৎসুন্ঢান্মা তির্দ্যয়া-নি॰ স গছতি। বেদা ভ্যাসো হর্ত্ত শক্ত্যা মহাযক্ত কিয়াক্রনাঃ ॥ না শযন্ত্যাশ পাপানি দেবনোমূর্চন ত্ঃ था। या भाशम्यवानम्यानकृषा (मवजाईन ।। ज्रुड्स म याजि नत्रकान्

শ্করেম্বভিজাযতে। তমা**ৎ সর্ব** ∥ अ्वरङ्गन कृद्धा कर्माणि वि विकः ॥ जुक्षी उ सक्तरेनः मार्कः म याजि भ রমাণ পতিণ। ইতি কৌমে উপরি ভাগে ১৭ অধ্যাব: ॥ #॥ অত্ৰ ভো জন বিধি র্ভোজনশব্দে দুষ্টব্যঃ ॥ मधुनः भु• मधुरातः। ইতি मद विमुका ॥ मधानू क्ली म्नवित्मयः। भोवान् ইতি ভাষ।। यम् छनाः। ब्रक् शिल नाभिष्। ७कष्। यामृष्। भीठद्व•। खन्य भूक कात्रिद्ध । ইতি রাজবল্পভ:॥ मधानुक क्री कन्द्रविष्णयः। (मो আলু ইতি ভাষা। ইতি শব-**ठिन्दिका** ॥ मधु । त्रवः भू । मध् कभू ख्रक् उम १५ । **७८. भर्य**) यः । माधवकः २ मध् ० भाषीक । इ जा नहा ।। মধ্বাসবনিকঃ পু॰ শৌগুক:। ইতি नद्रभावा ॥

निष्माणा।।

निष्माणा।।

निष्माणा।।

निष्माणा के निष्म

भवु वनी उन्न ठी ठार्थः । इंडि तमानाथः। इंडि पूर्णापामः ॥ भन पड वार्ष। इंडि पूर्णापामः ॥ भन पडे ड वार्ष। इंडि कविक्ल्लुक्मः क्मः॥ यड मन्द्राउ। छे जन्छ। इंडि पूर्णापामः॥ भन उक श्रुडो। इंडि कविक्लुक्मः ॥ पडारनाथशः भनयि । इंडि पूर्णापामः॥ भनः भू खोमाःभो। इंडि भद्द-हिन्दुका॥ भनः की ज्ञारनिनुय्विभिकः। छुं वृक्षीनियाणः युगः भ्रश्नः क्षिक्षः

पनः क्री ख्वानिनुषिति स्वः । छब् वृद्धीनिष्णागाः यशाः भुशानः क्रीकृष्यः विज्विष्ठ । यथा। इनिष्णागाः मनः काम्य ज्ञानामित्र एठना। इडि जगद्गीजा॥ उह गर्छस्मा मश्रमः मामि काष्ठ । इठि मूथ्रवायः ॥ उट्भर्यायः। हिन्छः २एठः २ स्वः ८ याउः ८ स्ट ५ मानमः १। इन् मद्रकावनी ॥ जिन्हे । मृत्ना म-शन् मिन वृद्धाः भूष्ठ । विजित्किव मानि वृद्धाः मिष्ट हिन्हिन्हिव मानिक्ष मिष्ठ । मिष्ठ । भर्याय वा-एकाः सद्या मनमः भिन्नकी विज्ञाः ।। इन्हिन्हा नान्न जिन्नक्ष्यः॥ ॥।

न्यायमाञ्च अभा स्थाः । शत्रुः । আগরে 🖓 । সংখ্যা । পরিমিতি: । ৰ্ধ্রহণ। সংখ্যাগ:। বিভাগ:।॥ : २१ % H श्राना पुष्कानि यथा। भूथः । पू:थः। ইहा। (इयः। मजिः। यञ्ज=ह ॥ इनः भव्यान् अक्षाः निद्याम्न मट्ड वायवीय भन्नमागुक्तभः। यथा। পরাপরত্ব• সংখ্যাদ্যাঃ পঞ্চ বেগশ্চ सान्दन्। सद्मागुष्टः मूथः पृश्व नि हा खाला द्वानिः कृतिः ॥ व्यायोग शरा ब्छानाने(छम्। पूर्व निरह-সন্ত।ইতি দেখাপরিছেদঃ॥ জন্য ব্যুক্ত জিলু ঘনোযোগঃ কার্মণ কর্মা ব্রচো বেল**গা মনসা** জ্ঞান কারণণ। ইত্যপি তবৈৰ ॥#॥ **७**म् नव खना यथा। रेश्य्या **११**न र्व्यक्तिक विनर्भः कन्नना क्रमा। यर ञहाभुं जा दिव सनत्या नव देव खनाः ॥ ইতি নোক্ষধর্মঃ॥ অস্য ব্যাথ্যা। ধৈর্য্য ১ উপপত্তিঃ উহাপোহকৌ-শল ২ ব্যুক্তিঃ স্মরণ ৩ বিসর্গঃ বি পরীতদর্গোন্ড্রান্তি: ৪ কল্পনা মনো-व्रथत्बिः ৫ क्या ७ मट रेववाग्रा-দি ৭ অসৎ রাগদ্বোদি ৮ আশ্তা অস্থিরত্ব• ৯। ইতি তটী আঞ্চন जन्र ठा जिंद्युः गया । च ना दृष्टि त्रहेकात निष्ठ कत्रपमास्यः। नः

भारया निकारया शर्बः स्वत्रगः विषया অমী। ইতি বেদাম্ব:।। 🗱।। তস্য व्यक्षाचा द्वारि यथा। व्यक्षाचा मन ইত্যাহু: পঞ্ভূতাত্ম ধারকণ অধি ভূতঞ্চ সংকল্প শ্চন্দুমা শ্চাধিনৈ বতং ॥ ইতি মহাভারতে আখমেধিক-পर्द ॥ 🗱 ॥ ७ म ४ म् ४ १ १ थ।। व्यः निक्षा नम्भाऽक छान छ नः মৃত ॥ ইতি বুদ্ধবৈবর্ত্তে পুকৃতিখ-८७ २० व्यक्तायः ॥ ॥ ।। जम् भाः मछ। भूषिछ। नुनाभकानि यथा। करानाः इत्यः नत्रः नूद्राकः वष्टः (ननरेव। निरंद। क्वांव कन्याया॰ দৌহিত্তে বান্ধবেপি চ॥পূত্ৰে পৌ• ত্তে চ বচসি পুতাপে যশসি শিু্যাণ १ वृष्को वाद्रिनि विष्ठायाः ज्ञायरञ क्रमयः नृगाः ॥ इंडि तुत्रदिवदर्ख 🗐 क्षकार्या ७ 🤰 जार्गयः ॥ 🕸 ॥ তস্য বন্ধ নোক্ষহেতৃত্ব যথা। মন এব মনুষ্যাণা কারণ বন্ধ মোক্ষ-(याः। वक्षमा विषयामिक मुक्क নিবিষয় তথা।। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ७ ज॰ म १ अध्यायः ॥ यनशानाः वि भरमाञ्चः े विदि का अलावः ॥ न्तः भिनः भः

हिस्स सन्दर्भन एक दक्षित एक

। इंडायत हीकाया जतडः ॥ मनः শिना जी ब्रक्त्वर्गवाकृतिः भवः। नक्त इं ि छाया। नाज् नश्ची वीर्यंऽ॰ । इंजिरेवम्यकः।। उद्भवतायः। स्रम **हो २ नता** छ। ७ नाम जिल्लिका <u>८</u>। इंडामदः॥ तिभानी ६ निना ५। **ইতি র**ব্বনালা।। মনোহ্বা ৭ নে<u>প</u>া निका ४ नता एस। २ कन्या निका ३० - রোগশিলা ১১। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। (गाना)२ मित्त्रोविधः) ३ । इंडि ভাবপুকाणः॥ অস্যা छनाः। करे ष् । निभाव । (नथनष् । विष ज् তাবেশ ভযোগাদ নাশিত্ব। ব শ কোরি বৃঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। অপিচ। তিক্ত হু॰। কফ নাশিত্ব॰। मातक दुः। ए पि काति दुः। अष्ठ कुः র পাও কাস খাস নাশিত্ব। শুক্র নঙ্গল ভারিত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভঃ ॥ यन्। मनःभिना एक ईन्। माताका (नयनी कर्टू: 1 जिक्रा গ্রিকা বিষ খাস কাস ভূত কফাসু न् । मनः भिना मन्द्रवन करताछि গ্রন্থ পুরু শোধন মন্তরেণ। মলা-नुवद्धः किल मृद्धाद्याधः मणकंतः ल्ह् वरकः श्वंग्राट । इति ভाव-श्रीकानः भ ন্ন লী কুদ্ধিঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

गनना जी (मवीविष्णयः। उर भर्गा-यः। कष्मः २ मननारम्वी ० ियङ्बी ৪। ইতি জটাধর:।। অন্যা: পুণান মস্ত্রঃ। আন্তীকস্য মূনে মাতা ভ-शिनी बामूरक खवा। बद्र काक मू-নে:পত্নী ননসাদেবি নগোস্ত তে॥ ইতি তস্যাঃ প্জাপদ্ধতিঃ॥ তস্যা নানা। বুড়ে পত্তি র্যথা। শ্রীনারায়ণ উবাচ। শুণতা মনসাগ্রান্ধ ন্ৎ শু,ত॰ ধর্মা বক্তু তঃ। কন্যা সাচ ভগব-তী কশ্যপস্য চ মানসী।। তেনেয॰ मनमारमवी मनमा क्षार मीदाजि। भनना ध्राया या वा नेत्र ना जाने মীশ্বরী।। তেন সা মনসাদেবী যো-গেন তেন দীব্যতি। আত্মারামা **চ मा (**पवी दिक्कवी मिश्वत्याणिनी!। बियूगक छन्न खक्षा क्कमा अंत्रमा-वानः। जत्र काक नित्री तथ म्री स्ट ক্ষণ নীশ্বঃ। গোপীপতি নাম ह কে জরৎকাৰু রি**তি** পুভঃ। বাঞ্চি जकराती जोमः क्षया एक्षानि धिः॥ প्रवाक कात्रवामान हकात्रह शृनः भूनः। यशि इ नागलास्य ह পৃথিব্যা॰ বৃদ্ধলাকত: ॥ ভূপ॰ জ-গৎসুপৌরী সাসুদ্রী চ মনেছেরা । জগদৌরীতি বিখ্যাতা তেন সং প্জিতা সতী।। শিবশিষ্যা চ সা

तरे उन्हें निविज्ञ। विष् क्रकाठीर मध्येष्ठकवी (जन नात्रम्।। न्यानाः भाग नकिवी यस्त जत्म-क्षयम् । नात्मयत्रीजि विथ्राजा সা নাগ ভগিনী তি চ ॥ বিষ **স হ**-্ ভূমিশা সা তেন বিবহরীতি সা। াসিক্ষা যোগা ছৱাৎ পাপ তেনাতি किक्सवाधिनी ।। महाद्वानक शा-शास्त्रभाष्ट्रभावनी श्रवाः। गर्शः জ্ঞান যুতাং ক্রঞ্জে পুরদন্তি মনীবিণঃ ৷৷ আজীকৰ্য হ্নীন্দুৰ্য্য মাতা সাচ जयविनः । यो धीक्रमाञा विश्राजा জাতনু নপুভিষ্ঠিতা ॥ প্রিয়া মুনে क्रंबरक्रवा व नीन्तुम्र महाज्ञनः । स्यानिस्या विश्वभूकात्रात्र कद्गद्भाकः श्रिया छाङ ॥ 🕾 ॥ **७ नत्मा मनमा**टेय ্জর**্**কাক জন**ন্নৌরী মনসা সিদ্ধ**া (भागिनी । विक्वी नागङ्गिनी रे**ण**ः বী নাগোৱী ভথা।। **জরৎকাৰু পি** ৰাভীক নাভা বিষহরীতি চ। মহা-জ্ঞানগুত চৈত সা দেবী বিশ্বপ্রিতা श कारते गडांति नामानि भूजाकात्व-हयः भारते । जम्र नागज्य नास्डि তস্য বংশান্ডবস্য চ॥ নাপভীতে ह भ्यत्म नार्श्वाख ह मनिस्त्र । ना-শক্ষতে নহাবুৰ্গে নাগবেপ্টি চ বিশুছে ॥ ३५. (अव. भावता ज् मूह्याली

নাত্র সংশয:। নিভ্যং পঠেন্ম স্ত দৃষ্ট্য नागवर्गः भवाग्यः।। मनवक्र कार्भ নৈব স্তোত্র সিদ্ধি ভবেমূণা । স্তোত্র সিদ্ধি ভবেন্দ্ৰস্য স বিষ ভোক্ৰী-শবঃ।। নাগৌঘ ভূষণ কৃত্বা স ভবে-मागवार्नः। नागात्राना नागउत्ता মহাসিদ্ধো ভবেমর:।। ইতি বুক্ষ-বৈবর্ত্তে নহাপুরাণে পুকৃতিখণ্ডে না-রায়ণ নারদীয়ে মনসোপাখ্যানে ন-নসা স্তোত্রণনান দ্বিতত্ত্বারিণ্শত্তনো-२धायः ॥ 🗱 ॥ जन्ताः शृङ्गं सञ्जा-দি যথা। জ্বীনারাখণ উবাচ। পূজা বিধান স্তোত্রঞ্জ শুনতা মূনিপুঞ্জ ব । यहानक मामरतामाक (प्रती भृष्ट) বিধানক ৷৷ শ্বেত চম্পাক বৰ্ণাভা রত্ন ভূষণ ভূষিতা। বিহ্না শৃদ্ধা শু-কাধানা॰ নাগযজ্ঞোপবীতিনী॰।। गहाड्यान युजारिक्य श्रुवता उद्धा-निना॰ **সতা॰। निका**धिक्षा कृष्टिवीक निषा निष्निभूषा उक्त ॥ इंडि थााषा जू जा (पवी म्लातिव भूभू-करयद् । रेनरवरेन्द्र विविध मी रेनः भू म्र भ्भानु (नभानः ॥ भूनमञ्जन्ह (वः দোকো ভক্তানা বাঞ্চিত পুদ:। म्ल तमु उक नीम मुनिक्षि हारणा कातः ॥ उ हो। बी न्नी व गनमा (५देव) साहा। शक्षणक करमरेनक

মন্ত্ৰ দিৰি ভবেষ্ণা॰ ॥ মন্ত্ৰনিৰি 🍴 र्ভ्यविष्य न । निष्का जग जी उत्व । পুধাসন বিষা তদ্য ধন্ব হরি সন্মো ভ**ে**९॥ वृक्तत्रवाज **मःकान्डाः मु** -श्रीभाषाम् वङ्ग छः। आवाञ् (पर्वी नोनाञ्चाः भूज्ञरयाच्या हि ভক্তि उः॥ **शक्षन्तरा ननमान्धराया (एटिव) एन्ड्रा** इ त्या विला । धनवान् भू भवारे महत् कीर्डिना॰ क खरबक्तुन॰ ॥ भूका विद्या-न॰ कथिङ उराथ्यान निमान्य। कथयानि नहाजाग यट्नु ह अर्थान क् जः॥ 🗱॥ जन्तरा बच्च कात्रनः यथा । পুরা নাগ ভ্যাক্রান্তা বভুব্ র্মান্বা ज्वि। यान् यान् शामि नागाम তে ন জীবন্তি নারদ 🛭 নস্ত্রাণ্য্র সসৃ জে ভীতঃ কশ্যংপা বুদ্ধণার্থিতঃ। (वस्वीजानुत्राद्भग (ठाश्रास्त्रमन वुक्तः १: ॥ मञ्जाविष्ठाञ् (प्रवीञ्चाः मननाः সস্জে ততঃ। তপসা মনসা তেন বভূব ননসাচ সা॥ #॥ তস্যান্ত भगाहि यथा। अनाती मा ह मञ्जूव লগান শঙ্করাল্য । ভক্তা সংপ্র কৈলাশে ভৃষ্টাব চন্দুশেখরণ।। দিব্যণ বর্ষ সহসুঞ্চ ত সিষেবে মুনে: সূতা 1 ্আশুভোগো নহেশদ ভাঞ্ তৃষ্টে। वज्रह ॥ भ्रश्नाकान मत्नो जरेगः भावेगांगांग जान ह। क्कनल क

लु उकः ननावश्रीकातः गृत्न ॥ नक्षी गांग काम ोज (उन्नः क्कन प्रत्या। बिःलाकः सङ्गलः नाम क्यारः भूजनः करा। नर्व भूबाध्यः खबनः ध्रानः ज्रनगावनः। भूतः हर्वत कमकानि (बाराकः नर्वमण्यकः॥ भागा म्-তৃজ্ঞেশাল্ জনে পর মৃত্যুজ্ঞৰ সং তী। অগান তপদে সাধী পূকরং **मकता** ऋगा। जियुगक कृत्र स्था कृ. ক্ষম্য পরনাজ্বঃ। বিদ্ধা বভ্র সা (पर्वी परण भूतका भूजू ॥ पृष्ट्वी क्-भाकी वानाक कृत्ये। छक्ना विशः । প्राक्ष कात्रगामाम ठेकीत व्यदि रुतिः ॥ वत्रकः भूत्रतो जरेमा भूकि (ততি ভবে ভব।বর• দত্তা চ কল্যা-रिग जनाका उर्म विज्ः॥ नुषाम পুজিতা সাচ কৃষ্ণেন পর নাতানা। দ্বিতীয়ে শঙ্করেণৈর কশ্যপেন সুরেণ ह।। यनुना मूनिन। हेहर नारगन मान-বাদিনা। বভূবপূজিতা সাচ ত্রিষ্লো কেষু সূবুতা॥ 🗱 ॥ ভঁস্যা বিবাহ: स्वाभिकर्ञुक छाराभाष्ट्रयंथा। क्रद्रद्या-क मूनीन्त्राय कन्यात्र खाः परते शुत्रा । অ্যাচিতো মুনিশেুঙো লগাহ বু-ऋगाळ्या।। कृत्वाद्वादः नहारयागी বিশান্ত তুপসা চিরণ। সৃষ্পি দেব क्यान विम्राल ह भू इरह ॥ निम्रा

काश्य हर्निः स्द्र। निष्टुम भी थंत्र। ्**क**णान्तवः स्तिकतः नायः कान छे-প্ৰস্থিতঃ (সং**ঠম্ভ) নৰ্মা তত্ৰ** মৰ े आहे ना १ जिल्ह हो।। धर्मात्वाभ खरा ्रिनव एक द्वारमाठन नजी।। अक्षा शिक्ति। अस्ता विज्यादिका विक ছানা । বুজহ্ত্যাদিক পাপ ল ্রিক্রিড 📆 🌣 র্মন ।। নোপতিষ্ঠতি यः शहरा व्यागात्त्र यस शन्त्रमाः। সচ এব্যাশ নিত্য বুক্ষহত্যাদিক ज्ञाङ । 🕖 ाङ गण मः विद्य द्वारकरान । १ मुनिरी माठ तूक्षा भूतिन्तुरे ः अ जा मृणा सूनिः॥ জর কার করা । কথা সেসুবুতে माधि निद्राज्यः क्उ स्या ॥ बार्थः ব্ৰডানিক তল্যা যা ভৰ্ভাগকা-दिनी । उन रहानमनरेक्षव वुड॰ मा-नारिकक्ष यथा। जुर्जु त्रश्चियकाति-গ্যাঃ সর্ব্ব ভবতি নিস্কলণ। যথা প্রি-🗱 🎤 জিড 🖎 শ্ৰিক্ষ: পূজিত স্তথা। া পতিবুকা ৰু তাৰ্থঞ্চ পতিৰূপী হ-हि: सर्पः निर्वतानः नर्वयक्तः नर्व-তাৰ নিষেবন ॥ সর্ব বুক তপঃ अलगात्रामा पिकथः यट । नर्व धर्मा ক্ষ্প নাড্ৰ নাজিব পুপূজন। তৎ भार्बः वानि (गवायाः कनाः नार्काञ्च যৌড়শা বসপুণ্যে ভারতে বর্ষে প্রাং

ত্রিসেবা• করোতি যা।। বৈস্পৃত্ত স্বা মিনা সার্দ্ধ• সা যাতি বুদ্ধণ: শত• । विश्विषः अकाउ छव् विश्विषः वर-তি প্রিय ।। অসৎস্বল পুজাতামা ছৎ ফন• শুনতা সতি। সম্ভীপা-क वुरब भार यावहन्तु स्वाकरही ।। ততো ভৰতি চাণ্ডালী পতি পুত্ৰ বিৰ্দ্ধিতা। ইত্যক্তাচ নুনিশেষে। ব-ভূব সু, রিভাধবং ॥ চকম্পে ননসা माबी ভरেरवादाठ छ॰ পठि॰। यन-स्मावात् । मक्तात्वाल अव्यतिक नि-मुভেক: ফ্ র স্তব।। সক্ শান্তি । মহা ভাগ দুষ্টাবা সম সূত্ত। শৃস্বারাহা-র নিদ্যুণা॰ যশ্চ ভঙ্গু॰ করে।তি চ॥ न वृत्त्व कालम्बक्ष सामिनम्ह वि-শেষত:। ইত্যুক্তা ননসাদেবী স্বানি ন শরণামুজে॥ পপাত ভক্ত্যা ভী-তাচ করে। দচ পুন: পুন:। ছপিতঞ্ मूनि मृक्षे बिमूर्ग्य मेखु मूम्य ।। **ত** वा जगान जगदान् नक्तर्या नश নার । তত্রাগত্য মুনিশেষ মুবাচ ভাক্ষর: ऋय॰॥ दिनरयन চ ভীতশ্চ ত্যা সহ যথোচিত। শ্রীস্র্য্য উবাচ । मुद्याख वर्ष पर मुद्धा माही ५वी ३ वर्ष न है। (वा ानाम चूंट विश्व नाल् ब्रायः ग**ें** के गर्न छ गर्ने क्ष-ग्रा॰ **नश्च** । १५५ व गर्मे ॥ वाक्सका-

नाक्ष कृत्यः नवनीज नगः जना । তেষা জ্বাৰ্জ ক্ৰোধন্য ততো ভ্ৰম ভবেজ্জগৎ।। भूनः मुक्षे विजः म-ক্তো নতেজম্বী দ্বিজাৎ পরঃ। ব্রাহ্মণো বুদ্রণো ব**•শঃ পুজ্লন্ বুন্ধতে**জ্**স্যা।** গ্রীকৃঞ্চ ভাবষেষিত্য বুন্ধজ্যোতিঃ সনাতন । স্থ্যস্য বচন শুত্রা দিজঃ भारता वज्वह।। সূर्यता क्राम स ञ्चान गृहीद्या व्याक्षना नियं । उठ्या-क मनना॰ विभुः भुजिन्छ। भाननाय ह ।। क्रन्ती लाक्युका ह क्र्र्यन वित्यका । ना नमात्र एकः मस নিষ্ঠদেব হবি বিধি ।। কল্যপ জ মদাভার• বিপত্তৌ ভযক্ষিতা। ত-ত্রাজগান ভগবান্গোপীশ: শস্ত রেব চা৷ বিধিশ্চ কশ্যপশেচৰ মনসা পরিচিন্তিত:। দৃষ্টা বিশ্বো: २ভীষ্ট (एव॰ निर्छंग॰ পुक्रकः भन्न॰।। कुष्टीव পর্যা ভক্ত্যা পুণনাম মুহ্ছ মৃহিঃ। নন্শ্চকার শাস্ত্রঞ্চ বুন্ধাণ কশাপস্ত দা ৷৷ কথ্যাগন্দ দেবা ইতি পুশু চকার সঃ। বুন্ধা তছতন শুরা সহ भा भन्दर्गाष्ठि छ॰।। भन्दा मन्यु छ। श्वीत्कम अरामूडः। वृत्कावाठ । ्यार लुउक्र√थयां भृती थियाँ है। सन्मा मंग्री।। जक्षमान्। मुजिएगणिः

ठाती वा जिक्कू ईनहरताशि वा ॥ জানাযাঞ্চ সূভোৎপত্তি• কৃত্বা প-कार जारक्ष्मात । जाक्षा जू मू-তোৎপত্তি বৈরাগী য স্ত্যক্রেৎপ্রি-याः । भूषाख्य खट्भूगुक्ष हान न्। १ वर्ष वर्ष कल । १ । उम्। उम्। भू-গ্রোৎপত্তি র্যথা। বুন্ধণো বচন• শুদ্ধা জরৎকাক মুনীশ্বঃ॥ চকার তন্ত্য-ভিম্পর্শ যোগেন মন্ত্র পর্ক্থী ত-रिम् भूजानियः म्बा र यु (म्वा मूमा-निजारं।। मुनानिज ह मनमा जत्र-काक मूमि दिखा गूराः नत राम पा-बार माना गार्डी वर्ज्य है। निवना যা সুনিশেষ মূনিশেষ উবাচ তা॰ कत्रद्भाक् क्वाठ। गर्र्ड्यातन मन-সে তব পুণ্রো ভবিষ্যতি।। ছিভে-मित्रामा भूवाता धामिका विक्या. গুণী:। তেজম্বী চ তপস্বী চ যশসী চ खनानिकः ॥ वात्रा विकतिकारिकव क्छानिना थागिना छथा। मह भूत्या विकृ ज्ञान शामिकः सन्त्रुषात्र ।। নৃত্যন্তি পিতর: সর্বে যজ্জন্ম মাত্র-তো মুদা। পতিবৃতা সুশীলাযা সা श्रिवा श्रिवतामिनी ॥ धर्मिष्ठा श्रूधः মাতা হ জলজা জনপালিকা। হ-রিভজিপুলে হয় ওমাই ছেৎ মুখ্য चन्चं भाजेनाम हेन । गञी ना तुक्त श्री श्रुपः ॥ हा वक्षि नाम भागहात-

र्वजा भूमभंकः। मा गर्खधात्रिनी या ह शहराम विभावनी ॥ विक्रमखनुराः তা চ স গুৰু বিষ্ণু ভক্তিদঃ। গুরোশ্চ জ্ঞানোদিরণভেজ জান কৃষ্ণ ভাবন ।। আবুদ্ধ শুদ্ধ পর্য্যন্ত যতে। বিশ্ব॰ চরাচর । আবিভ্তি তিরোভ্ত कि॰ वा ज्ञान॰ जमनाजः ॥ व्यम्ब (याग्रज्ञ यव्य उट नात र इत्रि (मवन । **ত ब्रीनाः ना**त्र वृ**उक्ष र**त्न त्रनाषि उम् नः॥ पछः छेद्दानः नगा छ छ। म बामी क्कान्यमा हि गेर्। क्कान्य भून हाउ वक्राट क बिल्इंगा रि वक्षरः॥ विवर ভিক্তিস্ত জ্ঞান ন দদাতি হিয়ো 🖔 গুকীঃ। স রিপুঃশিষ্য ঘা তী চ যতো वद्याद भावत्य ।। जननी भर्छ जा ক্লেশাঘ্ম তাদ্ৰজাত্তথা। ন মোচ-শেঘ্য, স কথা গুৰু স্তাতো হি বারু वः॥ भवनाननः क्रथः कृष्मार्गमः नथतः न पर्भाराष्यः म कथः कीपृष्णा वाकरवा नृशाः।। ভङ नाधिः भन्न वृक्षाः हु। 5॰ क्षुक निर्श्व । निर्म् लक्ष भूता কর্ম ভুজেন্দ্র শেবয়া ধ্রব।।। ময়া ह লেন ত্ব॰ ত্যক্তা ক্ষম দেবি মম প্রিয়ে । ক্ষ্মাযুতানা সাধীনা সত্ত্বাৎকো-ধোন বিদ্যতে॥পুষর তপদে যামি ् शह (५ वि यथा जथ'। 🗐 कृष ठत्रना **উপান ধ**্যান বিছেদ কাতর: " ধনা

मियू जिया। श्रीजि: পুवृक्ति वर्जागह-তা । ত্রীকৃষ্ণচরণাস্ত্রে ছে নিয়ৃহাণা भरनात्रथाः॥अ॥ जत्र०काक वहः नुज्ञा মনসা শোক কাতরা। সা সাশু, तिवा विनयामुवाह श्रागवल्ला**छ॰ ॥ म**-নসোবাচ ৷ দোষেনাহ• ত্ব্যা ত্যক্তা নিদ্যাভঙ্গেনতে পুভো। যত্র মারামি-ত্বা• বন্ধো তত্র না নাগমিষ্যতি।। বন্ধু ভেদ: ক্লেশতম: পুএভেদ স্তভ:পর: । भाराम (जनः भागानाः विष्ट्रनाट সর্বতঃ পরঃ । প ভিঃ গানিবুতানাস্ত न व्यापा प क म् वह । महमापु प्रि-यः खीलाः ल्रिय (खरना ३) एक वृदेवः । भूषा रिषक भूषाणाः रिक्कानाः यथा इत्ती।। नित्व यरेथह निजाना॰ ভূষি তানা॰ যথা জলে। কু ধিতানা॰ यथास ह काम्कानाः यथा जियाः॥ যথা পরমে চৌরাণা যথা জারে इरयाविजाः। विदूषाक यथा भारत वानिष्क्रि वनिका॰ यथा। उथा मन्य-ন্মনঃ কান্তে সাধীনা থোবিতা পু ভো॥ ইত্যুক্তা सनमाप्तवी भभाउ স্বামিনঃ পদে। ক্ষণ চকার ক্রোডে-তা কৃপযা সলপানিধিঃ । নেভােদ-কেন মনসাং স্থাপামাধ্য তাং মুনিঙ ্য সামুগাত বুলি ক্রেড়ি শিবিচাতে . गञ्जा। उ कात्म (जि.ही)

বিশোকো চ বভ্বতু:। স্মার মার পদাস্তোজ কৃষ্ণস্য পরনাত্মনঃ ।। জগাম তপদে বিশুঃ স্ব কান্তা সূপু বোধ্য চ। জগাম মনস। শস্ত্রোঃ কৈ-नामः मन्दितः खदाः॥ अ।। भार्वजी वाथयागाम ननमा ल्याक कर्षिः তাণ। শিব শ্চাতীব জ্ঞানেন শিবেন **চ निवान्य ॥ मृश्रमञ्जात्य माधी** সুসুবে মঙ্গল ফণে। নারাযণা॰শ॰ शृधक জानिना (यागिना खक्।।। গর্ক্তিতো মহাজ্ঞান- শুক্রা শঙ্কর वक् इः। न वकुव ह (याशीत्नु। (या গিনা॰ জ্ঞানিনা॰ গুৰু: ॥ জাতক॰ कात्रयामान वाह्यामान मक्ल । বেদাংশ্চ পাঠযানাস শিবায় চ শি-वः निष्नाः ॥ तद्भ बिरकारि नक्ष ৰু।ন্ধণেভ্যোদদৌ শিব:। পাৰ্বভীচ গবা॰ লক্ষ• রত্নানি বিবিধানি চ।। শাস্ত্র চতুরো বেদান্ বেদাঙ্গানী 🔏 তরা॰ তথা। বালক॰ পাঠ্যানাস জ্ঞান• মৃত্যুঞ্জয়• পর• ৷৷ ভক্তি রস্তি স্থকান্তে চাভীষ্টদেবে গুরে। হরে। ম-স্যান্তে তেন বৃৎপুণ্ডো বভ্ৰান্তীক এব চা। জগান তপসে বিষ্ণোঃ পুদ্ধ ্রং শঙ্করাষ্ট্রবা। সংপ্রাপ্ত নহা-भव्य उध्यक्त नजमाञ्चनः ॥ पित्र १ ব্য ত্রিণক্ষ তপস্তথ্বা তপোধন: 🗟

चाक्रगाम महार्याणी नमऋजू॰ नि व भुष्ट् ॥ भक्षाक ममक् छ। क्वा ह বালক পুর:। সাচালগাম মনসা कमानमाम्य निज्ः॥ जा म भू-व्याः मुकाः मृक्षे भूमः भूभा भूकाभः **डि:। णंडनक्क ब्र**ज्ञानाः व्याकाल ভ্যোদদৌ মুনে ॥ ব্ৰাহ্মণান্ ভোল-যামাস সোহসংখ্যান্ শুেষ্সে শি-(माः। अमिजिक मिजिकान्। सूर्वे পাপু: পরন্তথা ।। সা 🕫 পূঞা চ সূচি-त्र• जिल्लो जाजाना^त जना। जनीय• भूनवाथप्रानः वक्तुः नि किम्मानय ॥ 🕸 ॥ তস্যা সাহাত্মী 🥆 🛠 . अन থাভিনন্য তনযে বৃদ্ধশাপ: পরী-ক্ষিতে। বভূব সহসা বুক্ষন দৈৰদে।-ৰেণ কৰ্মণা।। সপ্তাহে সম্ভীতে ভু তক্ষক স্থাঞ্চ ভোক্ষ্যতে। শশাপ শৃন্ধী নৃপতিং কৌশিক্যাশ্চ জলেন চ ।। রাজা শুদ্ধা তৎ পুবৃত্তি গঙ্গাদ্ধা-র• জগাম সঃ। তত্র তত্ত্বৌচ সপ্তাহ• শুশ্বে ধর্মস হিতা ।। মপ্তাহে স-মতীতে তু গছম্ভ ডক্ষক পথি। ধন্ব-स्त्रि म् १९ (डाक्- प्रमर्भ गामूका নূপণ ৷৷ তথে৷ ৰভ্ৰ সম্বাদঃ সূপ্ৰী-তিশ্চ পরস্পর•। ধন্বন্তরি র্মাণ• প্রা-न उक्ककः (ब्रह्मा माने।। न गर्यः छ॰ १ होचा ह छुष्टैः शुर्**डे ग**ानमः।

छक्का छक्षानाम नृशक नकक श्चिष्ठः ॥ इ.तः क्रगाम रेव**न**शे न्यात्रः নার• হরি• ७क•। সৎকার• কার यानाम 🚧 🤉 र्जाब्यक्यः भूठा॥ त्राः হা চকায় বালক সর্গসত্র ডাডো মুবে। প্ৰাণাং ভত্যাত্ত সপাণাং সম্ <হা বুদ্ধ ভেজসা।। স তঞ্চকশ্চ ভী-७ म अ स्टब्स् भारता यायो । (**अन्तु**क् फक्क इक विभूवर्गः समूर्डः ॥ भाष (हवा का जून**य काय्यू र्मनमाहि**-^{র•।} তান্ত**ঃ** ুম্<mark>ছেন্দুন্চ ভয়কাত</mark>-🌣 (बिश्वनः 🕦 🤛 चाजीय चाग्यः)। र ऋक्ष सङ्घु हा **ऋया । सरहन्तु छ** क्क जागान् गगाट ज्मिन वतः॥ म्यम् वद्गः र्वार्**ण्ठः क्श्या वान्ना** ख्या । यद्भः **नमान**्र वित्नुरन्त्रा म कि १११४ मानी मून। ॥ विशाम मून-या (हवा शङ्क मनमा खिकः । भ-নসাং প্রান্যসূত্রপ্রত পৃথক্ পৃ-থক্ ।। 🍍 🕾 সম্ভূত সম্ভারে। ভক্তি युकः मधा भुजिः। ननमाः भूजयानाः म ज्षेष्यं भवगामवः ॥ मञ्जा व्याप (भाभगतः दिलकः उ প্ৰদৌ পরি তৃষ্টশ্চ বুন্ধ বিফু শিবা क्रा। न भूका सनमारियो भ्रायुः স্থালম্পতে ৷ ইত্যেব কথিতে সর্ব ি শভ্যঃশ্রেত্মিছসি॥ 🛊 🛭 ইন্দু

কৃত মুনসা পূজা ভোত্তে যথা। নারদ উবাচ**। কেন ভূ**ষ্টাব স্তোত্ত্রেণ ম**হে**-ন্দো মনসাংসতীং। পূজা বিধি ক্র-ম• তস্যা: শ্ৰোত্মিছামি তত্ত্তঃ।। শ্রীনারায়ণ উবাচ। সুস্নাতঃ শুচি-রাচান্তো ধৃহা ধৌতে চ বাসসী। রহ্ন नि शामान प्रती वामग्रामा छ-कि उ: ॥ यर्गगक्षाकत्वरेनव वर्ष ন্ত্ৰন্থিতন চ। স্থাপথানাস মনসাণ মহেন্দো বেদ মন্ত্ৰতঃ ॥ বাসসী वामगामाम विज्ञानुष्क भरनारुद्र । সর্বাহে ০৭৮ন- দত্ত্বা পাদ্যার্য্যণ ভ-कि मःयुजः ॥ गणमकः मित्मकः विद्यः विकुः निवः निवाः। मःभू-क्यारि। रहत वर्कः भूक्यामाम जाः मजी ।। ७ ही धि मनमारहरिय चार्ट्राङ्ग्यक मञ्ज्ञ । मनाक्रात्र मृत्वन मरही जर्बः यत्थाविजः ॥ म-ভ্^৷ ষোডশোপচার• দুর্লভ• দুর্লভা• र्तिः। ভক্তा চ প্রযানাস বুন্ধণা প্রেরিতো মুদায়া বাদ্য নানা পুকা-त्रक्ष मामगामा **जन** दि । वज्व भून्न বৃষ্টিক্ষ নভসো মনসোপরি !! দেব विलाखन के तक दिए निवाद्ध-या। जुलबक शुक्रकाविः जिल्लिक कर कि । लिहि का १८१५ । ता वाषी मार् शुकार

বরা । পরাৎপরাঞ্চ পরমা । নহি खाजु कत्मा २४मा ॥ खाबामा লক্ষণ বেদে স্বভাবাখ্যান তৎ প त्र । न क्रमः शुक् उ॰ वक् खनाना॰ তব সূক্ত।। শুদ্ধ সত্ত্ব ব্ৰক্পাত্ত কোপ হি॰সা বিবজ্জিতা। নচ শপ্তো मूनि खन छाङ्गा ह चुरा युडः ॥ पः यया न्किछा नाश्ची कननी ह यथा १ कि जि: । प्या क्या ठ छिनी कः भा क्षा यथा शुत्रः ॥ द्या म ब्रिकः णः गुागाः भू अवाता मूरत्र विता व्यर् करहामि द्याः गुकाः ग्री७-० वर्ष्टा मना ॥ निज्या यहानि जुः প্ৰ্যা ভবে ইত্ৰ জগদিয়াক। তথা-नि उव भ्राक वर्षगिम ह मर्बछः ॥ (य द्वा मायाः मःकान्ताः भ्करि र्वे अञ्चित्रः । शक्ष्माः सनमाः थ्याया भीना॰ जा॰ वा दित्व दित्य।। পুত্ৰ পৌত্ৰাদৰ স্তেকাং বৰ্জন্তে চ ধ-नानि ह। यभिनः कीर्जिमसा वि म्रावरन खगानिजाः ॥ य जाः न পূজ্যিষ্যন্তি নিন্দ্ন্ত্যক্তানতো জনাঃ । লক্ষীহীনা ভবিষ্যস্তি তেষা নাগ-ख्य मना ।। षु स्व सर्ग वस्त्रीक दिञ्चले कम्लालया। नात्रायगारमा अनवान ब्रुट्रकाक मू बीयंतः ॥ छ्-পদা তৈজসা ভাঞ্চ মন্দা সস্জে 🔠

भिजा। जमाकः त्रक्रगारेग्व (उन व॰ ननमा ভिशा।। मनमार विञ्॰ भः का बाजाना निष्यागिनी। (उन प् मननारमवी भूबिडा विम्तिडा ভবে ॥ या॰ ভক্ত্যা মনসা দেবাঃ পূজ্यस्तर নিশ॰ ভূশ॰। তেন ত্বা॰ মনসা॰ দে-वी॰ প्ৰদন্তি প্রাবিদঃ॥ সন্ত্ ৰূপা D (पवि षु॰ भंधर जङ्ग निष्वव्या । (बाहि य॰ ভाববেন্নিত্য॰ স छ भी-পোতি তৎবম: ॥ ইন্দুক্ মনসাণ জ্ঞাত্বা গৃহীত্বা ভণিদাঞ্চ ভাণা পুজ-गान चल्पन जूव सामः शतिहृहा॰ ॥ भूटान मार्च- मा (स्वी हित्र-हि ছৌ পিতুৰ্গ্হ। ভ্ৰাতৃভি: প্ৰিতা শिषयान्। वन्तु। ह जर्बदः॥ (गा-लाकार भूत्रजी वृषान् छवागछ। সুপ্রিতা। তা সাপ্যিতা ক্লীরেণ भूक्यामाम मारतः॥ उद्धानक कथ-যামাস গোপ্য সর্ব সুদুর্লভ। তথা দেব্যা প্রিতা সা স্বলোকঞ্পুন यर्थो ॥ इम॰ खाद्म॰ भूग्रवीकः छा॰ मः প्रकृ ह यः भरहेट्। उम्र नाग ভয় নাস্তি ভস্য বংশোদ্ভবস্য চা বিষণ ভবেৎ সুধাতৃল্যণ সিদ্ধ স্তো-ত্রো যদা ভবেং। পঞ্লক্ষ জপে নৈব সিদ্ধ ভোত্রো ভবেয়রঃ ৷৷ সর্প_{্র} শাষী ভবেৎ সোপি নিশ্চিত; ব্ৰুম: ।

११६नः । इंडि नुक्तिनगर्छ शृक्डिः भर७ ६० व्यव्यायः ॥ # ॥ धन्नुष्ठति । **क्**उ बरमा श्रान भूकानि यथा। धन् इतिकवाछ। ইङ्गामह जगामीति गृ বাণ মম প্রমণ। প্রাচা বং তিবু **जा**रकषु शहा कन्गाशकनारक ॥ ज गा किछ जन**् मर्ब (पवि** विकृष ৰূপয়া। তেন তে হক্ত পুযোগশ্চ ন কুঠো রণ ভ্ারু ৪ ইত্যুক্তা সংয ভো ভূমান ক ন্যামাক্ষরঃ। গ্ होदा भुक्षत्रं यः ध्यायः कर्नुः नगः দ্যতঃ ৷ চা তিশা বৰ্ণভোৰ বহাস ्रीक्षण्डवाङ्गद्ध हैन स्वासान । भूभमान । १९ ধ্যেভিতা নৃত্যনাসসা।। কৰরী ভার শোভাচ্যা॰ রহ্নাভরণ ভৃষি দাং। সর্বাভবপুদাং দেবীং ভকা नुशृष्ट् काउदा॰ ॥ नईविष्ठाशुपा॰ भाषाः नर्विष्ठा विभावपाः। नाः ्रमृव।श्विः (स्वी॰ ভङ्क नार्गः 'बद्धो॰ शद्धाः । श्वतिष्वतः **सम्मः एतु।** নানাদুব্য সমন্বিত । দক্ত্বা ষোডশো-পচারণ পূর্বানাস তাণ প্রিয়ে।জো-মঞ্চকার ভক্ত্যা চ পুলকাঞ্চিত বি-गुरुः। भ्रोखिनगुजा ज्वा जि चम्बिक्का अभा धनुष्ठतिक्वाह। नगः निष्नि वक्त भारेय निष्क्रामारेय नत्या ^{थरपद}। नमः कणाशकन्तारेय व्वन्धिः

नत्मा नमः ॥ नमः भक्षत्रकन्। य भक्षत्रारेय नत्या नयः। नयस्य नाग वाहिरेन। नारमश्रेर्य। नसा नमः ॥ নমো নাগভগিনৈ চ যোগিনৈ চ नरना नमः। नरमा २ छीक कनरेन्छ ह জননৈ জগভা৽ নম: ৷৷ নমো জরৎ-काक नारम जब्दकाक्छिरेय नमः ।। नम भिन्नः उशिष्टीना मुश्रमारिय नमा नगः।। नन् खभः मक्नीरेन् कनपारेय नत्या नमः ॥ ज्लीनारेय চ সাধ্যৈ চ শান্তাগৈ তে ননো নমঃ ॥ इत्विष्य भृका ज्वा ह जुननान भूवञ्चा । जुड़ी (पवी वतः प्रजा সত্তর স্বালয় যয়ী 🛭 ইতি বুদ্ধ-रिवरार्ख शिकृष्ण्डनाशास्त्र धनुस्ति मर्भाज्य सनमाविष्या नाम ७३ , क्रशामः ॥

ननमारिको जी गनमा। ইতি জট। श्रद्धः ॥ जम्मा विवद्यनः भूदंभायः पृष्ठेवाः ॥

মনসিজঃ পু॰ কামদেবঃ। ইত্যমরঃ ॥ মনোজাতে ত্রি॥

मनिनयः भू॰ कामाप्तयः । इति स्वायुक्तः

ननकातः १० मनमः कथानिः। उरः পर्यप्रायः । विचा नाष्ट्रण्या ३७० नतः॥ व मनम नुशासी उद्गार्थः

ত্বে এক মিন্ বিষয়ে মনসঃ পুনঃ || পুন: পুবৃত্তি রাভোগ:। আভোগ **खाद्मग्र भिठि मर्द्वानमः । रेष्ट्**ग्र মিত্যন্যোব্যাপার ইত্যপরে। বা **শ্বিত্রবন্ধ প্রাপ্ত্যা চিত্তস্য নিরাকা**দ্ধ व्यनाग्र विश्वनाहि क्राला सम्कात ইত্যপরে। মনসো মনসিবা কারো নিশ্চয়ে মৃনক্ষারঃ সেতৃক্থেতি সঃ । মনসি করণ মনসিকার: ইত্যপি 🛚 দৃশ্যতে অত বাহুল্যাৎ সপ্তন্যা व्यवृत्। ইতি उडीकायाः अवदः ॥ गन्डाभः भः ननःभोजायथा। ग नसाश न क्यों ज जागर भागा পার্থিবঃ। সমবৃদ্ধিঃ পুসন্ধারা। সৃথ मुः (थ माना ज्व ८॥ इंडि गाक्र । ১১১ अद्यागः ॥ अनु जानः। यथा। ব্ৰান্নণেন যদা দৈবাৎছিন্ন• যজ্ঞো-প্ৰবিভয়ণ। মনস্তাপেন শুদ্ধি:স্যা माभखस्वार तुरी सुनिः ॥ **ইতি পু**। यन्ध्वि उदुः ॥ मनखालः পू॰ पूर्णायाः नि॰ इर। इंडि ় ত্রিকাণ্ডশেষ:॥ भन्दः जि भनः श्रिउदस्र । यथा ।

मका वः शिक्षा मार्ट ा करत गा।

পুতাপার্নিছ শর্মি সতঃ সিদ্ধান্য

ष्ट्र मृर्थन। ইত্যন্ত हैः ॥ मनियनी द्यी शुभारतमाः द्यी। यथा। मनिवनी गानविधाञ मक्कः ज्यान জাত বচন মরন্য। ইতি জনার मञ्जः॥ তা।আভোগ:পরিপ্ণতেতিপরে। ননবী পু॰ শরভ:। ইতি রাজ-নিয'টঃ ॥ পুশস্তমনোযুক্তে তি । যথা। ননস্বি গহিতঃ পন্থাঃ সনা-রোঢ়ু মসাস্থ্ত। ইতি কার্ন্টী-काया कृतीका मः॥ ननाक् वर जल्ला इत्रामतः॥ ननः । ইভি निषिभी।। मनाका जी इंखिनी। इंजूलारि क्षियः ॥ यनाइद्र॰ क्री अङ्ग्ला। मिल्रिकाशस् युकार्थक । ইতি শব্দ जिलुका ॥ ইবৎকারকে তি ॥ मनानी जी मताः भन्नी। इंडिक्टी-ध्यः ॥ मनावी जी मनुशत्री। ইতি मुख्रावाध ब्राक्त्र १ ।। ম্নিত ৰি জ্ঞাত ইত্যুর:॥ यनीक क्ली अञ्जन । इन्। मिर्मातः यनीया खी तृष्टिः। ইত্যারঃ।। . आडम् भाग्न म् यहिन नम मत्ना मिनीयी पूर पा छ ः । इंड्रम्बः ॥

বৃদ্ধিত্তে তি ॥

∥ मृगृः की প্का। ইতি রাজনির্ঘণট॰

भन्तवा । ३ उ जी श्वाह म॰-ग्रह अभवः॥

ब्रसः भुः द्रकाश्यः। म ह भुजानः তি প্ৰমুখাস্থ্যক। চ। ইতি লিস্থা-নি সংগ্ৰেছ অনুরঃ॥ নন্ধ্ঃ। ইতি भवतद्भवनी। जिन्छतः। ইতি ित अभवः॥ नचः। ইতি करे। ঘরং ্রুপ্রকল্পেচতুদ্দশ ননবো -छरांड (डग⁻ नागानि यथा। बाय-ख्यां १ जरे । इयार अ**खना э ज**र म ते, ४ रेवर ५ ६ हा कवः ५ व छ. विकास विकास १८० व स्थापना १४० । भागिताल वृक्षना व विकास १९३० व्यापना विकास इस्राम्बात . . ३ हातु सावितः ५८ ল ১ চৰিষ্য প্ৰাইটি জীভাগৰতে 🤋 💯 🔑 🗁 ्रायः ॥ 🕸 ॥ এতেব। भूतका कि भाग व्याप्तामन वृज्ञाला । 🚉 শ্রন্থ ।তি বুতী। ধ্যিষ্ঠা भाग स्विष्ट 💎 । ब्रि**ट्डा मनुष् शुक्रा।** স্কার্য্য লেশ্যু **লিষ্যে বিষ্ণুবৃত্ত প**া রাব্যার 🚉 ্রে**কা নহাজ্ঞানী ভ**ং वडः भूं शिकान्यः ॥ जःभाभ कृषः म्यापा । १९८७ वाक्ष क्राम जुरु। र्षेष्ठे गुक्क सन्यायक स्ट्रेड्य सङ्ग ে পতিঃ ৷৷ ভটার শল্পর**ং ভৃষ্টঃ স**সূ (क. मृत्नन)कः। न ह खगमु शूधाक

भूतः भाषञ्ज्ञता भन्ः ॥ बाद्याहि-(य। नमूरेण्डवं वि जीया विक्रानस्तः। वाजा वसारन्या थिया छ। साय अव न-নো নহান্।। প্রিযুত সূতাবনেরী (हो नन् श्रियंगा॰ वाबो। (डो ज्ञीय **हर्जाह दिक्**षो अन्त्राख्यो ॥ ভৌচ শঙ্কর শিষ্টো চ ক্ঞভুক্তি প-ब्रायलो । अधिक्षानाः विविष्ठ । देव তঃ পঞ্মো মনুঃ ॥ বস্তুচ চাত্রে। জ্ঞেয়ে বিহু ভক্তি পরায়ণঃ। শুদ্দ रम्यः मूर्वामूला तियःवः मश्रामा स्वः ॥ नावार्तः मूर्वाञ्चला दिवास्ता मर्नु ब्रष्टेमः। नवरमा एक नाविन दिक् नुज পরায়ণঃ ৷৷ দশবো বুন্ধাসাবণি বুন্ধা-জ্ঞান বিশারদঃ ॥ ড হণ্চ ধর্মসা-वर्ति मन्द्रकारणः श्रृडः ॥ समिष्ठण्ड वित्रिष्ठ के देवस्थाना निमा नुजी। उद्धा-ৰী চক্ৰুমাবৰ্ণি মনুশ্চ ছাদশঃ মৃতঃ ॥ धर्माञा (नवमान्ति मन्द्रव ब्रायाः मणः। ठञ्जं:म। गराज्यानी (हन्स्-·**সাবর্ণি**রেব চ।। ইতি বুক্ষবৈবর্ত্তে পু-कृष्डिचराख ७) श्रवतयः ॥ ॥ श्र ॥ श्र-शिह। **बागासुंबः ३। त**रं शायब्धाः तनाभा काउः। नम् भगः मम्। स्वितः । १००० । विक्षा सर दः! क्या १८८१ स्वितीम एक दव्र अस्तराहार अस्ति। शहरामुण्य

याता हियः २। यम् पूर्ण कवातः। न जः। न जमाः। भूमृष्ठिः। जानवण्यः ।। ঔबिमः ७। जम्। भूमाः मम्। वेषः। উद्धाः। जुद्धाः। मुन्धिः। मुकः। মধঃ। মাধ্বঃ। নভস্যঃ। নভঃ। সহ-क्ता जानमः ८। जम् भूबाः मना। ञाकन्यवः। उत्भाषन्। उत्भाग्नः। তপোধন:। তপোরতি:। তপস্য:। তপোৰ্যুতি:। পরম্বপ:। তপোভা-भी। जलायामी हा। देववडः ६। ভস্য পু धाः रू**ष** । अक्षाः । उद्धरः भौ । विख्यान् ! इव्युष्णः । किष्णः । मुकः। निक्**र**मुहः। সबुः। निर्स्यारः । शुकामकम्ह।। ठाक्ष्यः ७। मह धुन পৌত্রাৎ রিপুঞ্জয়াৎ বুন্ধদৌছিত্ত্যাণ वीत्रन कन्यायाः देवित्रन्याः काउः। তস্য ভার্য্যা নড়ুলা ৷ তস্য পুঞাঃ मभा । उकः। शृकः। भञ्जूतुः। ज-পদ্বী। সভ্যবাক্। কবি:। অণ্নিষ্টপ্। । जिताबः । यह वः। অভिমনু । ग रिववश्र ७ । मह मूर्यप्राट म জायाः জাতঃ। তস্য পুলা: দশ। **ইলঃ।** ইक्षाबः। असनाजः। यदिश्वः। दि-छै:। नित्र गुष्ठः। इन्त्र यः। भगाजिः। भ्यथः । नाजागणः ॥ जाविनः ৮ । স চ স্ব্যাৎ ছাযায়া জাতঃ ৷ তস্ত

मः। मूवर्तः। वृष्टिः। वृतिकः। क्रिणः। । मूमिनः। वमः। मूजुन्वा। द्वोव्रः। २। व्यामो कद्यः भूकाभाउः भूदः। ।। ভৌज्यः २०। व्यामो ভृष्टिनामक भूकाभाउः भूदः॥ त्वक्रमावर्तिः>> । व्यामो वृक्षभः भूदः॥ यकः >२॥ यज्ञामा >०॥ विश्वक्रमनः २८॥ इजि नाष्ट्रम्य नवमान्यायावि व क्रिक्ष ज्याग भर्युः।।

गन्हः भः गन्याः। ३०। गतः॥
भन्ती की मान्यी। ईडि करेषतः॥
भन्दः भः भन्याः। ३डि भन्दः।
निप्ता।।
भन्तार्षः भः भरततः। ইडि बिकाखः
सम्याः।

भन्ती खी भान्ती। इंडि भदत्रः। वनी।।

यथा। अर्द्धाक्त्रमाञ्च नवमः कड त्त्रकविरक्षा नृगाः। त्राकाशिकाः कर्या পার। দু:থে চ সুথমানিন:।। ইতি গ্রীভাগবতে ৩ ক্ষন্ধে ১০ অধ্যায়ঃ ।। 🗱 ॥ অপিচ। তস্যাপি ধ্যায্তঃ সর্গ সত্যাভিধ্যাযিন স্ততঃ । **প্রা**দু ৰ্বভূব চাব্যক্তাদৰ্বাক্স্নোতস্ত সাধ-कः ॥ यमामबाक् भुवर्खस्य उत्ता হর্বাক্রেবাতসম্ভ তে। তেচ প্রকাশ বহুলা স্তমোদিক রজোধিকা: ॥ ত মাত্তে দুঃ ২ বহুলা ভ্যো ভ্যশ্চ কা-রিণঃ। পুকাশা বহি রন্তশ্চ মনুষ্যাঃ সাধকান্ত তেএ। ইতি বক্লিপুরাণে द्र्भर्ग क्थन् नामाध्यायः ॥ 🕸 ॥ मनुष्र জন্ম মুক্তিকারণ যথা। বিমুক্তি হে ভুলান্যা তু নরবোনি: কৃ**তাত্মনা**। নামুঞ্জি হি সাসারে বিভান্ত মন সে৷ গতাঃ ৷৷ জীবা নানুষ্যতা•মন্যে बन्नना नयूटे अशि । जनीमृक् मूर्वः ভ· প্রাপ্য মুক্তি দ্বার বিচেতসঃ।। পতন্তি ভ্ৰঃ সংসারে বিষ্ণু মাধা বি নে হি তাঃ ় সুরুত্তরাপি দুংসাধ্যা नाया कृष्णम् (भारुनी ॥ इंडि ठरेंबद শুদ্ধিবুত নানাব্যায়ঃ।। 🗱 ।। মনুষ্যা-ণা॰ পিতা নাভা ভাুতাচ হরি যথা । বিশেষতো মনুষ্যাণাণ পিতা মাতা बनार्षनः। ज्ञाजा व मर्वलाकानाः

বাৎসল্য গুণসাগরঃ ॥ ইতি পাদ্মোত্তরথণ্ডে ৭৮ অধ্যায়ঃ ॥ # ॥
স ত্রিবিধাে যথা। যজন্তে সাত্ত্রকা
দেবান্ যক্ষ রক্ষা শি রাজসাঃ ।
প্রেন্ড্রগণা শ্চান্যেযজন্তে তানসা জনাঃ ॥ ইতি শ্রিভগদী তাযা
১৭ অধ্যায়ঃ ॥ উদ্ধৃ গছন্তি সন্তর্ভা
নধ্যে তিপ্তন্তিরাজসাঃ । জন্য গুল
শুক্তিস্থা অধ্যোগছন্তি তানসাঃ ॥
ইতি তত্রৈব ১৪ অধ্যায়ঃ ॥
মনুষ্যধর্মা পুণ স্বেরঃ । ইত্যারঃ ॥
মনুষ্যধর্মা পুণ স্বেরঃ । ইত্যারঃ ॥
মনুষ্যধর্মা পুণ স্বেরঃ । ইত্যারঃ ।।
মন্ব্যুব্রঃ পণ অতিথিপজন ।

यत्रायद्धः भू अिथिश् जनः ।
इति न्यक्कणमः मर्णनाट ॥
भन्यो की नान्यक्कीकािः । उट शर्मग्रायः। मान्यो २ नात्री २ मान्यो ८। ইति भम्बद्धावनी ॥ गर्छ। ६ भन्की ५ नदी १। ইति क्रियदः ॥ गत्नाङ्ख्यं की मनः मिना। ইत्राप्तः ॥ मत्नाक्ष्यं की मनः मिना। ইत्राप्तः भ्राव्याः भू कम्हर्भः। ইति क्रियः ।

মনোজবঃ পু॰ বিষ্ঃ। যথা। মনো জব ভীথকরো বসুরেতা বসুপুদঃ। ইতি মহাভারতে দানব্যে সহসু-নাম ভোত্র•।।

মনোজবঃ ত্রি পিতৃত্ব্যঃ। তৎপ র্য্যায়ঃ। পিতৃস্মিভঃ২। ইত্যের ।। অতিশ্যবেগব্যন্থা ন্যসে मानाज्

ননোর 🍃

বেগে প্ । ইতি ব্যাকরণ ।।
ননোজবসঃ ত্রি পিত্সমিভঃ ৷ ইত্যনর টীকাযা স্বামী ।।
ননোজবা ত্রী অণ্নিজ্বাব্দঃ ৷ ইতি
জটাধরঃ ।।

ননোজবৃদ্ধিঃ পূ• কামবৃদ্ধিকুপঃ। ইতিরাজনিঘটঃ।।

गताञ्च॰ क्ली मत्रणकाष्ठः। ইতি রক্ত

गत्नाञ्छः वि मत्नाइतः। उद्भर्यग्रायः
। मून्दतः २ कित्रः ० हासः ८ मुन्दतः

द माध् ७ (भा जनः १ काष्ठः ४ मत्नाः)
तमः २ क्छाः २० मञ्जू २२ मञ्जू वः
१२ । इजानतः ॥ मत्नाइतः २० व स्तृतः २८ वस्तृतः २६ (भणवः २५ (भववः २१ मृन्नः २४ वामः २२ क्छाः २० व्यज्ज्ञामः २२ नित्वः १२ । इजि भद्रत्वावनी ॥

मताछ। छी मनः निन। ই छ র द्वः भाना॥ রাজপ্ এ। ই छ জটাধরः ॥ वक्ष्याकरक हिकी ॥ आवर्डकी ॥ इन जीतकः ॥ जाजी ॥ मिन्द्रा। ই छ রাজনিষ্টা।।

भरना छवः भृ• कन्दर्भः। ই**छि हला**-यूषः॥

नताज्ः 😙 काश्राह्यः। ইতি শব-

🏿 मतारयानिः भू कामरहदः । इंडि (र्यहन्तः।। बत्नात्रथः भू॰ ইहा। ইত্যমतः॥ म्पात्रयः वि म्पाञ्छः। इज्यातः॥ म्याज्ञमा की शास्त्राह्मा। इंडि রাজনির্যন্টঃ।। বুদ্ধশক্তিবিশেষঃ। **उ**९ भर्गायः । जाता २ महाञ्चैः ० ওকারা ৪ মাহা ৫ শ্রী: ৬ তারিণী ৭ জ্বব্য ৮ অনন্তা ৯ শিবা ১০ লোকে-**খরাকাজা ১১ খদ্র** বাসিনী ১০ ভদু। २० रिकारा २८ नीम अदब्र की २० मा-দ্বিনী ১৬ মহাতার াব বসুধারা ১৮ ধনদদে। ১৯ জিলেগ্যস্থা ২০লোচনা ২১। ইতি বিকাপ্তৰেয়ে এই खार्या। उम्रा नामान्तवः गालिनी । मा वक्राभू अभू हारी बरकः भूरमः চাপুরো গর্মজা বৌচ্যমুক্ত ডা চ । यथा। उठ उमामनी मध्रा८ म-मुख्डि मत्नात्रमा। भुत्माहा नाम **जन्मी ७९ मगील व**हाञ्चदा ॥ সাচোবাচ মহাত্মান কচি সুম-धुत्राक्षत्रः। भुभूगावनजा भूनुः भु-শ্লোচা বৈ বরাপ্সর 💛 মতীব ক পিণী কন্যা মৃৎ সু । তপতা । বর । का जा वरून भू (अन प्रवान सहा-স্মনা।। তা॰ গৃহাণ মনা দক্তা॰ তা र्यार्थः वत्रविनीः : । ग्राम्

्टः वि शुक्तिक छः। इका प्रदाश िह्दः वि गता छः। इकि मपः विविधिक सर्गक्ष भूः॥ सूर्यः द्वी। इकि दाक्ष निर्यणेः॥

মনোহর। জ্রী জাতী। স্বর্ণজ্থী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

मताङ्खं जि मताङ्ग्नगकर्खः। यथा

1 व उत्रमः एठ १ श्राम्य जिलाः

के जाः यहि जाव उत्र । जमानिष्य ।।

देवि जी जागवर्ज २० करक् ४२

यव उत्रमः ।।

মনোহারি ত্রি মনোহর । ইত্যমর

টীকামা স্বামী ।। তথাহি । গাল ।

স্থানি ব্যানাহারি মুরারি চরণচ্যুত ।

। ত্রিপুরারি শিরশ্চারি পাপস্থারি পুনাত্মাং ।। ইতি বাল্মীকিকৃত গঙ্গাস্তোত্রং ।।

गतास्ता की मनःभिना। इंड्रज्य दः॥
महर्वे कि मननीय । ভार्ये । यथा।
व्याचा वा व्याद मुद्धेव । श्रृं । व्यान महर्वे । विविधामित्र । इंड्रा-कि हाल्ला शांभिन्य ॥ महां श्रुं मन्नी। इंडि मिका हर्की-

शुः जनतायः ॥ नन्याः ॥ পুজাপতিঃ। ইতি নেদিনী।। দ্বা-ত্রি[,]শবপরাধা যথা। ভগৰস্কুক্তা-না॰ক্ষত্রিয়সিক্ষারভার্মণ ১ অনি-निकिरित मन्त्रवावनगक्षा विरक्श-ৰুপসর্পণ ২ নৈথুন কৃত্বা অসাহা বিষ্ণোৰুপসর্পণ ৩ মৃত নর স্পৃষ্ট্রা অমুত্রে। বিষ্ণু हर्মকরণ ৪ রজম্ব লা। স্পৃত্ব। অনুবো বিষ্ণুগৃহ পুবেশন ৫ मानवः भागास्त्रश्रेश अञ्चाद्या विकृतः নিবাববস্থান ৬ বিফ্'স্লত:পা-युवायु भुरवागः १ विस्थाः कर्यञ्च बं-তঃপুরীষ ত্যাগঃ 👉 বিষ্ণুশাস্ত্রমনা-দৃত্য শাস্ত্রান্তরপুশ•সা ৯ অতিন-निन वामः शतिया विस्कर्याह-রণ ১০ অবিখানেন্চম্য বিষ্ণো-ৰুপম্পৰ্শন•১১ বিষ্ণোর পরাধ•কৃত্বা

বিষ্ণোৰূপসূৰ্পণ ১২ ক্ৰন্ধস্যবিষ্ণুম্পা र्भन : २ निविष्त श्राया विस्था त्र हंन : > 8 तक वामः भतिषाय विकासभाम भी-ণ ১৫ অন্ধকারে দীপেনবিনা বিষ্ণো-স্পর্শন•১৬কৃষ্ণ•বস্ত্র• পরিধায় বিষ্ণোঃ কর্মাচরণ ১৭ বাযসোজ্ তবস্ত্র পরি **था**य विक्षाःकर्याहत्रनः ১৮ विक्षतः অন্তুরোছিষ্টদান ১৯ বরাছ্না স-ভূক্ত্ত বিষ্ণোক্পসর্গণ ২০ জালপাদ **শ**রারিনা•স•ভুক্তা বিষ্ণোরুপসর্প ণ ২১ দীপ স্পৃষ্ধা হস্তমপুক্ষাল্য বি-কোঃ স্পর্ন-কর্মাচরণ-বা ২২ শালা-ন• গত্বা অসুত্ত্বোৰিকোৰুপসর্পণ• ২০ পিণ্যাক ভুক্তা বিক্ষোকপসর্পণ ২৪ विकाद वजाङ्गा मित्वहन २० म म्यानाय म्यूड्री शोद्वा वा विकृशृह-পুবেশন २५ পরকীযেনাশ্চিনা বা বস্ত্রেণ পরিহিতেন বিষ্ণুকর্মাচরণ ২৭ বিশ্ববে নবান্নন্যপুৰাৰ তন্ডোজন ২৮ **গন্ধপুয়ে অপুদা**য ধূপ দীপদান ২৯ উপানহাবাক্ছ বিফুছানপুবেশন• ৩০ ভেরীশদ্দেন বিনা বিক্ষাঃপুরো:-খন ৩১ অগ্নীর্ণে সতি বিক্ষোক্পস र्भागः १२। এ उम्मु । भनक्षाः उथा ह নরসি•হপুরাণে। অপরাধ সহসূণি অপারাধ শতানি চা পদ্মেনৈকেনদে বে**শঃ ক্ষনতে হে**ল বাছিতঃ॥ ইত্যা-

হ্লিকাচারতত্ত্বে চতুর্থবামার্দ্রকৃত্যু• ॥ # ॥ অপিচ। বরাহউবাচ। ভুক্তা তু পরকীযান্ন॰ তৎপর স্তন্মিবর্ত্তনঃ। পুথন চাপরাধে। হয় পর্মবিদ্যায় বৈ ভবেৎ ৷৷ অভুক্তা দন্তকাষ্ঠানি যস্ত गागूनमर्गाउ। विजीयम्हानद्वाधस्त কর্মবিদ্বায বিদ্যতে ॥ গত্ত্বা মৈথুন भःषारमधा १नुमाः स्मृभाज नदः। ত্তীৰ নপরাধো ২য় কল্পনানি বসু-सदत ॥ मृश्वा तकत्र ना नाती गत्राकः यः পুপराउ। চত্থ নপরাধন্ত দ্-**१** हैनेव कमामाइः ॥ ग्रेष्ट्री ज्म्जकः रिक्षव जाम कात कृष्ठस्र रिवा श्रक्षा-थानतावथ न क्यानि वमुक्तता ॥ कृ **है। जू म् उक• यस नाहन। म्यृनट ज्** नाः। वष्ठकथाशताश्च न क्रनामि वमुक्तरत् ॥ भारम्याईन कार्ल जुं **भु**-রীষ• যদ্য গছতি। স্থন্ঞাপরাধ্ छ कन्नगमि वभुक्छ । यस नीत्वम বঙ্কেণ পুৰ্ভতো মাণ পুগদ্যতে। অ-ष्ट्रेनकावज्ञ इल्लामि वमुकात् ॥ নানেবার্টন কালে তৃ যন্ত্রসত্যুং পুভা-यञ् । नवस्थात्रत्राश्च न द्वाष्ट्राधि वमृत्रस्त ॥ অविधारनन मा• न्यृनाः यञ्च माः भुजि**भम्राज्ञ। मन्मम**क्षाभन्नायः ন্ত মম ঢাপ্রিযকারক•।। ক্রন্ধ ভৃন্ত্যা-নি ক্রমাণি স্কৃতে ক্মকারকঃ।

এচাদশাপরাধন্ত কল্ল্যানি বসুন্ধরে ॥ অকর্মণ্যানি পুয়াণি যস্ত মানপ-क्लुरियः। चारमकाश्रदाश्च क्लुरा-মি বসৃদ্ধরে॥ যস্ত রক্তেন বক্তেণ কৌ সুস্ত্রেনোপগছতি। ত্রযোদশাপরা-খন্ত কল্প শনি বসরুরে !! **অন্তকালে**-পি না॰ দেবি यः স্পৃশেত কদাচন। ठ ज्रूमाभवाष्ठ कल्ल्यामि वमक्रात ।। यस कृत्कन वरञ्चन सम कर्मानि का-त्रस्थ। পঞ্চশাপরাধানি কল্পামি ব্রাননে ম অখৌতেন চ ব্জ্রেণ যস্ত মানুপকলুতে। যোডশভুপরাধানা कन्नगि वज्ञानत् ॥ श्रयमञ्ज एग मन्द्रात ज्ञानाग ह गायवि । अधन-শাপরাধ্ত হলুয়ানি বসৃন্ধরে ॥ যন্ত মৎস্যানি নাংসানি ভক্ষযিত্বা বরা ননে। অষ্টাদশাপরাধানি অনুজাতা নি মাধ্বি ৷৷ জালপাদ ভক্ষিত্বা ষস্ত নানুপদৰ্গতি। একোনবি শা গরাধ প্তিজানানি সুন্দরি ॥ যস্ত **নে নীপক∘ স্প্**ষ্টাবোমা• স্শৃ**শ**তি মা-ঘবি। বি॰শক্ঞাপরাধানা॰ কল্পয়। नि वदान्ति॥ भाभान यस्र देव गद्मा त्या मात्मवा जिमह्यि। वकवि भा-श्र प्राचानि कन्नयानि वमुक्तरव ॥ लि শ্যাক ভক্ষবিত্বা ভূবো মানেবোপ-क्ति। हावि॰मं ज्याशबादाना॰ जा-

नाइ॰ हाभक्लाय ॥ यस वातास মা সানি পাগণেনোপপাদ্যে । অপরাধ ভ্রযোবি শ কল্পামি ব-সৃন্ধরে ৷৷ সুরা পীত্বাপি যো মর্ত্যু ক্লাচিদ্পস্পতি। অপরাধ চত্ र्विः भः कन्नयानि वमुक्तरत ॥ यः अन् **ম্রঞ্চনে শাক• ভক্ষ** বিদ্বোপ চক্রনে। **ञ्चभद्राथः भक्षविः मः** कल्लगाचि वम् **ন্ধরে ৷৷ পরপাবরণেনৈ**র যস্ত মামুপ -সর্পতি। অপরাধেষু বিদ্বি:শ কল্প-যানি বরাননে॥ নবায়॰ যস্ত ভক্ষে ত ন স দেৱান্ পিতৃন্ যজেং । সপ্তবি• শাপরাধানি কল্পযাঘি গুণাবিতে।। উপানহৌ চ পুগদে তথা নেবোপ-চক্রে। অস্তাবি শাপরাধানি কল্প यामि खनादिष्ठ ॥ भन्नीतः मञ्जिद्धा তুযো না নাপোতি নাধবি। একো-নতিংশ মপরাধং স স্থায় ন গছতি ॥ अजीर्लन नगातिरही गञ्ज नान छि-গছুতি ৷ ত্রিংশ চঞ্চাপরাধানাং কল্প-ষামি বসরুরে ॥ গরুপুরাণ্যদকৃ। তু यञ्ज পুণ পুণছতি। একতি শাপর।-थ्यः कल्लगामि यमस्विम ॥ विमा (छ-र्यादि अस्तिन हात्रत्माङ्गाहेन मन् । মহাপরাধ বিদ্যেত ত্রত্বাত্রি শাপ-त्राथक ॥ इंजि वाजारः घाकि मन-श्रवाधाध्यायः ॥

ग्रायः श्रः (दहराज्यः। म ह ग्रायः च क्रमञागः॥ ७ थिवामः। नज् तः ङ्गि कर्डवग्रावशा**त्रभः मञ्जला**ज-খ্যাত ৷ ইত্যনর ভরতো ॥ দেবা-भीना भावन । इंडि स्विनी ॥ 🗱 ॥ **उज्ञान। १वडकी १० वट वृत्रीया**-म् । श्राह्यः । त्र्म्रात्नाहमः म-স্ত্রো রহশুর মুপস্থর•॥ ই**তিহেম**-हिन्दुः ॥ # ॥ मञ्जवहार्यहाक्ष्मकन বভাষণো যথা। এতে নজ কৃতঃ भव्यं कृष्मुणस्य निवायत्र । ज्खः কাশ্যঃ পুচেতাশ্চ দধীচো স্থাত্ম वाविश्व ॥ छेर्द्धा २**थ व्यवस**्ध्रण्ड िसः मात्रप्र उथा। वार्किष्रा অ্বনশ্চ বীতহ্ব্যঃ সবেধ্সঃ ৷৷ বৈ-गाः श्यु फिरवामारमा वक्तारथा গৃৎস শৌন हः। একোনবি•শতি ∢ছ`তে ভৃগবো মত্রকৃত্তমাঃ॥১৯॥ অঞ্চিরা বেধসকৈ ভরদ্বাজো ন ভাত্মক:। তথা মৃগধরো গর্দ্ধ: সি তিঃ সুকৃতি রেব চ।। গুববীত ক মা क्षा जा अमृतीय खरेंपव ह। यूवनायः शुक्ज ९ मः मुमहृ ।: महन् । वान् ।। व्यक्तभीरा कृताया**क उक्त**कः कवि রেব চ। পৃষদশ্বে। বিরূপণ্ট কণ্ रिक्वाय मृज्ञनः ॥ উত्रथाक भार ছা শচ তথা বাজিশ্বা অপি।

व्यवस्त्राथ मूहि खिण्ड वामाह्य ख-থৈব চ।। ঔৰিজো বৃহশক্তিক ঋৰি দীৰ্ঘতপা অপি। কাক্ষীবাণ্চ ত্ৰৰ-ক্রি•শৎ মৃতা হাঙ্কিরসাবরা:॥ ৩৩ য় এতে মন্তক্তঃ সর্বে কাশ্যপাণ স্ব নিবোধত। কাশ্যপঃ সহবৎসাবেঃ निशुर्दा देवम् । अव हा। अभिरंजा रम्य-লশ্চৈৰ ৰডেতে বুন্ধবাদিন: ৬। অত্ৰি ৰ্বন্ধনশৈচৰ স্বাৰাশ্বো হুথ গৰিষ্ঠিবঃ ।। বর্ণাতকো ঋষিঃ সিদ্ধ স্তথ। পূর্বা-তিথিক য়ঃ।। ইত্যেতে অব্যঃ প্লো-का मख हु८ जूनवर्यः।।।।। विना-'ধ্বশ্চিব শক্তিশ্চ তৃতীয়শ্চ পরা**শরঃ** । ত ःस ३ मृशुग्रिः পঞ্गस अवद्य-সুঃ ৷৷ ষষ্ঠস্ত নিতাবকণিঃ সপ্তমঃ ছ-ণ্ডিন ন্তথা। ইত্যেতে সপ্তবিজ্ঞে<mark>য</mark>়া वाणिश्च वृक्षवाहिनः ॥ १॥ विश्वामि-ত্রশ্চ গাধেয়ে। দেবতাত স্তথোদল:। তথা বিদ্বান্ মধুছলে। খবিশ্চান্যোষ্ মর্ষণ: ৷৷ অষ্টকোলোছিতকৈ ভূত-कीलक जावू छो। (पवन्यवा (पवन्ना-**७: भू**तानम्ह धनक्षयः ॥ निमित्रम्ह **महार्डिकाः माल**क्कायन এव চ। ब-যোদশৈতে বিজ্ঞেয়া বুক্মিপ্তাঃকৌশি-का वताः॥ २०॥ जगस्तु । २० मृष्टु मू इन्मुवान् खरेथव ह। वृक्तिश्वागखरगः **एट उ**वरः भद्रम की खगः ॥ ।। मनू-

বৈব্যতকৈব ইলো রাজা পুরুরবা:। 🛚 ক্ষত্রিযাণা বরা ছেতে বিজ্ঞেয়া মনু वाहिनः॥ २॥ जननरिक्त ७९ मक वट्नल टिक्टर एक वयः। এएक मञ्ज কৃতোক্তেয়া বৈশ্যান্য পুবরা: মৃতা: ॥ ৩॥ ইভ্যেকনবতিঃ প্রোক্তা নস্তা रेगम्ह विष्कृताः। वृष्ट्याः कविया বৈশ্যা ঋষিপুঞা স্তথা মৃতাঃ ৷৷ ঝ ৰীণাঞ্চ সু কাছেতে ঋষিপু মাঃ শুক र्ययः। इंकि माल्रा ३२७ व्यव्यायः ।। 🗱।। कृष्म 🗷 ना हा जारः यथा। जा ব্যবিজ্ঞ: সংসার করোগারে বিধে ৰ্জনঃ৷ ন যাবৎ কৃঞ্সপ্ৰঞ্চ পুৰ্যপ্ৰোতি গুৰুবজু হং । কৃ হক্ম ভাগ ৰূপ নি शासाहितकात्रनः। सामाकारनारहरः কর মাশাপাশ নিকৃষ্টর । গোলো कमार्ग (माभानः निखान वीक कातः ণ । ভক্তাঙ্কুর ষ্কপঞ্চ নিত্য বৃদ্ধ ন্নপ্রে ।। সারঞ্জ সর্বভপসা বো-गानाक **टरियत हा मिक्कीना॰** दिन भागाना वृजामीनाक निन्हिज्यामा नाना॰ जीर्थ मानाना॰ यद्धानीना॰ भूद्रनाद । जभाना मूभवामाना मि-जार कमलाख्यः॥ भूग्माः लक्नः লিতৃণাঞ্চ শত মাতামহস্য চ। পূ য় পর**ঞ্চত ম গথ্য পিতর মাত**্ वः एकः ॥ गरहाम्त्रः कलबक् वृक्तः

শিষ্যঞ্ কিন্ধরণ। সনুধ্বরের খশুরণ ध्यः कन्याक उत्यु उः ॥ व्याचानक म ठोर्थक खक्र म द्वी खाताः मूछ । উদ্ধরেদ্বলবান্ ভক্তো মন্ত্রগৃহণ মা-ততঃ ৷৷ নজ্ৰ গুছণ নাত্ৰেণ জীবনুকো ভবেরর:। তৎস্পর্শ পূত্র স্তীথৌ ঘ: निष्ठः भू जा वजुक्तत्रा ॥ অনেক জন্ম পर्याञ्च भीकाशीला खरवसदः। छ-দান্য দেব মৃত্ত্রঞ্জ ভতে পণ্য শে-यउः।। 🗱 । मध्यस्या भारत्वा ना॰ कृषा (मता॰ बन्धा छ:। वा छर छ ह त्रावर्षा-खः नाक्षिगः नर्व कर्ष्यगः ॥ जन्म बगः ভाञ्कत्रक निरम्बर भानतः भृतिः। वा-ভেদ্বেশ মজ্ঞ সর্বিমু হর পর ॥ बन्भ बर्गः छः निरम् तर्र निर्विष् कः छः (वन्नतः। विष्नुभन्। भूनाप्न पित्। द्धानः वर्ण्यद्रः॥ छमा द्धान भूमी-পেন সমালোচ্য মহামতি:। অ-क्कानाञ्च उत्भा हिद्दा भशामागा ७-জেমর: ।। বিশুমাধাঞ্চ পুকৃতি দুর্গাণ मर्गिञ्जामिनी । मिकिना मिकिन পাঞ্চ পরমাণ সিদ্ধযোগিনীণা বাণী क्राक्षभगाक जुना क्षिश्यादिः काः। नाना क्राः जाः निरम्तर ज्ञाः नाः भेडकः नद्रः॥ ७९ श्रुमामान्छ-(वे प्रकानो क्रानानना ज्ञान ज्ञान । क्षञ्जानाथिएतव गराञ्जान म

नाजनः॥ निवः निवस्क्रशकः निवसः। निवकात्रगः। भत्रमाननः क्रथः भतः माननरमायिनः॥ मूथमः (माक्रमरिक व माजातः मर्बमम्मनाः। यमतद्रभू मरेक्षव मीर्चायश्रुभूमः भवः ॥ इन्तृः पुक मनुष्क माजू मेळक नीनगा। त्रारबन्तुः त्रुपुररेष्ठव ज्ञानर• इति छ-किर ॥ अग्र वय नगाताय हामू তোষ পুসাদতঃ। সর্বদস্য বরেণৈব निर्याल ज्ञान मालल्ड ॥ निर्याल ক্তানদীপেন সুপুদীপেন ভদ্ববিৎ। ব্ৰহ্মাদি তৃণপৰ্য্যন্ত সৰ্ব মিথ্যৈব প-**ग**्रजि।: দয়ানিধে: প্রসাদেন শঙ্কর : স্য মহাত্মনঃ৷ বরদস্য বরেণৈব হরি-ভক্তি॰ লভেৎ ধুব॰॥ তদা তদ্ভক্ত সংসর্গাৎ কৃষ্ণমন্ত্রণ লভেৎ ধুরণ। ত দা নিবৃত্তি মাপ্নোতি সারাৎসারাণ পরাৎপরা গা যত্র দেহে লভেমপ্তর• তদ্দেহাবধি ভারতে।তৎপাঞ্চভৌ তিক ত্যকু। বিভৰ্ত্তি দিব্যৰূপক।।। करतां जि मामा भारतां के रेव मर्थ বা হরেঃ পদে। পরমানন্দ সংযুক্তো মোহাদিষু বিবজ্জিতঃ॥ न বিদ্যতে পুনর্জন্ম পুনরাগমন সুর। প্রশ্চ ন निरवट कीत धृदा भाव्यन भन्।। বিষ্ণুমজোপাসকানা গঙ্গাদি তী-র্থ সেবিনা। স্বধ্যমিণাঞ্চ ভিক্ষণা।

পুনৰ্জ্জন্ম ন বিদ্যতে।। ইতি বৃক্ষবৈবং র্ভে পুকৃতিখণ্ডে: ৩৩ অধ্যায়: ॥ #।। শিবমন্তা যথা। পুথম• শৃণু তন্মত্র ততো হনুধ্যান গোচর•। ততঃ কন-ন্ত পূজাযা: ক্রমাদ্বিত্ত• নর্মভৌ।।। সমস্তানা॰ স্বরাণাস্ত দীর্ঘাঃ শেষাঃ সবিন্দুকা:। ঋ ৯ ক্ শূন্যা: সার্দ্ধত ন্। উপান্তে নাভিস•হিতাঃ॥ এভিঃ পঞ্চাক্ষরৈ মন্ত্রণ পঞ্চবক্তুস্য কীর্ত্তি-ত । ক্রনাৎ সন্মদ সন্দোহ মাদ গৌরব স•জ্ঞকাঃ॥পুাসাদস্ত ভবেৎ **भियः পঞ্**মজाः পুকীৰ্ত্তিতাঃ।একৈ-কেন তথৈবৈক বক্তু মন্ত্ৰেণ পূজ-যে ে। এক সমূদিত কৃত্বা পঞ্চতি वी भूभूकराए। भागारमगाय वा भ-**कर**कु॰ (हर शूश्रहाराष्ट्र ।। अग्रहा-দিযু মন্ত্রেয় প্রাসাদন্ত পুশস্যতে। नाष्ट्राः श्रुनाम् त्वति ययात्रृ बस्र भ-खकः ॥ (जन श्रात्राम मः (द्धा १यः कथ्या मृनिभूक्षरिः। उम्राट् मर्खः यू मञ्जय श्रामानः श्रीजिनः शुखाः ॥ यामानकात्रकः मञ्जा र्याञ्जः मः यर উচ্যত। मनः भुभ्रगम्हाणि जन्तारः পরিকীর্ত্তিতঃ॥ আকর্ষকো ভবেশাদে। গুৰুত্বাদ্ধৌরবাহ্বয়:। এ-তদ্ব্যস্ত: সমস্তঞ্চ মত্র: শস্ত্রো: পুর্কী-र्ভिङ्गा भक्षाक्षत्रक यमञ्र भक्ष-

বকুদ্য কীৰ্ত্তিত। যুবাণতেনৈৰ মজেণ আরাধ্যতমীখর 🔃 ইতিকালিকা পুরাণে ৫০ অধ্যায়ে বেতাল ভৈর বৌ পুতি বশিষ্ঠ বাক্য ।।#॥ মজস্য ত্রিবিধ জপো যথা। বাচিকশ্চ উ পা•শৃশ্চ নানসশ্চ ত্রিধা মৃতঃ। ত্র-यागां क्र यद्धानां (नुयान् नापू ভরোত্তর:॥ যদুচ নীচ স্বরিতৈঃ স্পষ্ট नम वमकरेतः। मखगृहातरमहाकः क्रश यद्धः म वाहिकः॥ भरेन क्हा-त्रराज्य भीवरमार्छी शुक्रावागन्। किथिए भवा वया विम्यामुनाः भुः স জপঃ কৃতে: ৪ জিলা বদক্র **দ্রে**ণ্ডা वर्गाहरः गार्थं अम्या मचार्थ हिन्छ-নাত্রাস: ব উক্তো নান**সোভপ: 11** ্তন হল দি সুব্যক্ত বর্ণোচারণবান্ সাচিক: । **ষ্য• শব্দগৃহণ মাত্র**যো-গ্য কিঞ্ছিদ্বানুপা শু:। জিস্তোষ্ঠ हालन मस्टरत्र वर्गानुरु साञ्चरका मा-ాमः। 🗱 ।। व्यक्तिक भूरहे छ भ निरयः খ্মাই শহুঃ। নোটো ভাপ্ত বৃধঃ অ-র্য্যাৎ সাবিত্যান্ত বিশেষতঃ। যো-গি যাজ্তবল্পঃ। ন চংক্রন্ন বিছ-जन्न शार्श्वनदलाक्यन्। (नाशा-শ্রিতো ন হল্পাস ন প্রাবৃতশিরা স্ত थो।। न भरा भार बाक्या, नरेंद द-रिः पात्री मृत्वी दिनव दिश क्रका

क्र्य्राए नि मंभावायन्त्रभः ॥ छै-खिक्षन् वीकारमाता २क्रमामीनः शा-ভ্যুথে। ব্ৰূপেত। প্ৰাক্ সলেন্বেব মা-সীনো ৰসানো বাসসী শুভে ॥ বৃদ্ধ-मनुः। यि महा हिम्यामा रेव वा त्र মধ্যগতে। জপেৎ । অন্যথা ভু শু-চৌ ভ্ন্যা কশোপরি সমাহিতঃ ॥ ব্যাসঃ। জপকালে ন ভাষেত বুভ হোমানিকেষু চাএ:ত শ্বেকাৰশক্তন্ত यम्रागहरू दिकालगः॥ पन्निप म्र ज्ञा विशु॰ याग क्या क्वी की य् । यागि या छ दक्काः। यनि वाश-न (बाशः न्या ६ ब्रशामियु कराहन। **व्याह्यदेखक्व भट्ट भ्राद्य विकृ** মব্যয় ।। গোভম: । ক্রোধ্ মোহ ক্ষত নিদা নিষ্ঠীবন বিজ্ঞিত। मर्भान विनिजानाक वर्ड्स्यङ्क्श क-র্মাণি ॥ আচামেৎ সম্ভবে চৈষা॰ न्यद्रिष्ट्रिः जुद्राहिं छः। वोधायनः। नार्ভद्रथण मः नार्भ कर्यकारण वि-वर्द्धार्थः। ইত্যাহিকাচারতত্ত্বः।। 🗱 !। मञ्ज भदमा वृद्धभि विषा। मनना-প্রায়তে যুমান্তমানতঃ পুকীর্ত্তিঙঃ ॥ 🗱 ॥ मञ्ज नीका द्रश्चिताः (हाः रा यथा न भारत्क । अभीकि-তানা মর্ত্যানা দোষ শৃণু বরাননে । অম॰ বিষ্ঠা সন্ তস্য জল মূল

সম শ্ত ৷৷ তৎ কৃত তস্য বা শা-দ্ধ সর্ব• যাতি হুধোগতি•॥ 🗱॥ म् मुन्। मखिविष्मय निरम् नाइ छः <u>ख्य । श्रु</u>गवाम्यः न माञ्चयः मञ्जः भू पाय मर्वथा। व्याज्यनखः एताः **মত্র**ণ ম**ত্র**ণ চাজপ স•ক্তকণ।। স্বাহা পুণব সংযুক্ত শূদে মঞ্জ দদদ্বিজঃ। भूत्रा नित्रय नाल्यां उ वाकारा या-ত্যখোশতিশা শুতি রপি। সাবি बी॰ भुगव॰ यज् लंखी॰ खीम् मुर्या র্নেছন্তি। সাবিত্রী পুণব যজু লক্ষী खीम्एम्। यति कानीया भग्छ। १ ধো গছতি।। বিশেষ মাহ বারাহী যে। গোপালস্য মনুর্দেযো নছেশ। ग्र जू भाराख । ७९ भन्न्राकाशि সূর্য্যস্য গণেশস্য মনু তথা ॥ এবা দীক্ষাধিকারী স্যাদন্যথা পাপ ভা शुर्व । 🕸 ॥ नष्ठ भीका भूण मा यथा। भाविनस्वृनसायता अभीकिः তস্য নরণে প্রেতত্ত্ব নচ মৃঞ্তি। নবরত্বেশ্বরে। সর্বাসাম্পি দীক্ষাণাণ মুক্তি: ফল মথণ্ডিত ৷ অবিরোধা-ভবস্তোৰ প্ৰাসন্ধিক্যস্ত ভক্তবঃ 💵 छथा। উপপাতক লক্ষাণি মহাপা-छक (कार्रेयः। क्रगाम्दर्श (स्ट्विन দীকা হি বিবিনা কৃতা।। 🕸 ॥ 🗃 ত্রাপ্রনূত্র মন্ত্র भेष्क्र । স্বতার

রাশি কোধানা অনুক্লান্ ভরেম-নূন্। বারাহীযে। তারাচক• রা**লি**-চক্ৰ নামচক্ৰ তথৈব চ। অত্ৰ চেৎ সন্থণো নম্বে। নান্যচক্রণ বিচার্যেৎা। ইতিপাধান্যত্ত্বা বোধ্য । তথাচ। थनिमञ्जू गृङ्गीयामनुक्व खरेश्व ह ।#। ইত্যাদি দর্শনান্তত্ত চকবিচা-রস্য আবশ্যকত্বাৎ পুথম• ভন্নিক্ প্যতে। সিদ্ধসারস্বতে। তত্ত্র নৃসি• शक वदाशाना भागाम भूनवग्रहा সংপিশুকর মজাণাং সিদ্ধাদীদৈব **(मा**थ्ययः ॥ स्थनः क्विया मख भानामत्य ह बाक्रदा । विकिक्यू **ठ मञ्जर् मिकानीरेमर अगान्यर !!** भावानञ्चस वादाशीय । वि: भंज र्गाक्षका मखा मानामखाक के खि-তাঃ ৷ নপ্•সকস্য নজস্য সিদ্ধাণী रेबव (भाष्यवः।। इःन न्याञ्चाक्षत्र न्याः। পি তথা পঞ্চাক্ষরস্য চ। এক দ্বি-जाि वीजमा मिकारीयव लाब-(१८॥ उथा अकाक्षत्रमा महाना मा-ना मञ्जमः भावंजि। विकिमा ह मञ्जमः जिकामीयिव (नाश्यय ।। তথা চামুগুাতক্রে। কালী তারা महादिन्ता (वाउमी ज्वत्यत्री। टिज्जवी हिम्मस्था ह विन्ता थ्नावजी **७था।। वगना निक्**विर्ता ह माउ**नी**

ক্ষেল্ডিক এএতা দশনহাবিদ্যাঃ পিছবিৰ গ্ৰহ পুকীৰ্ত্তিতাঃ॥ নাত্ৰ সি-क्षाप्तराभक्षा न नक्षव विচারণা। ভালাভি শোধন নাতি নচানিতা। कि प्रमुख 🖟 शिक्षविन्ता ज्या नाज শুগ দেব। পরিশুসঃ। নাতি কিঞ্চি अस्तानि मृत्य मार्था कथ्यन ।! #॥ भृथिवतः वृत्यक्**तभूना भ**श्विन्ता ग्या का विकारिकस्य। अथ वक्षा मक्षा गण प्रमाविष्ठा महीजला। राष्ट्र नात्त्र र व न्यूष्ट्री खाः मर्बा हि ेवः वर् । अवी नीवा महापूर्णा क्षेत्र व क्रिज्ञ उक्। वाद्यां हिभी ठाम-क्षण ७०० ५०) क्या भूनः॥ काना-च्छा कामको ता**ला गाउदी लिल-**ः लिले 📑 स्राः मकवा विराः क्रांती १९ 😑 शुराः ॥ त्रिष्क्रनख उ. ৰা নাত বুগলাবা পরিশুনঃ। তথা रैस्टा वक्षावन्ताः कनिरमायाम्याः 🍕 🕝 🔌 🕏 र বচনাদেষু বিচারে। नाजि । तः वित्र देवः शुक्षः भागावतः। জনত ি ं গ্রহশাকেত্ব। দুরদৃষ্ট া কলা বৈরি নজস্যস্থাদৌ শু ত ভভাদ। যস্য দৃষ্টবাৎ। ইতি ः अपन्युनाविकाः ॥**#॥ নত্তোদ্ধा** ाथ यह इक शुगानानि हक मास मुद्रे व्यानि : उद्याः लियन शुकाद्रायथा।

হ্বলাহ্বলচক্র•

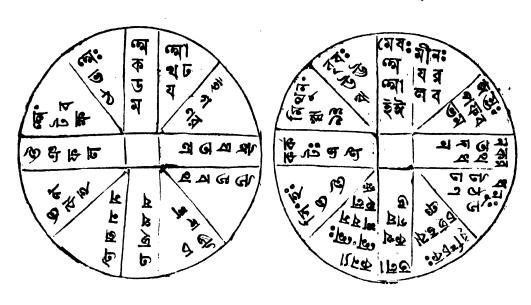
क्या का ब	ल इंस्का है त्या है ल	ब्बाद्धा
कावा•	ANGRUND TO	ভ
ज्रिक:		हें जि
क्ष्मिर् _ग ड	নী সাহা ত পথাৰ চিপা।	ट्या चिक् भू उ
वारः	ह म ज वें ल टा वा श ह ज	

নেকথহচক•

ন্দ্ৰেক	উ	न्त्र।	ङ
থ হ	ড প	थ म	इ क
ভ ব	১ বাম	₹	व य
के	শ্বা	ই ·	প্থ
घन	জ ভ	গ ধ	ছ ব
ন্দ:	े	ন্দ্ৰে•	এ
ভস	ठे व	ণ ষ	ট র

নন্ত্ৰ শ্মকডমচক্ৰ•

নক্ষ রা**পিচ**ক্র•



নক্ত্ৰচক্ৰ

ন্দ্ৰ ন্দ্ৰ। ১	2) ၁	작왕 8	Œ	প্র	હ હ	*	প্রণ ক্লাক্ষ্ণঃ
प्रदः	Б	রাক্ষসঃ ছ জ	ঝ ঞ	हेर्च	भान् यः फ	দেব: ঢ ণ	उ थ म	र्थ
<u> </u>	२२ मान् यः)२ मानूयः) ১৪ রাক্ষসঃ) ५ ब्राक्ष्मः		্যুদ রাক্ষস
ন প ফ ১৯ রাক্ষসঃ	्व २० भानू यः	ভ ২১ নানুষঃ	म २२ (দवः	যর ২ ৩ রাক্ষ সঃ	্ব ২৪ ব্যাহ্মসঃ	ব শ ২৫ সানুষঃ	य म र २५ भानू यः	জ্ব-জ্ব: লক্ষ্২৭ দেব:

ঋণিধনিচক•

5	১	১	0	0	8	8	0	0	0	2
ন্মে ন্মো	70 ST	स्र सर) 항	2 %	g	ঐ	ઉ	B	ন্দ্ৰ•	ন্দেঃ
ক	થ	গ	ঘ	G	Б	ছ	জ	ঝ	क्	ढे
ठे	ড	G	9	ত	થ	म्	व	न	भ	ফ
ব	७	ম	य	ব্ল	व	ৰ	न	য	স	रु
2	2	3		0	i 2	12	0	8	8)

स्वजात्क्रम प्रतिवादित्र त्रावण्डकः

क्रिक्ट विक्रिक्ट विक्रिक्ट विक्रिक्ट

क्रिक्ट विक्रिक्ट विक्रिक्ट विक्रिक्ट

क्रिक्ट विक्रिक्ट विक्रिक्ट विक्रिक्ट

क्रिक्ट विक्रिक्ट विक्रिक्ट व्यक्टिक विक्रिक्ट

क्रिक्ट विक्रिक्ट विक्रिक विक्र विक्रिक विक्रिक विक्रिक विक्र विक्रिक विक्रिक विक्रिक विक्र विक्रिक विक्रिक विक्रिक विक्र विक्र विक्रिक विक्र विक्र

নেনাপি ভন্মনা বাথ সু বুত। কাশ্মী-त मिकि माकारत **ठगरनः रे**वस्थरव মনৌ II **শৈ**বে ভন্ম সনাথ্যাত্ত• না-ত্ हा यञ्जलिथान। मञ्जानाः मा वृका যত্রাদুদ্ধারো জনন মৃত গাপ জিক গেণবিধিনামুনিভি স্তত্র নিশ্চিতণ সা विष्ठातिएमी इनिनार्ग कर्निक महा॰ म्र-ল্যিঃ মুরংকেশরং বর্গেল্লোসি বসূচ্চ দ• বসুনতী গেছেন সংবেপ্তিত। আ माविभिय वाउ वाक् वियुषा (क्रोनी পুরেণাবৃত্ত যত্ত্র বর্ণতনোঃ পর নি গদিত নৌভাগ্য সম্পৎ কর।।। यखना मिक्कू व॰ विमिक्कू ठे॰ निरथ्र। তথা চগৌ ত্রমীয়ে। কাদি নাস্তাঃ পঞ্চ वर्ग। निक्क् भूबी मिरा न गरम । यानि वाडाः नामि शाखा लक्ष गीत्म भू বিন্যসেৎ ॥ চতুরসু• চতুর্দার• দিক্ষু व रे विषिक्षु छ। ই छि मा क् हा गञ्छ र াঞা। পুণবাভরিতান্ কৃত্বা মক্সবর্ণান্ জপেৎ সুধीः। পুত্যেক শতবারন্ত क्षीवन• **उ**ष्ट्रहाइ उ॰ ॥ २ ॥ मञ्जवर्गान् ममानिथा ठाए:यहन्दनासमा। भु (७)क॰ वाग्वीरकन भ्रवेचखाउन॰ ग-। ত॰।। ०॥ विविधा नञ्जवर्गा॰ स भूम् নঃ করবীরকৈঃ। তন্মজ্ঞবর্ণ সংখ্যা 📗 हित हर्नामुख्यादायन ॥ ८॥ उङ মত্রেক্ত বিধিন। অভিষেকঃ পুকী ॥

র্ত্তিতঃ। তম্প্ররে। মজস্য চামুক•-বর্ণ নভিষিঞ্চানি হুদ্নত । ইতি বচ-नाट भुः छ। क निर्विष्कर। अभय পল্লবৈঃ সিঞ্চেং মন্ত্ৰী মজ্বাৰ্ণ স•-थ।या। १। मिक्छि । मनमा मञ्ज मूमुना ন্ল মধ্যত: ॥ জ্যোতি মজেণ বি-थिव< मरङ्ग्रल खन• यञी। जात्र• (वज्ञान। वि नन्युक् रखी ज्ञाजि मन्-ম্ব তঃ।। তার • পুণবঃ বেগান হকার: व्यादिकः नन्दोकातः रखी वन्ध।-রঃ॥৬া স্বর্ণেন স্কান্ডােষ্টেন পুত্রতাে যেন বা তথা। তেন নত্ত্রেণ বিশ্বিবদা-**श**्रायन विविध्या उक्षा भागत्व्यव वाजिः ণা নক্ষে ত্রনা তলণ নত। নধুনা णिक गञ्जयू देवकात इन्युगब्हारेनः ॥ শৈবে ঘৃতেন দুখেন তর্পণ দম্য-গীরিত•। অভিষেকে**পি** তথা ॥ ৮!। তার गाया রনাযোগো गना फी शन मू ५ (७) २। जभ ५ मानमा मञ्जमार्गा-পনত্ত্বপুকাশনগা>০।। সংক্ষারা দশ সংপো্জা: সর্বতম্বেরু গোপিতা:। यान् कृद्धा मल्युतात्मन मंखी वाष्ट्रि मानु याए॥ #.। ननवंग भिठि वा-नवाः गाविकः कार्याः । भुभक्षमाः, (त्र) नाविकः नाम (यारवान्यः (भो. ৰুষ কাৰ্মণ মল। আনব্য তৎ-ঘবংপোক্তং নিষিদ্ধং তন্মল এবং॥

न नवः अनवः जम् छावः आनवाः वृष्कञ्ज निज्यर्थः ॥ जात्र भाषा त्रना যোগ ইতি। তারনাযা রমাবীজ পু-টিত মন্ত্র মাত্র শত জপেৎ ইত্যর্থঃ। তথাচ বিশ্বসারে। ভার **गाया त्रमावील পুটিতেন মনু•ेक**-(१९८ । শতमञ्जाङा खत्रोक्षव ही भाराष्ट्र नाथकाखनः ॥ 🛊 ॥ ज्रथ मृन्धम-कः। जाय मूर्गा मनु वरका मृष्टे हि कन भूमः। गायापुः कर्गविन्नाए। ज्र्या १८मी मर्गवान् ज्रवर.॥ भक्षा-🏶 🌣 পুতি চাৰণন্ মাৰুতোভৌতিকা-जनः। जादापि वृत्या**ला व्यः म**-्या तत्रकत्राचान्यः॥ चार्ति र्मकातः। মানী প্রায়ে, প্রেঞ্চান্তকো প্রকার:। পুতি গাড়াকা **া নাক্তো যকারঃ** १८ जो जिस क्षेका है। उँ ही पु॰ मर्गा-ै। ननः ॥ कः । **अथ विकृ मञ्जः।** अप्रान्तिकार निर्माः े। लत्रःना भाग मस्त्रा २ग॰ র: পর: ॥ ওঁ নলে। 🐃 🎺 🔭 🏞 🏻 অথ শিবনত্তঃ । লাভ নৌকার সংযুক্ত বিন্দু ভূষিত मछकः। शुक्तामात्या गनुः (भुात्का छक्राः कामरना मनुः॥ स्था क्षा ॥ ₩॥ অ্থ গণেল এব্ৰঃ। পঞ্চান্তক শাল-ইর॰ বীদ্ধানগতে স্থিদুঃ। পঞ্চান্ত-

का गकातः। भँ। का। अय मृत्र ন্ডঃ। তারো ঘৃণি ভূঞি: পশ্চান্তা-भक्षं विভृषि ३:। वहात्र नता भक्ष **भिवः म**(नेखा २ पि स) भिक्ताः ॥ **অপ্তাক্ষরোমনুঃ প্রোক্তো** ভানো র-किंगडः भद्रः। ७ घृति भूगं। जानि-ত্য।। 🕸 ।। পঞ্চেব্তানামেক একো মত্রে। বিথিতঃ ৷ এতাসামন্যাসা-ঞান্য নত্রা গুম্ব বিস্তার ভযাম লি-থিতাঃ ৷৷ # ৷৷ কলাবাগনোক্ত নত্ত্ৰ ज्ञ विधि यथा। आगत्माक विधा-নেন কলৌ মন্ত্র' জপেৎ সুধীঃ। ন-हि (मवाः भुनीतिष्ठ करनो हान। वि-ধানতঃ।। তথা। কৃতে শুত্ৰুক্ত সাৰ্গঃ স্যাৎ ত্রেভাষা॰ ফৃতি সম্ভব:। দ্বা পরে তু পুরাণোক্তঃ কলাবাগম স-ম্ভবঃ ॥ মত্রার্ণা দেবতাঃ প্রোক্তা দেবতা গুৰু ৰূপিণী। তেষা • ভিদা-न कर्खवता यभीरहरू छ माजानः ॥ 🗱 ॥ পিত্রাদিতো মন্ত্রগৃহণ নিষেধো যথা । পিতুর্মদ্র॰ ন গৃহীয়াৎ তথা নাতা गरुमा छ। (माम्ब्रमा क्निक्षमा दिद्धि পঞ্চাশিতস্চ ।। ন পত্নী • দীক্ষযে • ভৰ্তান পিতা দীফ্ষেৎ সূতা। ন পুএক তথা ভাতা ভাতর নচ দী-ক্ষবেৎ।। সিজনব্রো যদি পতি স্তদা পত्नी म नीक्षाय । मिकिएन वज्ञा-

রোছে নহ সা কন্যকা ভবেং।। ত
থা গণেশবিন্ধিণ্যা । যতে দীকা
পিতৃ দীকা দীকা চ বনবাসিনঃ।
বিবিক্তাশুনিণা দীকা ন সা কল্যাণ দাযিকা॥ ইত্যাদি নিষেধ
বচনাদেভ্যো মন্ত্রণ ন গৃহীযাদিত্যর্থঃ। ইতি তন্ত্রসারঃ॥
মত্রক্থ পুণ মন্ত্রী। মন্ত্রণাকারকঃ।
ইতি সিদ্ধান্তকৌন্দী॥
মন্ত্রগণ্ডকঃ পুণ বিদ্যা। ইতি হারা-

भञ्जगृषः भू• हतः। **३७ भद**तनाः वनी॥

वनी ॥

শত্রগৃহণ দ্লী মত্রণাগারণ। অস্য পুনাণ মত্রণাশদে দুষ্টব্যণ।। মত্রজান্ত্রী মত্রশক্তিঃ। ইতি পুরাণণ মত্রজিহ্বঃ পুণ অগ্নিঃ। ইতি হেম-চন্দুঃ।।

মন্ত্রজ্ঞঃ পু• চরঃ।ইতি হলাযুধঃ॥ মন্ত্রজ্ঞাতরি ত্রি॥

মত্রণ ক্লী মত্রণ।। মত্রধাতো র্ভাবে অন্ট্পুত্যযেন নিষ্কমণ।।

মত্রণা স্ত্রী রহসিকর্ত্র্যাবধারণ । ইতি মত্র শব্দ টীকাথা ভরতঃ।। মত্রঃ। যথা।বাদী মুক্তিরঙ্কতি ক্ষি-তিপতি বৈশ্বানরঃ শীততি কোধী শাম্যতি দুর্জনঃ সুজনতি ক্ষিপান্গঃ

থঞ্জতি। গৰী থৰাত সৰ্বাদ্দ ---তি ত্বমন্ত্রণা যত্ত্রিতঃ শ্রীনিত্যে বগ-লাম্থি পুতিদিন কল্যাণি তুভ্যু-নম: ॥ ইতি তম্রসারে বগলাস্তো कः।। #।। मञ्जनायाः दर्गनीयानि यथा। মঙ্গে পঞ্চাস্তা শক্তি যাড়ুণ্যোপা-य जिक्षयः। উদया क्विजनीयाक रेक्ट-र्य्योमञ्जानि সূক्তगः ॥ ইতি কবি-कन्नवा।। #।। व्यक्तिवयामि क्ष मञ्जभाषा॰ (लाखा यथा। बर्ड्कर्ला ভিদ্যতে মন্ত্র শ্চতুষ্কর্ণশ্চ খার্য্যতে। षिकर्नमः ज् भजमः तुकारभारका न वृष्राउ ॥ इंकि गाक्ए ১৯৪ व्यथ्रायः ॥ 🗱 ॥ त्राद्धा विम्रामि 😎 युक्त विश्वा मिलिशः कार्यमः । यथा । मखिनस नृभः सर्गाष्ट्रभान् विम्ता-विभावमान्। विभक्षाः क क्लीनः क **धर्मार्थ जनना**न्जून् ॥ मञ्जरयदेख **गग॰ कार्ल नाउ**।र्थ॰ वङ्जि कार्त्र ९। একৈকেনৈৰ কৰ্ত্তৰ্যণ মাত্ৰস্য তু বিনি-**ण्ड्य• ॥ वर्रेख रेण्डव मगरेखण्ड वानर** म) व। भारतमा ७:। ययः वृखः म ज्ञशृहः **ङ्न व्याक्श भ**ञ्जस्य ।। व्यवस्ति निः-भवारक वा न यामिन्रा॰ कनाइन । শিশূন শাথামৃগান্ পঞান্ শুকান্ रिक्नाद्रिका॰ खथा ॥ वर्जरमञ्जूल-(क्षु भन्य)।नृक्ठाः ख्या। मृष्यः भञ्जः

मखरा

ভেদেৰুন্পাণা যত্ৰ জায়তে মান তৎ नगुक् नगाभाजुः मरेक न्रा भरेज রপি। ইতি কালিকাপুরাণে ৮৫ व्यवतायः ॥ 🗱 ॥ व्यथं मञ्ज निर्नयः । মন্ত্র মূল• যতো রাজ্য• ততো মন্ত্র• সুরক্ষিত । স্থ্যাদু জো সদা মন্তান্ कर्माना माकला प्रयाद ॥ अर्थान থৌ হি যবোভৌ সংশ্যশ্চ পরী ক্ষ্যতে। সমস্ত ইতি বিজ্ঞেনঃ শে-ৰাশ্চ থলু বিভুমাঃ।। একমেব বিষ• হন্তি শক্তেণৈকশ্চ বধ্যতে। সরাষ্ট্রণ जम्मर रुष्ठि त्राजान मञ्ज विश्ववः ।। করিষ্যন্ন পুভাষেত কৃতান্যেব जु नर्भरय । धर्मार्थ काम कार्ये। नि কৃতো মত্রো ন ভিদ্যতে॥ গিরিপৃষ্ঠ দূপাক্ষ প্রাসাদ্যা রহোগতঃ। শ্বপথে নিঃশলাকে বা তত্ৰ মস্ত্ৰো বিধীয়তে ৷৷ তত্ৰ সাম পুযোক্তৰ্যু कार्य्ययु ७१ वर्मि । मान मुक्त ংপি ভেদশ্চ শক্ষিতেশ্বপি নিশ্চয়ঃ ॥ बड म्काक्ष विधितान् जियं। शानीन् वरवाविकान्। जीत्मह वराशिक वर् कान् मखकाल निरम्थरयथ।। इंडि সম্পতত: প্রোক্তা রাজনীতি রিন্ गया। यधिवर्गा विकक्षः मामुख नीि उद्गाउ ॥ इंडि युक्किन्न তরৌ নীতিযুক্তিঃ।।

মস্রতঃ ব্য মস্রা**ং। ইতি সিদ্ধা**ন্ত कोमूनी ॥ मञ्जलाञा जि मञ्जलानकर्जा। ७वः। यथा। मर्दियाक खनाक बग्नाजा পরে। গুৰু:। পিতু: শতগুণৈ র্মাতা भूबारा वन्ता गत्रीयभी ॥ विन्ताना-তা মন্ত্রদাতা জ্ঞানদো হ রভজি-**एः। भू**रकारा वन्तरमह स्मवरमह माजूः **मउद्धेत** र्छकः ॥ मख मूजिद्रातिन ব গুৰু ব্নিভ্যুচ্যুতে বুধৈ:। অন্যো व्यन्त्रा श्रक त्रय मन् महाद्वाभिए। গুৰু:॥ অজ্ঞান তিমিরান্ধশ্য জ্ঞা-नाञ्जन भनाक्या। ठक्क्यीनिउ॰ (यन जरेम बिखद्राव नगः ॥ अही-किउम्। मूर्थमा निष्ठ् जि नी खिनि-**िष्ठ । नर्वक्यं ब**न्ह्म नद्राक তৎ পশোঃ স্থিতি:।। জন্মদাতা-মদাতা বা মাতান্যে গুরুব স্তথা। পার• কর্ত্র• ন শক্তা তে বোরে স•-नात्रनागरत्।। विन्ता मञ्ज छ्यानमाः ত। নিপুণঃ পার কর্মণি। ন শক্তঃ শিষ্য মৃন্ধতু মীশ্বর শ্চেশ্বরে। ২প-**तः ॥ ७**क विंकु र्छक व् का ७क (र्म-বো মহেশরঃ। গুরু র্যেয়া গুরু: শে-यः मर्वाचा निख्णा छकः॥ मर्वः जीर्थाम्बरेन्डव नर्दरितामुरमा छः ৰ:। সৰ্বদে ৰূক্পণ্ট গুৰুত্বপী

रुद्रिः त्रयः ॥ जजीहेरम् त करहे ह €कः मङा हि तिकाउ् । खस्रो কঙ্কে প্ভীপ্তদেবো নহি শক্তশ্চ র-किज्ः !। नर्स्व गुरुगम्ह यः व्यष्टे। यः कड़ी (रव वाजाशा: 1 उत्पद करही ভবতি एकरत्व हि रेनवजः ॥ न छः রোক প্রিকার। न গুরোক প্রিঃ मुजः। धनः भियः नव खाता नव छाः र्या भिया उथा ॥ न खाताक भारता थ्रस्य। न ख्रुताम्ह भन्नख्भः। न ख्रुता শ্চ পর• সত্য• ন পুণ্যঞ্চ গুরো: পর• ।। গুরো:পরে। ন শাস্তা চ নহি ব্রু গুরোঃ পরঃ। নেবো রাজা চ শাস্তা-ह निष्ठाभाक्ष जना खकः॥ याव শক্তো দাভূনম তাবং শাস্তা তব-ब्रनः। एकः भारः । भिष्णाभः भू **डिं इस्नि इस्नि।। मस्त्रा विन्ता** 😎क् (र्मवः সর্বলক্ষো यथा পতিঃ। পু তি জন্ম নিবন্ধে । সর্বেষা মুপরিস্থিত তাঃ।। পিতা গুৰুণ্চ বন্দ্যেশ্চ যত্ৰ জন্ম নি জন্মদ:। গুরবোনের তথা মাতা শুক্ত পুতি জন্মনি।। ইতি বুক্ষবৈব-র্ত্তে একৃষ্ণজন্মথণ্ডে শচীকৃত ওৰ স্তোত্র কথন নাম ৫৯ অধ্যায়:।।।।।।। অপিচ। মান্য: পূজ্যক সর্বেভ্য: স (वंशा जनका ভবেए। याहा यम्। পুসাদেন সর্বান্ পশ্যতি মানবং॥

জনকো জন্মদাতা চরক্ষণাচ পিডা পূনা। ততো বিস্তীণকরণাৎ কল্যা **স পুজাপতিঃ।। পি**তুঃ শত**্**ণৈ মা **जा भाषनामु**र्छ धाइनाय । वन्त्रत भूका ह नाना ह भून्वला वस्कतः ॥ माजुः भजखरेन बन्हाः शृङ्का मात्न्या १ जनायकः। यद्यमा नश्राता (मर्ट्। विकुण्ड कलवाबम्हा अवमा **তু: শতগুণো ভীষ্টদে**বঃ প্রান্তঃ ব **গুৰু স্তমাহতগুণো** বিদ্যান্ত প্ৰ **मायकः ॥ व्यञ्जान जिनिता**हरू छन्न नतीत्शन ठक्षा। यः अर्दाषः मण्य **তি তৎপর: চোপি** বাস্ক্রঃ। শুক্ **দরেন নম্রেণ তপসেই** সূত্র লভেত । সর্বজ্ঞত্ব॰ সর্বসি**দ্ধি॰ ३०, প**রঃ 🗇 **शि दाह्मदः॥ नर्बर अ**ष्ठ सर्विशी म्रया खकरख्या । जमार कृष्डा **হি লগতি কো বা বন্ধু স্ত**েই হৃদ্ধি 🖎 श विरुआः वा श्वास्त्रा वा रया मृक्तः न ভরেদুক। সোংশৃতি জীথ গ্রাতে। **९नि नाधिकाती ह क्या**नुता किन्डितः মাতর ভার্য্যা গুরুপত্নী গুরু পর াযোৰ প্ৰাতি কাপট্যাং স্বাহা भाउकी मित्रा छक् तुंस्रा छक् विसूर र्छक् (र्मरवा नर्ष्ट्रचद्रः। ७.क्रांत्रव পद्रः বুন্ধ গুৰু ভান্ধর ৰূপধ্য 🛚 গুৰু 🌣 দুৰু खर्यन्तु मह वायू मह वर्षा । १ नवः। मर्ब

क्ला हि जगवान् भद्रमाञ्चा सय । मञ्जलक् वि मञ्जकद्र नकल्ला कर्ता । अबः॥ नास्ति (वराष्ट्र भाराः नहि क्षा८ गद्र: मूद्र:। नाखि गङ्गा সন• তীর্থ• ন পুত্র• ত্লসীপর•॥ ক্ষনাবতী ভূপরা ন পুঞায়ান্তিপ-तः भियः। नह रेमवाट भन्नः **भ**क्ता बुङ रेनकाममी विना ॥ मानग्राः ন্যৎপরোযজোনক্ষেত্র ভারতাৎ পর । পর পুণ্য স্থানাঞ্প পুণ্য वृंन्तावन यथा।। भाकनाना यथा काणी रेवक्षवानाः यथा निवः। न পার্বতী পরা সাধ্বী ন গণেশাৎ श्रादा वशी।। न ह विष्ण जान। वक्क र्नास्डिक्षिकुर्द्धाः शतः। विम्यानाः णुः शूप्परातो उ<्मानो नाव मः भयः ।। ই 🤊 बुक्तिव खन्ताल गन পড়ি থণ্ডে ৪৪ অধ্যাম: ॥ মন্ত্রদীধিতিঃ পু॰ বহি:।ইতি ত্রি-কাওলেব:॥ মজপ্তঃ ত্রি মজেণপবিত্রীকৃতঃ। যথা। বুদ্ধাণী মন্ত্ৰপ্তেন তোষে-নান্যে নিরাকৃঠা: 1 ইতি মাকণ্ডেয भूताल (द्वीमाश्वा) ॥

পু্ গৰুড:। ইতি

নস্ত্রবিৎ পু॰ চর:। ইতি হেনচন্দু:।।

নত্তপু তাত্মা

थ्रज्ञिशः ॥

নজ্ঞ জ্ঞা ভরি 'ত্র॥

মজেণ স্পতি। ইতি সিদ্ধার कोमृती ॥ নজিতঃ তি নজেণসংস্তঃ। অভি-মব্রিত:। মন্ত্রে। ২স্য জাত:। ইতি गबवाराः क भुजारयन मञ्ज म माट इंड পुडारयन ह निम्नमः॥ मखी भु• নৃজ্ঞ গাতকর্ত্ব্যনিশ্চয্-কর্ত্তা। তৎপর্য্যায়ঃ। ধীসচিবঃ ২ ष्यमाजाः १। इंडामद्रः ॥ महिदः ८ धीमथः **৫ मा**मवायि**कः** ५। ইতি (इन्हन्तः।। उन्। लक्कनः यथा। म-ন্দ্রী ভক্তঃ শূচিঃ শুরো ংনুক্তো বু क्षिमान् कमी। याधिककारि छ-मलः পরিছেনী সুদেশ हः ॥ ইতি কবিকল্পলতা।।#।। বহুভি র্মান্ত্রয়েৎ কনে· রাজা মস্ত্র• পৃথক্। নত্রিণাম্পি নোঙ্কর্যান্মত্রী নত্র भुकामन ।। न कृहिए कमा विश्वा সো ভবজীহ সদা নৃণা । নিশ্চ यक जरा माद्य कार्या अत्वन मूत्रिना ॥ ভবেদ্বা নিশ্চবাবান্তি: পর বৃদ্ধ্য-र्ज्यः कार्य्या विनिम्हयः ॥ इंडि নৎস্যপুরাণে ১৮৯ অধ্যায:॥ नम् अरम्।। गारम्। इंडि कविकन्न-জনঃ।। নন্ধতি। স্বস্থঃ কৈশ্চিম্ম-

न्राउ। ইতি पूर्णामानः ॥

गष्ट ग गाष्ट्र। ইতি কবিকর্মকনः ॥

गाष्ट्र। বিলোডন । ग নথাতি দ্বি

वन्नवी। রথ মন্ত্র স হয । ইতি

पূর্ণাদানঃ ॥

मप्टः भू॰ मष्ट्रत् ७कः । इंडाप्रदः ॥ माक्तरः॥ मिनाकतः। ইতিমেদিनी া। সাক্তবো যথা। সক্তুভি: সর্পিবা-ভ্যক্তি: শীতবারি পরিপ্লুতৈ: । ্ৰাভ্যেছ। নাতিসান্দুশ্চ মছ ইভ্য ভিপীযতে ॥ ইতি রান্ধনির্ঘণ্ট: ।। পেযবিশেষঃ। তস্য বিধি র্যথা। জলে চতুত্ম**লে শীতে ক্ল্যুণ দুব্যং প**া नः किल्ला मृत्नाव महरग्र সম্যক্ তমান্ব দ্বিপল পিবেৎ 11 क्रुन ह्री क्उ। मद्राय मृषीया । ইতি ভাবপুকাশঃ॥ मात्रगः। इं**डि बिका** ७८**म वः ॥ त्विम व**॰ । इेि क्ष्रिभिः ॥ निवासमः । ইতি विय: ॥ जम्मः। इंडि मस्त्रः वनी ।। अध्नः ।। वित्नाउनः। इंडि मञ्चाज्यम्भनार ॥

মন্থ ক কী নবনীত । ইতি রব্ন গালা।।
নত্দ গুকঃ প্ মন্থানদ গুঃ। ছাঁচুনী
ইতি ঘোলমৌনী ইতি থডেন্ ইতি
চ ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। বৈশাথঃ
২ মন্থঃ ১ মন্থানঃ ৪ মন্থাঃ ৫ ৷ ইত্য

মর: ।। করহর্ষক: ৬ মন্থন: ৭ ছ-কোট: ৮ । ইতি শব্দরত্বাবলী।। তকাট: ১। ইতি জটাধর: ॥

मध्न• क्री वित्वाफन• ।। अध्न• । ইতি
मध्रशाउ। जीदि व्यन हे शुरु (यन
निष्णम• ।।

मद्रनः श्रु॰ मञ्चानम् ७:। ইতি **णद**-त्रष्ट्रावनी ॥

मञ्चवि जी पित्रञ्चलाजः।यथा। कलनी मञ्चवि मञ्जी ठालि गर्नः जी। ইতি कोरायजः॥

भइतः क्षी अभूछी। ইতি मिनि।।
भइतः भूः काषः॥ कनः॥ वाधः॥
भइतः ॥ ইতি मिनि।। भूठकः
ইতি विधः॥ मन्मगामिरगाषा।
ইতি क्षवियवर्ण अनदः॥ काभः।
ইত্যজ্यः॥

महतः जि मनः ॥ পृथः ॥ थकः ।

हेठि (मिनि ॥ जिषः ॥ हेठि निकत्वावनी ॥ नीठः ॥ हेठि (हमठनुः
महता जी (ककर्य) मानी । यथा ।
ताना हिएएक विद्यार्थः राज्य तुक्त
वाक्र छः । महताः भृविन्यामी
कित्वीक छ्छः भतः ॥ हेठ्य शायः
ताना पर्याक्य स्वादः । हर्कः भः ठामत्वाछः । वर्षाः ।
। स्टेकः २। हेठि जिका छर्नयः ॥

मञ्देगकः भू मन्द्रभवंजः। ইতি कृषिदः॥

महा जी (मिथिका। ইंভि রাজনির্ঘণ্ট:
सहा: পু॰ महानम् ७:। ইত্যমর:॥
सहान: পু॰ মছদ্ ৬ক:। ইত্যমর:॥

व्यात्रपृथः । ইতি রাজনিঘণ্টः ॥

महानकः भू॰ ज्नरजितः। ज्रह्मर्गायः
। हित्रजः २ मृष्यूनः २ ज्नाह्नि भः ८

। स्राप्ति छनाः। त्रिक्षत्वः। राज्यीगाः

नियत्वः। समुद्रद्वः। वस्त्रीर्यरद्वकः
। इजि द्राजनिर्यकः॥

महिनी जी मधिमप्रनशाबः। उट्-शर्यप्रायः। गर्भश्री २ कन्मी ०। ইতি ट्या

মন্থোদধি: পূণ ক্ষীরসমুদু:। ইতি কেটিৎ।।

মন্দ: পু॰ শনি:।। হস্তিজাতিবিশে য:। ইতি মেদিনী ।। যম:। ইতি কিকাণ্ডশেষ: ।। পুলয:। ইত্যজ্ঞ ।। মন্দ: তি অতীক্ষঃ।। মূর্য:।। মৈর:।। অভাগ্য: !৷ রোগী ।। অল্প:। ইতি মেদিনী ।। মদরত: ।। থল:। ইতি হেমচন্দু: ।।

মন্দা ত্রি মৃদুগানী। যথা। মন্দ্র গানি শনি জ্ঞানি বৃষ হ'স গজ ব্রিয়ঃ। ইতি ক্বিকল্লব্যা।। নন্দ্রামী ত্রি মৃদুগ্রনশীলঃ। তৎ

भर्गायः । मञ्जः २ । ইত্যাन ः ॥

मम्द्र जन्नी जी भरिन ज्ञाना जा। म्

र्ग ज्ञी । ইতি ত্রিকাও শেষः ॥

मम्द्र : भू शात्र जुन्न । ইতি

भद्र ज्ञावनी ॥

नम् । जी यानगुः। इति ताज-निर्घणेः॥ नम्द्रकः॥

শন্দন• ক্লী স্তোত্র•। ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তিঃ।।

मन्दरः भू॰ मङ्ग्लैनाः॥ मन्दात्रभा-मभः। ইতি मिनी॥ द्रगः॥ २१-त्रत्यमः। ইতি হেমচন্দুः॥ मृद्यदः। ইতি শদ্দগ্রাবলী॥

मन्द्रः वि वश्वः॥ मन्द्रः। ইতি (मिनि)॥

মন্দেসান: পু॰ অগ্নিঃ। পুণান:। ইঙি সিজান্তকৌমদ্যা মৃণাদিবৃত্তি: ॥ নিদুদা ইভাগোদিকোষ:॥

मन्त्रमानुः भुः स्वः॥ क्षीतः। ইতি म॰किश्रमादाणां पृत्वः॥

নন্দা জ্রী সংক্রান্তিবিশেষ:। সা উত্তরফল্লুনুগুরুরাষাটোত্তরভাদুপং দারোহিণী নক্ষত্রেবু রবিসংক্রান্তি-শ্চেত্তদা ভবতি। তস্যা: সন্নিহিত দগুরুষস্যপুণ্যতনত্বং। যথা। ন-ন্দা মন্দাকিনী ধ্যাংক্ষী ঘোরা চৈব নহোদরী। রাক্ষসী মিশ্রিতা প্রো- का मण्या दिः मध्या मुना मन्ता ॥
भूत्यय विष्ण्या मृतो नन्ता निनी
च्या। किर्नु था की विज्ञानीया
पूर्णु खात्रा मुने विज्ञानीया
पूर्णु खात्रा मुने विज्ञानी कि महिन कि महिन कि कि महिन कि कि महिन कि महिन

ল্বন্দি ক্লী স্তবন । ইত্যুণাদি কোষ:।।

नना किनी खी सर्गत्र ११ छ८ भर्गा यः। विषक्ष ११ सर्ने २ महिने विषक्ष ११ सर्ने २ महिने विषक्ष ११ सर्ने २ महिने विषक्ष ११ सर्ने ११ सर्गे ११ स्वा १ स्व ११ स्व १

र्गः नमागठा।। इति तुन्नित्दर्ख किक्षकन्यथाः काङ्ग्वी बन्ना मान्यः त्व ७३ व्यक्षावः॥ ॥ मः काछितिः त्मावः। व्यम् भूमानः मन्ता मान्यः मुक्षेत्रः॥

नन्ताकाष्ठा जी इत्नावित्नवः। यथा । চত্বারঃ পুাক্ সুত্রন্ গুরুবো দ্বৌ দলৈ ভাদশৌ চেন্মুখ্যো বণৌ তদ-नुक्रनृहास्माहिनि द्वाहमास्त्रिते। उद्दर ছান্ডের যুগ রসহথৈ যত্র কান্ডে বিরা-वा मन्हाकान्ता भुवत कवय खन्नि ভা• স•গিরন্তে॥ ইতি শু,হবোধঃ॥ यन्ताः १ क्ष्यात्राञ्जकत्राननः। তদ্য নি শ্ৰমাধি খ্ৰা। মৃন্দ ভীক্ষে। श्य विदाः **मन**ाकं ि हर्विशः। क्क शिखानिवासिका।ख्यानागाः। ব্জ ঠরো ২নলঃ।। বিষনো বা **ভলা**-নোগা ভীক্ষা পিত সমুরতান্। करताला अथा मल्मा विकातान् क्क मञ्जरान्।। मन। मनाध द-শিতা মাত্রা সন্যগ্নিপচ্যতে। অল্পা-शि रेबव जन्माशः विषयाशः स्ट-হিনঃ ৷৷ কৰাচিৎ পচ্যতে সম্যক্ কদাচিচ ন পচ্যতে।ইতি **মাধ্বক** রঃাঞ্চা তদ্যৌ**ষধ**ণ যথা। চিত্রক স্যাপ্ত ভাগ।নি শূরণ**স্য**চ যোড**শ।** मुर्छ। महत्वा व जागरनि सबीहाना॰

ह्य उथा ॥ निश्रनी निश्रनोग्न ॥ विजन्नानाः हर्छवः । यास्रोन्यनि ভাগাশ্চ ব্রিফ্লাযা শচতুষ্ট্রয়ণ।। দ্বি-।। **च्छानन च्हाउदेनका॰ (गाहकानि कि** कातरयट । उक्तकन मजीर्नर्व शा-খুরোগঞ্চ কামলা।। অতিশোণিত मन्ति श्रे शाराक निवादत्य। इंडि গাৰুডে ১৯৮ অখ্যান:।। 🛊 ॥ অথ জ্ঠরাণ্নি বিকারাধিকার:। তত্র স विक्षे निरान প्ৰकान উদরাগ্র বিকারনোহ। কফ পিতা নলা-ধিক্যাত্তৎ সাল্যজ্জাঠরো হনবং। नन्त खीला २थ वियमः भगएकि **छजु**विंश । ७७ वन्तवादा लेकन बार। यदानि देन जनतात गावा ভুকাল পঞ্জ জন্ম দাহঃ পু-**८न**कः अर्थाः अर्थः व **कार्यः ॥** मन्द्र १८३६ दि व्यक्तिमार मान्द्र **२**ग्नि विस्तित क्रमाविकात्रान् क्रम সম্ভবান্।ঞ্চা অথ চিকিৎসা। হরী-তকী তথা শুগু ভক্ষ্যমাণা গডেন বা । সৈন্ধবেন যুভা বা স্যাৎ সাভত্ত্য নালু দীপনী।। ১॥ গুডেন শৃষ্ঠী মথ বোগসল্যা পথ্য ত্তীয়া নথ দা-ি ডিন॰ বা। আনেম্বজীর্ণেষু গুদামযেষু বলে। বিবন্ধেষু চ নিত্য মদ্যাৎ ॥ ২॥ ব্যোষণ দান্ত ত্রিকৃটিত্রণ কৃষ্ণান্লণ বি-

চূর্ণিত। তদুর্ণ গুড় সংনিশু ভক্ষ যেৎ পাত ৰুত্মিত:॥ এতুদুডাষ্ট্রক• नाम वलवर्षाच्च वर्षानः। (भाषामा-वर्ड मृतवृ शीह शाक्षामयाशह ॥ সর্বচূর্ণ সমো হুডো দেয়ঃ ৷ গুডাপ্টক• ॥ ७॥ मञ्नाज्ञानात रेमक्तव नागत्र মরিচানি চামু তক্রেণ। সপ্তাহাদপ্রি কর পাঞ্জানাশন পরমা। ৪॥ दिश्वानद्रःकादः। मानू पुलवनः गुाद्यः मर्डे कर्ष नि **ड॰ वृ**देशः। भोवर्ह**ण॰** शक्ष कर्यः विख रेमस्व थान्। भिश्ननी পিপ্ললীমূল পত্ৰক কৃষ্ণজীৱক । তালীসং কেশর• চব্য মন্নবেতসক• তথা।। দ্বিকর্ষ নাত্রানেগ্রতানি পুত্রেগ্র-ক কারশেদুধ:। ৫॥ মরিচ জীরক বিশ্ব নেকৈক কৰ্ষমাত্ৰক ।। দাডিন স্যাচতুক্ষর্য• ত্থেলে বার্দ্ধ কর্ষকে । এত हुণी কৃত । সর্ব । লবণ ভাস্কর। ভিধ্যা ভক্ষযেদ্বাণ মান্ত তৎ তক্ত মস্তক কাঞ্জিকৈ:। বাত শ্লেশ্ম ভব গুল্মণ প্রীহান মদরণ ক্ষয়ণ ।৷ অর্শাণ সি শৃহণী স্বষ্ঠ বিবন্ধপ্ত ভগন্দর শূল• শোথ• খাস কাসাবানদোষ थ क्षकः।। यभावीः भक्ताकाि পাও্রোগ কৃমীনপি 1 नन्तान नामारयर उद्योशन शाहन श्रद्धा হিতায় সর্বলোকানা ভাস্করেণৈ

जनीविजः। इन्। मर्वागुकीर्गाः नि जुङगाब नमः भगः।। निष्ट्रमाः पिक पद्मा अधिका मालाग्रक **म**इसि ॥৬॥ টল্পন রসগন্ধৌ চ সমৃ ভা गः वयः वियाद । कशमः मर्ड्डिका ক্ষারো মাগধী বিশ্ব ভেষজ•া৷ পৃথক্ পৃথক্ কৰ্ষনাত্ৰণ বসূভাগ নিছোৰণ । कषीत्राद्मि र्निन घृष्टे अविषयि अ-মারক:।। বিশুচী শূল বাতাদি বঙ্কি-भान्त्र भुणान्य । कात्रा यवकातः । यश्चित्रवाद्याद्रमा विमुह्यामुकीः র্ণো। পা। পারদামৃত লবঙ্গন্ধক ভাগ যুগা মরিচেন মিশ্রিভ ৷ ভত্র জাতিফল মন্ধভাগিক ভিন্তিডী कन तरमन मर्फिङ। दक्षिमानस দশবজু নাশনো রামবাণ ইতি বি শুতো রসঃ।। সংগৃহ গুছণি সম্ভক-র্ণক সাম বাত থরদ্বণ জবে। मीयछ छ ठनकानुगानछः मन्। अव क्टेब्राधि मीभनः ॥ (बाठकः कक व्याउकादकः यामकाम विग कस्र নাশনঃ । ৮॥ পারদভাগঃ ১ বিষ-ভাগঃ ১ লবস্তাগঃ ১ গন্ধকভাগঃ ১নরিচভাগঃ ২ জা গ্রীফলভাগঃ ॥০ 🖟 রামবাণোরসোৎজীণে। ইতি ভাব भूकाणः ॥

मनरायुः वि अप्रायुः। यथा। मनरम्

मन्द्रभुक्तम् वर्या मन्तावृष्क वि। নিদুষা ব্ৰিষতে নক্তণ দিবাচ ব্যৰ্থ ক্ৰ-র্মভি:।। ইতি শ্রীভাগতে ১ স্কন্ধ:॥ नन्तातः भू यगी वभक्वकाउर्गठ-रिवंडकविष्मयः। यथा। शर्कांड (एवज्रदा भन्तातः भात्रिकाजकः। সন্তান: কল্লবৃক্ষণ্ড পু॰মি বা ছরি চন্দ্ৰ মিতি ॥ পারিভদুবৃক্ষঃ । পালিতামাদার ইতি ভাষা। যথা । পারিভদুে নিম্ব তক র্মন্দারঃ পা-রিজাতক ইতি।। অকু 🏣:। আ-কন্দ ইতি ভাষা। যথা। অৰ্ক্লাস্ত্ৰ বসুকান্ধেতে গণৰূপ বিকীৰণা: ৷ मनरात्र महार्क्तशर्प २व मृद्ध २वर्क পুতাপদৌ॥ ইতি চানর: ॥ হস্ত ॥ धूर्वः। ইতি मिनी ॥ जीयवि-(मयः। वथा। वत्राक् उवाह। मृत् সুন্দরি যত্ত্বেন যমাণ ত্বণ পরিপ্-ছিল। কথ্যিব্যানি তে ওছা। ন-ন্দারস্য মহাক্রিযাণা জীডসানো ২ম্যহণ তত্র দৃষ্ট্ব। সন্দার পুদ্মিতণ। भगतात भू स्रमामाय म्रामा छः नामा विक्षि।। ठौं कामण अशानि निः-সূতানি গিরৌ ধরে। বিন্ধ্যেচ নৎ পুভাবেনমন্দ।র*চ মহাজনঃ॥ স্থি-ভোহ•ভত্ৰসভগে ভকানুগৃহ কাম্যু या।। मणनी यञन ज्ञान-मत्ना छः जू

भिनाउनः ॥ यब जिन्नागुरु परित ॥ मनतात्रक्रम नाष्ट्रिकः । विन्ययः मृग् जूष्णानि मन्तात श्यान् कत्म उथा ।। बारमाध्य ठजूप्रमाः म भूझाजि क्रांखिमः। তত मध्राङ्ग (वनायाः বীক্ষ্যমাণো জনৈ স্ততঃ ॥ ততো ९ন্য দিন মাসাদ্য দৃশ্যতে ন কদাচন। ত মান্ নন্ধার হণ্ডে তু এক ভক্তোষি ভো নর: ॥ স্থান[,] করোতি **শৃদ্ধা**স্থা স গছেৎ পরমা গতি । অথ প্রাণা न् भुगूरहाउ इराख मनरात मः शिख ।। তপ: কৃত্বা ব্রারোহে নম লোক। ষ গছতি। তস্য হোত্তর পার্ষে তু প্রাপণ নাম ত গিরিণ। তিসো ধা রা: পতন্ত্যত্র দক্ষিণা দিশ মাছি তা: ।। মান হও মিতি খ্যাত ত-ম্মিন্কেত্রে পর• মম। দক্ষিণে পত তে ধারা শুবতে চোত্তরামূথণ।। তত্ত্র স্থাতো বরারোহে একরাত্তোবিতো-নরঃ। মোদতে দক্ষিণে শৃংক তিমান্ भित्रो नित्नाहरय ॥ उकाथ म्कर्ड शुनान् गम कर्य भन्नायनः। मर्व সঙ্গুণ পরিত্যজ্য মমলোক পুপদ্য-তে।। নাক পৃষ্ঠ সনাসাদ্য মোদতে দৈবতৈ: সহ। তথাত্ত সুঞ্জে প্রাণা-ন্ কৃত কৃত্যঃ সুনিশ্চিতঃ ।। তার্যি-ত্বা সলং সর্বং মম লোকে পুপদ্যকে

া ভস্য দক্ষিণ পূর্বেণ সম শূোভো বরাঙ্গনে ।। পততে বিষ্ক্য শৃঙ্গেষ্ অগাধক মহাহুদ:। তত্ৰ স্নানম্ভ यः ব্বর্য্যাদেক ভক্তোবিতো নর:। মো-দতে পূর্বপার্শে তু তিমামেরৌ শি-लाइरय ॥ व्याव मुक्छ भागान् মম চিত্ত ব্যবস্থিত:। ছিত্বা বৈ সর্ব সংসার• মমলোকায গছতি॥ মন্দা-রস্যতু প্রেণ গুহুণ কোটর সংস্থি-তং। যত্র খারা পতত্যেকা মুষলেন সমন্বিতা ৷৷ তত্ৰ স্থান• পুস্ক ৰী তি প-**१** जिल्लावित्वा नद्रः। (मारत्व भूर्व-भाष्यं ज् जिमन् (मादी भिलाहर्य। ত্রাথ মুঞ্তে প্রাণান্ কৃত্বা কর্ম সু मुद्धत्र । (मक्ण्क नगूर मृत्र मम-লোকঞ্গ ছতি ৷৷ তস্য দক্ষিণ পা-র্শ্বেতুগুহু• বিদ্ধ্য বিনিঃসৃত্ত•। পঞ্চ ধারাঃ পতভ্যত্র মুবলেন সমন্বিতাঃ ।। তত্র স্থানন্ত স্বর্ধা ত অহোরাত্রো-ষিতো নর:। মোদতে দক্ষিণে শৃঙ্গে मङ्गामात्री निलाहरम।। व्यथाव मू क्ट भागान क्रा कर्प मुम्हत । নেৰ শৃষ্ণ পরিত্যল্য মম লোক পুপদ্যতে॥ দক্ষিণে পান্চনে ভাগে নন্দারস্য যশবিনি। তত্র ধারা পা তত্যেকা আদিত্য সম তেজসা। তৰ স্নানম্ভ স্বী ত অংহারাত্রোধি-

তো নর: ৷ মোদতে পল্চিমে ভাগে 🛭 খ্ৰুবো যত্ৰ পুবৰ্ততে।। অথাত্ৰ মুঞ্তে शुागान्मम कर्या व्यविष्ठ छः । अर्बशा-প বিনিমুক্তি। নম লোকে চ মোদ-তে॥ তদ্য পশ্চিম পার্ম্বে তু গুছ• দেব সমন্বি ভং। চক্রাবর্ত্ত ইতি খ্যাত মগাধক নহাহুদঃ।। স্থান করে।তি य স্তত্র পঞ্চ ভক্তোষিতো নর:। মো-पा न विश्व प्रमुख्य सहन्त गमनावयः ॥ जथ वि मूक्ष्ट भागान् हकावर्ख নহাবশাঃ। শৃঙ্গান্ সর্বান্ পরিত্য-का भाषा अभ अभिष्ये ॥ (रूपः বাষৰ্য মাশ্ৰিত্য তিমান্ বিদ্যাশি লোছযে। তিসো ধারা: পতন্ত্যত্র মু-বলাক্ত্যঃ শুভাঃ ॥ তত্র স্নান পু **প**ৰী ত মন চিত্ত ব্যবস্থিতঃ। মোদ-তে সর্বশ্কেষ্ একচিত্ত সমাশ্রিতঃ ৷৷ ভপাত্র মুঞ্তে পাণা শামিন্ গুছে যশষিনি। সর্বসঙ্গ পরি ত্যজ্য নম-লোকায় গছতি॥ তস্য ত্রিকোশ मार्जिंग हिन्स मानि उः ॥ ভহ্ন গম্ভারক নাম অগাধ্য মহা হুদে।তত্ত্ৰ শ্বানম্ভ লগ্বতি গষ্টভক্তো-विতো नद्रः॥ स्मान्ट সর দ্বীপেষু कर्मक भगवास्यः। अथियः मुख्यक मन्तामाः क्री मञ्जा। इति मञ्जः পুশান্ গম ক্মা ব্যবস্থিত: ॥ সর্ভ ছাপান্পরিভাগ্নন লোক পুপ- নিন্দাক লী লভা। ইভ্যেরঃ ॥

म्याउ। उत्र भिष्म भार्त्व कु ए-**ए॰ (म পরম॰ নহৎ । স**প্রধারাঃ পত्रां व्याधिक महारूरः ॥ তৰ স্নানন্ত স্বীত অহোৱাৰো-বিতো নরঃ। নোদতে শক্রলোকস্ত सहम्प गमनावयः। अथरिव मूक्ट পাণান্ ষকর্ম পরিনিষ্ঠিত:॥ স-ৰ্বসঙ্গণ পরিত্যজ্য মন লোক পু-পদ্যতে। মণ্ডল তদ্য ক্ষেত্ৰস্য कथ्रमानः भया मृत् ॥ अऽमञ्जनः কল্পৈব মন্দারস্য সিরে। সম। তত্ত্র তিষ্ঠামি স্শ্রেমণি বিদ্যাস্য গিরি মৃজনি।। নন্দারে পরন গুহু ত-श्चिन् छश् निलाइरय। मिक्तिन স-স্থিত চক্ৰ বামে স্থানে চ ৰৈ गमा ॥ नाक्ष्यः भूबनरेक्ष्यः भद्धः जिक्ठीं कागुंजः । य **ब**ज्र मृत्या-ন্নিত্য 'হুহু' মন্দার সংস্থিত ॥ তব চৈব প্রিযার্থায় মম ভক্ত সু-খাবহু ৷ এতম জানতে কশ্চিম্ম নাযা বিনোহিত:। মুচ্য ভাগব-তান্ শুলান্ যেচ বারাহ সংশিতান্ ম **ইত্যাদি বারাহপুরাণে ভ**গবছা-**क्ति मुन्त्। इं ७ इ**प्यर्गन नामाध्यायः ॥ ब्रङ्गावनी ॥

मन्दिक व्याप्त भूग म्हणाविष्णयः। ्षि व्याप्तायाः ॥ गुराष्ट्रायाः मिक्सिक्ष्याः निशारोः॥

बन्दिः 🕼 १५•। ইত্যমরঃ॥ स-म्माटः भूनाहाः **१व मन्तितः। म**् किङ यशान जाएं। नाम नाम প্রতৌ গড়ে। নাম্বীতি ইরঃ। নগর॰ মনিরে পর মিতি পু নপু সকযো हाला न नहें। उ। जिया मिनता ह পুলোগ क व सन्नाराखुनावानिज ম্পুৰ্বিদ্য:। ইতি ভটীকাষা• **जब्रह्म 🕸 । यथ जगदब्मित** নির্বাণ বাহাব্যাও । यः কার্যে यन्तितः अभवनाः भूगाः ह्वाकान् क करवहा वजान् वि । म्यावामान् <u> अञ्चाि भवान् (जागान् जू-</u> 🏭 कान ७३ भाषनीयान्॥ व्यामश्चः ম[্] পিত্যাল তথা মাত্**সল নর:** ্য ভারবেদ্য**েনা সার্দ্ধ: বিঞ্চো র্ম**-ন্দির করেড়:।। ইমান্চ পিতরে। देत छ। गाय। गाय छि त्या गिनः। भू-মতো যদুলি হৃদ্য হ্নহৃদ্য তপ स्निः॥ अशि नः सत्रतः किन्हि ফু ভক্তো ভবিষ্যতি । হরিমন্দির কতঃ যো ভবিষ্যতি শুচিবুভ: ॥ कें जिल्ला (भवाश्वायः ॥ 🛊 ॥ জ্বিত। স্থাপুরাণে। যে ধ্যাবৃদ্ধি

সদা বৃদ্ধ্যা করিব্যামো হরে গৃহি।। **उदाः** दिनीयाउ भाभः भ्रबन्ध শতোদ্ভব•।। কিঞ্চ। সমতীত•ভ-विष्ठा अनानामयुज्य नद्रः । विकुर লোক নযত্যাশু কারযেদ্বা হরে পৃ-रः॥ किन्नः। लक्ष्मिगाथ महामुगमाउ নাৰ্ছেন বা হরে:। তুল্যু ফল সমা-খ্যাত নিছেশ্বর দরিদুযো: ॥ বিফু ধর্মোত্তরে ভূতীবকাণ্ডে। কৃত্বা বাস গৃহ• তস্তদেবস্পরনেষ্টিন:। রাজ-স্থাখনেধানা কলেন সহ যুজ্যতে ॥ भागाप मृत्राय भूगा गरेयउट कथिउ॰ दिकाः। उत्रामः। क्यापः। क्यापः। ণ্য কৃতে **শত** গুণ ভবেৎ ৷৷ **ভ**তো ममखन भूना उथा मिनगर छ-(वट् ।। उत्जा मणका लोहर जात्म শতগুণ ততঃ।। সহসু গুণিত রৌ-পে । তমাৎ ফল নপাশুতে। ততঃ শ তসহসু বৈ সৌবর্ণে দ্বিজ্ব সন্তমাঃ ৷৷ অনম্ভ• কলমাপ্মোতি রত্নচিত্রে ম-नाह्रतः। कात्मः। जात्रस्त कृषः श्व-ষ্যস্যসপ্তজন্মনি যৎকৃতণপাপ বি-वय माल्याञि नत्रकामुक्तात् शिज्न् ॥ भागामभारम कृष्णमा वाविष्ठे छि-রেণুকা:। ভাবদ্বর্য সহস্থাণি বসতে विकु मध्यनि ॥ शुमारि क्करिवम् हिब कर्प करताि यः। तमर दिख्

লোকে তু যাবতিষ্ঠন্তি সাগরা:॥ नात्रिंग्रः यः ऋर्यप्राह्माञ्चन (वन्म নরসি হস্য ভক্তিমান্। সর্বপাপ্ বিনিযুঁকো বিফুলোক মবাপুরাৎ ।। इयमीर्य। (स्वागातः करताभी जि **बनमा यस हिस्राय । उन्र कायग** ত পাপ তদহা বিপু নশ্যতি॥ কৃতে তু কি॰ পুন স্তম্য প্রামাদে বি-शितन छ। अरहे है न ममायुक्क यः व्यग्रीदिक्षय गृह । न छम् क्व সম্পত্তি ৰ্বকু• শক্যেত কেনচিৎ ॥ जातिनवानुरमयस कनः शानाम वि-স্তরাৎ। মরণঞ্চ বুজেন্মর্ত্যে যঃ কৃত্বা পূথ্যেষ্ট্রকাণ ॥ স সমাগুস্য যজ্জস্য कनः भारताजामः गयः । विक्षहरू স্যোবাল্যে চ ক্রীডমানা যে পা**ংশু** ভি ভ্ৰন• হরে:। বাসুদেবস্য **দ**র্ব ন্তি তেপি তল্লোক গামিন:॥ আদি भूत्रात । त्नभनाहमनरेक्ष्य यः क রোতি পুন নরঃ। দেবস্যাযতনং क्दा न ভবেৎ की देश ভय ।। # ।। ত্বথ নন্দিরনির্মাণকালঃ। মাৎস্যে । চৈত্রে ব্যাধি নবাপ্নোতি যোগৃহ कांब्रद्मद्रः। दिन्नात्यं धन ब्रङ्गानि रिकारक्ष मृजु**। अरि**षव **ह** ॥ व्यावारह ভূত্য রত্নানি পশু বর্ণ মবাপু যাৎ। শুৰণে মিত্ৰ লাভন্ত হানি ভাটুপ

प्रिच्छा। भङ्गी नामक्षायगुरग काः ত্তিকে ধন ধান্যক• ৷৷ মাৰ্গশীষে তথা ভক্ত•পৌষে ভক্ষরজ•ভয•। লাভ-ন্ত বহুশো বিদ্যাদগ্নি• মাঘে বিনি-फिल्म् ॥ काक्षन कालूत भुजान-তি কাল বল মৃত। অশ্বিনীরোহি-भी मृल मूखदावय रेम**न्स**य ।। साञी হন্তানুরাধা চ গৃহারন্তে পুশস্যতে। আদিত্য ভৌম বৰ্জ্জঞ্চ সৰ্বে বারাঃ শুভাবহা: ॥ वकु व्याघाउ म्वानि ব্যতীপাতাতিগণ্ডকে। বিষম্ভ গণ্ড পরিঘান্ বর্জ্য যোগেষু কার্যেৎ।। খেত নৈৰে চ নাহেন্দ্ে গান্ধৰ্বাভি-জিদৌহিণে। তথা বৈরাজ সাবিত্রে मूश्र्व गृहमात्राख्य ॥ ठन्द्रानिज्य वन नका नग्न मं निर्विक्त छ। স্তম্ভোছ্যদি পুকর্ত্তব্য মন্যত্র পরি ব-र्क्कारयः ॥ इयमीर्य । वास कर्म नहाः রভ্য॰ বর্ষাকালে বিজানতা। কৃঞ্প-ক্ষে ত্রিভাগান্তে শুক্লপাদৌ দ্বিতীয়-कि ॥ ठजुर्थी नवनी वृद्धा जिथि শ্চাপি চত্দদী। ভৌমস্য তু দিন বর্জ্য করণ বিপ্তি সংক্রিত।। ক্লি-ত্যম্বরীক্ষ দিব্যোপ্থে কৎপাতৈ ভ্র পী ডিতা। উপস্থিত গুহৈ ভঞ্চ ব্য তিপাত হত• তথা।। চন্দু তারানু-क्षन ह कार्याः कर्मा विज्ञान छ। धुनाः

শিচাত্ৰ শস্তানি নৈৰ্থতি শক্ত দৈৰত | ।। পষ্য পৌক্ত সাবিত্র বাষ্ব্য रिक्षवे उथा। श्रिता मा ह श्रित কাল্ কন্ত্ৰ ভাগচযাত্মকে।। কেন্দ্ৰে সোন ুহো যদ্য ত্রিকোণে তু সু রোভ্য : পাপ শ্চোপচ্য স্থানে ্লকার্য্য সমারভেদিতি ॥ 🗱॥ जाय भानामण निः। इयमीर्य। भू-ৰ্যাংশৰ কলা ীড্য প্ৰাসাদং স্বল্পক ख्या भग-वाला**धिक-वाशि न कर्ख** ব্য বিজ্ঞানত।।। উভযো দ্বিগুণা সীমাণ ত্যক্তা চোছায সংমিতা । প্রাসাদ কালম্পন্য নোভয় পী-ত্ৰেৰুধ্ঃ 🖟 ৯ া **অথ স্থান শোধ**া मानि । मिन्नेनियाता । परवा विकू रुपा 💯 💯 ए**ाः गृत् जलमाः।** পুতিষ্ঠাপ্যঃশৃভি স্থানে অন্যথাতে ख्यात्राः ॥ गर्खामि **लक्ष्मा थाजी** शक्त आरमन या जरवट । वर्तन ह जूत (मुक्ष मा मही वर्षकामना II मा**्रम**ु । পূর্ব• ভূক্তি পর্রাক্ষেত পশ্চাৎ যাস্ত' পুকল্পেং। **খেতা রক্তা তথা** পীতা কৃষ্ণ চৈবানুপূর্বশঃ।। বিপা-দেঃ শস্যতে ভূমি রতঃ কার্য্য পরী-कन । विशाना मध्वासामा कवागा ক্ষত্রিয়স্যচ॥ ক্ষায়ে কটুতা তদ্বদৈ-🎮 । শুদেষু শস্যতে। অর্ত্তি মাতে 🖁

বৈ গৰ্ভেমনুলিণ্ডে চ সৰ্বতঃ ॥ ঘৃত-নাম শরাবস্থ কৃত্বা বর্ত্তি চতুইয়া। ज्यानारय ज्नुनित्रीकार्थः नूर्गः उ ८ मर्च मिड्राब॰।। मीछा भूबीमि गृङ्गीया-দ্ৰ্ণানামনুপূৰ্বশঃ। ৰাস্তঃ সম্হিকো नाम ही भारत अर्बत्य यः ॥ भूजिमः সর্বর্ণানা প্রাসাদেয়ু গৃহেষু চ। অর-ত্নি মাত্রকণ গর্ভণ পরীক্ষ্যণ খাত পু त्रा ॥ अधिक भि्र भारतां जि न्। त হানি সমে সমা। ফাল কৃষ্টে ২৭বা (मर्म मर्ववीक्षानि রোপ্যেट्।। जि-পঞ্চ সপ্ত রাত্রেণ যত্র রোহস্তি তান্য-शि। ब्हाक्षा मध्या कनिष्ठा जू ईड्डनी-रिकता जला ॥ इर्गार्य । जूत्र जी-নাণ রতি র্যক্ত স্বৎসানাণ বৃধৈ: সহ । मृन्सद्रीभा॰ द्रिक र्यक भूक्रेयः मरू **न**खन ॥ त्राङ्काः भूर्दः गृहः यम्रा मग्नीना॰ यिष्ड्विना॰ उथा। कान्मीव **इन्ह्रनात्मामा कश्राधक गन्निनी** ॥ কনলোৎপল গন্ধা চ জাতী চম্পক গন্ধিনী ৷ পাটলা মল্লিকা গন্ধা নাগ-কেশর গন্ধিনী ৷৷ দধি ক্ষীরাজ্য গ-का व मित्रामय गिक्तिनी। मृगिक्ति ব্ৰীহি গন্ধা চ শ্ভদুব্য স্বনা চ যা ॥ সর্বেষাণ বর্ণিনাণ ভূনিঃ সর্ব সাধার-गा मजा। पूर्वका पुःचना या ह नाना वर्गा ह दूर्जगा।। वृद्धार्षहन्तु मन्ना

विखाताष्मि खगायुका । विवर्गा वर्ग-श्रीना ह वका महिमुशी उथा ॥ चितः ना जूर्नजम्भी भाजूबी ह जिस्कावि-का। यउन्। भूल मम्भी मिल्रिश्री-প्रभा ह या।। मही मृश मम। या ह दि-ত্মথা শকটাকৃতি:। এব পুকারা 🖔 যা ভূনি ৰ্বৰ্জ্জ্য যত্নেন দেশিকৈ: ॥ 🎚 किथा भाजाममा विस्थित भाजा ক্তা ভূমি শত্রিধা। সুপদ্মা ভদ্কা পূর্ণা ধূমা রাগিণ্যথা পরা ॥ তিল। रेक नीतिरकरेनम्ह वर्ष्टिः कारेनम्ह শোভিতা। পদ্মেন্দীবর সংযুক্তা সা সূপদ্মতি বিশুতা।। নদী সমু দায তন ভীর্থপর্য্যস্ত শোভিতা। পুস্লবৃক্ষ সমাকীর্ণা ফীর ক্ষোপশোভিতা।। व्यान्तान वाजा खना क्झ उम्र न মাবৃতা। যজীয বৃক্ষ সুক্ষেত্র যুক্তা ভদুতি कीर्खिङा ॥ दन्ननात्माक वल्ना उथा श्रकामु (नाहिरेजः । মাধ্বী বেপ্তিতা যা চ মৃদ্গ নিয়াব-(कान्देव: ॥ मृक्षारेनाम भूमारेग র্গিরিপার্শ্ব গতা চ যা : ভোযঞ্ স্বল্ল ক যস্যা স্থা পরি কীর্ত্তিতা।। विवार्क मुहि शील्या वरेन या शति ভো বৃভা । সশক্রা চ কঠিয়া যুক্তা কণকৈতি হ' দৈ: ॥ গৃষ্ গোনাগু काकानाः (माजानाः या ननास्रोतः

l-পূম্বতি কীর্ত্তিতা,সা.তু ভা• যত্না**ৎ**, পরিবর্জ্র্যেৎ ॥ ততো ভূমিণ পরী-ক্ষেত প্রোদক্ প্রানাণ শূভাণ। অ-नक्टो! उथा हवा गन्नाकामा श्रीत-প্লু তা॰ ॥ স॰প্র্যসাণে খাতে তু ত-थाधिक गृष्ट मूछा । जमूस म्म वर्षः यन्।। न सानि मृष्ट् जिशान निर्ता-তি তথা দীপজোন শীঘু নভীৰ্ব্যতে । খেতাৰণা পীত কৃষ্যা বিশাদীনা। পুশন্যতৈ।। আজ্য কদ্বন্ধ মৃদ্যানা॰ जूना गन्ना ज्या जत्य । मधुना हकः ষাযা চ অন্ত্ৰা চ কটুকা চ যা।। জলৈ: भरित खथा कार्मिः पूर्वा छि यां ह मध्-তা। তস্যা পুণ্যে ২থ নক্ষত্ৰে হ-র্য্যা ভূমি পরিগ্রহ ।। 🗱 ।। অথ ভূমি পরিগৃহ:। তবৈব। প্রাকার নীমাপ-র্য্যন্ত ততো ভূতবলি হরে । মাণ-স॰ হরিদা চ্র্ঞ সলাজ দখি শক্তবঃ ।। এভি ভূ তবলি॰ দত্বা সূত্র নষ্টাক্ষ-রেণ তৃ ৷ পাত্যিত্বা ততঃ শঙ্কু 🕏 रिक्यू निरव**ण**रय**् ॥ ताक्रमा काशि** ভূতাশ্চ যে ৎস্মিণন্তিগ্ৰন্তি ভূতলে ৷ তে সর্ব্বেপগছন্ত স্থান সর্য্যামহণ হরে: ৷৷ ইত্যনুজ্ঞাপ্য ভূতাদীন্ তা गुरागक लाकशालः मन क्टी।। जार्य) निश्वे विशासन उर्जा वि हान

भारदिद्र । । जूर्सामः उउ: अर्थताः भूवगाञ्जा । तिकः ॥ प्रमाट भू-শাহুতি" পশাৎ বৌষড়স্তেন দেশি-कः । वृष्यक्ती **कशित्वी गृश স**वली दा विष्कृषः ॥ याजनार्थः रुलरेक्ष्व शृहीयवनसा**रुवः। शुर्यूयः या**-জ্য মন্ত্রভ্রেল বস্ত্রালকার ভূবিতঃ।। थान्ति यष्ठे मानाम चान्माक्त বিদ্যায় । সংমর্দেন সমীকৃত্য **পু**ভ वीजानि वाशरार ॥ मःशास मुङ কালে ভুগো**ভি স্তৎ থাদযেদুধঃ।** পুন ন্ত কর্ষাব্বা ত সমীকৃত্য গৃহণ खकः॥ माध्यम् ह। श्रीनाधिका॰ ग তा॰ वारखाः मर्बजः পরिवर्छरय् । নগর গ্রাম দেশেযু সর্ব তৈব বিব-र्व्हारय**् ॥ # ॥ अथ मिक्**माश्न<u>ः ।</u> स्यभीर्य। वाक् वास्त नमः कृषा চতুরসু॰ সমন্ততঃ। ভূমি॰ তোয স না•ক্ত্বা দর্পণোদর সন্মিভা•॥ দ্বাদ-भाकृत भारान हार्छोवाता स जुा-भारत । इति ज्ञिन्तिकल मकू छा श्य हायार नित्रीक्षाय ॥ भूतिरा নিম্মে তস্যা শকু ছায়া নিৰ্প (यद । देवषूरव विभाव विशास मञ्जूना नाधरयिष्मि ॥ भत्रष्ठमञ्जरमा तत्रव भारिका९ नास्यिष्मि । भारी रा भूम (बर्धन विक्रिबा नम्रद्रिन वा ॥

উদীচী প্রববেপেন নপ্রবোগেন চো सरय । हजूत्रमाः भिनाः गृश इंडे কা॰ বা সু:শাভনা॰॥ চতুৰ্দিকু নি-विष्णाथ ग्विहिङ्ख कात्रवर । এव॰ ক্রা স্ত্তিহা বাস্ণা স্ত্র ভোজ-(य८।। रेवक्षवान् भाषरमनागुरान् हा-म्रेमिव जमाहिजः॥ 🗱॥ व्यथ শ-लिऽ। बाद्यान । भाष्ट्राम । गृहातस्य उ কণ্ডুতিঃ স্বান্যকে মূল জাগতে। শ-नाडुभनयखं भूगमात् ज्वतनथवा ॥ जनवाः जयरः यमार्मनाः जय न्। भनः। इयभीर्यः। आहिरभन्नासः नः भना गृहिता १ व विकात छः। শঙ্গনো দৃশ্যতে বাপি যস্য বা শুখ-তে ধ্বনি:।। কীৰ্ন্ত্যতে যস্য বৈ নাম শ-ল্যু ভস্য বিনির্দিশেৎ ।৷ # ৷৷ অথ বাস্ত মণ্ডল । মাৎস্যে। পঞ্চা-ব্যোৰধিজলৈ: পরীক্ষিত্বাবসেচযেৎ । এकामीजि भरः वर्गारम्थानिः কনকেন তু॥ পশ্চাল্লেপ্যেন চালি-भा मूर्विशालाप्त मर्बन् । मम्भू-র্বাযতারেখা দশচৈবোত্তরাযতা:।। সর্বাস্ত বিভাগেষু বিজ্ঞেশ নবকা নব। একাশীতি পদ • কৃত্বা বাস্তবিৎ भर्वताक्ष्य ॥ श्रम्ङान् श्रक्षरयस्त्वान् जि॰मर शक्षराँगत **छ।** माजि॰सम्। शकः প्रकृतः প्रकृतान्हार अस्ति।

।। নামত স্তান্ পুৰক্ষ্যামি স্থানানি চ निवाध म । देनकागामियू मूत्रान् भू बरवह विधान जः ॥ निश्री रेहवाथ शर्क्काना करसः स्विभागृथः। সूर्ग्रः **ল**ত্যে ভূ**ণ**ৈচৰ আকাশে। বাযু রে ব চ।। প্ৰা চ বিতথকৈব গৃহক্ষত यमायूष्डो। गञ्जरकी ज्रहाकक मृ गः निज्मन ख्या ॥ मोनात्रिकाय ज्गीदः भूञ्चरसा बनाधिभः। अम्-রঃশোষ পাপৌ চরোগোৎহি মুখ্য এব চ !৷ ভল্লাট: সোম সূর্য্যৌচ অ দিভিক্ষ দিভি তথা। বহি দ্বাজি-भारतरङ जु उपगुण्ठ मुद्रान् भृगू !। हैं-भानामि हजूद्धारी म इंजान भूज (यषु थः । चान टेम्प्रवाय नावित्वा कर्या कृषु खरेश्व ह ॥ मरश्र नवशरमा বুকা ভদ্যাপ্টোচ সমীপগাঃ। স र्वात्वाखनान् विन्तार भूवीमीमा মতঃ শৃণু।। অৰ্থ্যমা সবিতা চৈব বি-वश्वान् विवृथाधिणः। निर्वाय द्राज যন্ত্রা চ তথা পৃথীধর: ক্রমাৎ।। অ ষ্ট্রম শ্চাপব্ৎসশ্চ পরিতো বুহ্মণঃ স্তাঃ। অ্য্যমাচ বিবয়াক্ত নিত্রঃ পৃথীধর স্তথা।। বুন্দণঃ পরিতো বি ফু ত্রিপদান্তে তু সর্বতঃ। আপ দৈচ বাপবৎসক্ষ পৰ্জন্যোগ্ন দিতি স্ত थ।।। शिंदिकानाक वर्णाय (मवः का

ণেম্বশেষতঃ। তন্মধ্যে তু বহি ক্লি-म फिन्मिरा उ जू मई जः ॥ व्यर्गमा ह विवयाः क निजः भृथीयत ख्या। दु-হ্মণ: পরিতো দিক্ষু ত্রিপদা স্তে তু गर्व जः ॥ वः नानिमानीः वक्तामि व्र-ब्जूत्रि भ्षक् भृषक्। वायुः यावखः থা রোগাৎ পিতৃভ্যঃ শিখিন স্তথা ৷৷ মুখ্যান্ডূশ তথা শোষাদ্বিতথ यावरहव ज् । जूबीवाहहिन्छ याव८ ভূঙ্গাৎ পর্জ্যন্য মেব চ ॥এতে বংশাঃ **সমাখ্যাতাঃ** ক্চিদুব্দ্ধব এব তু। এ-তেবাং বস্তু সম্পাতঃ পদন্ধ্যু সন্ তথা।। সন• চৈতৎ সনাখ্যাত• ত্রি-म्ल॰ (कानगक रू । उग्जनजारमयू क्ब्बंडानि ज्वा विशिषु गर्बना॥ की लाटम्रक्षाभवानानि वर्ड्स्यप्यः তো নরঃ। সর্বত্র বাস্ত নিদ্দিষ্ট: পি ত্বংশোত্তরাযত:।। মূর্জন্যগ্রি: সমা-বিষ্টো মুথে চাপ: সমাস্থিত:৷ পৃথী-ধরে। হর্য্যনা চৈব স্তন্যো স্তাবধিষ্ঠি-**छो।। वक्रः इत्व दाभव्यमः भृ**ष नीयः जना तृरेक्षः । मिद्धरथार्ष्मि 🤝 প জ্জন্যে শ্বোতে দিতি জযন্তকৌ।। স (भन्। व म म एको जू भू करी यो भु यङ् उ: । সूर्य्यः भागान्य खद्दास्ताः পঞ্চ পঞ্চ ॥ ক্দুম্চ রাজ্যজ্ঞা চ वानश्रुः जमाभित्रो । मादिकः

সবিকা ভর্ম র দক্ষিণ নাশিতৌ॥ विषयान्य हि क्ष क्षेत्र मन्दावः স্থাত পাপৰত্বা চ হতথো শ্বনিব্যান।। তথৈবাসুর শোষৌ চ ्रहरा क नगा**नुराजे। भार्य ज्** पिकाल उद्धि उथः मगृरक्रः ॥ উর্কের্থনাথপে জেবৌ जाता গ-कई मुझकी। बहुरवा मृग मुगुरवी क्षित्र हो व्यविष्य मृशः ॥ जयः **लक स्था (मध्य भाषायाः भिजत** कथा। महा भव**शामा बुक्ता इतरय जू** ল প্ৰচত ৷৷ চতু:বঠি পদে৷ বাস্তঃ श्वामारक व्यक्त मृठः। तुका हरू इत सम्बद्ध (क्राप्तिक **क्रम संख्या ॥ वश्निः** কোণেৰ্ চাঙীে তু সাৰ্দ্ধা শ্চোভযতঃ মৃতা: িশ**িত দ্বিপদা তেবা•** চ-ज्ञव क्षेत्रक्ष व्याप्ताका **क्यामीर्या वा-**एकः मृत्ययः भुक्तः विवादत्रवतः म्हिः। एष उन्हान् विश्वादः मदीनः ন্ধার ভূষিতঃ॥ চতু:ষপ্তি তু পুাসা-म कामीजि गृष्ट मना। हजूत्रमी-ক্তে ক্ষেত্ৰে ও ইংগাভয ভাজিতে॥ কোণরেখাণ ওতো দত্বা সুরভাগাণস্ত ্কল্লখে**্। শিব: কোণার্চ্চতো জ্রেয:** .शब्दिनाः शः मःश्रितः ॥ विशर एक् करवा एक्तवः मूद्धण रेणक्शाहि-कः। जास्त्रस भारत (ज्ञाया दिभनः

সত্য ইব্যতে।। ভূশ:পদছো বিজ্ঞে-যে। ব্যোমীশ্বর পদা**র্ছ**গঃ। হতা**শ**-नः भरार्खक भ्या ह भर मः शिखा। विज्ञा विभव्यक भरिकक गृह-क्षा : रिववश्व : भरिक्तः शक्षः (र्बा विभएक्टि उः ॥ ज्क्रेफिक भएर। জ্ঞেৰে। মৃগক্ষাৰ্ছ পদে ছি তঃ। পি-ভরক্ষার্ছতোজ্ফো:পদেদৌবারিকঃ ख्या। मृग्रीवण शाम खाया व्या भूञ्चम्**डकशयारमाम्भ**ित्रग्रह्य। श्-সূরস্ত হি স-ছিতঃ ৷৷ শোষ শৈক-পদে ভেয়ে। হৃদ্দ। পাপ ইয্যতে। রোগ শ্চাজপদেজ্রেযো নাগ শ্চাপি পদে স্থিতঃ৷৷ মুখ্যশ্চ দ্বিপদেক্তেয়ে৷ ভলাট: পদ সংস্থিত:। যজেশ্বরঃ পদে জ্রেয়ে। নাগস্ত দ্বিপদে স্থিতঃ॥ **श**मञ् । श्रीमशास्त्री श्रमिति भार्च স•স্থিতা। আপো জ্রেযাস্ত পদগা বলী দ্বিপদ সংস্থিত: ৷৷ চতুয়দংছা विष्क्रिय खुर्याभा भूई मध्याः। निव-তা তুপদে জ্ঞেয়: সাবিত্রী চ পদে-স্থিতা।। ভতো বিৰম্বান্ বিজ্ঞেয 🖦 ज्हेर शाम ज्ञिः। हेन्यू कान्यु। करा ৈচৰ একৈকে সংব্যবস্থিতা:।। মিত্ৰ শ্চত্মদস্খ পশ্চিমে তু ব্যবস্থিতঃ । क्षुः शरेनक मः हा दि यज्ञा देवक शास कि जः ॥ ध्राध्य क विष्क्रायाः

ছ্যব্রে চ চত্রদ:। চতু**নু থ শচ**তু ছ. হ। নধ্যে জেবঃ পুজাপতিঃ।। व्यथ वास्त्रभूका। नाट्रा ग्रा व्यथाजः मः श्वक्रामि शुमान विवि निर्गयः । वारको भन्नीकित्व ममापाल एक विष्कृताः ॥ वास्त्रभगनः अर्थाः পূৰ্বনেব বিচম্বন্ধ। একাশী জিপ্তাদ•ু निथा वास मस्या जू निष्ठे तः रहान जिल्ला कागः व्यापः इह भुगागक । यदैः क्किजित उप्तर निक्तिः कीत्रकृष्णः॥ निन्तिः थापिरेत बीनि मार्लाजुयत मस्रोतः । ज्ञा पृद्ध। मरेग द्यां भि मथु मिंश म गदिरें ॥ कार्यक्र अक्षि वि दि द्विन शिष्ठ द्रथाभि वा। व्हानात्व ভक्य (ভारेबार्क वाश्वरम**ाम विव** इरत्या जननिया रेनतन्त्र मिन দন্যাথ ক্রমণ তুঃ ঈশকোণে ঘৃতা भन्न निथित विभित्तप्रयथ ॥ उपन (नाष्प्रवा मन्त्राष्ट्र भक्तन्त्राय घृडा-ব্বিতং। জনস্থাৰ প্ৰজং পীতং পৈষ্টং कृर्याक्ष मः छाइद ॥ इन्तुय भक्षत ত্বানি পৈষ্টক স্বলিশ তথা। বিতা-नक्ष म्याय धूमुः तकः उत्थित ह।। নত্যাৰ ঘূত গোধৃন• নৰ্স্যান্দ-क्ता कृणाय ह। मञ्जूनी का खती का य रहग्रहरूक वायत॥ भूक वाजास

'मांजवता विजय हनकामन । शृह-ক্ষতাৰ মধুন বনাৰ পিশিতৌদন ॥ गक्कारनक गक्क ब्रङ्ग (वषम्) मृह्ककः। यूगाव याक्कः प्रमाट शि-্ভূভ্য: কৃষর। মৃতা: ॥ দৌবারিকে দত্তকাপ্ত• বৈষ্ঠ• কৃষ্ণ• বলি• তথা । जुगीत भूभक एन्डाट भूज्ञम्खाय পায়সংশক্ষেত্রন সহিত দদ্যাৎ পদাঞ্চ বাৰুণে। পৈষ্ট হির্মায मन्त्राममुद्राय भूदा गञा ॥ घृट्योपनः চ শোষায গোধা रेक পা পযক্ষণে। য্ত লড়ু কা শ্চ রোগায় নাগে পুত্র कनानि उ-॥ मिर्न मूथ्राय माउवरः गृह्मारन मञ:भव । ভन्नाहार ज-(जा पर्वा (जानाय घृज्यायमः ॥ मर्भाय रेगडे॰ मान्क मिरिका ला-পিকা তথা। দিতৈয় তু পুরিকাণ দ-म्राट <u>इंट्य</u>िक वाश्टा विनि ॥ 🛊 ॥ क्रीत नाभाग माजवा नाभवरमाय रेव मधि। अविख लाउँ कान् मम्यार नगतीहान् बरमोहनः ॥ निवज् र्छ তে তথা দদ্যাৎ রক্তচন্দ্র পায়সং ॥ इति जात्नोमन मन्त्रानिनुग्र श्-ত সংযুত্ত। ঘৃতৌদৰক্ষ নিত্ৰায় ক-<u>দুবি ঘৃতপায়স•।। আম• পদ্ধ তথা</u> नाः मः (मगः म्यापुराकवन्त्रातः। भृष्री

व्याय नान्त्रानि क्या धाय ह माशः ्रवर्थः ॥ त्रणक्रीमः त्रः महाप्रयाप्त् नर्जः क्यार्। ननकातात्र गुर्कन भरता भूने द्वव है।। शक्ष गत्र । यवा ৈচৰ ভিলাক্ষত হবি চৰন্। ভক্ত <ভান্ত। अध्य विविधः वुकारा विनिविधः বেংনা এবং সংপূজিতা দেবাঃ শাস্তিং **অ**র্বান্ততে সদা। সুরেভ্য: কাঞ্চন• দ म्राष्ट्रकाल गा॰ भगस्तिनी शाक्षादाकः नीना विवासिया अभि यामृक उथा **প্**ণু। মাংসৌদন ঘৃত পদ্ম কিশার স্বিবাল্ডি ।। ঈশান ভাগমাশি্ত্য **ठत्रोक**ऽ विनिवित्यस्य । मरश्रामन সক্ধির নস্থিতিশ্চ সংযুক্তণা পীত রক্ত বলিং দদ্যাৎ প্তনা যাত্রা-क्रमी। वाग्रवा भाभ ताक्रिमा मूट-न्यान्य मुद्रामवः ॥ भाषमःवाभि मा जवर सनामा मर्बजः क्रमार । नमः ফারান্ত যুক্তেন পুণবাদ্যেন **সর্বতঃ** ।। 🗱 ।। ততঃ সবৌ বিধি সুনে য্জন্। नगु कारत्यः। विज्ञाःस भूक्रयः ক্ত্যা যেচানে, গৃহনাগতাঃ।। এতদা-ख्यम्यस् कृषा कर्ष ममाद्राख्या প্রামাদ ভবনোদ্যান প্রারন্তে পরি-दर्शन ॥ शत्रादन्य श्रुद्धान्य नर्न দেবাগানুভাষে । ইতি বাত্তপশানন• कत्तु स्वाप्तिष्ठस्य ॥ त्रस्कान्न भव

नारमन नूरवण खरनाहिकः । नृष्ठा नक्ष वारमान अर्थाश्राक्षाक्षण वाहना।। অনেন:বিধিনা বস্তু পুতি সংবৎসর• वृदः। गृत्र वायज्ञान कर्यप्राम म पूःथ নবাপুযাৎ ৷৷ নচ ব্যাধি ভয় ভল্য न ह वक्कु थन क्या । बीरविषयं नाजः सर्गा কল্লন্ক বসেলর: ।। 🛊 ।। হ্যশীর্ষণ-ঞ্কাৰে।এব পুগৃহ কাষ্টানি রজসা পূর্য্য দেশিক:। এতেষা মেব দেবা-मा विन प्रांखु कामिक ।। वेना-নীয় পুদাতব্য পাযস মধুনা সহ। शब्दन्य कल (स्य भूझगन्ना दि-वाशिजः॥ अयञ्चाय भूमाञ्चारा भर्छा-কা পীত বর্ণিকা। সুরেশায় চ'রবা-नि ভाञ्चताय घृठ उथा ॥ ध्रमुक পীতবৰ্ণ বা সত্যে দদ্যাদ্বিতানক । দদ্যাক্তৃশে পক্ষিনা সং ব্যোনায বু চ मग्रय।। भूषः शानाः मनाजास मूर्तः विजल जया । गृहक्कजाय নধুন যনাষ পিশিতৌদন ৷৷ গন্ধ-गञ्जर्बरम्याय ज्राक् मन्त्राज् माञ्चनः। মৃগে তিল যবা•শৈচৰ পিতৃভ্য: কৃশ-র• তথা।। দৌবারিকে দন্তকাধ্ব• সু-नीत्व यादक॰ जथा। भुझपर**ङ जना**ः দেয়া বৰুণে পদামুৎপ**ল।। অসুরা** বৈক্ষৰ দেয় রস শোষে ছভৌদ नः। यवास्त (मयाः भाभाय (द्रागाय

घ्उन ७३॰ ॥ नागाय नागभूञ्चानि ज्कान् मृथाय मानायर। हिर्वोपः নঞ্চ ভল্লাটে সোনায নধুপাযস।। " নাগায় চাপি শাল্ম শূিয়ে সরস भारतमः। अस्टिं अभूत्रिका (मया की -त्र ठारच्छा परम्बन्धा पि कीतः **ठा** भवेत्वा अर्यात् वड्क विनः। অ:শাদক সবিত্রেচ সাবিত্রৈর গুড পূৰ্বক ৷৷ বিবম্বতে রক্তপুল্ল রক্ত म्दन भाव छ। इतिमाद्यः उत्थन्तुय मान्यान्छ नगाय ह।। घ्उभूत्रछ निवाय क्रमाय एउ भायमः। जाम शक्। नि ना भानि भूतन्। मुख्यक (१।। भृषीयद्रायामनाः मः शक्ति नाः স॰ বলি॰ হরেৎ। সাক্ষত॰ সলিল रिक्षव भक्षगवाः उथा हकः॥ समान् গন্ধ তথা পুল্ল বুন্ধস্থানে নিবেশ যেৎ। আম মা•স• প্রভাগে সর্ব-ক্ষন্ধে তুষোদক।। সিতপদ্ম ঘৃত। भा•म• विषारेयं। हाशिकागरक । अ-भ• वा भूभक• भा•म भर्यप्रमुख्य म-ক্ষিণে ॥ পিওঞ্চৈব তথা ব্লক্ত প্ত-रिन्ध रेनर्थां ७ उथा। मामृद्याः मः भुः দা ভব্য: জ্ঞু কাথৈব পশ্চিমে। অগ্নি খণ্ডেন সহিত রক্ত পিণ্ডেন নিশিত । পুদেয় পাপরাক্ষস্যৈ বাযব্যা ম্যাণ্স সেব চায় উত্তরে পিলিপিছাথৈ

जानु द्रक विन श्वर । वादा-रेश हाग ना नानि वैभानाः हिम्न-দাপযে ।। ততো ভূতগণানান্ত **রা**-ক্ষসানা॰ সুরোত্তম**া পিশাচানা**॰ भगानाञ्च विवा प्रयञ्च कामिकः॥ अ-তান্ বা প্রযেৎ সর্বান্ অপপ্রা-करें व र्थः। এव সংশ্বিতা দেবাঃ भाष्ठि भूष्टिभूरा नृगाः ॥ वाभूषिठा विश्-मिष कात्रकः ञ्चाशकः उथा। তন্মাদেতা সংপ্রঃ গন্ধপুরে ম-(नार्देब:।। शामानः कात्रयिष्वान् गृरु वा मृतमञ्जा। क ।। वाब भू।-সাদ মূলারস্তঃ। তত্ত্বের। বুক্সস্থানে ততঃ অগ্যাদ্বাসু দবস্য পূজন ৷ শি-यः সংপ্রন স্ব্যাৎ স্বীকেশ গণ-ন্য চ ॥ পুজনম্ভ ততঃ ফর্ত্যাদ্বাসুদেই गगमा ह। गन्नाह्र भृज्ञ देनविष्ठ धूल-भीरैभः সুরোভন॥ ততঃ সংস্ক্ষে-उमिन् गर्दाकाकथताः नहीः। मूक्-পাণ পুনদাৰপাণ দিব্যাভরণ ভূৰি-जाः ॥ भाषा ममहंत्याम् वीः भद्रि-তৃষ্ঠা॰ মিতাননা॰। ততঃ পুণন্য বি-জ্ঞাপ্য তন্মযত্ত্বেন চিন্তবেৎ ॥ ততঃ स्नाम मख्या मर्द्धार नयः भद्रः। ধ্যাত্বা সমর্ঘেক্তর যতন্ত্রাস্ত নশং নরঃ ॥ तुक्क इस्त ७००। विद्यान् वर्यप्रामा-**धात्र मक्किटाः । जिल्लाम् मण्याभारत्यः**

ষ্দ্রে বর্জন্য সহ প্জিত।। হেন॰ বা রাজভ বাপি মূম্য বাদ্দে নব ৷ 🛚 **ज**र्व वीरकोषधी युक्तः ज्वर्ग त्रक्रादिः ত ।। রত্নগর্ভ সুসংপূর্ণ বন্ধপুতেন বারিণা। পুশস্ত পল্লবোপেত খেত **ठन्तन हर्षिण ॥ शूक्षः मृगानिज**॰ कृषा गन्नभूष्म विश्मिष्ठः। यारः তেন চ শুক্ষন বস্ত্রযুগ্মন বেষ্টিত ।।। বুন্ধস্থানে ভড়োন্দ্রী কলসং স্থাপ্য न्द्ररए । जिमा कजुर्य थ एव পুজেশ নজ বিগুহ্ণ। গন্ধপুয়েশ্চ रिनर्विष्ठः भूक्रस्य जुन्नरनाष्ट्रेतः । ততে৷ মণ্ডল বাছে তৃ পাচ্যা বা পুৰুথ স্থিত:।। আচাৰ্য্যো গৃহ্ছ স ভाরान् गुरुाही • उर्भायर भूतान् । श्रेष रिखेल ये रेव में रेख दूर का नी॰ ন্তর্পবেক্ততঃ॥ পুজেশ॰ তর্পবেদ্বিদ্বা-নাহতীনা শতেন চ। ইতর্শন্দশ **ভि र्पिवागञ्जिज्धिः भुजर्भरर**्।। मन्। भूगी इंडि॰ शम्हाद वीयंड-ম্ভেন মন্ত্রবিৎ । তত্র পুণম্য বিজ্ঞা भा कृद्धा रेव अखिवाहन ॥ भुगृश् कर्कतीः मन्। या अवस्य भूमिकनः । সূত্র মার্গেণ দিবেরন তোযধারান্ত ज्ञामत्यर ॥ भूईवाखन मार्गिन मूब-বীজানি ভ্রামধেৎ। সুশোভন শৃত। अभि जवा थाजमा कान्नावर ॥ ज

তো গর্জ খনেরখ্যে হস্তনাত্র পুমা-ণক ৷ চত্রঙ্গুল মাত্র তদপঃ খ্ न्तर जूनियंजः ॥ शानस्यतानः লিপ্যাথ চন্দনেন চ ভূষ্যেৎ। মধ্যে দত্বা তু পুস্তাণি শুল্লান্যক্ষত নেব চ॥ আচার্য্য: প্রাদ্ধুথো ভূত্বা ধ্যাযেদেব• **চতু ज्बर। ज्यं। मञ्च (**घारषण युका खाय द्रावन ह।। व्यर्धाः प्रमृता अद्र-(मुंह असुरकारयन गखविए। পुगृश् कक्क ब्रो॰ जावह जु॰ भुभृतरमञ्ज्लेवाः ।। नर्बतः नमाकीर्ति र्विनलः नुमृग-ন্ধিভিঃ। তিমান্ শুক্লানি পুয়াণি পু-किल्लामिठि मत्रन्।। उनावर्खः পরীক্ষেত বেদাদ্যেনাক্ষত ক্লিপেৎ । শুভ॰ স্যাদ্দক্ষিণাবর্ত্তে হুশুভ• বামে ভবেত্ততঃ ৷৷ বীজৈঃ শালি যবাদীনা• ত পর্ত প্রযেদ্বধঃ। ক্ষত্রজাভি: পবিত্রাভি মৃ ডি গর্ভ পুপ্রয়ে ॥ **এব॰ भुञ्जाह्य विधिना**हार्यं हान• ज्-রোভন। সুবর্ণ গা॰ বস্ত্র যুগ নাচা-र्याय नित्वरूरण्य ॥ कालकः ज्ञन्ती भूषा दिक्षवान् मिकित्वा १ हरिय ८। बुाक्षनान् ভाकियद्वा हं भिय नृज्धाः দি কার্থেৎ।। #।। তত ন্ত॰ খাত-यिष्यञ्चाञ्जलाञ्च यायास्य कृ। भूकः वाधः इंड॰ भन्डा॰ न गृह्ह (नायन॰ **७**वि ॥ शुनारि (नावन भन्)

ভবেত্রাবজ্জলান্তিক । তথাৎ প্রা-नारिकी ভূমি:শোধ্যা गावछना छि कः॥ निवातः कङ्ग्रासः वा यावदाः ভূ: স্মারিকা। আকোট্য**ভা• সমী** কৃত্য ততো যোগ সমাচরেৎ ॥ কিঞ্চ। পূর্যেৎ থাতক: যত্নাৎ পা দ॰ পাদ॰ যথা ক্রন• ৷ অস্তাজুল• মৃ-ত্তিক্যা স্বস্তিক চেপ্টিকাদিভি: ॥ সিক্তা সিক্তা তু তোমেন কলসৈ: काक्षनामिण्डिः। आरकार्रेन ७७: व्या गृहित व्यावृक्षिः॥ शा-(मानः भूत्र(य< थाउः मूममः हिव</p> কার্যে । দেশিকঃ পঞ্গব্যেন তা॰ ভূমি প্রাক্ষযেদুধ:।। সুবর্ণ ব্রীহি গ দ্ৰেণ চ্তপল্লবংশাভিনা। ভীৰ্থতো য সুপূর্ণেন স্বর্ণ তামুম্বেন বা ।। সে চ্চেদ্ভিজপ্তেন বারিণা কলসে ন তু । ভতঃ শুদ্ধা ভবেন্ড্মি দোষ যুক্তা नि या ভবে< ।। # II अथ निना कक्षण भाष्टामा। जामायवः मना-(त्रन णिला नक्त मूखम । णिलाः ন্যাস বিধানঞ্প পোচ্যতে তদনম্বর ৷৷ শিলা বাথেষ্টকা বাপি চতসোূে ল-क्रवान्विजाः। श्रामानात्ने विधातन न (खर्वाः सूमाना इताः ॥ हजूत्रसाः স**নাঃ কৃত্বা সমস্তাদ্থ বেষ্টকাঃ। শি**-वाक्षा मृजा विष्णा नन्ताम्। (क्षे

কাজ্মিকা: ॥ সংপূর্ণা: সুতলা: শ্বি काः मुममा नक्तरादि जाः । वन पूर्वा-ক্ষিত। ধন্যা: সধুজ ছুত্র চামরা: ॥ সাস্কুশা ভোরণোপেতা: কূর্য মৎ-স্য ফলাহিতা:। দর্পণা হস্তি বজুা-काः भूमस् पुरानाक्षिताः॥ भस भः कि मृगाक्षाण वृषाकाः मर्बना हि-তাঃ। স্বস্তিকা বেদিকা শুক্লা নন্দ্যা-वर्डक वाष्ट्रिजाः॥ भन्नामि वक्राणाः (পতाः निवाः मदीर्थ मिकिनाः। তথা গো বাজি পাদাক্ষাঃ শিলা খ-न्ताः मुथावशाः ॥ कव्यान स्गनानाः क्षान मुखाः পक्षित छथा। रिष्मूष मिथिशीनाफ मीर्च क्याः कार्जान-তাঃ॥ বিবর্ণাঃ স্কুটিতা ভশ্নাঃ সণত্যা-জ্যা লক্ষণ ত্যুতাঃ। পুশস্ত পাণিক-भाक्षाः भुगंख मुव्र वाक्ष्ठाः ॥ य-থোক্ত লক্ষণোপেতাঃ শিলা নিত্য-হিতাবহা:।। #।। অথ ইষ্টকা ল-क्का १ । उदेवव । इष्टेकानाः मनात्मन লক্ষণ শৃণ সাম্পুত ৷ এ্কবর্ণাঃ সূপ-क्वाक जुनुमाना मत्नात्रमाः ॥ नन्ता-म्। (क्ट्रेकाः कार्य)। क्वूत्रमाः मू সংশিতাঃ। অস্থ্যস্থারাবিতা নেষ্টাঃ कृष्वर्गाः मणकंदाः ॥ मन्द्रभन्न। वि-পকাশ্চ বহুদিন্যাশ্চ বজ্জিতা: । ভগ্नाक विषया श्रीना वर्क्कगीयाः भु-

हुन्तक खथा।। भए । वांउम इखाः সুগ্র শচরারো দেব বল্লভাঃ। ত্রীবৃ-🖚। মৃগরাজণ্চ সমৃদ্ধক গজৌ তথা।। এতে দাদশ হস্তা: সুগরতেষা হ হ नकः नमः। गरूए। छेकरता (छ्वाया वृत्या मण उनाक् जः॥ अवत्मत्ज भू-मारान कर्ववाः मुज नक्ताः। यक রাক্স নাগানা মাতৃহতঃ পুশস্য তে।। তথা मिर्दारयः मस्र कार्यका মধ্যনস্য উদাহ্নতাঃ ॥ তথা হ॰সা-**एगः পঞ্চ कन्याम मूज्या मजाः।#॥** र्यभीर्यभक्षतात्व । भागामः मः পুৰক্ষ্যামি সৰ্বসাধারণ শৃণু। চতু त्रमी क्छ । क्कब क्राव (वाउनवा প্নঃ॥ মধ্যে তস্য চত্ভিস্ত স্বর্গাদ। য সমন্বিত । দ্বাদশৈব তু ভাগানি ভিত্ত্যর্থণ পরিকল্পথেৎ।। রড্গোহায-स अही उ हर्जाणन हारा । बहु रिश विख्राह्य नक्षर्याः कन्नयवू ধঃ।। চতু ভাগেন মঞ্জ্যা: কার্য্যা স-ম্যক্ পুদ্ফিণা। তন্মান নিৰ্মন কা র্য্য নৃ ভযোঃ পার্স্বযোঃ সন• ॥ **শিখ**-রেণ সম• কার্য্য মণ্ডে জগতি বিস্তর•। ত্রিগুণেনাপি কর্ত্তব্য যথা শোভানু ৰপতঃ।। বিন্তর• মণ্ডপস্যাণ্ডে গর্ভ-म्बद्धार जुरे दर्या शामा विक अ

र्यामाष्ट्रा खेस्र विज्विजः॥ श्रामार गर्खभानः वा बही ७ मूथमखनः। **এकामीजि भरि**र बीख॰ येथ्वा मखन भावरख्या। मुकार्य दात्रि विन्तरारम भागायकान् यरक्ष मूदान्। उथा श्राकात विन्यारम यहम्माजिः भएछः गान्।। मर्बमाधात्रगरेक्ष उट श्रामाप-স্য তু লক্ষণ ৷ মানেন পুতিমাযা বা श्रात्राम मक्षत्र मृत् ॥ श्रु जिमायाः পুমাণেন কর্ত্তব্যা পিণ্ডিকা শুভা। গত্ত স্ত পিণ্ডিকার্জেন গত্ত মানান্ত ভিক্তথ: ৷৷ ভিভে রাখাম মানেন উ-**ছাযন্ত পুকল্ল**হেৎ। ভিত্যুদ্বাযান্তদ্ধি खन• **निथत• कन्न**रयम् ख्क् ।। निथ-রস্য ত্ ত্র্য্যেণ ভুনণ পরিকল্পয়েছ। শিথরস্য চতুর্থেন সগুতো নুথন-ওপ॰।। অষ্টকাংশেন গত্র স্য রথ-কানান্ত নিৰ্গনঃ। পরিধে র্গুণ ভাগে-न त्रथका॰ छत्र कन्नूरयट् ॥ छङ्ञीरयन वा ऋर्यप्रामुखकानास्त्र निर्गम । वान-**ब**य॰ ज्ञाननीय॰ त्रथकजिउय जन। ।। শিখরার্থঞ্চ সূত্রাণি রত্নানি বিনি-পাত্যেশ্ব। শিখরস্যার্ক ভাগস্থ• সি-হ- তত্ত্ব চ কার্যেৎ ৷৷ শুক্নাসা-श्रित्रीक् छ। मध्रमाक्षी विवर्द्धारय । অপরেচ তথা পার্ম্বে তছৎ সূত্রণ निशाभाष्ट्र ॥ छएर्जे उपनिः नाः

क्लिगागन मात्रवान् । ऋक्रज्येख কর্ত্তব্য বিকরাল তথৈবচ।। উদ্ধৃ স্ত विकिमानाना कलमः शतिकन्नवि ।#॥ কিঞ্চ। গৰুত্মন্ত•তথা স্বর্য্যাদুপ-রিষ্টাছত্র্রণ । সর্য্যাদিক প্রতিমা যামান্দিক্ষু চাষ্টাসু চোপরি।৷ মহা वदाह रेबन्द्रुशन्ड नदिन रन्छ पक्तिए। । পুতীচ্যা॰ শ্রীধরণ দেব মুদীচ্যা॰ इननीर्वकः ॥ आधायाः यानस्याः ॥ বৈষ্ঠতে রাম নেব চ। বামন**ক্ষৈ**ব বা यव्या वामुद्रिय स्थानत्त्र ॥ 🗱 । किथः n পুৰভূগৌ ভূ শ্যন· দ্বি তীযে চাসন· ভবেৎ। স্থান মেব ত্তীযে তু চতুর্থে যান নেব চ।। পঞ্চনে যোগনিদা তু ষঙে যোগাসন ভবে । স্থান বো গ সনাযুক্ত• সপ্তমে পরিকল্লযেৎ।। नाना गवाकरिक यंज्ञाध्य भधवल्लाहि ভূষিত । नाना পुकात পুল্লাদ্যৈ य थामा छ॰ भूकन्नराय ॥ कनिष्ठ मध्य জ্যেষ্ঠানা॰ প্রাসাদানা॰ यथा कन॰। বসু ভাগা চ ঋদ্বিণ্ডি: পুদেয়া রচনা ं वृरेथः ॥ बात्र म । हा है स्म यू एक नवस्म मणस्य उथा। वनारे (वर्षा रेनवः-न्धारायम्। भृगु नाम्भुजः ॥ यावक ত্তি রভিপ্রেতঃ প্রাসাদ কর্ঠ্ণা নহ। তাবন্ডি রকুলৈ রায়ে বসু ভাগেন বা ভবেশা এক স্তস্তো ধুরো জেয়ে। দি

खञ्चा (विभिन्न) मञा। **५भ**ञ्मा अति-নিত্য• চতু স্তম্ভ• পুকল্লবেৎ॥ #॥ অথ ন গুপলক্ষণবিশেষঃ। নাৎস্যে । ज्याजः मःभुवक्तांनि मखनाना-ख नक्ष । मख भान् भ्वतान् व-'क्किं। भागमान्यानुक्षणं ।। विविन् था मख्नाः कार्यता (कार्ष्ठ मध्य कनीय-সঃ। নামত স্তান্ পুৰক্ষ্যানি শৃণুধু॰ षिष गढ्याः ॥ भूत्रकः भूत्र छप्क সুক্তো মৃতনন্দনঃ। কৌশল্যো বুদ্ধি न कीर्ला त्राज्ञ जुन जगवहः ॥ 🗐 वृत्का विजयरेक्टव वास्त कीर्गः नु. जि॰-ধরঃ। যজ্ঞভদুে। বিশালশ্চ সংশ্লি-क्षेः भजूनकनः॥ ভाগপঞ্চ नन्त-नण्ड मानत्वा नानजनुकः। मृगीत्वा र्यंगेर्कि कर्निकातः श्रमार्खकः ॥ সিংহণ্ট শ্যামভদুণ্ট সূভদুণ্ট ত-থৈব চ। সপ্তবি॰শতি ব্যাখ্যাতা ল-कनः मृगु उ विकाः ॥ खञ्जा यव ठजूः-यिष्टिः পুञ्जकः म উদাহৃতः। দাयिष्टिः পুত্ৰ ভদুস্ত ৰঙি: সূত্ত উচ্যতে ৷৷ অ-প্তপঞ্চাশক স্তম্ভ: কথ্যতে মৃতনন্দ-नः। (कोणवाऽः यहेशकाणह वृःशका-শতা পুনঃ।। নার। তু বুদ্ধি সংকীর্ণো षिशीता ताजञ्जूकः। जगावश्य পঞ্চাশही वृक्ष्मञ्ज विकीन तः । विकय छिष्ट्रिशेनः महाबाख मःकीर्वक छथा।

যত্নতঃ।। হয়শীর্বপঞ্চরাত্রে। ইপ্তকা ना॰ शुकानक बक्रनः जाम्पुठः मृत्। সুতলা লক্ষণোপেত। দাদশাক্ল সংমিতা:।। সুবিস্তার বিভাগেন নৈ পূণ্যেন চসম্বিতাঃ। সুপশ্বাঃ সুপুনাণা **खा এकवर्ण मरनाङ्द्राः ॥ विम्न है**-श्वेकाः कार्यता महजूबमाः मुनः मिजाः। ছিন্নকর্ণা ক্ষাপুশস্তাং পাণিপাদ বি-বিজ্ঞিতাঃ॥সশর্করাঃকৃষ্ণবর্ণ।অস্থ্য क्रात्र विजाक याः। विवर्गा सन्तर्भ-স্কাশ্চ যা: পীনা: পিণ্ডিকাশ্চ যা:।। হীনাশ্চ বিষমা ভগ্না জব্জুরাশ্চ বিব क्किंजाः॥ श्रा व्यथ मिनापिनाम वर् वद्या। मा९रम्। मिलान्यामस कर्ख र्व्यः शुमारमञ्जू निनामय। इष्ट्रकानाः स्ड विन्रामः भागापः क्ष्टेकामय ॥ रिमनक रेमन बःभी ठे ये श्विरक ये श्विकः ষ্তঃ। শিলান্যাসাদিকো ভুদু মূল भारत विश्वीयर**ः ॥ इयमीर्यश्रश्नताः** ত্রে। কর্ত্তব্য ক্ষেপ্টকান্যাসঃ প্রাসা-रम क्रिकामस्य । रेमाल मिनानाः विन्तामः कार्कत्र कर्कद्रा न्याम् ॥ ক্ত্বা শিলাদি ন্যাসেচ প্ৰাক্শিলা-ভ্যথিবাসন । ইষ্টকানা প্ৰতিষ্ঠাঞ্চ गद्धां था व का द्रारा ।। खद्रात पिक् ণা॰ দত্বা পীঠ বন্ধঞ্চ সাধ্যেশ। স্বয়• শ্ৰীদ্যশীৰ্ষণ পোক স্তত্ত দ্বিষ্টি দু

ট ।। 🗱 ।। जभ भीठेरक्रन । इर भीर्य । भीवेवकः उठः सर्ग्राभवा भागार मानजः। भीरठा खप्र[ः] का-ছर्ये भागारमा क्यान्छ ।। भा-म्होनः मध्यमः महाद् क्रमहमः हार्ष भानजः । উভमः बामुरएत्माः स-र्य्याट भीठे विष्ठकनः ॥ 🛊 🏗 🔫 शामाप वक्षानि । मार्जि । এবং বাস্ত বলিং কৃত্বা ভজেৎ ষোড-শ ভাগিক । তস্য মধ্যে চতুর্ভিক্ত ভাগৈ ৰ্যন্তপ্ত কার্যেৎ ৷৷ ভাগ দ্বাৰ-শক তত্র ভিত্ত্যর্থ পরিকল্লযেৎ। চতুর্ভাগেন ভিত্তীনা মুদ্ধাব: স্যাৎ भुनागजः ॥ विखनः निथात्राष्ट्रारग ভিক্ত ছাযাৎ পুনাণতঃ। **শিথরার্জ**-म्। हार्ष्यन विरथ्या जु श्रुपकिंगा ॥ চতুর্দিক্ষু ভদা জ্ঞেখো নির্গমস্ত ভূপা বুধৈ:। গর্ভসূত্র দ্বয়ণ ভাগে। বিস্তারে। মণ্ডপস্য তু ॥ আযতঃ স্যাগ্রিভি-र्ভारेग र्ভार्युकः मूल्माजनः। ११४१-ভাগেন সংভদ্ধ্য গৰ্ম্ভমান বিচক্ষণঃ ।। ভাগমেক গৃহীত্বা ত্ পুাগ্ণীব॰ কল্লমেদ্বধঃ। গর্ভ্তসূত্র সমো ভাগাদ-गुर्ला मूथमखनः ॥ এতৎ সামান্য मृष्पिष्टे॰ भागामरम् इनका । 🛊 ॥ किए। । । यस गन्दत्र किलाम अञ्च निष्ट मृगा खथा। विमानहम्तक छ-

षहीवृत्का १० मृगाधिनः।। वल्जि-इन्तर् उषद्भु नः गर्व छन्तः। गन হু সে। বৃষঃ সুপর্ণ চ পদ্মকোথ স মুদ্ধক:। প্রাদানানামত: প্রোক্তা বি जाशास्यु उष्दिताः॥ #॥ मउस्क স্ভতুর্ধারো ভূমিকা যোডশোছিত:। নানা বিচিত্র শিথরো মেক প্রাসাদ উচ্যতে ॥ মন্দরো দ্বাদশঃ প্রোক্ত: रिकनात्मा मन ज्यिकः । विमानहः न्द्रक खब्दरानक निथन्नाननः॥ न ठान्ड **ज्**भिक सद्द मश्रज्ञि निम्तिक्तिः । বি:শাগুরু সনাযুক্তো নননে: সমু माङ्डः ॥ याउँमाञ्चक नःगूःका নান(ক্রপ সমৃদ্বিতঃ। অনেক শিথ্র खद्य मर्वाजाजुन जैठारज ॥ हन्तु শাল সমোপেতো বিজ্ঞেয়: পঞ্ ज्ञिकः । वनजिङ्ग्तक उषह्कना नावयादिकः ॥ व्यत्मानुयके स्वः ল্যো মণ্ডল শ্চাসু বিৰ্দ্ধিতঃ। সিংহঃ সি•হণতি র্জেয়ো মৃগে মৃগসম স্ত था ॥ ब्रस्तः ब्रस्ताकृति उद्यक्तिका नवरकाष्ट्रयः । अत्रुनीभूषे मः द्यान পঞ্চাণ্ডক বিভূষিত:।। ষোডশাসু: नमञ्जू विष्क्रियः न नमूमकः। भाः ৰ্খবো শন্দুশালস্য উদ্বাঘা ভূমিকা बयः ॥ (याजनामुः न विद्छत्या वि

চিত্র শিথর: শুভঃ। মৃগরাজস্ত বি-थ्याञ कन्तुमाना विज्विजः॥ भाग् গ্রীবেণ বিশালেন ভূনিকাসু ষড়্য়তঃ । जातक हन्तुनावस गन्नः भागार উচ্যতে ॥ পर्याउ गृहद्राक्ति वि गर्य-ए। नाम नाम उ:। मक्ष ज्मुरह्य छष-हम्मुणावा वगान्जिः ॥ ज्मिका व-ডশীতিস্ত বাহ্যতঃ সর্বতো ভবেৎ उथान्। गरू उद्यमुग्गाम्म जू মিক: ৷ পদাক: বোডশাসুস্ত ভূমি-দ্বয় সম্বিতঃ। পদ্যত্ল্য পূন্াণেন तृक्षक इंजि स्ट: ॥ शकाखक ব্রি ভূমিন্ত গর্ৱে হস্ত চতপ্রাণ। বৃ ষা ভবতি নামা য়ঃ প্রাসারঃ সর্ব কামি-कः ॥ मञ्जाली शक्षकारेका शामा-मा (य मर्यामिजाः। भिः श्रम् (उ मे-मारद्वया (य চात्र ७९ भूगानकः ॥ हन्तुभारेनः मरगार्शकाः मर्खे भाग्-গুবি সংযুতা: । ঐপ্তকা দারবালৈচৰ শৈলা বা সূতঃ স্তোরণাঃ।।মেৰুঃ প-कामक्ष यः महार मन्दरः शक्षशीन কঃ। চত্তারি॰শভূ কৈলাস শচতৃস্তি॰ निषिगानकः ॥ निम्तिष्र्वनक सम्मान ব্রিংশৎ সমুদাহ্নতঃ। ব্রিংশতা ন ন্দন: প্রোক্তঃ সর্বতোভদুক স্থা।। বর্ত্ত্রণ: পদাকশ্চৈর বিশেদ্ধন্ত উদা-

क् उः। म्गः भि ः इन्ह ब्रह्मन्द्र विकी

দ্বাল্যানেৰ পুহীৰেত ততঃ শু.জি-ধরো 🕬 ৷৷ চত্ত্বরিংশব্দক্তভদু षिकीतम्य वि**णालकः । यऐ जि॰ण**-हित् तः श्लिष्टिः विश्वीनः শज्नफ्नः॥ দ্বাত্রিংশন্তাগপঞ্জ ত্রিংশতা ন জনঃ নৃতঃ। অষ্টাবিংশমানব मान्डरपूर्व विश्वोनकः ॥ **ठजूर्विः गस्य** সূত্রীবো দ্বাবি **শঙ্কর্ষণো মতঃ। বি**॰ माजिः कर्शिकादः मुग्राम् श्रीम्मः श्रम्। র্জকঃ।। সি ছে। ভবেদ্দিহীন চ শ্যা यङापु। विशीनकः । मुख्युस उथा পো্জোদাদশ শুম্ভ সংবৃতঃ ।৷ মণ্ড পাঃ কথিতা ছেতে যথা বল্লক ব্বিতাঃ। ত্রিকোণ• বৃত্ত মর্দ্ধেনদু মষ্ট- 🎚 কোণ দ্বিপ্তক ॥ চতুষোণঞ্চ কর্ত্তব্য সংস্থান মণ্ডপস্য তু। রাজ্যঞ্ বি करिक्व मायूर्वर्क्षन (सव हा। भूधना-ভঃ শ্রিয়ঃ পৃষ্টি স্ত্র্যস্থাদিষু ভবেৎ ক্র নাৎ। এবন্ত শুভদাঃ পোক্তা অন্য-থা তু ভ্যাবহাঃ।। 🛊।। অথ তত্ত্ৰ দার নির্ণযঃ। হ্যশীর্ষপঞ্রাতে। গুান ন খ্যে চ প্রেচ পুত্রগ্দার পুকল্লযেৎ ৷ বিদিশাসুচসরাসু তথাপুত্যমুখ ভবেৎ ॥ मिक्काल हा जात है है व क्तिम शुङ्गिथ• **अदि**। किथा। वि-ন্তারাদ্দ্রিংশ দ্বারণ কর্তব্যক্ত সুশো-ভন। জাতক্প॰ সরজত। তদ্যুত্র-

रित व् उ॰ ॥ ॐ जूक्रवार्क्त **डः वर्गः** पदा শাখা ন্যসেদ্ব্ধঃ। তূর্ব্য মঙ্গল ঘো यिन वाञ्चानान् अखिवाह्य है। बातन्य ह हर्ज्या श्न कार्यो हख भूह खरको । দণ্ডহন্ত্রৌ তু কর্ত্ত:ব্যৌ বিম্বক্সেনোপ-মাবুভৌ ॥ শাখোজ্ব • ন্যস্য রত্নানি न्रारमम्ब्र गूप्यतः। जम्र ग्रास्र श्रिः **छा (**म्वी সाक्षालक्षीः मृत्रभ्रती ॥ कर्डवडा मिग्गरेकः मा जु नाभडमाना ঘটেন তু। শাখোডুম্বরকৌ কাষ্টো পি এবল্ল্যাদি ভূষিতৌ ॥এক**শাথ•** ত্রি-শাথ॰ বা ষট্ শাথ॰ দ্বার মিষ্যুতে। নবশাথঞ্চ হ্বর্রী ত অত উদ্ধু • ন কা-রবে**ং!৷ বিফ্ববতার ক্পাদ্যঃশাখা** त्रद्भन ज्वरय**्। #।। भाष्टरम्। ठजुः**-यश्चि भर कृदा मार्या हात भुकन्न-বেং। বিস্তারাদ্দিগুণোছায স্তপ্রি-**ভागा किं ज्**वि ॥ विखाद्रार्फा ভবেদ্গর্ভো ভিত্তযো १न्ताः সমস্ত-তঃ। গৰ্ভ্তপাদেন বিস্তীর্ণ দ্বারণ দ্বিগু-न भायजः ॥ উहुाया भाम विखीर्गा শাখা তদ্বদুমুম্বরঃ। বিস্তার পাদ পুতিম বাহুল্য শাখযো: মৃত ।। ত্রি পঞ্চ সপ্ত নবভিঃ শাথাভি দ্বার মিষ্যতে। কনিষ্ঠ• মধ্যম• জ্যেষ্ঠ• य-था (याग॰ भुकन्नत्य ॥ व्यक्ताना॰ শত সাৰ্দ্ধ চন্বারি শক্তি ক্তম।

थन। मुख्य भाषुव। धन थान। स्व চ।। শত চাশীতি সহিত বাত निर्गमनः ভবেৎ। অধিক দশভি ত্তবত্তথা যোডশভিঃ শত ।। শত মান দ্বিগ্রীয়ম্ভ ভবন্ত্যশীভিভি তথা। দশহারাণি চৈতানি ক্রমে भाकानि नर्वना।। जनगनि वक्तनी यानि मानस्मार्ष्वभनानि छू। हात्रस्य **श्रु**गःज्ञन मर्बवाञ्चय् वर्ड्करंग्ट्॥ वृ ক্ষাবাৎ স্তম্ভ কুপ ধুজা रिशा अला। अख्न वा विका न का तः मु छरः अत्य ॥ ऋगः पूर्वाछ रैक्टव পुवामः ऋ खग उथा। (तो র্ভাগ্য• বন্ধন• রোগো দারিদ্যু• কলা-হ॰ তথা।। বিরোধ শ্চার্থনাশশ্চ স ৰ্ব॰ বেধে ভবেৎ ক্রমাৎ। #11 অথ शुकादानि निर्गयः। इयणीर्यशक রাবে। প্রাসাদস্য চতুর্ভাগৈঃ প্রা कातरमहाहारा ज्या । शक्षक्षमा দেবস্য একছন্তা তু পীঠকা॥ ভষা-ভূ দিন্তনঃ পোক্ত স্থা গৰুড স্তু প:। একহস্তাদি সন্বীতি ত্রিংশদ্ধ স্তাম্ভ মেব চ।। 🗱 ।। তাথ বৃক্ষরোপণ निर्नगः। नाष्ट्रमा भूर्द्धन किलाना वृक्षाः कौतुव्कास मिक्ता। शन्छि মেন জল শুেধি পদ্মেৎপল বিভূ विजः ॥ উन्दर्भ नतेल खारेलः भू जा ॥

न्। न्यू व्यादिशा नर्व उस बन्ध्य **४**° ছিরমহির নেবচ।। সর্বতশ্চা প कर्डबुः शतिथा वनगानिकः। गारा তপোৰৰ স্থান মুক্তরে মাতৃকাগৃহ• ॥ নহানস॰ তথাগেষে নৈশতে তু বি-नायकः। वाक्षा ञ्जीनवानम्ह वाय-ব্যে গুহুনালিকা॥ উত্তরে যক্ত শা-वा ज् नियान द्वान मृखः । वाकः ণে সোমদৈবত্যে বলিনির্নপন স্থতি ॥ পুরতো গৰুডস্থান তথানে,ষা। যথোচিত । এবনাগতন **অ**র্য্যাह-ভ নণ্ডপ সংযুক্ত।। ঘণ্টা বিভানক সতোরণ চিত্র যুক্ত• নিত্যোৎসব পু-মুদিতেন জনেন সার্দ্ধণ। যঃ কার-বেৎ সূরগৃহ• বিবিধ ধ্বন্ধ্যাচ্য• শ্রীস্ত• न गुक्छ जिम्। निविभू छार छ छ ॥ 🛊 ॥ অথ জীণোন্ধারঃ। বিষ্ণুধর্মে তৃতীয का(७। यम्) ब्राद्धन्तु विषय (५व (व-শ্ম বিশীর্য্যতে। ত্রম্য সীদতি তুদা-ब्रु॰ (म्वरवन्त्र यथा जथा ॥ कृत्रा बी-র্ণস্য সংস্থার তথা দেবেশ বেশানঃ ৷ দিশুণ ফল মাপোতি নাত্ৰ কাৰ্যা বিচারণা।। বিষ্ণুরহস্যে। পতিত-न। ह यः कला भ उभानम। तक्षिण। विस्था রাযতনস্যেহ স নরো বিষ্ণু লোক ভাক।। অগ্নিপুরাণে। পতি-ত পত্রমানন্ত তথা । বিত্ত নরঃ।

माश्रुवार ॥ (स्वीभ्वतन । हर्। हें ब्रह्मा अपीर भाषा । अपास तकः। ज्याद न तं भूगतान जीन (म्राष्ट्रात गाइतट् ॥ इत्यार्व १ রাছে। বাপী কৃপ তভাগানাং নুর **थान्ना• जथान्य । श्रु**जिमाना• स ভানাঞ্চ সংস্কর্ত্তা নো নরে। ভূবি 🛚। পুণ্য শতপ্তা তাৰ; ভবেমুনান निष्यः। ऋ॥ भूजिशामा विदिः॥ कार्ने। उथा मन्तित निनित्छ। शायः विश्वामीत्याद्य इन्याद्यव देवल रिकः ।' स्टबानन लुटिक्टा च चत्राका **छ छि । कि । जि**म् छि स् शिर्म रैनर जन्मूनी जा विस्मयदः ॥ देखि শ্রীকরি হাজিনিদানে ২০বিদানেঃ! ीरक ही नवार देखिला की।। लू विद्याशाल भक्त वया। नव র বিদ্যোগ পুর বিতি বুং নপুং. य एक्ष इक्ष्यन प्रकेष्ट हिन्सुन्त টী নাশা কুরতঃ 🛚 मलिद्धः शुः जब्दुः। ইতি प्रतिनी ॥ জানুপজাভাগঃ। ইতি হেন छन्तः ॥ गिनितारान्: प् विडाव:। इंडि भार् निष्का॥ क्षिता जी मन्दिर। यथा मन्दिरा

জমজ্ভা হয়ে ভান বিতৰণ কৰা माउत्तमनिकि स्थुन्बहारयः॥ प्रमृत्य भी पाकिनाना। ३७,**मतः** োণ ীগথায়। মাদুর ইতি ভা-व।। २ जिल्लामनी।। न्य कारती की बादगग**ियो। या ज्** মত্যাম্ব ফ্রের। ইতি রামায়ণ ॥ त्रत्राक्षीकः सू ब्राद्यः। इंडिबिः का उलाबः ॥ नत्त्रात्क्षंन्य भू रेसुहिए।२० 75,47:11 नत्त्रात्रभः हे । देव दुरुग बद्ध वि वि । देजातकः ॥ मन्द्रः 🛷 शहं हर्ष् । ऐक्टान्सः॥ नारावित्रप्रायः । प्रायः। गरः २ मुक्ता ७३ । ३ दि भ**य**तद्वा वर्णीत ्यस्यः च्या । । । प्रशासिकारः । वेलामा । अस्य । विध्याः र्यक्षा । अतः क्रियमा खाउ मुख्या मृतिगखराउँ। वातिपुरता विकार्यः ॥ नायन দূৰ শীড়াভঃ বঁলোয়ত সুৰালিকঃ । जूरलाक गरी आङ्गार्भागाव लिए क्षकः॥ वशः पुर्वतन। त्वानः न्र्वहन्त्र विद्याननः। देशावे दिखेर् क्षि द्यागदानी विद्याजिकः॥ भू

ভু মাতঙ্গ করবৎ গীন নিস্তল বাহ-

कः। আরক পাণি নগন মুখ পাদ ॥ काब्राच्छवः ॥ क्वीन मथ्र काक्रमञ्जः পুনত গলচম্বঃ। পুফ্ল পদাপণা-कः क्रिणात्र घान छन्ननः ॥ क्युन्रीरवा नीनक्टूः भारम् सम्बद्धाहनः। शक भूत्रायुखा यागी भूत्रकाम ७ म-ণ্ডিত:।। কান্তঃ কটাক্ষ পাতেন ভ্রাম যন্নখন দ্বাৰু । সুগদ্ধি নাক্তাভাত্ত শৃঙ্গরেরস সেবিত• ৷৷ বীক্ষ্য ত• তা म्म रक्ष्युम्था मानमाण्ड (उ । मत्रीत्राम्या मन उत्जा विद्यायाविष्टे চেত্রস:।। ঔৎসুক্যু পরম জগার। शु देशकात्रिकः समः। म ठालि त्वध সংবীক্ষ্য সুষ্টার॰ জগতা॰ পতি॰ ॥ भुगगा श्रक्षः भाव विनयानं कन्न-রঃ। শ্রীপুৰুষ উবাচ। কি॰ করিষ্যা-माहर कर्मा तुकार छत्र निरमाक्य । ना॰ नार्लंऽ পुरूरका यमापूर्विट ला-चिट्ड विश्व ।। जिन्नानक यम्याः গ্যু॰ স্থান॰ পত্নী চ বা মন। ভংগ স্ব क्य (लाक्न गुड़े। द् जग जा॰ यजः ॥ मार्क्एथर উवाह । এव॰ छत्र। वहः শুরা পুক্ষস্য ন্থাত্মনঃ। ক্ষণ ন किलिए (भावाह यम्श्रेविश विधि । ত:া ততো মন: সুধ•য়ন্ত্র সম্যত্ত मृङ्य विगायः। छेतात भुक्षः वृक्ता उ क्रियादिन भावस्त्। व्यक्तावात्

। অনেন চাৰুৰপেণ পুত্ন বাণৈচ্চ প किः। ताइयम् भूकवाः खी॰क बक मृष्टि॰ मनाउनी॰ ॥ न (एवा नह গন্ধর। ন কিমর মহোরগা: । নাসুর। न्ह रेम्ड्या वा न विम्याश्व ब्राक्त्राः ৷৷ ন যকা ন পিশাচাশ্চ ন ভূতা ন বিনাযকা:। ন গুছকা ন সিদ্ধাশ্চ ন মন্ধ্যান পক্ষিণঃ ৷৷ পশ্বোন মৃগাঃ কীটাঃ পতঙ্গা জলজাশ্চ যে। न उ नार्व ভदिया छिन वक्ता (य শরস্য তে ॥ অহ• বা বাসুদেবো বা ञ्चापू बी भूकरवाडम । ভदिष्णाम खव वर्षा किमरेनाः शुगिधाविज्याः ॥ शृह्यक्शी कञ्ता शुविनन् इत्रय नरा। न्थरङ्कः सग ज्दा अकन् हि॰ मनाजनी॰ ॥ वृद्धः भूग्नवानम्। मना म्थाः वकाः मतास ह। मः र्खियाः शुानिनाः निज्यः यह त्याह-করো ভবান্ ॥ ইতি তে কর্ম কথিত• मृष्टि भावर्खकः भुनः । नामानि ह शिष्राभि यस्त्र स्थाशृष् ভविष्रिज ॥ गार्काखन डेवाह। इंजुब्बाथ मूत्र জ্যেষ্ঠা মানসানা॰ সুখানি চ। আ-লোক্য চাসনে পদ্মে সোপবিষ্টো **୧**ভব**্দণা** ।। ইতিকালিকাপুরা-ণে কাম পুদ্ভিবো নাম ১ অধ্যায়ঃ ।। 🛊 ॥ নার্কণ্ডেশ উবাচ। তত্ত স্তে-

। मूनयः मर्ख जन जिल्लायर दिनः । ठक उप्विच नाम महीठाकि मथा छन।। मुथावलाकनारम्व छाज् वृञ्जाञ्ज मन्। एकाएयक जुड्ठाद्रः স্থান• পত্নীঞ্চ তে দদুঃ ॥ ততো নি-শ্চিত্য নামানি মরীচি পুমুখা দ্বি-काः। উচু: সঙ্গত নেত্রম পুৰুষায विकाडमाः ॥ **अव**य छेत् । युगार পুনখ্যচেত স্তুণ জাতো হ্মাক তথা विविः। अवाचाचाथ नाम् । दः वाक গেয়ে জান্ব্যসি॥ জগৎসু কাম্বন 🏞 छ 🖫 गामा नहि दिन्तरञ् । व्य গুজ-কংগ নাশ্বাপি খ্যাতো ভব ন-<u>(साञ्चा। सम्नाचामनाथा छः भास्त्रा</u> में भार अमर्भकः। उथा कन्मर्भ नामाः পি লোকে খ্যাতো ভবিষ্যসি ॥ खंदामधानाः यवीर्यप्रः उद्योर्यप्रः न छः 🍕 🦠 । वक्षवानाक्ष ह्योमुागाः वु 🐃 ়া 🚧 ভাদৃশ ।। স্বর্গো মর্ত্য-🌝 াভ ল॰ বুফালোকঃ সনাতনঃ। व्यवञ्चानानि मर्वाणि मर्वताणी छन् सन् यकः र्वे किन्ना ठानि विल्लासन नाराहः सांखि एक नगः। यव यव ভবেং পাণী শাদ্দলা গুরবো হথবা।৷ ভত্র তর তব স্থান নত্যাবৃদ্ধ সদে।-ে দক্ষো হয় ভৰতঃ পত্নী স্বন্ধ राम्। शिलां छना ।। इंडि कानिका

भूत्राप्तर ध्वरायः ॥

सन्धानमः भूः सराताक्र्डः। ইতি

त्राक्षियकः ॥

सन्धानयः भूः थासः। ইতি त्राक्षः

सन्धान्यः ।।

सन्धाः ॥

सन्धाः जी भीवायाः भन्धाः निद्रताः ॥

रेठामतः ॥

सन्धाः जी सन्धा। ইতি नद्यत्राः

্ননুয় পুণ শোকঃ।। দৈন্যণ। করুঃ।। কোবঃ। ইত্যমরঃ।। অহস্কারঃ। ইতি শব্রহাবলী।।

वनी ॥

उत्थरिक उत्र जागा मञ्जूमा। ७८ कि छिएवि हा निवार्गगानास्मक नधि विकि नाम विवास मर्च ज নারাগণেনোক্তত্বাৎ তথাগি অন্ন জ্বাদিক নোক্তণা মনুত্রন্য স খ্যাত न्वां । विन्यः क्रिके गा॰ गानुरम् विकाखनाः। मध्यष्टि ख्यान्यानि नियुज्ञान्यादिकानि ज् ॥ বি•শতিস্ত সহসাণি কলোযঃ নাধি-का विना। नमुख्यमा म रेथा नि **ए** श्रिम् कविजा विजाः ॥ हेट्रि । এउम्**का** यथा ००५१२ = ००० । ज छजुर्दम एक्ट्रेज ज्ञाहरू हेन्द्र । **यूगा**न्ने र तरे हर । लूदं वृत्र यूग सार् । তত হোড়া বিহীয়ত **ঘোপর**ক্ষ ক नि देवन व्यास्कानि नृत्वाः ॥ यन ानानि मथा। हजा व जीनि ख रेज्यः ज्ञापिषु यथा कन्। विवताः पाला॰ पर्तु 'लि गुरनतालः भूतावित ইতি। সভাৰত। চল্বাৰ্গ্যন্তঃ সহস্। নি বর্ষণোত্ত ত্তু গুলা চন্য ভালে गरी हका मह्याभाष हथा िह ११ वेबलप् नायलप् सनक्षाराम् ष्ठ दिव। এফালোলেন एउँ। । সভ্র- বি र जिल्लिस वामग्रर्थः । द 🐃 🔄 सङ्गा (यानि६००० हजू सर्मू।नि মন্য মর্যাণি ৪০০ চরারিশভানি :

সন্ধ্যা• শবর্ষাণি ৪০০ চত্ত্বারিশতাৰ্ नि । अवः स्विभात्न अङ्ग्रि वर्षानि অঙ্গতাধিক চতঃশগ্যাণি ৪৮০০ এবং ত্রেভাষাঃ ষট্পতাধিক ত্রিসহ-সু- ১৬০০ এক দ্বাগরম্য চতুঃশতা-विक॰ विमहन २८०० अय॰ कलाः भाउंच वादिक रमक गर्मु । ১२०० म-ब्राह्य द्वारण महमुनि ३२००० । घट्य एएटर भड्डा ीमा भान य-धारत्या वस्ति रेमका शकु ब्रह्म सामा (बहा हमाश्ची जूब वङ्गि বেলাঃ। এলানি দুন্য ত্রণ তাডিতা-नि यूगाक मन्थाः गति विखिंगनि ॥ ५५२ कि मृन्युट मञ्जा यथा ११२४०००। (बङाया यथा १२৯५००० । हाधवम् यथा ५४८०००। वस यंथ' ३ ३२००० । मण्यास्यम १ ३२०००० । या विश्वांक्ष वर्षाति यातः ताङ्बार ভিয়া নোক্ত'। ইতি ভটীয়াৰাণ ভরতং ॥ 🖰 ॥ অলিচ। বৃদ্ধণো দি-ন ন্ধ্যে চত্ৰলৈ গ্ৰন্তৱাণি ভবস্তি। একে। मनु योगस्थिकाङी खर**ि म**-বালো শ্ৰুৱা স•ক্তমে ভবতি। एक सम्मा॰ नामानि । **পुथ**ः चाय-ादा वर्ः । विजीयः **वाद**ाहित्। নবুঃ। ভূতীয় উত্তয়ে। **মনুঃ**। ৮০ 🌣 **ानसा मनुः। भक्षमा** दिन् 🕏

∤ মনুঃ। ষষ্ঠ শচাজুধো মনুঃ। সপ্তনো 🍴 रिववश्राका नमुः। वर्षनातम २गः। काञ्चनः मावनि र्यन्तः। नवस्या मक्कमा वर्गि मंबुः। एभाया व क्रमावर्गि मंबुः। । এकाराणा धर्मामावर्गि मन्: । वा-माना कर्मावर्ग र्यमः। जामानानाः (प्रवता भि र्मनः । एक्त्री इन्तु कावित बंबुर ॥ शुक्तिमन् उद्ग । छश्वनः बलाहा म् त्वरा**ग मर्श्व रानू मनुष्** প্রান্য: প্রক্পুথ্যবার । তল্পা । শাবস্ত্রে ন্নুন্তরে বড়ো প্রতারঃ ज्ञादन्तुः। गमान्त्या (नवाः । सहीः क्षिण जनवः मधर्गः। यायस्यवा मः। मुला कि लाखानशासी मन्श्री **।। সংরোচিষে বিভূরবতার: ।** দ্বাচন 🗟 🚎 । দেবা 🔞 বিতাদ্যঃ । উল্লেখ্যাদেশ: সপ্তর্মণ:। অগ্নিসূত: | बाद्याकिया भनः। मुजय**्तन द्रा**-िंग्ट পुरुषा सनुश्राः ॥ २ ॥ *ি লাম* সভ্য**েসনো হ্বতারঃ। সভ্**য विभिन्तः। मृष्ठ(दिव **भुज्जन्**वित्य) लबाः। व शिष्टमुजाः मक्षर्ययः भूमः मामग्रा । लियातुक जू क छ उरमा मनः " वन मृक्षय यञ्जासामा खर ু চাং । ৩॥ তাম্সে হ্রিরব্ভারঃ । विभिथ इन्तुः। दिवृजारया (म-बाः। (ज्याजियानास्यः नत्वर्ययः।

जानरमा गुनः । व्यथ्याजि नदापय স্তৎ নতাঃ ।। ১।। রৈবতে বিঙ্গপ্তো হৰতাভঃ। বিজু রিন্দুঃ।ভূতরগাদযো (रिवाः । रिवापुत्रामानयः मध्ययः। ेरेतवरका सन्:। व नि विक्राप्रस्य **ख**८ স্তাঃ ।। ৫ ।। চাফ্ষে অজিতো ২ব তातः। नन्तक्रम हेन्दुः। অभ्यापत्या (नवाः। इर्ग्यमानीतकामयः मधर्म-यः। ठाक्षाया ननः। शुक शुक्य मृतुः-सापन उट गुजाः ॥ ७॥ रेवनम्राज वागाना १वजातः । शूतन्तत्र इन्द्रः । णारिङ्या वमत्वा कम्। वित्यतम्बा सक्ता अधिनात्य छ इंछ्याम्य (द-বাঃ।কশ্যপো হত্তি ব শিষ্ঠো বিশ্বা-নিত্রে গোত্রো জনদগ্র ভরদ্বার এ-তে সপ্তর্য:। বৈবন্ধতো নৃনু:। ইন্ধা-कः नृगः भगा जिः मृष्टेः श्ष्टेः कक्षकः নরিষ্যন্তঃ পৃষ্পুঃ নাভাগঃ কবিঃ এ. ত मनूश्या रम्।। १।। यथ छ. বিষ্যাণি। সাবর্ণিকে সার্বভৌনো **২বতার:।** বলি রিন্দু:। সুতপদো-বিরজা অত্তপুভা দেবাঃ। গালবঃ भीखिमान् भवमृतामः अस्थामा क् প: অব্যশ্ক: ব্যাস: এতে সপ্তব্যঃ । जावर्णि बंबुः। निर्ध्याक विद्रबद्धाः म्। उट मुजाः ॥ ৮॥ मक्समावर्गिः क अयाजा १वठाइः । मुज हेन्द्रः ।

यन्त्र

পার নরীচি গর্ভাদ্যা দেবাঃ। দু্যুতি मनान्ताः मश्चर्यः। एकमावर्गि मंगूः । ज्ञरकञ् ही शिरकद्वारत खर जूजाः ॥ ३॥ वृक्षमावर्गिक विश्वक्काता १व-তার:। শমু রিন্দু:। সুরসেন বিক कार्गा (त्वाः । इविच्रान्तराः मर्छः र्यः । वुक्तभाविर्ग र्यनुः । ভূরিপেনा-**म्रा छ८ সুতা: ॥ ১०॥ ध्यां माव**र्गिक ॥ श्चरं अजू द्वर जाद्व । दिव् उ इन्तु । वि হহম কানগনাদ্যা দেবাঃ। অক गान्यः मछर्ययः। धर्म्यमावर्गि मनूः। जज्रधर्माप्य ख८ मूजाः ॥ ১**२**॥ করুসাবর্ণিকে। সুধান্যখ্যে। ২বতা-तः। अ**उ**थाना इन्द्रः। इतिजानस्या (एवा: । जल्मामृड्यारमः मर्ख्यातः । क्षुत्रावर्णि मंनुः । (एववपूष्टाप्याप्य) স্তৎসূতাঃ ॥ ১২ ॥ দেবসাবণিকে যো-গেশ্বরোহ্ব ভারঃ। দিবস্পতি রিন্দুঃ। मूक्यं नृवार्ता (स्वाः । निर्धाक छक् **म्मा**न्धाः मध्ययः। (स्वमावर्ग संनूः। । চিত্রসেন বিচিত্রাদ্যা স্ত্রং ॥ २०॥ हेन्द्रमार्गिक दृश्कानू वर তারঃ। শুচি রিন্দুঃ। পবিত্র চাক্রবা मरया (मवाः। अग्निवाङ् भूतिभुक्त मा लवान्ताः मधर्वतः। हेन्तुमावनिर्मन्ता िक १ खें हर्शामा खर मुख्यः 🗆 🖰 ४ १। गरिषा जारा करमा १ प्राच । हेरल्या

(मवद्राद्धे यथाववी ह। मन् वास्ते भ् থিব্যাণরাজা ভবতি তৎ পুত্র পৌ. धाराया मनुष्ठत ममाश्चि भर्याष्ठ द्वा-कारना ভवछि। एवजाः शुकानाः यः क्कापि कर्म उड़ी खट कन भुगह छ। मधर्याया धर्ममाञ्जानि भुकानगिष्ठ । ভগবদবতারা এতান্ স্ব স্ব কর্মণি निर्याजयिष्ठ रेम्छ। द्वाक्रमानीन् श्र्य करहा पुष्टि है।। हजूर्यम मन्द्रस्ति तु ऋ-ণ এক দিন ভবতি তন্মনুষ্য মানে-নৈকঃ কল্পঃ। ত্রি॰শৎকল্পৈ রুপ্সণ এ-কোনাসো ভবতি৷ইতি শ্রীভাগবত न उ॰।। #!। अन्। हा। वर्ष लक्षानि हज्ना-রি ভবেৎ কলিযুগ• ক্রমে। দ্বাত্রি•**শ**-ত্যা সহসৈুস্ত সহিতান্যপি সংখ্যুষা ॥ ठजुःविष्टे महमानि लक्षान्। हो ठ मः थ।या। वर्षागाः हाभद्रः (भाकः यूग॰ भृई निम्मनाए।। (वडा हाम्म লক্ষাণি বর্ষাণাণ পরিকীর্ত্তিতা। ব-এবত্যা সহযৈয় সংযুক্তানি ভবন্তি-हि ।। मन मध्य वक्षाना वर्षानाक ক্ত॰ যুগ॰। সহসৈু রপ্টবি॰শত্যা স॰। যুতান্যপি সংখ্যা।। ত্রিচত্বারি:শ-ল্লকাণি সহসাণিচ বিংশতিঃ। মা-নৃষেণ পুনাণেন ভবেৎ চাতৃমুপি ক-गाए।। नष्ठ विष्ठेण नक्षाणि बिःमर কোট্য ভথৈব চ। বি**ংশ**তিক্ষ স**হসু**।-

্ণি মন্বন্তর নিহোচ্যতে ॥ চতুরু গৈ-ক সপ্ত হ্যা মন্বন্তর মিতি শু.তি:। ক-ন্দ্র। নন্ন স্থরৈ রেভি শ্চতুর্দশভি ব্দচ্যতে ॥ (कार्देश हारण वर्दे विश्वासकारि ত ভব্তি চ।। অঠাশীতি সহস্থাণ कीरवट साराम्यावा ननुः। इंडि व श्चिभुद्रामः ॥ 🗱 ॥ यभद्रवः । भार्कः (७४ केताह । सूत्रुडंद स्तानाः का-লো যাব**ং পালয়তে পুলা:। একো** শনুঃ স কা**লস্ত মন্বন্তর মিতি শৃত**•॥ জদেক সপ্ততি যুগৈ দেবানা মিহ জা- ॥ যতে ेठ শতুর্দশভিঃ কল্পে। দিন যেকন্ত বেধ্**স: ৷৷ ইতি কালিকাপু**-ज्ञारगर्व व्य**ष्ट्रायः॥ #॥ व्यन्द्रप्रि।** মন্বস্তর গ্রেশেষাণি শ্রোত্সিছান্যনু-ক্রমাণা মন্তরাধিপাণ্ডেব শক দেৰ প্রোগনান্ ।। ভবতা ক**থিতা**-্রত ্রাতুমিছান্যহ ওরো। 🕮 পরাশর উবাচ। অতীতানাগতা-नीह यानि नवुष्ठद्राणि वि । जानाहर ভবতঃ সম্যক্ কথ্যানি স্নাসতঃ १ अध्यक्षतां ननुः भूवं ननुः सादा-िष 💯।। ঔडिनि खानगरेकद িব া চাক্ষুৰ তথা ।। ৰডেতে মন াৰ প্ৰীকা**ঃ সাম্পুত**ন্ত রবে: স্তঃ। देखवरका २य॰ ल्राइट मधन॰ ব উত্তে ২ন্তর•॥ সাম্যুবন্ত কথিত•

कन्नामावन्तरः भया। (स्व। खबर्यरे महत्र যথাবৎকথিতামযা।।১॥ অত উদ্ব পुरक्रानि मताः शादाहिषम्। जू । मन्डवाविधान् मम्राप्तवी व् ख সুতা॰ তথা।। পারাবতা: সতুষিতা (एवा: स्वाद्वाहित्य श्वरत्र। विश्वन्छि-खब (नरवरम्मः। रेगरवराजी महावलः १। ७ इ उ सु उथा भु । त्वा पर डा नि यंष-ভ তথা। বিশ্বর শ্চার্বরীবাণ্চ তত্র मधर्वरा ভवन् ॥ हिज कि भूक्षा-দ্যাশ্চ সূতা: ৰারোচিষস্য ত্। দ্বি-তীয় মেতদ্যাখ্যাত মন্তর• শৃণু চো-ত্ন• ॥ ২॥ ত্তীযে হপ্যন্তরে বুন্ধ-को खिन मान या मनः। नुभाउ मान তত্ত्वत्मु रेनद्वया जूर मृत्त्रश्वतः ॥ সুধামান खया मठ्याः मिवाकाय भुजर्पनाः । वणवर्डिनम् शिक्षाज গণা দ্বাদশকাঃ মৃত্য়ঃ ॥ বশিষ্ঠ তন-যা স্তত্ৰ সপ্ত সপ্তব্যে। হভবন্। অজঃ भव्रम् हिव्याह्या छःथो इमि मताः यक्षा रवा उथा। मजाक मूबियः শৈচৰ সপ্তবিংশতিকা গণাঃ॥ শিবি-রিন্দু তথা চাসীছত যক্তোপলক্ষণঃ । সপ্তর্যক্ষ বে তত্র ভেষা॰ নামানি मिण्।। (छा। विधान। भृथः काता रिष्ठानि ईउक खया। भीवत्र कर्वः

मृजाः ॥ नरतन्ताः मृग्राविर्गाः वज् मृ नि मखन । सारताि म (क्ति-खिन खानरा रित्व खा ॥ लि-खिन खान्या क्रिक जानरा रित्व खा ॥ लि-यु जान्या क्रिक ज्वारता मनवः मृ खाः। विकृ नातात्र जनमा म ताक किः लियु जः ॥ मन्द्रताि लियानजा- न् वक्त यानाचा वः मकान् । ६ । यर्ष्ठ मन्द्र हानी हाक्याथ । खना मनः ॥ मर्वाक खेथरवानुता (हवानि नि व्याय स्व । व्याय । व्याय । म्यू जान ज्वा । म्यू जान लियोक मानः ॥ म्यू जान विव्रकारित क्रियान् ज्या । म्यू जान विव्रकारित क्रियान् ज्या । म्यू जान जित्रकारित क्रियान् ज्या ।

विजि वर्षरा । जिकाः भूकाः भाउपृत्त পुर्याः न्मशावनाः ॥ ठाक्षमऽ मताः भूषाः भृषिवीभज्या २७वन् 1৬1 বিবয় ত: সুতো বিপু শুদ্ধদেবো মহাদুর্যত: য় মনুং স বর্তত ধীনান্ সাস্ত সপ্তান শ্ভরে ৷ আদিত্য বসু কদাদ্যা দেবা শ্চাত্র নহামুনে।। भुत्रन्तत्र खरेथवाज निर्वा जिम्हा শ্বরঃ। বশিষ্ঠঃ কশ্যপো হথা গ্রি র্জন-দক্ষি: সপৌতমঃ ॥ বিশ্বামিত্র ভর[্] बाको मध मधर्यया १व চ। ইস্থা-करेक्टव नाजारमा धृष्टेः मर्याजि রেव চ ৷৷ নরিষ্যস্তশ্চ বিখ্যাতো নাভানে-**पिष्ठे अव छ। क्क्यण्ड शृयधुण्ड वजू**-मान् (लाकविभुजः ॥ मता दैववञ्च छ-সৈত্তে নবপুত্রাস্ত ধার্মিকা:। १। বিষ্ শক্তি রনৌপম্যা সত্ত্বোদ্রিকাছিতৌ স্থিত। ।। মনুস্তরেম্বশেষেষ্ দেবত্বে: নাধিতি**গ্ৰন্ত। অ'শেন তস্য যজ্ঞো** ংসৌ জক্তে স্বাযমুবা**ন্তরে।। আ**কৃ-**छाः मान्या (हव उँट्रा ११ थर्न २४**८ इ. १ ७ ७: भूनः म रेव (५व: शुार्छ স্বারোচিষে হন্তরে॥ তুষিতাযা• স-মুৎ পান। ছাজিত স্তবিতৈ: সহ। ঔ-ত্তনে রন্তরে চাপি তুষিতস্ত পুনঃ স বৈ ৷৷ সত্যায়া মভবৎ সত্যঃ সতৈয়ঃ नर मुद्राख्राः। जाममम्। छाद

ৈ হৈব **সংপা**ণ্ডে পুনরেব হি॥ হর্য্যাযাণ 🛚 হরিভিঃ সার্দ্ধ॰ হরিরেব বভুবহ। देवदञ्भाष्ट्रद्र (एदः मञ्जू गाः गाः নসো হভবৎ ॥ সম্ভূতে। রাজসৈ: गार्खः (परिव (पंववरत्रा इतिः । ठाक्क रि हारुद्ध (मर्यादिक्षे: भूक्रवाख-गः ॥ वित्रशेषा मानो काछ वित्रशे দৈব**তৈ: সহ। ন**বন্তরে তু সণ্পাপ্তে ॥ তথা বৈবস্বতে দ্বিজ ৷৷ বাননঃ কশ্য গাদ্বিফু রদিভাগ সংবভূব**হ। তি** িঃ ক্রিরিয়ান্লোকান্জিরাযেন यकाञ्चन ॥ भुतनस्त्राय देवरनाकाः াত্ত নিহুত কণ্ট **হ'। ইত্যেতা স্তন-**य उत्रत्र महामृत्र **त्रृति॥ मश्रायता**ः ভান বিশ্ বাভি:সংরক্ষিতা:পুজাঃ চকলেডিছ নিদ• সর্ব• তস্য **শক্**য়া ছহায়ন । তিমাৎ সংপাচ্যতে বিফ্রি:ব জাতোঃ পুবেশনা**ে। সর্বে** ६ (१व) स्वत्ः नम्खाः नश्चर्या (य श्रु वृत्राच्छ । **देन्तु च्ठ (या यखिम्राम्म** জাতা বিশেষ **রশেষান্ত বিভূত্য স্তাঃ** 11 ছতি বিশুপুরাণে o অংশ মনুত ताथानः ाग र ज्यापायः ॥ 🗱॥ 🗐 বৈত্রেশ উগাচ। প্রোক্তানে,তানি ভ-হত। সত্ত মন্ব ভরাণি বৈ। ভবিষ্যাণ্য लि विशुषं नमाथाजू दनकि॥ ্রিপরাশ্র উবাচ। ছাথা সংজ্ঞা-

সূতো যো ২সৌ দ্বিতীয়ঃ কথিতো মনুঃ। পূর্বজন্য স্বর্ণো হৃদ্য সাবর্ণি ত্তেন কথ্যতে ।। তস্য নন্তর হে ভৎসাবর্ণিকমথাইমণভদ্ণুয় মহা-ভাগ ভবিষ্যু কথ্যামি তে ৷৷ সাব-ণিস্ত মনুযোহসৌ নৈত্রেয় ভবিতা ত তঃ। সুতপা কামিতাভাক মুখ্যা-শ্চাপি তদা সূরা:।। তেষা• গণস্ত দেবানা মেকৈকো বিংশক: মৃতঃ। সপ্তবীনিপি বক্ষ্যামি ভবিষ্যান্থ मध ह।। ही खिमान् गालावा द्वामः क्ला पोि खयानवः। मरनू मह **७**था वृताम अयुम्क्ष्य मधनः ॥ বিষ্ণুপুসাদাদনঘঃ পাতালান্তর গো-**हतः। विद्याहन मूछ एउवा॰ विवा** রিন্দ্রে। ভবিষ্যভি ॥ বিরজা শচার্বরী-वा॰क निर्धाशाम्। खथा भारत। माव॰ র্ণস্যমনোঃ পুঞা ভবিষ্যন্তি নরেশ্ব-द्राः॥४॥ नवस्रा एक नावि विद्वय ভবিতা মৃদুঃ। পারাসরী বিগর্ভাক্ট সুধর্মাণ তথা ত্রিধা ॥ ভবিষ্যন্তি তদা দেবা একৈকো দ্বাদশো গণঃ। তেষানিন্দ্রো মহাবীর্য্যো ভবিষ্যত্য-च्हरत। विष्नु ॥ स्वरत। मुर्गित्रान् হব্যে। বসু র্মেধাতিথি স্তথা। জ্যো-তিমান্ সপ্তনঃ সত্য স্তবৈতে চ মহ-র্যাঃ ॥ ধৃতিকেতু দী প্রিকেতুঃ পঞ্

रुखा निवाशयः। পृथ्यवाम्। भ उथा मक्तरावर्गिकाञ्चकाः॥ २॥ म**लाग**्व-ক্ষমাবর্ণি ভবিষ্যতি মুনে মনুঃ। সুখা-নানে৷ ২নিক্দাশ্চ শতসংখ্যা তথা সুরাঃ॥তেষা নিন্দু ক ভবিতা শান্তি नीम महामनः। मधर्वत्या ভविष्ठ-ম্ভি যে তদ। তান্ শ্ণুম্ব চ।। হবিমা-ন্ সূক্তিঃ সত্যো হৃপাণমূৰ্ত্তি স্তথা পর:। নাভাগো পুতিনৌলাশ্চ **স** ভ্যকেতৃ স্তথৈৰচ॥সুক্ষেত্ৰশ্চোত্তমৌ- || कान्छ ज्तिरयगानरमा मना वृक्तमावर्गि भूजाक्त तकियाति वमुस्ताः॥ २०॥ একাদশশ্চ ভবিতা ধ্যাদাবর্ণিকো मनुः । विश्वमाः कामगमा निर्माण क्रय खथा।। गना (खुर्ड उना मृथ्रा দেবানা•হি ভবিষ্যতা• ৷একৈক স্ত্রি• मा क खिबा॰ गग (महन्द्रमह देव व्यः।। নিশ্চর শ্চাণ্লিভেজাশ্চ বপুমান্বৃষ্টি वाकिनिः। इतियाननव्यक्ति जाताः अध्यय उथा॥ সর্ব वराः **সর্বধর্মা দে**-ধ্ানীকাদ্য গুথা। ভবিষ্যন্তি ননো खन्। उनगाः পृथिवी **यद्राः।। रे** शास्त्र-भू धन्न माविर्ग र्जिवन हारिला रम्ः ॥ ৷ খতধামাচ ভত্তেন্দ্রে ভবিতা শূণু নে সুরান্ ।। হরিতা লোহিতা দেবা खथा मुमनरमा दिज । मूक्यापः मू-अभाग्ह रमकाः शक्षरेव गनाः॥ उ

পৰী সূত্ৰপাশ্চৈব তপোমৃৰ্ভি ন্তপো রভিঃ৷ তপোধৃতি দুর্গ তিশ্চান্যঃ সপ্ত मस्र ज्लाधनः ॥ (मववान्शामवन्त्र দেবশেষ্ঠাদয তথা। ভবিষ্যন্তি মনো खमा गरावीर्याः मुखा नृभाः ॥ रेर ॥ ত্রযোদশো রৌচ্য নামা ভবিষ্যক্তি म्या मनुः। मृजामिशः मृकर्मागः मृषः र्याग उथा श्रद्धः॥ जयञ्जिः महिष्डिहा স্তে দেবানা যে তু বৈ গণা:। দিব-স্পতি মহাবীৰ্য্য স্তেষা নিন্দ্রে। ভবি **य) 🧿 🛚 निर्ध्याञ् उज्जूपनी 🗗 नियुक्** স্পে। নিক্ৎসুকঃ। ধৃতিমানব্যযশ্চা-न्धः मक्षमः मूज्या म्निः॥ मक्षयं স্ত্রি:ন ভস্য প্রানপি নিবোধ মে। **ठिवामन विठिवामन ভवियासि म-**रीकि उ: ॥ १० ॥ (डोड) क्रड्रंन শ্চাত্র মৈত্রেয় ভবিতা মনুঃ। শুচি রিন্দু: সূরগণা স্তত্র পঞ্চ শৃণুত্ব তান্।। চাক্ষৰশ্চ পবিত্রাশ্চ কনিষ্ঠা ভুাজিন স্তথা। বাতাবৃদ্ধান্চ বৈ (एवाः मध्यी निश (म मृत् ॥ अप्नि-বাহুঃ শুচিঃ শুক্রো স্বাগধো প্রীধু এব চ । युक्त खथा जिंछ महातारा मनू-পুণানতঃ শৃণু ॥ উक गञ्जीत त्रुता-म् । नता खम् भू ज्ञा नृभाः । कथिजा मूमि नाम्व भाविषयाछ (यिनी॰ ॥ २८ ॥ हजुर्गास्य (वनानाः काः

ষতে কিল বিপ্লব: । পুবর্ত্বন্তি তা-নেত্য ভূবি সগুর্যযো দিব: ॥ कृতে কৃতে মৃতে বিপু পুণেতা জাযতে মনুঃ।দেবা যজ্জভুলস্তেত্যাবন্মনুভ রম্ভ ত**্যা ভবন্তি যে মনো: পু**গ্রা যা-**दश**नुञ्जद्र•क्टिउः। जन्दरया फुरेवरे•हव ভাব দু: পরিপাল্যতে ॥ মনু: সপ্ত र्वरण रहवा ज्ञानाक मत्नाः मृजाः । মনুম্বরে ভরম্ব্যেতে শক্র শৈচবাধি-কারিণ: ৷৷ চতুদশভি রেতৈস্ক গতৈ র্মনুন্তরৈ দ্বিজ। সহস্মুগ পর্যা**ন্ত: ক**া **ल्ला निःस्म**य উठाउ ॥ जाव**८ भूमा**-ণা চ নিশা ততো ভবতি সত্তম ॥ **ই**তি বিষ্ণুপুরাণে ৩ অ'শে ২ অধ্যা यः ।। # ।। नत्रवत भूवन कनः यथा । শুতে মন্তরে প্রে ধর্ম মাপ্নোতি भानवः। यादाि हिषम् भावनादः अ र्त्वान् कामानवाश्च याट् ॥ ঔ उत्म ধনমাপ্নেতি জ্ঞানঞ্চাপ্নেতি তাম-সে। রৈবতে চ শুতে বৃদ্ধি সুরূপা। विन्मत्त्र खियः ॥ व्याद्माग्रक्षाकृत्य পু•সা• শু.তে বৈবম্বতে বল•। গুণবৎ পুত্র পৌত্রাণ্চ স্র্য্য সাবর্ণিকে শুতে ।। नाहाबार वृक्षमावलं वंगमावनि কে শুভা॰। মতি নাপ্নোতি মনুজো কদুসবিণিকে জয় ॥ জাতি শুেষো र्था युक्ता मक्तरावर्गिक मुख वि

বিশাত্যভ্যরি বলং রৌচ্যুং শুল্বা মন্ভম•।। দেব পুসাদ মাপ্নোভি ভৌত্যে মনুম্বরে শুতে। তথাগ্নি দীপ্তি পুত্রা ক গুণযুক্তানবাপু তে ॥ সর্বাণ্যনুক্রমাত্রস্ত শৃণোতি মুনি-সত্তম। মনুস্তরাণি ভস্যাপি শুযতা॰ कन मुखन•।। **७**व (एवान्यीन् वि-भागम् उउनयाम्भान् । इन्माः क শুত্রা সর্বেভ্যঃ পাপেভ্যো বিপুম্চ্য-তে।। দেবেন্দুর্যি নৃপাক্ষান্যে ए **ড** ন্মনুম্বরাধিপা:। তে প্রীয়ম্ভে তথা প্ৰাভাঃপুষ্ছ স্কিশ্ভা• মতি•া৷ ততঃ **म्**डा॰ मिंड॰ পाপ। क्दा कर्ण उथाः শুভ•। শৃভা• গতি ম্বাপ্নোতি যা-वित्तिन्तु। कडक्रम ॥ अ:ब्रंम्। अंडवः मिन्नाः मर्ख मिन्ना ख्या गुङ्गः 1 **७ वर्ड) म॰ म**ंग भुद्धा कमासन्हर স্থিতি ।। ইতি শ্রীমার্কণ্ডেয় পুরা-(१ मनुख्रान्यर्भनः नामाध्रायः ॥

মপষ্টঃ
মপষ্টকঃ
বিন্যাণ ভরত: ॥
মপষ্টকঃ

মভু গতৌ। ইতি কবিকল্পদ্মঃ।। ওঠাবর্গ চতুর্থোপথঃ। মভুতি ইতি দুর্গাদাসঃ।।

मन वर्ग भरीय । आभात इंडि ভाষा।
। यथा। मञ्जूष नम त्राक्र महान्।

স্বেম্ববিলেম্বপি। জানতোপি যথা জ্ঞন্য কিনেতমুনি সত্তন ॥ ইতি माक (७४ भू द्वारा (५ वी ना हा जा १० ॥ তেষু অমধীযত্ত্ব: জানতো হপি নন यथाञ्जमा अञ्जल्माव ब्राजाि म् মগত্ব মে তৎ কিং কিংনিবন্ধন নি-ত্যৰ্থ:। ইতি ভটীকাষাণ নাগোদ্ধী ভ উः ॥ অস্যাব্যবত্ত্বে म्या भूमा-१ नगष्माक पृष्ठेत्र।। व्ययह्रका ^ল বঙ্ঠ্যেকবচনান্তস্যেদ ক্ৰ**পণ তৎপ**-मः जियु निद्यु ममृभः ॥ षमठा जी मर्भः। याजिमानः। ইडि हिग्रहनुः॥ समञ्गायथा। उथानि মমতাবর্ত্তে মোহগর্ত্তে নিপাতি-তাঃ। ইতি দেবীমাহাত্ম্য ॥ মমতাযুক্তঃ পু কৃপণঃ। ইতি শদ্-भाषा।। অভিমানাদিবিশিষ্টে তি:। नमदः क्री महीगद्रः। यथा। मूःथाः यउन ज्राजा हि समदानमाता गृही । ইতি মার্কণ্ডেযপুরাণ ।। স্নেহ:। যথা। সো হচিন্তযত্তদা তত্ত্ৰ মনত্বা-কৃষ্ট চেতন:। ইতি দেবীমাহাত্ম্য ॥ মমত্বেৰ শ্ৰেছেৰ আকৃষ্ঠা চেতৰা মতি যঁস্য। নমেতি ষষ্ঠ্যন্ত্ৰপ ম ব্যুশ তৃস্য ভাব: মনত্ত্ব । ইতি তউীকাষা কালীর।মঃ॥ नमाभजानः भ् विषयः। मवाराज

রাল পুত্যয়: স্যান্তস্যাপ তৃডাগ-নো খাতো র্যলোপো মকার কান্তঃ न। ইতি निषाष्ठकोमुन्।गृगानिः वृज्धिः ॥ भय ७ भाजी। इंजि कविद मुक्कमः॥ **उ नग्छ। इंछि पूर्गामामः ॥** नयः পु॰ উष्टैः। ইত্যনরः॥ अश्वजः तः ॥ मानवविष्मयः। अञ् रेमञ्जा-ना॰ भिन्नी। ইতি मिनिनी।। उन्ह সপ্তাপত্যানি যথা। ন্যস্য জাতা (र्नायाः भूभाः मध महावलाः। मागावी पूर्णु जिटेन्छव वृष्ठक महिष ख्या। वालिका वक् कन्ता ह कन्ता मन्तामत्री ७था ॥ इंजि वङ्गि भू-त्रागः॥ নষটঃ পু॰ তৃণযুক্তহর্ম্যঃ। ইতি হা-वावनी ॥ रुनस्टल्ट उपुनार्थ शुर्विशार्थ व मयहे देखि भुजारमा ভবতি ৷৷ **म**यञ्जेकः भू॰ वनमुज्ञः। ইত্যमत्र हो-কাশা ভরত: ॥ गया जी চিকিৎসা । ইতি শব-চন্দ্রিক।।। তৃতীযেকবচনাস্তামছ-क्माक्भिम्लावः ॥ ম্যি ত্রি আত্মনি। আনাতে ইতি ভाষ। मधः नात्रवहना खानाह्य माः क्ष भिष्रः। ইতি व्याक्रद्रगः॥

भवी जी भवनाजीकाि । उष्ट्री।
इठिवाकत्रन ॥
भवः भः किन्नतः। इठामतः॥ मृगः।
इठिमिति ॥
भवताकः भः स्वत्रः। इठि सम्बद्धाः
विद्या

भयूश्वेकः भू॰ वनमूत्तः। इज्जानति ।। भयूशः भू॰ किंत्रगः॥ मीखिः॥ कृताना । इज्जानतः॥ (माजा। इजि स्मिन् नी॥ कींगः। इज्जानः॥

बग्दाः भू॰ बनामधाउनकिवित्नयः। ख्दभर्गायः। वर्ह्शिः २ वर्हा ['] ७ नी লকঠঃ ৪ ভুদ্মভূক্ ৫ শিখাবলঃ ৬ निथी १ (ककी ৮ मिशनामानुनानी २। इंडागदः॥ भुष्टला की २० हम्मु की ১১ সিতাপাকঃ ১২। ইতি শব ब्रङ्गावली ॥ श्रुकी ১৩ मियानन्ती ১৪ কলাপী ১৫ শিখণ্ডী ১৬ চিত্রপি-ছিকঃ ১৭ ভুজগভোগী ১৮ মে**ঘ** नारान्वामकः 💫 । यम् भाग्म 📊 গুণাঃ। নত্র: শোু নে নে নাম নেধা বণ ধরাযুধ। । হিতো বল্যে গুৰু-শ্চোফো বাভয়ঃ শুক মা•সংঃ॥ হেনন্ত নালে শিশিরে বসন্তেসেব্যুণ श्चिम्यायुत्र गृशास्त्रि मा॰म॰। उत्थाः হি বহা বিষ ভোজনৈশ্চ বৰ্ষা **শ**-রদ্ গ্রাম নুখেম্বপথ্যঃ॥ ইতি রাজ

निर्घणेः ॥ अञ्चा म स्वर् अरेजन-ज्हे विष्णु न । इंजि वा जवल्ल जः ॥ # ॥ नय्वणिया क्ष्मः । उर्ष्म-र्यायः । थवा भा २ काववी ० मीणः ८ लाहमस्रकः ६ । इंज्यान ॥ ज-भामार्गः । इंजि स्मिनी ॥

ন্যুরক ক্লী অঞ্জনবিশেষ: । তুতিযা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়: । তুত্থা-প্রেন ২ শিখিগ্রীব ৩ বিত্মক ৪। ইত্যুমর: ॥

भग्रकः পु॰ व्यथामार्गः। ইত্যमतः॥
जूथकः॥ भग्रः। ইতি विषः॥
भग्राण्था। ইতি জটাধतः॥
भग्राण्या को जूथः। ইতি রাজনির্দ্ধা।

भग्तरुवेकः पृः गृहत्रक्षुः। इंडि हातावनी।।

भग्रह्ख• क्ली (झोरायक•। ইতিরাজ-নিঘণ্টঃ !।

भग्रह्डा जी भग्राणिया। इंहि रिकाकः॥

মধ্রজন্ত্রঃ পু॰ শেগানাকঃ।ইতি রাজ: নির্ঘণীঃ।।

ন্যুরতুত্থ ক্লী তুত্থ । ইতি রাজ-নিঘণ্ট:।।

নযুরপদক ল্লী নথাঘাতঃ। যথা। তথাবকেরকোলী চ নথাঘাতে তু म्थनः। नगूत्र भरकः वराष्ट्र नथकारः भन्न भ भरकः।। इंडि भरमानाः।। नगूतिरन्। जी अन्न है।। इंडि दैन-पर्हः॥

भग्तिण्या जी चनान्य गडक् निर्वे । विश्व । विश

भग्री खी भग्र बीकाि । इंडि वत-कंत्रण लिक्षाि मण्य इण्डा। भारतः भू भारतः। मुक्त इंडि छात्र। । इंडि एक् महन्तुः ॥ उर्देश करिष्यः। भारती र भारतकः । इंडि करिष्यः। भारती र भारतकः । इंडि करिष्यः। शा उम्र कात्रणांकि यथा। यात्रमा खंड मृन् मंदि धन् विकास महास्थ का खिनायं। जादकः किलाकः भी छा छव उ ह महकः महन्तुः यादि लाकाः। । इश्हरकातः उत्थादी मन् क छव-

করী ফেৰুরাবৈশ্চ ভীনৈ: শূন্যগ্রানা ভবেযু নরপতি রহিতা ভূরি কন্ধাল মালা।। ৰক্ষণ করে।তি রবিজো ধরণী সুতো বা মুলক্ষ হন্ত নঘ রেবভি নৈ-ৰ ভেষ্। ছগ্ৰোপভঙ্গ পতনানি চ रेमनकानाः भर्वज लाकं नद्राः इतः (थो उ (रणः॥ नान्त्राञ्चीनि जनाराय लामानान्ग्य वायमाः। या मृगालाः **২থবা মধ্যে পুরস্য পুরিশন্তি চে**ৎ।। विकित्रिष्ठ गृहारही ह न्यानान जा नशे ভবে । होत्रन हन् १ उ लाकः পরচক্র সনাগন: ॥ সংগ্রান্স ম-शायाता पूर्विकः नत्रक्रथा। यस्ट्र তানি পুস্গন্তে তস্য দেশস্য বিদুবঃ ॥ इंडि ब्राडिखबुः॥ यभिष्ठ। मा-हिंय। १ छयः रेगतिककाल ह यूकानि। मूर्वाका ७ माराम का ति पु वालि नि-দ্দিশেমরক ।। ইতি গুহণ পুকরণে তিথ্যাদিতত্ত্ব•॥ অন্যদপি। রবাবি-(नर्) गबाबा। भन्। सात ज्वस्य। तोकगा खक **म्**का छा। रागया त्-थवानात्।। गांक ह कलना रनवी छ-धानक खतकता । (नोकाशाः **भ**न्तरः বৃদ্ধি: স্যাৎ দোলাযাণ মরক ভ বেৎ ৷৷ ইতি পৰি মাণ্ডুবেশ ফল কৃথনে জ্যোতিষ ৷৷ 🗱 ৷৷ অস্য माडिः। (त्वीमाहाचार भार्छ।

ষটুকভৈরবস্তব পাঠা। তুলস্যা বি-कुन्बनकः। यथा। उन मर्गानत्नवाः स महामात्री ममुख्यान्। उथा जि-विश् मूर्भाउ माहाकाः भनता मन ॥ इंडि नार्कछ्यभूत्रानः॥ गाती छाप त्राज छाप छथा होता-निष्क ভरम। खेट भाषिक महाः रवारत जला मृत्यप्रस्थाना। वस्तन চ তথা ঘোরে শঠেৎ কোত্র সনা-হি ড:। ইতি বিধু শারে। স্বারতজ্ঞে 🎚 **जालम्बातकः ॥ १**५५१ ५५ मार्ग ব্লিকৈণ্ড কিং ক্লিশ্যন্তি নরা ছিল। মহাশান্তিকরঃ শ্রীমা স্তল্ন্যা পূ क्रि**डा इतिः॥** উँ शाजान् माङ् नान् भू भाः पूर्विनिखान्यम् । তুলস্যা প্ৰিতো ভক্ত্য নহাশা ভিকরে। হরি:।। অত্র বৃক্ষপূরাণী যো নজ:। । ওঁ নমস্তে বহুৰপায বি ফবে পরমাত্মনে স্বাহেতি। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ॥

भतका की हतिसर्गमितियानः।
भाषा है जिल्ला। उन्हादिन।
त्यः। है जिल्ला जिल्ला। उन्हादिन।। उर्ले
र्वायः। भारूषा उ॰ २ व्यम्प्रभार्जः ०
क्षावः। भारूषा उ॰ २ व्यम्प्रभार्जः ०
क्षावः। भारूषा उ॰ २ व्यम्प्रभार्जः ०
क्षावः। भारूषा है जिल्ला । स्वर्

৮ সৌপর্ণ ৯ গৰুডোরীর্ণ ১০ বুধ রङ् >> অশ্।गर्ভन >२ गद्रवादिः :) वाभावान । ३८ गाक्छ । १६ । সত্ৰচিৎ পুত্তকে গৰুডোদ্নীৰ্ণ স্থানে গৰুডোন্তীৰ্ণ বাপবোল স্থানে বা-পুবাল ইতিচ পাঠ:। অস্য গুণা:। বিষম্ব : নশীতলব : ৷ রসে মধু-রব্। আন পিত্ত হরব্ণ। ৰুচ্যব্রণ । পুडिरद्व-। ज्उनामनद्वकः॥ 🗱 ॥ व्यम् वक्रा । बहुक छक् महार निषः गाउषः नार्यः मान् । व्यवाकः वहतकः मृत्राती मतक्रः भूड॰ विज्याद ॥ # ॥ **उन्धल**न क्षिण । मर्क देन किन क्ष्क भ-निन॰ नयु श्रीन हाडि कन्याव॰ । আসমূত বিক্তা**স্ মরকত মন**-রোপি নোপভূঞ্জীত ॥ 🗱 ॥ তস্য পরीक्षा। यहिवाल मिथ्छि भाव-च रुद्रि कारेठ क वाश्वहरेनः शरन्ता-তেন চ বালকীর বপুষা শৈরীয় পু-स्त्रिप ह। ছाया जिः नवजाः नशाजि তদিদ নিদিট ন্টাস্ক জাত্য যন্তপনাতপেযুপরিতো গাক্তা ত রঞ্জ্যেশ্যা ইতি রাজনিঘণ্ট: : । 🛊 ॥ গুন্থান্তরে ভদ্য পরীক্ষাদি যথা। সূত্র উবাচ। দানবাধিপতে: পিত্ত মাদা-य ভ্রুগাধিপঃ। দ্বিধা জর্বনিব বে,।ম

भवतः वामुकि र्ययो ॥ भ उना स नि रतात्रज्ञ **পु**ভा नीत्थ नट्या भ्यूरवी । রা**জত: স মহানেক: খণ্ডসেতৃ** রিবা-বভৌ।। ততঃ পক্ষনিপাতেন সংহর-मिव রোদসী। গরু ত্রান্ পদ্পেন্দুস্য नुरु व मूनहकत्म ।। महरेमव मूरमा **ठ ७८ क्गीन्द्र:** সूत्रभाष्ट्रक जूतक भामभाषाः। निका वन शक्त वानि ভাষা বরমাণিক্য গিরে ক্পত্যকা বাং ॥ তস্য পুপাত সমনন্তর কাল মেব ভদ্দরালয় মতীভ্য রমা সনী-পে। স্থান ক্লিতে ৰূপপ্যোনিধি তীর লেখ• তৎ পুত্যবাদ্মরকতাকর-তা॰ ৰূপান।। তবৈৰ কিঞ্চিৎ পত-তম্ব পিভাদুৎপত্য জগাহ ততো गरुजान्। मृहानदीजः मरुरेनव ह्याना त्रञ्ज द्वरान भुगूत्वाह नर्बः ॥ ত वाकरोत मूहक श्रे मित्रीय भू झ थ (ए)। उ भृष्ठद नावन रेनवनानाः। কহ্লার শাশাক ভুরস্বভুরাঞ্চ পঞ পান্ত বিধো মরকতাঃ শুভদা ভব ন্তি।। তথ্য ভোগীন্দুভুজা বিমুক্ত। পপাত পিত্ত দিভিজাধিপস্য। তন্যাকরস্যাতিতরা সদেশে: দুঃ থোগল ভ্যশ্চ ভগৈশ্চ যুক্তঃ॥ তিমি মরকত স্থানে যৎকিঞ্চিনুপদাযতে । उৎमर्बः विषद्मागानाः भूगनाय

পুকীৰ্ভ্যতে ॥ সর্ব মজৌষ্ধিগণৈ র্যমশক্য চিকিৎসিতু। নহাহিদ॰. ঙুী পুভব॰ বিষম্ভন্তেন শাম্যতি।। অন্য নপ্যাকরে তত্র যদ্যোধৈ ৰূপ-বৰ্জিত । জাযতে তৎ পবিত্রাণা-মুন্তন পরিকী ভিতে।। অত্যন্ত হ-রিত বর্ণ কোমল নটি বিভেদ জ-िनका काकन চ्रामा उः भूर्वित वकाराज्यह ॥ युक्तः मः स्वान रहेनः সমরাগংগৌরবেণ বিহান। সবিতৃঃ कद्रकारमाणाहत्यां मर्वाण्यः भी স্ত্যাণাদিত্ব চ হরিত ভাবে যস্যা-স্ত বিনিহিত। ভবেদীপ্তি:। অচির পুতা পুভাইত নৰ শাদল সমিতা ভাতি।। यह मनमः भूनों ए॰ विष्धा-তি নিরীক্ষিত নতি নাত্রণ। তন্মর-কত মহাভণ মিতি রত্নবিদাণ ন্নো वृद्धिः ॥ यस जारुत मन्यमार इ-**उ**न्ऽरङा भर्शमणिः । त्रक्षरकाञ्च नारिष्ठ महामज्ञकं हि उट् ॥ ठ-তুর্ধা জাতি ভেদস্ত মহামরকতে ন-लो। ছाया (छारन विरक्कया ठजूर्वर्ग-म् वक्ते ११ ॥ ॥ यथ हाया। छः বেদ্প্ট বিধ ছায়। মণে ম্রক্তস্য চ। বহিপুছ সমাভাষা চাসপক্ষ সমা . ২পরা ॥ হ্রিকোচ নিভা চান্যা ত-थारेनवादी अभिना । अस्ति उ श्रेष्ठ

ज्ञक्ता वात्रकीत ज्ञान उथा ॥ नव ॥ শাহল বছা (। শিরীৰ জসুমোপমা वित्वभाष्ट्री स्मार्थाजा न्या महकः ভাশুষাঃ॥ ছাৰাভি যুঁক্ত মেতাভিঃ শেষ্ঠ মরকত ভবেৎ। পদারাণ গ-**७:** म्राहा क्रवाविनम् र्यथा ভবে<।। ७था শ্রেণ্ড হ্র শ্যামলা হরিতামলা ॥ 🗱 ॥ व्यक्तिय खनाः। स्नियाः मध ভবস্ত্যসং শুণঃ পঞ্চবিধো মতঃ ৷ অগ্নিঞ্চ ক্ষ মিত্যুক্ত ব্যাধি স্তম্য পুতে ভবেৎ ॥ বিদ্ধোট: স্যাৎ সপি-ডক্ষে ভত্ৰ **শত্ৰহতি ভ**বে**ৎ। স**ংপা শ্রাণ ভবেনি**ষ্ট নাম্পো মরকতে প্তে**ু ম বিস্থান অ**রকত: পুাহু বার্য্যতে ন তু** পার্যাত। শর্করণ কর্করা যুক্তণ পুত্র। (माकशुमः धुउ॰॥ क्षेत्रं काखि ही-नस माद्रि । इत्यावरः । इत्याव বর্ণ ধ্বারা ততো মৃত্যু ভব ভবেৎ 🛚 ইতি দোষাঃ সমাখ্যাতা বর্ণ্যন্তে হথ মহা গুণাঃ। নির্মাল কথিত। ষह॰ গুৰু স্যাদুকতা যুত।। দিপা कक विभिन्क मत्रक्क मात्रपूकः। সুরাগ রাগ বহুল মণে: পঞ্জণা मठाः ॥ थेउ प् कि गतकउ नर्व পাপ ভযাপহ•। গল বালি রথা-न्म द्वा विर्शुख्डा विस्त्रवाश्विभा ७० यन अनेवाश्चा**ि मुख्य म**त्रका

গৃতে। ধন ধান্যাদি করণে তথা সৈ ন্যক্রিয়া বিধ্যে ।। বিষয়োগোপ শমনে कर्मश्राथर्वरायु ह। ममाराज मुनिजि र्यमाप्यः भवकरकाः भनिः ॥ उथाह । ষছতা গুৰুতা কান্তি: শ্নিঞ্চত্বণ পিত্ত काরণ । इतिमित्रक्षकरेक्षव मध मत्र-কতে গুণা:।। #।। অথ ক্ত্রিনাক্-विन **পরीका। कृ** विम दः সহজ दः পুত্তরে বহু কাচ ভ্রমা ছিপদ্যভে॥ ल्यायासीर ज्यम ह्र्णनाथ वि-লেপ্যেৎ। সহলঃ কান্তি মাপ্মোতি क्विरमा भिवनायर ॥ वर्षम्याजि বহু ত্বাৎ যস্যান্তঃ স্বন্ধ কিরণ পরি-ধান । সান্দ্র স্থিক বিশুদ্ধ কোমল ব**হ প্ৰভাদি সম** কান্তি॥চলোজ্লযা কান্ত্যা সান্দ্রাকারণ বিভাস্যা ভা-তি। তদপি গুণবৎ, সংজ্ঞা মাপ্নো-তি হি যাদৃশী পূর্ব ।। সকল কঠো র• মলিন• ক্ক্ • পাষাণ কর্বরোপে-ত। দিপ্ধঞ্চ শিলাজভুনা মরকত মেববিধণ বিগুণ ।। যৎসন্ধি শ্লেষি-ত॰ রত্ন মন্যমরকতান্তবেৎ। শ্রেয-क्वारेन नं उष्कार्याः (क्वज्वाः वा कथः ঞ্দন।। ভল্লাতক পুঞ্জিকা চ তদ্বৰ্ণ স-মযোগভঃ। মণে র্মরকতসৈগতে ল-क्रेगिया विकाख्यः ॥ क्लोरम्य वाक्र

স। ঘূষ্টা দীপ্তি ত্যজ্ঞতি পুঞ্জিকা। वाचरवरेनव काठमा नका कर्जू वि-ভাবনা ৷৷ কস্যচিদনেকক্লৈ মারকত মন্ণছতোপি গুণ বর্ণিঃ। ভল্লাতক-न्य निर्द्यकृ रेवनम्य मूरेन कि वर्नम्य।। বজাণি মূকা: সম্ভান্যে যে চ কেচি-দিলাত্য:। তেবা মপুতিবদ্ধানা छ। खवज्रक्रीगानिनी ॥ श्रज्जुदाहिव কেবাঞ্চিং কথঞ্চিদুপন্ধাযতে। তি र्यां शालाका भागाना निष्ठ रेक्टर भु-ণশ্যতি ॥ স্নানাচমন জপ্যেষু রক্ষা-यद्य किया विरथी। ममस्ति र्गा हिन्न ग्रानि अर्विष्ठः माधनानि ह ॥ रेम्व পিত্র্যাতিথেয়েষু গুরু সংপ্রনেষু চ। वाध्यमात्मयु विषरिम (मीयकारिङ वि रवा फ़रेवः॥ रनारेव शै नः खरेनव् छ॰ काक्षन भुजिरमास्त्रिः। मःगुराम वि চর ভিজ্ত ধার্য্য নরকত বুধৈ: ।: #11 অথ নূল্য । তুল্বা পদ্মরাগস্য হয়ূ ল্য নৃপজাযতে । **লভতে ২**ভ্যধিক ভন্মাৎ গুণৈ মরকত শ্বৃত 🛭 তথাচ পদ্রাগাণা দোবৈ মূল্য পুলীয তে। ততো হস্যাপ্যধিকা হানি র্দো-ষৈ র্মরকতে ভবে**ং। গুণপিণ্ড সমা**ং যুক্তে হরিত শ্যাম ভাষরে। মূল্য দ্বাদশক প্রোক্ত জাতি ভেদেন সূ রিভিঃ॥ यरेবকেন শত॰ পঞ্চ সহসু॰ | ষিত্রে যবে। বিভিশ্চিব সহস্ত্রে দে চত্তিশ্চ চতুর্ত্বণ।। ইতি গাঝ-ডে নরকতপরীক্ষা ৭১ অধ্যাব: যু ক্তিকল্লতকশ্চ ।। নরকতপত্রী জ্ঞী পাচী। ইতি রাজ-নির্ঘট:।। নরক্ত- ল্লী মরকতমণি:। ইতি শব্দ-

ब्रङ्गावनी ॥

মরণ ল্লী বৎসনাভঃ। ইতি রাজ-निर्मण्डः ॥ विकाजीयाज्ञमनः मण्याः गश्चः। इंडि न्यायमञ् ॥ उट भर्यप्रायः। भक्षा २ काल्यमः ၁ **मृ**डी सः ८ भूनयः ৫ অত্যयः ७ অसः প নাশ: ৮ মৃত্যু: ৯ নিধন ১০। ইত্যনরঃ।। ভূমিলাভঃ ১১ নিপা-**उः** >२ चार्डायिकः >० मृ**डिः** >८। ইতি শব্দন্তাবলী।। कीर्खिल्यः ১৫ মহানিদা ১৬ মহাপথগন: ১৭ সংস্থান ১৮। ইতি জটাধ্র: ॥ नद्रग मृःथानश्रह । सद्राग यानि मुः-थानि भारताि भ्रृ जानाि । শ্লপ গ্রীবাল্লি হস্তোথ ব্যাপ্তো বেপ-थूना नदः॥ मूल्या निः भद्रवामा मू-হু জ্রান লবা হ্বিতঃ। ছিরণ্য ধান্য তनग ভार्गता ভ্ৰুत शृहा दियु ॥ এতে কথ ভবিষ্যপ্তীভাতীৰ মনতাক্ষ **णः। नर्य कि छि महाददारिकः** ककः

3,

रेठ ब्रिव राक्टेंगः ॥ भटेत द्रिवाष्टकः त्नारेन चित्रामानाम्यक्रनः । विव-र्खगान जात्राकि इंड भार गृहः किशन्। जःभूष्यागा जात्वाष्ठ श्र् हो घुत्रघृतागाउ। निकस्तरके। त्राः (विरिच करोन चान भी फिडेशा जा-পেন মৃহতা ৰ্যাপ্ত স্থা চাৰ্ত তথা ক্ষুধা। ক্লেশাদৃৎকান্তি মাপ্মোতি যা-म्र किन्नद्र भी फिड: ॥ उडक याज-না দেহণ ক্লেপের পুতিপদ্যতে। এ-छान। नानि कागानि मुः थानि नत्रा মৃণা।। ইতি বিকৃপুরাণে ৬ অংশে। ৫ अर्थायः ॥ 🗱 ॥ मृह्यात्र । भुवित निर्वाद्या यथा। जान्नो न निकारन म्त्री॰ नाष्टिः भुणमायख्या। मृह्म-त्रव नार्खिश न स्वरः मात्रवरः महान् ॥ ইতি কৌর্যে উপব্লিক্তাণে ১৫ অ-श्रायः ॥ 🗱 ॥ ज्यथ शास्त्रिक सञ्जा ज ক্ষণ । সোমশফোবাচ। ধর্ম্ম্য হি की मृत्मा मृजु र वर्जना रेठव वरत सा । **উভবো वक्कन कार्छ द्वाय हि व** দিখা যে।। সুমনোবাচ। সত্যু শৌচ क्रमा भाष्टि खीर्थः भूगामिकः ख्या । धर्मक भाषिछ । यन छम्। मृज्रुः বদান্যহ়ণ ॥ রোগো ন জাগতে ভস্য भव्यां । कालवादा । म मुखा रेव नव भ्रानि नह (सररा जुन खुणा।। रिवाक

প यहां ज्ञा भक्ष व्याप्त गाय विश्वा (वरभाठ नगायुक। गाँछ द्धाम वि-भावनाः ॥ उत्र । शार्षः त्रशायां । खिं वर्षि ठाजूना। मूदा हि আসনে যুক্তো দেবপূজা ব্লভঃ কিল ॥ जीर्थक न जरज भारतः मानार्थः वर्ष ज्रा अयु। अयु। गारत ह लारि ह रिवडायडानम् ह।। भाजात्म ह छडारम ह यजायत्था वह ख्या। वुका বৃক্ষণ সমাশ্রিত্য প্রীবৃক্ষন্ত তথা পুনঃ ॥ व्यवद्यानः ममाण्डि। शबद्यानः ७ এ। নরঃ। অশোক• চ্তৃত্কক কমা।-শ্রিত্য যদা ছিতঃ।। সন্নিধিণ ব্রাহ্ম-শানাঞ্চ রাজবেশ্মগতোপি হা। রণ-ভূমি সমাশু হ্য পুরা বত্র মৃতা ড-हो। मृह्यस्वानि भूगानि क्वन ধর্ম করেবং। গোগুহন্ত সমং প্রাপ্ত ज्या जनव मक्टि ॥ मुक धर्मकरता निजा धर्माजा धर्मावर मनः। प्रवः इश्रवः अनारशां विषय मृत्रुः अभाः শ্রিতঃ ৷৷ মাতর পশ্যতে পুণ্য পি-তরঞ্চ নরোভন•। ভাতর• শ্রেযসা युक मन्। यजन वास्तव ॥ विनर्जन তথা পুণ্য ख्यमान भूनः भूनः। পাৰিষ্ঠ নৈৰ পশ্যেত মাতৃ পিতা-पिकः भूनः ॥ भी छ गाया भाषा भक्ष वीः खत्छि खादकाः खरेदः। मञ्जभारे

ত্তথা বিপ্রামাতা দ্রেছেন পূজ্যেত।। পিতা স্বজন বৰ্গশ্চ ধৰ্মাত্মান নহা-মতি । এবফ্লুতা: সমাখ্যাতা: পুণ্ঠ ॥ ञ्चानानि एक विरक्षा ॥ भुकाकान् পশ্যতে ভ্তান্ হাস্য সেহ সমা-বিলান্। নচ স্বপ্রেন মোছেন ক্লেশ রক্তেন বৈ বত।। ধর্মরাজো নহ। शास्त्रा म्द्रांडङ मभास्र(य**र**। जः ছে হি ত্ব• মহাভাগ যত্ৰ ধৰ্ম: স তি-'ষ্ঠতি।। তৃস্যমোহোনচ ভান্তি নঁগ্লা-नि नं विकिया। कायर जना जन **म्मिरः भुममाञ्चा भु**डिश्च ॥ क्वान विकान मण्यमः महरमवः कनार्यनः। তৈক্ষ সাৰ্জ- পুৰাত্যের সম্ভপ্তো হৃষ্ট মানস:।। দশন দারনান্দ্র্ত্য আত্মা তস্য হি গছতি। শিবিকা ভস্য চা याजि সুयान भूमताङ्क ॥ विमा रिन द्विव योर्डाय वार्या (र्वरगन काञ्च मः। ছপ্রেণ ধ্রিয়মানেন চামরব্যজনৈ ख्या ॥ वीजामानः म सर्या द्या भूरेगाः রেব সমন্ততঃ। গীয়মানস্ত ধুমাত্মা স্থমানস্ত পণ্ডিতঃ॥ বন্দিভি শা মরৈ দি বৈ। বা ক্ষণৈ বেদপারগৈ:। नाष्ट्रि ख्यमानस्र मर्बरमोथः। नमः निजः॥ यथा मान शुङारवन कनः মাপ্মোতি তত্রস:। আরাম বাটিকা মধ্যে **স পু**যাতি সুথেন বৈ॥অপ্স:রা-

ভि: नगाकीर्ला हिव्या 🗷 🕫 🛪 🦮 यू जः। परिवच्च ख्यमाव्य वस्ताकः পুপশ্যতি ॥ দেবাশ্চ ধ্যাস যুক্তা জণ্ম: সা•মুখ্যমেব তে। ত্রছোই দ্ব• নহাভাগ ভঙ্ক ভোগালনোরনান্ ॥ এব॰ স॰পশ্যতে ধর্মা সৌন ক্লপণ गहामिकः। अत्रा भूगानाः जात्वन जुड़ वर्ग ममुखम ।। (के न क्रमार न वर्षाजा भूनर्जन भूगां है। निक थर्म भुताराट ज क्ल भूगा भूमा **छि ह ॥ व्याक्षणमा जुन्यामा क**ियः न्। छरेषव छ । धनाष्ट्रभः मुनुष्ट भ रिवणाना ह सङ्गाहक ॥ थर्मान (माः परि छम्॰ भूनः भूगुः करताि मः। ইতি ত্রীপদাপুরাণে ভ্রিথণ্ডে সুম্ ताभार्यात २० व्यस्तानः । सः ॥ অথ পাপিনা মরণ লক্ষণ া সোম্ শর্মোবাচ। পাপিনাং মরণে ভারু की मृरेण लंकरेन यूं छ खत्राष्ट्रिश्वि विभिन्न काविति । সুমনোবাচ। শুযতা মভিধাস্যামি ভষাৎ সিদ্ধাৎ শুক্ত ন্যা। পালি-ना॰ मद्रग॰ कान्छ याष्ट्रणः निक्र स्वर ह। गङ्गाणाजिकनारिक्षव स्थान त्यसा॰ वनाग्रहः ॥ निश्वा मस्तव्य मः क्रिस ভূমি•পাপ সমন্বিতা•। স তা•পুলাও जुम्होत्रा भागान् मुः १४। मूक्डि।।

দে**ভাল ভ্**মি• স•প্রাপ্য মরণ• যাতি ্থিত। গৰ্জভাচরিতাণ ভূমিণ বে-मः गात्र मनानि्छः ॥ महाभान-পূর্ণ পঞ্চ নৈধন্য মুপগছভি। অ-🔫 हम नरेथः भूगी मान्निजाः भाभ किल्तिमः॥ उ। भवाभा म मुडाञा মৃত্যু প্রাপ্নোতি নিশ্চিত। অন্যাণ ক্রচারা
প্রাপ্র মৃত্যু
ত সাগ x এটার মতেষ্ঠা পুরক্ষ্যামিদ্তা-रा । भूष निक्ठिण । **डिव्रवान् मा** क्षान् शात्रानिक्ष्भग्रहामद्रान् ॥ পিক্লাকান্ পীত নীলা ক অতি *ে* जायस्त्रान्। व्यक्रुहाः क क्रा-वाक्ष्म गुइ मान्त्र च्हानमान् ॥(दो ্দুদ[্]টু৷ করা**লা**শ্চ সি**ংহাস**গান্ সর্প इ एकान्। म जान् मृक्ष्वा भू सम्भाज वि দে: ত চ মুহু মু হুঃ॥ শিবা সন্ধাদ ব-দ্বোরান্মহারাবান্মহানতে । মুঞ্জি দ্তকাঃ সর্বে কর্ণ মূলে তু তস্য হি ॥ गत्त भाग भुवद्या एउ कर्छ वद्या छ व्यक्ति । अभाक्ष्र नयस्त्राक हा-হেভি ক্রতো মূহঃ।। মিু্বমাণস্য च दक्षे। जायव॰ भुवनाग्रङ्॰। भन्न দুন্যাগহরণ পরভার্য্য বিডয়ন।। क्षा भवगा मर्बन गृशी छ रेयस नानि अन्दिन्द भुम्ख हिला कावः विस्माहित्यः॥ व्यनुस्मव

महाभाभः अनुভिनुहत्नव **छ।** क्छे শাবাভিতে সর্বে মি্যমাণস্য তস্যুচ ॥ यानि कानि ह भाभानि भूई(स्व কৃতানি চ। আযান্তি কণ্ঠমূল হি **बहाशाशम**८ नाम/था ॥ पूर्ध मूट. शान्यस्त्राञ कक्वत्त्रन माक्गः। পীড়াভি দাৰুণাভিশ্চ কণ্ঠো ঘুরস্থু-রাষতে ॥ রোদতে কম্পতে ২ভার্থ• মাতরণ পিতরণ পুন:। মরতি ভ্রাক तः खब ভार्य्याः भूषः भूनः भूनः ॥ পুন বিষয়ণ যাতি মহাপাপেন মোহিত:। তস্য পাণা ন গছন্তি বহু পীড়া সমান্সলা:।। পততে কম্পতে रेहद मूई ए ह भूनः भूनः। ७द॰ भी छ। সমাযুক্তোদু:খ ভুল্লে ংতিনোহিত: া তস্য প্রাণাঃ সৃদুঃখেন মহাকষ্টেঃ পুচালিতঃ। অপান মার্গ মাশুভ্য শৃণ্ কান্ত পুযান্তি তেনা এবং পুৰা দুরাত্মানে। লোভ মোহ সমব্বিতা:। নীয়ন্তেচ ম**হা**ভূতৈ তেষা• দুঃখ• বদা-ম্যহ•।। ইতি পান্মে ভূমিখণ্ডে সৃম-নোপাখ্যানে পাপিমরণ নাম১৬ খ-ध्रायः॥#॥ भाभिनाः यमालय गमन नाना (यानि পুাপ্তি বিবরণ• यथा। সু-মনোবাচ। অস্থারসঞ্চযে মার্গে কৃ-**य) मार्गा हि नीय छि। प्रक्रानः ऋ** ष्ट्रीया (**ठडेगानः भूनः भूनः।। य**वाः

তপো মহাতীবো বাদশাদিত্য তা-পিত:। नीयां उन मार्गिंग महस्रः সূর্য্য রশ্মিভি:।। পর্বভেষ্বিব দুর্গেষু ছागाहीत्वयु मूर्याजः। नीयत्व (जन गार्गन कृषा वृक्षापि भीषिउः ॥ न मृटेज र्वनामानस भरा परेखः भन्न শ্বধৈ:। কশাভি স্তাড্যমানস্ত নিন্দ্য मानस्र प्रदेशः॥ उठः भीजमाय मा র্গেবাযুনা সেব্যতে পুন: ৷ তেন শী তেন দু:ধী স ভুত্বা যাতি ন সংশয়: ।। वाक्षामाणा म्टेंडस नाना मूः तथन নীয়তে ৷ এবং পাপী স দুষ্টাত্মা দেব বাক্ষণ নি**ন্দ** গংয়া সর্ব পাপ স্মাযু ক্তো নীয়তে যুম্কিঙ্করৈ: ৷ যুম্ প **শ্যতি** দৃষ্টাত্ম। কৃষ্ণাঞ্জনচযোপম• ॥ ख्युणु मारून छीय यम**म्रेजः म** नातृ ड॰ । मर्बन्धां (ध ममाकीर्गः विज **ৰপ্ত সন্বিতং ।। আৰ্চ নহিষং** (मव धर्मताज दिकाखन। म्रुट्टी করাল মত্যুগু লয়াস্য কাল সন্ধি ভে ৷৷ পীতবাস মহাহস্ত রক্তগ-স্ধানুলেপন । রক্তমালা কৃতাভূ य॰ भनाष्ट्रस्य ७ च इतः ॥ अव विदः মহাকাৰ• যম• পশ্যতি দুর্ঘতি:। **७ मृक्षा मममून्राध मर्व धर्म** वहिष्क ত ।। যম: পশ্যতি ত দৃষ্ট পাপি। **४॰ ध्य**ंक्फेंक् । **न्याउर्यख महापृः**

थिः भीषां जिल्लाक्ष्मातिः ॥ यादः অুগ সহসাম্ভ ভাবৎকাল পুপচ্য-তে। নানা নরক দেশেষু পচ্যতে চ **পूनः भूनः ॥ नद्रकक्षः भूगा**र्छ।व॰ क्मि की रिंदू भा भक्ट। जामास्य পচ্যতে নিত্য হাহা ভূতো বিচে-তন: ৷৷ মরণক্ষৈৰ পাপাত্ম৷ এব• যাতি সুনিশ্চিত । এব পাপস্য मासागः ज्रां हित मूम्मिणिः॥ भून र्जन भुवक्रामि यामू (यानियु का-তিষ। খযোনি সমনূপুপের ভুঞ্জতে পাতক পুনঃ।। ব্যাগ্রে। ভবতি দু-ষ্টাত্ম: রাসভ• যাতি বৈ প্ন:। **মা**-জার শৌকরী বোনি সর্পযোনি खरेथव ह ॥ नाना ज्वामू नदीमू তিৰ্য্যক্ষু চ পুনঃ পুনঃ। পাপ প-ক্ষিয়ু সংযাতি অন্যাসু গহিতাসু চ ।। हां थान जिल्ल का जिक्क भूनिक्ती॰ यां निष्ट्र । এउरत मर्बमा-খ্যাত পাপিনা জন্ম চৈব হি ॥ পাপ পুণ্য সমাচার স্তৃদগ্রে কথিতো ম্যা । ইতি পাদ্মে ভূমি**থ**ণ্ডে সুম_্ त्माभाधात भाभ भूगा विवका-नाग) १ व्यवप्रायः ॥ 🗱 ॥ नान-गु। स भिना म्मार्भ सद्गा कन यथा। त्राजान डेहू:। वृदाः नात्रावणम्याम्यः কল্পে: স্বশুরতা গতৌ। বয় নৃপা

ইনে লোকা প্ৰযো বান্ধণান্চ যে।। প্রৈক্ষ্য ভক্তি বিতান বা হরে বিভিন্ত নানসাঃ। প্রাম স্থা মিय॰ ভক্তি: कृ লক্ষ। পরমাত্মন: ॥ কস্য वा निक्षिता ब्राह्मन् कि॰ वा रेननर्गि-কী তব। শ্ৰেত্মিছানছে রাজন্ বি জগজন পাবনী ।৷ কথা ভাগব জী বৃত্তঃ সংসারাশুম নাশিনী। 🤏 শধুজ উব্ধন্ন। জ্রী প্রসোরাবধো মূল শূণ্ভালোঘ বিক্রমা: । বৃত্ত• শ্রন্ম কথাদি সৃতি তন্ত্রি লক্ষ্ पर । भूता गृग महमाख गृखा १इ॰ ज्ञिक मञ्जूर । शृथीय भ (म लिया-রণ্যে বৃত্তনীতৌ বনস্পতৌ ॥ চকার কান্ত নৰ্বত্ৰ বনো প্ৰব্ৰ সংস্কলে। মৃ তানা প্তিপললৈ: পুাণিনাণ বৃত্তি क्याली विकास जुन कः कृता जुला -ভ পিঞ্জিভাশিনৌ। আবাণ বীক্ষ্য গৃহ্ছে পুঞ্ পৃধু ভত্তাপ্যযোজ্যৎ ॥ ত বীক্ষ্য হাত বিশাস্তো কুষ্যা প িণীড়িন্টে। স্ত্রী পূংসৌ পতিতৌ ভত্ত মাধ্য পাণিত চেতসৌ ॥ ব তান্দাল বীক্ষ্য শিচা হ্যাদাগত্য ्चिकः। **क्यार कार्श उत्रमा हथ्**या। শত প্ৰিডঃ॥ আবাং গৃহীত্বা গ उग्राध निवासा मनिनाडिक । खिङ ह्णामाम नृक है: निन

डार्मनः ॥ ठकाक्तिङ भिना मङ्गा-श्रद्रशास्त्रि **उ**९क्षशार्थः । (ब्राउिः ৰ্মাথ বিমানেন সদ্যো ভূত্ব। চতুভূ (को ।। नारक्षी दिन्दर्श निवय॰ नर्दः লোক নমস্ত। ততঃ ছিত্বা যুগ শত বুন্ধণো লোক মাগতৌ ॥ বুন্ধলোকে পঞ্চলত যুগানা মুপ-ভুজ্য বৈ। দেবলোকে কালবশান্ন-ত যুগ চতুঃশত।। ততো ভূরি नृभा खाव ८ वषा मृन् तरः यातन् । হরে রন্গৃহ লোকে শালগান **मिनाम्य॰।। का**ठिमत्रवः गखक्राः कि॰ उन्।: कथराम। इ॰। यब्जल স্পাদানাত্ত্বেণ মাহাত্ম্যাণ মহদজুত ৷৷ চক্রান্ধিত শিলাম্পর্শ মরণস্যে-मृन्धः कनः। न ज्ञान वामुप्तवम्। সেবথা কি॰ ভবিষ্যতি ॥ ইতি ক-ল্প্রাণে২৫ অধ্যায:।।#।। নরণ-জনক বস্ত্রি যথা। অগ্নি রাপঃ স্ত্রি-ষো মূর্থ: সর্পা রাজজলানি চ। নি-ত্যুণ পরোপদেব্যানি সদ্যঃ প্রাণ-হরাণি ষট্ ॥ ইতি গাৰুডে ১১৪ ञ्यभागः ॥

भव कः भू॰ भव १० । इक्तानित्कायः॥ भवन्तः । भू॰ भक्त न्तः। इकि नयः-भवन्तकः । वज्ञावनी ॥ भवाकानी खी वृन्तिकानी । दिष्टाही

ইতি ভাষা। ইতি রত্নমালা॥ নরারঃ পু॰ শস্যরক্ষণভান। মরাই ইতি ভাষা। ইতি জটাধরঃ।। মরাল: পু॰ রাজহ•স:। ইতি জটা **धतः ॥ कब्जल• ॥ कात्र**खवः ॥ जूत क्रमः ॥ वादिवारः ॥ माডिमीवि-পিন• ॥ খল:। ইতি সারস্বতঃ ॥ মস্ণে ত্রি। ইতি ত্রিকাণ্ডশেব:।। भद्रालकः भू कलरु मः। ইতি दाङ निर्घण्डः॥

भित्रिष्ठः ज्ञी करक्वाणकः॥ स्रनामश्राज वर्खनाकात कर्षे पुवर्गितामयः। ७९ পর্য্যায়: ৷ পবিত ২ শ্যান ৩ কো-ण । । বল্লी खः ৫ উষণ । । যবনেষ্ঠ । १ বৃত্তফল ৮ শাকাহ্ণ ৯ ধর্মপত্তন ১০ কটুক• ১১ শিরোবৃত্ত• ১২ বীর• 🛚 ২০ কফবিরোধি ১৪ মৃষ : ১৫ সর্কৃহি-ত ১৯ কৃঞ্চ ১৭ বেল্ল জ ১৮। অস্য গুণা:। কটুত্ব•। তিক্তত্ব•। উঞ্চত্ব•। बाघुद्व । শ्रिय विनामनद्व । भभीत क्ति इ्पाग इत्रवः। कि कात्रकः ত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। অপিচ। মরিচ বেল্ল জ কৃষ্ণ মূষণ ধর্মপত্ত ন । মরিচ কটুক তীক্ষ দীপন কফ বাতজিৎ ॥ উষণ পিত্তহর• ककः भाम मूल कृीन् इरत् । उ-मार्- मयुत- शारक माञ्रुक कर्रे ॥ मत्रीिकः श्रु जी कित्रनः। इंड्रामतः॥

ক গুৰু।। কিঞ্চিত্তীকু গুণ শ্লেম-পুসেকি স্যাদপিত্তল । ইতি ভা-বপুকাশ: ॥

মরিচ: পু: মকববৃক্ষ:। ইতিরাজ-निर्घणः॥

মরিচপএক: পু॰ সরলবৃক্ষঃ।ইতি त्राजनिर्घण्टः॥

মরিমা পু• মৃত্যুঃ। ইতি সিদান্ত-কৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তি:।।

मतीन की सनामशाउकरू पुराव-(नयः । उद्भर्गायः । (यल्लजः २ (कालकः ० क्षः ८ ख्रेयनः ৫ शर्यः পত্তন ৬। ইত্যমর:॥ মরিচ १ শ্যামণ ৮বরিষ্ঠণ। ইতি জটাধরঃ।। আদু স্য ভ্ৰম্য গুণা:। পাকে স্বাদু-वृ । ७कव । (ज्ञच भू तकव्य ।। শুষ্ক স্য ভস্য গুণাঃ। ৰুচ্যব্র•। অগ্নি-**म्खुः। क्षम्यः। क्षृयः। উक्ष्यः।** वयुष् । मूकनानिष्क । ইতি त्राजवल्लां ।। जन्रद् मंत्रिष्ट**म**त्य मुश्चेवार ॥

महीिकः भू मनिविष्णयः। मञ्जूकः ণোজ্যেষ্ঠনানসপুত্রঃ। অন্যভাষ্ট্রো कर्मनमूनिकन्या कला श्रूषः कलाशः পূর্ণিনাসক। ইতি শ্রিভাগবত্স-उ·॥ क्शनः। ইতি (इनहन्मुः ॥

ষ্ট্রসরেণুপরিমাণ।ইভিবৈদ্যক পরিভাষা ॥

मही हिका जी मृगज्या। इंजामद्राः॥ নরীচি রিব মরীচিক। স্বার্থে সংঘে इंड्रानिना इंवार्थिकः । शुरिया मः करमभामकामावक्कन्नाः भुजिक **विजाः मृत्र**ङ्गाना॰ **कवा**द्यना जास्रि তন্বাচিকা মৃগতৃষ্ণেতি টীকাকারঃ। উৎকটন্তৰি **রশ্মি জন্য ক্ষিতি** বাং न्त्र काल भन्नी हिका। मूत्र मृत्न र ক্ষুগুথৈ জঁল মিব দৃশ্যতে ইত্যপরে ্ইতি ভরত: 🗈

पर् 💇 अ**र्ब छः ॥ निर्क्रनारणः ।** क्ट शर्रायः। भन्ना २ । **इंडामनः ॥** মাজে র অনুদে**শঃ। বথা। শালাস্ত কা**-রলক্ষীক্ষ **মরবস্ত দশেরকাঃ। ইতি** (रुम्हापर ॥ भक्वककृष्टः । ইতি ज्ञत्थ् स**भः ॥ मृ**र्यप्र**तःभीय ভा**वि द्वाद्विरक्षम् । **७मः विवद्गणः यथा।** ভন্নিশ্বাৰ ভঃ। তথাদভূত্ পুঞ ाकः अभवता अवस्त । (म्वाः भीद अला श्रीनः भात्रिभात्वा २० 🔢। वनाहक खरडा २कंफ এলনাভ স্ততো হভবৎ ॥ খগনা-ষিধ্ত স্তশাব্দিরণ্যেনাভ সংক্রি জঃ।ততঃ পুয়ার্ব ক্লাক্র্গলো নকং পু বায়ুঃ।ইত্যবয়ঃ।। নক-

२थाग्निवर्गकः॥ जमा**्मी**ग्रा **२७**-বৎ পুএ: পিতামে হতু লবিক্রম:। उमार मकः माः (कनीह वृष्काः পি সুমিত্রক ।। কলাপ গ্রাম মা-সাদ্য বিদ্ধি সত্তপসি হিতা। ত বাবতার• বিজ্ঞায ব্যাসাৎ সত্য-ৰতী সূতাৎ। প্ৰতীক্ষ্য কালং ল-कामः कालभाक्ष खवात्रिकः ॥ কল্কিবাচ। মরো ত্বা মভিবেক্ষ্যা-মেছানথমিখান পুজা ভ্ত বিহিণ-সকান্।। বিশাথযুপ ভূপাল স্তন-याः विनयान्निजाः । विवारः कृष्टिद्राः भाक्षी॰ मुन्सती॰ ज्ञा॰ भुमामाउँ ॥ ইতি কল্পিরাণে ১৮ অধ্যায়ঃ॥ नक्कः भुः नथीनानगन्नपुराः। इंडि শদ্হন্দ্ৰি।। মৰুদেশজাতে তি।। नक्जा जी गृरगवाकः। ইতি রাজ निर्णेः ॥ मक्रे। जी উहलनार्य्युक्छी। इंडि

नद्रज्ञावनी ॥ गक्छ। जी উहनना हो नाती। इंडि

ত্রিকাণ্ড**েশ**যঃ॥

মৰুতঃ পু॰ বাযুঃ।। দেবঃ। ইতি ভর-ত ধৃত ব্যাড়িঃ ৷৷ ঘণ্টাপাটলিবৃক্ষঃ । ইতি শব্চ निका॥

পুছিপর্ণে ক্লী। ইতি মেদিনী ॥ প্ ক্লাযা• দ্রী। ইতি শব্দরত্নাবলী।। मक्टकद्रः भू॰ द्राजनायः। ইতি भर ठिन्सिका ॥ মকৎক্রিয়া দ্রী অপানোৎসর্গঃ।বা-তকর্ম ইতি খ্যাত:। ইতিকেচিৎ।। मक्खः भ् हत्रुवःभीगदाजविश्वयः। न इ चरीकिनुाजभूमः। यथा का-श्रुकिकवार। यावीकि उन्। नृপত ম্ক্রস্থ মহাত্মনঃ। শেুভেুমিছামি 🔏 চক্ৰ জী নহা ভাগঃ শূরঃ ক্ষান্তো भश्मिष्डिः। धर्मिषिक्य हेर्हित अम् ক্ পাল্যিতা ভূব: ।। মার্কণ্ডেয় উ বাচ। স পিত্রা সমূক্তাতো রাজ্য• পুাপ্য পি তামহাৎ । ধর্মতঃ পাল-यामान भुकाः भूधानित्वोत्रभान्॥ ইराज मृत्रहाय छ। न्यथा व**८ भा**जी দক্ষিণান্। ঋত্বিক্ প্রোহি ভাদে-माननिर्विता मही शिष्टः॥ उन्हा পুতিহত চক্র মাসীদ্বীপেযু সপ্তসু । গত্য ক্ষাপ্যবিছিলা; স্ব: পাতা-न बनारिष् ॥ इंडारि मार्काखग भूद्रागः॥

মকত্তকঃ পু॰ মক্বকঃ। ইতি ভাব-পুকাশঃ।।

वकः। इंडि ভावभुकाणः॥ (एवः॥ ॥ नक्ष्भथः भूः व्याकाणः। इंडि (इमहन्मुः ॥ **शृ॰** हेन्पुः। इंडि मक्रभावः (किंटि ॥ मक्रभूयः भ्र जीगरमनः। इंडि (इनहम्मुः।। इनुभाः मह मक्रथा भू मिः हः। इंडि बि কাওশেষঃ।। नक्षक की यताशवः। इंडि मक्रामा॥ मक्दान् श्रु हेन्युः। इंडाप्रज्ञः॥ रन्यान्। इंडि मदत्रद्वावली ॥ मक्रमथः भू इन्द्रः। इंडि ४त्रिनः॥ অগ্নিঃ। বাযুসথ ইত্যমর দর্শনাৎ।। मक्राल्मानः भू धविब । ইতি

> नद्याना ॥ मक्षिष्टेः प् **ख्युन्:। इं**डि ब्राक निघ्फैः ॥

মকজ্বজ ল্লী বাতত্ল। বুডীরসূত। **ই**তি ভাষা । यथा । श्रीयाञ्चामः वे -नक्ष वाउठ्वा नक्षु क । इंडि श्वात्रावनी।।

मक ख्वा जी जागुग्वा कू भः। थिता है ইতি ভাষা। ইতি রর্মালা॥ नकन्यः भृ च यः। ইতি ত্রিকাও-**भियः।। (** ५ वत्र ः ३ जिल्ह्य हन्तुः॥ नक्षनः श् विद्यप्तिः। ইতি রহ

্বালা। ক্ষেক্ষর ল্লী আকাশ•। ইতি ত্রিকা ওশেষ:॥

মক্ষাহঃ পু॰ ধুনঃ।ইতি ত্রিকাও শেষঃ।। অগ্নিঃ।ইতি শব্দালা।। মক্ষিপঃ পু॰ উষ্ট্রঃ।ইতি ত্রিকাও শেষঃ॥

মৃক্রাণা স্ত্রী প্রা। পিডি শাক ইতি ভাষ। ইত্যারঃ।।

नकार्भियः श्॰ উष्ट्रैः । ই**डि एम**-हन्मुः ॥

সক্তি জী দাশেরকদেশ:। নার-ভারে ইতি ভাষা।ইতি ত্রিকাও-শেষ:।। নির্জনভূসিশ্চ।।

সক্রক্ষ: পু॰ করীরবৃক্ষ: । ইতি
ভাবপুক:শংগানকভূমিজাতে ত্রি॥
নালা: পু॰ কারওবপক্ষী । ইতি
শ্বেম্চন্দু:॥

म्यान्य म् नृक्षिति ना । मक्या है जि ना गरान है जिह जाया। जर अर्थाः वृक्षा अद्र अद्यार्थः १ महाभयः १ करीयः ३ मृद्यान्यः १ मभीद्राः ४ करीदः ३ पृज्ञ अप्रुमः ३० मक्यकः ३३ खाक चामुद्य जिम्मः ३२ मदिहः ३३। खम्र ख्याः। कर्रे द्वा जिक्क वृश्य सम्बद्धः। क्ष्याः। क्रिक्ष द्वा सम्बद्धान मृत्य मान्तरः ष्याव नामिष्क। इंछि तासनिर्ध
णेः।। ष्यिति । मक्खरका गक्वरका
गक्रमक तित्र मृष्ठः। क्यी क्यित्रः
क म्हालि भृष्ठ श्रुष्ठः मभीत्रयः॥ नकर्षि श्रुप्ता कृष्ठ खिल्डाकः लिखला लघः। वृग्ठिकापि विष स्मुप्त
वाज क्षष्ठ कृषि श्रुष्ट ॥ कर्षेशाक
त्रामा क्ष्ठ खिल्डा कृष्ठः भूगिकिकः। इंडि ভावश्कामः॥

स्वतः श्रा कलेकिवृक्षिविश्वः।
स्वा इंडि ভाषा। छ शर्यायः।
शिखीउकः २ श्रमनः ० कत्र हार्षेकः
ह भानाः ६ सहनः ५॥ स्वा भावः
ह भानाः ६ सहनः ५॥ स्वा भावः
शुक्र शृद्धः ० कि ज्ञुकः ह क्योतः ६
हेडि अक्षेत्रः ॥ क्षीति छ । इंडि
छक्षेत्रायाः । क्षीति छ । शृत्र वृक्षिवः
स्वाः। सक्याकृत इंडि छाषा।
छ श्यांयाः। शृत्र शृद्धः २ जिलकः
० स्वतः ह॥ क्षिति स्वाः। नातः
हिड छ । क्षिति । छ श्यांयः।
श्रम्भावः १ त्र क्षियः। । छ श्यांयः।
श्रम्भावः १ त्र क्षियः। । छ श्यांवः।
श्रम्भावः । व्यावः।।
श्रम्भावः।। व्यावः।। स्वाः।।
कः।। इंडि क्रियंतः।।

गৰসম্ভব ক্লী চাণক, সূলক । ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ নৰসম্ভবা স্ত্রী নহেন্দুবাৰণী॥ ক্লুদু मृतामजा। इंजि त्राजनिर्घणेः ॥ मक्छा जी कृपुमुतामजा। इंजि त्राजनिर्घणेः॥

নককঃ পু॰ মৃগবিশেষ:। ইত্যুণাদি কোষ:॥ মযুর:॥ শটী। ইতি স॰ ক্ষিপ্তসারোণাদিবৃব্তি:॥

মৰ্ডবা স্ত্রী কার্ণাসী।। যবাস:।।
ক্ষুদুথদির:।ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।
মরোলি: পু• মকর:। যথা। জল
কপস্ত মকরে। মরোলি রসিদ•ুইকঃ
।ইতি ত্রিকাওশেষ:।।

भारतालिकः भू भक्तः। ইতি শব-तज्ञावली ॥

মর্ক সর্পে। সৌত্রধাত্রয় । ইতি কবিকল্লজন: ।। নর্কট: । ইতি দুর্গা-দাস: ।।

নর্ক: পু॰ দেহ:॥ বাযু:। ইত্যুণাদি-কোষ:॥ বানর:। ইতি শব্দরত্না-বলী॥

নক্ক: পু• গলগগুপক্ষী। হাড-গিল ইতি ভাষা।ইতি শব্রত্না বলী॥

মৃক টি: পু॰ বানর:। ইত্যমর:॥ উণনাভ:॥ স্থাবরবিষভেদ:। ইতি ইেমচন্দু:॥ গলেগওপক্ষী। হাডগিল ইতি ভাষা। ইতি ত্রিকা-ওশেষ:॥ मर्क हेकः भू॰ भगाः जिनः ॥ वानतः ॥ व्या । इजि मिन्दा । स्वा । स्व । इजि भन्दत्र वा वा ॥ मर्क हेजिन्द्र स्थः भू॰ भभी नः । इजि जात्र भूगाः ॥ स्व हे जिल्ला की यभागां। इजि वा जानिवंगः ॥

नकं देशियः भू की तर्कः। ই छि भद्याणा ॥

मर्क हेवानः भू॰ ल्डाउन्छः। माक्छ-भात्रकाल इंडि ভाষा। उद्भर्ग्राः यः। आभावकः २। इंडि भद्रत्रज्ञाः वनी ॥

नर्क हेमीर्यः क्ली हिक्सूनः। ইতি রত্ন-नाना।।

নক টাস্য লী তানু । ইতি হেম চন্দু:।। বানরমূখ তদ্বতি ত্রি।। নকটী জী কপিকছ:।। অপামার্গ: ।। অজনোদা। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। করপ্তভেদ:। নাকডাকরপ্তা ইতি ভাষা। ইত্যার:।। বানরী চা।

মকটেন্দু: পু॰ কাকতিন্দুক্ৃক্ষ: ।
যথা। কাকেন্দ: স্বলক: কাকপালুক: কাকতিন্দুকে। মকটেন্দ: সিস্কুপুপ্রো দ্বাবেতৌ ভব্র কীর্ত্তিতো।।
ইতি শন্চন্দুকা।।

🏿 নকরঃ পু ভৃষরাজঃ। ইতি শক্-

त्रवावनी ॥ न्मक्त्रा की पत्री॥ जाउना गुत्रश्रा॥ নিষ্কলান্ত্রী। ইতি বিশ্বঃ॥ ম। ক পুছে। সৌত্তো হয় পাত্র। ইতি কবিকল্লজম:।। তালব্যবর্গ**পু**-थगासः। मर्कः। ইতি पूर्गानामः॥ मर्जः जी णुषिः। ই छ (मिरिनी।। মূর্যু: পু॰ রম্ভকঃ। ইতি হেনচন্দু:॥ भीवेगफः। इंडि मफ्तज्ञावली।। मर्खः भू॰ मन्याः। ইতি निषासः कोमूम्यामूनामितृजिः ॥ मानवकः। इंडि मः किछनात्रागि दिवृक्तिः॥ মর্ভঃ পু॰ মন্ষ্ঃ। ইত্যময়ঃ॥ सद्भारता कः। इंडि करे। यदः ॥ यर्षन क्री व्यक्तपर्यन । गाठाना ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। সমাহ ন' ২। ইত্যমর: ॥ সম্বল**ণ** ৩। ইতি **मदत्रद्वावनी ॥ जज्य छ**नाः । जुग-श्यद्धः । निम्ना स्ट्रकः मूथश्रुपद्धः । ना म ब्रक पुरु भुभवका ब्रिव्र । वायू क्क नाणिद्ध। ইতিहाজवल्ला छः॥ ष्ट्रांनः। ই कि मृत धावर्थ मर्मनाए !। भक्तः श् वान्ऽवित्नयः। मान्न इंटि जाया। इंडानदः॥ उ८ भर्या। यः। ७४:२। **ই**তি **मदत्र**ञ्जवनी।। ম্দিতি তি গুছিত।ইতি বিশেষ্য নিম্বর্গটীকাষা ভরত: ॥ চুর্ণিত।

। যথা। তিভিডীকলরসেন নির্দি-তোরানবাণ ইতি বিশুতোরসং। ইতি ভাবপুকাশ:।। র্ম গত্যাণ। ইতি কবিকল্লফন:।। নুর্বতি। ইতি দুর্গাদাস:।।

मय ही स्कर्भः। उद्गायशाम्गरा न विशीय उन्तेश द्रशि धर्माशन मर्या भारतिशः। यात्र मृन्तत्र मा॰ वद-**छ** । ज र वर्मः मनयानयाञ्ज्लाः ॥ इंडि रेनवक्षीय विजीयमर्ग (माक वृग्धात ভরতः ॥ मक्षिष्टानः । इेंडि निकारिमःगुर् व्यमन जन (जो।। कीवङ्गानः। इंजि व्राक्तिर्घः ण्डः॥ 🗱॥ व्यथं मर्यानि । महिना-**७: निता नागू मिक्क मा मार्डि म**े ম্ভব:। মর্মাণি ভেষু ভিষম্ভি প্রাণাঃ খলু বিশেষতঃ।। সপ্তোত্তরণ শত॰ **সন্তি দেহে মর্মাণি দেহিনাং। তা-**त्यकामण भाष्य मु ब्रह्मेवश्चिष् সম্ভি হি।। সন্ধীনাণ বিশ্শতি স্তানি স্নায্না সপ্তবি শক্তি:। চত্ত্বারি শ-खरेथ क्ष मित्रा मर्गा नि छव जु । 🛊 ।। দ্বাবিংশতিঃ সক্ত্রিয়ণে তাবস্ত্যেব जुक्दर्य। क्षाम्रामात्रीम अरको हः श्रुक्षाम हिन्द्रमा।। भीवाया डेक्-ভাগে তু সপ্তত্তি শন্মতানি হি।#। নৰ্মাণি হতানি সন্তি পঞ্ধা ভৰক্তি

त जामहारू । जन्द्रः चुनि स्क्रांविजुह র্মার্যাণ্ডেকোনরি শক্তি। কর্মাদেশা ত্রযক্তি শংসুঃ কালাভর নারকাঃ ॥ ठवाजिप्मह कवाति सिक्नाः कन-यि हि। नर्याहेक क्लाका वि भवात्र विक सङ ॥ भ्राहेकान বিপতি: শংখ্ৰী কণ্ঠ সিৱা তাদ । হৃদ্য বস্তি নাভ্যে চ সদ্যে মুন্তি হতানি চেৎ গা # পা শৃস্ণ ইকানি স্থান শ্বোত্ত জিহ্বা সন্তর্গকানা দিরা मुथानाः भित्रता म्हार नःसात স্থান তানি চন্ত্রারি সিরামর্যাণি চ-জুরঙ্গল পুনাণানি হতানি সম্ভি স (म्यामात्रकानि। य**र्ष्यिङ: म्**छक्र-স্যা চ্যন্তরে সন্ধি সিরখো: সন্ধিপাণ **छ উপরিষ্টানোবর্ত্তা স একঃ স** या गर्निष- कार्षाकृष्ट भुगान- मरम्। মার ফ**া শ**্বৌ জ্বাে**রস্তোপরি** কর্ণ*্* ললাট নধ্যে তৌদৌ অভিনমণী व्यक्तियुत्न जाराधानात्रकः । कथेः श्रिताः गावृहाः ग्रीवाया **উ**ख्यशाः র্খবো শ্চতসু শ্চতসুংশিরা স্তা অস্ট্রো শিরামর্মাণি চতুরস্থানি সদ্যো-মারকাণি।গুদ• পুসিদ্ধমেক• না•স भर्म ठज्दक्षा नाम्यामादः। क **मय॰ खनया र्याया माना मान हात्राय**ः कः भितामर्ग हजूतक्तः नरहानाः

রকণ। বক্তি: নাভি পৃষ্ট কটী মুক্ক শুদ बङ्गा **मिक्सा**॰ मत्त्रा बिख खन्दुर्ब् একদ্বারো অংখামুখ্য স্নাযুমর্মেদ চ जूबक्षा नाम् अभावका नाजिः मु 'নিন্ধা সিরানর্মেদ' চত্রসূল স (म्यागात्रकः ॥ 🕸 ॥ वत्कानर्यानि भीमञ्ज उन किल्लुम्बररंगः। वृश-ত্রের সামজীসন্ধা কটাকতবৃণে চ বে 🏗 নি ভ্ৰমবিভি চৈ ভাগি কালা-স্তরহরাশি তু। ককোনর্মাণি স্তন-মূল স্তন রোহিতা হুপলাপাপত্ত-ञ्चाः खनग्*व* खनया तथलाप्रुकृत• याव एक नितासमारी बाकुल क क गूर्णका के उसा का बाह्य समाज्ञ । उन्द्राहिष्ड उन्द्रा क्षेत्र हाकू-कः यादः ए नाःन मर्याने ब्रक्तन् রিতকোষ্ঠত্যা কালান্তরমারকে। व्यथनात्भी व्यन्मकृष्टेर्या द्रवजा८-পার্থযো কপরি দ্বৌ সিরানর্মণী অর্জাকুধে রক্তেন পৃষতাঙ্গতেন কা-লান্তরনারকে । অপত্তমৌ উরস উভয়তো নাড্যো বাতবহে সির্দ নমণী অজাকুলে বাতপূৰ্ণকোপ্তহা কাস স্থানাভ্যাঞ্চ কালান্তরমারকে । সীমন্তাঃ শির্বাস পঞ্চ সন্ধ্যঃ সং श्वितकाणि हजूदक्**लाः উन्नार ভर** ञ्चि विनारेनः कालाखन्नमान्नकाः।

क्रमाति सन्।। क्षि गन्कनः इस ্স্বা नास्याक इज्राहि छनानि मा॰ मम ৰ্মাণ্যছানুবাৰি কলাভি: কালান্ত-जगातकाणि: किल्यानि वक्षाक्रवता মাধ্য হিচপু• ওচ্ছ হস্তযোৰ্দ্বে পানযো र्प अवल झाढि मायुमर्यागार्काम् वा नक्रक्तिकारका कानाउह्याहकाशि। **ेहेन्स्व उपः भू**रका श्रेखा चार्ये (हो ज 🗝 त्या पार्वह त्हों अव हज्जाता भा•म-মর্মাণিদ্যক্লাঃ শোণিতক্ষ্যেণকা वाष्ट्रमातकाः । वृक्त्जी खन्मना भू छरा इः পृष्ठा भाषावर्शनदानया अकोक् म (भागे अठि भुतृ खि नि িত্তৈ ৰূপদুবৈ: কালাভরমারকে। भार्थमकी कथन शार्थरगः अकी সিরানমণী অদ্ধাঙ্গুলৌ শোণিত **न्**र्रकाष्ठ्रण काना इत्रनात्रको । কটীকতৰূণে ত্ৰিক সন্নিধানে উভ-যতঃ শোণিকাও লক্ষীকৃত্যাছিনী শাস্থ্য শাস্ত্ৰ লে শোণিত ক্ষ-যাৎ গান্ত বিবৰ্ণ ৰূপণ কৃত্বা কালা ন্তর মারকে। নিতম্বৌ পুসিদ্ধৌ দ্বৌ অস্থি নৰ্মণী অজ্ঞাক্তলাবধঃ কায়শো रया भी बंदारन व काला खन्न भानती ॥ ॥ (वाश्विज्ञाकानि जान्त्री कृही दिश क्रवाः वश्चात्र कक्षत

বিধুরে সক্কাটিকে। অংশা মকল-**কাপাকা নীলে মন্যে ফণে তথা।** বৈকল্যকারকাণ্যান্ড রাবভৌষৌ ত-থৈব চাংলোহিতাকাণি উর্নোকড্ **২াথো বছুণ সদ্ধে র্জোক্তিভাক্ষণ ভট্ট** দ্বে বাহ্বে। দ্বে উর্বে। ব্লেব॰ তানি চ-ত্বারি সিরা মর্মাণ্যজ্জাঙ্গুলানি বৈক-ল্যকারকাণি তত্ত্ব শোণিত ক্ষ্যেণ পकाघाउः मिकुमासा वा। व्यापयः कानून छक् मूछरगः भाषाया र्यः कुल। अवश्यन् कानृति (व श्रश्रह्मा ন ছে এবং চতসুঃ স্নাখ্নৰ্যাণ্যভাচ্-न। रेवननामर्याः তव माथाजि-वृद्धः निक्षु सुण्ठा बान्नी काह्या-र्वाः नक्षी निक्षनर्या कान्यल देव-কল্যকরে তব খঞ্জতা। উর্ব্য: দ্বে উर्दि। यर्था (द भुग ७ रय। यर्था, वर ठउमुः मिद्रान्यात्यक्षा देवकः **ল্য**কর্য্য: তত্ত্র শোণিতক্ষণাৎ সক্লি-(भाषः । क्ईाः भाषत्य। त्रकृष्ठाकृत्वत्र। ৰ্মধ্যে তথাে কন্ধ্ৰ গণত এব চত্ত্বার: न्नायुरम्पानि विकलात्रकता छत्र भार-যো ভূমণ বেপনে ভবতঃ। বিটপে ष वद्भाग व्यनाया मां श्रा द्वायुक्तमानी একাত্দল বৈকল্যকরে তব্র বাণ্ড্য মল্লশুক্তা বা । ক্পরৌ কফোণী (ठो (दो) निक्तमध्यो दाकुलो दिक-

नाजरती उब वाल्याया माका है। জন্দরে নিতম ক্পকৌ দ্বৌ সন্ধি-मयानी वाक्ताकृत्व देवकनाक्रात उव স্পূৰ্ণাক্তান মধ্যকাযে চেষ্টোপঘা-**७** म्ह । क्ष्मभाष वक्षः क्षमाय। स्रि षि नायूमर्भागी अकाकृत्व रिकनाऽक-রে তত্র পক্ষাধাতঃ। বিধুরে কর্ণ পৃষ্ঠ তোধ: সংশিতে কিঞ্চিন্নাকারে দ্বে न्।यूमर्यानी अर्फाकृतन रिवकनाकरत **उब** वार्षियं प्रश्चित निद्रा श्री-वर्षा क् उपडः मन्त्री रह मिन्नम्प्री অন্ধাঙ্গুলে বৈকল্যকরে তত্র শিরঃক म्भाः। य भो ऋस्तो मायूमर्यानी अर्छ। कুলৌ বৈকল্যকরৌ তত্র বাহুস্তম্ভ:। व्यानकवाक श्रिक्षाश्र श्रिवः म गू-ভবত ক্ৰিক সম্বন্ধে গ্ৰীবাৰা অংসদ্ব-যস্য চ সংযোগো যত্র তপ্রিকণ অস্থি-मर्मा अर्फाकृत्व दिक्नाउक्त उब বাস্বোঃ শ্ন্যতা শোষশ্চ। অপা-को निवर्ण देखी निदामर्गणी अ-कां ऋ (को देवक का अवाक्षा कृ-श्चेऽभवारका वा । नीर्ष्य मस्न्य ह क्रे नाछी मूज्य ७ म्हज्जू १ भरन्त्रा (इ নীলে দ্বে মন্যে তত্ৰ একা নীলা একা भन्डा এक्ष्मिन् भार्ष्य मन्डा नीवा অপর অন্পার্শ্বে ছে ছে শিরাম্ম ो ঘ্যঙ্গুলে ঘ্যঙ্গুলে বৈকল্যক্রে তত্ত্ব 🚶

নুকতা বিকৃত্যর হা রসাগ্রাহিতা চ । ফণে যাণ নার্গ মূভ্যতঃ অভ্যন্তরে गित्राभग्गी अर्फाकुल रेवकन्यकात्र তত্ৰ গদ্ধাজ্ঞান•া আবক্তৌ ক্ৰবোৰু-পরি নিমুযোঃ সন্ধিনর্মণী অর্জাকু-लो रेवकन्यकात्रो छञाभा प्राक्षाः म्थूर-পথাতো বা ॥ 🛊 ॥ গুল্পৌ দ্বৌ নণিব-ক্ষোন্ধো তথা কুর্দশিরাণনৈ চ। ক্রা-कद्राणि जानीयाम्हात्वजानि वृश्विमा-न्।। छ:न्। घ्रिक मित्रमर्गी म्रकू-लो बबाबको उव बना भारखुः থঞ্জতা বা । নণিবন্ধৌ হন্তপুকোষ্ঠ मकी महिन्यानी घाष्ट्रलो सङ्घाकात्री **७**क रुखरगः किना तारिठा । कृई-শিরাণসি ৩লু সদ্ধে রধ উভয়তঃ একমিন পাদে ছে ছে চ ছিত্তীযে এব॰ চতারি সাযু মর্মাণ্ডেকাঙ্গুলানি ৰজাকরাণি তত্র ৰজাশোফশ্চ।।#॥ উৎক্ষেপৌ স্থাপনী চৈব বিশ্বস্তারণ बिक भठ । উৎক্ষেপৌ শহুযোৰ গ রি কেশান্ যাবৎ স্নায়ুনম্মণী অর্দ্ধা-कृत्नो তযো विकारगः मनतन्त्रा औ বেৎপাকাৎপতিত শল্যোবাউদ্ভ শল্যস্থ মিু্থেত অতএব বিশল্য মু-জ্ত শল্য হন্তীতি বিশল্যমুণ মর্ম। স্থাপনী একাক্রবো র্মধ্যে সিরামর্মে-म नर्काकुणः विश्वणः प्रः। मध्याबाः

् इरत ६ गुःः अरुः शुंष्ट्रतानि हि । काला उत शुगरहत शक गाम ह भारतः ॥ जन्तः शुागङ्यः ठास्ड विषः कालन मात्रयः। कालास्त পুাণহর মস্তে বিজয় দু: খদ ।।। चार नर्यानभील। नर्यान्धिशय हि य विकाता मूई छि कार्य विवि-ধা নরাণা। প্রাযেণ তে কৃছভনা ভবন্তি বৈদ্যেন যহৈ রূপি সাধ্য-মানাঃ।। ইতি ভাবপুকাশঃ।। #।। নৰ্মাম্পৰ্শনিষেধাে যথা৷ পরক্ষেত্রে गा॰ हद्रञ्जी॰ नहाहक्की उक्नाहिर। ন সম্বলেৎ সূত্রকে চ ন ক বৈ মর্মা ণি স্পৃশেৎ।। ইতি ক্মাপুরাণে উ পরিভাগে ১৫ অধ্যায:॥ मर्यकीलः পु॰ ভर्छ। ইভি क्रोपदः॥ मर्गकः वि मर्गावर । उनुकः। মৰ্ম স্বৰূপণ সন্ধিস্থানণ বা ভজ্জা नाठियः मः ॥ মর্মারঃ পৃ॰ বস্ত্রস্য পণ্রস্য চধুনিঃ। মড্বড়শন ইতি ভাষা। ইত্যারঃ नगरी जी भी जनाक। माक्ट्रांबुन् ইতি খ্যাতা। ইতি নেদিনী।। भर्मत्रीकः पुः तीनः। इज्रागिकः কোষঃ ॥ अर्चा दर्षे लः वर्षे छः। उट भर्यत्रयः। . কার্পটিক: ১ ৷ ইতি ত্রিকাণ্ডদে<mark>য</mark>়

।। मर्थिकः ० मर्थावनी ८ । इंडि कराथतः॥ मर्पादनी नः मर्पादि । उजुक्तः। ইতি জটাধর:॥ मर्मि क् जि मर्मि अकः। उद्भ र्यु। यः । व्यक्षुनः २ । ইত্যমরः ॥ ब्रथकः १। इंडि (इन्हम्मुः॥ मर्माविष्) जि मिक्कश्वान्यविषकर्छ।। मर्माविष्) मर्मछः। यथा। हित्र क्लि-শিত্বা মর্মাবিদ্যুমো বিল্ভিভপ্পবণ **"पारायमान मव्याद जीख्यम• क्र-**ণদাচরণ।। ইতি ভঞ্জিকাব্যে ৫ সর্গঃ ॥ মর্মাণি বিধ্যতীতি ক্বিপ্ জিঃ বী-কহো ধড়ব্বাবিতি দীর্ঘ নির্দ্দেশাৎ क्विए क्विरास भूर्वभव बीर्च व मा দিতি স্চিত আড পূর্বস্য ৰূপণ ৰা মৰ্মাবিৎ মৰ্মজ্যো বা বেন্তে ক্ৰ-প'। ইতি ভট্টীকাষাণ ভব্নতঃ॥ मिर्मितः जि मर्गावि । इंछि कि । १४३: नर्याः वर जीमा। इंजिनर्यानामय-**ोकाया॰ जायमूळ**िः॥ मर्यप्रामा जी नप्रायप्रशयक्षिजिः। उद পর্য্যায়:। স•স্থা ২ ধারণা ৩ স্থিতিঃ ৪। ইত্যমর:।। পর্য্যাদীগতে মর্য্যাদ मा भग्राड भ्वां मां का छः नि পাতনাৎ পস্য য়ঃ। ইতি ভট্টাকা যা ভরত: ॥ নর্য্যেতি সীমার্থে

অব্যুখ তত্ৰ দীয়তে মৰ্য্যাদেতি ৰা-भी। इंडि द्रायमूत्रदेः ॥ बि्यरष्ठ श्वां मर्या जा मनाजीजिम-ি র্য্যাদা। ইতি সারসুন্দরী ॥ সীমা । इंडि क्री थतः ॥ क्ल । इंडि (एगठमुः ॥ भर्गाहकः वि भर्गामाकसा। भर्गा-শা করো এতি কর্ত্তরি চবেকাদি ভি কণ্ পুত্যযে কে ২ক: স্বো হে-তু বতি আকারস্য হুমে নিয়ুমো १ग नदः॥ मर्व भूखों।। गरो। ইভ कविकन्नः জন:।। মৰ্বতি প্ৰসা জন্তু চেটী। ইতি দুগাদাসঃ॥ सर्वः भू॰ काडिः। स्ववाराज जीत ঘঞ পুত্যযেন নিম্লমঃ।। भर्यतः ज्ञी कमा। म्यथात्वा जीत व्यनिहे পু छ। एयन निम्नम ।। শ্রি: ত্রি ক্নাযুক্ত:।ক্ষান্তিবি **णि है:**। मृष्यात्जाः कर्खन्न क श्र-ত্যযেন নিম্নন্ধঃ॥ ভাবে কে শ্লী॥ भविञ्यान् जि काष्टः। मृययाजाः কর্ত্তরি ক্তবত্ প্ত্যংন নিম্ননঃ।। মল ড ধৃতৌ। ইতি কবিকল্লজন:॥ ড মলতে। ইতি দুর্গাদাস:।। मनः भू ही भाभः॥ विर्।। कि उ

। ইত্যমর: ॥ পাপ কিল্বি।

विष्ठे विष्ठा। किञ्चे कवास्त्रा मञ्जूता-দি স্বেদাদি চ এযু নল:।। বসা শুক भन्षाका भ्यः विष् कर्गविष्याः। (भुद्राणु म्विका खुरना हाम्रेनाउ সৃণা মলা:।। ইতি মৃতি:। ইতি क्रिकायाः खत्रठः ॥ कर्त्रः। ইভি শন্চিদ্দ্ৰকা।। বাত পিত্ত क्का:। यथा। जर्स्वा (सर द्रा-পাণা॰ নিদান ফলিতা নলা:। छ८ भुकाभमा जुल्याक विविधाः হিত সেবন ।। ইতি মাধ্বকর:।। मनदः भुः भाषानीकमः। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥ নলনাশকে তি ॥ नद्यी की नागरनी। हेि दाखः निर्घणः॥ नवङ की भूगः। ইতি भद्रि**म्**का ॥ মলোদ্ভবে ত্রি॥ মলদ্বিত তি মলিন। ইত্যমর:॥ भन्पार्थी भू क्यभानः। ইতি রাজ-निर्घिः ॥ यनन क्लो सर्पन । ইতি स्मिमि ॥ মলন: পু॰ পটবাস:। ভারু ইতি ভাষা। ইতি নেদিনী ॥ नन् की कारकाषुत्र तका। इंड न्द्रः ॥ मन इक् पू॰ काकः। ইতি শদর্বা दली ॥

गार्छिनि जी कर्हेगा है छित्राज्ञः निर्घण्डः॥ गमामः भू॰ अधिकमामः। छ८-

नर्गायः। भिन्ति हः २ व्यक्ति।नः अत्राज्ञास्त्रात्रः ६ निश्वतः ६। छम्। वक्षण व्या। व्यानिकास्त्र **ভাববিশিষ্ঠ চাল্দুমাস**ত্ব॰ মলমা-जब् । इंडि मुम्बिदियक ही का गा॰ **बिक्क उर्का न का द्राः ॥ व्यक्ति । (ज्याजित्य। जनावन्य च**नः गञ व्यवितःकास्तिविक्कितः। गन्यमात्रः त विष्कुरमा विकृ: स्रिनिङ कर्क्स्छ ॥ व्यवावम् । चरा व्यवावम् । चराष्ठ ক্ষণ দ্বণ। রবিসংক্রান্তিভ্যাণ রবি-ক্রিয়েৎ পত্তি কপোত্তা সংযোগক-भा जाः यथाकमः बिर्ह्धाः एव म र्णवयान्य क्षाप्ताप्ता (त-**व द्रादः क्रि**यादशस्त्राञ्जद नगराः गान्। यथा क्रमः (बालनाधिमा-সঃ। সংক্রান্তে রেকক্ষণে ক্রিযোৎ-পত্তি রপরক্ষণে পূর্ব সংযোগ নাশঃ উত্তর সংযোগোৎ পত্তিক্ষেতি 🖚 ণদ্বয় বৃত্তিত্ব নিভি নীমাণসক সি 明一四人 川 竹河 か行をか そっちょ रावानावी। द्रा **अ**न्यकाः

मन्द्र भागता । १००० छ। १९८५ वर्ग वेश्वर भागि सम

(यट ११ भद्राभद्रः। शक्क बर्याश मन कास्त्रि यंदि नम्यार मिञामित्र । ভদা ভন্মাস বিহিত মূভৱে মাসি কার্যেত।। অত্র লম্বন মস ক্রমণঞ্চ রবে স্তদ। ভবতি যদা তথাস তৎ श्रवंगामास्यक्रनाया दिक ब्राम्य विख् তস্য রবে ভন্মাসানন্তর মেব রাশ্য-ম্বর সংযোগ: নত্ত্বেক রালি ছিত্স্য মাসব্যাপন নাজ তথাত্বে চতুর্দ্দ শ্যা মেকরণশৌ সংক্রান্তস্য পুতি-भर भूथम्रकार रभन्न नाम्यो उर শর রাশৌচ দ্বিতীযাবাণ প্রতিপদি या द्रायः मः रायात्म २ भद्र मृति मः ৰমাসতা স্যাৎ অভএব ক্যোতি-(व । जनावाम्। शदि ह्यः द्विमः कांडि विक्तिष्ठ । भवभाम विकानी-याह्नविकः मर्बकर्यम् ॥ उत्रप्राका দৰ্শক শৈক ৱাশৌ দৰ্শদ্বাতিগঃ ৷ व्यक्ति द्रानिञ्चार्कम् । पर्न व्याजिः পত্ব মুক্তে। এত চ পুরোপদর্শিত-श्या यात्राः भूई रेत्रात अञ्चति न পরস্য।। 🗱 ।। মলনাস কারণস্ত জ্যোতিবে। দিবসস্য হরত্যক: य-ি লগ মৃতৌ তত্তঃ। করোত্যেক भारतूमः अथिरिककः हम्मुमाः ॥ ं वर्ष ज्जीयाना नदाना मिर्द-भागतः। ग्रीत्म कनयङः भूर्वः भः

क्षादाष्ट ज् शक्तिमः ॥ उन दिवः সদ্য ভিথে: বৃষ্টিভাগ দণ্ডমেক व्रवि र्वति छिनयि उँखात छिन নিত্যভিধানা**ে। তত্তক ঋতৌ মা** जन्नरय **वश्चिनाजी ছেদা**দङ्खित्थ (मु. দ নাকর্ষণ করোতি। এবং চন্দ্রোপি । এरमुक करमन रार्च हामम डिथ्रा-ञ्चक काला कर्याम् इ जीयाना मना না নম্ভে অর্দ্ধ• তৃতীয়• যেষা•তে ত था ग्रीएम भाषवापि कहें तक भूर्व भा थवारि विक भठिङ भक्षादारङ जू পশ্চিম• শাুুুুব্বাদি ত্রিক পতিত• ম-नगान हन्युाको जनयजः । शुरिय भाषवानि यह इंडि यनुक उद्याक भाक् निक्तिः । भाषतानिषु याहेषु गानि मर्ग वयः यमा। विदायातः म বিজ্ঞেয়: শেতে তুশাবণে ২চুগত: ৷৷ · वित्रायाता वित्रायानामिः । <u>भ</u>ारता সৌরশাবণে। তথা চ জ্যোতিষে। निथुन हि। यहा जानू तमावम् । द्वर স্পূশেৎ। দ্বিরাষাচঃস বিজ্ঞেয়ে। বি ষু: স্বপিতি কর্ক্লটে। অমাবস্যা দ্বয•্ जम्बा क्वा प्रयः म्यूरम् मःयुक्कार ন তন্মধ্যে রাশ্যন্তর সংযোগ ইত্যর্থঃ 11 \$11 नन् कर्क्क है। पि जित्क अधिमान পাতে তৎ পূর্ব নিথুন এব হরিশ दनः ७८कथः गाध्यामि षट्रेक गाउ

कर्द्रति उर । उवार ताबगार्ज्यः। कन्। ति इ विनीदियु यहा हर्भ व्यव ख्रवर्। आगानिनि उमा वर्ष सनी-त्र मायवः चर्पा ।। माथवानि किक শ্রবণাদি ত্রিকাধিমাস বিবেচন ম-(भ) उपर्थ । इपन्त मार्क्तवर्य प्रयाधि মাস পাত নৌচিত্য ক্রমাদুক্ত 😎 विखिथीना॰ <u>क</u>ांत्र वाल्लान म्ख्य-श्रे विक न्।न मर्भनामुक काव न्।ना-विक कार**विश भवभारमा 'छव**छी 🧟 नगरनुकामक्ट । वञ्जजञ्ज दिशद्रीः ত্যে যতো ন্যুন দণ্ড ভিথে: পুাষিক-ত্বে ভব্ৰ ভিথি ক্ষয়স্য মটিভূগপল-ভাগানত্বাৎ স্বল্লকালেন তিথান্তর সম্বন্ধাৎ শীঘু রবিলম্বন পুতীতে: শীঘুমেৰ মলনাসো ভৰতীতি অ-ধিক দণ্ডতিথে: প্রাযিকত্বে তত্র তি-थिकयमः अधिउ।नूश्व ७। ना ना ज् नाधिकरेनव कारणन जिथाखत मञ्च ন্ধাৎ বিলয়েনৈব রবি লব্ধন প্রতীতে क्टिरंबरेनव मनमारमा **ভव**ञीजि ज থাচ বিষ্ ধর্মোত্তর । সৌর সম্বং-সরস্যান্তে মানেন শশিকেন তু ৷ **এकाम्मा**लिबिकारः मिनानि पृथः नन्त। त्रमाद्य माद्रमात्म उमा-আসো হতিরিচ্যতে। সচাধিনাস कः (भाकः कारात्र्यम् गर्हितः ॥

हैम्छ नियठ॰ এक्यामधिमात्राङ् ভীষাদে অধিমাসান্তর নিতি। य म्रामि याः जिथिः ममनूभाभा ज्वाः गहु ि ভाऋदः। उरेयद मर्बमःका স্তি যাবন্মেষ• ন গছতি।। ইতি রাজ भार्ड ७ वह ना जुला रियार न जिथि বৃদ্ধ্যভাবাদ্ধে দাদশতিথি বৃদ্ধি র নুপপন্না তথাপি মধ্যে বিষুবতো ভা नू र्यान् इशनि ज् वर्ष्करयः । रेजः मञ्जू যাধিকো মাসঃ পতত্যেব ত্রযোদশঃ ।। ইতিগৃহাপরিশিষ্ট বাক্যে বিষুব তো মেষ তুলাস কান্ত্যে মধ্যে নে ষাদি ষ্মাস এব তিথি বৃদ্ধি ৰুক্তা। व्यक्र्यात (भवाहि यभारत मन्त्जु क्या मल दिन वृक्ति खनादी भीयू ভুক্ত্যা দিনদ্বয় হ্রাস ইতি ৷ তথাচ জ্যোতি:শাস্ত্ৰ । মেষাদীনা নহ্ব[ি] न्त- यूगा- मक्षा हे हन्तुक- । जूनाभी নামষ্ট সপ্ত চন্দুকন্ত লিখেৎ পৃথক্ !! চন্দুএকঃ। অঙ্কস্য বানাগতি রিত্য-কবিদা সমযাৎ বুংৎক্রমেণ অস্কা বোধ্যাঃ তেন দিন বৃদ্ধি ক্রম সঞ্যা ভ্যা॰ নেষাদি ষট্ক এব একাদশা-विजय नार्ष्क भक्षभक्ति दिन्ह्रयः! দিবসস্যাষ্ট্রমে ভাগে পতত্যেকা ৎবিমাসক:।। ইতি রাজনার্ভগ্রেক:

मधरम रिनाधिकाडे मामाधिक वर्ष ছবে অধিমা**স:। স সৌরে মাসি স**প্ত म्भिरिताखंद्र॰ हानुसाम वहनाम-भ्रुवा< भावन भावन (ख्रुव: 1 **७५**1 চ বিফুধর্মোত্তর পুথনকাও। সৌ-রেণাব্স্ত মানেন যদা ভবতি ভার্গব । সাবনে চ তদ। মানে দিন ষট্ক পু-পূর্য্য:ত ৷সৌর সত্মৎসরে দিনষট্কা-ধিকঃ সাবন সম্বৎসরে। ভবতীতি। भोत भागाष्ठेकाषिक वर्षद्वय मछन-भ रिनानि वर्षास मावन करमणि প্রেজি বিষ্ণুধর্মোত্তরোক্ত সনান বিষযভাস্যেতি ৷৷জ্যোতিষে ৷ দশা-ना॰ काल्लनाहीना॰ भाषा नावना ह হ্বচিৎ । নপু•সকত্ত্ব• ভৰতি ন পৌষ-म् कराहन॥ नशुःमकद्वः मलमामः ত্ব। তথাচোক। অস-কান্তো হি-था मामः कनाहि खिथि वृष्कि छः। কালান্তরাৎ সমাধাতি স নপূ•সক ইব্যতে।। সাণ্ডিল্যেপি। প্রাযশো-न णुजः भोरम्। रेक्रिष्ठ भागाएक छ-था। नश्रामो हिक विभाशाविधिका २नऽः সুভিক্ষ कृष्या। সৌদেऽ। नार्श-मीर्यः। अधिका १धिमामः॥ अ॥ **उम्यः मःक्मिशः। मृक्म भु**जिशहाहि রমাবাস্যান্তো রবিলন্ধিতো মাসে मनमामः। मह नाष्ट्राति छेटः

मर्भितः त्वारिय कार्डिकामावशि। ष्याकः विश्वेष्ट सावदापि कार्डिका-वि यर्ज्ञिया इनि उल्लब्ध (यात्र भाववानारवत जुलानि बहेल धरवा-ভানাসে তল্পন বোগে পূর্ব এ।। व्याधिन विमाधिया छल्लक्ष्म व्यास পরএানলনাস:ভড়িন্ন ভানুণান্ন তঃ। মলমানে আয়। ঢাদে বিব্ৰুণ। ভা নল দ্বতে ভূনৈতনিতি বিস্তরঃ॥#।। मलगारम नि विकानि दथा। कार्र 🥫 शृच् । हुएः मोक्षी दयमध जगुः। (४४॰ महानगः। ब्राज्ञान्स्यिकः काः राक्ष न अर्गतरिवनामक ॥ हुडा॰ भिक्षीवक्षनक जन्नात्रसम् नश्चानम् । রাজাভিবেক কান্যঞ্ ন স্বর্গাল্ড। नुल हु: उ॥ नहाला कन्याकम्। छ॰ । ভীমপরাক্রমেপি। অধিনাসে দিন পাতে ধনুষি রবৌ ভানুলছিতে মা नि । চকি नि मुख्य ऋग्रीका माऋनार विवास्थ ॥ तिनशाः विनक्षय । অধিনাসে বিবাহ- যাত্রা- চূড়া- ভ (थाशनयनामि । इर्येशम जावकानः নাঞ্ল্য ন তু বিশেষে জ্যা॰ ইতি।। অত্র বিবাহাদি কীর্ত্তা- বিবাহাদ বেপি নিষেঘাথা

কাশস্যানন্যগতিকস্য প্রতিপুদবেং **२**र्थाट সৃঠিত:। ভথাচ নলনাসাবি काञ्ज कार्र मगृश् । काल १ननऽगणि निज्याः अर्यादिम चिक्की • किया । ইতি নলনাসত্তৰু ॥ 🚁॥ জপিচ। আগুৱাৰান পুভিষ্ঠাঞ্চ বজ্ঞদান বুতা-नि ह। (पत्रु ७ वृर्या ८ मर्ग ह् जाक द्र १ म् थलाः । नाञ्चला मिल्यास्थः म-वभारम विवड्डाः ८। ইতি शाक्राङ >२৮ अव्यायः ॥ ऋ॥ अथ दनराम कर्वत्र दुषामि। हाजूदाम् तुष् मा-याणानुरह्मः थनवि इंड॰ उपशाप्तकः <u> भावभाति सलसारमा कर्खवाः आ -</u> य। जामि পুতिमिन कर्डवार ज्ञन निद्र-वकाणाट । षष्ट्रा जू सिवरेन मानः कथिए। वाम्ब्रायरेनः। इंडि छा।-তি:শান্তে পিতানহেন এক**না**সত্ত্বা-ভিধানা । यह मध्यात्रस्य यः श्र् নেক ভক্তেন ভিপ্ততি। ইত্যাদে नावानान् सिथिउ मध्यत्र दुउ मा-वकः जनमाम २िश कलवाः । क्षिधाराममानाः मञ्चनतः इंडि খ্ৰাতঃ যচ প্ৰিমান বিহিত নমা श्रुप्तानामा कृतान्त्राच - श्रि दार्च-

শ নিভ্যনেনৈৰ সিংখ্ৰ

मस्य दाना उत्र

পান কাৰ্ল্য মিভ্যাহ ভগবান্ শিব: ্র উন্মাপন পুরিষ্ঠা। বুতারস্তো প নিষিদ্ধঃ। প্রেক্তি কাশ্যপ ব ाट रेका हा कि मान वि**लय** विश् সাবিত্রীবৃতাদিকভ নাবকাশত্। ্লমাসে ন কাৰ্য্য । কিন্তু পুকৃত এব ্ন্যপ্তাদৌ কর্ত্তব্য মিতি॥ বৃহস্পতি: । निज्य रैनिनिखिक अर्यप्राय भुगजः ্ঃম্লিমুচে। তীথমান প্রছাযা। गुक्कः उरियव हा। निकास ब्रहः ্ফার বিহিত স্থান সন্ধ্যা পঞ্চ ्।वज्जामि काम्यमिन जथा विश्वः कल्लिङ यटकिक्षिष्ट्रवा मान निव নাদি। ব্যক্ত• ভবিষ্যে। স্বৰ্য্যাৎ ভ্যাহিক• কর্ম পুর**ভঃ সন্** নলি চেঃ বৈনি ক্তিক**ঞ্চ স্বর্বা ত সা**ব্জা-ः न यख्रदि ॥ काननाधनीत्य ্স্য পুরাণ । বর্ষে চাহর হ: শুজে নক পুতি নাসর । গোভু তিল হরণ্যানাং মানেপি স্যান্সলিমুচে । কাঠ গগৃহপ রিশিষ্ট । পুরুত্ত ने -ागामार भाक् वटकर्य न मगानि ^{কে।} অণেতে ন**লনাসেপি তৎস**মা 🖅 মসংশ্यः।। বুল্সিজান্তে। আ इ॰ कर्म ग्टिकिक्षिखट कार्रा हि बिह्नु ए । निविचि हैं भाम ने द वन दिवनापि विष्णय नियम भूना ॥

বশ্যকত্তব্যকাদাটিৎক নিনিভোগ भग• ॥ **३ ॥ जा** ७ क्यां स्टब्स् मन মা:স্কার্য্যণ জাতক্মান্ত্যক্ষাণিন্ব मुख्यः उरिषव ह। सवा अया अया मा कः भाषाना नि ह (याउमा। हन्तु मूर्ग) পুছে স্নান দান শু।শ্ব ক্রিখাদিক।। कार्याः जन्मनामिन निजाः निमः ভিন্ত তথা।। মৃতি:। শুজা জাতক নাবানি যেচ স ফার নাণ্রিতাঃ। ন-निम्न रह शिन कर्नाताः कामतः इक्षीः শ্চ বজ্জবিৎ।। সংকারা অন্নপুশেন निवृत्रशाहरः। ইতি नाथवाठार्गः। व्यव्यक्रमाणि दङ्ग म्ह्राहक्तान शिखताना इंशक्या ही नि । नवणा-षः । हजूर्थ भक्षात देव नवदेनकाम-**শে उथा !** यहद भीय**र अ**ल्ला उप्रव-শুদ্ধ মুচ্যতে। ইতি যদোক।। অব **চ** वृश्वाहा दि शुह्र १ भवन दि नावदी जि ॥ वानगुर ज्उगुरु नत्रःविश शुवन শত্রু দৃঃসহরোগাভিভবাদ্যুত দুঃ-**यथ**्युर्मिष्टशिम निमित्रः भाषि कर्याणि ग्वागामिण वर्खवा । वि-**ফুন: শাভি স্ব**স্তানীন দৈলোপয়াভান্ শমবেৎপরচক্রোপঘাতা শ্চ ইত্যু ক্ত । ইতি নলনাৰ চত্ত্ব ।।। नवयः পু॰ सनामश्राज्ञभवं उः। उৎ भर्गायः। वाषाः २ मक्तिभारमः

ऽ। इंडि (इम्ब्रम्यः ।। व्यत्नामिः ८ ॥ ॥ रेणवाक्•॥ रहमदिरमयः॥ ञा-ইতি ধরণিঃ ৷৷ অস্তাদশোপদ্বীপা-**ना ।। अय ভদেবস্য শতপু প্রান্তর্গত** পঞ্চসপুণ্ৰঃ। ইতি শ্ৰীভাগৰতে ৫ স্বন্ধে ৪ অধ্যায়ঃ ॥ नवयगिक्षनी जी উमामशीविष्मयः। ইতি শব্দমালা॥ নল্যজ পু ক্লী চন্দ্র-। ইত্যমর: ।। त्रारहो भूः। यथा। त्राङ् भलयकः ण्मु रेभठीन दारणाकृतः। क्षः ক্ফায়র সিংহাসন ধ্যাত্বা তথা-खरयर।। इंडि गुर्यक्छ उद्गुः॥ भवग जी विव्छा। ইভি भिषिनी।। नमयाहनः भू॰ मनयभर्वछः। ইতি मद्रवावनी ॥ भनगानिनः १ वमञ्चनानीनवागः। তৎপর্য্যায়: । বাসন্তঃ ২। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। भवायः खी भवाशः। ইতি भवातः। वनी ॥ भनायाच्छव॰ क्ली ठन्सन॰। ইতি রাজ निर्घ्षः॥ बनदिनामिनी खी भाइभूबी। ইতি यः। मनीनमः २ कहतः अननपृथि 🕾

त्राजनिर्घण्टेः॥ भनगाहनः १। इंडि भस्त्रज्ञावनी मनइडा शू॰ भानानीकनाः। इंडि त्राजनिघणः॥ রানঃ।ইতিনেদিনী।। নন্দেনবন॰। নলা জ্রী ভূন্যানলকী।ইতি শন্ধ-ठिनिका ॥ सर्गं ज बी भविष्मयः। ইতি मद्मा- भनाकवी न् रू रुफि हः। हा फि ই जि ভाষা। ইতি শদ্মালা॥ मनाका की कानिनी॥ इसिनी॥ पूर्वी । ইতি गःकिश्वनातानानि-वृङ्धिः ॥ भवाभकर्यन ही भाभरमाहन ॥ মলদুরীকরণ । ইতি কেচিৎ।। भवाभश जी नतीति। यथा। नवाপरा जीमद्रथी ह घडेगा दश **ठ क्ष्ण जनगा**गुणा छीनः। ग्ना-পহা ঘউগয়ো স্তথাপি পথ্য লয়ু স্বাদুতর• সুকান্তিদ• ৷৷ ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥ নলাবহ় ল্লী নববিধ্বপাপান্তর্গত্ত-भाभविष्णयः। यथा। कृति की है। ব্যো হত্যা মদ্যানুগত ভোজন । करेनशः अनुमाखय मरिपर्याक्ष मना-वरु•॥ ইতি मानत्व ১১ ञक्षायः ॥ भनातिः भू॰ भर्बकातः। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:॥ मिनि॰ जि मनगुक्तस्य। उट्भांत-

৪।ইতামর:।।দূষিত ।।কৃষণ।ইতি মেদিনী।। নিত্য নৈমিত্তিক ক্রিয়া जाभी। ইতি गार्काखयभूत्रापः ॥ मिन श्ली (शान । इंडि न स्टिन्तु-का॥ (मायः। ইতি (इमहन्मुः॥ हेक्स । इंडि द्राजनिर्घण्टः ॥ मिलनमूथः भू॰ जाः।। गालाक्तः । इंडि (मिनि) ॥ (भुजः । इंडि - (रुगठन्मुः ॥

মলিনমুখ: তি কুর:। খল:। ইতি (मिनिश्चिम् हन्तु म्हा। स्नानवहन महा। मिनाषु ली मभी। इंडि (इनहन्पुः॥ মলিনাস্যঃ তি খলঃ। ইভিশ্ব याना ॥

मिनी जी वजसनानाती। ३७५ यबः ॥

্মলিমুচঃ পু• মলমাসঃ।যথাতিমতি कमा जू दिव यंना गरहर कथकन। चारिता मिल्रम् हारद्धारा विजीयः পুক্ত: মৃত:।। यहा ত॰ দর্শান্ত মা-স মতিক্রন্য তৎ পূর মাসান্ত্য ক্ষ ণবৃত্তি রাশিস্থ: সন্ স্র্য্যে ২তি ৰাহ্য গছেৎ নাসান্তরে রাশ্যন্তর अ'रयाग' गहिए उमा जारहा **২**তিকার্ত্যাসো মলিনুচো জেশঃ মদী-অন শ্লোচতি গছতীতি মলি अ ६३। विडीयस शुक्तः भूषः क- ।। सहाकः शु प्रसः। ইতি (इमहम्मुः।।

र्यार्श्वा८। ইতি मलमामञ्जुः ॥ व्याः ॥ होतः। इंडि समिनी ॥ वायुः। ইতি শহনালা॥ भिनिष्ठा जी त्रक्यनानाती । इंडि ত্রিকাওশেব:॥ मनीमन क्री लोइ।। नूब्रकानीनः । इंडि (मिरिनी।। মলীমসঃ ত্রি মলিন:। ইত্যমর:।। भन्कः भु क्भिविष्मयः। इक्रुगाहि-(कावः।।

মল্ল ড খ্ভৌ। ইতি কবিকল্লজম:।। ড মল্লতে। ইতি দুর্গাদাস:।। मलः श्रु वाल्याधी। माल इंडि ভাষা। ইত্যমরভরতৌ ॥ স চ বাত্যক্তিয়াৎ স্বর্ণায়া কাত: ৷ ইতিমানবে ১০ অধ্যাশ: ৷৷ পাত্ৰ• ॥ कलालः ॥ मू मुख्यः ॥ व লীযান্। ইতি মেদিনী।। বর্ণসন্ধর কাতিবিশেষ:। সালা ইতি ভাষা । म ह (निर्देश की बद्र कन्याया • जा-ত:। ইতি বুদ্ধবৈবর্ত্রপুরাণ।। তন্ত্র-বাग্যা॰ স্বন্দকারাজ্ঞাত:। ইতি পরাসরপদ্ধতিঃ 🛭 দেশবিশেষঃ 🗜 यथा । मन्मार्गा नवताष्ट्रेक मह्नाः শাল্লা যুগন্ধরা:। ইতি বিরাটপর্ব-ी > व्यथ्रायः ॥

মল্লকঃ পু॰ জ্ঞী দীপাধারঃ॥ নারি কেলফগাব্যবদ্ধপাত্রবিশেষঃ। না লা ইতি ভাষা॥ জ্ঞিযা॰ নাল্লকা। ইত্যনর ভরতৌ॥ পুদীপঃ। ইতি নথুরেশঃ॥

मझ क की मजिष्ट । इंडि करें। ध्रः ॥ मझ क्रिंड की वाह्यविष्मवः । उट् श्रायः। महाश्वनः २। इंडि बिका अष्मवः ॥

मलनागः श्रु वार्म्यायनमूनिः॥

व्यञ्जाउद्यः। ইতি भिष्तञ्जावली॥ का

शहातः। ইতি भष्तञ्जावली॥ का

मणाञ्जविद्यायः। ইতি ध्रुतिः॥

मलाङ् जी मलाङ्गिः। ইতি क्रिनेथ्रः

मलाङ् जी मलाङ्गिः। ইতি क्रिनेथ्रः

मलाङ् जी मलाङ्गिः। ইতি क्रिनेथ्रः

सलाङ्गिः जी मलाङ्गिः र त्रम्रङ्गिः ०

त्राप्रः। यक्षवारेः र त्रम्ङ्गिः ०

त्राप्रः। यक्षवारेः र त्रम्ङ्गिः ०

त्राप्रः। यक्षवारेः र त्रम्ङ्गिः ०

त्राप्रः। यक्षवारेः । ইতি करो
ध्रः॥ दिस्विद्यायम्ह ॥

সল্লবাত্রী সল্লানা যুদ্ধার্থ বাত্রা। ভৎপর্য্যায়: 1 সাল্লবী ২ । ইতি হারাবলী॥

मह्मगृष्यः क्री मह्मानाः मः गुम्मः। एए शर्यप्रायः । नियुष्यः २ वाङ्गुष्यः ० । इंडि मद्मब्रावनी ॥ उर्भुकाता यथा। अथ मृद्यन उर्भह्नः त्याप यामाम न्यम्प्रतादे । हाम्यमान

ख्टा जीमा मृध्यरेनवाक्रतास्यज्ञि ॥ নহি শক্ষোতি বি্ত॰ প্রত্যাখ্যা-তু নরাধিপা। ততঃ স পুরুষব্র-युः भाप् न भिथिन भवन् ॥ भूवि-বেশ নহারক্ষণ বিরাট মভিপুজ-यन् ।। ववन्न कन्ना॰ कोल्डिय छङ: স হর্ষন্ জনান্।। তত ত বৃত্র স कामः जीता मझः मनाख्यः। জীমূতণ নাম তণ মল্লণ তত্ত্ৰ পুথ্যাই বিক্রন ।। তাবুভৌ সুমহোৎ সাহা ব্ভৌ তীবুপরাজমৌ। মন্তাবিব ম-शकारी वाद्याने यश्चिश्यकी॥ इंड खो नद्रभाम् (लो वाङ्युष्क मभीवेजूः । वीद्रो शद्रम मः कृष्टा वत्नामा क्य-काष्ट्रानी ॥ जात्रीय मुखीयः माना তে। বছু পর্বতযো রিব। ১০। উভৌ পরন সাহটো বলেনাতিবলা ঠুভৌ ॥ অন্যোন্য মন্তর প্রেপ্সু পরস্পর करियविरनी। উट्डो भव्रम मे श्रृष्टी म ভাবিৰ মহাগড়ৌ ॥ কৃত পুতিকৃতৈ **क्टिंब बील्डिक नक्हरिः। ১১**। সলিপাভাবধুভৈশ্চ প্রমাথোম্মথনৈ ন্তথা।। ক্ষেপণৈ মু স্টিভিন্টেব বর। হোদ্ধৃ ভূমিস্বনৈঃ। ভলৈ ব্ৰুমিপা তৈক্ষ শুসৃষ্টাভি জীপুৰ না। শলাকা नथभारे उक्त भारताक्त्रिक का मार्क्टन । জানু 📞 শ্চাশ্মনির্ঘোষে: শিরোভি-

े **न्हा**वष्ठेरिनः ॥ **उम्ब ग**ञ्बस्यात भणकः वाङ्ख्बमा। वन भारान শ্রাণা সমাজোৎসব সমিধৌ ॥ সরজ্যত জনঃ সর্বঃ সোৎকুই নিন ্দাপিডঃ। বলিনো: সংযুগে রাজন্ वृज्वात्रवरम द्विव ॥ भुक्ष्माक्ष्म शा ब्रज्याकर्य विकयं तिः। जाकर्य তা মথান্যোন্য কানুভি শ্চাভিজ্ম ফুঃ বিখা ততঃ শব্দেন নহতা ভত্ন यस्त्रो नेत्रम्भतः। वृह्णातस्त्रो नीर्घकुः (ढो नियक जणना वूट्डो ॥ वाङ्डिः । সন্সজ্জেতা নায়সৈঃ পরিধৈ রিব। চকর্ষ দোর্ভ্যা মূৎপাট্য ভীমে। মল্ল-মমিত্রহা ।। বিনদন্ত মভিক্রোশন্ , **লা**দূলি ইব বারণ । তমুদ্যম্য ম**হা** वाइ ज़ूर्भियामाम वीय/वान्॥ उटा মল্লাশ্চ ম্থ্যাশ্চ বিষ্যুত্ত চক্রিরে-পর•। ভাুম্বিত্বা শতগুণ• গতসম্ভুম্ চেতন ।। পুত্যপি বন্মহাবাহু মল ভুবি বৃকোদর:। ১৩। তিমান্ বিনি-হতে মল্লে জীম্তে লোকবিশুতে॥ বিরাটঃ পরম• হর্ষ মগছদ্বান্ধবৈঃ স ए। म र्याष्युमानी दिखः वल्बाका মহামনা:।। ইতি বিরাটপর্বাণ ১২ व्यक्तायः।। #।। এवाः भिन्न यथा। मूललान इल्कारन त्राकाच्छा वहन ह ন্দু জেন। বিবৃত্ত লোক সম্ভন্দা

मून निथिनः निः इदेव ब्राय्देव वा भिथिनः मावछः । म्यादः मि॰एह-शिष्ठ भार्त्व इंडि क्रम्बार । क काः कहः। मन्ना जः मःघरः। २०। जक्करिः कद् हैः कद्रवर्षनुकः किनः কডা ইতি পুসিদ্ধ। কৃতপুতিকৃতৈ: পরপুযুক্তি পুতিকৃতৈ:। চিত্রৈ বিচি-ৈৰে ৰ স্থৈ রিভিশেষ: । ১১। সন্মি পাতেত্যাদি এতে মল্লানা শিক্ষা বিশেষাঃ। সন্ধিপাতিঃ পরস্পর সং-ঘাতৈ রবধুতৈ ব্দ্দুষ্ঠিভুলাঘাতৈঃ **পু**नारिषः भाउयिदा (भवरिषः । উ-मर्थतः जन्नीकः जुकाजाः मर् तिः। (कशरीः ज्ञानारः भुह्यावरिनः। বন্ধাক্ষলিকরো মৃষ্টি:৷ অবাছু খ স্ক-क्षगञ जामियदा जरेशव यः। कि-গুস্য শবঃ স ভবেছরাহোজ্তনি-चनः ॥ ७र्জनाक्षुष्ठ मध्यान भुभाविज करता हि यः। नः शुहात खलाश्रञ्ज भःगुरहा बहु भिष्ठ ।। अर्काष्ट्रमु जुन। मझगृष्टि रेख् मिठार्थः। भुम् তাঙ্গুলি হস্তেন পুসৃষ্টি: পুভৃতি: मृजा। हिन्धीकृठ वाट् यं उदीयाः থ । যথা বল ।। পুহার: সশলাক। স্বাৎ পাদোজু ইঃ প্রাহত । জা-नुष्टि कान्य निर्धारयः शायानताय चतृषा ध्विভिः क्त्रेशियान्यवय्येनानि रिछ:। वस शारान रासार कर्यन ।

रागर कुछ निनमा थिडः उर का सन निनमा थान महिछः। शुक्र में

गः वाह मः मूथानयनः शुक्छे। क्य नं

छानवाकर्यन भीषर मग्रुथानयनः ।

खान्नाकर्यः ममछ छः कर्यनः । विक्

र्याः श्रम्हार उर्धामणं छम्म थिङः

रात श्री छ। १२। मा छ छनः माछः

वातः। १०। इन्डा क्रिम मुक् छ छ।

द वार्थनी शिका ॥

मला जी नाती॥ পणवली॥ मिल का। इंडि मेप्त्र श्वावनी॥

मल्लातः श् त्रागितित्मयः। मञ् य
ग्रा॰ त्रागानाः मत्य प्रिजीयः। यथा
। जारो मालय त्रारानम् खरठा म

ज्ञात मः छि छः। ज्ञीत्राग छम् । भः

गारिष तमस सम्बद्धाः। शिल्लालः

गारिष तमस सम्बद्धाः। शिल्लालः

गारिष तमस सम्बद्धाः। श्रिके विः

छाः। जम् । यहेत्रागित्या यथा

त्वावली भृत्रती ह कानए। मान्ति।

छथा। काए। किरादिक। हिन म
ल्लातम भूता हमाः॥ जम् गान

मञ्जादमा अस्ति।। जम् त्रानम्

वर्षाम् मर्वमा। जम् त्रक्षाः थथा।

मञ्जादमा अस्ति।। जम्म त्रक्षाः भूल

यक्षः स्नूरम् जूर्वः। कोभीनवा

সং ক্রিন্তির । ক্রিন্তিরাগঃ শুর্চি শান্তমূর্ত্তিঃ।। ইতি সংগীতদা-মোদরঃ।।

मल्लाती जी वमलतागमात्राणिनी।
यथा। जात्म्लानिका ह प्रभाशाः।
त्नाना भुथममञ्जती। मल्लाती हिकित्राणिता वमलमा मनानृगाः॥
हेि मक्षीक्तातामतः॥ स्वताः
गमात्राणिनी। हेिक हनायुद्धः॥
मिल्लाः भू हिक्दिंगिकित्लाईकाः मत्था जैनिविग्लिकाः। हेिक हमहम्मुः॥

मिल्लाः जी मिल्ला। ইতি শবর জ্ञा-

মল্লিক: পু॰ মিনিনচঞ্চরণযুক্তহণসঃ
। মলিনৈ: কিঞ্চিজ্সরবর্ণে রালোছিতৈ শঞ্চরণৈ কপলক্ষিতঃ শুক্রহণসঃ । ইত্যমরভরতৌ ॥ নৃণাণ্
উপাধিবিশেষক ॥

মল্লিকা জী স্বনামখ্যাতপুষ্লবৃদ্ধং।
বেলফুল ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায:। ত্রশন্তঃ ২ ভূপদী ৩ শতভীকঃ ৪। ইত্যমরঃ ॥ ত্রশন্তা ৫
শীতভীকঃ ৬। ইতি ভরতঃ ॥ ভদুবল্লী ৭ গোরী ৮বনতন্দ্রি ক্রিকার
১০ ব্রোগ্রামি নাম্যান্তির জার

न (माहिनी कि । जारा स्थान कर्ष विद्या के क्ष् कि विष तुन नामिष्य हिंठ बाजनिष्ट ।। कक नामिष् । हें जि बाजनिष्ट ।। केक्ष् । नयुष । व्याप । वाड मिखाम म्याधाकि नामिष्य । हें जिल्ला स्थाधाकि नामिष्य ।

হোপরি তথা মুষ্টো স্থান চন্দুন নি পুভ । পঞ্চল্মা ভবজ্ঞাতী শশা ক্ষকিরণোজ্ঞ্লা। উদ্ধৃ নুষ্ট্যা অধ্য কোট্যাঃ স্থান বিজন ভ্বিত । তন্মান্বতপুটা নল্লী সংজাতা বিবিধা ধানুনে ।। ইতি বামনপুরাণে ৬ সং ধ্যায়ঃ ।। *।। নৎস্যবিশেষঃ ।। মৃৎপাত্রভেদঃ । ইতি মেনিনী ।। পানপাত্র । ইতি হেস্চন্দুঃ ।।

मिल्लाथाः पुः मिल्लिक्ट्रियाक्त हः मः । इन्नायक्ति । एन मिल्ला हः मा मिलिनः किक्षिक्ष्म मत्यत्ते ती-व्लाहिन हिक्क् हत्र तिल्लिक् नामिला-काथा मिलिक नामानः । मन मल्ला ह व्योगान्तः नामीनि हेकः। किल्ला-का हेन्द्र । मृल्लाक्ष द्वामिल्लिका-पृद्र निय व्यक्ति तियाः एन मिल्लिका-कुत्र निय व्यक्ति तियाः एन मिल्लिका-का हेन्द्र सामी। हेन्डि चत्र नः ॥ मिल्लिकाथाः खी जिन्द्र मानी भूद्र । ।

ন্দ্রিকাশসং পু• স্বটজবৃক্ষ। ইতি রাজনিঘটঃ॥ কক্শবৃক্ষঃ। কক্শা-লেবু ইড়ি ভাষা। ইতি হেন্চন্দুঃ ॥ अनामथाङमुझर्कण ॥
म लिकाकः भ् मलिन छ्यू छ द्व १ यूकः
र भ : । इंडि एक म पुः ॥ मूल्वर्व विश्वेष्ठ हक्ष्म यूक रुषः । इंडि र कायूषः॥

মলিগন্ধি শ্লী অগুক।ইতি শব-চন্দ্রিকা।।

মল্লিগণ্ড ক্লী ছ্তাক:।ইভিত্তিকাপ্ত-শেষ:॥

মল্লী জ্ঞী নল্লিকা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ
শব্দরত্বাবলী চ ॥

মল্লীকর: ত্রি চৌর:। ইতি শব্দ রত্নাবলী।।

मह्यः पृ॰ ভाल्कः। ইতি শব-চন্দ্রকা।।

भव नरह। इंडि कविक च्रक्षमः॥ नरहावन्तनः। भविड होतः लाकः। इंडि पूर्णापामः॥

নবিতঃ ত্রি বন্ধ:। ইত্যমরটীকাখাণ স্বামী॥

भवऽ वस्त्र । ইতি কবিকল্পজনः ॥
भवऽতি চৌর• রাজা। यद्यरास्त्राश्य
भिত्यात्क । ইতি দুর্গাদাসঃ ॥

মশ ধ্নী ।। কোপে । ইতি কবি কল্পছন: ।। মশতি মশক: । ইতি দুর্গাদাস: ।।

मणकः शू॰ की हे विष्णयः। नणा इंडि ||

ভाষা। उर्भर्गायः। वकुक्छः শ্চ্যাস্য: ৩ শূক্ষনক্ষিক: ৪ রাজি-जागतमः ৫। ইভি রাজনির্ঘণীः তমাশকধূপো যথা। ত্রিফলাভু 📲 পুস্লাণি ভল্লাতক শিরীযক। লা-का मर्जन्न गरेक्टर विष्ठ 🏋 🖘 बुः॥ बरें ७ स्थिककानाः **मकानाः विनामनः। इं** जि शाक्र **১৮) वश्यायः ॥ हर्या छन्:। ऋ**खः नानश्या उ वर्यनिर्या उत्तर्शित 🕬 ত্রণারোগবিশেষঃ।মশা ইতি হি ন্দী আঁচিল ইতি বঙ্গভাষা। ই न्यत्रवावनी।। #।। गनक्रतात्रभा इ । व्यवननः श्रित्रत्थिनः यखु गाः भुम्मारक । भाषवर कृष्य मूर्माः মলিন মশক দিশেৎ।। ছিরু অচল ।। ভাস্য চিকিৎসা যথা। চর্মাকীল জতুমণি মশকা ভিল কালকান্। উৎকৃত্য শস্ত্রেণ দ হেৎ ক্ষারাগ্রিভ্যা মশেষত: 🔃 ইতি ভাবপুকা**শঃ।। অপিচ। লশু**-নানান্ত চুণস্য ঘর্ষো সম্পক নাশনঃ इं ि गाक्र ५१६ वर्षायः॥ मनकी पु॰ উদুদ্ধর वृक्षः। ইতি হেম-हन्मः ॥ मणवती जी मणकनियातकपुरस्तरः

विलयः। गणाती इंडि जावा। उद

भर्यायः। हजुद्दी २। ইতি करीयदः॥ ंागुनः श्रृ अक्रुतः। ইতি मस्माना॥ ্ৰষ্ বধে। ইতি কবিকল্লছমঃ।। मयनि। इंजि मूर्गामामः ॥ निविक्ली की) नम्यापातः। इंडि ্লিষিধান ক্লী 🕽 হেনচন্দু:॥ ्वीलयारकः मु श्रीजानवृकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। भ्^रिनेत य के भित्रमाला। भित्रिगा-মে। ইতি কবিকল্লছম: ॥ ইর অ-ঁমসৎ অনাসীৎ অনসীৎ। অশ্বাৎ भूवानिदामिकाः ड इकारना । य মস্যতি ধান্য গৃহী। পরিমাতী-ত্যর্থঃ। ই মস্তঃ। পরিমাণ কস্য চিদনুরোধাৎ। ইভি দুর্গাদাস:॥ ল্মন ল্লী সোনরাজীবৃক্ষ: ৷ ইতি मदहिनुका ॥ अन्तर। जी मन्तः। इंडि कंटि। ध्रः॥ ात्रातः । शुः हेन्द्रनीवनशिः । इंडि मनातकः) नदत्रवादनी ॥ विभिः जी भू॰ निभिभुरगाजना। लिथनपुरा । ইত্যমরটীকাষা ভ तुः ॥ **७८ भ**र्यप्रयः । निम्नलः २ পানাজন ৩। ইতি রিকাওশেষঃ । भिना ९ कानी ६ अक्षम ५ अती। हेटि मकत्रवावनी ॥ तक मी है। है जिसानी । बिलनापू रू

নশী ১০। ইডি ছেনচন্দুঃ।। শেকা-লিকাবৃত্ত । ইতি ৰুদু: শব্দরত্না-वनी ह॥ मिका भी भिकालिका। इंडि अप-त्रज्ञावली ॥ मिलका इंडि गुरु। छ। द भाठेः ॥ मित्रधान क्ली मन्।। धात्रः। इंडि नयः ब्रङ्गावनी ॥ यित्रधानी जी यम्प्रधातः। (कार्याञ ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। মসি-मिनिः २ (मलाक्तुः ७ वर्गक्निका 8 মেলানন্দা৫মেলাম্ব ৬ মসিধান প । ইতি শদর রাবলী।। মসিকুপী ৮ । ইতি ছেনচন্দুঃ।। মসিকুপিকা ১ । ইতি জটাবরঃ ॥ মদিন ল্লী সপিগুক। ইভূগাদি-(कायः ॥ মসিপণ্য: পু॰ লেখক:। ইতি ত্রি-কাওশেব:।। মসিপুসুঃ खी गम्। वातः । इंडि श्वावनी।।य ी देखिकहिर्।। मिमिनिः खी मयाप्राधावः। इति नद्रशावनी ॥ নসিবজন লী রসগদ্ধঃ। ইতি দ্রি-का अल्बिशा भनी की काली॥ (मकालिकाव्छः । इंजि मदत्रज्ञावली॥

भनी इतः क्री भनी। काली। इति विकाल्यामयः॥

মসীধানী স্ত্রী মস্যাধার:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

নসীনা জ্রী স্বনামথ্যাতশস্য । যথা । মসীনা চাতসী চিহ্না ক্ষুনোনা-মালিকানিতা। ইতিশব্চন্দুকায়

ममूतः भू ममूत्रक्वायः। ইতি ত্রি কাণ্ডশেষः॥

भन्ता जी विभागात्रीहिभुरा । इंडिसिनिगा

भन्तः भू जी विश्जिमः। भन्ती-कनाई इंजि जाया। उৎপर्यप्रायः। **भक्षनार्कः २। इज्यामदः ॥ भन्रदाः ७** ব্ৰীহিকাঞ্চনঃ ৪। ইতি ত্ৰিকাণ্ডশে-ষঃ।। নস্রা ৫ নসুরা ৬ । ইতি भिति ।। तागरानिः १ मक्नाः ५ প্থুবীজক: ১ শ্র: ১০ কল্যাণবী-कः ১১ ७ छवी कः ১२ ममृतकः ১०। इं इ दाजनिवंधः ॥ सक्ना ३८ ममूत्रका :৫। इंडि ভावनुकामः॥ অস্য গুণাঃ। মধুরত্ব॰। শীতত্ব॰। সংগাহিত্ব। কফ পিত্র নাশিত্ব। বাভান্বকরজ । ন্তক্ ছুহরজ । वय्द्रकः। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥ অসু रवद्भा करूद्भा खुतना निद्धा ইতি ভাবপুক।**শ**া। তম্য যুৰত্যাঃ 🛚 । সংগাহিত্ব । স্বাদুপাকিত্ব । পু-নেহ পিত্ত শ্লেম জ্বাতীসার না-শিত্বক । ইতি রাজনিঘণ্টঃ ।।

নস্রক: পৃ• উপবর্হবিশেষ:।গোল বালিশ ইতি ভাষা।তৎপর্য্যায: । চতুর:২চাত্র: ৩ অঙ্গেট: ৪ ৪-ক্রগণ্ডু:৫। ইতি শক্ষরত্বিদী ::

ममूत्रविष्ते स्था क्रिक्ट । ३७५ मतः॥ महान्यकः। ३७६५ / १६ ममूत्रा खी (१५९)॥ ए तर्जन्य । ३७ (निष्नी ।।

भगृतिका खी वजनी। ३० अपन भावा।। यमग्रदागः। ७८ मर्यायः। পাপরোগঃ ২ রক্তবটী ৩ মসূরী ৪ । इंडि भदत्रावनी ॥ जथ मम्-রিকাবিকার: ৷ তত্র নসূরিকা বিপু क्षे निमान भृति गा माभाधि गा र। करेन वन कात विककानामा नामरिनः। पूर्व निद्याय माकारिन्तः भूरूकेभवत्नामरेकः । कुक्कपुरस्कः **गाहा ति (नत्म** (नःयो) अपृष्ट्राठाः । खनविष्ठ महीरत श्विन् १६७ छन **সদ্ভাঃ॥ ম**স্রাভৃতি সংস্থানাঃ পিডকাঃ সুগু মনু কিলং। ভাবে। यनकातः। विक्षाकार्यामण्डेनः। कद्वापि विक्षासम्बद्धाः । अन थ्य अपुरुषनालनः अविकृत्भानः

व्यवानना पूर्वनिद्वाव नाकारेनाः पूरे र्विद्वाव णाक गार्ड णकामधानुका-मि रेजः। भुमूष्ठेभवत्मामरेकः भविष स्र्नारि मःमर्गा८। क्ष्रगुर्ह क शहानि दिल (मा कृष्णुश वाल भौनण्डापय (खवामीक्रवापृष्टे: य-जि.माम क्ष गुरु मृष्टि खडाशि म-্র্দিশংপনি বিত্যর্থ:। মস্বাক্ তি শংসানা মস্রস্য যা আকৃতি उप्टेम्स माक्छि यामा॰ जीः 🗆 🦚 🔡 অথ পূৰ্বকপমাহ । তাসা॰ পূর্ণ জ্ব: কণ্ডু গাত্রভক্ষো ২রতি **भू नः। इ** ि भाकः मरेववर्गा तब द्राग उरेप्द ह ॥ 🗱 ॥ वाज्जामार । स्मिटीः क्काक्गा क्षा खीतुरव्यम यानिजाः। कठिना निष्त्रभाकान्त छः वष्ठानिन गद्धवाः ॥ 🗱 ॥ रेभिन्तिका माह्। यस् वि अर्थकाः (छमः कात्रः কশো হরতি ভূনঃ। শোৰ ভালে।-🌣 जिखाना॰ ज्या हाकहि म॰युउ।॥ ্যক্ত পীতাসিতাঃ য়েটোঃ সদাহা छो व (वषनाः। भृषद किव्रशाकाकः পিত্রকাপ সমুক্তবাং !! গা বক্ত-कानारः विद्वर का असम्बन्ध गर छः া।মুখপাকা হক্ষিপা-में शक्त किक वृद्ध को तुः मुक्त विशः ॥ त्रकता-रा जना उ विकासः शिख मध्य-

गाः ॥ 🛊 ॥ यथ क्कबामारः । (यठाः तिका ज्म श्वाः क्ज्रा मनस्तर-নাঃ। মস্রিকা: কফোন্ড্তা শিচর-পাকা: পুকীর্ত্তিতা:॥#॥ সামিপা-जिकीमार । नीना किलिए विखीना मत्था निमा महाक्षः। পৃতিসাবা শ্চির পাকাঃ পুভূতাঃ সর্বদোষজাঃ ।। 🗱।। সপ্তধাত্গতানাহ। মস্রি-का खुष्ट॰ भाखा खाग वृष्क मिनाः । यन्नामाः भूजायस्य जिमा स्थायः अविष है।। वृहः भाष्ठाः वृह्दिनाक वन डेठाउ वनामुग्दार ॥ 🗱॥ वक्रामार। वक्रा लाहिजाका-बाः भौधुभाका उनुष्ठः। नार्शाना-**उ**र्थ पृष्टी स विद्या तक जुविष्ठ है। माध्या बेक्डा इंडार्थः। नाडार्थ पू-है। इ अडार्थ महे (मानिजाः भून न-'माध्राः किन्ने केष्टे माव्राः ॥ 🗱 ॥ भा नहानाह। मा नहाः कठिनाः सिका चित्रभाका खनुष्ठः । गाव भून निभाव अम्हा मार ज्यानिजाः ॥ 🗱 । भित्रहामार । (महत्तका मुख-नाकोत्री गृप्तः किष्णिपूर्यजाः। शाद बुत शर्ती ठीक इनाः त्रिकाः नत्र-मनाः ॥ मन्याहात्रिक मञ्जाभाः क-किराज्या विनिखरत्य। अ॥ विक् मकागाउना ह। कूमा गाव मन। कः

কা শিচপিটা: কিঞ্চিদ্যতা: । মক্জ-ন্ত। ভূশসমোহ বেদনারতি সংযু তাঃ৷ ভুনরেণেব বিদ্ধানি স্বর্ধন্ত্যন্থী नि मर्बठः। ছिन्द् छि नयं यामानि लाः ণানাশ হরন্তি তাঃ। গাত্রসমাঃ গাত্র ज्वा वर्गाः। हिलिहाः हिलिहा का রা:। মজ্জাগৃহণেনাস্থোপি গৃহণ ত भाषातदार। यञ्चतारम् जुनातरा ব বিদ্ধানি স্ব ৰ্বন্ত্যস্থীনি সৰ্বত ইভি। मर्परानानि मर्चञ्चानानि ॥ 🛊 ॥ भुक গভামাহ। পক্ষাভাঃ পিড চাঃ স্থি षाः भूका का जार्थ (वषनाः । रेखिन-ত্যারতি সম্মোহ দাহোমাদ সম-বিতা: ॥ শুক্রগায়া মস্ঠ্যাস্ত লক্ষণা-নি ভবন্তি হি। নিদ্দিষ্ট কেবল । ह्र बोर्वन्छ न म्मार्छ ॥ शकाजाः পক্ষাকারা: ন তু পক্ষা: । শুক্রা: (कामला:। निष्टि है क्वल हिइ ন্তুল্যা শ্চিকিৎসা যুক্তা যতো জীব-ন ন দৃশ্যতে। সপ্তাপ্যেতা দোৰছে-कु विना न खविछ । द्वावमञ्दर्भ রসাদি দৃষ্টে রভাবাদিত্যত আূহ। क्तिय भिन्तास मुख्या मुद्रेवता काय नक्तिः। अन्य ज्ञामार्। क्थेत्। ধাৰতী তত্ত্বা পুলাপারতি সংযতাঃ । मांग्रिटिशाः मग्रिक्षाः भिएक। क्य मः ब्रिजाः। 🗱।। द्वामाञ्चिताः॥

মাহ ! রোমক্পো**ন্নতি সনা রা**রি∹ ণ্য: কফ পিত্তন্তা:। কাসারোচক সংযুক্তা রোমাঞ্চ জ্ব পূর্বিকাঃ।। नायाः भार। दगाडा तकगरिकत পিওজা: শ্লেমুক্তা তথা।শ্লেমু পি⇔ क् ठारेकर मुश्रमाध्या मम्तिकाः । इमा विनाणि कियया शुणामा हिण রীরিণাণ। ত্তমতা রসগতাঃ 🕬 🗥 करेगाधाज्याः शाह। वाजका वाङ পিৰোপা বাত শ্লেম কৃতাশুবাঃ কষ্টসাধ্যতমা স্তান্ত মত্নাদেতা উপা हात्र ।। 🚓 ।। जमाधाः भारा । य সাধ্যাঃ সন্ধিপাভোত্থা স্তাসা• ব क्रांभि नक्रा भ्रां म प्रां अ-न्दिः कान्डिड्स्यूक्ताशयाः। त्वा र्जाल मभाः कान्तिप्रजमीकल म मि जाः ॥ जामाः वस्विषा वर्ग काय . 🔞 (हार्व (७९७:। भूवान अनुमाः हेडारि। यागा भूगव लपुक्य लाइ छिकाङनीकव नामृन्धः वः र्लन। अनुक वर्ष अभ्युहार्थ बाह । व्यामा॰ वङ्विधा वर्गा इंन्डि ॥ 🕸 ॥ অপরা ক্ষান্ত্যঃ পুষ্টা কামে रिक्वा शुमार के बज रहे । मुनाय-**९३। পুলাপ** इंडिस्डा 4251 E. হোতি ঘূৰ্ণভাগ দাওজ্যনে দৌৰ্গ**ন্ধ্য** देखिकशाठेसानू (अन व्यातम् त**ंडशा**

ालन हक्षा। करी घर्त दक क्षा श्वनि उऽउऽर्थ मास्तरः ॥ गम्बिका जि ভূতস্য য**ৈস্**ভানি ভিষণুর:। লক্ষ ণানীহ দৃ**শ্য**ন্তে ন দদ্যান্তত্ৰ ভেষত্ৰ• ॥ 🗱 ॥ समृति हायति है सार । सम् রিকাভিভ্তোয়ে ভূশ যুগেন নি বংশং। স ভূপ ভাৰতি পাণান্ ङ्कार्डा वागू म्यिङः ॥ वागू म्यिजः অপভানকাদি বাভগাৰি দ্বিতঃ ॥ 🗱 ॥ मम्ब्रिका 🔫 👅 🏲 🖛 । णायिः শেষমাহ।মস্তিলত গোথ: স্যাৎ কৃপরে মণিব্রাজ তেওথা সফলকে वालि पूष्किकिटमः भूताकनः॥ पृ শ্চিকিৎসং কটস ধ্যা দুংশব্দে হত্ত নিবেধে তেনাসাধ্য ইত্যেকে। কা ি ছিনাপি েন্দ্ৰন সিধ্যম্ভ্যাপু মস্-विकाः। एक्षाः द्वज्ञाः कान्तिर कान्तिर जिथाङ तानवा।।कान्तिः ब 🛪 मिश्राि नाश्रमानाः भुराष्ट्र उः । * *। व्याम्त्रिकागा कि किर ना । মস্রিকাষা জংগাক্তা লেপনাদি ক্রিয়া হিডাং পিত্ত শেষ্য বিসর্গোক্ত কিয়া চাত্ৰ পূপত 🦠 খেত চন্দ্ৰন ाइ हि िमाला े जिन मुव । शि ाधमद्भिः । अधित्य दो (कवण॰ त में ।। दिन्दा हिन्दा नाकिदानवः। धूबर्ब है उत्पान्त मान्यून्

রারা চ ধাত্রগারি দ্রালভা। সা **নৃত॰ ধান্যক• মৃত•** জযেদ্বাত মস্ রিকা॰॥ মঞ্জিষ্ঠা বহুপাৎ প্লক্ষ শি-बीरवाज्यत जुष्टः। वाजनायाः मञ् র্য্যাণ স্যাৎ পুলেপ: সমূতো হিতঃ ॥ वस्थाविः। ७ ज्ती भव्कः मुक्का भात्रहे॰ माजिरेयः मह। भाककात्म পুরাতব্য ভেবল গুড় সংযুক্ত।। তেন **স**ৰ্য্যান্ততো বাযু• পাক• যান্তি মস্রিকাঃ। মস্রিকস্ত ভূঞীত শা-नीन् मुद्रान् अमृद्रिकान्।। द्रमः अधु-র মেবাদ্যাৎ দৈদ্ধবঞ্চাল্ল মাত্রক• পটোলম্ল স্থিত মোরট স্রস ख्या ॥ भाषानम्न कृषि अभिजात পটোল ক্ষিতকৈবেতি বা পাঠ:। चाराविव भग्र्गांड शिख्डायाः भु-যোজ্যেৎ। নিম্ব পর্প টকঃ পাঠা প-**छि। न न्हन्सन घर ।। उमीतः कर्ट्का** ধাত্রী তথা বাসা দুরালভা। এবা॰ পান শৃত শীত মুত্তমণ শর্করারি **७** ॥ भन्वंग्रा शिडजायाञ्च श्राम-ক্তব্য° বিজ্ঞানতা। দাংহ জ্বরে বিস-পে চ বুণে পিত্তাখিকেপি চ ।৷ মৃস্-र्य्या ब्रक्टना नामः याखि मानिङ भाकरेगः॥ 🗱 ॥ वात्रा मृउक् कृषिक बिकत्वन्यु गवामः ॥ शासिका विष्ट **कः** वात्रि द्वाथि। द्वा महाक्किकः। वि-

বেন্তেন পুশাম্যন্তি মস্ব্যঃ কফ সম্ভ वाः। इन्द्रः इन्द्र्यवः॥क्शा भित्रीरयाः **प्यत च्याः थितातिष्ठेटेन न रेनः।** करकात्याम् मम्त्रीषु (नभः भिर्खा-থিতাসু চ ৷৷#৷৷ নিম্ব পর্পটকঃ পা-े शे भिर्तालः कर्वे (दाहिनी । हन्म् न দ্বে উশীরঞ্চ ধাত্রী বাসা দুরালভা ॥ **এব নিখাদিক: द्वाथ: পীত: सर्कत्र**-্যান্বিত: ৷ নস্রী• সর্বজা• হস্তি জ্বর-বীসর্প সংযুক্তা॰ ॥ 🗱 ॥ উল্থিতা পু বিশেলাচ তা॰ পুন র্বাহ্যতো নযেৎ। काक्नात खुठः द्वार्थ खाना ह्नावह् र्गिजः॥ जानाः मृत्नमाक्किकः। धा-ত্রীফলং স নধুক ক্থিত মধুসংযুত্ত ়া মুখে কঠেবুণে জাতে গণ্ডুষার্থণ পু-भन्राउ॥ ॥ याकाः (मकः शुनः अञ्चि गरवस् मधूकाचूना। गरवस् र्गरवः , ধুকা। গবডুবা ইতি লোকে। মধুক , विकन। भूदी नादी वक् नीममूटन न।। উপীর লোধু মঞ্জিষ্ঠা পুলেপা **শ্চোতনে হিতাঃ।নশ্যন্ত্যনেন দ্গ্না**-তা নস্থ্যো ন ভবন্তি চ।। প্রলেপ চ-क्या परिशाहल्यातम् वद्गीलः। भ क वन्न हूर्णन क्लिनि भवध्नरय ।। ভশনা কেচিদিছন্তি কেচিদ্যোম্বরে-পুনা। সুষবী প্র নির্যাস হরিদা চূর্ণ नि यूष ॥ (ब्रायकक्त म यूक दुवा ॥

नाः नाष्ट्रायं भिर्द्यः। निर्यामः पुन् া৷ ## ৷৷ অপ নস্বিকা ভেদস্য শী-**उनाया यधिकातः। छत्र भी उनाया** क्रमार। (प्रया भी उत्तरी काला मे-म्यात हि भीउना ॥ जुत्र अव उपा ভ্তাধিষ্ঠিতে। বিষম জ্বঃ। সাচ সপ্তবিধা খ্যাভাত শেল ভৈদান স্তু-**ठकाउ ॥ जुद भूदी** तल्ट । मुन्देहें भीउना वृष्ठी जत्रः जिलाहा-নিঃসরত্যেষা কলাহাৎ পর্ণভাণ ক **জৈ** ।। তাৰ প্ৰতাম সপ্ৰাহে শুষ্য-जि ज्ञनिक चन । जामाः मक्ष्यं यसा कार्वि भाकः गदासुरेः जुत्वया **ভ**बादशृनन• अर्था।ह्नारगाम्य छ्यो-না। নিম্ব সৎপত্র শাথাভি র্যক্ষিকা मश्राद्राय ।। कलक भी उले॰ मे-मार कुरति न जू मानायर । ছাপবেত্ত ছলে পূতে রম্যে রহসি भीजाम ॥ नाम्किः नःम्भामञ्ज न-**চ जन्याधिक वृद्धर। वहरवा छि** বজো নাত্ৰ ভেষজ যোজয়ন্তি হি।। (किटि श्रियाक्राश्चार स्वाप्तक्षा स्व तुर्व। कार्य मा उत्वन मा जन ज পিষ্য সম্যুক্ চিঞ্চান্ধ বীজ সঞ্চিত त्रक्रनी॰ 🦈 कराहि है है है ि भीअभिका जन्मका । स्मार

ব্রসেন সহিত্ত সিতচন্দনেন বাসা-ব্ৰন্থে মধুক মৃত্তেন বাথ। আদৌ পিবস্তি সুমনা স্বরসেন মিশুং তেনা-পুৰম্ভি ভূবি শীতলিকা বিকারান্ ।। (माठावरमन करलो उग्रजालन । मधुःकन वाथ अथवा मधुना। आहि भूर्वक्रा क्रागमनमार्व। मूमना खत्र-সেনজাতীপপ্রবসেনাশীতলাসুকি र कार्या भी न्या सक्या मर । वश्चा-ষা মিশ্বপ্রাণি প্রতি হা ভবনান্তরে ॥ कराहिन कि स्वाकार्य मृहिहेम्। भू ाभवः । एक् गीन चित्रहा**रहर् दकः।** নে ু ক্রেং স্থিতঃ II তেন **তে শোষ** মাযাভি পুলাফ ন ভল্ল'ড চ।রকা (त्रग्टकत्रः मुक्करगानय क्याह्र्नजः ॥ हन्तन वामरका मुख अपृती पुष्कया **मह।** এया॰ भीठकवायस्त्र भीठना জুর নাশনঃ।। শীতক্ষাথো হিমঃ। क्रम (क्रार्याभक्रादेवक मान च खाउँ। नाई निः। विश्व भा मञ्जातीनाः **भूजरेन छा॰ जन॰** नरय**र** ॥ स्टाज्क भोजना (रव्याः भाठेषः भोजनिता ९ष्टिए । द्वादाणः मुख्यः। शूक (छन एडिमी जाता. अगता के जेता है े . भारतम् अस्तास्तरम् मोजनायाः | ल म ल्या तक व्याप प्रतिशयन विरुत्ता-

नि भी उना॰ (स्वी॰ द्राम छ्या। पि-গন্বরী ৷ মার্জনী কলশোপেতা স্-र्भानकृत मस्काः॥ रामहः भीतः वा॰ (रवी॰ সর্রোগ ভ্যাপহা॰। যাসাদ্য নিবর্ত্তেত বিস্ফোটক ভয়• मरू ।। भी उल भी उल कि या বুথাদ্দাহ পীডিত:। বিস্ফোটক ভয• (वातः किनुः उत्र भुगनाऽ ॥ य खा मूनक मार्या ज ध्रा मःभ्रायमः तः । वित्मुष्टिक **खग** ध्यातः अला ভস্য ন জায়তে।। শীতলে জুর দঞ্জ স্য প্তি গন্ধ গতস্য চ। পুণষ্ঠ চক্ষঃ भुः न यु। नाङ् बी वत्नी वषः ॥ भी छः লে তনুজানোগান্ নৃণা হরসি দুস্ত-রান্। বিস্ফোটক বিশীর্ণানাণ ব্রমেকা-মৃতবর্ষণী ।৷ গলগণ্ড গুছারোগা य ठात्र माक्ना न्ना । जुमन्यान নাৰেণ শীতলে যান্তিতে ক্ষয়ণ।। ন-মজে। নৌষধ কিঞ্চিৎ পাপরোগ-স্য বিদ্যুতে। ত্মেকা শীতলে ত্রাত্রী নান্যা পশ্যানি দেবতা ৷৷ মৃণাল তম্ভ সদৃশী নাভি হৃমধ্য সংস্থিতা াৰ স্তু: বিচিন্তবেদেবী তস্য মৃত্যু-र्ने कायरङ ॥ अष्ठेकः मीउला (स्वऽा-ः পঠেয় নেবঃ সদা। বিস্মেটক ভ য॰ খোর॰ সলে ভস্য ন জাযতে।। েত্ৰ ত্ৰেব্যঞ্জনৱৈ ভক্তি সম্

यखागनः गर्टा। मीउलाष्ट्रेक (म **छिक्क न (मय॰ यम) कम)हि**८। मा-তব্য হি সদা তমৈ ভক্তি শুদ্ধা-দ্বিতো হি य: ॥ ইতি ত্রীস্কন্দপুরা ণে কাশীখণ্ডে শীতলাষ্টক স্তোত্ৰ मनाथः॥

नम्तिका खी मणहती। मणाति इंडि ভाষা। यथा। मः नाः म मनाः रैक्टव वर्षाकाटन निवाद्यर्थ। मम् রিকাভিঃ পাুুুুু্ত্য মঞ্চণায়িন ম চুতে ৷৷ ইতি পাদ্মে ক্রিয়াযোগসা-(त्र >< अक्षायः ॥</p>

भमूती जी भाभाद्रागः। ইতি মেদি-নী ॥ সতু বসন্তরোগ ইতি পুসিদ্ধ ॥ ত্রিক্ৎ॥ রক্তত্রিক্ৎ। ইতি রাজ निर्घणः ॥

भग्न वि जनकंषा। प्रिकः। इंडि (मिमिनी।।

नम्या जी जैमा। मिना इंडि ভाषा । ইভিমেদিনী॥

মস্ক ড গতৌ। ইতি কবিকল্লজনঃ॥ मस्रामक्ष इंडि मूर्गामण्डः। विश्व मःरगागारि र्लाल मक्। मूहन মধ্য ইত্যেকে। কিপি সংযোগান্ত लाल महे। उ मऋछ। ইতি मूर्गामात्रः ॥

दिङ:। উপসর্গ বিনাশায পর•॥ নক্ষরঃ পু• ব•শঃ।ইত্যনরঃ॥র ব॰শ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। **ग**ऋती পू॰ ভিক্ষু:। ইত্যনর:॥ চন্দ্র । ইতি শব্চন্দ্রিকা॥ মন্ত্র ওটুশ ও স্থানে। ইতিক কল্লছনঃ।। দন্ত্যমধ্যः ক্বিপি সং गानिलाल नक्। ७ नगः। नब्जठी मब्जडी। हूँ मब्जथुः। जनाएकी । नाग्राय श्तरन मानिम् जलायः भुरवणः। नङ्क পুসরো জলে। ইতি দুর্গাদাস: মন্ত ল্লী মন্তক। ইতি দ্বিৰূপকে मखकः भू॰ क्री भुषानाञ्च । नाः **इंडि ভाष।। उ९ श**र्यप्रायः। উद्धःः **জ্'২ শিরঃ ৩ শার্ব ও মূর্জা৫ : ই**ঃ নরঃ।। নুগু• ৬ শির• १। ইতি শ तञ्जावली।। वत्राञ्चः b। ইতি करो। ध्र ॥कः त्र भूखुः २०(मोन्निः) र कशान 🔀 কেশভুঃ ১০। ইতি রাজনির্ঘট ।। তস্য শুভাশুভ লক্ষণ॰ যথা। ছ্প্রাকারে: শিরোভিস্ত নৃপাহি: শিরা ধনী। চিপিটেশ্চ পিতু মূত र्गवाष्ट्राः शतिम् अस्यः ॥ घष्टेम् छः পাপক্চি धंनारेम्धः পরিবজ্জিত

ইতি গাৰাড় ১৬ অধ্যাবং ॥ 🖘

रुक्त जासामुथ मर्जुक् केकन नगि

তৎকর্ণিকাষা পরনাত্ম ভিইতি

যথা। স্বাক্ষে উত্তানৌ করৌ কৃত্বা সোহমিতি জীবাত্মান হৃদযন্ত দীপকলিকাকার নূলাধার স্থ লঙ্গুলিন্যা সহ সুসুনা বর্জানা নূলাধার স্বাধিস্থান মণিপ্রানাহ-ত বিশুদ্ধাজ্ঞাথ্য ষট্চকাণি ভিত্বা শিরোবন্থিতাধোমুথ সহসুদল ক-নল কর্ণিকান্তর্গত পর্যাত্মানি সং-য়োজ্যেত্যাদি তন্ত্রসারঃ॥তথাচ। সুসুনা বর্জানা সোহনিতি মজেণ বোজ্যেত্য সহস্যারে শিরঃ স্থানে পর্যাত্মিনি দেশিকঃ ॥ ইতি গৌ-ভ্যায়তক্রণ ॥

नछक्रात्रशः भु॰ भित्राभक्का । यथा । गाम्छ नछक्रात्रश मिखः ह्या मेखः ज्यकः । ইতি হেনচন্দুः ॥

মন্ত্রাখ্যঃ পুণ বৃক্ষশিরঃ।ইতিশব-চন্দ্রিকা।।

मछत्राक ली (प्रवत्राकः। ই**डि छा**वः शुका**णः**॥

নন্ত্র্নক প্রী শিরোধ: । ঘাড ইতি ভাষা। ইতি শব্চন্দুকা॥

নতিষ প্রী নত্তকভবগৃতাকারসেহ:
। নগজ ইতি পারস্যভাষা। তৎপর্য্যান্। গোর্দু ২। ইত্যনর:॥
গোদ এ নত্তকস্থেহ: ৪ নত্তলুজ্ক:
৫। ইতি হেন্চন্দু:॥

नस क्री पिश्चित्र थः। पित्र सार इंठि ভाषा। इंठा नदः।। पिष्ठ नः । विश्व निर्वादि युठः पिर्वा । चिष्ठ निर्वादि क्रिंड पिर्वा । मुक्क क्रि पिर्वा । मुक्क क्रिंग क्

মস্তলুক্ষ: পূ• মস্তিষ্ক•। ইতি ত্রিকাও: শেষ:।।

নস্তল্পক: পু॰ নন্তিম্ব॰। ইতি হেম-

নহ পূজে। ইতি কবিকল্পন:।। নহতি। ইতি দুর্গাদাস:।।

মহ ইক বিষি।ইতিকবিকল্পজনঃ
।। ইক ম•হযতি। বিষি দীভৌ।
ইতি দুৰ্গাদাসঃ।।

মহ ইড বৃদ্ধৌ। ইভি কবিকল্পজন:॥ ই ম'হুতে। ড ম'হুতে। ইতি দুর্গাদাস:॥

মহ তক প্রে। ইতিকবিকল্পন: ।। नक्यि । इंजि मूर्गामानः ॥ महः भू॰ উৎসবः। ইত্যমরः॥ তেজः ! ইভি মেদিনী॥ यद्धः । ইভি भदवद्वावनी ॥ महियः । इंजि (इम्बर्नुः ॥ मर्श क्री উৎসব:।। তেজ:। ইতি (मिरिनी।। यद्धः । ইতি नम्द्रञ्जाः वनी ॥ **भर्कः भू॰** व्हनासामः। ইতি कहे। धनः ॥ **नर्** क्री ताब्रुः। इंडि (मिनि)।। नर्ट जि वृषः। इंजिमिनि ॥ उट ৪ বিশাল ৫ পৃথুল ৬ বড়ু ৭ উক ৮ विभूगः २। इंडामद्रः ॥ भूनः २० विखीर्नः १२। इंडि मदत्रावनी ॥ नरुजे जी वल्लकीरङमः। ইতি মে-मिनी।। नात्रम्वीना।। वृष्ट्रभूमाना। इंडरनब्रोकायाः खन्न छः ॥ वृश्जी ।। বার্ত্তা ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। गर्ीषारमी खी मुत्र्वारमी। यथा। यात्रि ভाषुभार मृद्ध द्वारमी भुवगान्त्रजा। मञ्जीमामणी (क्क्या উপবাসে-মহাফলা ৷৷ ইতি গাৰু ए ७४३ अथ्रायः ॥

মহত্তত্ব ক্লী চত্বি **শতিতত্ত্বান্ত**ৰ্গত

দ্বিতীয়তম্বৃ । তত্ত্ব পুক্তে ৰুৎপ मः। ममिष्ठे वृष्तित्रक्षणः। उट्मर्यऽ। यः। यथा। नहानाजा। निक् र्जिकुः भासु क वीर्यावान्। वृद्धिः शु-জ্যোপলিক্ষিত তথা খ্যাতি ধ্ভি: श्वाचिः ॥ भर्यप्राय वाहरेकः भरेषः र्म-हाराजा विভाव्यकः। जः कारन् ব্ৰাহ্মণো বিদ্বান্ পুমোহ• নাধিগছ-তি॥ ইতি নহাভারতে আশ্বনে-ধিকপর্ব। অপিচ। একা মূর্ভি জ্রযো ভাগা বুন্ধ বিষ্ণু মহেশ্বরাঃ। সবি-কারাৎ প্রানাত্ত নহত্তত্ব পূজা-যতে॥ নহানিতি যতঃ খ্যাতির্লো-कानाः काय उ मना। अहलात मठ মহতো জাযতে মানবর্জন: 11 ইতি माध्रमार अध्यायः॥

गरुखतः भू खी म् मुः। यथा। म् मुः म्यार भारा पारा गुमक्छा মহত্তর:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥ অতিশ্যনহতি ত্রি।।

मह्यु॰ क्री महरजाजावः। यथा। নহত্ত্ব ষদ্বিধে হেতু রিন্দিয়ণ করণ মত । ইতি ভাষাপরিছেদ: ॥ *ম*-হত্তু° ষত্বিধ ইতি। দুব্য **প্ৰ**ত্য**েক** गरुखु॰ সমবाय **স**ম্বন্ধেন্ কারণ• । मुवर सग्दिकामा र धनकी सन्तर न्यानाः भुज्यस्य साक्ष्यं सम्बार् সম্বাদ্ধন। দুব্য সনবেত সন্বেতা- ।
না॰ ৰূপদ্বাদীনা॰ পুত্যক্ষে স্বাশ্য সমবেত সমবাযসম্বন্ধন কারণ॰। ইতি সিদ্ধান্তমূক্তাবলী॥

নহর্লেকঃ পু॰ ভ্রাদিসপ্রলোকান্ত
গতচতুর্থলোকঃ। যথা। ভূ ভূ বঃ স্ব
মহকৈব জনশ্চ তপ এব চ। সত্যলোকশ্চ সপ্তৈতে লোকান্ত পরি
কীর্ত্তিয়ঃ।। চতুর্থ দিনস্যান্তে জ
গদেত্বরাচর॰। তদা হি দহতে
সর্বং তৈলোক্য॰ ভূ ভূ বাদিক॰।।
জন॰ পুবান্তি তাপার্ত্তামহর্লোক নি
বাসিনঃ। ইতি বহি প্রাণ॰।। চতুর্থে ভূ নহর্লেকে তিপ্তরে বল্পবাসিন
নঃ। ইতি দেবীপ্রাণ॰।।

निर्घण्डः ।।

ग्रह्मिः भू॰ वरामािनः। ইতি ত্রিকাछ ।। ज्ञान पुर পত্তাি রিথা

श्वि हि॰मा गতাে পাত্র বিদ্যা সত্য

তপঃ শু.তৈঃ। এষ সমিচ্যাে হ্যাদ্বান্ধান্দ তত স্বৃষিং ।। বিবৃত্তি

সমকালন্ত বৃদ্ধাে ব্যক্তি সৃষি স্বৃয়ণ।

श্বাত্ত পর্মণ য্যাৎ পর্মার্থ স্তঃ।

যাতঃ ।। গত্যুগ্রিদ্যতে প্রতাে নাম তি তি লারণং। য্যাদেষ স্বয়ন্দ্র

মহর্ষতী জ্ঞী কপিকছু:।ইতিরাজ

শ্বরাঃ স্বৰ্জ্য বুক্ষণো মানসাঃ সু-**छाः। विवर्षक्रा**ति छि ब्र् क्ष्। सङ्गन् পরিগতঃ পর: 11 যমাদ্যিঃ পর-(ज्न महा• खमानाइ र्ययः। ঈश्ववाना• সূতা তেষা মানসা শেচারসাশ্চ বৈ ।। পাষ্য স্তৎপরত্বেন ভূতাদি পাষ্য छ उ:। अविপू भ भ भ का स्न ते पूर नामुद्धं मद्धवार ॥ श्रद्भवसंग (स-বৈ ভূতাদি ঋষিকা শুতঃ। ঋষীকা ণাণ সূতা যে বৈ বিজ্ঞেয়া ঋষিপুঞ কাঃ।। শুদ্ধা ঋষ পরত্বেন নাম ত-সাৎ শুতর্ষয়ঃ। অব্যক্তাত্মা মহা-তাত্মাচেন্দ্রিয়াত্মাচ তেষান্ত জ্ঞান মুচ্যতে।ইত্যেব হৃষিজাত্যস্ত পঞ্চ-তান্নাম্ভি: শৃণু ৷৷ ভৃগু মরীচি র-ত্রিশ্চ অঙ্কিরা: পুলহং কতু:। মনু ৰ্দক্ষো বশিষ্ঠশ্চ পুলস্ত্য শ্চেতি তে দশ ৷৷ বুন্ধণো মানসা হেতে উৎ-भनाः खर भी खदाः । भद्रत्ववर्ष उया छ् अया ग्रह्य थ ।। इं उ माट्राम् ३२० जव्यायः ॥

মহলকঃ পৃং অন্তঃপুররক্ষকঃ। তৎ পর্য্যায়:। সৌবিদল্ল: ২ কঞ্কী ৩ স্থাপত্যঃ৪সৌবিদঃ ৫ বিদাস্কঃ ৬। ইন্তি জটাধরঃ॥সৌবিদল্লকঃ ৭ অ-স্থাপিকঃ ৮।ইতি শদ্রত্বাবলী॥ नहिन्न १ १ जाउ: भूदतककः । (था का इंडि ভाषा । उन्र नक्षाः । यथा । मूक्षम्(न्रा १ नूभाष्ट्रा यः खी स्र ভावा । महिन्नकः । इंडि मद

মহস॰ ক্লী জ্ঞান•॥ পুকার:। ইত্যু-ণাদিকোষ:॥

নহা ন্ত্রী গোপবল্লী।গোরক্ষচালব্বা ইতি ভাষা।ইতি শব্দ
চন্দ্রকা। ন্ত্রীগবী।ইতি শব্দরত্নাবলী।

भशकहः भू॰ मगूपुः॥ वक्नाः। ইতি

भिक्ती ॥ भर्ब जः। ইতি শদ্प्रज्ञाः

वनी ॥

মহাকণ্টকিনী জী বিশ্বসারক । ফ ণিমনসা ইতি ভাষা। ইতি শব্দ চন্দ্রিকা।।

মহাকন: পু॰ রসোনক:। ইত্যমর:
॥ মূলক॰। ইতি শদরত্নাবলী॥
চাণক্যমূলক॰॥ রক্তলশুন॰॥রাজপলাপু:। ইতি রাজনিঘটঃ॥

নহাকপিথা: পু॰ বিশ্ববৃক্ষ:।ইভি ত্রিকাগুশেষ:॥

মহাকরঞ্জঃ পু: করঞ্জবিশেষ: । বড করঞ্জা ইতি ভাষা । তৎপর্য্যাযঃ । ষড্গুস্থা ২ হস্তিচারিণী ৩ উদকী র্ণ: ৪ বিষয়ী ৫ কাক্ষী ৭ মদহস্তি नी १ भावत्वहा ৮ मधुमजी २ वज् यनी २० व्खिताव्यकः २२ व्यक्ताः २२ क्रमनाः २० काकः क्रम्भकः २२ व्यमनाः २० काकः श्री २८ मधुमला २०। व्यम्प्रश्वाः श्री २८ मधुमला २०। व्यमप्रश्वाः श्री २८ मधुमला २०। व्यमप्रश्वाः श्री २८ मधुमला २०। व्यम्प्रश्वाः । विश्व कश्री विष्ठिका अष्ठ वृत्याय तुप्रश्वः भावका विष्ठिका व्यम्भवः। विश्व महाकर्षिकावः भू व्यावय्यः। विश्व व्यावय्यः। विश्व

মহাকাষঃ পৃ॰ নন্দী। স চ শিবদ্ধ ।
পালঃ। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ॥ হঠ । ইতি কেচিৎ ॥ বৃহত্শরীর॰ ॥ তদ্বতি ত্রি ॥

মহাকার্ত্তিনী দ্রী রোহিণীনক্ষত্র।
যুক্তা কার্ত্তিকীপূর্ণিনা। যথা। পুনজাপত্যং যদা শক্ষণ তথৈতস্যাণ
নরাধিপ। সা মহাকার্ত্তিকী শ্রেণ ক্রা দেবানা মপি দুর্লভা। ইতি
পাদ্মে ২ থণ্ডে ০ অধ্যায়ঃ।।

महाकानः पूर विकुषक्रशाथ अप । विकास विकास

काकमर्पः ৫ (एवमानिका ७ माना 9 नानिका ৮ **जनकः ৯** घाषका-क्ञि: > । ইতি द्राञ्जनिर्घणैः ॥ **णि**वभू धविरमयः। उत्र ४ क्याव्खासः यथा। बिरनवार्डेह्ः। এव विश्वानतः **শ্রীমান্ ভ্রিডেজোমযো বলী। ম**-श्रामेथूनवीं बस द्वाल कः मःगुरी-याजि ॥ इज्राक्। जिम्माः मार्ब বীতিছোত্র পুর:ছিত। তাম নি **(म्यामान्ः मञ्जद मर्बर्ट्डदा।** ততঃ ষডস্থ স্ব রেতো ব্যাদিতে দ ह्नान्त। উৎসদর্জ মহাবান্থ মহা-নৈথ্ন কারণ ॥ অগ্নাবুৎস্ভ্যমা-নস্য তেজস: শশভূভূত:। অণুদ্ব মতি ৰল্প গিরিপুঙ্গে পপাত হ ॥ **उ**रगाः कात्रनरयाः मन्तः मः ज्रा শঙ্করাত্মজৌ।একো ভৃঙ্গসম: কৃষ্ণো ভিদাঞ্জন নিভোহপর:৷৷ ভৃঙ্গী ভস্য छमा वुका नाम ভृङ्गीि চाकरत्राट ! गराक्रिक क्षमा गराकाला जि লোকভ্८ ॥ তত স্তৌ পাল্যামাস শঙ্কর: পুমথোৎকরৈ:। অপর্ণগ চাপি তথা ক্রমাত্রাবভিবন্ধিতৌ ।। পুरुष्को छो गराजानो रुद्रामा পুতिপालि छो। कमाम्गरगरणो क् षा (ञो हाता चाति न (या कय ।। ইতি কালিকাপুরাণে ৪৫ অধ্যায়:

॥ 🕸 ॥ তস্য বানরমূপ কারণ 🖫 मान्द्रकः यथा । ज्येथकरनानया मा-র্জণ নিগুটে ব্লভিমন্দিরে। নর্যাকরে।-মহাদেৰো মোদযুক্তো রতিপ্রিয়ঃ ॥ यहा जा नर्यां कांडा भोती व्यतः **रुत्रान्डिक• ॥ उता ভृत्रि मराकारली** দ্বাস্থ্যে দ্বারি পুতিষ্ঠিতৌ ॥ নর্মাব-नात ना (मरी मुक श्रिव वक्षना। शुङ्किशेन गलम्गाजा वज मालम्। পাণিনা ৷৷ ব্যন্তহারা গন্ধপুষ্কৈ রা-**घरेल नां कि रमा**जना। विन्रुथ**ञ्च**न्नमा म्छे मन्यनहम् विज्ञा। निः मृ जा त्र जि नक्षिउनावाया जवजानना ॥ देयः माघ्र्ववयना निविजा (सप्तिनमुजिः। তা নি:সরন্তী সহসা তথা ভূতা मनिन्तिजाः ॥ व्यायाग्राः वीकिजूः ठारेन। व्यथुष गृट्छ श्रियः। प्रमृ**णञ्** মহাত্মানৌ নাতি হৃষ্টাত্মমানসৌ ॥ ज्ञी ठाशि महाकानः शृष्ठिकान-**ण्ड (काशजः।** দृष्ट्री (जो नाजत्र• मी-নৌ তদা ভূতা বধে। মুখৌ ।। চিন্তাঞা कपाञ् छीवां निमधमञ् कखनः। (ठो भण्डां उपा (पदी पपण शि-মৰ্ৎসুতা ৷৷ চুকোপ চ তদাপৰ্ণা বা-ক্তিক্তদ্বাচ হ। এবায়ূতান্ত মা॰ কম্যাদসন্ত্ৰৰা মপশ্যভাগ।। ভবন্তৌ ज्मेंयो मुष्को श्री नर्ग्यामा विविद्धिती

छो। छमा दिया मनर्यप्राप्ता• खराखो নিরপত্রপৌ ॥ অস্বর্তা ততো ভূ याच्छवा अंग्रमान्य । मान्यीः যোনি মাসাদ্যমাত্রীক্ষণদোষতঃ ।। ভবিষ্যতো ভবন্তৌ তু শাখামূগ মুখো ভুবি। ইতি তাবুম্যা শঞ্চৌ হরপুএৌ মহামতী ।। অথোম্যা সম॰ দেবে। বিষতা চলুলেখর: । আজগান তদাগছন্ পাসাদ পুতি ত নৃপ ৷৷ দদৃশেথ চরন্তী তা মুমা याः मृभी छीतः। मई लक्ष्म म म्भूर्गा॰ माधवरमाव माधवी॰॥ छा॰ मृक्ष्म नागमराप्त्वी · (गोती · वृष ভকে তনঃ। মিত পুসন্ন বদনঃ পুছসন্নিব ভাবিনী ।। ঈশ্বরউবাচ। ইয় তে মানুষী মূর্জি: প্রিযে তারাবতীতি যা । जृशी महाकानाया एउ बन्राम वि হিতা শ্বন্য ।। বুত্তো হ্যুনন্যকান্তো **২হ** নান্যা গন্ত নিহোৎসহে। ত্ব নিদানী স্বাণ চাস্যাণ মূর্ত্যাণ পুরিশ ভাবিনি ॥ তত উৎপাদ্যিষ্যামি নহাকালঞ্চ ভূঙ্বিণ । খ্রীদেব্যুবাচ। মনৈব মানুষী নূর্ত্তি রিশ গৃষভকেত न। विभागि उ १ व वहना मूर्शान्य সূত দ্বা। পুৰিবেশ ভতো দেবী स्व जादावजी ज्यो। मङ्गारिता হপি ত্রস্যান্ত কানার্থ সমুপদ্হিতঃ

॥ ততঃ সাপর্ণगঞ্জি দেবী তারা-वजी नजी। कागयान॰ महारादव॰ স্বশ্যেবাভজন্মুদা।। তিমান্ কালে २ ज्वर्गर्द्धः काभानी ठाष्ट्रिमान्। धृक्। कामावमान जम्राञ्च मान्त्रा काउ॰ मुख हर।। अख्वज्ञभाप् न তথা **मा**थामृगानन । ইতি कालि का भू त्राप ८७ । ८२ व्यव्यायः ॥ 🕸 ॥ বাণাসূরস্যমহাকালত্ব• যথা। ঋষ-যউচুঃ। কথিতো ভবতা সর্গঃ স•শ-যা অপি শাতিতাঃ। ত্বং পুসাদা-सहाजाग क् उ क् उता वग खरता।। ভ্যশ শোুভ্নিছানো ব্যনেভদ্দি-জোত্তম। কোন্যে। ভূকী মহাকা-(म) जाउो (वजामरे जन्न(वो ।) (व-जानक महाकान रे**ज्**तर ज्ञित-তथा। मृगु न दिकमामृ न कथरम-বা চতুষ্ট্রণ।। নার্কণ্ডের উবাচ। ভূব গতে নহাকালে মানুষস্থে চ ভূদিণি। বেভালভৈরবাথ্যে চ ত থা ভূতে দ্বিজোত্তমাঃ। বরলক্ষে চ বেতালে ভৈরবে তেন সংগতে অন্ধ-ক তপসা যুক্ত ভৃঙ্গিপঞ্চাকরোদ্ধর: ॥ यक्त वस्त्र इतः भूति विक्राभम गागठः। शक्ताञ्जतः नगाताध्र भू-গ্রে। ভ্রম্য নো ২মুরঃ॥ ভ্রি স্নে शक्तिगः जः मः छ्या हा करहा ष्वदः

। স্লেহেন তু নহাকাল কাণ বলি **जू छ॰ इतः ॥** विक्रूना क्रिम वाङ् छ॰ भशकान मथाकरताए। এव मूनि ৰৱা স্তেষা সংজাতঞ্চ চতুষ্ট্য ৷৷ বেতালো ভৈরবো ভৃঙ্গী মহাকা-লেত্যনুক্রনাথ। ইতি কালিকাপু রাণে ৮৫ অধ্যায়:॥ #॥ ভস্য श्रानामि यथा। महाकालः यरकाम वता मिक्काल धू मुवर्लकः । विञ्चु छ • म ख थ छ। द्यो पर्दे। जीनमूथ निम्।। र्तायुर्ग्याव् उकिष्टै **जूनिस्तः ब्र**क्डवा-সস। ত্রিনেত্র মৃদ্ধ্র কেশঞ্চ মুওমা। ना विज्विज ॥ बढा जात्र न महन्यु পণ্ড মৃশু॰ জ্বল মিভ॰। তথাচ হ্ৰমা রীকল্পে। দেব্যাস্ত দক্ষিণে ভাগে ম राकालः भुभूकत्वर। इः क्क्रोः याः রা লা বা কো মহাকালভৈরব नर्व विद्वामागय नामय ही श्री करे ষাহা ইত্য নন পাদ্যাদিভি রারা-**थ्र जि उर्भविद्या म्ट्लन (एवी॰ श्रक्षा**-नहारितः भूकत्य ।। उथाह कानी-**ज्ञा । महाकाल॰ याम**यङ्गा **. भ**ः न्हारम्वी भुन्बरयः। कानीकस्त्र। কবচ জ্বা সমুজ্ত্য যা রা লা ৰাঞ্জোন্তত:। মহাকাল ভৈরবে-তি সর্ব বিহামাশ্যেতি চ।। নাশ্যে-তि भूनः (भागः मायाः नक्षीः नमुष्

রেং। ফট্সাহ্যা সমাযুক্তো মস্তঃ সরাথসাধক:।। ইতি তন্ত্রসার:।। महाकाली खी महाकालमा भन्नी। गाञ् नक्षवङ्गाष्टेज्जकानीविरमयः । ইতি তন্ত্ৰণ।। জিনানাণ চত্ৰিশি-তি শাসনদেবতান্তগতদেবীবিশেন वः। इंडि (इमहन्तुः॥ 🗱॥ अथ मः হাকালী মন্তঃ। ওঁ ফুে ফুে কো। का. भूमन गृहात इ. कर बाहा। শ্মশানভৈরবী মজেণ যাবৎ কুর कर्मान भुरगानः कर्डनुः। जय म-शकानी मख भूरयागः। उब न्या-न मृष्ट्रां िक॰ न कर्खवा॰। তথা চ। ন্যাস শুজ্ঞাদিক কিঞ্চিয়াত কা-र्य्या विठाइगा। क्काउारियण मः भ्-र्भ क्षक्र इस्तुथ का निका ।। १ १४४ त জ্ঞা• মহারৌদুী• পুতিবক্ত ত্রিলো-চনা। मिकि मूल धनु बांग यह (शहे वद्राख्यान्॥ एका एक जूरेक (पदी) विञ्जानाः ভ्रति ভ्षनाः। भग्रोद्वनः সাধকঃ সাধ্য সাধ্যেন্মনসেপ্সিত ॥ वाकी नारमञ्जी दैवव कोनाती বৈষ্ণবী তথা। কারাহী চ তথা চৈ-नुरी ठामूखा ठिखकाईनी भ्वारी-শান পৰ্য্যন্ত সম্ভেম্বননে স্থিতা ই-माः॥ उब कमः। दिवी श्राद्या यथा বিশ্বাপচারেণ সংপ্রা, ব্রাক্যান্ট

শতীঃ পূর্বানি ক্রমেণ পূজ্যেৎ।
তথা। নানোচারণ সংরক্ত বহুে।
পূজুলিতেম্বর। জুল্যাদৈরিণাং শু
দ্বৌ দেবা নাম্রণ জপণ স্তথা।। স
নিবঃ পিচুন্দর্মান্ত তথা বিভীত
কাঞ্চিকাঃ। গৃহপুন শাশানাছি
বিভীতাঙ্গার হোমতঃ।। সপ্তাহা
দৈরিণং হন্তি কালিকা মন্ত্র যোগ
তঃ। উচাটনং চাপরাহো সক্ক্যান্ত বাংমারণং তথা।। দক্ষিণস্যাং দিন্দি স্থিরা গ্রামাদে দক্ষিণা মুখঃ।
ইতি তন্ত্রসারঃ।।

बहागवार क्री कावरमाञ्चविष्मदः।
ज्दर्भग्रायः। मर्गवसः २। इंडि
बिका अष्मदः॥ जमर मक्रावः २ व्या
। मर्गवस्ता नहानावर जेवका ना
यकः मूतः। महन्म क्रविया वाणि
श्रीसाराज खगान्जः॥ कर्मन्म
ज्वा ज्लाः मन्त्रा वहरवा श्रीवा
। मृद्यात वीत माजाना (मरका श्रेषी
तम हेय जि॥ जन्नान मर्द्ध श्रीव तम हेय ज॥ जन्नान मर्द्ध श्रीव तम हेय ज॥ जन्नान मर्द्ध श्रीव तमा कर्मन् गृज नम्मा मञ्जनाम्
य ॥ हज्ञात स्त्र वणाः मर स्वनाम्
य । हज्ञात स्त्र वणाः मर स्वनाम्
य । हज्ञात स्त्र वणाः मर स्वनाम्
य । हज्ञात स्त्र वणाः मर स्वनाम्

र्खन । এতব্ उगरेयः भरेम्। त्रवना **न ९**न्। वृद्धिः।। नाजि यद्या नाडि मीर्घाः गर्गा जष्टाधिका इर । गाना वृड नगः काशि नर्गः कम्छन मृम्। তে।। সর্গান্তে ভাবি সর্গন্য কথা-याः मूटन ज्वाद । मन्त्रा नूर्यनु ंत्रज्ञनी भुरमाय थांड वामताः॥ भा उर्मशाङ्ग मृगया रेमल बु वन সাগরা:। সম্ভোগ বিপুল্ফ্টো চ मूनि सर्ग भूताधुताः ॥ त्रन भूगाताः भियम मख्य भूष्माम्याप्यः। वर्गनी-या यथा त्या ग॰ जात्क्रालाक्वा व्यभी ইर।। কবে বৃ ত্তিস্য বা নাম। নায়ক-স্যেত্রস্য বা ৷ নামাস্য সর্গোপা-(रय कथ्या नर्गनान जू॥ इंजि ना-शिकाम र्माः ॥ अ॥ महाकावा गुन्र। यथा। कालिमानक् ५ ऋगाद्रमञ्जव রঘুবংশ মেঘদ্তা:। ভত্হিরি কৃত ভটিকাব্য: ৷ ভারবিকৃত কিরা-**जाङ्ग भीगः। और्यकृञ नियधीय** চরিত । মাবকৃত শিশুপালবধ-

মহাজমুদ। স্ত্রী কাশ্মরী। ই**তি** রাজনির্ঘণ্ট:।।

बियत थवादीनाः मठाक रूपकी । नश्चनः वि উত্তमन्ना :। उर

क्रियां । अलीनः २ आर्याः ० क्रिडाः । अलाः १ लिखाः ४। इंडाः क्रिंगा अलाः १ लिखाः ४ क्रिंगा कर्ताः । नाहाअलः ४० क्रिं क्रिंगा । नाहाअलः ४० व्हेंडाः क्रिंगा । अलाः ४३ नायुकः ४० क्रिंगा । अलाः ४० नायुकः ४० क्रिंगा । अलाः ४० क्रिंगा । अलाः ४० क्रिंगा । अलाः ४० क्रिंगा । इंडाः अश्वा । इंडाः ।

१८कृषः भू॰ तृष्ट्यकृषः। उ८११-ायः। अत्रवष्टः २। इंडि करे। त्राः॥

ই চুল: পু॰ নহাসল:। সৎসল: ইতি বিজপজোষ:।।

িকাশফলা জ্রী দেবদালীলতা । ইতিরাজনিঘটঃ॥

দ্যকাশাতকী স্ত্রী হবিষোধা। উতিরাজনিয়ণ্টঃ।।

্যদঃ পু॰ ভ্রঃ। ই**তি রা**জ নির্ঘণীঃ।।

ভাগন্ধ• ক্লী ছরিচন্দন•।।বোল•। ইতিরাজনির্ঘন্টঃ।।

शिंगकः श् क्रेबर्कः। ইछि

রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ জলবেতসঃ । ইতি শব্চন্দ্রকা॥

गरुगिका छी नागवना॥ किविकाभूझः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ চামুণ্ডা
। यथा। চামুণ্ডা চর্বিকা চর্মমুণ্ডা
नाর্জারকর্ণিকা। কর্ণনোটী মহাশক্ষা ভৈরবী চ কপালিনী॥ ইতি
হেনচন্দুঃ॥

নহাগবঃ পু॰ গ্ৰয়:। যথা। বনগৌ গ্ৰয়: পোকে। বলভদ্যে নহাগ্ৰ: । ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।।

মহাগিরিঃ পু॰ বৌদ্ধভেদঃ। যথা।
মহাগিরিঃ সুহস্ত্যাদ্যা বজান্তা দশ
পুর্বিণঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥ বৃহৎপর্বভক্ষ।।

महाख्यः भुः অठिछ्यः। म ह भूय-यम् भिछा गाँछ। আहार्यप्रकः। द्वियाः भिछः। अप्रत्यक्तम्प्रायाः भिछा गाँछ। ह। यथा। वयः भूय-यम्प्रिट्यत्वा छ्वछि गाँछ। भि-छाहार्यप्रकृति। है कि विकृम्बः॥ भाष्ट्री ग्रंहाछ्यद्व गाह तागायतः। नार्छ। विसिष्ठः भागानि वाक्व रेव स्वाद्धियाः। भिछ वंस्नू गीँछ छंडी रेप्त छः एक दिन ह। माछा छनः। छन् ति विकाली नाः वर्गनाः वाकाः। त्या छ्या विकाली नाः वर्गनाः वाकाः। त्या छ्या विकाली नाः वर्गनाः वाकाः।

সর্বাভ্যাগভো ৫ক: !৷ একপদে ন দত্তস্ত্রীণাণ পিতৃ মাত্ ব্যাবৃত্তিঃ ৷৷*৷৷সপিও নরণ পুক্ত্য আখলা যনঃ। ত্রিরাত মক্ষারলবণায়াশিনঃ मू र्वात्नवाव नश्खक्ष ॥ या-ठार्य्यक उननीय मनस्वम माठार्य्यः স উদাছত:।ইতিযাক্তবল্পোক্তঃ। ভন্মরণে ত্রিরাত্রাশৌচিত্মেন নৈতা-मृद्भियमः ॥ व्यायनायमः । निजम्। द्राजावमः भरहयुः। व्यमः नभरहयू রিভ্যনেনোপবাস: সূচিত:। অঘ সুত্তরে ত্র্যহননশুত্র আসীরন্ ইতি वक्तान वहनाए। अध्मुखनः क हो हिः। अकात न वनः का द्रमृ खि কাদি কৃত লবণ ভিন্ন তত্ত্ব সৈন্ধব॰ সাম্ভরি চ।। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ।। 🗱।। महाख्य मद्राप मञ्चलमद्र भग्रंड॰ निविक्त कर्याणियथा। महा ७ व भाउ ह काम्य किक्किमहाहद्य । चार्जिङाः तुक्कहर्याक्ष यावट भूर्ता न वट् अतः॥ जन् भाषः भनामक गक्ष- भानाऽक रेमथूनः। वर्जयमुक পাতে চ যাবৎ পূর্ণো ন বৎসর: ॥ **डीर्थ याजा॰ विवार्क्शभागन॰ उ** র্পণস্তথা । সংবৎসর ন স্বর্ধী ত मश्ख्य निপाउत्। इंडि कर्य লোচন ।। অপিচ। বিশেষতঃ শি-

বাপ্জা

প্রীত পিতৃকো দিল:

যাবদ্ধশ্যর পর্যান্ত মনসাপি নচাচরেছ ৷৷ নহাগুক নিপাতে তু কান্য কিঞ্চিলচাচরেছ ৷ আর্থিল্য
বুক্ষযজ্ঞপুন্দা দেব্যতঞ্চ বছ ৷৷
ইতিকালিকাপুরাণে৫৪ অধ্যায়:
।৷
মহাগুল্যা জী সোনবল্লী।ইতিরাজানির্ঘট্ট: ৷৷

মহাগুহ। দ্রী পৃশ্লিপণী (ইতিরাজ-নির্ঘট: ॥

মহাগোধূন: পু॰ বৃহদ্বোধ্ম:। বড-গন ইতি ভাষা। যথা। গোপুন: जूनताति जाधिविषः **म**ह कीर्खिः তঃ। মহাগোধ্য ইত্যাখ্যঃ পশ্চা-দ্বেশাৎ সচাগতঃ॥ মধুলী তু ততঃ किश्विम्ह्या मा मथुरम्भका। निः म्का नीर्घ (गाध्यः कृष्टिसन्तीम्थाः ভিবঃ ৷ গোধুনো মধুরঃ শীতো বাত পিত্ত হরে। গুৰু:। কফ শুক্ত পুদো বল্যঃ স্থিয় সন্ধান কৃৎসরঃ ।। ब्हीवरना वृः इरना वर्स्ता वुरन्ता कः **छ**ऽः श्रित्रञ्ज क्टा कक्ष्युरमा नवी-নো নত্ পুরাণ:। পুরাণ যব গোঞ্-ম কৌদু জান্দল শূল্য ভূগিতি বা गुर्हिन वंत्रस्त गृशिञ्जार । मध्की শীভয়া হিন্ধা নিজ্ঞী মুৰয়া লম্বঃ । मूकना वृष्ट्री अध्या 🥏 🤫

মুখাঃ মৃতাঃ।।ইতি ভাবপুকাশঃ।। महानीतः मु एष्टः। ইতিরাজ निघण्डः ॥ বৃহদ্পীবামূক্তে ত্রি ॥ মহাঘাসঃ পু॰ মহতো দেশস্যমহ-ত্যা ভূনেবা ঘাসঃ।ইতি মুধ্ববোধ वाकत्र हीकाया मूगामानः॥ জ্রী সুরা। ইতি শব **ন**হানূৰ্ণা व्यक्ति॥ अधिमयञ्जिक ॥ নহাঘোরঃ ত্রি অতিশ্যভ্যানকঃ। যথা। যুদ্ধারে নৃহাধােরে তপ্তা বৈ হরণী নদী। তাঞ্চ তন্ত্র • দদা प्तानाः क्षाः दिच्द्रश्यः गाः। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ॥ नहारवायः क्षी इष्टेश हेडिस्मिनी।। নহাযোষঃ পু॰ অতিঘাষণ । ইতি (मिरिनी।। तृश्ह्यगुरक जि॥ गहायाय। जी ककरेग्की। हेजि (मिनि ॥ अम्मूक्की। इंडि नद विषुका ॥ नरात्रः পू॰ छेट्टेः। इंडाप्रतः॥ গোফ্র हः ॥ রক্ত চিত্রকঃ। ইতি র।জিহিনটঃ॥ वृङ्দवस्वयुक्त वि॥ मराक्षः १ माकविष्ण**यः। उ**९ পর্যাবঃ। বৃহদ্ধু: ২ বিষারি: ৩ गुः एका ८ ज्वा छः द नीवन भी ७ वित्र क्ष १। यम् छनाः। कर्षुः।

। एना म्लाम्बारमार्खि दिय नामिः वः। त्रमायनद्यः। ইতি রাজনির্ঘ-णैः॥ वृष्ट्रकृष्कुण्कुशकी ह।। सहाह ७: भू॰ यम ভূত্য:। इं **७** एहम-চন্দু ত্রিকাণ্ডশেষৌ ॥ পুচণ্ডে ত্রি ॥ মহাছদঃ পু• দেবতাডবৃক্ষঃ।ইতি तत्रगाना ॥ वृष्ठ १८४ ॥ নহাছানঃ পু• বট্ডকঃ ৷ ইতিরাজ-िघ फि: ॥ वृह है। गणा कि ॥ नहाहिना खी महासमा। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ।। বৃহ্ছিদুমুক্তে তি ॥ गहाजः भु वृह्यामः ॥ गहाज्याः। ভবে তি ॥ নহা শ্চাসাবজশ্চেতি পুথনার্থে কর্মধার্য সনাসেন মহ তো জায়ত ইতি দ্বিতীয়ার্থে পঞ্ भो ७९ शुक्य मनारम ह विद्वयः॥ **गराब**ी की कनुबरी। ইভিরাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥ বৃহজ্ঞী চ ॥ मराजनः भुः मायुः। यथा। (वमा-বিভিন্নঃ মৃত্যো বিভিন্ন সামৌ मुनि यंग्र २७॰ न ভिन्नः। १र्यात्रर তভু নিহিত গুল্যা মহাজনা যেন গতঃ স প্রায়া ট্তি নহা-ভারতে বনপরি ।৷ ন্বালিঃ ৷ যথা 🗈 शुर्वित (यम जिल्ला) न शङ्खिता ২য় দেব্যা বিমোহিত মতি স্বত नायदा २वः। भागाः ३७, वृत्र मण्डि

মানুপ্রিতানা বৈতানিকে মহতি। নহাজাতীনঃ ত্রি নহতঃপুকারঃ।
কলাণিযুজ্যনানঃ ।। ইতি শ্রিভাগ
বতেষপ্তক্ষে অজানিলোপাখ্যানে নহাজালী স্ত্রী পীতবর্ণহোষা।
বলবাক্য ব্যাখ্যানে শ্রীধরষানী ।।
ইত্যনরঃ ।। রাজকোশাতকী । ইতি
নহাজ্যঃ পুণ গবষঃ ।। শ্রীকারীমূগঃ ।
রাজনিঘন্টঃ ।। বৃহজ্জালবাহকে ত্রি
ইতি রাজনিঘন্টঃ ।। অতিবেগ নহাজ্যিপ্ত স্ত্রী নক্ষত্রবিশেষাদিযুক্ত ত্রি ।।

যুক্ত ত্রি ।।

गराजयुः खी त्रङ्ज्युत्कः।यथा।
गराजयूर्गराभागाताजजयुर्ररू
कना। ইতিরন্নালা।।

महाजम्ः छी त्रञ्जमः। ७० भर्गा
यः। त्राजजमः २ चर्गमाञा ० महा
रुना ८ शिकशिषा ८ काकिल्छ।
७ महानीना १ तृरू क्ना ४। जम्म
ख्याः। উष्णद्वः। मध्यत्र मदः। क्
सायदः। मुग्रू तदः। यि छिजामः
छिष्णदः। स्मायम्य नदः। द्वाछेखिदः। स्मायम्य नदः। द्वाछोमाता र्विषक्षकदः। श्विन्छ क्क
काम भूम्म नद्यः। हेजिता जनिर्मणेः
॥ अशिष्ठ। कल्नमुः कथि जा जन्मः।
ताजज्ञ ग्रह्म विष्ठि छ द्यः (ताहनः।
। हिन् ভात्भु हामः।।

মহাজাতিঃ প্রী বাসস্থীলতা। ইতি রাজনির্ঘটঃ ॥ শেষ্টবর্ণস্ট ॥

ইতি ব্যাকরণ ॥ नहाजानी जी भी जवन (घाषा। ই চ্যনরঃ।। রাজকোশাতকী। ইতি রাজনিঘটঃ ॥ বৃহজ্জালবাহকে ত্রি नश्रों जो नक्वविष्णयानि-যুক্ত হৈ দুখী পূর্ণিনা। সা পঞ্ধা। वुकाभुद्रारा। अल्तु एकः मानी हिव পুাজাপত্যে রবি স্তথা। পূর্ণিমা खक्राद्रण महारेष्ठाष्ठी भुकीर्खिता ॥ ঐন্দে জ্যেষ্ঠাযা। পাজাপত্যে **রোহি**ণ্যা॰।। ১॥ विना ७कवाद्य-गानि। अत्मु छकः मनी हिव शा-জাপত্যে রবি স্তথা ৷ পূর্ণিমা জ্যৈষ্ঠ भागमा नहारिकाशी भूकी खिंछ। ॥ २॥ अनुताक्षाञ्च छत्राविष । ঐन्मु रिगा यह। जीव ख ८ शक्ष मार्क রবিঃ। পূর্ণিমা শক চন্দ্রেণ মহা-জ্যৈষ্ঠা পুকীর্ত্তিতা।। ৩।। অনুরাধা-ছে চন্দেপি। ব্যায়ভূতি:। ঐন্দ (क जुथवा रेगव्य एक जन्मी गरा-श्रिटो। भृशिया रिकाक्षमाममा मः श्राह्य अभिर्विज ॥ । । । इन मार्ज:७। रैकार४ मघटनांत्र रेहव জ্যৈষ্ঠমাসস্য পূর্ণিনা। জ্যেষ্ঠাভেন मनागुका महारेकाकी भूकीर्खिङा ॥ ७॥ कि । ४ नव्यम्बर्ग । कि । ४ ।

াপণে জীবে বর্ষ স্যাৎ শক্ত ্ৰেত নিতি বিশ্বমোভরোকো-ন্তৰ্গত বৰ্ষবিশেষঃ। ৈ জ্যন্ত ইতি বৰ্ষ 🖁 विष्मयगम् देववर्षा शखः॥ मष्टः भारत यहिन्याहि जिलार्थः काञ्चनिकः ॥ 🗱 ॥ महारेज्य ४ जान १ व शुक्यः शुक्. या उमः । विक्रानाक নবাপোতি মোক্ষণ গঙ্গাষু মজ্জ-नार ॥ इंडि ठिथा। मिठवुः॥ ংহাজ্যোতিমাতী জী লতাবিশেষঃ। विज्ञालकश्रूनी इंडि हिन्सी ভाষा। তৎপর্য্যায়ঃ। তেজোরতী ২ বহু-রসা ৩ কনকপুভা ৪ তীক্ষা ৫ সূব-र्गम्बनी ७ नवन। १ जांगुरीक्षा ४ তেজম্বিনী ৯ সুরলতা ১০ অগ্রিক শৈলসুতা ১৪ সুতৈলা ১৫ সুবেগা ১৬ বাৰসী ১৭ তীবু৷ ১৮ কাকাণ্ডী ১৯ বায়সাদনী ২০ গীৰ্লভা ২১ লতা ২২ সৌন্যা ২০ বান্ধী ২৪ লবণকি শুকা ২৫ পারাবতপদী ২৬ পীতা ২৭ পীততৈলা ২৮ যশ শ্বিনী ২৯ নেধ্য ৩০ নেধাৰতী ৩১ ধীর। ৩২। অস্যা গুণা:। তিক্তত রব॰। কক্ষব॰। কিঞ্চিৎকটুত্ব॰। वां ककाशर इ.। मार्श्य दुः।

मीभनद्वः। (मक्षा भुद्धः। काद्रिवृक्षः । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ গুলিং। নতু সম্বং সরাদি পঞ্চা- মহাদ্ধালং পু॰ হোনাগ্রিং। ইতি (रुगठन्तुः॥ नहाज्ञाना खी जिनाना विष्ठा थती विष्णयः। इंजि एस्महन्तुः ॥ वृत्रम-গ্রিশথা চা। नशाग्रः ঝ• কদম্বঃ। ইতি রাজ-নিৰ্ঘণ্টঃ ।। অতিশ্যধনবতি ত্ৰি ।। नशाजमः भूजा जी नत्रकविरभवः । नहाडिनयाक्तकात्रमयः । यथा । ঘনোদধি ঘনবাত তনুবাত নভঃ-স্থিতাঃ। রত্নশর্কর। বালুকা পদ্ধ ধ্ন তমঃপুভাঃ॥ মহাতমঃ পুভা-विज्ञ श्या श्या नत्रक ज्मयः। ইতি হেমচন্দুঃ 🏻 वा 🗘 वार्षिणद्धा १२ कक्नी १० मशाउकः भू मू शिक्षः। ইতিহেম-ठन्मुः ॥ य्रवृक्षकण्ठ ॥ নহাতল• ক্লী পাতালবিশেষঃ। যথা । অতল॰ বিতলঞ্চিব নিতলঞ্চ ত-লাতল॰। মহাতলঞ্চ সূতল• সপ্ত নঞ্জরসাতল•॥ ইতি শব্দালা॥

गहा जाता खी जिनाना रहिवीति । मध

। তৎপয্যাय:। তারা ২ মহাগ্রী: ৩

७काता ८ मारा ६ क्रिः ५ गतात्रगा

৭ তারিণী ৮ জ্যা ৯ অনস্থা ১০

भिवा ३२ व्याक्यका ३२ व्याचाः।

२० थर्ववाभिनी २८ जुना २० दिन्ना ।
२५ नील महस्र जी २१ मा ज्ञ नी २৮
वमूयाहा २२ धन महा २० जिल्लाहना २२ (लाहना २२ । इंडि (इम
हन्दुः ॥

শহাতালী জী স্বাবর্ত্তনী। ইতি রাজনিষ্টঃ।।

মহাতিকঃ পু॰ মহানিয়:।ইতি রান্দনির্ঘণ্টঃ।। অতিশ্বতিকরস-যুক্তে ত্রি।।

মহাতিকা জী যবতিকা। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ পাঠা। ইতি শব্দ চন্দ্রিকা॥

নহাতীক্না স্ত্রী ভল্লান্তকবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। অতিশ্যতীক্ষে ত্রি।। নহাতেরঃ ক্লা পারদঃ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

নহাতেজাঃ পু• কার্ডিকেয়ঃ। ইতি |
হলাযুঞা। অগ্নিঃ। ইতি শব্দ নিদু
কান্ত্রাভিশযতেজন্মিনি তি॥

महात्री वि উछपष्ठ । उट भर्यायः। महिहः २ উक्तिः ० छे-मातः ४ छेमाङः ६ छेमीर्गः ७ महा-मयः १ महामनाः ৮। ইতি হেল-চন্দুঃ।।

बहार छः পু॰ यमम् छ পু छ । ই তি । वृह জ्या পুরাণে ৫৬ ছাব্যামঃ ॥

व्हफ्खण ॥ नशास्त्रः भू॰ गजन्यः। छट्शर्याः ঈশাদন্তঃ ২। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥ বৃহদ্ভমাত্রঞ।। তদ্ভি তি ॥ गरान की (मुक्तान । जजु जूना পুক্ৰাদি ৰোডশ পুকার। যথা। নৎস্যপুরাণে। অথাতঃসংপ্রক্ষ্যা-भि भश्कानमा विकास । इंडाडि-षाय। जाताञ्च मर्बतामानाः जूला-পুৰুষ সংক্তিত। হিরণ্যান্ত নানঞ্চ वुका ७ • जरमञ्ज ।। व न्नारामन मानक (गामस्मुख भक्षम्। हित्र-ণ্য কামধেনুশ্চ হিরণ্যাস্থ ঔথেব চা ॥ পঞ্চাञ्चकः उद्यक्तारान उ থৈব চ.। হিরণ্যাশ্ব রথ গুদ্ধদেন-হস্তিরথ স্তথা।। দাদশ বিষ্ণুচক্র-ঞ্চ তত্তঃ কল্পল তা বা ক।। সপ্ত দাগ त मानक तज्ञ (धन खरेश ह ॥ महाः ज्ञ्चि उष्ट (वाउ**णः** शतिकीः र्जिडः। 🗱। यब मानाना नक्ति। मूक दाशाक्त मानः नहामानः। विनायकानि श्रकागत्म्वजाद्या माम्बर्गा उथा म्हन्युवानः। विनायकानि गुए (लाक्शाल वर्छे। कातिका सङ्ग्रानाः । वृज्ञाह्यात्र-শान वृष्या जैनाः बनखरदः। बाद **ठ**ञ्डेन गाए॥ इंगानि र

ं अव रिचा भन्जाभगा**लि यथा स**् क्षा १ वजाता र्क वन रहान ৰূপাক্ষো বিধান পুত্যেক ধোড भ जूनाभ्कव भुवानान्।फिर्माः क॰ नज् महामान(ब्रामाहिए**म**) जि। অতো নেতরেতরাশুয়:। নতু व्यक्ष মণ্ডপেতিকর্ত্তর্যতা যোগিত্বণ জিক-नीय लक्क १ । अठल पातिशि गऊ-ত্বাৎ। এবঞ্চ। কনকাশ্ব তিলা গা-(वा नामी त्रथ मही गृहाः। कन्। ह কপিলাবেন্ নহাবানানি বৈ দশ। ইতি ক্র্পপুরাণোক মহাদান পদ॰ 🏽 श्रीतः। अन्यथा वष्ट्रम 👙 हम्मना **डिः** कनकरानारि अस्ति अनुगाः रैडक्का जार । अक्टा करिका बीजानिक। मेध्ययं हरा प्राचाता (म क बचानूगः कलः । इंडि नकः भाग उलुः ॥

भरामाक क्षी (मवनाका है जिज्जो) धरः ॥ वृष्ट्याध्यः ॥

महारितः शृ॰ नितः। ইত্যময়ः॥

गमः अष्टेम्ब्रियं।

। यथा महारिताय (मामम्ब्रियं नमः

। ইতি नित्रभूषाशक्षिः॥ #॥

यनः वृद्भलि यंथा। वृक्षानीनाः

मूजानाक मूनीनाः वृक्षतानिनाः।

उत्राक्ष मह्जाः (नित्रा महारितः

भुकी खिंउ: ॥ मरुठी भू कि जा विष्य মূলপুক্তি রীশ্বরী। তস্যা দেব: প্-জিতশ্চ মহাদেবঃ স চ সৃতঃ ॥ ইতি वुक्तरिवर्स्ड भुक्डिथर्ड ८० ज्या यः ॥ 🗱 ॥ ভস্য পঞ্চবক্তৃত্ব ত্রিনেত্রত্ব काद्र १ यथा । अञीव कमनीयाञ्र १ किल्मातः भागममुन्दतः। जारका नि-ब्हिनीयक मृक्षा कल मम्ख्या ।। न व-ভূব বিভৃষণ্ড লোচনাভ্যাণ ত্রিলো-চনঃ। পশ্যমিনেষ রহিত ইতি মত্না ষ মানসে॥ ভক্তাদুকামহাভক্তো क्राप (भूमिविख्न :। मश्मुवप्राना ্য ভাগ্যবাংশ্চ চতুমূ থঃ।। ব-ए जिल्ला होने म् द्वा प्रशाव वर्षा मूर् থৈ: পশ্যমি কিং বা কিং স্তৌমি निः भाषा नाथ भीमृभः॥ जारेमारक-न লোচনাভ্যা॰ চতুর্ধা স পূনঃ পূনঃ । यभानत्म ऋर्व ीमः भक्तत्व ह छश-বিনি ।। তদ্বভূব চতুর্বক্তু প্রেণ স-হ পঞ্ম । একৈক বক্তু শুগুভে लाहरेनक बिन्डि जिन्हि।। वर्ट्य তেন জনাম পঞ্চবজু জিলোচনঃ। চক্ষণবি গুণ ৰূপাণি ভ্ৰম্য বুকা বৰা-পিণ:।। সত্ত্ব রজ স্তগ্র ইতি তদ্য হেত্ত নিশান্য। সত্ত্বাংশন দৃশা শ-ফু: পশ্যন্ পাতি চ সাবিকান্।। ব্লাজ**সেন ব্লাজসিকান্** তানসেন চ তা-

भगान्। हक्ष्य छान्याए भणाए नगाउँ श्राक्ततम् । । नः शत् का न স•হর্ রগ্নি রাবির্ভবেৎ কুধা।কো টিতাল প্রানশ্চ স্থ্যকোটি সম্ शु इः ॥ (व वि इ। त्ना मीर्य निथ छि লেক্যে দগুনীশ্বর:। #1তব্য ভ সাধারণ কারণ বথা। বিভৃতিগাঁকঃ স বিভূঃ সতী সৎকার ভস্মনা ॥ 🍴 ধত্তে তস্যা অস্থিনালা পুনভাবে न ভम ह। या बाबादाना यमुशीन खयाशि भूर्गमदकः॥ मञीमवः गृ হীরাচ ভাূম• ভাূম• করোদ হ। পু ত্যসাৰ্ঞ্চ ত্ৰ্যাশ্চ প্ৰণাত যুত্ৰ যুত্ৰ চ ৷৷ বিদ্ধাপীঠ স্তৰ তত্ৰ বত্ৰ মন্তৰ निक्तिक्ट। जला नवावानियक कृदी ব্ফুলি শঙ্কর: ৷৷ পুণাত মূর্চ্তিয় 🍴 ভূত্বা নিদ্ধফোতে চ রাবিকে। তদা গত্বা মহেশন্ত কৃত্বা ক্রোডে প্রবোধ্য চ অবৰং বিব্য ভৰুঞ্চ ভষৈ শোক হর• পর়া। তদা শিবশ্চ সন্তষ্টঃ স্ব লোকঞ্জগান হ। নৃত্তস্তরেণকালে। ন তা॰ স॰পুাপ প্রিযা॰ সতী॰॥ #॥ ভস্য দিশয়রত্ব জটাখারিত্ব কার-ণ যথা। দিশুস্ত্র ধারী যোগেন নেছ। নিতে পটে বিভোঃ। জটা তত্পস্যা কা । ন। খতেৰ্ব্যাপি বিবেক্তঃ।। ন েছা কেশ সংস্থারে স্বাঙ্গবেশেন

যোগিনঃ। সন্তা চন্দ্ৰে পংৰ ষ্টে রত্নে : গীশ্বরে ॥ 🗱 ॥ ভস্য ा ভূষণত্ব ব্যবাহনত্ব কারণ যথা প্রক্রছেষিণো নামাঃ শ্রুর শ্রু ব্যুঃ। বিভত্তি কৃপদা ৰাক্ষে তানে শরণাগতান্ ।৷ বাহন বৃষক্পোঞ্ मन्। खः (वाज् मक्षमः। **जि**शृतमः ববে পূর্ব নৎকলাংশ সমুদ্ভব: । 🗱॥ তস্য বৃস্ত্রপুত্র বিল্পতা প্রিয়ল ব্যাঘুচমাধারিত্ব শালানস্থানিত্ব কা রণ যথা । পারিহাতাদিক পুত্র मूर्गिक्त हन्द्रशास्त्रिक । मिर्गि अभाग তেম্বেব পুতি নান্তি কদাচন ! षुषु:त उ९ मरा भीठि दिव्यभवाः नुर्लिभारनः शक्षशीत श्रुम्भाव रशारा **छि वरायुष्टर्यानी निर्देश लगाक स्विर-**তল্লে জনতাযা॰ ন তন্মনঃ। "মুশানে-তীব রহসি খ্যায়তে মা নহনিশ।। #।। उम्। महिमानि यथा। आयुका ত্ণপর্যয়ণ স্বপ্নবন্ধন্যতে শিবঃ। মন। প্নির্চনীয়ে প্র ক্পে তল্ম মানস• ॥ বুক্ষণঃ পতনেনাপি শূলপাণে: क्र-(भा अदि । उत्रशत्यः भूनात्यः ना-হ• জানানি কা শু.জিঃ ৷৷ জ্ঞান• মৃ-তু/ঞ্জা॰ শূল॰ খড়ে ঘড়েজনা সম॰ । বিনান্যান কশ্চিত্র শঙ্কর জেতু-नीयदः ॥ मह्नद्रः भद्रपाञ्चा त्न श्री-

ে ভোগি পৰা শি"ঃ ব্যাহকে ম নঃ শখন প্রিরো নে ভবাৎ পরঃ॥ স•বস।নি গোলো*ে বৈ*সপ্তে তব क्ति। महाभिवम् इत्य निवकः ্ৰুনপাশভঃ॥সূষ্ট শক্তো হি নষ্ট उ जुलक् बीनग हि रः। तुका छ াকরং যোগান গোগী শঙ্করাৎ প 🔃 ।। स्विऽक्षात्मन यः সুष्ठैः नष्टुः 😇 उन्नीनया। म् छ। हाना पिकः भ का न कानी भक्षता भवा । नग ङिक्ष राग्रक्ष मृज्यि नर्जनम्मरः ः সর্বনিদ্ধি দাতু গীশোন দাতা गक्षद्राट भद्रः॥ भक्ष राकु । समान যশো গায়ত্যহ নিশ । মদুপ ধ্যা-যতে শাধ্র ভক্ত: শঙ্করাহ, গায়: 11 इिं वृद्धिरादार्च आ कृष जन्म थए ७५ व्यथ्रायः ॥ # ॥ मिवरेनर्वर उक्तन माय कात्रगामिक यथा। त्राधिका-ৰাচ। এব ভূতস্য চ বিভো: সর্বে-শাস্য নহাত্মনঃ। ন সন্ত কথ নুছিষ্ট বুহি সন্দেহভঞ্জন।। শ্রীকৃঞ্চ উবা-চ। শৃণু দেবি পুৰক্ষে। হছ নিতি शान भूबाजन । भाभक्तनाना ए-**रान जुलरीय निर्द्याशमः॥ जन**् ब्बनारता दिक्छे (नक्ना ह बनान र। দদশ ভুক্তবৃত্তঞ্চ নাথণ নারায্ণণ দি জ্ঞ।। তুষ্টাব গূচৈ স্তোবৈশ্চ পুণন্য

ভক্তিতো गूम।। यवामवः माने छोन मञ्हा ७ कव्यमनः॥ श्राक्षनात्व-ণ তৰৈৰ ভুক্ত॰ তেনাপি কিঞ্চন। কিঞ্দুরক্ষ বন্ধা ভক্ষণায চ দুর্ল । तिकाम्पा ठ उप उ॰ धत्राव শুলপাণিনে। ভক্তুদ্ৰেকাচ তৎসর্থ ভুক্তঞ্চ পুাপ্তি মাত্রতঃ ॥ ভুক্ত। সৃरু-র্লভ বস্তু ননর্ত্ত প্রেনবিস্তালঃ। পপা-**७ उनक ईडा८ मृक्क** वृतायु इर्या है।। স্থাপ নিপাত্য পাশ্চীয় ক্ৰন্মুছ্য ন্বা-প চ। এত शिम सदा दिनी पूर्ग। पूर्गि उ नामिनी ॥ मूना कगान भीषु उट शुनम वरतिका। काष्ठ मृहिंड॰ मृष्ट्री निপ**ञ्डक ভ**ক্তিত: ॥ পুহস্য वार्जाः अनुह अगातः म्लाभागिनः । সর্ব॰ তা॰ কথ্যানাস জনারঃ স॰-जूठाञ्जिलः॥ मुद्दा চুকোপ मा (मवी শিব• পুস্তু রিতাধরা। শুত্রা মনোহ-র•স্তোত্র• ন শশাপ শিব• শিবা।। দৃষ্ট চক্রে তদুছিষ্ট মভক্ষ্য বিদুষা-मित्र । मू विद्रक्ष उत्र खुश मया नक खु भीषद्रः॥ च्या वित्थाः भूमारिन বঞ্চিতাহণ কথণ বিভো। যতো নদ-ख॰ निर्वा १ विष्का मंश् द्यायूना ॥ অতো মত্তো গৃহাণৈতৎ ফলনেব ন-হেশর। অদ্য পুভৃতি যে লোকা নৈবেদ্যুণ ভুঞ্জতে তব ॥তে জন্মকণ

সার্নেযা ভবিষ্যন্ত্যেব ভারতে। इजुङ्ग পार्वजी माना करतार भूतः তো विरचाः ॥ मृष्टिः भभाउ उৎकर्छ নীল কঠো বভ্ব সঃ। অপূর্ব • তব নৈ-(वर्) जम मृज्र जमा रत्।। क् उ र पृष्ठे यञ ख्या ८ भण्ड (एइ॰ ज्रजामि ह। লিঙ্গোপরি চ যদক্তে তদেবাগাছ মীশ্বর ।। সুপবিত্র• ভবেক্তত্র বিক্ষো নৈবেদ্য নি:শুত । ইত্যেব কথিত नर्बः द्वरा शृष्टेः मृद्रश्वद्रि ॥ व्यक्ति ন্ত শঙ্করস্য নির্মাল্য যেন হেতুনা। **ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে আকৃষ**ালখনে এ**ও** অধ্যায়ঃ॥ #॥ তস্যাৰ্ভ 💤 শৃথ্য 📳 সূত্রউবাচ। বেদব্যাসাবভাষ্ট 🔭 🦙 পরে কমিতানি তু। মহাদেব্ৈ 🗀 द्रापि करनी मृगुष्ठ मू बुकाः । भारति । किन्यूर्ग स्थाउ (प्रयम्या मन्त्रपूर তি:। নামা হিতায বিপাণা মভূদৈ বস্বতে হন্তরে ৷৷ হিনবছিখরে রমে্য-ছগলে পর্বতোত্তমে। তস্য শিব্যাঃ শিথা যুক্তা বভ্বু রমিতপুভাঃ॥শ্বে তঃ খেতশিথকৈব খেতাস্যঃ খেত লোহিত:। চত্বার স্তে নহাত্মানো ব্ৰাহ্মণা বেদপারগা: II সুভাবো দ মন শ্চাথ স্হোত্র: কম্বণ তথা।লো काकि द्रथ रेगागीत्नु। देशीयवास ज्ञ ।। ज्रहेरम मधिवादः ज्ञामवरम् ॥

বৃষভঃ পুভুঃ। ভৃগুৱ দশমে প্রেশন खमापूर्व भद्रः मृष्ठः। हाम्सम ्राः সমাধ্যাতোবালী চাথ ত্ৰযোদশে ॥ চতুৰ্দ্দশৈ গৌতমস্ত বেদশীৰ্বা ততঃ পর·৷ গোকর্ণ শ্চাভবত্তমান্ডহারা· মঃ শিখঙ্যথ।। জটা নাল্যক্ত হাস-শ্চ দাৰুকো **লাহু**লী ক্ৰনাৎ ৷ খেক खया भन्नः म्मी जिखी मूखी ह रैव কনাৎ।। সহিষ্ণু সোনশর্মা চ ऋ-नीत्मा अञ्चित्र शुङ्कः । रेववश्ररङ **২ন্তরে শ**ন্তে। রবতার। জ্রিশ্*লিন:* ॥ অপ্নাবিংশতি বিখ্যাতা হুন্তে কলি-मूर्य भूट है। डीर्न लीवजात आ ष्पर १० व १३॥ इति १३ व रेक्कान्यम् । १ एत्। देना भारतस्य ·商等。等所。 克斯勒克克 कत्। (कष् (कषु ह श्राम्यू पुटाता)। नि भया भूटा।। देखंद उवाह। वा-রাণস্যা॰ নহাদেবং পুযাগে তু মছে-यंत्र । निमिष्य (मव्यम्वर्थः भय्यागः পুপিতামহ·॥ সক্ষেত্ৰে বিদুঃ স্থা-ণু পুভাবে শশিভূষণ ৷ পৃষ্ধরে তৃ অপোগন্ধি বিশ্বঞ্চ বিন্দেশরে !৷ व्य उद्यास महानामः नाहानु व् मः হারুত । উক্তিয়িনা । নহা গলে না-कार्षे ७ महादक्षे ॥ भवार्य

মহাদে

(भाक्तर्ग ह महावनः। ভৈন্নৰে ভৈন্নৰাকান্ত্ৰ ভব• বজ্ৰাপদে विषृ: 11 উत्रु कनथल रेटव ভपुकर्ग कुरम निव॰। रमवमाक्वरन मिखि॰ চণ্ডীশ নধ্যমঙ্গলে॥ উদ্ধৃরিত ব রণ্ডে ত সকলাণ্ডে কপর্দিন ৷ কৃত্তি বাসসমেকাগ্রে স্ক্স-তান্যাতিকেশ্বরে ৷৷ কালপ্তরে নীলকণ্ঠ শ্রীকণ্ঠ নও-লেখরে। ধ্যান সিদ্ধেখরে যোগী गायबीस्था खद्रभद्र ॥ विक्रयः नाम কাশ্মীরে জযন্ত মক্কেশ্বরে। ছরি-শংল্যু হরিঞ্বে পুরিশংল্যুতু শঙ্কর · া জটাবাসেখনে বিদ্যা কৌল্য জন বুটিকেশ্বরে । শুক্তপারে । তার রখন। क्षां (१८६२ का १४३०) । जिल्ला कर्नि क्षामासुरादः ् । अश्वद्रः । छ। मु॰ माञ्चित् अक्षात्रक विपालक ভিলোচনশা দভেমা**রে ভিশ্লিভ তী** रिगरन विभूता उक्त । जननित्र विमुः कालि काशालि कत्रवीत्रका। मीछ চক্রেখরে বেদং নেপালে পশুপতি• পতি । একারারোছণে কূট দৈ বিকাষা মুমাপতি• ৷৷ গঙ্গাযা• সা-গরে ব্যর মোক্ষার নমরকণ্ঠকে। मक्षरभागावदा जीमः ययस् नमः व्य वदा - विकास मनाश्राकः हैकः बाटा ह गनाबिशः। (इमक्छि वि-

क्राकः ज्जूवः गन्नमान्ता। जि-দ্বেখরম্ভ আকাশে পাতালে ১উ-क्षित्र । अर्ड विष्टिक नामानि (एव-দেবস্য ধীনতঃ ৷৷ পুরাণে চোপগী-তানি ব্ৰাহ্মণস্য স্বয়স্ত্ৰবা। यः পঠেৎ পুাতৰুপায় স্নাতো বা যদি বা ৽শৃ-চি: ॥ মুচ্যতে সর্ব পাপেভ্য: শিব-(काक म गइंडि। इंड्राप्तर (मवी-भूद्राण अडेरडि नागानि मश्राप्त-স্যাঞ্চা তস্যদ্দ নাম স্থোত্র<u>ু ।</u> भुषमञ्च महारमत्वा विजीयञ्च मरह-শ্বরঃ৷ত্তীয়: শক্ষরে৷ জ্বেষ শতুর্থো ्र उप्रकः॥ शक्षमः कृखिवा**माण य**न ঠঃকামাক্রাশনঃ। সপ্তমো দেবদে-বেশ শ্রীকণ্ঠ শচাষ্টম: সমূত: ॥ ঈশ্বরো নবমো জ্রেযো দশনঃ পার্বতীপতি:৷ राष्ट्र अस्तरण टेन्फव खामणः निव छै-চ্যতে ৷৷ দাদশৈতানি নানানি ত্রিস-ক্যু° যঃ পঠেমরঃ। কৃত্যু শৈচ্ব গো-মুশ্চ বুক্ষহা ভক্তপ্লগঃ।। জ্রী বাল ঘাতক শ্চৈব সুরাপো ব্যলীপতিঃ । মৃচ্যতে সর্ব পাপেভ্যে ক্দুলোক॰ न गहिं ।। ইতি ऋन्तर्भूद्रानः ।। 🕸 ।। उन्नात्माद्वात्र गण यथा। कार्रेरश বুকাহত্যান। মগন্যাগম কোট্যঃ। महाः भुवय भाषान्ति भशास्त्रिकः की उनार ॥ महाराज माहाराज मा

गशाप

कारमत्वि वासिनः। यथ्यः शोद्रिव গৌরীশোধাবন্ত মনুধাবতি ॥ ইতি 🛚 পুরাণ ॥ #॥ তস্য পুণাম মন্ত:। नगरमा जा॰ महारस्य लाकाना॰ खक मी यद्र । भू मा मभू विभागाना कामभूत्रामताङ्क्षिणः॥ इंडि श्री छ। প্ৰত ।। মহাদেশ মহাআন । ম शासामिन भी खद्र। सशामा सद्रः (५व॰ मकादाय नत्मा नमः ॥ इंडि **७डः ॥ #॥ ७मा कानक्र वर्गनः** यथा। नात्रम उवाह। कानक्त्री ত্বৰা খ্যাতঃ শশু গগণ গোলা 🛒 লক্ষণক স্বৰূপণ সৰ্ব **ग**र्शन ॥ भूनस्य छे ात्र । 🛵 भ॰ **जिश्रश्ना विस्तार कामर विश्र অশ্বিনী ভরণী চৈব** কৃত্তিকা সংগ্ৰহত ন **नकः॥ (मयकः हि** दिशानीम्।८ अ बक्त मूराष्ट्र वारायाः ना ख যো বৃন্ধন প্ৰাজাপত্য কবে গৃহ। स्त्रीनप्रार्खः वृषनायमः वननः शति-कीर्खिङ । गृगार्ख गामु। मिड्या भा-अयः (नोम) गृहिन्।। मिथून जूक যো স্তস্য গগণস্ক্স্য শ্লিন:। আ-দিত্যা শশ্চ পুষ্যঞ্জ অশ্লেষা শশিঃ নোগৃহ•॥ রাশিঃ ক্রুটানে নাম পা থেন খবিলাসিন: । পিত্রক্ত ভগ দৈৰভাণ উত্তরাশেশ কেশরী।। সূর্য্য 🛚

(क्षवः विक्ति वृक्त इत्रयः कार्ति कि विकः। उद्यक्त का व्यः भागि कि वार्कः कन्यका विषः ॥ (मामभूश्रमः भोगा ज्य विक्रियः क्षेत्रः विष्णाः । किवाः म विक्रयः वाकी विभाधायाः भक व्रयः॥ विजीयः मुक्रममनः जूना नान्त्र क्षाह्तः । विभाधाः म मन् व्यथः । विजीयः मुक्रममनः जूना नान्त्र क्षाह्तः । विभाधाः म मन् व्यथः । क्षित्र गृशः विमः ॥ वि जीयः वृक्तिका तानि (र्माष्टः कान व क्षिणः । मृनः भूर्वा न्द्रताः भक्त प्रमान का वाहार्यप्रस्ति भूगीयर् । উन्द्रता

न्धात्रशास्त्रवी शिद्रिका स्निकाञ्चाः

the second flate

का । इंडि रुकायुरः ॥ उम्रा यूटशिख येथा। श्रकाट या मूदिः मिर्व
र्मा येथा। श्रकाट या मूदिः मिर्व
र्मा शिक्त श्रमान । या जुर्मरः
जि श्रकायाः महारित्री उठः मृडा
॥ इंडि रित्रीश्रमात हर व्यक्षायः॥
त्राक्षी । शाहेतानी इंडि जावा।
ज्य श्रम्याः। महित्री र श्रमेशं २
श्रमेरित्राः। महित्री र श्रमेशं २
श्रमेरित्राः श्रमेर जो ति ।
ज्य श्रमेरित्राः । यथा। हजूर्मभम् । ज्यो श्रमेरित्राः । व्याप्ताः मिर्वे । व्याप्ताः । व्यापताः । व्याप्ताः । व्यापताः । व्यापताः

स्थान क्षेत्र पार प्रश्न हैंडि भारतिक प्रश्निक प्रश्निक क्षेत्र के स्थान

बरापु १ द। उन निवन

प्रभागः । प्रभा

মত্নদোণী জী নহাদোণাক্স:। ইতিরাজনিহন্ট:॥ महाबन्दः शृ युक्तवार्गः। ইতি णक् त्रज्ञावनी ।। অতিশ্যকলহण्ट ।। महाथनः क्ली वर्ल्म्मावस्त्र । ইত্যমরः ।। সূবর্ণং।। সিহ্লকং। ইতি মেদিনী ।। চাৰুবন্ধং। ইতি শক্ষরত্বাবলী ।। অ-তিশ্যধন্যুক্তে ত্রি।।

महावाजः भू वर्षः। ইতি भवः-চল্দুকা॥ महान् जि वृह्दः। ইত্যমরঃ॥ अम्।

भर्गायः सहरमाय पुष्ठेवाः ॥ महान् भू॰ উद्धेः। ইতি রাজনির্ঘটঃ!। দৃর্গা। যথা। মহান্ ব্যাপ্য ছিতা দৰ্ব মহা বা পুকৃতি ম্কা। মৃতিঃ লা লাদেবী নিয়তী চ নিয়ানতা े ইতি দেবীপুরাণে ৪৫ অধ্যায়: 11 महत्वपुः। यथा। म विकादार भु-পানাভু মহন্তব্ব পুজাযতে। নহা-নিতি যতঃ খ্যাতি লোকানা• জা-যতে সদা॥ ইতি নাৎদে। ১ অ भागः॥ यह ८ भद्र भूरगाग विरवस्था যথা। শঞ্জ তৈলে তথা নাংসে বৈদ্যে জ্যোতিষিকে দ্বিজে। যাত্রা-या॰ পথि निमुश्या॰ सङ्ध्रशास्त्र न-দীবতে ।। ইতি ভটিপুথন্সগী ব চতুর্থ শ্লোক টীকাষাণ ভরতঃ ॥

্বিনটিং পু॰ শিবঃ।ইতি ত্রিকাও-

शूक्रवाखनक्षात्रगठ कर्षकरमाखन्नरम् निर्मा कर्षा विकास । जमा नामाखन कि कि कि महामूगा विकाश कि विभाग निर्माण के महामूगा विकाश कि विभाग महानि । कि विभाग । कि विभाग । कि विभाग महानि । कि विभाग । कि व

। यथा। ठजातिः लंखभा लाटाती विकेश का रिव निम्तिवर्ष्णनः। हज् । वि ৈচৰ মহানন্দি ভবিষ্যতি। মহা-निन्त मुख भागि भूदाया किनका॰ শঙ্ক: ॥ উৎপৎস্যতে মহাপদ্ম: সর্ব ক্ষত্রান্তকো নৃপঃ। ততঃ পুভৃতি त्राकारना ভविष्ठाः मृमुर्यानयः॥ একরাট্ স মহাপদ্ম এউছত্তো ভ-বিষ্যাত ৷ ইতি ন্ৎস্যপুরাণে ২৪৬ অধ্যায়ঃ॥অপিচ। মহানদিসেতঃ শুদা গৰ্ভোজ্ঞবো হতিলুক্কো মহা-পদ্মাননঃ প্রক্ষরাম ইবাপরো াখন ঋতিশানকারী ভবিতা ত-उ: पुरुष्ड सूम्रा १ । सी पर कि किस्पूर्णिश्राम्य बार्कीका १ लगा । अनुसुर १००० er italo is i মহান্দ্র 🤫

র্যাতনাস্থান । ইতি এবি । মহানলঃ পু• দেবনলঃ। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ।। বৃহদ্গ্রিশচ্।।

্রিপুরাজ্য দেরার পুরীতিকরা পরা ॥ উত্তোনু ৰবনী ধা লগ্ৰ**েস। মহা**-नवनी मृजा। ना जिथिः नर्वतना-কানা প্ৰনীযা শিকাপিয়া।। ইতি কালিকাপুরাণে ৬৯ অধ্যায়: ॥ व्यिति । शुावृह्कात्व वित्निरयन আখিনে হাইনীফুচ। নহা শক্। নবন্যান্ত লোকে খ্যাতি গমিষ্য-ভি।। ইতি ভিথ্যাদিতত্ত্ব ॥ महानमः क्ली त्रक्षनगृहः। उৎभर्या यः।রস্ব গী২ পাকস্থান গু।ই 🍴 ত্যমরঃ ।। তত্র রক্ষণীশা জনা হল্ড मूरमाञ्च विशासकः, १८८० १८७ ब्राह्म अ जात कर अ ता वर । 资源中 200 家族公共企 ne COSTA PROPERTY OF A STOR भः हो हैंद हैं। है है है नुकालाहेक हैं। है। है के कि कि की राष्ट्रा राज्य के अन्य सरा महिन् ाङ्गानः शानरेक यू**ं छ। व्यक्तिम**ह मणा भी त। सराना हेक मृहित्त ॥ अङ्करत्व वाष्टिकः। यथा वा**लज्ञा**नाः यगः। ইতি সাহিত্যদর্পণः॥ स নানখ্যাত হন্নদুচিত রামচরিত भुइतिरमयः। यथा। এय व्याल हन्-ग । विव्विष्ठि छी गण्य शाना है कि ধীর শীশৃত রাগচন্দু চরিতে পুত্

क्छ विकर्भः। भिणु श्रीमध्यूष्टिन न कविना जन्म र्डा अब्बीकृत्त अ-र्गाद्रारुप नामरका रुख नवस्मा य जा रुक अरवज्याती॥ रुजिल्ला

नश्नाषी जी कश्रता। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

महानामः भू॰ रुखी ॥ वयु करमधः ॥
महामदः। ইতি मिनिनी ॥ मि॰ रुः
॥ कर्गः। ইতি ह्महन्तुः ॥ उद्धेः ॥
महः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ कारुण-

ं। ইতি हाबावनी॥ स्थानिक स्री मन्नाः। इजिक्रिशिवः॥ पराज्यात्रः भ् निम्नवृक्वित्भवः। ध्याप्तिय दे**ञि ভाষा। उৎ প**र्यप्र-यः। किल्ले - **भ**वत्मष्टेः अभार्बेजः े 👯 । बद्दगोला ॥ जम्र रूपाः । পরমগাহিত্ব। কবাযত্ত্ব। অমুত্রণ । শীতলত্ব। ইতি রাজবল্লভঃ॥ নহানিশা জী নিশামধ্যভাগ:। उৎ शर्यप्रयः। निमार्कः २ निमीयः **२। ইতি (२महन्दु: || # || मृज्**रक गशानिणा मार्ख्युर्द्धार्भात भुर्व দ্বণ। নহানিশা তুবিজ্ঞেয়া মধ্যমণ भुरत षग । তव मान न सही छ কাম্য নৈনিব্ৰিকাদৃতে॥ ইতি রুঘু-নন্দনভউচাৰ্য্যপৃতব্চনাৎ! মহা-

निणा शतकानमा नाजी ठज्डेयमा शत्रामियादिए उमानी श्रविषय-नीय (ভाञ्जनानू भगरकः। उपित ক্ত্যলোপাপরেশ্চেভি ভিথিত-द्वीय निश्चन खड़ माह ॥ # ॥ छ इ **७क** १ निरयरवा यथा। यस् कूर्र्ड तुर **ভীতে** ভুরাত্রাবেব মহাবিশা। ল ভতে ব্ৰহ্ভ্যাঞ্ তৰ ভূকা চ না-র**দ ॥ গোমা•স বিণাত্র সম•** তাস্ नक कन जन। भूःया मजकाः णुकाया (भारतम् । शिक्षा का कथा।। ইতি বুন্দবৈবর্ত্ত পরাণ ॥ 🛊 ॥ তত্ত পারণ নিশ্নেশ গ্রহণ ন কল 🖔 भारतः सर्वे हर्षे विकासी है। ভাৎ। নিশ্বাদ গারণ 👉 🞨 कविदा गर । **याः शुक्र**िक क्षित्र स्थानक ভবেৎ। তু দিনাক্লি মুনিকে 🕥 রণ সক্তে বুজী॥ইতি বু দৰৈবর্ত্তে ত্রিকৃষ্ণজন্মথণ্ডে ৮ অধ্যাযঃ॥#॥ দেবলোক্তা নহানিশারাত্তি মধ্যম मखबगाज्यिका। मा विशेष श्रुद्ध म्मित म् ७ ज् जीय शुरु त शुथ्य म् ७ **ৰূপা। তদ্যা পিবলিক্ষেত্**ৰে। यथा। जाय कृष ठजुर्जना। गानि-(मरता सङ्गिनिम । **मिवनि**ङ् বোড্তঃ কোচিনুর্গ্য সমপুতঃ ॥ ||

णा महानिना (व घिरिक द्वारिक द्वारिक व्याप्तम यामर्थाः। हेि (प्रवादाकः। महानिना । घिरका प्रश्वकाः। हिं विश्वापि ज्वः। यदि । यहानिना यथा। गठ जु भूष समायाः ज्वीप भूकतायि। यहानिनायाः ज्वाप्तमाति म्र्यं । ज्वाप्ति व्यापा ज्वाप्ति । व्यापा व्यापा ज्वाप्ति व्यापा व्यापा ज्वाप्ति । व्यापा व्यापा ज्वाप्ति व्यापा व्यापा

मद्ध (ति पृत्रज्वा न मःमयः । घडः श्रवः सङ्मानि विषज्वा । न मःभयः । ७डः मर्बः सङ्माहि भण्डात सर्यापिछः ॥ पित्र वीतः गत्छ पिति छञ्जात्म भ्रव्ययः । शक्ष उञ्चः ममानीय यपि भ्राभद्धः छत्यः ॥ कालाकालः सङ्मानि विष्ठात्रः उत्र यङ्क्रिः । अर्द्धतात्र गत्छ (पिति स्वश्रा भ्रुक्षे रिक्षः) स्वत्रधानुकालन मर्श भूजाहिकात्र । खिलाल उत् स्वति । अलि अलि अत् । अलि अलि अत् ।
ाति भूकाल से तेन कात्र त्य ।।
विक श्वनाथन उत्य अलिकाः ॥
नीहः भू त्रकः। इति लक्षः ।
नीहः भू त्रकः। इति लक्षः ।
नीहः भू ज्रकः। इति कार्याः
निनी ॥ उत्र प्रकाः । वात्र ।
निनी ॥ उत्र प्रकाः ।
निनी । उत्र प्रकाः ।

क्रेजी की 'नवक्रिया क्रेजिया कि स्थानका क्रिकिया कि स्थानका क्रिकिया कि स्थानका क्रिक्या कि क्रिक्या क्रिक्या मुख्येत्राज्य में सिकाम (शक्र मर्यक्राम् मस्यक्र । ইजि ब्राक्रनिर्यक्ष ।।

1803

हान् जादः जि सहास्यः। यथा। सृङ्जी शूगुर्वान् षःन्तां धर्मी व धर्म-बानिसः सहास्याः सरहहः स्त्रांच हान् जाव है जाता । है जि ना

মহান্ত: পু• নববাভজিযুক্তকৃষ-ভক্তাঃ।ভে শিব শেব ধর্মাদ্যঃ। यथा। निवः (निवः ६ १ र्म क वुका विष्णु मेशन् विद्राद्। जन्यक्राद्रः কপিল: সনকশ্চ সনন্দ্ৰে: ৷৷ বোঢ়ঃ भक्षभिर्था मुक्ता नात्रमुक मना-তনঃ। ভ্ওমারীচি দুর্বাসাঃ কশ্য-गः भूतरहा **९** दियाः ॥ व्यथरमा লোমশঃ শুকো বশিষ্ঠঃ ক্রতুরেব **চ। व्रक्रणाजिः कर्मभण्ठ मञ्जित्रज्ञिः** लबारका **गार्क खरा। यणि टेन्टव** भुञ्चात्रः गापयतः। यमः न्यं। भ म्बाद्धः व्यक्तिम् इजाननः॥ ্ৰূপায় উল্কেশ্চ নাডীজহ্বশ্চ বা-🚃 👊 अञ्चायाः कूर्ण हेन्द्रपूरः ় বিভীৰণঃ।। নবধা ভক্তি যুক্তা-শ্চ কৃষ্ণস্য পরমাজ্মনঃ। এতে ম-হান্তো ধর্মিষ্ঠা ভক্তানাণ পুৰৱা স্ত-খা।। ইতি বুন্ধবৈৰৰ্ভে পুকৃতিখণ্ডে ৬০ অধ্যাयः ॥

महाशक्षत्व की तृहर शक्षत्व । जव्यथा। वित्वा श्वित इः म्मानाकः कामार्याः शावेना उथा। महिंस विनिष्ठ तहिं ना ज्ञास्त्र शक्षत्व-वः॥ ইতি বাজনির্ব ।।

म्हानक्षित्र क्री वृहिष्यनक्षकः। जन्या। म्बी कानक्रेण मुख-का वर्मनाखकः। मञ्जूकगी जि (यारगा १य॰ महाभक्षविवाजियः॥ ইভি রাজনির্বণ্টঃ ॥ नराभधा खी महाकष्:। ইতি রবু মালা।। বৃহৎপর্ণফুক্তে তি ॥ गहाभयः भू भुषानभयः। ७९-भर्यायः। घष्टाभयः २ अभ्यत्रः ० শ্রিপথ: ৪ রাজবর্ত্ত উপনিষ্ট্রমণ ৬ উপনিষ্ক १ । ইতি (इमहम्मु: ॥ महाभयगमः भू मत्रगः। इठि छो। थ्यः ॥ মহাপদ্ম: পু॰ অইনাগান্তৰ্গতনাগ **७**नः। उद्भर्यायः। अकि^{भु}ः मणविन्तूकमस्रकः o : ३ कि क्र **इन्तुः ॥ ऋरवत्र म** अवविधाः अर्ग छनि ধিবিশেষঃ। ইতি জটাধরঃ।। **লক্ষ** কোটিস খ্যা। ইতি লীমাবভী।। শুন্নপদ্মে ক্লী। ইতি রত্নমালা॥ নহাপাতক ল্লী পাপবিশেষঃ। ভবু भक्षतिषः। यथा। तुन्नइडा मुद्रा পান স্তেষ গুরস্কাগনঃ। মহা डि পाउकान्।। इः मः मर्गकालि-रिजः मङ्गा इंडि मानत्व ३३ अश्रा यः ॥ 🗱 ॥ नशानककः हिङ्ग সপ্তরবাসু রাণ্তে। বাধ্তে ব্যাধি-

महाभाउकी जि भक्षभुकात्रमहा-পাতকযুক্ত:।। স চ পতিত:। যথা। মহাপাত হিনো যে ১ পতিতা তে পুকীভিডাঃ । পতিতানা **। न দাহঃ** तकार अर्थ है भी खिनक्ष यह । नहीं-ুখাজঃ পিতো বা কাৰ্য**় শাৰা**দ ছিলংগুড়িলা **এড**়া **প্**ডিড়া**না-**ভ যঃ করোতি বিমোহিতঃ ৷ ৬৪: कृष्ट्र ष्रायरेनव छम्। मुक्ति नंहान। था ॥ ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ধৃত বিষ্ণুপুরাণ বচন• ॥ 🗱 ॥ পারিভাষিক মহা• भाउकी यथा। क्उ भागभु जिश्लाक नीटि यां॰ পुতिमा॰ विका मूर्गा॰ न পুণ্নেঅস্ত স মহাপাতকী মৃতঃ॥ ইতি দেবীপুরাণে ব্যাস নারদ সং-বাদ:।। অপিচ। পিতর মাতর ভार्याः खरूभन्नीः दाः शहरः। अ ন পুঞাতি কাপটা সংগ্ৰ

ভকী শিব। ইতি বুন্ধবৈৰৰ্ভে গণ-পতিথণ্ডে ৪৪ অধ্যায়ঃ ॥

মহাপাপ প্লী মহাপাতক। যথা।
মহাপাপেষ্ সর্ব স্যাৎ তদজ্ঞ পপাতকে। দদ্যাৎ পাপেষ্ ষষ্ঠাণ শণ জ্ঞাত্বা ব্যাধিবলাবল।। ইতি মলমাসতত্ত্ব ।।

নহাপারেবত ক্লী ফলন্ফবিশেষ:।
বডাপারেবত ইতি হিন্দীভাষা।
তৎপর্য্যায়:। মর্ণপারেবত ২ সা
ম্যুণিজ ৩ থারিক ৪ রক্তরৈবতক
ব প্রত গানেবত ক্লীপ্রত ৭ নি

নাৰ ক্ৰড়েক ই কি ব্যাননিক্টির মূহ পাণ ু গাদ্তবিবেশ । ইতি বৃহদ্ধর্মপুরাণে ৫৬ অধ্যায়ঃ॥ বৃহৎপাশশ ॥

र्षाङ् गृतंस्कृद्धं विकास

নহাপাসকঃ পৃ• বৃদ্ধভিক্ষ্কঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ। চেল্কঃ ২ শানণেরঃ ৩ পুর্জিতঃ ৪ গোনীনঃ ৫। ইতি ত্রি কাণ্ডশেষঃ ॥

নহাপিণ্ডীতকঃ পু॰ কৃষ্ণবর্ণনহামদ নব্কঃ। তৎপর্যায়ঃ। বারাহঃ ২। আন াঃ শুেগ্রেণ। কটু তিক্ত গ পকামাশ্য শোধনত্বঞ্চ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

নহাপিণ্ডীতকঃ পুণ বৃক্ষবিশেষঃ।
পেডিরা ইতি হিন্দীভাষা। তৎ
পর্য্যায়ঃ। শ্বেতপিণ্ডীতকঃ ২ করহাটঃ ৩ ক্ষুরঃ ৪ শক্তকোষতকঃ ৫
শরঃ৬ পিণ্ডীতকঃ ৭। অস্যুগুণাঃ
। কষায়ত্বং। উষ্ণত্বং। জিদোষ শমনত্বং। চর্মারাপাপছত্বং। বিশোষাৎ রক্তদোষ নাশিত্বঃ। ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ।।

सर्गितः श्रे श्रीपृत्कविश्वादः।

क्रिक्षः अस्ति। वृद्धः शीलुः २ स्ट्राक्रिक्षः अस्ति। व्याप्तः ८ स्ट्रान्तः ८

सञ्जीलुः ५। व्याप्तः । विष्याणिदः।
विद्याणानिद्धः। विष्याणिदः।
व्याप्तः। भीभनीयकद्धः। ইতি त्राक्षः।
निर्यण्डः॥

মহাপুরাণ ল্লী একাদশলক্ষণযুক্ত ব্যাস পুণীতাষ্টাদশসংখ্যকপুরাণ বিশেষ: । তস্য লক্ষণ হথা । সৃ-স্থিশ্চাপি বিস্প্রিশ্চ ছিতি স্তেষা-গুপালন । কর্মণা বাসনা বার্ত্ত। মন্নাঞ্চ ক্রমেণ চ।। বর্ণন পুল্যা-নাঞ্চ মোক্ষস্য চ নির্দাণ । উৎ-কীর্ত্তন হরেরেব দেবানাঞ্চ পৃথক

भृषक्। मना विकः जक्षनक्र महजाः পরিকীত্তিত ।। ইতি বুক্ষবৈবর্ত্তে विकृष्डम् थए७ २०२ वर्षायः ॥ मराशुक्यः भू (मुधनतः।। नातायगः । যথা। থে, য॰ সদা পরিভবয় ন ভীপ্তদে৷ হৃহ• ভীর্থাস্পাদ• শিব বিরিঞ্চি নৃত শরণ্য । ভৃত্যার্ত্তিই পুণতপাল ভবান্ধিপোত বন্দে भशानुक्ष(उ हत्रगात्रविन्तः॥ छऽ ক্ত্রা সুদৃস্ত্যজ সুরেপ্সিত রাজ্যলক্ষীণ श्रमिष्ठ व्यार्येऽ वह ना यमना न त गरुः। মাযামৃগ• দযিতবেপ্সিতমনুধাবদ্ধ (नर् महाभूक्ष (5 हत्र गात्र विनरः ॥ ইত্যাহ্নিকতত্ত্বত প্রভাগবত।।। महाशूक्षरहा की भाउम्ली। ইতি त्रञ्जभाषा ॥ महाभ्क्यम खिका जी गहा नजावती । ইতি রাজনির্ঘটঃ॥ মহাপুয়া স্ত্রী অপরাজিতা। ইতি भाष्ठन्यका ॥ মহাপৃষ্ঠ: পু॰ উষ্ট্র:।ইতিরাজ निर्घणः।। वृष्ट्श्रेकः।। महा पुक् जिः की पूर्ण। यथा। हि जि কৈতন্য ভাবাদ্বা চেতনা বা চিতিঃ মৃতা। মহান্ব্যাপ্ত ছিতা সর• নহা বা পুকৃতি মতা॥ইতি দেবী-शूत्राधि ६६ व्यद्वायः॥

नराभुजः जि चित्रपरिति कः।

गर्गे भुजा यर्ग्याठ वस्त्रीहि मः

गर्गे भुजा यर्ग्याठ वस्त्रीहि मः

गर्गे भुजा जी मर्जी मिलिः। यथा

। मराभुजा जी मर्जी मिलिः। यथा

। मराभुजा जाव हिमाजादा २ सः

कातः। ইতি সামান্যলক্ষণাया॰

जगरी मः॥

मराभुजः भू॰ भत्रस्त्रः। यथा।

বন্দে হনম্ভা ভূতৈশ্বৰ্য্য শ্ৰীচৈতন্য• नहानुषु । नीका १मि यए नुजा-मार महार ममाठात सुवस्रकः ॥ ইতি হরি ভক্তিবিলাসে ৩ বিলা-স:।। অনম্ভ ম ভূত ঞ্চাবিতক্তি ঐশ্বৰ্য্যুণ পুভাবো যস্য ত খতো ন-**হা**পুভূ· পরমেশ্বর:। ইতি ভটী-काराः, कोवरणासाभी ॥ जानिह। **সোয•ै**नीवागिती थतः मनिভद्या যাত্রা চ সা গুণ্ডি চা তে তে দি খিদি গাগতা: সুকৃতিন স্তা স্তা দিদৃক্ষা-र्खगः। आत्रामाम्ह ट्या नन्दन्वन **শ্রিণা•** তিব্রস্কারিণ: সর্বাণ্যেব ম-হাপুভূ বত বিনা শ্ন্যানি মন্যান-*(*रु॥ इंडि टेइडन)हरम्पु । हरना हेकः মহাপুল্যঃ প্ ত্রিলোকনাশঃ। তৎ পर्य। यः । नः हातः २। इं ज्लागुदः ।। তস্য বিষরণ যথা। শ্রীমার্কণ্ডে-य उवाह। ग्रुखंद्र॰ मानाः काला া ৎপালযতে পুজাঃ। একো মনুঃ ঞাৰজ নবন্তর নিতি শুক্ত ॥ ত েক সপ্ততি যুগৈ দেবিনা নিহ জা া । তৈ শতুর্দশভিঃ কল্পে। দিন ে হন্ত বেধসঃ।। দিনান্তে বেধসো আতে সুষ্প্রা তস্য জায়তে। যোগ ্বে নহানাৰা সনাৰাতি পিতাম-⊱ ॥ নাভিপদ্ম• পুৰিশ্যাথ বিষ্ণো ্ তে তেরদ:। স্থ স শেভে ভ ৰ**ান্ বৃদ্ধা লোক পিতাম্ছ: ॥ ত** 🚈 विष्टुः य " जूना कर्ताशी जना बन्धा भूवनमान ।। यान न नवः ज् या बग ॥ वागुना व**्रिना नर्ब ए। म्यानानदि यथा। यहाशुद्धरकात्न** उथा **मर्बर क्षम प्रयर** ॥ क्षेत्रर याखि হাপার্তা মহর্লোক নিবাসিন: । रनाकाः मार्यामान भोषिज। ৰুণাগ্নিনা।। ভতঃ কালান্তকৈ মে-नाना वर्षे मंदाश्रोतः। अमू शान्। हावृष्टि माभूर्य) जुवन वय ।। हल-ब्रेट्स खायोरिय ब्राधुतङ्गान मक ं हः। निषाय कठेत्र त्नाकानिमा॰ नि न जनाफ्नः॥ नाजनर्ग्यः भयः ্র শেতে স পর্নেশ্ব:।৷ শ্যান । छिक्रता वुक्षान म क्रमर भुजूः॥ 'सारा बोनिनात्झाकान् मध्या मध्या ুণুথা সহ। শেতে স ভোগিশ্য্যা

যা বুক্ষা নারাযণাত্মকঃ৷৷ যোগনিদা বশংযাত জৈলোক্য গ্রাস বৃংহিতঃ। ত্রৈ:লাক্য মথিল দধ্ধ যদা কা**লা**-গ্নিনা তদা। অনন্তঃ পৃথিবী ত্যক্ত্বা বিফো রম্ভিক নাগতঃ ৷৷ তেন ত্যজ্বা তু পৃথিবী ক্ষণ নাজাদধো গভা। প-তিতা কুৰ্ম পৃষ্ঠেতৃ বিলীর্ণেব তদা ভ-বং ৷৷ কুর্মোপি সহতো যন্ত্রাচলন্তী• পৃথিনী• জলে। বুন্ধাণ্ড• পচ্চি রাক-ग्र शृष्टि मर्थ धनाः जमा ॥ तुन्नाख খণ্ড সংযোগাচুর্ণিতা পৃথিবী ভবেৎ । ইতি তা॰ পরিজগুহে কৃর্যারপী জ-नार्धनः ॥ हनक्जलीय मः मर्गाहन-स्त्रा १ इंगा जना । क्ष्म् भृष्टे वञ्जेत র্বরভৈ বিততীকৃত ।। অনম্ভ শুত্র গ ष्। जु यब क्रीद्यानमागतः। जब स्य िन्या युक्त मूत्रुष्ठ जनाफन ॥ क्वा मध्या मध्य विल्वाका गुम বৃ•হিত•।। পূৰ্ব• কণ• বিভভ্যোদ্ধ্ • পদ্ম॰ কৃত্বা মহাবল:। বিকু মাছাদ-যামাস শেষাখ্য: পরমেশ্বর: ॥ ত-স্যোপধান নকরোদনন্তো দক্ষিণা• ফণা•। উত্তরা• পাদযো শ্চকে উপ-थानः भशावनः॥ जानवृष्ठः जमा চ-ক্রে সংশযঃ পশ্চিমাণ ফণাণ। স্বযন্ত বীজযামাস শেষক্পী জনাদন ।। শান্ত্ৰণ চক্ৰণ নন্দকোনি নিযুখী ছে ন-

कावनः। विभानयाथ क्राया न पर्ध गक्छ जन।।। गना भन्मक भाक्क **७रेथ**व विविधायुधः। यानि हान्यानि कृषा सकः कायः भयनीयः छना इरद्रः । পৃথী মধর কাষেন মগ্না মাক্রম্য চান্ত্রসি। তৈলোক্যবুদ্ধ সহিত স-चन्नीक बनार्फ्न । (मानामक बग-দ্বীর জগৎ কারণ কারণ। নিত্যা ननरः (वहमयः वृक्षगुः श्रवस्थवः॥ बग एका त्र कर्ला त्र का त्र का त्र व কারণ । ভূত ভব্য ভবমাথ পরা-পর পতি হরি ॥ দধার শিরসা नष्ठः स्रगरम् स्रकाः उन्। ७वे पुका रिनरेम्य भुभाषन निमा॰ इतिः। সন্ধ্যাঞ্চ সমধিপ্রাপ্য শেতে নারা-या। १व।यः ॥ यसाम्यङ भूनाया <u>युक्तभः ज्ञाप्तित्व मित्त । उच्चारेप्तनः</u> দিন মিতি খ্যাপবন্তি পুরাবিদঃ॥ ব্যতীভাষাণ নিশাষাস্ত বুন্ধা লোক পিতামহঃ। ত্যক্তা নিদ্যুণ সমুত্তস্থৌ न भूनः मृष्टेरय जिल्हा। ইতি কালিকা পুরাণে ২৭ অধ্যায়ঃ ।। ন্যায়নতে জ-ন্যভাবানধিকরণ কালঃ। স চ চর্ম र्वः मक्षाः ॥

महाभूमानः भू॰ विकृतियवन्तानि।
यथा। भारतान्यकः निर्मानि ।

বেদ্যঞ্চ বিশেষত: । মহাপুসাদ ইত্যক্ত্বা গ্ৰাছ্ম বিফো: প্ৰযুত্ত: ।।
ইত্যেকাদশীতত্ত্ব ধৃত মৎস্যসূক্ত বচন ৷৷ জ্ৰীজগন্নাথস্যমহাপুসাদ্মাহাত্ম্য জগন্নাথ শদ্দে দুষ্টব্য ।।
।৷ অতিশ্যপুসন্নতা চ ৷৷

महाभागः भुः (पागकाकः । ইতি

त्राक्षनिर्घणेः ॥ वर्गविरणयः । नह ।
थ घ ह वर्ष ह ध थ क छ न व म ह
क्राः । यथा। वर्गागाः भुषम छ्ठीय
भक्षमाः भुषम छ्ठीय यस्मी य त न वान्हान्नभागाः । जस्म महाभागाः ইত্যর্থঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌগুদী।।

नश्कनः भू वित्रकः। ইতি রজ-भाषा ॥ वृश्यकत्व की ॥ भश्कषा जी हेन्द्रवाक्ती । ইতি कोधितः ॥

মহাফেণা ন্ত্রী হিণ্ডীরঃ।ইতি শব-চন্দ্রিকা।।

নহাবল ক্লী সীসক । ইতি হেন-চল্দ:।।

মহাবলঃ পু॰ বুদ্ধা ইতি ব্রিকাণ্ড। শেষঃ ॥ বাযুঃ ॥ বলীয়সি ত্রি । ইতি হেমচন্দুঃ॥

মহাবলা ত্রী বলাভেদ:। পীত্রা-ট্যালক:। তৎপর্য্যায়:। খান্যপ্রো-ক্তা ২ অতিবলা ৩ পীতপুর্না ৪ !

ইতি রন্ত্রনালা॥ মহাবোধিঃ পু॰ বুদ্ধঃ। ইতি হেম ठमुः ॥ মহাবান্ধণ: পু॰ নিন্দিতবান্ধণ:। ইতি পাণিনিব্যাকরণ ॥ অমিন্ (मान व्यान व्यापना निष्य न नुमिषः।। महाजु को गङ्गा इंजिन्समाला ।। কাশ্মরী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। महा छि: भृ• चा जिम्म या द्वा। यथा । তদোজসা দৈত্য মহাভটার্লিত• हकाम मस्रः थ उमीर्ग मीक्षिति । ह-ক্রেণ টিছেং নিশাত নেনিনা হরি र्यथा जार्क भउध मृत्तिः ॥ इंडि প্রিভাগবতে ৩ ক্ষান্ধ ১৯ অধ্যাব:॥ ন্নী ব্যাসপুণীতেতি-াহা ভার ত • হাসশান্ত। তমাম কারণ যথা। একত শততুরো বেদা ভারতক্তৈত (एकडः। भूता किल जूरतः नरिर्दः সমস্য তুল্যা ধৃত ॥ চতুর্ভ্য: স রহস্যেভ্যে বেদেভ্যে হভ্যধিক यमा। छमा भुज्ि लाक श्रमन् নহাভারত মুচ্ছত।। মহবাজা রতত্ত্বাচ্ন মহাভারত মুচ্যতে। ইভি महाভाরতে আদিপর।:#।।(লাক বিশেষেষু ভস্য শ্লোক সংখ্যা বাচ শ্চ যথা। ৰপ্তি:শত সহসাণি চ ্বান্যা সসংহিতা। বিশেছত

সহসুঞ্চ দেবলোকে প্রভিষ্ঠিত ।। পিত্রে পঞ্চদশ প্রোক্ত রক্ষো যক্ষে हजूर्यम। এकः मञ महमुख मानुरवयू পুতিষ্ঠিত।। नात्रामा श्रमावयाप्यवा-निमाखा (प्रवतः शिकृन्। शक्षर्व यक् व्रकाः नि भावयामान वि भूकः ॥ व्यामः स्व मानू (व लाएक रेवणम्मायन উক্তবান।ইতি মহাভারতে ১ পর্মণি व्यक्कमिकाभागः॥ 🕸॥ ७७ म-তপৰাণিতেম্বস্থাদশ নুখ্যানি যথা৷ व्यापि मंडा विशिनानि विद्रारे (शा-माम जीचा धक्ति ह कर्नः। मनाह সৌপ্তিক পর্ব তথা জ্রী লান্ত্যনুশা-স্তি তরস্মনেধাঃ॥ আশুম নৌবল যানিক নাকা: পর্বণি পর্বণি নাম বিশেষা:।। ইতি ভারতটীকা।।#॥ হরিবংশ সহিতোনবিংশতি পর্ব-ণানন্তৰ্গত শতপৰ্ববিভাগ স্তেবাম-ধ্যায় শ্লোক সংখ্যা চ যথা। ১ আ-দিপর্বণি ১৯ পরাণি ২২৭ অধ্যাযাঃ ৮৯৮৪ শ্লোকাঃ। ২ সভাপর্বণি ৯ প-र्वाणि १४ व्यव्ययाः २०७७ द्याकाः। ও আরণ্যকপরণি ১৬ পরাণি ২৬১ व्यथाभाः २२५५ ८ ताकाः । ८ वि-রাটপর্বণি ৪ পর্বাণি ৬৭ অখ্যাযাঃ ২০৫০ স্নোকা:। ৫ উদ্মোগপর্বণি >> शर्राणि ३६५ व्यथायाः ५५२५

নোকা:। ৬ ভীমপর্বণি ৫ পর্বাণি ১) १ अथायाः ०५४३ (साकाः । १ ব্ৰোণপৰণি ৮পৰাণি ১৭০ অধ্যায়াঃ ৯৯০৯ স্নোকা: । ৮ বর্ণস্থানি ১ পর্ব ४२ वर्गायाः ६२५३ (साकाः । 2 শল্যপর্ণি ৪ পরাণি ৫৯ অধ্যাযা: ৩২২০ শ্লোকাঃ। ১০ সৌ প্তিকপৰণি ৩পর্বাণি১৮ অধ্যায়া: ৮৭০ শ্লোকা: 1 >> क्षीनर्दा ६ नर्दा विश्व व्यक्ता याः १११ (भाकाः । ३२ मास्रिमर्वनि 8 भर्तान २०० व्यक्तायाः २८१०२ শ্লেদা: । ১০ অনুশাসনপৰণি ১ পার ১৪৬ অধ্যায়াঃ ৮০০০ শ্লোকাং। ১৪ অখনে হপর্ণ ২ পর্নী ১০০ ष्यग्रामाः ३३२० (मुक्ताः । ३६ जा শ্ববাসপর্ণি ১ পরাণি ৪২ অব্যা याः १२०७ ह्याकाः । १५ तोवन्नन-र्व १ ७ शर्ब ৮ अध्ययाः ३०० स्मावनः 1 : १ नहा भाषा निक भवं १ ५ भवं **७ व्यक्तासाः १२० (ज्ञाहाः । ३४ चर्ग** পর্ণি ১পর্ব ৫ অধ্যায়া:২০০ শ্লো-কাঃ। :৯ হরিবংশে আশ্চর্যপরণি **) भर्ब २८८ व्यव्यासाः ३२००० स्थाकाः** । হরিবংশে ভবিষ্যপৌষ্কর পুদ্র্ভা বে ১পর্ব ১১২ অধান্যা: ৩১৪৮শ্লো-কাঃইতি নহা লাতে আদিশঘ্ণি পরসপুহ নাম हर जवडायः ॥ 🗱॥

ত भावन विध्याति यथा। जनम्बर উবাচ। ভগৰন্ কেন বিধিনাশ্যেভব্যুণ ভারত বুৰৈ:।ফল কিংকেচদেবাস্ট भूखंग रेवं भाद्रशिष्ट् ॥ (मय॰ अना-श्च अगवन् किष्ण भर्वा भर्वा । वा **চकः कीमृणकाज এই**वा खुषुवीहि स्म ।। १।। रिम नायन उवाह। मृण् ब्राह्मन् विधिनियः कनः गहानि ভाরতাৎ ৷ শুকা ভবতি রাজেন্দু যত্ত্বণ নান্মু-भृहिन ॥ दिवि (हवा महीशान की-फार्थ नवनि गडाः। कृत्र कार्या नि-भरेक्षव ७७७ दिव नागटा: ॥ इड यख भुवक्तानि छ। गृष्ठ नना हि उ:। भवीगाः (त्वजानाकः मञ्जवः वनुषाः তলে ৷৷ খাত্ৰ কণু৷ তথা সাধ্যা বিখে-নেবাক শাখতাঃ। আদিত্যাঅখি भौररवोरनाकशाना गहर्य्यः। एश् কাশ্চ সাম্বর্যা নাগা বিদ্যাবরা স্ত-थ। तिखा धर्मः त्रयसुक्त गूनिः का **ज्यायत्मा वदः ॥ शिव्ययः मागद्रा नम्** खरेववाञ्चतमाः श्याः। गुहाः मः **ब८ म**ब्रेटकिव व्ययनाम् ४ छव ।। ऋावतः क्षक्रमेका कग्ट मर्बः मृताः সুন । ভারতে ভরত পুেঁষ এনস্থ নিহ দৃশ্যতে ॥ তেষা শুত্রা পুতি-क्षानः नान कमानुकी बनाए। कृष्ण পাতক বোর সন্যোদ্যেত হান :

॥ । इंडिशान निन मुन्। यथावरन् " পর্শঃ। সংযতাত্তা শু.চ ত্রা পা ্ৰ**াত্বা চ ভারত।৷ তেবা- শান্ধা**-ं দেয়ানি শুদ্ধা ভারত ভারত । া চেভেয়ে যথা শক্ত্য ভক্ত্যা চ ४ ° उर्व छ ।। **महारानानि (ए**वा नि द्र-नि वितिशानि ह। गावः का॰रम्।-ताहाक कन्यारेकत यनक् अः॥ ্ৰ্য কাস্ গুণোপেতা যানানি বিবি-ানি চ। ভবনানি বিচিত্রাণি ভ্নি-বালা•লি কাঞ্চন•।। বাহ্নানি চ দে-গ্রনি হ্যা নত্তাক্ত বার্ণাঃ ! শ্যন िंधविकारेण्डव मान्त्रनाण्ड यणकृञाः वचर्ग्रह वतः कि विः यद्य रिख নত্রসু। তত্তবেশ বিল্লাতিভা সা-জ্যা দারাক্ত স্নবং ।। শুদ্ধবা পর্যা ্বঃ ক্রনশ স্তন্যপারগঃ। শক্তিত: श्वाना क्षेः मृभुषु ब्रिक्ननः॥ #॥ तज्याद्धवंदराजा माष्टः मृक्तिः (मोठ अगदि उ:। শ্ৰুবানো জিভকোংখা रथा निद्यु उष्ट्रा म्हि: मीना-্রাচার: শুদ্ধবাসা জিতেনির্য:। मः ख्ठः न र्मा ज्ञ कः मुक्त शाना १न ्यकः ॥ क्लवान् म् ज्ला मानः ज क्यांभी किर्जन्त्यः। मान नान ग्र ছীত্রক কার্য্যে। ভবতি বাচক:।। অ भुगन्नमना य ख ग्रक्त अभित्र म्हिलं

ত**া অস**ণসক্তাক্ষ**রপদণ রস** ভাব जनवि ड॰ ११ जिविष्ट दर्ग मः युक्त महै স্থান সমন্বিত । বাচ**যেদ্বাচক: ৰস্থঃ** चात्रीनः त्रुत्रवाहिष्ठः ॥ नाद्रायपः नमञ्डा नदर्शक नद्गालनः । एर-বীং সরস্বতী ক্ষৈব ভতো জয় মুদী-त्रायः ॥ विष्णाचाठकाष्ट्राङम् भूष् ভারত ভারত । নিযদ ছ: শুটিঃ শোতা শ্বন্স ফল নম্ভে॥ #॥ भारतः भुषनः भाभः विकान् कारेनः क्ट उर्भयन्। व्यः द्वारियान्। यागन्। **कन• रेव न ५८७ नद्रः॥ अञ्च**रद्राभग नकीर्न विनान न जा ज नहर । नु-श्रष्टे: मञ्दरिवक दिव याजि ममा-হিত:॥ দ্বিতীয় পারণ প্রাপ্য আ-তিরাত্র ফল॰ লভেৎ। সর্বরত্ন ময়॰ **क्तियुः विशान संदिद्धाञ्**ञि ॥ **क्तियु** নাল্যায়রধারা দিব্যান্ধ বিভ্বিতঃ । स्विताक्षस्थाता निजाः (स्वाकारक মহীমতে ॥ তৃতীয় পারণ প্রাপ্ত द्यारणाष्ट्रकन् लाउट्यावमञ्ज्ञतन मकारमा वर्षागुगुजरमा निवि ॥ b-जुःर्थ वाज्ञलयम् नक्षा षिर्गः कन । উদিত। বিত্য সঙ্গাশ জ্বন্ত ন্নলোপন ।। বিনান বিৰুধি: সা ৰ্দ্ধ নাৰ্থ দিবি গছতি। ব্ৰায়্তাৰি ভবনে শক্রস্য দিবি মোদতে ॥ বঙে

षिखन गडीर अथान बिखन कन । किनाम भिश्रदाकाद्र रेवपूर्य। यय व-দিক• II পরিক্ষিপ্তঞ্চ বহুধা মণি বি-ষ্ঠন ভ্ৰিতে । বিমান সম্বিষ্ঠায় কা भगः সাञ्जाद्यागमः ॥ अद्योन (लाकान् বিচরতে দ্বিতীয় ইব ভাস্কর:। অষ্ট-নে রাহ্স্যসঃ পারণে লভতে ফল॰ ॥ চল্দ্রোদয নিভ॰ রস্য • বিমান নধি। রোহতি। চন্দুরশ্মি পুতীকাশৈ ई रिय यू कि॰ सत्नाङरियः ॥ त्मवऽसारनाः বরস্রীণাণ চন্দ্রাৎকান্তভরৈ মূর্ থৈঃ । (मर्थकानाः निनाहिन नृश्वागायः निष्ठतेनः ॥ अएक भत्रम नात्रीगाः जूश সুন্থো বিবুধ্যতে। নবমে ক্রভুরাজস্য বাজিমেধস্য ভারত ৷৷ কাঞ্চন শুম্ভ निय् इ॰ विमूर्य। क्छ (विम्क॰। कामून-**एमरिय फिं देव) र्गवारिक: मर्ज्ञा वृज्ञ**। ।। (मिवि उ॰ हाञ्चद्रः म॰रेव र्गक्रदेवं फिं বিচারিভি:। বিমান সমধিষ্ঠায শ্রি ्या भवनया ज्ञुलन्।। क्वित्र नाल्यास्र त्रव्रता क्वित हन्त्व क्विजः। स्मान **एक रेमवरेजः मार्खः मिवि एमव इ**वा পরঃ ৷৷ দশন• পারণ• প্রাপ্য দ্বিজা তীনভিবন্দ্য চ। কিঙ্কিণী জাল নি র্ঘোষণ পতাকা ধৃদ্ধ শোভিতণ ৷৷ বসু বেকি সংকাশ বৈদ্যাস্থলি ভোরণ । (रुमजान श्रिक्थि भुवान व्फ

ভীমূপ। গন্ধবৈ গী ত লশলৈ রপ্প-রোভিচ্চ শোভিত ৷৷ বিনান সুকৃ তাবাস• স্থেনৈবোপগ্নস্তাত্যামূল-एरेनार्कवर्णन काशूनम विज्विता। पि-व्य हन्त्रन क्थिताकः। निवासान्य वि-ভ্ৰিত: ৷৷ দিব্যান্ লোকান্ বিচরতি দিবৈর ভৌগৈঃ সম্বিতঃ ৷ বিবুধানা• शुनादिन भियाशत्रमया युजः॥ व्यव বর্ষগণানেব॰ স্বর্গলোকে মহীয়ন্তে ৷ অথ গন্ধর্ব সহি তঃ সহসাণ্যেক বি-শতিং ৷৷ পূরন্দরপুরে রম্যে শকেণ সহ মোদতে। দিব্যবান বিনানেষু লোকেষু বিবিধেষ চ।। দিব্যনারীগ-ণাকীর্ণো নিবসভ্যময়ে। মথা। ভঙ্কঃ সূর্য্যস্য ভবনে চন্দু স্য ভবনে তথা।। **लिवना उबरन बाइन विरक्षा यां**जि সলোকতা । এব নেতমহারাজ না-क कार्य्या विठाइना ॥ भुष्ट्यात्नन देव-ভাব্যমেৰ মাহ গুৰু ৰ্যাম।।#।:লেখ-कन्। जू माजवारभनमा यव्यमिह्नि॥ **श्ख्राच त्रथ यानानि वाश्नक्ष वित्य-**य उ: । करिकः अञ्चलेक्षय तुकामूदः তথা পর• ৷৷ বস্ত্রঞ্চৈব বিচিত্রঞ্চ গন্ধ-ঞ্চিব বিশেষভঃ। দেববৎ পূজ্বেন্তস্ত विक्लाक भवाय गाए।। 🚁।। जाउः **शतः भुवक्षानि या** निष्ट তে। বাচ্যবাদে তু িপ্রে

भवंगि भवंगि॥ काजि॰ एंग्येक म ख्य गाहाबार छत्र छ र धर्म वृज्जिक विज्ञाय कवियाना नतावि প ॥ স্বস্তিবাচ্য ছিলানাদৌ ভতঃ कार्यः भुवर्ख्छ । मनारथ भर्वि । ততঃ স্ব শক্যা প্রয়েৎ বিজান্।। আদৌ তুবাচকন্তত্র বস্ত্র গন্ধ সমবি-छ । विविव एका करम न क मधू भाय त्र मूखन ।। ততো मूल कल भाग পায়স• মৃধু সন্ধিষা। আন্তীকেভো-क्रायमाङम् मन्त्रादेहव च्राजीनन ॥ चान्रेन रेक्टव न्रिक्क भारतिकक সমন্বিত । সভাপর্যণি রাজেন্দু হ-বিষ্যা ভোজাহেৎ বিজান্ম আরণ্য क ग्लक्टेन उर्भाग्नु दिकानगान् । यत्रीशर्व हामाम् इलक्सान् श्रु माभरय ॥ जर्भगानि ह मूर्यानि রন্যমূল ফলানি চ। লর্কাম গুণো পেত বিপেডেয় ২য়৽ পুদাপযে ।। বিরাটপর্বণি তথা বাসাংসি বিবি ধানি চ। উদ্মোগে ভরতশুেষ্ঠ সর্ব কান গুণান্বিত ।।ভোজন ভোজ্যে षित्रान् शक्षगारैना तनक्रजान्। जी-শ্বপর্ণি রাজেন্দু দল্বা যান মনুত্রমণ " ভক্তঃ সূর্গুণোপেত সন্ন দদ্যাৎ শ্ৰ পুণপৰ্বণ বিপেত্যে माहिङ।। भारताक (म

या तारजन्ति होनान्यज्ञात्वर उदी । কর্ণপর্বণ্যপি তথা ভোজন সার্ব কামিক•॥ বিপ্রেভ্যঃ সংস্কৃত• সম্য क् मन्। ८ मन्यटमानमः। गर्वाः পর্বণিরাজেন্দু মোদকৈ: সহুডৌর-रिनः ॥ অপুरेश खर्भ रेग रेम्घव नर्बमः **स॰ भूमाभाय । शमाभ ई**ग्राभ उथा मृत्रमिष् भूमानरगट् ॥ जीनर्वि उथा तरेष उर्भागल विकालगान्। घृट्डोरन॰ भूत्रसाह वैयोक मार्भ-राष्ट्र भनः ॥ ७७: मर्ब खर्गारगठ समः मन्त्रायः सूत्र-कृष्ठः। साहिल-র্ব্যাপি তথা হবিষ্য ভোর্যেদ্দি জান্।৷ আশ্নেধিক মাসাদ্যভোজ-**ন॰ সার্বকামিক**। তথা শুমনিবাসে: ज् इविष्ठाञ्जाक्षर विकान्॥ भी-यत्न मार्बछिनिकः गन्ननान्।नृतन-পন°। নহাপাস্থানিকে তদ্বৎ সর্ৱ-কান গুণাব্বিত ৷৷ যুর্গপর্ণ্যপি তথা হবিষ্য ভোজবেদ্বিজান্: হরিবংশে পৰ্ণিচ পায়স• তত্ৰ ভোজনৈ 🔠 পারণে পারণে রাজন যথা বন্দরত্ত-ৰ্যত। স্থাপ্ত স্থাঃ পুৰতঃ সংহি-जाः **ना**ञ्चरकाविषः ॥ अ॥ नुराज (पराना নিবেশ্যাথ কৌন বস্ত্রাভি সংবৃভাঃ । শুরাম্বরধরঃ সুগ্নী শুচি ভূঁজা মল-কৃতঃ।। অন্তলেত যথা ন্যাল গলাক

লৈঃ: পৃথক্ পৃথক্। সংহিতা পুত্ত-कानुष्ठन् भूगठः मुममाहिकः॥ छ-কৈ গোলৈ গুল পেৰৈক্ষ কামৈক্ষ ৰি-विरेशः मूर्जिः। हित्रगुर्धः जूदर्भकः व-किगामय मानारू ॥ (मवजाः की-र्खराय मर्बा नहनातारारा उथा । ততে। गरेन्नम्ह मारेनात्रम्ह चनाःकृत्रः। षिखालगान् ॥ जर्भायवितिषः का-रेब फ्रीनस्फाहावरेह खबा 1 व्यक्ति রাত্রস্য যজ্জস্য ফল• প্রাপ্সোতি না নব: 11 প্রাপু যাছ ক্রতু ফল তথা পর্বণি পর্বণ। বাচকো ভরতশ্রেষ্ঠ वाङाकत शर बतः॥ ভবিষ্য শाव-যে বিধান্ভারত ভরতর্ষত। ভুক্ত वर्म विकास्य गया वर्म नुमान ধেৎ।। বাচক ভরতশেষ্ঠ ভোজযিত্ব ৰণক্ত । বাচকে পরিভুপ্টেত শুভা প্রীতি রনুজনা।। ব্রাক্ষণেষু তু তুঞ্চেষু পুসন্না: সর্বদেবতা:। 🗱। ততো হি বরণ কার্য্য দিজানা ভরতর্যভ ॥ **नर्बकारेन येथा न्यायः ना**धू जिन्ह न् থিবিং। ইত্যেষ বিধিক্দিপ্তো নযা তে দ্বিপদা বর । শুদ্দধানেন বৈ ভা ব্য যুখা জ পরিপৃষ্টা ভারত শুবণাদাজা পারণে চ নৃপোত্তন ॥ সদা বন্ধবতা ভাষ্য শুবন্ধ পর্মন ह्वा । सः। ভाরতः मृत्यामिठाः ভा

র ও পরিকীর্ত্তাং । ভারত ভবনে যস্তস্য হ্তপতো জৰ: 🖫 ভার্ড• পরন পুণ্য ভারতে বিবিধাঃ কথাঃ । ভারত সেবাতে দেবৈ ভারত প রমণ পদ ।৷ ভারত সর্বশাস্তাণা मुख्य॰ ভরতর্বভ। ভারডাৎ প্রা-**প্**रভिर्माक खबुरमण्ड्वीमि छ॥ गराजातज्यायग्रानः क्रिजिः गाक नत्र और। बुक्तिगान् रक्तिवर्षाक् कीर ভয়মাৰশীদভি 🗓 বেদে রামাযণে পণ্যে ভারতে ভরতর্বভ। আদৌ-চান্তেচ নধ্যেচ ছরিং সর্বত্র গীবতে 🔃 যত্র বিফুক্থ। দিব্যাঃ শুক্তয়শ্চ नवाजनाः । उत्हाकवाः भन्त्यान भन्न भन गिर्ह्डा। ७३८ भविब॰ পর্য মেতদ্বর্ঘ নিদর্শন । এতৎ সর্ব গুণোপেত শ্বোতব্য ভূতি মি ছু ভা।। ইতি মহাভারতে হরিবণশে गर्बभर्वानुकीर्खन ।। # ।। विषश्चिर्प সংযুক্ত মিড:ত্র ত্রিষপ্তিবর্ণা:৷ অ ই উ খা ৯ ইতি হুমপঞ্চ । আ ঈ উ স্বার ইতি দীঘপঞ্চ ৮ ৷ আ ই উ শ্বা ३ ইতি প্লত পঞ্চৰ। এ ও ঐ ঔ চ দীর্ঘা:। প্লুতত্তে নাপর চতুষ্ট্রয∙ । অ• অ: ক× পত ইডি চত্ত্বার:। গ্রা ঠু ইডি অচ जःद्धको हो। अनुनामिक्रेकरः । তথা কাদি মাবসানা: পঞ্বি শতি

वर्गाः । वाडञ्चान्द्वातः। उपा हजू 🕏 য নিতি তিব ছিঃ। ইতি।:#।। বর্ণা-ना किलाक्षी ज्ञानानि ভवन्ति जानि যথা। উর: কণ্ঠ: শের স্তালু জিস্থা দন্তৌষ্ঠ নাসিকাঃ। অঙৌ স্থানানি वर्गाना य विषु एउ हि भाठेकाः। ইতি॥#॥ পারণ যথা।ভারত শতপর্যোক্ত মুনিনা তত্ত্বদর্শিনা। পর্বতি দৃশভিক্ষেশ পর্ণাণ পা রণ মৃত নিতি বিক্রমাদিত্য: ॥ দুতোম্ভ পূথন পোক্ত দ্বিতীয় वनवामिकः। উদ্যোগান্ত তৃতীयस की बाहिक दृतीयक ।। शक्षम पूर्-ণ্পরান্ত কণান্ত পারণ: তত: ! বিশোকাড় সন্তমন্ত শান্তিপৰীত ग्रेन ।। नवन अर्गर्वाष्ठ माण्ठ-র্য্যাম্ভ নতঃপর• । ইতিচ ভারত **गिकायाः जञ्जू निम्पुः ॥** राजीजा जी मब्बानगृकः।यथा । স্পর্ণলক্ষা মহাভীতা বশিনী চ गःशेयिक्षः । ইতি मद्गठिनुका॥ অতিশগভযযুক্তে তি॥ হাভীঃ: প্ শান্তনুরাজ:। ইতি क्रिषद्रः ॥ ज्ञिनामक भिवन्नात-পাল:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥ অ । বিশ্ব ভ্ৰমানকে ত্ৰি॥ श्राक्रीयः भू॰ (गाभाविकाथ)कीर्छ- || महामनः भू॰ मखहरी। ইভि व्यय-

বিশেষঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।। অতি ভয়শীলে ত্রি॥ নহাভীম: পু॰ শান্তনুরাজঃ। ইঙি ত্রিকাওশেবঃ।। महा छ्उ॰ क्ली भृषिव sा पि शक्ष छ्उ॰। বথা। মহাভূ গণি পক্তিৰ খানি-লাগ্রন্ ভ্রিভি:। ইভি শব-विमुका ॥ गराज्यः प् नीवज्यबाजः। इंडि ब्राक्रनिर्घण्डः ॥ नश्रात्वतः भूः भव्रव्यक्षीरदः। यथा। या श्लो मश्राटेखद्रवाश्रः न कायः नावरका हतः।रेखव्यः भूः थरगवायः गगाध्यका इत्राज्यकः॥ ইতি কালিকাপুরাণে ৪৬ অধ্যায়ঃ महारजाना जी मूर्गा। यथा। महार्थ-नायनी(पवी बकारकाशा ठठ: मृज ইতি দেবীপুরাণে ৪৫ অধ্যায়ঃ।। ম্ভান্ডুর: পু· পীত্ম্ভূক: (সা-নাবেড ইতি ভাষা। ইতি রাজ-नियंग्डे: ।। महामिं १ १ विवृक्षिमान्। यथा। कि भिउना जिजानां मि जान-ন্নলি মহামতে। যৎ প্রেম পুরণ ঞ্জিত বিভণেম্বলি বন্ধু ॥ ইতি माक (अयभुदारा (पवीमाहाचाऽ ॥

রজ্বলী। অভিশাহর্ষ:। অভিশাবর্তা চ। তদ্তে তি ।।

শ্বনজ্তা চ। তদ্তে তি ।।

মহামনাঃ তি নহাশ্যঃ। যথা।

মহেছে তৃভটোদারোদাভোদীর্ণ

নহাশ্যাঃ। নহামনামহাজ্যাচেতি

হেনচন্দুঃ।।

মহানাত্র: পু॰ পুধান: । ইত্যমর: ।।
সেনাপত্যাদিষু নহতী নাত্রা ধন॰
পরিছদো বা যেষা॰ তে তথা।
ইতি তউীকাষা॰ ভরত: ।। সমৃদ্ধ:
।। অমাত্য: ।। হস্তিপকাধিপ: ।
ইতি মেদিনী ।।

নহানাত্রী জ্রী আচার্য্যপরী। ইতি
কটাধর: ।। নহামাত্রপত্নী চ ।।
নহামানসী জ্রী জিনানা বিদ্যাদেবী
ভেদ: । ইতি হেমচন্দু: ।।

महामाया छी हुर्गा। ইতি भद्र द्वाः। वना।। उम्राः यक्षभः यथा। गर्छाः छर्छान मण्डाः प्रकृषि मा करितः। উৎ भन्नः छान तिहरू मा करितः। উৎ भन्नः छान तिहरू मा करितः। उपा नित्र छतः।। भूकी जिभू ने मा विष्णा है। विष्णा विष्णा विष्णा विष्णा है। विष्णा विष्णा

नागक कहा करता है।

यति मा (भूका एक ना जनमायती ॥ इठि का निकाश तात क अधायः॥ महजीमाया ह॥

महामायी खी पूर्ण। इंडि भस्तद्वावनी॥

মহামারী জী মহাকালী। যথা। व्याह्य• **उरियंद्य मकन**• वृक्षाख• মনুজেশর। নহাকাল্যা মহাকালে नहानाती अक्षणगा।। रेमन काल महामाती रेमव मृष्टि र्जवज्रहा। স্থিতি করোতি ভূতানা সৈব কালে সনাতনী॥ ইতি মার্কণ্ডেয-भूतापः ॥ অভिশ্यमञ्जूकन्छ ॥ মহামাষ: পু॰ রাজনাষ:। ইতি मद्रिनुका ॥ महाम्यः भू॰ ऋष्ठीद्रः। ইতি हिम-**हन्दुः**॥ वृङ्ग्राथ क्षी । उष**ि छि ॥** महामृतिः शृ यगस्यः॥ वृक्तः। ইতি শবরহাবলী।। কৃপাচার্য্য: ॥ कालः। इंड्रजयशालः ॥ व्यातः। रथा। धर्मः (भाष्त्रि ७ कि ७ वि। २ व পর্যো নির্মৎসরাণা সভা বে-দ্যু বাস্তব মত্র বস্তু শিবদ তাপ-**बलाम्बरः। ध**्यकः अवस्य स्वर মুনিজ্তে জিলাপত 🕟 🕟 🗥 **ङ्**रप्रक्षपुर**ः २७**न् १००

श्रिभ्

ধং হচ∾'⊂ ॥ ইতি শ্রীভাগবতে ১ ক্ষ জাস সংগ্ৰায়:।। তুগুকৃক্কঃ।ইতি রাজনিঘট: !!

वनी ।। धन्याक । ইতি জটाधनः ॥ মহামুদ্ধী পু॰ শিব:।ইতিনহাভা-রতে তস্য সহসুনাম ভোবং।। वृङ्ग्रखक्यूरक बि॥

गरामृनः भ्॰ ताजभनाषुः। ইতি রাজনিহণ্ট: ॥

नहागृहार की महार्घ। दहम्हार। মহয় ভন্ল্য চেতি কৰ্মধার্য স-মাস নিয়য়•॥ তদাকে তি ॥

गहाम्यिकः भू वृष्ट्रमृत्रकः। उर्भ र्यायः। भ्वी २ विष्यु म वाङ्गः ० म-शकः ८ भगाताती ৫ ভृकनः ७ ভিত্তিপাতনঃ ৭। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ

गरागृगः भू रखी। इंजि एस्न हन्तुः ।। শরভঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। ।হান্ত্যঞ্জনঃ পু॰ শিবস্যমন্ত্রবিশে **মঃ।** যথা দেবুগুৱাচ। যদি নে মহতী পুঁ।তি তথাতি সলভৈরব। কথ্য-य वित्मारमण सहामृज् अवा जियः॥ रेलवर फेराइ। मन् (मरि भूरक्र)। नि ि 🐪 🤚 गि अथ । आयुर् कि

ক্ল গুলালে ত্যা মৃত্যুকরণ পরণ

ः यभावि 💎 मारवंग वित्रकीवी

भशाम

নিরাময:। নিত্যমষ্টশত জপ্তা মৃ-ত্যু মৃত্যুপথ নযেৎ।। ইতি মৃত্যু-প্রথতন্ত্র•॥

गरामूनि ली 'ঔষধ•। ইতি শব্রত্না- , गरामिशः পু• শিব:। ইতি মহা-ভারতে তস্য সহসুনাম স্তোত্র ॥ অতিশ্যনেঘশ্চ।।

> महारमः भ् अष्टेवर्शभूमिष्कोवध विरम्यः। ७८ भर्गायः। भूरतास्वयः ২। ইতি রত্নালা ।। বৃহন্মেদশ্চ।। महारमना जी अष्टेवर्णम् निष्को वद-বিশেষ:। তৎপর্য্যায়:। বসুদ্ধি দু २ जीवनी ७ शाः भूताशिनी ८ पर्व-है। ৫ मूत्रास्ममा ७ मिरा १ (म्द्रम-ণিঃ ৮ দেবগদ্ধা ৯ মহাছিদা ১০ বৃক্ষার্থা ১১ ১অস্যা গুণা: ৷ হিমত্বুণ । क्ठाद्वः। कक भूकवृष्ति कातिवः। দাহাসু পিত্ত ক্ষয বাতজ্ব নাশি-ত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্হণ্টঃ।। 🕸 ॥ া অথ মেদ নহামেদখো কৎপত্তি লক্ষণ নাম গুণা:। মহামেদাভি-थः कल्मा भातकारि भुकायत् । মহামেদা বনৌমেদা স্যাদিত্যুক্ত• मूनीश्वरेतः ॥ मुङ्गाम् किनि छः कल्मा-লভাজাত: স পাওুরঃ ॥ মহানে-माजिए। एक्स्या मिना नक्त मू-**छ। भूक्षकल्मा नथाइएमा स्म** रि। वाज् द्विव जुरवर ॥ यः ज निर्दे

नशामारः भू । ভाग्महाकभाक्रानः । ইতি কেচিৎ।। সংসার ग्লकाরণ রাগৰপমোহ:॥ মহামোহজনক কামরাজবীরা ইতি চণ্ডী পুথন-बाहाकाऽही ाया॰ नारगाजी छ छ: ।। অপিত। সমর্জাণেক্কতানিসুমথ **जामिमु मारिक्ट**। महात्माइक भाइक उन महाङ्वान वृख्यः॥ इंडि ঞ্জীভাগবতে ৩ স্কন্ধে ১২ অধ্যায়ঃ৷৷ অগু ইতি বুন্ধা স্বস্থে পুথম নবি দ্যা সৃষ্টীঃ সমর্জ তত্র তমো নান चक्माभुकाणः। (मार्का (म्हा मारु तुष्तिः। महास्मारहा ভোগে ছা। তানিসুঃ তৎ পুতিঘাতে কো-ধ:। অক্তানিসু: তলাশে অহ নেব নৃভোষ্মীতি বৃদ্ধি:। তদেবো क रेवकरवा उपा श्वरवाका मारः भगपरः कत्र विज्ञाः। म

श्रामाहस्र विद्धारा गुम्यासार मृर्थमण ॥ महण स्मानिम् जामिम् काथ उठ्या स्वित्र लक्षणदी या श्रामुक्जा महाद्यन ॥ हेठि उड़ीकाया श्रीश्रह्मानी ॥ महाम ही जिस्डिनि । हेठि करे। ध्रा

गरागजः भृ॰ विम्भाठीमिक्सभभक्ष ्र भूकात्रयखः। यथा। भारते। (हान भगितिथीनाः मनर्या उर्माः विन । এতিঃ পঞ্ নহাবজ্ঞা বুক্ষযজ্ঞ। দি নামকৈঃ॥ ইত্যমরঃ॥ অপিচ **मिर्दिता (जीम खबा देशका मान्**कः ব্ৰাহ্ম এবচ। এতিঃ পঞ্চ মহায়জ্ঞ वुकाना निर्धिजाः भूता ॥ वाकानानाः रिञार्थाय ইতরেবাঞ্চ তন্মুখাः हेजरत्रवास वर्गानाः वास्तरिः काति তা: শৃভা:।।এব কৃত্বা নরো ভুক্তা হস্মান্ধরিত্রি বিশুধ্যন্তি। অন্যথ ব্ৰীছযোপ্যেতে একৈকে মৃগ পক্ষি শঃ।। মন্তব্যা দাত্ ভোকুণা । নছা-মাণসম্ভ তৎ মৃত। ইতি বরাহ-প্রাণ ॥

नरायणकः जि चित्रणययाणावि णिष्ठः। ইতি পाণिनिव्यक्तवाः। नरायणाः श्रुः ভ্তাহদিশেষः। ই रहनहन्तुः॥ অতিশ্যयाणायुक्ति हि

महारकः भ् व्यर्भागकविष्यः। ्रेडि (र्निम्सः ॥ महाबका की मूर्गा ध्यूद्रा इंडा भद्गः ॥ बृष्ट्योभ्यक् ॥ नहात्रवन ही क्रमुख्यूझ र हैठा ् शहः भूषर्भः । ইতি यि विनी ॥ महात्रगुः क्ली वृष्ट्वनः। उर्श्वरायः। व्यवगुर्गि । इन्डामबः॥ মহারথ: পু॰ শিব:। ইতি মহা-ভারতে ওস্য সহসুনাম ভোবে ॥ অয়ুতধ্বিভিঃ সহাস্ত্রশঙ্কনিপূণ-যোজ। । যথা। একো দশ সহসাণ বোধ্যেদ্যস্ত ধন্বিনা । অস্ত্র শস্ত পুরীণ চ মহারথ ইতি মৃতঃ।। ইতি ভগবদ্বীতা টীকাষা• **শ্রীধর**-साभी ॥ वृष्ट्रमुथण ॥ মহারম্ভ ক্লী গডলবণ। ইতি রাজ निर्घणः॥ সহারস ল্লী কাঞ্জিক। ইতি জটা-थद्रः ॥

सहातमः भ्• चर्ज्नः। काषकातः ॥कत्मक। इंछि (मिरिनी ॥ ईक्कुः। इंजि क्रोधियः ॥ भावमः । इंजि রাজনিঘণ্ট ॥

নহারসাষ্ট্রক ক্লী অপ্তথাতুবিশেষাঃ। यदा । पत्रमः भात्रमः मरम्। दिका-ख॰ काल मञ्क॰। माक्किक॰ विम्ल- विम्लाताबिः स्त्री तुन्नलया शनकि छ।

ষ্পেড়ি স্যু রেডে হঙ্কৌ সহারৰাঃ।। क्छि ब्राबनिष्णेः ॥ 🗀 🖂 महाबाद्धः शू भूवविविविद्यापरः॥ मर्थः। देखि (इस्महन्तुः।। (मुक्रेद्राजः। यथा। व्यर्थमः भूकत्वा मारमा माम स्वर्थ। न कम्राहिट । इंडि मडा म-স্বারাল বন্ধোদ্যুর্থেন কৌরবৈ:।। ইতি মহাভারতে উদ্যোগপর ।। नहाताककः भुः महाजाकिकगनः। इज्जबहीकावाः बामानुमः॥ महाताक्ष्ठः शृ उष्टमामुः। ७८ भाग्रामः। भरात्राकामुकः २ ज्ना-मु: ० गमायानमः ८ कन्नः ६ नील-কপিথক: ৬ কামাযুধ: ৭ কাযফ-नः ৮ রাজপুল: ১ নৃপালাল: ১০ महात्राक्रक्यः)) कामः)२ महा-**চ্**ড: ১৩। (कामनम) उम्र ख्याः । करूँदः। अप्तदः। भित्र मारु माठ्-पुक्ष। मुशक्ता जना खनाः। सामूप्र । मधुत्रक् । शृष्टि वीर्यं वनशुरक्ष । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ गहाताबक्षमः श्रु णात्रग्रसः। हेडि

त्राजनिर्घणः॥

় ক:। ইত্যমর ভরতৌ।।

महात्राजिकः भृ गगरतंजावित्नवः

। স ভু বি॰শভ্যধিক শভদ্বসংখ্য-

महानुनयद्गाजिः। ইতি हञ्जीवीकाः যা• নাগোজীভউ:।। নহত ঈশ্বর-স্য রাজি:। বুন্দমরণোপলক্ষিতা-ব্লাত্রি ব্লিত্যর্থ:। ইতি দেৰীমাহা जारहीकायाः विषरावित्नामः ॥ व्यः পিত। বুন্ধণাঞ্চ নিপাতে চ মহাক ল্লে। ভদেষ্প । পুকীর্ত্তিতা মহারা-**बि: मा अवह भूतालतेनः ॥ इं**जि <u> वुक्षरिवर्स्ड भुक्</u>छिथए७ ৫ व्यथ्रायः ।। 🗱 ।। व्यक्तवावार भन्न भूकृतंत्रयः । यथा। व्यक्तवाबाट भवः यह मूङ् र्खर्य मूह्याउ। मा महादाबि स्पि-छ। उपाउ मकाग जातर ॥ इंडि **७**जः ॥ अ॥ व्याधिन मृहार्रेभी ॥ नवद्राजः। यथा। मुद्राक्षेत्री हाथि নস্য নবর।ত্র ভূ তস্য বৈ। মহা-রাত্রি মহেশানি কালরাত্রি প্ণু পূিযে॥ ইতি শক্তিসন্মতন্ত্র।॥ **নহারাষ্ট্র: পৃ॰ দেশ**বিশেষঃ। মার-হাটা ইভি ভাষা। যথা। নৈৰ্যতে पुविजानर्स महाब्राष्ट्री क देववडः । कदनः भर्दा । भिक्षुः भावभीकाषः যো মতা:॥ ইতি জ্যোতিষ্তত্ত্বে क्यंडक ॥

মহারাপ্রী জ্রী জলশিপ্রলী।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শাকভেদঃ। মারাটী ইভি ভাষা। অস্যা গুণঃ। কফ वायू ना जिन्दः। इंडि झालवझ डः।।

पक्षारम जावास्तरं ज्ञावादिष्मदः
। यथा। जाना भिव ज्ञावादः

नहाझान्ने। भूरयाहर्यः । चर्दा
कामागंथी जावा झालाः भूद्रा
दिना।। इंडि नाहिड्यार्ग्रा ५

भदिरह्मः।।

महातिष्ठः प् महानिष्ठविष्णवः । छ८ भर्ग्रायः । किर्ह्यग्रः २ त्रामणः ७ तमणः ८ गितिनिष्यः ६ ण्ट्रमाणः ७ । खमा छणाः । कर्हेषुः । जिळ्यः । कर्षेषुः । जिळ्यः । कर्षेषुः । जिळ्यः । कर्षेषुः । जिळ्यः । जिळ्यः । जिळ्यः । जिळ्याः । जि

মহাৰদুঃ পৃ• মহাদেবঃ। যথা। মহাকাল্যা মহাকাল শ্চণকাকার
ৰূপতঃ। মায্যাছাদিতাত্মা চ ডমধ্যে সমভাগতঃ॥ মহাৰদুঃ সএবাত্মা মহাবিঞ্: সএব হি। ইতি
নিৰ্বাণ্ডন্তঃ।।

মহাৰপঃ প্ শিবঃ ! ইতি মহা-ভারতে তস্য সহস্নান ভোজা। অতিশ্যৰপণ্ড জি

নহারূপক জী নাট্ড । ভূত্রি কাণ্ডশেষ: ॥

बहारतागः श्राम्य । विश्वायथा ज्यानः ।

: यश्व

ভগনরে: ৬ উদর: ৭ অশারী ৮।
ইতি শুদ্ধিতত্ত্বে নারদ: ॥
মহারোগী পু॰ মহারোগযুক্ত: ।
যথা। ক্রিযাহীনস্য মূর্থস্য মহারোগন এব চ। যথেষ্টাচরণস্যাহ্
মর্বান্ত মশোচক॰ ॥ ইতি শুদ্ধি
তত্ত্ব্ত কুর্মপুরাণ বচন॰ ॥
মহারোমা পু॰ শিব: । ইতি মহাভারতে তস্য সহস্নামস্তোত্ত ॥
বৃহদ্যেমযুক্তে ত্রি ॥

महात्रोतवः भू॰ नत्रकविष्णवः। हैठ प्रतः।। महान त्रोषु। त्रवा ९क
गहात्रोतवः मनीवाित्राः पुत्नाः
भः। हेि छत्र छः।। खिलि । महाः
त्रोत्रव म॰ छत्र खाद्यार्षः ठामु म॰
भूषे॰। धमार् धित्राक्षाति र्छकः
पात्राभनायकः।। प्रवपुत्राभहाती
ह भहार कान मक्षयः। हेि वहिः
भूतात भागनान्यन व्यक्तामाधायः
महार्यः वि गहाम्नाः। हैि

্যেনিবী ।! ব্যক্তিয়া াবকপক্ষী । ইতি

নহাসমূদুঃ। যথা। বিভেন হিতঃ পো-ইতি মাকণ্ডেযপু त्रालारक्वीभाशान्याः। भिवः। ইতি
भशानात्राद्ध उम्प्रम्यनामात्याद्धः
भशानाः भृ वृक्षविष्णयः। मशानाः
ইতি ভাষা। ইতি শহচিশুকা।।
भशानुं कः क्षी वनामुं कः। व्यमप्रश्याः।
व्यक्षिनवः। धात्रकवः। कक्षवः।
वायु कक नामिव्धः। ইতি রাজ-वन्नाः।

महार्ब्र है जी है है है । में उद्योगि जिल्ला है जिल्ला है जिए जा जिल्ला है जिल्ला है

महानगः शृ विश्व तः ॥ ठीर्थः ॥

गत्र नाजा। इंडि निहिनी॥ मोताश्विनीय क्कलकः। यथा ভविष्य ।

ययः हीलान्ति जा ताहन् चे । ज्यान हिन्दि ।

गक्ष्मणी जूवि। ज्यान हिन्दि । स्टान्स्य ॥ म
शन्य कन्यानजालत्र नाहि ।

हान्य कन्यानजालत्र । इंडिं

उथ्याहिज्युः ॥

नश्व

मद्यः। তারো বাপুব॰ মাধা রমা-কানঃ ক্রৌ র্জগৎ পুস্তৈর ননঃ। ত থাচাবাণ্ডব• শস্তুবনিভারমা **নক**-রকেতন:। তাত্তী যঞ্চ জগৎপার্শো বহিবীজ সমূজ্ল:।। অঘী শাঢ্যো ज्ख रेखा क्वास्थाय॰ वाद**णाक्रतः** । शहालक्ष्याः मगुष्टि छाताम्यः সর্ব সিজিদঃ।। ঞ।। তস্যা খ্যান यथा। वालार्क पूर्रा मिन्तू थए वि লসৎ কোটীর হারোজ্লা রয় কল্প বিভূষিতা॰ স্কচনতা॰ শালে: করৈ মঞ্জরী। পদ্মৌ কৌস্থভ রত্ন मन्द्रवित्र उ॰ म॰विजु जी॰ मिम्रजा॰ ফুল্লাম্ভোন্ন বিলোচন ত্রথ যৃত্যাণ খ্যায়েৎ পরা নৃষিকাং।। ইতি ত জ্ঞসার: 11

মহালিকটভী স্ত্রী শ্বেতকিণিহীবৃক্ষ: । ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

মহালিফ: পু॰ শিব:।ইতি মহা-ভারতে তস্য সহসুনামস্তোত্র॰।। হৃহত্রিস্মৃক্তশ্চ।।

নহালীলসরম্বতী দ্রী তারাবিশেষ:

। লীল্যা বাক্পুদা চেতি তেন
লীলসরম্বতী । তারাক্স রহিতা
ত্রগা নহালীলসরম্বতী ।। ইতি
তন্ত্রসার: ।।

बहाताषुः शु लाषुवित्नवः।

পাটিযালোধ ইতি ভাষা। ै ি রহুমালা।। মহালোল: পুণ কাক:। ইতি हার

नियंग्टे: १। व्यक्तिक्थल वि ।। मङ्गलाङ् क्री व्यवकाष्ठः । हि क्राजनिर्यंग्टेः ॥

महावनः क्ली वृष्ट्यनः। छ८ शर्यायः श्वतायानी २ महात्रापः २ महावित्रः ८। ইতি রাজনির্ঘট: ॥ वृन्तावत्रः छजूत्रणी जिवनाञ्चर्ग जवनवित्रणः महावशः श्रुः महास्मरः। ইरित्रः छन्तिका ॥

महावत्रा खी मूर्वा। हे जिल्हा । वनी ॥

महावता इः शृ वता हक्षी ज्या यथा। सहावता हा गाविन्तः (स्तः कनका ह्रो। इंजि सः (उ जम्र सहमुना मस्ति वः। महावाता इः शृ श्रक्तवृक्तः

त्राजनिर्वण्डः॥ महावल्ली की माध्वीणठा ः

णप्ठित्मुका॥ महावमः भू निण्मातः। हेिस्स हन्मुः॥

মহাবক্ষা: পু• শিবঃ। ইজি । ব ভারতে ভসঃ সহসুনাম^{্যার} । বৃহদ্বফোযুক্তে ত্রি।। विष्कृतिका क्री यागाजाकाक्क्षामः विष्कृतिकारम्भूरः। ইতি সাহি-कामर्गाः ॥ नाग्यमाः जू। स्विन-विक्रिक्त नाग लेखा जाम्मार्थकः। विक्रिक्त नाग लेखा जाम्मार्थकः। विक्रिक्त नाग लेखा जाम्मार्थकः। विक्रिक्त नाग लेखा जाम्मार्थकः। विक्रिक्त नाग लेखान्यकाः वा। ইতি महाम्बिक्त काम्मिका॥ ज्वमनीजि महिन्द्राः।। भुजिक्षामावृद्यमर्ग

ाक्षा विकास की स्वीविष्णवः। मा 🎮 🕾 খা চামুগুাতজ্বে। কালী 🥫 🕟 বিদ্যা ষোডশী ভুবনে-া পুরবী ছিন্নসন্তা চ বিদ্যা ाथा।। दगना निक्दिप्र চ 🖅 🧪 কমলাজ্মিকা। এতা দ-क्षेत्र विशाः निष्वविष्ठाः **भुकी**-🥍 🦪 নাত্ৰ সিদ্ধাদ্যপেকা-🎨 🛪 🦥 🗷 व दिठात्रभा। कालांपि া বিভাগ নাস্তি নচামিত্রাদি দুষণ ি ি দ্যাত্যা নাত্র যুগসেবা 🌯 🐈 ाखि किक्षित्रशासि े कथ्कनाक्षा मानिनी विदार : यथ वक्तागाइ॰ या या हा 😕 मही उला। (मायकाः 🐎 🕬 ृष्टी खाः मर्दा हि क्रेलः 🐫 ौनीला मङ्गूर्गा जुद्धि-७: असे उका ॥ वाशामिनी हाम

भूगी उथा भुउ। क्रिया भूनः ॥ का-भाष्या वामनी वाना भाउनी लै-लवामिनी ॥ इंडाम्राः मकता वि म्राः करनी भूर्ग कन भूमाः। त्रिक মন্ত্রতথা নাত্র যুগসেবা পরিশুমঃ ॥ यथ रिजा महाविष्ठाः कनिष्नाः বান বাধিতা: । ইতি ভদ্রসার: ॥ 🗱।। जामाः मभावजात्रद्यः यथा 1 পুকৃতি বিফ্ৰাপা চ পুংৰাপত ম-হেশর:। এবং পুকৃতি ভেনে ভে-नाच পुक्रा पंग। क्कक्शा का-লিকা স্যাৎ রামৰূপা চ তারিণী। वगना कूर्पमृद्धिः म्याग्रीता ध्याव-जी ভবেং ছिम्रनेखा नृजिंग्हः म्रा-षत्राहरेक्टव रेज्यवी । मुन्सवी याम-मगुः मुश्वामात्ना जुवतम्बद्गी ॥ कः यवा वीक्का महार पूर्ना महार কল্পিকপিণী। ৰয়ণ ভগবতী কালী कृष्ण्य जगवान् ययः॥ ययः जगः वान् क्षः कानी काला ভावमुद्धा। ইতি মুণ্ডমালাডস্ত।।

মহাবিরাট্ পৃ॰ মহাবিষ্ণ:। যথা।
মূনিকবাচ। বিশ্বানা॰ গোলক॰ রাভ জন বিস্তৃত্বঞ্চনভঃ সম॰। শশ্বনি-ত্ত্যে ডিয়কপ॰ শ্রীক্ষেচ্চ। সমুদ্ভব॰ ।। জলেন পরিপূর্ণফ কৃষ্ণস্য লুথ বিন্দুনা। সৃষ্ট্যুমুখস্যাদিসর্গে পা-

রিশান্তম্য কীডভ: 11 পুক্ত্যা সহ যুক্তেন কল্যা নিজ্ঞা মূপা ভকা-ধারো মহদ্বিকা বিশ্বাধারস্য বিস্তৃ-ত:।। পুক্তী গৰ্ম্ভ সংভূত ডিয়ো ভূতম্য ভূমিপ। সুবিস্ত্তে জলা शास भगनम महान् विद्राह ॥ রাধেশরস্য কৃষ্ণস্য ঘোডশাংশঃ **পু**कीर्खिञः । पूर्वाप्तमाग्रामक्यः निमिज्य हजूर्कः ॥ वनमानाध्यः শ্ৰিমান্ শোভিতঃ পীতবাসসা। इकि वृष्ण्येवरार्जभुक्षिण्ए ७) व्यथ्रायः॥ মহাবিল গ্লী আকাশ। ইতি জটা अतः ॥ वृष्टि पुष्णः॥ गराविदः भुः हिमूथमर्भः। यथा। न्राविषः कालमर्ला ब्राजारि र्वि-ু মুখোরণ:। ইতি জটাধর:।। महावित्रुव क्री स्मयन कान्तिः। यथा। মহাবিৰুব মাঞ্যাত কৃতিভিশ্চৈত্ৰ

চিহ্নিত । ইতি শব্রত্বাবলী।।#॥

তিমিন্ নস্র নিয়পত্রদ্যভক্ষণ যথা

া কৃত্যচিন্তাসণৌ। মস্র• নি**খপ**ত্রা-

ভ্যাণ যো হত্তি নেষ গতে রযৌ।

্ভাপি রোষান্বিত স্তম্য তক্ষকঃ কিং

🗸 করিষ্যত্তি॥ 🗱 ॥ তত্র 🟲 জ্বাদি দা।

🗇 न॰ यथा। भिषादि मञ्जदा दिया

वात्रिभ्र्गा ह गर्मती क्का वातिभूर्गच

प्रमान मखानि यथा विक् निर्माण प्रमान प्रकार विक् निर्माण प्रमान प्रम प्रमान प्

नशिवय्वहकः क्ली नक्षवविष्ठनताः कात्रहकः। यथा। मृष्ण् मश्च मृर्थः वीशि श्रार्थं भक्ष विन्यत्मः। विज-यः श्रुभारत्य मश्चाविष्य छ क्रमारः ॥ मश्चाक छ्भारतः त्मोध्यः वहत्व भहेण श्रुष्ठः। श्रुष्य ह श्वनाध्यक्षः। २थ्भाश्च मिक्षां श्वतः॥ वात्म कः १८ महम्पूःथः मृथः भारत ह मिक्षः। १९ महम्पूःथः मृथः भारत ह मिक्षः। १९ महाविष्यः भूः महावि । स्वाव्यः यन्। स्त्य काहि ख्रमा वित्रबायाः भतिथा ज्ञाया उभित्र महादिम्शेरणाकः। उमा नाथः कृष्णा (गारणाकः । उमा नाथः कृष्णा (प्रणीणः म भित्रवाद्मायः व उटि । इडि जागवजाम् उकिनका ॥ म ह किक्षमा कणाविष्णयः । यथा। विक्षमहान् म इह यमा कणा विष्णया (गाविष्ण माहिभूक्षयः उ महः ज्ञामि। इडि जागवजाम् ज भूर्वथशः॥

महावीिहः शृ नज्ञकविष्णयः। यथा मन्ः। नज्ञ ह काल मृज्ञक महानक्षक भ्वान मिल्डी वन महावीिह ज्ञान जःश्रुजाशन ।। याजीिक भूर्ववहन इ मन्दर्क्छ। महावीिह यं बन्हा कर्ष्णालन नीयरु । देखि शुप्प निहन्नविद्यकः ।।

ন্দভাববেকঃ ।।
মহাবীজ্য লী বিটপণ তবুমুম্বন্ধ্রণযোরন্তরণ ইতি হেনচন্দু: ।।
মহাবীরঃ পুণ গরুড:।। সূরঃ।। দিশ্ছঃ
।। নথানলঃ ।। বজুঃ ।। শ্বেতত্রকঃ
।। সঞ্চানপক্ষী । ইতি মেদিনী ।।
অন্তিনজিনঃ ।। কোকিলঃ । ইতি
স্মেচন্দুঃ বিজ্ঞান । বিতি শব্দ

व्यक्ति स्विश्वा व्यक्ति स्विश्व विदेश स्विश्व विदेश क्ष्मुक्ति । इंडि उज्जनादा इन्नि क्ष्मः ॥ इन्मान् स्वमित्र सहावीत्र द्वन शुनिष्यः ॥ सहावीता जी क्षीत्र कारकाली। इंडि त्रञ्जनाला ॥

महावीर्याः भू युक्ता। इंकि मस्त्रङ्गा-वनी ।। वृक्तात्वनः । इंकि विकाख-(मयः ।। वाताशीकनरः । इंकि ताक-निर्वर्षः ।। व्यक्तिमस्वन्युक्त वि ।। महावीर्या जी मञ्जा। माह मूर्या-भन्नी । इंकि विकाख्यमयः ॥ वन-कार्भाभी । इंकि मस्त्रङ्गावनी ।। महाम्बावती । इंकि ताक्रनिर्वरेः ॥ महावृक्षे जी वार्जाकी । इंकि विकाख्यमयः ॥

भशाव्कः भः त्रृशीव्कः। ইতি श्लायुथः॥ वृश्वृक्षणः॥

নহাবেশঃ পু॰ শিবঃ। ইতি মহা-ভারতে তস্য সহসুনানস্তোত্র•॥ অতিজবঃ। ডঘুক্তে ত্রি॥

নহাব্যধিঃ পৃ॰ নহারোগ:। স তু
কাষ্ঠাদি:। যথা। সর্ব্যাধি বিনিন্ন্কোনহাব্যাধি বিশেষত:। পঠনাৎ
সংপৃণশ্যেত্ জীব্যুক্তো ভবেষরঃ
।। ইতি বুন্ধবামলে গাবতীকবচং।।
নহাব্যাহ্নতিঃ স্ত্রী পুণ্র স্বাহা যুক্ত

भशाव

খ্যাক্তি ত্ৰয় । যথা। ওঁ ভূ: ৰাহ। ওঁ ভূব: স্বাহা ওঁ ম্ব: মাহা। ইতি ভবদেব ভটাঃ।।

श्रुविशः क्षी मृष्टेद्रुवः। नामीया इंडि छावा। यथा। व्यर्थाय मश्रुरमाव् छ॰ उथाक्षेप्रमाकः निर्या नङ्गाद्रुव विभाकाय विश्मावृद्धः भार्यमद्रः॥ इंडि जिथापिठञ्ज थ्रु वादाशी उद्धवहनः॥

गरातुष्ठ॰ क्ली घामभवाधिकृतुष्ठ•। यथा। তেन वश्वकानामृह्य कि म-**७**ऽधिक**ण ७**मऽया वस्द **णि है** • जाव পরিমাণ নহাবু তানুরপা খেনবে৷ দাতব্যা। ইতি পুষেশ্চিত্তবিবেকে खराम्य **खर्णेम उ**॰॥ भात्र कालीन দুর্গাপুলন । যথা। নহারুত নহা-भूगाः भक्षवारेना बनुष्ठि छ । कर्न्डवाः সুররাজেন্দ দেবী ভক্তি সনন্থিত: ॥ इंडि डिब्यामिडब् ४५ सवी भूद्राग वहनः ॥ शक्रागरयकानीन भारतान । यथा। वाम्राह्य इति কৃষণ শ্রীধরঞ্চ মরেন্তত:। দিবা কর জগরাথ পুভাকর নমো হস্ত (७ ॥ शिक्षण्नं अक्ष्युमः भाषः স্থান বহাবুত। ইতি ললমাস-ভতুপ্ত পদাপুরাণ বচন ॥ मरापूर्वा भू भिवः। इंखि एस यश्न

চন্দু: ।। উরস্কট: । ইতি জিজাৰু শেষ: ।। মহাবৃত্তযুক্তে ত্রি ।: মহাশক্তি: পু॰ কার্ত্তিকেয়: । ইটি শন্দমালা ।। অভিশয়পরাক্তমঃ তদ্মকে ত্রি ।!

नश्माः शृ मानुयाशि। मान्या विश्वाः। विश्वाः। निश्वाः। विश्वाः। वि

মহাশঠঃ পু॰ রাজপ্ত্রার রাজনির্ঘটঃ॥ অভিপ্তেরর । নহাশণপুল্লিকা জ্রী বৃষ্ট্রণগুল্লী । তৎপর্য্যায়ঃ। বৃত্তপণী বাল বিদ্ ল্লা ১ নহাসিতা ও নহাসের বিদ্ ক্ষাবস্থা। উম্পন্ধ নি ्विस्वक्षः। अञ्चल त्यारन छ ॥ नहानदः भू॰ ज्लनदः। ইভি दाज-ন্তুনাহিষ পোকৰ্ঞাইতি রাজ-1031-33 17

अश्रामः की महामजावती। ইजि **ार्ट्स नर्घफेः ॥**

🌁 শতাৰ্ত্বী জ্ঞী বৃহত্বতাৰ্ত্বী। তৎ भर्यप्रायः। भ उदीर्यप्रा २ महमूदीर्यप्रा ० मूत्रमा ८ महाপूक्षपिष्ठिका ৫ বীরা ৬ ভূঞ্বিনী ৭ বহুপুঞ্জিকা ৮ , উজ্ব কণ্টা ৯ মহাবীৰ্য্য ১০ ফণি জিল্বা ১১ নহাশতা ১২ সুবীর্য্যা २०। अम्। खगाः। वन्गुद्धः। सर्-রত্ব। পিত্তমাশিল্বং। হিমত্বং। নেহ কফ বাতমুদ্ধ। তিব্ৰহ্ণ। শুেষ্ঠন্ব । রসায়নত্ঞা ইতি রাজ-नियंग्डः॥

মহাশ্যঃ বি মহান্ আশ্যো ২ভি-প্রায়ো মনো বা যস্য সঃ। ইতি ভরতঃ।। তৎপর্যায়:। মহেছঃ২। ইত্যবরং॥ মহানুভাব: ৩। ইতি **শर**तद्वादली ॥ উताबः ८ महा-মনাঃ ৫। ইতি জটাধর: ॥ উচ্চটঃ ৬ 🖟 🗺 ৭ উদীর্ণ: ৮ মহাত্মা ১। ছতি ক্ষতনুঃ।। সমূদে পু॰।ইতি अस्यास्य ॥

় াঞ্চা লী রাজশয্য। ইভি ः हक्षा । वृत्ह्या ह ॥

निर्घणः ॥ महामन्नः भ् हिक्देन ए गुः। इंडि रातावनी।। व्रह्म क। जम् एक बि

নহাশাক জ্লী বৃহছাকবিশেষ:।ইতি কেচিৎ 11

महामारा जी मागवला। इंडि त्राजनिर्घण्टः ॥

मरामानिः भू॰ ङ्लमानिः। ইঙি वाजनियणेः ॥ उद्भर्यप्रायः । जूग-किकः २। इंडि (इन्हम्मः ॥

महानिवः श्रु महाप्तवः। यथा। রয়সি হাসনস্ঞ মহাত্ৰণ ভ্ৰি-ত ৷ মহাশিব শিবকর শিববী-ত্ব॰ শিবাশুং ॥ ইভি বুন্ধবৈবর্ত্তে গণপতিথণ্ডে ২৯ অধ্যাयः ॥

মহাশীতা জ্রী শতমূলী। ইতি শব-চন্দ্রিকা।।অতিশীতবীর্য্যুক্তেত্রি।। মহাশুক্তিঃ স্ত্রী মুক্তামাতা। সাচ मुकिः । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ तृश-ছক্তিশ্চ ॥

নহাশুর। স্ত্রী সরস্বতী।ইভিভূরি-পুৰোশ:।। অভিশ্বৰণযুক্তে তি॥ মহাশুলু রী রজতং।ইতিরাজ-निर्घ है: ११ ज डि जु जू वर्ग नृष्क बि ॥ नहाम् पुः शृ॰ वाजीतः। ইতি মহা-भू की अवस्थिता ।।

নহাশূদী জী আভীরী। ইত্যনর:॥ নহাশৌণী জী খেতকিনিহীবৃক:। ইতি রাজনির্ঘণী:॥

महानामान क्री कामी। इंडिका-भीथखा।

মহাশ্যানা জী শ্যানালতা। ইতি রত্নালা।। শিংশপাবৃদ্ধঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

भहाभुभाः श्रः युष्कविष्मयः। म ह भाकाभूनिः। ७९ शर्यायः। मर्वार्थ-भिष्कः २ किलामामनः ७ शाशिमः ४। ইতি হেমচন্দুः।!

महामाविका की क्रुवित्मसः।
विष्णुवस्ती हेिंड जाया। उटभग्रायः। महामूखी २ (वाहनी ०
कत्मभूमी ६ विक्ठा ६ क्वाडा ७
काडा १ भवक्या ৮ नतीकत्यः २
मूखाया २० महामूखिनका २२ माठा
२२ स्विता २० व्वाडनी २८ ज्वा त्यः २६ जवसूया २०। जम्रा छनाः
१ डिक्डः। जिक्डः। स्वमाधूतदः।
वार्मानवः। मतक्खः। विक्रः। विक्रवः। विक्रवः।
वार्मानवः। मतक्खः। विक्रवः। विक्रवः।
वार्मानवः। मतक्खः। हेिंड
ताङ्गिर्वः।।

নহাত্রী বুদ্ধশক্তিবিশেষ:। তৎ পর্য্যায়:। তারা২ ওক্কারা গ্রাহা ৪ জ্রী: ৫ ননোরনা ৬ তারিণী ৭ बया ৮ खनहा ৯ मिया २० ह्यादि खत्राका ३२ थम् उदा मिनी २२ छ। २० देवणा ४८ नी न मत्र मुख्या १६ न द्विनी ३५ महा छात्रा २१ वसूथा त्र २৮ थनन्द्र २० जिल्ला हना २० (का हना २०। ইতি जिका श्रम्भः ॥

महास्थित। जी अत्रस्ती। हैि जि का अग्नरः ॥ कृष्ण्मिन्द्राणः । ज्र भर्यायः। क्षीत्रिक्ताती २ श्रकः शक्तिका २ । हेठामतः ॥ स्थिताश-त्राजिता। हैि त्र प्राण्या ॥ मिछा। ज्र भर्यायः । प्र्यू का २ । हैि जि-का अग्नरः । स्यु का २ । हैि जि-वि त्राक्षित्रकरेः ॥ मूर्गा। यथा। स्यु । श्रु । भवाद्यावः यथा। हैि (ए-वी भूत्रारा ८६ यथा। यः ॥

महावधी की मूर्गा। यथा। धँ मू॰ पू॰ पू॰ पू॰ पू॰ पू॰ पू॰ पू॰ नाण्य नाण्य हन हन मह मह मह मथ गथ वस वस गई हि॰ जान महा यही सर्भा वाल क॰ त्रक त्रक वित्रकी विन॰ सक सक विश्वी । देि स्वाणि नी नरक महायधी करहा। देि स्वाणि नी नरक महायधी करहा।

नहाडेनी जी व्याधिन १५ देवी वर्षा । व्याधित मृह्मभक्ता व्यवका

ेष्रहेभी डिपि:। महाह्रेभीडि ना প্রোক্তা দেব্যাঃ প্রীতিকরা পরা ॥ -ইতিকালিকাপুরাণে ৫৯ অখ্যাশঃ ।। #।। তস্যা• প্জাবিধিঃ পুএবত উপবাস নিষেধ क यथा। यहेना क्षित्र मीरिम मंश्रामारिमः मृग-क्षिज्ञः। भूष्यवृद्धाजीरेय विल- , महाममन् छी वृक्षविष्णयः। कग-ভি ভোঁकरिनः मिना ॥ तिसूरिनः প উবাসৈশ্চ नाना विव वित्वलितः । भूरिच्न त्रानकका जीरियः करेन बंद्र-विद्वित्रिशा উপवामः महाद्वेग्राः भूधवाम मनाहात्रः। यथा उरेशव প্তাত্মা বৃতী দেবী পুপ্রযেৎ।। পূজ्यिञ्। महाक्षेत्राः नवम्राः विल ভি তথা। বিসর্জ্যদশন্যান্ত শু বণে সাৰব্বোৎসবৈ:।। ইতি **ত**ত্ৰৈ-ব ৬০ অধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ ভত্রার্দ্ধরাত্র পূজা যথা। কন্যা সংস্থে রবাবীশে भूक हेन ११ ॰ भू न हार । (मानवा-নো নিশার্দো তু মহাবিভব বিস্ত-हैइ: ॥ भृष्ठाः समाद्रा छाप्त्वता नकः ত্রে বাৰুণে হপিবা। পশুঘাতক कर्जःता गवनाज वध्यथा ॥ इंडि (पदी भूत्रांग दहरन वाक्नभरम्न भू र्बायाणाण्य । इंडि डिथ्यानि <u>जनुः ॥</u> रानगः भुः जानतः। ३७ मदः

মহাসা

माना॥ ञ्जिनिकरेक्षा महामकतः पुः व्हटल्याष्ठीमटमाः। व्यम् ७११ः। महामकत्र मः ऋस ভিক্ত: পিত্ত কফাপহ:। শিশিরে। মধুরো কচ্যো বাত সাবারণঃ মৃতঃ ॥ ইতি ভাবপুকাশ:॥

क्या इंजि हिन्ती ज्ञाया । उৎপ र्य्यायः । अरनिका २ अम्बाख्या ० वृक्षा ८ वर्षा ८ वृष्क्रवना ७ उडुना ৭ ভূজস্বিস্থা ৮ শীতপাকিনী ৯ भी छवला २० भी जावला २२ वरला-खत्रा १२ वका १० शित्रशिषे १८ व्यानिक्का १८। जन्या खगाः। मधूतद्व॰। यसद्व॰। (मायज्ञय नान्निः ত্বণ যুক্ত্যা বুদ্ধ্যা পুষোগে জ্ব দাহ नामिद्ध। इंडि त्राजनिर्यण्डः॥ भशामर्जः शुः भन्मः॥ यमनदृक्तः। इंजिब्राङनियंग्रेः ॥

महानहः श्रु अनुकृकः। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।। হাতিক্ষনে তি ॥ महानहा छी मामभर्गी ॥ महान-वृक्षः। ইত্যমরঃ॥

महामाउलन क्षी युउदिस्मदः। यथा। অথমহাসাভগন ৷ তত্র ঘ্যহসাধ্য माउभन गृङ्गा या छवन हुः। भूथक माछलरेन मू रिक्ष युद्धः (मालया-

जकः। मधार्यान्यक्रहा १ य॰ महा-माउभनः मृजः॥ এउ९ म**क्षारमा** भुः॥ जावानः। शाम्बः शाम्यः क्षीत पर्धि मिर्नः म्हणाम्कः। এ কৈক ক্রমশো হশ্মীযাদহোরাত্র মভোজনা। কৃষ্: সাম্বানাম সর্পাপ পুণাশনঃ। একৈক মেত-(एव॰ हि विद्राव मूनर्याक्ररंट ॥ बार्व्याभवामस्याः महामात्रभ-ति विधि: 1 अडिट मेखार माया मा ম্ভপন মুক্তা একবিংশতি দিন সাধ্য• गरामाष्ठभनमुक्तः ॥ गरामाष्ठभः न (अनुषष्टे क्यान मन । जावात्ना । क्रम्हामाङ भनमा এहिवः में जि हि नमाध्राद्वन मछारु माध्र माष्ट्रभ নাৎ ত্রিগুণবামহাসান্তপনে ধেনু विकेश (मय॰। ইতি প্রায়শ্চিত্তবি (वकः॥ নহাসরেঃ পু^{*} দুখুদির: | ইতি রাজ-नियणेः ॥ गरामारम ही चित्रवाटकात-क्ठकायं। ।। अठिमयम् ७:। इंडि नाइन मदार्थ (मिनि।। ज छ-मुक्छकर्म।। अिमयस्वरः। ইতি भाग्य भदार्थ (इम्हन्सुः॥

बराभारमिकः वि होतः। हेि

किट्।। चित्राङ्मयूक्का।

मशामि॰रः भू॰ नज्ञ । इंडि ब्रांब-निर्विष्ठः॥ वृह्टमि•इः। म हतिवी-वार्न-।यथा। উन्थायह महामिन्छ-দেবী চণ্ড মধাবত। ইতি নাৰ্কণ্ডেয় পুরাণে দেবীমাহাজ্য্য-॥ महामृथ की मृकातः। ইতি बिका औ भियः॥ অভিশ্यानमः। उष्ठि बि गरामुथः भुः तूषः। ইতি बिकाछः শেষঃ॥ महामृगका जी गक्तनात्रनी। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ॥ অতিসুগন্ধযুক্তে ত্রি॥ मशामुखा जी वाल्का। इंछि त्राज-निघफे: ॥ व्यक्तिमामृत्य वि । गशासनः भू॰ कार्जिकाः। ইउ नदः।: **निदः। ই**তি মহাভারতে ७मा महमूनान (छावः॥ महा**रम**ः नाशिकः । इंजि समिनी ॥ वृज्ञा-হৎপিতৃবিশেষ:। ইতিহেম্চন্দু:॥ महाक्रका <u>की</u> अपूर्कः। ইতি রাজ-निर्घण्टः ॥ वृह्दक्षम्यक बि॥ गशहनी जी शृथिती। इंडि मद-माना।। (मुश्रञ्जानकः।। नश्त्रायः भू॰ कथत्रा। ইভি ছেম-हन्मः ॥ नशामुग्री श्रु निवः। इंछि गङ्ः রতে তস্য সহসুনান স্থোত্র । निरुषिनः भू• मलजूर्गु•।इजि जिला

लियः॥ वृश्हमः॥ जमास्क वि॥ মৃষ্ঠাহনু: পু॰ শিবঃ।ইতি মহাভার-ি-৫০ তস্য সহসুনামন্তোত্রণ।। বৃহ-श्वनुमुक्त वि॥ ग्हाइविः क्ली भवाष्ट्र**ः ।** यथा া গ্যায়া মূথ বা পিঞ্জ থল্ল মাংসং মশাহবি:। কালশাক ভিলাজ্য বা কৃশর• নাসভৃপ্তযে॥ইতি না-र्का अर्थ मुद्रारम मुख्य कन्नः ॥ विकृः। ইতি নহাভারতে তস্য সহসুনাম-(छाद्र•॥ ।হাহা**স: পু: া,ীহ্'স:।ইতি** मदत्रावणी ॥ । हा हि १ आ। अो १ दानाव जी। इंडि त्राक्रनिघण्टः ॥ মহাহয়। খ্রী কপিকট্র:।ইতি শব-মালা।। অতিথর্ধে ত্রি।। निहः छी পृथिवी। ইতিশব্মালা॥ यहिका स्त्री हिमः। ইত্যমর:॥ ত্ত্রি পূজিত । যথা। রণ পণ্ডিতো ২গ্র বিবুষারি পুরে কল-হণ্স রাম মহিতঃ কৃতবান্। জ্ল पश्चित्रायम गृहक वलाए कलह ज রাম মহিত: ক্তবান্॥ ইতি ভটি কাব্যে ১০ সর্গঃ ॥ নহিন্তু লী রাজ্য । ইতুপাদিকোব:॥ मरिगा पुर्नियम्। रिष्ठे चर्या छर्न रेज-

थर्ग् वित्यवः। ই उ इम्म ज्याम ग्राम महत्वः (यन हजू प्रण ज्याम ग्राम) महत्व व खंद्र। ই उ महि क्षेत्र । यथा। यथाशः भण्डः कम् महिमाताणकायः । उभ्यू भित्र भण्डः मर्व व प्रण क्षित्रः। व भण्डः। व किष्य क्षित्रः। व भण्डः। व किष्य क्षित्रः। व क्ष्य क्ष्य

महियः পृ॰ यमामथ्या उभण्वित्णयः

। उट्भर्यायः । जृताभः २ वाह
विषम् ० नामतः ४ निष्ठ छः ६ ।

हें छामतः ॥ यमवाहमः ५ विषक्षतम्

१ व॰णं छोकः ৮ त्रक्षयः २ । हें छि

णपत्र इावनी ॥ जाम्भः २० त्रक्षाः

भः २२ व्यातिः २२ । हें छ छो
थतः ॥ काधी २० क्ल्यः २४ मछः

२६ विषानी २५ भवनी २१ वली २৮

। वनमहिष मा॰म छनाः । (माष
कातिष्वः । न्यूष्यः । मीभमष्यः । व
व्यायिष्यः ॥ गुमीन महिष मा॰म

ख्याः । जिथादः । मिलनकत्रदः । शिखर्त्रद्थ । इंजिताक्षनिर्घणेः ॥ लर्भगव्यः। श्रिकव्यः। উक्षव्यः। मध्-त्रद्वः। एकदः। निमा भूःख्रु खन्। वर्षानवुः। भाः भराष्ट्रकृद्धः। ইতি त्राजवल्लानः ॥ जानिह । **महि**र्या (घाठेकातिः म्राट कामत्रक त्रज यनः। शीनककः कृष्कवार्या नूना পো যুনবাহন:।। মহিষস্যানিষ স্বাদু সিংগোঞ্চ বাত নাশন। নিদু भुक वल खन्ड उन् मीर्घकद्र । धक्।। व्याप म्हेरिग्वः वाज भिखाम् নাশন। ইতি ভাবপুকাশ:॥#॥ শ্লুধারি মেছজাতিবিশেষঃ ৷ স চ পুরা ক্ষত্রিয় আসীৎ সগর রাজে-नाम्। (वन्यागानावनिष्कात्त्रा (व-শান্যত্ত্ব॰ ধর্মনাশশ্চ কৃতঃ। যথা হরিবংশে। সগর স্তাণ পুতিজ্ঞাঞ্চ গুরো র্বাক্য নিশম্য চাধর্মণ জ্বা-ন তেষা বৈ বেশান্যত্ত্ব চকার হ।। অন্ধ শকানা শিরসো মুগুযিত্বা-वारमञ्ज्ये । जवनानाः नितः सर्वः কাহ্যেজানা তথৈব চা। পারদা নুক্তকেশাশ্চ পত্না: শাশুধারিণঃ । নিঃস্বাধ্যায ব্ষট্কারাঃ কৃতাস্তেন মহাজ্যনা। শকা জবন কায়োজাঃ

र्शाः नमहिषा मार्बास्कालाः भृ त्रवाः ॥ विभिष्ठ वहनामुक्तिन् सर রেণ নহাত্মনা। ইতি পাুুুুুদ্দিন **उद्धः।। #।। वर्ष्मु जित्यम् ।: । ३**ि **र्मित्रमुः ॥ महिषामूतः । र**शः महिर्य १ मूत्राना मिष्टल (५ वा 🧺 পুরন্দরে । তত্রাসূরৈ র্মহার্ সকলান্ দেবানিন্দ্রে। ভুন্মহিষাতৃ রঃ। ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে 🕬 माराजाऽ।।

मश्यिकनरः भ् मश्यकनरिष् उर्भर्गायः। मूज्रान् १२ नूना म्तः अणूक्रकम्तः । शक्षीकना व्यम् छभाः। कर् द्वः। উक्षद्वः। बाजानगाभरदः। मूथकाष्ण्रः । ৰুচ্যন্ত্ৰণ। অসি ডাল্ডেল্ড নহা দ্ধিকরত্বঞ্চ। ইতি রাজনিষ্ণীঃ महिषदी जी मूर्गा।यथा।महि মহামাণে চামুণ্ডে মুণ্ডুনালি আযু রারোগ্য বিজয় দেছি (নমোস্তু তে॥ ইতি দুর্গোৎসः कि :।। यभित्र। मि श्राक कन्नाएउ निष्ठा महिरमा य्या निश्विमी ज्ञा (निनी कन्त्रा है निः हवा हिनी ॥ इंडिएम्बी भूताः भावनाः भक्त्वा उथा। त्वालिमः ॥ महिष्युकः भू॰ यमः ॥ शेक्षः मधः 'ইতি হেমচন্দু:॥ विषयिनि जी पूर्ण। इंडि मक ब्रद्वावनी । अम्या मञ्जा यथा। ना-त्रमाया । ভाष्ट विय**् স**नयन খেতো मर्प्सिन ठेवय । यहाक्त्री সমাখ্যাতা বিদ্যা महिषमिनी ॥ नात्रायगीजस्त्र । विषः हि मङ्जाः কালে। ९१३ র দু রিস্থে। নি ঠদ্ব ।। বিষ মকার:। হি স্বৰূপ । মজ্জা-यकातः। काला भकातः। व्या (त्रकः। चिम् मंकातः। इस इंडि বচনাদিকার যুক্তো দকার:। অয• भख खादा नि र्यायानिः कामानि वीयुवानि वेथ्वीजानिः कवहानि "ह नवाक्षतः। उथाठ विश्वमाद्धः। भुः ণবাদ্যা জপেদিদ্যা মাযাদ্যা বা জপেৎ সূধী:। বধ্বীজাদিকা• वानि कवठाम्। अलख्या ॥ मः ৰ্ৰকালেষু সৰ্বত্ৰ কানাদ্যা পূজ-পেৎ স্থীঃ। বাণ্ডবাদ্যাণ জপেন্তা-**रु** (मवी॰ वाक्त विश्वास्य ॥ अम्रा খ্যান । গাক্ডোপল সমিভা মণিম্য সণ্ডল নণ্ডিতা নৌনি ভাল বিলোচনা সহিষোত্তনাঙ্গ निरमपूर्वी । नद्भ हक क्लान (थ-हेक वाग कामू क भ्वकान उर्जनी নপি বিজুঠী নিজবাহুভিঃ শশি

(मथ्ताः।। ইতি उज्जमातः।।

महिववली जी नजावित्मयः। हित्रे
हिली ইতি हिन्ती जावा। उद
পর্যায়:। সৌম্যা ২ পুতিসোমাত

অক্তবল্লিক। ৪ থপ্তশাখা ৫। অ
স্যা গুণঃ। রস বীর্য্য বিপাকে সো

মবল্লী সমত্ত্ব। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

মহিববাহনঃ পুং যমঃ। ইতি শব্বরত্ত্বাবলী।।

महिषामुद्रः भू॰ द्रस्तामुद्रभूधः। उग्र উৎপত্তি ৰ্যথা। 🗐 ঔর্ব উবাচ। আরাধিতো মহাদেবো রস্তেণ সু-রবৈরিণা। চিরেণ স চ সূপ্রীত স্ত-পসা ভস্য শঙ্কর: ৷৷ অথ ভৃষ্টো **महारितः शु**ठाकः ब्रह्म गुक्तवान्। পুীতোমিতে বর•রস্ত বর্ষয় যথে-প্লিত্রণাএবমূক্তঃ প্রত্যুবাচ রস্তা ত্ত **চন্দুশেথর•। অপুত্রোহ• ন**হাদেব यि एक भया भूगुरः ॥ भभ अवाजस्य পুপ্রো ভবান্ ভবতু শঙ্কর। অবধ্যঃ সর্ম ভূতানা জেতা চ ত্রিদিবৌক-সাং॥ চিরাযুক্ত যশসী চ লক্ষীবা-ন্সত্যসঙ্গরঃ। এব মুক্তস্ত দৈত্যেন পুত্যুবাচ ব্যধুজঃ ম ভবন্দেভদ্বাঞ্ছি ত• তে ভবিষ্যামি সূত স্তব। ইভ্য क्। न महारित खरें बवा छत्रशीय छ ।। त्राञ्चाणि याजः यज्ञान श्रवाद-

कूल विलाहनहा शिथ गहम् न ब्राष्ट्रा-থ দদ্শে মহিবী॰ শুক্তা॰।। বিহাব-गी विवदर्गा मुनरती सञ्मालिनी ৷ সতা দৃষ্টাথ নহিষী রম্ভঃ কামেন भाश्वः॥ पार्जाः गृशिवा ह छना চকার সুরতোৎসর। তথোঃ পুর্-ত্তে সূরতে সা ভদা তস্য তেজসা।। দধার মহিবী গর্ভ্ত তদা ভূমহিবা সূর: ١ তস্যা• স্বাহ্নেষু **গিরিশ ভ**ৎ भुवज्ञ मवाश्ववान् ॥ बव्राय म जना বাণ্ডি: শুল্লপক্ষে সমৃদ্বৎ !#!! তস্য यायिष्ठश्रद्धः यथा। তन्ত कान्त्रायन मूनिः मछवान् महिवामूदः। पूर्वयः बीका नियार्थ नियानुगुरुकात कः।। काउग्राग्यान मक्षः उ॰ विक्रा-य विश्वामृतः । शुरु भूगय भूर्बन्ड চ 🥹 हा॰ চন্দুশেখরঃ।। ইশ্বর উবাচ । (तर्वि काञ्जायत्मानि भास्त्रा 😜 य॰ गहियागृतः। याचिविनागकवी कि ভবিতেতি জগন্মবি ৷৷ নিঃসংশ্য মৃ-ষে র্বাক্যু ভবিষ্যতি ন সংশয:। ম भीया माहियः काय खुया पिति जग দ্বি।। হন্তব্যঃ সতত্ত যোগ যুক্ত; পুৰে পৰেন্দি চ। ছরি ছরি ম্বৰূপেণ षाः वात् मकस्मा रधना ॥ समायः কাহিব: কাষ শুব বোচা ভবিষ্যতি । इंडि পूर्बः मशास्त्रा (प्रवीः श्राः

र्थिज्यान् भूता ॥ एजन एकी महीन (**एव॰ जगु। ए महिचा** जूत•। विवृ अर्थः म् भुरबा १ ड्ट्र इस्त मा जगवान मिवन ।। সৃষ্টিত্রয• স রস্ত্রোপি রস্তু এব ব্য-কাযত। অসুর স্তাদৃশ স্তেপে তপঃ भव्रम हाक्ष्णा जरेशवादाधिजः भ-द्धः नुजार्थ नुपरनो वत्रः। उरिश्व म-**हिरी:** (ভল্লে পূথন: সুরভায**স:** ॥ **ভস্যা॰ उथा** ভবদ্বীরো দানবো ন-श्चिगत्रवः। उरेथव (मार्थ जनवान् मृनिः काज्यायमञ्च जः॥ ইতি পুরুক্ত পূর্যমিন পর মিন সতু জন্মন। মহি-ষঃ পূজ্যিত্বাথ দেবী বর ম্যাচত।। তৃতীবে জন্মনি বরং প্রাপ্য কল্লান-শেবতঃ।নেহ নে জন্ম ভবিতেভ্যেব বর ম্যাচত ।৷ তেন দেবী পদতলে ভিষ্ঠত্যেষা হসুরো **ব্**ধুনা। নোৎপ ভি রপি তস্যান্তি সম্বর্তাণ স্তান্ বহু-मृश ।। এব॰ দেবী **भुभारमन महारम**-বাঙ্গ সম্ভবঃ। পরান্বাপ সভত• পুতিপত্তি মহাসুর: ॥ ইতিতে ক-থিত রাজন্যখা সম্কিল্লুর 🥫 (पर्वा भारवन भूक 🔠 🗥 **९४ ग्रिश स्मार्ट्ड ॥ इति महिन्छ** भुतरात्वक अक्षार हो लिए । नाइम् जियाह। कन्धारको स्टिव्हास त्रक्वीकाम्यम्ह (११४ को काउँ)

্রী সংগ্রামী জঙ্গে মহিবাসুর ।। এ: || ार्वि उत्र खाठ गथाव बक् मर মি। পুলন্ত্য উবাচ ॥ শুযতা॰ স॰ भुवक्षप्रशिक्षाः भाग भुगामिनीः। अर्डना व्यक्ता मूर्गा (भयः काल्यायनीः मूत्। मृदामृत वाती होती जगट-ক্ষোভ করাবুড়ৌ। রম্ভ^{েচ}ব করম্ভ শ্চ দ্বাবাস্তা• সুনহাবলৌ॥ **তাবপু**-**ট্রেচ দেবর্ঘে পুত্রাথা তেপত স্তপঃ।** বল্বৰাণান দৈত্যৌ স্থিতৌ পঞ্চন দে জলো। ভবৈকোজল সম্প্রা দি ीरका ६भागा शक्ष्मी। कब्र**स्ट्रेल**क हम् क रकः भाववरे भुवि॥ अहे নিন্দু সলিলে গুছেরপেণ বাসবঃ। व्यान्तरा मनामान निज्ञान यथ [যা ॥ ততো ভাতরি নষ্টে চ রস্তে: कान निवस् जः। वरहो स नीर्यः न हिम्र (हाउ निहम्महावनः ॥ **उठः भुगृञ्च (काम**यू शत्रुक द्रविशः पुष्ठ । (इ बुकारमा निक भीर्य व হিনা পুভিষেধিতঃ ॥ উত্তিষ্ঠাসুর मारेमव• नामगाजान माजाना। पृष्ठ-বা প্র প্রা**পি ম্বধ্যাপ্যতি দূল্র।** ১ 💮 া 💐 ের বীর তদ্দানি যথে-ं िनुस्य मृत्यमारु नहीं छ विक रेन कथा।। जरश क ुनीबरहा इन्स्रावद्य (इरबा एक् । महिल्ली-

का विकरी भूथः माल्य प्रख्वेमा धिकः ॥ जारकारा रिनवेजः मर्दिः मूर-जि रेप्पं रेजाफ भावक । महावाला বাযুৱিব কামৰূপী কৃতান্ত্ৰবিৎ ॥ ত॰ পোবাচ কবি বুলন্ বাচ মেব ভবি-ব্যতি। যস্যা চিত্ত সমাল্য ক-রিষ্যসি ততো হসুর।। ইত্যের মুক্তো (एरवन वङ्गिना ए।नरवा यरवो। यष्ट्रे॰ मुनिवरि याकः यरेकः भविवाविडः ৷৷তেশা পদ্ম নিধি স্তত্র বসতে নান্য চেতনঃ। গজাশ্চ মৃছিষা শ্চামা গা-বো ২জাবি পরিপ্লু তাঃ ৷৷ তান্দৃষ্ট্বৈব তদা চক্রে ভাবে দানব পার্থিব:। নহিষ্যা ৰূপযুক্তাযা ত্ৰিহায়ণ্যা তপোধन ॥ समागहह रिएउ।न्मु॰ कामयन्त्री उद्रियो। म চাভিগম্ব-চক্ৰে ভবিতব্য প্ৰুচোদিতঃ ৷৷ ভস্যা• नमञ्दार्ख खाः भुगृङ्गाथ मानदः । পাতাল॰ পুৰিবেশাথ ততঃ স্বভ-वन॰ गजः ॥ मृक्षेण्य मानतिः नहेर्दः পরিত্যক্তশ্চ ব্যুভি:। অকার্য্য• কার্যত্যেব• ভ্যো মালবট• গভ:॥ সাপি তেনৈব পতিনা মহিষী চাক पर्भना। **मनः ख**णान खर्मगुः यक्क মণ্ডল মৃত্তন॰ ॥ তত্ত বসত বস্ত भागा मा मुक्त गृत्त । यक्षीकन সূত শুভু নহিষ কামৰপিণ ॥

ইতি বামনপুরাণে ১৭ অধ্যামঃ।।#।। व्यन्ताह । बद्रगुरवाह । या ना नाया निष्याक्रकः निर्घणेः ॥ भतीताखुवुकारा। १वाळ बचनः। गाः ॥ रेमव नन्ता ভवत्प्रवी (मवकार्य) हि-कीर्यगा। महिवाथा। मृतदशः व्यर्वे বুন্ধণে ব্লিতা।। বৈষ্ণব্যা চ হতো দেব কথনেতদ্ধি সংশয:। বারাহ্উবাচ । ইयः जगिक्का (प्रवी गक्ना मक्द्र সুপ্রি। ক্রচিৎ কিঞ্চিৎ ভবেদৃত্ত नेशन वित नर्वविद्या श्रायश्चत इ তো দৈত্যো বৈফব্যা মন্দরে গিরে?। মহিষাখ্যো হপর: পশ্চাৎ স বৈ हिजामूबः भूनः ॥ नन्त्या निरुखा বিন্ধ্যে মহাবল পরাক্রনঃ। অথবা জ্ঞানশক্তি: সা মহিষো হজ্ঞান মূ-र्खिमान् ॥ व्यक्तानः क्वानमाध्यस ভবতীতি ন সংশযঃ। মূর্ত্তিপক্ষে চে **जिहान मम्**र्खं हिक्ककृति ॥ थ्या-याउ (वनवारेक) स इंश मा (वनवा-দিভি:। ইতি বরাহপুরাণ:॥ भश्यामूत्रमञ्जयः भू ज्वित्रख्खुनुः ।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। महियामुद्रक्की की मूर्गा। यथा। মহিষাসুর হজ্যান্চ পুতিষ্ঠা দক্ষি

ণাযনে। ইতি পুতিষ্ঠাতভুগ্তপদ্ম

भूत्राग वहन ॥

गश्यी महियाकः) भू ख्लुव्ः हिंउ महियी खी क्ठाजियकाताङः 🔅 इंडामद्रः ॥ रेमद्रिष्ट्री ॥ खेला ভেদঃ। ইতি মেদিনী॥ মহিষ षि**ः। उर्भि**र्गायः। मन्मगमः। महाक्षीता ७ शगित्रनी ८ लुट ा কান্তা ৫ কলুষা ৬ তুরঙ্গ দ্বিষণী 🐬 षानाः कीवलगः। मध्यकः हित भारक भी उनद्गः। **एकद्गः।** व পুঠি পুদত্তুণা ব্যাত্ত্বণা পিত্ত দাঙ

जुना मिव्यः।।#।। उन्ना मिर्ह्यः । মধুরত্ব-। স্রিপাত্ব-। শ্লেব্যকারি । রক্তপিত্ত নাশিত্ব। বলাসু বছ वः। वन्रवः। भ्रम्यवः। भाषनप् ॥ #॥ अम्। नवनी छ छनाः। कस

বর্ণ। মধ্ররসর্ণ। শী ভর্ণ। ক্্র षः। वलाषः। गाहिषः। भिख्यः । ज्नरदक्षः॥ #।। यम्राष्ट्र छलाः

। উত্তমত্ব॰। ধৃতিকরত্ব॰। সুথদত্ব॰ । কান্তিকৃত্ত্ব•। বাত শ্লেম নাশিত্ব•।

वलकत्रवः। वर्ष शृक्षातः क्रमञ्जः पूर्वान गुश्गीविकात समनज्ञः

यन्तानः लाफ्रीभनष्। इक्त्रवाषः गवाला न (मुध्य किराय । म

নোহারিবৃঞ্।।ৠ।।অস্যাস্ত্রগা

। जानाइ (भाक धनात्ताव नाभिक्

কটুবে । উষ্ণব । স্ব কণ্ড্তি
্লোদররেগে নাশিব্ধ । ইতি
বাজনির্ঘট ।।
ক্ষীপুষা জী শ্লীত্ণ । ইতি
াজনির্ঘট ।।

विश्वित । इंड अतः ॥ नि विश्वित । इ ना नवर एक वर्ड इंडि अपिनी ॥ उद्धन ख्याः । न श्रेष्ठ नुशापू वना । शिख इतः अक । इंडि जा कि निर्यं है । शिः । इंडि कि विश्वा । हिनाम हिका । इंडि कि विका खुल्यः ॥

इंड जिका अपन कर । इंड नाक निर्मा की जान कर । इंड नाक निर्मा कर । इंड नाक निर्मा कर । ज्या की कर । ज्या की किए जा निर्मा कर । ज्या की किए जा निर्मा कर । इंड नाम कर निर्मा कर निर्मा कर । ज्या की निर्मा के नाम कर निर्मा कर निर्म कर निर्मा कर निर्म कर निर

का अल्ब है।

महीज्८ भृ भईजः।यथा।महीज्जः পুএবতোপি দৃষ্টি স্তমিন্নপত্যেন লগান তৃপ্তি। অনন্ত পুদ্ধন্য মধো र्हि ठूं छ बिद्रिक मानाः निविश्व जनाः॥ इंडि कनात्रमञ्जूति > बर्गः ।। बाकाः। यथा। (यं नवामूगठा नि-. ত্যু॰ भुमार थन ভোজনৈঃ र अनुत् ক্তি প্রক তে হদ্য সম্বন্ধ্যান্য নহী ख्**ञाः।। ই**जिमार्क्रख्यभूतारा (हः ंवीगाश्वारः॥ महीमयः जि मृज्कितानिधिंधः। पैथा । তৌ তিমান্ পুলিনে দেব্যাই কৃত্বা मृर्जि महीमयी । यहंगाक कर्जु छ-नेताः भूच धूभागि उर्भ तिः॥ इंडि भाकं (७४ भूतात (प्रवीमा शांचीरे ॥ महीबरः शृः वृक्षः। इष्ट्रप्रवः॥ শাকবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্টিটি महीनठा खी किथुन्कः। इंडिज़िक्रः॥ मशेमुङः पुः मञ्जाः। हेरुप्रवः॥ मशिक्ष्ट भू॰ ब्राह्मा इंडामेंबर ॥ मरहाः भुः महामयः। ই ज्रामदः ॥ मरहन्तुः भू॰ विकृ:। ইতি महा छात्रे

मिहिनी॥ महिन्मुकहनी खी कहनी जिनः। ইতি ब्राह्मनिर्वणेः॥

তে তস্য সহসুনান স্তোত্র• ।৷ শক:

।। জমুদ্বীপস্য পর্বতবিশেষঃ। ইতি

शर्व

महिन्मुनगदी जी जनदावजी। इंडि मदत्र द्वावनी ॥

मरहम्मुबाझभी जी च जाविरणवः। वष्णकान् है जिल्ला । उद नर्गायः। हिन्द्रली २ महाक्ना ७ गरम्मी: इ विवयना ६ बनुमी ५ बनुत्रा १ बाजातका 🕨 विषाना क्र रीर्ववनी २० गर्ट कना ३३ मः रवाक्षी ३२ वृहएकना ३० वृहः षाक्री ३३ (मोम्या ३६ गवाहिंडि है। 38 हिन्दरनी 39 वन्धमुनी 36 ছাণ্কণী ১৯ নকসম্ভবা ২০ । অ न्। खनाः। इन्द्रवाद्यनी खनजानि-ত্ব'। রসে বীর্য্যে বিপাকে চ কিঞ্চিদ্র ণাধিকত্বঞ্। ইতি রাজনিঘণ্টঃ।। मरमुगी जी देनु जार्ग। इंडि

भद्रञ्जावनी ॥ गरहत्र । की मझ ही वृक्तः। इंड्र मदः॥ सरस्यना देउ। भि भार्तः।

ইত,সর্গীকাশাণ ভরত:॥

महिला ﴿ अी नाती। देजिनदत्रङ्गाः भारक्षिका रिकी।।

गरुणः पु॰ णियः। ইতি भद्राञ् वनी ॥

भारम्भवद्भः भूः व्योकनवृक्तः। ইতি भरेरवाधः भूः सः **मद**्गिका ॥

मरहस्यतः भूः भिवः। इंडामतः॥

ग्रेहना

व्यम्। वृंड् शिव शंवा। विषशाना नार्ववाः नहान जीच्यतः च्याः। र्घत्रक उत्यम न्यके हि मनी वि णः ॥ इ **ि नुका**रेववर्र्ड भुक् जिथरर ৫০ ग्रद्यायः ॥ व्यम् दिवार् यद्य कनः यथा। यदियतं मगायुंक भी-*मृणः यः मादा*८ क्रा। गठउ॰ उम्। कन्यामः वाष्ट्रिजकः ভाववाजि ॥ ইতিকালিকাপুরাণে শিববিবাহে ८० व्यवग्रायः ॥

मरहचत्रकत्रहुरका छी कदरजायानरी। ইতি কেটিং ৷৷গৌৰীবিবাহ সমযে শঙ্কর কর গলিত সংপ্রদান ভোষ পুভবত্বাৎ করস্য তোনং বিদ্যুত্তে হরেভি করতোয়া। ইত্যমরটাকাং गा ভরত ।।

गरम्बती जी सरम्बत्भन्नी। यथा। ঐ পাতৃ দক্ষনেত্র নে ছী পাতৃ वानत्वाहरे । बी शाजू पक्षकर्न 'মে ভিষ্ণাস্থানহে**শ**রী॥ই**তি তত্ত্র** সারে ভরনেশ্বরীকব্চণা **অগরান্তি**-छ।। ३७ मप्रान्तिका॥ का नार ইতি হেম্চার-এরাজরীতি : স্ন রাজনিঘট:

निर्घण्डः ॥

यर्ग जो

্ট্ৰ' জী বৃহতী।ইতিয়াজ কিহলা।

্ষা হৈ জী। ইতি ভাব-

ना । व्हपूर शतक । । वाहारका जी विष्ट । इंडिक्टिः। बाहार शतः जी शद्यः।। मात्र मश्यो । इंडिप्स हैं।

महार मदः भः जिल्लिसमूथ जनक कर्या यथा। महिन्छ द्या निद्रम् मा-दे या म्लभा निक्कः। रूक् एत्वा मि विभाग्त भूकत्वी याः भूक् कुः॥ यन-क्र वशः भिउद्यो उथा एत् भुकाश जिः। भूजिमयर मद्रस्थि कर्ज्व गुण्डा नहार मदः॥ इंजि जिथा निज्ञ प् वृक्षभूद्राग वहनः॥ व्यक्ति । मुन्ना-उद्या नत्या व्या व्या प्रम्ना महार-मदः। नहानवन गः भद्राप्त्र विना-नः नृशानयः॥ इंजि का विका भूद्रा-राष्ठ व्या याः॥

নহোৎ সাহঃ দ্রি অতিশ্যোৎসাহ যুক্তঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ। নহোদ্যমঃ ২

> ্র পুণ লাজ্যার পুণগুরাজ-ব্যবহার কর্মান **র পুক্তি-**বিভারত হৈ জুব**শুনঃ । ইতি** বিভারত ইংগ্রে**শ্রাদ্যনণ্ট ।**।

महानिषः भ् मनुषः। यथा। वका
पद्मा वनः अपः विद्विज्ञ महानः
थिः। यथ कृजः ज्ञानमृत्वन म द्वानः
किः कित्रवाक्ति।। ইकि नहानावेकः
गरहारयः क्वा भूत्रविष्णयः। उथभर्यायः। कान्यव्वः २ कन्यास्रद्वः ७
गाथिभूतः ३ कोष्णः ६ समह्यः ७
। ইकि रह्मवन्द्रः॥

नहार्यः भू॰ कान्यस्तुर्ह्णः॥ व्या-ष्मिण्डाः॥ व्यान्तर्गः। इंडिस्निर्ह्नी ॥ बानी। इंडिस्मिष्टम्यः॥ नहार्या जी नाग्यना। इंडिजाब-निर्ह्णः॥

नहारती की नहाणजादती। इंडिं जादशुकाणः ॥ वृश्कृषत्र पृष्क कि ॥ सरहारुमः कि सरहार माहः। इंडिं-मतः ॥ व्याजिणस्याप्यारंग शुः ॥ सरहाष्टः शुः जानवृकः। इंडिं जादशुकाणः ॥ व्याजिम्ह कि सरहाष्ठः की व्यक्तिम्पर्वेषः । यथा। ज्यात्व सहरहम्पर्वेषः शूणा-कीनाः मरहाष्टिः। व्यव ॥ विना ण-त्रीत्र वित्रकीय म्थी ज्य ॥ हेजूर-खिः ॥

নহোৱাদঃ প্ নৎস্যবিশেষঃ।ফলুই ইতিভাষা।যথা।রাজগ্রীব শিক্ত ফলঃ ফলকীচি মহোঝদঃ।ইতি

मदत्रज्ञावनी ॥ यज्ज्ञास्त वि ॥ মহোরগ ল্লী তগরমূল। ইতিরত্ন

ग्रामा॥

নহোরগঃ পু॰ সর্পগণবিশেষঃ। ইতি (रमहन्यः।। वृह्ट मर्शमावसः॥

महानः। जी उन्नावित्मवः। यथा।

বিদ্যুৎস্তনিত নিৰ্ঘাত নহোলানাঞ্চ সংপ্লবে। আকালিক মনধ্যায নে

ि छत् मन् वर्वी ।। मरहाङ्गानाकः

সংপ্লবে ইতন্ততো খনেক মহোলা-

ना॰ मिमाउ।। उन्। नक्रम माङ्

व्रविभिक्षः । व्रहिशा ह मृजागा

त्रक नीम मिथाङ्कृता। भोक्षी म পुरारान उद्गानाना विका मृजा।।

ইতি তিথ্যাদিভন্তু•॥

नरहाकः भ्॰ वृङ्घ्यः। ইত্যমরः॥

ख्टभर्यशयः । वृष्णः २ वृषः छ भू-

व्यवः ८ वनी ६ (गानाथः ७ व्यवजः

৭ গোপুৰ: ৮ উচ্চা ৯ গোপতি:

১০। ইতি রাজনিঘণ্ট:।।

মহৌজা: ত্রি অভিভেলোযুক্ত:।

महर्दारका गरमा जि विगुर्ह वस्त्री

<u>्रो अध्येमकवहरम खंद्रश्माथावि</u>

ण्डानन मीर्घ कृत्ज महोना है जि

भार विश्वरः॥

नरहोषध की ज्मारकार ॥ मुश्री॥

ন ক্ষিকা

ভ:। ইতি ব্লাজনির্ঘণ্ট:।। পি 🦏

इंडि नफ्रिका ॥ অভিবি

ইত্যমর: ॥

नरहोयिथः जी प्र्वा।। वड्डावृक्

हे**ि श्रद्मात्**का ।। सहाज्ञार्व

पुरावित्नयः। यथा। महत्वती उ

ব্যাদ্বী বলা চাতিবলা তথা।

পুয়ী তথা সিংহী অইমীচ সুবৰ্চ

॥ मरहोयग्रंडेक ल्युक्क महार

त्न निया द्वाय । इंडि भाविक

नन्म ध्उ नर्माभुतान वहनः

, व्यभिष्ठः । भुभिन्नभी भागमनः

ज्रताजः गउगवती खज्ही महरन

वा চ महोयविशनः मृजः ॥ ह

मक्षिमुका।। (मुहोयिधक।।

মহৌষধী জ্ঞা শ্বেতকণ্টকারী

ব্ৰান্ধী ।। কটুকা ।। অভিবিষা

ि ब्राब्रनियंग्टः।। हिनामिक

। ইকি ক্রিকাওশেষ:॥

মক্ রোবে॥ সংঘাতে। ইতি কবি

कल्लकमः॥ सक्का छ। इंडि मूर्गामाञः

मकः शुः यत्रायाहारेनः। ই

श्रावनी॥ (कावः॥ मम्हः

है वि भूदिशक्षा पूर्वतम्बनार ॥ मक्तीर्याः भ्र भियानवृकः। इटि

बाजनिर्घणः॥

लगूनः॥ वाजाशिकन्तः॥ वद्यनाः । मिक्का जी कीवैदिणयः। मारि

'इंडि ভाষा। তৎপर्यश्रायः। नकी কা২ভন্তঃ ৩ নাচিকা ৪ গন্ধলো ীনুপা ৫ পতঙ্গিকা ৬ পত্তিকা ৭। ইতি শব্দরক্লাবলী।। অনৃতোৎপ-का ৮ वमनीया 🛪 शबक्षा २० । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ নীলা মক্ষিকা বর্ষণা ১১। ইত্যমরঃ ।। তরাশক भ्रा यथा। बिकनाङ्क् न भूझानि ভল্লাতক শিরীয়কণা লাক্ষা সর্জ্জ-त्रम रेक्टर विएक रेक्टर रक्षुन्।। এতৈ ধ্পৈ মঞ্চিকাণা নশকানা বিনা**শন** । ইতি গাৰুডে ১৮১ অ-श्रायः ॥ কিকানল ক্লী সিক্থক। ইতি द्राजनिर्घणः॥

ফীকা স্ত্রী মৃফিকা।ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥

া ড লি শব্দে । মানে। ইতি কবি-কল্পদা: ॥ ড লি স্থিতি। শুক্রা ধর্মণ নিমীতে যঃ। ইতি হলাযুধঃ। ইতি ভটীকাষা• দুর্গাহাসঃ॥

।। ল নানে। ইতি কবিকল্পদ্মঃ।। ল মাতি ভূমি॰ নলেন রাজা। ন गान्ति गानिया यम्। यम जिल्द स्वारत । इंकि एगागूदः । इंकि धुणानामः ॥

७ व भारत। इ.ड क्विक्चक्रमः॥

মাণস ড য নাযতে। ইভি দুর্গাদাসঃ। वर वाद्रणः ॥ विकन्नः। इंजि विषिनी ॥ जी नन्नीः। इंडि (मिनि।। মাতা।। মান•। ইত্যেকাক্ষরকো-यः मदत्रवावनी ह।। মা) ত্রি নদীয়াকর্মতা। আমাকেইতি भा•) ভाषा । श्रमहत्राट, विजीरेयक বচন নিম্নন্ধণে ইভিব্যাকরণ ॥ মাংসং ল্লী রক্তরধাতৃবিশেষঃ। মাস্ ইতি ভাষা। স তু গৰ্ভ্ৰন্তালক-স্যাষ্টভিৰ্মাসৈ ৰ্ভবতি। ইতি সুথ-

বোধঃ॥ভাগবভমভেচভুভি র্মাসৈ র্ভব**তি।। তৎপ**র্য্যায:। পিশিত•২ তর্স: ৩ পদল: ৪ ক্রব্য: ৫ আমি-ষ ৬ পল । ১ ভ ্যারঃ।। অসু জ । ৮ জाव्हनः ৯ कीतः >०।। সর্বমাংস खगाः । वाज नामिष् । वृष्ठाप्तः। वलाञ्च । ब्हाञ्च । वृ•इभञ्ज । (ह-**শ স্থান সাত্ম্য সংস্থা স্ব চাবৈ** ভূ*ি* या नाना क्षणपृष्टा। 🕸 ॥ शुज्र ভূশযান্প বারিজ বারিচারি মাণ-**मख्याः। ७**क द्वर्गा উक्षद्वर**। ম**यूबद्वर । त्रिक्ष द्व॰। वा उद्यद्व॰। भूक्कवष्कवद्व था 🗱 ॥ विक्रित পुতूर का 🤊 व भाष्म खनाः। वश्द्वः। भी उद्यः। मध्यद्वः। कषायदः। न्ताः हिङ

एक ॥ # ॥ श्रञ्जविष्णय ना॰म গুণাঃ। এফদেছেলি প্রার্জ ম্গাণা পক্ষিণা পর । সরেষাঞ্চ শির স্কন্ধ श्लीक वर्ष यक्ट खरा। भार भूह। उ নভিষ মুম্ব কোডাশ্চ মেহনা:। ধাতবং শোণিতাদ্যাশ্চ গুরবং সু र्याखातः॥ 🗱 ॥ भुमे खानुमेख गा॰ -**जः य**था। वयञ्चः निर्द्धियः ऋष्ट्राङ् ङः **ना॰म॰ भूममारङ। मृङ्क व्याधिङ•**'∭ बुप्रदेश वृष्ट्वः वालः विरेष र्रुडः ॥ छा 📗 (गाठत २७॰ व्याफ मृत्वि॰ ना॰म मूटम्राङ्ग । 🗱 ॥ अञ्चेतिथा मा म (यानि यंथा। भुनहाः) भुनञ् छकः गाट व्यवत (माजाम्यः। जूमवाः २ विनमायिजाए नञ्च (गाधारयः। ष्यान्थाः ० थन्न महित वज्ञाहानयः। कलकाः ३ अस्त्रीताम्यः। कल्लहताः ৫ হ'স বক পুভূত্ব:। জাঙ্গলা: ৬ र्वात काशास्यः । विक्रिताः १ वि-**কীর্ণচরণাৎ তিত্তির ম**যুর **ল**ন্ধটাদ यः। भुज्ताः ৮ भुज्ता प्रतगर कः পোত পারাবতাদয:। ইতি রাজ নির্ঘণ্ট: ॥#:॥। অপিচ। না স বা-তহর সর্ব বৃংহণ বল পুষ্টিকৃৎ। শুীণন ওক হৃত্যুগ নপুর রসপাক याः॥ ৠ। व्यथ् उत्स्तुनः। भा•त्र-् বর্গো দ্বি**ধা জে**ধাে **জাঙ্গলান্প েভ**া

দতঃ৷ তত্ৰ জাক্লস্য লক্ষ্ণ গুণাক । गाः भवर्गा १व इद्याला विलञ्चाकः গুছাশ্যাঃ। তথা পর্ণস্গা র্জেয়া विषिताः भुज्ना यशि ॥ भुजरा यथः **চ গু। न ऽ। वाङी बाङ्गल का** उवः। कारः क्ला नधुता कका खतता लघत खथा ॥ वन्ता (छ व्ःइना व्या मीभना বেশ্য হারিণ:। মূকতা॰ মিরিমনত্বঞ ९.मृरद्राप्टि उथा ॥ वाथिर्यंऽ सक्-**6**॰ ছिদ्धि भूरमञ्जूष श्रान् भरान्। न्नीशमः शनगण्य नामगण्डाननाः नगान्।। अ।। जाशान्त्रना नक्षाः গুণা চা কুলেচরা: পুরা দ্যাপি কো-वशः भारित ख्या। न्दम्या वाउ সনাখ্যাতাঃ পঞ্ধান্পজাত্যঃ ॥ व्यान्त्रा नधुताः निका खत्राता वहि नारनाः। स्मिष्यनाः निह्ना महा-পি মাণ্স পুষ্টিপুদা ভূশা:।তথাতি यानित्न (छ हि भाषा १भवाउनाः ন্তা; । # ।৷ অথ জাক্লানা গণনা विभिष्ठी खगाका इतिरान अत्रक्र-র্ব্য প্রত ন্যন্তু শম্বরা:। রাজীবো-পি চ মণ্ডী চেত্যাদ্যা জাঙ্গল সংজ্ঞ-কাঃ ॥ হরিণ স্তঃমূরণঃ স্যাদেণঃ কৃষ্ণঃ পুकीर्खिकः। अटक केषात्र, एः महस्या রিণাকৃতিকো অহ্যত্ত তাত দী **লাওকো কে**ন্দ্রের্জ 🕏 💎

র্ত্তিত:। পৃষত কল্ 🗓 न्यू: স্যাদ্ধরি-नाट किकिन नुकः ॥ नासू वर् विया লৌথ শম্বরে। গ্রেয়া মহান্। রাজী-বস্তু মৃগো জ্রেয়ে রাজীভিঃ পরিতো ्रतुष्ठः ॥ या मृगः म्क्शीनः न्राध्य মুণ্ডীতি নিগদ্যতে। ভদ্বালা: পুৰেশ: সর্বেপিত্ত শ্লেম্বরা: মৃতা:॥ কিঞ্চি দ্বাতকরা শ্চাপি লববো বলবর্দ্ধনাঃ । 🗱 ॥ व्यथ विष्वभयानाः भगना छः ণাশ্চ। গোধা শশ ভ্রহাখু শল্ল-कारा विल्मागः। विल्माग वा-ভহরা মধুরা রস পাক্ষোঃ। বৃংহণা वक्वविम्बा वीरग्राका अलि कीर्वि जाः। #।। ज्य रहामगाना॰ गनना গুণা 🕫। সি হ ব্যাঘু বৃকা ঋক তরক षीलिन खथा। तक जषूक मार्ब्जादा **३७।। त्रास खहामानाः ॥ ज्वनू**रहा রক্তনেত্রো বৃক্ত ভেদ: সনাধ্যা:। ও হাশ্যা বাত হরা ওক্ষ মধুরাক্ত তে।। সুধা বল্যা হিতা নিত্য নেত্ৰ ॥ एक विकादिना । 🗱 ॥ यथ अर्गम् गाना गनना रामह । वतनीरका वृक्षः মাৰ্জার বৃক্ষনকটিকাদ্য: । এতে भर्गनगाः (भाका मुभ्रज्ञारेन्। सङ् िं छ। ए खुरुए श्राहेश त्रुपा क-ষ্ট্যান প্রোধন হিডালে স্বাসার্শঃ ार्य रामनाः एडे भूज भूतीयकाः॥

क्षा अथ विश्वितानाः गनना खना**न्छ।** বৰ্ত্ত গালাব ৰিকিব্ন কপিঞ্জলক তি-खिदाः। व्यत्वि र व्यक्तिपाण विश्वि-ताः मनुराह्याः ॥ रिकीर्ये छक्त्य-ख्याङ्गाङ्गाङ्गि विद्याः। कः পিঞ্জলা ইভি পুরিক্তঃ কথিতাগৌ-রতিভিরা:।। বিষিত্র। ন্রুরা: শী-**जाः** क्यायाः क्ट्रैशाकिनः। दन्ता वृष्ण ज्ञिलावनाः शेथ्रा एउ व्यवतः সৃতাঃ ॥ 🗱 ॥ অথ পুতৃरानाः গণনা গুণা 🕫। কাল কণ্ঠ হ হারী ত কপো-ত শশ পত্র হাঃ। সারিকা থঞ্জরী-টশ্চ পিকাদ্যা: পুতুদা: মৃতা: ॥ পুত্र। ভক্ষয়েও তুওেন পুত্रা ख डः। करभार डा ६वनः भार**ः भ उ**-পতো বৃহ্ছু हः ॥ পুতৃরা মধুরাঃ পি -ख कक्षां खे वद्रा हिमाः। **ल**घ्रवा व-দ্ধবৰ্চকাঃ কিঞ্চিৎ বাতকরাঃ মৃতাঃ 11 # 11 व्यथ भुत्रहानाः गनना खना-শ্চ। কাকে। গৃধু উল্কশ্চ চিল্লশ্চ শশ্ঘাতক:। চাষে। ভাষশ্চ স্বর हेर्डार्डाः **भुगहाः** यृजाः ॥ भुगहाः কীৰ্ত্তিতা এতে পুসন্থ। ছিন্য ভক্ষ-गार । भूत्रहाः थल् वी ग्राकाः य-শ্বাস ভক্ষবন্তি যে।। তে শোষ ভ-মকোন্মানৈঃ শুক্রফীণ ভবন্তি হি ৷ শশ্বাভক্সানে শভ্যাভকোপি

পাঠ:। বাজ ইতি লোকে॥ 🕸 ॥ অথগান্যাণা গণনা ভণাস্চ।ছাগ भिष वृषाचारा गुमाः (भुका मः হর্ষিভি:। গুান্যা বাতহরাঃ সর্বে দীপনা: কফ পিত্তলা:।। নধুরা রস পাকাভ্যা বৃ•হণা বলবর্জনাঃ।#।। ज्ञ **ब्राट्स ह्यानाः** शनना खनान्हा লুলাপ গণ্ড বারাছ চমরী বারণা-मयः। এতে ক্লেচরা: প্রোক্তা যত: क्ल हत्रसभी।। क्लह्ता गरूर-शिख इता व्या वलाव**राः। मध्**त्राः भी उनाः त्रिका मूबनाः (भूगा वर्षाः नाः ॥ 🕸 ॥ व्यथ প्लवानाः गणना खणाः শ্চ। **হ'স সারস** কাচাক্ষ বক ক্রৌ थः সরারিকাঃ। नन्तीम्थी সকাদয়া वनाकाम्याः श्लवाः मृजाः । श्लवत्त्रः 🛭 সলিলে যমাদেতে তমাৎ প্লবাঃ म्जाः ॥ श्रृना करिताता तृत्वा ह यन्।। শ্চঞ্পরিস্থিতা।। ৩টিকা চঞ্চ স-দৃশী জেয়া নন্দীমূখীতি সা। প্লবাঃ পিতত্বাঃ শ্রিকা মধুরা গুরবো ছি-गाः ॥ वाज स्त्रयभुमा कानि दन শুক্র করাঃ সরাঃ াঞ্চা অথ কোষস্থা ना॰ गगना रागामह। मञ्जः मञ्जनशमहाः পি শুক্তি শঘুক কর্কটাঃ। জীবা এ-বশ্বিধা শ্চান্যে কোষস্থাঃ পরিকীর্ত্তি ভাগা কোবছা নপুরাঃ স্নিঞ্চাঃ পি

ত্ত বাতহরা হিমা:। বৃ হণা বছব व्वाक वनवर्षनाः॥ 🛊 ॥ व्य **मिना॰ गनना खनाण्ड ॥ ऋ**ञ्जीत ^१ ৰক্রাণ্চ গোধা মকর শক্ষরাঃ। যা कः जिल्लात (कड)ारयः भाष्. শ্ৰতাঃ।। পাদিনোপি চ যে ওেঁ কোষস্থানা গুণৈ: সনাঃ।ইতি ভ भुकामः ॥ अ। अ।। जन्ह। ना वा छ इतः वृष्रः वृःशः वनवर्षाः পুণিন ওক হৃদ্যঞ্জ নধুর রস कर्याः ॥ # ॥ जरम्राट्शि इ मद्वेवियः यथा। भूमश् छक्षयः छ পুসহা एउन की खिजाः। ভূশ या षणायिदामान्त्रान्त्र मः भुयार कल निवामाञ्जनका कल्लहर्यहरू *(निठत्राः। युनुजा जायुनाः (*शुक्रि भूगा जक्त ठादिनः ॥ विकीयं। वि **इ**ज़िट्मित शुजूर। शुजूरा खबा যোনি রষ্ট বিধা ছেষা না সাল गः भूकीर्खिं जा ॥ 🗱 ॥ भूमहा ज्ः यान्भ वाबिका वाबिठाविनः। ७४% মধুনাঃ গ্লিখা বাত্য়াঃ শূক্রবজন ।। नावास्त्रा विक्रिता वर्णः भुकु काञ्चा मृगाः। वनदः भीतः प्रा नक्याया विजात् । १३ । अस्य म नग्य खगाः। द्राप्ता गाः गन्। हक्ष्य त्•इनः श्राम बर्ख्यः । एत्वता ट-

विकातमः म्टिशकः सत्रवस्तः॥ ७१ विभिन्ने मुक्तीनाः काठानाः वृशिनाः ্হিত:। 🗱 🛮 অথতৈলপত্বমাণসভগা: रं भा•म• यदिन म•निष्क• वीर्यातक• निखनः करूँ। अधिमन्तीशनः क्राः मृष्टिन्ट शृष्टिन हुन ॥ # ॥ श्डलक মাণসঞ্গাং। মাণসন্ত মৃত সংসিদ্ধা मृष्टिमः भृष्टिनुह्मयु। भीगनः गर्ववाञ् া বিশেষামুখশোষিণা । 🗱 🛭 अतिमृष्ठ अपिक मा नारा लेकन ্ৰণাশ্চ। মাণসণ বহুঘূতে ভৃষ্টণ সিজ্বা চাঞ্চাম্বনা মূহ:। জীরকাদ্যে: সমা-থুক পরিশুষ তদুচ্যত।। পরিশ্র ছর সুঞ্জ হর্ণ পুণন ভক। भेखवः वनस्मधान् ना॰स्योजः भूकः ब**र्बनः ॥ छ**रम्ब घनछकाराः श्रुम्थिः ৰবিজাতক । পুদিশ্ব বল মা সাগ্ৰ । ছন বাত পিভৱিৎ।। क्षा मृजि-কা পর মাণ্স গুণাঃ। মাণসম্ভ শ্ লিকা প্রোত মঙ্গারেণ বিপাচিত• उद्धर॰ एक उद्ग॰ व्याः मीक्षायीना जमा हिउ॰॥ 🗱॥ (वन्नवात्र मा॰जज লক্ষণ গুণাশ্চ। নিরন্থি পিশিত পিষ্ট সিদ্ধ ওড মূতাদ্বিত। কৃষ নরিচ সংযক্ত বেশবার ইতি মৃত। :वभवाता कमः विका वा**लाश**हर वण्यक्षा यन स्वरंक वाक्षन

मर्मा भागत्याः। उम्र उम्र उत्र रेन्डज्ञुन पारेष विजानस्य ॥ 🛊 ॥ একত্ৰ সৰ্বমাণ্স ভক্ষণ দোবো যথা । একত্র সর্বমাণসানি বিক্ধ্যন্তে প तत्त्रातः। 🛊॥ भाःभभा खबादः यथा । ज्ञान्डे खन निडे निडोप्टेख्य প্ৰাং ৷ প্ৰসোষ্ট গুণ- মা সে মা সা-म्हेखाः वृज् । वृजाम्हेखाः रेजनः मर्पनामक एक्ष्मण ॥ इंजि द्राज-वल्ला अ: ११ अ।। वर्ष्क्ष नीय मा नानि यथा। कवराम शकि माज्रह मूक भाः मानि वर्जारायः । मात्रीमकम्मा-ন্ হংসান্বলাক। বক টিউভান্।। चद्रतः कालभारक थञ्जतीहे मृगवि-कान्। ठात्रान् माध्नान् द्रक्रशानान् কঞ্বা বৈ কামতো নর:।। বন্ধুর কা-নতো জ্ঞা সোপবাস জ্ঞাহণ বসেৎ । ইতি গাৰুডে ৯৬ অধ্যায়: ॥ 🗱 🛭 भाग जक्रा सार्या यथा। ला-ভাৎষ ভক্ষণাৰ্থায় ক্বীবিনং হস্তি গো নর:। মজ্জাঙ্গণ্ডে ব্দেৎ সোপি ত-ডোজী লক্ষবর্ষক ।। ততো ভবেৎ স শশকো নীনশ্চ সপ্তজন্মস্! ত্ণাদ্য-क कर्मा अं उठ: मू कि॰ वा उट धुन॰ ।। ইতি বৃদ্ধবৈবর্ত্তে পুকৃতিখণ্ডে ২৭ व्यथायः॥#॥व्यभिष्ठ।वनाकः स्•म **रा**ठ्रह• कनिवद्धः मृकः उथा। द्धः

जुज्क हरकाइक जानभारक काकिः वा ।। ठावक अक्षत्रीहेक त्नान गृश् ভথৈব চাটেলুক: চক্ৰবাৰক ভাৰণ পারাবতম্বৃপি II **কপোত** টিটিক-ক্ষৈব গুামটিউভ মেব চ। সিংহ वराष्ट्रभ मार्ड्डाद्र॰ याम भ्वद्रसम्ब ह ॥ मृगानः अङ्क दिख्य गर्म उक्ष म ज्ञाय । व ज्ञाय अर्वग्गाम् भः किए। १न्। न्तरान्तर्वान् ॥ बल्हार्वान् इलाइताम् भागिन (काछि शात्रगा। इंडि क्र्यभूत्रार उभित्र छार्ग ५५ व्यथायः ॥ 🕸 ॥ व्यन्तः । नीपापः विधिना मा म विधि खाना में कि बि জ:। জঞ্ব। হৃবিধিনা মাণসণ প্রেত্ত তৈ ব্লদ্যতে হ্বশঃ।। ন তাদৃশ•ভ-याजाता मृगरु धना थिनः। याष्ट्-শ• ভবতি প্রেত্য বৃথানা•সানি থাঁ-मजः ॥ अर्ग्याम्य्जनामु नाक अ र्य्याट शिष्टेभमू ज्या। म ख्व जू वृ था इन्ड॰ भणु भिरहर कनाठम।। या-विष भगूरवागानि जावर क्रवा इ মারণ । বৃথা পশ্ম: প্রাপ্নোতি প্রে-**७** इ. ज्यानि क्र ज्यानि ।। ना कृषा शुर्गा না হিংমা মাস মৃৎপদ্যতে কু চিৎ। নচ পুৰ্ণবিধঃ স্বৰ্গ্য শুস্থান্মাণ-मः विवर्क्कार्ये ॥ भगूटशिक्ष माः अभा वस वस्त्रो ह रिह्ना । भुननी

का मिक्छंड गर्वगा गरा उक्तार ণান্দ ভক্ষৰতি যো দাণস্য বিধি হি ष्ट्रा भिणाहवट् । म लोक श्रियद्यो যাতি ব্যাধিভিশ্চ ন পীড্যতে ম ·सभाः मः अत्रभाष्टमन (या वर्षाय छ मिह्नि। अन्छ। है। शिकृन् (मरोन् ·ज्रामा नास्त १ भूगाकृष्ट ॥ वार्स বৰ্ষে প্ৰথমেধেন যো যজেত শত॰ স-माः। भाष्मानि हन शास्त्र छर्याः भूगा कनः ममः ॥ कन म्लामरेम र्घ रिष्र म नामानाथः एकाकरिनः। न তৎ कल भवात्शां उत्रा•म शब्र-বজ্জনাৎ।। না॰ স ভক্ষবিতামূত্র য-প্রে মাণ্য মিহ্ঘ্যহণ। এ**চ্ছ্যাণ্যব্য** भाश्यक्ष भूवमिक मभीविनः ॥ (या যস্যাপ নশাতি স ত্যাপাদ **উচ্যতে। यथ्मामः मर्त्रमाः मान् छ-**वाबि मान विवद्धित्र ॥ इंडि मान नरव १६ व्यवतायः ॥ 🗱 ॥ व्यन्ति । 🗃 -ভাগবত পঞ্চসক্ষন্ধগদ্য । যেত্বি इ देव शक्याः भूक्यरमध्य यक्षस्य। याण जिएगा नृश्मृन् थान छ जानक তাক্ষ তে পশ্বো ইহ নিহতা ব-समरान या उराङा ब्राव्हा गणाः । भौनिक। इव जूधि जिना वनाया ज्रक् शिवश्रीि ॥ वृक्षश्रहानः । श**मास** गार्ग्यागमा न मान्तर गुर्दि

किरिट । मृष्ठयाः मः श्राह्मभागाः म्इः इक्षा न अवाशिया ॥ यहाजात्रजः । হরাগার্ভো ভীর্থিতো বাপি যৌ মাণ-ध्य[्]नाकारलाज्यः। कनमारश्राकाः ্যত্নেন সো হস্ববেধ শতস্য চ।। ন-িন্দি পুরাণ - যক্ষ্যেপদেশ**াল**কতে পরস্যত্ নহাতানঃ ৷মা**ংসস্য**বর্জ न फल (ना श्वा मार फल लाउं ॥ ভবিষ্যপ্রাণ । আনিম রক পাক্ত যো ভুদ্ধে চরবে দনে। সপ্ত জন্ম ভবেৎ স্বত্তী দরিদু শ্চোলাগ্রায-ভেয়াবিফুপুরাণ। চতুর্দ্দা্রস্থনী চৈ ব অনাবাল্যাথ পূৰ্ণিমা। **পৰ্বাণ্ডে** ভানি রাডেন্দু রবিসক্তান্তিরেব চ।। खी रेजन गा॰म म॰ जानी शर्वाय তেষু বৈ পুসান্। বিন্তু ভোজন নাম পুযাতি নরক মৃত: ॥ ইতি **ভিথ্যদিভভু•।। #। #।। অথ মা•**. স ভক্ষণ বিধি: ৷ শাুদ্ধে দেবান্ পি-जून शाही थामन भाग न माय-ভাক্। বসেৎ স নরকে ঘোরে দি-নানি পশ্রোনভিঃ ৷৷ সমিতানি দুরাচারে। যে। হস্ত্যবিধিনা পশূন্। মাণ্সণ সংত্যন্ত্য সংপ্রাপ্য কামান্ যাতি ততো হরি:।। ইতি গাৰুডে ৯৬ অধ্যায়ঃ।। 🙉 । অপিচ। গোধা কুর্ম: শশ: খন্নী, শল্যক শেচতি সত্ত

माः। एक्रान् शक्नशाविष्ठाः मन् त्रार् नुवाशिक्षः॥ भ८ न्यान् मणनान् ভূঞ্জীত মাংসং রৌরব মেবচ। নিবে-দ্য দেবতাভ্যুম্চ ব্ৰাহ্মণেভ্যুম্চ না-ন্যথা।। মাযুর• তৈত্তিরকৈব কপো-ভঞ্চ কলিঞ্জল•।বাদ্ধ্য নিস• বক্চ ভ क्पु नीवर अश्वाबिजाः ॥ अकः প্ন: সি·হতুগুশ্চ তথা পাঠীনরোহি· তৌ। মৎস্যান্ত্রেত সমুদ্দিষ্টা ভক্ষ गाय **जलाब**रेनः ॥ (भूमिक् उ॰ जक्र-(यरमयाः भागक विज्ञाम)य। यथा विवि निगुङ्क भूगानामि हा उप्रय া জক্ষপি নামানি শেষভো-की न विभारत। खेवशार्थ मणरत्ने-বা নিযোগাত্মজ্ঞ কারণাৎ।। আমৃ **ञ्चित्रक यः भाष्क रे**नत्व वा भाष्म मूद-ज्ञाबद । याविष्ठ প्रमृत्त्रामानि जाव-েতো নরকান্ বুজেৎ।। ইতি কূর্মপুরা-ণে উপব্লিভাগে ১৬ অখ্যায়ঃ॥ #॥ অপিচ। মা সস্যাতঃ পুৰক্ষ্যামি विधि ভक्षा वर्ड्सन। (भाकि उ **७क्वराबा॰न॰** वाक्रगानाथ काम्। যা। যথা বিধি নিযুক্ত পুগণানা মে-ব চাত্যয়ে ৷৷ প্রাণস্যান্ন নিদে সর্বণ পুজাপতি রকল্লয় । স্থাবর জঙ্গ-মঞ্চৈব সর্ব• প্রাণস্যভোক্তন• ॥ চ-রাণা নমন্চরা দ স্ট্রেনামপ্যদ স্ট্রণ: ১

श्रह्याण अरुखाना॰ ज्रागारिकत ॥ **जीवरः ॥ नालान्य्रज्यमाम्यान्** भुगिता १इना इनामि। शाबित म् है। शान्ताक मानिताखात वर्ह।। यक्राय सन्धि भी भागागुर्छ। य रिएया বিধি: মৃত: ৷ অতো হন্যথা পুরুত্তি স্ত রাক্ষসো বিধি কচ্যতে ।। কীত্বা স্বযন্ত্রাপুত্পাদ্য পরোপকৃত মেব- ,, वा । (रवान् भिज़्नईयिषा थारन् ∥ गाः मः न मूर्य। छ।। नियुक्तस्र यथानः। য॰ যো মা॰স॰ নাজি মানবঃ। স প্রে: ত্য পশৃতাং যাতি সম্ভবানেক কিং শতিং ॥ ন মাংস ভক্ষণে দোষোন भारता नह रिनथ्रान । भूवृत्ति तत्रका जून তানা নিবৃত্তিস্ত মহাফলা।। ইতি मानत्व ६ व्यथ्रायः ॥ 🗱 ॥ (एवी श्रू-त्रागः। अक्षेमीः ममूरभारियावनवमाम পরে হনি। মৎস্য মাংসোপহারেণ मन्त्रादेशस्यम् अञ्चम् ॥ (**७**देनव वि-ধিনামন্ত স্বয় ভুঞ্জীত নান্যথা। যা-. ख्वरहाः । शांगाजारय **७था भाष** (भाक्षिठ दिबकाम)या । (प्रवान পিতৃন্ সমভ্যষ্ঠ খাদন্ মাংলং ন मिष्ठाक्।। यभः। छक्षत्य (भाः) किछ । भाष्म अक्ट वाका कामाया । दिद्व नियुक्तः भाषा वा नियम ह विवद्धरिए ॥ इंडि डिथ्राहिडङ्

॥ #। #।। ভাকামিষ वर्ड्या माभिषः कीतः करन । गाभियः जाभियः त्रक्रणाकः बंध पथ नामिषः ॥ (गार्व মানিষ কীর নিত্যত্র পত্রাণ भिषः भर्ग भिक्ति ह भार्टः। কর্মলোচন: ॥ भागः भुः कानः॥कीः। मद्रवज्ञावनी ॥ भा•मकाति ही त्रङ् । ইভি 🥶 **ठन्मः** ॥ भा•महारा जी भा•मत्त्राहिनीविष्णः হী ০ রসায়নী ৪ সুলোমা ৫ দে मक्तिगी ७। इंजि ताजनिर्घणः 🗈 মাংসজং ক্ল্রী মেদঃ ৷ ইতি ছেমচলু 💠 मा नाउनः क्षी (नरः। इंडि (र् हम्पुः ॥ गाः मरणनः शृः श्लीर्युकः। देख भद्रविषुका॥ মা•সদুাবী পু• অন্নবেতসঃ। 👯 व्राक्रनिर्घण्डः॥ মাংসপচন ক্লী মাংসপাকঃ৷ ডঞ্চ कशाउद्गः भाःम्माकः । **ইভি** ব্য क्रवना ॥ भा•मरभभी किन्यर्ज्ञादमारियम् यथा। बृहुन्दः जरस्युद्धन ह । नरभः

व्यविष्ठः १। विमक्षाहार ज्य ্ৰেশী রক্ত মাণস চিতা দৃঢ়া।। বীজ १५/वाक्नुताः (शमाः शक्विःमिडि রাত্রতঃ। ইতি সুখবোধঃ ॥ 🟶 ॥ ্ৰথ মাণ্সস্য পেশী রাহ। যথার্থ ুমণা যুক্তো বাষুঃ শোুতাণসি দার ষেৎ। অনুপুবিশ্য পিশিত পেশী ভিজতে তথা ॥ যথার্থ যথাপু-। क्रन• ॥ # ॥ ना•मामाना• म• ্যামাহ। মা•সপেশ্যঃ সমাখ্যাতা ূলা• পঞ্**শ**তানি চ। তাসা• **শ**তা-নি চত্ত্বারি শাখাসু কথিতান্যথ।। াগঙে বডুত্তরা বস্থিঃ কথিতা মুনি-्र करिवः। शीवाया উদ্ধৃ गा-छास्र ह ুদ্রিশৎ পুকীর্ত্তিতাঃ।। তাঃ শা াগতা: পাছ। একৈকস্যাণ পাদা জুল্যাণ ভিসু ভিসু ন্তা: পঞ্চদশ ১৫ গাদাপো দশ ১০ পাদোপরিক্রস ं विश्वा मण २० ७ इ. उन्तरमा मंग २० ্রগানুনোরন্তরে বি•শভি: ২০ জা-ুনি পঞ্চ ৫ উরে বি**॰শভিঃ** ২০ ব•- [॥] াণে দশ ১০ এবনেক্ষিন্ শক্তিনি ্ত ১০০ ভবস্তি। এতেনেতর শ-🍕 বাহু চ ব্যাখনতৌ ॥ 🗱 ॥ অথ **শঙ্গতাঃ পাহ**া গুদে ভিসু: ৩ लक्लाका इंटिनवन्यास्त्रका ३ वृष-भगति है। मुक्ताः शक् शक् ८। ८

বস্তি মূর্জনি ছে ২ উদরে পঞ্চ ৫ না-ভৌ একা ১ পৃষ্ঠোজ্ব সমিবিষ্ঠা উ-**ভरठः भक्ष भक्ष मीर्घाः ৫। ৫ भार्य-**(याः बर्हे ७ वक्किन मण २० वकः কাণসৌ পুতি সমস্তাৎ সপ্ত १। অঞ্চ কৌ অণ্সূত্রা ইতি লোকে। অণসৌ-ऋस्तो। क्रि (ह २ यक् जि (ह २ श्ली-হ্নি বে ২ উপ্তেকে ছে ২ ।। #।। অথ श्रीवाक ना जार। श्रीवाया ठउमुः 8 इत्राव्यक्षे ৮ कथेनाने चन्दिकाना भिष्ठि यादए এका ১ शल এका 🦫 তালুনি দ্বে ২ জিস্থাযামেকা ১ ওষ্ঠ-(यार्षि २ नामाया । एव २ नमारि ठ-ভসু: ৪ শিরস্যেকা ১ এবং মাংসপে-শ্যঃ পঞ্শতানি ভব্তি॥#॥স্ত্রী-ণানপি ভবস্ভোতাঃ কিন্ত বিংশতি ক্তরাঃ। গর্ভাশয়ে গর্ভমার্গে ছো-নৌ চ স্তনযো রপি ॥ এতাঃ পঞ্চশ-তানি নাংসপেশ্যঃ। অধিকা বিংশ-তি র্যথা। গর্ভ্তাশযে তিসু: এ গর্ভ্তছি-पु ग·श्चि जाः। শুकार्खवशुरविनागाः তিসু: ৩ যোদাবভান্তরতো নুখা শি তে अुम्ए एष २ यानात्वव विहिर्नि-গ্তসোতঃ পাশ্বদান্তিতে বভুলে यानिकर्शिक इंडि यावट एवं २ खन-যো: পঞ্চ পঞ্চ ৫। ৫ ফৌবনে তাসা॰ বৃদ্ধি ভবিতি। পু•সা• পেশ্যঃ পুর-

ন্তাৎযাঃ পুোক্তা মেহন মুম্বরাঃ। জীণানাবৃত্য তিষ্ঠত্তি ফলমন্তৰ্গত• हि जाः ॥ व्यम्यायमर्थः । शूःमाः নেহনমুদ্ধযোশ্চ বা স্তিসো মাণস পেশ্য: প্র্যুক্তা স্তা: জ্ঞীণা পেহ न गूझा ভাবাৎ ফল गर्छाणयः व्यात्ठाः विश्वेष्ठि । गयमामञ्जारः । ন্ত্ৰীণা মা সংগশ্য দ্ৰিভি হী নান পঞ্চতানি। তথাচ ভোৱ:। প क्षरभभी भजात्म्य खीवर्क्ज विक्रि ভূমিপ। অতশ্চ তিসো হীযন্তে भा•मरभणीना•कर्मान्त्रञ् । भित्रा স্নাযুষ্টি পর্বাণি সন্ধ্যস্ত শরীরিণা । পেশীভিঃ সহি সান্যের বলবন্তি ভবন্তি হি।। ইতি ভাবপুকাশ:।। মা সফলা জী বার্জাকী। ইতি রাজ নির্ঘণ্টঃ 11

মাণ্সভক্ষ: ত্রি মাণ্সভক্ষণকর্ত্তা। মাণসণ ভক্ষযতীতি ঢাৎবণ্ণিতি কর্ত্তরি ষণ্ পুত্যবেন নিয়মঃ।। মাণসমাসা দ্রী মাবপণী। ইতি

वाजिर्घिणः॥ भा भारताहिशी जी मृगिक्तिपुराउपः। তৎপর্য্যায:। অণ্নিক্ছা ২ বৃত্তা ১ চর্মাকবা ৪ বসা ৫ বিক্ষা ৬ মা স इताही १। जन्ता छनाः। तृकाद्वः।

সারকত্ব॰। দোব ত্রয়ানাশিত্ব। इंडि झाबनिघंगेः॥ **गा॰ननः** क्ली कावामा भोजीबीडाँह-र्गज्या अव्याखनमहाकृ विष्णयः। यथा। ७ जः नगामञ्गद्यः गाःमनः পদভম্বর। ইতি কাব্যচল্দিকা।। मा भनः जि वनगर्। इन्। मृतः॥ **ञ्**नः । यथा । निवाम्ठ वङ्द्रिशाः मूर्र निर्मु वर्रा कि वृदेकः कृत्मः। मा॰. **সলৈক্ষ ধনোপেতে** রবজ্ঞৈ র**ধরৈ**-ন্ পাঃ॥ ইতি গাৰুডে ৬৬ অধ্যায়ঃ জীণা• শেকসি মুম্বো:।। 🗱।। অথ 🗀 ।• সলফলা স্ত্রী বৃন্তাকী। ইতিরাজ-নির্ঘণ্ট: ॥ **মা•স**বিক্রণী ত্রি আমিষবিক্রথকর্ত্তা

। इंडि इनायृथः ॥ उ८ भर्यप्रायः । বৈত্ত সিক: ২ কৌটিক: ৩ মাণসি কঃ ৪। ইত্যমরঃ ॥

मा नगातः भू भिनः। इंडि द्राक निर्घणः॥

না•সন্মেহ: পু• মেদ:।ইতি রাজ-निर्घणः॥

মাণ্সহাসা জ্রী চর্ম্ম त्रज्ञावनी ॥ नाः जिकः शुः नाञ मद्रः ॥ मार्गिनी खी कीनार्गी

রাজনিহন্টঃ ॥

मां भी जी कृष्टीमां भी।। करहानी। ||
इंडि भिरिनी।। मां महरा। इंडि
﴿ अंजिनिर्घण्टेः।।

हा॰रम्डे। जी वहुना। ই उन्नाज-निर्वन्तेः॥

भाकनरः भू जामुव्यः। ইভি मि मिनी।।

भाकनी छी आभवकी।। नगत्राज्यः
। ইতি নেদিনী।। भी उठन्मनः। ইতি
भाषना ।। भाषाः। ইতি भाषनी
ইতিচ হিন্দী ভাষা। তৎ পর্য্যায়ঃ।
বহুমূলী ২ নাদনী ৩ গদ্ধমূলিকা ৪।
অস্যা গুণাঃ। কটুবুং। তিক্তবুং।
মধুরবুং। দীপনবুং। কচ্যবুং। অল্প্রাতকারিবুং। পথ্যবুং। বর্ষাসুন
সিতা ধিকত্থা। একাবিশদমূলী চ
শ্যানলা চ তথা পরা। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

भाकती छी मार्यमूलमश्रमी। व्यव मानाहि विश्व र्था। ভवित्य। मृर्य। गुरु जून। हि मूलामायमा मश्रमी । व्यक्णाह्य (वनाया जिमा मार्य मान महाकन ।। मार्य मानि मिर्ज्य स्थिन स्थि। क्षिति ज्ञास्तरा । ह स्थिन स्थि। व्यक्णाह्य (व- कायाः यमि वाज्य न्यंश्रुहमरैजः সমা ৷৷ কোটি ভাস্করা কোটি সপ্ত[্] মী ত্ল্যা সপ্তম্যা ভাস্কর দেবতাক⁻ द्वार । স্र्युपृह्ण कलः न्नानजः । স मिহিতে বন্ধিরম্ভরক্তে ন্যাযাৎ। তেন বহুশত স্ঠ্যপুহণ কালীন গ-শাসান জন্য ফল সমফল মত্রজ্ঞেন্• ॥ 🗱 ॥ স্থান পরিপানী নাহ কৃত্য-কল্পলভাষা বিষ্ণু:। সপ্তবদরপত্রা-ণি সপ্তার্ক প্রাণিচ শির্দা নিখায ওঁবন্জন কৃত পাপ ম্যা সন্তুসু জন্মসূ। তল্মে রোকঞ্চ শোকঞ্চ মা-করী হস্ত সপ্তনী ॥ ইতুচোর্য্য স্থান-দিভিশেষ:। রোক ছিব্রু । ভিথি क्छामा भोर्गनामाञ्च मामाञ्चार भा कत्री भर॰ भकत्राकांत्रक्त ठान्मुमा-সীযভিথিপর । তিথিকৃত্যে চ কৃষ্ণা-'দি॰ বুতে শক্লাদি মেব চ। বিবাহাদৌ চ সৌরাদি মাস ক্ত্যে বিনিদ্দি **শে**দিতি বুক্ষপরাণাৎ মন্নন্তরাদি **प्विन उथा** युक्ककाह। यथा न ८ म/भू-द्रापः । ययात्रवस्त्रादि ज् व्यमानु र्षिवाकद्राः । भाषनामम्। मधन्।।• उमार ना द्रथमध्यी ॥ व्यक्ताहर বেলাযাণ ভস্যাণ মানণ মহাফলণ । অতএব নারসিংহে রথাখ্যাযা নি-जुङ ॥ *॥ अर्घातान भाविभाष्टी

যথা। অর্কপথ্রৈ: সবদরৈ দূরি।ক্ষত अवन्तिः। जाश्रेष्ट्र विधिना वार्षः मन्त्रामानिका जूकेरय ॥ अक्षेक्स म-र्घामान्या जाता म् क्षितित्रर्थ ।। वाध्य मञ्जल। बननी मर्ब ज्ञाना नधनी मधमिधिक। मधवार्ग्हि-क प्रिव नम एउ इविम खला। भु-गाम मखरा । मधमधिवर श्रीज मश्रलाकभूरीभन। मश्रम्याक नम ऋङ्र• नस्मा ९नष्ठाय (वश्रम ॥ ∥ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব•॥ 🗱 ॥ তস্যা• 🗍 भूर्ग्। मू फिना। द्रथयां वा कल॰ यथा। নাঘনাৰ সাম সপ্তম্যাণ দেবণ শাস্থ श्रुवः नदाः । त्रथ्याजाः शुक्रवंश्वि नर्व मन्तृ विवर्किंगः॥ गहन्ति उ९ **११र॰ भाष्ठ॰** जूर्ग्रन्न खन (जरक• । এতত্তে কথিত দেবি সায় শাপ সমুক্তবে ।। পাপ পুশমনাখ্যান মহপোতক নাশন । ইতি বরাহ-পুরাণ ॥

गांगधः भू भागित्रनकः। ইতি महा-ভারত ॥ ব শক্রমেণ মহন্ববিদি রাজাপু স্ততিকারী । তৎ পদ্যাধः । মধুকঃ ২ বন্দী ৩ স্ততিপাঠকঃ ৪ । ইত্যনরভরতৌ ॥ তদ্যোৎ পত্তি র্যথা। ততো হস্য দক্ষিণ হস্ত নমন্তু স্তে তদা দিলাঃ। মথ্য

.হাগধ্ नाति ह छबाज्य मृथ्रुरविनाः मु भवान्।। उत्र देव जाउ मान যক্তে পৈতামহে শুভে। সূতী ত্যা সমূৎপন্ন: সৌত্যে ২২ মহামতে ॥ তিমিমেব মহায याङ भुगाङ्का २० मागवः। (१ ক্রো তদা মুনিবরৈ স্তারুভৌ সূ मागक्षो ॥ खूगठा भिष नृश পৃথু বৈণ্যঃ প্রতাপবান্। স্ং মিতি সূতি রভিষ্তি: অভিষ্যা কণ্ড্যতে সোমো হস্যানিতি সৃি मानाভिषव ज्ञि उम्रा॰। स्र বিষ্ণুপুরাণে ১ অংশে ১৩ অধ্যা खडोका **छ ॥ 🗱 ॥ वर्गमङ्ग**ङ्गारि বিশেষ:। স তু क्व बियाया रेव मा জ্জাত:।ভাট্ ইতি খ্যাত:। মগ ধেষু ভবো নাগধ: ক্ষ: ৷ ইত্যমন্ন ভরতৌ।। बदामक्षदाबः। यथा गागाया न ह इन्नर्वा ज्यः कर्न বলোদ্যম•। ইতি শ্রীভাগবতে ১০ क्तः ॥ भुक्रजीत्रकः ॥ नगश्राम् भा ভবে ত্রি। ইতি মেদিনী।। गामधारियो जी बादिका। यथा। তাসাম্ভ মাগধাদেবী তপ্তচানীকর পুভা। वृन्तावरमध्रती द्राक्षा मः मा धावर्थ कावगाद ॥ इंडि शास्य-

भाजिनेश्व अवशय स्नाकार्य ष्य ।। भूषी जी यृथिका ॥ निश्ननी । इंडामत स्निनिकाती ॥ कृष्टिः । कत्राष्टी अनाहि इंडि जाया। इंडि भक्तिका ॥ भक्ता । इंडि क्रष्टी ध्वाः ॥ जायादिस्मयः। इंडि इंम हम्मुः ॥

वः श् श्रीम् खेक्रम्म् भिण्यानः वय नहाकावाकर्छ। इंडि उर्गुइः শেষপুষ্ণিকা॥ স্নামখ্যাত নহা-कात्रुः। यथा। शृहस्यु जाञी नगः त्रयु काष्ठी नातीय तसा श्रक्षयू विकुः। नमीयू गक्ता न्शाली वानः कारवार्य मात्रः कवि कार्विमानः॥ इंजि भागिनाः।। विभायमि शाकः শगामाउर्गं उ म्यामामा स्वाय् का (भोर्गमानी यव मारम महा उर পर्यप्रायः । তथाः २। ইত্যমतः ॥ न ह विविदः। नकत्र इति विवासका मू क्ष गृতिभरारि पर्गाखा मुथ्यानमुः)। कृष्णुजिशमानि (शोर्गमान) ष्ट्रा भोगहानुः २। मकत्र इतिकः भोतः १। है । ननगामङ्गिय লিখন স্বর্গাৎ ॥ তত্র ভাত ফল্লু । विम्या विनीजः सम्मण भूषानः निहा नहाजात युठः भूवीयः । या-

गानुत्रका विषययू माका गाव २थं भारम सथवानित्यणः ॥ ३७ काशेन्ही भः ॥ 🕸 ॥ व्यथ मावक्-ভ্যা পাদ্মে। স্বৰ্গলোকে চির্ন বা-সো যেষা" মনসি বর্ত্ততে। যত্র ক্বাপি বলে তৈন্ত সাতব্য গুগ ভাকরে।। म्राम मृगाम (द्वन मकद्र: । उर् **ভाস্করে। তর সঙ্করঃ। অকণোদ্য-**कारण बर्रण गड्डान॰ क्या जाठगा উত্তরাভিমুখঃ ওঁ তৎ সদিত্যুচার্য্য मण अभूग जिल जनानामाय अ মদ্য নাঘে মাসি অমৃকগক্ষে অমুক তিথাবারভ্য সকরন্থ রবি থাবৎ পুতাহ মমুক্গোকো ২মুক দেব-नर्या वर्गलाक हित्रकान वान কানো বিষুপীতিকাৰো বা প্ৰাতঃ সান মহণ করিষ্টে ইন্ডি সাকল্প গঙ্গাব্যতিরিক্ত উপনীতিপি রান্ कर्डवार । भुजिपिन नक्तंन्न जू या-ब्रेंड) नकब्रहाति यापट शुंड/ह बिङ्कि न वक्करा किंछ नानान इत गंत्रवाङ्गं बदाविक्यिकः वक्तदाः। हामु ज्ञान दाकान्त रिन्धाथक्राजी २ नुजासियः। छव नस्त्रः क्षा यथाः ক্ত বিধিনা স্নানেতিকভব্যতা বি-ধায ওঁ দুঃথ দারিদ্যু নালায 🚉 বি-কো ভোষণাৰ চ। প্ৰাতঃ স্থান•

करतागारहा नार्य भाभ भुगानन ॥ मकब्राञ्च ब्रावी मास्य रगाविन्माहुऽङ माध्व। मानिनातन भ एवं यथाक क्वारा ७व ॥ इंकुड़ार्यं नायाए । ভতো বাসুদেব হির কৃষণ প্রীধরঞ্চ मात्र छ छ: । ७ मिवाक्त जनमाथ পুভাকর নমো হন্ত তে।। পরিপূর্ণ জ্ৰুষ্ণে মাঘ স্থান মহাবুত। চা-न्तुत्रात्व भकताकी म्शृष्टेकाल भकत-ছে রবাবিত্যস্য ন পাঠঃ। অসম বেতার্থ রাখ। তীর্থে তু নাঘনাস शिम॰ भूगाः ज्ञामाइः (एवनाथव । ভীর্থস্যাস্য জলে নিত্যু পুসীদ ভ গবন্ হরে ।। ইতি পঠিয়া দুংখ দা রিদুর নাশাযেত্যাদিক[,] পঠিতব্য[ু]। शक्राशास भद्मभूत्रात । कित्न कित्न সহসুদ্ত সুবৰ্ণানা বিশাস্পতে ৷তেন দত্ত হি গ্ৰামাণ যো নাঘে সাতি মাধ্ব।। মানব ইতি হুচিৎ পাঠা।। **७३८। अङ्** जु भु छि दिन अह्मु ज्वर्गरान्डन। कन जनकन नुर्छि-কান: শ্রীবিষ্ণু পুরীতিকানো বা মাঘ नामः यावट भुजाइः गक्षायाः भाः ত: স্নান মহস্করিষ্যে। ইতি বাক্যে विष्मयः। भुं छि ६ न नद् । 🛱 कु मङ्गु भूर्यनाम्बन्ध कल ममकल शुरि कारमा दिक् भी जिकारमा वा शका । ॥

या॰ भाजः सान महः क्रिकारकाः याथाक विविनः ज्ञापनिक्रिक्तन्तुः विधाय ७ मानमान मिन् कु नाग्रहः (५व नायप् । जीर्थम्यान्य काल निख्रः भूभीर खगवन् रुत्र।। **मृश्य मात्रिम्। गामाय 🏝 विरक्षा रहा**-विशाय है। भूगजः नानः करत्रामारः माख भाभ भुगामन ।। नकतरङ् द्ररवी माख शाविन्माहू। ज माध्व। न्नात्नात्न (म (मव याषाक क्लामा ভব।। ইতি পঠিত্ব। স্বাধাৎ ততো वामुरादव इति कृषः श्री ध्रव मात्र-ख छः। निवाकत जगनाथ भुजाकत नामा २ ख । अत्रिभूनं अक्ष्युपः নাঘস্থান মহাবুত ॥ ইতি পাঠৎ । #।। कन्त्रुवानः। मन्त्राधि मक-রাদিত্যে পুণ্যে পুণ্যপুদে শুভে । কর্ত্তব্যে নিয়ম: কশ্চিদুতরপী নরো-ভৌম:।। তত্তৎ পুণ্যকানঃ শ্রীবিষ্ণু পুীতিকামো বা ইতি বাক্যে বিশেষ: ॥ 🗱 ॥ (भोष्याः (भोर्गमाम्या 🗟 🍇 🔦 भाषाभी भग्रेड भिद्रा जुलाः ত্মান্দক নভোক্তব্য ৷৷ 🕸 ৷৷ পৌষ্যা উদ্ধৃ'• মাঘক্ষাষ্টমুগ্রা• ছাগনাংকেন শুক্ষ কর্ত্ব্য । মা সাভাবে পায-সোপকরণেন। তদ্তাবেকেবলামেন वा भाषा कर्डवरः ॥ 🛊 ॥ अथ इटेडी

চতু দ্বাস্থাসভেপকে র हरू न्यु (किंग्सेनी । जन्या गृहय (व-कार्टिश्विश्वात्वकाल यमः ॥ উ नय दिनाया अकलान्य (वनाया । অনৰ্কাভ্যুদিতে কালে নাঘে কৃষ্ণ চতুদ্দশী। সভার ব্যোম কালে তু তস্যা॰ সান• মহাফল• ॥ সাত্রা अवर्भा जू यगान् अवसारिशः भुग्हा তে। অত্ত তিথি কৃত্যজান্নে। প্রান্ধা **मतः । उ**र्वाञ्यम्सि यक्लाम्य স তার চালে মহ্রান্যে চতুদলীলা-ভে পূর্বদিনে সুনে যমতপ্রপঞ্। এক **दिनगांव उल्लाट उदिता गाय** সুনে কালাভ্যন্তরে তাদৃশ চতুর্দশী লাভে দাঘ পাত:সাধিনা ডম্বেণ धन कार्या । **उ**व ७ उट अन्ना মাঘে নাসি কৃষ্ণে পক্ষে রটস্ত্যা চতু र्फ्या कियो व्यक्ताम्य (वनायाः অনুক গোত্ৰ: গ্ৰীঅমূক দেব শৰ্মা য-नाम्भानकात्ना शक्षायाः मानगरः क्रिक्रि इंडि जरून्ना यथा विधि मा नः शुरुकः ठठूपंग यम छर्भनक क र्गाट ॥ ऋ॥ व्यथ बिशक्षमी। उ जा जगितन श्री क्षा शिक्षिती ना जि পূর্বদিনে লক্ষ্মী নরস্বত্যোঃ পূজন गुगाए। এक हिन श्राप्त उहिरन। এব॰ বহুর্য। শুক্লপুঞ্জনীবুতে হাপ ।

७ उन्ह ७ ७९ मि ज्रिहार्ये। ७ मरि ज्यापि वच्चीश्री जिकारमा वच्चीश्व-ন নহ• করিষ্যে ইতি সঙ্কল্প শাল-गुारम काल वा भूकारय । ७ भामा-क नानिकास्मान मृनिভिर्णामः स्त्रीन प्रयाः । भन्ना जनञ्चाः श्वारम्ह শ্রিয়ণ ত্রৈলোক্য মাতর•াাগৌরবণা• সূৰপাঞ্চ সৰ্বলেম্বার ভূষি চাং 1 (द्रोत्मशमा वर्श्वकद्राः वद्रमाः मिकः) ণেন ত ।। ইভ্যনেন ধ্যাত্বা এতৎপা-**४५** ७ वरिष्य न्यः। इन्डारिना रेन-(वन्त्रारञ्जन भूकारयः । 'खँ नम एउ मः र्बरहवानाः वद्रस्यनि इतिश्रियः। या-গতি ত্ত**্ৰপ্ৰমানা**ণ সা মে ভ্যাত্ত্ব-मईना**८। ই**ত্যনেন পৃ**ञ्जाञ्जलि** ত্রেণ भुगाम ।। # ॥ ७ उरमिक् । इ । १ ওম্দ্যেত্যাদি সরম্বতী প্রীতিকানঃ नत्रवं री भूजन सक् कतिरम् इंडि मक्त्रा भाजगाम घटा मिञ्जल वा भू ब्रायट । ७ उक्न अकन शिल्ला বিভূতী শুভুকান্তি: সচভর নমিতা-জ্বী সল্লিষ্ণা সিভারে। নিজকর ক-भलाम्यास्थानी भुष्ठक 🕮: अक्स বিভবসিদ্ধৈ পাতু বাণেবত। ন: ।। ইতি ধ্যাত্বা বাহ্য এতে পাদ্য ওঁ अतुष्वरेखा नमः। इखालिना रेनरविताः खन भूहरर**्। उठ: ७** जुमुकारेनाऽ

नत्मा निज्यः मनस्रित्र नत्मा नमः। বেদ বেদাঙ্গ বেদান্ত বিদ্যান্থানেভ্য-এব চ স্বাহা। ইতি বুক্ষপুরাণীযেন পুস্লাঞ্জিনা জি: পূজ্বেৎ। মৎস্য भएक। भवत्रजी संग्रहा अ यथा न দেবো ভগবান বুন্ধা লোক পিতা নহ:। ত্বা॰ পরিত্যন্ত্য সন্থিপ্তরথা **७व वज्रभुमा। (वमाः भाजानि ग**र्जा-शिन्छ। भीजारिकक यटान विशेन° षुगा (निव उथा भ अस जिन्नयः ॥ **जन्द्री** रर्गथा थड़ा भूष्टि भो डी जूष्टिः 🛭 পু छ। ४७: । এ ञा ভि: भारि उन् ভিরষ্টাভির্মাণ সরন্ধতি॥ ইতি মৎ-माभूतानीरेयः भार्था भुगम् ॥ 🕸॥ वक्कीवसः द्वानक मन्नस्टिं न मान-(यद् । जाहात्राट् भुखक्क भूजायट् । ওঁ মৃদ্যাধারায় নমঃ। ইতি নৃদ্যা-थात्र' भूतरार । ७ लिथरेन। नमः । ইতি লেখনी॰ পূজ্ঞবে ॥ #॥ অথ নাব সগুমী। তত্তোভয়দিনে অঞ্ भारयकारन मधनीन। उ भूर्विहरन একদিনে তল্লাভে তদ্দিনে। অৰুণো-मयकारन मामाना करन ७ व्यस्त ত্যापि সূर्य) गुर्ग कालीन शक्रामान जन्य कन नमकन भुष्टिकान जागू ब्राह्मागा मण्डल कारमा वाक्लान्य (वनामा नान मरु कतिरवर। इंडि

जकन्। यथा विधि न তা বিধায় সপ্ত বদন্নণ কপতাণিত শির্পি, জ্জন্ম কৃতণ পাপণ নৰ্যাসপ্তসু জৰু 🕝 তন্মেরোকঞ্চ শোকক্ষ মাকরী जन्मी ॥ इंजुङ्गार्ग त्रायाय । उ यथा काल अध करती कलाक मानि जिन पूर्वाक्ष हनान युख व्यक्तामाय अनुरम् रङ्गामि व्यायुद्धार প্য সম্পৎ কাম: 🕮 সূর্য্যাযার্ঘ্য 🎫 मरह । इंडि मक्क्ष्म ५ ७ नरम । विवश्र ुतृक्षम् ভाष्ठाउ विष्णु छङ्काम । ङ गवित्व भूष्टस्य मवित्व कर्याना थिए 🔡 ইত্যমন্তর ওঁ জননী সর্বভূতানা 🦠 खनी मधमिखकि। मध वृश्रकृति क एवि नगर्छ इवि मध्यम् ॥ इ পठिश इनगर्याः वीम्र्याग्यमम इर র্য্য দল্প ওঁ সপ্ত স্থিবছ প্রীত স लाक भुशीभन। मधग्राः हि नः স্তভ্য ননে। হনন্তায বেধসে। ইত নেন পুণ্যেশ্য শৃদুণাপি স্নানে তৃষ্টা বিধানাৎ সান মন্ত্রণ বিনা অঘ্য প্র ণাম নত্রাঃ পাঠ্যাঃ পৌরাণিকত্বাৎ । गमावाख वर्णाठ म्यं गुर्विकार्व न शक्रानान जन्य कम यमकल शासि কানে। গহাংশা সুনে নহু করিছে। ইতি বাক্যেবিদেষঃ। অত্রাহ্য দান

ाउ९ ज्ञानायत्व माघ शुाउः रेपव मिथ्राजि ॥ 🗱 ॥ বিধানসগুনীবুত। পুথনতো स्त्रे बुखिवाहा ७ मूर्याः भाग াদি পঠিবা তামাদি পাত্রে জ-লে ভিল জলান্যাদায় ওঁ তৎসদিত্য ्रहार्य) अमन्त्र मास्य मानि मुद्राभक्ष ्ञधगुराडियावात्रं इ. शुक्रियाशीय भूत मधग्रा॰ (भोषमधनी॰ यावर : আরোগ্য সম্পৎ কামো ২ভীষ্ট ত ুত্তৎ ফলকানো বা অর্কাগ্রাদীতর - () क्रम विहि खि विशासन मधनी বুতনহ• করিষ্যে ইতি সক্ষয় সংযন পারণ সহিত তত্ত্বাসি তত্ত্রিয ম॰ দ্ব্যাৎ। তত্ত্ব মাঘ্ৰে অৰ্কাণ্ড भावः जुङ्गीठ। कानुत अन्तरीक गृशीउ॰ किनाविष् यवमाज भूमा-ণ জ্বভাবে অন্যগোম্য মুপীক্তি । रेटाज महीहरमक । रेवनार्थ किकिन्जन । रैकार ४ जनक कमनी কল মধ্য কণানাত্র। সাধাতে স্বहा-য দ্বিত্তণ সমণে যব প্রমাণ সশম্-ल । भारत नक काल अन इवि-(य) दिन । जार् मृत्काभवामः । वाशित भक्षमुरक्षियाम भय्ता । भुगान इतियागः। कार्लिक वार्ष 'भून्छि गाबः क्लिनाक्षीतः छर-

ভাবে की द्राष्ट्रद्र । नार्गमीर्थ शुद्धाः (था वायुणनः। (भीरव सन्नः घृउः। जम्बद्धक्ष । द्वाञ्जभान् जक्षरयट जः क्ता ७७ क्वीत नितामित्यः। विश्वाय **मकिना (म्या विভवन्यानुबन्धाः ॥** অষ্টম্যা পারণ স্বর্য্যাৎ কটুমু রহি-তেন চ। মুদ্ধ নাষ ভিলাদীনি ঘৃত-रिक्ष्य विवर्जायः ॥ এकमिकः ভক্ষ্য মুক্ত নর্ক তজানুসারত:। চান্দুমা-न विश्नारवाह्मथ्य व्यवसार युज वर मनमारमज्ज जलू कर्खवाः ॥ 🕬। व्यथात्रागामध्यो । उब भूर्ब-वट मधम्याष्ट्रियानात्र छ । अहिका-द्राग्र धन धानर भावत्वीकिक मूं छ ञ्चान भाष्ठि कानः मद्दरमद्रः गाद আরেগ্যেসগুনী বুত নহণ করিষ্যে ইতি সঙ্কল্প পুতিমাস শুক্রমপ্র্যাণ मानगाम घटारिङ्कल वा भूक-যে । রক্তামুজানন মিতি ধ্যাত্বা এउ८ भाषा भें भूग्राय नम हे छ। पिर ভি: সংপ্তঃ আদিত্য ভাস্কর রবে ভানো সুর্য্য দিবাকর। পুভাকর ন मस्ड २ छ द्वागाम्यान् भूताह्य ॥ ইতি ত্রিঃ পূজ্বেৎ। এবং সমুৎসরে भूर्ण मिक्किनाः मन्त्रार । वाक्रानाः म ভाङ्यः । विश्व गणानुष्यः मनावाना यु द ५ मनमाति क

गाघ

खंत∫•॥ #॥ अथ ङीग्राष्ट्रेभी। अप्टे-ন্যা• ব্ৰাহ্মণ: পিতৃ তপণ ক্ত্ৰা ওঁ रेनगधुनम् (गाजाय नास्कृ जि भूव ॥ রায় চ। অপুগ্রায় দদাম্যেত**ে স**া निवः छीग्रवर्माण ॥ इंछि পिত्वए ভीगा उन्पर्। उड: क्डा क्टा क्टा जीयः नाष्ठनत्वा वीदः मछ।वाही জিভেন্দুিয়ং। আভি রক্তি রবাপ্নোত্ भू अली (बाहिजा किया ।। इंड अनन भार्थायः । कवियानि छः भिज्ञः र्भगाट भूर्बः ७७८ कर्खवाः॥ 🗱 ॥ रिज्ञा मिकाम्मा बूरभाषा हान-म्याः जिलाम् इन मार्ग्यकः कर्वरः । সুনে তর্পণ নহাদান ভোজনাদি यथाला छ पर्या ।। 🗱 ।। भाव (मीर्ग মাস্যা॰ যুগাদ্যাত্ত্বেন পার্রণ বিধিনা भुष्कः कर्डवाः। यन्डक्न कामनया স্থান দানঞ্চ কৰ্ত্তব্যং ৷ ভদ্যাং দান পু নাণস্ত তিথিতত্ত্বে ২নুসন্ধেয় । ইতি কৃভ্যতত্ত্ব ।। 🗱 । 🗱 ।। অথ মাঘ সান ফল ৷ বুত দানৈ স্তপোভিশ্চ ন তথা পুীযতে হরি:। মাধ মজ্জন মাত্রেণ যথা প্রীণাতি কে**শবঃ।। ন সন**• বি দ্যতে কিঞ্চিং ভে**ন্ধ:** সৌরেণ ভেন্ধ-সা। তদ্বৎ স্থানেন মাঘস্য ন সনাঃ 🖔 ক্তজাঃ ক্রিযাঃ॥ প্রীত্তের বাসুদেব म। नहलाला विमुक्तरा। मारमानः

भुक्र ही उ वर्गलाजाय मानवः॥। রক্ষিতেন দেছেন সপ্রের্থ বলীয়ন । **अक्षुरवर्गाम् (रुरय**ागार्युः **जरवर ॥ मकतरा**र सुर्यो 🛶 🤻 ন্নাড্যনুদিতে রবৌ। কথ<u>ে চালি</u> পুম্চে उ कथ न जिम्बि व्हिल्थ।। বুকাহা হেনহারী চ সরাপো ওক তল্পা:। মাঘদায়ী বিপাপ: স্তা-ত্তৎ সংস্থা চ পঞ্চম: ॥ উপপা-তকানি সর্বাণি পাত ফানি নহান্তিচ । ভদ্মীভবন্তি সর্বাণি মাঘন্নাথিনি मानत् ॥ भावका इव मीभाउत्त भाष স্থাতা নরোভনাঃ। বিনুকাঃ সর্বপা-পেভ্যো নেঘেভ্য ইব চন্দুমা: 11 व्यामु • भूष्ठ• वघु श्व• वाड्यनः कर्य-जिः कृष्ठ । भाषमान मरह **अर्द** भावकः अभिरक्षा यथा॥ भागानिकः । স্থান মাত্রেণ ভন্নশ্যেৎ নকরছে দিবাকরে॥ নিয়াপী জ্রিদিব যান্তি পাপিষ্ঠা যান্তি শুদ্ধতা । সনেংহে। হত্র ন কর্ত্তব্যে মাঘস্থানে নরাধিপ।। সর্বে ২ধিকারিণো হাত্র বিষ্ণুভক্তৌ यथा न्था अर्खियाः अर्गाता नायः সর্বেষা পাপ নাশন: ॥ এতদেব পরে। নক্ষে ছেতদেব পর• তপঃ। পুरिष्णि छ॰ भन्ने स्थित नायनान नर्न

म्बर्गः ॥ नृगाः बन्नां बन्नां जानाः স্বী্যশ্বান মতি ভবেং। অধ্যাত্ম জ্ঞান কৌশল্যণ জন্মান্ত্যাসাদ্দ্ৰথা म्भाजि गात कर्पनालभ भुकाल न् विभावनः। भावनः भावनानावः নাবসুনে পরস্থপ । সুতো নাঘে চ (ए त्राक्षन् अर्बकाम कल्णुरर । उ তাংশ্চ ভূঞ্জতে লোকাং শ্বন্দু সূৰ্য্য গুহোপমান্॥ ইতি প্রীপদ্মপুরাণে উত্তর্থণ্ডে ৪ অধ্যায়ঃ॥ । घाতी जी প্রবিক। ইতিরাজ-न्यिष्टः ॥ । घरन की इन्द्रुनम्निवस्त्र। मघरञ **ट्रेन् नि 5**९१थ क भ्**ड**९१यन निम्नम । ইতি নৃশ্ববোধব্যাকরণং ॥ ज्ञी मधायुकारभीर्गमी। यथा। भूषऽपुकः (भोर्गमानी (भोषी মাসে তু যত্র সা। নামা স পৌষো ইত্যমর:।। মাঘীপূর্ণিমা। যথা। অযোধ্যাকাণ্ডে ভরত শপথে। व्यावाही कार्खिकी भाषी छिथयः পুণ্য সম্ভবা:। অপুদানবতো যাস্ত यम्प्रार्यप्रान्मरका गजः ॥ विकृष र्प्यान्दरत । भोर्नेहामी उथा नाघी भाविती ह नद्याखन । (भूकिनम्हा मकी द्वारा जथा क्या अया प्राप्त । या मान ना मान ना मन नाय हिं । यथा।

॥ এडा•स मुक्कानान् रेव निस्ता-নাহ পুরাপতিঃ॥ সাচ কলিযুগা-म्या। यथा। व्यथं जानुनार कृत्य जरगामगास चानतः। नारा ठ পৌর্ণমাস্যা॰ বৈ ঘোর॰ কলিযুগ॰ মৃত ৷৷ অস্যা কর্মাণা ২নন্ত কল ৰথা। মাৎস্যে। শত মিল্মু ক্ষ্যে भूगा महमुख हिनक्य । वियुत ण उनार्त्रु मा का मा देवबन इक । il था का ना देवषु भाषाणी कार्खि ही नाघी रिक्माथीयू। इंडि जिथानि-তত্ত্ব ।। মাঘ্যা মঘা যোগাভাবে সিংহস্থ ভরাবকাল প্রতিপুদবো यथा। भाजाजभः। भाष्याः यहि ম্যা নাস্তি সিংহে গুৰু রকারণ।।। त्राजभार्त्रां प्रकः। ध्रतो इति। इ ন বিবাহ নাভ হারীত গর্ম পুমুখা मूनीन्ताः। यहा न माघी मधनःयू-তা স্যান্তদা চ কন্যোদ্বহন বদস্তি ৷৷ ইত্মঞ্চ মাঘ্যা• মঘাযোগাভাবে-পি শু,তিবেধাদি মঘাছেপি ভরৌ ভবতি বিবাহস্ত গুরো মঘা পরি-ত্যাগাদেব। ইতিমলমাসতত্ত্বণ।। मार्घानी जी भ्वापिक्। इंडि द्राज-निघण्डः॥ नाघा ती अन्तर्भूष्मः। इंडामद्रः॥

बाजगार्वाखा भाक्तापु विवारस्यू ॥ कन्या मः वद्रश्यू ह। मणमानाः भु । बाह्यामुकः भूः वृक्ष छन्। শস্যন্ত চৈত্ৰ পৌষ বিবক্ষিতা:।। ় ইত্রোহতকু।। অপিচ। ভীমপ ্রাক্রে। অধিমাসে দিনপাতে ় ধনুষি বরৌ ভানুলব্বিতে মাসি। চকিণি मुख सर्यप्राम मान्ना वि वार्षा हेि यवमामञ्डू ॥ शक्तारा जी जायमागाना । ইতি ्रं ब्राज्ञनियकः ॥

:माक्षिष्ठ

माठः भू॰ भद्याः। ইতি শদ্রস্থাবলী *माठवः भूः गुरुः॥ (तागः॥ वन्ती ॥ ∥* क्टोब्रः। इंडि चम्द्रद्वावनी ॥ स्म-**क्तिना गुरुहारन गुरुहे छि शा**ठेः॥ माहिका जी मिक्का। ইভি बिकाख-শেষ:।। অমৃষ্ঠা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ भाष्ट्रि वर भीषु । यथा। यथावु वी-खना मध्या छान्यीन् श्रुष्ट्यन् **म**िनः । অমিন্ হিমবত: শৃঙ্গে নাব বঞ্জी ভ মাচির•॥ ইতি বনপর্বণি মাৎ-(म्राभार्यानः॥

মাচীপত্র• ক্লী সুরপর্ণ-। ইতি রাজ-निर्घकः॥

बाबनः शृ हाजशकी। यथा। माब-ल भागकः अद्भाविशाता विन्तुः (রথক:। ইতি শব্চন্দুকা।। নাঞ্জিষ্ট ক্লী লোহিতবর্ণ:। ভদ্বতিত্রি

। ইতি হেশহন্দু:।। বল্কী কৰ্মটীৰাক্ষঃ সেটু কৌ সমৌ। ইতি ভূরিপূর্বে माठेतः भू॰ न्यंत्रभार्यशि (नयः। यथा । माठेतः रि म् अ क्षारमाः भाविभा इंडामदः ॥ मटेडि निवम नगील गाठेत्रः गठे वानः नाग्री जिल्लाम् नर्वत्र नाग्री ठेत इं**डि यानी । शिक्**वः **পिक्नः। ए**एकातिषा**एए** यागी। भित्र उः भार्षि वर्जः রিপার্খিকা: ঢঘেকানিতি 🗇 স্र्याः काकशिकद्वारिए गानाः मात्र जीजि थिया इन्द्रामरया 👵 न नागा छात्र । भूहमा जम् । স্থিতা:। অত্র পুর্যধান্যাল্ল ভিহিতা:। অত্র মাঠ্যনামা 🤧 **शिक्षनगमा विद्यः । म**एका শক:। তথাচাগম:। তত্ত্ব 🐇 বানপার্মে দণ্ডাথ্যো দণ্ডনা विज्ञ एकिए भार्य भि नामजन्म मः ॥ यत्नानि मि পার্যে খ্যাতো নাঠর সংজ্ঞ **এ**न ने भारत इत खशामगः अ भक्तामि मः छकाः भूक्षेत्रात

हेजाः। ইতি ততীकायाः छत्रजः

ा व्याप्तः। ইতি মেদিনী।।

ग्रेश ইতি হেনচন্দুः।। শৌ প্রিকঃ

ত্বি সিন্ধান্তকোমুদ্যামুণাদিবৃত্তিঃ

পৃং বৃক্ষবিশেষঃ। মাডবৈনী

তি কোকণে পুসিন্ধাঃ। তৎপর্যা

থা মাডাজনঃ ২ দীর্যঃ ৩ বুজবৃক্ষঃ
বিতানকঃ ৫ মদ্যজনঃ ৬। অস্য

গাঃ। মোহকারিত্বং। শুমহরত্বং
শুম্মকারকত্বক্ষঃ। ইতি রাজ

নর্যটঃ।।

বং পৃং বর্ণসক্ষরজাতিবিশেষঃ।

থা। লেট ভীবরকন্যায়াং জন্যা
াস ব্যুরান্। মাজ্লংম্লাং মাডবঞ্চ

ডেংকোলঞ্চ কন্দ্রেং।। ইতি বুজ্ক

वः शृ वर्गम्हत् काञिविष्णयः । था। त्वि छोवत्रकन्यायाः क्षमया-गम यात्राम्। माल्लः मलः भाउवकः उप कालकः कन्मतः ॥ इञ्जित् का वर्ष्कं वृक्षथर्थः २० व्यव्यायः ॥ एकास्त्र भाउवज्ञान भाउत्र है-इ भाठेः। कन्मत्र ज्ञान कन्मत्र जि भाठेः॥

कः पृ॰ माडु किकः। मडु वाएकः
इंडि मिक्काउको मृती ॥

तः जी एमाउकः॥ मछाज्ञा।

हंडि ब्रइकायः॥ मछाज्यः। इंडि
किटि । इंडिअबही काया॰ जब उः

शा भण्डकः॥ दिन्म भूकाणनः।

हेडि अहिनी मस्बद्धावरको ॥ मा
हित्रिंगुः भविनाहां मूह खिन्हरु

काछ। ইতি (इनहम्पुः ॥ बाही की परणिता। ইতি শব্देशः वनी॥

भागकः क्षी केन्द्रवित्मयः । भागकष्ट्र् ইতি ভাষা। অস্য ওগা:। बादूर्षः । শীতৃष्ण। अकृष्ण। त्माथहत्रष्ण। करूष्क। ইতি द्राष्ट्रवास्त्रः॥

भागकः भृ सनामश्राउव्कः। मान-कृणाष्ट्र देखि खात्रा । छट भर्गायः । छट भग्नाः २। इति त्रञ्जमाना ॥ मानः २। वृष्ट्रहाः ८ हृ अन्यः ८। इति क्विट ॥

भागवः भू॰ ममूर्व। वालकः। ইতি
भाषत्र शावनी ॥ वाष्ठभगश्चित्रशादः
। ইতি হেমচন্দুः॥

मागवकः श्रु वाध्यकः। मे ह विष्णि वर्षभर्ग् अभूषभवयकः।। हात्रख-मः। मञ् विष्णि विष्टिकः। विष्य-नत्रहात है जिल्ला। है जामत ज-त्राजी।। सभूकषः। है जिल्लामिनी।। विष्टुः। है जिल्लामुः॥

गागवीन वि मागवमम् सि । मागवरम् । म निज्यं भीन भुज्यं में में से । । नागवा की निम्म् म्र हैं । हें जुम देः । । नागवाना म्र मागवा विकास मागवाना म्र मागवा वानः मूर्स ना महाः म्र म्या हैं ज्या हैं ।

। माणिक र

তট্টীকাষা• ভরতঃ॥ छी जहेभ्लभित्रगाम । ন্যাণিকা इंडि मद्याना ॥ নাণিক্যু ল্লী রত্নবিশেষঃ। নাণিক্ ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। শোণ बद्ध २ बद्धबार २ ब्रिव्हक 8 म् স্থারী ৫ রঙ্গাণিক্য ৬ তৰণ ৭ র্ব্রনায়ক ৮ রাগযুক্ ৯ পদারাগঃ ১० রব্ধ ১১ শোণোপলঃ ১২ সৌ গন্ধিক ১১ লোহিত্তক ১৪ সক্বি नर् >१। अया खनाः। सध्वदः। দ্রিক্ষত্ব•।বাত পিত্ত নাশিত্ব•। বহ शुर्यारम भुषानज् । भन्न नगरन काजिद्धा उन्। वक्र नक्र गर्भा নিশ্ব-গুৰু গাত্ৰযুত পিপ্ত স্বছ সমা-व्यक्ष मृतक्रमण । इंडि काउ।मापि काः कनातः सार्याट बक्छ।। 🗱।। **उन्। (मार्या गथा। बिहाय मजु**नि हि उ॰ कर्कन भार्कदिन छिम धू-मुक । विकाभ द्राग विभाव वाग् ाणि काः न शाद्रायकीमान्॥ 🕸 ॥ उना **ठ** ठविंश कां जि यंथा। जुनुक यिन পদারাণ মথ তৎ পীতাতি রক্ত षिशा का नीया ए सक्विन्तक रम्का न्यारम्यु (मोगिक्षिकः। उद्योगः यपि नील गिक्क मिछि एक य॰ ठजू धी दूरिय र्जानिकाः कष घर्षा १ श्रादिकवाः

রাগেণ জাত্য জণ্ডঃ ৷৷ ইতি রাজদি র্ঘণ্ট:।। 🕸 ।। নতান্তরে ভস্য দোবা যথা। মাণিক্যস্য সমাখ্যাতা অঙ্টৌ (माया ग्नीयदेत:। विहायक विक्श-ঞ্চ সম্ভেদঃ ককরন্তথা ৷৷ অশোভন काकिनक जन धृगु छिदक रेव। গুণা শ্চত্তার আখ্যাতা শ্বাধা: যো-उम कीर्खिंगः॥ श्रायास भ्राद्यांका এব **তास প**দারাগ শব্দে मुश्चेवताः। ष्ट्राया विजय **मग्नक्षापि**हाय॰ वक्नुबा-শন•া দ্বিৰূপ• দ্বিপদ•তেন মাণিক্যে ন পরাভব:॥ সম্ভেদো ভিন্ন নিভু্ऽ क भन्नधा उ विशायक । कर्कन क-कत्रायकः भग् वक् विनामक् ॥ पू-(अरनव नगानिश गघनी भू हे गूह। उ । অশোভন সন্দিটে নাণিক্য বহু मु:थक्८ ॥ मश्चिम् नमहायः का-किनः পরিকীর্তিত। আगুর্লক্ষী যশো হন্তি সদোষ তুম ধার্যে ।। व्राग श्रीन कल (भ्राक धन थान्। भवानक्ट। धूमुः धून ममाकातः दैव-मु, ठ॰ खय मावरहरा। उथा। स्माजाः দ্বিত্যবন্তো যে নৃণয়: ক্ষতি কারকাঃ । উভয়ৰ পদা যোৱা। তেন চ স্যাৎ পরাভবং॥ভিমন্ত মৃত স্বাৎ कर्कत सन नामकृत । पुरश्यक अगा-निक्षः भूटेरक यञ्च राष्ट्रायः विद्वार

কুংস সমাখ্যাতো ৰ নৃপৈ রক্ষণীয কঃ৷ নধুবিন্দ্ সমা শোভা কোকি नाना॰ পুकीर्डिठा ॥ তেৰাঞ্চ বহ खिताः मूर्य **७ शार्ग्राः क**राष्ट्रन । 🗱।। অথ গুণা:। গুৰুত্ব স্থিতা रिह्य रेयम्बर्ध मिख्युक्त छ। । उथाह । वर्गाधिक एक दक्ष । मुक्ष छ। इ उथा ছুতা। অছিমার। মহতা চ মণানা खनम-गुरुः।। कृतः। (य ककता भू म् ज्ञानिकाः भुजाविगुकाः भक्ता বিৰণাঃ ৷ নতে পুশন্তা নণণো ভবন্তি नगामठा जाजि छोगः मगरेखः॥ < नाःवाभमृष्ठे॰ मनि मभुरवाधावि छः र्खि यः कण्ठन किष्टाम कः। छः वञ्च मृःथाम १ वक्त् विख नामान्या । साव গণা ভল্লন্তে॥ সপত্ন মধ্যে হপি কৃ **ভা**ধিবাস·পুমাদ वृद्धावि**श** वर्द মানে। ন পত্মরাগদ্য মহাগুণস্য া দিও পাপং ভালস**তি কাচিৎ।** ্ৰাৰ পৰা পুৰুত যতেনোপ ্ৰিবাস্ত ননভিদুবন্তি। গুণাঃ সমূখ্যেঃ नकरेन करभठ गः भग्नज्ञाम भ्या তে।বিভর্ত্তি।। বালার্ক করস • স্পাশাৎ यः मिथा॰लाञ्जा॰ तत्नदात्रक्षाय मानुबद्धालि मग्राखन उठ्याप् পো 🎫 ুণে কিপ্তে: রপ্তবেদ্দ: সমস্ত-ा दिशाः लाहिजाः वाभग्रता

গ: স উত্তম: ৷৷ অন্ধকারে মহাঘোরে या नाउः मन् महामितः। भुकाभय-তি সূর্য্যাভঃ স শেষ্ঠঃ পদ্মরাণকঃ॥ পদ্মকোষে ভূ যোন্যন্তো বিকাশযক্তি তৎ ক্ষণাৎ। পদ্মরাগ বরো ছেষ (एवानामिश पर्लंडः ॥ अर्द्वविष्ठे श्-শমनाः সর্বসম্পত্তি দাযকা:। চত্ত্ব-রস্ত মযোদিষ্টাগুণিনন্দ যথোত্তর ।। यामिन मृ न्यार अमूबाब्जुलन श्रि समह विः।वःশ काष्टिः म विद्क्वयः मई म-ম্পত্তি দায়ক:॥পঞ্চ সপ্ত নব বিংশ তি রাগ: সম্ভোপি সকল: খলু বস্তে। বর্জযেদ্বনতিবাকরজাল• উত্তরোত্ত-त महाखीनाखा। नीलीतमः मृक्षतमः জল• বাবে রঞ্জয়ন্তি দ্বিশ্ ভ পুমাণ•। তেতেযথাপুর্র মতি পুশস্তাংসৌভা-ग्र मम्मिन्ड विश्वानमायकाः॥ ७४३१-क्न भुगागल मन मध जि ७ अकान्। পদারাগ স্তলযতি যথা পূর্ব মহা-গুণঃ।(কাইকোল ফলাকারে। দ্বাদ नाष्ट्रां ति ७९३कान्। भप्रताग छलय-তি यथा পূर्वः महारूपः ॥ वनती कल তুল্যো যঃ শ্বর দিশ্বসূ নাসকঃ। তথা ধাত্রীফল ত্রিংশৎবিংশতিদ্বপ্তমাস-कः। उथाक्यक कन जूरन ऽ। या वङ्गिरकः কমাৰকঃ৷ ভাষূল ফলমানোয শুভু-ব্রি দ্বিক তোলক: !৷ বিদ্বীফল সদা-

गानिका

কারো বসু বড্দশ ভোলকঃ। অতঃ भवः भुमाणन मानिन ह न लाखाउ ॥ यहि वाख्यक भूत्यान उस। निषि মবাপুষা । কেচিছার তরাঃ সন্তি লাত্যানা পুতিৰূপকাঃ॥ বিজ্ঞাত यः भुगद्वन मिला छ। मृत्रा मारहाद् । काक्ष्मकाः निःश्म (पर्णाप्य मुकः भानीयाः । शिभार्गकाम् अमृना विकाउयः शप्तराशाणाः ॥ जूरवाश नकाष्ट्रणनाष्ट्रियानः भनिः ब्रह्माताः मेलि जुम्कव्यः। कार्काख्या निःश्व ;দেশ জাত॰ মুক্তাভিধান• নভস: 🔻 ভাৰাৎ ৷ শ্ৰীপৰ্ণক দীপ্তি নিৱাকৃ-াতিত্বাদিল্লাভি লিকাশুয় ভেদ এব: ॥ 🛊 ॥ छथार । स्त्रह भूमिरहा मृत्रु ৰাযুত্ব বিজাতি লিক্ত থলু সাৰ্বজন্য । यः শ্যামিকা॰ পৃষ্যতি পদ্মরাগো যো বা ত্বাণামিব চূর্ণ মধ্যঃ।। সেহ পুদিশোনচ যো বিভাতি যোবা পু-म्बाः পुबराजि मीथिः। पाकास মুর্দ্ধা চ তথাঙ্গুলিভ্যাণ যঃ কালিকাণ পার্শ্বগতা॰ বিভর্ত্তি॥ সংপ্রাপ্য তা-ক্ষ্যোপি পথ স্বৃত্ত বিভর্ত্তি য়: স ৰ্ৰ গুণানভীব। তল্য প্ৰমাণ**ন**্য চ তু **অ**জাতে যোঁ বা গুৰুত্বেন ভবেন্ন তু **ग्राः ॥ পार्शाशि नानाकत्र (मण्डा-**ত জাত্বা বুংধা জাতি গুণেন ল 🖔

क्ट् । जनुनमाजि जासरा नायाः भद्रिधर्ययः । घृष्ट्वारमा २ म्माकावान् भत्रिमागः न मुक् স জ্ঞেব: শুৰুজাতিস্ত জ্ঞেবা শ্চ বিজাত্যঃ। স্বজাতক সংস্থেন निर्थंश भन्नभन्।। वकु वा र विम्ह॰ वा विग्रुह्यात्र्यान्यक्रवरहः न मका॰ (नथन॰ कर्सु॰ भग्नेत्रार॰ নী**লযোঃ। গুণোপ গন্নেন সহাব**্ধ **স**ণিস্তৃত্বান্ত্যো বিশুণেন জাত্যঃ।স न क्र्यंत्रामि को खाउन विद्यान् জাতি॰ ন ভ্যাধুধ স্ত॰ ॥ চণ্ডাক কোপি তথাভিজাতান্ সমেত্য 🦠 नभर्षि रङ्गार । उथा मगीन् 🕾 **গুণোপপনান্ শক্তো ২তিবিদা**ৰ जु विकाउ: ॥ 🗱 ॥ जाय गृतारः। লার্কাভিমুখ কৃত্বা দর্পণে ধারণ মণি[•]। তত্ৰ কাম্ভি বিভাগেন ছ**়** ভাগ বিনির্দিশেৎ॥ বন্তুস্য যন্ত व जन्धारवाङ म्वाः जम्मा গৌরবস্যা তৎ পদ্মরাগস্য তথ ব্বিত্তন্য স্যান্মাৰকাখ্যা তুলিভ ম্ল্যুণ ।। বন্স্ল্যুণ পদ্মরাগস্যু সং न्। পুकीर्ভिजः। তাবমূল্যः 🤨 শুদ্ধে স্ক্ৰিন্দে বিধীণতে।। সং **ञ** क्वित्म ह यावगूलाः शुकीर्ति **जादम्नारः हर्ज्याःम होन**्नाहाः

गाउक

क्रिक ॥ यावम्बंधः नमार्थाउ॰ রবর্ণে চ স্বিভি:। তাবমূল্য ণিশ হীয়তে শুদুজন্মনি।। প गः भग यस भारत नाकावन-। কার্যাপণ সহসাণি ত্রি॰শন্ম্ লভেড সঃ।। ইন্দুগোপক স কেৰ্যভাষ প্ৰতোমণিঃ। দাবিংশ াহসাণি তস্য মূল্যণ বিনিদ্দি ॥ একোনো न्यट यञ्च यवा সমিভঃ৷ কার্যাপণ সহসাণি म्ला हज्यं ।। वाला हिजा निजः कर्षः यस পुज्नारक । পণ শতানান্ত মূল্য**ে সন্ডিঃ** र्वेड ॥ यस माजिम भूझा छः र्त्तन जु निष्ण । कार्याभग নাস্ত বিংশতি মূল্য নাদিশেৎ ারো মাষকা যস্তরজোৎপল-ণুজঃ। মূল্যু তস্য বিধাতব্যু जः **ग**जशक्षकः ॥ धिमायकाः ণৈঃ সর্বৈরেব সমন্বিতঃ। তস্য বিধাতব্য দিশত তত্ত্ববেদি । মাষকৈক মিতো যস্ত **প**দ্মরা-গান্বিভঃ। **শতৈক সম্মিত**• বা-्वाः রত্ন বিচক্ষণৈ:।। অভো-্মাণান্ত পদ্মরাগা গুণোত্তরাঃ , বিভাগ ন্লোন ন্লাও তেষ। নাভক্ষনকর্ পুণ মহামৎস্যভেদঃ। य ।। कार्याभनः ममाथ्याउः

পুরাণ ঘর্ষ সমিতঃ। অন্যে সস্ফ্র পানীয় মঞ্জিষ্ঠোদক সমিভাঃ॥কা-ৰাষা ইভি বিখ্যাতা: স্কৃটিক প্ৰভ-বান্দভোভেষা দোষে৷ ভণোবাপি भद्मताग वसारित्य ।। भ्वा भन्न छ বিজ্ঞেব পারণে পল্লফল তথা। বুন্ধ क्विय देवनाडित कर्जुर्शाय भुकी-র্বিহা:॥ চত্রি ধৈ নৃপতিভি র্ধা-र्य्যाः **সম্প**ক্তি **হে**তবে। অতো **হ**ন্য-था धृष्ठः त्रयं)ारमाग भाक ভर क-य ।। ইতি যুক্তিকল্পতকঃ ।।

मानिका जी जिक्षी। जदमर्गायः। मुषनी २ गृहरगाधिका ० गृहरगा-লিকা৪ ভিত্তিকা৫ পল্লী ৬ স্ড্য-न भारत के प्राप्त कि । इंडि रश्यम्मः ॥

गानिवक्कः क्ली रेमकवनवनः। इंड्र मत होकायाः सामी ॥ गानिमष्ट्रः क्ली निक्षकन्तराः। इंडाः . यदः ॥

भाउकः प् रखी। ইত্যমর:॥ अ-अय्यवृक्षः ॥ किता उका छिवि । ইতি উটীকাবা॰ নথুরেশ:।। খ-পচঃ। ইতি মেদিনী।। অহদুপাস-কৰিশেষ:। ইভিছেমচন্দু:।।

ইতি বাজনির্ঘণ্ট: ॥

মাতলি

माउदी जी मनगराविराउश्वरंड-नवमविष्ठा । व्यथं माजङ्गीमद्धः। वान(कथत्रउष्ट । व्यथ वर्ष्क) मः शास्त्री॰ गाउक्नी॰ नर्दानिकरा॰ । অস্যোপাসন মাত্রেণ বাক্ সিরিং অভতে ধুর•।। পুণবঞ্চ ভতে। মা-याः कामवीजक क्ईकः । माउन्ही उ यु ठ। ठाज विश्वाया विश्व मंनुः ॥ अविः म्याप्तिना मूर्जि विताद **इन्तः भूकीर्डिङः। माजकी (**एवडा (मर्वी अर्दिमिक्क भूमायिनी ॥ णक्र-न्याम क्रन्यारमी ऋर्य्याच्छी मनाः हिठः। यउरीयं ভाजा वीरंजन भूगः वारम्य कनुराष्ट्रा यहेरकाना हेरणः পদ্য • লিখে অন্ত: মনোরন । তত্র পুজা পুকত্তাগ্যা জবাপুল্লেণ মন্ত্রবিৎ ॥ वहमकी माहरत भ्रायरम् সনাহিতঃ। রতিঃপুরি মনো ভবা কিয়া শুজাত শক্তবঃ ৷৷ অনক ক जुन (नक्ष नरना गरना लगा। इंड) है শকী: সংপূজ্য উপহার সমন্তিঃ ॥ उट्डा (रवी॰ भद्रा॰ ध्रायय ना-धकः हित गानमः। भागमात्री भा লিশেখরা তিন্যনা রহুসি হাসন श्चिणः ॥ (वरिष वीष्ट्रपटिख द्रिम (थः **ढेक भागाळू गथताः। এवः ध्यादा** नरात्वी रक्ष भूदेश र्यानाइरैनः

१। रेनरवराङ गरारेररेवा भाष **म**र्कतानिजः। भूतम्बन काल ज् **बर्गहमु॰ मनू॰ कल्पर १। जम्म्ना॰**-**म**• इत्निराद्याः मर्कत्रा मध्छिः म• र । वुक्तव्रकास्टिवः कारिः नाव-ক: শক্তিভি: সহ।। এক প্রহ্রি याः क्दा भुर्याग विधिमाहस्य । **∌তু**ল্লথে শাুশানে বা কলানধ্যে চ माखिकः॥ मद्माः मान्तरः भावः नक पर्णाष्ट्रक ख्रान्। ताजि (याश्यन कर्डवार महा भूर्गक माध ক: ॥ এবং পুৰোগ মাত্ত্ৰেণ কবিতা काय्र धुत्। अग्निस्य क्वायसुः वाक्ष्रमुः कात्रयः धुनः ॥ नुजी জয়তি শত্ৰুণ্ট ভাৰ্ফ্যে ভোগি व्यनः यथा। नारज वास्त कविरव ह वृश्याजि तिवाभन्नः ॥ चान्तिय विषातन माङ्गे िकिसाणिने। न्**न• उ**र्ग्रमा का 🔻 📸 🎉 🤫 CS वज ॥ विना मध्रेमा 🖂 🛒 रिम नीहर्षंट भद्रास्वजाः । इंडि তম্বদার: 11

নাতরশিভরৌ পৃণ ভাভজনবিভ্যোঃ

निक्षित्रकारको। ইक्रमद्रः ॥ गाल्दिया भ्ः वायुः। ইक्षहः ॥ गाल्दाः भ्ः ইन्द्रम् विष्णाः हैक्र भूदः॥ मा जो जो पागा जिलकार या गा। मानड भूकायाः नामा कि ए हैं। ইতি ভরত:।। মা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়:। জনযিত্রী ২ পুসু: ৩ ॥ कननी 8। ইত্যনর: ॥ সবিজী ৫ स्ति: ५ सनी १ सनिजी ৮ पङ्गा २ व्यवः ३० व्यविका ३३ व्यवालिका ३३ । इंडि मस्त्रज्ञावनी ॥ माञ्का ১०। ३७ क्रोध्यः ॥ सः॥ (याउम প् कात्रा माज्या यथा। खननाजी ग-र्ज्ञभावी कक्षावी ध्क्षिया। य-ভীষ্টদেবপত্নী চ পিতৃ: পত্নী চক न्यका।। भगर्छका या जिननी भूध পত্নী প্রিয়াপুসু:। মাত্র্মাতা পি छूर्याञा (मारबम्) भिया उथा ॥ माजूः পिज्न जिनी माज्वानी छरेषव ह। जनाना॰ (वहविङ्डा নাজঃ বেড়েশ যুকা: ॥ ইভি ্ৰীৰেৰে গণপ্ৰি-ু ওকাৰ্ত্তিকে-य् मन्दर्शनै १८ वक्तायः॥ 🛊 ॥ ७-गा भोत्रदः यथा। कनरका कत्रमा-নত্বাৎ পালনাচ্ব পিতা সূতঃ৷ গরী-यान् बन्नराजण मा २ वराजा लि তা মুনে ॥ বিনামামখরো দেহো ন নিভ্যঃ পিতৃ কন্তবঃ। তবোঃ শত खरण माजा भूजा मानता ह बन्तिजा ॥গন্তপারণ পোবাভ্যা॰ না চ তা

ন্ত্যাণ গরীয়সী। ইতি তবৈব ৪০ অ-भागः॥ ॥ अभिन्। म खक् राः किः याः क्वा (यह मरिम् भुगह्छि। উপ-नीव रनत्वर नाठार्याः म भुकी विंजः ।। একাদশ উপাধ্যায়া পাত্মিক্ত ক্রু চ্যতে।এতে মান্যা যথা পূর্বমেভ্যো মাতা গরীবসী॥ ইতি গাব্দডে ৯৪ व्यक्षावः ॥ 🟶 ॥ व्यन्त्रह् । न निजु र्ब्छन कार्ग्य यथा माजूः मूर्जन हि । পিতা চ পতিত স্ত্যাৰ্যোন মাতা সংসূতেন হি ॥ গর্ভধারণপোষা দ্বি ভতো নাতা গরীয়সী। দশবিশা-দুপাধ্যায়ে। গৌরবেণাতি রিচ্যতে।। **(उड़): পিতा मण डाख माठा हिन** গরীয়সী। মাভূতো হনেগ্রন দেবো-खि उबाद भूजा यहा मुख्या मा-তুশ্চ যদ্ধিত কিঞ্চিৎ স্বৰুতে ভক্তি णः भूनान्। **७क्यां** क् विकानीया-स्त्रव॰ थर्माविष्तः। विष्तुः।। ইতি वङ्गि> भूद्रापः ॥ अभव्यकः । अक्षा निम मर्खिषाः भूक्षाः भक्ष विष्मबङः । তেবা নাদ্যা জ্বয়ঃ শ্রেষ্ঠা তেবাং নাতা সুপ্ৰিতা॥ যো ভাব্যতি যা সুতে যেন বিদ্যোপদিশ্যতে ৷ জ্যেষ্ঠ जा जा ज ज ज ज मर्कि ज र द्वरः स् তাঃ॥ আত্মনঃ সর যত্ত্বেন প্রাণত্যা-श्वन वा भूनः । भूजनीया विष्णस्व

भौकाउ ज्ञि मिह्छ।। योवट मि **७। ह गांजा है बार्वरजी निर्दिकांक्रि**-लो। अन्य भवः भविज्ञानाः भूयः ন্যারং পরাফাঃ॥ গিতা নাতা চ जुमी जो महाका जूध खरेन विमि । म मूक्त मक्षा धर्म भाग गाउँन कर्चवी ॥ नाइ माठ् मर्गे रिष्यं ॥ नांडि भिज्ञसभा धकः। जस्याः भुः ज़ुअ केरब्रां नि न कथकन विन्तरङ॥ खरगा मिंडा भियं क्यां द कर्मना म নসাপি বিচিন তাভ্যামন্দ্রাতো थर्यमन्त्रः नमान्यस्या। इंडि कोर्ष्य উপরিভাগে ১১ অধ্যায়ঃ ॥ 🛊 ॥ भाक् नमसमञ्जावका भाक्काक् ॥ यथा। गाँ है ब्रिट्डिश्व मार्यन याथ मः ভাষ্টেত নরঃ। সা মাত্রুল্যা সং **छान स्माः माकी म**ठामिल ॥ उगा मस्डि म्काद्र कामगृब भ्याजि প:। তত্র ঘোরে বসতে বে যাবদ্বৈ বু-व्यागिवयः ॥ भाषाकि खः भाभिनक তস্য নৈব শুভৌ শুক্ত। ইতিবুদ্ধ विवर्ष्धवृष्ट्यशाख २० व्यथायः॥ #॥ निवग्रः भद्रिवाद्रविष्णयः। ज्ञ ष्यमुद्र माद्रण वृक्षामीनाः स्वम निर्ग জত্বাৎ অৰ্থ্ৰশক্তিদেবতাৰূপোষ্থা। नाकी नारस्यती किन्ती वाताशी वि स्परी ज्या। को नात्री रेहर हामूखः

हिर्दिन छोड़े मानितः ॥ नहेला यथा। वान्ती ह दिक्वी रेज्न्ती। वात्राहिकी छथा। स्कौरवत्री कोमात्री माउतः मध कीर्बिङ इंडाम्ब्रहीकायाः ভत्रउः ॥ । लोर्ग्यादियाज्यमान्काः । व (भोती भद्या मही (मश ना विजया जया। एत्यमना सदा 🔏 মাতরো লোকনাতর:।। 🕶 🧃 পুষ্টি ঘূঁ তি স্তুষ্টি রাত্মদেবতয়া 🕶 । जारही विनायकः भूरक्रा जाउ क्लाप्तवजा ।। ইতি भाषाज्य 🔫 हगृश्भित्रिणिष्ठे ।। 🟶 ।। रेवक्ष মাত্পণা যথা। যত্ত্র মাতৃগণাঃ क्या खद (श्वाः भुभूवत्यः । नर **छागवजी (भौर्गमामी भगास्त्राहर** । शका किनक्ष उनेवा रंगाशी रुक्त বতী তথা। গাঘত্রী তুলসী বাং 🦠 थिवी गाण्ड देवस्थवीः। ञीयरमाम 🚟 वर्ञी (पवकी রোशिनी मूथाः 🧻 সীতা দৌপদী সভী হাপর। যা: 🚎 यः। कृष्मिग्राम्रा खर्या हाश्चे म्हि 👍 র্যাশ্চ তা অপি॥ ইতি পাদ্মে 🗀 🤌 থাওে ৭৮ অধ্যায়ঃ।। 🛊 ।। সপ্ত (द। यथा। ज्यामि माठा खद्राः বান্ধণী রাজপজ্ঞি। গানী 🕆 🐠 তথা পৃথা সপ্তৈতা নাতর: মৃ

মাতাম

ि किन्टि गठिन ॥ भा माइन्ता यथा। मान्यमा मान्याविन्दा यथा। मान्यमा मान्याविन्दा विश्व मान्यमा । य्याः
विन्दा । इन्ति मान्यमा । य्याः
विन्दा । इन्ति मान्यमा । याः
विन्दा । य

जि जिन्नी। यथा। विरम्भन्ती॰ विश्वभाजाः किथिकाः भुगमागऽङ्।
जि निवद्गद्दान्य पूर्णाख्य पर्मना
लिव्यव्यक्ति।
लिव्यक्ति।
ल

लिखा १ कननी बनको। एट नियः। निज्ञो २ माउत्र निज्ञो ने अ अ अवस्थित । इ अ अत्र ति अ । निज्ञ चित्र निर्देश १ वण्डा स्था निज्ञ चित्र निज्ञा हे ज्ञ ाः॥ १ ।। को हि ब मा भाजा मह ्धर्मा यथा। चामी मा निर्देश निल्म । यक्त निल्मा मृद्युजः। यस्र ज्ञम् । काना चित्र अर्था १ ख्यु ख ः ।

मृत्ज्राः कन्त्रा मूनीथाया माजुम्ः-শীল কারণাৎ। কুরা বৃদ্ধি রভ্ত স্য জগভো হস্যাপি পীডনে।। ত-शिवना॰ वरण बाजा सवीगाक य-**मसिनाः। मस्पाः निर्स्याः वाशिः** याडि माजामही जन् ॥ इंजानि পুরাণ ।। 🗱 ।। ভদ্মরণে বিরাভা-শৌচ যথা। মাভামহানা মরণে ত্রিরাত্রণ স্যাদশৌচকণ ইতি শৃদ্ধি-তত্ত্বে কূর্যপুরাণ ।।#।। দুহিত্ পর্য্য-ভাভাবে তস্য শুদ্ধে দৌহিৰস্যা-ষিকারে। যথা।মাতামহানাং দৌ-হিত্ৰা: ব্ৰব্তঃহনি চাপরে। তে চ তেবা পুসর্বন্তি বিভীযে ২হনি স ৰ্বা।। ইতি শুদ্ধিতকু ।। 🛊 । দুহিত্ পর্য্যভাতাবে তস্য খনে দৌহিত্র-স্যাধিকারো যথা। তদভাবে দৌ-হিত্র:। পৌত্র দৌহিত্রয়ে র্লোকে विष्णरम्। नास्त्रि भग्नंजः। जरमा हि মাতাপিতরৌ সম্ভূতৌ তস্য দে-रुजः॥ ইভি মনুবচনে পৌ এভু न्या ভিধানেন যথা পুঞাভাবে পৌঞ্ ন্তথা দুহিৰভাবে দৌহিৰ:। অত-এব গোবিন্দরাজধৃতো বিষ্ণু:। অ-পুত্র পৌত্তে সংসারে দৌহিত্তা ধন माशृगुः। প्रविषा हि यथा कारत পৌএ দৌহিত্রকাঃ সমাঃ ॥ ইতি

मायउद्ध ॥ माजामशी खो माजामश्रेषी। माज् भाजा। याहे हेजि जाया। यथा। মাতানহী মাতৃমাতা মাতৃতুল্য চ প্ৰিতা। পুনাতামহীভি**্**বি क्काना भुगाजागर कामिनी। वृष পুমাতামহী জ্বেয়া তৎপিতু: কা भिनी जथा। इंजि वुक्तरेवरार्ख वृक्त খণ্ডে ১০ অধ্যায়: ।। 🛊 ।। তন্মরণে প-किन्तरामोहः यथा। या ब्रुल चम्द নিত্রে গুরৌগুর্বক্নাসু চ। অশোচ•! পক্ষিণী॰ রাভি॰ মৃতা মাতামহী यि । ইতি শূদ্ধি उद्धः ।। मू व् পর্য্যভাবে ভচ়ান্ধে দৌহিত্রস্যা-**धिकारता यथा। उप** जारत स्मोहिः बः। পাগুক্ত বৃদ্ধপুরাণে তথা দর্শ नाए। भी असी इथा वितिक न বিশেষোহস্তি ধর্মত: ৷ তথো হি মা-তা পিতরৌ সম্ভ্রতৌ তস্যদেহতঃ ।। ইত্যনেন যথা পূঞাভাবে পৌগ্র স্তথা দুহিৰভাবে দৌহিক্তা ইতি পাুগেবাকত্বাৎ। নাত্লো ভা

शित्यमा स्त्रीया माजूनेमा ह।

স্বশ্রস্য গুরোশ্চৈব সন্থ্য র্মাতান

হস্য চ। এতেষাঞ্চৈব ভার্য্যাভ্যঃ

श्रम् गाजुः भिज् ख्या। भिखनान

স্ত কর্ত্তব্য মিতি বেদবিদা স্থিতি

्रम् **उ**वं

রিতি বৃদ্ধশাতীত প বচনেন না गशाम गाँकाप्पोहित्वन नि मान भुः छः धनाधिकात्रिज्ञाह । इ শুদ্ধিতত্ত্ব।। 🐞 ।। তস্যা অযৌত্ খনে পৌ এপর্য্যন্তা ভাবে দৌহিত্র বিকারঃ। যৌত্তকধনে তু শুঞ্সর্পর্য ভাভাবে দৌহিত্রাধিকারে যথা দৌহিত্রোপি ছ্নুকৈন সপ্তার্যতি (भोजयमिजि समूबहान स्मेरिट लीय वयाजिएमार मृत्यन भ রিণীত দুহিত বাধাৎ বাধক পু-গ্রেণ বাধ্য দুহিত্ প্রবাধস্যন্তা-য্যবাৎ।ইতি দায়তন্ত্ৰণা পুঞাতা-বে দৌহিত্রো হৃষিকারী ৷ পুঞাধি কারাথ পাক্ দুহিত্রধিকার শুতেঃ তদ্বাবিকাষা দৃহিত্: পূণ্ৰেণ বাধ্য ः भूषवार्यमध्य नध्यप्रद्वाटः । इति मायकगन-गुर्का।

गाञानी खी नाजः नथी। ইতি শবনাना॥

নাত্ন: পু॰ মাতৃভাতা। পিতৃশ্যালক: ।। নানা ইতি ভাষা। ইত্যনর: ।। তন্মরণে ভাগিনেযস্য পক্ষিণ্যশৌচ- ॥ যথা। মাতৃলে পক্ষিণী রাত্রি শিষ্য র্বিণাম্ববেষ্চ।
ইতি শ্কিত বৃ॰ ॥ ঋ॥ সচ মাতানহপ্যান্তরহিত্য্য মৃত্যা প্রেবৃ

माञ्चा

মাতৃক্

क्रियान्। विकाशी (१ यथा। भाज्राना क्रिशान्। विकाशी विश्वास्था भाज्रामा क्रिशा विकाशित भाग्रामार क्रिशां विकाशित विश्वास्था विकाशित क्रिशां से भरनकतः ॥ वस्त्रः । वस्त्रः ।

भाज्लकः भुः धुख्रव्षः। ইতি রাজ विर्घकः॥

- স্থাতুলপ্এক: প্রুত্রফল । ইত্য-ন মর: ॥ সাত্লতন্য:। ইতি সে-ন দিনী ॥

माञ्चा । अती माञ्चलभी। माभी
भाञ्चानी) हे जि जाया। हे जाया । कि पाज हो । विकास माञ्चाना । कि पाज हो । कि पाज हो । कि जाया । कि पाज हो । हे जि जाया । कि पाज हो । हे जि जाया । कि जाया । हि जाया । ह

माज्वाहिः शृ मर्गविष्मयः। मा-वृशमाश इंडि (क्यूयाधी इंडि ह ভाषा। अयः थेर्राकृष्टिः आयड (परः पीर्घनाकृषः हजूज्ञार। इंडि নপুনাথবাদয:।। ত**্পর্ক্যায:। মা**-স্থুপান: ২। ইত্যমর:।।

भाजूनी खी भाजूनभङ्गी। ইত্যमतः॥ ভঙ্গা। ইতি শব্দদ্দ্দ্দা।। भाजूकः भ् वीबभृतः। ইত্যমরটी-

कारा॰ ভत्रजः॥

माञ्लूककः भू ছालक्र्कः। ७८ পर्यायः। कलभूतः २ वीकभूतः ១ ৰুচকঃ ৪। ইত্যমর: ॥ মাতুলুঙ্গ: ৫ येकनः ७ कलभूतकः १ न्यूयः ্দ প্রক: ১ প্র: ১০ বীজপূর্ণ: ১১ অমুকেশর: ১২ ছোলস্ব: ১৩। ইতি त्रज्ञभा**ना ॥ जन्य ७**गाः। क्राजुः। ष्यम्भद्रशाचयुद्धशाच प्रीत्री भनद्रशा ्षाधान ७ ना श्ली र रुपुरिगारा वर्छः नामिष्। विवन्न हिक्का मूल हिन् (द्रार्ग भुभेखबुका। वाम् प्रानाः। जिङ्कद्व॰। मूर्ड्डातद्व॰। कक वाज নাশিত্ব। বিগতরসত্ত্ঞ।। তন্মাণ-সঙ্গা:। সাদুত্ব। শীতত্ব-। গুৰু-ত্ব'। বায়ু পিত্ত নাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভঃ ॥

নাতুল্কা জী মধুসকুটী। যথা।
নাতুলকা সুগন্ধান্যা গিরিজা পৃত্তি
পৃষ্ণিকা। অভ্যন্না দেবদূতী চ সা
ক্চিমধুসকুটী॥ ইতি রক্ত্নালা॥
মাতুলুস্কিকা জী বনবীজপ্র:। ইতি

त्राजिमिष्यः ॥

মাতৃকছিদঃ পুশ পারশুরামঃ। ইভি কেচিৎ।।

भाज्काः जीः **धाज्का।। भाजा।। (स्**वीः (छप्रः।। वर्गमाना। देखि स्विपनी ॥ করণ ॥ শ্বর:॥ উপযাতা। ইতি रहमहम्मुः ॥ ॥ ॥ माज्कागतार পত্তি ৰ্যথা। তত্ৰ দেবো প্ৰধুসী দৈ **छ** जिण्लमार्गक्ण । छम्। इ তস্য যদুক্ত মপত্তভূতলে কিল।। ভতান্ধকা অসংখ্যাতা বভুবু রপরে ख्नः। उष्ट्री महराम्हर्गः **य**पुः भू (म २क्षकः मृत्य।। गृहीषा विभिः थार्गुण ननर्छ श्रद्धायदः। ইউরে २भाक्तकाः मर्स्ट एकिन भवस्मितिना । নারায়ণেন নিছতা তত্ত্ব যে ২নেঃ সমূথিতা: ॥ অস্থারা স্বারৈস্ত শ্ল (পাওস) চাসক্ৎ। অনারত॰ সমূত্তস্থু: স্বতো ক্দ্ৰো ক্ৰাণ্ডি:॥ ভস্য কোধেন মহতা মুখাজ্জালা विनियंशो । তদুপ शांतिनी॰ प्रवी॰ याडी वागीयती विदू: ॥ यकः পখারিণী চান্যা বিষ্ণুনাপি বিনি र्मि छ। वृक्षण कार्जिक्यन हैरमुन **ठ यरमन ह ।। वाजारहन ह (मरवन** বিষ্ণুনা পরমেধিনা। পাতালো**ছ** व्रगः क्रभः उभा (एवा) विनिर्मात

।। मार्यती क्रीयारम्पी हैक उ षडे माजबर्भ काबना वना रह ल्या-क (कवाखनावशात्रक ॥ भन्नी ब्रारम्य नामा ज् जिन्द की खिंड मया । कामः काष उथा लाखा भारत **भारहा २४ नक्षः।। बाट्**नर्राः ষষ্ঠ মিত্যাহু: গৈশুন্যু সপ্তম জ্ব । অনুস্বাইমী জেগা ইত্যেতা अहे भाजद्रः ॥ कामः (यागीयद्रीः दिक्ति काथ गारू यत्री उथा। लाख्स विकवी (शांका तुकारी मन अव ह भारः स्यतः कोमात्री मार्नरः किन्युका॰ विमुः। यामी मध्यद्रा (मर्व रिभणुन्द्रः स्रयस्मद् ह ॥ अनुमूरा दम হাখ্যা.ইন্ড্যেডাঃ পরিকীর্ন্তিতাঃ कामाहिशन असाय भन्नीतः श कीर्खिङ ॥ बगुार मूर्खिख यथा 🗜 था ७ कीर्खिङ भगा। এতাভি पर्यः ভাভি**ক ভস**্তমক্ত ভূ **শো**ৰিটে क्रयः अञाजूती नाग **१इति। १७ব८। १७७७ म**िस्स **७ माज्रिविह्या मृजः मया ॥ य ७**७ **ছ্ণু**যান্নিত্য• মাতৃ্ণা মুক্তব• শুভ• তস্য তাঃ সর্বদা রক্ষাণ সর্বস্থান্দি न नृभ ॥ (यरिनज्य भर्त्राज कम ना जुनाः भूकरवाखम । म धनाः म र्वर লোকে শিবলোকঞ্চ গছতি। তাৰ

क श्विमारडा अञ्जी जिथि रखना ।। १उ।: म॰भूब्रदाखंडेग्रा विदाही-রে: নর: সদা। তস্যতা: পরিভূষ্টা হ্যংক্সারোগ্য দদন্তিচ॥ইত্যাদি ৰারাহপুরাণে কামাদি মাত্গণোৎ शिविद्याभाषायः॥ #॥ व्यनिष्ठ। वु एक्स **७** विक्ना॰ उत्थनुन्। क ফবং। শরীরেভেগ বিনি**ন্নুম্য ভ**া ्भ ऋखिका॰ ययुः॥ यम्। (দवम्। সদলা যথা ভূষণ বাহন। ভদ্বদেক ः इहिक त्रपूतान् याष्ट्रनाययो। 🍇 ৴যুক্ত বিমানাগ্ৰে সাক্ষ সূত্ৰ কম 😘:। আযাতা বুন্ধণ: শক্তি বুঁন্ধা-ी जाजिरीयरा ॥ मारस्यती व्या-রচ। তিশুল ব**র থারিণী। নহাহি** বল্ব। প্রাপ্তা চল্দুরেখা বিভ্ৰণা॥ ্কীমারী **শ**ক্তিহস্তা চ ন্যুর বর বাহ⊹় भाः (याष्ट्र मञ्जायस्यो देन ञ्जानश्चिकाः ত হৰূপিণী।। তথৈব বৈষ্ণবী শক্তি প্রক্ডোপরি স্ছিতা।শত্ন চক্র গ-জনারাহ মতুল ৰূপ যা বিভুতো **হ'া শক্তিঃ সাপ**্যায়যৌ তত্ৰ বা-র हौ॰ বিভূতী তনু॰ ॥ বারসি॰হী নৃ-াহস্য বিভুঞী সদৃশ বপু:।পুন তর শটাক্ষেপ ক্ষিপ্ত নক্ষত্র স•-हिं ।। वज्रुव्छ। उरिपरिन्ती गम

রাজোপরি ছিতা। প্রাপ্তা সহস্রবং मा यथा भक्त खरेचवः मा।। ७७: १४ রিবৃত তাভি রীশানোদেবশক্তিভিঃ া হন্যন্তা নসুরাঃ শী ঘু• মম প্রীত্যা-হ চণ্ডিকা•॥ ভতে। দেবী শরীরাক্ত বিনিমান্তাতি ভীৰণা। চণ্ডিকা **শ**ি ক্তি রত্গ্রা শিবা শত নিনাদিনী।। ইতি মাকণ্ডেযপুরাণণ।। 🛊 ॥ মাতৃ वर्णायथा। खद्भाः भन्नी द्राह्मभन्नी বিপুণত্নী চ যা সতী। পত্নী চ ভ্ৰাতৃ म् जरवा सिंबभन्नी ह उद्भुग्ः॥ भुगूः পিৰো ভাষা ভূৰ্ণ ভূঃ পত্নী শ্বন্ধ: ম[ু] কন্যকা। জননী তৎ সপন্নী চ ভগি-नी जुड़ की खबा।। साकी है जुड़ भड़ी ष्ठ थाजी काञ्चाशुरायिक।। गर्छथाजी स्त्राप्ती ह ज्या खाजुन्ह का निनी ॥ अ তা বেদপুণীতাশ্চ সর্বেবাং মাতরঃ মৃতা: । এতায়পি চ সর্যাসূ নূগ্রতা: नास्डिकाम् চ ॥ इंजि वुक्तरेवदर्खः 🗐 কৃষ্ণ জন্ম খণ্ডে ২৫ অধ্যায়: ॥ 🛊 ॥ ষোডশ মাতরো যথা। গুৰুপত্নী রা-জপত্নী দেবপত্নী তথা বধুঃ। পিত্ৰেয় ম্বসা শিষ্যপত্নী ভৃত্যপত্নী চ মাতুলী ॥ পিতৃপত্নী ভাুতৃপত্নী খশুক্ষ ভগি-नीमूजा। गर्खधाजीक्षेपिकी ह भूभाः ষোডশ মাভর: ॥ ইভি ভবৈব ৫৯। व्यवग्रायः ॥ 🕬 ॥ व्यवसाञ्कानग्रामः ।

় স্ত্ৰা

खगवान्वाह। नाज्का नाम नधुना শূণ বেতাল ভৈরব। যেনদেবল্ব মাযা তিনরো পশি বিহিতেন বৈ॥বাগ্রু ক্ষাণী মুখাদেব্যো মাতৃকাঃ পরিকী ৰ্ত্তিতা:। তাসাং মন্ত্ৰাণি সৰ্বাণি ব্য क्षनानि यता ख्या।। हन्तु विन्तृ भुगू क्लानि जर्बकान श्रुरानि ह। अविस् নাত্ নজাণা•নুকৈব পরিকীর্ভিডঃ ।। (शुका इन्त स गायवी (मवजा ह সরস্থ । শরীর শুদ্ধি পুনুথ সর্র कामार्थ माध्य । विनियागः ममू फिल्डा मखाना॰ न्रन भ्रता॥ ष-कारत मन कारि वर्णा यः भुष्मः মৃত: ৷ তৈ শন্দু বিন্দু সংযুক্তি স্তব रिष्ट तकरित्र विश्वा। योकात्रक उर्त्था-हार्ये अक्षान्धाः नन ख्या। भूयमः माञ्का मञ्ज मञ्जूष्ठ घराठा नारमः ।। शाद वंगाः इतिः मार्कः त्व वात्र न्याम कर्माण । उ नार्ब हन्मृविन्मृ-ख्याः युकाः कार्याञ्च मदे**ः**॥ <u>व</u>स्त কারক্চ বর্গেণ দীর্ঘেকারান্তগেন তু 🕍 छर्ज्ञत्या विनारम् मनाक् साहारा न जु भूर्वव ॥ इस्वाकात्र क्षेवर्राण मी র্ঘোকারান্তণেন তু। মধ্যমা যুগলে नन्यक् वयप्रस्थन विन्यत्र ।। अव्य ज्ञानि उर्वशास अकाजारत्वन टेव्य इ॰। ন্দ্রসদ্বামিকাযুণ্মে নিয়ত তত্ত্ব ভৈ

त्रव ॥ अकाबादि भवर्गञ्ज अकाबा **एक (निवर्ज)** (बोयप्रस्न कनिश्वायाः विनारमः कार्या मिन्नरय ॥ जा का-রাদি বকারাদি বর্গেণ ক্ষান্তকেন চা ত্য: ইত্যন্তেল্যো বিন্যসেৎ পা-**शिशृ**ष्ठरयाः ॥ ययहे कातः (भवजार) मञ्जनहारम निर्याक्षरयः । वृषयापि बड:क्ष् भ्रवेष कमला नाम ॥ व्यष्ट्रश्रामुक वरेगस्रक्रमाट यण्डिखवा विरेषः। পून खेषा भार जान मिक्न গুছে তু পাৰ্দ্ধবোঃ॥ বস্তো চ বিন্য (मञ्जान् कनार भृद्यंतरकातः । वास्त्राः भाष्या खथा कछि नाः 🗟 ह জঠরে তথা।। **ভনযো রি**পি বিন্যা**স**। তথা ষট্রি: সমাচরেৎ। বক্তে 5 চিবু-কে গণ্ডে কৰ্ণযোক্ষ ললাটকে !৷ অ৽-শে कक्ष्म ह वङ्गीर्गः भूईवस्ताम मा-**চরে** । রোনকূপে বুক্রক্রে ওদে ङङ्घा यूर्ग उथा ।। नत्थवू भार भा-ष्णाण ज्या भूर्ववनाहरत् । ववस नाज्हा नामः यः वर्गावत मखनः ॥ স ধ্যা বজ্ঞে প্রাস্ প্তো যোগ্য-শ্চ জাবতে ৷৷ নাতঃ পরতর নম্র • বিদ্যতে কৃচিদেব হি ॥ यः সর্বকান-দ॰ পুণ্ড॰ চতুৰ্গ কলপুদ॰। বাংশ্ব-তा श्रेष याजा मृष्कु मदीक्रवाणि ह ॥ বিধা চ নাত্কা নক্ষৈ: সংক্রেশ্চ শিপবৈজ্ঞল । সুবার্থা পণ্ডিতো ধী मान् बायर क वदः कविः। वन्तिवन्तु अनायकान् यतान् न्दान् भटिष्यः। वाञ्जनानि ह नर्वानि कवनानि भरते ख उ: ॥ अकादाहि क्कादाष्टात्म उद श्रारेमञ्ज भू वं रिकः। जनः कब्र जरम পৃত্পতি ব্লাকর সংঘকণা। অভিনত্ত্য जु जरखाव॰ गृथम॰ **न्रतेकः भिरव**्। হ্ময়কেন দ্বিতীযন্ত তৃতীযন্ত্বথ রেচ-रिकः ॥ ७४॰ मक् धिवात्रस्त भीदा ভোষ বিচক্ষণঃ। দূঢাক্ষঃ পণ্ডিভো 🛚 ভূষাৎ পু ∷পৌত্র সনব্বিতঃ ॥ ত্রিস∈ ন্ধ্য মথ পাঁহৈব নাতৃকা ম**ন্ত্ৰ** মক্তি-ত ৷ তোয় কবিত্ব মাপ্নেতি সৰ্বান্ কানা• স্তথৈৰ চা৷ **সতত•,স**ৰুতে-যস্ত নাত্কা নজ নজিত। তোষ পান নহাভাগঃ প্রক স্তম্ভ রেচ-কৈঃ॥ স সর্কানান সংপ্রাপ্য পুঞ পৌএ সমৃদ্ধিনান্। ভূবা মহাকবি লোকে বলবান সভ্য বিক্রম: ॥ স ৰ্বত্ৰ বল্লভো ভূত্বা চান্তে মোক্ষ ম্বা-পুৰাৎ 'বাজান নথ বা রাজভার্য্যাণ পুএ মথাপিবা॥ বশীকরোতিন চি-রাৎ মাতৃকা মজ্র পালক:। ন্যাস ক্রমে ক্রম:প্রোক্তো বর্গক্রম ইহৈব ভু ।। অক্ষরাণা॰ ক্রেণাথ ভোষ্পান• न्नाह्य । य य मञ्जा प्रवजाना

মূৰীণা নথ রাক্ষসা<u>ণ ৷৷</u> তে মন্তা মা-ত্কা নব্ৰে নিভ্যনেব পুতিষ্ঠিভাঃ ৷ मर्ब मञ्जमयम्हायः मर्ब (यहमय खर्था ॥ हजुर्वर्गभुर महाय॰ गाज्क। मज উচ্যন্ত। ইতি তে কথিতঃ পুত্র না-তৃচা ন্যাস উত্তম: ॥ ইতি শ্রীকালি কাপুরাণে মাত্কান্যাসঃ ৭৬ অধ্যা यः ॥ 🗱 ॥ अथ उन्र न्यागः । অস্য নাতৃকা মন্ত্ৰস্য বুকা ক্ষ **র্পাযত্রী ছল্দে। মাতৃকা সরবতী** দেব ত। হলো বীজানি বরাঃ শক্তযো মা ভ্কান্যাসে বিনিযোগ:। শিরসি उ বুন্ধণে থাৰ্যে ননঃ। মথে ওঁ গামত্রी इन्हरम नगः। इहि ওঁ মাতৃকা সর स्रोका (एवकारेय नमः । खर्श 🗳 ব্যঞ্জনেভ্যো বীজেভ্যো নমঃ। পাদ-যো: ওঁ স্বরেভ্য: শক্তিভ্যো নম: 🛭 তথা চ জ্ঞানাৰ্ণবে । মাতৃ কাণ শৃণু (एरदिण न)रमः भाभ निकृष्ठनीः প্ৰবি বুন্ধাস্য মন্ত্ৰস্য গায়ভীছন উচ্যতে।। দেবতা মাতৃকা দেবী বী कः वऽक्षन मक्षयः। শক्তयस स्रताः प्रिव यख्यन्त्राम माठाद्र ।। ততঃ যডক্স ন্যাসৌ। অ॰ ক॰ খ॰ প ঘ• ড• আ• অঙ্গুপ্তাভ্যা• ননঃ ৷ ই• চ ছ • জ প শ শ ই • ভর্জনীভ্যা • সাহ । উ• ট• ঠ• ড• ঢ• ণ• উ• নশ্যনাভ্যা

वबहें। वा उा था हा था ना वी आ नामिका छा। छ। । ७। भः कः दः छ। मः छे कि इंडिंग हो वोष्टे। चः यः র ল ব শ ষ স হ ল ল ক আঃ कत्र उन शृक्षाच्याः कर्। अवः वृष्याः रियू। या का ६ या वृत्याय ननः। इंड्रापि ॥ उथाऽ द्धानार्गत । यः আ• মধ্যে কবর্গন্ত ই• ই• মধ্যে চব-र्शकः। উ॰ উ॰ मस्यु টবর্গন্ত এ॰ ঐ॰ मर्था उदर्भकः ॥ ७ ' ७ मर्था शक र्ग ह विन्तुयुक्त नाम्य भिर्व । अनु सात विमर्गाष्ट्र यं नवागी न नकाकी ङ्ख्यक निरन्ना रहित निश्ना कवहक॰ তথা। নেত্ৰ মন্ত্ৰ: ন্যাসৎ ডেম্ব: ননঃ স্বাহা ক্রমেণ তু ॥ ববট্ স্থ॰ বৌবড॰ लक कड़ पाजरार भिरा । वड ক্ষে। ९य॰ মাতৃকাষা: সর্বপাপ হর: म् छ: ।। 🗱 ।। अथान्डर्माञ्कान्यामः । व्यकातारि (वाउन स्रतान् निवन्तृन् वाउन पन कमान करे मूल ना स्त । ककाज्ञानि चानम वर्गान् निवन्त् चारमस्य कनत्य इत्रय न्यात्र । एकाजा कि क्षावर्गान् अवि-नम् म म त्व कनत्व नात्नी नाः म । वकातानि यश्रान् मविन्तृन् यश्रम कनत्व विक्रम् व नारम् । वकावारि ए जुरबा वर्गान् निविनम् ह जुर्न न कमरन

गूनाचारत नऽरके । र म विविक भविन्मु विक्रम भग्न जुनावा नाम । ज्यार ज्ञानार्गत् । बाह्रेलवाम् কঠে শ্বরান্ বোডশ বিন্যসেত। 🕫 मणहर कृ शाना कामीन् शामण ि न्राम्याप्रमान्यानुष्क नार्को एकः बारीश्रारमप्रमा यहेम अमास्य विक् **इट वकाका नी म**हरमह यह ।। व्यादात्व **ठजूदा क्लाम्य (महारीन् ठज्यं ल**! रको जुनवारा भाग विषय विषय स्ट शिर्य ॥ **व्यास्त्रप्रभः हि** जायाः **अरेकववर्ग (मरेकक श**ञास्त्र विन्तुः स्य शिरा । अवमस्यः भूविनामा स्व **गाउा वहि न्राम्याशा रे**वकरवञ्जा **अरेककवर्ण मृहार्य्य म्लाभाता हिस्ता**ल **কং। নমোন্ত নিতি বিন্যাস আন্ত**া পরিকীর্ভিড:।। অথান্ত মাতৃকান্য সে। মূলাধারে চতদলে। সুবর্ণা ব শ ষ স চতুৰ্গ বিভ্ষিতে ৷৷ ষড়ে বৈদ্যুতনিভে স্বাধিষ্ঠানে হনলভিষি व क रेम यंवरित यू रक्त वर्रिक वर्षिः व डिक क् बुरा ।। भिग्रा प्रमारल नी नकी मूक সন্নিভে। ডাদি ফান্ত দলৈ যুঁক্তে বি ন্দুভাবিত মন্তকৈ:।। অনাহতে দ্বা দশারে পুবাল কচি সন্নিভে।কাদি-ठांड मरेन पूर्व (यागिना इमयहर-भा विण्षा वाउनस्य श्राप्त

মাতৃকা

বর ভ্বিতে। আজ্বাচকে তু চন্দু। । ज बिनाल **र कं नी** किए ।। मर গারে **হিমনিভে স**র্বর্ণ বিভ্ষিতে। গকথাদি ত্রিরেখাতা হ ল ফ ত্রয ভূষিতে।। তন্মধ্যে পরবিন্দৃক্ষ সৃষ্টি ছতি লগাত্মক। এবং সমাহিত ্না ধ্যাবেল্যাসো হ্য নাম্ভরঃ ॥ #॥ সতা বাহ্নাত্কা **প্**যান । পঞা াল্লিপিভি বিভক্ত মুখ দোঃ পন্মধ্য कः इना जामत्योनि निवक हन्तु वक्वा मानीन ज्य खनी । मृमा मक न॰ मृदाह्य कलन॰ विद्याक्ष इंडा-েজ বিভাগা বিষদপুভা জিনয ^{্বত} বাশ্বেবতা মাশুবে ॥ এব**॰ ধ**্যাত্রা াদেং। তত্রাঙ্গুলিনিয়ম ন্তত্তে। ্লাটে ২নানিকা নথ্যে বিন্যমেন্ম্থ **ः क्र**डा । তর্জনী মধ্যমানামা বৃদ্ধা-ামে চ নেত্রযোঃ।। অঙ্গৃষ্ঠ কর্ণযো ন্যস্য কনিষ্ঠাঙ্গুষ্ঠকৌ নসোঃ। মধ্য [•]डा**म्।** गखरगाक मध्यमारकाष्ट्रया ৰূপে**শ**া অনামা• দন্তযো ৰ্ন্যস্য ম-ামা মুক্তমাক্ষে। মূথে ৎনাদা• प्रभाक रख भारत ह भार्यायाः ॥ ेनिष्ठा नामिका मध्या खाख भ्रष्ठ ह ন্য**সে** । তাঃ সাঙ্গুৱা নাভিদে**শে** ्रीः ऋको ह विन्याम् ॥ कृम्य ह ो। नर्दः अभाषान्य कन्नर इत्वा।

इट भूर्व इडनट क्रि मूर्थ्यू उत्न নেবচ ৷৷ এতাস্ত মাত্কা মুদাঃ ক-মেণ পরিকীর্ন্তিতা:। অক্তাত্বাবিন্য-সেত্রস্ত ন্যাসঃ স্যাত্তস্য নিম্নুলঃ ॥ गोजभीय। ननारे मुथव्खाकि गुः তি ঘাণেষু গওযো:॥ ওপ্ত দভো-खगाकामा (माः नए मकागुरक्यू ह। পার্স্থযোঃ পৃষ্ঠতো নাভৌ জঠরে হৃদ -य १ भारक ।। कञ्चन ४ १ म ह स्थ्रूर्ब॰ পাণি পাদ যুগে তথা। জঠরাননযো र्न्याञ्कार्गान् यथा क्रमाट ॥ जन्मथा। ञ॰ नत्भा ननार्छ। ञा॰ नस्मा मृथवृत्छ । ই॰ दे॰ চক্ষুষোঃ। र्छे॰ र्छे॰ कर्नरयाः । श्रः श्रः नरमाः । ৯ : গণ্ডযো:। এ 'ওঙে। ঐ অব-রে। ও উর্চ্চনের। ঔ অধাদন্তে। ण• वृक्षत्रस्तु । यः मृथ्य । क॰ मकः বাহুমূলে। খ জর্পরে। গ মণিবন্ধে । घः अञ्चलिम्ला । ড॰ अङ्गुलारगु । এব চ ৫ বানবাহুন্ল সন্ধ্যুকেষু। এব॰ ট॰ ৫ দক্ষিণপাদমূল সন্ধ্যুকে-यू। এव॰ ७॰ ६ वामभारम्**न म**क्षुपुः কেষু ৷ প॰ দক্ষিণপার্শ্বে ফ॰ বাম-পাৰ্ম্বে।ব॰ পৃষ্ঠে। ভ॰ নাভৌ।ম॰ क्टोरत । य॰ क्रि। त॰ मक्कवाङ्गूष्टा। **ল॰** কন্দি। ব॰ বামবাত্মুলে। শ॰ क्तानि नक्ष हरख। यः ज्नानि वामः

इछ। त श्रापि पक्रशाप। इ॰ क्रांकि वामभारत । वः क्रामूक রে। ক্ষণ ছদাদি মুখে। সর্বত ন্মো नमारता वा निवन्त् विन्तृ विर्ज्जि ३:। পঞ্চাশন্বৰ্ণ বিন্যাসঃ ক্ৰমাদুকো ম ণীষিভি:। ইতি ভউ:॥ 🗱॥ অথ স হারমাতৃক্যন্যাস:। তস্যা ধ্যান यथा। अक मुबः इतिगला उ मुम्गु ऐक्र·विम्याः करेत त्रवित्रज्• मध्जी• ত্ৰিনেত্ৰা । অৰ্দ্ধেন্দু নৌলি মৰুণান-রবিন্দ রামাণ বর্ণেশ্বরীণ পুণমত স্তন ভার নশাু॰।। ন্যাসস্ত ক্ষকারাদি व्यकातानुः। यथा कः नत्मा क्रमानि মুথে ইত্যাদি।।ৠ।। অপরঞ্চা চতুর্থা মাতৃকা পোক্ত কেবলা বিন্দু সংযু তা। সবিসর্গা সোভ্যাচ রহস্য শূণ কথ্যতে। বিদ্যাকরী কেবলা চ (मा ज्या जुकि मायिनी। भूधना म-विनर्गा जुनविन्तृ विजनायिनी।। वि-मुष्क्षभ्रतः । वागुनाम्। ह वाक्नि জৈ রনান্য শ্রীপুর্দ্ধযে। ছল্লেখা र्ग मर्वमिष्कः कामार्ग लाकव भारता । ध्येकश्रान्यामग्रामा যরনজ্ঞঃ পুসীদতি ॥ ঞ্জীবদ্যাবি यय नवतद्वायदा । वायुनाम्। नया **२डा॰४ नाउवता नाज्काक्षताः** । 🛚 প্রীবিদ্যাবিদ্যু নাজী বায়বদ্যি সিদ্ধয়ে। ইতি উপ্রসাল ।। মাত্কেশটঃ পু॰ মাত্মঃ । ইজি ব্রিকাণ্ডশেষঃ ।।

नाज्नस्तः भ् कार्डिक्यः। यथा। कथः दः कृडिका भूध मूक्तवान् उः जृतः छहः। कथक्ष भाविक द्रामी कथः वा माज्नस्तः॥ इंड्यारि वाताक्ष्रतात क्रास्ति भाव्याः॥

নাতৃম্থ: পূ॰ জড়:। ইতি হেম-চন্দু:।।

মাতৃবন্ধু: পু: মাত্বান্ধবঃ। যথা
বন্ধব দ্বিবিগা:। আত্মবন্ধবঃ পি:
ত্বন্ধবো নাত্বন্ধবশ্চেতি। যথোত্বং। আত্মাপত্মস্: প্প্ৰা আত্ম
মাতৃষ্মু: স্তা:। আত্ম নাতৃল
পুশ্লাক বিজেবা হাত্মবান্ধবা:।।
পিতৃ: পিত্মস্: পুপ্ৰা: পিত্মাত্ম পুপ্ৰাক্ষ বিজেবা: পিতৃবান্ধবা:॥
মাতঃ পিতৃষ্মু: প্প্ৰা মাতৃ মাতৃযুমু: স্তা:। মাতৃ মাতৃলপুপ্ৰাক্ষ
বিজেবা নাত্বান্ধবা:॥ ইতি মি:
তাক্ষরা।।

মাত্রান্ধর: পু॰ মাত্রন্ধ:। স চ নাতানহ ভগিনীপুঞামাতাধহী ভিনিব্যার । মৃত্যাত্লপুরশ্চ ব্যালার করে বিত্যুদ্ধ প্রা মা-ভূমাত্রুদ্ধ করে। বাত্মাত্ল পুরালার বিজেশা বাত্যাল্লা: ॥ ইতলোহতরু•॥

भाज्योहिनी जी वहानाপकी। ইতি রাজনিয়টঃ।।

মাতৃণাসিতঃ পু॰ মূর্থঃ।ইতিছেন-চন্দুঃ॥

নাতৃষ্পা জী নাত্ভণিনী। নাপী ইতিভাষা। সা নাতত্ল্যা যথা। নাতৃষ্পা নাত্লানী পিত্ৰ্যন্ত্ৰী পিতৃষ্পা। খন্ত্ৰং প্ৰজি পত্নী চ নাত্ত্ল্যাঃ পুকাৰ্ভিজাঃ ॥ ইতি দাযভা াঃ ॥

মাত্রসেয়: পু॰ মাত্মসূপুণ্র: । মা-সিতৃতাভাই ইতি ভাষা । তৎপ॰ " র্য্যায়: । মাত্রসূথি: ২ । ইতি হেন চন্দ্র: ।।

মাতৃষ্দেশী স্ত্রী মাতৃত্রগিনীকন্যা। মাসিতৃতাভ্গিনী ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ॥

মাতৃষ্দ্বীয়ং পু॰ মাতৃভণিনীপুঞ:। মাসিত্তাভাই ইতি ভাষ।। ই ত্যনর:।।

নাত্রপ্রীয়া জ্ঞী মাত্ভগিনীকন্যা। ग्रीतिতুতাভগিনী ইতি ভাষা ইত্যমর: ॥ মাতৃসি:ছী স্ত্রী বাসক:।ইতি শদ-রত্নাবলী॥

নাত্র লী কার্ত্র্য় ।। অবধারণ ।
ইত্যমর: ।। কার্ত্রেয় যথা জীবনাত্র ন হিংসেত। অবধারণে যথা
। পথো নাত্র ভুঙ্গে। ইতি ভটীকাযাণ ভরত: ॥

মাত্রা জী পরিছদঃ॥ অল্ল:া পরি-মাণ•। ইত্যমর:॥ পরিছদে। হস্ত্য-श्वादिः। जाल्ल यथा। भाक माजा। পরিমাণে যথা। কি: হস্তি মাত্রো **२इ: । ইতি তউীকাযা**ণ ভরত: ।। कर्नज्या।। दिख्न । व्यक्षद्रावयवः। ইতি নেদিনী॥ 🗱॥ কালবিশেষঃ । যথা। কালেন যাবতা পাণি: প-র্য্যেতি জানুমগুলে। সা নাত্রা কবি-ভি: পোকা হুৱ দীৰ্ঘ প্লুতে মতা ॥ इंडि भागीनाः॥ जनिह। वान कानूनि उषा उपार याव ठा ভবেৎ । কালেন মাত্র। সা জ্ঞেয়া মুনিভি র্বেদপারগৈ:।। ইতি তন্ত্রসার:।। इन्द्रियवृद्धिः। यथा। गात्रा न्यन्तास কৌন্তেয় শীতোঞ্চ সূথ দুঃথদা:। আগমাপাথিনো নিত্যা স্তা• স্তি-তিক্ষম্ব ভারত।। ইতি ভগবদ্দীতা ॥ নীৰন্তে আভি বিষয়াঃ নাত্ৰা

ইন্দিয় বৃত্তথ:। ইতি তউীকাযাণ **শ্রিধরস্বানী ।। ইন্দিয় । ইতি পু** विक लाक जीकायाः मधुमूनन अब्रच हो।। च॰मः। यथा। न (याविः फ्ताः পृथग् हर्गार्यमान दिनामृट्ड । ষভত্ পিও মাত্রাভ্য স্থপ্তি রা-সা• যতঃ মৃতা॥ ইতি শুদ্ধতত্ত্বণা মাৎসর্য্য ক্লী মৎসরস্যভাব:। পর-শুভ্রেষ: 1 যথা 1 মাগা শ্চিরাথৈ-কতর: পুমাদ বসন্ন সম্বাধ শিবে **২লি দেশে। নাৎসর্য্য রাগোপহ**্ তাত্মনা হি স্বলম্ভি সাধুষ্পি মান সানি।।ইতি ভারবৌ ৩ অধ্যায়ঃ॥ মাৎসিক: তি জালিক:।মৎস্য যাতকঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী॥ মাথ ই অস্থে। ইতি কবিকল্লফনঃ॥ हे माष्ट्राउ । क्एश वंध क्लामी । ইতি দুর্গাদাস: ॥ পছা:।ইতি ত্রিকাণ্ড-মাথ: পু• (শयः॥ मञ्चनः। ইতি শব্দর্মাবলী মাথুরঃ পু॰ নথরাযাআগত:।ইতি मुक्रावायवाकत्रनः ॥ मापः भुः पर्भः। ইত্যমরः॥ হर्यः।

ইতি ভটীকাষা• ভরতঃ॥মন্ততা

मानकः श्रु॰ माज्यहभक्ती। इंडि

भद्रगाला । भद्रकात्रकपुरवर वि । । ॥

। इंडि भदत्रद्वावली ॥

भारत क्ली ववद्रा इंडिनम् ।। হর্ষকার বিভার ত্রি।। **मारनः शु॰ कामारत्यः।। महन**् ধুন্তুর:। ইতি কেচিৎ।। गामनी जी गाकन्ती। इंटिन নির্ঘণ্ট: ॥ বিজ্ঞথা । ইভি शुकानः॥ **यापृणः जि यथ्यपृणः। ই**ि ः করণ ॥ मामी जी भाष्ट्रताजभदी। र ज्ञमा मूतः मानार रेन्थू তৃষ্যানিন আজ্ঞ্যা অধি भातान्त्राः नक्त महस्ति 🦭 💛 মাস। ইতি শীভাগবতন অতিবিষা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ মাদীপতি: পু॰ পাঙুরাজ: । २ मद्रवावनी ॥ মাধবঃ পু॰ বিষ্ণু:। তস্যব্যুৎ যথা। মাচ বুক্ষস্বৰূপা যা মূল % তি রীশ্বরী। নারাযণীতি বি তা বিষ্ণু নাথা সনাতনী।। মহ ন্ধী ষ্কপাচ বেদমাতা সরস্থ রাধা বসুন্ধরা গঙ্গা তাসা•স্বার্ম 🕏 মাধবঃ॥ ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে 🚉 🦠 জন্মথণ্ডে ১১০ অধ্যায়ঃ ॥ তহ মাহাত্ম্য থথা। ওনিত্যেকাক রে মত্রে স্থিতঃ সর্বগতো হয়িঃ

स्माकृष्ट । 🚟 ५ दिहालकानः ॥ रिवनाथमामः । ३७:एवः ।। यमन्तः । ইতি विषः ॥ राष्ट्रकृकः ॥ क्षः মুদ্ধঃ ইতি রাজনিঘণ্টঃ ॥

शाप्तिका जी भाषतीलञा है 🦭 मब्द्रीकागाः छत्रज्ञः॥

নাৰবী স্ত্ৰী স্বাম্থ্যাতগ্য়লভা! ए८ अर्थायः। व जिम्कः २ अख्नः o नामची ३ लाका दे। केळानूबः ॥ -অভিযুক্ত ৪ ৬ মানকিছা ৭ মাধ-র্ঘালত ১৮। ইতি ভটীকাল ভ রতঃ॥ দত্রনরী ৯ সুগন্ধা ১০ ভুন-রোৎসবা ১১ ভৃত্বপ্রিয়া ১২ ভত্ন-লতা ১০ ভূমি ভেপ ভূমণা ১৪। অ माखाः। कर्षेत्रः। ठिकत्रः। क ষায়ত্ব। নদগন্ধিত্ব। পিত্র কাস বুণ দাহ শোষ নাশিত্ব। ইভি द्राजनर्यकः॥ मिनिः॥ मधुनकंत्रा ।। ब्रुडेनी ।। मस्ति। इंडि (मसिनी ॥ जूनभी। इंडि मक्ताना ॥ मुर्गा । इंडि भद्रज्ञावनी ॥ मान्दम् भन्नी ह।।

माय तिन्छ। की सनामश्राज्यम् न जा। ইত্যনরটী কাষা • ভরতঃ॥ भाषात्रक्षा जी वाक्राशिकनरः। इंडि बाज्ञ विचंचेः॥

भीवतारप^{ि त}्रिमा धर्म कामार्थ | नावत्वाहिड• ल्ली करक्रालक•। ইঙি त्राजनियंग्टः॥ माथरवान्छाः भू तानामनी। हेि त्राजनिघंग्डः।। नाव्तः भृ• वर्गमङ्ग्रजाञिवि**ष्मसः।** है जि जिल्ला ।। নালুন্ডাঃ পু॰ কাশ্মীরদেশভবাঃ। इंडिएक क्रमुः॥

নাধুর ল্লী নলিকা। ইতি ত্রিকাও

लियः।। नवृत्रमञ्ज व जि ।।ः नायुत्री की नन्तर । इंडि ভ्रतिभूरगांगः ॥ नायुर्तुः। यथा। जानि स्मर्भ मूर খানি তেচ তরলাঃ স্নিকা দৃশোর্বি-ভুনা স্তন্ধকু: দুজ সৌরভ • সচসুধা-मान्ती गिता विकाश मा विवाधक मायुत्री जि विषया मास्य २ शि (हन्मा-নদ তস্যা লা সমাধি হন্ত বিরহ ব্যাবি: কথ• বদ্ধতে ॥ ইতি গীত-

মাধ্র্য ক্লী মধ্রস্যভাব:। মধ্রত্ব। ইতি হেমচনুদঃ॥ লাবণ্য॰। यथा । ৰূপ কিন্প্য প্নিৰ্বাচ্য তনো মাধ্য্য মৃচ্যুত। ইত্যুজ্লনীলন-ণিঃ॥ পাঞ্চালীরীতি বিশিষ্ট কাব্য खनः। यथा। नध्ताः मुझनाताकः পাঞ্চালী কবগো বিদুঃ। ইতি সা-হিত্যদর্পণে ৯ পরিছেদ: !৷ ভস্য

रगावित्म ७ मर्गः॥

कक्षण यथा। विख प्रीकावनरमा

हारना नाय्नं ग्राह्म । नास्तान कक्षण विश्वास नास्त्रं का नार ।। मृद्धि वगास्त वर्णन युका हे ठे उ जान विना। तथी नघ् ठ उद्याको वर्णाः कात्रणना गठाः ॥ व्यवि त्रम विक्त की मधुता तठना उथा। ইতি नाहिड्यम्भीय के भितिष्ट्रमः ॥

भाष्यतिस्तर वि सथ्यमः। ইতি ছেম-हम्मुः॥

भाषात्रः जि माधाज्ञवः। यथा। म-धामः भाषात्रः मधामीयः साधाः मित्रक्ष छ८। ইতি एक्स्मिन्तुः॥ भाषाज्ञाः ज्ञी सधाङ्गाः ज्ञावः॥ म-धाङ्कत्रगः। यथा। ज्याविजातः निह मित्रम्य मितः मूजाः गुःह-यिज् मामाक। ज्ञाञ्जां ज्ञाङ्क यित्र माधा मीधाङ। मिष्टि १मात्रम

भावकः क्षी भावीकः। ইত্যমরটী কাষা ভানুদীক্ষিতঃ॥

नर्गः ॥

মতে হর্থে।। ইতি স্বনার সম্ভবে ১

মাধী স্ত্রী ন্দ্য । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:

। মধ্যদিক্তাসুরা। ইতি রাজ
নির্ঘণ্টঃ ।। মধ্রকণ্টকান্ৎস্য: ।
ইতি শক্রত্বেলী ।।

गाशीक की मश्के भुञ्जक् उमहा। खर भर्यायः । मशामवः र माधवकः ३ मधु १। इंडामतः ॥ मधु नाश्चीक मि-उत्रकः नामिडि क्रिटि । भ्राह्मी वि भञ्जमारा । भरतो वि पुष्का-विकारत । इंडि छत्र उः ॥ माफी क मिडि वा भार्यः । इंडि तमानाथः ॥ माश्चीक द्यान माश्चक मिडि छान्-मीकिछः ॥

भाशीककवाः भू॰ भध्नाविकितिकः। इंजि ताजनिष्ठ ः।

भाषीनधुरा खी भधूतथक् प्रिका। इंडि त्राक निर्घण्टः ॥

मान ए विज्ञाति ॥ व्याई। ইতি কবিकन्नक्रभः ॥ ए मोनाः मठ भाखः
श्रीतः। व्याई। शिवामर्या नम्रु तिजित्रमानाथः । ইতি मूर्गामामः ॥
मान कि व्याई। ইতি कविकन्नक्रमः ॥
मि मानय् मान्छि नान्छि। ইতি मूर्गामाः ॥
मानः ॥

मानः ली भित्रमानः। उद्भिर्यग्रायः।

योजवः २ क्वयः २ भायग्रः ८ शो
जवः ६। ज व ज्वाकृत्व भूटेक खि
विषः जाजि। जब ज्वाकृत्यानाः

सामामृश्याकगुरु । जक्वाग्र ह
सामामृश्याकगुरु । जक्वाग्र ह
सामामृश्याकगुरु । जक्वाग्र ह
सामामृश्याकगुरु । व्यक्वाग्र ह-

ा यब जाला विद्रमुन्डि उर । उत्म ব গৃহ মুচ্য়ত। তচ্তুবিধা। সমণ विषमः अञीजः अमागज्यः। इजि मङ्गी उमाञ्च ।। 🗱 ।। जथ नान পরি ভাষ। । ন মানেন বিনা যুক্তি मुव्यानाः कायाज कृति । व्याजः প্ৰোগ কাৰ্য্যাৰ্থ- মান মত্ৰোচ্যত भया ॥ व्यक्तमा भडि देवरित बारिता यंयाचा ७ ७ ३:। विशय मई माना-নি মাণধ মান মুচ্যতে ॥ ত্রসরে-ণু ৰূ বিঃ পোক ক্রি॰শতা পরমা णुण्डिः । क्ल्राब्र्युक्त भर्यप्राय नाम्। व --मीजि भरारज्ञा जानास्त्रगरेजः मूर्ग्रकरेत वं भी विल्लाकार**छ। य**ङ् বংশীভি মরীটিঃ স্যাত্তাভিঃ বঙ্জি শ্চরাজিকা।। তিসৃভী রাজিকাভি क मर्यभः (भाष्ट्रास्त वृक्षिः । याता **२४** नय रेभः (भाक्ता **ए**क्षाम्याजः इতৃষ্ট্য ।। যণ্ডিস্ত রত্তিকাভি: স্যা-आयरका (इमधानरको। मारेष महजू-র্ভি, শাণঃ স্যান্ধরণঃ স নিগদ্যতে।। টক্ক: সএব কথিত স্তদ্বয়ংকোল মুচ্য তে। कृत्या वहेकरेक्टव पुद्धनः न नि गर्भः। (कान इयस करः म्या न (পुक्तः भागि गानिकः। अकः পিটুঃ পাণিতন কিঞ্ছিং পাণিক जिन्मकः ॥ विडानभरकरिका उथा

বোডশিকা নতা:। কর মধ্যে হ॰-ननरः म्वर्गः कवलगृष्टः ॥ উष्ध्यवक भर्यशियः कर्ये । निगम् १८७ ॥ महार कर्वाच्या मर्क्षभवः मुक्ति सङ्घीनका তথা।। শুক্তিভ্যাঞ্চ পল॰ (ব্রঃব॰ নৃষ্টি রামুণ চতুর্থিকা। পুলক্ষ: বো-ডশী বিলু॰ পলনেবাত্র কীর্ত্তাতে॥ পলাভ্যাণ পুস্তি জেঁবা পুস্তঞ্ নিগদ্যতে । পুস্তিভ্যা মঞ্জলিঃ महार अप्रवा १व महावकः॥ यहे-মানঞ্চ স জ্ঞেয়ঃ সডবাভ্যাঞ্চ মানি-কা। সরাবে। ২ ইপল • তদ্বজ্ঞেব মত্র বিচক্ষণৈ: ॥ শরাবাভ্যা• ভবেৎ পুস্থ **म्हजूर्य उथाएकः। ভाজनः काः**-স্যপাত্রঞ্চতু:বঙ্টি পলক্ষ সঃ ॥ চ-তুর্ভিরাটকৈ দ্বোণঃ কলশো নল্বণো-র্মণঃ।। উন্মানক ঘটো রান্দি দ্রোণ পর্য্যায় স•জ্ঞিতঃ। দ্বোণাভ্যা• সূর্প ब्दा ह हजुःविष्ठे नदावकः। मूर्ना-ভ্যাঞ্চ ভবেদ্ৰোণী বাহেগগোণী চ সা মৃতা।। দ্রোণী চতৃষ্টবং খারী কথিতা স্কা বুদ্ধিভিঃ। চতু: गহসু পলিকা यावज्रविका ह मा॥ भनाना॰ विमः হসুঞ্চ ভার এক: পুকী বিত:। তুলা পলশত স্থোসর তৈবৈষ নিশ্চয়ঃ नायहेकाक विद्यानि अखतः शुक्र मा-ঢক•। রাশি র্গোণা থারিকেতি যথো-

ভর চতুর্গুণাঃ।:#!। নাগধ পরিভাষা | যাং ষড় ভিলো মাষ শুড় বিংশতি ब्र जिल्हे हेवः यात्राज्ञ ब्र जिलः कर्यः। व्ययः हत्रकत्रयारः ॥ तृष्युद्धमात्र । পঞ্চরভিকো নাষে৷ বি•শতি রভি-क डे:क्षा २ मी जित्र खिकः कर्यः। ज्य मित कलिक् পরিভাষাযা মপি:यङ স্তত্তাষ্ট রব্তিকো নাষো দ্বাতি[,] শদু-ব্ৰিক ষ্টকঃ। সাদ্ধ টক্ষৰণ মিতঃ কৰ্যঃ १: ७ छानि गान मात्र छ। यावट मा क्ष प्रविः। मुवाम् भू मुव्यानाः তাবন্মান সন মত।। পুস্থাদি মান मात्र छ। विश्वनन्त मुवाम् रवाः । मानः তথা তুলাযাম্ভ দ্বিংশ ন কুচিং সৃত ॥ মৃত্তৃক্ষ বেণু লোছাদে ভাণ্ড॰ বছত্ त्रश्रुणः। विखीर्ण उत्पाहक उत्पानः **क** ७व॰ वरम् ॥ इंडि मागथमान• ॥ 🗱 ॥ अथ का विक्योन । यङा भन्ताः वा श्वा श्वामञ्जा नदाः क লৌ। অতস্ত মাত্রা তলোগ্যা পু চ্যতে সুজ সমতা॥ যবো দাদশ-ভি গৌ রৈ: সব পৈ: প্রোচ্যতে বৃ रेवः । यवद्ययम् अञ्जामन् अञ्चल বল্ল উচ্ছত। নাষে। গুঞ্জাভি রষ্টা ভি: সপ্ততি বা ভবেৎ কুচিৎ॥চতুর্তি মাষ্কৈঃ শাণঃ স নিম্ব প্রস্ক এব চ। राम्यास्य नाष्ट्रेकः यद्धिः कर्यः म्याप

का भाषिकः कृष्ण कर्षः भेनि देखे कर्षे क्रिके क्षेत्रः कृष्ण । एव क्षेत्रः व्याप्त । एव क्षेत्रः व्याप्त । प्रकृष्णिः कान गणिः वर्षा वनः । भूकृष्णिः कान गणिः वर्षा वनः । भूकृष्णिः क्षित्रं वर्षा वनः । भूकृष्णिः क्षित्रं वर्षा वनः । भूकृष्णिः क्षित्रं वर्षा वानः भूत् व्राप्त वर्षा वानः भूत् व्राप्त वर्षा वर्षा वर्षा । भूकृष्णिः वर्षा वर वर्षा वर्षा वर्षा वर वर वर्षा वर व

भारत है । अभूभिति , इ गाहिल्ला ग्राह्म । भाष्य धन हुए करण व्यक्ति ভোষতি মান ই 🔠 📉 खीठि मनन मानः . एकि छ থী॰ ভরত: ॥ আলুনি 🦠 वृक्तिः। ইতি नी न कर्षः॥ अन যোদস্পত্যোর্ভাব বিশেষঃ। থাঃ দম্পত্যো ভাবএকর সতো রাচন্ त्रक्राः । याज्ञेश्वास्य वीकानि নিরোধী মান উচ্যতে॥ ইতু জুল नीवमिनः॥ भूकाद्वः। यथाः अव माः किल निष्ठि निक्त निष्ठ म थानाः। **উद्धना मान मिह्डि** करना হি মহতা খন ৷৷ মানো ি ন্ল नर्थम् भाग ज्ञान श्वन 🖓 😘

भुजुडेमान एर्भम्यकि धरनन किमा ॥ युवा ॥ व्यथमा थन मिह छि थन गारनी हि मध्याः। উख्या मानमिह्नि মানো হি নহতা পন ।। ইতি গা-क्छ ३७६ व्यवतायः ॥ नियानद्राव ज्हिकाहाडी मानः। जह वधु मंश्र মে। ওক শেতি। অল্লাপনেযে। ল वः। कडालानाया ग्रामः। कडेउ माभावारा ७४:। व्यमाध्य त जाङाजः। ज्ञानद्वी पर्णनादि क ष्ण लघः। (गाउ ज्ञलनारि क्या नव्या अभवज्ञी मञ्जाग मर्मना रि जगा **एकः।** जन्या निष अञ् হলাদ্যপনেয়ে। লঘু:। অন্যথা বাদ भभथान्त्रभावत्या यथामः । **ए**त्राः **भाउ** ज्यम मानाम् । भारत्या ७ वः ॥ অপরস্ত্রী দর্শনাদি জন্মা যথা। স্বে-माचु जिः कृत्रन शिहिल सक्ष ज्यो ক্ষানোদরি হুচন কণ্টকিত ঞ্চকান্তি । অন্যা• বিলোকণ্ডি ভাস্থতি প্রিযেপি মান: ক্ধাস্যতি পদ॰ তব তম বিদ্য:।। গোত্রস্বলনাদি জন্মা যথা। যদ্ধোত্র স্থলন ও তুরু ভুমো যদি न मन्ररछ। द्रामानि व्यान म॰म्भ র্শ• শপথ• তদ্বিকারয়। অপরস্ত্রী अस्त्रागमर्भनाति कन्ना यथा। मियः जग्र नित्रीक्र जान्तिक हत्रान

ক্তকলিঞ্জর॰ সপর্যা:। সুদ্শো ন্যন্স্য কোণ ভাস: শু.তি মুক্তাঃ শিথরোপমা বভ্বু: ॥ ইতি রস[্] मक्षत्री ॥ गुरुः। ইতি मिरिनी ॥ मानकः क्षी भूः मानकः। मानकः ইতি ভাষা। যথা। কদ্বী তু পিছি-লা প্রোক্তা বিস্তীর্ণপর্ণ মানকে । इेंडि नेक्ठिन्स्का ॥ इनकरमा भागाकनाः इनिभन्न के गिनकः। ইতি রত্নালা।। অস্য ওণাং । मानक सामृ भी उक्ष एक भाषर-র• কটু। ইতিরাজবল্পভঃ।। অপি-চ। गानकः माग्रहाभधः कथाः তে ভুদুণা অথা মানক: শোথ र्ही जः भि खत्र करता नयुः॥ इंजि ভাবপুকাশ: 🛚

মানগুদ্ধি: পু॰ অপরাধ:। ইতি হারাবলী।।

भानेषानिका खी कर्क हो। इंडि **भ**द-भाना॥

माननीय॰ जि शानाः। यथा। मारना मारनामि वृद्धम् माननीयः मूदाः मूदाः। मानयामि मङ्गापितीः मान॰ एक्टि गृष्ट् मम।। ইভি पूर्णांट्मव शक्किः॥

गानतकु। जी जानी। ठाँवी इंडि जारा। यथा। यानद्यारमा २थ जा- भागवी

শীন্যামানরদা বিকালিকা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেব: ।।

নানবঃ পু॰ মনোরপত্য•। মনুষ্যঃ। ইত্যমরঃ॥ বালঃ। ইতি শব্রজ্ঞা বলী॥

शानवर्षिजः बि भानवङ्गः॥ नीहः। इजिथव्रिणः॥

आनवी जी मन्द्राजीकाि । उर शर्यशयः । भान्द्रशे २ मान्द्री २ नाद्री ४। ইতি শद्य द्वावनी ॥ मा-जनस्वावित्ययः । ইতি हिन-हन्यः ॥ सार्य पुरमन्द्रनश । ইতি महा ভाর उ॰ ॥

आनत्वेषः शृ जाङ्गाविष्णायाःशी ।

रेरमाज्ञ छक्श हित्यायः। यथा। जा

द्वावज्ञ जानूमज्ञ क्याय विष्णा

य मर्गायंग्य म्थानन्तनाथ शदा

नन्ताथ शाद्र काणानन्तनाथ क

रण्यद्रानन्तनाथ विक्शाकानन्तः

नाथ रक्द्र वृषाः शृक्षयः । अर्ज्ञ

भानत्वेषाः। जथा ज्ञायः । अर्थ्जानात्वेषाः। जथा ज्ञायः । अर्थः

जाद्र छक्त वर्षः पृष्ठापृष्ठ कल्लुः

मान्। উक्ष् क्रिमा व्यानर्दणा

नीलकर्था व्यक्षः।। पिर्वायाः

मिक्षाव म मर्भ्याः

रिक्षा व म मरक्षीयान स्वृण्यः

जः। विनिष्ठः क्र्यानाथक नीननार्था

म्पृ वक्तामि जुद्ध विश्व मिन्न क्ष्मिति क्ष्मिति क्ष्मिति क्ष्मिति क्ष्मिति क्ष्मिति क्ष्मिति ।।

मुश्रानम् अत्रामम् निष्कां क्ष्मिति ।।

मुश्रानम् अत्रामम् निष्कां क्ष्मिति ।।

स्वा अत्राह्मिति ।। व्या मम्पिति ।।

स्वा अप्राह्मिति ।।

A STATE OF THE STA

यानमः क्ली मनः । इंडाप्रतः ॥ उमा

खना यथा। भवाभवदः मः शामाः

भक्ष दिगण्ड मानदम। इंडि ভाषाभविद्दिषः ॥ क्षा मानम् जाला यथा

1 काम काथ छय दिव लाख माह्

दिवाषः । भाकाम्यावमान्धाः

मार मर्याषि छयछथा ॥ मानदमा

क्ला दिक्ष जुल जाला छवि देनकथा। इंडि दिक्ष भूतान ५ जन्मर यथा। भव पुरव प्रक्षिणानः मनमानिष्ठे दिखनः । दिङ्था छिनिद्दे मनम विदिषः क्या मानमः ॥ इंडि डि-

न्यादित के ॥ अभि भानत ज़िशा াথা ভাষ জোল 🐃 😉 মোহ 💁 शानिकान रेपनार रिमम्बर विवास-र्च्या मृद्या मार्च्य পুভূত্য: ॥ অथ वा। উत्राहानमात्र मूहा जुन उनः সংন্যাস পুভূত্য:। ইতি ভাৰপু কাশ: ॥ 🕸 ॥ সরোবরবিশেব: । इंडि (मिनि) ॥ न ह रैक्नाल ्र १८५ (८८) हिस्स ए**या । किलाण-**्रम*्रेश* १६८७३। साब**्रान्स्य क** ्रकार का अधिक अ<mark>स्टिब निंखा</mark>॰ সন্ত । জীগান্তনোহ-ু বিভ্∂ু পুরি এ পাদপং । ा समृद्धः याणकः **ान विश्वाम**-স• সর:।। কম্পিত• মানসঞ্জৈব রা-**ঙ্গ্রহ•স** নিষেবিত•⊹ইতি মহাভার-তে হরিবংশে নারসিংহে ২৩২ অ-भागः॥ जनिष्ठ । किनामभर्दाउ রাম মনসা নির্মিত পর ৷ বুন্ধণা नत्रभाष्ट्रं ए एतम् । भानमः भन्नः। **७**मार मुम्राव मद्रमः मारवाधा মুপগ্ছতে । সরঃ পুবৃত্তা সরযুঃ পুণ্যা বুন্ধসরশ্চুতা।। ইতি রামা-यान वार्षिकाए ३८ मर्गः॥ 🛊॥ मता ज्य वि। यथा। मक्षः कर्य धानमः। ইভাগর: ॥ বিষযেম্বতি

সংবাগো মানসো মল উচ্যতে।

इंडिडिकामणीउद्धः ॥ अन्तानम्-भीष्टिव म्हार्यः मानमी व्राथा । इंडि भुक्तः॥

भानमञ्जलः शृ विया वर्ग्णुगृहात्रणः
। यथा। विया यहकत्राणुगीः वर्ग सत
निराक्षाः । উहरत्रहर्ष मृष्णिः
नानमः न जलः स्वः ।। उद्धाल निरामा नास्तुत । उथाह । जणुहि स्राणुहि स्राणि गृहः सिष्ठन् स्थास्थि। मरिक्षकणत्राणा विद्यान् मनरेमव म्याङ्ग्राप्तर ।। न एनाया मानरम जार्था मर्त्राप्तः ।।
इि उद्यमातः ॥

भानमञीर्थः क्ली जागामित्र हिजः भनः।
यथा। मृज्डेवाह। जीर्थानि कथिजात्म् उत्थानि स्वानि मृति महम।
मानमानी ह जीर्थानि कवानि वित्मयजः॥ भत्ना निर्माव जीर्थः हि
जागामि जिज्ञानिकः। हेजि नाजमिः ह्मुद्राण ८५ व्यथायः॥

মানসপ্তা স্ত্রী মনোরচিতদুব্যকর
ণক সপর্য্য । যথা । হৃৎ পদানধ্যে

দেবী বিভাব্য হণ্ডলী পাত্র সং
স্থেন সহস্যারাম্ভেন পাদ্য দেব্যা

শুরণে দণ্ডাৎ । ততো মনশ্চার্য্যুদ্বাপদ্ম ভূজার ললিত
পরমান্তর্বোনাচ্মনীয় মুখে ।

পঞ্জিশতি ওত্ত্বেন গরক্ষে: অহি•া লাং বিজ্ঞানং ক্ষমাং স্থাং অলো ডং जासाङ् बराष्ट्रमर्गः अस्याः अन रुक्कात व्यताग व्यवस्य हिन्तु गरि। षाम्भ এতানি भुञ्जानि ह भुराभः থেৎ। তত স্তেজা কপণ দীপণ বাযু দর্শণ স্থ্য চন্দ্ ছগুল্পদান্ত মে 🍴 थला॰ जाननर॰ शाबमुखम॰ जनारः छ ध्रुनियशी॰ घण्डा॰ निर्वत्रस्थ । छ তঃ স্ধারসাম্বৃধি মাণস পর্বত বু হ্মাও প্রিত পায়সঞ্ দত্বা। মনো नर्डन मलाताः मृक्षातापि त्रामाख-रिवः। म्टिंग गी रिजम्ह वारिमान्ह ভোষ্যেত প্রমেশ্বরী । এব স প্ क्का । व्यञ्जासन क्रभः कार्यः । ইতি ভজসারে ত্রিপুরা পুকরণ ॥ 🕸 ॥ মানসৈ ৰ্গুৰু পূঙা যথা। ততো মান न शक्कारितः भूकारयः य य सू मुरा। কনিষ্ঠা পৃথিবীতত্ত্ব তদ্মোগাদ্ গন্ধ যোজন ।। অঙ্কুপ্নো গগণ তত্ত্ব তে रेनव भुञ्जरगाजन । जर्ब्बनी वायुज्जु , म्याक्ष्म (जतेनद याखरय ।। यना भा दल्डलु महाखित्व साहर्यह ক•। তহন্ত বাণুব• জ**প**্যাদষ্টোত্তর শত সুমী: ॥ জপ সমর্প্য ভক্ত্যা চ शुःभिन्द ७५ कृषि । इंडि नी वा छ छ ।

।। # ।। जिलिह। तिथन हिस्रिवर जु मानरे म क्षमहाद्रहेकः । ভৌতিবৈ প্ৰবেধিকান সূদ্য মতা সম্মিতি ॥ जुगा गण नक्षश्चित्र वातिमरेज मिविषारेकः। किनिश्वाक्रीन उद्धान मधःमानानिक छथा ॥ अक्ष्टन र गारगागागु माः शक्ष श्रुकीर्विषा পৃথিব্যাত্মক গন্ধঃ স্যাদাকাশাত্ পুত্রক ।। ধূপো বায়াত্মক: প্রোচ দীপো বহু গাতাক: পর:। রসাতা थ रेनरवर्गः भूका भरकाभहाजिकः **७** उन्ह वायुगः बन्धान्दशेख्येन जुथीः। इंड।मराकद्राः॥ श्रा अन् भानरेम क्लाहारेत्रमह मानुहार (यबादा। गञ्च ज्याज्यक पर्ता **ব পুয়• ভতঃ পর•া৷ ধ্**শ• বায়া_শ় कः (स्यः (उज्जन्त मीभागव ह। रेन **(वर) मम् ७॰ र**हा १८ श्रानीय• व्वापाः অক ।। অম্বর মৃত্র দদ্যালা র ছ এনেব চ। তত্ত্ব দু। বিধানেন भृष्ठात्र ७४ जिल्हा यथान 🐇 खनः क्दा नगाना क्वा भारे इंडि क्हान्मानिनी उञ्जः॥ # **পূजा कम्छ। निज्ञ छक्॰ ध्राइ**ः কানন্দ্ৰাথামুকশক্ত্যয়া গ্ৰীপাদু প্ৰযামীতি মানসৈ গ্ৰাক্ত मूर्व ब्रह्र्यर । कनिष्ठाच्याः

भागि 👙 💎 🧸 📆 चगुर्लयामि नमः । 🛪 👵 🔅 घ. ल्लाकुकः भूश्रं अन्य स्ति नगः । ज्ङ्जिनीः ভ্যা•য় বাধাআক ধুপ সমর্পথা-भि ननः । नथाना जाः व वहा। जाक मील जनलंगानि नमः। य নানিকাভ্যা॰ ব॰ অন্তাত্মক॰ নৈ-(वर्) अनर्भगनि नमः। ইতি अ লন্লাবভার কল্লস্ত টীকাবা° তৃ-

बन्तज्ञ की अहि नाि । यथा। व्यश्चिमा मञ् भरखयः वृक्षप्रयं। মকম্পতা ৈ একানি মানসান্যাহ বুজানিত্ ধরাখরে॥ ইতি বরাহ-भूत्रागः ॥

डीयका ७ ॥

নসালযঃ পু• হ•সঃ। ইতি রাজ-भिर्घणेः ॥

্নসূত্ৰ• ক্লী স্বৰ্ণাদিনিমিতিকটিস্ত্ৰ• ।গোট্ইভি ভাষা। ইভি ধনঞ্জয়:॥ ্নসিক ভি মনোভব মানস मदा (किक भुजारयन निम्नम ।।

न्नी जी विष्णास्वीविष्णयः। इंडि (क्या म्मुः ॥ मत्ना छवा छ॥

ःनत्भोकाः भुः रुगः। ইত্যমরः॥

় নিকা জ্রী মদ্যণ। ইতি শব্দরত্না

ইতি বৈদ্য**ক প**রিভাষা ॥

यान्त

मानिनी जी कनीर्कः। इंडि मि-**क्ति ॥ मानव**ी ह ॥ নানী ত্রি মানবিশিষ্টঃ।ইতি মেদিনী

॥ त्रिः इ:। इंडि ब्राक्षनिर्घणः॥

মান্য: পু• মন্ব্য:। ইত্যমর:॥ मान्विक वि मन्यामारकर्णारि। मन्-यात्राप्तिजीनमर्थि किक भुजारयन

निष्ठम ॥

मान्दी जी मन्द्रजीकािं। यथा। भन्षी भानुषी नाती भानवी भानुष ज्ञिया । इंडि मस्त्रज्ञावनी ॥ हि-किৎ मावित्मयः । यथा । जामूत्री मान्यी रेपवी हिकिएमा मा जिया मञा। ইতি मद्गठिन्द्रका ॥

मान्ष्रः ल्ली मन्ष्रत्राज्ञावः। मन्षाद्रः । मन्याणदीदः। तथा। मान्त्रा करनी उत्म निः माद्र माद्रवार्गन॰ । यः करता ि न न भूषां अनतूष्ट्र সমিতে॥ ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব গাজ্ঞব-क्यु वहनः ॥

मान्याकः क्री मन्यामण्डाः ३७९-मद्राः मद्राः

मानाक्रक क्षी भनाक्षजा। मना-द्धमा ভाব ইত্যর্থে কণ পুত্যুয়েন निष्ठम• ॥

বলী।। শরাবঃ। শের ইতি ভাষা। নান্দ্যে ক্লী রোগঃ। ইতি হেমচন্দুঃ ॥ मन्द्रा ह ॥

नाक्षाजां भू॰ य्वनायताज्ञभूयः । उर्भिग्रायः। यूवनाचनः २। इंडि (रून ज्यु: 11 जिब्द दर्गः यथा । छ याद् भूरमनिष्ट छछ। युदनाध्या श्चर । <u>जन्म कृ</u> भूधन्या जिनि र्विराय्वीनामाण्य गुखल निवमः ত: ক্পাল্ভি তৈ মুনিভি রপ ত্যেৎপাদনাযে 🕏: কৃতা। তস্যা-ঞ্জ রাতে নিক্ভাযাণ নজ প্ত कलभूर्व कलमः (वरीग्रास्थ्य निरव-भा। एक मूनयः भूषभुः । मूरक्षक् ह তেমুতীৰ তৃট্ পরীতঃ স ভ্পাল खगागुन मधनः विविधा । সৃष्छाः শচ তান্বালৈকোপাপযামাস। ত **ট কলসজল ন্পরিনেয নাছাত্র্যু** गञ्चभ्डः भाषी। भुवृद्धानः शयदः श्रष्ट्रः। क्ति व्या ज भूष्ठः वाजि পীত া অৰ হি পীতে রাজো १न, युन्तापुर्या, भन्नी महावन भ র ক ় পুণ্র জনবিষ্যতি।ইত্যা कर्ण मुन्त्रमा माना भी उ निज्याह । गर्जिम्ह यूरनाराचारत . ६ ७ वर । कारमण हे वक्ता भार नगरा एकिन अकि मनमी भार নিভিদ্যবিশ্বকান ৷ নচাসৌ রাজা ন্যার। জাভোনামেন ক খাস্য ভীতি তে মুন্ধঃ প্রোচুঃ ৷ অথাগ

न्। (रवबाड युदी ८.५. १९ ११ मूह ি ভি। ওভোসৌ নান্ধাভা নান্তো ९ ७ वट् । वरळू गम् भुरम्भिनी रमः (वानुगनासा जा भरते। जाका-म्ञ नुपरिनी मानाम्यादेश विरकन-ব্যবন্ধত। সূত্র বাস্তাতা চক্রবন্ধী সপ্তদ্বীপা॰ নহী॰ বুভুজে। ভবতি हाज (भावः। यावर न्यं) छेए िय যাবঃ পুতিভিগ্নত ৷ সর্ব ডেন্নে-বনাখন্য নান্ধাত্ঃ ক্ষেত্ৰ নৃচ্যুত্ত ॥ साजा**ः भभदि**का हुँ ५८ ००% **व डी मु**यद्ध व . १९४८ में संस्त **यः भू**ष्ट्रसम्बद्धः अन्तर्भाषाः । जासूत्रः लायानात् । शकालह पुरिदा ন্ত্ৰস্যা নেব ভস্য নৃপতে, বভূরুং। ইতি বিষ্পুরাণে ৪ অংশ ২ অং श्रागः ॥

भानाः कि चहुः। उद्भविश्वः। भूकाः २ भूठीकाः ० जगवान् ६ ভউারক: ६। (जिक्रोधितः॥

नान हो ने के स्वाद्या । स्था । वित्त । के स्वाद्या । वित्त । के स्वाद्या । के स्वाद्या । के स्वाद्या । या स्वाद्य । या स्वाद्या । या स्वाद्य । या

रकः इ.८५ अवरात्मरभावः ॥ ज्ञार ही महत्त्राती।यथा।व्यनिमीः न्। ज्यान। ह नक्या न। ह साह ना। ইতি मद्याला॥ প्রा ह॥ পু॰ কানঃ। ইতি হলা। মাপ স্যঃ युद्धः ॥ मालनः भू ज्यः। ই उ मपहिला का॥ পরিমাণে লী॥ मानकः वि नहीयः। इंडि (महिनी॥ भन जायुकः। इंजि भवनावा ॥ 🗅 भारकः श्रु नाउनः। ইভিনেদিনী ॥कृत्या है जिल्ला गन।॥ गामधीय वि न्योगः। नतार निः ত্যে ে ্জ লু কি অয়াৰ-এক-षात्रनार्तरंत यग्रह ममन्तरन्त व्रको मान कीनः। इंडि पूर्वाम् । महा। भागः भू भीजापतः॥ वम्तः। इंडि . (निविद्या शाया जी रेन्त्रवानारिः। उर्वया यः। भावती २। इज्जातः॥ बाजि विश्व मन्त्रा॰ मनीवास्थि। भवतन्त्र रिक्जामाइगः भाषात्री एक शुर्ख्न মিত্র ে। ইতি ভরত:॥ #॥ वृक्तिः। इंडि जिस्ति॥ क्ना॥ मुखः। ইতি नानार्थ (इमहन्तुः ॥ শঠতা। যথা নাযা তু শঠতা শা ठेऽ चन्छि निक्षिक मा। बा छा।

क्कुरमाभागविरमयः। यथा। मारया-(পক্ষেन्युकानानि कूप्पाभाया है। बगः ॥ वन्त्रीः । ইভিচ (इमहम्मुः ॥ বুদ্মনাতা। ইত্যমরকোষে নায়াদে-र्व गुड भद ममना ।। पूर्गा। यथा। দুলে শিলে ইভবে মাবে নারাযণি ननाउनि। करा भि मङ्गः पर्ह नग (छ नर्वनक्रल।। त्राजन् श्रीवह-नामोम्ह याम्ह भागन वाहकः। তा॰ भाभविषा महाः मा गाया भद्रिकी-र्खिञा ॥ माण्ड भाषार्थ वहरना याण्ड **প্রাপণ বাচন:। ত॰ প্রাপ**যতিয়া নি-'ড্যু' সং े'য়া পরিকীর্ত্তিতা।। ইতি तुन्देषक 🧷 🙈 कृष्ण्डमाथा ७ २१ জ্যা । জিপিচ। বিচিত্ৰ কাৰ্য্য कित्र अरि ३५ कनपुरा। स्था मुंबा विकास मारा उन शुकी-ৰ্ত্তি হা াপুরাণে ৪৫ অ-थ्यायः । । वित्रवृत्त भुजीि जा-ধন নায়। ইতি নাগোলীভট:।। व्यवदेन घटेन भहीयत्री नाया। इंडि কেচিৎ । ঈশ্বরশক্তিঃ। উস্টা না-भारत स्था। <u>भ</u>ुक्**डिः २ व्यवि**रा। ၁ অজ্ঞান ৪ পুখান ৫ শকি: ৬ **अड़। १।** সৃষ্টिकाल ভগবান্ আনে गायाः भुकामयानाम। मापुष्ट्रे मृण्डा-नुमकानक्षा कार्यकात्रगंक्षा ह ।

भव तक खामा खामगी। उन्।: भ ক্তিশ্বয় আবরণ বিকে**পশ্চ। ভস**্যা नायाया नहस्तृ काउ । जमारह-कातः। जमार भक्ष्मु । जमार বুক্ষাওণ ইতিশ্রীভাগবতনতণা#া বিষ্ণু মাধা স্বৰূপ॰ যথা। মা মেতা॰ 🖟 ভাষদেশেৰ মন নাবেতি নিত্যশং का गाया की मृभी विष्का कि॰ वा मारवः তি চোচ্যতে।। জ্ঞাতু মিছামি মা-যার্থ রহস্য পর্যুত্তমণ তত স্তস্যা वहः भुजा विक्र्माया कत्र अकः॥ भुः रुम। मध्तः वाकाः भुज्रवाह वम्ब ता । ज्य मा शृह मागा व ममा शृहिनि नारतः ॥ वृथा (क्रमः किमर्थः पः शुक्षाःम म विकास सार , १ म्या**लि सा॰ न का**न्हि कुल्हि कुल्न পিতামহাঃ॥ মৃহ মৃত্যে ক্রাণাঞ্জি कि भून खु वमुझादा । भड़्बर 🗸 💠 তে যত্ৰ ভক্তালেৰ পুপুৰ্বতে ॥ 🔑 **(मा निक्कन**ा गाउँ असा मार्थः মন প্রিয়ে সোনো পপি হীয়তে প ক্ষে পক্ষে বাপি বিবৰ্জতে॥ অমা-राः न न म्रामा असारवरः सम मूनक्ति । (२न्ड निवन क्रम उकः ভदि जब्दा । जवह भोजन श्रीत्य मा-বেষ মন তত্ত্ব:। পশ্চিমা দিশ भाष्ट्राय यहत्वः याजि ज्ञाकतः ॥ छ

प्रित्र्वाः शुाउ मार्थिये भार कुम ति। भागि**उदेश**य मुक्छ छेटा स **ণিষু সংহিতে।। গত্তে চ জাযতে জ**ং र्मम नारेयव हाडमा। जीवः भुविण शार्द्ध ज मूथ मृःथानि विनम् जि॥ का-**७** किमादार मर्ब (भवा भावा भ-भाउमा। याज्यकर्मानुराज बीरवा নষ্ট সংজ্ঞে। গতস্পৃহ: ।। কর্মণা নী-याजनात्र मारियया मनात्रा खमा। भूक मानिज न रागा का यस यि क खदः ॥ अङ्ग्र कत्रांगे रेव्य जुरको भीर्यः कवि उथा। भृष्ठः उत्थास्त्ररेकः व परडोष्ठभूषे गामिका।। कार्गो (नव कल्गालो ह ननाहै किञ्चया जना। এতবা মাৰ্যা যুক্তা জাৰন্তে यहि **জ**ন্ত-वः ॥ जरेमात्र कीर्याराज बास्ता जू क॰ পীতঞ্ বিহিনা। অবঞ্চ সুবতে জন্ত (द्रय। भाषा भरमाखना ॥ **भद्रः म्थर्न**् শ্চ ব্ৰপঞ্চ রসো গন্ধশ্চ পঞ্চন: ! व्यवाद भुवर्क्ड कछ (त्रवा माया मन निर्य।। नर्बक्यू निकाकातः ज्ञावरत জঙ্গনে তথা। তত্ত্বং ন জ্ঞাযতে ভস্য भारेयया मम जुन्हित्र।। आंत्मा हिन्त्र। **স্তথাভৌমা আপোষেবু পুভিষ্ঠিতাঃ** । नह वृष्तिः भुषास्त्रक गारेयवा भन्नमा भग। वृष्ट्री वर्ष्ट्रकाः नार्व भन्नवानि

नद्राःनि ह ॥ शुरिया नर्दाणि भूषाञ्च

क्ष ज्यानी वेंना मन। विभवहिथना वः का नामा समराकिनी नहीं ॥ गा**क**ः ः সা ভবেরস্থা মাবৈবা মমকীর্ত্তি া মেঘা গৃহ স্থি সলিল॰ লবণাৎ ाननार्गवार्।। वर्षस्य मध्यः लातक वं भागा वनः सम । द्वागार्खा मः 🗝 रः কেচিৎ ভক্ষযন্তি মহৌবধ ॥ म्य वीर्यप्र ममाण्डित माया॰ जू वि बाम। इरा 'छेबाब मीयमान ज्ब ः পঞ্চত্ব মেতি यूट्या निवीर्ये। स्रो-ৰথ ক্ৰা কালে। ভবা হরাম্যহে ॥ ্ৰথম- দ্বাধতে গৰ্ৱ: পশ্চাজ্জাযেত 'व भूनान् ॥ -बाग्रक मध्रमः क्रनः হতোপি জরষা পুন:। তত ইন্দ্রিয াশশ্চ এতমায়া বলং মন।। এই াজাৎ পুকাণাৰৈ জায়ন্তে তানি ভূ রিশ:। ত্রামৃত: বিস্কানি মাবা ংযাগেন মাধ্বিমা লোক এব• বিজা-মা**তি গৰু**ডো বহুতে ২চু গ্ৰুণ ভূত্বাবে-গেন গৰুডো বহান্যান্সান মান্সনা ৷৷যা এতা দেবতাঃ সর্বা ষজ্ঞভাগে-ন তোৰিতা:। মাধানেতা মহ ক্রা जावगामि दित्वोकनः ॥ त्वाकाः লৰে বিজ্ঞানন্তি দেবা নিত্যু সংখ্যালি-নঃ। মাধা মেতা মহ॰ ক্রা यक्ताः মি জিদশান্ সনা॥ সর্বোপি যজতে लारका यञ्चात्रश्र वृष्ट्रण उन्। माया নাঙ্গিরসী ক্রাযাজযুমি দিবৌকসঃ ॥ नर्रि लाका विज्ञानिष्ठ वरूगः भा-তি সাগর । মাধান্ত বাৰণী ক্ষা र॰ तकामि मरशानिषः॥ अरर्व ला-কা বিজ্ঞানন্তি স্ববেরো হয় খনেশ্বরঃ । ऋत्वद्र माया मामाय व्यर्॰ तका বৃত্র: শক্রেণ সূদিত:। শাক্রীণ নাযাণ সনাস্থায় মধা বৃত্তো নিস্দিত: ॥ **व्याका विज्ञानिक व्याहिन्तुः ह** প্রবো নহান্। মেক মাযাময ক্রা বহান্যাদিত্য মেৰ চ।। এব॰ চাভা-যতে লোকো জল• কিন্নশ্যতে ংখি-লে। বডবা মুখ মাস্থায় পিবামি उरहः कलः॥ वायुः भाषाभयः कृद् भिष्यु विज्ञामार्शः। यहिषः जात-তে লোক: মতৈবণ ডিগ্নতে জল•া। দেবা অপি ন জানন্তি অমৃত পত্ৰ তিষ্ঠতি। মম মাষা নিযোগেন তি-ষ্ঠতে হৌষধ বনে।। লোকো হেব বিজানাতি রাজা পাল্যতে পুজা:। द्राजभाषा भरू कृदा शालपानि व-সুদ্ধরা ।। যে তু বৈ দাদশাদিত্য উদেষ্যন্তি যুগক্ষযে। পুবিশ্য তানহ ज्र नाया **लाक म्हाम्रह**ा। বৰ্ষণ পাণ্দুনা ভূমিলোকেষু যততে मना। भाषाः भाः भूभगीः कृदा भूदाः

याग्राधिन ज्ञारा। वर्षा यव मः वर्खा थातां जि मू वनाक् छ। माया॰ ना वर्डकी गृश् भृत्रवाया थिन क গ্ৰা। ব্ৰ ৰপানি বরারোছে শেষ **जिराशिव वाविशि अन्छ माय्याहा इ**॰ খার্যামি স্বপামি চ।। ব্রাহ্ শাযা भागाय ज्या बामागि किन्न रेव। (हवा যত্ৰ নিলীঘন্তে সামাখামম কীৰ্ভিতা ।। जुकाशिरिक्कवी भाषा कृजाङ्गाना সি কিন্ন তৎ। ধারি ভাসি চ সন্মোণি। वात्रान् मक्षरीमव ज् ॥ माया ज मम (मवीय॰ कृदा (क्ष मार्गवा॰ मही नम माया वलः (क् उप्चित्र टिशान्)-**হ• জলে ৷৷ প্ৰ**জাপতি• শতৰুদু• সৃ. জামি চ হ্রামি চ। তেপি মাধা । ন জানন্তি মম মাথা বিমোহিতা: 11 व्यथित्र पारेन्द्रव रक्ष मूर्ग वहनः ৷ নাযা পিতৃষ্ণী ছেভা গৃহানি হি চ তত্তঃ৷৷ কিন্ত মাথৈৰ সূশোণি অন্য শৃণু সুন্দরি। ইতি বারাহে-भाराहकः ॥ 🗱 ॥ व्यथ भागा खादः শৌনক উবাচ। শশিপ্তলা ন রাজঃ স্তন্ত্রা নাযা॰ গতঃ হতে:। কা वा भाषाञ्जिक्षः मृज्यम जक्षिमाय **त्र ॥ या ५८ कथा** वियम्बय, दक्कद्रा ,

লা বিশ্বদ্ধয়ে। জুত্ত ইবাস। শূণুরুং 🖁

मूनयः ऋर्व मार्कछ्याय नृहट ।

मुकः भार विमुखाका मुखमा।। जर म्रिक मुदक्ताबि यथ षी**ङ यथा भुङ**ा मर्ब काम्रनुम न्गाः भाभ जान विमानवः॥ भ्क উবাচ। ভল্লাট নগর॰ ভ্যক্তা বিষ্ণু-छकः मणिध्वः। **व्याका जः**मात्र (माकाय माया खन मनः करनी। শশিপ্ত উবাচ। ওঁ ছী॰ কারা॰ শত্ত্ব नाताः विनुषाः वृक्तामीनाः भाउतः रवम रवावडाः । जद्गीः बार्गः जूउ তমাৰ কক্ষা বলে বন্ধ্যা দেব গন্ধৰ সিদৈ:॥ লোকাজীভা দৈ-ত ভীতাং সমীতে ভূতৈ ভব্যাং ব্যাস मानाजिकार्थिः। नाना करेन पर्व **ि**ग्रह्मकृषिर खानाबाताः वृक्कक्शाः নমানি॥ যস্যা ভাষা ত্ৰিজগভাতি ভূতৈ ন ভাত্যে তত্তদভাবে বিধাতু: । বিষদ্ধীতা॰ কা**লকলোল লোলা**॰ ीलाभाकीः किछ मःमात्र मुर्गाः॥ পূর্ণা॰ প্রাপ্যা॰ দ্বৈত লভ্যা॰ শর্ণ্যা নাদে। শেষে নধ্যতো যা বিভাতি। कारणा रेमव॰ कर्म स्माभाश्या (य ত্ৰা তাসা তা বিশিষ্ঠা নমা-মি। ভূনৌ পন্ধে। রসতাপ্সু প্রতিষ্ঠা জল• তেজস্যের বাষৌ স্পৃ**শত্ত্ব• ৷ প্রে** শ্বে যদিলে ভাতি নাল তা या हार जार विश्वतः । तम् विश्वतः ॥

भौतिशे ए वृक्षकशा ख्वानी ज् ভেশ স্য গ্রিপতে: শ্রিষরপা। শর্চী শক্ষাপি নাকেখরস্য পত্নীশুেষা **ভा**ति शास बगरम् ॥ वाला बाला यूवजी योवत्व वः वास्त्रकः या इविदा कालकला। नानाकारेत ৰ্বাগ বেটিগণ্ড ধর্মো ভক্ত্যা বৈ ত্ব॰ ্ক্ষান ব্জু। বিভাষি।। বরেণ্যা ত্ব॰ बद्ररा लाक मिन्हा माध्री धन्त्रा लाकमानता जुकनता । इन्हों पूर्वा কালিকা কালিকাখ্যা নানা দেশে कुल (दर्ग विंडानि ॥ उर हर्रा **ज**रत्राज्ञ॰ दिवि एहवानि वन्तु । यनि ङ्ग्य मद्गाद्ध ভावयञ्जीरू ভক্তा। শুক ক্ত নতিশৃদ্ধ হৃং.সরোজে মরন্তি শু.তি যুগ জহরে বা সণ্-भुः अर्थ मण्य ।। बनयि बगमा-দ্যে সর্ব সিদ্ধিক তেবা॰।। মাযা खर भिरः भूगाः मूकरमर्यन ভा । भाषामः भू मञ्जीतः। ইভি जिका ७ বিত । মার্কণ্ডেযাদ্য কালি সি দ্ধি· লেভে শশিধুর: ।। কোকামু-থে তপ স্তপ্তা ছব্নি খ্যাত্মা বনা खरत । সুদর্শনেন নিহতে। বৈজ্ঞ শরণ যযৌ।। ইতি একিক্সিপুরাণে **९**नु**जागवा** जिवासी स्वा উৰকিংশা অধ্যায়ঃ॥

्तः शुः अनुवालिकः। वाबी

गांगांज

কর ইতি ভাষা। তথ্পর্যায:। পুৰ্তিহারিক: ২ ৷ ইত্যমর: দ্বা-या इन बनारिश बन इनामि छा-मःकरताञीकि माराकादः वर्ग । প্রিহরণ পুরিহারো ব্যালঃভা-(व चक्र म भूरवाष्ट्रव मम् भूरवि-হারিক:কিক্: ণিভেবি রিভিত্জি: । পুতিহায়ক ইত্যপি পাঠ: । তত্র शुक्ति भूषम् भूष्ठे यत्ना नवत्न ह इ-ন্নতি জ্ঞাচেন কিঞ্চিদিতি পুতি-रातकः। गकान्डाट बार्खिक शाजि হারকক যঞি পুতিহারক। ইতি **उड़ोकाया॰ छद्रउ: ॥**

भागाक्ट श्रु॰ नायाकात्रः। यथा। भाभनी माधनी माया मायाकृट ভিক্ষুকু নটে। ইতিশব্রত্বাবলী।। मायाधीवी प् प्रा**डि**हादिकः। ইতি (र्भम्यः ॥

(শ্ব: 11

মাযাতি: পু• नव्रवितः । यथा । मायाजीनाक निर्गी उ मुग्जा मू-निमल्य । वक्तामाथई (वरमाक ফলহানি ব্যতিক্রমে ॥ পিতৃ মাতৃ विशेनक गुवक ब्राधि वर्जिङ । বিবাহিত দীক্ষিতঞ্চ পরদার বি-হীনক ।। অজারিক বিশুদ্ধঞ্চ সৎ म्पृ ग्र्मकः यतः। जवक्र (छ।। धनः
मदा की छः ग्रमा जित्रकछः।। त्राः
भविद्या ह छः धर्मी नः भृक्षा वस ह
मदिः। नारेमा ध्रं रिभम्ह निम्मृदेत
मिथि (गाद्याहनामि छिः।। छकः वर्षः
छानियदा हत्र वाद्या यञ्ज छः। वर्षाः
छ ह नामृ श्रम् अति छः निर्दयः
वाद्या । अप्रेमी नक्मी निष्माः
मागा छ (भव ह में इर्ल्य क विष्णः
नर्षः विमान भुनम् छः। विमः
मञ्जा ह खद्या ह थ्या ह कवहः वृद्धः
। भुगन । मख्य छ्यो मम् ।। विम्याः
मिक्गाः।। ইতি वृद्धा विद्याः

भाषापितीमूठः भू वृद्धः। ইত্যমরः॥
भाषाफणः ली फणविरणयः। भारे

गण ইতি ভাषा। তৎ পর্য্যাयः।
भाषिफणः २ भाषिकः २ हिमुक्तणः।
८ भाषि ६। अम् छनाः। वाठ

हत्रपः। कृष्यः। উঞ্জু । रिण्यिना

मह्माठक क्रिकाकंग्र पाठ्यकः।

हिज्राजनियंगः।।

সাধাবতী ন্ত্রী রতি:। কামপত্নী। ইতি জটাধর:॥ তস্যা নামকারণ যথা। প্রীপরাশর উবাচ। এতমি মন্তরে পুাগু: সহ কৃষ্ণেন নারদ:। অন্তঃপ্রচরী : দেবী ক্মিণী প্রাহ

गायात्महर्दि र्ययन् ॥ अय (७ ७ मयः मूक्रें इवा শশ্বর নাগতঃ। হতে। যেনভিবদা-লো ভবত্যা: স্তিকা গৃহাৎ।। इय॰ भाषावञी ভार्यता उनयम्ता-স্য তে সতী। শশ্বরস্য ন ভার্য্যেশ শ্ৰবতা মত্ৰ কারণ ॥ মন্মথে তুগ-তে নাশ• তদুদ্ভব পরাযণা। <mark>শম্বর</mark>• (भार्यामात्र भाषाक्रभा किनी ।। ব্যবাষাদ্যপভোগেষ্ ৰূপ• মাযা भयः भूजः। पर्भयामात्र रेप्तजात्रा **उत्मायः मिर्द्रिक्गा ॥ इं**छि विक्र्-भूताति ६ वार्ष २१ वाधायः ॥ भागाविभिकः 🕾 भन्नभुजानकः। हेि नद्भावा॥ भाषावारं भृ॰ कःमजाबः। ইতি भद्र-রজাবুলী।। মাযাযুক্তে তি।। | भाषावी न् भाषाकातः। उट्नर्याः यः। व्यन्नकः २ मायी ७ मायिकः ८ ঐন্দুজালিকঃ ৫। ইতি জটাধর: ॥ বিডাল:। ইতি ব্লাজনির্ঘণ্ট:॥ মাথামোহ: পু বিফুদেছনির্গতা-मुत्रसाहक भूक वित्रियः । यथा ।

এ পরাশর উবাচ। ইত্যুক্তো ভ-

গবাণ স্তেভ্যো মাধামোহণ শরী-

त्र**ा अमृ**्भाम् । मामे विक्युः ।

শাহ চেদ সুরোত্তমান্।। এতগ-

वान्वाह। मायातात्श १य मिथ-

भागानी

निर्देश अधियान (नाश्यिय) जि ार्वी नेवा डैविक्डि विन्मार्ग वः ংষ্ঠাঃ॥ ছিটো ছিতস্য শেব-्रा यावष्टः পরিপ ছিন:। বুন্ধণো-्य श्विकात्रमा (एव रेएड)ापिकाः खाः॥ उर्गह्ज न जीः कार्याः ागामारहा १व मगुउ:। महज ন্যাপকারায় ভবতা ভবিতা সু রা:।। শ্রীপরাশর উবাচ। ইত্য ্ফৃ৷ পুণিপতৈ কে যুদুৰ্দেবা যুখা গঃ ङ । गागामाञ्चालि **टिः नार्ष** [यो यब नशामुद्राः।। ३ ७ विक् भू**द्रात्म ७ वर**ागः ११ व्यवशायः ॥ াদীতা ত্রী লেগেদ অগ্রিকৃত भीजाभुजिक्जिः। यथा। जाग्निसः বাচ। ভগবন্ শ্ৰুবতা বাক দক্ষন ন যদুপস্থিত। সীতা হরণকালো १मः जोजन ममूशक्तिः ॥ रेनवक मूर्निवात्रकः नह रेमवाटः शतः वलः। न्द्रभूभियामान्त्रभाष्ट्रायात्रक्राः ম্ভিকে হধুনা।। দাস্যানি সীতা তু **७**९७ भद्रीका मनत्य नम। (मरेवः भानः ॥ त्राम खष्ठमः भुद्धाः म भूकाः भा ह वाक्षा । स्रोहकात ह महन्तर श्रुत्यम विष्यञ। ॥ विक्रि र्गारमन সীতা্যা মায়াসীতা চকান সং।

भागात्री

जन्म छन नहीं मार मस्ते द्रामाय नात्रर ॥ जीजा॰ गृशीदा न यत्यी लारभाः वक् निविद्य ह। वास्राणाः रिनम् त्वुरश्राराभाद्रभन्तामः का कथा ৷৷ লকা গ্রারস্থুশ্রে জ্বান শা-ৰকেন চ। সৰান্ধব বাবণঞ্সীতা সংপাপ দু:থিতা ।। তাঞ্চ বহি भवीकाक कावयानाम मन्द्रां । হতাশ ভাৰ কালেচ বাভনী জাম-की करने ॥ उवाह छाया विश्व রামঞ্চ বিন্যাহিতা টকরিব) নির্ভিত कि मङ् उम्लाय वस्य (मे।) विङ् बनाहा। पुर ग्रह छभरत्र स्वि भू-काक मून्। ए । क्वा जनमाः উত্তৈব স্বৰ্গ লক্ষ্মী ভবিষ্যসি।। সা চ তদ্বচন শুত্রা পুত্রপ্য পুষ্করে তপঃ । रिवाः जिलक वर्षक वर्गलकी ৰ্ভুব হ ৷৷ সাচি কালেন তপসা যক্ত লণ্ড সমুদ্ভবা। কানিনী পা-खरानाक (मुलिशी कलमाज्ञा।। কৃতে যুগে বেদবতী স্বশধুজ সূতা-শুভা। ত্রেভাষা ক্লানপত্নী সা সী-তেতি জনকাত্মজা।। তদ্বাধা দৌপ-मी (मवी बाभारत क्रभमाञाका। ত্ৰিহাৰণীতি সাপোক্তা বিন্যুদানা যুগত্রযে।। ইতি বুন্ধবৈর্বর্ত্তে পুকৃতি च(७)२ ज्यायः॥

1

भागामुङः १ वृद्धः। ইতি हम-हमुः॥ भागिकः क्षी भागाकनः। ইতি त्राख-निर्वर्षः॥ गुष्टाश्चरत्र भागिका भाषु-का ইত্যপি পাঠः॥

भाषिकः भू॰ भाषाकातः। ইতি ब्रहीः षतुः॥

नायी प्रभाषाकातः। उट्भर्यत्रायः
। श्र्वः २ वक्ष कः २ व्याप्तकः ८ व्यक्ष कः ६ पाषाज्ञिनिकः ५ ज्ञानिकः १। इंडि (इन्हम्तुः ॥

মাযু: পু: পিত্ত:। ইত্যমর:॥ মাযুরাজ: পু: স্বেরপুগ্র:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

भागृतः ही भगृतम्रः। ইত্যমর:॥ তথ্সমৃদ্ধিনি বি॥

भाष्त्रिकः प् भग्रग्रश् । इंडि निष्कालकोम्ही ॥

नायूती जी अज्ञाना। ই जित्राज-निघंके: 11

नातः भ् मृजिः॥ कामरहरः॥
विषः। ইতি मिहिनी ॥ मात्र १।
ইতি ह्महन्द्रः॥ यूख्तः। ইতি
मद्गहन्द्रिका ॥ मात्र गर्गाट भिन्न
यथा। मार्कर ७ वाह। मरमाञ्चम् दहन भूताथ हजताननः। विवस्वति उद्याक । भूतन्द्र नाङ्का

त्रकः॥ गर्वमः (यः तिरहे। २ जनमहि। जीमर्था विभिन्निष् मिछि निम्परास गृष्ट मृद्धः। विकास নাক্তাত্ত্স। নানাক্সা মহাব্লা:। ৰাতা গণা লোল জিস্থালোল। স্চাতি ज्यकताः ॥ जुत्रक्वम्नाः (किहि किं किन्त्र अस्त अस्त । मिन्हः बनुषु म्था कात्म र उत्तक धन्नाननाः ॥ अक नाड्डांत वहनाः नत्रजाम्याः **म्**कानमाः । श्लव भागागुवक्ता**णः म**-त्रीम्भ म्थाःभात् ॥ (गाक्भा (गा-मुचाः क्रिडिया शकिम्चाः भात । महारीयां महाङ्खा महाङ्खा महा-কৃশাঃ।। পি সাকা বিরলাক্ষাক ত্র্যু रैक्क काका सरहास्त्राः। এक कर्ना जि कर्नाक ठजूइनी खया भारत ॥ ज्व-कुर्गा नीर्यकर्गा वहकर्गा विकर्गकाः । मीर्याका शृजात बाक मृक्तातवा विमृ-हैयः॥ ठजुङ्गानाः भक्षभाना जिला-रिक्ममा खया। दुवभामा मीर्घभा-मा श्वभामा महाभमाः ॥ वक्रसा क उर्देखा विश्वा जिल्या ख्या । বিহস্তাশ্চ বিৰূপাক্ষা গোধিকাকৃত-यः भाव ॥ मृन्याक् उयः किटि শিশ্নারমূথা: পরে 1 কৌঞ্চাকারা ব দ্যকারা হংস সারস ক্সিণঃ॥ ত-रिश्व सम्बद्धाः । अङ्गा । अ

मान :

विश्वितां अवदिकाः किन्ताः लिय के उर्थ ॥ ने - भूम उर्थ। भीजो इडिजो निष इलिलः। व्यवाः एयेड (उ महान् शहरान् कार्त्रवादि-नः॥ मृत्रकान् जिखिनारी कर लाम् थान् भगवाः खथा। महर्व कटा जिः পিশ্বভি স্তম্বভিন্চ করামিতা:।। नित्रष्ठताचि ब्रिल्युक्त भूगानाः गान्तन गानिनः। म्ब (छ)ह गाम रहाः यः प्रस्था धनुर्धदाः ॥ माळ/खूम गरा वान शिक्त श्राम शानयः। नानायुदा शरानामः ऋर्वछएउ महावलाः ॥ मात ्य ছে দযেত্ত বু ऋगः পুরতো গণাः। ॥ তেষান্ত বদতা: তত্র নার্য ছেদ-বেভুতে॥ যোগনিদা পুভাবাৎ স ,विधि वंकुः भुज्ञान । जयः वुकाग शाভाष्य जान् पृष्ट्या सम्ता भेषान् ৷৷ উবাচ বার্যন্ বকু প্রণানা ন্পুত: यतः ॥ 🗱 ॥ भरन উवाह । कि॰ क বৈৰ্যতে করিষ্যন্তি সত্ৰ স্থাস্যন্তিবা বি থে। কি॰ নানধেয়া এতে বা তত্তৈ তান্ বিনিযোজ্য ৷৷ নিযুলৈগ্তান্ নিজে क्छा सान पद्मा ह नाग ह। क्दा भग्हाबारागा भुजाव कथ्यव (म ।। নাৰ্ক:গুৰ উবাচ। অথ ভদ্বাক্য মাকণ্য সর্বলেকে পিতানহ: ৷ গণান্ ा । १ भा **उपार्याम्यकः पि**

भन् ॥ वृद्धावाहः। वरञ्जूरभम भाज। हि गांत्ररयिक यम्बुतन्। मूछ मूक् क्रका क्मीयाः नाम माह्यकि कायञाः।। भावान्य क्याहर १९८५ स्।-রা: সম্ভচ নাম্ভঃ। সদৈব বিষ্লু 🚁-ख्ना॰ कत्रियऽछि विनाईन॰॥ ख्रान्-गमनः कर्म मुथ्र (म्याः म्याजक्र यव यव ভवान् याजाः स्कर्मार्थः যদা যদা ৷৷ গম্ভার স্তব্র ভবৈতে সা श्याराय जना जना। हिट्डाम् ब्रासि॰ করিব্যন্তি ত্বদক্ত বশবর্ত্তিনা:়।। क्छानिना॰ क्छानमार्गक्ष विश्वविष्ठि नर्वरा । यथा जाःजाविकः कर्या मर्ख सर्वेष्ठि मस्यः ॥ उथा रेहरङ করিষ্যন্তি স বিগ্নমপি সর্বত:। ই-নে স্থাস্যন্তি সর্বত্র বেগিন:কাম্বরু श्रिनः ।। पुरम्दियाः जनाश्रकः পঞ্চ । विज्ञान । विज्ञानिः । विज्ञानिः যাবতা• ভোষ ভোগিনোপি ভব-ম্ভিনে ॥ ইতি কালিকাপুরাণে ৬ তাধ্যায়:॥

भातकः भुः भद्रकः। उद्भर्गशायः।
भातिः ३ उद्भावः ८ । ইতি जिकाश्रम्भयः॥ भक्तिविष्मयः। वाज् ইতি ভাষা। उद्भर्गशयः। घाणि-भक्ती २ गाह्रकः ० । ইতি ভ্রিপুযোগः॥ भात्र १ वर्जि जि ॥

भाविष्ट- भूभ वृष्टः। ३७,४४३:।। মারণ ক্লিবিধং। ইত্যুদর:॥ অভি-कांत्रविष्णवद्दां येथा विवस्त भावनः (मंदि दिल्मिकार कथेशामि (छ। जा-उ पिहि नमायुक वामस्यव विভ् ষিউ ৷৷ কুইব্শা তভো দেবি অমৃ-क भावन भावन । ठर्जनाक्रावा भिक्षायाराष्ट्रः मञ्चामकः॥ थिन-वाकात नामाय व्यवाद्वया विष्य-रा । (नथरार भूडनो॰ मञ्चन भां लोह भवत्व।। निमायाः मस কৈনেক্তে ললাটে হৃদেবে করে। নাভৌ खर्च करिंगि एर्ड करमारकन शरहरय ॥ मञ्जवर्गान् मयानिश्व भुजिक्षाः ত व कात्ररिया में शात मू मा विशा ज् ब्याखरम्बी बर्गुना ॥ नीर्घाका-झाः क्कवर्णाः महार्षा खन मसकाः। मृजु ७ युगन २ इड हर्बचडी - दिगञ्जरी -**ण**ज्नाभ हती॰ (पवी॰ श्रारंगर पज् क्रयाय छ। अव॰ भाराद्विका ह्रेन बी **मश्खन मङ्गत्र ॥ ७ मञ्जू नामकरि**र्ग नमः हेकि पद्मा मरहत्रवि । इतिमा र्छ्न महिजाः क्षात्राः सम्राम्दनन कु ॥ অমুকস্য শোণিত পিব পিবেতি ख्टभद्रशामाः अपनय थान्य हीँ नम इंडिंगर्खन्या मध्यारः मध्यार्यो ज् প्रामिद्धा मा अक्षेति। जारभरति।

गांत्रक रेपे मनारक ह देशिया नामान ने नामा में अधिक विमार्श मृज्यात हि-(मा जिंदर ॥ अ ॥ जिंथरान् भुका-दिन विक्रम महत्त्वर । भूरतीवा क्ट नगरनावं भ्जस्यम्क त्रातिना ॥ विभन्ने कर्मार्गिव जम भूजारिक छति । नशास्त्राय नग इंडि भू॰ (गामक् मनाह्ति ॥ मिताय नम इंडि माञ्जा घोनक नगाहात् । পশুপত্যে নম ইতি পাণান্ সংস্থা-প্ৰেক্তঃ ॥ লৌহপাত্ৰে নহেশানি ধদিরাকার যোগতঃ। শত্র প্রি-কৃতি লিখ্য তত্ৰ সংস্থাপয়েৎ শিব্ ।। उठा भ्रायिम् हाक म् भ्राने स मू-সমাহিতঃ। শতো বক্ষঃ ছি ত কদু ब्वाशी मनभू छ ।। वानक्छ ध्र (कन्ने॰ मिक्निन॰ भूगिकर्यन॰। नत्रह-र्याञ्चतः एकः महाव्यालापि (वश्वि-ত ।। পিনাকষ্ক ইহাগদ্বাগদ্ধ ই-**ज्यासिमायाञ्च यञ्जः। म्लभागरय** নম ইতি স্নাপযেৎ সাধকোত্তম:॥ নহেশ্বরায় নন ইতি পাদ্যাদিনা भुभुजाय । देगानामि खथा मूर्वि दुर्शकरमण अभू ब्रायल् ॥ व्यक्तिन-ণাদি পর্যান্ত পূর্বনীত্যা নহেশ্বর। प्तः नितायिक गृज महाविः निक ন্ত্ৰপেৰ া হঁ ক্ৰৱেতি কান্ত্ৰ

कर्ति न जिसक्त्यर । अभि उ रक्षित विका इस म छ इस म म स्व क्ष्मित विका इस म छ इस म म स्व क्ष्मित । इ निस्सा छ म तर म क्ष्मित । इ निस्सा छ म तर्क् इस्ति । विव स्व का म स्व इस्ति म छ मा। अव म उ का यर छ स्वि म छ म । अव म उ का यर छ स्वि स्व मिनी छ ज मूर्व थर छ । ह भे देवाः ॥ अभि । गृद्वा हिस्स् गदा दिस्सा म स्व निस्सा का स्व ह । अस्त र्या निथ्य ह । इ जा कर छ । अस्त ह । भया छ म: । इ जि गा कर छ । अस्त ह । अस्त र्या निथ्य ह । इ जि गा कर छ । अस्त छ ।

आितः स्त्री भारतपः। वर्षः। इंडि स्नि मिनी ।। समक्षयः। छ८ शर्यप्रायः। भारतकः २ भर्तकः ७ উ८ शाजः ८। इंडि विकाखः स्वः॥

ারিচিক• ত্রি মরীচেনসংস্কৃত•। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।।

श्वानिषा उरका मृत्या।

। त्रिष्ठः भूः नश्चीक्षः।। ख्यीक्षः।
। यथा। खनगाद्यात्रिष्ठः यर्गः वतःवीर्याः कामायः । कात्राष्ठि द्वाः

गान् गृङ्क उष्मनाः यञ्च छङः

।। ইতি ভাবপুকাশः।। खनि ।

বৃদ্ধ । ততো গ্রুপ্টে পক্তা

भून त्रास्त मर्फार्य ।। जालन मणा मांग्लन याम त्रिकः उठः भूरि । अवः मणभूरिः भकः वकः उवि मात्रिकः ॥ जाभत्रकः । जाम् द्रकः यनप्रकः उठका गोत्रव ठाभनः य-रेम्यजानि न मृण्यास्त उ॰ विम्याम् उ मृजकः॥ जान्य । मृष्का त्रामा उदः प्रका मृहिं उस सनार्धनः । माति-रा कप्रका म्याः वकः माकाः । मानिवः ॥ ইতি विम्यमर्भाः ॥

गवाञ्चिक मूब निर्माण (भव ह। माद्रिवास्तिकः भुः द्राइिवि प्याद्र (या निथति हाद्र भक्ष मून् भवाजि सः । ইতি गाक्ष ७ १५५ का द्राह्म विश्व का विश्व क

> मातिषः भू॰ नार्छ। ख्लीर्ण्यः। इट्डा-नतः ॥ ज्ञृतीयणाकविरण्यः। न-त्रमा इठि हिन्ती जाया। ज्ञट्म थर्छ। यः। कक्ततः २ नार्षिकः ०। ज्ञम ऽ ख्गाः। मधूत्रष् । भीजवः। विश्व-श्चिष् । भिजनाणिष् । ख्लप् थः। तक्तनापामय कार्त्य ज्ञाजीयाकः ज्ञृताः। इठि ताजनिर्यकः॥

माद्रिया जी मक्तमाठा। इंडिस-मिनी॥

नाती खी ठ शी। बनक्यः। ই ডি निनि।। नार्यंत्रीणकिः। यथा भात्री ह

। यात्री जिन्दान अधान हान्।।न् थर्गक्रभारें ज्ञान जा को निकी । ইতি বাননে ৫২ অধ্যায়ঃ।। भावीतः भू वाक्रमविष्मयः। म ह **जात्रकात्राक्रमी भूधः त्रावनम्यान् চ**র: जीতाङ्द्रनकाल मारामृग-ৰূপো হসৌ গ্রিরামেণ হতক । ইতি রামাযণ ॥ অস্য বিবরণ यथा। এ उत्रिमस्यत्र द्रारमा नम्भं क-ৰক মৃগ । সীতা ত পুরেষামাস তদর্থে যত্ন পূর্বকং॥ সংন্যস্য লক্ষ্ণং রামো জানক্যা রক্ষণে বনে। স্বয় জগান তূৰ্ণ ত বিব্যাধ শাষকেন চ য়। হ। লক্ষণেতি শব্ধ কৃত্বাথ মা-যযা নৃগঃ। পুাণা স্তত্যাল সহসা नुत्रा मृष्ट्री रुति॰ यात्रन् ॥ मृगाम-হ• পরিত্যজ্য দিব্য• দেহ• বিধায-छ । রত্ননির্মাণ যানেন বৈজ্ঞ স कगाभ र ॥ रिक्छे द्वारत द्वार्यंता-जी ८ किक दिशा का द्रिशान स्था: 1 क य क विजयरेक्टर वव्यवा का जिला ভিधः॥ भारभन भनकारीना॰ স॰-भारताक्रमी • उन् । भून र्जगाम -ह द्वात्र सारही **ह दात्रभान**याः ॥ ইতি বুদ্দবৈৰৱে পুকৃতিখণ্ডে ১২ प्तव्यायः ॥ # ॥ क्**नात्राः। यथा** । ইতি সাচিত্ত্য ভগবান্ মারীচঃ স

নারীচী জ্রী দেবতাভেদ:। ইতি

(मिनि ॥ माज् मायापिती । उट পর্য্যায:। ত্রিমুথা২ বজুকালিকা ৩ विक्रो 8 वजुवात्राही ७ (भोत्री ७ পোত্রিরথা ৭। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ माक्खः भू जर्भाखः॥ भन्नाः॥ গোমযমণ্ডল। ইতি মেদিনী।। गाक्जः भृ• वायूः। ইত্যনর:।। ग्रिय-তে ধনেন কুন্ধেন নাশ্ৰীতি মৃষ্ট উৎ নৰুৎ নৰুদেব মাৰুত: স্বাৰ্থে ঞ:। ইতি ভটীকাষাণ ভরতঃ॥ অসেগ্র-ৎপত্তি ৰ্যথা। কশ্যপ উপবাচ। পুত্র স্তে ভবিতা ভদুে ইন্দুহা দেব-বান্ধবঃ। সংবৎসর বুত মিদ । ए-দ্যঞ্জো ধারথিব্যসি ॥ অঞ্জো যথা-वट्या जःवट्जब्रः श्रुःजवनः वुंज भिज्निविश्व उ॰ । शात्रविष्ठाति एडजू-ভ্যু• শক্রহা ভবিতা সূতঃ ৷৷ বাঢ **নিত্যভূগে**ত্যপ ^{ছাজা} চাল্ড श्वामाः। क्ष्रुक्रम् म्य नायक वुडकाञ्जा महात्र सा ।



विकास विक् जान्ताय मानर ।

व्यथ्य कितः ॥ अवः जन्ता वुज्ञाया वु उहि पु॰ इति न् भ। (नुभूः भर्य) চরৎ জিক্ষো মৃগস্যের মৃগাক্তি: ॥ नारागहषु उहिनु उद्भाराण মহীপতে। চিম্ভাণ তীবুাণ গতঃ শক্র: কেন মেস্যাছিব জিছ। এ करा ना ज् नक्ताया मूहिश्रा वुज कर्षिजा। जम्म् हे वार्य्य (शेजाह्निः সুদাপ বিধি মোহিতা ॥ লক্ষ্য তদন্তর• শক্রো নিদ্যুপজ্ত চেতসঃ া দিতে: পুরিষ্ট উদর॰ যোগেশো। যোগমায্যা ॥ চকর্ত্ত সপ্তথা গর্ত্ত-राजुन कनकनु छ । स्वरुष मधे १४-কৈক মারোদী রিতি তান্পুনঃ ॥ **ज्यूष्ट्: शा**ष्टेऽमाना एउ मर्ख श्रा-ঞ্জলযো নৃপ ॥ কি॰ ন ইন্দু জিঘা•-সসি ভাতরো মকত ত্তব। মাভৈষ্ট ভাূতরোমহা• য্য মিত্যাহ কৌশি-কঃ॥ অনন্য ভাবান্পার্যদানাত্ম-त्। मक्छा ग्रान्। न मनात्र हिर**ङ** গর্ভ্ত: এনিবাসানুকম্পথা॥ সজ্রি ন্দেণ পঞ্চাশৎ দেবা ত্তে মকতো ९ভবন্। ব্যপোহ্য মাতৃদোষ তে াণ পোয়প্রা: ্ াগা দিতি ক-अव पृष्ण अवाद्रीननम शुकान्।

ইনেদুণ সহিতান্ দেবী পর্য্যতুষ্যদ-निन्रिज।। चर्थम् मारु जाजार मार्षिज्यानाः ভयावरः। अभज्य মিছন্ত্যচর• বুত মেত• সৃদুষ্কর• ॥ এক: সঙ্কল্পিড: পুএ: সপ্ত সপ্তাভ-वन् कथः। यमि (छ विमिजः পूध नजुः कथव मा मृषा॥ इन्द्रु उवाह । অম্ব তেহ• ব্যবসিত মুপধার্য্য গ-गर्छ मर्थ वृष्कि नं धर्ममृक्। कृरङा म गथरा गर्छ जामन् मध ऋमात्रकाः । তেপি চৈকৈকশো বৃক্নাঃ সপ্তথা-নাপি নমি্রে ॥ তত তত পর্মা-क्टर्यं वीका वाविषठ भया। मराशृक्ष भूजायाः मिषिः का-भागूमिक्की ॥ उहिम भग मी-ৰ্জ্জন্য বালিশস্য মহীয়সি। ক্ষন্ত-મર્શન માહસું દિષ્ટ્રડા ગર્લ્કા મૃલ્કા-থিত:।। শ্রশ্কউবাচ। ইন্দু স্তবা-ভাৰুজ্ঞাতঃ শুদ্ধভাবেন তুষ্ট্ৰা। **নক্ডি: সৃহ তা**॰ নত্বা জগাম ত্রি-দিব॰ পুভুঃ॥ ইতি শ্রীভাগরতে ৬ ऋक्ष ১৮ अध्यायः॥

নাৰত বৃত কী রাজধর্মবিশেষ: ।
যথা। পুবিশ্য সর্বভূতানি যথা চরতি নাৰত: । তথা চরৈ: পুবেষ্ট দ্যাৰত ।। ইতি

মার্কপ্তে

নাৎস্যে২০০ অধ্যায়ঃ।।
নাক্তাআজঃ পু॰ হন্মান্। ইতি
ভটাধরঃ।।
নাক্তাপতঃ প॰ বক্ণবক্ষঃ। ইতি

নাকতাপহ: । পুণ বকণবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণীঃ। বাযুনাশকে তি ।। নাকতাশনঃ পুণ সর্পঃ। প্রনাশন ইত্যমর দর্শনাৎ ।। বাযুমাত্রভাক্ষকে তি ।।

भाकितः भ् रुन्नान्। ইতি मकः त्रज्ञावनी।। जीमस्मनः। ইতি करे।-धतः॥

मार्केखः श्रु॰ मार्केट अयुनिः। ইতি
नफ्रवज्ञावनी।।

मार्काश्वका जी लडाविष्णवः। ज्हे थथमा इंडि हिन्ती जाया। माजू काक्तवाल जिल्हा। जर्म्यायः। ज्ञिह्नी २ मार्क्शी ० मृत्द्रह्नी ८ । जम्रा ख्याः। क्ष्ठह्म वः। উष्णुं थः कायरमाधन वः। विष पूर्णक काम ख्ल्यान्द्र नामिष्कः। इंडि जाव भूकामः॥

नाकेशिय क्री ज्याङ्नाः। ইजि॥ वाजनिर्यणः॥

নার্কণ্ডেষঃ পু॰ নৃকণ্ডুমুনিপুঞঃ।
জন্মতিথ্যাদৌ পুজাযা। তস্য ধ্যানা যথা। বিভূজা জটিলা সৌম্যা
নূর্দ্ধা চিরজীবিনা। নার্কণ্ডেষা

नरता छक्ता श्रह्मसङ हिन्नागृषः ॥ उन्र भार्थनामञ्जः। विव्रकीयी मध्य ত্ব॰ ভো ভবিষ্যামি তথা মুনে। জ-পবান বিভবাং শৈচব শ্রিযাযুক্ত শ ৰ্বদা ॥ মাৰ্কণ্ডেয় মহাভাগ সপ্ত ক-न्नाउनीवन। आयू दिशेष निष्कुर् মন্মাক• বরদো ভব।। ইতি তিথ্যা-**दिख्न ॥ # ॥ ज्यार्थि** अख्यां र्यथा। गार्क ७ व उँ वाह। (मरवी शास् বিধাতারৌ ভূগো: খ্যাতি রস্যত ৷ **जियक एरदएरवम् अज्ञी नात्राय**णम् যা।। আযতি নিঁযতিশ্চৈব নেরোঃ कत्नु महाज्ञनः। ভাर्य्य भाज् वि-ধাত্রো স্তে তথো র্জাতৌ সূতা বুভৌ 🗵 পাণিকৈব মৃকজ্ঞ পিতা মম মহ যশা: ৷ মনস্বিন্যা মহণ তমাৎ পুগ্ৰো বেদশিরা মম ॥ ধুমুবত্যা সমভ বৎ প্রাণস্যাপি নিবোধ মে। ইতি শ্রীমার্কণ্ডেযপুরাণে ক্দুসর্গাধ্যায়ঃ ।। #॥ অপিচ । পুলস্ত্যউবাচ। অথ তে সংপ্রক্যানি নার্কণ্ডোৎপত্তি মূ खगा। भूत्रा काल्ल निः भूर्वः म्कर् নাম বিশুকঃ।। ভ্গোঃ পুগো মহা-ভাগ: সভার্য্য স্তপ্তবা॰ স্তপ:। তস্য পুগ্ৰ স্তদা জাতো বসতস্ত বনান্তরে॥ न नक्षवर्यका हास्कि वान वर स्ना-विजः। ज्ञानिनां म जमाम्रहा जुमिष्

ू भाकरेख

الإبساد

প্রস্থান্নি। স্থিত। সম্চির কাল। ेीवनक हर् अस्कि। वीका विशाशः ्रिक्डानी कि॰ वर्षा वानक छव।। हि॰ ত্ত• খণ্ডিত•॥ সংখ্যমা চাষ্টবৰ্ষাণি গাতানী তি ন্যবেদ**ং**শা মৃকণ্ডুনৈব মু-াস্ত স জ্ঞানী বাক্যমূব্বীআ মাস-াযুক্ষ পুগ্রস্য তে হবশিষ্ঠ মুনীশ্বর ং'নব শোক স্তৃয়া কার্য্যঃ সত্যমেত-माइन ॥ এउ८ मुद्धा वटा जीया ্তানিনা যদুদাক্ত । বুতোপন্যন ক্রে বালকস্য পিতা তদা।৷ আছ চন পিতা পুত্র মৃষি ত্বমভিবাদয ্এব নুক্ত: স বৈ পিত্রা ঋষিণ ভক্ত্যা ননাম সং ।৷ এতি যান্তরে তব পু-**রিপ্তাঃ পাবকোপমাঃ। মার্গেণাপি** সনাথাতা স্তেন সপ্তর্যথো **ৎনলাঃ**।। বালেন তেন দৃষ্টা স্তে সর্বে সমভিবা-দিতাঃ। আযুদ্মান্ ভব তৈ **ৰুক্তঃ স** करही मध्यमथना ।। উका एउ ह शून दानी शमा छः किन की विज । দিনানি পঞ্চ তে চাযু র্ক্তাত্বা ভীতা-**७**वन् श्नः॥ ज्यूष्किश्र नामा रेव গতা তে বুন্ধণো হন্তিক•। পুতিমূচ্য চ ত বাল পুণিপেত: পিতামছ।।। আয়ুমান্ ভব ইত্যাহতেন বৃদ্ধাতি बारिजः। विदाय व्यापा वालः (भा ক্তঃ স খাৰি সমিধৌ।। তত তে মুন

যঃ প্রীতাঃ শ্রুদ্বা বাক্যুণ পিত্রামহাত । পিতামহস্ত সগুষী ন্ দৃষ্টা প্রোবাচ বিস্মিতান্ ৷৷ কার্য্যেণ যেন বা যাতাঃ কো হয় বালো নিবেদ্য তা। ততঃ সপ্তৰ্ষযোৱাজন্ সৰ্ব • তথ্যে ন্যবেদ্যন্ ॥ ज्राः मृनू म् कथुन्त कीपायू सम् বালকঃ। অল্লাযুষ স্তত স্তস্য বন্ধা खनाम् (मथनाः ॥ यद्धानवीउ॰ দগুঞ্চ দত্ত্বা তেন পুবোধিত:। য॰ ক-ঞ্চিৎ পশ্যসেলোক ভুমন্ত ভূতলে कन ।। उभाजिवामन कार्या भव নাহ পিতামহ। তাবদ্বয় মনেনাথ ক্ষিতৌদৃষ্টাঃ পরিভুমন্ ।।একত্বসার্যণ ৷৷ তীৰ্থ যাত্ৰ৷ পুসক্ষেন দৈব যোগাৎ. পিতামহ। চিরাযু র্ভব বৈ বিপু বা-লেত্যমাভি রীরিতণা কথণ চিরাযুঃ म्याहिश्र वानकः माम्युज् भूरजा । कथः नानृजिता (हव खवासा खवजा বশুণা এবমুক্ত স্তদা তৈস্ত বুন্ধা লোক পিতামহ:। ঋতবাচো ভবিষ্যান: मर्ख वर वय श्रिजाः ॥ मरम मा । যুষা বালো মার্কণ্ডেশো ভবিষ্যতি ৷ প্ৰবীণা মুখ্যত শ্চাসৌ মৎসহায়ো ভবিষ্যতি ৷৷ কল্পস্যাদৌ তথা চাঙ্কে বৃতো মুনিভি ক্তমে:। এবন্তে মুন-ৰো বাল: বুদ্ধা লোক পিতানহ: ।। मायाधा (পुरुयामाम ज्या १११।द॰

পরস্তপ। তীর্থবাত্রা• গতা বিপ্রা মা कंखिया निजः गृरु।। जगाम गद्माः छ विशु निजत न जथान्वी । ইতি পাদ্মে সৃষ্টিখণ্ডে ১০ অধ্যায়ঃ ॥ #॥ व्यवज्ञक। व्यात्र उवाह। भाकः खरान मूनिना यथा मृज्रुः भ রাজিত:। তথা তে কথযিব্যামি শৃণু বৎস মহামতে।। ভূগো: পৌ-গ্রে। মহাভাগে। বালবে চ মহাদ্য-जि:। वव्रथ वल्लां वालः शिजा **७**मऽक्ठकियः॥ म उन्चिन् रेंव झा उ गाव जाएमी किन्हरत्वी । वार्ष দাদশমে পূর্ণে মৃত্যু রস্য ভবিষ্যতি ।। শুদ্ধা ভন্মাভা পিতরৌ দু:খিভৌ (ठो व ज्वजः। (ठो मृष्ट्रा मृःश्रमणाः) মার্কণ্ডেযো মহামতিঃ।। উবাচ বচ-न • তত किमर्थ • मृश्य मीमृण • । वकु गर्म पू:थम। कात्रगः सम भृह छः ॥ कथनामाम ७९ मई मारमणी रमूवा চহ। তৎ শুক্লা তৌম্নিঃ পাহ মাতর॰ পিতর॰ পুন:।। পিত্র। সার্জ-ष्या भा ७ नंकार्य ४ मृःथ मन् रः। अभ নেষ্যামি মে মৃত্তু তপসা নাত্র সং শ্বঃ॥ যথা চাহ্ চির্যুস্যা তথা প্র্যা নহং তগঃ। সূত্র উবাচ। ই णुङ्ख्या **मगा**यानः नि उत्तो वनन-ভাগা । তত্র বিষ্ণু পুতিষ্ঠাপাগ

क्रभुवादि , जार ॥ नेवा प्रतिण भावास्त्र क्या किया । জযিত্বা হরি 🖰 🖟 তথা ভেগে 🎉 র॰।। निद्राष्ट्राञ्चन छत्र वर्षामक মতন্দ্িতঃ। নাভোক্ত মরণাসমদিনে তক্রমহানতি:॥ স্নাত্বা যথোক্ত বি-थिना क्षा विस्था खथाईन । श्री क्ष्विनुगुग्नः विभक्षनास्त्राजाना ॥ व्यामनः अखिनः वक्षा वृद्धारमी शान मन्यमः। ॐ कारबाहाबनाष्त्रेः मान् ऋषिभग्नः विकासम्यम्।। उत्राक्षु রবি সোমাগ্রি মণ্ডলানি যথা ক্রম• <u>৷</u> কলুযিত্বা হরে: পীঠ তৃষ্ঠিয়ের স নাত্র-।। পীতাম্বরধর বিষ্ণু শল্প চক গদাধর । বৃহ্মকপ গ হরি । ধ্যা-य॰ छाउ। भनू मूरी दगन् ॥ इत्छाद॰ थ्रायञ उना नार्क(खय्ना धीनजः। নন স্তবৈৰ সংলগ্ন দেব দেব জগৎ-পভৌ ॥ ভভো যমাল্যান্ত্র আগ-তা যনকিন্ধরা:। পাশহস্তান্ত ত॰ तिकृष्**रि**ख्य (छ २ छा: ।। मूयति र्हन्यमाना एउ है मुका भूनः भूनः। বয় নিব্ভা গঢ়ামো নৃত্যু রেবাগ-নিষ্যতি॥ মাগল্য রুনেবাত্র মৃত্যঃ भारत्वं मङ्ग्हा 🗆 🎨 इं खरम् व ভূমে বিকু 🏗 👚 शुर्गना

'लबाः विष्णे श्रामः क्षेत्र व्यामा म् ্ৰাস্য ,্ৰি ন্দৰ্শ্বিত। য় ডাতা বি ्रे क्या ११५ (, ्.ब्**डि: ।** তুষ্ঠাৰ পুণতো ভূৱা দেবদেব জনা-फ्न ॥ विकृतिः वाशिष्टि उतावः কর্ণে মহাজ্মনঃ। স্বভাবিতেন মনসা <ভন তু≹াব মাধ্ব•।।#।।ওঁ নমো ভ∙ গবতে বাসুদেবাগ। নারায়ণ সহ সাক্ষণ পদ্মনাজ-প্রাতনণা পুণতো एश्रि वृशीत्कर्मः कित्रा मृजुः कति याजि॥ भाविनः भूखतीकाक म-নন্ত মজ নব্যয়• । কেশব্দ পুগদ।-মি কিলে। মৃত্যঃ করিষ্যতি ॥ বাসু-দেব জগদ্মোনি ভানমন্ত মতীন্দ্ यः। मारगामद्रः भूभवामि किः सः মৃত্যুঃ করিষ্যতি ।। শত্ত্ব চক্র ধরণ (मव • इपाक्तिन भव । या भाक-জ পুপমেমি কি নে মৃত্যু করি ষ্যতি।। বারাছ বামন বিষ্ণু নার-नि॰ इ॰ जनाप्ति । भाष्यक भूभाम। ম্মি কি**॰ মে মৃত্যুঃ করিষ্যতি ॥ পৃক্** य॰ পুষর বীজ (ক্ষমবীজ জগৎ প তি । লোকনাথ পুপদোমি কি নে মৃত্য়: করিষ্যতি ॥ ভূতাত্মান• न राजान विद्यानि न जानिक। বিশ্বৰূপ পুপন্ধামি কি মে মৃত্যু: ক রব্য**তি।। সহসুশিরসং দেবং** ব্য-

ক্তাব্যক্ত সনাতন।মহাযোগ পু-পদোমি কিং মে মৃত্যু: করিষ্যতি ॥ 🛊 ॥ ইত্যদীরিত মাকর্ণ্য স্তোত্র• তৰ মহাত্মন:। অপযাত স্ততে। মৃত্যু বিষ্ণুতৈক পীডিত: ॥ ইভি তেন জিতো মৃত্যু মার্কণ্ডেয়েন ধী-মতা। পুসন্নে পুগুরীকাক্ষে নৃসি॰-**१र नाखि मुर्लञ १। मृद्युष्टेक मिम**॰ পুণ্য মৃত্যু পুশমন শৃত্ত। মার্ক-**ওেণ হিতার্থায় রয়** বিষ্ক্রবাচ হ ।।।। बीडगवानुकाह। य इन शर्ठ-তে ভক্ত্যা ত্রিকাল নিষ্ত: শচি:। नोकाल उन्। ग्जुः न्। महामहन्।-চ্যুত্ত চেত্তম:।। ব্যাস উবাচ। হৃৎ-পদ্ম মধ্যে পুৰুষ পুরাণ নারায-**१ नाय अ**भिष्टि । अक्षिन्छ। সূর্য্যাদিপি রাজমানো মৃত্যু স যো-গী জিতবাণস্তদৈব।। ইতি নার-সি-হপুরাণে মার্কওেব মৃত্যুঞ্বো नाम १ व्यथ्रायः ॥

মার্গ ক সংস্থারে॥ সর্গণে। ইতি কবিকল্লজনঃ॥ ক মার্গযতি। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

মার্গ কি অন্বেষ। ইতি কবিকল্পফনঃ ॥ অন্বেষঃ পুতিসন্ধান । কি
মার্গ্যতি মার্গতি গুণ গুণী। মার্গস্থা হে দেহভাবানিত্যাল্মনেপদ

মার্গক

भगक्छा निञ्जा । ইতি मूर्गा मामः॥

নার্গ: পু॰ পন্থা:।ইত্যমর:।। তৎ-श्रित्रांग यथा। जि:मक्रूश्व वि-खीर्ला (मणमार्गस्य रेजः क्जः । वि मद्भुग्नामार्गः नीमा मार्गा मरेगव जू ॥ धन् वि मणविखीर्नः मानाजभयः कृष्ठः। न्वाकि त्रथ নাগানা নসয়াধ: সুসঞ্র:।। ধন্•-वि टिव ठजाति माथात्रथास नि-র্ঘিতাঃ। ত্রিকরা স্চোপর্থ্যাস্ত দি 👊 করাপুঃপরক্ষকা॥ জদ্বাপথ শ্চতু-য়াদ জিপাদশ্চ গৃহান্তর•। বুতী भार युर्काभारः भागः भः भारकः মৃতঃ ॥ অবকরঃ পরিবারঃ পাদ-माबः ममञ्जः । शुक्रिकाल जू পু।वृङी कखवा। व्यनाथा नहि ॥ ইতি দেবী পুরাণে তৈলোক্যাভুদ य (भाभूतकात नक्षनाथ्यायः ॥ 🛊॥ रूरः। जद्भर्यायः। भागः २ जन् कुरः २। ইতি ত্রিকাওশেষः ॥ অ-भान । इज्रमद्रः ॥ मृगममः ॥ भार्शभीयंगानः ॥ जात्यपाः । ইতি নেদিনী।। মূগশিরে। নক্ষত্রণ। ইতি হেম্চন্দু:।। বিষ্ণু:। ইতি **তম**্যসহ সুনামস্তোত্র•॥

নাগদঃ পু॰ অগুহায়ণনামঃ। ইতি

भद्रशामा ॥ १९०० की जार

भागीन क्री व्यावस्था उर्श्यागाः ।
स्वीकन २ विष्ठयन ० गृगन ॥
मृगः ६। इज्रम् द्रः ।। याष्ट्रका। इजि
स्मिनी ॥ भुनयः । इजि कि विषदः
।। याष्ट्रक वि। इज्रमदः ॥
गार्गनः भू॰ मदः। इज्रमदः॥ याष्ट्रकः
। इजि स्मिनी ॥
मार्गनकः भू॰ याष्ट्रकः। इजि इनागुनः ॥

भार्गाथनुः भू॰ याजनशतिभाग॰। ইতি
भारमाना ॥

भार्गाथनुक॰ क्ली (याजन॰। ইতি बि:
काश्रामयः ॥

गार्गामतः भू॰ गार्गमीर्घमातः। ইতি শদ্রন্নাবলী।।

नार्गणीर्यः भू अगुहायगमामः

गृगणीर्यं गृका (भोर्गमानी मार्ग

गीर्यो कः मा श्रम्मन् मारम छन्।

गार्गणीर्यः कः । इज्यमप्रीकागः

छत्र ।। उप्भग्रायः। महाः ।

गार्गः । जागृहायगिरः ।। इजः

गतः।। मार्गणितः । सहः ।। हिः

गतः।। मार्गणितः । सहः ।। हिः

गतः।। मार्गणितः । सहः ।। हिः

गतः।। मार्गणितः । स्मा ।। विभिन्न समा ।।

্বৃশ্চিচ্রাশিরবিকো ২বং সৌর:। ৃতি ষ্তিঃ।। #॥ তত্ৰ জাত ফল• যস্য পুস্তিঃ থল্ নাৰ্গনাসে তী-র্ব পুরাসে সতত মতিঃ স্যাৎ। ্রোপ চারী ধৃতসাধুবৃত্তি: সদ্তি কো লগনাভিলাৰী।। ইতি কো-ोशुरीशः॥ 🗱 ॥ व्यथं भार्गणीयः ्डा । वाश्विन मूझशक्क नवाश्ना।-াকরণেমাগশীর্ষস্যবিংশতি দণ্ডা বক ত্রগোবিংশতি দিনা ভাররে শুকু াক্ষে তৎশাৰূ কৰ্ত্ব্য । তব্ৰ নাৰ্গ্ শীষস্য বিংশতিদ গুৰিক পুথন্দিন রয়েতরেষ্ সঞ্জাশনি শুক্রবারেতরেষ্ নন্দা রিক্তা ত্রযোদশীতর তিথিযু क्रमाष्ट्रेग **हन्तु** क्रम् जिथ **क्रमनक**्व ৰ্য পঞ্নতারা এযেতরেষু পূর্বা এন नया ভরণ্যশ্লেষাদু তরেষু नक्षा उर् मुष्ति॰ उद्दिष (जाजनक अर्था) । শুৰানধি দারিণা ত্ পুাওককালে দেবাদিভ্যোনবামণ দত্বা ভোক্তব্যণ । কিন্তু অশ্লেষা কৃত্তিকা জ্যেষ্ঠ। নূলা পূর্বভাদুপদকেম্বপি নবাম ভোজন॰ न कर्बवाः। हन्तु जाज्ञानाम्यको शु-जीकात गाष्ट्र (नवनः। क्या अर्य)। कनावारिश्व हन्मानि (माज्य न्यः। जुङ हाल दिर॰ गर्ब॰ नार्खः काल मर्गक्रा ॥ छल्नु ५ महुः नागक

তারে তিথাব ভদুে সিতত গুলাশ্চন थान अध मन्त्रा । कत्र नक्कं वाद्य त्यार ग তিলান্ হেন নণিঞ্ লগ্নে।! রাজনা-র্ভণ্ডে তারাভেদাল্লবণ পরিনাণনাছ । এক তি পঞ্চ সপ্ত চ দিকাণ দদ্যাৎ পলানিলবণস্থাক্রনশোর ক্লবিপৎ পুত্যরি মরণাখ্যতারাসু ॥ পল্ড लोक्टिक मारिनः माष्टे ब्रांड विमाम-ক।তোলক ত্রিত্য জ্ঞেম জ্যোতি-জ্ঞৈ: মৃতি সমত ।। তত্ত এব দধ্যা-ষ্য সংযুক্ত নব বিপ্যাভিমজ্ঞিত। মন্ত্রনোদেশে গায়ত্রীতি গায়ত্র্যভি-निक्षितः॥ नवनमः वाक्षणानुक्ताः गृशीदा शासीयाद । न्उन शान्ता मञ्जरव भूबाउप्तनाभि मुक्तः कर्खः ব্যং। বৃশ্চিকে শুকুপক্ষে ভদকরণে रित्रणयनाट भूवं भीन धनुष्ट व्रवी **ज्जब भाषारिं। कर्खन्यः ॥ 🕸 ॥** বৃশ্চিকস্থরবৌ শুল্ল চতুর্দশ্যা সৌ-ভाग्र कामः भाषागाकात भिश्लेक (मंदी शृहत्य छम् शि छक्तत्यम् छ। ॥ # ॥ अगुरुायनग्रा भोर्नमामग्रा **शार्त्र** गिरिया শ্ৰীৰ নাবশ্যক ॥ 🗱 ॥ ভবিষ্যপুরাণে। রোহিণ্যা পুতিপদ্যক্তা মার্গেমাসি সিতেতরা । गराता॰ यपि वर्ण्ड अर्र्गुग्र म रैं ३: नम्।।। ইতি क्তाउन्।।

शार्तिकः वि गृगर्छ।। প्रिकः।

हेि निष्वाष्ठिकोगूनी।।

भार्तिकः वि याद्विष्ठः। हेि निष्वाः।

भार्तिकः वि याद्विष्ठः। हेि निष्वाः

स्कोगूनी।। याद्विगीयथः।।

भार्क्षे क भार्क्कान।। धुनो। हेि

किवकद्मक्रमः ।। क मार्क्क्वि।

हेि पूर्गामामः॥

गार्क्षः भः विष्यः। हेि हि हिमहन्मः॥

রজকঃ। ইতি শব্দালা।। নার্জন•।

ইত্যনরটীকাশা ভরত:॥

बार्ज्जन की (पुर्ण्यकामिना व्यक्तिर्यः লীকরণ । মাজা ইতি ভাষা। তৎ পर्यप्रायः। भा क्षेत्र नाष्ट्री २ नाडर्जना ৪ মূজা ৫। ইতি শব্রস্থলী।। না क्रं ७ मार्का १। ই अगत्री हारा॰ ভরতঃ ॥ 🕸 🛭 সুনেকা লে শারীরনা र्ब्बन खनाः। ो गंक्षुः लोजः कः खुः कहु • गण गद्गाहक • । (श्वर • दी छ्ट-সতা হস্তি শরীর পরিনাজ্জনি ॥ ইতি রাজবল্লভঃ॥#॥দেবীগৃহমা क्किंनकल वर्णा। (स्वा गृहस्य यः भूक স·নাজ্ৰবিতি নিভাশ: ৷ স ভবে घनवान् (जीथ) गई मणां जिल्ला যুতঃ ৷৷ দেব্যা গৃহন্ত যঃ শুক্র শোম (यनाम्बाकाररः । खिरमा या रिए वा श्रु॰मः यथाम् ह निरुद्धः ॥ म ल

ভেদীপ্রিতান্ कामान् (দব্যা লোক) ঞ্চ গছতি ॥ ইতি দেবীপুরাণে ইং व्यव्यागः ॥ 🗱 ॥ व्यथं ज्यवस्तित्व মার্জন মাহাত্ম্য । নরসি হ গৃহে-निड्यः यः अभार्जन माहत्वद् । जः মস্ত পাপনিমূক্তা বিফ্লোকে স-মোদতে ॥ ইতি নৃসি হপুরাণ ॥ मः नार्जनस यः सर्याष्ट भूक्यः (क्र-भवानत्य। त्रज्ञ खरमाच्याः निम्जः স ভবেয়াত্র সংশ্যঃ॥ পাণসূনা৽ যা-। তাবস্ত্যকানি স সুখী নাক সাসাদ্য মোদতে ॥ ইতি বিশ্ববর্মান্তর•া। যাবৎ কানি পুৱাহানি ভূনি সংমা-র্ডনে দদুঃ। তাবদ্বর্ষ সহসুাণি শাক-দ্বীপে নহীয়তে॥ জায়তে মন ভক্ত-भः गर्वथर्म **ग**रि छ। भूषि छ। गव**ः**। শু দ্ধা হৃপরাধ বিবর্জিতঃ ॥ ততো ভূজ্য সর্ভোগান্ তীর্বা সংসার সাং গর•। শাক্ষীপাৎ পরিভষ্ট: স্বর্গ-लाकः म र हुछ।। नन्तनः वन माण्नि-**७) (मा**पर ७ हाञ्चरितः मर । नन्दनः ह পরি ভুষ্টে: মন্ ক্রমা ব্যবস্থিতঃ ॥ সর্ব मकान् পরিভ্যন্ত্য মন লোকন্ত গ-हुठि ॥ कृष्ठि बता**रु श**ताप ॥ 🕸 ॥ मुनिविध्यः। यथा । लाजुहाराखः। थानित्यः जल्दाः । प्रानानाको

শার্জার

রক্তলোধু:। ইতি স্বামী।।

कुक्षिंगः। जात्व वासना वानि भोक्ज न॰ रिष्टिक॰ विषुः॥ इंछि জাবাল ব্চনাছিরো বিহাব গাত্র পুকালন তদশকৌ সর্বগাত্র মা-का गार्षु १ वाममा अर्यप्राय । हे ত্যাङ्गिकाहात्रञ्जुः ॥ 🗱 ॥ देविषिक সন্ধ্যোপাসনাভগত মার্জন॰ যথা। ছলে (গপরিশিষ্ট । শিরসে। মা र्जन ऋर्यप्राष्ट्र ऋरेनाः स्माप्तक विनमू ভিঃ। পুণবো ভূ ভূবিঃ স্বশ্চ গায়ত্রী ह उडीयिका॥ अरेपवडा क्र কৈব চত্র্থ নি তি মার্জন । ওঞ্চা-রো ভ্রানি ব্রাস্তি এশ তৃতীয়া চগাংত্রী চত্ত্বনাপোহিষ্কেতিশক जय• । हेटी ह∙ भार्जन• भार्जन किया করণ নিভার্থঃ !! রামাযণ । খাগন্তে মার্জন• স্বর্যাৎ পাদান্তে বা সমা-হিত:। সাপোহিষ্ঠেত্টো কার্য্য মার্জনন্ত সম্পোদকৈ:।। পুতি পুণব সংযুক্ত ফিপেন্স্ ক্লিপদে পদে। व्याज्यास्य १थ वा अर्थापृषीणाः মত নীদৃশ•॥ আপোহিঙেতি সূ[া] ক্তন্য নিষ্কুদীপ শ্বিঃ মৃতঃ। আ পে বৈ দেবতা ছ্নেল গায়গ্রী সা জন শৃত ৷৷ ইত্যাহিকাচারতভু ৷৷ गाञ्जानः शुः (नायुर्कः। इंड)नतः ।। ে⊲ংলাৣ ু ই্তি সূভ্তিঃ ।₁∥

मार्जना खी मार्जन । ইত্য न द्रः ॥

गृद्र कथुनि: । ইতি ছেম ह न पुः ॥

मार्जनी खी न स्मार्जनी । याँ हो दि

ভाषा । यथा । न मानि मी ह ना।

दिनी वान ज्ञार पिन स्वदी । मा
र्जनी कन स्मार भ जा । मूर्ना न स्व

স্তোত্ৰ• ॥

नार्जनीयः वि मार्जनत्यागुः। नार्जुः । ইতি মূজধাতো: কর্যাণ্যনীয় পু-७) (यन निष्ठमः॥ ज ग्रः॥ (नाथन॰ । ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তি:।। নাজার: পু॰ রক্তিত্রক:। ইতিরাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥ বিডালঃ । ইভাসরঃ ॥ থউ।স:। ইতি ছেনচণ্ট্ৰ:।। 🕸 ।। गार्जात न्नानंत रिनारमा यथा। च-ভোজ্য স্তিকা ষণ্ড নার্জারাখুক স্কুরান্। পতিতাপবিদ্ধ চণ্ডাল মৃতহারা শ্র ধর্মবিৎ ॥ সংস্পৃশ্য শুধ্যতে স্থানাদুদক্যা গ্রামশুকরে।। ইতি মার্কণ্ডেয় পুরাণে সদাচারা-খ্যাব:॥ 🕸 ॥ পারিভাষিক মার্জা-রো যথা। দম্ভার্থ• জপতে যদ্চ ত্ত-প্যতে নছতে তথা। ন পর্বার্থ मृष्टि मार्जातः পরিকীর্ত্তিত:। তम्यासम्बाह्यः यथा। ज्ञाह्याः

- Marie Marie

म १७

স্তিকা यथ माजावाय्य अकृषाः। माजानीयः श्र विजानः।। भाषाः । ইতি বাননপুরাণে ১৫ অধ্যায:।। ন।জারক: পু॰ ন্যুর:। ইতি ত্রিকাও **শেষঃ** ॥

নার্জারকণ্ঠঃ পু॰ ন্যুরঃ।ইতিশ্ব तज्ञावनी ॥

নার্জারকর্ণিকা ত্রী চানুগু। যথা। চ।न्था हर्हिका हर्यमुखा नार्काद्र-কর্ণিকা। ইতি হেমচন্দুঃ॥

नार्जात हो। जी हाम्खा यथा। मार्जाद्रकगी ठामूखा कर्गसाहि = ह চ হিকা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

मार्जाद्रगका छी मून्गभगी विष्णवः। ইতি রত্নমালা।।

নার্জারগন্ধিকা জী মুন্দণী। ইতি রাজনিঘণ্ট: ।৷

नार्जात्रो जी कल्ती॥ जलविष्णवः। গন্ধগন্ধলা ইতি খাটাসী ইতি চ ভाষा। उৎপर्यग्रयः। भूजिका २ প্তিকলঃ ৩ গন্ধচেলিকা৪৷ অস্যা €ণা:। বান্তিধারকত্ব•। চক্ষুব্যত্ব•। কফ বাত নাশিত্বগ । ইতি ব্লাজ निर्घण्डेः ॥

नार्जातीयः भू॰ विजानः॥ मृमुः॥ কাযশোধন। ইতি মেদিনী॥ भार्जानः शृ॰ भार्जातः। **त्रन**रगातः कदार ॥

कारामाधनः। इंडि (इमहन्तः॥ নার্জিতা জ্রী রসালা। ইত্যনরঃ । न जू मिर थए मधू मिर्म मंतिहारि ক্তকপ্রাদিবাসিত সভ্জ্য বি শেব:।ইত্যনরটীকাষা ভরত: শোধিতে ত্রি॥

भार्ख्यः भः भूर्यः॥ व्यक्तृकः ইত্যনরঃ॥ শ্করঃ। ইতি মেদিনী। क्षा मार्ज ভাৎপত্তি रंथ। শ্রিমার্ক প্তেন উবাচ। এব• সা নিযভা দেবী চক্রে ভোত নহনিশ। নিরাহার। विवयष्ठ मातिताथिययु मूरिन ॥ ज-তঃ কালেন নহতা ভগৰাণ্ডপনে मृत्। পুত্যফতা नगाउन्। हा कारायगा विद्याख्य ॥ मा परमंग হাকুট তেজসো প্রর সংস্থিত ; ভূনৌ চ স•স্থিত•ভাদ্বৎ জ্বালানা वाजिपूर्ण ॥ उक्ष मृष्ट्रे। उर्छ দেবী সাধ্বসং পরনং গতা। জগা माम् भुजीत्मि न द्वाः शमारामि भागाउ।। यथा मृष्टेवजी भूर्व गयत স্থ সুদুদ্^শা ম•ঘাত• তেজস স্ত আদিহ পশ্যানি ভূতলো। পুসাদ জ্ব পশ্যেশ্য যদুপাতে পুভারে : जकान्दन्या वि । अ । । । भार हिरा मूजानू॥ दी क्राइव डेवाइ

তত্তঃ স তেজস স্তমাদাবিভূতো || বিভাবসু: ৷ অদৃশ্যত তদাদিত্য ৰুগুভামোপম পুভঃ॥ অথ তা॰ পু। गठा॰ (एवी॰ उन्ने) जनतर्भनाम्बरन । পাহ ভাষান্ বৃণুষ্বেষ্ট• বর• মতে। য-নিছসি॥ পুণতা শিরসা সাচ জানু-পাডিত নেদিনী। পুত্যুবাচ বিবয়-ন্ত বরদ সমুপস্থিত।। দেব পুসীদ পুঞাণাণ হুত জিভুবন গম। ৰজ ভাগাশ্চ দৈতেয়ৈ দানবৈশ্চ বলাধি-কৈ: ৷৷ ভল্লিনিক্ত• প্ৰসাদ• ত্ব• অৰু স্ব মম গোপতে। অংশেন তেবাং ভাূা-তৃত্ব• গত্বা নাশ্য তদুপূন্।। যথা মে তন্যা তৃয়ে৷ যজ্ঞভাগভূক: পু (छ।। ভবেय রিধিপাশৈচব বৈলোক্য-স্য দিবাকর।। তথানুকস্পা• পুতা-ণা॰ সূপুসল্লো রবে মন। জৰু পুসন্না-র্ভিহর স্থিতিকর্ত্তা ত্ম মদ্যমোমার্ক-ওেষ উবাচ। তত স্তা নাস্থ ভগবান্ ভাস্করো বারিতকরঃ। পুণতা ন দিতি॰ বিপু পুসাদ সূম্থো বিভঃ॥ সহসাুণশেনভেগর্ক্তে সম্রুষাই মশে ষতঃ। ত্ৎপুত্র শতুনদিতে নাশ্যা-ম্যাশু নিব্ভা ॥ ইত্যুজ্ব ভগবান ভाষানন্তর্জান মুপাগম্ । নিবৃত্তা সাগিতপদ: সংপ্রাণ্ডা থিল বাশ্ভিতা ॥ ততা, রশ্মি সহসাতঃ সুযুদ্ধাথেগ

রবে: কর:। বিপাবতার সণচক্রে रित्रमाञ् द्रापानत्त्र।। कृ हु ठान्मु।यगा-দীনি সা চক্রে সুসমাহিতা। শুচিঃ সন্ধারযান্যের দিব্যং গর্ভ মিতি দি-জা।তত ন্তা॰ কশ্যপঃ প্ৰাহ কিঞ্চিৎ কোপপ্লু ভাক্ষর । কি॰ মারযসি গ-ৰ্ক্তাণ্ড মিতি নিভ্যোপবাসিনী॥ সা চ ত॰ পাছ গৰ্ভাণ্ড মেতৎ পশ্যেতি কোপনা। ৰ মারিত বিপক্ষাণা মৃত্যবে যদ্ভবিষ্যতি ॥ ইত্যুক্ত্বা ত॰ **७**हा गर्छ मू<्रममर्ज नुदाद्रशिः । **জাজ্ল্যমান তেজোভি: পু**ত্যুবাচ ন কোপিতা।। ত॰ দৃষ্টা কশ্যপো গৰ্ক্ত মুদ্যজ্ঞান্ধর বর্চস॰ । তৃষ্টাব পুণতো **ज्दा च**ष्टि ताम शिक्त ताम तार्थ। तर-ख्यमानः न जमा गर्खाखाट भुकारी হভবৎ। পদ্মপশ্র সবর্ণাভ স্তেজ-ना व्याछिषिड्यथः॥ व्यथाउद्रीकाषा-ভাষ্য কশ্যপণ মুনিসন্তমণ। সতো-ৰ মেঘ গম্ভীরা বাগুবাচাসরীরিণী ৷৷ মারিতঞ্চ যতঃ প্রোক্ত মেতদণ্ডণ ज्यारि**ङि । जमा**न्म् त्न मु**ङ रङ ९य॰** भार्ज्ञ ७। अर्ग्रा-ধিকারঞ্চ বিভূ র্জগত্যেষ করিব্য-তি। হনিষ্যত্যসুরা॰ শ্চাষ্ণ যজ্ঞ-ভাগ इत्रानदीन्।। (एव। निभामाऽजि वरहा गगनार जजूभागछ । भुइव

मार्षिक

মতৃল• যাতা দানবা**শ্চ হতৌজসঃ** ।। ততো যুদ্ধায় দৈতেয়া নাজুহাব শতক্তঃ ীসহ দেবৈ মুদাযুক্তো দানবাশ্চ তমাযযু: ॥ তেষা যুদ্ধ মভ্দ্রোর দেবানা মস্রৈ: সহ। **শ** श्राञ्जरीक्षि मनरीक्ष मनञ्ज ज्वनाः ম্বরণা তিমান্ যুদ্ধে ভগবতা মার্ত্ত খেন নিরীক্ষিতা:। তেজসা দহ্য-মানাস্ত ভম্মীভূতা নহাসুরা:।। ত-छ: शुरुर्य मञ्च॰ शाशुः मर्खि हि-(वोकमः । उष्टेवुः (खन्नमाः (यानि মার্ভণ্ড মদিতি ভথা ॥ স্বাধিকার॰ **७७: शाभू** र्यञ्जलागाः म भ्वंदर । ভগবানপি মার্ত্ত: স্বাধিকার মথাকরে। একদম্ব পদ্মবন্ডামান ধ শ্চোদ্ধ পি রশ্মিভি:। বৃত্তোগ্নি পিও সদৃশে: দর্মে নাতিয়,ট• বপুঃ ॥ ইতি মার্কণ্ডেযপুরাণে সূর্য্যমাহা-ব্মে নাৰ্ভণেৎপত্তি নামাধ্যায়ঃ!৷ মার্কণ্ডবল্পভা স্ত্রী স্বাদিত্যভক্তা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। সূর্য্যপত্নী চ ॥ পু॰ শরাব:।ইতি শব भार्डिक: রত্নাবলী।। মৃত্তিকানির্মিতে ত্রি।। नार्पद्धः क्षी भडनः। इंडि हाता-वली।। मृष्य्वाम्तक जि ॥ मार्फिकः जि ग्रम्कवामकः। ज

।। शाहितः ७ ঔषितः । ३७ भयत्र ज्ञावनी ॥

यार्प्यः क्षी शतपुर्यशुर्ण्या शी-**जातृष्किः। मृमृजा।। यथा। भार्ष्य**॰ কোমলস্যাপিসংস্পাসহভোচ্য-তে। উত্তমণ মধ্যমণ প্রেয়ক্তণ কনিষ্ঠ-ঞ্চেতি ভগ্নিবা।। উত্তম• যথা। অ-ভিনব মালিকামিয় সাশ্যন্বর্ণ-শিরাধিকা বিশিষ্ঠো নঙ্গসুনপট-**णः** रताशि काम्रो उरन् छवा छन् रत्रव त्र तुगात्रीया। स्वातः यथा। विख॰ থনিঙে তনুবাসসোপি চীনস্য পী-নস্তনি সঙ্গমেন। লিপ্তেন তল্লোহি-ত চন্দনেন মূৰ্ত্তি বিদ্না স্থি লো-श्विनी ।। कनिष्ठ यथा। तम मुपाक्तत जामार मामारन मार-थान निलीन नीलालक हक्षत्रीक। ক্ষণেন পদ্মা মুখপদ্ম মাসীৎ ত্ত্বি-ষা রবে: কোমলযাপি ভামুণা ই-ত্যজ্জ्वनी**वम**िः॥

नार्ज्यः भू॰ वर्गमञ्जरकाि वित्मयः। याधुरका नार्मव कथ्छ काक्या हि॰ গুকাদযঃ। ইতি জটাধর:॥ नार्यः शु नार्हिताको (मुक्षः। इंडि

(इमहन्द्रः॥ गात्रियंगाकः। ३७५-মুর্ট্রীকাষাণ ভরতঃ।।

भगायः । भोत्रजितः २। इठामतः । माविकः श्रुः नातियः । 🟋

744

शालाको

त्राजनिर्घणः॥

मार्छिः जी मार्जन । इंडामद्रः॥ रिजनमुक्तन । यथा । रिजन मन्न यः দক্ষের ন ভবেৎ বাহুসঙ্গত । সা-बार्श्वः भृथभञ्जाक्। बङकारमे भु कीर्खिंगः॥ ইত্যাशिक्यक् ॥ সাল ল্লী ক্ষেত্র । ইতি মেদিনী।। কপট•॥ বন•। ইতি ছেমচন্দ্র:॥ মাল: পু॰ জাতিবিশেষ:। ইতি (पिरिनी।। म ह त्स्रहकािंकः। यथा। মালা ভিলা: ফিরাতাশ্চ সর্বেপি স্লেছজাত্য ইতি ।। জন: । ইতি চ (इयहन्तुः ॥ (मभविष्मवः। ज ह रम्मिनीभूत्र भुरमरम माणज्ञिरज्ञ श्राजः ॥ विकुः। यथा। मा॰ लः ন্দ্রীণ লাতীতি নালো বিষ্ণু: তণ অততীতি মালতী। ইতি মালতী শব্দীকাষা ভরতঃ।।

নালক প্লী স্থলপদা। ইতি জটা। ধরঃ।।

নালক: পূ॰ নিম্বৃক্ষ:।ইত্যনর:॥ নালকা জী নাল্য ।ইতি শব্রত্না-বলী॥

নালকৌশ: পূ॰ রাগবিশেষ:। তস্য নানান্তর• কৌশিক:। স চ হন্ম-মতে বড়াগাণা• নধ্যে দ্বিতীয় রা- মালচ

5.

ष्मगु बाजिः मम्मूर्गा उव मध सत ক্ৰমঃ য ঋ গম প ধ নি। অস্য गृह• यु अवतः। **भ**त्रमृष्ठो द्राजि-শেষে গান সন্যঃ। রাগনালাযা-**মস্য স্বৰূপ•া পাটলবৰ্ণপূৰুৰ:।** नीलश्रतिहरः। यश्चित्रतः। योदन-नर्गतः ज्ञीजिः मर् हाम्यकोत्त-কাবিত: ৷ শত্মস্তক্মালাগালো **२**থবা বৃহন্তানাল/গল:। অস্ রাগিণ্য: পঞ্চ যথা। টোডী ১ গৌরী ২ গুণকরী ৩ খস্তাবতী ৪ কোকভা ৫। यमगाष्ट्रीभूषा यथा। मार्कः ১ (भवाषः २ वष्रः भः ० भवनः ८ চন্দুক: ৫ নন্দ: ৬ ভ্রমর: ৭ খুখর: ৮ অত্র মিষ্টাঙ্গোপি পাঠ:। ভর-তমতে তস্য রাগিণ্য: পঞ্চ যথা ৷ भोत्री > म्यावजी २ (म्वमानी ज খন্তাবতী ৪ কোকভা ৫। তন্মতে वाश्वी न्या यथा। गाक्वादः) मुकः ২ নকর: ৩ ত্রিঞ্ন: ৪ সহান: ৫ শক্তবল্লভঃ ৬ নালীগৌরঃ ৭ কা-নোদঃ ৮। অইপুগ্রভার্য্য যথা। धनामीः > गानमीः २ बगउमीः ० मुर्घात्रायी ८ पूर्णा ৫ गाञ्चात्री ७ ভीगभनाभी १ कारमाही ৮। इंडि मञ्जीउमाञ्च ॥

गः হেন্দ্রে বা কণ্ঠান্দির্গতঃ। । নালচক্রক প্লী সক্থ্যকপর্বসন্ধিঃ।

ر المعز

मानाइँठाकि इंडि ভाষা। इंडि 🍴 मद्रम्का ॥ মালতী স্ত্রী ৰনাম্থ্যতপুয়লতা। **७८ १**र्यग्रायः । जूमना २ काजिः ०। ইত্যনর: ॥ সুমনা: ৪ জাতী ৫। ইতি ভরত:।। অস্যা গুণাঃ। কফ পিত্ত মুখরোগ বুণ ক্রিমি স্বষ্ঠ না **শিত্ব• । ইতি রাজ**বল্লভ: ।। তস্যা উৎপত্তির্যথা।আদ্যাশক্তি কবাচ ৷ অহমেত গ্রেখা ভিন্না ডিগ্রামি ত্রি-বিধৈ গুঁ শৈঃ। গৌরী লক্ষীঃ স্বধা-চেতি রন্ধ: সত্ত্ব তমো গুণৈ:॥ তত্র গত্বা তথা কাৰ্য্য• বিধাস্যন্তে চ ভাঃ সুরা:। নারদ উবাচ। শৃণ্বতা মি-তি তা॰ বাচ মন্তর্জান মগান্মহ:। দেবানা বিম্বযোৎফুল্ল নেত্রাণাঞ্চ **उमा न्मा। उठः मर्दिमि (उ (म**रा) গত্না ভদ্বাক্য চোদিভাঃ। গৌরী• লক্ষী• ষধাঞ্চৈব পুণেমু ভক্তি ভৎ পরাঃ ৷৷ তা স্তথা তান্ সুরান্ দৃষ্টা পুণভান্ ভক্তবৎসলা:। বীজানি পুদদু স্তেভ্যে ৰাক্যানি জগদু তথা ।। দেব্য উচুঃ। ইমানি দেবা বীজা-নি বিফুর্যভাবতিগ্রতি। নির্বপন্ন ত তঃ কাৰ্য্য ভৰতা নিশ্বি যেষ্যতি

।। নারদ উবাচ। ততঃ প্রহুটাঃ সূর

নিদ্ধ সাধাঃ পুগৃহ্য বীলানি বিচি 🐰

ফিপুশ্চ। বিন্যারিকা ভূমিতার ৰ যত্ৰ বিষ্ণু: সদা ভিষ্ঠতি সৌ^ত্ৰ वृत्तिः॥ नात्रम উवाह । क्लिक्षः স্তত্ৰ বীৰেভ্যো বনস্পত্য স্ত্ৰযো 🗉 ভবন্। ধাত্ৰী চ মালভী চৈৰ তুল**্** চ নৃপোত্তন ॥ ধাত্যুক্তবা মৃ থাত্রী মা ভবা নালতী স্মৃতা। *৫* রী ভবা চ তুলসী র**ল: স**ত্ত্বত গুণা: ॥ ইতি পান্মে উত্তরখ ১৪৯। ১৫০ অধ্যাযৌ।। 🟶 ॥ यूव 🧦 ॥ काठमानी॥ विनवा।। (कारार् স্রা।। নিশা।। নদীবিশেষঃ। ইতি (रगठन्तः॥ **नावजीजी**त्रज्ञः **देक्शः। इ**न्डि બુ• व्यव्याः ॥ নালতীতীরসম্ভব ল্লী খেতটক ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। মালতীপথিকা **স্ত্রী জাতীপ**র্থী ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। गान**ीकन• क्री बाठीकन•। ই** 🤊 রাজনিঘণ্টঃ ॥ সালয়ঃ পু॰ চননেবৃক্ষঃ। ইতি তি **७ (नयः ॥ मनगमञ्जीक्ति जि ॥** गानवः भु॰ जवस्तिष्मः। मान € **३**७ रिन्ती जाया। ३७ (२२०) ॥ भागविष्णयः। न ह यपुर्णाः মধ্যে পুথমরগোঃ। মত ভিরেট্ড

ार्गा १व॰। यथा। आस्ते मानव ार्गन्तु खर्जा मलात म॰ द्धिजः। विताम खम्य मण्डादि वमञ्ज छर्न-अतः॥ हिल्लानम्डाथ कर्नाहे अ-अतागाः भूकीर्खिजाः॥ जम्य स्का-श्वागाः मूक मुर्जिः स्वन्नवान् भूम-शः। मस्रीजमानी भूविमन् भु-राख मानाथरता मानवत्रागताकः। हिल मस्रीजमानी भ्वामन् भु-राख मानाथरता मानवत्रागताकः। हिल मस्रीजमानि विव् । हेिज ताक नर्वन्छः॥

नती खी किन्न पृष्ठे तृकः। यथा।

पानि ने पृर्ग भू छी ह वानाकी कि

नथा तिनी । इंडि ने कि हिनुका ॥

वानि ने विष्ण यः। ना ज्ञानव वाने

र्गानि ने विष्ण । श्रानु यो नानि ने

वानि कि ति कु छा उथा। ज्ञान्य वानी देखा है हा नानि वान तिन् ।

है नाः॥ है हि हा बी छः॥ न जान्य हा ति वानि छ।

भानि । यो । न नि छ।

स्था। ने वा विष्ण न स्था। जिम्हाः च का नि वाना

विथा व द छी छन्। कि यहिः। मान्

व द कु मह छला निषमा (नाना मृतू

व द कु मह छला निषमा (नाना मृतू

र्मानिका भुिष्ठी ।। उन्नागान नम्या यथा। इत्माथाना नमात्र जा या यथा। इत्माथाना नमात्र जा या यद्या महा न्य न्य । रम्या
ज्य वृद्ध निज् । भानभी ना महा।
इता ।। जिल्हा गाकात्री ही लिका
हिन कन्यांगी भ्रती जथा। ज्यवात्री कान जा ह रगोती कहात्र शाहिंछा ।। माध्वी मान मी ना ही ज्शानी निष्ठ छ। जथा। ना या इत्र त्र नित्र ज्याः भुगाय छ ह जू प्रमा
।। इत्र मनी जहार साम तहः।।

गाना जी (गुगी। उৎ भर्ग) यः। ता किः ২ লেখাত ততী ৪ বীচী ৫ আলী ৬ আবলিঃ ৭ পড়িঃ ৮ ধারণী ১। ইতি হেনচন্দু:।।।।। নৃদ্ধি ন্যন্তপুত্ৰ माम। व्यनाजाशुमातार। एए-**श**र्यप्रायः। भानप्रः २ मुक्**। ३ छ**प्रवः ।। मानिका ६ मानाका ६ मानका ७ । ইতি শব্রত্নাবলী।। গণনিকা ৭ গুণান্তিকা ৮। ইতি বরাহপুরাণ ॥ সা ত্রিবিধা যথা। নালা তু ত্রিবিধা দেবি বর্ণাক্ষ পর্য ভেদত:।ইতি মৎস্যস্ক্রবচন ।। 🗱।। অথ মালা-নির্ণযঃ। তত্র করমালা। সন্ৎজ্মার नः हिष्ठायाः। जर्जनी मध्यानामा কনিষ্ঠা চেতি তাঃ ক্রমাৎ ॥ তি-সোজুল্য জ্রিপর্বাণো নধ্যমা চৈক-

भिर्दिका । भिर्देखयः स्थापा । सिकः (द्यां भक्तुरय् ॥ क्रमभार । च-নামা মধ্য মারভ্য কনিষ্ঠাদিত এ-व ह । ७ जॅनी मृल भर्य छ • मण भर्व मू স জপে ।। তথা। অনানা মূলনা-রভ্য কনিষ্ঠাদিত এব চ। ভর্জনী **मध्र**पर्याच महेभर्तम् म कालट ॥ এতদ্বচনন্ত অপ্টোত্তরশতাদি বিষশ 11 # 11 मिकि विषय भूनः। 🗐 कत्न 🛭 । ज्यनामिका जयः भर्द किनश्राप्ति जि-পর্বিকা। মধ্যমাযাশ্চ ত্রিত্য 🖰 🤇 र्जनी म्ल পर्वि।। उर्जन,र्गु उथा मक्षु या बल्ट म जु भानक्ट। হ সপার নেখরে। পর্বব্য মনামা যাঃ পরিবর্ত্তেন বৈ ক্রনাৎ । পর্বত্র ॥ यः मध्याया खर्जात्यकः मनाहात्र ।। পর্ব দ্বযন্ত ভর্জন্যা মেৰুণ ভদ্বিদ্ধি পার্বতি। শক্তিমালা সমাখ্যাতা नर्व उख भूमी शिका।। उथा। जना-না মূলনারভ্য পাদক্ষিণ্য ক্ষেণ্চ । मध्यामा मृत्रभर्याख मञ्जल मंज्ञ (१९८१। 🗱 ॥ 🕮 विक्राया सयः वित्न-यः। অनामाया मध्याया म्लागु থ ছব ছব । কৰি ধাবা চ ভ জন্য खयः भर्व मृद्धसदि ॥ जनामा मध्यः भागाक (नकः गाफ़िट्य भूड। পুদক্ষিণ জনাদেবি ভাগেপিরসূ

म्ह्यी ।। इंडि कामन दहनार। গুমালাতজে। অনামিকা দ্বয় প शारिकग्र करमग जु। उजनी मृह পर्याष्ठ॰ कत्रमाला भूकीर्खिजा ॥ व নিষ্ঠা মূল মারভ্য প্রাপক্ষিণ্য ক্ষে চ। তজনী মূল পর্য্যন্ত মন্ত্রপর্স্ সং জপেৎ ॥ ইদমপি অস্ট্রোর শতা मि विषय । # ।। अङ्गी न विषु श्री **छ किक्सिन ऋक्षि ७ जला। अञ्चली-**ना॰ विरयागाइ ছिप्नु ह जुवछ जनः ॥ यन। वाशि। यङ्गल। गुरु यङ्गिष्ठः यब्ब्रिष्ठः (नक् वद्यानः । शर्व अक्षियु यञ्जश्र ७९ मर्बः िद्भुषः ভবেৎ॥ গণনা বিধি নুক্ল্ব যো জপেত্তজ্জ-প॰ যতঃ। গৃহ ভি রাক্ষসা স্তেন गन्दर मईया वृद्धः। ७ बाक्षु नि कः भ॰ क्ष वन् माञ्चृशक्षाक्ष् विक्ति कर्मि । नाक्राक्षेत विना कर्य कृष्ठ छ एक ल ভবেৎ।। বিশ্বসারে। জপসংখ্যা তু কত্তব্যা না সংখ্যাত জপেৎ সুধী:। ন সংখ্যা কারকস্যান্য সর্ব্ ভব্তি न्युन• ।। তত্তো। **ङ्**षरय इस्त भारता-প্য তিঠ্যক্ কৃত্বা করাঙ্গুলী:। আ-हान्। वाममा श्लो निक्तित्व मना জপেখ্যা ইতি করনালা ॥ 🗱 ॥ জ-পাৰ খ্যায়া নিষিদ্ধ দুব্যনাহ যাম-ल । नाक्षि इंड शर्के वी नू श्रातेन

नं ह शृह्य किः। न हन्तरेन म् खिक्या क्षम मन्यान न कात्राय ॥ विश्वि मुत्रभारः। लाका अवीर जिन्मूत्रांगाः मयक कदीय कः। এতি निर्माय छि काः बनमःथाड कात्रयः।। #॥ ष्य्य वर्गगावा। मन क्रनादा। क মোৎক্ৰুগতৈ মালা নাত্কাৰ্ণি: ক্ৰ ्राक्टेकः। **স**বিन्দুरेकः माष्ट्रवरैनं ब्रस्ट ৰ্যজন কৰ্মণি ॥ আদি কুচুটুত্ পুযু শবোষ্টো বর্গা: পুকীর্ত্তিতা:। তদ্মথা ।অকারাদি বণান্স বিন্দৃন্ পুত্যে-ক কৃত্বা শত স স জপ্য অকারাদীনা ৽ 🛚 वर्गानाः कवर्गानीनाक्षास्त्रिनः वर्गः ना न्यातः क्षा भ्व गृहार्ग्डामया छेवातः नद्ध जभः कार्यः। व्यत्न भुकात्रभ অষ্টোত্তর শতসংখ্যোজপে। ভবতি। चार्रिकान्द्रभ वाक्ष्यः। **उथा। मि** न्तः वर्ग गृह (य) शन्हा ग्रञ्जः करशबू थः । व्यकातारि क्षकातान्तः विनर्गुक विভाव्य ह ॥ वर्गनाना जनाश्यांजा অনুলোম বিলোমত:। ইতি নারদ বচনাৎ। বিশুদ্ধেশ্বরে। অন্লোম বিলোমেন বগাপ্তক বিভেদত:। ম-স্ত্রেণান্তরিতান্ বর্ণান্ বর্ণে নান্তরিতান্ नन्न्।। अर्यप्रावर्गनयी नाला नर्बछ ख भुतानिनी । #। मानिनीविक्य সুত্র নিয়ন:। অন্ত বিজন ভাসনান "

ভূৱগী সূৰোত বৰ্ণো**জ্জলাণ আরো**-হ পুতিরোহতঃ শতম্যী বর্ণাষ্টকা-(शेंड्रा॰ II ইंভ वर्गमाना II # II অথাক্ষমালা। তত্ৰ মালাযা• ম্ণি নিৰ্ণয়:। পদ্মবীজাদিভি মালা বহি-যাগে শৃণ্য তাঃ। কৃদ্যক শৃত্ব পদ্মা-क शृधनीयक भोक्रिकः ॥ मुर्हि-कि मंशिद्रोज्ञ क मृदर्श विक्रोग खथा। वाङ्गाञ्च अनग्रेन क गृहस्माञ्च-भाषिक।।। #।। अङ्गी गननाएकः भर्बगुष्टे खा॰ ভ:वट । भू मकीरेव र्ष-मखनः माजः माङ्गः मश्रुकः ॥ भूवाः লৈ মণি রবৈশ্চ দশসাহসুকা মতা । তদেব স্থাটিকৈ: প্রোক্ত মৌক্তিকৈ वंक गुठारा ।। भगारिक पर्म वकः न्याद भोवर्गः काहि क्राडा थ-শগুন্থ্য কোটি শত ক্ষুক্তি: স্যা-**एनन्डक• ॥ अर्द्ध र्द्धित्र**िठा भाषा নৃণা॰ মুক্তি ফলপুদা। কালিকা পুরাণে। কদুক্তি র্বা যদি জপেৎ इन्द्रारेकः मुर्गिदेक खथा। नान्यमः (४) भुरयाकवाः भू अज्ञीवामिककः य ॥ यरानाजु भुगुक्षी उ नावायाः खन কমণি। তৃস্য কামঞ্চ মোক্ষঞ্চ ন मनाठि शि्यक्षत्री ॥ म्खमानायाः। भागान श्रुति माना (द्धिया धूमावडी বিষৌ। নরাঙ্গুল্য স্থিত। মালা গুথিত।

नर्वकामना ॥ नाउडा मःग्यन कार्यड রক্তেন বাসসা প্রিযে। সদা গোপ্যা পু্যত্নেন জনন্যা জারবৎ প্রিযে।। 🐉।। কাননাবিশেষে তু। পদ্মাকৈ রিছি-তা মালা শতুনাশকরী সভা। জ-শগুছिन्यी नाला সর্বপাপ পুণাশি নী।। পুত্ৰজীবফলৈ: কুণ্ডা স্বৰুতে পুত্র সম্পদ•। নির্মিতা রূপ্য নণিভি र्जभगालाञ्जिञ्जूमा ॥ भुवारेन वि-श्रिजा माला भुगरहर विभूल धन । # ॥ रेज्ववी विन्धायान्त वादाशी ज्ञ । সুবর্ণ নণিভি মালা• স্থাটি কী শন্ধ নিৰ্মিতা। পুৰালৈ রেব বা वर्गार भूधकीय विवर्द्धार्य । भः माक्रिक्व कृताक निन्ताक्ष विरण ষতঃ।। 🕸।। ত্রিপুরা মন্ত্র জপাদৌ তু: রক্তচনদেনবীক্ষাদিভি রতিপুশস্তা। তথা চ তম্বরাজে। স্বক্তচন্দ্রমালা-जु ভागना (गाक्षना **ভ**वে**८।** ज था। विकाय ज्नमी भाना भक्रमरेख গ্রাননে।। ত্রিপুরাযা জপে শস্তা ক मारेक त्रक्र मरिनः। 🗱। व्यभातीकल्ल । क्रारेकः: मिकिन ऋक मधी यः भू জপেৎ প্রিযে। স দুর্গতি মবাপ্নোতি नियुन छम्। उड्डिमः ॥ कानिका हि নমন্তা চ ত্রিপুরা তারিণী তথা। এতাঃ সর্বান দুষ্যন্তি তপে ক্রাক

नानवा ॥ मिवा तिव भुक्छवाः क माक मानगानि ह। भूतकर्गाम्रङ চাত্র দ্বণস্ত ব্রাননে ॥ নহাশল্মযী भावा भीवभात्रश्रख विश्वो। मृनवाः টান্থি খণ্ডেন রচিতা জপনালিকা।। नरामञ्जनयीमाना जात्राविन्ता क-পে প্রিয়ে। কর্ণনেত্রান্তরালান্তি মহা শःइः পুकीर्खिङः॥ 🗱॥ मृगि नियमस्र मुखमानायाः॥ जात्रान् मम्बनाः गि ना जिङ्ग क्**मा** निष्ठ। की है। पि जि त्रपृष्टानि न कीर्गानि नवानि वि ॥ #॥ তথা গৌতমীযে। পঞ্চাশল্লিপিভি র্মালা বিহিতা সর্বকর্মসূ। অকারা-**मि ककात्राष्टा वर्ग माला श्रुकीर्जिङा** ৷৷ ক্ষাণ নেৰুমুখ তত্ৰ কল্লযেনুনি अखग। यनगा मर्व मखानाः कनः नर्व मम्बिरः॥#॥ हामू शाउट्य। नि-ত্যুণ জপণ করে স্বর্য্যাৎ নতু কাম্য ম-(वाधनाए। काम। निश करत्र अर्यमए নালাভাবেপি সুন্দরি॥ তেন ্মা-नायाः भाषानुः ॥ 🕬। कागना (ज्र তু গৌতমীযে। সনাসেনাক্ষসূত্রস্য বিধান নিহ কথ্যতে। পঞ্চবি॰শতি ভি থোক। ত্রিংশন্তি ধন সিদ্ধযে॥ मर्वार्थाः म्थवि मञ्जा भक्षत्माजि. চারকে। পঞ্চাশন্তিঃ কান্য সিদ্ধিঃ म्याङ्या इज् क्लोबः॥ व्यक्षाङ्ब

7/207

শতৈ: সর্ব সিদ্ধি ক্তা ননীবিভিঃ । 🗱 ॥ অথ মালা সংকার:। তত্র जन ब्लाबीय । कार्लाम मञ्जवः সূত্র পর্য কামার্থ মোক্ষদ । ত विर्भुन्मु कन्रां निर्मि उक्ष मूर्णाः ভন• ৷৷ বদা ৷ শৃঙ্ল• রক্ত• তথা কৃষ্ণ• পউসূত্র মথাপিবা।শাস্তি বশ্যাভি· ॥ ठादिय (नारिक श्रयं) जत्ययू ह ॥ भूक्र রক্ত• তথা পীত• কৃষ্ণ• বর্ণেষু চ ক্র मा८ । मर्खिषा स्मय वर्गानाः ब्रक्तः সর্বেপ্পিতপুদ ।। আশুমেযু তথা टिव॰ द्रकः नर्व म्निष्किरः। विद्याः ত্রিগুণীকৃত্য গুথযেৎ শিল্পশান্তভঃ।। একৈক নাতৃকা বর্ণ সতার পুর शन् मूथीः। मिन नामाय म्रावन गुष-(यम्य नवा जः ॥ तुन्त गुन्तिः विधायः থং মেৰুঞ্চ গুছি সংযুত্ত। গুথবিত্বা পুরো নালা• তঙঃ সংস্কার মার-ভেৎ ॥ ৠ। কস্চিন্তে মূলবিদ্যুষা পূথ্যেৎ। তথাচ একবীরাকল্পে। **নাত্কা নজতো গুন্থি• বিদ্য**যা বাথ कात्ररय । भूवर्गामि खरेग बीनि गु थायः नाषाकाखगः॥ तुक्कगुष्टि• उ (जा महुरामाग्रमाम नथात्रिवा। कः वरत्नाववधीयाचाना शानभन्नाय ণঃ ৷৷ সর্বশেষ ততো মেৰু স্ত্রম্ব ननविजः। गुष्यवजात्र यात्मन वधी

ঘাৎ সাধকোত্তন: ॥ এবং নিফ্লান্য (मरवि**न भु**जिष्ठाक नमाहरत्र । 🕸 🛚 । গৌতমীয়ে। মূথে মূথঞ্চ সংযোজ্য भू(ह भूह नियाबत्य । भाभूह সদৃশী মালা যদ্বা সপাকৃতি: শুভা मुनि मख्यः। অশ্বত্পপঞ্জ नवेकः পদ্মাকারস্ত কার্যেৎ 🗓 তন্মধ্যে স্থাপযেমালা নাত্কা ন্ল মূচরন্ । क्लालाय शक्ष्मात्तान जापाडा-তেন সঙ্জলৈঃাাসদ্যোজাতস্ত। ওঁ नाम्या बाउ॰ भूभम्यामि नाम्याका-**जाय रेव नमः। ज्य २ ज्य २ नामि** ভবে ভজম্ব মাণ ভবোদ্ভবায নম:॥ **इन्त्ना ७ कर्न्** देव सीमाप्तरवन थ-र्यायः । वामानव मञ्जन्त । उँ वामान-वाय नत्मा (काष्ठाय नत्मा कृताय नमः কালায় নম: কলবিকরণায় নমে৷ ব্-नविकत्रभाय नरमा वन नुमथनाय नमः नर्बञ्जपमनाय नामा मानामानाय नमः ॥ ध्रायखामयादार। व्यायात ম ক্রস্ত। অঘোরেভ্যে ২থযোরেভ্যে ঘোর ঘোরতরেভ্য: সর্বত: সর্ব স-(इंडि)। नमार २ स क्रुकाल छ।: । लिभारवंदः भूकायन जु। उरभूक्य नजरा ७ उ९ भूक्याय विद्याह न-शास्त्राय धीमशि उत्माकपुः भुका-

ं प्रयास । मञ्जायस शक्समारमय शु-ত্যেকন্ত শত• শত•। মে**বঞ্চ ন**জ-(यहित मन्ना व मं ज॰ मं ज॰।। मञ्च छ । ७ देगानः मर्व विष्ठानानी यतः সর্ভূতানা বুকাধিপতি বুক্লণোধি পতিঃ শিরে। মে ২ন্ত সদাশিবোঁ। भुज्यक्क मक्ट मक्ट । इंडिया। তথাচ তৰৈবা পুতে চক' মন্ত্ৰবেমন্ত্ৰী शक्ष्यन मक्ट. मक्ट्रा उपा **५**(गी-**ज्ञीरय नम्माय मान्ना मिक्**डा । পঞ্চনেনৈৰ স্কেন শতান্যনেন সজ (य८। इंडि मर्मनामानायामा भेडे-ৰূপ:। তত্ৰাবা**হ্ যৰেদেব ব্যথা** विভव विखरेद्रः। भाषायाः भाग भूः তিষ্ঠানন্তর• দেবতাং প্জযেৎ ৷ তথা **भनश्क्षभाद्म । भ**न्कृरिकाद॰ दूरिश गाना॰ उ९ भागा॰ छत्र साभाय । म्नमस्त्र जा॰ माना॰ **প্**कराष्ट्रिक সত্তম।। বারাহীতক্তে। মালে মালে गहामाल मई उत् यक्ति। हजू र्दर्भ स्वृधि नऽ उरमात्म निष्किर। ভव ।। गागविजािका क्वा तक्ष्राः अमहराष्ट्र। इंजि मकित्यस्य । #॥ दिस् विषय ज् यामाला । वायुवक তথা बन्धी मकारि मानिका उठः ৷ ভেন্তা হৃত্য বৰ্ণান্তা নজেণানেন পুছবেৎ ॥ मञ्जरमञ्ज मञ्जर क

নেণােৎ ক্রম বােগতঃ। তথৈব মা-**ज्कावरेर्ग मंजरवजास मजवि** ॥ (यागिनीजस्य। रहाम कर्म जनः स-র্য্যাদেবতা ভাবসিদ্ধণে। অস্টোভর **শত**॰ छ्वा मन्त्राजाज्ञ । विनिःक्रि-(भर ॥ (शामकर्षा) में करण्ट हि खनः बन माहत्वर । 🕸 । नान । मखः अल्पाञी कम्माराम विध्नरय ।। क-म्मना मिषाशानिः म्याकृनन वङ् দু: খদ॰। শব্দে জাতে ভবেদ্যেগঃ কর ভুষ্টা বিনাশিকা।। ছিন্নে সূত্রে ভবে-মৃত্যু তমাদ্মত্নপরে। ভবেং। জপা-ख कर्नरिंग वा छेहरिंग उथा नु (मर्।। वु॰ भारत मर्ब ज्ञाना॰ मर्ब-সিদ্ধি পুদা মতা। তেন সভ্যেন মে সিন্ধি দৈহি মাত নমো হস্ত তে।। ইত্যুক্তা পরিপ্র্যাথ গোপধেঅনু-তো गृशी #। नाला मःकात्रम् नि ত্যতা নাহ কৃদ্যানলে। অপুতিষ্ঠিত भागां चि यांखः क्रशंकि (या नतः। সর্ব• ভদ্বিফল• বিদ্যাৎ ক্রুদ্ধা ভব-তি দেবতা ।। # II कामनार**ः ए** ज् श्रक्त नियम:। भौ उनिया। एर्ज न। कुष्ठ (याणिन শञ्हादेन मूखन । অঙ্গুষ্ঠ নধ্যনা যোগান্মন্ত্র শিদ্ধিঃ সুনিশ্চিতা ৷৷ অঙ্কুপ্তানানিকা যো-गांदूहारोष्ट्रभारतं नत्व । ५३%।

শালা কনিষ্ঠা যোগেন শত্নাণ নাশন ম-ত ।। বৈশক্ষাল छ ।। दिनाम्भायन **मःहि**जायाः । व्यक्ष मध्यान्।क हान्यस्य মধ্যতঃ। ভর্জন্যা॰ ন স্প্লেদেনা॰ মু किए। गगन कगः॥ 🗱॥ बीर्ल मृत्व भूनः সূত্র• গুথিয়ে। শত ख्राপर। भूमामार পতि उ। इसार मजमारी। ভর জপে ।। জপে নিষিদ্ধ সংস্পর্শে कानविदा राषानिजः। हिमिनाः-ষ্টোভরশত জপ: কার্য্য:। করভুষ্ট हिन्दर्गाञ्चन।ज्ञाद्भाद्भाः भुकाद्भाञ्जनः वागगकन्नकाम । ज्उम्बारिका॰ পূরা॰ সমাপ্য তত্র প্রযেৎ। গণেশ म्र्ये। विक्रीणान् पूर्गामावाश मजावि ।। পঞ্চগব্যে ভতঃ ক্ষিণ্ড। ছ্লৌ মন্ত্রেণ নত্রবিং। তমাদুৰোল্য তা॰ মা-লা॰ স্বৰ্ণপাত্ৰে বিধায় চ। পায়ো দধি ষ্ত কৌদু শর্করাদ্যৈ রন্ক্রমাৎ ॥ তোষ ধূপান্তরৈ: কৃত্বা পঞ্চামৃত বি-बि वृद्धः। कनारविव म जाना छ।-शायही जत्म काल ॥ उठ मन्त्रनानी পদ্ধি কন্ত্রী সন্ধুনাদিভি:। তানা-লিগা ক্লৌ মজ নষ্টোত্তর শত জ পেৎ ৷৷ তস্যা নবগুহা পৈচৰ দিক্ পালা॰ চ পুপ্জবেৎা ততঃ সংপ্ল্য ष्ट रूक शृशीयात्रालिका मुखा•े॥ पर राजां नुमुक्ष श्राह्मा द्वित न

দর্শবেৎ। ভূত রাক্ষসবেতালাঃ সিদ্ধ गञ्जर्ब हात्रगाः ॥ स्त्रस्ति भुक्षे ययाः खमाहुन्छ नमाहरद्र । ইতি व्यक्तमा-লা। ইতি তন্ত্রসার: ।।#।#।। অপিচ । विष्ठाधनारणात्रा यक्का विव्धान्त রাক্ষসা:। ভূতানি কিমরা: সিন্ধা: প্রেভাষ্ট চারণাদ্য:॥ হরম্ভি জপক-वात्रिष्ठ यानि जानि ह नांत्रहे। वाः ज्की किष्ठिक्कीन वाम्वामाविक र्व्हाल्य ।। 🛊 ॥ वृन्ता देवी क्षनभयी जूल-नी काष्ठ मञ्जवा। रुखात्रु विभयी देश-भी मर्जगृष्टिमशी जला।। जमाकान्।-ক্ষ কৃদাক পদাবীজভবা ২পাথ ! शाबीभू धन्नी वक्तेल स्थाला या भिद्र-কীর্ত্তিতা। মূক্তা মণিন্থী রৌপ্যা म्नां हिकी रिक्मी उथा ॥ जनकर्ममू मर्खिषु हाक्रमाना भुकीर्खिञा। # । क्क मञ्ज बार्श माना वृन्ताद्वग्र मगू-प्छवा ॥ नान्। माला ज्याना इ-खाक्र निभयी॰ विना। रेहनी मनिभयी-माला भूमें छा कमला ब्राल ॥ मत्रय-ত্যা মন্ত্রজপে রৌপ্যা মুক্তা বিনি-মিঠা। পুজাপতি জপে মালা পুণ-बीव मंगू छवा ॥ भू धकाम नदाशक महा भुञ्जूहा ज् मो। द्वाग मञ्ज काल गाना शम्मवीक अमुख्खवा।। शाञीकः लन्यी नाला दिख्याः कार्न्या इला।

कपुरकन्याक छपाक वृक्तवीस म মুক্তবা।। মহেশান মন্ত্ৰ জপে ত্বেতা नालाः कन्नभूषाः। मार्विकी नर्वतः-বানা মথবা ভরণে জ্র্জিপ।। জশগু-श्विमयी मूका गायधी रेवक वी करना श्री इत तक विभागी काल भाषा हि बचना ।। ইতি পাদ্মোত্তরখণ্ডে ১০৮ व्यस्त्रायः ॥ क्षाः क्षाः व्यभन्न स्वभावि পুরবেন্মালা তৌবৈ রভ্যক্ষ্য যত্নতঃ । নিধাযমগুলস্যান্তঃ সব্য হস্তগতা। क वा ॥ छँमा॰ माल महामाय नह শক্তি ম্বলিণি। চতুর্বর্গ স্থাব ন্যস্ত खमात्म निकित्। ভव।।।।। भूकविद्। **उटा भाना॰ गृ**शेषा मिक्ता काद्र । মধ্যমাযা মধ্যভাগে বর্জ্ঞযিত্ব। তু **उद्धनी ।। जनामिका कनिशा**न्ता যুতাযা নমু ভাবত:। স্থাপিবিদ্বা তত माना मङ्धार्युग उप्गठ ॥ পুতে उकः वीजनामाय ज्ञभः वर्गाखु रेভরব। পুতিবার॰ পঠেন্মজ্র॰ শনৈ त्राष्ठः न চालरयः।। भावा वीकस खथरा॰ म्शृलमहि भद्रम्भद्र । भूर्व काश भुगुत्करेनवाकुश्वाराग रेज्यव ॥ প्रवीजः अभन् यस भन्न वीकल সংস্থাশেৎ। অঙ্গণ্ঠেন ভবেক্তস্য নি-युन खम्र ७ ब्ह्नभः॥ भानाः स ह्रः यात्रसम्बद्धाः प्रक्रियः शानिना। (प्रवीः 🛚

विविष्ठयन् अभाः सर्याचारमन न न्यू (मर ॥ श्वा दिकन्ताक कप्राहिकः পুএজীব সমৃস্তবৈঃ। সুবর্ণ মণিডিড नम्रक् भुवारेन तथ वाङ्गोकः॥ अक्-भाषा जू कर्डवा (स्वी श्रीडिक्द्रा-পরা। জপেদৃপাংশু সভত: अन गुष्ट्रा ज् भागिना ॥ नाना वी (क्रयू (वय् कृषाका मट्रियाट भि्ग कृत्रीिठ करता यत्राखमाकृताकः वनी ॥ भ्वारिन त्रथवा अर्यप्राम्डाहित শতি বীজকৈঃ। পঞ্চ পঞ্চশতা ব্ न न्रति नी धिरेक क वा ॥ क मारक 🐠 **জ**ণ্যেত ইন্দুাকৈ: স্বাটিকৈ স্ত नान्तरः मस्या भुरयाक्तवाः भुधक् দিকঞ্চ যৎ ॥ यদন্যভু পুযুজ্যেত 🕾 वारा॰ जनकर्मि । उन्र कामक **(भाक्षक्ष न मनाजि श्रिबक्षती ॥** कः মান্তরে জাযতে স বেদ বেদাঞ্চ 🖭 রগঃ। মিত্রীভাব• তদা যাতি চাঞ্জ লৈ: পাপ কর্মভি:।।#।। একো মে 🕸 खब (एयः भर्बिङ्यः श्रृष भञ्जदः 🦠 व्याम् । मूल उउ उमार न्।न न् ভর• তথা॥ বিন্যসেৎক্রমত স্তম 🐁 नर्भाकात्रा हि ना यजः। तुत्रनुष्टि जः कर्यता ८ शु जिवी कः यथा 🛙 🗷 जः অথবা গুন্থি রহিত দ্চরজ্জু সম निजः। जिनाव्खाय गर्धारेनवाकी

नाना

ं वृद्धप्रस्थान्यः ॥ गुस्तिः भुरक्षिणः বর্ত্তঃ সবুক্ষগৃন্ধি সংজ্ঞকঃ। নাজানা বোজযেমালা নামত্রে।যোজযেদুধঃ ।। দৃঢে স্ত্র নিযুক্তীত জপে ত্তীতি নো যথা। যথা হন্তঃগ্লচ্যুবতে জপতঃ সুক্ তথাচরে ে।। হস্তা হূ ১ তা যা • विमः माहिनायाः नद्राः छट्ट । এवः यः অৰতে নালা॰ জপ্য• চ ন্যকোৰিত• ॥ म भाष्त्राजीश्चिजः कामः हीतः স্যাত্ত্ বিপর্য্যবঃ। অন্যত্রাপি জপে-ग्राला॰ जलऽ॰ (एव ग्राव्यः ॥ दे-पृष्ण· जायकः अर्यााट नानाया जू कराठन। वथाणकि डाश अर्यहर भ•गारेयव **अ्**यवृ**डः ॥ अभ•था। उ**छ गड्जर्थ उट मर्ब नियुक्त जिद्द । ज्ञक्षा माला • भिरतारमा भाग भूषात **२**थ বা ন্যমেশ ॥ ইতি কালিকাপু-द्गारा ८८ ज्यागः॥ 🕸। 🕸॥ ज्य মালাদি ধারণ । ততঃ ক্ফার্পিতা भावा थातराकुन भी रेकः। भारोक स्रवनीकारिष्ठः करेन श्रांजा क निर्धि-তা।। ধারণেত্রলসীকাণ্ঠ ভূষণানি চ रिवणवः। न उरक कर्नत्य। द्वास्त्राः क त्राः म्ह यथा कृष्टि । । ३। । अथ नाना interest with the mode बह्नवार हो 🤗 नद्भवार । ं राज अनुष्य परिवर्ते । त

ভোত্তमः।। एत्रय नार्भययम् ज्नः সীকাণ্ঠ সম্ভবা•। মালা॰ খতে খ্ৰ্য• मृष्टः **न** याजि नद्रकः धुत्रः ॥ क्लानि-তা॰ পঞ্গব্যেন মূলনন্ত্রণ মন্ত্রিতা॰ । গাযত্র্য চাষ্টক্ত্বো বৈ মজিতা॰ क्षायह जा ॥ विधिवट भन्नया छः ক্ত্যা সদ্যোজাতেন প্রয়েৎ। তুল-नीकाष्ठ मञ्जल नात्व कृषक निश्रा ॥ विভिध्य द्वा भरु कछ अक माः কৃষ্ণ বল্লভ•। যথা ত্ব• বল্লভা বিষ্ণো ৰিভ্যু বিফুজনপ্রিয়া।। তথা না॰ क्क দেবেশি নিত্য বিফুজনপুষ। मात या थाज् किष्टिश वानि मा॰ হরিবল্পতে ॥ ভক্তেভ্যশ্চ সনস্তে ভ্য স্তেন মালা নিগদ্যমে । এবং न•भार्थे। विधिवसाना• क्या गरण -र्भिञाः॥ धात्रयदिक्ता या वि म शहिष्यद अम्।। #॥ जथमाला-ধারণ নিত্যতা। তবৈব স্বানের কার্ডি क्षुत्रस्य। धाञीकन क्ञाः मानाः कश्रेष्टा शा वर्ष्ट्या । विक्या न ग বিজ্ঞেয়ে। বিক্মুপুদ্ধা রতো যদি।। গা-क्छ ॥ शावयं जिन या माना रहे ज् काः भाभ यूष्वयः। नत्रकाम निवर्खस्य দধ্যা: কোপারিনা হরে:।। অতএর कात्म ठेटवर। न बद्यानुवनी मा-ना॰ थाजी माना॰ दिष्मवजः। महा

गाना

পাতক সংহন্ত্ৰী• ধর্ম কামার্থ দাযি- 🛭 नी ।। # ।। অথ মালা মাহাঅ্য ।। অগন্ত্যস•হিতালা । নিৰ্মাল্য তু-नभी भाना गुल्का य भ्हाई (रक्षति । यव्य करताठि ७८ मर्व मनस्कलमः ख्तद्या गः **क्**र्या ज्वभीकारिष्ठ त्रक गाला चक्तिं। क्षेपालाक य-ত্নেন কৃত তসগক্ষা ভবে । নার मीरव। रव कथेना वज्नमी निनाक भाना (य वा नना हे कन क नम्भू পুঞা:। य वाङ्म्ब भिर्विष्टि उ **ण**द्ध हका (छ रिक्छवा जूवन माण् পবিত্রবান্তি ৷৷ কিঞ্চ ৷ ভ্রমুগ মপি हिट्टे बिक्क उन्ह विकाः नवम भुक्य नामा की खंन यम। वाहि। श জ্তর নপি পুণু মন্তকে যস্য কণ্ঠে সর্সিজ মণি মালা যুস্য তস্যাঝি मामः ॥ विक्थार्याखात्र श्री छगवपू-কো। তুলসা কাপ্ত নালাঞ্কণ স্থা বহুতে তু যঃ। অপ্যশৌচোপ্য नाहात्वा गात्मदैविक न मः मयः ॥ कात्नि। धाजीकन क्ञा गाना ज्न সীকাণ্ঠ সম্ভবা। দৃশ্যতে যস্ত দে হে ভূ স বৈ ভাগবতো নর:।।তুলসী मधाना भागा कथे हा वहर उ वृ यः । विक्खीनाः विष्णायन म नगरम् **रि**रवी ह्या॰॥ ज्नभीरवज्ञा भाष

ধাতী ফল কৃতাপি বা। इसांडि পাপিনা মুক্তি কি পুন রিফুসেবি ना॰ ॥ তত্ত্বৈ कार्खिकभूत्रस्य । यः পून खनभीमाना॰ कृषा कछि बनार्फ-नः। প्राये भूगा माञ्चा भुष পুয়া গৰা মৃত ৷৷ অমৃত সংধ্যগো-मान कनमिञ्जर्थः ॥ याव**ल् ठेडि क**र्छ -ञाधाबीमाला नव्रम्। हि। जादलम् শর্রারে ত্ প্রীত্যা লুঠতি কেশব:॥ म्म्राम यानि लामानि धाबीमाना करतो नृगा । जावधर्य महमानि वः **ज्ञान क्रम**वालय ॥ याविष्रवानि व-श्उ धाबीमाना॰ करना नद्रः। जा-বন্দুগ সহস্থাণি বৈহ্নপ্তে বসতি ৰ্ভ্ तर ॥ माला यूग्नक तम निजुः धाबी जुन्ननि मञ्जरः। बङ्ख कर्रुः दिल्ला ह कद्मकाहि **हिंद** वात्र ॥ তলসি সম্ভব মিতি হুমত্ব মার্য ।। গাৰুডে চ মাৰ্কণ্ডেযোক্তৌ। তুলগী मनका भाना क्षाडीना रह्जू यः। পত्र পত्र श्याम्यानाः म-भानाः वाङ्ख कवः ॥ **%॥ जुवनी** কান্ত সমুভা• যো মালা• বহুতে ম-রঃ। ফল • যছতি দৈত্যারিঃ পুত্যহ• on the second of the second 11 30 11 11 18 19 19 19 18 18 18 ন ্ত ভাগা ভদ্য হৈ লাং প্ৰ

एक ।। मना भीजगना समा कृष्ण (एवकिनन्दनः। जुनतीकार्वः मञ्जू छा॰ या मानाः वरुष्क नदः॥ शास শিত্ত ন ভস্যান্তি নাশৌচ ভস্য विगुरह । ज्वनीकां अस् अः (या भानाः बुर्द्धः नद्गः श ज्नमी काष्ठ সম্ভূত শিরসো বছুভ্ৰণ । বা-স্থোঃ করে চ্মর্ত্রনার দেহে তদ্য স मा हिंद्राः ।। ত्न्त्री काश्रमाना जि ভূষিতঃ পুণ্য মাচ্যেছ ৷ পিভূণা रहवजाबाध क्ष्र क्षि छ । करनो ।। তুলদীকাণ্ড নালান্ত প্রেতরাজস্য দূতকা:। দৃষ্টা নশ্যন্তি দূরেণ নাতো-क्ठ यथा मन ।। ज्नमीका अना-লাভি ভ্ৰিতো ভ্ৰতে যদি। দুঃস পুণ দুর্নিমিত্তঞ্চন ভয়ণ শাক্সজণ কু চিৎ।। গৌতমীযে পুরশ্চরণপুসঙ্গে। তথামলক সমূতৈ স্তলসীকার্ম নি-**ब्यिं रेजः।** इंड्राप्ति ॥#॥ छरेबव । भू-ওরীক ভবা নালা গোপাল মনুসি-**জিন। আমলকী ভবা নালা সর্ব সি** দ্বিপুদা মতা ।৷ ত্লসী সম্ভবা যা তু মোক্ষণ বিতনুতে +চিরাৎ ॥ ইতি ত্রীহরিভক্তিবিলাস:॥ क्षाक्ष ॥ অথ ल्माक भावा थात्र कवासि। विक ্রাণে। বিনা ভমা ত্রিপুর্ভুণ বিনা यमक गालकान लिखाका श्रिश म्

शास्त्वान मां खमा क्या मुम्शा मः विश्व मा विश्व का विश्व मा विश्व का विश्व मा विश्व का विश्व

নালাকণ্ট: পু॰ অপানার্গ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

भानाकनरः शृ ग्रनित्मियः। एए शर्यायः। व्याविनकनरः २ जिनि-चिहना ७ गुष्टिहना ८ शाहिकनरः एगुष्टिहना ७ कनरन्छ। १। व्यम्य खगाः। मूठीकृष्। गख्यानाना-निष्। मीशनष्। खन्यकातिष्। वाठ (भूयाशकर्य कातिष्ध। इंडि द्राह्मनिष्टेः॥

भागाका छी भागा। ই**डि भद**त्रा-वनी॥

মালাকার: পু॰ বর্ণসঙ্করজাতি বি-শেবং। মালী ইতি খ্যাতঃ। তৎ 'মালাতৃ

भर्यायः। मानिकः २। इठामतः॥
मानाकतः ० भूमाकीवी ६ वनार्छः
कः ৫ भूमनावः ७। इठि कठापतः
॥ भूमनावकः १। इठि मप्तवः।
वनी ॥ म जु म्पृत्याः विश्वकर्याणः
काठः। इठि वृक्षविवर्षभूतानः॥
व्याभिष्ठ । देवनिकाः कर्यकाताः
मानाकात्मा मस्तवः। इठि भन्नाः
मानाकात्मा मस्तवः। इठि भन्नाः
मानाकात्मा मस्तवः।

भानागुष्टिः शृ भानापृत्री। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

নালাতৃণ• ক্লী ভূতৃণ•। ইতি রাজ নির্ঘটঃ॥

नानाञ्गकः क्ली ज्लुगः। इंडाप्रदः।।

त्व गक्षथप इंडिशाटा मानाकः

त्व गक्षथप इंडिशाटा मानाकः

त्व ज्वा मानाञ्गः वार्श्य कः। ज्व

लुगः ज्वा प्राचा ज्लुगः मनीवाितः

प्राच्य मानाञ्गः। माना ज्यक ज्लुगः।

शेखि क्लीत्। इंडि मूज्डाप्रदः॥

मानाञ्गक ज्लुगाविडि श्रुःमि भः

वेखि किटि ॥ बामी जू। हजाि ज्लि कि किटि ॥ बामी जू। हजाि

हजाित ज्लुगालः भर्याय मान यथा
। ज्लुगा दोहित्या ज्ञि क् मित्काः

श्वा हिड्बक ल्लांडि।। तामकः

भूवा हिड्बक ल्लांडि।। तामकः

भूवः वल्लाकालः कभ् व मुगक्ति
। इनल नाजभूविकावपूर्विगकः।

गानि

्रज्ञा**क उर्वजिज्**नतंत्रास्त्रः। इति उष्टीकामाग्युत्रकः॥

मालाम्बि एकी मूर्वावित्मयः। गैं वाम्बा है जि कार्या। उट भर्या। विद्यान्वा है जावा। विद्यान्वा है माला है विद्यान्वा है माला है जुक्ता है मुक्ता है जुक्ता है माला है जुक्ता है जुक्ता है जुक्ता है जिल्ला है। जुक्ता है जिल्ला है। जिल्ला है। जिल्ला है। जिल्ला है। जिल्ला है। जिल्ला है ज्वाभ हे द्वा कार्या कार्या है। जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है।

मानातिष्ठा जी भागि। ইতির নির্ঘণ্টঃ॥

भावालिका जी भ्का। ইতির নির্ঘণ্টঃ॥

भानानी स्त्री भृक्षा । ইতির নির্ঘটঃ।

মালি: পু॰ সুকেশরাক্ষসপুঞ্ যথা। গ্রামণী নাম গন্ধরো বি বসু সমপুভঃ। তস্য দেববতী ন দিতীয়া শ্রীরিবাল্মজা।। ত্রিযু (কেয় বিখ্যাতা কপ যৌবন শা না তেং সুকেশায় ধর্মাল্মা দ্ বল্লী শিল্প নখা।। বরদান ক্লি প্রাস্থিত শুল্পা প্রতিং প্রিয় আর্মিন नेर्स्तनः ॥ ज उरा जरु जस्ति असी इती-ने इसी हिन्दः । उठः काल जुरकण-स्व स्वामान दाघव । जीन् जूधान् भवामान व्यठाशि नन विजुर्शन् । भाग्यत्वर जूमालिक्ष मालिक्ष् । विनायद्वर । इठि द्वामायत उँख । कार्यक नर्गः ॥

लकः शृ भानाकातः। इंछा गत्रः॥ शिक्षां छतः। इंछि प्राप्ति। ॥ तक्षाः। इंछि नक्तत्रवावनी॥ निका खी मक्षना॥ शूभी॥ श्री वानक्रत्रणः॥ शूम्रभानाः॥ निनी विष्नयः। इंछि प्राप्तिनी॥ मूत्रा। इंछि हातावनी॥ क्रूगा। इंछि नक्तिनुका॥ निनी खी भाङ्कार्छमः॥ वृक्ष

जिना जा नाजुना जिन ।। क्यानिश्वी ।। क्यानिश्वी ।। क्यानिश्वी ।। निर्मानिश्वी ।। निर्मानिश्वी

मालूः भ्• भधनजा।। नाती। ইতি मिनि।।

भान्थानः भू• भाजूनाशिः। भान्यानाभ ইতি ভাষা। ইত্যমর: ॥
प्रदेशागान्धर्गठ नागितिष्मयः। यथा
। भान्यान किञ्जमर्भ भशाभाष्य
रिश मृष्णार्छ। ইতি शादावनी ॥
भान्थानी की नजार्डिमः। ইতি
मिनिनी ॥

भाण्कः भू॰ क्षार्जकः। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

মাল্র: পু॰ বিলুকৃক্ষ:।ইত্যমর:।। কপিঅংক্কঃ।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। भारतया जी क्रि**तका। इंडि त**ज्ञ भारता।।

गाना की भूष्य ।। भूष्य मुक्। इंडि (मिनि ॥ भुञ्जार्थक माना भूपमा श्राका यथा। यथा हाल्यन भारत्र ন বাসিত ভিল্ল সর্যপ । ন মুঞ্জি यक गन्न जन्द मृत्रमा मर्भन ॥ ইতি মহাভারতে মোক্ষধর্মে ১০৫ व्यथायः ॥ मृष्ट्रिनाउल्यामा । इंडामदः॥ यमा भर्गायापि माना भारत पृष्टेवाः ॥ ऋ॥ भाना प्रान कनः यथा। गन्नगारेन। त्रनकारेत खडी क्ष्ठाम्ह विख्रामाः। गन्नमान्। भूना-य ज् मान निम्हय जल्भन्नाः ॥ भ-মজা: সভ্যশীলাশ্চ সর্বদুঃথ বি विक्किंगः। मूहितः रिन्देशः मार्कः ক্রীডন্তি হি নহামুনে॥ ইতি বহি-পুরাণ ॥ৠ। অপিচ। নারসিংহে। জাতীপুল্ল সহসেণ যছেন্মালা স্ শোভনা । বৈষ্ণবো বিধিবক্তক্ত্য তস্য পুণ্য ফল• শৃণু।। কল্লকোটি সহস্যাণি কল্পকোটি শতানি চ।ব-সেদ্বিষ্ণুপুরে প্রীনান্ বিষ্ণুত্ল্য প-রাকন:।। জাতীপুন্ন কৃতাণ নালাণ কপ্র পটবাসিতা। নিৰেদ্য দে वानवाग यटकल॰ भाभ गामतः ॥ ন ভদ্ৰণ্যিত্ৰ শক্য মপি:বৰ্ষশতৈ

त्रिभ। कात्म । भावजी कविका भावा भीयविक्रमिजाः इरतः। हञ्जा भित्रिन विर्भुन्यु वाकिस्मिथ कल॰ वर्ष्डः ॥ कात्मः । मान्छीमानग বিষ্ণু: প্জিতো যেন কার্ত্তিকে। পা-পাক্ষর কৃতা মালা পটাৎ শৌ-রিঃ পুমার্জ্জতি॥শৌরি র্যমঃ॥ বি-क्षुत्ररुग्। यर्ग वक्षाधिकः भुञ्जः मानाकारि खनाविका। इन्डिञ्ज्ञ इ-রিভক্তিবিলাসে ৭ বিলাসঃ।। 🗱 🛭 শাল্যগলস্য বহিগমননিষ্ণো য-था। दहि माला दहि श्रंतः ভार्यः যা সহ ভোজন । বিসূজ্য বাদ क्षा वा भुविषक विवर्जाय 11 ইতি কুর্মপুরাণে উপরিভাগে ১৫ व्यथ्रायः ॥ 🗱 ॥ स्रयः भान्।। शकः र्यंग निरम्(धा यथा। नामीया८ म-क्षिर्विवाया॰ न शह्मात्रि अग्नि-শে । ন চৈব পুলিখে জ্মি • না-ত্মনোপহরেৎ সুরু ॥ ইতি মান-বে ৪ অখ্যাयः ॥ नह मालाः ध्ठाः च्चयरमवाभनायः । व्यथानानाना-**भन(यिम् जुड़क•। ইতি स**ञ्जूक छ छै: ॥ # ॥ (कनवारक्य मान्। धात्रभ बिस्यास्य मुक्ता । यहि गर्ह्यकथाः खन्तार हिमाद्य में १ अपट । भवास्त्र गान भ्राहेन मा रेचन दि

गर्हिजः ॥ इंजि ह मानत्व ८ जवान स्वाह्यक्रिक सम्बद्ध मानाः न स्वाह्यक्रिक सम्बद्ध ।। ॥ ॥ स्वाह्यक्रिक सम्बद्ध ।। ॥ ॥ स्वाह्यक्रिक स्वाह्य नित्यक्ष यथा । स्वाह्यक्ष प्रस्ति श्री । स्वाह्यक स्वाह्यक स्वाह्य मानिक मानि ।। स्वाह्यक स्वाह्यक

মাল্যপুয়: পু: শণবৃক্ষ:।ইতি রাজ নির্ঘণ্ট:।।

मान्। भूग्निका जी भग्नु ही। ইতি वाकनियंकः॥

भागावान भू॰ शर्बा विल्याः। इंडाभागावान भू॰ शर्बा विल्याः। भागावान वजुः । इंडि
छोकाया॰ छत्रछः।। म ह क्ल्युः
भागावान वृज्यस्याः मीमाशर्बछः।
भीन निम्म शर्बा शर्याष्ठ विछातः।
इंडि मिष्का छन्या समिता विल्या क्ल्याः।
ग्रामणी नाहरू पार्वित्र क्ल्याः।
रव्य हाः छन्। क्ल्युः क्ल्याः।
विव्य छन्। क्ल्युः क्ल्युः।
विव्य छन्। क्ल्युः। क्ल्युः।

পুলস্ত্য পুত্র বিশ্বসো রাবণো জা-ত:। ইতি রামাযণে উত্তরকাণ্ডে ৫ সর্গ:।।

भाज्ञः भुः वर्गमस्त्रकािवित्मयः।
न ह विहाि विद्रम्नायाः काउः।
हेि वृक्तेववर्खभूद्रायः॥
नाज्ञवी की मझयाका।हेि हाद्राः

मामिकः वि निष्यपकर्ता । जः-পर्यऽायः । পুতিবেদ্ধা २ । ইতি वि-काक्षःभयः ॥

वनी॥

भाषः भू वृश्चिर्छमः। भाषकलाहे ইতি উরিদ্ ইতিচ ভাষা। তৎ-भर्यप्रायः। अक्विन्तः २ धानप्रवीद्रः ० वृषाकतः ८ माःमनः ৫ वनाष्ट्रः ৬ পিত্র্যঃ ৭ পিত্ভোলনঃ ৮। অস্ত खनाः। त्रिकादः। वद्यमनकत्रदः। শোষণত্ব। শ্লেম কারিত্ব। অনু-ক্ষবীর্য্যন্ত্রণ। ঝটিতি রক্তপিত্ত পু. কোপনত্ব। বাতহরত্ব। ওক্ত্ব।। ्वनकत्रष् । রোচকত্ব । सामृद्य । শুন সুথবতাং নরাণাং নিভ্যং সেব-नीयष् । इंजि ब्राजनियंग्टेः ॥ य-পিচ। মাধাে গুকঃ স্বাদুপাকঃ স্থি. (क्षा करहा। १ निनाभशः । उकः সম্ভর্পণো বল্যঃ শুক্রলো বৃ•হণঃ প-वः॥ उम्म मूब मन खन्यत्म भिक

क्क भूमः । अम्कीलार्षिञ श्राम शःकि म्लानि नामः १८॥ इंडि। क्फ भिख कर्ता गायाः। ইতিচ ভাবপুকাশঃ।। অন্যন্ত। মাধাে বহু भला व्याः त्रिक्षाका भन्दा एकः । বাতনুদ্•**হণো বল্যো মেদে। মা•**-স কফ পুদ:॥ ইতি রাজবল্লভ:॥ মাৰস্পেন মূলক ভক্ষণ নিষিদ্ধা यथा। म्नकः नायम्लान मध्ना ह न जक्तरपट । इंजिह त्राजदल जः॥ চতুর্দশ্যা রবিবারে চ মাষ ভক্ষণ निरम्(था यथा। हिन्नः ज्ञानी ह नाम-कि। ইতি॥ गाय गानिय ना॰ त्रक्ष মসূর নিম্বপ এক । ভক্ষ থেকো র-বে ৰ্বারে সপ্ত জন্মন্যপুএক: ١١ ইতি চ जिथाारिजनुः ॥ 🕸 ॥ भित्रमान विष्मयः। भाषा ই छि छाषा। उट भर्यप्रायः। गायकः २ गायः ० गामः ৪। ইত্যমরভয়তৌ।। হেম: ৫ থান ক: ৬। স চ মাগধ্মানে সুশু, হমতে ৫ গুঞ্জা চরকনতে ৬। ৮ গুঞ্জাপ: तिमानः। का निष्मभारम সুশু उमर उ ৫। १। ৮ গুঞ্জাপরিমাণ । ইতি ভাবপুকाणः॥ विराजान्यतः ३० छ क्षामित्रिमानः। यथा। रक्षां छि र्पः শতি নাব: শাণো নাষ চত্ ইব॰। ইতি বৈদ্য দপরিভাষা।। জ্যোতি

স্তি নতে ১২ ওঞ্জাপরিমাণ । यथा। भवः जुलोकिक मारिनः जा-ষ্টরত্তি দ্বিমাষক•। ডোলক ত্রিতয• জ্ঞেয় জ্যোতিজৈ: মৃতি সন্মত ॥ ইতি তিথ্যাদিতভু ষ্তবচনেন পল অষ্টরত্তিকাধিকমাষদ্যাধিক ভোলকত্রয়া এতেন মাষক পরি-মাণ• দ্বাদশ রন্তিক• ভবতি।। #॥ मूर्थः॥ वृद्धायलमः। ইতিমেদিনী॥ मावकः भू॰ मामकः। भक्षत्रज्ञिकभ-त्रिमान । यथा। ख्झाः भक्षाम्। मा-यकः। ইত্যমর:॥ म्लार्कछक्षः शु-वम्बि गावः भाषा खरेगः वाउभः ভिশ্চ कर्म·। ইতি नीनाव**ी** ह।। यडिस द्रक्तिकाञ्चः महामायरकाः (इम थानको। मारवा चञ्जाভित्र-है। जिः मथि वी एदि कृष्टि। ইতি ভাবপুকাশ:॥

गावकलायः भ् स्वामश्रां उभम् ।
यथा। कलाय भर्दा विरम् स्व मानात्य ह अञ्चर मायकलाय इञ्जानि
भूत्यागः। इञ्जानही कावाः अत्र ः।।
नायभगे जी वननायः। मायागी
इञ्जाना। उद्भग्री व्याप्ताः। इस्भृही
२ कार्याकी ० नक्ष्मका वा केल्ल् नत्रः। जिल्ल्ल्ही द अञ्चर्ताः। क्ष्मवृष्ठी
क्ष्मवृष्ठा भूषाञ्चान्यभूष्ठी। हम •

ইতিরর্গালা॥ আদু নাষা ন মা•-नमाया २० नक्ला। २२ व्यश्हिका ार इ॰ मनाया :० व्ययनुहा 78 मा उता २० मायमानिका २५ कन्यानी .१ वज्रम्मी ১৮ मानिमगी >> বসারিণী ২০ আত্মোন্ডবা ২১ ব-र्कना २२ अगसुः २० जूनणा २८ না ২৫ সি•স্বিদা ২৬ বিশাচিকা . ৭। অস্যা গুণাঃ। তিক্তরসত্ত্বণ। याञ्च । मारुज्ञाशर्व । मुक-িদ্ধি কারিত্ব• । বল্যত্ব• । শীতলত্ব• ু পু প্তি বৰ্জন বৃঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ जनिष्ठ। भाषभभी स्याभी ায়োজী হ্ৰপুছিকা। পাণ্ডুলো শপণী[']চ কৃঞ্বৃন্তা মহা**পঁ**হা ॥ াষপণী´ হিমা তিক্তা ৰূকা শুক ्नामक्ट। मधुत्रा गु।हिनी (माया াত পিত্ত জ্ববাসুজি**ং।। ইতি ভা**-্পুকাশঃ।। **ज्**करितः शु॰ भाष उ ध्वारि ্রিকুপ্জোপহারবিশেষ:। অত্র ইচিৎ ইরিদা ঘৃত নধুলি মিশুযন্তি ाथा। এव नाव ज्ञ्जविः। ७ अयः ু কালি সংৱশে সর্ভূত সমাবৃ- ॥ ৰ। রক্ষ নাংনিজভূ:তভ্যে বলি र मिविश्रिय ॥ ७ कार्ना नमः ार्थना नत्का यथा। 👸 माञ स्रीजः

र्दात पूर्ण मर्द कामार्थ माधिनि। व्यत्न विषिदात्न अर्वान् कामान् भुषह्रा ॥ इंडि क्**ड**/डवृ ॥ छ**उ**; (ভ্যাপ্যय॰ विवादियः ॥ भाषवर्षाकः भू अर्गकातः। ইতি मदः भाषा ॥ भाषणः वर भुडिमाषः। माषः माषः मनाठि इंडार्थ **म**म् भुडारयन नि ञ्जम । ইতি निषाञ्चको मूरी ॥ भाषारः श्रु कह्मः। ইতি मदत्रः। বলী।। মাসভক্ষকে ত্রি।। भाषीतः) क्री भाषत्कवः। यथा। जि-भाषाः रेजनीन वन्नारवानानु ভঙ্গাদ্ধি ৰূপতা। ইত্যমর:।। যথা जिलमा (क्व. जिला: रेजनीनक **ভবতি তথা गायामीनामिल दिक्** পতা দৈৰূপ্য• ভবতি। ইতি ভটী কাষা• ভরভ:॥

भाग भू॰ हन्तुः॥भागः॥ ইতিমেদিনী॥

অস্য পুথনৈকবচনান্ত ৰূপ॰ নাঃ॥

নাসঃ পু॰ নাষপরিমাণ॰। নাষা

ইতি ভাষা। ইত্যমরটীকাযা॰ ভরতঃ॥ শুলুক্ষপক্ষঘযাত্মকঃ কালঃ
। সচপৌষ মাঘাদিদ্বাদশ সংজ্ঞকঃ
। ইত্যমরঃ॥মা শ্চন্দু শুস্যায়॰ মাসঃ

ফঃ। চান্দুনাসস্যেগ ব্যুৎ পত্তিঃ।
সৌরাদিষু তু মস্যতে পরিনীবতে

श्तनात्नी वा मात्रः। मित्र यं ने পরিমাণে ধঞা নাঃ সান্তো ২পি। মাস্ত মাসে। ২পি দৃশ্যতে । ইতি হয়:। ইতি ভরত:।। 🟶 🛭 মৃতিম-তেপি পৌষাদি দ্বাদ**শ সংজ্ঞকঃ।** যথা। চক্রবৎ পরিবর্ত্তে সূর্য্যঃ কা লবশান্দতঃ। অতঃ সাংবৎসর• শা-षा कर्ववा भाग हिङ्गि छ। भाग চিহ্নন্ত কৰ্ত্তব্য পৌষ মাঘাদ্য মেৰ হি। যত স্তত্ৰ বিধানেন স মাসঃ প_্ तिकी खिं**ड:।। ইতি वयू**राती खः॥ 🏶 ॥ कार्बिकारि द्वारम म•ज्जरका ११४। যথা। অন্ত্যোপান্ত্যে ত্রিভৌ ক্রেযৌ ফালুনশ্চ ব্রিভো মতঃ। শেষা মাসা দ্বিভা জ্ঞেযা: কৃত্তিকাদি ব্যবস্থা।। 🗱 ॥ न ह रेहजानि चारण न छक मह । যথাব্যক্তণ বুন্ধপুরাণণ। চৈত্রেমাসি जगमुका ममर्क्ज भूथाम १२नि। मुक् পক্ষে সম্পুত্ত তদা সূর্য্যোদ্যে সতি ॥ পुवर्खयामाम जना कालमा गनना-शिश गुहानाणीन्ठ्न सामान् वट-সরান্ বৎসরাধিপান্ ॥ ইত্যনেন भामर्ख् वट्मज्ञागाः ठामुख मुकः। বুক্ষসিদ্ধান্তেপি। চৈত্ৰ সিতাদে ক্ৰ-বাজ্ঞানো ইষ্ট্র নাস যুগ কল্পা:। সূ क्षेत्राकी नहागाभिश् भुतृता कित হ্বৎস।। চৈত্ৰ সিতাদে শৈত শুলু পু

তিপদ স্তামারভ্যেত্যর্থ:।। অপিচ। মীন্যদিছে। রবির্যেষ। মারস্ত পুথম-কণে। ভবেত্তে হবে চান্দুমাসাকৈ ত্রাদ্যা দ্বাদশ ফ্তাঃ॥ 🛊॥ চান্দু সা-বন সৌর নাক্ষত্রভেদেন স চ চতুর্বি-थः। শুক্লপুতিপদাদি দর্শান্ত কালেঃ । তত্ৰ চান্দো ৎপি দ্বিবিধঃ। শুক্লপু-जिभरापि पर्णाखा मूथाः। कृष्णु जि.। भराषि (नोर्वतामुखा (गोनः। यू কিঞ্চিঞি:শত্তিথ্যাত্মকশ্চেতি দ্বি-বিধো গৌণ:। ত্রি-শদহোরাতাত্ম-ক: সাবন: ৷ আদিতৈ করাশি ভো গাবছিমঃ সৌরঃ। সপ্তবি•শতি নক্ষ-বাবছিল জ্রি:শামাক্ত্রদিনাত্রান্শ্চ নাক্তঃ। তথ্যে বুক্স সিদ্ধান্তে। চা-ন্দু: শুক্লাদি দর্শান্তঃ সাবন জ্রি:শতা-দিনৈ:। একরাশৌ রবি র্যাবৎ কাল• মাস: স ভাক্ষর: ॥ সর্বক্ষ পরিব-र्विञ्ज नाक्ष्य इंजि (চाচ্যতে। সূর্য্য-সিদ্ধান্তে। নাডী ষধ্যা তু নাক্ষত্র ম-ছোরাত্র• পুচক্ষতে। তঞ্জিশতা ভ-विद्यानः नावत्ना श्र्कान्रय ख्या॥ ঐন্দর্ব স্তিথিভি স্তদ্বৎস কাস্ত্যাসৌ র উচ্যতে। তঞি•শতা নাক্ষত্রদিন ত্রি:শতা নাসে। নাক্ষত্র মাসঃ। তথা ক্রিংশ তা।। 🛊 ।। স্বার্ত শ্লপাণিনতে म्थाठान्त् वन मामभर मकाः। कीम्

ভবাহন মতে সৌর এবশক্যঃ ৷৷ চান্দু পুমাণ পাত্ত। সৌর পুমাণস্ত। भोतास गाघामरगा सामम अव (म्)-তাঃ। তথাচ শু.তিং। তপ তথেস্য रेगाणिकात् जूः। सध्य माध्य मह वात्रः ভিকাব্তঃ। শক্ত শুচিশ্চ গৈুনা-वृज्ः। यो थजमूनगरेन (प्रवानाः 'দিন । নভাশ্চ নভস্যশ্চ বাষিকা नृजुः। इय क উर्জ्जक मात्रमावृजुः। जहाफ महमाफ रेहम बिकावृजुः। অথৈতদ্ধিশায়ন দেবানা রাত্রি রিতি। অত্রাধনস্য সৌরত্বেন তদ্ব টক তপ স্তপস্যাদীনা মুগি সৌর-পরতেতি ৷ অতে: ভূখমা মন্রো-(यन देवणा था एयः (भोत्र वा हिस्सा १व-थार्ग्राष्ठ । इंडि मलमामञ्बुः ॥ व्यक्षिठ। भिषक्षि छा त्रवि र्याटना वि শাথো ६५ गूथः मृषः। ইতি সঙ্কে खकोमूनी ॥ # ॥ अथ कर्माविष्मस ॥ মাসবিশেষাদি:। তত্র পিতামহঃ। আহিকে পিতৃক্ত্যে চমাসন্চান্দু नगः मृडः। दिवाहात्नी मृडः (जीत्रा यक्काभी जावाना मणः॥ भुषमानि भर· याजा गुरुठात भत्र·।यटकर्म স্ব্যভোগ্য রাশ্যুল্লেখেন যচ বি শিষ্যোদগ্যনাদি বিহ্নিত তৎপর ঞ্চ স্থনস্ত নৌর্নাস ঘটিতত্বাৎ।

छह हृष्डाभनयनारि । विञेषारि পদ সত্ৰ ভৃতি বৃদ্ধি পাুুুয়াণচন্তাযু र्मायामीह गर्खाधान शूप्त्रवन नीमः ভোন্নথন নামকরণান্নপুশেন নিষ্ক্র-মণ চ্ডাদি পর। তথাচ বিষ্ণুধর্মো: ত্তরে। অধাযনঞ্ গুছ্চার কর্ম সৌ-त्त्रग नारमन मनाभावरमाए । म-वागुष्राम्यानाथ भावतन क्लोकाक र८ म्याष्ट्रवहात कर्मा। अध्वायन अ-ধৃগমন যাত্তেতি যাব্ ।। 🕸 ।। অথ সৌরাদি মাস বিহিত কর্মাণি। বিবাহোৎসব যজেষু সৌর• মান• পুশস্যতে। পার্বণে বৃষ্টকাশান্দে ठान्म् भिष्ठे॰ उथामित्क ॥ व्यव युक्क পদ নুদগ্যনাদি বিহিত পশু্যাগা-ভিপা্য পিতামহোক্তন্ত বিষ্ধৰ্মো-ত্তরোক্ত সত্রপর ।। গর্ম:। আযু-দাযবিভাগণ্ড প্রাযন্চিত্তকিয়া তথা । সাবনেন তু কর্ত্তব্যা মজ্ঞাণামপ্যু-भामना ॥ म्र्यामिकास्त्र । म्वकारि পরিছেদে। দিন নাসাত্দপা खथा। নধ্যমগৃহ ভুক্তিশ্চ সাবনেন পুকী-র্ত্তিতা।। মধ্যমগুহভুক্তি জ্যোতি গঁ-ণনা পুসিদ্ধা।। 🕸।। নাক্ষত্র নাস পুযোজন বিফুখর্মোভরে । নক্ষত ज्ञानपुर्वानि (हरन्त्। स्प्रीत्मन ऋर्यप्रा-ন্ডগণাত্মকেন। নক্ষত্ৰসত্ৰাণি মাস-

সাধ্য যাগ বিশেষকপাণি যাজ্ঞিক **भु**त्रिकानि। इत्न्हात्रयनानि (जानाय-নাথ্য সত্রাণি। ইতি সমযপুকাশ:।। এবং জন্মনক্ষত্রে শনিভৌমবারে ফ वः नाक्व नारमन रगगाजाः। यथा । जन्मन् एक यि ना जा वादी (जीन भरिन्ह्राती। ज माजः कन्याजा नाम মনোদু:খ পুদাযক:।।ইতি মলনাস ভত্তুং। মলমাস বিবরণ মলমাস শ (क पृष्ठेवार ।।#।#।। अथ मात्रक्छाः। व्यायार मुद्रिकारमारा अर्गरा सा १० নহোৎসব•1 আষাঢে চরথ অর্য্যাৎ শাবণে শুবণা বিধি• ৷৷ ভাদেু চ জন্ম **दिवाम उपवामभादा ज्वर । भु** मृक्षक भातिवर्ख माश्वित मामि काः त्राय्या जेप्यानः व्यव्हातः व्यर्गाहन्। था विकृत्गुङ्क्ट। मूख हिवाधित মাসি মহামাযাঞ্পুজ্বেৎ ॥ কা ত্তিকে মাসি যৎক্ত্য শৃণু দেবি ব-त्रानत्न। मधवर्ख्याः भुमात्मन भीभः न्ताह्न्त्रङ्गाः ॥ भक्षाष्ट्र ह भुकर्व व्यामीनभावा विवाः मुखा। भागमी র্যে সিতে পক্ষে ষষ্ঠীঞ্চ সিতবন্ত্রকৈঃ ।। প্রযেজ্জগদীশঞ্ তূলবস্তৈ রিশে যতঃ৷পৌষে পুণ্যাভিষেকঞ্চ বৰ্জ্ভযে इन्दन ७था ॥ ज कान्छा भाषमा সে চ সাধিবাসিত তণ্ডুলান্। নিবে 🚶

म्। विकार जिल्हा इंगः मृख मूमीतः থে ।। জীবন সর্ভ্তানা জনক खु॰ जगम्ख्रा। जुनाया नीनजा भाः প্রাত্তীয়ৰ জনিতা পুভো।। কপুরাক্-जि मुव्यानि घृञाकानि नित्वमर्य । वाक्षान (ज्रिज्ञरयक्जु)। (हर्वरहर পুরস্থিতান্।। অভ্যষ্ট্য ভগবদ্দক্যা দ্বিজা•শ্চ ভগবদ্ধিয়া। একস্মিন্ ভো জিতে ভক্তে কোটি র্ভবতি ভক্তিত: ॥ বিপুভোজন মাত্রেণ ব্যঙ্গ সাঙ্গ ভবেজুব ৷ পঞ্চাা শুলুপক্ষে তু স্থাপথিত্বাচ কেশবং ৷৷ পূজ্ঞাযেন্দ্রগা-বক্তক্যা চ্তপল্লব সমিতৈ:। ফলু চ্ণৈশ্চ বিবিধৈ ৰ্বাসিতৈ: পটবাসি-ত।। कानन व्रम्भीयक भूमीछ मी-প मीलिङ। मुाक्ष्मकू त्रस्र। जञ्जीत नागत्रक्षक भूगक ॥ नातिरकन्थ ধাত্রীচ ব•শ তাল হরীতকী। অন্যৈ. শ্চ বৃক্ষষভৈশ্চ সর্বরু['] অসুমাচিত্ত• ॥ शूरियम विविधिम्हेव कन भूय नमन्त्रिः। विजातः अभूत्माम्यात-र्वातिभृगंघरि खथा ॥ চ্তশাখোপ-শাথাভিঃ শোভিত ছপ্রচানরৈ:। विश्वय**ः** किन्युरा स्वालाट्यादा বিধীয়তে ॥ ফাল্লুনে চ চতুর্দশ্যা নষ্টনে যান সংজ্ঞকে। অথবা পৌর্ণ-নাস্যান্ত পুতিপৎ সন্ধি সমিতৌ॥

भृज्ञयिषि व खळा कनुहरेन कु র্বি ধি: ৷ সিত রক্তি গৌর পীতৈ: कभूतामि विभिन्ति ।। इतिमा-क्यात्र रयागाह तक तरेगा संत्याहरेतः ়। जारेन। र्दा। द्रक् द्ररेग। एक भीनाय शन রনেশ্বর ॥ একাদশ্যা সনারভ্য अक्षमाञ्च जनाभाषेट्या अकारानि , बारानिम्। प्यांति (नार्या विश्वीय (ज ॥ एकिगा जिम्यः कृषः (हालयानः जब्मताः। मृष्ट्रा भराष निरुरेय स्र्रका স্তে নাত্র সংশ্यः॥ নিক্ষিপ্য জ**ল**না ত্রে তুমানে মাধ্ব সংক্রিতে। সৌবর্ণ পাতে তামে বা রৌপ্যে বা মৃন্ধ্যে পপিবা।। ভোষস্থ যো পর্যযেদ্ধবং শালগুল সমুন্দ্র । পত্যহ । মাং ন হাভাগে তস্য পুণ্য ন গণ্যতে ॥ দমনারোপণ কৃত্বা ঐবিষ্ণৌ চ সম र्भायत । विमायाः मात्रा जापः कर्ववाक छहर्भागः ॥ विशास्य हर् जीयाया॰ कलमस्या विद्नादणः। व्या থবা মণ্ডপে স্ব্যাৎ মণ্ডলে বা ৰূহ-षुक्त ॥ मृगम्र हन्स्त्नाक् मृन्द्रीकाः किरम फिरम । यथा शुगज्ञ कार्याः क्षाद्य। रेनव প्रक्रिङः ॥ हन्द्रनाद्यकः कछ्वी अष्ठः अक्रून (बाह्ना। बहानाः नी वहारेहव विद्या गंत्राष्ट्रकः उदा ॥ व्येज मंत्र गूरेज काशि इस तक्शिन

लगरार ॥ घ्डेक जूनजीकार्ड क-পুরাত্তক যোগত: ৷৷ অথবাকেশরৈ र्याकाः इतिहम्तन मृह्या । व्यानान् ্কালে কৃষভক্ত্যা যে পুপশ্যন্তি মা-নবাঃ ॥ ন তেষাং পুনরাবৃক্তিঃ ক্ল্ল-কোটিশতৈ রপি। সুগন্ধি মিশ্রিত *ख*ोरेय: म्राभियद्वा जगहुक• ॥ अथदा ्रश्रुम्म (४) ह इंशिरवङ्क्ष गरी यदः । ৰৃদ্যাবন• তত্ৰ কৃত্বা উপস্ত ফলানি ্চ।। বিষ্ণু ভক্তেন যোগ্যেন ভোজ্ঞান্-उप्पायजः। नादिक्व क्वा नीद्र (कारकाषाञ्ज मानायर ॥ कछ।-ফলঞ্পনসং কোষ মুজ্ত্য দীয়তে । यथा भारतख्या एक्राष्य्यामिक निखागठः ॥ पश्चा विविश्विकशमः य्राजनाञ्च जा मानायर । भाविजः পিষ্টক ধাতু রষ্টাদশ ঘ্তেন চা৷ जिल्ला जिलमः मिल्नः क्वा भू-জঞ্চ দাপয়ে । যদ্মদেবাজ্মনঃ শ্রে य उन्होंनाय कन्नत्य ।। मन् ति-(वम् वजामीमाममी क कथ्थन। ত্যক্তব্য বিষ্ণু মুদ্দিশ্য ভদ্জক্তে ভ্যো বিশেষত:। ইতি তে কথিত• কিঞ্ছি সমাসেন মহেশ্বরি। গো-গুৰ্যঞ্জ পুৰুত্বেন স্বযোনি বিব পার্ন-তি।। ইতি পাদ্মেপাতালখণ্ডে ;২ व्यथायः ॥

मानकः प्रभावकणित्रमाणः। यथा।
छक्षाः लक्षाह्य मानकः। इंड्याः
॥ लक्ष्यकाः कृष्णाः ष्याह्यः प्र
थामा मानकः। हण्छक्षालक्ष्याः
ष्यान्यः। णाजीय षाट्याः मृत्याः
मान इंड्यां वा। मन्याः निर्मा ने
भीयाः एतन मानः मनिर्य हे नः
विमाण लग्नीणात्म चक्ष बार्ष्य कः
मात्मा ९यः हछ। छः। मय हिःनारथा मृद्धनेगाः छत्राह्यः। मय हिःनारथा मृद्धनेगाः छत्राह्यः।
इंड्याह्यः।

मानकः भृ नाज्श्रनकी। इंडि नद्भवावनी॥ मानकाजित वि॥ मानक ही नामताबी। इंडिन्द हिन्दुका॥

मामगानः भू वर्मद्रः। ইতি कि काखण्यः॥ मामभित्रमाणः ही ॥ मामदः भू छक्तम्ख्यप्रधः। छर भर्ग्रायः। जाहानः २ निमुद्धिः । ইত্যमदः॥

भागवर्खिका जी नर्वभीशक्किविष्णयः । ইতি भद्रभाषा ॥

নাসান্ত: পু॰ অনাবস্যা। যথা। পফান্তে নিম্কা যাত্রা মাসান্তে নরণ ধুরণ। ইতি সন্যপুদীপঃ॥ সংক্রান্তিদিনং। যথা। মাসান্তে মি या कमा जिथा मान मृजिनि । नक्ष बार ह रिक्षा मिन्द्री मृजु इत्या अंतर ॥ नामार हिन्द्र के-स्र जिथा यदि विकास्य । यदिका जिल्ला विवास भिन्न संस्ट ॥ देजि तस्त्रामा ॥

मानिक हो 🝕 उत्राज्य अन्वर जन्नाचाः স্থার পুডিমাসীয মৃতসলাডীয় ডি-থিকর্ত্তব্য শাৰাণা প্রতিমাসকর্ত্তব্য কৃষণক নিমিত্তক শাৃদ্ধ। ডৎ গ-र्यागः। अनाकार्याः २। ইভामतः।। মাসি ভব মাসিক পার্বশুছে তৰ অশ্বাহাৰ্য্য বৰ্ত্ত প্ৰকলেৰে चामावानतायाः (स्यञ्चादः। चन् नः कामाण्यिक चन्नाहार्यं इम्या-সো রিভি ষ্যণ সার্থে কে অবাহা-র্য্যকঞ্। অকৃত সপিণ্ডীকরণস্য বৎসরাভ্যম্বরে পুতিমান বৎশা-শ তত্তাবাহাৰ্য্য মিতি কেচিৎ। ইজ্যারটাকাণা ভরত: 11 তথোঃ পুমাণ । সাগ্রাসিকাদিকে শান্ধে স্যাতা পূর্বেদ্য রেব তে । মাসি কানি স্বকীথে তু দিবসে দ্বাদশাপি চ।। ইতি পৈঠীনসি:।। পিণ্ডানা गामिक माम नदाशार्थ विदू व् ধাঃ৷ ভদ্বামিষেণ কত্তব্য পুশস্তেন পুरञ्जः।।इजिन्मः।।।।। मामिक

করণস্য ম্বরহা নথা। পীঠ ছত্তো-পানহ ক্রিভানি ইহলোক পরি ভাৰা ইত্যাদি সৰ্ব:সুগন্ধ ইত্যাদি শ্রিরাদের্যা ইস্ত্যাদি বনস্পতিরস ইত্যাদি নক্ষ চত্ট্ৰ বহিতানি চ बारिनारकाणिश्वेवट म्डास्ट म्डा-ए बान्न गामिकांचे कार्यानि । একাদেশ সালাভ্যন্তরে মধ্যাস পা < खु ब्रायान्य मातिकानि। यध्यामा **ভ**াৰুৱে নলনাসপাতে হলি য8না-বিক প্রতিথাবের পুথমষাগ্রাসিক 1 उथा अयारण नामिकमा भ्वं जि-থৌ দ্বিতীশ ষাণ্মালিক ৷ এব শাণ্মা-সিকোলেখে পুখন ৰাশ্বাসিক দিতী य বাগাদিকজ্নোলেখঃ। এবাং ন (४) ष्ट भाउउ॰ उटक्रिकाम्मात्रः व्यमादम्यायाः मामिकास्त्र छित्थो वा कृदा भुक्छ कडवाः। वालोह **शिव्यक्षिक्र (मो**हारश्च कर्वर) । अ কাৰণাহাদি শুদ্ধানি কতিচিৎকৃত্বা यि गृं छर। (नवागुरन)नाधिका-द्रिश मनाभग्राविश्य 🛊 ॥ व्यथ मानि-रिकरकाष्ट्रिष्ट मुष्ट्यभुरयागः। भूईमि-तित्रानिरेषकङ्कः भव्रहित्न न्। नामिक क्ञा अकामिष्ठे नुष्क विहि-क्काल (ভाष्ठ) जूर मृत्र अन वाजा-भः ज्ञानियञ्च। वास्त्रभूक्त्राहि भूक्षि

ত্বা ভ্ৰামি পিত্ভ্য: শান্ধাগুভাগ• म्बा मिक्तामूथः यमुख्याः वर्गार । यथा जम्यामूरक नामि समूक भाक অমুক তিথৌ অমুক গোত্রস্য প্রেত-न। चमूक (हरानमानः नुषममानिक का फिडे मुक्ति एडंनय वाकारा १२॰ করিষের। ওঁ দক্ষেত্যুন্তর । ততো গাযত্রী জপেৎাদেবতাভ্য ইত্যাদি विषा शार्टे । ७ उः भू अतीकाकः युद्धा मृब्ह्हालन भाषीय प्रदेश श्राकः, य्।तकार्य गुरक भूर्गां व मकार-শে হাপথেৎ। ততঃ ওঁ অমুক গোত (भु उ चार्करस्य भर्माजां कर्जा-ननः यथा। इंडारनन तुष्क्रित वानलाः (यं मर्गाए। जुशह्उज्याहिन। जि नान् विकीर्ग कल म्लू है। वाक्र नानु ভূনৌ দশপত্ৰ মেক পাত্যিত্বা ত: দুপরি অর্ঘ্যপাত্র সংস্থাপ্য ওঁ পবি-बामिरेब्छवी ज्याननान शहन । धाँ वि-কো মনসা প্তনসীত্যনেন প্রোক্ষি-ত নেকদল পবিত্রণ তৎপাত্রে নি-ধায় ওঁ শংঘাদেবী ব্লিড্যাদি মন্তেণ बन पर्गार। उठः ७ जिलामि त्याम रेमवरज्जा भागत्या रमव नि-র্বিত: । পুত্র মন্ডি: প্ক্ত: স্বধ্যা প্রে-**जान् लाकान् जी**गार्कि नः बारु। । देउप्रनन जिनान्स्या नम्भू माहिना

व्यर्धाः निर्याय समास्यत्रनाहाम्। ७० **সশ**মূদ্রাট্য ব্রাহ্মণে পরিত্র দক্ত্বা **जन**। छत्रक मञ्जा भूझा छत्र १ मितः পুভৃতি সর্বগ্যত্তে ভাগ নম ইতি সং-প্ৰঃ তৎ পাত্ৰ: বামহন্ত তলে বি नामा पिक्षाश्रास्त्राहामा अं या-দিব্যাইতি পঠিত্বা ওঁ অমুক গোত্র পুভামুক দেব শর্মান্বভত্তে ২র্ঘ্য নৰ্থা। ভতঃ ওঁঅম্ক গোত্ৰ পে্তা--মুক দেব শর্মান্নতানি তে গন্ধ পুত্র ्रध्न मीनाहामनानि खवान इंजुर्ट-্ সৃষ্ণ্য এবতে গন্ধ: এতংগু পুত্ন এব-তে ধূপ একতে দীপা: এতত্ত আছ।-সন। ততো ব্ৰাহ্মণাগু ভূমৌ স্বশা-দিক মপনীয় নৈৰ্শতি মারভ্য দক্ষি-ণাগান্তরেথযা বামাবর্ত্তেন জলেন চ-ভূমোণ মণ্ডল কৃত্বা তত্ৰ ভোলন পাত্ৰ নিৰ্ধ্যাৎ। ভত্ৰ সামিষ সৰ্ব মলাদিক পরিবেশ্য ওঁ ইদ বিষ্ণু ্রিবত্যাদি মঙ্গ্রেণ অন্নাদাবনখাঙ্গুঞ্চ ্ৰিক্ষিপ্য ওঁ অপহতেত্যাদিনা তি-नान् विकीर्य) वान्नातः कनगञ्चः मञ्जा गायजी कथा जाम नधु मञ्जा তদভাবে গুড় দত্ত্ব। যৃত্ত দত্ত্বা ওঁ मध्यारञ्जािम मध् मध् मिधि ह পঠিয়া অমনভিনজ্য পোক্ষ্য বু৷ क्रा बन्भ ध्र मङ्ग वाम श्खनाम

পাब ध्वा उँ वम् म्याब भ्षाम्य (एव **मगाम उट्ड जा बिल्**मिन्टिंग् कत्रगः सार्वजुद्धाः मृद्धाः । हेमः भियामः इतः इतिः इसा गद्धः या আপঃ এতান্যপক্রণানি মুখা वाग्रजः जर । इज्जानन कन्न गञ्च म्। ७८ जायबी विः मक् মধুরাতা ইত্যাদি মধু মধু মধি खें अम्बीन निजाि **ह नार्टर**। শ্বাক্ষণপক্ষে পুন গাঁযভাগি । हिर्। ७ वाकायात्रा हत्। इन्। ওঁ যোগীশ্বর মিত্যাদি যাজ্ঞব শ্লোকত্রব• ওঁ তদ্বিকো ব্লিভ্যাদি 🕆 দুর্ব্যোধন ইত্যাদি ওঁ যুধিষ্ঠির ইত্ দি সর্ব পঠেৎ। ভড়ো দক্ষিণাগু व्यनान् ज्यो मः शाला ज्या (१ का। नर्व भुकात वस्युक्ता निष् मिकीक्छ। वाजिनाञ्च छ। खँ यात्री ্ঞান্চেত্যাদি নজন্বযেন কলোপ विकित्रर। उठा रखो भूकाना ठमा मक्किनकर्गः म्लृष्ट्री दा **र** ति श्रम् वाकागय कलगएमः मञ्जा मूर्वतम যত্রী• মধুবাতা ইত্যাদিক• মধু ন মধ্বিতি চ জপ্তা **ওঁ শেৰনম• কুদে**ং নিত্যনুজ্ঞাপ্য ওঁ ইষ্টায় দীয়তা মি ত্যত্তর গৃহীত্বা ও পিণ্ডদান মহ করিয়ে ওঁ প্রয়েভূতে ব্রাপাণ

अ मूर्थ उँ मिरुबी छ्या मिन। रेनर्थ उ वात्रज्यक्षेकिगागुद्रथ्या स्टानवा-নাকর্তেন চতুষোগ্র মণ্ডল॰ কৃত্বা পা विव वागश्यापिका शखन गृशी द्वा वानश्खानातक पिक्त भागिना দক্ষিণাগা•রেথা• মুগুল মধ্যস্থানে ভ অপহতেত্যাদি নিহ্মীত্যাদি লব্রাভ্যা॰সর্য্যাৎ। তদ্ব র মুন্তর স্যা॰ िन किल्पट । त्र्थामति मम् ान् **नागुान् जनानाछी**यँ। खँ (स्वः াভ্য ইতি পঠিয়া ওঁ একি প্রেক াম্য গম্ভীরেভিঃ পথিভি পূর্বিণে ंड (र्मश्याज्य मृतिराश्च चम्॰ क्रिय-্ৰন: সৰ্বীপ্ন• নিয় ইড্যাবাছ তি-नाः काछीर्ग सः नम् विकित्त । ্যতো বামহন্তেন সতিবা জল গৃ খীত্বা বানহন্তাদ্দিশ হত্তেন পণ গৃহ্ ওঁ অনুক গোত পুেতানক দেব শক্ষাবনে নিজ্ ধ্বা ইত্যনেন দদ্যাৎ ্ততঃ শুদ্ধ শেষ নমং সব্যঞ্জনং মধ্যান্ত্য তিল সংযুক্তণ সামিষণ পৃন্ 🛚 **হীত্বা পিণ্ড•** কৃত্বা ওঁ মধুবাতেত্যা-দি ঋক্তৰ অকল নীত্যাদি চ প ঠিত্বা বিশ্বপুমাণ পিণ্ড সতিলা 'দ্বিতণ ভূণু **সশ**ত্ৰয**সহিত্ত** বানহন্ত স্থিত পাত্রাদ্ধিণ হস্তেন গৃহীত্বা ও অন্ক গোত্র প্রেতামুক দেব শর্মা

মেষভে সামিষপিতঃ ৰখা ইত্যবনে জন স্থানে বাম হতা শারক্ষ দক্ষিণ হুন্তেন দদ্যা**ৎ। ততঃ আচন্য হ**রি° মৃত্বা পিও পাত্র• পুক্ষাল্য বামহ-স্তাদক্ষিণ হতেন গৃহীত্বা প্রকালি-ত জল ওঁ অমুক গোত্র প্রেতামুক **एव न**र्याद्य निकु ख्रा इंडि शि-ণ্ডোপরিদদ্যাৎ। ততঃ ওঁ অত্র প্রেত নান্যস্থ বথা ভাগনা কৃষাবস্থ ইতি জপ্তাবানাবর্ত্তনোদলুখো ভূত্বা আ গমনাদ্বাস- ধূরা তেনৈব পথা-পরা বর্ত্তমান: প্রেত্ত ভাষর মৃর্ত্তিণ धायम् ७ जानी सम्द (भुज यथा ভাগমা ব্যাযিষ্ট ইতি দক্ষিণাভিম্-থো ভবন্ ৰূপেৎ। ততঃ খাসং ত্য-জেহ। ওঁ নম তে পূেত পূেত নম তে ইতি ক্ ভাঞ্জলি রূপেৎ। ওঁ গৃহান্ন: পুত দেহি ইতি গৃহিণী পশ্যে । ওঁ সদ তে প্রেড দেম ইতি পিণ্ড• পশ্যেৎ। ততো নব মনবং বা শুত্র ৰস্ত্ৰদশাভব সূত্ৰ বাম হন্তাদ্দি ণ হস্তেম গৃহীত্বা ওঁ এতদ্বঃ পেুতা বাস ইতি পঠিত্বা সিণ্ডোপরি নি-দধ্যাৎ । ততঃ ওঁ অমূক গোত্র পে-ভামুক দেব শর্মান্নতন্তে বাস: ৰখা । इंडाप्तानायम्प्ह्या ७७ उर পিণ্ড সংপ্তঃ ওঁ বসন্তায়েত্যাদি

মজেণ ষড় গুলম স্কুৰ্য্যাৎ। তত ওঁ সুসুপোকিতনম্ব ইতি বান্ধণাশু ভূ মি মাসিঞ্ছে। ওঁ শিবা আপঃ সম্ভ इंडि वाकार जन मन्। ए ज खिठि भुठिवहन । **छ सोमनम**ु মন্তিতি পুল্ল• ওঁ অন্তিতি পুতিবচন• । ওঁ অক্ষতঞারিষ্টঞাস্ত ইতি যবান্ দদ্যাৎ। ওঁ অঞ্চ্যুত্তর । তত खिलाका नथ् युक्छ कल ग्रीदा उँ অমুক গোত্রস্য প্রেডস্যামূক দেব শর্মণো দত্ত নিদ নয় পানাদিক মু পতিষ্ঠতা । ওঁ উপতিষ্ঠতা মিতি পুতিবচন । ওঁ অঘোর: পুেতো **২ স্ত ইতি বদে**। ওঁ অস্থিতি পুতি-বচন•। ওঁ গোত্র• নো বদ্ধ ভা নি ভি-বদে । ওঁ বর্জতা মিতি পুতি বচন । ততঃ পিণ্ডোপরি সপবিত্র क्रमानाञीर्ये ७ उँ उँ कं वर्छी त्रम्ठः शृक भगः कीलाल भतिमुक स्था-ञ्च छर्भयछ भा (भुछ निछात्मन वाहि थात्रया निष्फ्टा ठठः ७ चार्त्रः ত্যাদি অমুক গোত্রস্যপুত্রস্যাম্ক 🏻 प्ति नर्गानः कृटेज्ड श्रथमगानिक কোদিষ্ট শুদ্ধ কর্মাণঃ পুতিষ্ঠার্থ দ ফিণানিদ রজত তর্ল্য বা বিষ্ দৈবত যথা নাম গোত্রায় ব্রহ্মণা याहः मनाविति मन्त्रायः । जाता नः

कियां कियां भणान् वत् याति छ। নাত্ৰ পাত্ৰ নালভ্য জৰ্পেছ। নালি-्यः भार्थायमिछि भूटाउ। वहना-मानियः न भार्थरयः । उड छ एर বতাভ্য ইতি ত্রি: পঠেছ। ওঁ আ-ভিরম্যতা মিতি বিসর্জন• ওঁ অ-ভিরতোমীতি পুতিবচন । ওঁ আ-नावार्जि अपिकिन वाबि थात्रमा বেষ্ট্রেছ। পিণ্ডা•স্ত গোজ বিপ্রে ভ্যোদদ্যাদশ্লৌ জলেপিবেডি ক্ষি-(१९ । भाषीय पुराः तान्नाय मः म्राथ बाल वा किएभर 1 उड़ा বামদেব্য গায়েৎ অছি ্যুবধারণ मीलाहामनः विक्यात्रनक वर्गा८। এব• পুকারেণ দ্বিতীযাদি মাসিক• কর্ত্তব্যং। ইতি মার্ভেউাচার্য্য কৃত भाषाभुर्यागञ्जुः ॥ 🛊 ॥ जन्द्र णाक्षणाय मुष्टेवाः ॥ मामिकः वि मामममुक्ती।। मामिज्य ইত্যর্থে ক্ষিক পুত্যযেন নিম্ননঃ।। गामुती खी भागुः। ইতি ए्या न्युः॥

नाम वर्र वाद्रगः। छए भर्यरायः।
नार व्यवः १। इंछ द्रानदः॥
नार व्यवः भारत। इंछ कि कि कि स्वक्रमः
॥ व्यवमारूषा व्यवस्य द्रान्
वर्ष वदान्वस इंख्याकः। व्यवस्य स्वान्
विश्व वदान्वस इंख्याकः। व्यवस्य स्वान्

गार्थि

नाश्वालः () जि मशक्रालाख्यः। माश्राल्लीनेः) ইত্যমরটীকায়াः রা-

যমুহ্নট: 11

माहाबार क्षी महाके जा। महित्सि ज बाव । यथा। माहाबार छगव जाफ भूदानादिय की विंठ । भाठे खमर बभः (भाकः भाठेष्प्रवीमना खठः॥ ইতি তিথ্যাদিত ত্ব ।।

माहानानिकः) श्र॰ नहानानीव्यकाः नाहानानिकः) (वंडावाक्राः । ইতি (कंटिं॥

নাছিন• ল্লী রাজ্য•। ইত্যুণাদি কোষ:।।

दाहितः भू 'हेन्द्रः। हेडि विकाशः ॥ (भवः॥

निश्चिकः शुः महिवीशिकः। वर्रा जिन्नां तिर्गुत्वक्तशिकः। यथा। म हिवी ज्रुन्नां जा निश्चाकाः जिन्नां तिर्गा। जाः मुद्धाः कामयिक यः म देव माहिषिकः मृजः॥ इठि स्वात्म काणीथ खः॥ महिर्षाशः जीवी॥ जगनां त्वाशार्क्किं जीवः नार्गा जिल्लां ताशार्क्किं जीवः नार्गा जलां ताशार्क्किं जः वनः। छेः शकीवि य सम्प्राः म देव माहिषिकः म्युः॥ इठि विक्षुन्तां । २ स्वार्ण ७ ज्यारा २० स्थाकम्य गारुणी

ीकाया॰ श्रीश्रत्रश्रामी ॥

नाहिष्यः भू॰ वर्णमङ्जबाि वित्मः यः। म ह कविषादिणायाः काउः

। ইত্যমর: ॥

बाह्नमुः: शू॰ मूडम्खवित्मवः। त्र-वाि निश्ववादिषु वायु वक्ष मन <u> নাহেন্দ্রাণা</u> ভবস্তি 1 তত্ৰ বৰুণ মাহেন্দুযো দক্তি শুভৌ । वायु यमरया प्रं आवणुर्व्छा। यथा। খ্যাত বাব য মা সূর্য্যে মা বা ব য क्लानिरधो। व य मा वा ऋ ख छ वा ना वा व य ज्याः मृत्त ॥ खत्री वा व य मा हिव मा वा व य उथा ज्लो। म्र्य्प्रभूख य ना वा व घटी युगा भूजाभूज ।। मारहत्मु विज-(या निष्ठाः वाक्षा ह श्रनागनः । বাথৌ চ ভুনতে নিভ্যুণ খনে হপি মরণ ধুব ।। ইতি সারস গুহ: ॥ मरहन्द्रमञ्जन्तिनि वि॥

नारहन्ती खी हेन्तु। ११ हिंड भवत् । वनी ॥ (गोः। हेडि द्राजनिर्घण्टः ॥ नारहरः वि नशा अপত্যः। हेडि मूक्षरवाद व्याकद्रनः॥

मार्श्यो जी शोः। ইত্যमतः ॥

मार्श्यो जी मूर्गा। यथा। महारि

वार्श्यम् श्रेष्ठ मे क्यार्थ्यः य
उः। नार्श्यर्था उनुर्यम्या भारंगी

गारश्य

(उन माञ्च्छा ॥ इंडि प्तिवी**न्**द्राति ८८ चेद्रायः ॥

भार्ष्यती जी यविष्ठा। इंडि ताक নির্ঘণ্ট:॥ দুর্গা॥ মাতৃভেদ:। ইতি नपत्रद्वावनी ॥ विकृष्ट । यथा । कन्ता छेरूश क खु॰ विज्ञान्तरम कास्त्रा কেয় বা নব বিপুঞা। কোনুয় ভাতি বপুষা পক্ষায়তলোচনঃ भ निमान जामा वहन व्यक्त्वत बाह्नः। व्याक्षशत महार्यागी ज् **ভাবিগ**তি রব্যय:॥ अय॰ नातायः ণো গৌরী জগন্মাতা সনাতনঃ। বিভন্ত সংছিতো দেবঃ স্বাত্মান বছপেশ্বর: ৷৷ নমে বিদু: পর• তত্ত্ব• (म्याम्या न सङ्ख्यः । अःका १य॰ দেব দেবাত্মা ভবানী বিষ্ণু রেব চ ।। जरुः हि निश्चियः नासः किवला নিভ্য বিগ্রহঃ। মামেব কেশবং দেব गान् पर्वो गथाधिका ।। এव श्वा-তা বিধাতা চ কারণ কার্ম্য মেব চ । কর্ত্ত। কার্যায়তা বিষ্ণু ভক্তি মুক্তি कलभुरः ॥ (ङाका भूमानभुष्मयः मःरडी कानक्षशर्क्। मुद्री धाउ। বাসুদেবো বিশ্বাস্থা বিশ্বভো মুখ: ।। क्षेट्रशा ख्वरता वताशी यागी নারায়ণ: 🐠। তারক: পুরুষো-श्वा (कदल शहन शर ॥ ७व।

मा जिल्ह

मारहियद्रीशोती मन णाक मित्रखन्ता जातः ना । जाला जाका जाका महाना जातः शह नििं गुलिः ॥ साम्राः जार्ब-विषः काल भरेखव नव सम्मालि । विषय मर्बन्जानाः गलीना मृहमा गलिः॥ ইতি কৌর্মে ४८ অখ্যাयः॥ साक ই স্পৃতি। ইতি ক্ষিক্ষকমः॥ ই মাঙ্কুতি। ন মধ্যপাঠে নৈবেপ্ত নি-জে ইন্বল্বো বেদেষ্টারণ জেদা। র্থ:। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

মাক্ষিক ল্লী মধ্য ইত্যমর:।। নীল-वर्ग सथाम सिक्का क्ठ रेजमवर्ग-न्धू। जम्र छनाः। क्लिप्ताश्यु उत्र-ष्व । क्य द । (मृष्ठ द । या माहि রোগে বিশেষ उ: পুশন্ত ভরত্ত্ব। 'ইতি রাজবল্লভঃ । শা ছুবিশেষ: । थाजूगाथी इंडि हिन्सी डाया। उ-ष्ट्रिविषः । सर्वगाकिकः (वीर्ण) मा-किक्छ। ७८ भर्यायः। माक्नीकः २ পীতক ৩ খাতৃনাক্ষিক ৪ তাপি-ছ ৫ তাপ্যক ৬ ভাপ্য প আপী-ত ৮ পীত্রমান্দিক ৯ আবর্ত ১-मध्याजुः ১১ कोप्याजुः ১२ मा ক্ষিকধাতঃ ১০। ইতি রাজনির্ঘণীঃ ।। कर्यः ४८ हकनाम ४८ ञ्राजनाम-ক॰ ১৬। ইভি হেমচন্দু:॥ অস্য भाः। मध्यद्वाः। जिक्कदः। श्रम्भदः

। कक जुम क्लाम गृहां शिं भाम काम दिवे। शरुष ।। माक्किक । विश्वः (शुक्तः (क्याखः जात्रमा किकः । जिस्रवर्षः, विश्वादम्म वीर्यापिकः शृथक्। जात्रभाषािकः क्रि जात्रमाक्किकः शृष्णमाद्ध । प्र हर (क्याजकः मञ्जः (त्रागक्षण शृष्ठिषः ।। ইতি त्राजनिर्यक्तः ।। ज्य शिष्ठ । (व्ययमा माक्किका थाजः ज्यर्ग त्रज्ञ पाजिः। ज्ञताि श्रिः।। गथ्रता १ मः कहः भारक किलिप् क्या २ मृत्जाभनः। ইতি किलिप् क्या २ मृत्जाभनः। ইতি किलिप् क्या २ मृत्जाभनः। ইতি किलिप्

নাক্ষিকজ॰ ক্লী শিক্ষক॰।ইতি রাজ-নিয্ণীঃ।।

नाक्षिककनः श् मध्नानिक्विकः। इंडि वाजनियंगः॥

शाक्षिकाणुय॰ क्षी मित्रुक॰। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

নাক্ষীক ক্লী মধ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ নাক্ষীকশক্তরা স্ত্রী নিতাখণ্ডঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

নি ডু ঞ ন ক্ষেপে। ইতি কবিকল্প জনঃ ॥ ড নি ত্রিন॰। ঞ ন মিনোতি মিনুতে। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ সিছ শ বাধে। ইতি কবিকল্পজনঃ ॥

ণ মিছতী নিছন্তী। বাথো বিহুতিঃ । इंडि मूर्गामामः ॥ মিতঃ ত্রি পরিমিতঃ।। শব্দিতঃ।। किथः। ইতি गाधाः प्रिधाः শ্চ ক্তপুত্যযেন নিম্নন্ধ ॥ নিতক্ষ: পু• জ্রী হন্তী।ইতি সিদ্ধা-ন্তকৌমুদী॥পরিমিতগামিনি ত্রি॥ মিতজঃ পু॰ সমূদু:। ইতিহেনচন্দু:॥ নিতম্পচঃ ত্রি কৃপণঃ।ইত্যমরঃ॥ পরিমিতপাককর্তা চ।। ত্রি পরিমিতভোগী। नि जामनः মিত্যশাতি যঃ ইতি বৃৎপত্ত্যা কর্ত্তরি অন পুত্যযেন নিম্ননঃ॥ মিতিঃ জ্রী মান ।। বিজ্ঞান ।। অব-(इरः। ইতি শব্রহাবলী।। নিএ॰ ক্লী শ্রো:পর•। ইত্যনর:॥ অতঃ শত্রোঃ পর মবস্থিতে: রাজা-নিএ উপকারিত্বাৎ।নেদ্যতি স্নি-হু ঠীতি ত্রাসুসিতি ত্র: নিপাতাৎ ন্ডণা ভাব: । দ্বিতকার• একতকার-ঞ্চেত্যেক। ইতি ভটীকাযা• ভর-ত:।। অপিচ। রাজা শতু রিতি-খ্যাত একার্থাভিনিবেশতঃ। ভূ-নৈ কান্তরিতো রাজা স মিশ্রণ মি-একার্য্যতঃ॥ ইতি শব্দরত্মাবলী।। নিত্রণ ক্লী বন্ধ:। নিতা ইতি ভাষা।

उद्भर्गामः। मथा २ मृहृद ०।

ইঙ্গমর:॥ মায়ণতি জানাতি সর্ব নিত্র 'নীকি গত্যা নান্নীতি ডিক্র: । নিত্ৰ মুজহল্লিক্। নিপাতাত্ত্ৰস্য দিবে বিভকারঞ। ইতি ভটীকা⁻ যাণ ভরতঃ॥ তहতুর্বিরণ। সহার্থঃ ১ ভল্পানঃ ২ সহজঃ ৩ কৃত্রিমঃ ৪। 'ইভি মহাভারতে রাজধর্ম: ॥ #॥ মিত্রত্বোৎপত্তি যথা। ন কশ্চিৎ ক্স্যাচিন্মিত্র• ন কশ্চিৎ ক্স্যাচিদ্রি-शुः। काद्रगारित कायस भिवागि त्रि**भव खथा ॥ वर्ज) भिव• यथा ।** সভার্য্যাঞ্চ সমিত্রঞ্চ সরাজান-**अरमोङ्गः। अ**वहूक्ष अरममक ह्वः ড: পরিবর্জযেৎ ॥ স্পনিত্তে নাস্তি विश्वामः सद्गारत्र नास्ति कीविछ । পরোক্ষে কার্য্য হন্তার পুত্যকে প্রিয়বাদিন•॥ বর্জবেক্তাদৃশ• মিত্র• भागान्य भद्रिष्ठथा ॥ विश्वस्रेमाऽव মিত্রত্ব॰ যথা। সা 🗐 যান মদ॰ कर्गाए म मूथी ज्काराज्ञिजः। उ ब्रिव ग्रा विश्वामः शुक्यः म जि তেন্দ্রিঃ।। ইতি গাৰুডে ১৩। ১৪। ७ व्यथ्रायः ॥#॥ विवश्रमः नानि ৰ্যথা ৷ যুস্য নিজেণ স•ভাষো ফস্য নিত্রেণ সংস্থিতি:। যস্য নিত্রেণ নিত্রবং সলঃ ত্রি নিত্রপূষ:। তৎ-गःवाल छा। नाछीर न्गान्। স্থানি কানি চ মিত্রাণি কতব্যানি 🖔

শতানি চ। পশ্য ম্বিক মিত্রেণ কপোতা মুক্ত বন্ধনাঃ গ পরোক্ষে कार्य) रुखात्र• ्क एक ्रियवापि-नः। दर्जाराजार्भुकाः विद्या विवस्रस्रः প্ৰোমুখান ব্ৰিৱাৰ্থ স্তম্য মিত্ৰাণি यम्।। र्यं उपः वाक्षमाः। यम्।। र्यः न भूगाम् विदिक्त यन्तार्थाः न हि পণ্ডিত: ৷৷ অপু এম্য গৃহণ শ্ন্যণ সন্মিত্র হিতস্য চ। নূর্থস্য চ দি-শ: শ্ন্যা: সর্বশ্ন্যা দরিদুতা ॥ रेजि शिजाभारमः॥

নিত্র: পু॰ স্র্তঃ। ইত্যমর:॥ নিঅবুঃ ত্রি নিত্র<েসল:। ইতি হেন -**इन्त**ः ॥

নিত্রয়: পু॰ লোক্যাত্রিক:। ইত্ ণাদিকোষঃ সংক্ষিপ্তসারোণাদি-বৃত্তিশ্য।।

মিত্রযুদ্ধ লী সূত্ৎসংগ্রাম:। তৎ পर्यायः। भिष्वियका २। ইতি जि-কাওশেষ:॥

निवनिक्तः जी) সূर्ৎ भाषिः। यथा। विवना जः भू । विवना जः मृश्राक्ता বিগৃহঃ সন্ধি রেব চ। ইতি হিতে। शामणः ॥

পাব্যাৰ:। নিঅশু: ২। ইভি হেন: <u> ज्यः ॥</u>

মিথিলা

मिजनीः वि जूर्ट्नासा भिजः भा-सिया शैकि मृथः वाष्याक्राक्राः ॥ भिजा स्री ज्ञिता। भजूषक्रानी। हैकि नद्रशायनीः॥

মিথ শ ঞ বংখ। সেখাযা । ইতি
কবিকল্পজন: ।। শ অনিমেথ । এ
নেথতি মেথতে শাস্তার্থ শিষ্যঃ
খার্যতীত্যর্থ: । ইতি দুর্গাদাস: ।।
মিথ: ব্য অন্যোন্য ।। রহঃ । ইত্যনরঃ ।।

निथिः भू निनिज्ञा अभू था। म जु कानकता जाः। यथा। यभू थाना उना उना नित्म प् जू जाः मती ज नजा का की न जवत्य मूनयः यज्ञ गणाः मन छः। उव क स्माद्धा का छ । खनना क्वनक-भ जा का ना गविता । य ज् चित्त रहा। स्मा भिर्जि वित्त हः। मथना चि थि ज जू । जा मा गिर्मा भू था। स्व व । जिल्ला हा गा व य । स्व व । स्

নিথিল। জ্রী স্বনামখ্যাতনগরী।

সা তু জনকরামপুরী । যথা ।

বিদেহা নিথিলা প্রোক্তা । ইতি
হলাযুধ্য ।। অপিচ । গগুকীতীরনারভ্য চম্পারণ্যান্তক শিবে ।

বিদেহভূং সমাখ্যাতা তৈরভুক্তাভিশ্ব: স তু॥তৈরভুক্তা ভিহ্ত ইতি

মিথুন

খ্যাতা। ইতি **শক্তিস**ংস্ক্রমতন্ত্রে **१** পট**ল:** ॥

निथुन ही जीभूभारवार्य्या। उद भर्यप्रायः। धन्दुः २ । इंख्यमद्रः ॥ यू-**गनः। ই**তি তউोकायाः द्रामा<u>न</u>्यः॥ নেষাদি দ্বাদশরাশ্যন্তর্গত তৃতীয त्राणिः। उ८ भर्यग्रयः। किन्नः २। **७** ६ दिशर॰ गु। ने। सम मः छाकः। व्यत्माप्यमा ख्नमान सम्नाधिक পঞ্চপ্তা:। ইতি জ্যোভিষতত্ত্ব• ॥ व्यम्याभिष्ठाकृष्ट्वजा गराधातिभू-क्षः वीगाधातिक्षी ह। मृशानितः (मयार्कः आमा अमूनायः भूनई(मा ক্রিপাদ• এতৈ ভ্রতি। তত্তু শীর্ষো-मयः शिक्तमिक्सामि वायुश्कृि হরিদ্বর্ণ বনস্থিত শুদুবর্ণ স্থিক নধ্যন্ত্ৰীসঙ্গণ মধ্যন সন্তান্ধ্য। তত্ৰ জাতো জন: মৃগচকু: মিপ্টভাষী क्षः वक्षकः धर्ममिकः विनयजाः बनण खराउ । इंजि त्रङ्बाउ-कारयः॥ #॥ अथ निथुन नग जा-**उक्तः। भिथुताम्य मः** जाउ। मा-নী স্বন্ধনবৎসল: । ত্যাগী ভোগী धनी कामी मीर्यमृत्वा १ त्रिमर्जनः ॥ ইতি কোষ্টাপুদীপঃ॥ #॥ রাত্রৌ তল্লণুনিৰূপণ যথা । দম্ভ সংখ্য **ख्रान वामाक्**ञावस्रा**ख मम**हनस्र

मध्रा । कामनाकि निश्राम-यार् भिराय कान थानन कनाः भि य २ वन्।। ८। ७।। ইতি कानि-দাসকৃত রাতিলগ নিক্পণ্ ॥ নিথ্যা ব্য অসত্যু মছ্ া ইতি ভाষ।। उৎপर्ग्रायः। भ्या २ विज থঃ ১ অনূত ৪। ইতি শ্রর্যাব-की।। म। हार्यम्भन्नी। यथा। अधर्य পত্নী নিখ্যা সা সর্বপূর্ত্তিক পূজিতা । यया विना जगन्य क न्हम॰ विधि निर्मि उ॰ ॥ जल्डि हाम्लना या ह ত্ৰেতাথা সৃত্মৰূপিণী। অৰ্জাব্যব ৰূপা চ দ্বাপরে সংবৃতা ভিয়া।। কলৌ মহাপুমন্তাচ সৰ্বত্ৰ ব্যাপি কা বলাৎ। কপটেন সম• ভাতা ভু:ভ্যেৰ গৃহে গৃহে ॥ ইতি বুন্ধ-বৈবর্ত্তে পুকৃতিখণ্ডে ১ অধ্যায়ঃ॥ 🗱 ॥ অপিচ। অধর্মান্য প্রিয়ারন্যা নিথ্যা নার্জার লোচনা। তস্যা: कालनः॥ न मानायाः ভिधिनप्रस लाड श्राक कन्रका । निक्डि बनवानाम ज्याः व्हादः मूजा २ ভবৎ ॥ ইতি কল্পিরাণে ১ অ 📊 ध्रावः॥ 🕸 ॥ विषयः छप्टि निथ्रा-ভাষণে দোষাভাবো যথা। শুর্মি (शवाह। न नमा युक्त वहन हिन डि

ःन जीयू दाजम विवाहदात्वा भाग .. छ्राय गर्व धनाभः ।। अर्थ नकान्छ। ্ন্যান্থ রপাতকানি 🛭 মিথ্যাকথ:-(मायायका)म् हो स मान्क्रभ्वन **ন্তি** যে ্ৰেক্টা ড্ৰন্থি , **খ্যা পতি**তা नाजन्ता ककार्यन वास नमाहिट যা পিখ্যা ্ডে ছন্ত হিনন্তি যবাতি ক্বাচ। রাজা পুনাণ ए তানাং স বিনশ্যেমূষ। বছন্। অ क् हु गि भुभा न निष्रा कर् भू সহে ॥ ইতি মাৎস্যে ৩১ অধ্যাদঃ ॥ 🗱 ॥ অথাসত্যাভিয়ান পা শ্চিত্ত । তত্ৰ সকৃদসত্যসম্ভাষ ক্ষানুমারণ পাুমান্ডভ। যথা বিষ্ণুপুরাণ ৷ কৃতে পাপে ২নুত (भा वि यन्। भू भः भुकाय्छः भागिष्ठि छ उत्तरकः क्कानुमान ণ• পর• ৷৷ অভ্যন্তাভ্যাসে বিষ্ণু निन्दिखाल्या **थनामान** वाशिक ऋगीर कीवन । **अभ**ज्याहर শুদুসেবন মিত্যপাত্রীকরণ 🎨 ত্বা তপ্তক্ছেন স্ব্যতি॥ অতিবহ তরকালাভ্যাসে ননুঃ। সঙ্করাপা ত্ৰকৃত্যাস মাস• শোধন নৈন্দ্ৰ• ইতি। চাত্ৰ্বৰ্ণ বধে সাক্ষেত্ৰ 🦠 ভাষণেহনুপাতকত্বভাবাল্লঘু 🕬 यिष्ठि गार याञ्चवद्यः। विभिन्

নিথ্যেত

वर्षा यब एव नाका ९न्ड॰ मतः। जिद् कावनाय निर्द्वाभा कः महाकाका विकः॥ मृत्रु ज् ্ফু:। তে পাৰনীয় **সন্মাণ্ডীভি** ं जा श्री हु । १९ । मृतुरेक्ता चित्रहे॰ (नाम्यकम् भामः विषय्राद । विषय विस्मास र्भवान मास 🤋 ব্লীত: । সোনবিক্রয কন্যাবি-্হ ভ্য নৈথুন বালকস•জ্ঞপন া। বান্ধণ হিভঞ্জ হর্ন মিথ্যা ন युक्त॰ वहन॰ हिनछि न रेबद्र वाक्रऽ॰ न ह रेनथुनार्थ। भागा छारय मर्बध-নাপহারে পঞ্চান্তান্যান্ত্রপাত কানি।। ইতি পাুুুুুুক্ত বিবেক:।। नियाम् 🕃 । छी कर्मक नाभवामक-জা**ন । তৎ প**ৰ্য্যায়: । নান্তিকতা ২ । ^ই ত্যনরভরতৌ।। অসত্যদর্শনঞ্চা। নিগাব্যব**সিতিঃ জ্রী মিথ্যাধ্যবসা**যঃ ্সসভ্যোৎসাহ:। ইভিকেচিৎ।। বিল্যানিরসন ল্লী শপথঃ। ইত্য মর টীকাযা• ভরত: ॥ মিৎ্যাভিযোগ: পু॰ নিথ্যাবাদ:। শত নে ধার্যসীত্যাদি নিখ্যো-जावन । जर्भर्गायः । वाज्या াগান ২। ইত্যার ভরতৌ ॥ িখ্যাভিশ-সন লী স্বৰ্ণন্তেয় ত্বা

ক্তনিত্যাদি মিথ্যাদ্যণ বাক্য । তৎপর্য্যায়: । অভিশাপ: ২। ই-ত্যমর ভরতৌ।।

মিথ্যাভিশাপঃ পু॰ মিথ্যাপবাদঃ ।
বথা ভোজরাজঃ । শৃদ্ধপক্ষে চতু
থ্যান্ত সিংহে চন্দুস্য দর্শন॰ । মি
থ্যাভিশাপে সকতে ন পশ্যেত্তক
ত॰ ততঃ ॥ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব॰ ॥
মিথ্যাসতিঃ স্ত্রী ভুগন্তিঃ । ইত্যমরঃ॥
অসত্যবৃদ্ধিশ্য ॥

स्थित है जि । उथा यनः । न नर्या नियानाका वि कृष्टेमाको। उमा युक्तः वहनः हिनछि न देवा वाकाः । उद्धान श्रुकात नाह याद्धदद्धाः । विद्धान वानाधा व्याम् विद्धान वानाधा व्याम् विद्धान । विद

নিখ্যোত্তর॰ ক্লী চতুর্ধোত্তরান্তর্গতো-ভরবিশেষ:। তস্য লক্ষণ•। অভি-যুক্তো হভিযোগস্য যদি মর্য্যাদপ क्रवः। निथा छल विकानीयामुख त वावशाव ।।। ইতি नात्र ।।। छ ह जूर्विषः। निथा छ । ज्ञश्माः छिजामानि २ मम छव न मिनिषः ७ छ काल १ इनका छः । यथा वाम नात्र ।।। निथा उमाछि कानानि मम छव न मिनिषः। च का उम्हाचि छ काल हेछि निथा। ह जूर्विषः।। है छि वावशात छन्।।। निम ह क मिनिष्य छ विकारि छला ।।। ह क निन्ष्य छ विकारि छला ।।। ह क निन्ष्य छ विकारि छला ।।।

নিদ ক স্থিহি। ইতি কবিকল্পজনঃ॥
কন্দেষতি বর্ত্তিকা তৈলেন। ইতি
দুর্গাদাসঃ॥

भित इत ग हा तिहि। इंडि कवि द सम्बन्धा इत जानम् ज्यामीए १ य इंडि व्यागाममीला १८मी म-स्वार्या नत्ममुजीजि स्वार्थः॥ जा मिहिड॰ निम्न॰ (जन। इंडि मूर्गामामः॥

निम त्र वा कि उ निहा है जि कि वि कन्न क्रमः ॥ त्र व्यानिष्ट क्रि मिसा श्रिउ (नम् रूठ) है जि मूगामानः ॥ निम वा क्र वर्ष (नश्रयाः । है जि कि वि कन्न क्रमः ॥ व्यामितिम् है । क्रिक्म जि (मन् रूठ क्राञ्चार्थ क्रिक्म) क्षान নিখিন

यञीजार्थः । शिशिषुः शिराषुः । इंजिपूर्णामानः॥

भिन्मिनः वि मानुनामिकवाणिनिष्ठः। থোনা ইতি ভাষা। তস্য নিদান• यथा। আবৃষ্ঠ্য বাযুঃ সকফে। খন-नीः भद वाश्निः। नदान् करता-ত্যক্রিয়কান্ নুক মিন্মিন গদ্ধান্ ॥ इंजि माधवकतः ॥ शक्वियकान् ইত্যত্রাবচনানিতি চ পাঠঃ। অব-हनान् व्याखिषमार्थ नवा । उन वेष ष्ठनान्। जवव वायुः भुवलाण्डलाः मूकान् व्यवहनान्। मिबिमान् नान्-नामिकान्। गन्ननान् न्धनम्वाधनः নাভিধাহিনঃ করে। ঠীত্যব্য:৷এধা• সন্ধন কারণত্বেপি দৃষ্টে কৎকর্যাদি-না অদৃষ্ট বশাদাভেদো বো**দ্ধ**ব্যঃ ।।#।। অথতেষা• চিকিৎসা। পুস্থ• ঘৃতস্য পলিকৈঃ শিগু, বচা লবণ धाउकी लारेषु: । **चारक भयमि वि**-পত্ন নিদ্ধা সারস্বত নারা॥ বিধি বদুপযুজ্যনান জড গন্ন মুক্তা। ফণাৎ জিত্বা। মৃতি মতি নেধা প্রতিভা: স্ব্যাৎ সংস্পষ্ট বাণুবতি । সারস্বত ঘৃত ।। সহরিদুা বচা দ্ধ বিপ্পলী বিশ্বভেষজ । অজা-की ठाक्रामा ह यश्चीम युक रेम ख्व-৷৷ এতানি সনভাগানি সূক্ষ চ্ণানি

कातरय । उहुनं मिर्भि (काउ)
भुजार जिक्सारमतः॥ वकि मिजि
भाजि जित्हु जिस्ता नतः। निष मृन्यू जिनिर्धारमा मेख काकिन नि

निल म क सिष। ইত करिकन्न कराः ॥ सिषि जयसी ज्ञारत । म क जिल्डि निलंडि चला वृष्मण । ज्ञार क्रीपि तिजि चला नुमः । उन काल निलंग निलंदन गत्रल निव क्लग्डि नलग जमीतः। ইडि ज्ञारप्तः। निलंग्डि। मङ्गारा । किनः शक निलंडितः ने देः जरु। ইতিচ। ইতি पूर्णापानः॥

নিলিতঃ ত্রি শ্লিষ্টঃ। সম্বন্ধবিশিষ্টঃ। যুক্তঃ। নিলধাতোঃ কর্ত্তরি ক্ত পু ত্যযেন নিয়মঃ॥

নিব ই সেকে। ইতি কবিকল্পদ্দম:॥ ই নিয়তি। ইতি দুর্গাদাস:॥

निम धुरने॥ कार्शि हेि कविकन्न क्यः॥ सम्बद्धि हेि ह्र्गानामः॥ निम्नः खी सधुतिका॥ भेजशृङ्गा॥ हेउ।भत होकाया॰ जत्र इः॥ बहा-भा•मी। हेि भद्यत्वावनी॥

निभी खी बहागाःनी। इंडि मद बङ्गावली।। मधुबिका। इंडिप्नब ही कायाः ভवडः॥ নিশ্ ত ক যুত্যা । ইতি কবিকল্প জন: ।। তালব্য মধ্যো হ্য । দন্ত্য মধ্য হতি বৰ্ণদেশনাযা । যুতিঃ সংযোজন । নিশ্যতি নিশাপ্যি তি ঘ্তেনাল লোকঃ । ইতি দুর্গা দাস: ।।

নিশৃ লী চানক, মূলক। ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥ मिन्जिं । यथा । किहि-मान्धः वृहिष्मरा**ण** यावलू मिन नाफिः काः। ভাবদেবত্বনধ্যাযোন ভক্মিশ্ দিনাম্বরে ॥ ইতি তিথ্যাদিতভু॰ ॥ মিশু: পু॰ গললাভিবিশেষ:। যথা। ভদ্যে মন্দ্রে মৃগো মিশু শতস্যে গজজাতयः । ইতি ছেনচন্দুः ॥ (मुक्तः। यथा। (गोत्रविका खार्य) नि-শা:। ইতি ভ্রিপুযোগ:।। সংযুক্তে बि।यथा। कत्रभ्रः कवरता निण्ः সংপ্কঃ খচিতঃ সনাঃ। ইতি হে महन्तुः ॥ উगुन्ति मधगनाष्ठर्गङ সপ্তম্গণ:। স তু কৃত্তিকা বিশাখা-ভ্যা• ভৰতি। ইতিজ্যোতিষতত্ত্বণা নিশুক ক্লী দেবোদ্যান । ইতি জটা-**ध्रः ॥ 'अयद्गन्य । इंछि दाज**-निर्घण्टः ॥

নিশুকাবন ক্লী ইন্দুস্যোদ্যান । যথা । নন্দন কন্দসার স্যান্মিশুকাবন নিত্যপি। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।। নিশুজ:। পু॰ থেসর:। ইতি রাজ। নিঘটি:॥

निमुन क्षी मःयोजनः। अञ्जीकत्रनः
। निमुन्नारजार्जाय १नरे गुज्यस्न
निज्ञमः॥

নিশুপুয়া জী নেথিকা।ইতিরাজ-নির্ঘটঃ।।

নিশ্বর্ণ স্লী কৃষণগুৰু।ইতিরাজ-নির্ঘণ্টঃ।। নানাবর্ণযুক্তে ত্রি।।

निमुदर्गकता खी वार्डाकी। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

নিশুশব্দ: পু॰ থেসর:। ইতিরাজ-নির্বণ্ট:।।

মিশ্রিত ত্রি গৌরবিত। ইতি জটা-ধর:॥ মিলিতঞ্চ ॥

निर्मुग छी मधूतिका। भोति ইতি ভाষা। ইত্যমর:॥ निर्मुग সর সাপেয়া ত্যাহা ফন্দেবন্ধনা। ইতি

मदहिमुका है।। मछभू हो। जनू-ফা ইতি ভাগ। ' তৎপর্য্যায: । जाल्लगर्गी २ जानुसमा ७ निविः 8 मालिया *६* मी उभिवा ५ माली ना १ दनका है अवाक् भूझी २ मधू-विका > । एवा >> गः हिंजभू ब्रिः का ३२ जूनूझा ३७ मूत्रमा ३८ वन्। २०। वामा। खनाः। नध्यवः। नि अञ्च । कर्षेषु । भन्न क्र क्र इत्र । ৰাত পিভোগ্ৰদোষ প্লীহ জন্ত বিনাশিত্ব। ইতি রাজনিঘটিঃ।। নিষ উ সেচনে। ইতি কবিবল্লজনঃ।। উ মেষিত্বা নিষ্ঠা। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ নিষ শ স্পান্ধ। ইতি কবিবল্লজন:॥ ম্পদ্ধ: পরাভিভবেহা। ইতি বো-পদেব:। শ নিবতি বলী বলবত। ইতি দুর্গাদাসঃ !৷

नियः क्ली एकः। ইতি मिनी।।

नियः भूः म्लर्जनः। ইতি मिनी।।

नियः जी किंगाःनी। ইতি শपः
तञ्जावनी।। मधुत्रिका। ইতি শपः
हिन्दिका।। শতপুत्रा। ইতাসরः

हिन्दिका जी किंगाःनी। ইতি শपः-

রত্নাবলী।। নিষ্ঠ তি সিক্ত ।। স্পদ্ধিত । ইতি নিয্ধাতোঃ ক্ত পুত্যবেন নিয়ম ।। निष्ठः शे ्यष्ववयाः। यथा। निष्ठः
श्री कर्षा निष्ठः स्तरः श्री श्री कर्षा निष्ठः
। कर्षे कि कर्षा निष्ठः श्री कर्षा निष्ठः निष्ठा कर्षा निष्ठः निष्ठा कर्षा निष्ठा कर्षा निष्ठा कर्षा निष्ठा निष्ठा निष्ठा कर्षा निष्ठा कर कर्षा निष्ठा कर कर्षा निष्ठा कर्षा निष्ठा कर्षा निष्ठा कर्षा निष्ठा कर कर्षा निष्ठा कर कर क्रा निष्ठा कर्षा निष्ठा कर क्रा निष्ठा कर क्रा

'নিষ্ঠান্ধ নী মধুরদ্ব্য ইতি হলা যুধঃ। অপিচ। নিষ্ঠান্ন পান দাতা থ সতত শুজ্বগান্বিতঃ। দেবপূজা পরো নিত্য নপুতো জায়তে মৃতঃ ।। ইত্যগ্নিপুরাণ ।।

নিসিঃ) জী নপুরিকা।। জটানাণনী। নিসী \ শতপুরা। ইত্যারভরতী।। উশীরী। ইতিরাজনির্ঘটঃ।। অজ নোদা। ইতিনেদিনী।।

मिन् छ क यूजाः। ই छ कि विकल्ल स्मः।। जालवा मस्या २ १० । इन्छा मस्या २ १० । इन्छा मस्या १ विद्या १ विद

मतः ॥ वृषः । ইতি मिरिनी णफ् त्रञ्जावलाते ॥ मिरः । ইতি हिम-हन्तुः ॥ वायुः ॥ हन्तुः । ইতি नानार्थ त्रञ्जभाना ॥ विक्रमाहिख्यक्त्रमातः नवत्रञ्जास्त्रभंख त्रञ्जविष्णयः । यथा। पत्रस्रति क्रम्भकामत्रमिश्च णक् विज्ञास्त्रभंख विक्रम्तं कानिहामाः । थेऽ। छो वत्रास्त्र मिहित्तो म्माः । थेऽ। छो वत्रास्त्र मिहित्तो म्माः । थेऽ। छो वत्रास्त्र मिहित्तो म्माः मिस्त्राभः त्रञ्जानि विव्यत्रञ्जः ॥ मिस्त्राभः भूष् भिवः। ইতি जिकाश्व-(भयः ॥

भी उप वर्ष। इंडिकविक सुक्काः॥ उप भीष छ। इंडि मूर्गामानः॥ भी अ अ ग वर्ष। इंडिकविक सुक्काः॥ ॥ अभीनः। गया भीनांडि भीनीरङ । इंडि मूर्गामानः॥

মী কি গভ্যা ।। মত্যা । ইতি কবি । কল্লজনঃ ।। কি নাৰ্যতি ন্যতি । ইতি দুৰ্গাদাসঃ ।।

নীত ক্রি ম্ক্রিও । ইত্যমর: ॥ দ্বে ক্রম্কোৎসর্গে। মিহৌ সিচি ম্ক্র তক্ পুসাবে আভ্যা পাত্বর্থেনো-পসংগৃহাদকর্মত্বাৎ কর্ত্তরি ক্তঃ। ইতি ভরত: ॥

भीष्ट्रेमः भुः भिवः। यथा। छमा मर्दाः शि ভ্তানি শুদ্ধা मी पृष्टेरमा दिउः। शिर्डिश्चि जिल्लान्याधिकाः था तुत्रन् ॥ इति श्ची मण्डागवत् ॥ अ कार्त्त ७ व्यक्षायः ॥ भीष्ट्रेगः निव एखानाजः । इति श्चिषत्रभाभी ॥ भीषान् शृः निवः। यथा । उत्जा भीषाः न मामञ्जा मुनामीताः मह-विज्ञिः। ज्य खामत् यजनः मनीष्ट्रम् धामा ययः ॥ इति श्ची मण्डागवत् ॥ ८ स्वा ययः ॥ इति श्ची मण्डागवत् ॥ ८ स्वा ययः ॥ इति श्ची मण्डागवत् ॥ १ स्वी व्यवस्थाने ॥ १ शिक्षा श्वरमाने ।।

भीनः श्रु॰ न८म्यः। इज्यादः॥ (न युहिषारभवाभा उर्ग जा जिसवाभाः । उर्भर्तानः। व्ययुक् २। न ह পূর্বভাদুপদাশেষপাদোভরভাদু পদা রেবতী সমুদানেন ভবতি ৷ व्यम्याविशा ज्ञान्य जान्य गाप्त्रयः । न ह की हेन छः। जन जः। (मोन्रः । अस्ता। बृध्यः। नष्टः। ब्राञ्चकः। ভক্ষ্য: ভিত্তরনি ধ্নাথঃ। গুৰুক্ষে-ত্র•। দিনাত্মকশ্চ। ইতি ছেয়াতি-खन्दुः ॥ **अभिष्ठ । भी**येश्रष्ठाप्यः । চরণরহিতঃ। কফপুক্তিঃ। জল ठाরी। निः सपः। शिक्त वर्षः। 🔄 📗 **थः। य ७**ऽउ*र्थ*ी**नकः।** वल्नस्यानः। ব্ৰাক্ণবৰ্ণ:। শ্লুথা**হ্ন ক**।। তত্ৰ সাতঃ অভিক্রোধনঃ। শীঘুগতিঃ। বাশু চং

। কর্মভোগী । পুচুরবিবাহক ভ-वि । ইতি वृहङ्गा उका परः ॥ अ পিচ। মীনলপ্রে সন্ৎপন্নো রত্নকা-ঞ্ন প্রিতঃ। মল্লরোনা মহাপাজে। भीयकाल भूतीककः॥ ই**ভি का**-श्रीभूरीभः ॥ आबोजन्न १ दिव-পণ যথা। সূর্পাকার তারা চতু্ যাত্রাক পূর্বাযাটা নক্ষত্রে মস্তকো-পরি দৃষ্টে সতি মীনলগ্নস্য ১ ৷ ৪৯ ী **উन**भक्षा**म**८ भना धिरेकक परखा ভবতি। পুকারাম্ভরে। স্পাকৃতি তারাচতৃষ্টবাত্মকোত্তরাষাটা নক্ষ-ত্রে মস্ত:কাপরি উদিতে সতি গীন ना ना २। १५ वर्षिः मटभयाधिक पश्चत्रक ভव**ि। यथा।** সূপন্তিনি শিনোগতে চতৃস্তারকে করিকরো-ৰু ব্যরিভে। অন্ত্য ভাদমূত বাণি নির্গতা: থেচরাম্বর শশাক্ষ লি-থিকাঃ॥দ•১।৪৯॥ শীর্বভাজিভ চতুষ্টশান্ধিতে বিশ্বভে তৰুণি সৃ পদাক্তো। ভু তিরস্ত মনোজ কানুকে যান্তি কাল তিথি লিপ্তি-का वामाए ॥ ५ २ । ३७ ॥ ३७ কালিদাসকৃত রাত্রিলগ় নিৰূপণ ।! 🍇 ॥ ভগবদশাবতারান্তর্গত প্রমারভার: । যথা । শেতে ন विख भवता मन मीन क्यां काला

श्चित्रवृष्ट्रित वागन जीगनगुडः। (या **৩**ভূছ ভূব ভ্রতাগুর কৃষ্ণ বৃদ্ধ: কল্লী সতাঞ্ভবিভাগুহরিষ্যতে ধরীন্ ।। ইতি মুপ্ধ:বাধব্যাকরণ ।। অস্য निवत्रन गएमा मास्य मुष्ठवा ॥ ॥॥ বিশেষ স্তুত্র কথ্যতে। পুক্তি বিষ্ণু क्रा ह भू क्रम मह महिष्युः । এर পুক্তি ভেদেন ভেদাস্ত পুক্তে দ শ।। কৃঞ্জপা কালিকা স্যাদ্যান-ৰূপা চ তারিণী। বগলা ক্র্মন্রিঃ স্যান্মীনো ধুনাবতী ভবেৎ॥ ছি मन्या नृतिः एः न्याष्ट्राष्ट्री करिक त्रवी। जूनस्त्री जानम्याः नामान-ता ज्वत्यती ॥ कमना विक्रिक পान्। । भाजभी क क्षिमिणी। स्तु जगरठी काली कृषस जग-वान् ऋष ।। चयथ जगवान् कृषः কালীকপো ভবেদ্ধুজে । দুর্গা স্যাৎ কল্পিক্পিণীতি পাঠান্তর । ইতি মুখনালাতস্ত্র•॥ भीनक्षा भः भः कन्तर्भः। इंडामतः॥ ज़ीनरगाधिका छी ङ्वामयः। यथा। शल्लन री चिंका वाशी यष्टिका भीन গোধিকা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ নিয়ালী পুণ বকঃ। ইতি রাজ-নিষ্ণী:।। নুৎ ম্যুগাতকে ত্রি॥ नीनन्या जी गलमूर्वा। ইতিরাজ

निर्घणैः ॥ नीनद्रः भुः हाद्रकः। हाक्द्र हेि ভাষ।। ইতি ত্রিকাওশেयः॥ गीनत्रकः भू म भागामनभागी। नाठ-বাঙ্গা ইতি ভাষা। ইতি ত্রিকাণ্ড-(भवः ।। कृष्टिश्रु अरक मूटमा अक् ইত্যপি পাঠ: ॥ भीना जी উवाकन्या भाज्कम्य ভार्या। यथा। **উ**यागाञ्च भूवक्काः িমি সর্গণ পঞ্চ সূতা স্ততঃ। মীনানে-ना उथा वृद्धा व्यन्वृद्धा उरेथ व ह ॥ পরিবৃত্তা চ বিজ্ঞেয়া তাসাঞ্চ শৃণু-ত পুজাঃ। ইতি বহি পুরাণ ॥ भीनाखी खी শর্করা। ইতিরাজ-নিঘণ্ট: 11 भीनाभीतः श्रु पपूर्वामुः॥ थळानः। ইতি নেদিনী॥ मीनालयः भू• ममूमुः। ইতি धन-क्षयः ॥ भीनाकी खी न न जाकी।। गर्छ मूर्वा। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।। স্ববেরকন্যা । ইতি পুরাণ ॥ নীন ঋ শব্দে।। গভৌ। ইতি কবি-কল্লজনঃ ॥ अ অমিমীমৎ । ইতি दूर्गामामः ॥ भीमा नकः भू॰ भीमा नामाञ्चलका । उৎপर्यायः । जिष्काकी २। इंडि

कर्दिश्वः ॥ भूर्वभीभाष्मा भूजकर्खा रिजिमिनिः। वृज्जिक्डी अभात्र छिः । ভাষ্যকর্ত্তা শবরম্বামী। প্রভাক-तः क्रमात्र**ভউ**म्य हादः। म এव গুৰুত্বেন ভণ্যতে। তক্ষত গুৰুন-ত । তহিব্যা: প্রাভাকরা:। অত এব यार्डडडीहार्य्य भुाडाक्रेत রভিহিত নিত্যক্ত ।। উত্তর নীমাণ माम्बकर्खा (वहव्यामः । उम्र छा-याकर्ना मह्तराहार्याः। म ह चिषि **ज्वामी । ब्रामानुष्ठः रिष्ठ**वामी । माधः विणिष्टोदिष्ठवानी ह ॥ नीमाःम। जी वर्षम्भनाष्ठगंउपर्भन भाजविष्मयः। **७**८भर्ग्रायः। वि-চারণা ২। ইতি হেমচন্দুঃ॥ অস্যা অধ্যায়। বি:শক্তি:। তত্ৰ পূৰ্বমী-না•সা দ্বাদশাধ্যাথাজ্মিকা দৈনি-नि পুণীত। यङ्घाहिकर्यकाख निकः পিকা। অস্যা অন্তৰ্গতানি লোক व। वहात्र नियमार्थः मन् या छवद्गाः দিভি বহুনি ধর্মশাজাণি ক্তানি॥ তত্রোত্তরনীমা•সা চতুরধ্যাযাত্মি-কাবেদব্যাসপুণীতা বুক্ষনিৰূপিকা । অস্যা নাম বেদান্ত:। অপরাধ্যা-য চতুষ্টয় শঙ্কর্ষণ পুণীত উপাস नाकाख राष्ट्रमंनविष्ट् उ ॥ 🗱 ॥ भूमानाहर: भूमञ्चान्ता नाहण भः

मार्थाः कमि हाराजा । स्थान ना॰ विषयाः । नुष्यत्न रुष्यत्य विश्वास वाराधिकण 😿 🛴 ा॰ निकाल ७ ।)। हो हो । गाव मानामिक्यं **ভर:** 💎 छुड़ीक **भुवाबा**मीना मर्मभूर्गनामार्थक्ष्वन उत्हयपुर । ा **एजूर्थ (गारि। इनम्) भूक्यायदे** पुन युक्ता अन्धानः नज् कदर्शद भुगूरूः ত্যের মাদ্য:।।। পঞ্চমে ক্রম নিত্ত जि विरवयज्ञानयः। **৫। यक्षि कख्**क থিকারো নান্ধাদে রিভ্যাদ্যঃ। 🕾 প্রমে সমান মিতরছেনেনেত্যাদি 🎨 **ज्यक्र वहरननाशिरहाजापिनासान्** ভ 📂 নেন চ সামান্যতো হতিদেশ: । १। অপ্তনে সৌর্য্য চক্ত নির্বাপে कि ত্যৰ নিৰ্বাপ শুদ্ধিতেন দেব্জ্ব ি দেশ: একদৈব তত্ত্ব মৌষধ দুব্যক 🛪 निज्यादिना निरम्नादाय भूरताछ। শেতিকর্ত্তব্যতা নান্যস্যেত্যের মাদি विष्मयाजित्ममः। ৮। नवस्य भुक्ः তাবপ্লযে युष्ठे॰ निर्द्यभामी जि भिर्वे । নজে বিক্তৌ সৌর্য্য চরাবগ্নিপর পরিত্যাগেন স্র্যাপদ পুক্ষেপেণ স্ र्य्याययुष्टे निर्दाभानी छाउ माहिक रः। । रमाम क्कलम् (ठारक भूः গুস্যাব্ঘাত্ত্র্য বিতৃষীকরণাসম্ভবে-न (नाम इंटिं)व माहि बीषः। २०।

र शेव

(वकाप) है जार ग्रामीना॰ भू খান। বিদ্যুদ্ধিতেন প্ৰাজা म्राक् भारति । १७ शिक्ष 1331 ्रान्स्य के ाजा भाषा क পকারাযালহিতেন পুযাজাদ্যকেন পশ্বস্থ পুরোদে: শ, হপুগ্রকার ই-जािं भूषक्रा १२ । इंड अधिकत्र

॥ १६ ई इकरम्भः ॥ जीमा ॥ भा नीय । इंडि म क्षिष्ठ मारता गारि বৃত্তি: ॥ ্বীল স্থা নিমেষে। ইতি কবিকল্ডদাঃ ा। श्रा अभिनीवट अभीनिवटा সীলতি চক্ষু: পদ্মভি রাবৃত্ত স্যা-**दिन्ध** । इनि पूर्गामामः ॥ ীল• ক্লী বন•। ইতি কেচিৎ ॥ বীলন প্লী পক্ষভিরাবরণ । মীল ধাতো ভাবে ২নট্ পুত্যবেন নিষ্কন্মণ ीनिष्ठ॰ वि अभुकृत्नः। उर्भर्गः। यः। मङ्ग्रहिजः २ निमानः ७ मृमुजः ৪। ইতি হেনচন্দুঃ।। भी व भीरव। इंडि कविव मुक्तमः॥

मुगामानः ॥ গীবরঃ ত্রি হি•সুঃ। ইত্যুগাদিকোর: ॥ সেনানী॥ প্ৰ্য়:। ইতি সংক্ষিপ্ত

नीवि ! शीवः ङ्लीভावः। ইতি

गुष्ठन्त সারোণাদিবৃত্তি:।। মীবা পু॰ বাযু:। ইতি সিশান্তকৌ-्रमुम्। मूगा दिव् जिः ॥ भीवा जी উদরক্মি:। ইত্যুণাদি-্কোষ:।। শীকর:।। সার:। ইতি न कि छना ता शा कि वृद्धिः॥ <u> सूः भू• वह्मन•। ইত্যেকাক্ষরকোবः॥</u> मर्**मः। ই**তি হঙ্চन्दुः॥ अमृ मु:। इंडानामिरकायः मूकक्तकः भू॰ शहार्षः। (किहिन मुकन्तकशान मुकन्तक शेंछ পठि-षा जवनानाः मूनः इर्वः शारागकः ন্দ্তি আহ্বযতি কদি আহ্বানে त्तानत्त्र गकः भ्रामतानिवाद मन्क् मूकन्तक इंजि व्याठकार । ইত্যমর টীকাষা• ভরতঃ ॥ _॥ मूजः भ्• मूकिः। यथा। मूझ मृक्ति मरहरण गृः षः পृथिवता मरणा ज्य ा ইতি দুर्गामा मध्य रङ्गमुः ॥ মুকটে ল্লী স্বনান্থ্যাতশিরে:ভূষণ। उद्भर्यायः । कित्रीरे २। इंडा মর:।। মৌলি: ০ কোটীর । ৪ উত্নী-্য•৫। ইতি হেন্চন্দু:।। मून्हो जी अङ्ग्लागिनः। इंडि

मक्त्रज्ञावनी ॥

गूमनरः भू॰ विष्:। उम्र वृष्ट्शिख

र्यथा। मृत्र मवाय माउक निर्दाण

भाक वाहक। उद्यमा जिह स्वाद

ता मूजन एउन की खिडः ॥ मूजः छ कित्रम (भूमवहनः विष् मण्डः । य छप्प माछि विष्मु एडा मूजन एउन की खिडः ॥ इंडि बुक्त विवर्ध की कृष्ण कम्म थए । ३० व्यक्षायः ॥ निधि विष्मयः ॥ त्रक्ष्णकः ॥ कम्मू कः । इंडि व्यक्ति ॥ त्रक्ष्णकः ॥ कम्मू कः । इंडि व्यक्ति ॥ त्रक्षायः ॥ इंडि व्यक्ति ॥

यूष्यन्तरः पुः भवाषुः। (किष्ठि मूः कम्मकञ्चात मूजनमक इंजि পठिया कवनानाः मूमः कन्ए जीजि भ्रवामः রাদিত্বাৎ দলুক্ কন্দে রত উচ্চেতি ব্যাচক্ষতে। ইত্যমরটাকাবাণ ভ রতঃ॥ বস্তিক্বীহিঃ। यथा। বস্তিকঃ गठभूमण भुरमारक मूजनरको। भहायश्चिक इंड्राम्याः यश्चिकाः म-মুদার্তা:।। ইতি ভাবপুকাশ:।। मूजन्मः **भू• जन्म्**कः। इंजामत ही कायाः मथुद्रानाषः ॥ मुष्मम् वर्षः निर्दाणः॥ ভক্তित्रमः॥ (भूग। यथा। यूक्र मवाय माउक নির্বাণমোক্ষ বাচক ৷ তদ্দাতি চ रशास्त्रवा मुक्तनह एउन कीर्खिङः ॥ মুদ্র ভক্তিরস প্রেম বচন বেদ সমত । য স্তদ্দাতি বিপ্রেভ্যা

मुद्रन्म (खन कीर्बिज:। ইতি বুকা

বৈবর্ত্তে 🗐 কৃষ্ণ রূখণেও ১১০ অ 📗

श्रायः ॥

मूख्यः भू पर्भगः॥ वस्रवस्ताः ॥

स्वागिष्यः । ইতি भिष्ति ॥ मस्विकाभूस्रवृक्षः । ইতি विषः ॥ सस्वाग्यः । ইতি শদ্রন্থা वसी ॥ কো
स्वाः । ইতি শেষ্য । ।

गूश्नाः शृ क्ली विषक्षिकिति विक्षित्त का। उर्भिश्चाः । व्यक्षितः २ । व्यक्षितः ।

मूलहेकः पू॰ वनमूनः। मूगानी इंडि ভाषा। ७९ भर्यप्रायः। नयहेकः २। इंडि श्रीवतः॥ मूलहः ० नयहः ८। इंडि श्रीवतः॥ मलहेकः ६। इंडि त्रि । इंडि जत्रजः॥ मूनहेकः ७। मलहेकः १। मयूहेकः ৮। इंडि होकाइतः॥

নুক্লক: পু॰ দন্তিবৃক্ষ:।ইত্যনর-টীকাষা রানাশুন:॥ নুক্ত: ত্রি পাপ্তনোক্ষ:॥মোচিত:। ইতি নেদিনী॥ ননিক্ত:। ইতি মুক্তা

भन्दत्रश्वनी ॥ मुक्तकः त्री (क्लभगीयाजः । ইতি (क्टिट ॥ मुक्तक्ष्कः भूः अठित्रज्यक्ष्वक्मर्भः

मुक्तवस्तः भू आहत्रकाकप्ति । हेका । उद्भग्रीयः । निमूकः २ । हेका मतः ॥ উদ্ভिकस्तुक वि ॥ मुक्तकः भू नि हः । हेकि भन्न माना॥ मुक्तन्ति वि ॥ मुक्तना की तान्।। हेकि तन्नमा।।

ত্যক্তর্সে ত্রি।। মুক্তা জী রাম।।ইতি রত্নমালা।। রুত্বশেষঃ মোতী ইতি হিন্দী ভা या। अमृश अधिष्ठाञी (म्वजा हन्मुः 1 इंडि क्यांडिय• ॥ **ড< প**र्य्याय: 1 মৌক্তিক•২। ইত্যনর: ॥ সৌম্যা ৩ শৌক্তিকেয়ণ ৪ তারণ ৫ তারা ৬ ভৌতিক ৭ ভৌতিক ৮ স্বস্তঃ-जात[•] २ भी उन• २० नी तक• २२ नक्व १२ इन्ह्रियः १० वस्री: १८ मुकाकनः १६ विन्तृकनः १५ मृ ক্তিকা ১৭ শৌক্তেযক ১৮ শুক্তি মণি: ১৯ শশিপুত ২০ স্বছ ২১ হিন ং ২২ হিনবল ২৩ সুধা শুভ २८ जूषा॰ जुद्रङ्ग॰ २०११ वाक्री ङ्गात লক্ষণ শশিপুভস্থানে শশিপুিয় हिनवनशास्त्रस्ववङ मुधाःमुङ স্থানে ভুক্ত ইতিচ পাঠ:। ইতি

মুকা

तामनिर्घण्टः ॥ त्मोक्तिकः रे५। इंडि ভাবপুকामः॥ अमृत खगाः। मा-व्रकष्-। मीउष्-। क्यायष्-। बारूष्-। (व्यथनपु॰। हक्कृष्य पुर्वः।। उद्घात्र ग গুণঃ। পাপালন্ধী বিনাশিত্ব । ইতি बाजवज्ञ ७:।। वृष्ठ दुः। वन भू छि र दुक् । ইতি ভাবপুকাশ:।। 🛊 ॥ অপিচ । भोकिकक मध्र जुनीउन पृष्टि-রোগ শমন বিধাপহ। রাজযক্ষ भित्रकाभ नामन**ाकी** भवी यं। वन भुडि वर्षान ।। क ii जामा नामण যথা। নক্ষরাভ শুব্দ মত্যন্ত মুক্ত न्तिकः स्वः निर्यावः निर्तु ११४। नाउः थर्ड भोतर यबुनाया उनिमो ना भोकिक भोश्रमायि॥ #॥ अर्गा माय नक्षण यथा। यहिहाय भी-ক্তিক ব্যক্ষকাষ শুক্তিশার্শ রক্ত-তাঞ্চাতিখন্তে। মৎস্যাক্ষ্যক্ষণ জ-क गूडान नमुः रेमङक्षार्यः शीमङा मित्रायि ॥ # ॥ अष्ठेवा भोकिः ক যথা। মাতকোরগ মীন গোত্রি नित्रम खुक्मात्र मञ्जाष्ट्रंष्ट्र मूकी না নুদরার্টনৌক্তিকমণিঃ স্পষ্ট• ভ-বত্যপ্রধানা 🟶 🔃 মৌক্তিকবিশেষে যথা। ছায়া পাটল নীল পীত ধ্বলা স্তত্তাপি সানান্যতঃ সপ্তানা• वरुरण। नविक्व विचित्रहोरक्यकः

ত্লুণ•াা # ৷৷ নৌক্তিক পরীক্ষা যথা 🍴 । नवन कात्र काि दिन शाख 🤊 अ गाग्व প्রिভ किथः। मर्पिउ मिल भानी ज्ये येर विक् उ॰ उत्यो-ক্তিক• জাভ্য•।। ইতি রাজনিয়ণ্ট: ॥ 🗱 ॥ তদুৎপত্তি স্থান। বিংযথা। শায়ে গজশ্চ কোডশ্চ ফণী মৎস্য-শ্চ দদুরিঃ। বেণু রেতে সনাখ্যাতা खज्रेडि भो कि क रंगानयः ॥ इंजि ভাবপুকাশ:।। #।#।। অপ পুকারা-खत मूका भन्नोका। दिशम् क्रीम्ड বরাহ শত্ত্ব মৎস্যাহি শুক্ত্যুক্তব বে-ণুজানি। মুক্তা ফলানি পুথিতানি লোকে তেয়ান্ত শুক্তান্ডব মেব ভূরি ॥বেধ্যন্ত শুক্ত্যুক্তৰ মেৰ ভেষা • শে-বাণ্যবেধ্যানি বদস্ভিতজ্ঞা:**। মতঙ্গ** কাযেত্বি**শৃদ্ধ** ব**ংশ্যান্তে মৌ**ক্তিকা-नाः भुज्याः भुमिश्वाः॥ উৎ भर्तरङ भोक्तिकरमयू वृज्ञ माभी छवर्गः भुज-या विश्रीन । वरक्तु शक्त श्रीकायाः গজজাতি শত্রিধা।। মৌক্তিক। তেষু জাত হি চতুৰিধ মুদীৰ্য্যতে। বাহ্মণ পীত শুদ্ধ ক্ষ্তিয় পীত রক্তক•॥ পীত শ্যাসন্ত বৈশ্যংস্যাৎ শূদু• স্যাৎ পীত নীলক। কায়ে। জ সম্ভ সম্ভ হং ধাত্ৰীকল নিভং গুৰু ॥ অতিপঞ্জ সহায় নৌক্তিক ग

न्ति विकि। धाताधः कृतस्य कार्यः জিক অলবিন্দুভি:।। ত্রিভ তথ্ नुष्राभाः परिव छए क्रिएक क्षत्रज्ञा । सङ्कृषां ७ समा वृहि कि कि कि বিড॰ গুৰু ॥ ১০০ ভানু সঙ্কাশ (रवरगागा सभ्या वर । 🗱 ॥ ज्या 🗑 গাৰুডে। নাভ্যেতি মেঘ পুত ধ্রিত্রী বিসদগত তদ্বিবৃথ 🐉 👬 🧢 . व्यक्तिः भूजानातृष्ठ मिथिर 🐣 🗁 ত্যবদু:খ বিভান্য বিশ্ব• ॥ তে **ব্রিরস্ত্র হতাশনেন্দু নক্ষত্র ভা**ঃ गुरु मसुवधा दिवा यथा ही छिकः ত্তথৈৰ তমোৰগাঢ়। স্থলি তমি**শা**ং ।। বিচিত্র রত্ন দ্যতি চাক্তোয চতু अमू पु। ভবनाভिताना । मूल्य नवा अन्निष्ठि निक्तर्या (म क्ट्या भई **उन्र** नूर्वर्ग भूगी ॥ शिलानि यस ল্লভতে কথঞ্চিং বিপাক যোগান্ম হত: শুভস্য। সপত্নহীন: পৃথিবী⁻ সমগ্যা• ভুনক্তি ভব্তিষ্ঠতি যাবদেব 🤃 নকেবল ওছভ কৃষ্পস্তাগৈয়ঃ পু কানা মপি জন্ম তস্যা তদ্মোজনা নাণ পরিতঃ শতস্য সর্বাননর্থান্ বি মুখী করোতি।। জল জ্যোতি মৰু জ্জানা মেঘানা তিবিধ ভবেৎ জলাধিকে ২বিক স্বছু কোনল পুৰু কান্তিন্ৎ ৷৷ জ্যোতিষ্• কান্তি

नेष्ठ पूर्नितीकः त्रविभुखः। काछि-ाट (कामले वृत्तः माक्ष उ॰ विमल॰ লগু।। বরাহ দ•ষ্ট্র। পুভব• বরিষ্ঠ• ় ন্যুব দ প্তাক্ষর ত্লায় বর্ণ । ক্চিৎ । इथिकिट्म जूदः भुत्राम भुजावाउ শুকুর বদ্ধরিষ্ঠ: ॥ বুন্ধাদি জাতি ভে দিন বরাহোপি চত্রিধঃ। তেষু জা 📗 তা ভবেমুক্তা সমাসেন চতুরিধা॥ वाकार भन्नवर्गत भूप्राख १म। नक (छ। ७ बियः मृङ्गत्र क स न्याः कर्कः শ এব চ ॥ বৈশ্যঃ স্যাৎ শুদ্ধ পীতস্ত কোমলঃ কোল সন্মিভঃ ৷ শুদু: স্গা हुद्भनी वस्त्र कर्द्धभः भागम এर ह।। उथाह। (का लजः (काल मृभः जमः ষ্ট্র। সদৃশ ছবি । অলভ্য ন্নুলৈ র मा भी कि क॰ भूगा विक्ति रेजः॥ अ॥ (य कग्नदः भाकं म्थादमर्य भी उन्ध भञ्जभूवद्रमः भाव । भारतीकि-কানা নিহ তেষু জন্ম তল্লকণ সং-পুতি কীর্ত্তগান:।। স্বযোনি মধ্য ছবি তুল্যবর্ণ শত্ত্বা দ্বহৎকোলফল পুনা ণ । তথা চ। বর্ষোপল সম দীপ্র্যা পাঞ্চন্য সলোন্ডব॰। কপোতাও পুনাণ তদতিকান্তি ননোহুর• II#II বিশেষো যথা। অস্থিন্যা দিক নক্ষত্ৰে (य काञाः कम्रवः म् जाः। (मोक्कि ৰু তেমু জাত্ৰ-ছি সপ্তবি**-শতি ভে**-

দভাক্॥ শ্লাশ্লা: পীতরকানীলা লোহিত পিঞ্জরা:। আকর্বরা: পা-**ढेला**क्ट नववर्गाः शुकीर्खिजाः॥ सङ्-মধ্য লঘুমানৈঃ সপ্তবিংশতিধা ভ-বেৎ। ক্রমত স্তেষ্ বিজ্ঞেয়ণ নক্ষতেষ্ মনীবিভি:।।#॥ পাঠীন পৃষ্ঠস্য স-মানবৰ্ণ মীনাৎ সুবৃক্ত লঘুনাতি স্-হ্ম• । উৎপাদ্যতে কারিচরাননেযু भीनाक एक संबुद्धताः भारतार्थः ॥ তথাচ। গুপ্তাফলকায স্থৌল্য• মৌ-ক্তিক তিনিজ লঘু। পাটলা পূস্ন-সঙ্কাশ মল্পকান্তি সূবর্তু ল॰ ॥ বাত পিত্ত কফ দ্বন্দ সমিপাত পুভেদতঃ । मक्ष भुक् उर्या भीत्व मक्षमा (ङन মৌক্তিক ।। লঘিষ্ঠ মৰুণ বাতাৎ আপীত মৃদু পিত্ততঃ। শ্ঙ্ল-গুৰু ক-ফোদেকাৎ বাত পিত্তামৃদু লঁঘু: ॥ বাত শ্লেম্ম ভব• স্থল• পিত্ত শ্লেম্মজ महकः। अर्दालकः भुर्यारगन नामि-পাতিক মুচ্যকো। একজা: শুভদাঃ (भाका खर्था रेव मामिनाठिकाः। #।। ভৌজঙ্গন নীল বিশৃদ্ধ বৰ্ণ সৰ্ব ভ-(त् भूष्वृत्त वर्ग माज । निजान ধৌত পুতিকল্ল্যনান নিল্রিংশ ধারা সনবৰ্ণ শোভ ॥ ভুজঙ্কমা তে বিষ-বেগ তৃপ্তা: শ্রীবাসুকে র্রণশভবা: প্-थिवता । कृति कमाहिय थन् भूग

দেশে ভিপ্তত্তিতে পশ্যতি ভান্নন্ধ্যঃ ॥ क्षिष्ठः वर्जुनः त्रमाः नीनहारः নহাদু্যতি। পুণ্যহীনা ন পশ্যন্তি वामुलः इल मसुवः ॥ मृगान्तकाः वामन कान खड़ा कन भुमानास Dञ्दिशास्त्र । मृऽ व् ऋवाङ्ख्य रेवणऽ मृमु मर्लय् जाजाः भुववास मर्व ॥ প্রাপ্যাপি রত্নানি ধন শূি্যস্থা রাজ শ্রিযথা মহতী দুরাপা । তেজো । বি তাঃ পুণ্যক্তো ভবস্তি মুক্তাফল-স্যাস্য বিধারণেন।। জিজ্ঞাস্থারজ্ঞ विनिक्योद्धः गुड्य मृश्र्वं भ्योठः शुयज्ञा । तका विधान म्महिष्या হর্ম্ম্যোপবিষ্ট• ক্রিয়তে যদা তথাতদা भरुष्नुन्म ७ जूर्य । खारेष र्घ रेन र्घ रेन রা দুিযতে ২ন্তরীক্ষণা ন ত॰ ভুজকান তু জাতুধানা ন রাক্ষসা নাপিচ দুষ্ট লোকা:। হি·সন্তি যস্যাহি **শির: স** মূখণ মুক্তাফল তিষ্ঠতি কোষমধ্যে ॥ 🗱॥ ভেকানিম্বপি জাগন্তে মণযো (य कृष्टि कृष्टि । (**ভोजक्रम म**रावस न्या । विष्क्रिया वृत्या खरेनः ॥ नक्ष्य মালেব দিবো বিশীর্ণা দস্তাবলী তস্য মহাসুরস্যা বিচিত্র ৰূপেষু বিচিত্র। दर्गा भयःमुभज्यः भयमाः भभाज ॥ সস্ব চন্দু। শু কলাপ কান্তে মণি পুবেকস্য মহাগুণস্য। তहु किन्दः

সুছিতি মাপবীজ মাসন্পুরা প্রে ख्वानि यानि ॥ यख्निन् श्रुरहरणः **श्यु**नि থৌ পপাত সূচাক মুক্তা মণি রয়বী-कः। छिमिन् भय छिल वहावकीर्नः শুকৌছিত গৌক্তিকতামবাপ ॥#॥ সৈ হলিক পারলৌকিক সৌরাষ্ট্রিক তামুপণ পারসবা:। কৌবের পাওঃ বিরাট মুক্তা ইত্যাকরা চাঙৌ ।৷ স্থা-**ভ্যা॰ हिए** इत्वो (स्रेंच (र्य मुका क्रम বিন্দ্ব:। শীৰ্ণা: শুক্তিয় জায়ন্তে তৈ मुका निर्मन विषः।। श्र्ना मध्या उथा **স্কা** विन्त्रानान्त्रात्र : । সুनिष मथूत्रहाय भोकि है जि॰ हला छ्व॰ ।। পারলৌকিক সমূত মৌক্তিক• নিবিড॰ গুৰু। সৌরাষ্ট্রিক ভব• স্থূল বৃত্ত স্বছ সিত ঘন।। তামু-পর্ণ ভব তামু পীত পারসবোল্ড-व । ऋष ८ मा । भक्ष कक्ष को (वरता -**फ**्द भोक्किक ॥ भाखादरणाफ-ব পাণু দিত কক বিরাটজ। किन्त्राग्राया ठू या मुक्ति उट भुम्-তিঃ সৃদুর্লভা॥তত্র জাত• শিত• স্বছ• জাতীফল সম•বর•। ছাযাবদ্হল• রন্য • নিদ্দোষ • যদি অভ্যতে ॥ অন্-ল্যু• তদ্বনির্দিষ্ট• রত্নলক্ষণকোবি-रिनः। पुर्वाञ नृशरयाग्राः अप्रामञ्जञा-গৈ। ৰ লভ্যতে।। 🕸 ।। আন্যস্তু হে।

भर्मा उन्हाक्त्रज्ञा विष्णयां क्रि भुनार्ग ह गरेशा विश्वान्। नहि व्यवः স্থাতি গুণাজনাৰু সৰ্বত সৰ্বাক্ত থো ভবন্তি।। বুক্দাদি জ্লাতিভেদেন শুক্তযোপি চতুরিধার্গ। তাসু সর্বাস্ কাত হি নৌক্তিক স্যাচত বিধি ॥ নুন্ধিণস্ত সিত: **ষ**ছে।গুৰু: শুক্ল:পু**ভ**া-निज:। व्यादकः क्ववियः अ्व उपा-ৰুণ বিভাবিতঃ।। বৈশ্যস্ত্বাপীতবর্ণো পি স্থি: খেত: পুভারিত:। শূদুঃ শুক্ল বপু: সূক্ষ স্তথা সূলে। ৎসিতদ্য-जिः॥ शा वर्षाभवानाः जगवर्गाः ভ বৃক্সার মধ্য পুভব পুদিষ্ট । তে বেণবো দিব্যজনোপভোগ্যে স্থা নে পুরোহন্তি ন সর্বজন্যে ৷৷ বংশ্রু শশিসক্ষাশ ককোলী ফল মাদুৰি । পাপ্যতে বহুভিঃ পূণ্যৈ স্তদ্ক্যুণ (वर मखनः ॥ शक जून नमूर्युका षः । भक्षविद्य ভবে । मुका भक्ष বিধা তাসা॰ যথা লক্ষণ মৃচ্যতে ॥ পার্থিবী গুরুবৎসাচ তৈজ্ঞসী তেজ-ना लघुः। वायवी ह मृतुः झ्ला गागनी कामना नयुः॥ व्याभाः निका कृषा শূলাঃ পঞ্চিতাঃ পুবরা মতাঃ। আ সাংধারণ মাত্রেণ ব্যাধি: কোপি ন জাযতে।। 🕸।। এবন্ন্য্রাপি। গ্লা हि कान मध्मानाः भीखं मूकाक

লোন্ডবঃ। ত্বক্সার শুক্তি শহানা॰ গর্ভে মুক্তাফলোডব:।। ধারাধরেষু জাযেত মৌক্তিক জলবিন্দুভি: । জীন্তে শুচিৰপঞ্ গজে পাটল ভা-ষরণা। মৎসে পেডঞ্চ নিস্তেল: ফণী-**ल्पु** नील ভाষর । হরিছে ত॰ তথা বংশে পীত খেতঞ্চ শ্করে। শার্ **·শু**ক্তৃন্ডব• খেত• মুক্তারত্ন মনুত্তম• ।। চতর্থা মৌক্তিকে ছায়া পীতা চ মধুরা সিতা। নীলাচৈব সনাখ্যাতা রত্নতত্ত্ব পরীক্ষকৈ: ॥ পীতা লক্ষী পু-मा ছाया मधुदा तुष्कि वर्ष्किनी। भृद्गा য শস্করী ছাথা নীলা সৌভাগ্য দা-যিনী।। সিতা ছাষা ভবেদ্বিপু: कः-ত্রিয শ্চার্করশ্মিমান্। পীত ছাযা ভ-विषमाः भृषुः क्षकि यं छः ॥ ॥ व्यथ खनाः। সুতারঞ্জ সৃত্তঞ্জ স্বছ্ঞ निर्याल ७ था। घन प्रिक्षक महाय তথা মুটিত মেব চ।। অষ্টো গুণাঃ সমাথ্যাতা মৌক্তিকানা মশেষতঃ। তদ্মথা। তারকাদ্যুতি সঙ্কাশ সু-ভার মিতি গদ্যতে॥ সর্বতো বর্তুল॰ যह সুবৃত্ত ভিন্ন পদ্যতে। স্বন্ধ দে । স্ব বিনিমুক্তি নিম্মল মলবজ্জিত ৷৷ গু-ৰুত্ব তুলনে যস্যতন্ত্ৰন মৌক্তিক। বর• ৷ স্নেহেনৈব বিলিপ্ত• যত্তৎ গ্রিপ্ত মিতি গ্ৰহ্যতে।। ছায়। সম্বিত যह

সহায° তমিগদ্যতে। বুণরেখা বি-হীন যত্তৎ স্যাদমু টিত শুভ ॥ ভা জিষ্ণু কোনল কান্ত মনোক্ত সু,র-তীবচ। সুবতীবচ সত্ত্বানি তন্মহারত্ত্ স•জ্ঞিত।। খেতকাচ সমাকার• শু-ভাূুণশু শত যোজিত ৷ শশিরাল পু তিছায় নৌক্তি হ দেব ভ্ষণ।। #॥ गाक्छ । ज्रुकमात्र नारमनु जिनि পুভূত यह मुक यह वदा हका छ।। প্রায়ো বিযুক্তানি ভবন্তি ভাসা শ खानि **माक्र्ला उया उथालि ॥ भु**-নাণ বদ্ধৌরব রশ্মিয়ক্তণ সিতণ সুবৃত্তণ সনসৃদ্ধ রদ্ধু । অক্রেত্ রপ্যাবহৃতি शुरभामः यद्मोक्तिकः ज्रष्टुनवट शुनि নৌক্তিক যোগমূপাগত স্যাৎ। ন ভদ্য ভর্ত্তার মনর্থ জাত একোপি (नायः मगूरेशिक मन्द्रः ॥ এवः मर्द्रः গুণোপেত মৌক্তিক থেন ধার্য্যতে । उन्नाय बंद्धां ज नकीः नर्बनानः পুণশ্যতি।।গুণবদ্ধুৰ যদেহে মৌক্তি-কৈক হৈ ভিষ্ঠতি। চঞ্চলাপি স্থির। ज्ञा कमना जब जिश्वजि ॥ 🛊 ॥ (मार्या यथा। ठञ्जात्रः मुर्श्वस्थात्राः । यभ्रशाण शुकीर्खिजाः । এব॰ मण সনাথ্যাতা তেষা বক্ষ্যামি লক্ষণ ॥ श्रेषकरमाम मन्त्रः मूकिथला

বিভাব্যতে। শুক্তিলম: সমাথ্যা न (मायः वश्वकात्रकः ॥ भीनाताः সঙ্কাশো দৃশ্যতে মৌক্তিকে ত্য: म भाकः म ज्रामः मार • নাশকরো ধুর্রণ।। দীপ্তিছীন• গতা য॰ জঠর॰ তদ্বিদু র[্]ধা:। তিমান্ স ধারিতে মৃত্যু জাযতে নাত্র সংশ ।। भोकिक विक्रमहाय मिडिव्रक विषु ब्रिः। माति मु जनकः यमाः **जमार्खं भित्रवर्जा**यः ॥ उभय्र রি তিপ্তন্তি বলযো যত্র নৌক্তিকে। বিবৃত্ত• নাম তস্যোক্ত• সৌভাগ**্** क्षयकाद्रकः ॥ अवृद्धः स्मेकिकः यह চিপিট যদিগদ্যতে। নৌক্তিক দ্রি-या या जम्याकी र्खि स्वर मह ॥ ব্রিকোণ ত্র্যসু মাখ্যাত্ত সৌভঃ ग्र ऋयकात्रकः । मीर्घः यख् कृष्तः প্রোক্ত॰ পুজা বিধ্বণস কারক• া নির্ভাগ নেকতো যह কৃশপার্থ ভদু-চ্যতে। স দোষ মৌক্তিক নিন্দ্য নিৰুদ্মোগকর । হি তৎ।। অবৃত্ত । 🕾 ডকোপেড• সর্বসম্পত্তি হান্তক• । ‡া যত্র কৃত্রিম সন্দেহঃ ক্বচিন্ডব্ভি 🖘 ক্তিকে। উচ্চে সলবণে**শ্বেহে নিশা**া षामरयङ्खला॥ वीशि मर्भनीयका শুষ্কৰক্ষোপবেপ্টিত । যন্তু নাথাতি বৈ वर्गुः विरक्षयः उपक्विमः॥ 🗱 ॥

তথাহি। কিপেদ্ধোন্র ভাওে তু লবণ ক্ষার সংযুতে। স্বেন্যেম্বজ্বিনা ाशि मूहत्ख्रा (वश्वेत्यः ॥ इत्य নৌক্তিক নাদায ব্ৰীছ্নিভি শ্চোপঘ-ारिय । कृष्विम॰ छन्न मार्शां उन वृह्मकां निमारं ।। क्या भरहर পুপিহিতে শুভদার ভাণ্ডেমুক্তাফ ল নিহিত নৃতন শুক্তিকাও । স্লেট ত্তথা পুণিদধীত তত্ত ভাণ্ডাৎ সংস্থাপ্যধান্য নিচযেচ তনেকনাসং n আছাৰ ত**ং স**কল মেৰ ততোম ভাগু জন্বীর জাত রস যোজন্যা বি পরু । ঘৃষ্ট ততো মৃদু তন্কৃত পিও म्रेनः अर्गान्यायह निरु भोक्किक मान् विकः ॥ मृज्ञिन्त मद्रमार्भूषे ম্ধ্যুগতন্তু কৃত্বা পশ্চাৎ পচেত্তনু ততক্ষ বিভান পভ্যা। দুংশ তভঃ প্যাস তদ্বিপচেৎ সুরায়া পক্ত-ভোপি প্রসা শুচি চিকুণেন। শুদ্ধ॰ ভতে৷ বিমল বস্ত্র নিঘর্ষণেন স্যামৌ-ক্তি ই॰ বিমল সমূণ কান্তিদাল।।#॥ অথ নৃন্য । পঞ্জি র্মাবকো জেয়ো **ख**ञ्जानि मायरेक खथा । চতुर्निः मा गमाथा। उ॰ माषरेक मंगिरविष्ठिः॥ এইন্য শুক্তিপুভবন্য শল নুক্তা ন ণেঃ শাণক সন্মিতস্য। মূল্যু সহ সাণি কপর্মকানি বিভি: শতৈ রভ্য-

ধিকানি পঞ্চা৷ যন্মাৰ কাৰ্ছেন ততো বিহীন চতুঃ সহসু লভতে ২স্য মূ-ল্যং। যন্মাৰকাণ স্ত্ৰীন্ বিভ্যাদুৰুত্বে ছে তস্য মূল্য পরম পুদিষ্ট ।। অর্জা-ধিক দ্বৌ বহুতো হৃস্য মূল্যুণ ত্রিভিঃ শতৈ রভ্যধিক সহসু । দ্বিমাষকো ন্মাপিত গৌরবস্য শতানি চাঙৌ কথিতানি মূল্য ।। অৰ্জাধিক মা-ষক সম্মিত্তস্য সপঞ্**বি**•শ• ত্রিত্তয• শতানা । যন্মাষকোন্মাপিত মান-নেক তস্যাধিক বিশ্বভিত্তি শত न्।। एक्षाम्य यस्थात्रवः माउ দ্বে মূল্যণ পরণ তস্য বদন্তি তজ্জ্ঞাঃ । গুঞ্জা শ্চতস্থো বিধৃত শতাৰ্দ্ধা দৰ্জ • লভেতাপ্যধিক• ত্রিভি র্বা।। অতঃ-পর্ স্যাজ্বণ পুনাণ সংখ্যা বিনি-দ্দেশ বিনিশ্চযোক্তিঃ। ত্রযোদশানা ধরণে ধৃতানাণ ছিক্কেতি নাম পুরদন্তি তজ্জা:।।অধ্যৰ্জ মাত্ৰঞ্চ শত•কৃত• ग्राम्नुन्र खेल उम्र मम्बिउम्र। यि रवाउमा र्ज र्टर मुनूर्न ध्रतन **७८ भुवमञ्जिमार्बिकाथाः॥ अधिकः** দশ ভিঃশতঞ্নুল্য সনবাগ্নোত্যপি বালিশন্য হস্তাৎ। যদি বি শতিভি **ज्**तर मुश्र्न ध्रम भीक्किक पर-ত্তি তজ্জাঃ।। নব সপ্ততি **নাপু**যাৎ স্ক মূল্য যদি ন স্যাদ্ধণ যুক্তিতো বিহী-

ন । ত্রি শতা ধরণ পূর্ণ শিক্যেতি পরিকীর্ত্ত্যতে॥ চত্ত্বারি•শৎপর•ত न्। मूल। भिष विनिष्ठयः। ठञ्जातिः **म**८ ভবেৎ मिक्रा वि म मृन् का ত সামপঞ্চাশভু ভবেৎসোম স্তস্য মূল্যন্ত বি শতিঃ। ষ্ঠি নিকর শীর্ষণ স্যান্ত্রস্থ মূল্য চতুর্দশ ॥ অশীতি র্মবঠিকেতি জপ্যেতি পরিকল্পতে একাদশসুত্র বিচ ত্যো মূ'লত মনুক্র-মাৎ।। শত মৰ্দ্ধাধিক দেচ চূর্ণোয পরিকীর্ত্তিতঃ। সপ্ত পঞ্চ ত্রয় শৈচ ব (उदाः गृला भनूकनाए ॥ भागाए পর মাষক নেক মেক বাবদিবছে ত গুণৈ রগীদ। মূল্যেন তাবদ্বিও ণেন যোগ মাপ্নোত্যনাবৃঞ্চি হতেপি দেশে॥ সূক্ষাতি সূক্ষোত্ত। মধ্য माना॰ यत्योकिकाना निरु मृत्रु मृ ক্ত । ভব্জাতি মাত্রেণ নজাতু কার্য্য स्टेन ब्रहीनमा हि उद्भुतिष्ठ ॥ यनु **চन्माः म সঙ্গাশ भी**यिषय ফলাকৃতি । স্ব মূল্যাৎ সপ্তম• ভাগ মৃত্তত্বা ল্পভেত তৎ।। পীতকস্য ভবেদৰ্জ মবৃত্তম্য ত্রিভাগতঃ ৷ বিষম ব্যস্ত জাতীনাং ষ্ডাগং মূল্য মাদিশেখ ॥ অর্দ্ধ কপাণি সয়েটোৎ গহুচুণানি যানিত। অসারাণিত যানি নুধ্র কর কাকার বান্তি চা। একদেশ পুভাবন্তি

সকলা শ্লেষিতানি চ ৷ যানি চাতক वर्गानि का अर्थानि यानि ह।। श्रीन নেত্র সবর্ণানি প্রস্থিভি: সংবৃতানি চ । সদোষাণি চ_্যানিস্ত স্তেষা মূল্য **शरा•िक•।।\$।। जन्रवजू। मक्षानी** পোচ্যতে গুঞ্জা সা তিসো ৰূপক্ ভবেৎ। ৰূপকৈ দশ ভিঃ প্ৰোক্ত: ক লঞ্জে। নাম নামতঃ ॥ কলঞ্জ নামক• <u>দ্</u>ব্যনেকদেশে নিধাপযেত্। অন্য**ভো** জল বিন্দু স্ত তে।লনাথ বিনিঃক্ষিপেৎ ॥ চত্বারি ত্রীণি যুশ্ময়। তথৈক• বহু বা স্থিত। সম্ কলঞ্জ মানেন তুলা मानारणः कमार ॥ नवमार शकः ন• যাবৎ কলপ্তেন সম• यদ।। তৎ क्रगामृज्ञमः (छ्ययः भोक्किकः ब्रङ्गात्-**दिख्धिः ॥ ठजुर्दमा८ ममात्र**ङ्घ हण-मः था विधिः क्रगाट । क्लक्षमा সনান বা মৌক্তিক মধ্যম বিদুঃ।। আরভ্য বি•শতি তমাৎ ক্রমাৎ প্র-ঞ্চদশাবধি। লন্ধ্যাস্তা: কথিতা মুক্তা মূল্যঞ্চ তদনুক্রমাৎ।। কলঞ্জেদ্বয় মা-त्न यरमुकः भोक्तिकः ভবে । नः ধার্য্য নরনাথৈস্ত দেবযোগ্য মমানু-ষ•॥ ইত্ম• বিচার্য্য যো নুক্তা• পরি -পত্তে নরাধিপঃ। তস্যাযুশ্চ যশোঁ-বীৰ্য্য• বিপন্নীত মতোন্যথা 🛭 ইতি युक्तिक्षण्यकः॥ अनु९ मूक्ताक्व

भारत मुद्देवरु ।। # ।। ज्यथ मूक्तिश त्रग हिन ।। (त्रवक्रिशि धनिष्ठामू रु-खाहियु ह भक्षमू। भङ्ग विक्रम मूक्ति-ना॰ भतिधान भूक्षमारक।। ইकि जनयभूदीभः।।

মুক্তাকলাপ: পু• মুক্তাহার:। যথা।
হারোমুক্তাত: পালস্থ সুক্ কলা
পাবলী লতা:। ইতি হেমচন্দু:।।
মুক্তাগার• ক্লী শুক্তি:। ইতি শদ

চন্দ্রিকা।।নৌজিকগৃহঞ্চ।। মুক্তাপুয়া পু^র জনদব্**কা:।ইতি** রাজনিহণ্টা।।

গুক্তাপুস্: জ্রী শুক্তি:। ইতি রাজ-নিঘটঃ॥

मुजाপाणयः भ्रः गुकाशातः। ইতি रस्महन्मुः॥

मुक्काकन क्री कभू त्र ।। (सोक्कि ।। नवनीकन । इठि (सिनी ।। रवाभारतकृष्ठ गुष्ठ विष्मयः। यथा। मुक्काकालन गुष्ठ न मुक्कागव मु-किना। कि साठ्य स्ना मुक्ष मार्क एउप मिन्न मुगा।। विद्यक्ष तिनामि-रिया किय दिश्मव मृनुना। एका प्रि रवाभारतिन मुक्काकन महीक तथा। है ठि जमा हुए (याभाष्ठ (साक ह्य ।। है ठि जमा हुए (याभाष्ठ (साक ह्य ।। हिभामु की गुज नवा हु मानु नव मानु

হি **শু**কুগুন্তব বেণুজানি। মুক্তাফ-লানি পুথিতানি লোকে তেষাঞ্চ শৃক্তৃয়ন্তব মেব ভূরি ।। তত্ত্রৈব চৈক-স্য হি মূলমাত্রা নিবিশ্যতে রত্নপ রস্য জাতু। বেধ্যন্ত শুক্তৃয়ন্তব মেব তেষা পেষাণ্যবেধ্যানি বদন্তি তজ্ काः॥ दक्সात्र नारमम् जिमि भुम्-ত॰ यहङ्गक॰ यह दत्रारु काउ॰ । भारता বিমুক্তানি ভবন্তি ভাসাশস্তানি মা-ঙ্গল্য তথা তথাপি।। যামৌক্তিকানা निष्ट काउरमा शक्षी भुकी र्विजा द्रञ्-বিনিশ্চযক্তি: ৷ কঘুডব তেম্বধ্ম भुमिष्ठे गूर्भमाउ यह गाजनम् अ· स्थार ॥ स रयानि मक्ष इति ज्वारवर्ग भाइः वृह्ट (कानिकन भुगानः । উৎপদ্যতে বারণ স্বস্তু মধ্যাদাপী-ত বর্ণ পুভযা বিহীন ।। যে কম্বরঃ শার্ক্রথাবমর্ষ পীতস্য শন্তপুবর-স্য গোত্তে। নৃতস্থ জা শ্চাপি বিশুদ্ধ বংশ্যা স্তে নৌক্তিকানাং পুভবাঃ পু-क्टिंश: 11 शाठीन शृष्ठमा मनानवर्गः मीना८ मृत्खः व्युनाठि मृत्राः उँ८ পদ্যতে বারিচরাননেষু নৎস্যাশ্চ-তে मध्रवताः भरयार्यः ॥ वताक्र--है। भु चव॰ भु मिष्ठे॰ जिमाव मः है। क्रुव ज्ना वर्षः। कृति कथिए म ज्वे भुरमाम भुजायर म्कत्वकि शिक्षः॥

বর্ষোপলানা সমবর্ণ শোভ বৃক্ সার পর্ব পুভব পুদিষ্ট ৷ তে বেণ-বো দিব্যজনোপভোগ্যে স্থানে পু রোহ ভি ন সার্বজনের।। ভৌজস্ম নীন বিশুদ্ধবৃত্ত সংস্থানতো ২০১ ब्रग्यर्ग (भाष्ठ । निजास क्षीय भू विकल्लगान निज्ञिः न भाषा नग्रवर्गकाः ন্তি॥ প্রাপেত্তি রক্নানি সহাপুভানি রাজ্য শূেশ বা নহতী দুরাপা। পাত্র• হি নাপুণ্য কৃতো ভবন্তি মুক্তা ফলস্যাহিশিরো ভবস্যা৷ জিজ্ঞা-**ज्या द्र**प्रस्त• विधिष्ठिः **म्ए** गृश्र्द भुष्टिः भुषञ्चार । त्रका विश्वानः সুমৃহদ্বিধায় হর্ম্যোপরিস্থ ক্রিয়তে यहा उट्।। उहा महादूनपूजि मनुद যোগৈ বিদ্যুলভা বিষু রিভান্তরালৈঃ ।भरगाध्या का छि विषय ष्रिय घं नि र्य रेन बी विषय १ स्त्री कः॥ न छः जू জঙ্গানচ যাতৃখানা নব্যাখযো নাপুত্ৰ-भनर्ग (मायाः। शि•मछि यम्।शि-শির: সমুস্ব মুক্তাফল তিগঠি প্-.জ্যনান• ৷৷ নাভ্যেতি মেঘ পুভব• **ধ**রিত্রী বিষয়ত তদ্বিবুধা হরস্তি। অৰ্ছি: পুভানাব্ত দিগ্নিভাগ মাদি-ত্য বদ্দুঃখ বিভাব্য বিস্ব• ৷৷ তেজ-স্তিরস্ভ্য হুভাশনেন্দু নক্ষত্র ভারা शुज्यः ममगुः। रिवायया मीक्षिक्दः

তথৈব তমোবগাঢ়াৰপি তন্নিশাসু ॥ বিচিত্র রত্নদুঠি সারতোয চতঃ जगू मा अंद्राभाष्ट्रभा । क्रमा न वा-न्। दि जिम्हारा (स मृत्र) भक्षे छ म् भूवर्ग भूगी ।। शिता १ मि य उझा ভতে কদাচিদ্বিপাক যোগামহতঃ मुख्मा अभवक्षीनाः नगशीः नगः গ্ৰা॰ ভুনক্তি ততিষ্ঠতি যাবদেব ॥ न (करवः उहुं कृ मृशमा जारेगाः পুজানা মপি তস্য জন্ম। তদ্মোজ-नानाः भविजः महमुः महाननर्थान् विमूथी कात्राजि ॥ नक्कव मालव দিবো বিশীর্ণা দন্তাবলী তৃস্য মহা-সূরস্য। বিচিত্র বর্ণেযু বিশুদ্ধবর্ণা প-যঃ সুপত্যঃ প্রসাণ প্রপাত।। সম্পূর্ণ চন্দ্রাণশু কলাপকান্তে মণি পুবেকস্য মহাগুণস্য। তह कि মঞ্জু স্থিত মাপ বীজ মাসন্ পুরাপ্যন্য ভবানি যানি ।। যিমান্ পুদেশে হম্বুনিধৌ পপাত সুচাক মুক্তামণি রত্ন বীজ। তিমান পয স্তোযধরাবকীর্ণ শুক্তো স্থিত भोकिकजा मवाभ ॥ रेमःश्निक পারলৌকিক সৌরাষ্ট্রিক ভামুপর্ণ পারসবা:। কৌবের পাণ্ড্য হাটক हिमका हेन्याकता खुर्छो ॥ मुक्रु-ভ্ৰব• নাতি নিকৃষ্ট বৰ্ণ• প্ৰু**মাণ স•** ন্থা পুভাভি:। উৎপদ্যকে

ৰ্দ্ধন পারসীক পাতাল লোকান্তর ऋग्हलवृ ॥ हिन्छ। न जन्।कित्रबा ৰৈশেষা ৰূপে পুমাণে চ যতেত विदान्। न ह वावस्याख खगाखाग्य भर्बेक मर्वाकृष्ठरंग वनस्ति ॥ এकम्। শৃক্তি প্তবস্য মুক্তা ফলস্য শাণে-व नगृशिजम्। ग्लाः नश्नाि जू ৰাপকাণা• ব্ৰিডিঃ শতৈ রভ্যধিকা-मि भक्षा यद्यायकार्ष्यन उठा वि-रीन उৎभक्ष ভागद्य शनग्वाः। गन्नायका॰ जीन् विज्यार महरम् एव उन्र म्ला भन्न भूषिष्ट ॥ व्यक्ति বিকৌ দৌ বহতো ২স্য মূল্য বিভি: শতৈ রভ্যধিক সহসু । দ্বিমাবকো মাপিত গৌরবস্য শতানি চাষ্ট্রৌ কথিতানি মূল্য ।। অৰ্দাধিক মা-ষক মূন্মিত্তস্য সপঞ্বি•লঞ্জিত্য• শতানা ৷ গুঞ্জাশ্চ বড্ ধারয**় শ**া তে দ্বে মূল্য পর ওস্য বিদ্যান্ত ত জ্জাঃ॥ অধ্যৰ্জ মুন্মাপ কৃত• শত• न्। ब्लुः ख्रेन छन्। नम्बिजन्। यिन (भाउभाक छित्रमून॰ ध्रुत। छ भुवरिष्ठ मार्बिकाथाः॥ व्यक्षिकः मणिः गठक ग्नाः मगवात्याठाः िंभ वानिमग्र रखाए। विख्रेन मं-শভি ভবেদনূন• ধরণ• তন্তবক• বদ- ৄ ेडि उজ्छाः। नव मक्षति माशुयार

यम्बारः यपि नमाप्तुन मन्त्रमा विशे-नः।। बिःमञा ध्रमः भूगः भिकाः তদ্যেতি কীর্ত্ত। চত্বারিংশক্ত (वज्जाः भन्न ग्लाः विनिष्ठयः ॥ ठषातिः मच्छाति हित्ता विः मञ्जूनाऽ । লভেড সা। বস্তি নিকরশীর্যণ স্যা-खम्। भूगाः हजूर्यम ।। यमीजि र्यतः তি শৈব জপ্যেতি পরিকীর্ত্তিতা। अकारण जाइन ह जाया म् लाइ मन् कमारा। अ। जामाय उर नकल भिव ততো ৎমভাণ্ড জম্বীরজাতরসযো-बनगा विभक्ष । यृष्टे उठा मृष् उन् क्ड शिख मृत्वः अर्गाव्यविष्ठ मन् মৌক্তিক মাশু বিদ্ধা। মৃল্লিপ্ত নংস্ত পূট মধ্য গতম্ভ কৃত্বা পশ্চাৎ পচে-ভুনু তত চ বিতান পত্যা। দুধে তত্তঃ পথসি ত বিপচেৎ সুধাযা• পত্ব ততোপি প্যসা শুচি চিক্লণেন ॥ भूषः उछा विभव वज्र निघर्यान न्यासोकिक विभूव महुन का छियू-ক্ত• ৷ ব্যাডি ৰ্জগাদ জগতা•হি মহা-পুভাব সিদ্ধে৷ বিদথা হিত তৎপর বা দ্যালুঃ।। খেতকাচ সন্ তার• (रुगाः **म** जाउरगाजिउ । तमस्यु পুখার্য্যেত মৌক্তিক দেহ ভূষণ ॥ এবং হি সিংহলে দেশে অর্বস্তি জল-ष। बनाः । यभिन् कृ बिन जान्तरः

্চিড়ৰ্যতিমৌজিকে॥ উঞ্চে**সল**্য वल एक्ट् निमा॰ छन्ना नायब्द्धाः । বুঁ।হিভি মর্নী বহা শুষ্কবক্তোপবেঙি **७** ।। यन्त नायानि देववर्ग्य दिख्डियः **७ रक्बिम ।। मिडं भुगानवर्श्न** প'তক ষছ' সুনিঘল ।তেজাবিক সুগৃত্তঞ্ নৌক্তি हे खनवे स्व उ ॥ পুনাণবদ্নৌরব রিমাযুক্ত সিতা সুবৃত্ত॰ সম সৃক্ষবেশ্ । অক্রেড় র भगावश्ं**ठ भुभार॰ यत्योक्टिक**॰ ख्लान्यन यत्त्रीकिकः यात्र मु পাগত• স্যা**ে। ন তস্য** ভর্ত্তার ম⁻ নর্থজাত একোপি কশ্চিৎ সম্প-ভি দোষ:॥ ইতি গাৰুডে ৬৯ অ-श्रायः ॥

মুক্তানুক্ত: ত্রি ক্ষিপ্তাক্ষিপ্ত:। অস্ত পুনোগো অস্ত্রে শস্ত্রেচ প্রাবোবর্ত তে । ইতি হলায়ধ:।।

মুক্তালতা ছী মুক্তাহার:। ইতি হেমচন্দুঃ।।

মুক্তাবলী ন্ত্রী মুক্তাহার:।ইত্যমর:
। মৌক্তি মশুণী চা।

নজাম্বোটঃ পূ॰ শুক্তি:। ইত্যমর:।। মূজাম্বোটা জী শুক্তি:।ইতিরাজ

निघरिः ॥

मिकिः श्री चाजासिकमृःथनिवृत्तिः।

कैंजि निगायिकाः ॥ निजान्यायः-श्विः। १७ दिकाडिकाः॥ मन्नीरत्र-ন্দ্িযাভ্যা॰ আজ্বনোন্তত্ত্ব• মুক্তিঃ । इंडि ভর্তঃ ॥ उৎ भर्यायः। रेक-বল্য ২ নির্বাণ ৩ শেষ: ৪ নিঃশে-খস ৫ অম্ত ৬ মোক: ৭ অপবর্গ: ৮ । ইত্যার: !৷ সা পঞ্বিধা৷ সাপ্তি: ১ সালোক্য ২ সাক্প্য ৩ সায়্জ্য 8 निर्वाण १। यथा। नाहिनाबना मालाका मामीलाकव मनाउ। দীয়নান ন গৃহান্তি বিনা মত্সেবন জনা:।। ইতি শ্ৰীভাগৰত ।। মুক্তিস্ত ষিবিধা সাধি শুকু;ক্তা সর্বসমতা। নির্বাণপদদাত্রী চ হরিভক্তিপ্দা ন্ণা-।। হরিভক্তি স্বরূপাঞ্চ মুক্তি• वाकु छि विकवाः। यान्। निर्द्वाण कः পাঞ্চ মৃক্তি নিছন্তি সাধবং॥ ইতি বুন্ধবৈবৰ্ত্তে পুকৃতিখণ্ডে ২২ অধ্যা-यः ॥ 🗱 ॥ मृंक इत्रांशा यथा । বক্ষ্যে সাঞ্চ নহাযোগ ভুক্তি মুক্তি কর॰ পর•। সর্বপাপ পুশমন• ভ-ज्जानशिठंड॰ भृत्।। समिठि म्ल॰ দু:খন্য ন মধেতি চ নির্তি:। দ-खाखिया च्वकाय **इन ना**ह नहा-মতি:।। অহ নিত্যক্রোৎপত্তৌ ग्रामि अक्षिवान् गरान्। गृर (क-ত্রোপশাখাক পুপ্রদারাদি পল্লবঃ

म धन धान। महाशखा श्राककारेन र्शिविकिः। भ्गाभुगा मग्याक मृथ मू: अ शक्त ।। विधिव मूर्थ मा-श्रर्थः बाजा २ छान् महाउयः । সংসারাধ্ব পরিশান্তা যেত্র ছাযাং সনাশ্রা:।। ভুান্তিজ্ঞান সুথাসীনা खिवा मा अडि ह॰ **म** उं:। विख न সঙ্গ পাষাণ নিশিতেন নহাত্ৰ: ৷৷ ছিল্লে। বিদ্যান্সঠারেণ তে গতা লয মীখরে। প্রাপ্য বুক্ষরসং পীতং নীর লক্ষ নকণ্টক ।। প্রাপু বস্তি পরা: शुक्का कान निर्विख स्वे ह। मूर्ख ন্দ্িব মৰ নূল নত্বাৰা জন্ম চাপ্তছ ।। ন তন্মাত্রাদিক বাচা নৈবাস্ত:ক-রণাৎ ষকৌ। **ক॰ বা পশ্যসিরাজে**-न्तु भूवान जिम भावत्याः॥ यजः भः রে হিংক্ষরক্ত: সংজাতো হ্য গুণা আ হঃ। নুনকো দুংখ মাগুৰ্থ জাতো मदम्यास्त्रमा यथा।। এऋष्विभि भृष-গুাব তথা ক্ষেত্ৰাত্মনো নৃপি। জ্ঞান (यागिनः ॥ मा मुक्ति वु भाग हिक्र गरेनकाः भूष उ रहेनः। उपगृहः যত্ৰ বসতি স্তন্তোজ্য থেন জীবতি॥ इंडि गारूए २०० व्यव्यायः ॥ 🕸॥ ষ্পপিচ। হরি রাজ্ঞান সনেক্ছো যদা उद्यानायुक्त। जरा मकः म मन्या

রী বিকো রেবাত্মতা॰ বুঙ্কে ।। मা-नाथा मूठारङ ठाजा जुमन् रेव घटि यद्ध यट । भूई कर्ण निवाका भि भई: যোনিষু নিভাগা: ৷৷ কুটছা: পাশুভা৽ যাতি আত্মজ্ঞান বিবর্জিত:। সর্বন-रु मस्मजीन स्मयः मुःशास कन्नरज्ञाः गृष्क्रा कार्य । विश्व हिन् । विश्व हिन् । न्नी अतः। क्षीताशानाति चि यं बक्ताः ७ • उषम्म शान्य ॥ हन्तुकाष्ठ मि र्यष्ट्रा । अर्थ । यह विष्यु । यह विषयु । यह विष्यु । यह विषयु । मृःथः তथा क्कानः जः मत्रम्न भी अतः ॥ यत्य यः भूकरमा निकामहेरक कर्या वक्षनां । मन्यमानः जूथः मृःथः (माः প্যেব বিপুমূচ্যতে ॥ জগন্মুক্তে ন স্-8: স্যাদমুক্তে বৰ্ষতে সদা। তন্মা-क्कांगटक्कायः विष्णाट क्कानः नाधिक নেব চ ৷৷ যত্ৰ তত্ৰ স্থিতো জ্ঞানী পর गाक्षत्र विध्यता। विषयास्त्र माल्ल বা যাতি দেছে মৃতে হরিং॥ ন তস্য পুতিবন্ধো श्रु यम् जीरहानि नीनः যা। সক্তে গৃহতে নৈব পদ্মপত্ৰ भिवाञ्चमा ॥ यथा मूर्प्पन मःघाउः भिष वृत्म वीविष्ठि । उपिष्ठ निर्मन नावरञ्च। ज्ञानी विषय म•क्किजः॥ সর্বাবস্থোপি মুচ্যেত ভাবযুক্ত: প-রে পদে। জীবমূক: সমুক্ত: স্যায়িদু বিরহিতস্থয় ৷৷ কর্ত্তা হর্ত্তা চ ভো-

ক্তা চ সর্বজ্ঞ: সর্বগো হরি:। এক স্বছন্দ লীলস্য মূক্তি ব্লিত্যভিপীৰ-তে ॥ बीरमूकि नजानखा मूहिंठा-कात्र विग्राः। वियमुका ইवाভाष्टि মুচ। শৈচজন্য বর্জিজাং ।। নির্শুণঃ স তু विष्डियः भूषे पूर्व मठी छवान् । जी वनार्मा खर्यपां ७९ जूश निज्ञ যোজন ৷৷ মৃৎপিও দওৰশ্মোক্ষ স্ত মৌকস্ত ভবেদৃথা। তিইন্তি কাঠব-দ্মে চ সংবিত্তি পরিবর্জিতা: ৷৷ তে চ भारगारत नीना जंडाक देशितानः মাঃ। আকাশ বন্তবেতাল্যা বিদে-হো নিষ্কুচেতন:।। অল ছ নেন মো-ক্ষেণ চেতনা রহিতেন চ। বরনেব চ সংসারী বিষয়সক্ত চেতন: ৷৷ সুথ म्। नष्ठतः मृःथः मृःथम्। नष्ठतः मृथः । ভুজমারা। উভৌ পাশৌ সংসারে সংব্যবৃত্তি ।। ই দৃশ হৈ পর জা-ন বেদাদীনা সংশেষতঃ। সুথস্য চ कन जूड यार्ग तक दिला जम।। যত্র বাসঃ পরে স্থানে সূখ দুঃখ বি-वर्षिजः। (कवनः कीवनारमा २४: পোক্ত জ্ঞান মন্ধানতা ৷৷ চেতনার-হিভো জ্ঞান মাফাশস্থো ২প্যচেত नः। गृ**्**शिख प्रख लाञ्चादि भिना পউক হৃদ্যু বং ॥ অথ শ্রাস্তো নরো ষদ্ম সুসুধ্য সূথ মশু তে। বোধ্যনা-

नः महाजीति मुशासिक् ने नेनिहर ॥ आ (क्या॰ मुक मिष भाकः मुध मजाञ्च (केवलः। जन्मः म•भूवक्काः। মি শৃণুষ্ব পদক্তৈ। মম।। দুঃখানা ম गरमा नाखि गव भौधाः नित्रस्तरः বিদ্যুত তৎপর• দৃষ্ট্বা যোপ্যানন্ म्थी ভবেৎ।। युक्तकान भुविमानः सहमताचा वनादिजाः। न **७वा॰ भू**-नज्ञावृद्धि यांछि विकू लय॰ वृक्षाः 🗄 অত্তিদেবো হরি: শান্ত: কারণোপা য বর্জিঙ্গ:। ত জ্ঞাত্বা ত্ ভবেন্মুক্তি निर्मा कायरयाभिनः।। वृक्ता विकुण क्पून्ठ वन्तु मूर्यप्राप्तयः भूताः। न वि ভক্তি• শরীরস্য থান্তি মুক্তি নবিদ্য (७ १। जमानाद्राधनीयाणि म॰वः মেন্দ্রিয় গোচর:। বিফু মায়া পাক্তি र्या देव यमीरहम् कि माजानः॥नानाः विष्ठा जनामा नाना जिल्ला निश्न হাৎ ৷ নান্যত্ৰ সৰ্ব সংত্যাগাৎ নে क्र॰ विनरिंज मानवः ॥ जन्माक्षर्य मृ থো ভূত্বা সংযমগ্রত্মান মাত্মনা? थर्मा॰ अर्यप्राविद्यारेयरना धर्माञ्जा कृ খ নেখতে ৷৷ ধৰ্মাদেবাপ্যতে দেছে ' मात्राः भूषा थन• उथा। वर्मा८ मर्गः (बाक्ष क यह न प्रति पूर्व छ॰ ॥ अव (या (नव गन्न बीः यथ्यां मनुगामि नः স্বৰ্গে তিপ্তস্তি বিপুৰ্ষে ততো থাস্য'

नद्गे जिः ॥ धर्म मर्थक द्गामक माक क अघि मजग । ममात्या जि भूम मि जाः ना द्वाग भद्गा पता ।। ই जि दक्षि-भू द्वागः ॥

्रिक्तः क्री जगवन्नाग्विष्णवः। गथा
। जन्नाक्रद्रक वस्त्र्यं महामाद्रकः
गूकितः। नाना मिक्ति भुमाठाद्रः
भद्रः िष्ठान्द्रक्षकः।। छञ्चाद छञ् जद्रः ठानप्रनाम ठाष्ट्राक्कद्रः भद्रः।
मञ्जः मृथ मगृहार्यप्रमाणवार्थ भुमा
धकः॥ भुष्ट नाद्रायगारयि नतनाछात्रिपाः निर्यागिजः। अभिर्वप्रकाः
कर्त्र मर्ज्य छिनः मर्द्रारा इदिः
॥ नाभवारयि देव नाम धर्मकानार्थः
नाक्रमः ॥ इकि विद्यभुद्रागः॥
गुकिमाठित वि॥

্তিমূক: পু॰ শিপ্লক•।ইতি রত্ন নালা।।

्रं की भन्नीनावयविद्यायः। म ज्

मूर्थविवतः। कवयञ्च उपूर्वाकारञ সমুদাযে যুঞ্জতে। ইতি ভরতঃ।। **७** व गर्डश्मा **१** भगोम र्डबि । इेडि जूथवाधः ॥ उट्नर्यायः । बकु २ बामा ० वहन ८ बृक ६ আনন ৬ লপন । ইত্যময়:।। उन्। यक्श·यथा। १८%। ह एस्न्र् লানি দম্ভা মিন্তা চ তালু চ। গলে। गवारि नकनः नश्चाकः मूथ् मूह्र-তে।। ইতি ভাবপুকাশ:।। রতি-कियायाः बजीम्थन्। (म्हाट बताः लकम्थमा ह हुन्नत मृह्वद ग्वा। নিক্ষকা সম্ভতাধারা মার্জ্জারো বু कविनस्यः। जीमूथः वालकम्थः न पृष्ठे भनू ब्रव्हीट ॥ इंडि कर्मा লোচন ।। 🗱 ।। নি:সরণ । ইভ্য-मदः ॥ उद्ध गृष्ट्या निष्कृमन भूरतः **म**न वर्षा । ইতি সর্বধ্রাদ্ধ: ॥ গৃহাদি দার পুবেশঃ। ইতি স্বামী ॥ इडेंग खनारिः भूरवण निर्गमः। ইতি কোক্লটঃ।। গৃহাঙ্গৰাদি নিঃ-সরণ পথ:। ইতি রমানাথ:॥ ইত্যমর টীকাযাণ ভরত: ॥ প্রার-ম্ভঃ।। উপায়ঃ।। সদ্ধিবিশেষঃ।। नाउँकारमः मदः। ইতি मिनिनी।। वानुः॥ भुधानः॥ भकः॥ नाष्टे-कः॥ (वरः॥ ইতি भक्तज्ञावनी ॥

क्ता नृतः थगवर्जु। मूर्थ। उद्यः। ইতি শব্চন্দ্রিকা॥

মুখগদ্ধক: পু॰ পলাঞ্ঃ। ইতি রাজ निर्घण्टः ॥

मूथ्यका जी इंगइनी वृनिः। ইতি ত্রিকাওশেষ:॥

মূথচীরী জ্রী জিন্তা।ইতি শদ गावा ।।

মুখজ: পু॰ বাক্ষণঃ। ইতি প্রাণং॥ বকুজাতে বি ॥

দৃথতীয় ত্রি মুখসম্বন্ধি। ইতি সি-काष्ठकोगूभी ॥

নুখদ্যণঃ প্পলাঞু:।ইতিরাজ निघंकः॥

मुथशावन ही चाम्रभुकालन । मूथ ধোতা ইতি ভাষা। যথা। পটোল निम्न कष्टाम् माण्डी वनश्रह्मदिः। পঞ্চপল্লবন্ধ: শুেষ্ঠ: ক্যাথো মূখ-খাবনে । ইতি ভাবপুকাশ:॥

মুখধৌতা জী ব্ৰাহ্মণযৃষ্টিকা। ইতি भक्तिमुका।।

মূথনিবাসিনী ত্রী সরস্বতী।ইতি কেচিৎ ॥

नूथिनित्रीक्रकः भू॰ व्यवमः। ইতি भवत्रज्ञावनी ॥

मूर्थभूत्र की गर्यः। इंडिरेक्रिकः॥

मूथः भू उद्यायथा। विश्वकानि मूर्णभूगः भूभ नातकः हि जिल् পুকাশধা। বক্তুরোচলে তি ॥ ূখ ভূষণ জ্বী ভাছল। ইতি বৈ-を中。

মূ**থ**া ওনকঃ 😁 তিলকব্**ফ:। ইতি** রাজন্যড়া। 🐃 🤏 ছবকে ত্রি 🛚 🗎 মুখনোদ: পু: শোভাঞ্জন:। ইতি त्राक्रियकः॥

मूथ्यखन ही कविका। यथा। कवी थनीन क वेला कविषः मृथ्यञ्चन। ইতি হেমচন্দ্র ॥

मूथद्रः वि अभि्यवामी। ७८ भर्गाः यः। मृग्यः २ वयक्षम्यः ०। ३७५

মূখর: পৃ• কাক:॥শহ্ব:।ইতিরাজ-निर्घण्डः ॥

মুখরোগঃ পু॰ বক্তানযঃ। তত্র মুখ-ना यक्ष नार। ७: ही व प्रम्वा-নি দন্ত। জিহ্বা চ ভালু চ। গলো गलारि नकलः मुखाङ्गः मूथ मूह्य-তে।। #।। অথমুখরো গাণা সংখ্যা माह। मु इडीता ध्या पंचम्ल जू रम यहे उथा। म्राउपक्षी त्रम-জ্ঞাযা॰ পঞ্চ দুঃ নঁব ভালুনি॥ কণ্ঠে তৃষ্টাদশ পোক্তা স্ত্রখঃ সর্ব সরাঃ আতাঃ ৷ এবং নথান্যা: সর্বে সপ্ত: যতি মঁতা বুৰৈ:।। ক্লা মুখরোগাণা।

जितानानगरः । अन्य शिक्षिक कीत मिश्रियायामि (अत्रम 🔠 भूभ मेर्स्) शहाः अर्युः कुकां मान्। वरकाछ-**जाः॥ #। #** १९ १० छे । हर्सि भारत एउस् নিবান পূর্বি । সংখ্যাপ্রাছা পৃথ-क्षिः नगरेष्ठक ब्रक्टका माःमन স্তথা। শেদোন শ্চাভিঘাতোত্থ এব নুষ্টেছিলা গদাঃ::#।। তত্ৰ বাতিকস্য बक्त भार। कर्त्रत्मी शक्रावी खादी क्ष्मिञीतु मुगिक्ति। माल्ला जिश्व পাদ্যেতে ওঠো মাক্ত কোপ**ত:**॥ भक्रायोक्तरको। माःलु তে विमार्थ्य उ । পরিপাদ্যেতে কিঞ্ছিদীর্ণ বৃচৌ ক্রিযেতে। ৠ.। পৈ ত্তিক**নাহ। চীযেতে** পিডকাভিন্ত সক্জাভি: সম্সত: । সদাহ পাক পিডকৌ পীতাভা-দৌ চ পিত্ততঃ ॥ 🛊 ॥ স্থৈতি মাহ । সবর্ণাভিস্ত চীঘেতে পিডকাভি র (वनतो। कञ्चमस्त्रो ककारनारही नि हिलो भीउलो एक ॥ #॥ नामि-शाउक मार। मक्ट क्लो मक्ट পীতৌ সক্ৎশ্বেতৌ তথৈবচ। সমি পাতেন বিজ্ঞেয়া বনেক পিডকান্বি (छो॥ 🗱 ॥ রক্তজনাহ। थর्জুর ফল বৰ্ণাভিঃ পিডকাভি মিপীডিতৌ রভেপেস্প্রী কৃষির গুবন্ত শোণি छ शुक्ति।। आ गजनाह। गा ज

मूर्छो छक ङ्लो मा मिल वर्म छो । জন্তব শ্চাত্র মূর্ন্তি নরস্যোভ্যতো मुथार ॥ कडवः क्मयः। मृहंडि व र्षाष्ठ। मूथापू ७ य छः मृक्षापु ।। # ॥ भित्राज्ञेगार । मिर्ल ग्रंथिপुडीकाः भी भिरमा क्खारो ६क । यह यु-িক সন্ধাশ মাসুাব সুবতো ভূশ ॥ 🗱 ।। অভিযাতজ নাহ। ক্ষতজা-ভৌ বিদীর্য্যেতে পীড্যেতে চাভিঘা-ততঃ। মথিতৌ চ সমাখ্যাতাবো-ষ্ঠো কণ্ড় সমন্বিতৌ ॥ নথিতৌ সুদ্ধি-তাবিব। অতএব ক্ষতভাভৌ ক্ধিরা ভাবিতি সঙ্গত ৷৷ 🕸 ৷৷ অথৌষ্ঠ রোগাণা । চিকিৎ সা। গল দন্ত মূল स्मनहारम् (द्रागाः ककाम् ভृशिक्षाः । তন্মাদেতেম্বসকৃজধির বিসাব-राष्ट्रेर ।। চতুরিধেন স্নেছেন মধুছি যুতেন চ। বাতজে হভ্যঞ্জন ফর্ব্যা-माछी (सर्क वृष्तिनान्।। চতু विश्वन ন্নেহেন তৈল ঘৃত বসা নজ্জৰপেণ ।। বেধ শিরাণা বমন বিরে ছ॰ তিক্তাস্যপান রস ভোজনঞ্চ। শীতা: পুদেহা: পরিষেচনঞ্জি-खानम्र्ष्टेयुध्रतम् **व**र्गा । नित्रा विदित्र हमः थ्राः (यपः कदन এव ह। ছতে রক্তে পুযোক্তব্য ওপ্ত কোপে কফাত্মকে।। নেদোজে স্বেদিতে ভি-

व्य (भाषि छ कवला हिछः। श्रियक ত্রিফলা লোপু সক্ষেদু• পুতিসার · ণ।। 🛊 ।। পুভিসারস্য বিধি মাহ। **म्छ जिल्ल। ग्रथाना॰** यहुर्ग कन्नावत्वाः **रिनः । मरिन र्घर्यः। मञ्**ना जपूकः **প্রসারণ**া৷ ওঞ্জাগেল্পেষ্ **मृद्धे। (माय मृभा**हत्त्वः । (७ष् वृगद्धः यार्डियु युगवर अञ्चलाहरत्रर्थः । । । । । । । व्यथ प्रस्टाद है (ज्ञानाः। उत्र प्रस्ट है রোগাণা नामानि मःখ্যাঞ্চাহ । ষ্ক্রীতাদে৷ গদিতঃ পূর্ব• দন্তপূপ্পুটক खथा। पश्चरवञ्जः भाषित्रक महास्मी বির এব চা। ততঃ পরিদরঃ প্রোক্ত **स्ट उपक्षः म्**डः॥ दिवर्चम्ड **उ**ठः প্রোক্ত: থলিবর্দ্ধন এব চ। অধিমাণ जक नाना ह पष्टनाष्ट्रण्ट शक ह।। দন্তবিদুধি রপ্যত্র দন্তবেষ্টেযু যোডশ । 🗱 ।। उब भी जारमा वक्रा भारा শোণিত দন্তবেষ্টেভ্যে যত্ৰাক্ষাৎ পুবর্ত্ত । দুর্গন্ধীনি স কৃষ্ণানি উৎ-क्लिपीन मृतृनि ह।। पछ माः नामि শীর্ণ্যন্তে পচন্তি চ পরস্পর । সী ভাবে৷ নাম সব্যাধিঃ কফ শোণিত সম্ভব: ।। দন্তবেটেভ্য: দন্তবেষ্টনমা• সেভ্যঃ। অকষাৎ অবিঘাত বিনা শীর্যান্তে পত্তি ৷ পচন্তি চ পরস্প র পাকোমাণা মা সানি শোণিত 🍴

পচন্তি শেটিবত মাংসানি পচ্চা ॥ 🕸 ॥ एउ भूक्ष हैना 🖘 । एउटा 🖫 বা যত্ৰ খুখুৰ্জাযতে মহান্। দন্তপু প্লটকো নাৰ্স ব্যাধিঃ কফ রক্তজঃ ।। 🕸 ।। पञ्ज्वहेगाह । সুविश्व भूषः ক্ষির চলা দন্তা ভবন্তি চ। দন্তবেই: স বিজ্ঞেয়ে। দৃষ্ট শোণিত সম্ভবঃ 🔢 অত্ৰ দভন্লানীতি কতৃপিদ ম रुत्रनीय ।। अ।। (मोवित्रमारु। श्रेय দ্ভস্তাৰ ক্জাবান্কফ বাভল: লালাসুৰি কণ্ডুরশ্চ বিজেয়: শৌি রো গদ:।। 🕸 ।। स्राप्तिविद्यमाहः দন্তা শ্চলন্তি বেষ্টেভ্যো স্তালু চাপ্যব भीयारा । यमिन्त न नर्वाका वा शि मं হালৌষির সংজ্ঞক: ॥ তাল্ চাপ্ত वनीर्याटक ठकाजा ८ मञ्चति हो छाना ५ বদীর্যেতে। সগুরাত্রান্ মা**রক ক্ষা**-ব বত আহ ভোজঃ। নহাশৌবির ইতেऽय সপ্তরাতান্ নিহস্তऽসূন্। 🟶 🛭 शतिनत्रनारु । पश्चनाः मानि भीर्यप्रस যমিন্ সুবতি চাপ্যসূক্। পি**ভাস্ক্** কফজো ব্যাধি জ্রেন: পরিদরে৷ ছি मः ॥ 🗱 ॥ উপকृष्णगारु । व्यक्षियु **रार्: शाक्ष्य जान्या पर महा** হি। অভ্যাহতা: পুসুবন্তি শোণিত নন্দবেদন । সাধ্যায়তে সুতে রক্তে মুখ পুতি চ জাগতো! শ্মিন্পক্শঃ

সস্যাৎ পি ভ রক্ত সমুক্ত্বঃ। আঘা।। ि जाः घृक्षाः। भारियम् जिम्ने । मृत्हेर् मध्यात्वयु मन्त्रस्था जायुक्त महान्। ह नश्चि ह ब्रेश यश्चिन् **नर्रे**यम् र्ली विद्याः ভন্ন:॥ সংরম্ভ: শোপঃ। চলঙিচেভি धकात्राविषका पार शाकाः॥ 🗱 ॥ स*िव*र्षान याह। याक्टानावित्वा ্ড। জাষতে তীবুবেদনঃ । খলিব-া সংজ্ঞো হসৌ সংজ্ঞাতে কক্ পু শাম্যতি ॥ সঞ্জাতে দন্তে ॥ #॥ **विनाः मकनार । इनत्य अन्तिन** ^ल र गरान् (णात्था गराक्बः। वा-সাবী কফক্তো বিজ্ঞেব: সো-্ংখনা সকঃ।। হনবের হনুভবে প-ः रम पर्छ।। 🗱।। शक्षप्रस्वना जी ब्राह् ্ভমূলগতা নাড্যঃ পঞ্চ জ্ঞেয়া যু ্রেরতা:। যথেরিতা যথা নাডী-্ৰণ বাত পিন্ত কফ সন্মিপাতাগন্ত িনিতাঃ পঞ্চনাড্যঃ কথিতা স্তথা ः भी अर्थः। 🗱 ॥ पष्ठविष्धिमाइ। ः गाः मगरेनः मारेम् वीचासः श्वरश् सन्। महाह कक् मुखिखः भ्याः ा मछित्रितिः ॥ मछना मनतेलः म-^{कृषि}द्वे**न** उत्तरिषः । मारिमुः मर्त्रोक्त ্তৃভি:।। 🗱 ।। অথ দন্তবেষ্ট রো-শাণ চিকিৎ যা। শীভাদে হত अ क् कार्य नागत नर्यभान्।

निकाथ। विकलाकानि वर्गाम् अञ् व बाद्र १ ।। कामीम (बायु क्षा मः ন:**লিলা স প্রিয়কু** তেরাস্থাঃ ৷এষা• **চু**र्न• मधुयुक् भीजारम भूजिमा•म-হর• ।। তেজাস্থা তেজবদ্বল ইতি লোকে ৷৷ তৈল• মৃত• বা বাতমু• শী-**जा**त्त मन्**भूम**म् । एउ । इस मञ्जूष्म हित्य कार्याः एकान तक माक्रनः ॥ म भक्ष नवनः कातः म क्लोमः <u>भ</u>ुजि-সারণ । শিরে! বিরেক*ঃ হিতো ন-স্য° স্থিঞ্চ ভোজন• II 🕸 ৷ বিসাবিতে দন্তবেষ্টে বুণন্ড পুতিসারযেশা লোপু शख्य मधुक लाका हुर्ति मधुश्रुरैजः ॥ পুতিনারয়েৎ অফ্ল্যা ঘর্ষায়েৎ। পত্ত**ক্** চোচক ইতি লোকে ৷৷ গ-পূবে ক্রীরিণো গোজ্যা: সক্ষৌদু ঘৃত **न्यक्षताः। हणरः रेश्**रय्यक्षतः कार्यप्रः वन्न हर्न १। जुनूखा ज्या त्रा व বিডঙ্গারিষ্ট পল্লবৈ:৷ গোনূত্র লিঞ্জৈ खंढिका॰ हाया भूषा॰ भूतन्त्राय ।। তা॰ নিধায মুখে শোথ শুল দম্ভা-ত্রোনর:। নাত: পরতর কিঞ্চল-॥ जुना घृत्रः नीलमहा इत्रमः (मुन्ता स ना मः भुभारयव्यथावट । उन करु ভাগ রসেন তৈল পচেছনৈ রর্জপ ল भुनारेगः॥ करेन बन्छ। थनिवाबित्न

জন্বাসু যন্ত্রী নথুকোৎপলানা । ত- 🖔 खिन गाण्येव ४ उ॰ गृत्थेन **रेष्ट्**यंऽ• 🏻 विज्ञानाः विषयाि अम्यः ॥ नी**ल**ः महाहतः नीलभूशकहित्रया । जन ন্তা দ্রালভা তদলাভে যবাপো গা शः। अदियामा पूर्णकथितः। नः क्षात्रताम् देखनः ॥ #॥ देन विद्य वृज व्रत्क जू लाषु मृष्ठा व्रमाक्षरिः। माकिर्दः ममाउ लाभा गख्य ক্ষীরিণো হিতা:।। #।। ক্রিযাণ প-तिरात क्याही जामाका विष्क्राः । 🗱। সংশোধ্যে ভয়তঃ কামুণ শির শ্চোপকৃশে তথা।। কাকোডুম্ব রিকা श्रेब वूर्नः विमावरमिष्ठम ह। व्यवरनः क्ष्मीपु गृहेज्ञ मत्त्रारियः भति नात-বেৎ॥ #!৷ শক্তেণেত্কৃত্য বৈদৰ্ভ দভনু পানি শোধ্যেত। ভতঃ ক্ষার• भुगुङ्गीञ कियाः नदीक मीठनाः ।। উদ্ব্যাধিক দম্ভ ততো হগ্নিম-বচার্থে । কৃনিদস্তক বছাত্র বিধিঃ। कः रियं। विद्वान ७।। ३।। ইय॰ थ निवर्काः। নগ্য চিকিৎসা॥#। ছিত্তাধিনা•স• नकोरेषु (ब्रेटेंड म्हरेन बनाहरद्य । वहा (उरज्ञाव जी भाठे। सच्छि हा गाव শ্রু**কৈ:** ৷৷ ডেলোবতী তেজবল্প• স্বৰ্ণজীবন্তীতি চ ॥ কৌৰু দ্বিভাষা शिश्रमाः क्वता ठाव कीखिजाः ।

शाहिक निर्दे विकन्। तथाय कीव धाननः। विकास अपित् स्वा कर्या प्रस-नाउ व के ब्रायः । य प्रत्य मार्था का-যেত নাডীদর্ত্ত ভদুদ্ধরেৎ।। ছিত্রা মাংসানি শান্তিণ যদি নোপরিভো **ज**ि. । पेकृत्र ह मरङ्हानि का-রেণ জ্লানেন বা।। ভিন্তুগ্রেকিতে प्रस्ति इन्काञ्चि गिष्टिः धृतः। अमृत्रः দশন তমাদৃদ্ধরেন্ডগ্র মস্থিচ ৷৷ উদ্ধৃতে ত্তরে দন্তে শোণিত পুসু-বেদতি। রক্তাভিষেকাৎ পূর্বে:**ক্তা** ঘোরা রোগা ভবন্তি হৈ ॥ কাণঃ স॰ জায়তে জন্ত রদিত তস্য জাগতে । চল মপ্যব্র॰ দন্ত মতো নৈবো-क्षात्र ७ विक् ॥ शावन का कि नमन त्रामु कफेक थापिदेवः । कषारेग वि-जिल्लायः। कषारेय जीजि मनन क-चैकी बाद्कचेंकिः ॥ मिश्रिष्टा लाधु थितत्र यञ्जारेख कालि ३८ कृष्टः। ভৈল তথ সাধিত তত্ৰ হন্যাৎ দন্তগতা পতি ।। জাত্যাদি চতুষ্ট-যস্য ক্ষাযেণ মঞ্জিষ্টাদি চতুষ্ট্যস্য ह कथायन जिन्निम् **भ**हर । जा-जि: हरानी इंडि **ला**क । उन्नाः পত্র• গুৰুহ । মদনে। ধু কুর স্তস্যাপি প্ৰ মুৰুগাছা। ক্ট নি বৃহৎক্টা-ই তস্যা নূল পুাহু। ৰাদুকটকো

भीक रेयह नव वे ग्रेडिंग जा ।। **छ्राहिरे** कला । का अन्य क्रीक विदिन् ्युक्क शिर्वकारका प्रवाह माळा म्या नित्र छत्र दाना होत्र काराया । বাঞ্জ ।। জাল দন্তবেশিঃ । ভঞ্জ রো नागा नागानि न याकारा मान নঃ কথিতঃ পূৰ্ব॰ কৃমিদন্তক এব চ। পোক্তো ভঞ্জনকো দন্তহযো বৈ দন্ত শক্করা ৷৷ কপালিকাত্র কথিতা শ্যা ব্যস্ত ৰু এবচ। করাল স•জ্ঞ ইত্য <श्रे म्हातामाः श्रृकीखिङाः ॥ 🕸 ॥ তর দালনস্ত লক্ষণ নাহ। দীয্যনা-ণেশ্বিব ক্ডা যত্ত দতেষু জাযতে। मानाना नाम म व्याधिः मनागि নিমিভঙ্গ:।। #।। ক্নিদ্ভক পাছ। কৃষ্ ছিদু চলসাবী সসংরয়ে। মহা-ৰুজঃ। অনিমিত্তক্ষো বাতাৎ স **७** । जनः क्रिम्डकः ॥ जनः द्रष्टः म्ख **মূলশোথযুক্তঃ।** তবৈৰ সাবো বো ष्वतः। अनिभिञ्जकः अवश्वेनामि निमिख॰ विरेन्द सङ्गक्कावान्॥ #॥ ভঞ্জনক নাহ। বক্তু॰ বক্ত॰ ভবেদ্দক দন্ত ভঙ্গান্চ জায়তে। কফ বাত ক্-তো ব্যাধি: স ভঞ্জনক সংজ্ঞক: ।। 🗱 ।। पछ हर्य भाष्ट्र। म्नीज क्यक পুবাতান স্পর্শানা নসহা দ্বিজাঃ। यव न्। वाउ निखान्। परस्यः म

कीर्विजः ॥ #॥ म्हणक्रा मारु । भाषा प्रशास्त्र यस करा निष्न-শোষিতঃ। শহুরেব খরস্পর্শা সা-জ্ঞেয়া দন্তশঙ্কুরা ॥ শঙ্কুরা **সিকতা** ॥ #॥ কপা লকা নাহ। কপালেশ্বি-व नीर्ग्रं मू माख्यू मनात्वयु ह। क-পালিকেতি বিজ্ঞেগা দস্ত ছিৎ দম্ভ-শর্রা।। কপালানি মূন্য ঘটাদি ষ্টকানি তেম্বিক। সন্লেমু দছেমু ন-वनश्चि पञ्चावगरवकू भीरं रम् या पछ-শর্করা সা কপালিকেতি বিজ্ঞেয়া। मा क्लानिका म्डहिए म्डगानिनी ।। क्षा न्यायम् छक् मारु। (या १मृद्याः (ण्न शिखन मथा मस स्वाप्त । । শ্যাবতা নীলতা বাপি গতঃ স माऽावपञ्चकः।। पद्धः पद्ध हेव ।। 🕸 🛚 ।। कतालगार। भरेनः भरेनः भुसक्छ যত দন্তা প্নিল:। করালান্ विक्टान् म्डान् म क्वाला न मिशुः जि ॥ कदालान् ज्यानकान्। अय॰ मृणु (जताक: । मःगुरुकारत गृरी-তশ্চ।। #।। অথ দন্তরোগাণা চি-किৎ मा। टिज्लः नाकात्रमः कीतः পৃথক্ পুস্থ মিত পচেৎ। দুবৈয়ং প লমিতৈ রেতৈ: স্বাথৈ শ্চাপি চতুর্গু-रिनः ॥ लायु कर्कन मिक्षक भन्न-क्नित भगतिः। हन्त्वा भन यः

क्षेत्रारेख खरेखन क्रांत वृज् ॥ कर्कः **ब्र**ाप्त भख्य इंडिंচ भाठेः॥ मान-न परा विकास पर पर विकास । শীতাদ॰ পৃতিবক্তৃঞ্চ বিকচি বির-नाम्य ।। इन्यानाम् गनात्वाम् वर्गाप्रधानि थितान्। लाकािक भिनः रेडलः मस्रातारम्यु भूष्टिउः ॥ बाकार १९८७वः॥ 🗱 अत्यविभावरैनः বিল্ল মচল ক্মিদন্তক। তথাবপী ডি বাউল্লেঃ স্নেহ গণ্ডুৰ ধারণৈঃ॥ **ज्**षुनार्वानि वर्या ज् त्वरिशः श्लिश **ভোজনৈ:।** কৃনিদন্তা**পহ**ণ কোঞ্চণ **হিন্দু** দম্ভান্তরে স্থি**ত•** ॥ বৃহতী ভূমি-कम्यी शक्षायुन कचेकाविका कृषिः । গ পূষ रेउन युडः कृ भिष्ठक (वष्ना-भगनः ॥ नीली वायमङङ्घा कर्षे उन्नी भूलायरिक रु॰। मक्ष्री एमन विश्वेड॰ দশনক্মি পাতন প্রাহঃ॥ৠামেহা-नाः कवनाः (काक्षाः त्रनिय द्वितृज म् । निर्श्श महानिजञ्जानाः मञ्जरः ৰ্য পুমৰ্দনাঃ ।। তৈত্তস্য সপিব: তি-বৃতা পশ্বস্য সপিনঃ কবল ইভ্যৰ্থঃ ।। স্বৈহিকো ২এ হিতো ধ্নো নস্য সৈহিকমেব চ। পেথা রসা য্বায়শ্চ ক্ষীরমন্তানিকা ঘৃত ।। শিরোবন্তি হিভশ্চাপি জনো য শ্চানিলাপহঃ । जाज र उर्रिश कि ॥ अहि मू॰ र छम्

वानिग्ध्र द्राम्भाद्र जिनक्। नाः कार्रेन में भूरें उठ छा॰ भू विमादः (यट ॥ मञ्जू क्या का क्या मि-রবশেষতঃ বিক্লালিকা ক্রতমা তত্রাপ্যেষা ক্রিয়া হিতা।। অত্র দম্ভ-॥ १॥ कवान। सानि भी जावू ककाम॰ मञ्जावन । उथा । कठिन उक्का मख्दाणी विवर्क्डरय् ॥ 🗱 ॥ 🗰 ॥ অথ জিস্থারোগা:। তত্র জিস্থারো-गागाः निरान नाम मःथाः शुक् । বাতলঃ পিত্তজ্ঞাগি কফ্লো ং-লাস সংজ্ঞকঃ। উপজিস্থিকা চ গ-मा जिल्लायाः अक कीर्खिङाः ॥ #॥ ত্ৰ বাতৰ্স্য লক্ষ্য নাহ। জিল্পা• নিলেন স্কৃ টিতা পুসুগু৷ ভবেচ শা হ-हरन शुकाना। शु िं जा नना शिरी भी । পুনুপ্তা রসানভিজ্ঞত্রণা সুপ্তেব। শাক্ত্ৰন প্ৰাশা কান্ক ভূমিজো জন শুদ্বৎ কণ্টক চিতা।। 🗱।। পি ত্তজ নাহ। পিত্তাৎ সদাহৈ ৰূপ-চীযতে চ। দীর্যেঃ সরক্তৈ রপি কণ্ট-रिकम्ह ॥ ज्यर द्वारमा लाक कनी ইতি খ্যাতঃ॥#॥ কফ্জ নাহ। ক ক্ষেন গুৱী বহুলা চিতা চ নাংনোছ-रियः भान्यानि कछकास्त्रिः। वहनाः ञ्चाः मारमाह्रियः मारम**ङ्हिरः**

মুথরো,

🛊 ॥ श्रमाम मार्ग विद्या उत्म यः च्यथः भुगारः (मा श्वाम म छः 🌉 রক মূর্ভি:। জিস্ব্র সকঃ স্তম্ভ ৰতি পুৰুদ্ধো মূলে দ্বিজ্ঞা ভ্ৰ**ণ**মে ि भाकः॥ भुगारः भुकर्यन गाए। মাৰণ:। কফরক্তম্র্ভি: কফ রকা ্ট্যা• মূর্ত্তি যস্য কফরক্ত ইত্যর্থ:। জ্ব। স্তম্ভেন বাযু রপ্যত্র বোদ্ধব্যঃ ভূশপাকেন পিজঞ । অত জি-ारवाय समाध्यक्षमा ॥ 🗱 ॥ উ-🗝 জিন্থিকা মাহ। জিন্তাগু রূপ 🤏 থু হি জিন্থ। মূভান্য কাতঃ কফ পত্ত যোনি:। পুসেক কণ্ড্পরি দাস্ ্ক: পুকথ্যতে ২সাব্পজিস্থিকে ্ত।। জিল্লাগুৰূপো জিল্লাগুৰি: 🏰।। অথ জিস্থারোগাণা: চিকিৎ--না। জিন্তাগত বিকারাণা শন্ত• শাণিত মোকণ । গুড়ুচী পিপ্ললী निष करणः कर्वेजिः मूथः॥ ७४ भू কাপে ৎনিলজে যদুক্তণ প্ৰাক্ চি-िक्टिनिन । कश्रेष्ठव्यनित्नात्यवृ छ८कार्यः ভिषजा थन्।। भिखः পরিষ্ঠে তু নি:স্তে দুষ্ট শোণিতে। শুতিসারণ গণ্ড্য নস্যানি মধুরণ हिउ॰॥ कर्षेक्ष्र् करकात्थ्य हिः ेथाउष्प्रमुखः कारम। शिश्रनागि म भूगजः कागाञ्च भूजिमात्रामा। छैनः

किञ्चान्त मः विथा कारतन भुविमाः त्रायट ॥ नित्रा वित्रक गख्य ध्रेन रेण्डना मूलाहत्त्रया (व)।य कात्री-ভगा विक्र हुर्ग (मंखर भूषर्यन । उन **কিন্তা পুশান্ত্যর্থ মেভি ত্তৈলঞ্চ পা**-हरार ॥ 🛊 । 🛊 ॥ वाष जान्द्रागाः । ७क डाल्राजागाग नामानि नं থ্যাঞ্চাহ। গলশণ্ডী তুণ্ডিকের্গ্য খুবঃ কছপ এব চ। ভালুর দক্ষ কথিতো মাণ্স সংঘাত এব চ।। তালুপুপুট নামা চ তালুশোষ ত্তথিব চ। তালু-পাক্ষ কথিতা ভালুরোগা অমী न्य ॥ 🗱 ॥ उब गनणुशी नक्षा मार । (स्याम्गाः जाम् म्ला८ भ्राका দীর্ঘ: শোথো খ্যাত বস্তি পুকাশ:। क्षा काम भाम ज्रे॰ वरिष्ठ विरा ব্যাধি কণ্ঠশুগুতি নামা ৷৷ খ্যাত্ৰ-বন্তিপুকাশ: বাতপ্রিত চর্মপ্ট ज्वाः ॥ # ॥ ज्**खितित्री मार** । **(माथ: ज्**न खार मार भुशाकी প্রাহুক্তাভ্যা• তুগুকেরী মতা তু। পুৰিকাভ্যা• শ্লেমাস্থ্যা•। তুজি-কেরী বিনকার্শাসীফল তত্ত্বল্যেভ ॥ 🗱 ॥ जनुषमार । (भाष उन्तुः লোহিতঃ শোণিতোত্থো জ্ঞেয়ে ৼ ধুব: সল্বর ভীবু কক্চ।। 🟶 ।। কছ-श्रमार । क्र्या ८ मामा (वन त्मा भी

घ्वया (द्वारणा (द्धयः कह्नः (सूर्यः ना माट। क्र्यांट मनः भर्षाः (भा हः शुाखनाः॥ ॥ जात्र त्रामार । পদ্মাকার• তালু মধ্যে তৃ শোপ• विम्रापुकामबूमि भिक्त निक्। भ-দ্মাকার পদাকর্ণিকা কেশুরৈ রিব शार्थाण मीर्च मा मास्ट्रेंद्र (वंडिजः ॥ 🗱 ॥ भाः ननः घाउँ भारु । पृष्ठेः মা স শুেম্বা নীক্ষঞ্ । তালুভ ছ • भा•म अ•घाठ भार ॥ # ॥ जानू भूश्रु देगार । नीयक् सारी कान-भावः ककाञा। (मरि। युक्तः भूश्र हे खानुप्तरम् ॥ 🗱 ॥ जान्यमायगारु । (भारव। २७)र्थः मीगंऽर७ हानि তালুঃ খাসে৷ বাভাজালু শাষোয মুক্ত: ॥ 🐞 ॥ তালুপাক নাহ। পি-ন্ত স্বৰ্য্যাৎ পাক্ষমত্যৰ্থ ঘোৱে তা লুন্যেন তালু পাক বদন্তি॥ #॥ অথ তাল্রোগাণা• চিকিৎ সা। স্ব-ষ্ঠোষণ বচা সিন্ধু কণা পাঠা প্লবৈ: नह। সক্ষৌদু ভিষজা কার্য্যণ গল भूखी भुवर्षनः ॥ श्लवः (कवहीत्माय গুড়ভচী ইভিচ লোকে।। অঙ্গুঃস্থ निमन्दर्भनाक्ष्र गनभू छिका । ছেদযেমগুলাগ্রেণ জিস্বোপরি ত্ সংস্থিতা ।। মণ্ডলাগেণ শস্ত্রবিশেন ষেণ।। শতিছেদাৎ সুবেশুক্ত• তত্যে 📗

(श्राक्क विद्वार्थ है। इति इहिना छोष-हात्या व्यानामुः ता जुन स्था। ज मार विषर् भुयाद्वन मृष्ठेकचा विणा-त्रमः। गनम् 🍕 ज् निष्का सर्गाए পাও। মিমাং কিয়াং॥ পিপ্সল্যতি-বিষা হ'ঙ বচ। নরিচ নাগরৈ:। ক্ষৌ-पुग्रेकः मलयरेन उठ छा॰ भूठिमाद्र-বেং ৷৷ বচা মতিবিধা পাঠা রাস্না কটুকরোছিণীঃ। নিষ্কাথ্য পিচমর্দ্দঞ্চ কবল• তত্ৰ কারবেৎ।। তুণ্ডিকের্যধূ-ষে কুমে সংঘাতে তালুপুপ্প টে। এষ **७** विश्विः कार्य्या विष्णवः णञ्ज क-মণি।৷ তালু পাকে ত্ কন্তব্য বিধা-ন• পিন্তনাশন•। স্নেহু স্বেদৌ তালু भारव विविकानिल नामनः॥ #॥ । 🗱।। অথ গলরোগা:। তত্র গল-রোগাণা নামানি সংখ্যাঞ্চাহ। রোহিণী পঞ্চধা প্রোক্তা কণ্ঠশাল্ক এব চ। অধিজিল্পশ্চ বলগো ংলাস नारेमकवृन्सकः॥ उउ । वृन्सः भ उपी-**চ गिलायुः क**थेविषु थिः। गलीयः शु-স্বরন্নন্দ মা•সতান স্তথৈব চ।। বি-मात्री कश्चेरम् जुदाना अञ्चाममा স্তাঃ। 🛊 ॥ তত্র পঞ্চানামপি রো-হিণীনা॰ সামান্য সংপ্ৰাপ্তি মাহ। গলে হ্নিলঃ পিত্ত কফৌ চ মূৰ্ছিতৌ भुष्या मा मक छरेथव (मानिङ ।

म्थाःत 🎺 मामाभमारताथकरा प्रशस्तुरेव नि हु हु जून व्याधि यथ हि हो हिनी।। विनः गृहिं उ: भूनृषः। शिवकरको ্চ মূৰ্দ্ধিতা গিৰে বাৰ্ম্ট্ডি ককো वा म्हिंजः। नन् बद्यालि मृहिंजाः ्श्र्यात्रावज्ञामा व्यविवक्रमानवाट ॥ 🗱।। তৃস্য বাত্রজায়। লক্ষণ মাহ । जिस्र। সমন্তা कुन (वरनास्त मा॰ माक्षुद्राः कर्श निरदाश्वनाः मृहः । मा রোহিণী বাত ক্তা পুদিষ্ঠা বাতা-অকোপদুব গাত যুক্ত। ॥ সমস্তাৎ जिल्लायाः मर्वठः। याजायाः कार्यन् ষ গাঢ় যুক্ত। ভাষ্তাদিভি বভিশ্যেন যুক্তা॥ 🗱।। পিত্ত সামাহ। ক্ষিপো-দ্বনাক্ষি পুরিদাহ পাকা তীরুজ্বা পিত্ত নিনিত্ত জাতা। 🗱। শ্লেশ্মজা-गार । (मृाला निःदाधिन) नि मन्त পাকা গুৰী স্থিরা সা কফ সম্ভবা তু_{।।} । সুেতো হত্ত কণ্ঠসোত: ॥ 🕸 ॥ সমিপাতদামাহ। গম্ভীর পাকিন্য নিবাৰ্য্য বীৰ্য্যা ত্ৰিদোষ লিঙ্গা ত্ৰিভ বা ভবেৎ সা॥ #॥ রক্তজামাহ। ন্মেটি শ্চিতা পিত্ত সনান লিঙ্গা লাধ্যা পুদিষ্টা ৰুধিরাত্মিকা তৃ। #। র উল্লেভরা সংস্থারকত্বাবধি নাহ। मर्। खिरि। यङा इष्टि व। श्र कि मगू छ्वा। भक्षाहाधः भि छ म । ज्ञा

'সগুাহাৎ প্রনোপ্রিতা।। # II কণ্ঠ-শালু স্মাহ। কোলাস্থিমাত্র: কফ मञ्जादा रा गृष्टि र्गाल कणेकण्क ভূতঃ। খরঃ স্থিরঃ শক্ত নিপাত সা-ধ্য স্ত॰ কণ্ঠশালুক মিতি বুরন্তি। কণ্টক শুকভূতঃ কণ্টক বছকবছবেদ-नाजनकः ॥ 🗱 ॥ व्यक्षिज्ञञ्जामार । জিস্বাগুরপঃ খযথু: কফাত্র জিস্বো পরিষ্টাদস্কৈব মিশু। ভেরেয়া श्विज्ञिलः थल् (द्वाग अय विवर्क्कायः দাগত পাক মেন• ॥ অসূজা মিশা-(मरवज्रान्यः ॥ 🕸 ॥ वलयमारु । व-লাশএবায়ত মুন্নতঞ্চ শোথা করো-ত্যন্ন গতি॰ নিবার্য্য। ত॰ সর্ব থৈবা-**প্রিবা**র্য্য বীর্য্য বিবর্জ্জনীয় বলগ वरिष्ठि ॥ 🕸 ॥ ञ्लामभारु । गत्न जू भाषः अक् उः भुव्को (भूगानिको খাস ক্জোপপন্ন । মুমাছিদ দ্বর নেতদান্ত রলাস সংক্রি ভিষ্জো विकात ।। मग्रहिष इष्यमर्ग्यन (ছ-(रत्व (वहनाजनकः ।। # ।। এकवृन्त মাহ। বৃংভানতো ২ডঃ শ্বগথু: সদা-হঃ সক্তুরো পাক্য মৃদু র্গুক্ষ । नारेन कवृन्तः भतिकी र्डाटा १८मी वडाः থি বলাশঃ ক্ষতল পুস্তঃ ৷৷ অন্তঃ गनगए। यभाकी देव भाकी। व्यम्भः देवस्यः ॥ अ ॥ त्नरमार ।

ममूबङ वृन्त समन्तराष्ट्रः छीतुब्रुद्रः वृन्त गृहाङ्ब छ। उहानि निज क-তম পুকোপাদ্বিদ্যাৎ সতোদ প বনাত্মকন্ত ॥ 🗱 ॥ শতদ্মীমাহ । বর্ত্তি র্ঘনা কণ্ঠ নিরোধিনীতু চিতাতিমাত্র• পিশিত পুরোহৈ:। অনেকৰক্ প্রাণহরী ত্রিদোষা জ্রেয়া শত্মী সদৃশী শতন্নী ॥ ঘনা কঠিনা। অনে-কৰ্ক বাত পিত্ত কফজ তোদ দাহ कथारि युका। मञ्जी मम्भी लोह কণ্টক সংহল্য শতন্ম মহতী শিলা ভতুল্যা যতঃ প্রাণহরী ॥ 🛊 ॥ গি-नायूमार । गुडि गंत जामनका शि মাত্র: ছিরে। ংল্লকক্ স্যাৎ কফ রক্তম্র্ভি:। সংলক্ষ্যতে সক্ত মিবা-সিতঞ্ সশস্ত্র সাধ্যস্ত গিলাযু সং-क्कः ॥ #॥ गनतिनुधि मारु। मर्बः গল• ব্যাপ্য সমুন্থিতো যঃ শোথো क्कः मञ्जि ह यब मदीः। म मर्द्रान বৈ গল বিদুধিস্ক তদৈয়ৰ তুল্যঃ খলু সর্বল্পা # 11 গলৌঘমাহ 1 শো-থো নহান্ যস্ত গলাবরোধী তীবুজ রো বাযুগতে নিহন্তা। কফেন জাতো ক্ষিরাদিতেন গলে গলৌঘ: পরি-कीर्ल्डाउ श्लो॥ वायूगाञ निरुष्ठा উদান বাযু গতিরোধক: ।। 🕸 ।। 🛪 রম্বাহ। य ভাষ্যমান: স্বসিতি ॥

পুসক্ত ভিদ্ধর: শুশু বিমৃক্ত কঠা। करकान दिश्व श्वनिनायतम् रक्तम महागः स्मना स्वतः॥ जामा खगः भणान् । भूकविनुक्तकशः भूषः বিমুক্তোৎস্বাদীন: কণ্ঠো যস্যসঃ। অ স্বাধীনতা ভুক্ত• গিলিতু মলক্যত্বাৎ । অनिवायत्वयु वायुवर्जाम् अमनार वाजार ॥ 🛊 ॥ मा मजानमाइः। 📆 जानवान्यः चयणुः जुकाक्षे गालाभ রোধ প্রকৃতে ক্রেণ। স মাণ্স ভান: कथिञावनभी भाग भुग्ट मर्बक्रा विकातः ॥ भुजानवान् विखात्रवान् । সুকষ্ট: অভিশ্যিত কষ্ট যত্ৰ সা ।। 🗱 ॥ বিদারীমাহ্ন। সদাহ ভোদণ শ্বযথু সুভামু মন্তৰ্গলে পুতি বিশীণ भाः मः। शिखन विष्ठा हत्त्व विषा-রী পার্শ্ব বিশেষাৎ স ত থেন শে-७ ॥ भारर्थ विश्मवामञ् (यन) শেতে স পুৰুষো ফেন পাৰ্শ্বেন বি-শেষাদ্বাহুল্যেন শেতে তিমান্ পার্থে সা বিদারী ভবতি ইত্যর্থঃ ॥ 🗱 ॥ অথ গলরোগাণা• চিকিৎসা। রো হিণীনান্ত সাধ্যানা হিত শোণিত নোক্ষণ। ব্যন ধ্নপানঞ্ গভূষো नम्र कर्म वा ॥ वाञ्जाख वृत्ञ इत्क **व**वरेनः भुजिमाद्गरायः । मूर्यायान् সেহ গণ্ডুবান্মারবেছাপ্য ভীক্ষাঃ।

मू थात्र/ বিসাব্য পিত্ত সংভ্তাং নিতা কৌদু भिष्मृज्धिः। घर्याय्य क्रीला माका !! পৰ্বধৈঃ কৃথিতৈ হিত্ৰা।। আগার-थ्न करिकः ककका (भुजिनात्राय । জাগারধ্ন: ঝুল ইতি লোকে। कर्वेकानि मुठी भिश्नवी मित्रहानि॥ শ্বেতা বিডফ্ দন্তীযু তৈল সৈৰে . সমৈন্ধব॰। नजाउक गाँगि দাভবা। क বলেচ কফোদযে ৷৷ শ্বেতা অপরা-জিতা।৷ পিত্তবৎ সাধ্যেদৈদেয়া রো-হিণীণ রক্ত সণভবাণ। বিসাব্য ক গ্রশাল্র• সাধ্যেতৃ[©]গুকেরিব**ৎ** ॥ এককাল যবান্ন বা ভূঞ্জীত স্থিপ र ज़**नः।** উপজিল্পকবদ্বাপি সাধ্যে-मधिकिञ्चक ॥ এकवृम्मञ्ज विद्युवर विवि॰ (भाषन माठरङ्गरः । अकवृन्त मिवशुाया वृन्तक अमुभाहरद्र ।। विजायू काशि या वर्रावि एक म ত্ত্রেণ সাধ্যেত। অনুর্যান্ত্ সুসম্পর্ ष्ट्रिंद १ निविष्ट्रिंश ॥ # ॥ अथ गानान। विशेषागाना हिकिए-म। कथेरतारम युम्ह्यारेक छीरेक র্ম্যাদি কমাভিঃ। চিকিৎসক শ্চি কিৎসান্ত জলগোত সমাচরেৎ।। क्षाय पराह पानी विष् निम्न छ। र्का क्लिन्ड । इत्री उकी क्यार्या वा हिला ना कि है में यु है।। करें का

তিবিষা দাফ পাঠা মুস্তা কলিস্ক্কাঃ । গোম্ত্র কৃথিতাঃ পীতাঃ কঠরোগ विनामनाः ॥ मृष्ठीक। कष्ट्रका विशव पादी वुक् जिक्ना घन । शाठी · রসাঞ্জন• দাক তেজোম্বেতি সূচ্র্ণি-उ॰।। कोम् युक्तः विश्वाखवाः गनः রোগে মছৌষশ• ৷ রোগা স্তেতে ত্রয়ঃ প্রোক্তা বাত পিত্ত ককাপহা: ॥ যবাগুর• তেজবতীঞ্চ পাঠা৽ রসাঞ্জ-नः माक निर्माः त्रक्षाः। (कोर्पुः। अः र्य्याट एडिका॰ मृत्थन जा॰ धात्रतगट नर्व गलामरवस् ॥ 🕸 । 🕸 ॥ जाश म-নন্ত মূথরোগাঃ। তত্র তেষা• নিদা-नः नःथ्याकारु । भृथायारित जाया রোগাঃ সমস্ত মূখলা: মৃতা:। তত্র वाञ्चिकमा वक्षाक्षाक् । (मु:रिहे: म-তোদৈ वंদन সমস্তান্ত্রাচিত সর্য সর: সবাতাৎ ॥ 🛊 ॥ পৈত্তিকমাছ । রক্তিঃ সদাহৈঃ পিড?কঃ সূপীতৈ য্ত্রাচিত চাপি স পিত্ত কোপাৎ ॥ 🕸 ॥ रेन्नाच्याकमाञ्च । ञारवहरेनः कः ख्युरेज: मवरेर्गर्यकाहिज हाशि म रेव करकन। अरवहरेन: अवस्वहरेन:। यङ উক্ত সৃশুতেন। অল্পবেদনৈ রিডি ॥ 🗱 ॥ ज्थादारमञ्जाभाभानाङ् । ७४ পুকোপে বর্জ্যাঃ স্যু মাণস রক্ত ত্রি-(मायकाः । म्खर्वरश्चेषु दरक्र) ज्

बिनिश्गिक मोविखी ॥ विनि ॥ क्गिजिः बिर्मायका नाषी । नहाः শৌষিরশচ।। দভেষু চ न निश्रिष्ड न्यावरावन ज्ञनाः। किञ्चातारग यानगञ्ज जान्राजयम् म उथा ॥ य-রয়ে। বলযো वृत्मता वला**णः সহি** দাৰণঃ। গলোঘো মাংসভানক आ তথ্নী রোহিণী গলে ৷৷ অসাধ্যা: কী-র্ত্তিতা হেতে রোগা দশ নবোত্তরাঃ । তেষু চাপি ক্রিযা॰ বৈদ্যঃ পুত্র্যা-थ्याय ममाहरत्र ॥ 🗱 ॥ व्यथ ममस নুথ রোগাণা চিকিৎসা। বাতাৎ সর্বসর চুর্ণি র্লবিণঃ পুতিসারহেৎ। रिजन वाजं श्रेतः मिष्क श्रिज कदन नमुरयाः ॥ 🗱 ॥ शिखाञ्चरक मर्व সরে শুদ্ধ কাষস্য দেহিনঃ। সর্ব পি खरुतः कार्य्या विधि नष्त मी उनः ।। 🗱 ।। পু जिनाद्र । गख्य ध्रा ज শোধনানি চ। কফাজ্যকে সর্গরে ক্রম॰ স্বর্যাৎ ক্ফাপহ•॥ #॥ মুপ পাকে সিরাবেধঃ শিরসম্চ বিরেচ नः। मधु मृज घ्ठ क्रीतिः भी उन्ह करनगुरः ॥ ।। काठी भवा गृजा मुक्ता याम माबी कनदिकः। काथः कोपुरु भीता गख्या गुर्थभाकन्ट ॥ २॥ कार्याक्ष वस्था निजाः बाजीशवमा हर्नगः। क्ः

प्रथाना नीवर व्यक्ष्मितं व्यक्ति कार्राट्या ग्थनाक कि एक क्षित्रका गूनना ন্যতি কোন কৰামু মা-विजी नव केल्ड्रिक .. अ**क्ष**शक्षवकः रमुक्षः कवारया जूथवावरन। ८। ११कः পল্লবন্ধ: ক্বাথ দ্রিফল। সম্ভবো १থ-वा ॥ गृथभाक भूरयाकवाः माको-(मृ। मृथवावत्न । ए। अत्र मः कृथि छ। পার্ব্যা ঘনীভূতো রসক্রিয়া।। সক্ষৌ म्। गूथातागामृश्याय नाजीवृगाशका 191 मश्रह्मानीत भाषान गृष्ठ इ-রীতকী তিক্তকরোহিণীভিঃ॥ যষ্ট্যা-ख ताबक्षम हन्मरेन क दाय नित्र शांकरतः गृथमः । १। ज्ञांकक्रमः धनवरहता इंडि लाकि।। जिना नी-লোৎপল সর্পিঃ শর্করা ক্ষীর নে-व ह। (क्षोमाङ्य निष कन्नम्य ग्रश्या ज्थनाकन्<u>ष्या ५॥ जामा</u>मिना म ক্দপি নৃথগন্ধ সকল নপন্যতি। द्यी अপ्রফলজা পবন নবাধ্যঞ্চ না-শ্বতি ॥৯॥ হরিদা নিম্পতাণি न्यू र॰ भी**ल मूट्शल॰। डिल (म**ि রিপক্তব্য ম্থপাক্ছর পর ।।)০।। য**ষ্টা**নপুপলনেক॰ ত্রি॰শদীলোৎপ-बन्द किवन्द्र। शृङ् छिक्छि शरा विधिक स्थाप । भाषात्र ॥ निर्णि व-मनवर १ अस्योजभाजमा साम

ाधाउ॰। कृत्थर्वज म्यूणां क्रम मूथवामनः शृ मूथमम्भक्तात्क-रमा २ छ १६३१न अड्ना॰ ॥ ১১ ॥ ইতি মুখরোগাধিকার্চ। ইতি ভা- ॥ वभुकाभः॥ #। # (। जाभागः। ज-खूनीयक (गाक्त्र म्न॰ भीउ॰ भ-रयोन्विजः।कामनामिश्रः (भाकः मूथरतागरतः उथा ॥ १२॥ मृहम्म क मुधीना॰ कारता हिक्ल नागत॰। भूइ॰ ठउर्खन॰ मन्तारेखन तारेउ । र्बिभावत्यर ॥ वाधिर्यं कर्गम् नक প্যসূবক কর্ণবা: । প্রণাদস্য रेजनमा क्याः कर्गसाः थिलाः ॥ कि शु विनाम नायाछि मामाकः क् उत्मथत्। कात्रे उन भिनः (मुक्षः न्थ म्डान्याश्रहः ॥ २० ॥ हिन गाक्छ १५४। १२४ वर्षायो ॥ भूथलाक्तः भू॰ भूकतः। इंडि क्रि।-ध्रतः ॥ মুথবল্লভ: পু॰ দাডিনবৃক্ষ:। ইতি मद्राला॥ म्थिलुए जि॥ মুখবাচিকা জ্রী অবস্তা। ইতি রাজ निर्घणः॥ मूथनाम्यः क्ली वक्रमानवाम्यः। वाक ইতি ভাষ।। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।। म्थमा मृत्यम् वामाञ्चा मूथ्याः भुः गञ्ज्यः। ইতি हाः विवक्षः ॥

मुवारः। जद्भर्यायः। **जा**रमारी २ । इञ्जनदः ॥ (६ मूथवाजनविकाः तो। व्यात्मारगुकः कन् त्रारि ता-নোদী ইন্। মুখ বাস্যতি মুখবা जनः नम्द्राप्तिज्ञाहनः। नाना पुत्र রচিত একৈকশ এব বা কপ্রাদি-ভি দু'থোপযোগ্য দুখবাদন ব-টিকাদি রামোদীতি সর্ব**ৰ•। শুভ**• বাসন ইতি পাঠে শূভ মনোহরণ वाननः वारम। यम् (क्लारिः न আনোদীত্যান্থ রিতি সূত্তি: । कीत्रवामिना जुनमाक्वां पि एज् **डे**रयन ইंडेगक्कां कि छजूडेरयन ह श-र्याय **षय भार्थाञः। भद्मा**र्गत्व जू। कञ्जिकाया भारमानः कन् (त गु-थवाननः। वन्राल नाष्ट्र भित्रम শ্চম্পকে সুব্নভি ন্তথা।। গন্ধা 👣 ষষ্টি রপ্যেতে গুণি বৃত্তৌ ত্রিলিক-কা ইতি। ইতি ভরত: ॥ মুথবিলুপ্তিকা জী ছাগী। ইভি শব-त्रज्ञावनी ॥ মুখবিষ্ঠা জ্রী তৈলপাযিকা।যথা। বল্লুলিকা মুখবিধা পরোষ্ঠা তৈল भाषिका। इंडि एस्नहन्तुः॥ मूथमकः पुः पूर्या थः। इति मदाः माना॥

मूथमुब्धः जी वकुल्माधनः। यथा। অভাবে দন্তকাধানা প্রতিসিদ্ধ **दित उथा। अभाः बादम ग**्रीय নু থশুন্ধি রিধীয়তে॥ ইত্যাহ্নিক তত্ত্ত্ ।।

মুখশোধন ক্লী ওচ। ইতি রাজ निर्घक्तः ॥

मूर्थाभाषनः भू॰ करूतमः। ইতি হেম-ठन्दः ॥

মথশোর্ধা পু॰ জন্বীর:।ইতিরাজ-े निर्घण्डः ॥

নুখগীলঃ তি দুনুখঃ।ইতি শব- মুখানয়ঃ প্ মুখরোগঃ।ইতির भाषा॥

म्थमस्रवः भू• द्राञ्चनः। ইতি হেন-ठन्यः ॥

নুথসুর॰ ল্লী তালসুরা।তাডীইতি ভাষা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥

মথসাব: পু॰ লালা।ইতিরাজ-े निर्घण्डः ॥

नुशाबिः शु॰ मावाबिः। यथा। (इमः किनि वरिया काथ मृतासः म्याप्त्वाः ननः। নুখোল। ভ্তসকারী মুখা प्रि **अंत्रयस्रद्रः। ই**তি **भक्ता**णा॥ শবনুখেদত্তবৃহিঃ। ইতি লোকে। শান্তে তু শিরঃস্থানে। যথা। দেবা मानुग्याः मर्खिग्शीदा जू छ्ञाः শন ৷ পৃষ্ঠীত্বা পাণিনা চৈব মজ

मिल्मु ब्रियट II क्वा जू पुरु কর্ম জানতা বাপ্যজানতা। মূত্ কাল বশা পাপ্য নর পঞ্চর ম गठः ॥ धर्माध्यां मनायूकः एक (मार नमानृजः। मह्यः नर्दः बानि निवान् (लाकान् न शह 🧃 এব মূক্তা ভতঃ শীঘু কৃত্বা 🗦 अपिकार । ज्ञामान उथा वि **मितः शामि शुमाभाष्य ॥ ठा**कुः র্ণেষু সংস্থান নেবং ভবতি পুঞ্জি । ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ॥

निर्घणः ॥

মুথাজক: পূ• অর্জন:। ইতিরাজ निर्घक्तः ॥

মুখান্ত্রঃ পু• কর্কুটিঃ।ইতি ত্রিকা শেষঃ !!

মুখোল্লা জ্ঞী দাবানলঃ। ইতি শব माना॥

गृथ्रः शु• शुथमःकन्नः। ইতামরः। যাগাদিযু শাক্তোক্তঃ পূথমঃ ক 🐠 ग्थाः नार । यथा वीशि जि उंज्यादिना उंदक्ष्ठेवाद मुर्थाः मृथाः विकातमः (घडा दिन) हेवाः यः। ইতি उড़ीकायाः ভরত:॥ মুখ্যঃ ত্রি শেষ্টঃ।ইত্যমরঃ॥ गूथा मर्गः भुः सादत्र मृष्टिः। यथ

নুধ্য সর্গ কতুর্পন্ত মুধ্য বৈ স্থাব রা: মৃতাঃ। ইতি বরা মৃশুরাণং ॥ গ্হ: পু॰ দাত্যস্পকী। ইতি ভূরি-প্যোগঃ॥

भ्यागः ॥ जि गृषः ॥ मून्पतः । इंछि विषः ॥ থেবোধ ক্লী বোপদেবক্তব্যাকরণ विष्णवः। यथा। अञ्चलः महिमा-नन्तः भूनिभंडा भूनीय छ। मूध বোধ ব্যাকরণ পরোপক্তযেন-যা।। ইতি তস্যাদ্যশ্লোকঃ ॥ [का जी नागिकाविष्मयः। यथा। बीयालि जिविका। मुका मध्या लुगः লু। চ। ভত্রাস্করিত যৌবনা মুপা। সাচ জ্ঞাত্যৌবনা অজ্ঞাত যৌব-ना ह। रेगव कप्राणा लब्हा ७ य পরাধীন রতি নবোঢা। সৈব জাত পুশ্বা বিশুরনবোটা। অস্যা শেচ-ষ্ট। ক্রিয়ান্ন।হরা। কো**পে মা**র্দ্দ-বং নববিত্ৰণে স্থীহ। চ।। মুখা यथा। चाञ्जाध किन कामान्य ধরণীপালেন কালে শুভে বস্তু বা-স্তবিধি বিধান্যতি তনৌ তাৰণ্য भित्रमः। मृष्टेश **शक्षन हाजु**ती সুথক্চা দৌধাকরী মাধুরী বাচা-किथ व्यानमुद्रु नश्ती नारग्रमा नव्य १७ ॥ 🚜 💎 हा उत्योदना

বধাৰ দীরাতীর মূপাগতা শুবৰ-याः नीति यु ब्रह्मवरगाः लुग्रत्व वर्ष নিদ• কিমৃৎপদ মিডি জ্ঞাভূ• ক-রু ন্যুস্তি। শৈবালান্ত্র শক্ষ্য भाभगथी (बागावनी॰ शाक्षिङ শুভাষীতি মুহুঃ স্থী ম্বিদিত শূোণী ভরা পৃছতি।। 🕸।। জ্ঞাত-বৌৰনা বখাঃ মগন্তু: শস্ত রম্ভোজ লোচনে জুহ পথোধর:। নখেন ক-স্য খন্যস্য চন্দুচ্ডো ভবিব্যতি ॥ 🕸 ॥ নবোঢা যথা। হত্তে বৃতা-পি শবৰে বিনিবেশিতাপি কোডে কৃভাপি যত তে বহিরেব গন্ত । कानीमरह नववध् तथ जन्य वण्या যঃ পারদ• ছির্যিতু: ক্ষুম**ভে** ক-ंद्रिगा 🦚 ॥ দ্বিতীয়া যথা। বলা-মীতা পার্শ্ব মূথ মনুমুখ নৈব জ ক্তে ধুনানা মূৰ্জান কিপ্তি ব-'मन' हू**षन विरधो। इ**.मि. नाुखः इ.खः ক্ষিপতি গমনারোপিত মনা ন-বোঢ়াবোঢ়ার রম্যতি চ সম্বাপ্য-তি চ । 🗱 ।। वि**णुक्त**नरवाछ। यथा । দর মুন্সলিত নেত্র পালি নীবী নি-যমিত বাহু কৃতোৰুযুণ্ম বন্ধ । কর কলিত ছচস্থল নবোঢ়া মুপিতি नगील मूलिंड कम् यूमः॥ 🛊 ॥ ইতি রসমঞ্জরী॥

गूरु **७) कन्नत्व ॥ मस्य ॥ नार्र्व्छ ॥** मू 5 हे ७) हे जि कविकन्नकमः ॥ हो পঞ্চম স্বরিণো। ড মোচতে। ই মু-ঞ্চতে। ড মুঞ্চে। ইতি দুর্গাদাস: মূচ ক মোকে। ইতি কবিকল্লভম:॥ क भाव्याज। साक्ष छा गः। ইতি **पूर्णामाञ**ः॥ 💛

मूठ ते म भ क छ । सारक । इंडि कविकन्नकमः ॥ (माक्त खागः। ১ অমূচে । শ প ঞ মুঞ্চি মুঞ্চে ধন দাতা। বন্ধনরস্থিতীভাবে व्यकर्माका ११ । वानानामूका গন্ধ: কর্ত্তরি ক্তঃ। এবং পাপামুক্ত इंड्यार्ग भाभवस्वामूक रेड्यर्थः । इंडि पूर्गामानः ॥

মুচির: তি দাতা। ইতি ত্রিকাও (णयः॥

মুচির: পু: धर्म:॥ বাযু:॥ দেষতা। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিকৃতি:।। মুচ্জনং: পু॰ পুল্লবৃক্ষবিশেষ:। মে- । নৃঞ্জ: প্॰ ত্ণবিশেষ:। নুঁজ ইতি कम्म इंडि हिन्सी डाया। उ९-भर्यागः। इ अवृक्तः २ विवकः ၁ পুতিবিফুক: ৪। ইতি ভাবপুকাশঃ ।। वरुभू भः ६ मूरलः ७ रु तिवस छः ৭ সুপুল্ল: ৮ অর্ঘ্যার্হ: ১ লক্ষণক: ১০ রক্তপুসুব: ১১। অস্য গুণা:। কটুত্ব। ভিক্তত্ব। ক্রফ বাত না

भिष् । क्षेक्रवष् । षुरम्। स्थाक णगनज्धः जीर्वज्ञत विनाणनज्वः ^१ ইতি রাজনিঘট:।। শির:পীড়া পি ভাসু বিষ নাশিদ্বণাইতি ভাব-পুকাणः ॥ 🗱॥ मान्ताज्तानभूयः हः ইতি শ্ৰীভাগৰত ॥

मृठ्धे जी अङ्गिलाइन । आङ्ग भद्रकान इंडि जाया । यथा । सृह्दी मूत्रही देव खरवस्यु लिप्साहेरन । इंडि नद्रज्ञावनी ॥ मूकिः । मूठी ইতি ভাষা। যথা। সন্পি:ওতাঙ্গু-निः भागि मिष्टि म् स मृत्रे।भा ইতি হেনচন্দঃ॥

মুজ ক) মূজাধুন্যোঃ।ইতিকবিকল্প-मूब है के) क्याः॥ (को शक्ष्यम्बद्धितो। ই ক মূঞ্বতি। ক মোজবৃতি। इंडि मूर्गामामः॥

मुक्षकः भू॰ मुक्षकत्कः। ইতিরাজ-निघकः॥

ভाष।। তৎপर्यायः। ोञ्जीवृताः খ্যঃ ২ ুাহ্মণ্যঃ ০ তেজনাস্ত্রয়ঃ ৪ वागोबकः ৫ गुञ्जनकः ७ मीबी १ **ए** जिल्लाः ৮ मृतम्लः २ मृष्ट्राः २० मृत्ना ३) वङ्गुकः ३२ ब्राइनः ३० শত্ভক: ১৪। অস্য গুণাঃ। মধু-तद्राभी उद्गा कक शिखकाराय

गुष

नालिष् । शुरुतकाम् (मीकाम् ठ ?লাবনব্ণ।ভ্তনাশিব্ধ ইভিরাজ নিষ্ণী:।। অপিচ। মূঞ্জে। মূঞ্জাত কো বাণ: স্লদর্ভ: সুমেধস: । সুঞ্জ ॥ ছযন্ত মধুর জুবর , শিশির ভথ। ॥ मार ज्ला विमर्भामुम्ब वर्डाः কি রোগজিশাদোষত্র হর ক্ষাঃ নেথলাস্পযুৱাতে।। ইতি ভাব-পুকাশ:।। শর:। ইতি রত্নালা।। উপন্যনকালে মৃত্যু নেথলা ধারণ विधि र्यथा। व्यर्थिन मानवक मा-চাर्य) जि भुरिकियः जित् उ मुक्ष মেখলা পরিধাপযন্ মন্ত্রদ্ব বা চতি। ইতি ভবদেবভটঃ।। ঞ্জকেশী পু• বিষ্ণু:। ইতি **হে**ন ठन्मः ॥ শাল্ক । ইতি শদ **अद्र•** क्री माला।। ঞ্জাতক: পৃ• পুত্রশাকভেদ:। অস্য ख्नाः । भद्र· यामृद्य· । व्याद्य· । পিত্তানিলাপহত্বক । ইতি রাজ-বল্লভ:॥ ট ই নৰ্দ্দে। ইতি কবিকল্পড়মঃ।। **१११** मुक्ता । ३ मुक्ता । मर्प्ता मफ़्ने । ইতি मुर्गामामः ॥ ট কি ক্ষুদি। ইতি কবিকল্লজনঃ॥ कृषि एगे कि वार्षि । कि वार्षि ।

उल्ला निवा। यस मूर्गक सार्छ-जीजि **हवाय्यः** ॥ মুট শি আক্ষেপেচ। ইতি ক্রবিকল্প क्रमः॥ भवर्गाणयामिः। निम्हे जि वाग्री मूरगारे। हकाता मूरि ह । गृहेि बिवा॰ मर्शः य देि र्वाः যুধ:। ইতি দুর্গাদাস:।। मूठे हे ७ शनाया इंडि कविकन्न-क्ष्यः॥ भवर्गाम्यानिः। भक्ष्यस्त्री । ই মৃথ্যতে । ড মৃথ্যত চৌর: ৮ ভि पूर्गामाम⊁॥ মুড ই ছিদি॥ মর্দে। ইতি কবি-कन्नकृतः ॥ शक्षम्यती । हे मूख्राउ । ছেদ ইছ লোমছেদ এব। মুওতি মুগু নাপিতঃ। লোমরহিত ক-রোজীভ্যর্থ:।ইভি দুর্গাদাস:॥ मुफ इ ७ मा। इंडि कविक्क्षकाः ॥ भवर्गत्मयाहिः। भक्षत्रस्त्री। मग्न-মিতি মজ্জধাতো: কে ক্প**ণ ম**ণ জ্জন মিভূৰ্থি:। ই মুগুটে । ড মুগু তে পুস্তরো জলে। চতুর্জন্ত **মা**-र्द्धन इंडि পठिदा मार्द्धन णूषि-রিতি ব্যাখ্যায় মূওতে জলেন গা-ত্র- লোক ইত্যুদাহতবান্। ইতি **पूर्णापामः** ॥ শ পুতিজ্ঞানে। ইতি কবিকল্প-

জনঃ।। শ মুণতি বুত লোক:।

गृह

भूजिनागीगुर्थः । मानिजा ।
इति पूर्णामागः ॥

मूखः ही निजः। इति नगःमकेनिस्मानुष्ट् समजः ॥ दान् । ॥ सुन् ।

यगः। इति जानिर्याणः ॥ जाल्गुरः

गुन्धः भूः रिन्डावित्मयः ॥ जाल्गुरः

गुन्धः भः रिन्डावित्मयः ॥ इति

स्मान्धः ॥ इति

মুও: পু প্লী মৃজা। ইতি মেদিনী ।।
মুও: ত্রি মাওজা ইত্যমর: ।। দ্বে
মুওত মুওে। মুডি খণ্ডনে ভাবে
যঞ্জি মুওন কেশাপন্যন
তদ্মোগাৎ অর্শ আদ্যতি মুও:
পুমান জিয়া মুওন। ইত্যমর টা
কায়া ভরত: ।।

শুওক শ্লী মন্তক। ইতিহেমচন্দু:॥ মুওক পু মাগিত:। ইতি হেম চন্দু:॥

मुख्ठनकः भु कनागः। ইভি রাজ নির্ঘণী:॥

मुखन की किनाइनन । उर्भग्रायः

1 ज्रुकद्र १ २ वर्गन । अपित्र वर्गन ।

8 क्लोद । दे जि स्मिन नुः ॥

मुख्य न । अपि मुख्य न । विकास नुः । यथा

1 ज्या मुख्य न । कि विश्वासिक

श्रिया २ शिहा है जिन्म द्र ज़ावनी ॥

मुख्णानिः मृथनकः र निःण्कः । शर्यप्रस्थाः मृथनकः र निःण्कः । स्रणक्रः ८। स्रण्याः । जिल्लाः नाणिष् । स्रश्रास्त्र । प्रस्तु हत्। किकात्रिष् । तिशनष् । श्रश्राष्ट्र । किकात्रिष् । तिशनष् । श्रश्राष्ट्र । स्राजनिर्द्र ।।

মুখা জী ন্থীরিকা। ইভিনেদিনী ॥ মুখিতাজী। ইভ্যমরটীকাষা - ভরতঃ॥

मुखार्था। जी महामाविश्वा। ইজি त्राविश्विः॥

मृशायम॰ क्री लाइ॰। ইতি काळा नियंग्टेः॥

মুখিত কী লোহণ ইতি রাজ নির্ঘটঃ ॥ বাপিতসুখে জি। ইত: মরঃ॥

মুণ্ডিতিকা জী বৃক্ষবিশেষ:। মুণ্ডীরি ইঙি ভাষা। তৎপর্য্যায়:। অল-সুষা ২ শুবেণী ১ পলস্কসা ৪ কদর পূল্লা ৫ শুবেণা ৬ ভূতদ্বী ৬ ক্ষেত্র ৮ অকণা ৯। ইতি রত্ত্বমালা ॥ মুণ্ডী প্ নালিত:। ইত্যনর:॥ মুণ্ডীরিকা জী মুণ্ডিতিকা। ইভি জটাধর:॥

ग् छी वृष्टिनात्मोवषः। ইতি त

নুর া হয়। ইত্যমর; ক সংগ্রেগ। ইতিকবিকল্পজ্ম:॥ াক লোধযতি ঘৃতেনারণ লোক:।

इंडि पूर्गामा अः।

भन कि ए इर्ष। ই जिकविकन्न क्रमः
। इर्ष क्रिल्डा ८ माइः। कि मुनि। उ। ९ खि। ए भागर उ १ नी। ই जि
मृगीमामः॥

श्री इर्यः। यथा। मुथ मानन्त्यूः ग्री। इंडि नेप्तव्यावनी ॥

তঃ ত্রি সাননির । যথা।
আর্ত্রার্ত্তে মদিতা হঙে প্রোধিতে
মলিনা কৃশা। মৃতে মির্যেত যা পত্যো সাধীক্তেবা পতিবৃতা॥ ইতি
শুদ্ধিতত্ত্ব॰ ॥ আলিঙ্গনিবশেষ: ।
তস্য লক্ষণ যথা। নাধিক্যা নায়কস্য বানপার্শ্বে উষিত্বা বামপাদে তস্যোক্ষ্ব মধ্যে স্থাপিব্বা
উত্তো নিলিত্বা যদবস্থান । ইতি
কামশান্ত্রণ ॥

ूर्ण्टिं की मूना। इर्थः। ইত্যমর-টীকাষা মথুরেশ:॥

्रितः भू॰ (मघः। ইত্যমরः॥ कागूकः। ইতি মেদিনী॥ (छकः।
ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ॥
गूजः भू॰ পক্ষিবিশেষः। তৎপর্য্যা
यः। জল্বাযসঃ২! ইতি হেনচন্দুঃ

মুদ্রপ

॥ শনীধান্যভেদঃ। মুগ ইতি ভাষা । उट्भर्यायः। ज्भरम् कः २ वर्गार्रः ৩ রসোত্তম: ৪ ভুক্তিপুদ: ৫ হযা-নন্দ: ৬ সুফল: ৭ বাজিভোজন: ৮ । यम् छनाः। कषायदः । मधुतदः । কফ পিত্তাসুজিত্ত্ব । লঘুত্ব । গাু-हिन्। भी उन्। भारक कर्तृन्। **চ**क्षुष्ठपुर । नाजिदाज्ञ पुर्व ॥ जः म्य्यखगाः। शिखम्यार्जिममनष् । লঘ্র-। সন্তাপহারিত্র-। অরোচ-কনাশিত্ব। তৎ সৈদ্ধব্যুক্তঞ্চেৎ রক্তপুসাদনত্ব• ৷ সর্বক্জাপহারি-पुष्कः। ইতি द्राञ्जनिर्घण्टः ॥ यशिहः। क्कद्रशा यापृद्रशा व्यक्तानिवद्रशा জুরমুত্বক। ইতি ভাবপুকাশঃ।।।।।।। वनमूत्रखनाः । मूक्षक्षः मीजला ग्रा-शे क्क शिख बुद्राशश्ः॥ ७ वि-শেষা যথা। পুধানা হরিতা তত্ত্র वनाम्हास मृह्वर । क्षमृह्वा महा-মুদ্ধা গৌরা হরিত পীতকা:।। শ্বে-ত। त्रकाफ निर्षिष्ठ। लघवः भूर्व পূর্বব । ইতি রাজবল্লভ:।।

मूज्ञभगे जी वनमृज्ञः। मूगानी इंडि ভाषा। उट भर्यश्रयः। काकमृज्ञा २ महा ०। इंडिअनदः।। क्रूम्महा ८ मिथी ६ नार्ब्बादगिक्षका ७ वनका १ दिश्गि ৮ हुमा २ मूर्लभगे १०

भ्रतिक्वा ३३ (काशिना ३२ वरना ख्ता १० वनमूना १८ जात्रगुम्ना २६ वन्। १५। **छ** द्रक्किका **छा**त्न कन्न क्षिका इंडिंচ **পा**र्टः । यम्रा खनाः । হিমত্ব । কাস বাত ব্লক্ত ক্ষয পিত্ত দাহ জুর নাশিত্ব। চক্ষ্-ব্যত্ত্ব• । শুক্রবৃদ্ধিকারিত্ত্প । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। অপিচ। নুদ্রপণী काकभरी मूर्भभर्गालभर्गिका। का-কমুদ্ধা চ সা প্রোক্তা তথা মার্জ্জার-গন্ধিকা।। মুদ্দপণী ছিমা কাঁক্ষা তি का यापूष्ठ मुकला। ठक्ष्या क्य শোথয়ী গুাহিণী জুর দাহ ন্থ।। भारवयर्ती लघी गुरुगारणा २ जि সার্হ্ৎ। ইতি ভাবপুকাশ:॥ মুদ্ধভক্ পু• ঘেটেকঃ। ইতি ছটা ध्यः ॥ নুদ্ধভোগ্রী অখঃ। ইতি রাজ পু• নির্ঘণ্টঃ ॥

मृत्तानकः शुः गानकितिल्यः।

गिकित्त इकि ভाषा। यथा। महा

नाः शृगीः सम्ग्रिश्वालयिष्टिण्याः

शृगा। केते इस् स्उत्माक्षः यर्थातः

स्वाराखकः॥ शृगमी स्वीज्ञाः

शृक्तिल्य व्याद्वानित्रा सम्भिक्षः

विम्हत ख्याखान् मृत्वान् समृक्षाद्वः

।। सिकाभाकन संर्याक्षः स्वार्

युक्तिं (भारकान् । स्न १ खनाः । नयु गा ही जित्नियमः सामूः भीका-कित्रुमः । ठक्क्रा ज्ञाह्र वन् । स्वर्भागा मृह्यामकः ॥ इति स्वर-भुकामः ॥

मुप्तव॰ क्ली मिल्लकार्ज्यनः॥ व्याष्ट्रीपि-ভেদনে পু॰। ইতি মেদিনী।। युन्नतः श्र॰ कर्यात्रवृक्षः ।। श्रुञ्जवृक्षः-विष्णयः। ७८ शर्यत्रायः। गन्न नातः সপ্তপণ্ৰ:২ অভিগন্ধ: ৩ গন্ধৱালঃ ৪ বিটপুৰ: ৫ পূৰ: ৬ জন্তে: ৭ म्राष्ट्रः ৮। अमा खनाः। मधुत्रवः। শীতত্ত্ব•। সুরভিত্ত্ব•। সৌথ্যদায-कवु । माना कका विषु । मधुशाननर কারিত্ব। পিত্তপুকোপ নাশিত্বঞ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ৠ॥ অস্ত্রবিশে-यः। गृथ्त इंठि ভाষा। उ**ৎপ**र्यऽ।-यः। क्ष्याः २ घनः ७। इंज्यानद्रः॥ ব্রুঘনঃ ৪। ইতি ভরত: ॥ নুগুরঃ কোরকাস্ত্রযোঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।। মুদ্বকঃ शू॰ क्यादः। कामदाञ्च। **ইতি ভাষা। ইতি ব্লাজনির্ঘণ্টঃ ।।** মূদল ল্লী রোহিষতৃণ । ইতি রাজ-निघंकः ॥

মুদ্দলঃ পৃ• হর্যস্থরাজপুঞা। যথা। সৃশান্তঃ পুক্জানঃ ত্যাচ্চ্যঃ ত-তক্ষ হ্যাম্যঃ হয্যস্থানুদ্দল স্প্রয शृहिषु यवीनत का निष्णु भुष्ठाः।
भक्षाना भिष्णु भिष्ठाः।
भक्षाना भिष्ठाः विषयागाः तकः
गायान भिष्ठा हेि भक्षानाः । हेि
विष्णु त्रापः ८ व्यापः १० व्यापः
।। गायकात्रकम् निविष्णयः। उन्।
ভार्या हेन्द्रमना। हेि भतागः।।
भूष्रेः भुः बनमू हः। हेि णप्तञ्जा।
वनी ।।

মুদ্গপ্তকঃ প॰ বনমৃদঃ। ইত্যমর: ॥ মুদ্দাপুবিটঃ পু॰ বটকবিশেষঃ। আদা-

বডা ইতি ভাষা। যথা। মৃদ্ধপিষ্ঠী ·বিরচিতান্ বটকা॰ ৈডল পাচিতান্ । হথেন চ্ণ্যেৎ সন্তক্ত সাংক্রে विनिःक्षिर्पर ॥ ७४॰ स्ट्रिम् क॰ স্ক্ষণ মরিচ॰ জীরক। তথা। নিষ্র-ज· यवानीक युक्ताजर्ब· विनिम्राय ॥ मृत्रभिष्ठी॰ भटिए मन्दरक् छान्। নস্বারকোপরি। তস্যাস্ত গোলক• व्यर्गा खन्ना (४) भूत्र १ कि (१९८ ॥ रै उर्ज जान् (गानकान् शकु। कृ शि **তाया॰ निमङ्क्र्यट्। (शालकाः शा**-টকৈঃ প্রোক্তা স্তেত্বাদু কবটা অপি ।। অস্য গুণাঃ। মুদ্ধাদু কবট। কচ্যা লঘবো বলকারকাঃ। দীপনা ন্তর্প ণা: পথ্যা ব্রিদোষেষু পুপুজিতা:।। ইতি ভাবপুকাশঃ॥

জ্রী পুত্যয়কারিণী। নামের-মোহর ইতি ভাষা। ইতি ত্রি-का अरमयः॥ अङ्गु निमू पू । ছारभः রআফুটী ইতি ভাষা। ইতি শব্দ-त्रज्ञावनी ॥ **च**र्गत्रोभग्रामिमू प्रिका চ। মোহর টাকা ইত্যাদি ভাষা। ইতি লোকপুসিদ্ধি:।। 🗱।। পঞ্চধা লিপ্যন্তর্গত লিপিবিশেষঃ।ছাপা-র অক্ষর ইতি ভাষা। যথা। মূদুা-বিপি: শিল্প লিপি লেখিনি-সম্ভবা। গুণ্ডিকা ঘুণ সম্ভূতা লি-প্ৰয়ং পঞ্ধা সূত্ৰাঃ 🛭 এতাভি লিপিভি ব্যাপ্তা ধরিত্রী শুভদা হ-র। ইতি বারাহীতন্ত্র•।। লেখ-ন্যা লিখিত বিশৈ মূদ্যভি রক্ষি-७३१ यट । लिल्लामि निर्मिठ यह পাঠ্য ধার্য্যঞ্চ সর্বদা।। ইত্তি খন্ন-गानाउख•॥ 🗱॥ शक्ष्मकाताः ः গ্ত ভুষ্টদুব্যবিশেষঃ। যথা। পৃথুকা ख धुना जुड़े। (गाध्म हनका प्यः। তস্যনাম ভবেদেবি মৃদ্য মুক্তি পু-मायिनी ॥ इंजि निर्वागण्य ১১ পটল:।। তস্যাঃ শোধন বথা। ওঁ তদ্বিষাঃ পর্মণ পদ্ণ সদাপ-শ্যন্তি শ্রয়ঃ দিবীব চক্ষুরা তত।। ওঁ তদ্বি শাুসো বিপন্যবো জাগ্বা --স: সনিক্ষতে বিষ্ণো র্যথ পর্মণ

পদ । ইতি মন্ত্রাভ্যাণ শোধন । ইতি শ্বতত্ত্বতন্ত্র ।। #।। শরীরে ধার্য্য ভगवनागृथानि हिङ्का । **हान इं**डि ভাষা। যথা। ততো নারাযণী মুদ্রা॰ ধার্থেৎ প্রীত্তে হরে:। মৎস্য কু यां हि विद्वानि ठका ही न ता यूथा नि ठ ।। 🗱 !। অথ নু দাধারণ নিত্যতা স্তৌ । অঙ্কিত: শঃ চকাভ্যা মুভযো র্বা-च्म्लायाः। जमहायक्तिः निज्रः नाः न्या भूजन ज्य ।। जातिभूद्रात्। শাল্প চকোদ্ধ্ব পুণ্ডাদি রহিত • ব্রাহ্ম ণাধন। গর্ভন্ত সমারোপ্য রাজা बाब्राट भुवामत्यट ॥ भाकाफ ভগবদুক্তৌ। সর্ব কর্মাধিকার मह मू চীনানেব চোদিত:। শুচিত্বঞ্চ বিজা-नीपाद्यशीयायुथ शाद्यभाट ॥ भारत्य চোত্তরথণ্ডে। শন্ত্র চক্রাদিভি শ্চিহৈ र्विभुः भिष्ठिम इति:। त्रिष्ठः नर्व थार्या छाः शुष्ट्राको नत्रकः वाद्यस् ॥ শ্রুতৌ চ যজুঃ কঠশাখাযা•। ধৃত্যে-জ্পুণ্ড: কৃত চক্রধারী বিষ্ণু পরণ ধ্যায়তি যো মহাত্ম।। স্বরেণ মক্তে-ণ সদা হৃদি স্থিত পরাৎপর যদ্ম-হতো নহান্ত ।। অথর্বণিচ। এভি-ব্য নুক্জনস্য চিহৈ রন্ধিতা লো-কে সুভগা ভবেম:। তদ্বিষ্ণা: পর-मः भरः य भह्छि वाक्षित्रा ইज्जा-

मि ।। इन्हें पूज्य युक्त भूताता। क्कायू शास्त्रिष्ठ॰ पृष्ट्री मधान॰ न करवाि यः **षारणादार्जिङ भूग्रक्षाक्**वारया**भ**-शहि ।। #॥ व्यथं मुम्भातन माहा-वारः। काल्म ज्यानिश्वमात्र मार्कः ণ্ডেয সম্বাদে। যো বিফুভক্তো বি-প্রেন্দু শন্ত্র চক্রাদি চিহ্নিভ:। স বা-তি विकृत्वाकः रेव मारु भूवय वर्किः ত ।। তবৈবান্য । नावायगायूरि নিভ্যুণ চিহ্নিভ যস্য বিগ্রহণ। পাপ কোটি পুযুক্তম্য তস্য কিং জক্তে যম: ॥ শঙ্খোদ্ধারে তৃ যৎপোক্ত• ব-সতা॰ वर्षकाढि ভि:। उৎ कृतः नि-থিতে শাহ্ব পুত্যহ• দক্ষিণে ভুজে । ৷ यटकल भू इदि निज्य भू अदीकाक দর্শন। শহ্বোপরি কৃতে পদ্মে তৎ-कनः भगवाश्रुवार ॥ वाम ज्र গদা যস্য লিখিতাদৃশ্যতে কলৌ। गराध्या गयाभूगाः भुजारः उमा যছতি ৷৷ যচানন্দপুরে প্রোক্ত চক্র-यामि मगीभठः। गमाया विथिত চক্তে তৎফল क्ष्यम्भात ॥ 🗐 ७११-वनुरको ह । यः भूनः किन कारन जू मर्भुती मसुराः गृहः। मर्भः क्-र्यानिक विद्र गृशिदा अक्छ नदः ।। (रह उम्र भूविरहे। इ॰ कान्छ ত্রিদশোত্তমাঃ। তস্য মে নাভর•

ि विट कर्जवा (ग्य हे हेनु । मना यातात्र विद्वानि मृण्यास्य येगी विगुरस িত্যে নর্ত্যে ন বিজ্ঞেয়ঃ স নুন হা মকী ভন্: ।। পাপ সুকৃত ৰপত काराउ उन्। पिर्नः। नमाग्यानि বস্যাহ্বে লিখিতানি কলৌ যুগে।। উভাভ্য মপি চিহ্নাভ্যা থাকি (छ। मम् पूर्व। । कूर्ययानि चकः তজে। নিক্ষিপ্ত• তস্য বিশুহে ॥ শ বুঞ্চ পদাঞ্চ পদা বথাক নে স্থা কূর্মণ রচিত। স্ব দেছে। করোতি নি: ্য• সুকৃতস্য বৃদ্ধি• পাপক্ষয•জন্ম াতাৰ্জিতস্যা। তবৈৰ 🗐 বুন্ধনার। न **मदारत । कृष्य भ**वनात्र कवहर हू ের্দ্যে দেব দানবৈঃ। অধ্যঞ্ সর ্তানা শভূণা রক্ষা নপি 🛚। : সরস্বতী দুর্গা সাবিত্রী হর-্লভা। নিত্যু•তস্য ব্সেদ্দেহে যস্য ्रज्ञाक्षिठा ठनूः ॥ गङ्गा गरा **ञ**ङ् । চত্র• পুযাগ• পুষরাদি চ। নিত্য• ্ষ্য সদা তিষ্ঠেত্মস্য পদ্মাঙ্কিত• भुः ॥ यम् । कोत्नामकी विश्र • जू র বাথ কলিপুিব। পুত্যহ• তত্ত ष्ठेरवडा गक्षामागत्र मक्ष्यः॥ मरवड ারে গদাধস্তাদুথাঙ্গ• তিষ্ঠতে যদি। ্ষেন সহিত তত্ত্ব বৈলোক্য স ेत्राव्तः॥ वर्याः यु खर्याः (एवा वि-

एका खीनि भरानि ह। निवनिष्ठ नः मा जमा यमा (मर्ट्स मूमर्भनः ॥ किन्छ । कृष्णायुवाव्हिजा नुमु। यम्। नात्राय-भी करत । উष्कृ लाकाधिकात्री ह म-জ্ঞেব জ্ঞিদশাণ পতিঃ।। কৃষ্ণমু দু পুरुक्त रिष्वः भिकाः करतानि यः। নিত্য নৈমিত্তিক কাম্য প্ত্যুহঞা 🅶 य॰ ভবেৎ ।। পীড়যন্তি ন ভবৈর পুহা স্কাণি রাশ্যঃ। অপ্তাক্ষরা-किंठा मूम्। यम्। धान्यगी करत्।। वाबारः श्रीमन समारतात्को। कृष्ण য়ধাঙ্কিত দেহ গোপীচন্দন নৃৎ্-त्रुया । भुयागाहियु जीर्थियु न गद्धा-কি॰ করিষ্যতি ॥ যদা যস্য পুপ-শ্যেত দেহ• শন্ত্রাদি চিহ্নিত•। তদা তদা জগৎস্বামী তুপ্টো হরতি পা-তক•।। ভবতে যস্য দেহে তু অহো-त्राजः दिस्न दिस्त। मध्य ठक शदा शः দ্ম॰ লিখিত॰ সো ২চ্যুতঃ স্বয়॰।। नात्रायभागृरेष यू कि॰ कृषाञ्चान॰ क॰ लो गुरम। व्यक्त भूगा क्यांनि स-**क्**नुगानि जम्र रि ॥ मद्याहिनाह्यिः তো ভক্ত্যা শাুদ্ধ• यः সক্তে দ্বি ঃ। বিবি হীনন্ত সংগূর্ণ পিতৃণান্ত গ্যা-नगः ॥ यथाञ्च ५५८७ कक्षः वागूना পেরিতো ভূ**শ**। তথা দহুরি পা-शानि मुद्दे। क्षागूवानि देव ।। तुरस्तर

ोतुका नात्रप मचारमा विकृतामा किः তা শু দু মন্তাক্ষর সমন্বি হা । শান্ত্রা-िकार्रेक्ष यूका· अर्गक्रामयी मिला ॥ थएड जागदाजा यस किनाना বিশেষ তঃ। পু হ্রাদস্য সমো জ্রেযো নান্যথা কলিবল্লভ ৷৷ কিঞ্চ : শন্ত্ৰা-ষ্কিত তনু বিপ্রো ভুঙ্কে যস্য চ বেশ্ম-নি ৷ তদ্ম স্বয়মশাতি পিতৃভিঃ স্ হ কেশব:।। ক্ফাযুধাঙ্কিতো যস্ত শ্মশানে গ্রিষতে যদি। পুষাগে যা গ তিঃ প্রোক্তা সা গতি স্তস্য নারদ।। क्षागूरियः कलोनिज्यः मिख्यः यम्य বিগুহ•। তত্তাশুৰ• পুন্দৰ্ম নি বিবুধা वामवापयः ॥ यः करत्राजि इरद्रः পুরা• কৃঞ্চ শস্ত্রান্ধিতো নরঃ। অপ রাধ সহসাণি নিত্যু হরতি কেশবঃ ॥ कृत्वा काश्वनयः विद्यः कृष्णरेदास চিহ্নিত । বো হু ক্ষণতি ঢাজান ७८ माना नासि रिक्षतः॥ भाषा প্রিত বৃত্তিয় নান্তিকালাপ পাত **কৈঃ। নলিপ্য**ভে কলিকৃতিঃ কৃষ্ণশ জ্ঞান্ধিতো নর:।। কিঞ্চ। অপ্ত। ফরা-क्किंडा मुप्ता यम् । भाजपथी जत्य । শঙ্গ পদাদিতি যুক্তা পুজ্যতে ংসৌ जुब्राज्दिः ॥ धृजा नादायगीनू म्। जुः ङ्गारमन भूदा क् जा। वि जीवरान विन ना दुःदन ह स्ट्रिन ह ॥ नाकाङ्ना ||

गुप

मनी(यूग्र मार्कछ अनुरेश वि किः। महाँ नि विद्धितः भारत र्गरंश कृषा কলিপূষ।। আরাধ্য কেশবাৎ পু। क्षः भगोहिल कवाः नहर । किन्छ । शाशीहन्त्व ! मृष्याया विश्वः যস্য বিণুহে। শঙ্গ পদ্মাদি চক্র॰ বা তস্য দেহে বসেদ্ধ রি: ৷৷ তবৈৰ গ্রী-अन्द्रभाद्गात्को। यम् नाद्रायनी মৃদ্যু দেহ• শঙ্কাদি চিক্লিড•। ধাত্রী क्ल क्ञा बाला जनमोकाष्ठ मञ्जदा । ছাংশাক্ষর মজৈস্ত নিয্কানি ক-ल्वादा ॥ व्याग्यानि ह विभुन्। मर-नमः न ह रेवक्षयः । किक्ष । युन्र ना-রাযণী মৃদুা দেহে শন্ত্রাদি চিক্লিডা । मद्दाक् हिङ्कि उ॰ यम्। महि मी-त्रायशास्त्रदेश ॥ शुरवामा नास्त्रि शाः প্রস্য ক্রচ ওস্য বৈষ্ণব । অন্যত্রচ । এ 🤊 जा मबरेज किरेक्स: कलिका-**लि विजाउयः। ভবঙ্কি মর্ত্যলোকে** তে শাপানুগৃহ কারকা: ॥ 🛊 ॥ অথ মুদ্র ধারণ বিধিঃ।গৌতমীযে। ল-वारि ठ गरा कार्या मृष्ट्रि ठाश नातः उथा । नन्तकरिक्षव वृत्रार्थः भञ्ज हकः ভূজ দ্বয়ে । শন্ত্ৰ চক্ৰান্ধিতো বিপু: ন্মশানে মিয়তে যদি। পুষাগে যা-গঙিঃ (পুক্তি৷ সা গতি স্তম্য গৌতন ॥ ठकक मकिए वास्ते नइ वास

ए भ के किता। नहां वार्म श्रुकांध-खाट भू क्कक थात्रुवर्यो पाद्धाः পরি তথা পদা প্নঃ পদাঞ্চ দক্ষি-্ ৷ খ্যু বক্ষসি চাপঞ্চ শর পি-्र भातरवट्या **इंडि भक्षावृशान्त्रा** ट[ा] भात्र(यरिष्ठकारता जनः। म**्न)क** দক্ষিণে হস্তে কূর্মণ বামকরে তথা।। তথাচোক । দক্ষিণে তু ভু**লে** বিপ্রো विज्यादि जूरमंनः। मट्जाः भग कानरत्रथ ना क्या ना ना उत्थि ।। সাম্পুদাযিক শিপ্তানা মাচারাচ यथा करि। मञ्ज ठकारि ठिङ्कानि म ব্যের্ধ্বার্থে । ভক্তা নিজেপ্ত (विकास क्षेत्र শাস্ত্রী চ ধার্য্যেতে সংমিশাবের কৈ-*****४५ ।। यञ উক্ত• वुक्तरेवदर्ख । रक-বল নােদ্বহেছ্যু মাদৌ চাসুর বিগু হ•। অতশ্চক বিনিশু• ত• বিভ্যা-दिक्थवः जना ॥ श्रीरमाशीवन्त्रत्ते-व • हका भी नि वृत्था २ इ इ • । शा द्वार्यह যনাদৌ তু তপ্তানি কিল তানি হি॥ 🗱 । अथ ठकारीनाः लक्षणानि। हाः म्भाक्षत्रञ्ज यहेरकानः वलय वय मः-যুত। চক্র স্যাদ্কিণাবর্ত্তঃ শাদ্ধ দ্চ ঞিহরে: মৃত: ॥ গদা পদ্মাদিক• লোক সিদ্ধ মেব মত॰ বুধৈং। মৃদু। চ্ ভগवद्यामाञ्चिठा याष्ट्राक्तवानि ভि:।।

ইতি প্রীহ্রভকিবিলাস:।। 🗱 🔃 অभिচ। यथा मुमु। भी उला था। ७था তপ্তান **সংশ্**যঃ। তপ্তাবা: শীতলা-याक विरन्धित देनव वर्न्ड ॥ नाम চিহ্নাদিনা দেছে বহিনা বা মৃদান্তন° । সা দীক্ষাপ্রোচ্যতে ভূপ বাহ্যানা॰ द्धानिना निमा रिवकरेव विक्**छ**न क तुम्मिरा (विम्लावर्गः। मन्नार्गः। সতিকা মুদুা গোপীচন্দ্ৰ সংযুতা।। रेजि नात्ररभक्षतावः । हिक्कनाया-करेत्र गांव मकत्यहब्दनाहिना । गः লোক পাবনো ভূৱা বিফুলোক ম-ৰাপ্নথাৎ ॥ অগ্নিতণ্ডেন চক্ৰেণ ব্ৰা-ऋता वाङ् मृत्रायाः। अक्षियु ज-পেমজ সারামোক মাপু যাৎ ।। ইতি পদাপুরাণ ।। তন্মানা চান্ধি-ত সর্ব বসন ভালনাদিক। ইতি হারীত মৃতি:।। 🕸 । 🗱 ॥ দেবতা-বিশেষপ্রীভিজনিকাঞ্লারচনা यथा। मृमाभम्युरभि जिमाह उत्ख । (नामनार अर्बापनानान मानगर পাপসন্ততে:। তমাদ্মদুভি সা খ্যাতা সর্বকামার্থ সাধনী । অথ मूपुः भुवक्तामि मर्वछत्वयू किन्न-তা:। যাভি বিরচিতাভিশ্চ মো-म् अञ्च (म्वजाः ॥ जाई(न क्रम काल ह थान कान्। ह क्यानि।

मूम् 🤚

चात्न हावाह्त माञ्च भुजिश्वायाक त्रक्राण ।। रेनावास्त्र ह ख्यानाव छ-ত্তৎ কল্প পুকাশিতে। স্থানে মুদুাঃ পুদুষ্টব্যाः स स लक्षण लक्षिणाः॥ व्यावाहनामिका मुम्। नव नाथाइना মতা:। তথা বডক মুদাশ্চ সর্ব-মস্তেষ্ যোজ্যেৎ।। একোনবি॰শতি মুদা বিষণে ৰুক্তা নণীবিভিঃ। শঃ চক্ৰ গদ্য পদ্ম বেণু শ্ৰীবৎস কৌস্ত **जाः ॥ वनमाना जथा** ज्ञान मूना विनुष्ट्या उथा। गरू डाथ्रा भना मू मा विष्णाः माखाय विर्कानी ॥ नात-সি-ছী চ বারাছী ছাযগুীবী ধনু স্ত থা। বাণমু দা ততঃ পরশু র্জ্জগমো হনিকাপরা ৷৷ কামমূদু৷ পরাখ্যাতা मिवमा ममगू प्रिकाः। विक यानि बिम्लाथा गालक्षां ग्राञ्याः ॥ थहाका ह क्लानाथा उनकः भिव (ভाषपा: । সूर्यंद्रेमद्रेकव शः দ্মাখ্যা সপ্তমূদা গণেশিতু: !! দন্ত भागासूमा विश्व भद्रम् वसुक म॰ জ্ঞিতা। বীজপ্রাস্থামূদা বিজ্ঞে या विव भूकत्न।। भागास्तृग वहाजी-তি थङ्ग हर्म्य थनुः भद्राः । सोवली मृद्का होगी मृदाः गाकः श्रिवकः ताः ॥ लक्षी मुमुहर्तन लक्ष्या वाया निन्। क भूबत्। यक्षमाना उथा

वीभ वगुरा भूखक मिकाः॥ मह किर्विष्या मूना विख्छिया विङ् প্রনে। মৎস্য मृ मु চ क्र्याच्यु लिलिहा मुख म॰ জिका ॥ महारया-নি রিতি খ্যাড়া সর্ব সিদ্ধি সন্দ্রি-मा नकाईत महायानिः नामा प्तो मुख मूप्तिका !! मदमा कूर्म (म· विविश्या गुमा माधात्री मछा। তারার্চনে বিশেষাস্ত কথ্যন্তে পঞ্ मूम्काः॥ यानिक ज्जिनी हेव वी-बाथा। रेमञाय्मिनी। लिलिहास-তি সংশো্জাঃ পঞ্চ মু দুাঃ পুকাশি-তাঃ॥ দশকা নৃদ্ধি। জ্বেষা ব্রিপুরা-याः भुभूकत्। मःकाञ पुावनाकर्य वामात्रामार महाख्नाः ॥ (थ्वती वीज यान्याय्या विथ्या शतिकीर्छ-তা:। সম্ভ নু দু।ভিসেকে স্যাৎপদ্ম मू मात्रान उथा ॥ कालकरी शुर्या-क्रवता विष् भूषम कर्माण। गानिनी ह भूयाळ्या बन्धां वन कर्या । জ্ঞিগোপালার্চনে বেণু নৃহিরে নার-नि॰ हिका। वदा हम् ह भू काया॰ वी-बाङाथा॰ **পু**याज्ञय ॥ इयगीया-इत रेडव इायगुवि। अपमारिय । वानाइत ध्रु र्वान मृत्रु भव्नम् उथा-हंति ॥ भत्र गुत्रायना दिख्छया छग-(माइन मः ब्हिका । वाजूपिवाख्या

न्त्रात वस्त्रम् प् ज्यकारा । महूर्व भा र्थान रेहत भार्थनाथा। भूरपेनाय ॥ 🗱 ॥ উप्प्रमानकमानामा मूह्राष्ट विक्गान/पा श्रुषा छ। मक्ष**वि वस्**वाः ग्रामिका मूल পর্ণে;।। অকুষ্ঠৌ नि-্চপেৎ সেয় মুদা ত্বাবাহনী শতা **्रा व्यक्षामुधी द्वियः (हट म्याट** ाभनी गृष्टिका मृजा ॥ २ ॥ উहि[.] ॥ ाकृष्ठ मूर्छे । ज मः यागार मिथाः ःनी। ७। অञ्चः পুবেশি তাক্ষণ দৈব সংবোধনী মতা।। ৪।। উত্তান মৃত্তি ुगना मःगूथी कद्रगी मजा। ৫। व उर्वा व प्रकाना नहामः महार मकनी कृष्टि: ॥ ७॥ मवर इस क्छा ां है भी घाषामथ उद्धि। अवस् ন মূদুেষ মভিতো ভ্রামিতা মতা । १॥ অন্যোন্যাভিমুখা শ্লিষ্টা কনি-ानामिका भूनः। छोष्य उद्यंनी विश (धन्म मा भुकी खिँठा॥ अमृठी ্রণ ক্র্য্যান্ত্রণ সাধক সন্তন্য: Ibl ন্যান্য গুথিতাক্ধা প্রসারিত প क्लो।। महामूप्य मूरिजा भवमी क्तरण वृरेशः। भुरगाकरणम्मा मूम्। प्रवाञ्चान कर्षांगा 🛪 ॥ 🏶 ॥ दिक्वीनास मूम्। ग कथ्रस वक्-ानाथ। वामाञ्च् ४ छ मःगृश् मिकः ণেন তু মৃষ্টিনা॥ কৃৰোভান• ততো

मूडि मक्रेड भुगात्रायः। नामाक् न्। उथा भिश्वाः मःयुकाः मूाः सु সারিতা: ।। দক্ষিণাসুধ্ব সংস্থা **क्टिंग्या भइमू**प्तिका। ১। इस्लो जू मःभूरथी कृषा ममञ भाषिजाञ्चनी ।। তলাভ মিলিতাকুঠো সূভুগ্নো সূ-भुमाति । किन्धाक्ष्रको नाग्री मुद्रुवा हक म जिल्ला ॥ २॥ व्याना न्यां विमायो राखे कृषा जूग्बिजा-क्नी। अकुला) मध्यम ज्यः म्करः मुभुमातिए ॥ भना मूप्य मूनिछ। वित्यः। माखाय विभिनी । ७। इस्छो ত সংম্থৌ কৃত্বা সমত প্রোথিতাঞ্চু-नी।। তनाञ्च भिनिजाक्र्रहो क्रिव्यो পদ্ম মৃদ্রিকা। ৪। ওঠে বামকরাঙ্কু-ষ্ঠো লগ্ন স্তস্য কৰিষ্ঠিকা ৷৷ দক্ষিণাঙ্গু-क्ष मःयुक्ता ७९ किनिष्ठा भूमाविजा। **जर्जनी मध्यमानामाः किक्षिट मन्द्र**. চ্য চালিভাং॥ বেণু মুদ্যু ভবভ্যেষা जुछछा (भूयजी हरतः। १। व्यानागाना शृष्ठ कद्रया मंध्रमानानिकाकृषी ॥ व्यक्ष्टिन ज् वङ्गीयाट कनिष्ठा मृत न । ভর্জন্যে কারযেদেব। মু-দু। গ্ৰীৰৎস স•জ্ঞিকা॥ ৬॥ অনামা शृष्ठ म॰ वशा पिक्किंगमा किनिष्ठिका। किनिष्ठयान प्रया विष्तृ। जब्जिन । एक्या তथा।। वामानामाक वक्षीयाट मिकः

भाव्रेष्ठ म्लाक । जाव्रुष्ठ मेर्पारम व 💏 🛚 अश्यांका अवनाः भवाः ॥ ठडे 🧖 ২পাদু সংগ্রা মৃদ্যু কৌস্তভ সং 🗯 का। १। न्यूलंट कक्षेति भाषांडे **छक्ति अक्रुष्टरा छन्। ॥ केन्न बर्गर मी**-वावर्भाष्यः वनभाविका १५१ ७ र्द्धन । ब्रुश्ति नकाव गुर्छ। विन्रा न क्षि॥ वामक्खाच्या वाम कान् म् र्जान विन्तरम् । उद्योगमूम् छर्वरम् वा बाबहम्बार्युयमी॥ ३॥ व्यक्ष्रुक्षः वाम मुफ्र ७७ मिज्य क्या बूड (कर्ना-পি ব**দ্ধা ভস্যাগুং শী**ডযিত্বা**লু**লি-ভি রপি চ তা বামহন্তাঙ্গুণীভিঃ। वजा गाए क्ति सामयज् दिनवादी ব্যাহরন্ মারণীজঃ বিল্লাখ্যা মৃদ্ কৈষা স্কুট নিষ্ঠ গদিতা গোপনীয়া विविदेकः ॥ ७०॥ रखो ज् विम्राथी কৃত্বা পুথযিত্বা কনিষ্ঠিকে। মিথ স্ত ৰ্জ্জনিকে ল্লিষ্টে ল্লিষ্টাবস্থান্ত কৌ তথা।। मध्या नामित्क एव जु एवी शकः विव ठानाय । এवा गक्छ मृषु महाहि क्षाः मरकाय विकासी ॥ >> ॥ कान् - মধ্যে করৌ কৃত্বা চিরুকৌষ্টৌ সমাবৃ-ভৌ। হত্তো তু ভূমি সংখ্যা কম্প মান: পুন: পুন:।। নৃথ বিবৃতক স यंतर (निन्धामाध्य किंखिकाः। नः ब्रिनिक्षे खरापया मृद्धां उद् श्री 🗔

राष्ट्री गुर्शा जनवा। जन्म जार कारत उथा हम। किनिश्रक कर मूबी 🥯 नर्वा छ पूर्पुयः 🧚 📜 र्यं जा ॥ ३२ ॥ (रखा भन्नि कन्न- वाम् क्षाजान मक मूबीः। नगरंकि লংপাজ। মুদ্রা বারাহ সংজ্ঞি। भागवा। सक्षरख्याक मूथ यान হস্ত মধোমুখ। অঙ্গুল্যগুদ্ধ সংযুক্ত मु मा वामार म छिका॥ २०॥ वाम-रुष्ठ छला रका अवृषी छाउरशामु খীঃ। সংয়োপ্য মধ্যনা॰ তাস। মুন্ন म्यात्वा विञक्षयः ॥ रुषग्रीव लिया गृपा जगार्ख तनकातिभी। 28। वा-मनः मनःभागुन ७क्तनः श्वान यात्रः (यथ ॥ व्यनाभिकाः कनिष्ठाकः उन्। क्रिन भी ज्या । मर्भारामा मान क क्ष थन् स्र्मुय भी दिला। १८।। प-क्रमृष्ट्रेख ७ ब्लं नता मीर्चिया वाग मू-मिका। ७७। यहा उड़ानार्गत । यथा হস্ত গত চাপ তথা হস্ত প্ৰ প্রিয়ে।। চাপ মুদ্রেয় মাধ্যাতা বাম-হয়ে ব্যবস্থিতা। ১৭। যথা হস্ত গতা বাণা खথা হস্ত । क्य भूषि ॥ বাণমূদেৰ মাখ্যাতা রিপু বৰ্গ নিক্-ন্তনী। ১৮। তলে তলন্ত করযো স্তি-याः मः (याक्य हाम्बीः ॥ मः इताः भूग्जाः सर्गार मृहा भन्न म जिल

का का उहिजान्ध मुडी व मुना रिङ्गाकुरमासिमी ॥ २० ॥ श्रेष्ठी जू मन्त्रुही कृषा शुम्काबू जिल्की उसा ा उर्ल्झरम्हो मध्यमा मृद्धि चक्री मध्य मानिहरो काम मूल्या मूहिरा नर्च ्रित लियकती ॥ २०॥ क ॥ महात्त्व ্রিবাণান্ত ক**ধ্যন্তে লক্ষণান্যধ**্য উ िक मिक्ना मुक्त वामानुष्ठिन विष्ठे-<ा । वामा**ज्ञी पंक्तिगां छ त्रक्** नी जिन्ह विश्वयः । निक्रमूपुर भा-খ্যাভা শিব সামিধ্য কারিণী॥১॥ নিখ: কনিষ্ঠিকে বজ্বা তৰ্জনীভ্যা ম-নানিকে। অনানিকোজ্ব সংশ্লিষ্ট দীৰ্ঘ मध्यानया त्रयः ॥ जाक्षान् ध्या व्या (म)८ (यानि नृषुय भीत्रिका। २। जक्रिंग किनिशास विद्या निश्वाकृति वगः ॥ भुमात्रायः जिम्माथा म्-দুৈবা পরিকীর্ত্তিতা। ৩। অঙ্গুষ্ঠ ত क्तिन्। जु गुथिवाक्त्वि वयः ॥ भुनावर्यस्क्रमाना मृत्युयः भविकी-र्खिज। ८। व्यथः झिटा मक्क्टः পুস্তো বর মৃদ্রিকা।। ৫।। উদ্বিক্ তো বামহন্ত: পুস্তো ২ভয় মুদ্ধিকা । ७। निलिजानाणिकाङ्क भवागा-**ा** नियाद्वाय ॥ निष्ठाक नृश्हित्व वर्ष्याय मृग मूपुर भीतिका। १ । পकाब्रुला प्रक्रिगास विज्ञा 💯 🖁

कु मुम्र कार ११ थोड़ीक मू मूं। विश्राजा শিবস্যাতি প্রিফা মতা। ৮। পাত্রব मान रेडड क्वांत्र यामक उथा।। निकारवाष्ट्रिक वट अर्थेश यू मा का-পালিকী মভা। ৯। মুপ্তিঞ্ শিবি-ना॰ वजा ने नमृहि छ मेर्या ।। म-किना म्क् यूमम् कर्नातम् भुहात-(यट। अवा मुम् । उसकका नई विश विमाणिनी।। ३०।। इत। छथा गराण मू माना मूह्य विक्नानाथ । उडा-नाक् म्थी मध्या मत्रका वक मुष्टिका া দন্ত মূ দু৷ সমাৰ্য্যতা সৰ্বাগম বি-भात्रीयः । २। वान मूर्छन्छ जन्जी **भक्षभूरहेस ७**व्हा नी ।। म रशास्त्राक्ष् क्षेकागुगच्छा॰ जब्हाँनार्ग् सरक क्षि-(१९८ । এवा भागाख्या मुमु। विध-ভি: পরিকীর্ত্তিতা।। ২।। পদ্ধীক ম-थामाः क्वा ७ व्ह मी मथा भवति । ण रवाका अंकारण कि विष्णु देनुवाकः-**म স**'क्रिका॥ १॥ ७ क्विनी मध्ये-मानामा कनिष्ठात्रुष्ठ मू देना। जारवा-मूथी मीर्चक्त्रा मध्या विष मृष्ट्रिका ।। ৪।। পরশু মু দু।৫ নিগদিতা প্রসি-षा ल पुमू कि । ७। वी ज भ् वा ख्या मू-দ্বা পুসিদ্ধত্বাদ্পেক্ষিতা।। ৭।। 🕸 ॥ भाकियोनाक मुमाना कथार वक्क-ानाथ। भागा । कृगर यद्गा भी दिष्ठ

刘明

·धन् बांगाः मगीविजाः॥ ७॥ कनि-क्षानाभित्क विद्या साम्युक्तिय सम्बद्धः । मिड्राक्नी जू भुज्ञ अ भिरहे अह मृष्कि॥१॥वाम इष्ठ॰ उपा विर्यक् कृष्। हिर्व भुनार्यः ह। आद्रक्षिडा क्नी: कर्याहर्म मूपुर मी दिजा।।।। মুপ্তি কৃত্বা তু হস্তাভ্যাণ বামস্যো भित्र पिक्नि । अर्यान्युवन मूर्प्यः अर्वविष् विनामिनी ॥ ॥ मुष्टिः कृषा कत्राज्याक वागरम्यानित मिक्ना । क्षा नित्रनि मःयाङ्गः पूर्गाः मूर्पुय मीत्रिजा।। >०।। #।। ठक मुमा • जथा विद्या मध्याम एक भुनार्येष्ठ । कनि-ষ্ঠিকে তথানীয় তদগ্রে ৎকুষ্ঠকৌ 奪 পেথা লক্ষীমূদ্য পরাজেষা সর্ব স-म्म< भूमायिनी ॥ > ॥ श्रा वीगा वाम न वष्त्र छो कृषा मंद्रशागर हिनः। वी-ণা মুদ্রেয় মাখ্যাতা সরস্বত্যাঃ প্রিয क्रती ॥ 🕽 ॥ वाममृष्टिः बाजिमृशीः क्षा भुखक मृद्धिका। २। एकिनाकृष्ठ **७**ड्यंना क्युवाः भद्राकृतीः ॥ भु भार्य) मः रुखाखाना এया व्याश्रान मू फिरा। १ । श्री द्वाममा मदस्डा जा गुष्र (भूषत्री गजा।। #॥ मनिवन्न श्रिञो कृत्रा शुभृ उ। यु निको करत्रो। कनिष्ठाऋष्ठ गगवा भिविद्यासः भूमा-ब्रद्धः।। मध्जिखाचा मूर्पुयः दिखाः 🍴

नमः शियक्षी । भाका कलिशकु কৌ শক্তো করয়ো রিভরেভর• ॥ উ क नी सर्थानामा मञ्जा जुन व कि छ।। मूर्षमा गाणिमी (भाका শত্রস্পেরি। চালিতা।। 🗱 ॥ एकपू वृष्ठ भन्नाकृष्ठ किछ। रखन्यन जुरी সাবকাশা মেকমৃষ্টি স্ব্যাৎ সা षस मृद्धिका ॥ #॥ मृद्ध्यां तक्षी क् **जाक्री जन्म नार्गु जू विनारम**ा मर्व ब्रकाकबी एक वा पछ मूमा भु-कीर्बिंग॥ #॥ भूम्ञाङ्गृलिको इ-**ভৌমিথ: শ্লিষ্টোচ স**ম্পুথী। স্ব্যাহ **ख ऋराय (मय भू मृ। भू। थ्रायंन मः क्रिः** का।। 🗱 ।। अञ्जनाञ्जलि गृपा मा।-षामुप्तवाञ्चवा हु मा। व्यक्षावृद्गरही क्षा मूख्राः मः नगर्या र्वायाः ॥ তাবেবাভিমুখে স্বৰ্ত্যাৎ মৃদুষা কা-লুকুৰ্ণিকা। 🗱। দক্ষিণা নিবিডা মুপ্তি नामिकार्भिङ ङङ्जिनी।। सूपु। विश्वय न•क्का नहाद विश्ववादिण कार्रिशी । 🕸। মুপ্তি কাদ্ধী ক্তাসুধা দক্ষিণা नार मृष्कि।। ज्ङ्जिनाश्र मःसा-गाम्गु । विनम् मू मिका। #। व्यादा-ग्राथ वागक्र जिला मा रक्षक्र कः॥ किछाञ्चनी बङ्गनी छिः मःगुष् शतिव इंगर । এया मः शत मूम्-म्याट विमक्तिन विरयो म्या ॥ #॥

मक्तानि गृष्ठरमा वामनानि छ-नः नारम् । अकृष्ठी हानस् अ अहरू मृत्पूय॰ मट्महर्काभिनी ॥ 🕸 ॥ ामहरुमा उद्धिनाः मिक्नमा कः िष्ठया। उथा मिक्न उद्धिनाः वाः ाब्रु:श्वन रशकरद्य ॥ छेन्नछः पिक्न-শাস্থৃষ্ঠ বামস্য মধ্যমাদিকাঃ। অ-क्नी (र्याह्नस्थः भूरि मक्कि**ग**न्य कद्र-জ্য চ।। বামস্য পিতৃতীর্থেন মধ্য রানামিকে তথা। অ**ধামূথে চ তে** ं ग्राट मिक्नामा क्रमा हा। क्र्य-क्ष प्रमः सर्गाद एक भाषिक नर्व ভঃ। কৃষ্যমুদ্েয় মাখ্যাতা দেবতা न्त्रान कर्मान ॥ श्रुष्ठ क्वान्ड ॥ 🗱 ॥ थलताकु ४ मृथि छ क्या वाम कर्म ५ ह । मध्यमागुः मिक्ष गम्य जवालयः भुः াত্মতঃ ৷৷ নধ্যমেনাথ তর্জন্যা নচ্ছুষ্ঠা-्गुन (याहरर्ष । पिक्कन॰ (याहर्ष माणि वाममूर्छो जू माधकः।। मर्मारम एकि । जार्ग मूखमुरम्य मूह्य । 🗱।। उर्जनी मथुमानामाः ममः वर গ্যাদপোনুখ । অনানাখা • किल-ছুদ্ধা পজी ক্রা কনিষ্ঠিকা।। লে-लिहा नाम मृतुष की वन्यातम शुकी ৰ্ত্তিতা। ভৰ্জন্যনামিকা মধ্যা কনিষ্ঠা ক্রন যোগত:।। কর্যো র্ফোজ্যত্যের) किनिष्ठा न्वा (यागठः। अञ्चार्गु जू

निःकिन। महायानिः नुकीर्तिजा ॥ 🗱 ॥ जाद्राया (यान)। कि मूमा यथा । যোনিমুদা চ বক্তব্যা ভ্তিনী বক্ত-ব্যা বীৰাখ্যাপি। পরিবর্ত্য করৌ-স্প্টো কনিধাক্ট মধ্যমে। অনামা युगनकाथ खर्जनी युगन॰ भृथक्।। व्यत्तरानरः निविष्ठः वष्ट्वा श्क्षाणु श्नामित्क छछः । मानवध्मतकदा-খ্যা মুদুৰা কথিতা প্ৰিয়ে ॥ অস্যা-ख वन्ननामञ्जी वन्ननामुह्य थुव॰ । #। বকু বিস্তারিত ক্তাপ্রথো बिखाक घावराट ॥ भाग्यं इ॰ मृद्धि यूगन॰ लिनिशानि कीर्जिं । এবা ভারারাখনে হন্যা লেলিহানা वक्त वृत्रा। 🛊। यानि जीवाधद्रः (मन्द्रु र्वसः कृष्टः क्याबिष्टः। वीकानि हाइ-त्रन् मखी मुपुा वन्नन माहत्त्र ।। ७ ई-न। कुष्ठ मः यागाम गुरा विन्तू मृष्का । বামকেশ্বর ভজোক্তাঃ প্রকাশ্যন্ত २० मृ पुकाः॥ मृगू (मवि भुवक्र)।नि मूनाः नदीर्थ निष्किताः। याजि रि রচিতাভিন্ত সামিধ্য তৈপুর ভ বেৎ ৷৷ পরিবর্ত্য করৌ স্পৃষ্টাবঙ্গুষ্ঠৌ कात्रायण मानी। व्यनामायर्गाउ क्ः ত্বা তৰ্জন্যে স্বটিলাক্তী॥ কনিষ্ঠি কে নিযুজ্ঞীত নিজস্থানে নহেশ্বরি। ত্রিথণ্ডেম্" সমাখ্যাতা ত্রিপুরাখ্যান

कर्यात ॥ 🗱 ॥ सथामा सथारण क्वा কনিঙে ২কুষ্ঠ রোধিতে। ভর্জন্যী দওবৎ কৃত্ব। মধ্যমো পর্যানামিকে। এवा ह भुवना मृमा गईम का রিণী॥ৠ। এতস্যা এব মু দুয়া মধ্য মে সরলে যদা। ক্রিয়েতে পরমেশা-नि नर्वविद्वाविनी छमा॥ 🗱॥ मध्यः মা তর্জনীভ্যাঞ্চ কনিষ্ঠানামিকে স নে ৷ অন্তুশাকার বৃপাভ্যা নধ্যমে **পরমেশরি ।। অঙ্গুঙৌ তু নিযুজী** ত কনিষ্ঠানামিকোপরি । ইয় নাক-विनी मूमा देवलाक ग्रक्षिनी भन्ना ।। 🗱।। পूर्वाकारत्रो करत्रो कृत्रा जर्ज-न्यावस्नाक्ञी। भित्रवर्खं करमरेगव मध्याम जनस्थाग्राज ॥ क्रामन मिव তেरेनव कनिष्ठानांभिरक **उथा।** म॰ যোজ্য নিবিডা: সর্বা অঙ্গুগ্রাবগুদে-णकः ।। মুদুৰ॰ পরমেশানি সর্ব**া** भारकती गजा। 🗱। मगुरथी जुकरत्री कृषा मध्या मध्या २ छ। ज-নামিকে তু সরলে তদ্বহি ন্তর্জনীদ্বৰণ । मञ्जाकात्री जमञ्जूष्ठी मध्यमा नथ रम्भारते ॥ मूर्पुरयाचारिनी नामा कर्षिनी मर्बरगिषठा । 🛊 । यम्रासु नामिका युगा गथः क्दाङ्गाक्ञी॥ তৰ্জন্যাবলি তেনৈৰ ক্ৰমেণ বিনিংখা-करपट । देव भशास्त्रमा मृहा मर्व

कामार्थ जाधिनी॥ 🕸॥ जवाः पिक्-गरमस्य ज् अवऽरमस्य जु मिक्कनः। বাহু ক্লামহাদেবি হত্তো সংগরি 🧗 বর্ত্য চ।। করিষ্টেনামিকে দেবি যুক্তে 🔏 তেন' ক্ৰমেশ চ। ভৰ্জনীভ্যাণ সম্প্ৰী कारि मर्त्वाष्ट्र मिन मध्यम्। यक् ধৌ তু নহেশানি সরলাবপি কার-(यर । इय॰ मा (थहती नामा भार्थिव স্থান যোজিতা।। #।। পরিবর্ত্য ক-(त्रो ग्णृष्टोवर्ष्टम्मुःक्ञी भिर्य। ठर्ज-ন্য**ঙ্গু যুগল•** যুগ**প**ৎ কার্যেত্ততঃ ॥ व्यवः कनिष्ठावष्ठेत्वः गवारम विनि याक्रायः । उरेथव क्रिल याखाः नद्वाथञ्चारनाभित्क ।। वीकगुर्द्भय मिन्द्रोट मर्विमिष्क विविर्ष्किनी। #1 মধ্যমে স্টিলে কৃত্বা তর্জুগুপরি সং স্থিতে।। অনামিকে মধ্যগতে ভথৈ-ব হি কনি খ্রিক। সর্বা একত্র সংযো-জ্ঞ্যা অঙ্কুষ্ঠ পরিপীডিভাঃ॥ এবা তৃ পরমা মূদা যোনিমুদে্য মীরিতা । #। এতা মু দা মহেশানি ত্রিপুরাযা भाषािकः। भूषाकाता भुषाकः व्या यथानुकन्नरागठः ॥ वागरुखन মুষ্টিন্ত বদ্ধা কৰ্ণপুদেশকে। ভৰ্জনী॰ मत्रना॰ क्षा ज्ञामयमन् विजनः ॥ (मोडागप्राखिनी गुनु। न्यामकात्व-পি স্চিতা। 📽। অउत्रवूध मुक्षे। ত

निक्या उर्जनी निमां।। विभ्विखाः नुहा मृषा नामकाल जू म्हिजा । #। वन् ज् (यानि मृत्राः देव नव् त्म क्रिंग क्या। प्रकृष्टिन छम्। क् गूपुरा ज्िनी मर्जा। #। वाममू 12· विशायाथ उर्जनी मध्याम उरा भुजार्य) उर्जनीमृष्ण निषिष्टै। वर्जुभा-ণিনা।। ইতি কন্সসারে মুদ্রাপুকরণ সমান্ত ।। 🛊 ।। 🕸 ।। অপিচ। উক্তা: ন্তব নমক্ষারাঃ শৃণুত্ত• পুরতো যুবা•। ञू मृानाः श दिमः थ्रानः स्क शक्ष यथा क्रमः ॥ (सनुष्ठ मण्ड्रे रेण्ड्य भाक्षः । नि दिन् भेद्याको। नात्राका मुख দভৌ চ যোনি রক্ষ তথৈব চা। ব न्त्री চ बहाबुद्धा बहारयानि खरेथव চ। ভগশ্চ পুটকশ্চৈব নিঃশক্ষো रथाक्र जन्मकः ॥ व्यक्ष विमृथ्रिक्ष শার মৃদ্রাথ মুপ্তিকঃ। বজুপ্তিব তথা-वकः मर्यानि विभन ख्या ॥ घटः णिथितिनी उत्रः भूखुः १व श्वांष न्कः। जःभीवाभी ह व्यथक हकः শূল তথৈব চ।। সি হবকু গোমু थेक (भागासामन उथा। विषः माम्भडः मूकः उपाणा १थ माधनी তथा॥ भुमाधनी छात्रम् मु। क्खनी व्रश् भव ह। जिमश्रकानिवल्ली हु यात्मा (जारा १थ (मारुनः ॥ वार्ता

बन्ग्ह ज्नीतः मुक्ता अञास गरमाः। वारक्षा खन्न वर्ग का युक्त युक्त या थाः भू-कीर्डिजाः।। जानास भक्षभक्षामः रिकार गुँखिक भूबरने । भिवास या जिनका नम् मु छाः नमरायु ह।। मुव्यानयन जःकिं नहेना पियू जाः স্তা:। দেবানা চিন্তনে যোগে ধ্যা -(न जल्म) विमर्द्धःन ॥ व्याम्तास भ-ঞ্চ পঞ্চাশন্মুদ্র ভৈরব কীর্ভিতা:। मू मा॰ विना जु यब्बनाः भागायामः न्त्राईन ।। यारमा भ्रानामत हानि निम्नानि ह जित्रव ॥ 🗱 ॥ পুতে उकः লক্ষণ তেষা শৃণুত তনযৌ যুবা १। एकिना मध्यमार्भुन नवा रखना ज्रुनी । याबय नवा नवा नवा स्थास उद्धिना मिक्तिन रेव।। उथा मका-नाभिक्या वामञ्ख किनिष्ठिकाः। अ-नामिकास नाममा मिलामा किनिष्ठरा ।। (याब्रायफ किमान् ममाक् मिक्सा বর্জনন ত্। ধেনুমুদু। সমাখ্যাতা স र्चरित्र जुडिना।। ३।। न॰रयान्। स्वी ভলৌ সর্বাণ্ডফু ধ্রাগাণি হস্তবোঃ। স• याबार भार्याञाश्वाश्वा म भूषेः (भा-চ্যতে সুরৈ:।। সর্বেষ। মথ দেবানা। সংপ্টঃশস্তে সদা। ধ্যান সংপট यागामि मन्त्रीः भन्राट नन्।।।२।। নিস্কুরুযুগ**ল পা**ণ্যো:সংযোজ্যা**র্ছেন**

अवह। मध्य भूनाः भूगिकातः शुक्षिः निः পরিকীর্ভিত:।।।।। অলু । মন্তর । কৃত্বা পাণ্যোমূপ্তি বিধাষ চ। সং शाका विव्ववास जू विवृत्तु मा भुकीः র্ত্তিতা।:৪।।মণিবন্ধাদাকরভ• সংযোদ क्र क्रत्या र्घाः । अक्रु हानि !! अंश्वाका उरेथ्व ह किन श्रंक ॥ जि जु खिर्जा हरगाः भारात त्रकृषी वित्र লা ভতঃ। পদানু দু। সমাখ্যাতা চ-जूर्वर्गभुमा नृगाः ॥ ।।। अक्षुष्टारगुग उ क्जन्राः जःयाक्रात्थाक्ष्रं (तथ्य।। व्यन्ताकृती खया नग्र नाताहः न्तरा পুসার্য্যতে॥ নম চৈব শিবাযাশ্চ প্রী-जित्मय श्रियकती। नाताह मुमा न **তত•** প্রাত্ত্যে বেতাল ভৈরব।:১।৷ অ-ন্তরাঙ্গু মুষ্টিঞ্ ক্রা বামকরস্য তু। मध्याञ्याः मिक्काम् उथा नम् भूः यञ्जञः ॥ মধ্যাক্ষেনাথ ভৰ্জন্যা অ-जुश्राभाषाका ह। मिक्न वाज-यट नानिः वाममूक्षी जु माधकः॥ मर्भारम्हिकरा जारा मुख मूर्प्य मि-ষ্যতে। ইযন্ত গণনাথন্য প্রীতিদা मूर्षिकालमा ॥ मर्खिया मिश प्रवा नाः जुक्षिता मर्बक्ष्यम्। १। अब्रुष्ठ नः थामारी • क ननागानमा ७ व्हिनी • ॥ भुनार्य। मध्यापुठि म किनन। कहना ज्। ৮। गर्वाक्वीस मःगाना कतः ॥

(या केंडरयात्रिशा मः (वर्ष्ट) त्रस्तूक দ্দে তু পাণ্যো রপি কনিষ্ঠকে। বাম্ मा वानम्राम छम्भः विनिर्याक्राय ।। एक मा नश्म्यान उथागुः वाम নেব চ। যো জবৈৎ যোজনাৎ পাত मावर्ड्य कत्रणाथिकाः॥ यान्या काः রম্ভ তন্মধ্য যোনিম দা পুকীর্ত্তিতা ৷ कानाथायाः शक्षम् (र्ख मूर्गाया जनि रेज्यव ॥ श्रीजिमा (यानिमृत्पृयः मम कानमा ह भिया। २। म॰ युक्ता सुक्रु-नीः नर्वाः भुनार्याक्षके भर्वना ॥ অগ্ৰেণ চ কৰিষ্ঠায়া অগ্ৰেণাপি চ (या कर्य । क्वन । क्किंग्रम मर्ख-**र्यानिः भु**कीर्खिङा ॥ २० ॥ अन्त्रूहेर शुाक्कवि॰ वाशि यहि भी खि निर्याज-(१८ । वन्तनीया मनाथाराजा मूमु विकुभुत्भा मिनी १७७१ रेमव (हर मुंव-भा**ण**का बहाब् पु। भूकीर्खिंछ। ১२। দক্ষিণাঙ্গে ভূসাশক্তা বৈষ্ণবী পরি⁻ कीर्खिजा॥५०॥ महारयानिस कथिजा বৈশ্বী তন্ত্র গোচরে। ঘথো মূলেত্ব-कुष्ठागु मङ्गुली क किष्ठरशः॥ निर्या-জ্য পুসূতী কৃত্যদ্বে পাণী যোজবেৎ পুন:। ভগমুদাচ সা খ্যাতা লক্ষ্মী वानी निवानिया ॥ ३८ ॥ मर्बाक्नी ,नानरगोषः एकिनम् क्रम्। छ। नः-যোজ্যকত পুরতো নিদেশঃ পুটকঃ

म् उ: ॥ ७३॥ कनिष्ठानामिकाक्ष्ठाक्र्-क्षीनाः भा त्रयम् यः। व्यग्राम् कव म क्षान उर्क्तनीक भूमार्ग्य रेव ॥ मुद्री कु ३५ कब्र व न्युः भ्षार्ग निर्या बर्य । निः भक्ति नाम मूर्त्य नत्र मि र व- " ब्राङ्खाः॥ ७७॥ कनिष्ठानामिका म-ध्या बाब्र्थ्य म्हिनम् ह। क्रम् াৰ্জ্জন্যস্থান্ত প্ৰসায্য ক্ৰিয়তে ত যা॥ 🛚 ा भू मु। श्रक्षं जनुरायता गुरागाः भी- " उनारिनी। ११। उद्यो क्उर उथा-্ষ্ঠ দক্ষিণস্য করস্য চ ॥ কৃত্বা ম ্যু• তদঙ্গৃ• বানমু 'ষ্ঠ• তথোদ্ধৃ তঃ। ेक्वांक्ष्ठ उथा अर्गापक्रम्म भू ोखिंठा॥ ১৮॥ এতদ্যা এব स्मूर াঃ কনিষ্ঠাদি বিনোচতঃ ৷ অষ্টৌ ্দুঃ সমাখ্যতা নান তাসাং প্ ाक भृषक् ॥ विगुथरिकत १२ मृश्चिक ্০ বজু২১ মাবন্ধ ২২ মেব চ। বিম-गण्ठ २० घটिण्ठव २८ छक्: २० मुख .७ खरेषव ह ॥ नवानाः विकृ म्खी^८ भ॰ नार्छ मह्म मृद्धिः। कमामव সমাথ্যাতা নাযিকানা তথৈব চ !৷ नः रंगाष्ठ्र कद्ररंगाः भृत्वे उथावर्ख्य जू ्वनन । भुनार्य उद्धनी युग्न मः-गुकः मर्बजः श्राः ॥ अक्रुशि ह उथा मको महनूम् भूभे खिं छ। २५ । উडान गञ्जलि क् द्वा अञ्चल हि विक-॥

निष्ठरयाः ॥ भूषा निः भिना जु करः मःयाकाथ भुम्मय् । नयानि রিতি সা খ্যাতা মৃদ্যু দেবৌষ তু-ष्टिमा ॥ २৮ ॥ मृष्टि मंकिंगहेंखेंग यानाष्ट्रा किंदिका खादर । मा महार निथितिगी मूपा वाकी म्यं। निया ह সা ।। ২৯ ।। অনামিকে কনিষ্ঠে তু नः (याक्र अजना भूनः । मध्या छ-ब्र्जनीनास्त (धनुम्रापुर वश्चन॰ ॥ **मा**-ৰ্দ্ধেনু রিতি খ্যাতা চন্দু পুঁতি বি-विर्विनी । ७०। कत्रया त्रकृषीः नर्वाः महागुालाकुः ऋजा।। निर्याक्काः-र्षा जिल्ल हिन जनस्था श्ली विगुक्त ह । অগৈরগু॰ যোজযেতু মৃদ্ধা সমীল-নী তৃ সা। ৩১। ভৌম ভূমি মুনীশা-ना निय॰ श्रीजि विविर्कानी। সর্বাহ্न-लीख **मःम**का रिक्षिगम्य क्रिम्र हा। कियन्छाग• उथानामा उन• अर्यास् হু ওবং। সমাখ্যাতা হু ও মুদুা বুৰ वानी मिवालिया॥ १२॥ महाक्रुनी-ना॰ मरेबास बामइसमा ठाक्नीः। भुगार्यप्राक्ष्ष युगन मः साक्रार्युन डिन्नव ॥ **७२**क् हे घर• कार्याः **म•**म्-খ বিভরেন্তভ:। চক্রমুদ্রা সমাখ্যা-তা গুৰু বিষ্ণু শিবপূিযা।। ৩৩ ॥ णक्षे नधारीक्षत नामियदा कतः न। एकिनन। भन्न। खिर्मा (गान-

(यहन्युङ: भनः ॥ मून यु मू। नयां थऽ।-তা মম শুক্র গুছপুিয়া। ৩৪। নি ब्द्वीक्छ। जुक्तो वामाञ्चलगगम। ज् ॥ जगुानि या बर्यस्थः जन मऽ। नवार्यः । व्यथः क्षा वागर्यः मून्। मि इम्थी म्जा ॥ ७१ ॥ ইयः श्रीरें जु पूर्गायाः म्यं। भूधमा ह किनः। ভगम्मु कर्नमूल गाम्थाः था। भूकी खिंठा ॥ मम विष्ण खथा ब्राह्म: नर्बना श्रीजिनायिनी ॥०७ ॥ মৃষ্টিদ্বয় মথোভান কুত্রা সংযোজ্য भार्थकः॥ पक्षिणम् किनिधारीन् भू সাৰ্য্য ক্ৰনতঃ পুনঃ। তথা বানকনি-ষ্ঠাভ্যামেকৈকেন প্রসারণে**ং ॥ অ**ং ষ্টোমৃণাঃ স্বাখ্যাতা নাম্তঃ ক্র-**७: भृ**१ । (शुक्राता ०१ मनन ०৮ ক্ষৈব বিশ্বণ ৩৯ পাশুপত্ত ৪০ তথা ।। मुक्तः ८२ जागः ४२ नाथनी ६० ह ख्या दिव शुनाधनी 88 । **जाज**का क्त्रणाथास पिक्ताः मा कृ मृत्का !৷ উগুমূদু৷ সন্থ্যাতা স্ভ্রস্থ विभर्यत्रवाट । ८० । इन्मुक्ति जानी क्षाणानाः मन्यूषाः भूकी दिंगः। ।। সর্বেষ। মুপি দেবানা পরমুপুতি । वषानाः । अङ्गुशुन्त उर्द्धन्। य <u> शुकारमन (या इ एष्ट्रा) वा भारत है ।</u> ধ্যনাভ্যান্ত দক্ষহন্তন্য চাজনীয় 📭

मर्भाराट मखनाकात्र मखनी भक्ति जुडिन• 11 मर्खिया मिश (हवाना• তথা তুर्धिकद्र॰ मह्ट । ८७। अत्रृष्ठ তৰ্জনী মধ্যা অগুভাগে নিযোজ্য চ ॥ मध्रमाक कंनिश्राक जानका म-ক্ষিণে করে। ত্রিমুখাখ্যা সমাখ্যাতা বিশেদেৰ পিয়া সদা ৷৷ কেভো: প্রি-यय गठठ माठ्गामि जुडिमा 189। তক্তন ক্ষেয়ে রগুভাগৌ স॰ रयाका ठाक्नीः ॥ यना यान्यकः यिखिमु: मामिवज्ञी भूकीर्खि छ।। পিতৃণা নথ সাধ্যানা ক্রাণা বি-थकर्मनः ॥ मर्वना भीजिकन्नी व्य-मिवली भुकीर्खिंग । ८৮ । भारते **उनान्त्रा॰ म**ेरवाङ्ग उनक्षं दय॰ **७ 3: ॥** ऄक़ॣ॔ • ग॰या क्रयमाভৌ অ-স্যোপরি তথাঞ্জলি:। যোগনুদু সমাখ্যাতা যোগিনা• তত্ত্বদাযিনী ॥ সর্বেষা মপি দেবানা পূজনে চিন্ত-নে তথা । যোগমৃদ্য সমাখ্যাতা তৃষ্টি প্ৰীতিকরী সদা ॥ ৪৯ ॥ প্ৰাঞ্জ-नि नीम मू मु। जु छेब्दा (था ভाব या-জিতাণা বিভিন্য দশযেন্ধন্তৌ উন্ধা-धः शुक् जी कृ लो ॥ (जर मृष् भ-माथाजा मम विष्ण विर्वः शिया ্ৰত্ন জড়াধ দ্বে তু নিঃক্ষিপ্য কর-ति । १७८५ । व ॥ जातून याज-

যেৎ পশ্চাৎ কনিষ্ঠা যুগল ততঃ। **উভযো ई उर्या कान्य उर्जन्य रा**क्ष रवाज्ञस्य ॥ व्यारियुक्त स्थक् क्छ। मर्भागङ्ग किनिष्ठिकाः। मूम्। मामाः रुनः नाम काम पूर्वा त्रमालिया ॥ न র্বেষা নঙ্গি দেবানা মোহন প্রীতি-प॰ म्उ॰। ৫১। चानगऽ नवऽ इउनऽ स्थामा नामितक जथा।। जत्याः श्रष्ठ তু সংযোজ্য অঙ্গুগ্নগু ততঃ পর । किनिक्षः अर्जनीरिक्षत व्यागुन याजः শেৱত: ॥ বণেমূদু। **সমা**খ্যা**তা স** इंप्रदण्ड जूष्टिरा १०२ । मर्वाक्नुनीख সংস্থাচ্য আনপ্ত মথ ভর্জনী॰ ॥ পু नार्ग्य कद्रत्याः शन्दाहक्ष्मश्रागुष्ठ याः कत्य । वाक्षार्युन ठर्जन्या व्यापु-ণাপি চ ভর্জনী॰ ॥ যথা শক্তি পুলা-र्याभि धनुगृषा भुकी विंठा। ৫०। गर्व। जुलीना नुगानि द्वाऋ उठीर्थिनि याङ्गराष्ट्र ॥ यनानिकायाः भृष्ट ज् व्यक्षागुः निया करय । भ्नाः ज्नी तवट क्वा उया मन्न छित्र ।। ज्भीत मृष्टा ठाथप्राठा मर्खिया॰ श्री তিবজिनी। ৫৪ ॥< ।। नृ मामू म• हिः তা প্জামুদাসু পরিভিন্ন । মূলু मू म हिंछ। (यागा मू स ज्यान के खाः। यस यस श्वास्त्र विकास श्यान कर्याणा। युद्धारमे। अवस्य विभाग

হস্তকৃত্য ন বিদ্যতে। তদা মুদাযু **७॰ व्य**र्गानिष्ठाभूर्खं कत्र षय॰ ॥ य-क्छक्छायु हिहाका रखा ग्राम् ह क्रमः। जना मृमाः विवारियव जब् क्छा नमाहात्र ॥ मृषु। वियुक्त रुडा किया कर्य रितिक । कृषा যমির্লে যমাত্তমামুদ্রারিতো ভ (क्ट्।। विमर्कात ज् (हवाना: युम्)-যা পরিকীর্ত্তিতা। মুদ্রাণ তাণ পূজনা क्ति जु जम्र देनव भुरमाक्रायर ॥ বিস্ষ্ঠ্যকা মৃতে মুদা মুদাযুক্তঃ স-माठात्र । भूजनारि मगउक कर्या वृष्कि। विष्ठक्षनः ॥ जारका मन्। भन्नः थान मु मु। भूगा भुमायिनी। स्वाना॰ (नारना मू मा ज्या छा। यज् उ करदर ॥ जर्कावानि र्यशायानि र्यानि द्या-की हरिकवी। मृषु विमञ्जात (भा-ক্তা শিবা ত্রিপুরযো: সদা ॥ দুর্গাযাঃ नर्वकारियू गृपा এতाः পুनी खिंठाः । यानिष नम्मुहेरिक्षव नङ्गारमानि স্থবৈত।। বজ্জ নিত্বা ব্যস্ত ভাবাদু-कारनाब याजयः। ज्यमु वि शक्षान्दन्यान् माः मगउ जः॥ जात्रः ए का लागाः मुर्ग्नु लाएकदाः 🗠 🚈 : এই বাং ক্থিতা মুদাঃ শু 🖦 । পদ্য তুপ্তিদা:।। ইতি কালিফা भूबारमञ्च **अध्यायः** ॥

मू मुगाठिक्रि जः । || मूमुक्टिः वि ছাপাকরা নোহরকরা ইত্যাদি !! ভाষা। यथा। थाजा विश्व विभृष्टि নাত্র নিরতো দেবো হলি গৌরী जुका (अयाननर विष्र्भान नयता मकाध्रव ध्रः मक्ट। रेमज्राविः कम-লা কপোল মকরী মুদ্াকিতোর: স্থল: শেতে হনা বিতরেষু জন্তুষ্ **পूनः का नाम मास्त्रः कथा ॥** ইতি भुरवाष्ठरमुगम्यनार्टरक > व्यक्षः॥ गुम्। निशः जी शक्शानिभाउर्गङ निभिवित्नयः । ছाभात्रवक्त इंडि ভाषा। यथा। मृ मृानिशिः भिन्निमि विभि विथनीमस्य । खिका युग मसु जा निगयः भक्ष था मृठाः ॥ এতাভি विभिन्नि र्वा-প্তা ধরিত্রী শুভদা হর।। ইতি বা त्राशिउखः॥ उग्राः भारे/पुः धा-र्गाद्वक यथा। (नथना) निथिउ॰ विरेशु गूर्मा छ ब्रिक्टिक यर। मि न्नामि निर्चिंड यह शार्ठा शार्याक नर्वता॥ इंडि थन्नगानाडञ्च॰॥ मृतिका जी वर्गवागामिनिर्मिडमूम् । (नार्व है कि। इंड्रांकि डाया। यथा। स्नोवनी विज्ञानिक उन्हीं মাৰনীং বা সুশোভিতাং। সাল **লেন** সক্জোতা পুকিপেন্তৰ মু-

দ্বিকাণ।। ইতি নিতাকরাযাণ ব্যব श्राथायः ॥ মুদ্ভি॰ ত্রি অপুফ্লে॰। মোদা ইতি ভाষা। তৎপर्यतायः । मक्रुविज॰२ निमान २ गीनिङ ८। ইভি হে**ম ठन्द्रः ॥ गुपुाक्ति उक्त** ॥ मूशा वर वर्र्यकः। इंडरमद्रः॥ म्निः भू मनूरा जाना जियः। स्नोकः वुजी । इजारना । इंजि छत्र जः ॥ जिर्भागः। वाहःसमः २। **३**७९ः मतः ॥ (मोनी ७ वुडी ८ श्रविः 🛦 শাপান্তঃ ৬ সত্যবাক্ १। ইক্তি किरायदः ॥ उत्र विकार यथा । मुः (थयु न विश्वनाः म् (थयु विगठ-স্পৃহঃ। বীতরাণ ভগ কোধঃ ছি-তথী মুনি কচ্যতে ॥ ইতি 🗐 ভগ-वङ्गीजा ॥ 🗱 ॥ जम्र श्रःमा यथा । বুনোবাচ ৷ নুনিভি শচরতা ধর্মা উका व्याम भया उत्। रेय विंकु स्तर-ব্যতে দেবঃ সুখাদি পরিভাবিকঃ ।। তপ্পেন চ হোমেন সন্ধ্যয়া বন্দ त्व ह। भाषा ज जगवान विकु-र्धर्म कामार्थ (माऋमः॥ धर्मा दिख् বুঁতো বিফ্: পূজা বিফ্সু তপণ । েনঃ সংগ্ৰে তথা ধ্যান ধারণা म 😘 अदिः। १७ गाक्फ २२१ ्यः॥ 🛪 ॥ जन्मानुस्य वर्गनीः

বানি বথা। অতিথিপূজা > হরিণবি-খাসঃ২ হি•সুজন্তশান্ততা ৩ যজ্ঞগ্ **লঃ৪ মুনিসূতঃ ৫ জনসেকঃ**৬ ব**ল্লঃ**৭ বৃক্ষক ৮। ইতি করিকল্পলতা ॥॥॥ ग्निवित्मयागा॰ वुकारा। श्कृवित्म-वामुर भिंख र्था। भूवाखा मक्क नीष्ठ भूलाङ्ग वामकर्गडः। एकान-ত্ৰভেথাত্ৰিক বামনেত্ৰাৎক্ৰতুঃ স্বয়ং ॥ अत्रनी नीमिकात्रक्तां अक्तिना क মুথাফচি:। ভ্ওশ্চ বামপার্খাচ দ-কো দক্ষিণ পার্শ্ব হ:।। ছাযাযা: ক-ৰ্দ্মনো জাতো নাভেঃ পঞ্জিখ স্তথা । वक्कन रेन्डव व्यापून्ड कश्चेरमभाइ नात्रमः ॥ अत्रीिकः ऋक्षरम्भाह् जा भखम् खया गना । यभिक्षा तमना **म्माट भुटिल। अथात्रा**ष्ठकः ॥ रू•-जण्ड वामक्राक्षण मक्रक्राक्र यंजिः चय । मृष्टि विषा जुक्ष विषि फका রাজ্ঞা• সুতানপি॥ ইভি বৃক্ষবৈবর্ত্তে तृक्तथए ৮ व्यथ्रायः ॥ 🕸 ॥ गया-जूबनभीखः यद्धार्थः तुकारा। गान-नाट मृक्षा म्नरवा यथा। ुक्ता म ञ् ज मञ्जादा भागमानृदिक्ता २ मृ জः । अशिमग्रीप मम् छः (मीनकः काञ्जलि मृत्।। अगृथि (दएरने कि. न्। हाद्योज कमाशः कृशः गर्भः ्हों निक वानिएंडी मूनिः

য় ।। বৃদ্ধ পারাশর কর মাওব্য শুতি কেবলং। খেতং সূতালং দমনং म्(राज कक भव हा। (नोगा किक महावाङ् क्रिगीषवाः उत्थिव छ। म-ধিপঞ্চমুখণ বিপু খাষভণ কর্ক মেব চ ॥ কামাধন• গোভিলঞ্চ মুনি মুগু नश्तुज । बढ़ीमानिन नवार्ग । हा-টুহাসঞ্চ দাকৃণ ॥ আত্রেয ঞ্চাপ্য-জিরস মৌপমনু । মহাবুত । গোক-ৰ্ণঞ্ গুহাবাসং শিখণ্ডিন ম্মারুত্ত ।। স্বালয় গৌতমঞ্চ তথা বেদ-শিরে। বুতং। এতানন্যাংক বিপ্রে-ল্যুন্বুক্ষ লোকপিতামহ: ॥ পরি-क्नप्रक्रात्यागः भयामृत्रमतीव्रकः। ইতি বাযুপুরাণে গ্যামাহাজ্য্য ॥ৠ॥ मूनिविष्णिय नाम्ना॰ वृष्ट्रशिख यंशा । কতিকল্পান্তরে তীতে সুষ্ট্রঃ সৃষ্টি বিধৌ পুনঃ। সরীচি মিশ্রৈ মু নিভি: সার্দ্ধ• क्शेष्वज्य मः ॥ विर्थ नंत्रम नान्मह কণ্ঠ দেশাদ্বভূব সঃ । নারদ শেচ্তি বিখ্যাতো মুগীলু জেন হেতৃনা॥ यः পুত্র শেচতকো খাভ র ভূব মূনিপুক্ষবঃ । ভেন পুচেতা ইক্তি তয়ায়চক্রে পি-তামহ:॥বভ্ব ধাতু ৰ্য: পুত্ৰ: সহসা मक्रभार्थे ज्ञा भर्वकर्या । मक्क **(ज**् न एकः भुकी डिंजः॥ (वरम्य कर्मनः শব্দ শ্বাবাবা বৰ্ত্ততে স্কটঃ ৷ বভৰ

कर्पगाद्याणः कर्पम खन कीर्बिजः ॥ ভেলে। ভেদে মরীচিশ্চ বেদেযু বর্ত্ত ঁ তে সু ট॰। জাত: সদ্যে হতিতেজ স্বী মরীচি স্তেন কীর্ত্তিতঃ।। ক্রতু **স**ং-ষশ্চ বালেন কৃতো জন্মান্তরে প্রুনা। বুন্ধপুরোপি তমানা কতু রিড্যভি-ধীয়তে।।পুধানাক্ মুখ পাত স্ততো কাতশ্চ বালকঃ। ইর স্তেজম্বি বচনো रिषित्रा एउन श्रुकीर्खिङः ॥ অভি-তেলম্বিনি ভৃগু র্বর্ততে নামি শৌনক । बाउ: गएता २ जिल्डा वृष्ट ত্তেন পুকীর্ভিতঃ॥ বশীভূতশ্চ শিষ্ট-क बाउ: जएति हि राधकः। ध-তিপ্রিশচ ধাতুশ্চ বৃদিষ্ঠ শ্তেন কী-ৰ্ভিভঃ॥ বালে। হপ্যসূত্ৰ বৰ্ণশচ জা **छः गरा**। हि (छळ*ा*। शुक्कात् शू ৰ্বতপৰা চাৰুণ স্তেন ফী ব্ৰিতঃ॥ হ• স আত্মা বশো মৃদ্য যোগেন যো गिता थुन्। वायः शवन वागीनु खन रु·मः भुकेष्टिङः ॥ नष्ठङ य म। वद्भ जभःमू वावक्म। ह। श् কীৰ্ত্তিতো যতি স্তেন সংধতঃ সৰ্বজ-र्यम् ॥ भून उभःभू (वरहः 💎 😇 रमु हिश ह। मुहे छना बन्दर भुवारे खन की बिंडः॥ १ म सनः **गग्रक यमग्राञ्जि প**र्देशवानाः। उथाः। **লংঘঃ সন্হ**শ্চ পূল্ড্য স্তেন বালকে 🦠

।। ত্রিগুণাযা• পুক্ত্যা• ত্রি বিঞাবъ পুবৰ্ত্ত। তথো উক্তে: সমাজো হ্স্যতেন বালো হত্তি ৰুচ্যতে॥ জ-है। काशिकाया विभाः भक्ष मि ह মস্তকে। তপ স্তেজোভবা যস্য সচ পঞ্চশিথঃ মৃতঃ॥ অপান্তরতমে দেশে তপ স্তেপে হন্য জন্মনি। অ-পান্তরতনা নাম শিশো স্তেন পু-र्कार्डिङ ॥ स्रयष्ट्रभः मगारशांडि वारुख भाभाष भन्नान्। उष् ममर्थ खनाम (वाष्ट्र (खन नुकीर्डि-তঃ।। তপস স্তেজসা বাধো দী প্তি-মান্ স্নৃতে। মুনে। তপঃসুরোচতে িন্ত কচি স্তেন পুকীভিতঃ॥ ইতি जुकारिवरार्ड्जुः चए७२२ व्यथायः॥ भूनिः श्रुः वद्ययम्ब्यः॥ हिनः। इं (अफिनी ॥ शियाल वृक्तः ॥ পলাশবৃক্ষঃ। ইতি ছেমচন্দুঃ॥ मननकवृकः। ইতি রাজনির্ঘট:॥ ন্নিথজ্ রিকা স্ত্রীপুভেদঃ। यथा। मूनिथर्ज् विका प्रना बार्लक्षी খাতুস নিতা।। ইতি রাজনিহ'ট:।। श्रीकृष्ट ४१ गत्रहम्य्कः। ३७ राष्ट्रभिष्ठ है। 🦖 🍳 ব্যক্ষঃ। ইতি রল্প

। ৈ শ্যোগকবৃক্ষঃ। ইতি

गुग् क

বক্তৃকঃ। ইতি রাজনিঘট:॥ श्वनिनिर्याजः भुः फिखिमः। यथा। ডিণ্ডিশো রোমশফুলো মুনিনি-মিত ইত্যপি। ডিণ্ডিশে। কচিক্ৎ ভেদী পিত্ত শ্লেম্যাপহ: মৃত: ॥ সুণীতে৷ বা তলো ক্ষেন্য্রলকা-শ্মরাহর: ৷ ইতি ভাবপুকাশঃ ৷৷ মুনিপিত্তল লী তামু। ইতি ত্রি-কাওশেষ: 11 মুনিপুস্বঃ পু॰ নুনিশেৢে%ঃ। ইত্য-अबही है।।। मूनिপूषः भूः प्रमनकर्कः। ইতি ভাবপুকাশ:।। श्रविসূতশ ।। মুনিপুএক: পু॰ খঞ্জন:। ইতি জি কাওশেষঃ ॥ মুনিপুল্ল॰ ল্লী বকপুল্ল। যথা যো-গিনী তত্ত্বে। বিলুপ প্রঞ্চ মাঘ্যঞ্চ **ত** मानामन की तन। कडूति जूनमी ঞৈব পদ্মश্ব মৃনিপ্ত্লক ॥ এতৎ-श्रया विज न मार यहानार क লিকাত্মক•। ইত্যেকাদশীতভু•॥

मूनिभूगः भुः खवाकवित्भवः। छए

পर्यायः। द्वामभूगः २ काबीनः ၁

সুরেবটঃ ৪: ইতি ত্রিকাণ্ডেশ্বঃ !!

म्निए जवकः ही अभरहाः क्रिके

।। वङ्गनः। इन्डिन्निनि

त्रव्याना ॥ (मानावाकभुरस्यः ॥ य्वाक्तः । विक्वकः। इठि ताक्षिविद्यः ॥ विक्वकः। इठि ताक्षिविद्यः । विष्यः। इठि रहमान्यः । विष्यः। इठि रहमान्यः । विष्यः। इठि रहमान्यः । विष्यः। इठि क्विक्वकः। विष्यः। विक्वः। विष्यः। विष्यः।

म्मूकः श्रु मुक्तिम्हः। उट भर्गायः। भूमनः २ यितः २ वाहः यनः
वृजी ६ मायुः ५ जनगातः १ व्ययः
६ मूनः २ निगृं छः २० जिक्कः २२।
इेकि इमहन्द्रः।। जय मूम्कू क्छाः
। मनः। इह हामूज वा कामाः भूवृछः कर्मकीर्जादः। निष्ठामः ज्ञान
भूर्वेष्ठ निवृज्ज मूनिमादः।। भूवृछः कर्म मः स्मृतः दि ।। कामना भूर्वकः
कर्म मतीत भूवृज्जि इच्चाट भूव्छः उद्यव कर्म कामना पूर्वकः
कर्म मतीत भूवृज्जि इच्चाट भूव्छः उद्यव कर्म कामना पूर्वकः भून
वृक्त छानान्याम भूर्वकः मनात्र
निवृज्जि इच्चाट निवृज्ज मूहादः।

मुगुक्

লাষ্টিতা সমান গতিতা প্ৰযেগত্য ৰ্থবাৎ পঞ্ভুৱান্যত্যেতি অতিকা মতি মোক পুথোগাতীত্যৰ্থ:। বিফু भुद्रापक । विभिष्ठे क्वमा कन्। नि স্কামানাঞ্চ মুক্তিনা। ভগবদ্দীতাপি। যুক্ত: কর্মফল• ত্যক্তা শান্তি নাপ্নো-তি নৈষ্ঠিকী । অযুক্ত: কামকারেণ ফলে সক্তো নিবধ্যতে ॥ যুক্ত: ঈশ্ব-রায কর্মাণি ন ফলায ইত্যেব সনা हिंड:। क्व · डाङ्गा कर्यानि सर्वमि-जिल्मयः। भाष्टिः (माक्काथाः नि ষ্ঠিনী নিষ্ঠাযা ভবা । সত্ত্ব শুদ্ধি: জ্ঞান পুাণ্ডিং সর্বকর্ম সংন্যাসং জ্ঞান নিষ্ঠা ক্রমেণেতি বাক্যশেষ:। व्ययुक्त उप्तिभूथः। कामकारत्र কাম পুেরিতত্যা কামতঃ পুরুত্তে ति छि यावर । कल मकः मन् कना (यम• कर्मकात्र। भी छ। व• काध मः ক্তো নিতরা॰ বন্ধ• প্রাপ্নোতি। ত থাচ অজুন পুতি ভগবদ্বাক্য । भिव जर्बानि कर्यानि जन्नाजाना ত্ম চেতসা। নিরাশী নির্মনো ভূত্বা युष्य विशेखञ्जद्रशा मःन्युम्य निः क्तिश्र ममर्ग्र इंडि या 🔼 🖽 🥶 ত্ম চেডসা বিবেক বুল : 🕆 একাশ **ভূত্যदेश करतामि इंड**्रास 🚈 নিরাশী ভ্যক্ত কাম সংগ্রাভাই

এব নির্মানঃ মসভা রহিতঃ। বি **জुद्र: विगठ मसाभः । व्यक्त**ः সএব। যৎকরোগি যদশাসি 🤊 হোলি দদানি যথা যত্তপদ্যনি। एष्य उट् **सक्**य समर्गा । विकृ व्रागः। कर्याग्यमङ्गिष्ठ उट य নি সংন্যস্য বিষ্ণৌ পরমাত্মকা অবাপ্যতা॰ কর্মমহী মনন্তে তা नयः (यद्भाना भुषास्त्रि। कर्म्यभः ভারতবর্ষকপা । একাদশক্ষরে (वरमाक भित्र अर्जाणा निःमर र्श्वजू भीषात् । तिष्ठर्माः **व**ष्ठ নিদ্ধি রোচনার্থা ফলশু,তিঃ।। (দোক্ত মেব ছর্রাণে। ন তু নিষিদ্ধ নন্ কর্মণি ক্রিয়নাণে ভ্যায়াস জি ख एकन ना। एवं नव् निष्कर्मा स् পা ফলসিদ্ধি রতএবাহ নি:সঙ্গে হনভিনিবেশবান্ ঈশ্বরে হর্পিতু नजु कलाप्परभन । जय कनमः শু, তত্ত্বাৎ কর্মণি কৃতে ফল ভবতে ১ ব ইত্যাহ রোচনার্থেতি কর্মণি ৰু চুঙ্-পাদনার্থা। অতএব তব্রৈব। ফ লশুতি রিষ নৃণা ন শেষো রোচন अ । १९ १० क्या भाका गया ভাষ্ট 👚 🔒 িংগত্যৈৰ ছি সংল্যু প্রেম্ভ স্বং**নণ্চ আসক্ত** कि है। या जा १नर्थ (र ठूम्

॥ नजानविषुषः बार्थः ज्ञानप्रजा वृ-॥ क्षिनावृत्ति। कथ॰ युष्ठार भून खस् তা। ত্রমো বিশতো বধঃ ।। এব। ্যবসিত কেটিদবিজ্ঞায় স্ববৃদ্ধয়: 1 ফল শু,তিং জসুমিতাং ন বেদজ্ঞা বং দন্তি হি।। ইয়া ফল শুতি নশ্যেঃ পর ম পুরুষার্থ পরা ন ভবতি কিন্তু বহি নুখানা নুগা নোক বিবক্ষযা অ-राखन्न कर्याकरेनः कर्गम् कहु। ८ शापन লাব থথা ভৈষজ্যে ঔষধে ৰুচ্যুৎ शाहन । यथा। भिवनिष्ठ शुहाम्। নি থলু তে খণ্ড লয়ুকান্। পিত্রৈব মূকঃ পিবতি ন ফল• তাবদেব তু॥ ত্রাগদপানস্য ন থল্ থণ্ডাদি লা জ এব পুবোজন কিন্তারোগ্য•! তথা ारमाभारवाद्यत करेनः भूरनाज्यन् ्माक्कारेयव कर्याणि विश्व**ख**ानन् कः শাঁলাণ্ডে ঘোক্ষদ্য নানাপি ন শুয়তে व्ययनव बतायतायक गया मुज्देमतः াঘটনাং ইত্যাহ উৎ**প**ত্যেতি দ্বা-•্যা•। উৎপত্ত্যা স্বভাবত এব কা-नयू भक्ता दियू भारतय् जागू विन्दिय ल वीयं। किय सङ्कातम् भूव काताकि য অনথ হেতৃষ্ পরিপাকতো দুংখ ্হত্য অত ভাণ্ স্বার্থ পর্মসূথ ৰবিদুৰঃ অজানতঃ অতো নতাৰ্প্ शीव्यान् वृत्वा त्वासा बुल्पक्षमृत्व

তদেব শে্বঃ ইতি বিশ্বসিতান্ ইত্য-र्थः। जान् वरस्रुजान् वृक्तिनाधनि কামবর্ত্মনি দেবাদি যোনৌ ভ্রাম্যতঃ ভত: পুন স্তমো ভূত কৃষ্ণাদি যোনি**•** বিশত ইতি। পশুকাম ইতি*চ* সূ**থ** পু প্রাদি কান ইতি চকথ পুন স্তেষ্টে-व कारमञ्जू व्ययः तूर्या (वरमा युक्ष)। ८ भूवर्वरयर । उथा मङ्गासः म्यार ইতি ভাবঃ। কথ• তর্হি কর্ম মীমা•-সকা: ফলপরতা॰ বদন্তি তত্রাহ। এব মিতি ব্যবসিত• বেদস্যাভিপা-য° অবিজ্ঞায় সমুমিতা মবান্তর ফ-लारताहनमा त्रमणीयाः शत्रम कलनुः তি বদন্তি সত তে সবুদ্ধব স্তত্তাহ হি ফ্মাৎবেদক্তা ব্যাসাদ্য: ন তথা বদ্ভি ইতি অতএব নিষ্কাম কর্মণ আল্রক্তানার্থতোক্তা যথা । অয নেব ক্রিয়া যোগো জ্ঞান যোগস্য गावकः। कर्मायागः विनाञ्जानः कः স্যাচন্দ্রে দৃশ্যতে॥ সোপি দুরিত-ফ্য দারা ন সাক্ষাৎ তথাচ। জ্ঞান गृ १ भराउ भू भा क्या भागग कर्माः। उथा नुः जिः। उत्मवः विमार्थ वहरान वाका विविधिष्ठ वुक्कह-र्यात जगमा मुक्तवा मात्नन यरछः-নানশনেন চেতি। ত॰ আত্মতত্ত্ব नाकार कात । अठ वन वळाधीना

क्छान । भव जाकावशार्य। निष्ठारमयुक র্যমূ পুবৰ্তে। পণ্ডিতেনাপি মূর্থ: কাম্যে কর্মণি ন পুবর্ত্ত বিতব্য ইত্যা-र यश्चरका। यश निः मुगम विशास বক্ত্যজ্ঞায কর্মা হি। ন রাতি রোগি ণে হপৰ্য: বাঞ্তেপি ভিষক্ তমঃ ।। রাতি দদাতি ইতি সমযপুদীপে शिरखः। मानी मान भवकात्र भमः वपुन मञ्जवः। शृक्रवाखम जुडे।र्थः भुरमयः जाईकालिकः॥ यम्पिष्ठेउः म॰ लाक यहा भारति ग्रह मुहि। उ. खिक्त (मय॰ भी छ। थ॰ (मवामवना ह किनः ॥ इह मान वाक्त मण्दान क भिव विकृ भी जि म् फिना वर **जर्ब**क मान । विष्णुतिष्ठः जामानाः তঃ শুতত্ত্বাৎ। অথ বিফুপ্রীতৌ দে-বভাধিকরণন্যায় বিরোধ ইতি চেদ্ স্থৰ্গবদধিকারি বিশেষণত্বেন তৎ ञखु भुगाधनाट हेज्यानः । द्राञ्चन जम्भुमानकरञ्ज कि॰ गान मिठि हि॰ বামনপুরাণে তত্তনাস ভেদেন ত उद्यान मिल्याय । विक्षुत्री जार्थ मि তানি দেয়ানি ব্ৰাহ্মণেম্বথ। দেয়ানি বিপুনুখ্যেভ্যে নপুস্থন তুষ্টবে एन घराजिशानार । उथा ह विकृष स्मा उन्ना भूना १ त्या । यव यव छ

বেৎ প্রীতি বিষয়েভোগ নহাসুনে। তত্তদত্যত মুদ্দিশ্য বিপ্রেভ্যঃ পু-তিপাদবেৎ।। বিষ্পুখর্মান্তর ভৃতী যকাণ্ডে ভূ বিষ্ণু সংপ্রদানক মেব मान यथा। विकाः भाइ भुमानन বাৰণ লোক নাপু যাৎ। ইত্যাদি ना कीत्र शल्लव अःयुक्तान् कलमान् जूविज्विजान् मजा देव (मवरमवाव वाक्षिमध्याः वाख्या इंडाउन **७** जुंद कन जुंद का विशासी-ক্ত•। অকাম: সাত্বিকো লোকো य कि विषक्षि कि त्वित्य । एउटेनव স্থান মাপ্নোতি যত্ৰ গল্পান শোচতি ।। ধর্ম বাণিজিকা মূঢাঃ ফলকামা नद्राध्याः। अर्रविष्ठ जगनायः उ কামা নাপু বন্ধু তে।। অন্তব ভূ ফল• তেষা তভ্তবত্যল্পমেধসা । তথা । गम् गा भुजीहरक (मवः नकारमन निविहिन । मृष्ट्रा भुनिह्य हर् नकारमन दिखालनाः ॥ ইত্যক বামনপুরাণবচনে **मार्वका**णिक भिजातन मनगामान्येश विकू भी जार्थ (एव भिक्ति । इंकि भने · মাসতকু ॥

ত্যভিধায় দাসী দাস নিত্যাদি ব । মূন্ধু: ত্রি আসমন্ত্য:। অথ মূন্ধু চন ছ্যাভিধানাং । তথা চ বিজ্ব তিন্দ্রি । ছার্রাতঃ । শূদুরেন ত্ মোরেরাগুপুরাণধোঃ । যত যত তিন্দ্র বিজ্ব যো ন্তঃ । স रैव थर्र पृष्ट्रेय भूपुष काविगहिं ।। भूनामः भूनुषाभिकामः। उपख मिल (जाजनकारण उप्गृश्विष्ट-छ । यञ्च पत्रि मृ पुष्ता । । । । । । । । वि ताः। मृपुरवन्मनि विर्भुग कीत्रम। ষদি বা দধি। নিবৃত্তেন ন ভোক্ত ব্যু শুদুান্ন তদপি ঘৃত ।। অপি भदार माक्षार उपर व घ्उ उ धुना हि न ७ ७५७ क्शर्मकाहिना की उ মপি। স্গৃহাগতে পুন রঞ্জাঃ। খ্পায়ত স্তকো হ্যাপ: শ্কিং যান্তি निने गठाः। मृमुाविश् ग्रहत्रमः भुविश्वेष जना मूर्ति ॥ भुविश्वे जन्ना-পাদক পুতিগুহাদিনা ইতি শেষ:। অতএব পর।শর:। তাবভ্রবতি শ্ मुास यावस न्भानि विजः। विजा-**তি कद्रमः गृष्टे मर्दः उद्ध**ि क्रा তে॥ স্পতি পুতিগৃহ।তি ইতি কল্লতকঃ। তह সংপোক্ষ্য গাছ মাছ विक्शूद्रागः। मः प्राक्षियः। शृही-যাह দুার গৃহ নাগত । তচ পাতা-ন্তরে গ্রাহ্ম মাহ অফিরা:। মপাত্রে ষরু বিন্যস্ত শুদ্রে। যছতি নিত্যশঃ। পাত্রান্তর গতে পু:ছ্- দুব্দ- স্বগৃহ মাগত ৷৷ এতেৰ স্বগৃহ নাগতীল্যৰ मुबद्धः। छन्गृह गडनाऽ मृह्यः (सः) व जागिदः भूजीग्राज। 🐃 🖘

मृगिन सूर्यूना महीया मृमुाम न ভোক্তব্য: ॥ 🛊 ॥ পুজারত্নাকরে । শালগাম শিলাখন তত্ৰ সমিহিতো क्तिः। उर मित्रि जुरबर भागान् वाजि विकाः भन्नः भम्। निक्-পুরাণে। শালগুম সমীপে তু কো-न माब नमस्टः । कीकार्रेश मृ **छ**। याजि देवस्थे ख्वन नद्रः ॥ की काही मगशः॥ 🗱 ॥ देवकवामृत्व वता-णः। जूननी कानति कासा र्या मित्रु कु र्खर कृष्टिश म निर्छ एमा यस ना भी नीनरेयव रुद्रि॰ विल्या भुयान কালে যস্যাস্যে দীয়তে তুলসীদল• া নিৰ্বাণ যাতি পক্ষীন্দু পাপকোটি যুতোপি স:।। #।। ক্র্মপুরাণ । গঙ্গাঞ্জলে মোক্ষো বারাণস্যা• कल इला। बला इला ठाउदी। क् गक्रामागद्रमक्त्य ॥ कारम् । ग-काया॰ जाबाउः भागान् कथयामि व-द्राग्ता कर्त उৎभव्तमः वुका हमानि मानक भर ॥ उथा । जीवार्गगुऽ-তি মাত্রস্ত পরিতঃ ক্ষেত্র মুচ্যতে । অত্র দান জপো হোনো গস্থায়া• नाव **नःग**यः ॥ अवञ् । जिनियः याः 🔞 যে মৃতা তে ২পুনর্ভবাঃ। গব্যুতিঃ ক্রোশযুগ ॥ তীর্থচিন্তামণৌ বুন্ধ-প্রাণ। অত্ত দ্রে সনীপে চ সদৃশ।

र्याजनवयः। शक्षायाः सद्राप्तर नाज कार्येऽ। विठातना ॥ 🕸 ॥ अवर शकाहि मद्रापन शुधि दुष्पत्नीकम्। পেरोर्खर हिकी किया उपविकारिया কৰ্ত্তব্যা নিভ্যত্বাৎ। তথাচ খ্ৰীভাগ-বতে। কৃষ্ণ এবং ভগবতি মনো বাক্ দৃষ্টি বৃত্তিভিঃ। আত্মন্যাত্মান মাকে শ্য সো হন্তঃখাস মুপারম্থা সং-**भ**रामान माड्याय जीमा वृक्षि নিষ্কলে। সর্বে বভূবু স্তে তৃকী বযা। भीव दिनाजुरय ॥ उत्रु निर्ह्त्रभाषी নি সংপরেতস্য ভার্গব । যুখিষ্ঠিরঃ কারযিত্বা মূহ্র্ত দৃ:খিতো হভবৎ।। কৃষ্ণে আত্মনি পরমাত্মনি আত্মান<u>ং</u> **শী**যাত্মান• নিবে**শ**্যএকীকৃত্য সভী-মা: উপারমৎ মৃক্তিণ গতবান্। নি-ষ্ণে নিৰুপাথৌ বুন্ধণি সংপদ্যমা-ন মিলিত আজায আলক্ষ্য ত न्य जीयाम्य निर्ह्यभाषीनि मः ऋाद्रा-দীনি সংপরে তস্য সম্যক্পরে তস্য মুক্তস্যাপি। ভার্গবেতি শৌনক্স্য সংখ্যাধন । এবঞ্চ এতেখা মণি ত ख्य कर्मा विज्ञ विष्ठा विष्ठ পদস্য পিতৃপদস্য চ মজ্ঞাদিয়ু যথা यथः वाठनिकज्ञाटः शुरवागः अञ्चह তে। আসমমূত্যুনা দেখা গৌ: সবৎ ना ह भूर्वद् । छम् छार्व ह भोरत्रका ।। य र द्या विकृ मूर्वातिनामा छ् ।।

नब्रकाषाद्रभार देव ॥ जना यहि ন শক্ষেতি দাতু বৈতরণীঞ্চ গাড়ী भक्ति। श्ता १ कक् छमा म्या 🛖 ध्या पर्वाग्रजना ह ॥ भूईवाष्ट्रम শৃকাদিনা। অত্র মৃতস্য চেতি শু वनाद अकामणार्शिय उत्री मा नागद्रः ॥ वनभद्गी । जार्थः भुक সতো মিত্র• ভার্য্যা নিত্র• গৃছে সং তঃ। আতুরস্য ভিষ্মিত্র দান মিত্র• মরিষ্যতঃ।। বরাহপুরাণে। ব্যতীপাতো হথ সংক্রান্তি স্তথৈব गुरुगः द्रावः। भूग्रकावा उपा मार्ब যদা মৃত্যু ৰূপস্থি জ: ।। গো ভূ তিল হিরণ্যাদি দত্ত নক্ষয তানিযাৎ। নিরবকাশবাদত্র মলমাসাদি দো-ষে। নাস্তি সূত্রকনপি ন। তথা চ শুদ্ধিরত্বাকরে দক্ষঃ। সুস্থ কালে-दिन॰ मर्ब॰ मृडक॰ भन्निकीर्खिङ॰। আপন্গতন্য সর্বস্য সূতকেপি ন সূতক।। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব।।

মুর শ বেষ্টনে। ইতি কবিকল্লফমঃ ॥ भवर्गामवापिः। म गुत्र छित्ऋ॰ লভা। মোরিভা। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ মূর॰ ল্লী বেষ্টন•। ইত্যমরটীকাযা• ন্থুরেশ:॥

मूत्रः म् रिकावित्मयः।इजित्मिनी

भूतगर्थः भू ेवत्रथः। वर्गक इेडि ভাষা। ইতি জটাধরঃ॥

মরা

মর্জঃ পু॰ মৃদক্ষ:। ইত্যমরঃ।। अवक्षाः श्र शनमव्षः। इंडि ত্রিকাওশেষঃ॥

गूद्धः शुः नम्भाकतमः। उप्पमस् পু• ভূরি। ইতি ছেমচন্দুঃ॥ ्त्रन्त्रना छी नर्यमानमी। इंडि जि-কাণ্ডশেষঃ ॥

লুরমর্দ্দনঃ পুণ বিষ্ণু:। ইতি পুরাণ।।। মুররিপুঃ পু বিষ্ণঃ। ইতি শদরত্না वनी ॥

मूत्रन। स्त्री नर्मात्रानरी। ইতি विकास শেষঃ ॥

मुब्रनी खी स्नाम्थाजम्बिद्रदान्। ত্তৎপর্য্যায়ঃ। বংশী ২ বংশিকা ৩ বংশনালিকা৪সানেফিকা৫সানেশী ৬ লানিকা ৭ সরলাসিকা ৮ শেষ চত্তপ্রধণনাবি।ইতিশবররাবলী गुत्रनीदवः भुः 🗐 क्यः। इंडि नयः ब्रज़ावनी ॥

गुत्र शं भुः दिष्टः। ইতি एक् महन्तुः॥ नूता जी चनानथा उनक्षुवाः। ७९-পর্য্যায়ঃ । তালপণ্যি ই দৈত্যা ৩ গন্ধস্টা ৪ গন্ধিনী ৫। ইত্যমর: ॥ षम्। बगुरायमा ख्नाः। बावसी ब्रक्षा खुत नानिषु । ই ि बाज

वल सः ॥ त्राजनिर्धाणोक छन न-र्ग्यायो भूजामास मुष्टेरवरी ॥ मुद्राद्रिः भू । अन्। वृष्ट-পৰি যথা। মুরঃ ক্লেশে চ সন্তাপে कर्माखागि ह कर्मिना । दिन्छ। खिद

২প্যার স্তেবা• মুরারি স্তেন কীর্ত্তিতঃ ॥ ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে ত্রীকৃষ্ণদ্বমখণ্ডে ১১০ অধ্যায়ঃ।। 🗱 ।। অ गऽ स्क्र প॰ यथा। श्रीनात्रमञ्जाह। कारमो मू-द्वाद्रि (र्मवार्ष (मावा याका न् कि॰ न-রঃ দৈত্যে বা রাক্ষ্যো বাপি পা র্থিবোৰা ভদুচ্যতা ।। পুলস্ত্য ট্রা-চ। या २८मो त्रजः मञ्ज्याया ७१ বা॰শ্চ তমোমযঃ। নির্গুণঃ সর্বগো-व्याली मूत्राति म्यू मूमनः॥ श्रीनात-দ উবাচ। যো হসৌ মূর ইতি খ্যা-ত:কস্য পুশ্রশ্চ গীয়ন্তে। কথঞ্চ নি-হত: সংখ্যে বিষ্ণুনা তদ্বদন্ত্ব মে ॥ পুলস্ত্যউবাচ। শ্ৰুযতা কথবিষ্যা-নি মুরাস্র নিবর্হণ । বিচিত্র মি-ह्माथ्यान भुगा भाग भुगामन ॥ कम्राशास्त्रोत्रमः गूष्णा मुद्रा नान महावनः। न परमं द्रारामं सु দিভিপুথো ২সরোত্তমঃ ॥ ততঃ न नद्गान्डीठ उथ्वा वर्ष गगान् व-ष्ट्र **यात्राध्यामाम विख्॰ व्यक्रा**ग নপরান্ধিত । ততো হস্য তুষ্টো

गृह

वब्रमः शाह वट्म वद्गः वृत्।। न ह ববে তদা দৈত্যো ধরমেন পিতা মহাৎ। য॰ য॰ করতলেনাহ॰ স্পৃ-(भर जगद विका। ज ज नष्ड ज•म्भृष्ठे खुनद्वाभि भि्रवज्ञा। वाष মৃক্তা স ভগবান বুক্ষা লোকপিতা মহ:। ততো ২ভাগান্মহাতেজা मृतः मृत्रिगिति वनी। कगाम धर्म व्राकान विष्कु म्ख्रानिन ॥ मूत्र उवाह। यम शुका अभ्यमनामि वृद्धि कर्जू मर्शम । (नाटिखवाम) हि दार गृक्षान भाउर ज्वा। ভমাহ ধর্মাজ্বাক্য যদি মাং স•যমেন্ডবান্। গোপিতাসি পুরা **সত্য: করিষ্ট্যে বচন: তব ৷! মুর** স্ত নাহ ভবত: क: স यस वस्य ना । অহণ তঞ্চ পরাজিত্য বার্যানি ন जःभगः ॥ यम खः शुाह माः विकृ र्प्तर क्रक भराधतः। त्यञ्ची भनि वानी यः ज नाः जःयम् छ १व प्यः ॥ ইত্যের মুক্তো বচন দুক্ষান্ধি নগন मुतः। उमागठः भार मूल मधूषः প্রাপ্তোসি কেনাসুর কারণেন।। স **পাছ यूकः मह दि ज्याम्य उः भा**इ ख्यः मुद्रमञ इस्रा। यही इ ना रया দ্ধু মপাগতো সি তৎকম্পতে তে क्रयः किमर्थः ॥ क्रवाज्वरमात्र

मूल मूक् देव जिल्लाव (याट्राम) मङ् কাতরেণ। ইতেऽব মুক্তো নধুসুদনে-न मूत्र उपा (ब क्राय व इउकः॥ कथ' नू कष्णि ि मूह छाताका नि-পাত্যামাস বিপন্নবৃদ্ধি:। হরি फ চক্র নৃদু লাঘবেন মুমোচ ভক্তস্য শিরন্ত শতোঃ।। চিছেদ দেবান্ত গাতব্যথা ভবন্ দেবং পুশংসম্ভি চ পদ্মনাভ । ইতঃ পুসিদ্ধ সমূপা-জ্ঞান মুরারি রিভ্যেব হরি ম-হাআ।। ইতি বাননে ৫৭। ৫৮ व्यवहायः ॥ 🕸 ॥ व्यनचंत्राघतगृष्ट-कर्ता। यथा। अखिभोनुमाऽरगाव সন্তুত্স্য মহাকবে ভাউ প্রীবর্ত্ত भागाञ्चमा उद्यन्ती ह्रयनम्ब-भागता व नाग्रवयमा करवः कृष्डि त्रनचंत्राचतः नान नाहेकः ७९ शुगु-প্রানা: সামাজিকানুপামহে। ইতি **उ**ष्टक्**ड** नार्विश्रम् ।।

गृहं न्त्रा (मार्ट् ।। উছুर्य। ই डि किविक्स्मियः ॥ প्रवश्मिषािषः । स्वी। उन विश्विताङ्गालाशः म्ः मृतो म्द्रः। जा मृहिङ गृर्ङ (उन। (मार्ट्) ज्ञान त्रिङ्डी जावः। উছু।-जिलः। गहंडि (त्राशी। मुम्हं विश्वा कर्ना हेडि मृशापातः॥ मृर्डिनी जी अक्तात्रशानिका। ইতি भद्राम्युका॥

सूत्रं भ् ज्यापः ॥ मयशः॥
त्रविवािकः। ইতি मिनि ॥

মূর্ব ঈ নছে। ইতি কবিকল্পড়ম: ।।

তাদ্য: পঞ্চমস্বরী।। মৃ: মূরে মূর:
। নহো বন্ধন:। ই মূর্ণ:। ইতি দুগাল্

মূল ক রোপণে। ইতি কবিকল্পজনঃ

। রোপণ আংরোপণণ। ক মোলযতি কৃক্ষণ লোকঃ। গোবিনভেউস্ত রোহণে ইতি পঠিত্বা রোহণণ
কম ইতি ব্যাখ্যাতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

भूगणी जी निउक्ट्रः। इंडि ह्र्स-हन्द्रः॥

মুশ্লিক। দ্রী পল্লী। ইতি হ্লা-

मण्ली खी शली।। ठावम्ली।
ठ श्मणी खी शली।। ठावम्ली।
ठ श्मण्यायः। मृदश २ ठावमिक
का ० गाधामिती ८ रहमभून्नी ६
ज्ञाली ७ निर्यक्तित्का १। ज्यम्।
छ गाः। मध्यद्वः। मी उद्वः। त्युः
द्वः। भूष्टि दव श्रुरद्वः। निह्निद्वः।
क्करद्वः। भिन्न मारु म्प्र ह्यद्वः
।। मृण्ली ७ दिथा (भाका ह्युः।
ठाभत्र मः छ का। (का द्वा द्वा छ।।

পেতा जाभद्रा ह द्वाग्यनी ॥ ३६७ द्वाद्यनिर्घण्डः ॥

मृष यहा । इंडि कविकद्गक्यः ।।

स्मावि । इंडि पूर्णामानः ॥

मृष यहेत हि मि । इंडि कविकद्गक्यः
॥ हिम इंड थंखनः। य मृष्ठि वि
भक्षः प्रजूतः। इंत व्यम्पद व्यामायीद व्यमाद भृष्यामतामित्राधिव्याद भृष्यामतामित्राधिव्याद भृष्यामतामित्राधिमृष ग व्यादा। इंडि कविकद्मक्यः॥

मृष्य ग व्यादा। इंडि कविकद्मक्यः॥

मृष्य ग व्यादा। इंडि कविकद्मक्यः॥

मृष्याडि । इंडि पूर्णामानः॥

मृष्याः भृष्ती व्यायागुः। इंडिम्न
होकायाः खत्राः। महाम्मान्याः

णकाया॰ जज्ञ जः ॥ म्लाग्यका स्वानि ।। जूयका मूयका वर्षः भूयका मृद्यका -क्षा भूक्ष अपूक्षः वृद्धः। इद्धि जिल्ला-खको मूमी ॥

भूवनी जी जानम्निका॥ गृह्णा-धिका। इंजि मन्द्रद्वावनी॥ स्वन्धः जि भवनवधः। इंजाप्तन-होकायाः खद्रजः॥

मूर्वा की ग्रा। मूठी इंडि डावा।
इंडिंग्सब्रीकायाः सायमूक्टः।।
मूर्विड॰ जि हात्रिडमुत्रः। उद्

নৃষ: পূ॰ অগুকোষ:। ইভাগর:॥
নোক্ষকবৃক্ষ:॥ স•হাতঃ। ইতি
নেদিনী॥ তক্ষর:॥ মা•সল:।

ইতি হেমচন্দুঃ ॥

मूककः शृ वृक्ववित्मयः । श्राप्ता-পাৰুল ইতি বঙ্গভাষা। মোৰা इंভि हिन्ही जाया। उद्भर्यप्रायः। (गानीहः २ साहेनः ७ चन्हानाहे-লি: ৪ মোক্ষ: ৫। ইত্যমর: ॥ (नाक्षकः ७ मुद्रः १ (माठकः ৮ मू-क्षकः ৯ शोनिकः ১० महनः ১৯ ক্ষারবৃক্ষঃ ১২ পাটলী ১৩ বিষাপ रः १८ जिंगाः १९ वनवानी १५ मृजीक्षकः २१। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ (गानिश: >৮ कात्रामुध: >>। म जू পলাশবৎ পর্বত বৃক্ষ: ৷ খেত কৃষ ভেদেন দ্বিবিং: । তস্য গুণা: । क्षेत्रः। ভিক্তব্रः। गुाहित्रः। উक ত্ব। কফ বাত কারিত্ব। বিষ মে-দো গুলা কণ্ডু বস্তিরোগ কৃনি শুক্র নাশিত্বধ । ইতি ভাবপুকাশ: ॥ রেচনত্ত্ব । পাচনত্ত্ব । প্লীহোররা র্ত্তিনাশিত্বঞ্চা ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। মুদ্ধর: পু• পুলয়াণ্ড:। ইতি হেম-हन्मुः ॥

मूक्ष्मनाः भुः व्यात्रहिजः। म ज् त्राख्डा २ छः भूतत्रक्षकः । (थाका केजि ভाषा । उद्भर्यग्रायः । अनु शक्षः २ जीत्र ভारः २ गरु स्निकः ८। केजि भरागाना ॥

मृष्टिः भू जी भवभित्रमानः।। 🦪 তোলা ইতি ভাষা॥ বন্ধপাণি: मुष्ठा इंडि ভाषा। एट मर्यप्रायः সম্পিণ্ডিতাঙ্গুলিপাণিঃ ২ মৃকঃ मृष्णि । इंडि (इम्म्मः ॥ १ 🔻 थएन प्रमूहे इंडि ভाষा। इंडि ८ नी ॥ वक्ष्रश्रेजागः । इतिकः ভाষा। यथा। अष्ठेमृष्टि छर्तरः इ किः अक्षरगार्छो ह भुष्ठनः। ं िङ **প**ायकि डंडब्र ॥ (नायन । 🚉 🥸 मुष्यापुर्य मर्मनाट ॥ भूशात्र विका ষ:। কীল ইতি ভাষা । যথা 🛭 চিছেদাপতত শুস্য মন্নরণ নি 🖮 **তৈ: শ**রৈ:। তথাপি সো **୧**ভ্রা-वङ्गा॰ गृष्टि गृह्यगुर्विगवान् ॥ मः बृष्टि॰ পাত्यानाम ज्ञानत्य रेम 🤫 शुक्रवः। प्रवता उक्षांत्रि मा प्रजी তলেনোরস্য ভাডয় ।। ইতি মার্ক (७वनुद्रानः॥ श्रा निष क्या उन्। जिनारीना मूडि गुरुए होर्ग्डा-वः। यथा। जिल मृत्त यवासीना॰ *नु* 🕏 गूर्ण भिष्टिउः। क्यार्किन ন্যথা বিপু বিধিবিচ্চি রিতি 🔯 তিঃ ॥ ইতি কৌর্মে উপরিভাগে ३८ व्यथ्रायः ॥ गृष्टिकः भू कः मद्राजमस्रविष्य

्रेति श्रिजागवजः ॥ सर्वादः ।

ইভি হেমচন্দুঃ।।

वनामयः। ইতি मूर्श्विकाञ्चकः शूर नद्रशादनी ॥

मु के मूजकी जाविष्मयः। भावा॥

শুষ্টিন্ধয়: পু॰ বালকঃ। ইতি ত্রিকার্ড শেবঃ 11

्ष्टिवकः पृ॰ न्ष्टिवकनकिया। नूषी-॥ বাঁধা ইতি ভাষা। তৎপয্যাবঃ। ज•ुगुरुः २। ইত্যনর: ।। মৃষ্টের্বন্ধৌ २क्षांन विन्यारमा मृष्टिवक्षः। मृष्टिः ন। বন্ধে। দৃঢ পুত্ৰ সংপ্ৰাই ইত্য-পরে। নৃষ্ট্যানেব সংগৃহ ইব্যুন্তৈয়। মুষ্টি: ব্রিযাঞ্চ সংগৃহ ইভি বোপা লিতঃ। ইতি ভরতঃ॥

। होग्छि वर महाग्रि। मूहिनिम् প্তিভিঃ পুছ্ত্য यह्य 🛪 नृत्तः তৎ। কিলাকিলি ইতি ভাষা। ইতি मुक्षावाधवताकव्याः ॥

্ষিকঃ পু॰ রাজসর্যপঃ। ইতি রন্ন মালা।। ব্যষ্ট ইতি বা পাঠ:।। नमः य इत छिनि। भाषान। इंडि कविकन्नकमः॥ य मूनः जि विश्रकः Dog: । इत अगुन्य जानामी । वियाद भ्वानिवावित्राः अन्देकाः

ल्या इंडि मूर्गामामः॥ भूमनः भू क्ली बनामथा। उउ थुना-रिक अनार्थ निर्मित लो शागुगिष्टै:। **७८ मर्गायः। जायारगुः २। इ**ङ्का भूतम्हित्थला इंडि ভाषा । उद- भन्नः ॥ मूचन- ७ कंखनी हलः । भग्रायः । क्कूलकः २ । इंडि नदः 💎 ইंडि नद्देश्वावनी ॥ मूम्रार्डि गूनः । जः गुन विक्रिंग नामी**ि कवः** । ग्रेमला एउँ। मनातः। अर् गृया हिनि विभूतनां डाट कनः मूर्तन ं नाः यकात्र 🕶 । ইত্যাননটোকায়া। ভ-

> म्यनी खी जानम्निका ॥ गृह्णाः ধিকা। ইত্যমর:।। मुमनी भु॰ वनारकः। इंडानदः॥ मूननाः वि मूनलमवधाः। इज्जः मतः ॥

त्रजः ॥

মুস্ত ক সংহতৌ।ইতি কবিকল্লদ্যঃ ॥ পवर्गाणवाषिः। क मूखवि । ইতি দুর্গাদাস:॥

मुख: भू भन्डकः। इंडि हातावनी ॥ মুন্তকঃ পু॰ ক্লী ত্ণমূলবিশেষঃ। मुडा इंडि ভाषा। उद्भागागः। **अ**क्विन्तः २ (म्यनामा ० म् छ । ८ । इंडानदः॥ नषः ६ द्राह्मकरम्बः ७ । इंडि हातावनी ॥ (म्याथाः १ गारम्य ৮ ज्रुगछक २। इंडि রত্ননালা।। অস্য শুণাঃ। তিক্তবুং।

कहें देश वाय्नाणिष् । गुरिष् । ही भन देख । इंडि ता बव खंडा ।। खिल है। मूछक ने खिया मूछ विष् वाति है नामकः । सक् विनर क में थाएडा रुभद्रः कात्रकरमक कः ॥ छन्मु छ है क्या है जा नागतः मूखकः। मूछ कहें हिम गुहि डि-क है भिन भाहन ॥ क्याय कक भितामु छ इताक है बड़क् । खन्भरण यद्धां क मूहक छ र भुणमाए ॥ ठ्याभि मूनि छः भुग क वत नागत्र मुखक । ইंडि छाव-भुकाणः ॥

भू छ । इ। वत्र विवर छ । । ই छि (इस ह न्युः ॥

मुखा खी मुखकः। ইত্যমরः॥
मुखानः शृ॰ म्कतः। ইতি क्रोश्यतः॥
मुखानः शृ॰ म्कतः। ইতি क्रोश्यतः॥
मुखानः क्षी मुखकिरिष्णयः। नागत
मुखानः क्षी मुखकिरिष्णयः। नागत
मुखानः हि जाया। তৎ পর্য্যাযः।
क्षीमोने २ পূর॰ २ वल्यः ८ পরি
পেলব॰ ৫। ইতি রত্নালা॥

गूरुः भू॰ गृष्टिः। ইতি ह्महन्दः ॥

गूर्यः नी मुमलः। म्मधार्या दोगाः

पिक द्रक् भुज्ययन निद्यमः। ইতি

मिक्षान्यकोगूर्याम्गारित् दिः॥

गृष्ट् य ৯ উ ঞি বৈচিত্ত্যে জ্ঞানর

হিতীভাবঃ। য তেন নৃজ্তি টি॰ রায নে মনঃ। ইতি নুরারিঃ। উ মোহিষ্যতি মোক্ষ্যতি। ৯ অনুহৎ । ঞি নৃথাঃ ন্ঢো হন্তি। ইতি দুর্গা-ধাসঃ!।

मूरितः १० कामः॥ ग्र्थः। ইঙি

(मिरिनी॥

मुद्रः रा भगः भगः। ইড। दिः।।

मूर्डः भू हो घारणकाभित्रिनिजः कालः। ইउध्यतः ॥ घरिकाघः । **ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ।। দিনপঞ্চলা-**ভাগৈকভাগ:। यथा। প্রাতঃকা-ला मृह्डां॰ जीन मक्त छावानव जू। मधाश खिन् इं महामन्त्रा-इ खडः भर्रः । मायाइ जि गृष्डीः **স্যাৎ শাুদ্ধ•** তত্র ন কার্যে**ৎ। রা**• ক্ষ্মী নাম সাবেলাগহিতা সর্ব ক-র্মাসু ॥ ইতি তিথ্যাদিতজ্বৃধ্ তব্চন• ।। #॥ কম্ম বিশেষে তস্য পরিমাণ• যথা। ননু বুতোপবাস স্থানাদৌ ঘটি কৈকাপি যাভবেদিত্যত্র ঘটিকাপ-দ দণ্ডপর নছ্ত্র পর বা মৃত্যা-চার ধত চত্দগুজুকাৰণোদ্য-জ্ঞাপদে চত্যো ঘটিকা: পাত

शृष्ट्ड

ब्रक्रानिय हैउउठ इंड्राप्ति भुड़ा-**उ घ**ढिका यूग्न॰ भुरतास घढिकाब-मः। दिनव अर्व कार्याण कात्रयम বিচার্যেদিতি হলায়ৰ ধৃত লিখি-ষ্যুমাণ ত্রিয়ালা নিতি বচনযো রে: क्रम्मारगाम्ह উভाज शुरगाग मर्म নাদিতি সংশয:। প্রত্যেচ্যতে। শা স্থাপাবন্তগানিনীতি ঘটিকা নিশা-মক বচন চতুর্থ চ্যাণে পারণ যো गाउवा घटिकावा मूर्अञ्चलक्षा वना मकीकात्राए जाए गर्ग नात বেন বুতাদাবপি তথাত্ব । 🖘 🦻 रिककाभागावामा भुविभटम्म (ह म्बरा। नर्बः उनानूबः नानः रेन्द कर्या । हा कि विका न्त्रन निमरामि उधार यकिकालार छ कर्णार्हि वक्तवा मूर्व ननाना বাস্যা পুতিপৎস্ ভবেদ্দা। ত-मान मुख्य (ज्वय (नय भूव हि **প্**र्वविष्ठितन भूशृंखनाट कर्णा-ৰ্হ্ব জ্ঞাপনায়। ত্ৰাপি নুহ্ৰঃ কি তভদিবারাত্রি পঞ্দশাংশ **উठ म् ७** इय॰ । नाम्रः भूजिमिन দিবারাত্র্যা হা সি বৃদ্ধিভ্যা ওন্তা गानामित्र न् । नाविक । विश्व (कृताः পতে:। নাপি দ্বিতীয়: দণ্ড দ্ব্যুস্ত बिः मफ् अञ्चल दिवादावि शक्त

भाष्ममा मूर्डंब्क मखबराधिक न्। न कालाना मिल जिः नम् अधिक न्रम **रिवादाि अक्रमाःमानाः ग्र्**खंद <u> भुजिभादतन विनिगमनावित्रहा८</u> किञ्ज्ञत्रक्ष्या कर्माक् रिवाद्राज्यः न्। जब्र नकरमाः मन्। गुर्ग नुम-की व्यवनाः न कत्माता उद्गावत भू-बार दिनमान मनाए यप्रिमें जिन् थानाः शक्षरणाः णम् आरमात्र म्ख षयमः मूर्वदाखः एव विश्विः किः যাসং ভাবদুনে কালস্যাপি সূত্-ণাৎ সৰত্ৰ ন্যুনকালব্যবছেদে আৰ-শ্যকত্যা তদৈয়ৰ পাছোন ছণ্ডছ-याजा मना गृर्खना गुरुष नाववाद । यहा ठजुफनी यान॰ जुतीय मनून्-द्रायट । जनावामा कीयमाना ज-দৈব শাহ্ম মিষ্যত ইতি কাত্যায়নো-ক্ত স্যুচতৃদ্দশী সম্বন্ধি দিন চতৃর্থযাম মাত্র ব্যাপ্য মাবাস্যাযাণ শুদ্ধবি-খানস্য মৎস্যপুরাণোক্ত মুখ্যাপ-রাহ্মীয় মুহূর্তাবাধেন বিষয় লাভায় भारतान मल्डवराजाक मृजूर्व गुरुन-म्यातम्यक्षाह । जामृनामावाम्या-যা• তদধিক মৃখ্যাপরায়। সম্ভবাৎ । তত্রচ मূখ্যাপরাহ্মীয় পাদোনদণ্ড দ্বাত্মক দর্শলাভস্ত চত্ত্বারি•শৎ প-वाधिक जनजिः भए शाजाक पिरम

এর। অভএব মার্ভভটাচার্য্যের পি খদা চতুদলী ধাৰ নিত্যস্য ব্যাখ্যা-त्व जिथातिष्ठरषु उथा विथितः। न ্চ নিৰ্ভ লক্ষণাতো ৰুচ শক্তে বঁলব ভাৎ।ভান্ত কিশৎ ক্ষণ তে তু ম্ হুৰো বাদশান্তিবা<u>া তেতু বি</u>শ্ব-দহোরাত্র ইভ্যমরোক্তো দ্বাদশ ক-শামুকঃ অহোরাত্র ত্রিংশাংশো দ-अन्यक्त मूज्र्बा लाय्य अर्वजाः नूगउउगा न्रानकाल वावरहरूका ৰুক্তব্য ইতি বাচ্য নিৰুচ লক্ষণাপি শক্তিত্ল্যেতি শান্দিক মরণাৎ মার্ত ত্বেনান্তরঙ্গেতি সন্নিহিতে বুদ্ধি রন্ত-ब्राक्षि ने अयाह निकार विकास यो वि ত্র পবিত্র পদস্য জ্লাগত কোষোক্ত ক্টি শক্ত্যপেক্ষ্যা বিশিষ্ট স্ক্লপত্ৰ দ্বা গত কাত্যায়নোক্ত নিক্চ লক্ষ-ণাযা ইব। নিৰুচ লক্ষণাযা: শক্তি তুল্যন্ত্ৰন্ত কচশক্তে রিব শক্যার্থ বাধ জ্ঞান• শক্য সমন্ধ জ্ঞানঞ্চ বিনাপদ তাৎপর্য্য জ্ঞানানুপদ মেব পদা থোগস্থাপকত্বাৎ। সাচ নিক্চ লকণা কুটিভাৎপৰ্য্য বোৰত শা खाः, प्रकार्य भूषागरा १नामा मिन नियो बर है। वेख इस मुनिरमाः भक्षभाभाजि स्वृङ निक्ष

गुर्खे शरणक्या विनिगमनाविष् গৌরবাভ্যা মেব স্বপ্তিতা অভোত্তা न्।न পাদোন দওব্যাত্মক মুহ্র रगमणका भाषा व्यथा जाउन म्हानः ৰা সৰ্বানুগমায তদ্পুহণ নিভি চে পাত্যভাষিকত্যা সপাদ দেওছুই ত্মক মুছ্ৰ্ৰ সৈত্ৰ জ্ঞোন গুহুৰ मार जमार भुजार पिकायुर अस्तार विविकाषयः। मिनवट अ कार्यप्राणि कात्ररयम विषात्ररयमि वयुरातीञ वहन जियायाः त्रक्री প্রাহ্ন ব্যক্তাদ্যর চতুষ্ট্রয়ণ। নাডীনা দুভে সঙ্ক্যে দিবসাদ্যন্ত সংক্তিত ইণি वुक्ररेववर्छ नजनामा (ब्रक्वाक्रडः म् अत्रयाञ्चक काल्य घिकाशम वि क्रानक्षा मिल्को उदा भर्यप्राय हा। কোষেক্ত ৰুচ্যা চ সমঞ্জনতঃ পা র্বণ যোগ্য দণ্ডদ্বযাত্মক কালএব হ টিকাপদাদপস্থাপ্যতে অতঃ সহ नाशांतराधन म्धनकाल व्यवस्ति। সৈব গুাহ্যা লাঘবাৎ। অতএব যদ। हजूरंभी यान जतीय सन्भृत्रयिकः ত্য वरा यव हित्न व्यवादान्। मु थ्यानवाङ्गीय मध्ययान्यनकानवाः भनः यथा महाखरेष्य ठजुर्फणी याः च॰ ज्युक ज्यायाम मन्त्रकोकः डा उत्र शुर्गा हरूर्यनामः भ्राय**र**

्बहार्ल्या जै छान्नसः। व्यनप्रधान्त्रकृषी-শ মহ্র্তিধিক প্রণাভিধান ব্যর্থ ज्यार । এ:उरेनर मर्ममास्त्रिका भागताङ्गापतः कार्यः। भाउः কালাদি পঞ্চধা বিভাগে জতপা-नि अ छा या अ हिनमान शक्षर मा भ जूर्ड रिमाद गुरुष । उत्हा ধক শাত্র সংবাদাৎ। অত একো-शिष्टे रिनमान शक्षरणांण मूक् ्यं। रवाभाउँया ह न्।न काव याद-্যুদকো গুাহ্ম: ব্রুতপরৌহিণান্য ত্তর মাত্র পাছক মুক্তে:। এবং বি-**শবাভিবানাৎ সুখরাত্রৌ দওনা**

बचाडे(न)कामभी बामभीयु ह ক্ষলা কাষ্ঠা কংপাপি পুতিষ্ঠানে জুক্ত যুক্ত্যা স্বযোগ্যকাল এব ন্যুন দাল ব্যবস্থেদকো গ্রাহাঃ। তভক্চ বিশেষকাল প্রাপ্ত কর্মেতর কর্মণঃ नुभरापिकाल श्रामा प्रधन्या-বিধিঃ সর্বসামঞ্জস্যাদিতি তত্ত্ব । ইতি চন্দুশেশর বাচম্পতি কৃত ছৈতনিগ্যঃ ॥

্হরঃ পু॰ নূর্থঃ। ইতি সংক্ষিপ্তসা রোণাদিবৃত্তি:॥

वस्ता इंडि कविक लुक्षमः॥ म्नापानः ॥

भूईशाउा

े किया निम्नम्। इंडि मुक्तवावव्रा-क्रवा ॥

মূ: জী বন্ধন। ইতি সিদাতকৌ; अभी ॥

मूकः जि बाक। द्रश्चिः। वाया दैठि ভাষা। তৎপৰ্য্যায়:। অবাক্ ২। ্ইভ্যমর: ॥

म्कः भू॰ मरमाः। ই**डि**बिकाख-**भ्याः ॥ रेप्तज्यः। इजि स्मिप्तिनी ॥** भीयः। ইতি (इन्हर्मुः ॥

মৃচ:্ ত্রি মূর্থ:। ইত্যমর:।। বাল:।। **उन्मिनः। इंडि मिर्मि।। बंडः।** इिंड (रमहस्पु: 11

गुजः वि यक्तः। ইত্যমরः॥ মূত্র তক পুসাবে। ইতি কবিকল্প-क्यः ॥ नीषी । मुबयि मृबाभय-তি। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

ন্যুনক তিথিরেব গ্রাফেত্যমুগত মূত্র ল্লী উপছনির্গতজ্ঞল। তৎ-भर्यप्रायः। भुभावः २ । इंज्यब्रः ॥ মেহনৎ ৩। ইতি জটাপরঃ ॥ ওহা নিস্যুদ্ধ: ৪ সুবণ ৫ সুব: ৬। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।াঞ্চাতস্যোৎসর্গ বিধি র্যথা। দিবা সন্ধ্যাস কর্ণছ বুক্ষসূত্র উদ্ভাৰ:। अर्ग्राम्ब भूतीरि ज् द्रात्वो देव मिक्कगामूथः ॥ इंछि

গাৰুডে ৯৪ অধ্যায়ঃ ॥ ছাপিচ। 🖁 म्बाहात नमर्मर् दिवा अर्यापु-॥ म्यूथः। मकिना जिम्राथा ताली जन्न्याम्ह यथा दिवा ॥ इंडि मनूः ॥ क्वा यरङ्गाभवी उद्ध भृष्ठ ३: क প্রবিষ্ঠ । বিষুত্তে চ গৃহী ফর্ব্যা-দেহা কর্ণ সমাহিতঃ ॥ ইতি য়সঃ া যদ্যেক রজো যজ্ঞোপারীক্ত কর্ণে কৃত্বা অবগুণ্ঠিত ইভি। কর্লে দ किंग कर्ण। इंडि जा थायनः॥ ष्ट्रायाचा अक्रकात वा जाजावहिन वा विकः। यथा मूथ मूथः अर्ग्राट পু।ণবাধ ভহেবুচ।।।। নমূত্র প-थि मदी उन जमनिन लाजुरज। ন ফালকৃষ্টে নজলে ন চিত্যা নচ পর্বতে ।। म জীর্ণদেব্যয়জনে ন ব न्मीत्क करेगाइन । म ममाजुरू गरखंश न गहबालि मः इंडि:॥ न नदीजीत নাসাদ্য সচ পর্বত নস্তকে। বাযুগ্ন বিপুনোদিত্য মপঃপশ্য• স্তথিব চ न कराष्ट्रम श्वीं उ विश्व बन्ध বিবর্জন•। ইতি ননঃ।।#।। আহার নিহার বিহার যৌগা: সুসম্ভা श्य विषा जू कार्यताः । वाग्छछि কার্য্যাণি তপ স্তথৈব ধনাযুষী গুগু তনে ত্ কার্য্যে॥ ইতি বশিষ্ঠ:॥ নিহারো মূত্র পুরীবোৎসর্গ:।।#।।

(मामागुर्काष्ट्र वाग्ना॰ भ्कानाक न मःगूर्थ। अर्यप्राट् होवन विन्रू ब সমূৎসর্গঞ্চ পণ্ডিত: ॥ ইতি বিষ্ণু-পুরাণণ।। নচ সোপানংকো মূত্র-भूबोरव वर्गामिछि। ইত্যাপछम्ः श করগৃহীত পাত্রেণ কৃত্ব। মূত্রপু-রীবকে। মূত্ত্ল্যন্ত পানীন পী षा हान्सायनकात्र ॥ इं उ वृहः ः মৃন্: ॥ 🕸 ॥ গৃহীত জলপাৰস্য मृत्जार मार्ग (मार्या यथा। वाति-পাত্র করে ধৃত্বা নূত্রণ ত্যন্ত বো নর: : সরাপাত্র সন্ পাত্র ডজে-चः गहिता **সম• ॥ इं** कर्या**ला**-**চন• ।। 🕸 ।। ज भद** मृबज्ञ (पारा) यथा। भिःसाः न मद गृबाः नूर নুপা নিশেক ধার্যা। ভোগাট্যাঃ সনজঠর। নি: ষাঃ সুগ্র্ঘট সমিভাঃ ।। ইতি গাৰুডে ৬৩ অধ্যায়: ।। 🕸 ।। বিঞ্কান্তাভগুত্রেণ চৌর ব্যাহ্মদি রক্ষণ । ইতি তত্ত্রৈব ১৮৮ অধ্যা-यः ॥ 🗱 ॥ অথ গোন্তভণা: । তী-কুর্ণ। উফর্ণ। লবণর্ণ। পিত্তকা-तिष्- । करूष- । वयुष- । ककष- । কৃম্যুদরানাহ শোথাশো বিষ কণ্ঠ নাশিত্ব। ইতি রাজবল্লভঃ॥ म्बक्षु की द्वागविष्णयः। उद পर्यतायः । मूखंदबायः २ जन्मती ०

क् हु । इं जि जा जनिर्घ छैः।। का। व्यथ भ्वक् हु।विकातः । তত ग्वक् हुनः विनुक्के निहान गाह । वशकाम-की क्षोयन कक्षमम्। भुमन न्डाम-**७ न्४गमार । जानून मर्नायर** শবাদলীৰ্ণাৎসূত ম্তিক্ ছ্বাণি নৃণাণ उथाद्धी ॥ जीक्कोयथ॰ ब्राबिका॰ भूत्रगामि यूकः । काक्किंछ सम्। वि-লেষণ । পুসক: সতত সেবা। न्डा॰ नर्खन । निर्डाउ विजीयः भार्तः। कड शृष्ठगानाट व्यापारिना श्रमनाए। चान्शः भुष्ट्रबङ्गः (रण ভব• ভক্ষ্য• । অষ্টো বাতিক **পৈ** कि है भिन्निक मा बिना जिक मना क পুরীষজ শৃক্জাশারীজানি ৷ তস্য ्यः भाषि भूर्वकः वक्षागार। भृषः ष्यानाः स्थः स्थितः निमारेनः मर्द ২থবা কোপ মুপেত্য বস্তো। মূত্রস্য मार्गः পরিপী एयंडि यहा उना मृबवः তীহ কৃ ছাৎ॥ৠ।তেষু বাতিক মাহ l তীব্যুক্জো বঙ্ক্ষণ বস্তি মেট্ৰে স্বল্প· मूह म्बयजीह दाडाट। जीवा मा-রণা আিকা বঙ্কণা বুরুমে ট্রাণাম ন্তরা व मन्नी॥ #॥ रेशिंडिक मारु। शीउ॰ সরক্ত সৰজ সদাহ কুছ সুহ্ সূ অগভীহ পিত্তাৎ। কৃদ্ধ নিতি ক্রিয়া विष्णवनः ॥ 🗱 ॥ देशस्मिक नाष्ट्र।

वरिः निवन्ना छक् इ माथो म्य निष्ट् कक भूबक्ष्ट्। निष्ट् शि-हिन्। 🗱। नाविभाजिक मार्। नः ৰ্বাণি ৰূপাণিচ সন্নিপাতা েভবঙ্কি उ८ कृ हुजन हि कृ हु । कृ हु । स्वक् हु ।। क ॥ भग ज भार। भ्वता रियू শল্যেন ক্ষতেম্বভিহতের বা। মূত্রকৃ हु॰ उराषाञाब्दायाञ ज्न माकन॰ ॥ वा उक्: हुन जूब डानि उम्ड बिक्ना-নি নিৰ্দিশেৎ। মূত্ৰবাহিষ্ শো্তঃসূণ न्दान क ऐरकन। ऋ उत्र न क जीकृ তেরু অথবা অভিহতেরু মুদ্মরাদিভি রভিহতেষু। তদাঘা সাৎ মূরনার্গ। যাতাৎ নূমকৃ हु॰ জাগতে। ভূশদা-क्ष भारत्क जगा मना क्रमा ॥ ॥ ॥ भूदीयम भारा भक्उस भू ठीवाजाः স্বায় বিশুণতা॰ গতঃ। আধ্যান• বাত म्बक ग्बक् इ॰ करत्राजि ह ॥ शुजी-যাতাৎ নিরোধাৎ। বিশুণতা দুষ্ট-छा॰॥ #॥ मुक्कनार। मुक्तिरि ৰুপছতে মূত্ৰমাৰ্গে বিধারিতে। স मुक गूजरार कृ हु। प्रति भारत मूल বান্॥ উপহতে দূবিতে॥ 🗱 ॥ অ-শ্রীজ মাহ। অশ্রী হেতৃকঞাপি म्बक् हु मुनाइठ । नृमुरेठः भक-রাল নপি মূত্র দুমুক্ত নত্র ভুলস্ত नव मःथा निवासार्थ मन्प्रदी नक्द्र-

रगाः नाग्रगाइ। चन्प्रती नर्जता চৈব তুল্য সম্ভব লক্ষণে। বিশেষণ भक्तायाः भूगू की खंगरा मन।। म ন্তবঃ কারণ । পচ্যমানাশারী পিক্তা हारामाना ह वायुना। विमुक् कक नकाना कहडी नकंद्रा मठा ॥ नि ত্তেন পচ্যমানা মূত্র শুক্ত প্রেম্ম সং रुजिः भूषमः लिखन वद्यन कर्मग পচ্যমানা। পশ্চাঘাতের শোবিতা करकना लिखा अमाती। रेमव विमुक्त ৰুফ সন্ধানা ত্যক্ত ৰুফাল্লেষা সভী भक्ताक्रभा मूख मार्गाए ऋत्रही भ-করা মৃতা। এতাবতা কিঞ্চিদেব ভে मः ॥ सः॥ भक्त्या उन्तुवानाञ् হ্রৎপীড়া বেপথু: শ্ল সক্ষাবগ্লিড দুৰ্বলঃ ৷ ভ্ৰা ভ্ৰতি মূছা চ মূত্ৰকৃ-हक राम्पः। भूषः स्काविकान्यः। खया भक्तिया।। अ। अ।। व्यव मृत्कृ-हुम् । विक्षा । विक्षेकात्र युव पर्छ কাশ যবাস ধাত্রী গিরিভেদ পথ্যা । বিমৃত্তি পীতা মধুনাশ্মরীঞ্ সমীপ म्राज्या त्रिश मृजकृ हु॰ ॥ जिक्छोरि ব্বাথঃ॥ ১॥ একাশ্যভেদক শিলাজ जु (गाक्तूद्राणा (सर्वाक्वीक नवणा ख्य बख्यानाः। ह्वानि उध्व करन তুলিতানি পীত্বা পুত্যক্ষ মৃত্যু রপি कीविं मूबक्री॥ अना निह्र्य ।। रा

অযোরজ: সৃশ্বপিষ্ট নধনা সহ যো জিত । মূত্রকু ছু॰ নিহন্ত্যাশু সংলীচ **मित्रवयार ॥ ७॥ शर**फन मिन्निङ क्रीव्र कर्षेक कामजः शिख्ट। मृब क्रित् गर्बयु मक्तायाक निकाणः॥ 8।। वाजीतम (कक्तूतमः नित्यं। क्-हि महरक भथना विभिन्ने। नन्। कि याजायिक ग्वकृष्ट् कार्या किया मोक्डक् हु ज्वा।। १।। वार्था ला-क्त्रवीजम्। यवकात्रं मनविजः। भी-जः शुणभगराज्यतं क् हुर विख्याद्राणी-থিত।।।।। ত্রিফলানাঃ সুপিষ্টানাঃ কল্প কোল সমন্বিত i বারিণা ল-ৰণীক্ত্যপিবেন্মত্ৰ ক্লাপছ ।। 1! रकालः वनवः॥ खडगानलकः वृष्रुः मुग्राः जर्भगः श्रिनः। शिखामृगाङ् म्बद्धः ग्वकृ ह् **इत** श्वरः ॥ ৮ ॥ **ग** भारमाग वृ्विछा यवकाद्गः **भिछा** যুতঃ। ভক্ষিতো নাশ্যত্যের মূত্রকূ ছু॰ ন সংশ্यः ॥ ৯॥ দ্রাক্ষা সিতোপ-ना कन्नः भीजः कर्यमित्वा नरेतः । मञ्जा भनमार्खन मूबक् हु॰ व्याली-হতি।। ১০।। সমূল গোকুর কাথঃ निजा गाकिक में गुजः। नामारस्यू ত্রকৃদ্রাণি তথৈবোঞ্চ সমীরণ ॥১১॥ উষ্ণ সনীরণ উষ্ণবাত মূত্রাঘাত-বিশেষ। ইতি ভাবপুকাশঃ॥

हिराबः शृ शुत्रहः। इंडि द्राकः
निर्वरः ॥
निर्दाधः शृ भ्वशुडिवस्न ह्रातः
वित्वयः। यथा। भिष्ठे वि भावजी
्व शीचकाल भगाङ्ड । माविङ हागप्रस् भीड भर्तद्रया
विङ ॥ हर्द्रमूजनिर्दाधक हर्द्रदेव
भाञ्जक्राः। इंडि शाक्र ५३३
व्यथायः॥
विज वनः शृ शक्षमार्जादः। ইंडि

्वश्वतः शृ॰ शक्षमाखावः। सैवि बाक्षनिर्यपेः॥

্রপুট• ক্লী নাভেরখোভাগ:। যথ। । নাভেরখো মূরপুট• বস্তি মূ্রাশ-গোপি চ। ইতি হেনচন্দু:।।

र्जिकना जी कर्क हो।। ज पूषी । इंडि जा बनिर्यण्डः ॥

মূত্ৰল• ক্লী ত্ৰপ্ৰ•। ইতি শব্দ চিন্দুকা॥ মূত্ৰবৰ্ত্তকৈ ত্ৰি॥

मूजना जी कर्क हो। इंडि जिका ७ लगरः ॥ यानूकी । इंडि त्राज-निर्मण्डः॥

म्बावाजः श्रुः शुमुावरत्राधकरत्राणः विराणवः। व्यथं मृबावाजम् विशु कृष्टेः मिन्नकृष्टेषः निमानः स्रुःथ्याः ष्णाष्ट्र। शुर्याः मृबविवाजरिम् र्वाः जन्न अनिकामयः । कायस्त्र स्रुशि टि र्निरेष मूबावाजा स्रुश्यामणः॥

মূত্রবিধাতাদৈঃ রিত্যাদ্য শব্দেন পু রীব শুক্রাদি বেগ বিঘাতানা ককা-भनारीनाक गुरुगः। ম্এবিঘাতা-रिन्तः स्निटिङ र्कारेष द्रिङ्युगः। नर्नु নূত্রকৃ ছু মূত্রাঘাতযো: কো ভেদ: । উচ্যতে। ম্ত্ৰুছে ক্ ह् मिषकः विव-ক্ষো হল:। মূতাঘাতে তু বিবক্ষে। वर्णवान् क् हुमन्नः इंडानरण (र्जनः ॥ 🗱 ॥ বাতস্বগুলিকাষা নিদান म•्भाधि• वक्षाकार। (द्रोक्ष्णाद्यग বিঘা ভাদ্ব। বাযু ৰ্বস্তৌ সবেদন:। মূত্র-মাবিশ্য চরতি বিগুণ: স্বওলী কৃতঃ ॥ ন্ত্ৰনল্লাল্ল নথবা সক্ষ । স্পুবর্ত্ত-তে। বাতস্তলিকা তান্ত ব্যাধি विष्ठाट मुषाबन ॥ द्रोक्त्राट का য়স্য। বেগবিঘাতাৎ মূত্রাদিবেগ নিরোধাৎ আবিশ্য প্রাবৃত্য রৌ-ক্ষ্যাদিভি র্বেগবিঘাতাদিভিশ্চ বি-खरना मुष्टेः इ अनीक्रा वायू वर्षे মূত্রাশযে চরতি পুতিধাবতি আব-দ্ববাদ্ধুন ভিপ্ততি ইত্যৰ্থ: ॥ বা -ত্যাবং। মূত্রমিতি তমানুত্র নল্ল-मन्न भवाष भुवर्खे । ज्वाधि বাতসগুলিকা মাহ:। সুদাকণ মা-त्रगाञ्चकदाष्ट्र ॥ ५॥ ॥ अश्वेना-गार । वाधाभयन् विख ७५ कि कृ। वाठ कालामञाः। वर्गाञीवार्छ

मधीलाः म् अविद्यार्ग (दाधिनीः ॥ वा-७: विख ७र॰ बन्दा वर्षा हरसर्ग उ মূত্র॰ মলঞ্চ নিক্ধ্য বস্তিশুদ॰ বস্তি৽ खरक याधाभगन् याधान अर्वन् अश्रेनाः श्रेना ज्नाः वाशिः य-র্য্যাৎ । চলোম ভা॰ চলা॰ উন্নভাঞ্চ ॥२॥ 🗱 ॥ वाजविष्ठ माष्ट्र ॥ (वृग• विधाद्रयम्यस ग्वम्रास्माला नदः ৷ নিৰুণিদ্ধ মূথ তস্য বস্তে বস্তিগo। १निनः ॥ ম্এসকো ভবেতেন বস্তি স্বক্ষি নিপীডিঙ্গ:। বাতবস্তি: न विद्कुरमा वर्राधिः कष्टे नुनाधनः॥ অসশলো মূথ:। তস্য পুক্ষস্য বস্তিমূথ নিক্পদ্ধি বস্তিগতো বায:। তেন বায়ুন। মূত্রসংক। মূত্রিঘাতো ভবতি বন্তি স্বন্ধি নিপীডিত ইতি বত্তো স্ক্রোচ নিপীডিতো সংগ্রা ডিতে। বাযু রিতি সম্বন্ধঃ॥ ৩॥ 🗱 ॥ মূতা **হীত মাহ**া চির• ধার্যতে মূত্র• ˈ प्रया न প्रवर्तः । (सर्मानम् । मन्तः বা ন্ৰাতীতঃ স উচ্যতে ৷'নেহ্নান স্য মৃত্রমূৎ সৃজতঃ। মৃদদে বা তাল্প বা ।।৪।।ৠ। মূরজঠরমাহ। মূত্রস্বেগে। ভিহতে তণুদাবর্ত্ত হেতুকঃ । অপ। ন: স্পতি। বাযু ক্রর পুরয়েজ্শ ।। नाज्ञ त्रथञानाध्यान कनरपञ्जी (वन्नाः। छः मूबक्रवेतः विम्यामस्याः।

বক্তি নিরোধন ।। তদুদাবর্ত্ত হেতু-ক ইতি মূত্রবেগধারণ গণিতোদা वर्ख निमान भाषतान अर्घाए। अरधा विख निरद्राधन वरस द्रार्थापर वि বন্ধ কারক ।।৫।।

প্রাথ্য ক্রার্থ সক্ষা-र। वर्छो वाभारथवा नात्म मर्गो वा যস্য দেহিন:। মূত্র পুত্ত সজ্যেত नतक वा भुवाहकः ॥ भुवहति इन मल् नक्ष वाथ नीक्ष । विख्ता-নিলজো ব্যাখি: স মূত্রোৎসঙ্গ সং ক্তিত:।। নালে মেদ্রে মণৌমেহনাগ্র-शुष्ट्रो मह्हु । निक्कः महा महकः म वा भुवर्छ । भुवाइ ३ इंडि কণ্ঠহাদলেন সশদ নূত্ৰ পুরীষ বাতানা মধঃপেুরণ পুবাহন তেন व्यभिष्ठम वायुना वस्त्राप्ति (छपाष्ट्र সরক্ত• মৃত্র• সুবেদিত্যর্থ:॥ ৬॥ 🗱॥ মুত্রক্ষ মাহ। ক্রক্স্য ক্লান্তদেহস্য বস্তিন্থে পিত্তমাক্তো। মূত্রক্ষয়ণ नक्षाइ॰ बनय्या॰ उनाख्य॰॥ क्रा॰ खः पर्मा भागात्र स्मा उपाख्य ग्व-क्य म•छः॥ १॥ । भृवग्रीहमार। অন্তর্গতি মৃথে বৃত্তঃ স্থিরে৷ ২ল্লঃ স श्मा ভবে । अमती ज्मा क्रायुष्टि নৃনিগুন্থি: স উচ্যতে ॥ অন্তর্নন্তি মূখে বস্তি মথস্যাভ্যন্তরে অল্প: ক্ষু-मान्तक भूगानः। नयुम् अयाः।

সহ কে। ভেদ:। উচ্যতে। অমারী कम्मः मक्ष्यम महात्यस महना ভবেদিতি ভেদ:। অপরো ভেদ:। व्यभार्याः शिखानिकः मः इनाउ অবতুর্ক্তমেব।যত উক্ত তন্ত্রাম্বরে । ব্ৰক্ত বাত কফাদ্ৰষ্টণ বভিদাৰে সু माकन । गुष्टि अर्य्या मक्रिन म्रा শ্ৰু তদাবৃত মিতি॥৮॥#॥ মূব শুক্রমাহ। মৃত্রিতস্য স্ত্রিय॰ যাতো বাযুনা শুক্লুদুত । স্থানচ্যত মূত্র-বৃতঃ পুাক্ পশাদ। পুবর্ত্তে ॥ ভ ब्यानक भुशिकाम॰ मूबमुक॰ छम् চ্যতে ॥ নৃত্তি চস্য নৃত্তবেশযুক্তস্য **পুক্র স্থানা**ই চুচ্চ প্রকারাযুনা **উ**-ন্নত• উদ্ধৃ • নীত•। ভয়োদক <u>পুতী</u>-কাশ ভন সহিত জল সদৃশ।। ১ श # ॥ उक्वाजनार। व्यायामाथाः **छोगः भिङ् विस् भान्या**निलाः न् छ । विशः (न पुः छ मरिक्षव भूम इट जावरयन्यः ॥ भूबः शाहिनु मथवा म व्रकः व्रक्तस्य वा। कृष्ट्रः भूनः भून জন্তো ৰুফ বাত• বদন্তি ত• ॥ ব্যাযা মাদি বিরোধত্বেন সৌম্য ধাতৃক্ষ-याट তেজো वृष्क्रा भिखवृष्क्रि मा ৰৎ স্বণিত পিত অসংযুত বস্তি शुभि उ वख्यां मिकः भूमश्य मृजमथः जावत्वर । कीम्म शिक्षः व्यथवा

मत्रकः देशस्माहितः ॥ ५० ॥ 🕸 ॥ মূত্রসাদনাহ। পিত্ত কফো দ্বাব-लि वा **म** श्रान्त । १ दिला वि ক্ছুান্ৰ• তদা পীত• রক্ত• খেউ• ঘন স্কেশ।। সরক্ত রোচনা শাস্ত্র চূর্ণ বৰ্ণ ভবেত্ততঃ। শুষ্ক সমন্তবৰ্ণ বা म्बनामः वमिष्ठ वि ॥ मः हान्तुरु वनीकिरयर । भूषः अन्नः अमर বর্ণ উক্ত সকল বর্ণযুক্ত।। ১১॥#॥ विश्विषाञ्चार। कक पूर्वणाया छी-তেনোদাবৃত্ত শকৃদ্যদা। মূত্র সো-তোনুপদে তে বিট্ সংস্ঠ তদ। নরঃ ॥ विज्यक्ष ग्वायट क् ह्या विश्विष्ठ उनामिः । উদাবৃত্ত छक्षु नी उ॰ বিড্গন্ধ• বা বাশদোংত্র যোজনীয়ঃ ॥ २२॥ #॥ विजिञ्चलनाङ् । क्व डा थ वह नायारेन द्रज्याजाट भुनीफ नाए। यञ्चानाविखकवृद्धः वृत्त खिक्षः **डि गर्डिंव ॥ मृनमान्त्रन माशार्खा** বিন্দু বিন্দু সুবত্যপি ৷ পীডিতস্তু সৃ-**जिषात्रा॰ म॰** खस्यादिशन विनान् ॥ বস্তিস্বওল মাহু স্ত ঘোর শক্তবি-(वाभनः। भवन भुवनः भारा पूर्नि-রোধ মুবু দ্বিভিঃ।। তিমান্ পিত্তাদ্বি-তে দাহ: শ্ল॰ মূত্র বিবর্ণতা ॥ শ্লে-মুণা গৌরব শোথো নূত্র সুধ্ব ধন দিত।। জতাধ্বত্ত্ব শীঘু

भार्गहनन । উদ্বৃত্তঃ উত্থিতঃ । স্য न्तनः किष्मिहलनः। (चात्रः भात्रकः। শস্ত্র বিবোপম শস্ত্র খন্নাদি ভদ্বছী-খু মারক । বিষমত্র গর: তদ্বৎ বিল ষ্মারক । এতাবতা মারক মবশ্য भोषु विवासन या। ३०॥ 🕸॥ उरेमा वागाया गाउँ विकास मार्ग (भूग ৰুদ্ধ বিলো বস্তিঃ পিত্তোদীর্ণো ন সিধ্যতি। অবিভাত্তবিলঃ সাধ্যে ন **চ यः म** खलीक्**ठः** ॥ म्याद्वस्थि म ख লীভূতে তৃন্মোহ: খাস এব চ। বিল• বস্তি ম্থরস্কু পিত্তোদীর্ণ: পিত্তে নোজভঃ। অবিভাত্তবিলঃ কফেনাবৃ তবিলঃ পশ্চাৎ স্বগুলীকৃতঃ স সা খ্যঃ। এতেন হণ্ডলীভূতো অসাধ্যঃ । দওলীভূতস্তলকণ মাহ। ভৃ **ডि** डामि अथनी ज्उमायमर्थः । কফেন বিলাবরোধাত্তত্র বাতঃ জ ওলাকারেণ ভিপ্তভীত্যর্থ:।। # ॥ অথ মূত্রাবাতস্যুক্তিকিৎসা। নল জল কালেক্ত্বলা ক্বথে প্ৰাত: স্ শীতল সমিত। পিবতো নশ্য তি নিযত মূত্ৰগুহ ইত্যুবাচ কবিঃ ।। কবি: শূক:। কপূর রজসা যুক্তা वज्रवर्जिः भरेनः भरेनः। मिष्रु गार्गा-ন্তরে ন্যন্তা মূত্রাঘাত ব্যপোহতি ম ধান্য গোক্ষুরক: হাথ: কল্প**ন্ধ**•

हिन शृक्त । मूनावाल गृक्त ए म्कल्तास ह नाकता।। धानाता क्रिक्त शृक्त हु रूपा क्रिक्त शृक्त हु रूपा क्रिक्त खर्म क्रिक्त क्रिक्

म्बानयः भू नाष्ड्रतशाप्तनः। उ भर्यायः । ग्रभुडे २ दक्षिः ० इंडि स्निम्पुः॥

মুত্রিভ: বি ক্ ভমত্রেৎ সর্গ:। ত পর্যায়:। নাচ: ২। ইত্যমর:।। মুর্থ: পু॰ মাষ:। ইতি বিক্রাপ্তশো ।। গায়ত্ররিহিত:। যথা। কিলাফ্ নস্য মুখ্রস্য মহারোগিণ এব চ যথেষ্টাচরণস্যান্ত মরণান্ত মুর্শে চকা।। কিয়াহীনস্য নিত্য নৈতি বিক কিয়াননুষ্ঠায়িনঃ। মূর্খর্স্য গ যত্রীরহিত্রস্য । সার্থগায়ত্রীরি ভস্যেতি ক্রুপর:। মহারোগি পাপরোগান্তকান্যতন রোগবা পোপরোগান্তকান্যতন রোগবা খোসো মুধ্যেহো ভগন্দরঃ। উল্ রো ২শারীত্যক্তী পাপরোগানি রুদ্যেত্রাঃ। শুথেষ্টাচরণস্য দুল

বেশ্যাদ্যাশক্তস্যাইতিশুদ্ধিতত্ত্বণা৷ र्थः वि मूक्जियः। उৎপर्यायः। व्यक्तः २ मृषः ७ यथाजा उः ४ विद्य ব: ৫ বালিশ: ৬। ইত্যমর: ।। #।। उन्धवनीकव्रामाशासा यथा। मि ब श्रहे उस दिशु नस्यतेन लूकः धरेन त्रीश्वतः कार्य्या विज्ञमानस्त्रन ষুবতী পুনা ভগৈ রান্ধবান। অ-ত্যুগু• স্কভিভি র্থক• পুণতিভি মৃ´-র্থণ কথাভি বু'ধণ বিদ্যাভী র**সিক**ণ द्राप्तन नकलः भीत्वन सर्वप्राद्यभः ॥ इंजि नवब्रज्ञानि ॥#॥ भयः भानः **जूककानाः (कवलः विववर्षनः ।** छेनररणा हि म्थाना॰ नुरकानाय ন শান্তযে।। ইতি হিতোপদেশ: ॥ म्थं जा जी म्थंद । यथा। यहाजा वः मारतारमा कर्याः नामान् तिमुखा । উন্মাদে। মাত্দোবেণ পিতৃদো-বেণ নূর্থতা॥ ইতি চাণক্য•॥ অ-ष्टेग्रा॰ नादिक्व जक्षा मूर्थदु॰ বথা। কলশ্বী জাযতে বিলে তিৰ্য্য খ্যোনিশ্চ নিম্বকে। তালে শরীর নাশঃ স্যামারিকেলে চ মূর্থতা। ইতি তিথ্যাদিতভু•।। मूर्य ভ্রাত্কঃ পু॰ ম্থোভ্রাতানস্যসঃ। े इंडि भिषाष्ठकोगूरी॥ মূৰ্ছনা আ গীতাক্বিশেষ: সাভূ

গ্ৰামস্য সপ্তমভাগ:। তস্যা বকণ একবি শতি নামানি চ যথা। স্বরঃ সংমূহিতো যত্ৰ রাগতা প্রতিপ-দ্যতে। মূর্ছনা মিতি তামাহু: কব श गुाममञ्जयाः ॥ विविज सर् মা চিত্ৰা রোহিণী চ মতক্ষা I मोवीत्री वश्वमथ्या ह यङ्क मथ्यम পঞ্মা: য় মৎসরী মৃদুমধ্যা চ শৃদ্ধান্তা চ কলাবতী। তীবাু রৌদুী ख्या वाकी देवकवी (सम्ब्री **मू**ब्रा।। नारावजी विणाला ह बियू यामियु বিশুকা:। একবিংশতি রিত্যুক্ত। मूह्ना हमुरभोिवना ॥ मूह्ना॰ क-লগতো মুরশতো বঁণশিকাধনিবি-(णव विजातिः। मूह्ना॰ ययु त्रनवः) শরোধৈ রঙ্গনা নাউপতে রিব সে-नाः॥ ইভি সর্কাতদামোদর:॥ ॥। হনুমন্মতে বড্জাদি স্বরত থাবভা-দি স্বরোত্থানে যত্র স্বরে। বিরম্ভি ना मूह्ना। ভরত মতে বাদ্যস্য গানস্য বা সম্যে যুত্ত হস্তস্য গল-স্য বা কম্পন সাম্ছ न। সা এক বি॰শতি পুকারা। তত্র যড্জগ্রা-मम् मूह्ना निन्छ। र मश्रमा २ চিত্রা ৩ রোহিণী ৪ মতক্ষা ৫ সৌবীরী ৬ বণ্ডমধ্যা চ ৭। মধ্যম-ग्राममा मृह्ना भक्षमा ३ न८मही

२ मृह्मधा ७ मुखा ८ चडा ৫ कवा-বভী ৬ ভীবা চ । গান্ধার গ্রামন্য गृह ना (ब्रोपी > व्याक्षी > देवकवी ० ্ষেদরী ৪ সুরা ৫ নাদাবতী ৬ বি भावा ह १। इंडि **म**ङ्गी उभाजः ॥ ग्हां जी मःगारः। ७८ भर्गायः। কশাল ২ মোহ: ১। ইত্যমর: ॥ गृह्व-८। ইতি मस्त्रद्वावली।। गृही यः ८। व्यथ मृही शिकातः। তত मृही य। निरान পूर्विकाः मः भारि गार । ক্ষীণস্য বহুদোষস্য বিৰুদ্ধাহার সেবিনঃ।বেগাঘাতাদভিষাভাদ্ধী-न मञ्जमऽ वा भूनः।। कत्रगागज्यसम् পু। বাহ্যেশ্বভান্তরেশ্ব চ। নিবিশন্তে यना (नावा उना मृह् सि मानवाः ॥ व्हारायम् अधिकारायम्। नज्-**(मक्रायम्) जना म्हा** जिल्हाय-रिकव महा८ खरेथवास्त्र का त्नायः 🛚 তম। পৃথয়ে(ৰজানাং মুহানাং ব कार्गावद्वार । विवाधा जार गना (मे) अधिवाजा
नश्याजा अञ्चम। सञ्च ल वृष्णमा व्यर्थामधि ह তমে৷ গুণস্যুত উক্ত নূছ্৷ পি ভ তম: প্রাযেতি। করণাযতনেষু করণ नन उम्रायज्यस ज्ञातम् वारम् कःमन्त्रियय। ज ७। छ। तयु वक्षी स्तिन , (यत्। क्षा नामानाः नक्ष नार्।

সংজ্ঞাবহাসু নাডীযু পিহিতাম-নিলাদিভিঃ। ভমোভ্যপৈতি সহ-ना मूथ पृत्थ वहामाइक्ट ॥ मूल দুংখব্যগোহাচ নর: পততি কাপ্তবং । মোহে। মূদ্ৰে তি তা॰ প্ৰাহুঃ ষত্বিধা मा পुकीर्खिङा ॥ ज्यार्थनः गङ्यान ছেতুঃ। অভ্যুগৈতি আগছতি। পুথ मृःथ वृश्भाङ्क्८ मथ मृःथ छान नामकत्र। नरष्ठे मृथ पूःथ ड्वान नतः काष्ठवंद भवि जाः गाहि। गृहि-**ভি প্রান্থ রিভ্যন্ন বাং। মৃদ্রা বা মূর্লাবো** ৎপিপর্য্যায়:। যত উক্তণ সংজ্যোপ-वाजा नृहारिया मृहा निप्राच्ह नि उथा । कथानः भूनत्या (भारुः मःन्यामख ম্তোপন ইতি। যড়পি মৃদ্র্ি বিবৃ-ণোতি। বা তাৰিভিঃ শোণিতেন ম-দ্যেন চ বিষেণ্চ। বট্মপ্যেতাস্ পি-ত্তম্ভ পুভুত্বেনাবভিপ্ততে।। যত উক্ত॰ । मूहा निष्ठ उमः भारवि ॥ 🕸 ॥ প্ৰক্পনাছ। হ্-পীড়া জ্ঞ্ডণ॰ भानिः मः छात्रीर्वन । सन् ह। मः বাসাং পূৰ্বৰূপাণি যথা ৰং তা বিং ভাববেৎ ॥ 🗱 ॥ তত্র বাতিক মৃ-हाय पाइ। भीवा वा यमि वा क्क् भाकामा भणदाक्षाः। शमाः समः পুবিশতি শীঘুঞ পুতিবুধ্যতে।। ः । पुन्हाक्तमण्ड भूभीडा कृत्यः

ল্যু চ ৷ কার্শ্য **শ**্যাবাকণা ছাবা মুহা ধে বাত সম্ভবে॥ नील॰ नीलव-র্ণ। কৃষ্ণ কব্দ্রবাভ। অস্থ্রণ অ-ব্যক্তরাগণ। তমঃপুরিশতি মূছ তি । न्यावाक्नाहाया गावन्य ॥ 🗭 ॥ পৈত্তিক মাহ। রক্ত হরিতবর্ণ বা বিষৎ পীত মথাপিবা। পশ্য স্তমঃ পুৰিশতি সম্বেদঃ পুতিবুধ্যতে ।। স পিপাসঃ স সম্ভাগে। রক্ত পী ভাঙ্গলেক্ষণঃ। সম্ভিন্নবদ্না: পাতা ভো মৃদ্বাধি পিত্ত সম্ভবে ॥ 🗱 ॥ শ্লৈষ্মিক নাহ। নেঘ সন্ধাশ নাকা-**শ॰ ত**মোভি স্বা যনৈ বৃতি**। পশ্য**• স্তমঃ পুবিশতি। চিরাছ পুতিবৃধ্যতে ।। एक जि: भारति तरि य रेश वा पु १ वर्षा । अभु (त्रकः त्रवृद्धारमा गृहा (य क्क न सुरव ।। (नघ नका न শুভুনেঘ শঙ্কাশ মিত্যর্থ:৷ যত আছ সূত্রতঃ। কফেন পশ্যেরপাণি স্থে-**७**। जु शुंजिमानि ज्। घरेन निविद्ध ন্তমোভিঃ। গুক্তি রক্তৈ কপলক্ষি জা দুশতেন মূছাযিঃ ষদ্বিধ উক্তঃ ্চরকন্ত সাদিপাতিক স্পি ् व गार्। मर्शक्षिः मन्त्रिंगाः াদশমার ইবাগত: । স জন্তু· भागाजाम् विना यीख्यम एक्टि ি । অপনার ইব তেন নহতা।

ভিঘাতেন পততি চিরেণ পুতিষু-ধ্যতে। তর্হি তথোঃ কো ভেদ ইত্যত আহ। স সালিপাতিকো মূছা বঃ বিনা বীভৎস চেপ্টিতৈঃ ফেন বম-न म्ह्यू हैना कि विकृत्रामि छि विना-পাত্ৰতি ৷৷ 🗱 ৷৷ ব্ৰক্ত লাখা মূহা যা निमान बार । भृषिवास खरमा क्रम व्रक गन्न उत्त्यः। ज्यापुक्तम् ग-ধ্য়েন মূছ স্থি ভুবি মানবাঃ ॥ তমে। ৰূপ॰ তমো বহুল॰। মানবা**শ্চ যে** তামসাঃ। নতু সাজ্বিকা রাজসাচ্চ। অত্রৈকে বদন্তি নৈষাযুক্তি: সমীচীনা ভৰ্ছি চম্পকাদি গন্ধেনাপি মূছা পু-সজ্যেত তত্ত্ৰাপি গদ্ধস্য পাথিব-दार। या आहा मुत्र म जात है-ত্যেকে যদৃষ্ট্বাপি বিনুহ্যতি। অত্রাহ্ **ভाजः। मर्मनाम्म्ब उ**द्धाप्तकारिह-ব পুনৃহতি ॥ #॥ রক্তেন মৃছি তস্য वक्त भार । अकाश पृष्टि अमृजा ग्णाहामल गृह्ि छः। #।। सम्ब विषक्षा निराम मार । एना छी दुउ ব্লয়েন স্থিতান্ত বিষদদ্যযোঃ। তএব তत्राखान्त्राह भारही म्याटा॰ य-থেরিতৌ॥ যে গুণা লঘু কফাসু বি-শদ ব্যবাধিতীক্বাবিকাশি সুক্ষোঞা निर्देशा तमञ्चामयः। टिनामी मुत्य ব্যস্তাঃ তীব্ৰাশ্চ সন্তি তএব গুণাঃ বি-

ব মদ্যবোস্ত তীবুতরত্বেন ছিতা:। তত্রাপি ভেদ: ৷ তএব মদ্যে দৃশ্যম্ভে বিষে তু বলবত্তরা ইতি ॥ 🗱 ॥ মদ্য-. काया मृहाया वाका भारा भारति পুলপন্ শেতে নষ্ট বিজ্ঞান্ত মানসঃ। গাত্রাণি বিক্ষিপন্ ভূমৌ জরা যা বন্নবাতি তৎ ॥ নষ্ট বিভাৱ মানসঃ नष्टे• সর্বথা মৃতিহীন• বিভাত• **র**- ∥ জ্জৌ সপজ্জান যুক্ত মানসং যস্য সং । बद्रा॰ जीर्नजा॰। ज॰ यहा॰॥ #॥ विषकाया लक्षण मारु। विश्व अन ভ্ষাঃ সু । স্তমক্ষ বিষম্ছি তে।বেদি-তব্য তীবুতর যথা স্বাবিষ লক্ষণ ॥ বিষস্য মূল কন্দ ফল পত্র ক্রীরা। নি ভেন ভিন্নস্যথা স্বক স্বক ল ক্ষণ মুক্ত মৌশুতে কল্পস্থানে তল্ল-ক্ষণ মদ্যাপেক্ষ্যা তীবুতর (বিদি-छवरः। नन् मः छानात्मन माध्यरा ग्हा जुम जनुतारीना का जिर है-ত্যত আহ। নূছা পিন্ত তমপুাৰা রজ: পিত্তানিলাজুন:। তমে। বাত কফাত্তন্দু। নিদু। শ্লেখ্য তমে। ভবা ॥ त्रकः शिकानिवास्त्रम इेष्ठि नाव সমূহয: । কেবল পিত্তজ্বে ভুন-*(ग)ाङचा* । जुम म्हकाक्रारमाव ভুনছন্ত জ্ঞান মদেহ দ্য ভুমত ইব क्रान दा ॥ क्ष ॥ जन्माना नकन

स्पर । ইन्प्रियार्थिष्य मः विखि (गी अ ৰ॰ জ্ঞাণ ক্লনঃ। নিদাৰ্জস্যৰ যস্তে হা তস্য তন্দ্রা•বিনির্দ্দিশেশা ইন্দি ষাণামৰ্থ: পুষোজন যেষু তেষু [ং] र्थाविषय्यू व्यनःविक्तिः व्यनम् खान । **ই**তি ইন্দিয়ার্থাসম क्छानारि। निमायाः भुवृक्षप्रप्र व्रशः ভাব छन्द्रायास भुरवाधिजगुरा ि क्रम इंड्रनरमा र्छन्ः ॥ 🗱 ॥ क्रमणः वक्र भारा (या श्नायात्रः मुक्त (रह् পুरृषाः श्वाम वर्षिञः । क्र्र⊹ न ইতি বিজ্ঞেণ ইন্দ্রিশাথ পুরাধক ॥ इन्द्रियार्थ भुवाधकः इन्द्रियान वृक्कीनिषुयागाः कत्यांनिषुयागाकः अर न्याबन विषय गुरुन उन्। भ्वाध कः व्यावत्वात्न ॥ क्षः ॥ तिमु। वन्न . মাহ। যদা তু মনসি ক্লান্তে কর্মাতঃ नः क्षमान्निजाः। विषयपञ्जा निव[्] ন্তে তদা স্বপিতি মানব: ॥ क्ला প্লানে শুন্ত ইতি বাবৎ । কর্মাত্র नः कत्यन्त्रियानि ज्ञातनित्र्यानि क्रुगान्विजाः भुष्टाः ॥ 🗫 ॥ जन्त्र मम् म भाषि भूर्वकः वक्षन गार বাথেছ মনসা চেঙ্টা মাক্ষিপ্যাভি वला भलाः। मःनामाञ्जादनः कः পুণোযতন মাশ্রিতাং॥ স না সংন্*্* স সংম্যতঃ কাষ্টাভ্তো মৃতোপনঃ

अरिन विग्राड मीयु मुक्ता मुद्धाः कवा॰किया॰ ॥ व्याकिश्य विनामा मन्त्रत्रांडि मृह्येडि । शुानायजन कृत्यः । मःनाउः मृहि जः । काष्ठी **ज्**ठः किगात्रहितः । अठवत मृ **ञाभन इंजि। मर्गः कनाः कियाः** भूषीवादन जनावशीखन कशिकह्य-र्गग्विकामिमः भनामिस्भाः ॥ ॥॥ পণন্যাসন্য নুছা তে। ভেদমাহ । নাবেৰু মদ নূছা যা গতবেগেফু দে-हिनः। सगमभू।भणामाः अ गःनाः ता तोवरेष विंना ॥ यह मृहां याः । ानः व्यन्व डिमानः। मृहाराः म् क्षा : ११%। अथ गृहा रा निव्दर-ना। (मकावगा हा मगयः महाद्याः मी छाः भूरपद्म वर्षनानिवाका भीजा नि भानानिह गन्नविष्ठ मर्वामृ म्हा च নিবারি তানি॥ মণ্য শ্চন্দুকাস্তাদ্যঃ हाताः मुकारि हाताः। भीजाः शु-रशः नकश्त ठन्सनाम् । न्तन्भनाः न। भी जानि भानानि त्रिजामण मिनिभानकानि। शक्षविष्ठं कभूत्रा-र मुगक्कविष्ठ। मनामु म्हा सनिवा-বৈ জানি। অদ্যায় নভিপুষ্ধ। সে-शभीन। म् मृहा म् शिकात्मत्र किन्छ । उरम्य जाविन गृहा म् न निवा-রিতানি। ত্রাপি পিত্তস্য প্রাধা∙ ∥

न्। निषानि वर्ण मध्य शयार-भि मराजिमा **बाक्**नबा द्रमान्छ। **जथा यवा त्वाहि** जणानयण मृहा जू नथाः जज्ञीन मृज्ञाः॥ जञीनः कनायः ॥ कानमञ्जायलामीतः क्मितः मी उवादिगा। भी उ॰ मृहा करवल्लीहा क्का वा मधु म॰ वृजा॥ भी-(अन (जारान ज्**णः म्**गानः क्काक नथ्या नश्चाविक्शः । अर्थाष्ट नामा वत्रनावद्यायः क्लीवः शिद्धः षाभः थः मान्योगाः ॥ माका मिजा माजिप नामविष्ठ' कङ्गात्र नीत्नाटः পল পদ্মবন্তি। পিবেৎ ক্ৰায়াণি চ শী তলানি পিত্তজ্বণ যানি চ যাপ यन्ति ॥ শিরীববীল গোমূত্র কৃষ্ণা मिति रिमक्तिः। अक्षनः महार भूः বোধায সরসোন শিলা বচৈ:॥ अ-न्। अञ्जनः मग्रगात्रकः मध् मिस् **लिलावरैगः। भुत्माहरमाहि ভवि** ভাষিত ভিষ্का वरिद्रः॥ भिना मः नः निवा উवन मेन्रीहः॥ भव्कमात নিদ্ধু বচোষণ কণা: নমা:। শুস্ত্র• भिट्टेशग्रमा नमाः वर्गाट मःछ। भ्रावाधनः ॥ 🕸 ॥ यथ त्रकः जामीः না॰ মৃছানা॰ চিকিৎসা।। রক্তজা-याख नृहाया। विजः भी अकिया वि धिः। मन्द्रज्ञायाः शिर्वसम्दरः निमाः

সেবেত বা সুথ II বিষল্পানা বিষ শ্বানি ভেষজানি পুযোজবেৎ॥ 🕸 ॥ অথ সন্ত্যাসস্য চিকিৎসা। পুভূত দোষ স্তৰ্সাে ইতিরেকাৎ সংমূ ছিত। নৈৰ বিৰুধ্যতে यः। সম্যন্ত मः छः महि पूष्णिकिरामा नाताः ভিষ্তিঃ পরিকীর্তিকো হসৌ॥ অ-क्षनान।वशीषण श्माः भुश्मनानि ह । সূচীভি স্তোদন শস্ত দাহ: পীড। नथा छात्र ।। जुक्षन॰ (क्षण (नामाक्ष र-रिष्ठ पंचान भाव है। आजा खंडा वद्य मह হিত ভদ্য পুৰোধনে ॥ অব্গীড: কল্পীক্তৌবধরসম্য নামাপুটে দা-नः। जम्र मःनऽष्ठम्रााक्षा व्यथ गृही याः तमाः। क्या मधुरू उन्मूडः सूहाः याः भागायः ভिषक्। भोउत्मका-वगाशामि नर्वात्व भीउन इठाटा। সূত মারিত ।। তামুচুর্ণ সমোশীরণ क्ष्मद्र भी उवादिना। भी उ॰ मृहा॰ क्ष इन्। ए वृक्ष निमुाननि र्यश ।। তামুচ্র্ণ মারিভ ভামুচ্র্ণ ।। 🗱 ।। অথ ভুনস্য চিকিৎসা। পিবেদুরা লভাগ্বাথ সমূত ভ্রশান্তবে। প থ্যান্থাথেন সংসিদ্ধ ঘৃত ধাত্রীরসে নবা।।শৃথী কৃষ্ণা**শ**তাস্থানা সাভ यानाः भलः भलः। ७७मा यद्भना বে,ষা গুটিকা ভুননাশিনী।। ভাসু

,দুরাল তাজাথৈ: পীভন্ত ঘৃত সংখ্-७ । निवाद्यर कुन भीयु ७ वश শস্ত্র ভাষিত ।। #।। অথ তন্দ্র-যা অভিনিদাযা শ্চিকিৎসা। তুর-क् नान। नवरगाखरममू मनः मिना भागिका मध्नि । निर्याकि जान्। क्षि विनिन्ध्यन जन्मा निमान विनिवात्रयस्ति ॥ इनमुः कभूति ॥ रिम्झवः (यञ्मितिहः मर्यशः व्यष्ठ মেব চ। বস্তুস্ত্রেণ সংগিষ্ট নস্যুণ তন্দ্র। নিবারণ ।। খেতমরিচ ।শি-गुरीकः। मुश्री कनागिख রসোবनाः নি নস্যেন তন্দ্র। বিজ্ঞবোল্বণানি । ক্রুমৃতা পৌষর নাগরাণি ভা-গী,শিবাভ্যা॰ ক্বথিতানি পানাৎ ।। मिवा इद्रोठकी । ইতি मृहा जु-म जन्तु। जिन्दु। मःन्यामाधिकातः । ইতি ভাবপুকাশ:॥

স্ট্রি: তি মৃট্রি:। ইত্যমর:॥
মৃট্রি: তি ন্ট্রিড:। তৎপর্য্যায:
। মূর্র: ব ন্ট্রিল: ০। ইত্যমর:॥
উট্য:॥ মূত:। ইতিমেদিনী॥ বৃদ্ধ
্ত্রেয:॥

म्नंः भि वक्षः। ইতি म्जन्यधीकाः याः वागम्बद्धः॥ मृद्धः वि मृह्ण्यः। ইত্যমद्रः॥ विविद्यः ॥ मृद्धिमान्। ইতি मिनिनी॥ न्याय-

भारत পृथिवी कवः (उद्य: वाक्षः क्षेत्रः नियमाना।। ন্পার্না: পরত্ব• অপরত্ব• গুরুত্ব 🔅 📑 इः (रागक। मूर्जाम्लं मायाक्षाना । म्कार्यक्षेत्रः ही डिकीयः। इंडि रहम-ख्याः। সংখ্যা পরিমিতিঃ পৃথক্-ष् त्रपुरागः विद्यागणः । ইতি जायानि द्विष्ट्रभः॥

मूर्तिः जी काछिन्यः। भन्नीतः। इज्यः मद्रः ॥ शुडिमा । ইতি एमहन्युः ॥ मृर्खिम श्री भन्नीतः। ইডি ह्म-

्रम्युः ॥ मूर्जिसान् जि मूर्जिविभिष्ठेः। यथा। महामामानि न् नाः नत्रवद्रः खीनाः मात्र। मूर्तियान्। ইত্যाहि श्री जाग-্বত• ৷৷

মূর্দ্ধক: পু॰ ক্ষব্রিय:। ইতি শবর্ত্ন।-वनी ॥

मूर्कारी जी इया है जिहा बा वनी॥

নুৰ্দ্ধবোল ল্লী ছগ্ৰ। ইতি ত্ৰিকাও শেষঃ 🛚

মুর্জ জঃ 'পু॰ কেশঃ। ইতি মটাবর: ্'্দ্বিকাতে তি ॥

> 🖟 वि मूर्षनिखवः। यथा। भेजवः उ । व वा मूर्खन्याः। इंडि वाषवामकत्रन ॥

। भू मिन्नीषत्कः। इति ,

नम्हा अवा श्वाः। क्षा व्यवः व्यवः त्राः पूर् छक्ताकनः। ইতি भन्न ं नित्का ॥

हम्पुः ॥

ग्रही लू॰ मखकः। ইভागदः॥ मूर्षा विविकः शुः क्वियः ॥ द्राजा । ইত্যনর:।। মূর্দ্ধন্যভিবিক্তো মূ-खां जिविकः द्राज्ञादाभग नमस्य পুথম: ক্ৰিংযা মূৰ্বাভিবিক: **७८ भु**जवदाट (याग्रज्या १न-ভিষিকে। ৎপি মূর্জাভিষিক:॥ वर्गमञ्जू विलापः। म ज् विलाए क्रियायाः बाजः ॥ भुधानः । इंडि ভরত:।। নজী। ইতি নেদিনী।। নৃজ্য পু॰ শির:।যথা। মৃত্ত। মৃত্ত্বা শিরোদেশে পুণি স্যাতানিমৌ मभो। इञ्जातिकायः ॥ मूबी-नरह मृद्धा मृद्धा ह। यमा १५७ थुटी । ইতি তড়ীক 🗓

মুৰা ত্ৰী লতাৰিশেষঃ। ধন্ৰ্গণো-পযুক্ত। নূরণা ইতি খ্যাতা। তৎ **প**र्यऽायः।(नवी २ मधुद्रमा ७ (मा-व्रहे। ६ उज्जनी ७ जुवा ७ नव्लिका १ धन्ः (मुनी ৮ (गाकनी) भीन् भ-ণী >০। ইত্যমর:।। সুবা ১১। म्बी १२ । मध्रमुनी १० धूनुः १८

(म्गी २६। ইতি उद्घीकाया छत्र उ:।। मृत्रक्ति १५ प्रवाम् ११ ११ ११ वर्ष्ण १५ म्यून्य १५ व्यक्ति १५ म्यून्य १५ व्यक्ति १६। त्रमार भी ल्मिलिंग २० प्राम्यक्ती २८। व्यम् । एक्ष्ण । व्यक्ति व्यक्ति । व्यक्ति । प्रक्षि । व्यक्ति व्यक्ति । व्यक्ति व्यक्ति । व्यक

मूल क भुजिश्वाराः। ইजिकविकत्तः क्रमः॥ भवर्गाणवामि भी घी । भुः जिश्व ज्ञिजि त्रिजि गाविनर्जिः । क मूलजि मूलाज यणः। व्यरः भत्रत्यभनीजात्ताः । ইजि मूर्गाः मानः॥

মূল ক রোপণে। ইতি কবিকল্পজনঃ
।। দীধী রোপণ নারোপণ । ক
মূলয়তি বৃক্ষণ লোকঃ। গোবিন্দভউস্ত রোহণে ইতি পঠিত্বা রোভ্যান কার্যান্ত । ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

মূগ ক্লী শিকা। শিকড ইতি ভাষা। । তৎপর্য্যায়:। বুগ্নঃ ২ অদ্ভিনান-।

्कः ७१ ইত।भन्नः॥ कन्तः ८ वृष्णः ইতি শবরত্বাবলী।। ভটা ৬। 💐 किंग ध्रः ॥ व्यक्तिः ॥ नक्क विवे यः ॥ निक्काः ॥ व्यक्तिकः । होत বিশ্ব:।। মূলবিত্ত। ইতি ভর্ थ्ठ (मिनि ।। नि**बः । ই**ज्जबर्न नः ॥ চরণ । ইত্যুণাদিকোবঃ **होकार्श्युष्टः। रथा। मनान वर्ष** उग्रामि मृतः। इंडि मर्भुडिन **क्कि भराधत उड़े। हार्य्य: ११ मृत्रप॰** 🕆 ইতি শহচন্দ্রি ।। পিপ্ললীমূল ॥ পৃষ্করমূল•। ইতি রাজনির্ঘট:। विस्मयम्बामः अञ्चल निरवर्ष যথা। নধীনা মগ্নিছোত্রাণাণ ভার छम् अलम् ह। म्लाद्या न क र्खरा भूषात्मारमा न शेयरजा। ইতি গাৰুডে ১১৬ মধ্যাৰ: ॥ म्बः वि अधिनामिष्ठविः भविन ক্ষত্রান্তর্গতোনবিংশনক্ষত্র। যথা। इडा बाजी जुवना जङ्गीत्व मृगनिः ता नभूकि माए भूकि भूवर्भ भ्यो मृलञ्जी जिया । भयाः । ইতি তিথ্যাদিতন্ত্ৰ ॥ মূলনাদে। শিক্ষাযাঞ্চ নিকটে ভে তু বাজিযা• । ইতি শদরস্থাবলীচ।। স ত্ নির্থ-তিদেবতাকঃ। ইতি জ্যোতিস্তম্ভূ

॥ गि॰र्नुहाकातः। ইতি गृर्ख

हिलामिनः।। भद्ममूर्खि नंदरात्राम যুক্ত। অমিন্ মন্তকোপযুর্ণিতে মীনলগুস্যাঙৌ পলানি গতানি ভ বন্তি।'যথা। মৌলি ভান্নি নবতা-রকাকিতে মৃত্যু শহুসুর্ত্তি नि । विधिकाष्ट्रेक मत्राचयस्य নির্ক্রণাম পৃথুরোমলগুত:।। ইতি কালিদাসকৃত রাত্রিলগ্ননিরূপণণ ।। ঋ।। অমিনক্তে জাতস্য ফল॰। म्ल विककावयव अम्ल कल फ. **হ**ত্যের বৃদম্ভি সন্ত:। চেদ্ন্যথা**ত:** পুৰুষা বিশেষাৎ সৌভাগ্য মাযু শ্চ সলানুবৃদ্ধি:।। ইতি কোষ্ঠীপু-দীপঃ॥ৠা অমিন্মা•সভক্ণনি-विश्वा यथा। हिंबा च इंछा भूवता-সু তৈল ক্ষোর বিশাখা পুতি १९ मू वर्ब्छ। । मूल मृश्य जामून দাসু মাংসং যোবিম্বা কৃত্তিক সোন্তরাসু॥ ইতি তিথ্যাদিতভু•॥ व्यकः क्षी भृः कन्सविष्णयः। मृणा ইতি ভাষা। তৎ भर्गायः। वाका-, नुकः २ गराकन्तः ० रुखिपंडकः ८ (। ইতি হারাবলী ॥ নীলকণ্ঠ• ৫ । ग्नास्र ७ मीर्घम्लकः १ अञ भीर्घ **न**धकमिनाठेः १ ग्रकातः ४ कन्त्र्नः २ इछिम्डः २० मिडः ो) मञ्जग्ल १२ इति । भर्ग १०

कित्र॰ २८ शैर्यकनाकः २८ मञ्ज तकात्रमून॰ १७ ॥ व्यन्तर स्वाः,। भिक्ष । उक्ष । क्रिक्ना भीभनद्य । पूर्नाम खबा क्ष्मान वाज नामिष्। किष्युः। धरुष्यः। इेंडि द्राक्षनिर्घण्टेः ॥ 🗱 ॥ चिनिष्ठ । वानम्बक्भभी जु जाहनी विद দীপনী !৷ মূলক ওক বিষ্ঠমি তী-क् माम॰ जिलायक्ट। उत्तव ग्निक সিদ্ধন্ত পিত্তলং কফ বাতনুৎ॥ শুরু তিদোষ শনন শোথমু গর-জিল্লঘূ। তৎপুশ্ল॰ কফ পিত্তমু॰ **७**८क्**ल॰** कक वाङ्गिष्ट ॥ इंडि त्राजवल्ला छः ॥ १३ । यन्। मृणकः দ্বিবিধ প্রোক্ত ওবৈক লঘুমূল कः। नालामक देकः विमुः नाल-य॰ सक्तस्तु ।। ठानकाम्लकः তীক্ষণ তথা মূলকপোতিকা। নৈ **भागम्गक्शानाऽल**ख्डारमुक्कमञ्जर ॥ वय्भूवक भृष्ण महाक्रहा वयू ह शाहनः। (रायवयस्त्रः सर्यः) जुत थाम विनाभन ॥ नाभिक कर्छ রোগपु॰ नयनामय नामन॰। मङ्ख (मव काकाकः धक (माव वयशुमः॥ **त्त्र हे जिष्कः उ**रम्य न्यार्यम् । वय वि নাশন । ইতি ভাবপুকাশ: ।। # ।। भोत्रभाग जल्का (माया यथा)

অৰুৱে মূলক্ষৈব সিংহে চালাবুক 🍴 उथा। कार्डिक भूत्रनरिक्व गरम्त গোমাণস ভক্ষণ।।ইতি কর্মলোচ-नः ॥ 🕸 ॥ (भीर्गमांत्रां भाषमून-कम्। भिकृताः (एवडामाक म्ल-क रेनर मानास्य । मनमत्रक मा পোতি ভুঞ্জীত ব্ৰাহ্মণো যদি।। ব্ৰা काला भूनक जुङ्गा ठावहान्स्रायन 'तुन्। जनाया याजि नतका कव विहे म् मू अव ह ॥ छथा। वर्षः छ ষ্ণ্য মভক্ষ্যঞ্জ পিবেদ্ব। গহিত্তঞ यटा वर्जनीयः श्याद्वन म्याहे म দির। সম॰ ॥ ইতি নলমাসতকু• ॥ मृत्रकः शु. ठजुञ्चिः मर इपदेव दिव बाउउर्रेडिवियरङमः। ইতি হেন हन्तः ॥

म्लक्यती खी त्याजाना । इंडि

म् न नर्य क्री अवशादिन्दानगण्डागत्नाद्वादेन सम्भादिनगणिकर्या क्रि से शास्त्र । स्ट श्रम् । स्ट श्रम । स्ट श्रम

कर्प है। है कि सेनुः ॥ मखीवथाः मिनावणीकद्रगः। है जिस्ह्यक छि।। म्लकम्ला खी की दक्षिति क्षिति हैं।। है जिद्दुमाला ॥

मृनकादः भ् मृनगुष्टकर्छ। यथा।
नायः गणकादः किन्छ मृनकादः।
इ.ज. माम्छमाद्र होकायाः (गीयोहसुः॥

মূলকারিক। জী চুল্লী। ইতি হারা-বলী।। মূলগৃহ থিপুকাশকপদ্য ।। নূলধনস্যবৃদ্ধিবিশেষ ।।

ग्लकृष्टुः क्ली अकामणिविश्व निकृष्टुः
तु अखर्ग उत्रुखित लावः । यमा कृषिः
छानि वृक्ष्म् लानि मामः भीयाः
छमा अगक्षु व अभामणः लाखरा ।
यथाक्ष माका ख्यः । कृष्ट्र मामिकः । व्या कृष्टुः व्याक्षा स्वानिकः भागोत्कः त्रभत्र ख्या ॥ मामिनामलोक त्रवः व्याकृष्टुः भूत्य ख्याक्ष्य कृष्टुः कृष्य ख्या म् भूषिकृष्टुः भूत्य ख्या कृष्ट्याः कालन छ । देवि निजाक्ष त्रायण् भूषिक्ष ख्या ।।

म्बद्धः क्षी वार्यकः। ইতিরাজ-নির্ঘটিঃ।!

वधीनाः आक्षीरका २ ভিচারো নূল মূলতঃ পু• উৎপলাবিঃ। ইতি ছেন-

हन्तुः ॥ ग्लाख्य विशेषाः भूविति । ग्लाबिति । ग्लाखिति । ग्लाबिति । ग्लाबिति

মূরদেবঃ পু॰ ক॰সরাজঃ। ইতি ত্রি কাণ্ডশেষঃ।!

मृलपुरा की मृलधन । ইতি हमः
हन्द्रः ॥

ग्नर्न की व्यातिमुवा भूषी हैं जि जाया। उद्भग्नायः। भन्निभगः २ नीवी २। हे जाननः॥

म्नत्री जी मञ्कर्गी । इंडि द्रञ्-

गृलभूइद्र॰ क्ली भूइद्रग्**ल॰। ই**ভি

म्नात्भाजी जी भृजिकामाकराज्यः। जिल्लाकायः। कृष्वली २ (भाजि का ३ कुनुरभा जिका ८ कुरभारभार-क्रमाइ ६ विल्लाक हेरभा जिका ७ । जन्द्र छनाः । जिस्स्य प्रदुः । व्युः ज्वा विल्ला व्युः । व्यू श्रुः कात्रिष् । क्ष्ट्राच् । क्ष्ट्रेश्ना विशे भन्द्र । इंडि त्राक्ष निर्वेषः ॥

मृष्य कुरु छि: खी चार्राम कि:। यथा া সর্ব পুস্তা পুক্তি: এক্ষ: পু-কৃ:তঃ পরঃ। ন শক্তঃ পরমেশোপি তা॰ শক্তি॰ পুকৃতি॰ বিনা ॥ সৃষ্টি॰ विधाञ्च नारयरणा न मृष्टि गायया বিনা। সাচ ক্ষে তিরোভ্তা সৃষ্ঠি স হারকারকে॥ আবিভূত। সৃষ্টি কালে সাচ নিত্যা যথেশ্বর**ঃ। হ**ন-লালণ্ড ঘটণ কর্ত যথাংশক্তোমৃ-ष विना ॥ अर्गः विना अर्ग कातः अरु ण कर् गक्रमः। मा **म**िकः मृष्टि काल ह भक्षा (हचेत्रह्या ॥ द्राश পদ্মাচ সাবিত্রী দুর্গাদেবী সরস্বতী । भागविधाज्यावी या क्षमा भ-রমান্সনঃ॥ প্রাণাধিক প্রিযতমা সা র ়া পরিকীর্ত্তিতা। ঐশ্বর্তা-**थिक्षाज्राह्मी मर्बम्य काजिमी ॥** পরনানন্দ্রপাচ সা লক্ষ্মী: পরি-कीर्खिञा। विष्ठाधि्षाञ्दरनी या भः -রমেশস্যদর্লভা। ধরেদ শাস্ত্র যো-गमाञा मा माविजी भूकीर्खिङा।

वृक्षाधिक्षाञ्लियी या नर्वनिक सक-পিণী।। সর্বজ্ঞানাত্মিকা সর্বা স। ं मूर्गा मूर्गनामिनी । वागाविधाक्त-वी या भाजकानभुरा मरा कृष्क-शिक्ताया हुना ह (मदी अब्रस्डी ॥ शक्षशासी स्व (पवी मूल भुकृष्डि রীশ্বরী। তত্তঃ সৃষ্টি ক্রমেণৈব বহু-था कलया ह ना ॥ याविषः भुक् তে द्रः भाः भूगाः मः भूक्षम् ह । भायया मृद्धिकारल ह उद्यान न छ-विख्वः ॥ मृष्टिण भुजिवित्य ह বুন্ধন্ বুন্ধোন্ডবা সদা। পাতা विकुष्ठ मः इंडा निवः मथहिवनुः **দ:।। ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তপুরাণে গণপ ं** डिथ:७८० ज्ञन्तायः ॥ म्लक्तरः भूः भनमव्षः। ইতি त्राजनिर्घणेः॥ ম্ল ভদুঃ পু॰ কংসরীজ:।ইতি ত্রি-কাওশেষঃ।। নূলরস: পু• নোরটলত।। ইতি बब्गाणा ॥ मृनभाकिष्टः । वि म्नक्षितः। ইতি

मृनमाकिनः। क्विवरात्रि माक्षे मा

म्ला जी म्जावती। इंडि ताक

निर्विष्टः ॥ सूथनक्षजः । ই छि नदः

ेकिन পুভাগাভ্যা॰ নিম্পন্ধ।।

ब्रञ्जादनी ॥

भ्**णाशातः भू॰ अञ्जलक्**रगर्भारकः व्यक्षिषयभिज्ञानः। म ज्मर्त **त्रञ्च मक्ल ना**फीना॰ मूलञ्चान॰ 🗆 অত্র বশষ সাক্ষর যুক্ত স্বর্ণ চত্ র্দ্দল পত্ম মস্তি। তন্মধ্যে ইছা জ্ঞা ক্ৰিয়া স্বৰূপ ত্ৰিকোণ্ বৰ্ত্তে। उचाथा (कार्टिम्यं। मम्भुं च यर्छ लिक् गिरा वि वि भृषियी वर्त्वा । তবৈৰ মৃণাল সূত্ৰৰ সৃদ্ধ সাৰ্জ ত্রিবলযাকার স্বৰ্যমূ লিঙ্গ বেপ্টিত विदृश्बुवार्भु छ अवअधिवनी वर्ड তে। যথা। মূলাধারে ত্রিকোণা-থ্যে ইছা জ্ঞান ক্রিযাত্মকে। মধ্যে च्यम् विक्छ काहिम्ग्रं नम्भुडः **।। তদ্বাহ্যে হেনবর্ণাভ• ব স** বর্ণ চ**তু**-র্দল•।। ইতি তন্ত্রসার:।। অথাধার পদ্ম• সুসমাস্য লগ্ন• ধৃজাধো গু-দোজ্ব- চতুঃশোণ পত্র-। অধোব-कु मूर्यः भूवनाज्वरेन बंकाता हि नारित यू ज॰ त्यम वर्षिः॥ अमृत्रिन् ধ্রাধা শ্চত্ডোণ চক্র সমুক্তাসি म्नां हेरेक द्राव्ड उटा नमट शीउ বৰ্ণ তডিৎ কোমলাঙ্গণ তদন্তঃ স্ भारत ध्वायाः स्वीबः॥ वङ्गार्थाः বজুদেশে বিলগতি সতত কণিকা মধ্য সংস্থং কোণ তলৈপুরাখ্যং **उ** ि विवन (कामन काम

ाल । कन्म (मी नाम वायु विवन डिं। সতত তব্য মধ্যে সমন্তাৎ জীবে-েশা বজুজীব পুকর নভিহ্সন্ কো हिमूर्ग्यः भुकं। मः ॥ जन्न(४) विक्-জ্পী জত ক্ৰক কলা কোমলঃ প্ৰ-িচনালৈয়া জ্ঞান ধ্যান প্রকাশঃ পুথন কিশলযাকার ৰূপঃ স্বয়য়ঃ ুভিদ্যৎপূর্ণেন্দু বিম্ব পুরুর করচয ল্লিগ্ধ নম্ভান হাসী কাশী বাসী বি-नामी विवमित्र मित्रिमावर्डक्षः পুকার:॥ অ স্যাজ্বে বিষতন্তসো ার লসৎ সূজ্বা জগন্মোহিনী বুন্ধ-ারে মুখ মৃথেন মধুর সাহাদযন্তী াৰণ । শহাবৰ্ত্তনিভা নবীন চ**পলা**। नानाविनामास्यता मधा मर्श मर्भ मभा ^{শৈ}রোপরি **লসৎসা**র্জাতিগৃত্তাকৃতি: ॥ ইতি জীভতুচিস্তাননৌ ষ্টচক (७४: ॥ #॥ ७० छ ठीर्थानि यथा। हैं । मन हान निवामिनी या भूर्या-আিকা যা যমুনা পুরাহিকা। তথা गुजुन्न। नवारमा गामिनी नत्रम्ञी রক্ষতি নজ্জনাত্মক ॥ মনোগত স্থানপরো মনুষ্যো নজ্ঞ ক্রিয়া যো-প বিশিষ্ট ডল্ভুবিৎ। মহীস্থ তীর্থে বিম্লে জলে মুৰা মূলাস্কে সাতি সুমুজি ভাষ্টবেৎ ॥ সন্থাণি ভীর্থে जूब बीर्थ भावनी गन्ना नशामच विर**्म्यः**

निर्गठा मठी। करता ि भाभक्षय म्व म्रिकः मगाि माक्षाम्मवार्थः भूगामा। ইতি कृष्यामवः॥ म्वाखः क्षी म्यकः। ইতি प्राजः निघरिः॥ म्वी को काशी। ইতি कि नारुः म्वी को काशी। ইতি कि नारुः म्वा को काशी। ইতি कि नारुः

म्लाः भू की। इज्यादिकायः॥
म्लाः क्री भोगतीनाम् शिक्तायः
म्लाः म्ला क्रय विक्रमार्थ मिदः
प्राकादिक यः। इजि जत्रजः॥
पत्र इजि पाम इजि जाया। जरभर्यायः। वत्रः २ जवक्रयः ०। इज्जः
मतः॥ म्लाऽ ज नंऽ उ हरः। माइना इकि जाछ। इजि जाया।
जर्मां १ कर्मां। २ विथा ०
ज्जा १ ज्जिः ६ जर्म ५ विज्ञाः १
जत्राः ४ जत्रनः १
जत्राः ४ जत्रनः १
जत्राः ४ जत्रनः १।

ग्लाः वि भुडिश्वारगागः॥ तानग रागाः। ইতি ग्लावाद्यन्नंनाः॥ ग्य ल्लेरन। ইতি क्विक्लक्षमः॥ यश्ववी। राग ग्याचि नातपुतः। ইতি হলাय्यः॥ द्वीरिक्रक। स्ना-याः। ইতি দুর্গাদাসः॥

म्यः प् जी म्यिकः)। टेजनगव-

र्खनी। ইতি শर्त द्वावणी ॥

गृषकः भू॰ खी উन्मृकः। ইতি শদ্
ग्रद्भवणी ॥

गृषकक्षी खी व्याथुक्षी । ইতি

ग्राक्षिर्धिः॥

म्यक्याती जी म्उल्प्रीवृक्तः। ই ि व

भूवका जी भूविका। ইতি भद्रत्राः वनी ॥

भ्वकाद्राञ्चः भू॰ विडानः। ইতি द्राजनिर्वण्डः॥ भृविकाद्राञ्ज ইতিচ भार्तः॥

म्या खी सर्गार्गावर्खनभावः। गुर्गा इिंड जाया। उर्था वर्षायः। देखन मावर्खनी र । इंड्रामदः।। ग्र्या ० म्यो ८ व्यावर्खनी र म्यो ८ । इंडि ज्या नायः॥ प्रवजाकः। इंडि म्या नायः॥ प्रवजाकः। इंडि म्या नायः॥ प्रवजाकः। इंडि म्या निम्ना ॥ म्यावर्षा जावाः। यथा। व्यक्त विज्ञानि म्यावर्ग मिडि म्या द्वा वृद्धि (म ज्यावर्ग मिडि म (र्घा वृद्धि (म ज्यावर्ग मिडि म प्रवावर्ग मिडि म प्रवावर्ग मिडि म (र्घा वृद्धि (म ज्यावर्ग मिडि म प्रवावर्ग मिड म प्रवावर्ग मिडि म प्या मिडि म प्रवावर्ग मिड

ज्याकगी की याथूकगी । ইতিশব बदावनी ॥

मे्वाज्य की नीवज्य । उटमः র্য্যাयः। কা•স্যনীল• ২ ছেনতুত্থ• ০ বিভূমক । ইতি হেমচন্দ্র:।। म्बिकः প् बस्वितिमयः। हे मृत्र हेडि ভाষा। তৎপर्यतायः। উन्मूकः २ षाथुः ०। ইত্যনর: ।। মৃयः ৪ म्बीकः ৫ उनम्यः ७ वजः १ वृषः ৮ আখনিক: ১ বৃশ: : । ইতি **ण**पत्रज्ञावली ॥ ग्रकः ১১ शिकः >२ उन्यूककः >० नथी >८ थनकः **३**६ विनकात्री ३५ शान्तातिः ১१ वः ल्लुबः १५। यम्। मांभ ख्याः। व्यश् नवल मन्। (गाया म्यक म्-খ্যা বিলেশ্যাঃ কথিতাঃ। খাসা-নিল কাশহর তন্মাস পিত্ত দাহ क्रब्र॰। অন্যে বিলেশযায়ে সূত্র কে-क्षिर्छान्मुक्काम्यः। गरिजः छम्र बा॰मथ बन्द्र भोत्रव मूर्ड्ड्स ॥ ইতি রাজনিঘণ্টঃ॥ অপিচ। মূষি-<का मधुत्रः शिष्का व्यवागी वनवर्ष्क-নঃ। ইতি রাজবল্ল ভঃ ॥ 🗱 ॥ পা -রিভাষি দ মূষিকো যথা। বিভবে शांउ निवाखि न मनाजि जूःशांज চ। তমাহু রাখ ত্রামণ ভ্তা कृत्तन मुका 🗗 ॥ इंडि नार्ज्यय প্রাণে আচারাধ্যায়:।। श्वक्रशी क्षी कलकङ्गदिरणवः।

इं मूत्रकानी भाना इंडि ज्या । खर भगंऽायः । हिंछ। २ उभहिंछ। ० नऽ-गुं। थी ८ मुक्डी ८ मस्त्री ७ वृषा १ भुंडे उक्षणी ४ मूंडिण्मी २ त्र खा२० । इंडे अतः ॥ भूंडिण्मी २२ व्याय्मी १२ भिंका २२ वृष्मी २२ व्याय्मी १२ ३८ त्र ज्ञाला ॥ मृषिभिंका २१ मिक्ष्या २४ मृषीक्मी २२ मूक्षिणा २१ २० । इंडि म्यत्र ज्ञावनी ॥ विका ज्ञी मृषिक्मी । इंडि त्र ज्ञा

ম্বিকা জ্ঞা ম্বিকপণী । ইতি রত্ন-মালা। উন্দুক্র:। ইতি শব্রত্রা-বলী ॥ সুধা। ইত্যনরটীকাথা রমানথে:॥

সূষকান্ধ: পু॰ গণে**ण:।ইতি জটা**-ধর:॥

ম্বিকাঞ্চন: পু॰ গণেশ:।ইতি বি কাণ্ডশেষ:।।

म्बिकाद्राजिः भ् विषानः। ইঙি द्राजनिर्घणेः॥

म्विकाञ्चयः भ् म्विक्भिन । ইতি मृक्षः भ मृनिविष्णयः। उत्र भू-कोषतः॥ (তা मार्क्ष्यः। यथा। मार्क्ष्यः।

म्विभर्गिका जी म्विकभगीं। ইতি
भवत्रश्वनी।।

ম্বী জ্ঞী ম্বা। স্বৰ্ণাদ্যাবৰ্ত্তনপাত্ৰ•।
ইত্যনর টীকাযা• ভরত: ॥ মহামূবিক:। যথা। অন্যো মহানুষি-

कः महास्वी विष्मुनवाहनः। सहा-क्रमम्याती ह ज्काला म्डिभा-उनः ॥ ইভি द्राबनिर्यणेः ॥ म्वीकः भुः जी म्विकः। इंडि भदः ब्रष्ट्रावनी ॥ म्यीकक्गी जी म्यिक्शगी। इंडि भदत्र ज्ञावनी ॥ म्वीका स्त्री उन्मुकः। वथा। मीना-মুবীকা মুব। চ মুবীকা মুবিকেত্য-नि। ইতি नद्रञ्जावनी ॥ म्यायगः वि अञ्चाउभिज्तः। ग्-ঢে। পদঃ। ইতি কেটি ।। মৃ ড শ মৃতৌ। ইতি কবিকল্লফন: ॥ মৃতি: প্রাণভ্যাগ:। ড শ মিুযভে शानी । ডिख्निपामा म्डहीए।म মিতি নিযমেন খন্যত্র পর্যে পদ• । মৃদার মর্ত্ত। মরিষ্যতি অমরি-

म्कखकः भू म्कखूम्निः। ইতি শ-सत्रज्ञावनी ॥

ष्ट्र। इंडि पूर्गानामः॥

एक खुः शुः मूनिविश्मयः। छम्। शुः তো मार्क खियः। यथा। मार्क खिरा। २ शिमार्क खाम्क खुम्ह मृक खकः। इंडिमेद्द जुनिशा।

মৃগ ত্ক ড মার্গণে। ড রামো মৃগণ মৃগযতে বনবীথিকাসু। ইতি মহা নাটকণ। কাতজাদৌ মৃগ্য অন্বেষ

(१ इंडि रिवारि भर्ते अभि दाज् क म्माउ मूर्ग जिलाहनया तम মতত্বাদনেনোপেক্ষিত:। নৃগ্যন্তঃ शहवी॰ उथाला क्याना वागवा न 'মুঞ্চি না•। ইতি ভু অনারাম্ভ সৈয়ৰ ভাবে ক্বিপি অকারকোপে মৃগ করো হাডি কণ্ডাদিত্বাৎ ক্যে সাধ্য । ইতি नুগাদাসঃ ॥ मृगः भू॰ भण्याञः॥ इखिविष्णयः॥ नक्ष्व (अस्त ।। याह्या । इंडि (मिनीः।। गार्गभीर्यगामः॥ **য**ক্তবিশেষঃ৷ ইত্যন্তব্পালঃ॥মৃগ নাভিঃ। ইত্যমর টীকাষাণ ভরতঃ ।। मक्त्रद्राणिः। यथा। मृग कर्क् हे সংক্রান্তী দ্বেত্দশু ক্রিণায়নে। বিষ্ বতী তুলা নেষে গোলনধ্যে তথা পরা: ॥ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ॥ স্বনানখ্যাত পশুবিশেষ:। মূগ্যতে , व्यन्तिष्ठ १ स्मो व्यक्तिः। ७८ श र्यायः। अवसः २ वाजायः ० इति ণঃ ৪ অজিনযোনিঃ ৫। ইত্যমরঃ।। नात्रकः ७ ठाक्लाठनः १ किनयाः निः ৮ अतुङ्गः २ अयुः २० अणुः ১১ রিষ্যঃ ১২ রিশ্যः ১৩ এশঃ ১৪

ঞাক: ১৫। ইতি শব্দরত্বাবলী।। স

নববিধঃ। যথা। সম্বরো**রোহিতো**-

गुज् लबस भूम्रमा करः। अगण

হরিণশ্চেতি মৃগা নববিধা মতাঃ।। পাঠান্তর• যথা। সমূৰ রোহিতে[.] ন্যক্ষঃ সম্বরো বক্রণো ক্রকঃ। শলৈ স্বিণা শ্চেতি মৃগা নব বিধা মতা।। ভ্রিণকাপি বিজ্ঞেয়ঃ পঞ্ছেদে: **९**ত্র ভৈরব। খব্য: থল্লে। ফ্*ক্*শ্চৈব পৃষতক নৃগ তথা ॥ এতে বলি भुरात ह हर्यरात ह कीर्डिजाः। ইতি কালিকাপুরাণে ৬৭ অধ্যয়ঃ ।। # ।। जिन्हि। जय काक्रनानाः গণনা । হরিণৈণ সরক্ষ্য পৃষত্ত-ন্যক্ত শম্বরাঃ। রাজীবো পিচ মুগুী চেত্যাদ্যা দাঙ্গল সংজ্ঞকা:।। হ-तिन खामुबर्नः **म**हारमनः क्षः भूकी-खिङ: । व्यवक् देवखामुः न्याप्तवि -गाक्ञिका भ**रा**न्॥ अत्युश नी**ला**ः ওকো লোকে সরোক রিতি কীর্ভি-, णः । श्यञ क्लमुविन्दः भाषादि-गा८ कियम्ब्रकः॥ नुःख् बंद्यविषाताः থ শন্বরো গবযো নহান্। রাজীবস্ত ম্গোজেযো রাজীভিঃ পরিতো বৃতঃ ॥ या मृगः मृङ्गहीनः न्राट्न मूखी-তি নিগ্ৰদ্যতে। 🗱 ॥ অথ তেষা॰ গু-ণাঃ। জছ্বালাঃ পুৰেশঃ সরে পিত্ত শ্লেম হরা: মৃতা:। কিঞ্চিনাতক-র। শ্চাপি লঘবো বলবজনাঃ।। ইতি ভাবপুকাল:॥#॥ जय मृगश्रीका।

মৃণনাত্তি সমাদাকু কৌত্কার্থণ ख्था भूनः। म्गाः (भाष्या महीस्ता गाः उवाः वक्तामि वक्ताः॥ भृषिः कुर्न् वायू भगमा (खड़ा श्विकास **लक्ष्या ।** जिम्राष्ट रेनक जिमा**स ग**ः মন্তা মৃগজাত্য: ।। তদ্মথা। যে গ ज्ञिनः कीनमत्रीत्रकर्गा एउ भार्थिवा नक्षमृगाः भूपिष्ठाः । সर्वात्र प्ययाः সুরভি পুকাম" পুণ্যে পুদেশে পুভ-ান্তি তে তু॥ যে বৈ বিশালা ভৰ नीर्यम्का यभाष्मना खीवुर्व पुः रिणाः। चाभाञ्च उ रि भुमद्रञ्जि ভূরি সর্বক্ত দেশে পুভবন্তি চৈব।। बाविष्ठ य वाज निवास्त्रीत्क मीर्घाः স্তুতে বাতমৃগা: পুদিষ্টা:॥তে বত্ত যৰৈব ভবন্তি শক্তা শুক্ৰৈব সৰ্বাণি मूजानि मिछ। नयु नुमाना नयुवीर्यंऽ नदा निर्गम्हास्य हर्गन्यानाः॥ ख गागना (वगकत्रा नत्राभाः म्ण्ना ন তে নাপি নিরীক্ষণীযাঃ। যে কৃষ্ণ वर्ग खकरीर्घ म्याः कृषा ज्म गासि চ বাযুবেশাঃ॥ তে কৃঞ্সারাঃ খলু তৈজসাস্ত পৃণ্যপুদেশে পুভবস্তি তে ত্।। #।। ভোজো ২প্যাহ। পার্থি বাদি মৃ্গঃ সর্ব শচতুলাতি ভবেৎ পृथक्। मृण्या अनुलामाता कुनकाः ণা गृगङ्गाउयः ॥ কুদ্ধাঃ পশরিশ্.

কাশ্চ কবিষা: খরলোমশা:। আ-वर्जम्का खनरवा इतिना रिक्ता जा-তবঃ। অশৃকা বাপ্যশৃকা বা শৃদ্যঃ थत्र उन्कराः। अभागाप्य छ्वादा-বা স্তে জ্রেবা হরিণেম্বপি ॥ তথাপি रिगाराः शक्यामी वक्तारत इतिगाम्-याः। निज्या त्रश्रत यम्। लाभाव-र्खाः म भाभक्य ॥ विषयो विकृरजो मृक्ति रम्। म क्मिन नामनः। आव-র্ভঃ পৃষ্ঠতো যস্য আনাভি নভিবি-**म्ह**ि॥ भक्तारक्षं यम्। वावर्ख (खो ভ্যান্ত্রে) ভ্যকারকৌ। বর্ণনেত্র পদা-मीनाः देवक् अध्वन नामनः ॥ गार्नाः । (मायवस्गबाजीनाः विद्याजीनामः थाशिवा। पर्भनाट म्मानाहिव गञ्जाः मानाइ भाषपार ॥ ভवियु विभन्ः गर्बा खथा हिवान्। लायगाट । मः ছোপি। ছরিণ পোষণতো ধরণী-ভুষা নহি ভবেন্মকডব গীড়ন। ন পৰি বহিং ৰজা রিপুজ ভয় তদ্ব-ত হরিণ গুণিন নৃপ।। ইতি নৃগ-পরীক।। ইভি যুক্তিকল্পভক:।। #ा म्गापिविकात्राभणाम्या यथा। गर्न উবাচ। পুविশন্তি यहा ग्राम माज्ञग्रा মৃগপকিণ:। অরণ্য যান্তি বা গ্রা-न्।: इनः गान्धि जलान्ध्वाः ॥ **ञ्नजाण जनः या**खि (यात्रः तामश्चि

महन्मः ॥

ब्रज्ञावनी ॥

७८ मर्गायः। वास्त्रार। ইতি हि

मृगक्रीवनः श्॰ व्याधः। ইতি শব्रः

म्गना खी व्यशक् उप्राप्त देन।

नि ज्याः। गृश् करभा उः भुविस्नि | नृगक्षानिक। खी नृभवक्षनार्थहानः। ক্ৰব্যাদো মৃষ্ধি নীয়তে। মধু বা न-किकाः अगुर्म् जुर भृहभाउ वीपट ।। মৃগ পক্ষি বিকারেষু সর্য্যা**দ্ধোস**-न मिक्का । (मवा: करनारः इंडिह द्धाः शक्षा हि दिः॥ शादण (मया विधिव्य द्विजानाः मकाकना বস্ত্রযুগোত্তরীযা:। এব ক্তেশান্তি मू , পতि পाপ । मृरेग हि दे इश वि निरविषक रू ॥ इंकि मार्का २>> अथायः॥ #॥ ठञ्डिंध शुक्व भाषा शुक्यदिरागयः। उना वकः ণ যথা। বদতি মধুরবাণী দীয নেৰে৷ ২তিভীক শপলনতি স্ (इ. जीशुरवरणा भूरणा २ १ ज শকে পদ্মনী তৃষ্টা নৃগে তৃষ্টা চ চি-जिनी। त्वराज माद्विनी जुड़े। हरय ज ষ্ঠাচ হরিন।। পদ্মিনী শশ্বে। র্যোনি তেনুকৌ চতুরঙ্গুলৌ। চিক্রি-भी मृगता वानि मिनुको ह उथा विष्वे॥ इंडि त्रिक्षती॥ মৃগণানিনী জ্রী বিডঞ্।।ইতিরাজ-निर्विष्ठेः ॥ सृगमपृणगगनभीला ह ॥ ग्गयमञ् ही क्वारिनामकगञ्जापुराः। ইতিরারনিঘণ্টা:: সূত্রমর্কাতে ত্রি মূলচেটক: পুং খ্টাসঃ।ইতি শব-नाचा ॥

यथा। मःवीक्रनः विव्यनः नार्गनः মৃগণা মৃগঃ। ইত্যমরঃ।। ন্গত্ই জী নৃগত্ফা। ইতি শন্ধ-ब्रज्ञावनी ॥ স্গত্য। জী স্গত্ফা। ইতি শব্দ बदावनी ॥ मृगञ्का खी जनाजामदाए मृगाः ণা॰ তৃষ্ণ বিদ্যতে ২স্যা॰ । গ্রীয়ে नक्षरण निक्ञारावर्ककद्राः भुक्ति क विजाः मूत्रञ्चानाः कलावृनाजाः ন্তি ভদাচিকা। ইতি টীকাকার:।। উৎকট রবিরশ্মিজন্য কিভিবা-न्त्रकाल॰ सदीहिका । मृत्र^{क्}रिन्ध य-न्मगृरेथ र्बन निव मृन्गाउ इउ। भ-(त्र। इंकि ভর कः ॥ ७८ भग्रामः । मती किका २। इंडाप्न इः ॥ मृग्रञ्-ঞিক। ১। ইতি ভরত:।। মৃগত্ট ৪ মৃগত্ধ। ৫। ইতি শব্দরভাবলী।। म्गञ्किका छी म्गज्का। इंजानद्ग-টাকাযা• ভরতঃ ॥ न्गरः मकः शुः कक्षुतः। ইত্যমतः॥

म्भर्तंः भू भृगावः। ইठि मःकिछः माद्भ मनामशारः॥ মুগধ্রতিঃ পু॰ শৃগাল:।ইত্যমর:।। मृगवाज्यः भू॰ कसती। उर्भर्यायः। मृगनां मिंगमनः कथिउस महः সুভিৎ। কন্তুরিকাচ কন্ত্রী বোধ মুখ্যাচ সা স্তা।। সা ত্রিবিধা-যথা। কান্ৰপোদ্ভবা ক্ফা বেপা नी नीनवर्गगृक्। काम्पीती किन कहारा कखुड़ी जिविधा सृठा ॥ कानकरभाज्यवा (मुहा निभानी मः थामा ভरद । कान्धीतरम् मः **ज्**ञा कयुती श्रमा स्या। कि।। অস্যা গুণাঃ। কন্তুরিকা কটু স্তিক্তা ক্ষারোফা শুক্রলা ৎ কঃ। কফ বাত विष हर्षि भी छ (मोगंक्ष) (मायक्ष् ॥ ইতি ভাবপুকাশ:॥ অন্যৎ ক ख्ती**णत्य** मु**डे**वरः ॥ गृगना जिल्ला क्षी कख्ती। यथा। घन नातः निजाज्य हल्ला २० मृगः ना ভिजा। ग्गना ভि ग् गनरः कस् রী শন্ধব্ল্যপি। ইতি হেমচন্দু:।। মৃগনেত্র। জ্রী মৃগোমৃগশির। নেতা পুপেষ্ঠা যস্যারাত্রেঃ সা রাত্রিঃ। ইতি मुक्षः वाय हो काया॰ मूर्नामात्रः ॥ স। অগুহাযণস্য বি॰শভিদ্ভা विक बर्यावि मनिनाविष म का छि

भग्रंड भागः महत्ति। क्य नदाव भाक्षितिरवाश यथा । तुक्तभूतारा । বৃশ্চিকে শ্ৰুপক্ষে তু নবামণ শস্ক उ वृरेषः। स्राप्ताः कित्रमानः हि ক্ত॰ শালা অ্গনেজাসু রাতির । পিতর তল গৃহতি নবালামিক্চা-क्षिनः ॥ जनात स्कनका गामा নেতা পাুপ্রিতা যাসাং রাজীণা নিতি বুংৎ প্রা নক্ষরায়েতু রি ज्यानना विशाना खर्भान । **७ ७ क म्यानितः भ्रवास्त्र व् कि** কশেষভাগে রাত্র্যস্তেচ্ব্রার্ণ-শদ্ভাধিক ব্ডুাত্রযো মৃগনেতাঃ । ইতি नलनाम उद्धुः ॥ ম্গপতিঃ পু॰ সি॰ছঃ। ইভিছেন-D=4: 11 নৃগপিপু: পু চন্দ্র:।ইতি ত্রিকাও; (শব:॥ স্গপ্রিণ লী পর্বতত্ণ। ইতি রাজ-निघषः॥ म्गवधाकीयः शुः वराधः। ইত स्तरः॥ य्गविक्षनी खी ग्गवक्षनाथं काल । **७९ भर्य)ायः। वाखद्रार। इंछ्यात्रः॥** गृगजका जी करेगाभी। इंडि রাজনির্ঘণ্ট: 11 न्गनमः पुः कछ्बी। इंडाप्रबः॥

/ भृगमस्यामा जी कल्बीमिसका। मृगादामक जि भण्यामजाउवज्ञ ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।। भृगया जी भृगऽस्त्रचित्रश्खश्नाः। **निकात इंडि ভाषा। उ**८ भर्गायः।

ं ष्यारहामन २ मृगवर ७ व्यार्थिः ६ । ইত্যমর:।। সা রাজ্ঞা পাপায় ন म्राट्। यथा। व्यवन अञ्चलानिता थनात्रिजनीए क्रम शीर्फनः थगान्। व्यनवर् ज्नार्षिता मृगास्रगयाचाय ন ভুভূতা পুতা ।। ইতি নৈৰখে ২ मर्गः॥ मा ह कामजवरमनविष्मयः। यथा। मृगयात्का पिवासभः भन्नी বাদ: জ্রিযো মদ:। তৌর্য্যত্রিক বৃ থাট্যা চ কানজো দশকো গণ:। **ইতি মলমাসতবৃ** ॥

भृगयुः भू वुक्ता ॥ मृगानः ॥ वृत्रवः । **ই**जिमिनी॥

भृगत्रमा जी महत्त्वी। ইভি রাজ-निर्घण्डः ॥

মৃগরাজঃ পু• সি•ছঃ। ইতি শদরত্ব। वनी ॥

মৃগরাট্^র পু• সি:ছ:। ইতি শব্দরত্না वनी।।

মৃণরাটিকা জী জীবন্তী।ইতি রাজ-निर्घणः॥

মৃগরি**প্: পু· সি·হ:।** ইতি হলা-युषः ॥

मि । उ९ भर्यायः । ब्राइदः ঽ ইত্যমর: 11

ग्गनाक्तः भू हन्तः। इंडि नद त्रज्ञावनी ॥ गृगवल्ला भुः सम्पत्रज्गः। इति

त्राजनिर्घण्टः ॥ म्गवारुनः भू॰ वायुः। ইতিজটाश्रतः।
म्गवु॰ क्री मृगवा। ইত্যমतः॥ मृगिनद्रः क्ली नधितः माजनक्रकार

र्गउभक्षमनक्षवः । उ९भर्ग्रायः ।

म्गमीर्यः २ जागुरायनी ०। इंडा

মর:।। তন্তু বিডালপদাকৃতি তার। ত্রযাত্মক॰ চন্দ্রাধিদৈবত। ইতি क्रिंगि विषः ॥ गगनगरम् **उरम्याह**ः (य कन्यानगुम्य हाजिम्मर्भनानि গতানি ভবস্তি। যথা। মুষিকা**শন** পদাকৃতৌ বিধৌ ব্যোম মধ্য মি-লিতে ত্রিভারকে। শারদেন্দুমুখি कन्यकारयामीक्रगानल कलाः क-লাবতি॥ ইতি কালিদাসকৃত রা-ত্ৰিলগ নিৰূপণ ৷৷ ভত্ৰ জাভ ফল• । यथा। শরাসনাভ্যাসরতো বি-নীতঃ সদানুরক্তো গুণিনা গুণেযু।

ভক্তানুপায়েহভারেণ পূর্ণঃ সন্মার্গ-

বভী´ নৃগঙ্কন্ম ভাগী॥ ইতি কোষ্ঠী-

श्रुशिशः ॥

पृशिनिता खो न्शिनितानकः । । इंडिम्द्रत्रावनी ॥
प्रशिनताः भूः न्गिनितानकः ।
इंडिप्रद्रावनी ॥
प्रशिनताः भूः न्गिनितानकः ।
प्रशिनताः भूः न्गिनितानकः ।
इंडिप्रद्रा।
प्रशिनीयः भुः न्गिनितानकः ।
इंडिप्रद्रा।
इंडिप्रद्रा।
इंडिप्रद्रा।
इंडिप्रद्रा।

মৃগশীষ। স্ত্রী মৃগশিরোনকর । ইতি ত্রিকাণ্ডে বোপালিত:।ইত্য নরটীকাষা ভরত:।।

মৃগশীর্যা পু॰ মৃগশেরোনক্ষত্র। ইতি কেচিৎ। ইত্যমর টীকাষাণ ভরতঃ॥

गृगकीयः क्षी गृगीन्थः। उत्रादि।

टि ठिकावम्यानुकमगृहगार्थद्वाटः
गृग्याः क्षीवः गृगकीयः गृग्याः
भरः गृगभरः ইত্যাদিয়পি পুষ ভাবः। ইতি गृथरवाश्रोकाया पूर्णानाः।।

দৃগা স্ত্রী সহদেবীলতা।ইতিরাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

নুগাল্কঃ পু॰ চন্দুঃ॥ কপ্রঃ। ইত্য-মরঃ॥ বামঃ। ইতি বিধঃ॥ মৃগ চিহ্য•। চন্দে তটি হা কারণ• যথা। লোকছাবা ময়• লক্ষ্ম ত্রাক্ষে শশ স-ছিত। ন বিদুঃ সোম দেবাপি ষেচ নক্ষত্ৰ যোগিন:।ইতি মহাভা-রতে হরিব শ:।। যথা দর্শণ প্রাপ্য भद्रावृद्धा नयन ब्रम्मार्या ग्रीवाञ्च स्नव মুখ দর্পণগত মিব পশ্যন্তি এবং চন্দু মণ্ডল প্রাপ্য পরাবৃত্তা তে দুরত্ব দোষাৎ পৃথিবী মব্যক্তরূপা মিব চন্দুমণ্ডল গতা॰ পশ্যন্তি স वा हिल्लु कन इंज्रुनहर्या । ইতি ভট্টাকা॥ যক্ষরোগস্য ঔষ-थविष्णयः। यथा । महामुत्मन मन् ছেম মৌজিক ছিণ্ডণ ভবেৎ। গন্ধকস্ত সমস্তেন রসপাদস্ত টঞ্ব: ।। সর্ব• তদ্ধোলক• কৃত্বা কাঞ্জিকে-न विल्लावरार । ভাতে नवनभूर्न-१थ भटिष्यान ठज्डेय ।। मृगाङ সক্তকো জেথো রোগরাজ নিকৃম্ভ-নঃ। অপিচ। রসস্য ভদ্মনে। হেম निष्ठीक्डा भूरयाह्मरय । ख्झा ह-जुष्ठेयकाका भित्रित जिक्करयमनः ॥ ইতি নধুমতী ।।

मृगाकीयः भू॰ व्यात्रः। ইত্যातः॥

मृगाञ्जा जी कङ्ती। ইতি द्राज
निर्घण्डः॥

मृगाष्ट्रं भू॰ जी व्यापुः। ইতিকেচিৎ॥

मृगामनः भु॰ ज्यू पुर्यागः। তৎপ-

र्यायः । उत्रक्षः २ । इठामतः ॥

ভফ্: ৩ ভরক্ষ: ৫ ।॥ हेि नद्रद्वावनी ॥ वृष्ट्यक्र्री কারে কৃষরেখা চিত্রেনেক্ডা ইভি খ্যাতে। ইতি ভরত:।।চীতা ইতি ু শ্যাতে। ইত্যহুতে: ॥ म्गारनी जी इन्द्राक्षी।। महारवी ॥ মৃগের্বাফ। ইতি রাজনিষ্টঃ॥ क्रम्वराष्ट्री ह।। মৃগান্তক: পু॰ চিত্রব্যাসু:। ইতি **त्रा**जनिर्घणेः ॥ মৃগারাতিঃ পু॰ স্কুরঃ। ইতি শন माला ॥ मृगगजः । यथा । मार्गः মার্গ মূগয়তি মূগারাতি রামে বি-রানে শোক শোক গতবতি গ-তে লক্ষণে লক্ষণেন। ইতি মহা नाउक ॥ মৃগারি: পু॰ সি॰হ:।।ব্যাঘু:।ইতি त्मिनि ॥ अक्षाः ॥ अकिनियः । ই ত রাজনির্ঘণ্টঃ॥ मृगादिए पू॰ व्यापः। इं ि बरोपदः मृगाकी जी विनाना।। मृगत्नाहन जून/भवाञ्ची। इंडि भिमिनी।। মৃগিতঃ ত্রি অলেবিতঃ। ইত্যমর:॥ मृगी जी मृगका जिल्ली। ই जि व गाक त्रवः।। अभाष्ट्रवाष्ट्रवा हाश मुख्या ত्লाः। यथा। मृशीनाः काञ्रलाः

धानाः जाजा कात्र खनः भयः।

ইতি ভাবপুকাশ: ॥ পুলহভার্য্য । ना कन्। भकन्।। उन्। चन्छ। হিরিণাদি। যথা। ক্রোধার জব্জিরে কন্যা দাদলৈবাত্মসম্ভবা:। তা ভार्याः পुलरुमात्रुः म्ंगी नमर। ইরাবতী॥ ভ্তা চ কপিলা দণ্ট্রা কৰা ভিষ্যা তথৈব চ।শ্বেতা চ স রম। চৈব সরসা চেতি বিশু,তা:।। মৃগ্যান্ত হরিণা: পুগ্রা মৃগান্চান্তে শশা তথা। ন্যন্ধবঃ শরভা যে চ পুরবঃ পৃষতাশ্চ যে॥ ইতি বহি शृदागः ॥ ७। ऋदहत्साविष्णयः । यथा। (द्रा मृगी।। ना मृगीत्नाहन। রাধিকা শ্রীপতে:।। ব্ মধ্যা। ইতি ह्त्यामञ्जदी ॥ व्यथमात्रदागः। ইতি লোকেখ্যাতঃ।।

म्रानमुः भूः निःइः। ইত্যমরः॥ म्रानम्हिकः भूः म्यानभक्ती। ই**डि** कविषदः॥

ম্গেন্দু।শী স্ত্রী বাসক:। ইতিরাজ: নির্ঘটঃ॥

মৃগেরাকঃ দ্রী খেতেন্দুবাকণী।সেঁবিনী ইতি হিন্দী ভাষা। তৎপর্যাবঃ। মৃগাক্ষী ২ খেতপুত্রা ৩
মৃগদেনী ৪ চিত্রবল্লী ৫ বহুকলী ৬
কপিলাক্ষী ৭ মৃগেক্ষণা ৮ চিত্রা ১
চিত্রকলা ১০ পথ্যা ১১ বিচিত্রা

भ्रम्गितिर्छिते १० मक्का १८ मः स्थिती १४ (पती १४ कर्षिता १९ त्युतिर्छिते १४ । सम्प्रा ख्याः । पूर्व्छत्रद्वः । खक्दः । मन्दानत्वका-तिद्वः । त्रक्रिल्डहातिद्कः । ইতि त्राक्षनिघण्टः ॥

মৃগেষ্ট: প্ মুদ্রবৃক্ষ:। ইতি রাজ নির্ঘণ্ট:॥

মৃগেক্ষণা জ্ঞী মৃগের্রাক:। ইভি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ মৃগন্যনাজ্ঞী চ ॥ মৃগ্য: ত্রি মৃগিতব্য:। অংক্রমণীয়:। ইভি ব্যাকরণং॥

गृज न उ व मृत्को। ই छ क विकन्न क्याः ॥ मृत्कि ति ह मृत्को छ व ः मृ क्यो क द्वा थ । न माष्टि के व्यापितिक निका निकि हना यूषः । के व्यापितिक क्यो ८ स्थारका मनः । स्थानकी हामिश्रवाभी निक्ष स्क्रिः। य मृजा । ই कि मूर्गामामः॥

गृज উ व कि ज्या म्पा । इंडि
कि कि क्षा में कि का जो द का
भाकों द । य ग्जा। कि गार्ज उति
स्विभित्त विकान्। या भार्क्ज विक भाजार्थ निजि स्वागुषः। इंडि
पूर्गापातः॥

न्कः भू॰ वान् विष्णवः। मान्य इंडि ভाषा। यथा। नन्त्या नाक्षाम्बः

। ইতি শদ্বহাবলী ॥

মূলা জী মার্লন । ইত্যমর: ॥

মূল্য লি নার্গ্য নার্লনীয় । ইতি

মূল্যবাধব্যাকরণ ॥

মূড গ ল স্কেদে। ইতি কবিকর

কন: ॥ নোদ ইহ হুগীকরণ । গ

মূড়াতি সরম্বত্যা চয়: সদেতি হলাযুধ: ॥ শ মূড়তি দীন দাতা।

অমৃডিত্বা সহসাক্ষ নিতি ভটি:।

মডিতা। ইতি দুর্গাদাস:॥

মৃডঃ পু শিব:। ইত্যমর:॥

মৃড়লণ: পু বালক:। ইত্যাহি-

न्छ। } जी पूर्ण। ইতি হলाय्थः॥
न्छी > जी पूर्ण। ইতি হলाय्थः॥
म्छीकः पूर् হित्राः। ইতি ग्छ थाতোরৌণাদিক कीकन পুত্যবেন নিয়য়৽॥

(कायः॥

म्न म हिःरम। ইতি কবিবল্পদন: ॥
मनिंठा। ইতি দুর্গাদাস:॥
म्नालः क्ली भुः . म्नाऽट हिःमऽट ভক্ষণাদ। धंरयः । सालाम ইতি

च्यानाप्रथं यद् । सानाम इंडि थ्राजः। इंडि चन्नजः॥ उद्भर्गाः यः। विमः २। इंड्रम्नतः॥ विष्णः ७ । इंडि विक्रातायः॥ भग्नानानः १ म्गानो ६ म्गानिनो ५ भग्नज्यः १ विमिनी ৮ निनीकुरः २। चम्र

শুণা:। শিশিরত্বণ। তিক্তত্বণ। কবা यद्या भिख मारु मूजक् हु विकात রক্ত বান্তি হরত্বঞ্চ। ইতি রাজ-निर्घण्डः॥

সৃণাল• ক্লী বীরণমূল• ইতি মেদিনী म्गानिनी जी शिप्तनी। इंडि जर्रा-ধর:॥ সা তু পদাযুক্তদেশ: পদা-সমূহ: পদ্মলতা চ ॥

म्गानी सी म्गान। इंडि द्राज-निर्घण्डः ॥ अनुभूगानकािः । यथा । मान्मु हम्पन मक्तक वनयिजाः পাণৌ মৃণালীলতা:। ইতি রাজ-শেপর:।ইত্যমরটীকাষা ভরত:।। মৃণালী পু॰ পদ্ম:। ইতিকেচিৎ।। म् खी म् खिका। इंडामदः॥ जूवदी ॥ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ 🗱 ॥ মৃত্তিকা भोठ· यथा। दिवा मक्कामू कर्न्ड तुक्षम्व छेन्डाथः । अर्यप्राट मूव भूतीत्व जू त्रात्वो ति मक्तिगामूथः ॥ गृशी अभिन्नात्मात्याय मृष्डित्र जुर ष्ठि कं लि:। गञ्च लिश क्रयक्र भोठ• अर्यागश्युजाः ॥ ইতি गा-क्ष ৯८ व्यथ्रायः॥

भृउ॰ क्ली याहिउ॰। ইउप्रबः॥ या-চনবৃত্তি মরণিনিব দুংখননকত্বাৎ মৃত ভাবে কর্মণি বা জঃ। ইতি । মৃত ওং পং সূর্য্যপিতা। ইতি মার্ভি ভরত:॥ মৃত্যু:। ইতি হেমচন্দু:।। 🖟

মৃত॰ ত্রি যাচিতবস্তা। গতপুাণ: मद्रा इंडि ভाषा। उৎপर्यायः পরাসু: ২ প্রাপ্তপঞ্জ: ৩ পরেড ৪ পুেত: ৫ সংস্থিত: ৬ পুমীত: ৭ इंड्रमद्रः ॥ कलो मृजम् 🔫 সিত সভ্যঞ্চ দুরেগত পৃথী ম ফলা জনাঃ কপটিনো লৌলেয় 👍 তা ব্ৰাহ্মণাঃ। মৰ্ত্যাঃ জ্ৰীবশ ㄲ जियम हमना भीता सना उद्यक्त হ। কষ্ট খলু জীবিত কলিযুগে ব ন্যা নরা যে মৃত্যা: ।। ইতি গাৰ্ডে ১৯৫ व्यथ्रायः ॥

म्डक॰ क्री नवः। ইভি ছেমচन्दुः॥ **मद्र**भारमोह•। यथा । यमि जाऽद., স্তকে সৃতি মৃ'তকে চ মৃতি স্তথ:: **(म**रवरेनव **ভ**रवहृष्टि द्रहः (मरह দ্বিরাত্রকণ ॥ ইতি শুদ্ধিতত্ত্বণ ॥ মৃতকল্ল: ত্রি মৃতপা্য:।ঈষদ্নো मृजः । **३७ मृज्यदा**तीयम् नार्धा কল্পপ্ত্যযেন নিম্নন্ন ॥

মৃতকান্তক: পু॰ শৃগাল:। ইতি श्रावनी ॥

মৃতজীব: পু: তিলকবৃক্ষ:।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

भप्रहोकायाः जत्रजः ॥

ग्डम्डः भू॰ म्गानः। ইতি विकाख (भवः ॥

म्डमखकः पू॰ मृगानः। ইভিশদः ंद्रजादनी॥

্গৃতবৎসা দ্রী মৃতাপত্যা অমী বৎসন্তানা। অস্যা দোব শান্তি र्यथा। मधनी मुभन व्यक्तः मर्व लाक विजाग रेव । बाजगा म्ज वर्गायाः मक्षाम् मानि नाद्रम् ॥ অথবা শঙ্গ সন্তম্যা মেতৎ সর্বঞ্চ শস্যতে ৷ গৃহ ভারা বলং লব্বা क्षा वा विभुवाहन ।। वालमा ज्या नक्क जिथि (स्वान् यहक्षुधः । **उ**न्दृकाज्द्रागास क्ष्ठाः माहितः तिष् ।। (गान(यनानु विश्वायाः ज् मार्वकाग्निवन्तरा । उन्तरम तकः भावीरि कबः शाक्रीत्र मःयजः॥ নিৰ্বপেৎ সূৰ্য্য ৰুদ্বাভ্যাণ ভন্মজ্ঞা-ভ्याः विधाने जः। की खंख . मूर्य हिन বত্য সপ্তৰ্ক ঘৃতাহতী:।। জুহুৰা कनुम्किन उषकमाय नात्रर। (हाः তব্যা: সনিধ স্তদ্বস্তথি বাৰ্ক পলা **म**(याः ॥ यव क्षिजिरेन (र्शमः क র্ত্তিরা ২৪শত পুন:। ব্যাঙ্গতিভি রথাজ্যেন তথৈবা**ষ্টশত** দিল ॥ एका मानक कर्तवा मकारकन ह शी नजा। विर्मुत (वस्विमूच। विश्विन-

फ्रबं भागिना॥ ज्ञानविदा ज् हज्जः ब्रष्ठान् (काशवू (लाउनान् । नकः মঞ্চ পুন মধ্যে দধ্যক্ষত বিভ্বিত ।। इ। नरवस्तुन इस्तु नश्रहंना जिन-ব্ৰিত্ত। সৌরেণ ভীর্থতোযেন পঞ্চ ब्रङ्ग अमिष्ठि ॥ मर्दान् मरही देखे ষু জান্ পঞ্গব্য সমণ্ডিতান্।। প-ঞ্রত্ন কলৈ যুক্তান্ বাসোভি রভি-विष्टेर्यथ् ॥ भक्तायः त्रथ्रा वन्त्रीक म-क्यार दुर लाक्षारः। त्रावधातः **भुरिकाह मृह मानीय निःक्तिलट ॥** চত্রপি চ মাস্ত্রের রাজ্যতের মধ্যম । गृशिद्। वाञ्चन उड मोनामञ्जान्-দীর্থে ।। সপ্তভি রুপি নামীভি র ব্যক্ষাভি রথাপ্যল॰ । প্রিভাভি र्यथा मंज्या मान्य राष्ट्र विভ्यानः ॥ म विशाखिक कर्तवाः म्खदरमाः **जिर्यहन• । भीर्घायु द्रस्य वारनाः •्य•** জীবপুঞা চ ভাবিনী।। আদিত্য क्तनुभाः नार्कः शुरु नक्तव म छोनः। **म**कः मलाक भारता वि वृक्ष विकृ नर्षिताः ॥ अस्य ज्ञान्तर ह स्वारो याः मना भाड समावकः। मित्रा ংশনি মা হতভূমা চ বালগুহা: कृष्टि।। भीषाः सर्वेष्ठ वानमः। मा भाज् र्जनकम् दि । जिजः मृहः मृतः **यत्र। ज**मात्री পতिमं युठा ॥ मेश्रदः

न्बराखका जीना मथ्यक न्नैश কাঞ্চনীক্ষ ভভঃ কৃত্বা ভিলপানো 📗 পরি স্থিতাংখা পুতিমাং কুর্মরাজস্য - **श्वद्राद**्विनियमस्य । विक्वः काश्वन त्राद्वीरिय सं रेकाः अष्ठ भागरेनः । প্ৰযেদাশ্বণ ভদ্বান্তপাঠ্যৰি-विकिं 5: े कुक्। ह खनगारहर म्-हार्या नव नस्जिः॥ मीर्वायु बस बालायः सन्वतं भक्तः नमः। यद-किक्षिरमा प्रतिक निःक्षिष्ठः वर् वान्ता ॥ तुका वातु। यम् काका ॥ विकृ (मेरवा इंडामनः। त्रक्षः भ ब्रिडिजा यहराः मस महाना। व्यवगापीनि वाकप्रमि वरष्ठः भूक (राष्ट्यः। मिकि उः किनाः मः म्हार भुगिनज्य विमर्क्कारत्य। अ न्यक भूध म ह जा भूगगा व्रवि महः রে।। হু চলেষ তদাশ্রীযাদাদি-ष्ठ्राय नत्माञ्च (छ ॥ इम्राम्बाक्त-ত্যেৰেণ দুংখ সংপ্ৰবু শস্যত। क्लू बम्म दिनकांगा दिवान् जन्म-काय स्त्रना ॥ नास्त्रार्थः नृत मधन्। भिज्य सर्वम जीमिक । न कार्नन বিধানেন দীর্ঘায়ু রভবন্ততঃ ॥ স-यूटनद्वाभागयुकः ममान পृथिवी निमाः। इंडि माट्रा ५३ व अग्रयः ॥

म्जनकी की लाइकर्षा। इंडि ताजनियणः॥ मृज्जीवमार्थका वि-म्।। यथा। व्यथ ग्डमिछ्यमीविः म्। वाती भागार वीक उपन् মৃতিহর ভারক ব্যাহাড়ী চপ্রে হাৰ্য্য ত্ৰায়ক যো ৰপতি চ সভত পণ্ণুট চামুলোম। মৃতিহর ব্য क्षत्र मृजुःक्षय मञ्जः। नःभिक्र নিতি অনুলোম কমেণৈৰ সংপুট मिर्जार्थः। (जन हो। जजः भूगतः ভতো ল্ সঃ ততঃ সপুণৰ ব্যাহ্য-ভি:। মধ্যে ত্রায় হ মন্ত্র:। ভতো হৌ পুণবঃ জু সঃ ততঃ সপুণব व्याञ्चि:। अग्र क्रशाट मदिनि क्र ভবতি॥#॥অথশ্কোপাসিতা মৃ फमञ्जीवनी विष्णा। गायबग्रव्हेकक नाशनंडेंब॰ बाइक मञ्जमा वरिहक नारक । उउन्ह गायब्धाः भूधम भागानखद्रः म्गक्तिः পृष्टि वक्षनः। দ্বিতীয় পাদানম্বর• উর্বাক্ক মিব বন্ধনাৎ। তৃতীয় পাদানন্তর মৃ'ভ্যা मृकीय माम् जार ॥ या अभि धानः। স্বন্ধ স্থার বিন্দ স্থিত মুভ্যকরে সং ভিতৌপূৰ্ণ সন্তো দ্বাভ্যা নেনাক भारत निजकत्रकमरण हो घटी नि-े छ। भूरनो**ं। हा छा। हो** इन्वरहो ' শিয়সি শশিকলাণ চাষ্টৈঃ প্লাৰ-

यष्ड॰ (एड॰ (एदा प्रधानः शुप्तिमञ् विभारा कन्नजानः भियः वः ॥ काय कृपाय नमः। इंडातन भूषः मृंबानः क्ली आएकी। ईंडि भंगः (यट। ज्रमा बनाट अइमिकिः। ইত্যাগমভত্ত্ববিশাস:।। মৃত্রাতঃ ত্রি মৃতোদেশেনরাতঃ। ্ তৎপর্য্যাय:।অপস্থতঃ২।ইত্য मदः ॥ गृजगृष्टिणः क्उद्गान कत সানী। ইতি তড়ী দাযা ভরতঃ ॥ মূভসান ক্লী ম্ভোদেশেনসান। তৎপর্য্যায়:। অপস্নান ২ । ইতি (इमहन्मुः॥ মৃত্রমোক। পু॰ রাজবি:। ইভিছে-महन्तुः॥ মৃতানদ লী তুখ। ইতি শক-विमुका ॥ गृजानकः क्ली चाहकी। ইত্যমन्नः॥ गृङ्धिः खी मद्रगः। ইভি ছেমচन्द्रः॥ मृदं जी मृक्तिका। इंडामद्रः॥ जूनकी । ইতি রাজনিঘণ্টঃ।। म् कतः भः षस्कातः। इं जि কাওশেষ: ॥ म्८का मा नी नी बादः । इंडि जि কাও:শয়ঃ ॥ म् किता औ सव्ती। घृष् विगा इंडि

ভাষা। ইতি ত্রিকাওশেষ:॥ न् थांचनी खी वर्षक वाक्षः। इं उ नक्षिका॥ ब्रञ्जावनी ॥ म्बानक क्ली ज्वन्निका। ज्वन्निक-লায ইতি অডর ইতিচ খ্যাবা। . ইত্যমরটাকাথা• ভরতঃ ॥ সৌরা-क्षेत्र विका। इंडि का कनियंगः॥ ।। সংস্কারাথ: ব্রাপিতে মৃতে। ইতি মৃত্তিকা জী তুবরী। ইতি রাজ-निर्घर्षः ॥ मृट् । नाही इंडि जारा । इंडामद्रः । उद्भर्गायः । मृना २ मृखि: २। ই डि ভর ड: ॥ मानकार्य मृज्जिकारनभन विधि यंथा । मृहा পুক্ষাল্য লিক্স্ত দ্বাৰ্ড্যাণ নাভে ন্তথোপরি। অধশ্চ তিস্তিঃ কার্য-मिंडिः भारती जरेश्व ह ॥ कंडिक जि স্ভিশ্চাপি হস্তযোদ্ধিশ্চ মৃত্তিকাঃ । शुक्राना काय श्रु हे बि बाह-न १ यथा विधि 1 ७ जः मंभार्जन क्दा भृष्टा वा जिम खदय ।। **अर्थ-**ক্রান্তেরথকাতে বিফ্রকান্তে বসুন্ধরে । উख् जानि वदाह्म कृष्यनानिः ত বাহুনা।। মৃত্তিকে হর মে পাপ। यभ्या भूई मिक्षिडः। मृखिक दुक्त मंडा म भूकया ह श्रुव है। मृद्धिः কে ত্বাঞ্চ গৃহামি কাশ্যপেনাভি-

নজিতা । মৃত্তিকে জহি মে পাপ यम्या पृष्क् उ॰ क् उ॰ ॥ च्या र उन भाभिन वुक्तलाकः वुकामाइः । ্ইতি বহি পুরাণ।। 🗱 ।। শৌচার্থ মৃত্তিকা গুহণ বিধি যথা। আহ্ত্য मृखिका॰ क्लाह्मिश गृक्षाभकर्गः। वर्ग्राम् अस्तुः भोठः विशृष्टि य-ष्टारिकः॥ नार्द्रं मृजिकाः तिनुः भाः मूनामह कर्मभाए। नभा-्र गाँद्यायत्रारम् भारहोठ मिक्षाः भन्न-. माह॥न(मवायजनाएक्नाए(गरा ় মচ লগাওথা। উপস্পেভতো নি ত্য পুর্বোক্তেন বিধানত: ॥ ইতি , কৌশ্মে উপব্লিভাগে ১২ অধ্যায়ঃ।। छम्। श्रिका मनित्रभाष पुरेव।।। म् एकनी जी माधीयथः। इं जिहाताः वनी ॥

मृञ्रः भ् यनः। ইতি ह्महन्तः॥
कःमः। यथा। भुज्रमं मृज्रतः भू
धान साहर्य क्भगानिमाः। मृजा
मि यरि कार्यद्रम् मृज्रु द्यां न मिर्य
छ हिष्य।। ইতি জীভাগবতে ১০ ক
क्ति अध्रायः॥

भृज्यः वि शुगिविरयागः। छ० श र्यप्रायः। शक्ष्णा २ कान्यप्राः ० पि डेश्डः ८ शुन्यः ७ व्यञ्प्रः ७ व्यष्ठः १ नामः ৮ मत्रगः २ निथनः २०।

ইত্যমর: ॥ পঞ্জ ১১ মৃত • মৃতিঃ ১০। ইতি তড়ীকাষা• ব্লহ नाथः ॥ मृजुऽ >८ रेनवन >৫ । इति **७ डोका जात्रज्ञत्यती ॥ म**न्द्रा ३ कानः २१ भन्नत्वाकगमः ३৮ मी। निमा ১৯ নিমীলন ২০ অন্ত : অবসান ২২। ইতি হেমচন্দু:। ভূমিলাভ: ২০ নিপাত: ২৪ বিলব: ২৫ আভ্যবিক ২৬। ইতি শব্রত্ন वनी ॥ म जु वुक्ताना खराजा जाउ: । यथा। পাযু র্যন্স্য নিত্রস্য পরি-भाक्तमा नात्रम् । हि॰ माया नियः एक म्र्जित निवयमा छन्। स्व ो**ভाগবতে २ ऋत्क्व ৫ ञाश्रायः** ॥ कन्नाष्ट्रत ভ्याट भाषायाः बाजः যথা। হি•সা ভার্য্যা ত্বধর্মস্য তথাে। ৰ্জজ্ঞে তথান্ত। কন্যা চ নিকৃতি স্তাভ্যা• ভ্য• নরক মেব চ II সাথা চ বেদনা চৈব নিথুন জ্বিদ মেতযোঃ । ভगाड्या छ १९ वि माया मृज्रु। **ज्ञाभ**ङाद्रिगः॥ (वहना ह मूजका-शि , मृ:थ॰ ङ छ्डि**थ** (द्वीद्रवा**र । 🕸 ।** व्यम्ताभन्तामि यथा। गूर्वित वंत्रि ৰ্জনা শোক তৃষ্ণা ক্রোপাশ্চ জব্জিনে । দুংখোত্তরা: মৃতঃ (হৃতে সর্বেচা-थ्यं नक्षाः ॥ रेन्याः ভार्याखि भूत्या वा मर्खिए कुष्व्रिवनः।

स्थि जिन्ह उथा हान्या मृत्उत र्जार्या । वन् मत्न ॥ व्यवस्था नाम उन्याक्ष उत्राः भूवा महजूर्म ।

্চকা হেতে মৃত্যো রাদেশ কারি-ः ॥ विनाण काल ह नदान् ভषाः ख्या**ळ मृ**गृष जान्। इन्द्रियषू मणः ষেতে তথা মনসি চ স্থিতা:॥ ষে स्य नतः जियः वाशि विवाय याजः যন্তি চ। তথেন্দ্রিয়াণি চাকন্য রাগ रमाञारिजि नंद्रान् ॥ रगावयन्ति ज-था शनि॰ याडि धर्मानि छि विका অহকার গভা শানে তথানে বুদ্ধি ল-ছিতাঃ।। বিনাশায় নক্ন জীণাণ येडास भाक् मः मुगाः । अवः द्व-র্মেণোৎপন্না: সর্বেচাপি ভযক্ষরা: ॥ इंडि मार्क्ष अभूदार पूरमंशान् नामनः नामाध्यायः ॥ विकृभूत्राल नुष्यान्या जिथ्याध्यायण्या 🗱 ॥ মৃত্যু **জ্ঞাপ**কারিষ্টানি যথা। দক্তা-खिय উवाह । श्राविश्वानि महावाक শূণু বক্ষ্যামি তানি তে। যেষা মা-াাকনামৃত্যু নিজ জানাতি যো বিৎ ॥ দেবমার্গ- পুর- শুক্র- সোম ्या मक्कजी॰। या न भाष्म्यकी-द्ध म नद्रः म॰व्यमद्राध्भवः॥ छा-শ্মি বিম্ব সূর্য্যস্য বহিংক্ষবা শুনা-^{जन• । म्}रिष्ट्रेकाम**ण नारम**ञ्जा नद्मा

নোদ্ধ • স জীবতি ॥ বাস্ত্যা भूतीय वा भ्वर्ग त्रज्ञ छथा। भू-ত্যক্ষ মথবা স্বপ্নে জীবিত দশমা-निक ।। पृष्ठ्वा (भुक शिमाहाभीन् ग-क्षर्व नगद्राणि ह । मृदर्ग दर्गान् क्-काःक नवमात्रान् म बीविष्ठ ॥ खू नः कृषः कृषः श्रृता (या १कमा-(एवं कायछ । शुक्रिक निवर्त्वंड তৰ্গায়ু শ্চাষ্ট মাসিকণা খণ্ডণ যস্য नमः भार्क्याः भारम्याग् २०वा खरवट् । भाष्म् कर्ममया मास्यु मध मानान् न कीविज ॥ करमाउ गृष् कारकाना वायरमा वाशि मृर्वान ! कर्यासा वा थरमा कीनः यथानामृह পুদর্শক: ॥ হন্যতে কাকপদ্ধীতিঃ भाष्म् वर्षित् वा भूनः। महायाक्षान्। था मृध्ने। नक मात्रान् न जीवि ॥ व्यनाचु विमूर्ड मृष्ट्री मिक्किशा मिक्ष-मार्षिजाः। भगमीनम् धन् बीभि बी-বিত দি ক্রিমাসিক।। যুতে তৈলে उथामार्म (डाय्य वा हाजान छन्। यः शामाप्रमित्रकाः वा गामाप्रकृ न कीविं ।। यम् वस मागा गान्। গাত্রে শব সমোপি বা। তস্যার্দ্ধ গা সিক জেণ যোগিনো নূপ জীবিত ॥ যস্য বৈ স্নাত নাত্রদ্য হৃৎপাদ गवणूष्ठाछ। शिवछणः जनः (भारषा

मनारः मानि बीविधा उद्धिका माक्टा यम्। मर्माश्वानि क्षि । न इराउ।सू मःम्मनाखना गृञ्। कः शक्तिः ॥ अक वानत ग्गार्डा गाः यन् (या मिक्ना॰ दिना॰। प्रत्य नु যাতি ভস্যাণি ন মৃত্যু: কাল মৃহতি ।। तक क्षाध्वध्या भागनी इनजी D यः। पिक्शाभाः नश्यकाती स्टा সোপি ন জীবতি ৷৷ নগ্ৰ- ক্ষপণক ब्राल्न इमगानः भूम्म्य देव । अमः वा বীক্ষ্য বল্লন্ত বিদ্যামৃত্য নুপছিত ।। जामस ह जनाम्यस निग्नः शहः সাগরে। ৰাপু পশ্বে তথাত্মান নর: সদ্যে মি্যেত সং ॥ কেশাস্থারা॰ ख्या ভम जुकम निर्क्षा नशी। দৃষ্টা ষপোদশাহন্ত মৃত্য রেকাদশে इति ॥ कहारेन विकरिः क्रेंगः भूकः বৈ ৰুদ্যভাগুৰৈ:। পাৰাণৈ ভাডিঙঃ स्तु माम्। न्ज्र मगान्यार ॥ সুর্য্যাদযে যস্য শিবা কোশন্তী যা-তি সন্থা। বিপরীত পরীত বা ज जल्हा मृज् मृह् ।। यजा देव ভুক্তমাত্রেপি হ্রবণ পীডাতে ক্ষ্বা । জাযতে দন্ত সংঘর্ষ: স পতাগুর-अभय ।। मीशामि शक्त (ना विखि ব্যত্যগ্নি তথা নিশি। নাজান প झराबह्• वीक्षा**ड न म** बीविड।। म

কাৰ্থকাৰ্মর . . गद्भाग ७४। । मृद्धा मत्त्राज मःकीन माजा बीविज মাজ্মবান্।। নাসিকা বক্ষতা মেডি कर्नाम नेमुखाम छी। त्यक कामः সুবতি বস্য তদ্যাব্ কর্ত ।। আর-ফু তা মেতি মুখ জিল্ব। বাপি নিতা उथा। उमा भारका विज्ञानी गाम् जु भागम भाषानः॥ छेड्डे द्रामञ वास्नन যঃমপু দক্ষিণা দিশ। পুযাতি ত विकानीयाय जान्तर। मृजुरः नाद्रश्वत া। পিষায় কণ্ নিৰ্ঘোষণ ন শ্ণোভ্যা ত্ম সম্ভব•। নশ্যতে চক্ষুষে। জ্যোতি যঁস্য সোপি ন জীবতি ॥ পততো यम् दि गाउँ याल बातः निधीगाउ । নচাৰিষ্ঠতি যঃ স্থাত্তদন্ত তস্য कीविष्ठ ॥ উक्षां ह मृष्टि नंह मण्युः িঙা রক্তা পুনঃ সংপরিবর্ত্তনান। । মুখন্য চোম্মা শিশিরা চ নাভিঃ শংসন্তি প্•সা মপর• শরীর•।। স্বর্শ্ন প্রি প্রিশেঅস্ত নচ নিষ্কুনতে ন-রঃ। জলপুবেশাদপিবা তদন্ত তস্য शिविछ ॥ य नगा**छ ह**नार परिष्ठ र् रे. त्राबावरथा निवा । न ग्रुउ সপ্তরাত্রান্তা পুনানাপ্রাত্যসংশ-ব ৷৷৷ ববস্ত্র সমল শুল রক্ত পশ্য-ত্যথো গসত । য: পুনান্ মৃত্যু মা পন্ন ভস্যাগি হি বিনিদ্দিশে ॥

ৰভাব বৈপৱীত্যম্ভ পুকৃতেক্ষ বিপ-र्यातः। कथ्वित्र नन्यागाः ननामा ধনান্তকৌ।। যেষা॰ বিনীতঃ সতত॰ যস্ত্র্তনা নতা:। তানেব বোব-জানাতি ভানেব চ বিনি**ন্দ**তি॥ দে वडा नाई(यह्कान् खक्न् विशा • • • বিন্দ্তি। মাতা পিত্রো রস্থকার কানাতৃণা॰ করোতি যঃ॥ যোগিনা॰ জ্ঞান বিদুষা মনে/ষাঞ্চ নহাত্মনাং। <u>भाषाङ्गालः भुक्ष उद्याख्यः वि</u> চক্ষণৈ: ৷৷ যোগিন৷ সভত যত্নাদ-রিপ্টান্যবনীপতে। সংবৎসরাম্ভ **স্ত** क्रञ्जन कलपानि पिवानिण ॥ वि-লোক্যানি সদা চৈব ফলপছুষু ভী-ক্যা। ইতি মাকণ্ডেবপরাণে অল-क्लिभार्थानः॥ 🗱 ॥ कर्यादित्सवाम्-ত্যুবিশেষে। যথা। যেনান্ভানি নো-জানি প্রীতিভেদঃ কৃতো নচ। আ-खिकः **णु**क्षधानणः न नृथ• मृङ्य मृहः **जि।। यागात्रहाहिता हाइ: क्रथ:** ठानमनायिनः । भाश्यविष्ठ नदाः কালে ভিমান্ মৃত্যাবুপস্থিতে॥ দেব বান্ধণ পূজাযা। যেরতা শ্চানস্যবঃ। শুক্ষাবদান্যা ত্রীমন্ত তে নরাঃ সুথ মৃ ভাব: ॥ গোন কানায়সংর্ম্ভান্ধে-याट वर्षा मटम्खट । यथाककाती गोनाक मजूय नृज्य म्हिजा भी

ख विषयीक्षनमा खान कामकमायि-नः। भागनी व्यक्ता कक्षा व हात्र दिवकाञ्चितः ॥ भाराज्यान शुरा-ভার: পাুগুৰন্তি মহন্তমাণ। কুটসা-की म्यावामी यण्ठा नमन्णाखि वै।। তে নোহ মৃত্যুব: সর্বে তথান্যে বেদ निन्त्काः । इंडि भार्क्खवभूत्रात পিতা পুত্র সমাদ:॥ 🗱॥ মৃত্যুকাল कर्खना कृ पृक्षस्य भागिक छ॰ यथा । वर्षि कृ पुक्छ्नाः हिः मकानाक भिष्उः। कार्याभेगः ममूर्म्बरु म् ত্যকালে পুন্চ্যতে ॥ অহি সকা-नाः कृष्ााः वस मञ्चा शुत्रः । প্রাযশ্চিক্ত মৃত্যুকালে কথিত পদ্ম-যোনিনা।। ইতি বুদ্ধবৈবর্ত্তে 🗐 কৃষণ कम्पराख १ व्यवतायः॥ ॥ ॥ गृज् अभार्य शक्रागमन भावनाइक यथा। অহো সগরবংশেভ্যো নির্বাণ মুক্তি मायिनी। देव अर्थेण भिना॰ मार्ग (मा-পানৰপিণী বরা ৷৷ অতোপি মৃত্যু: সমযে সভা॰ পূণ্য স্বৰূপিণা। আ-(न) शासी ह विनेत्रमु गृत्थ (डाय॰) भुनीयर ॥ गमा (माभान माक्श সম্ভো যান্তি মমালয়ং। ইতি তাত্ৰৈব ৩৪ অধ্যানঃ ॥ 🗱 ॥ জন্মবতা॰ মৃ-ত্যোরপরিহার্যন্ত্র• 🔭 থা। মৃত্যু র্জ মবতা॰ বীর দেহেন)সহ জাগতে।

অদ্য বাদ শতান্তে বা মৃত্যু বৈ প্রা-ণিনা॰ ধুর:।। ইতি শ্রিভাগবতে ১০ ক্ষরে ১ অধ্যায়:।। অপিচ। জাতস্য হি ধুবো মৃত্যু ধুবি জন্ম মৃতস্চ। , ভেমাদপরিহার্য্যে হর্থে নত্ত্ব শো-চিত্ মর্হসি ॥ ইতি শ্রীভগবদ্দীতা ।। 🗱 ॥ অকালনৃত্যুপুশমন স্তোত্র। যথা। সূত উবাচ। স্তোত্রণ তৎ সং-পুरक्रामि मार्काश्वरम ভाविउ॰। নারায়ণ সহসাক্ষণ পদ্মনাভণ পুরা-তন ৷৷ পুণভোমি ছ্ধীকেশ কি নে নৃত্যু: করিষ্যতি । ১। গোবিন্দ পু ७ बीका क्र मनल मल मवाय॰ ॥ কেশবঞ্চ পুপয়োমি কিং যে মৃত্যুঃ করিষ্যতি । ২। বাসুদেব জগত্মে। नि॰ ভানুমন্ত মতीन्मुय॰ ॥ দামোদর॰ পুপয়োমি কি মে মৃত্যু: করিষ্যতি । ৩। শহ্ব চক্রধর দেব ছদাক্ষিণ भवऽयः ॥ व्यास्थाक्षकः भुभामात्रिय কি॰ মে মৃত্যুঃ করিষ্যতি। ৪। বারা-হে বামন বিষ্ণু নারসি হে জনা र्मन ।। भाषवक भुभावामि कि भ নৃত্যু: করিষ্যতি। ৫। পুরুষণ পুষরণ সুণ্য ক্ষেত্ৰ বীদ্ধ জগৎপতি ॥ লোকনাথ পুপলোমি কিংনে মৃত্যু: করিষ্যতি ৮৬। সহসুশীর্ষ নেবেশণ वऽङावऽ**ङ∙्ञनाउनः।। महा**र्याग•

পুপদোষি কিলে মৃত্যু: করিষ্যু । १। ভ্তাসান भशासान यक যোনি মজোনিজা ।৷ বিশ্বৰূপণ পূপ मामि कि॰ म मृज्यः कतिवारि । ৮। ইত্যুদীরিত নাকর্ণ্য স্তোক্র তস্য মহাত্মন:। অপষাত ভাগে म्जू। विकृष्रेजः भुनीषिजः॥ इंजि তেন জিতো মৃত্যু নাৰ্কণ্ডেযেন ধীম-ত।। পুসলে পৃত্তরীকাক্ষে নৃসিংহে नासि मूर्लं छ॰ ॥ मृद्युष्टेक निमः भूगुः মৃত্যু পুশমন শুভা। মাকণ্ডেয ছি-তাৰ্থায় শ্বয়• বিষ্ণু ৰুবাচ হ।। য় ইদ• পঠতি স্তোত্রণ ত্রিকালণ নিয়তঃ শৃ্-চিঃ। নাকালে তস্য মৃত্যুঃ স্যাল্প-স্যাচ্যুততেত্তম:।। হৃৎপদ্ম মধ্যে পৃক্ষ পুরাণ নারাযণ শাশ্বত মা-मिरमव विविध्य সूर्यप्रामिखताक मा-ন•মূত্যু• স যোগী জিতবা•ন্তদৈব।। ইতি গাৰুডে ২০৮ অধ্যাय:।। 🗱 🛚 🖠 **ण्डक्य भुजिवश्वक मृज्**रनारयाणा यथा। जारि उर ভीमरया नैनता छन्। শুক্র শশাক্ষযোঃ। বুধে জয়া গুরৌ রিক্তা শনৌ পূর্ণা চ মৃত্যুদা॥ অপিচ । त्रवािम मिवरें म यूं का विणाशामि চতুশ্চতুঃ। উৎপাটা মৃত্যবঃ কালা অমৃতানি যথা ক্রমণ।। ইতি জ্যো; ভিন্তত্ত্ব ॥

ূত্যুঞ্জবঃ পু॰ শিবঃ। ইত্যমরঃ॥ **उद्याम काइंग॰ यथा। স्य**क्क উবाठ। भिरवा नीता निर्श्य हिंद शिक्रिक भाकृष्ड वाय ॥ कथ॰ उद खात्रा ৰ্মাম মৃত্যুঞ্জয ইতি শু.তৌ। সূত পা উবাচ। বুন্ধণো হস্তে মৃত্যুকন্যা भुगद्वे। जन विन्यूवर । मः हर्वे मः र्ज्याकानाः वुकामीनाः नदाधिन ॥ किंडिया मृजुर कन्रामाः वुक्रागाः (काहित्ना नरम । कात्नन नीनः मञ्जूक मज्बनी ह निर्श्य ॥ मृ-जुरुकना बिजा **म**यं मिर्यन छ ৰণা মম। ন মৃত্যুনা জিতঃ শস্তুঃ ৰূল্লে ৰূপ্লে শু.তা শু.ত ।। ইতি বৃক্ষ বৈবর্ত্তে পুক্তিখণ্ডে ৫১ অ্ধ্যাশঃ ॥#॥ রোগশান্ত্যর্থ তস্য পূজা विधि यंथा । मृज्रुक्षयः नमान् इर लिक् वि च्वानचत्र । तागार्खा মুচ্যতে রোগান্ধনে। মুচ্যেত বন্ধ-नार ॥ गञ्च मः भू बारय छक्त । विकः न्जूऽक्षराज्यि । यसानि भूनसः জ্জা কি॰ করিষ্যতি চাম্য: ॥ उन्। भूका विधि व्यक्ता भूगू मूट পুাণবল্পতে। জাতিভেদে মৃত্তিকা স্ত গৃহীত্বাশীতি তোলক ॥ नि चीय भार्थियः निकः काः माधात निरवणरयः । भोतानिरकन मस्यन

व्यर्गाह गठेन वृषः॥ मान (यट नधः গব্যেন পুত্যেকস্যাই তোলক॰ । ৰ ষ মজৈক পুত্যেক দুব্যেণ স্থাপ-(य८ मुदी: ॥ द्राग क्रय कामगय। নাম গোত্রাদি পূর্বক। উপবিশ্যা সনে বিপ্ৰে। ধৃত্বা ধৌতে চ বাসসী।। क्षुक भाषा॰ कर्छ रेव धृदा ভना ত্রিপুগুক । উপচার বোডশক (एय- ७ इन्)। भूयङ्ग ।। भूवर्गम्। সন দেয় তথৈবাভরণানি চাবস্ত্র युग्म॰ भुष्तम् अञ्चल भिन्नि । अन्य (वर ॥ मध्भक्षं कांना भावि म-দ্যান্ডোজন যোগ্যক । বিহুপত্র **সহসুঞ্চ অভগ্ন•** विनिद्यहरयुष्ट ॥ এ**व•** সংপ্রা লিকৈক জপেরন্ত দ্বিস-रुजुक । ততো (राम भुक्रां)ाह प किनाः तुष्ट्रात एएट ।। जूवर्नः वा **७ एक्षः वा एक्वि विख्य गान्छः। अ-**क्रीनान कर्जवरा भूका ठाकलमा यउः ॥ একলিঙ্ব• সমারাখ্য ফল• স্যাদ ন্যকে যুগে। তৎফল লভতে দেবি কলৌ সংখ্যা চতুরুণা।। তামুপাত্রে তু সংস্থাপ্য অশীতি ভোলক জল• । जब्जल्वरेनव (मरविन क्रेन्सः मःमा-र्का द्वारियः।। किःश्वम्तीभः निश्न-याक मञ्ज मूठार्या गारीक । अव वि-वि विधानन भूषायग्रीम जिन्नकः ॥

गृजुज्

यान्शान्य (वाष्ट्रात्या नाम मिडि नः) যোদিতঃ। লাঙ্গেন পূছবিত্বা চ ল-ভতে বাঞ্চিত ফল ॥ অঙ্গ ব্য जिक्रानरेगव वृथा **जवि** वायना । (तानी भूग्राड अपरा) (ভानीव म्ट्या खो भूगछम् खिका।। काकी क्षक्राज्ज्ञा ।। यपि नम्हार छ ক্তি স্তদ। মুক্তো ভবেনর: । ইতি मृजुः अगञ्जः ॥

মৃত্যুনাশক: পু: পারদ:। ইতি রাজনিঘণ্ট: ॥ মরণহারকে ত্রি ॥ নৃত্যপুষ্ণ পু ইক্। ইতি রয় भावा।।

म्ठाकृतः शुः महाकानकनः। ইতি विषिनी ॥

मृज्यक्ता जी करनी। इंजि मिरनी मृज्। अञ्चलका नः भू॰ राज्ञ गका न वाम भी य भार्ते । गथा। जदक्ट (भुजभर्हे ररा गृज् क्षेत्रज्ञकण मः। इंडि जि কাও:শৰ:॥

ন্ত্যভূত্য: পু• রোগ:।ইতিরাজ ियकः॥

मृञ्रावक्षनः भु•्रिनवः॥ विवृव्कः॥ मुखकाकः। इंडि (मिनी।।

নৃভ্যবীলঃ পু• ব•শঃ।ইতি ত্রিকাণ্ড-(শ্যঃ॥

मृङ्गितः और कर्त्वति। मृङ्गात मृ**ङः** शुभादा दर्भाः मा। यथा। यथा गृहक्

कक्षर्वेकी गर्ज माधाउ मृष्ण माधा-नः। ইতি মহা ভারতেবিরটেপর।। म्टमा जी भूगसम्बिका। ইত্য नवः ॥

ইত্যমর: 🛚

ন্ৎসাভাওকঃ পু॰ ভাওবিশেষঃ। তৎপর্যায়:।মুষ্টিকা২। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ॥

म्र १ कृति। ইতি কবিকল্পদাং॥ न मृत्रां विभिन्न । क्षु कि तृरी क्रांति। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥

म्म जी मृंदामृज्जिका। इंज्यातः ॥ म्बद्धाः भू शतीउभकी। इंडि एगम्यः ॥

मृत्यः भू भ्रनाम्थाजवान्। छ८ भर्गप्रायः । मूत्रकः २। ইত্যমतः ॥ পটহ:।। ঘোষ:। ইতি মেদিনী।। বে॰খা:। ইতি শ্রমালা ॥ 🗱 ॥ ष्यथ मृतकाति विवद्गाः। सम्बन्धः चारितः (मुर्छ। श्रीतः म्यारन्य मा-ক্ত জঃ। রক্ত চন্দ্রজাে বাদ্যে। গভী র বুনি ক্ছকৈ:।। সার্ছা হস্ত পুমা-ণস্ত দৈঘ্য মৃস্য বিশ্বীষতে ৷ ত্রয়োর-শাস্ত্ৰ বান নথবা দ্বাস্থ্ৰ া। দক্ষিণঞ্চ ভবেদ্ধীন নেকেনাদ্ধা-क्लन वा। क्रशानक वहरन, मर्द्र हेह्य भृथु डंवर ॥ वधानीकाः छ (वश्व अहम् कद्र १ मङ । मृज्जि का निर्मि जेटे कर मृत्यः श्राहकी खिंउः ॥ भा उरय थर्जान वाम्। वामना-র্থঞ্চ মর্দলে। বিভৃতি গৈরিক ভক্ত (कन्तृत्कत ह मःयुक्ता यहा हिलीहे कः (एयः कीवनी अवः मिन्नुकः। नार्व নেকৃত্র পিইন্তলোশং শ্রেলি কচ্যতে ॥ वामारमा भूबिका क्षा रामा द्रम् । द्रिक्ति । भूतः गण्यकः (भाजः गर्व न्युरस्थानस्याग्राजः॥ অস্য সংযোগ নাসাদ্য সর্বং বাদ্য ঞ্চ শোভতে ৷ এতদকে বীজকাষ্ঠে हन न कं अनुन विदुः ॥ 🕸 ॥ उदि ধোতে মিতি জ্ঞেশা: পাঢবর্ণা মৃদ व्यकाः। (था॰ ५॰ ए॰ विक्रिष्ठे खर्बी-তাক দ দ পথাগ ধিধি। খ র্মাঝ ন গট দ পাষ্ট পাটা মতা অনী। তথি থো চে তক্ক ধী দো দ দ দ ধিগণা• ভত্ত• ভবি।। ভক্ক ত• ধ• ধি দো॰ তাধি পাঢখণ্ডে ব্য॰ কনঃ। #। তথাচ যতিনানে পাচথগুঃ। দুগ তথেকা॰ দুগতথেকা৽ ধাে ধাে ধিক-তা ধিকা থোজা• থোজা• তক ততা ধিকা থোতা দুগ ততা ধি ধি ধিধি ক্ত ভাক্ত নাথোধিক থোজা ধা-ভারুণ ভতাগুণত তাদুণত তাপি।

ইতি যতিমানে পাঢ়খণ্ডঃৌট্ 🐙 🗓 यकि (द्राध्माश्रदहिता गंजस्त्रा के-পক প্রাং। গলপঃ সারিগোণী 🍺 নাদশ্চ কথিত তথা ৷৷ পুহরণ বৃ-न्तनक भूवका बादन मृजाः॥ यथा। ए थाउ ইভ্যেক তাল্যা॰ यञ्जिक्षाक्षा **७५वाम्। यथा। मा॰ उर्था उर्विक ত** বিক-দে भाम भा (थावि । था दि তত্ত ভত্তপাবিথ বিদিশ্যাণ দিশ্যাণ ठेछे निक छेठे निक छम छेक छम छेके থবট্স খবট্স ডেগ্রিন্সলি ওবি निश मार मार मर मर मीर मीर मर छा छथा। ब्रेटक्राव्याम् । ॥ भा व्यवस्त वास्र त्रथा । मः थाउः सः थाउः ধিক্লি ধিক্লি দিগণ দ পাতঃ ৷ ইত্য-वाह्रवानुः ॥ 🗱 ॥ शब्द वानुः यथा। (थाक हिन्छ सन्छ हिन् एउ গথাে গণ্ড়াক্ত টেক্ষ থােগভকি ধিক তকি ধিক টেম্বন ধি ধি কট তক থাক তধিকট তক্কক তথোগ **তদ্ধ**ী । ইত্যেকতাল্যা: গ্রন্থ: ॥ 🕸 ॥ क्रिक वाम्र यथा। उक्षिक् उक-ধিক্ক থবিতকি থবিতক্কি ধিক্ক দ• था ७:। इंडि क्পक्वाम् ५: ॥ 🗱 ॥ ধ্রুবক বাদ্য যথা। তত্ত্ব তত্ত্বট ধিকু धिक्र । इंडि निमात्री । स्तकः ॥ 🗱 ॥ गणाला यथा। उधिक धिक

ভক্ত ছি গলগ থা থা দে তথা 🏻 ঢেঞা । ইত্যেকভাল্যা• গলপ: ॥ 🗱 ॥ जाब्रिमानी यथा। (थाक्-টেঞ ভক্ব ধিক্ব ভকধিক্ ভকথো হুট-'ব্ৰন হটব্ৰন থোগত্ন থো: 1 ইতি পু-थगथ ७: ।। 🚓 ।। दिक त्याः वि त्या हः हिन्छ हिन्छ एक जनमङ्ग विक उति-দত্ত দং প্ৰাদঃ গথে। গধ্যে কাতক তক र्विक अधिक जाया प्राच्या (वार्टिक शर्ह কুলা খোগল খোগ খোহট গে क्रीसः (चार्डेका रेजामा हम्स्यः) इंडिजानीरगानी।। 🗱 ।। नारमा यथा। দাং কার ত্রিত্যং পূর্বং দাং বি গিতি তত প্রবৃণ। দা॰ দা॰ বিক উর্বৃণ বত্র हेि नारः भागी लियः।। हेि नारः ।। ।। इंड मान भगातका मुक्क क्षे विनिर्धिष्ठः । मधर् ७ सर् वाह्यः কথিত তদিহোচ্যতে ॥ # ॥ ফত নানত্বাৎ পুভিভালে যথা। ভত্তত ভত্তত ভক্কি ভক্কি দিদ॰ ধিগনখে৷ विगनत्थ। विङ्क धिक् विक्व विक्व निग नगमि (था (था वि वि वि: मा मा धिकु (था (था एषा एषा एन वि থো নঞিথো থোহ থোহ ডেটি ডেচি থোহ থোহ ভাই ভটি ভটুক গী গী ধাগ ধাগ ডত তথে তত ভবে ভতত গিড়ী ঞড়ী থোগ থো

গথো থোগগ থোগথো ভর । ইতি সপ্তপদান্যাত্: कथिजः দ্য পণ্ডিভা:। পুভিভালেন ভা न भारवर्ग समामछः ॥ शक्कवं जिना भृद गूर्वणी वामा नर्ज्यः मूर्यातिकनार्थक कथिए नुकी कृष्टि । भा। भुरुत्रगः यथा। रव गङ्गा उष्मिका थान कहे गरगां॰ ं (थाग सिंबिक शिक शिकरिक । ं (छ)कडार्षेत्रिः शुरुद्रगः । सः।। २ ं मं १ विम्हारिक स्थिन इन्सन छ। गम्राञ । यथा । जिल्लाथा मि (िक उम्रः। इंडि इन्स्न·।। 🗱 मर्पन खर्वारमाजन वामगरः षार्भाक्त रिकिनग्रीः। गूत्रकः क्षेरणाकृत वाममूथः मस्रमाकृ मिष्मिनमुथः नर्मन नुत्रक्रायः त **७४:। इंडि मिन् उ**नामान्तः। म्रक्षकः शुः शनमत्कः। इ मक्त्रज्ञावनी ॥ मृष्ट्रकालनी जी कावाउकी। इं त्राक्षियणः॥ म्रकी जी वाषाजकी। व्यञ्खाः ইতি ভাষা। ইতি রহ্নালা।। মৃদা জী মৃত্তিকা। ইতিদ্বিপকোষ म्हाकतः श्रु वज्रु । इंडि नक्षा म्बिछः जि ह्नी क्षः। इंडि म्ब

भारताः कर्मान क्रिश्रहारान निष्ठमः।। हिनी खी भुणसम्बिका। इति भारतिनुका।।

ূ: ত্রি অতীক্ষঃ।। কোমল:। ইত্য মর:।। গৃহকন্যাযা• জ্রী। ইতি রা- ॥ জনির্ঘন্ট:।।

एर्क्कायम॰ क्री भीवक॰। ইভিবাজ निर्धिः॥

गृष्णानः भ् विज्ञान्त्राचा म्निमित्राः द्विव श्री नक्षजानि। यथा। किंद्रा बिः क म्नाडाज- मृग्नाः। इंजि क्या-जिख्नुः॥

पृगमना जी हं भी। है जित्राक विकि: ।। नम्तगमना जी ह ।। पृण्यों भू॰ ज्र्ज्यकः। है जित्राज-निर्घणेः।। कामण द्विमित्र कि॥ प्रहृतः भू॰ ज्र्ज्यकः। हे जिल्ले हम्पुः।। गितिक भी मृत्कः। हे जि कं हो थतः।। स्कृतकः।। श्रीजानः। है जित्राजनिर्घणेः॥

বিভাল: প॰ প্রীতালবৃক্ষ:! ইতি
বাজনির্ঘট:॥ কোনলতাল ।।
দ্বক / পণ ভ্রুবিক্ষ:। ইত্যনর:॥
দ্বিচ: / মৃদ্ব স্ত্রেল ২ন্য মৃদ্বাহ
চার:। ভ্রেলিথ ভ্রুপ্র: ন্যাৎ

মৃদ্বক্ পত্ৰপৃত্নক:। ইতি কোৰা স্তব্ন নিতি নধ্য। অদন্ত নপুণসক ব চ শব্দেন আবন্ত বুচা শব্দেন বা বিস্ত্তে মৃদ্বটো হদন্তোপি। ভ্-জ্ঞো ভাষো বহুপটো বহুবক্ষো মৃদ্-বুচা। ইতি স্থানী। ইত্যন্ত্ৰটীকা-খ্যা ভাষাত্ৰ:।।

মৃদুধক প্লী সুবৰ্ণ।ইভিশ্বিচন্দ্রিক। মৃদুপর: পূণ নগা:।ইভিনাজনির্থট: ।। কোমলপর্ণে প্লী।ভদিভি তি ।। মৃদুপত্রী জী চিপ্লীশাক ।ইভি রাজ

मृष्णवीतः श्रुः (तवः। ইতি রাজनिर्यापः।।(कामलभविविधि वि।।

मृष्णवाः भ्रुः भित्रीयपृष्णः। ই उ दवः

माला।। (कामलक्रम्मगुष्क वि।।

मृष्णवाः भ्रुः विकक्ष उः॥ मथ्नालि
किति कः ॥ विकक्ष कृष्णः। ইতি

दाजनिर्यापः।। विकक्ष कृष्णः। ইতি

दाजनिर्यापः।। विकक्ष कृष्णः। ইতি

दाजनिर्यापः।। विकक्ष कृष्णः। ইতি

वाजनिर्यापः।।

मृत्वामकः भू॰ ममकः। ইতি एमन हम्दः॥ कामनात्रामविभिष्टे जि॥ धृष्ट् भनः ज्ञी नीनभग्नः। ইতি मदः हिम्द्रका ॥ गृहः भू॰ मट्मुएछहः। ইতি म•किश्वः माह्राभाषित् जिः॥ म्बन् की दन । हेडि हमण्यकः।।
प्रवी की कामणानी। हेडि मूखतावदाकता ।। व्यक्ति । मणः
प्रवी प्रतिमद्रम् ।। व्यक्ति । मणः
प्रवी प्रतिमद्रम् ।। व्यक्ति । मणः
प्रवी प्रतिमद्रम् ।। व्यक्ति । मणः
। गड्दा मिंड कियि छान् कृत्राण।
तामानुस कृष्ट्यी प्रमादकातः।
हेडि महानार्षेकः।। किल्लामुक्ता।
हेडि ताक्र नियणः।।
हेडि ताक्र नियणः।।
हेडि ताक्र नियणः।।
किल्लामुक्ता। हेडि ताक्र निर्यणः।।
किल्लामुक्ता। हेडि ताक्र निर्यणः।।

किश्वित् का। इंडि ता कि निर्वितः ॥

मृथ उ के क्रिकि। इंडिकिविक्तक्रमः

॥ उ म कि वा मृष्णा। क्ष मश्री मर्थः

(७। क्रिकि चापू जारव। इंडि पूर्गा
मानः ॥

् ो यक्षः। इज्यनदः॥ म्या। इज्यनद्रीकामाद

ন্দ্ৰকঃ পুশ্পাষাণঃ। ইতি ত্ৰিকাণ্ড-শেষঃ॥

मृभ भ छे मृभि। ইতি कवियम हमः ॥ भ मृभि छे अमाको ८ अमाकी८ अम्कट । मृभि ইडि তालवाछ्रमात क्षि क्ष्णः। उन अनिर्देश्वार स्थानः भूगिधान-क अमाश्यः। स्थान्त । भन्नामृष्ट स्व क्रांडन शानिना उदीय मक् स्वाम तुनाक्रिङ । ই ि त्रयः ॥ श्रुनिशान । त्रामश्रुवात्म वाम्मव स्वायः कनाशवादः भनात्वन् मृङ्गः । (क्रव्यी ि क्रिंडः ॥ विमर्णः श्रताः नर्णः । मृषि ই ि मूर्धनाञ्जशार्थः रहणः । क्रिंक्टिमवार्थः नामः । ই ि पूर्णाक्षामः ॥

ग्य छ क विकन्नग्य छ क विकन्नग्य छ क विकन्नग्य छ क विकन्न।। ग्रह्मान्य ।

क ग्या छ व्य विकास व

म्य छ रमहरन। इंडि कविकल्लानाः ॥
छ सर्विदा मृश्वा। ইडि मृगामानाः ॥
म्य क कारहो। ইडि कविकल्लानाः ॥
क सर्विडि। अय माजानशिरिडारक। ইडि मृगामानः ॥

स्व अ ७ ५ काछो। ইতি कविकल्लक्तः॥ अ भवि भवि सर्वे । ७ नवं उ। উ भवि दा मृद्धे।। অ शि छक्
भनदाव भवि दाक्ताना भिछि
हलायू थः। ইতি দুর্গাদাসः॥

मृष य क कारो। इंडिक विकन्न-क्रमः॥ य क मृष्ठि मृष्ठ न मर्ष । इंडि मृर्गामामः॥

म्या वर्रः निथ्रा। हेड्रमझः॥ वृथा। इंडिडिंगेकामान्नमुन्सनी॥ মুবার্থক রী আত্যন্তাসম্ভবার্থবাক্য । তৎ পর্যাবং। আহত ২। ইত্য-মরং॥ দ্বে অত্যন্তাসম্ভবার্থে বচসি । আহন্যতেম আহত কং। মুবা মিথ্যা অর্থো ২স্য ম্বার্থক ইহ মূবার্থ বং সর্বথান ঘটতে। বথা। এব বন্ধ্যা সুতো যাতি থপুস্নকৃত শেথরং। কূর্মলোম তনুত্রাণং শশ শৃক্ষ ধনর্জর ইতি। যাবজ্জীব মহণ মৌনী বুর্কচারী পিতা মমেতি। অস্য চাযণ ভেদং মৌনিত্বণ বুন্ধচা রিত্বণ অন্যত্র সিজ্বমেব। বন্ধ্যা স্ ভত্বণ থপস্লত্ব্ধান্যত্রাসিজ্ব নিতি। ইত্তি ভরতং॥

म्वाब्यायी मृ॰ दकः। यथा। कर्त्वाः वरका वरकाष्ट्रेण जीर्थामवी व जान-नः। भीनघाजी म्वाब्यायी निष्ठ-वाक्ष्ण मास्त्रिकः। ইতি द्राक्ष-क्रिर्विः॥

भ्वानकः भ् वाम्य्कः। ইতি भदः চन्द्रिका ॥

र्यावामः भ् भिथावाकाः। छ८-भर्यायः। ठजेती २। इंडि क्रिन-ध्रतः॥

ग्यावाभी जि निष्ठावामकः। ७८शय्रायः । म्रवाम् । इंडि नम्
भावा।। निष्ठां जिर्थाका ह।।

म्रावाम् । ज्ञी भिष्ठावाक् । देखि म्रावाम् । देखि मिष्ठावामी । देखि मिष्ठावामी । देखि मम्प्रावामी । देखि मार्थे ज्ञी मिष्ठा । देखि ब्राची । विक्टिः ॥

मृक्षेः जि ल्याबिङ । इंडामद्रः ॥
मृष्टेककः भूः वरानाः ॥ मिद्राणी ॥
चाडिशिषिर्। इंडि सिरिनी ॥
मृ नि वर्ष। इंडि किविक्लुक्मः ॥
नि मृनाङि । मृनः । मृद्धः । इंडि
पूर्गाराजः ॥

ति ७ भुजीपात । ইতি कविकन्नस्माः ॥ भुजीपानः भविवर्तः । छ
स्याः ॥ भुजीपानः भविवर्तः । छ
स्याः ॥ भुजीपानः । ইতি
पूर्णापानः ॥

নে ত্রি নহা । আনাকে ইতি ভাষা

। নন । আনার ইতি ভাষা। এতে

অমংশক্ষ্য চতুথী বিষ্ঠ্যেকবচনাভ্যা দিল্লা । ইতি ব্যাকরণ ।।

নেক: পু ছাগ: । ইতি রাজনির্বাট: ।।

(न्कनकन्रका जी नर्यकान्ती। इंड्र-

(मकनार्षिका जी नर्यत्मनशी। यथा। (द्रायनमूखा भूर्वगक्। नर्यां (भकः नाष्ट्रिका। ইতি (इस्ट्रम्मुः॥ मथना जी जीक्ट्रास्त्रगः। हन्त-हात भार है डेडारि छोवा। उट निर्णायः। काकी २ में छेनी ७ तमनी ৪ সার সন ৫। ইত্যমর্রা কাঞ্চি: ं ७ जिल्ला १ । जिल्ला जन की करें जो বন্তগুন্থন । ইতি স্বামী । কৈচিত্তু वक्यांडे ज्या काकी (मचना प्रे-ं यहिका। त्रममा रवाउन एक्या क वाभः नेकविश्निकः।। ইতি भेठेडि া ইছ বৃভেদাৎ পর্য্যায়তা ৷ ইতি ভরতঃ।। ধরাদিনিবন্ধন । ইত্য गतः॥ भिक्ननिका। हर्यात्रज्ञापि। मुंहि मार्हे अर्थ डिनर्याक्षा (नोश्वर्सः । है। ভ্যেকে ইভ্যুপি ভরত: 🏿 🛊 🗎 শৈ-े ब्रॅनिजयुः। ইতি भिनिनी ॥ मर्यना निरो । ইতি শদরত্ববিলী ।। भूति ্পণী । ইভি রাজনির্ঘট:।। 🛊 🗓 উ-नियमकारण शाजनीय मुक्त निर्मिज ्रज्ञ जयः। यथा। खरियनः नानवक भागियं। जिः भूपिक्न विवृत्त मुक्ष ামেখলা পরিধাপ্যন্ মজন্ব বা চযতি। ইতি ভবদেবভটঃ ॥ অ পিচ। গোভিদ:। মুঞ্জ কাশ তা-न्त्रा द्रमनाः। मूक्षः नदः ठामृनः नन उ छवः अभूनी। त्रभना (मर्थना । তথা চ মনুঃ। মৌঞ্জী ত্রিবৃৎ সমা न्न कार्या विभुग्र मथना ।

के जियमें। है भो बी या दिन्तुमं । न-ने अंखिरी ॥ मूक्षाना कि कुँ के खें।।। ইশাশান্তক বলুলৈ:। ত্রিবৃঠা শুলি নৈকেন ত্রিভিঃ পঞ্চভি রেব বা ইতি সংস্কারতন্ত্ব• ॥ অন্যন্ত। সন্ত্রা-**डे**रन **१डेरन वार्ट्स चॅन्न्**कॉल्ड विधान-णः। पश्ची हर्मश्रनी ज्बी क्षाजिन यात्रा मनिः ॥ भोक्षी जित्र भेना लका कार्या विनुमा (मेथेना। (मे) क्षेत्र जार करणनाच् गुर्चितरकम्ह ত্রিভি:1৷ ইতি কৌর্ম্যে উপরিভাগে ११ व्यवहायः ॥ सः॥ रहामञ्राक्षान-রি মৃদ্রটিত বেষ্টনবিশেবঃ। যথা। विनिष्ठभक्षद्राखि । यावान् क्षा विखातः थननः जाविषयात्त्र। इ रिखरक स्थिना खिर्मा (वेसान्नि नरः नाकृषाः॥ ऋत्य दिश्त जा उद्धा त्रम (वेष खेशा क्ली: । ठेडू रेखि छू ঙ্গণে তা বস্তর্ক যুগাঙ্গুলা: ॥ মে यना वैक्रांति भिथनाव अखरा-ষ্টিতা নৃদ্ধিতা তাক্ত খাত দেশাঘ ছে একাঞ্চলকাপ কণ্ঠণ পরিত্যজ উদ্বাবেণ বিস্তারেণ চেত্যাদি কমে বেদাদ্যস্বা: এতদ্বিপরীতা স্তস্তা স্তরোক্তা ব্যবহার বিকলা:। বেদা क्ठवातः अग्रय खगः नगरन एव तना विह स्वा खयः। वजू उर्क यूगानि विशे

নট্ চত্বারি। পিক্লামতে হপি। খাতানেকাঙ্গণ ত্যক্তা মেখলা-ना॰ विवि र्जर्यः । इंडि जिथानि তত্ত্বেদুর্গোৎসবতত্ত্ব ॥ (थल हुन हुन हो नर्यरानरी। इंड -नत्रही हाया॰ खत्रजः ॥ ৰবং পুণ মুস্তকঃ।। রাক্ষসং। ইতি भक्तक्षत्रवाची॥ चनामथ्या **उ**न्त्रभः मार्थः। (मञ्जि जिक्षिजि यः। ज् পर्यतायः । चजुः २ वान्निवारः ० अनिविद्यः ८ वनारु हः ६ वाता वतः अन्यतः १ ७ि७वान् ৮ वातिपः ৯ अष्ट्र २० यनः ১১ जीम् ३: ১२ म्बितः २० जनमक् २९ ध्रायानिः र। इंड्रायद्रः ॥ व्यद्धः ४५ श्रायाः ू ाः 📭 नास्त्राच्यः ১৮ विश्वमृत्यः a धनाधनः २० वायुनाकः २७ न-जण्डतः २२ कन्नतः २७ कन्नः २८ ोतरः २৫ गगनवंजः २७ वातिमुक् ा वामू क्रफ वनमृक्रम अबर: 30 भर्याभाः १५ नाजागनः १२ मन्य-भू ३ ०० करः ०९ कम्तः ०३ गतिपृष्ट ৩৬ गरानदः ७१ थं अमाणः ०৮ ा ग्रम्थः ०७ (यजनीमः ४० नागः ্র জন্মকঃ ৪২ পেচকঃ ৪১ েক: ৪3 দদ্র: ৪৫। ইতি শব্দ वतावनी ॥ व्यवृतः ८५ (जायनः

89 व्यक्तारः ८৮। ইতি রলুনালা ॥ शार्थारः ८० गराम्रद्रः ৫० गा-**उतः ७५ वादिमन्तिः ७२ । इंडि**ं जिका **७ (मयः** ॥ # ॥ (मघनायका यथा। ত্রি যুক্তে শাকবর্ষে তু চন্তর্ভি: भाषिए कमार । व्यावर्ख विश्व नमुकं भूइतः (मृति ग्रमुमः ॥ # ॥ **अश॰ कनानि । आवर्खा निक्र**िना भ्या नमुर्वेण वर्तकः । भूम्रात्रा एकत्याका पुरानः भनेत्रभूत्रकः । ইতি জ্যোতিসত্ত্ব ৷৷ 🗱 ৷৷ ত্ৰেতাযুগে ত্যস্যাৎপত্তি র্যথা। অপাণসিদ্ধে পুতিগতে তাरा मिघाष्ट्रना ज्रेत । मि-ষেভ্য স্তানির ভাঃ পুরুত্ত বৃদ্ধি সক্র-न ॥ नक्षम जगा वृष्ट्रेश मःभ्रक পৃথিবীতলে। পুাদ্রাস-স্তবা তাসা वृक्ता रेव ग्र मिक् जाः॥ मर्ब भुज्रः পভোগন্ত ডামাণ তেভ্যঃ পুরাযতে । বভিষিষ্যন্তিতে স্বস্থা ক্রেভাযুগ মুখে পুৰা:।। ইতি কৌৰ্মে ২৬ অধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ भुवयकानीन त्यवा यथा। उ-তো गबद्भलामांना खनिरेजः नगन-স্থৃতা:। উত্তিপ্তত্তি সদা ব্যোগ্নি হো-রাঃ সম্বর্ত্তকা ঘনাঃ॥ কেচিন্নীলেংশ-भन मानाः (कहिए अगून मिन नाः । ध्रम्बर्गा उथा किछिब्या भी जाः পথে। ধরাঃ ।। কেচিদুক্তাভুবণা চ

एलाः कात्र निज्य ख्या। भाइ जन्म নিভা কান্যে জাত্যাঞ্জন নিভা: প রে ৷৷ মন:শিল৷ নিভাস্তুন্যে কপোত সদৃশাঃ পরে ৷ কেচিজনুক্ষবর্ণাভা खथात्न क्रीत्र मिजाः ॥ ७था क्र्यू त्र वर्गाञा जिमाञ्जननिञा खथा ॥ ইন্দুগোপনিভাঃ কেচিৎ হরিতাল নিভা ন্তথা। কাকাণ্ডকনিভা:কেচি-দুত্তিগ্ৰন্থ ঘনা দিবি॥ কেচিৎ পৰ্বত जकाणाः (किंहिष्कस्त्वाभगाः क्টागाइनिङा कात्र क्रिक्सीन क्लाइशः॥ वङ्क्भा वाद्रक्भा यात्रयत निगारिनः । छन्। कल्पताः সর্বে প্রবন্তি নভস্ল ।। তত তে জ-লদা ঘোরা বারিণা ভাক্ষরাত্মজাঃ। मध्या मःवृजाञ्चान समिन भग्यः छऽउ।। उठ (उ बनारा वर्षः वर्षडी इ गर्शियदः । मरशात्र मानियः मार्वः नामयस्डि ह शावेकः। भुवृत्खन उत्। ত प्रथं म समा भूर्य (एंड किन ।। शक्ति-স্তেজােশ ভূতত্বান্তদান্নি পুবিশ-ত্যপি ৷ নঙ্কে চাণ্ণোঁ বর্ষশত্তৈঃ পথো-**मा बल मञ्जवाः ॥ श्लावगरत्वाय ज्व** ন মহাজল পরিসুবৈ:। ধারাভি: भूत्रयञ्जीमः (ठाम)भानाः **स**गसुवा । फेर्राड॰ जनिंकोरियण्ड (वना इवे म-ह्मान्त्यः ॥ मान्नि मीया उथा पृथी

बर्दनः राष्ट्रास्ट्राल गरेनः। व्याहिल्ह রিমিভিঃ পীভ• জলমভুব্ ভিঙতি।। পুন: পততি ত ভূমৌ পুর্যান্তে তেন চার্ণবা:॥ ইতি কৌমে উপরি ভাগে 82 **यश्रायः ॥#**।। त्ययम् उट्रश्राख ৰ্যথা। তেজোহ সৰ্বভূতেভঃ আদত্তে র্থিভিজল। সন্দাত্মসাংযোগ। पुरायः भुवरुष्ठाभः॥ তাতा श्यनवशार कारण शतिवृत्छ। मिवाकतः। नियष्ट्-ক্তি পধোমেঘে শুক্ল। শুক্লৈ গ ভব্তিভি: য় অভ্হাঃ পুপ্তভ্যাপো বাযুনা স মুদীরিতাঃ। সর্বভূত হিতার্থায় বাযু ভূতা: সমন্তত: ॥ ততো বৰ্ষতি সো-ম্ভাণনি সৰ্বভূত বিবৃদ্ধযে। বাষব্যণ खनिज्येकव विदूर्गाः मम्यु छ।।। स-ৰুসানু মিহেভ্যাতো মেঘত্ব• ব্যঞ্জ-বন্তি চ। ভূমিষ্যন্তি যথা চাপ স্তদন্ত• क्वरया विमुः ॥ # ॥ व्य भिष्ठ । (स्र वा-না পুনকৎপত্তো ত্রিবিশা যোনি ক চ্যতে। অগ্নিজা বুজ্জা শৈচৰ পক্ষ-काक भृथग्रिशाः ॥ विदा विदायना-ত্তেষা॰ বক্ষ্যানি বিত্ত সম্ভব•। আ-्ययाः वम्बाः (भाका खिवा व्यः भु-বৰ্ত্তৰ ৷৷ জাতা দুৰ্দিন বাতাৰে সভ-ণাত্তে ব্যবস্থিতাঃ। মহিবাশ্চ বরাহা-শ্চ মত্তম্। তহ্ব ৰপিণঃ।! ভূব্। ধরণি মভ্যেত্য রনন্তে বিচরন্তি চ। জীম্ত।

নান তেনেবা যে তেভ্যো জীব সম্ভ वाः ॥ विम्रम्खन विश्वीनाण जनवाः ज्ञावनश्चिमः । सृष्ट्यकः ग**राका**या অবহ্ষ্য চ ৰানুগা:।। কোশ মা ত্রাচু বর্ধন্তি কোশার্দ্ধাদিপি বা পুনঃ । পর্বতাগু নিত্যেযু বর্ষন্তি বিপিনে-यू हा। वंलाका शक्ष जा रेम्हव वलाका গর্ত্তধারিণ:। বুক্ষজা নাম তে মেঘা ৰুদ্ধ নিখাস সংভবা: II দ্বিতীয় পু: বহম্বাযু• নেঘা স্তে ত্ সমাশ্রিযা:। ইতো याजन माजाह मार्काष्ट्रीय हि क् उारिन ॥ वृष्टिमर्गाप्तिव (खवा॰ ধারাসারা: পুকীর্ত্তিয়া। শক্রেণপ-ক্ষা বহিষা: পর্তানা নহৌজসা ॥ कामगानाः भुवतानाः भुकानाः শিব নিছ্ডা। পৃষ্ণাবর্ত্তনা স্তেন করণেনেহ বিশু,চা: ॥ নানা কপধ-त्रा रेक्टव सहारवात्रश्रनाक *र*ाक-ब्राप्त वृष्टेः मुद्रोतः मचर्जादा निया মকাঃ ।। বর্ষস্তি তে যুগান্তেষু তৃতী-या एउ भुकी चिंठाः । व्यत्नक्रम नः हानाः পূরगत्ता नहीः छताः। বায় পরিবহন্তেস্য রাশিকাঃ কল্প সাধকাঃ ॥ যোন্যস্যাণ্ডস্য ভিন্নস্য পুंक्ड भुंखर छरा ॥ यमाषुका সমূত্পন শচত্রজু; স্বয়ন্ত্র । ত-সৈরবাণ্ডসর পালা হি সর্বে মেঘা:

পুकीर्बिजाः ॥ (छय। नयतायन थ्राः সর্বেবা মবিশেষতঃ। তেযা শেষ্ঠ-**स পर्याना काञ्चात रेक**व निश्वकाः ॥ গলানা পর্বতানাঞ্ যেবানাং ভে-ি গিভিঃ সহ। সলনেক পৃথগ্ভুঠ र्यानि एवं का कल॰ सृष्ठ॰ ॥ शब्दान्।-**दिशकारेक्टर (इनास्ड मीज जः**खवाः । তুবার বৃষ্টি বর্ষান্ত হিন শস্য বিবৃদ্ধ-যে ।। ইতি বুন্ধাণ্ডে ৫৮ অধ্যায়ঃ ।। ।। विष्णा विष्णा । विष्णा ।। विष् । यथा। टिखन्न त्वार्थ व महण्ड नहीं ना त्रायन खबा। बित्रारमा मिष्त्रामण যডে**তে পূৰু**বাস্থবা: ৷৷ তদ্য রাগি-ণ্যে যথা। ললিভা নালদী গৌডী নাটী দেবকিরী তথা। নেঘ রাগস্য রাগিণ্যে ভবন্তীমা: সুমধ্যমা: ॥ অয় হন্নমতে যগ্রাগো বুল্লা মন্তকান্নিগতঃ । আকাশাজ্ঞাত ইভিচ বদন্তি। অস্য জাতিঃ ঔডবঃ । व्यर्था ८ थ न य य ग इंडि भक्षदत्र भिलिङः। अन्। गृशः रिषवञ्चद्रः। वर्षः विश्वाविष्याः गानमभयः। व्य-न्याकातः मुन्तवभूक्यः। म्यामवर्गः । উফীষবম্বদ্ধকেশ: ৷ শাণিত খত্নহস্তঃ । হনুমন্মতে অস্য পঞ্চরাগিণ্যোয্**থা** । हेन्द्रः) मलादी २७ ज्त्री ७ ज्नानी ८(म्कात्रीहदा अम्राष्ट्रेमू या यथा।

कालकतः > नातः २ न्छेनातायनः ७ महत्रा ज्रा १ कन्या १ १ वर्ष १ १ ४ গান্ধার: ৭ সহানা৮।।কলানাথ্যতে । अम् द्रागिन् वर्षे यथा। वक्रानी) सबूदा २ कारमामा **३ धना** 🕮: 8 जीर्यमे ६ (रवानी ५। এउमाउनि ्ष्यक्षी भूषाः किन्छ नर्छनात्रायन नक्ष-त्रा जत्र १ क्लाज क्लाब (क्लाब्रा मा-🕶 बण्डबडा छ्डिया ।। সোমেশ্বর-म्ब चन् वस्तित्ता रथा। महाती) (मात्रठी २ मानीत्री ० (कोणिकी ६ গান্ধারী ৫ হরশিকারী ৬ ৷ এতম-তেপি পূগ্ৰা: পূৰ্বব্ ।। রাগিণী স हिल्ति। जुनागमः वर्षानी गानमम यः ॥ ভরতনতে তদ্য পঞ্চ রাগি-रात यथा। मझातः > म्लजानी २ দেশী ৩ রতিবল্পভা ৪ কাবেরী ৫। **उद्धाः व्यक्षीशू**क्षा २**था । कना**यद्रः ১বাগেশ্বরী ২ সহানা ৩ পুরীয়া ৪ 🖁 কানরা ৫ তিলকঃ ৬ স্তম্য়: ৭ শঙ্করা ভরণঃ ৮। তথতে অষ্টপুঞাণা• ভা र्या यथा। कद्रगाडी > काम्बी र कम-মনাট: ৩ পাছারী ৪ মাঁঝ: ৫ পরজ: ৬ নটগঞ্জা ৭ শুধ্বনট: ৮। ইতি मञ्जिषादः ॥ श्व हकः श्र कत्रका इंडि हाता ु दली ॥

মেঘকাল: পু॰ বর্ষত :।ইতিভটাধর:! মেঘচিন্তকঃ পু॰ চাতকপর্ফা। ইনি मद्ठिनिषुका ॥ মেঘজ ত্রি মেঘভববস্তু।মেঘাজ্ঞা যতে ইতি বৃৎপত্ত্যা ত পুত্যযেন निञ्जय• ॥ भिष्काण ही अञ्चिषः। हे जिनम हिन्द्रिका ॥ নেঘজীবনঃ পু॰ চাতকপকী।ইভি वाजनिर्घणः॥ মেঘজ্যোতিঃ পু॰ বজাগ্নিঃ।তৎ পर्यग्रसः। ইরম্মদः २। ইত্যমরः॥ মেঘস্যজ্যোতি রগ্নিমেঘজ্যোতিঃ। জ্যোতি রশ্নৌ সমাখ্যাত জ্যোতি फल्कु। निभम्। छ। इंछि ब्रिष्टः ॥ इत्रंग जलन माम्रिक मीभ्राक इंडि ইরমদः। নেঘাণ্ন হি জলে-বৈব দীপ্যতে। মদীভি র্যঞি হর্ষে তৃ জুবু দু জীতি খং খিত্যব্যাজিতি মনস্বৌ। অন্যোন্য সংঘটেন মেঘা-নিঃস্ত্র্যজ্যোতি বৃক্ষাদৌ পত-**তি म इंद्र गरः। (गघ इंज्) প न दः १**॰ তেন বাতজো হপীরমান: সোপি हि इत्रग कालन नाम् जी जि की-মুদী। নেঘাগুগদি রিরনার ইতিশ-मार्गवः। ইতি তডीकायाः ভরতः॥ (नघउम्रदः भू॰ (नघन)। उपदः। । नघ

ছে পুভাতে মেঘডমুরে। দশা ভ্যো: ক্লাহে চৈব বন্ধারন্তে বন্ क्रिया॥ इंज्रुडिंश ॥ বতিমিরং লী মেঘাইমদিনং 📒 इंडि इनायुंदाः। মালা ॥ वेनामः सुर यक्षाः॥ क्ष्र्वभूकाः। इंडि (मिनि ॥ भियमदः । इंडि (क्य्वन्यः।। भनाम्यकः। देखि **मद्रात्मुका ॥ उ**ञ्जीय**माकः** । इिज्जाजनिर्घण्टः॥ ক্ষিকাণ্ডলেবঃ ॥ 👵 💮 इंजि त्राक्रियिकः॥ মর: ॥ ःवनामा न पूर् मूखकः। **इड्यातः**॥ भर्गगायः । खनि**उ**॰ २ मुर्कि**उ॰** ० রসিত ৪। ইত্যমর: ॥ ধুনিত ৫ হাদিত ৬। ইতি ভরত:॥ घि भूझे ही जल । इंडामद्रः॥ शिश्राजुः॥ नरीजनः। ইতি मि-िम्भी ।

गर्जन । यथा। यजायुष्क अविणा । भाषभूत्रः भू भक्र यः। इंडि भन् ब्रज्ञावनी ॥ (भर्म्भर: भू॰ बन्। इंडि वार् , निर्घणेः ॥ নেযভ্তিং পু বন্ধাইভি শব্দী ब्रङ्गावणी ॥ वरीमः पूर विपूर्ण १७ गम । संवर्गणः भर् द्रमावर्डकां उक्द्रि (मवर्भः)। थर्था। जिलाक्रेमी निरंड नक्षिक्षिण्याम् म्यूर्व अधि भिष्यान बनारको निम-्रहार भारते महावीर्यते मुख्यो. ্কল্পিম্মতৌ।। ইতিকল্পিয়ানৈ১১ व्यथ्यायः ॥ বনাদ জিৎ পুণ লক্ষ্ণঃ। ইতি মেঘমালা জী মেঘশুনী তিৎ भर्ये। कार्राचनी रा इन्डामनः॥ ायमानानुकालकः भू भग्नः। भाषत्यानिः भू ध्राः। इंडि भन्न अञ्चावनी ॥ अयनामानुवानी पू॰ भग्तः। इंडा (भयतागः भु॰ यञ्चागास्तरितागः विलियः। इंडि स्वायुक्षः ॥ व्यम् विवत्रगः भयमस्य मुद्धेवाः ॥ ्वनिर्धायः भू भवणयः। ७९- (नघवर्गा क्वी नीलीन्कः। इंडि णयः हिन्द्रिका ॥ মেঘবর্কা দ্রী আকশে। ইতি ক্রি কাওংশবঃ॥ भिष्वि : भू वज्राभिः। उर्भर्गा-र्यः। हैवयापः २। ইতি (इन्हन्मुः ॥

त्मववाहनः श्रू हेन्द्रः। इंडाप्नज्ञः।।

भाषत्यभा हो व्याकाश्वः। इंडि (सहकः भूः सग्रहन्तुकः।। भागमनः क्रियंतः ॥ स्यमात्रः भूः हीनकभूतः। इंडि त्राकिन्धिं ।। भिम्मूक्ष्य भू मम्बः। इति क्यां (एडका विश्वा की शाजानगरकी) ठम्यः ॥ भिष्यस्त्रिक्ताः नाः विकण्डे क्याः । किन् अ । उत्थारि । ইতি कविकन्नः । **३** जिजाकनियगः॥ ষেষার প্রাক্তির । ইতি র । লাকঃ । উন্নাদ্যভীত্যর্থঃ । ইতি भागा भनावा । । । । । । (मद्यागमः शु॰ वर्षाकानः। इंडि पिट्ना जी व्यामनकी। इंडिमच-्रश्वद्वज्ञात्वी।। (सघ मुज्ञागमन्कः।। भिघानना जी वलाका। हेि ताक भिठे: न् इंडिनकः। हेि विकास-. किर्याष्ट्रिशा १०० । १०० १० १०० १०० (त्रयानन्दी शू॰ नय्द्रः। ইভি द्रांक (मफ -य जेबारहा है कि कविश्रः)-्निर्देक्ष्यः ॥ • । । । । । । स्मरः ॥ अ व्यक्तिमण्डः । (मण्डि নেঘান্তঃ পু॰ শরৎকাল:। ইতি উন্মাদ্যতীত্যর্থ:। ইতিদুর্গাদাস:॥ ্রাজনির্ঘট: ॥ নেঘান্তি ন্নী করকা। ইতি ত্রিকাণ্ড সপ্ততি মানৈ ভ্রতি। ইতি সুখ-(अयः ॥ विदालिए ती वाकाला इंजियन त्महन्त्री जी त्मर्म्त्रीवृक्तः। इंजि ख्यः॥ নেযোদর: পু॰ অর্ছংপিতা। ইতি মেট: পু॰ হত্তিপক:। ইতি হারা-(र्भव्मु:॥ মেচকঃ নী শোডোঞ্জন ।। অন্ধ মেণ্ডঃ প্ হস্তিপক:। ইতি বিকাও कातः। ইতি मिहिनी ॥ नीषाञ्जनः ঃইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ 🌐 🏸 ্লেণ্ড: পু॰ সেষঃ। ইতি প্রমান্ত্র নী।।

ा इंजिप्सिमिशा सून: ११ (यदाः ॥ ्रम् (जाञ्जनः । ইতি अस्त्रज्ञावनी ।। শ্যান্লগুণুক্তে ত্রি। ইত্যনর:।। ल जा। इंजि बाक्ष निर्मे हैं।। ाः ॥ य व्यभित्मिष्ट । स्मिष्टे जि मूर्गामानः॥ **म्लिका।।** रण्यः ॥ ा (मृष्टुः श्रः भिन्नः॥ मेक् गर्छक्रम् ্র বোধঃ॥ মেষঃ। ইভ্যনরঃ॥ ं बङ्गाला ॥ वनी ॥ ্ৰেয়**ঃ** 11

स्मा के के जिल्हा के मारवायांग ्र हे हिं लिविक्सम्बर्धः अध्यापि সেণ া প্রাক্তে গুণিনা সঙ্গত ইত্য-र्थः। यः पादःभणः । भिष्ये । इंडिमूर्गारामः ॥ ष्मिः न्त्रः थलमम्यक्रनार्थनात्रः ্দাক। দেইকাঠ ইতি ভাষা। যথা। মেধি মেথিঃ খলেবালী খলে গো-वन्नमाक य८। ३७ (इनहन्मुः॥ মেথিকা জী ক্ষুপবিশেষঃ। মেথি শাক ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়:। ে মেথিনী ২ মেথী ৩ দীপনী ৪ বক্ত প্ৰিকা ৫ বেধিনী ৬ গন্ধনী জা প জ্যোতি: ৮ গন্ধকলা ৯ বল্লরী ১০ र्जन्दु हा ३३ महा ३२ मिल्लुड्डा ३० ्रेक्ज्रवी ३३ न्नक्षिका २० वर्ष्ट्रांगी ু ১৬ পীতবীজা ১৭। অস্যান্ডণাঃ ৷ কটুর•। উফর•। রক্তপিত্তপুরো-় পণত্ব• । অরোচকছরত্ব• । দীর্ম্তি^র - कात्रिवः। वाजप्रवः। मीभनवृक्षः। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ पिषिनी खी (मिषिका। ইजिन्हीं ज निर्यण्डः ॥ (मथी खो নেথিকা। ইতি শ্লেজ निघकः ॥ भिर या 🕮 वशस्यशस्याः 1 इंडि

কবিকর্মজনঃ॥ খ অমিমেদ্ । ঞ

নেদতি দেহতে লাজার্থ পিয়াঃ शात्रशंकी अर्थः। 'नियमः । देखि पूर्णामानः,॥ ः अक्षा । अव (महः क्ली मान्मभु छवधाजुविस्मयः। তৎ পर्यागः। वभार वंभागः। इंडा-बद्धाः समृद्ध । ज्ञातात्र इंडि ্লভরত:।। অস্য গুণা:। বাতনাশি-ি দ্ব•।ব**ল'গি** ভ'কফ দাতৃত্বঞ্চ। ইতি ताजवेती छैं। जिथ (यह मः स्क-» প্রাহ্ । যন্মা স· বাগ্নি গঙ্গু । েতমেদ ইতি⁻কথ্যতে । তদভীব শুক সিপা বলকার্য্যতি বৃংহণ ॥ जय (भर्म: इनिमार । (भर्म) হি সর্বভূতানা মুদরেম্বস্থিযু ছিত• । অতএবেদিরে কৃদ্ধিঃ প্রাযো মেদ-স্থিনো ভবেৎ ॥ ইতি ভাবপুকাশঃ ॥ #।। রোগবিশেষ:। তত্র মেদসো विशुक्षे निमानमारः। व्यवग्रायाम क्तियायः (भ्रम्मलाङ्गाद्रस्मितः । म[्] शुद्धा श्यवनः शुप्तः (मृश्वाद्यापः) विवर्षाय ॥ अस्त्रमः जानम्यः। তথাচ সুশুত্রা আনদ্বালরসো মধরশ্চ ভবতীতি\। নেদসোতি-भुव्षा रिवछन्। भास्। भिरमावृञ मार्गजाट शुष्रप्रप्रातः । भिन्छ हीयए उमार्शकः नर्व-कर्ममू । অत्तर क्षाउतः अङ्ग्राप्तयः

भुकारा:। मभूका**छि नभूदे। फवडि**। চীৰতে সঞ্চিত ভবতি বৰ্ণত ইতি यावः । जयाः (तपत्री नहंकर्यम् व्यवकः न्याट । स्वरुगः मोबः भार्गाए। जनवाननि (मायानाइ। क्षे मुधान वृषाता ३ या कड्न मानः रिनः। युकः कृष् (युक्तः किनि रिक्त त्रन्न ्रभारता रुद्धरेमथुनः ॥ स्मिम्मः स्मर (नोर्गक्ष) ब्लायस्**ड जन्द**ा मृद्धः। क-न्हन॰ উहामायबाधः। कक्षम यूयूत इेंड्यान्य । ब्रह्मवः क्रमुषः ॥ स्मिरनः 🛚 ङ्गनगर । (भरसः नर्बङ्डाना मूर *तिश्रुक्षियु श्रिञ*•। **चा**ठ এरदानरत्र वृक्तिः भुरिया सम्मिद्या ७ (वर्ष ॥ भिक्षा ११ कि वृत्को (इज् **मा**इ । মেদদাবৃত মার্গল্বাদাযু: কোপ্তে বিশেষভঃ । চরন্ সন্ধ্রুক্ষবত্যগ্রি गाहातः (मावयङ/भि ॥ उमार শীঘুন্ত জরযত্যাহারঞ্চাপি কাছুতি ন বিকারান্ সোপুতে ঘোরান্ কা• िष्ट का नवा जिस्सार । असूक्य-তিপুদীপ্ৰতি ৷ মনেদ্ৰী আহার• শীঘুণ জরণতি পুন ভোত্তুণ কাছ্কতি স দীপ্তাগ্নিঃকৃত্ৰি ব্যতিক্ৰমাৎ ভো-জনকালাতিক্রমাণ। কাণ্টিচিদ্বিকা রান্বাত পিত্ত করান্ যোরান্ অ-শ্ব তে প্রাপ্নোতি। এতে বাত পিত্তে

रममावकाक वित्नवाम्भापुवकाः ইত্যাহ। এতাবুপদুবকরে। বিশে बाट भिन्न माक्लो। এलोहि मह **७: ज्ल**॰ वन॰ मावानल॰ यथा। এতৌ পিত্ত মাৰুতৌ মেদুসা ৰুং मार्गदाए कार्ड मार्थ्य भुवृत्की भार्छ विष्मयामूनमूनकरतो मईकः नाष्मरय তা । মেদসোভিবৃদ্ধে বিনাশহেভ प्रभार। (भरम) जीव मः वृष्ट्र महरे क्रानिचारयः। विकातान् माक्गाः क्षा नामगङ्गाम जीविजः ॥ विका রান্ পুনেহ পিডকা জ্বর ভগনং? विमुधि वा उद्योगांशासन् उभान् । অতিস্লভ্যা বৈভণ্য নাহ। অভি क्ष्मम् न पृष्टा विमर्शाः म जगन्त রাঃ জ্বাভীসার নেহার্শ: শ্লীপদা यविकारयः॥ अञ्ज्ञिन । वक्त मा 🦊। (मर्का भा•माछिवृष्वज्ञाहन सि **७५**द्वां खनः। श्रायाशान्त्रार्थाः নরে। হতিস্থৃত্য উচ্যতে ॥ অযথোপ-हरवाष्ट्रभारुः न यथा **উপहरवा मा**न्-(भागवरः উৎসাহে। वनकः गुगु गः ॥ स्। स्। व्याप्तम्म । विक्ट्ना। भूतिः चानरगमुद्धाः ञ्नत्था पान (काम्याः। (लथना वस्य कानि भ-व्या (नमित्रना भगा।। भुगः हिन्छ। व्यः वागाश्व कोम् जागत्र शिकः। रुडाः

্শ্য মতি ছৌল্যং যব শ্যামাক ভোজনঃ ॥ ক্ষার বাতারিপত্রস্য চিক্যুক্ত পিবেমর:। সহিত ভক্ত ा अन (मारा वृष्कि निवृद्धः ।। **७**ष्ठी ত্রিফলারাথ: পীতো মেদোহর: সৃ प्तः। **७**पृ ी विक्**लाकाथ उथा तार** ্রায়ত ৷৷ কেন্দ্র ত্রিককাত্বাথঃ ্রো নেদহরঃ পর:। পাত ম্ব্ া বারি **সেবিত ছৌল্য নাম্ম**ন উ। भन्न मुख्य वा भित्र क् क्षेत्रम् ज्वर्थः। त्यायान्नः विकना गुष्ठ विस्रोक्ष र्थग्नुन् मनः। सारि वर्षान् करयरपाशास्त्राम् (सम्भामताः उजान् ॥ शिश्लाची नधून। (भवा) নেদঃ কফ বিনাশিনী ৷ প্রুরপত্র বর**সেন গাঢ় মুম্বর্ত্রণ স্থৌল্যস্রণ** ुि हिष्टे । वामारन त्रामा (ने लाह-্চূর্ণেন স•যুতঃ । বিল্পপ্ররসো বা-िन एक प्रोणंका नामनः ॥ मित्रु প্রপ্রসঃ পুক্ষিত কক্ষাদি যোজি · " ত জনতি। দক্ষহরিদ্রোদ্বর্তন নচি-बाहिब (एक् स्रोर्गक्रा)। निबीय ला गब्जक (रुगलारिषु खुरग्राय'मः प्रन रतः পुघर्यः ॥ भन्नीत मोर्गक्षारुतः शुप्तरः भूणाष् (लाषुाज्य हन्तना না । প্রিরিষন্যাত্র পঞ্ গুছে ব্য वशान । नामकाक मूर्गाक्र जूग

विश्मित छएला छ छ मी त्रः गु। शः ।

(इस नागरक मतः। असु वानकः।

अख्य सूमी तः। इती छ की । ज् भः ।

निष्ठा एक सूख उतः नतः। भः नाट ।

जातः भुभवी छ एक (यएन भः भाष्ठाय ॥ वस्रमाठ एकः भाष्ठाय ॥ वस्रमाठ एकः भाष्ठावा । एक सूख उत्पर्ध भाष्ठावा । एक सूख उत्पर्ध भाष्ठावा । एक सूख उत्पर्ध भाष्ठावा । प्रविकात भाष्ठावा । विश्व ।

নেদ: প্ বপা।ইতি শব্চন্দ্রনা
।। শ্লেছজাতিবিশেষ:।ইতি জটাধর:।। অলম্বা।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ
নেদকঃ পু জগলঃ। নেয়াইঙি
ভাষা।ইত্যারঃ।।

নেদজঃ পু॰ ভূমিজগুলুঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।নোদোভবশ্চ।। মেদঃসারা জ্বী নেদা।ইতিরাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

भिरुष् क्वी स्थाप्ताः। इति हिन्। किन्तः॥

भिता जी जाहे । जिल्ली मिलि विकास । जिल्ली के प्राप्त । भिर्मा के विकास । भिरम के विकास । भ

विजावबी ७। ইতি রন্নমালা।। वना १ सन्न भिर्वा ৮ (समः गात्रा २ (मृह्वजी >॰ (मिरिनी >) मधुत्रा >२ निका २० (मधा २८ मुवा २० नाधी '१५ मन्। ११ वर्त्रिका १५ मू क्षपश्चिका ५०१ व्यम् । सन थ्रवः। भीउदः। निख माशर्वि कान बाजयन जुन नानिन्। वा **उत्पाय कात्रिवृक्ष । इंडि त्राब** निर्घण्डः॥ जम् वक्षणः यथा। भूक कल्लानशङ्ख्या भाषा भाजू भिव मुत्वर। यः न भारति विख्ताया নিজ্ঞাসা তৎপরৈ व्ह रेनः॥ মেদ। महारमहासाम नजावदी म्ली। ইতি ভাবপুকাশ:।। অস্যা বিব-त्रनः महासमा**भारत्रहे**नाः ॥

स्मिनी जो जिना। कान्मद्री। इंडि द्राह्मनिएटेः।। शृथिवी। इंड्यद्रः॥। स्मिन् विन्द्राद्ध श्रमाः स्मिनी मा-खाद्मनः नद्मानिन् मत्नाशम्म नि शाद्मारः नद्मानिन् मत्नाशम्म नि शाद्मारः नद्मानिन् मत्नाशम्म नि शाद्मारः नद्मानिन् मत्नाश्मारः। मानार्था १ नर्धः समन्तद्मा सम-क्षाद्मि क्षा क्षाद्मा कान्मा सम-क्षाद्मि का । ज्याद्मा जः। निकाका-क्षिति इन्। ज्याद्मा जः। निकाका-क्षाद्मि का । ज्याद्मा जः। मञ्जेकि ख्रावा द्रामीत्मिन्य श्रिक्ष जा। (ज्याद्मा स्मिनी (ह्यी (श्राह्रा)

व्यक्ष विश्विति । विश्विति वा (समिने कैसिम्) 📉 🗥 पिन्नी-াধিন্। ইতি ভটীকাণা ভরতঃ॥ खनाष्ट्रभिक र्यथा। सुराजाः वमू-का अब अब मन्न कात्रनः। विष् নিম্ম করে পাপ নাশন পুণ্ড বৰ্মনা। অহে। কেচিছদন্তীতি নধু-ৈকৈটভ মেদসা। বভ্ৰ বস্থাজ-ম তদ্বিশব নত শৃণু।। উচতু ঔৌ **भू**ता विष्कुः ज्रही गुष्कान (जन्नना । व्यावा वय न याबादी भाषमा मः वृद्धि ह ॥ ज्याङ्जी वन कालन পুত্रका ना खत्य स्ट्रेग । जला ৰভূব নেদক নরণসগন্তর তথোঃ া। মেদিনীতি চ বিখ্যাতেত্যক্ত' বৈ खन्र उ॰ मृग्। कलावी जा कृता भूव॰ বিশ্বিতা মেদসা যতঃ।। কথ্যানি চ उद्ध्य मार्थकः मई मग्र उः। পুরা मु उ॰ यर मु इ। कि धर्म काह शुक्र-ति ॥ मराविद्यारे **म**दीद्रम् अवस् न्। हित्र॰ मु है। नला वज्व कालन नवाक वराभका धुन ॥ न ह शु-বিষ্টঃ সরেষা তল্লোমা বিবরে-यू ह। कारनन गर्डा उन्हर् वजुषा गुरन ॥ गुः ः भुजिला-मुक्षि क्लाय् । श्रिता । विका আবিভূ ভা ডিরোভূতা কণ্ডলে চ भूनः भूनः । । , जाविञ् ा मृहिका-त्व उब्बल् । भग्रेष्ट् । । भ्वार्य ह जिल्ला हुं । बना च । इत्रविङ् । ॥ इति ि ब्रुक्तिववर्त्व भुक् जिथर्ष्य नात्रायम नात्रम मन्वारम भृषिवृऽ भार्थ्या न भ व्यथ्यायः ॥

भिनिने मृतः भुः धृनिः। ইতি जि कार्श्यमयः॥

तिपूर्वः श्रु व्यक्तिगरित्रथः। उटः भर्तु। यः। जान्द्रं त्रथः २। ইত্যনরः

भिष्ता जी कारकाली। ইতিরাজ নির্ঘণীঃ॥

নেদোজ ক্লী অস্থি। ইতিরাজ। নির্ঘণ্টঃ।।

भित्राच्छवा जी भित्रा। ইতি बाज-निर्घण्डः॥

নেদোদ্ধ: পু• বর্ণসঙ্করজাতিভেদঃ। ইতি জটাধরঃ॥

(मर्तावजी खी (मना। ইতি রাজ-

भिष का का विश्वामाय विष्य । इंडि किविक सम्माः ॥ व्यामाय विश्वामायः ॥ भिष्ठि (निष्ठ इंडि मूर्गामायः ॥ भिष्ः भृष्य एकः । इंडि किविदः ॥

মেধা জী খার্ণাবতীবৃদ্ধি:। ইত্য মর:।। ধ্রণাশক্তি যুক্তা ধী র্মেধা

মর:।। ধ্রেণাশক্তি ফুক্তা ধী র্মেধা নেধতে ক্রিছতে ২স্যাণ সর্বণ বহু

শু.ত বিষয়ী করে।তি ইতি বামেধা নেধৃ ঞ সঙ্গে নেধাযা সেমক্তাৎ সরে। রিত্য: আপ বহু**দ্রত বিষ**ধী कत्रन शातना समुक शातना बूर्क র্গুণবিশেষ ইতি। ইতি ভরতঃ।।#।। (मधाकत्र छेवधः यथा। भद्मभूक्षी वन रत्रामा वाकी वृक्ष मुवह ना। অ ভ্যা চ গুড়ুগী চ অটক্ষক বাল-**हो।। এटि इक् मरिन छ।रेन घ्**उ॰ शुक्र विभावत्य । कचे कार्याः त्रमः পূছ • বৃহত্যা চ সমন্বিত• ।। এতদ্বা-ক্ষী ঘৃত• নাম মৃতি মেধাকর• পর[্] । ইতি গাৰুডে ১৯৮ অধ্যাযঃ॥#॥ মেধাকরগণো যথা। সভতাধ্যয়ন । তত্ত্বজ্ঞানকথা।। শেুগ্ঠত**জ্ঞশাস্ত্রা** वलाकन ।। म च्विकाहार्य्यस्य ह। ইতি পুরাণ ॥

त्मशः नृ श्रायञ्ज्यसम्नृधः। यथा।

व्याप्तृ काणिवाङ्क विद्यः मदन

व्य ह । ब्याविद्यान् मुडिमान्

हर्त्या त्मशा र्याः जिथि र्वजः ॥

यायञ्ज्यम्यामप्रद्यानं लिख्यं वर्षः ॥

यायञ्ज्यम्यामप्रद्यानं लिख्यं वर्षः ॥

वर्षानाः। ইতিমাৎ क्याः अवशायः॥

त्मशाक् क्षी मिठावत्रशाकः। ইতি

वाजनिर्वकः॥ त्मशाकाव्यक् वि॥

तमशाक्ष्यः नृ काठ्यायनमृनः

हेि विका अल्पयः॥

|-

(मधाडिथि: भु भगूम हिलाहीका क्टा। मूनिविष्णयः। यथा। स्वता ় ভিথি দেবল আৰ্গ্রমেণো ভরদ্বাজো ৃ গৌত**মঃ পিপ্ললাদ:।** ইতি শ্রীভা गव्छ > ऋह्त > ञ्र ञ्रामः॥ भिषाकपुः श्रु कालिमानः। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ মেধাৰতী দ্ৰী নহাজ্যেতিযুতী। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।।নেধাবিশিস্টাচ।। मिथाविनी जी नुकानः भन्नी। इंडि (मिनि ॥ मिथावीं भू॰ भूकशकी। इंडि मि-দিনী।। মদিরা।ইতি রাজনিঘণ্টঃ ॥ পণ্ডিতঃ। ইতি হেমচন্দু:॥ व्याफिः । ইতি ত্রিকাওশেষः ॥ মেধাযুক্তে ত্রি। ইতি মেদিনী।। **मिविः शू॰ थालशम्**वस्ननार्थनाछः माक्। इंड्रामद्रः ॥ थल थान्। मर्मन হাৰ মধ্যে পশ্বন্ধন নিমিত্তা নি হিত যদাক সমেধি:৷মেযি ইতি খ্যাতে। ইঙ্গ্লিভরত:।। তৎ পর্য্যা यः। (मिषः 🎠 (नवानी ०। इंडि হেমচন্দুঃ / অস্য স্থাপনদিন তত্র বারৌ শূক্র বৃহস্পতী। নক্ষত্রাণি রেবতী স্বাতী হস্তা মূল মৃগশির-শ্চ। ভত্র লগ্ন স্থির । ইতি জ্যো তিষ্ভত্তু:॥

নেধির: ত্রি- নেধার্ব, । হাত ত্রিকাও শেব: !! ্নেধিষ্ঠঃ ত্রি অতি: শ্যমেধাযুক্ত:। ইতি ব্যাকরণ ৷৷ পবিত্রণ ইত্যমর:॥ ত্রি মেধ্যু• পবিত্র: পুষতঃ পুত ই।তি বুন্ধবর্গে পুাণিবিষয় সাত্র উক্ত॰ ইহত্বপুা-ণিদুব্যে। ইতি ভরতঃ।। পৃত ।। थाः शविजः महाची वुः भूषक निर्माः वा । निर्माष्य (माविजः मृष्टे नि र्निक मनदक्षत्र ॥ इंडि नद्रद्रा-वनी।। भू हैः। ই जिला दिनी।। भ्या भू अस्तिः।। यतः।। ছानः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ নেধ্য ত্রী রক্তবচা।। রোচনা। ইত্তি মেদিনী॥কেত্রনী॥ জ্যোতিশ্মতী ॥ শঙ্গপুন্নী ॥ বান্ধী ॥ খেতবচা ॥ শনী।। মণ্ডকী। ইতিরাজনিঘটঃ॥ जी यार्वभा। इंडि भद মেনকা রত্নাবলী।। তদ্যা: কন্যা শহরেলা । যথা।বিশ্বানিতাল্মলৈবাহ্• ত্য ক্তা নেনক্ষা বনে। বেদৈতক্তগবাস কথে। বীর কি॰ করবান তে ॥ ইতি গ্রিভাগরতে ৯ ক্ষন্ধে ২০ অধ্যায ॥ डेनाः . अ १ १९५३ ७ छः श्रीज ख के रह आ ए हुई। या जिला विनारक अर्थनाम् दिनपूर्व

े । দুদুঃ ॥ তা॰ নেনা॰ হিমবালক। क्षातिष्प्रवास्त्रयः । भीतिमानः बहाभी ब्रद्धान ह यत्यहुग ॥ उट्टा ব্যাদু: পিতৃ হন্যা সম স্থা ी(वाद दिवग गर्थाञ्च उ । अजीज-ন**্সা** ভন্যাস্ত সেনা ৰূপাভিযুক্তা: লৱযোষিতোপনাঃ ॥ পুলন্ত্য উবা-চ। নেনাযাণ কন্যকা ভিস্নো জাতা ়বভগান্বিতাঃ। স্বাভ ইতি বি-খ্যাত শচতর্থ তদধো ২ তবং ॥ নী ाक्ष्रप्रय भूचा नीलकीववरनाः हरा। कालपानुगमा काली अवन्तर **्रका नृजा ॥ काजा छाः कन्यका**-িসু: ষড়মাথ পরতোম্নে। কর্তু• च**ाः পুषाजा छा ५**२वा छ। ४५णुः भाजाः ॥ जाजा गाज कनातक (दा াহ্বা মেনা তপধিনী । তপনো ायामात्र উনেত্যেतात्र्वीह ना ॥ বে নাতা নানাস্যা শ্চকে পিতৃ গ শুভা। উমেত্যের হি কন্যায়াঃ জগান তপোহন ।। ইতি বাননে ः १९६ व्यवतायः॥ इत। व्यशिष्ठ। दृश्ः গি রিম্তা কালী বভ্য জগতা॰ পুস্ং লাকায়ণীত্যক্ত তমুং কথ্যাপ হর• विशा राज्यं **७ प** छेता है। यस व्य अन् (त्वी भूवं माकायगी नडी। ाद नत्रना ग्रहत्यनकाः श्रिनदिन्।

রি॰।। ত্যক্ত প্রাণা তদা দেবী ভ্তা হিন্বত: সূতা। শিবা বিন্যস্ত মনসা সপ্তবি**ংশতি** ব**ৎসরান্**।। নিনায মেনকা দেবী পরমা মৃতি মিছ্ তী। সপ্তবি•শতি বর্ষান্তে জগ-ম্মাতা জগন্মণী।। সুপুতি। ভবদ-ভার্ণ পাছ পুডাক্ষতা গভা ! व्याप्तिवृत्वाच । यट भुषिं छ॰ द्वा দেবি মত্তম্ভং পুৰিয়াধুনা ৷৷ ডতঃ সা পুথম• পুত্র শত• ববে ফশস্বি-नी। भग्ठा उनग निका बक्श खन मा निनी ।। जनव्यानम्कती ভূবন ত্ৰয় কুৰ্লভাণ। তত্যে। ভগবতী পুহে নেনকা নুনি সলিভা ।। গ্রীদেব্যুবাচ। **শতং পুগ্রাঃ নংভ**র-ন্ত ভবত্যা বীৰ্য্য সংযুতা: ॥ সুত্ৰ! **ठ** তব দেবানা॰ মানুষাণাঞ্চ রক্ষ-সাং। হিতাধ সর্বলগতাং ভবি-बडाबाङ् भिव 🥴 ॥ अवनु ङ्घा बन्न-জাত্রী তত্রৈবান্তর্ধীয়ত। ততঃ সা कालिका (पवी क्षांगनिम्। जयग्री ॥ भृवं ७ । क मार्थि । मार्थ । ।। नका ययो। समयमंशानुकाशा (न-नका बर्टरत भिवा।। गेष्र कृय मगुर **भग भा वन्त्रो दिव भागदाद** । द-नड नगरमः (पवी नवभूगः मृग रमा-गडः।। अख्याः नग्दभमा गः

ক্ষেৰ শশিনগুলা । ইতি কালি-কাপরাণে ৪০ অধ্যায়ঃ।। গেনকাতাজা জ্ঞী দুর্গা। ইতি হলা-যুধঃ।।

গেনকাপুাণেশঃ পু• হিমালযঃ। ইতি হেনচন্দুঃ॥

भिना ही भनका। इंडि खत्र उ दिक्श कारः ॥ मा शिक् कन्त । यथा । जाः माननीः भक्त मथः शिक् ।। कन्त । स्वा मि श्वा कि । वान भूगेना मि भाननीया मा ज्ञान भणाः निर्देश शिक्ष ।। विश्व क्या तम्हा । कि विश्व ।। विश्व क्या विश्व हिंदि । कि वृद्ध । यहा स्व । यहा (पना देव व्य विश्व । । इंडि (विष्यं) २ व्य वृद्ध ।।।

दननाजा छी भाई जी। ইতি হেন हन्दुः॥

মেনাদঃ পু॰ বিডালঃ।। ছাগঃ।।
ন্যুরঃ। ইতিনে পুনী।।
নেনাধবঃ পু॰ হিন্দুল্যঃ। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ।।

নেরিকা প্রী ক্রেপবিশেষ: । নেহদী নেন্ধী স্টিভাষা। ইতিকেচিৎ।। নেপ খড গত্যা । ইতি কবিকল্ল ফ্রাঃ।। ড নেপতে। খ অনিনেগৎ । ইতি দুর্গাদাস: ।। নেরকঃ পু॰ বিকুশ বুভেদঃ । ইভি হেনচন্দঃ ।।

भई अविश्नयः। उ९-(सकः भू श्रयंत्रायः । मूरमकः २ (इवापुः ७ রত্নসায়: ৪ সরালয়: ৫ | ইত্যু-মর:।। মিনোতি কিপতি জ্যোতী বি উচ্ত্বাৎ নেক:। ড্মিগ্র কেপে নগ্রীতি কঃ। ইতি ভরতঃ ॥ 🗱 🛚 ।। क्रमनावागुवर्डिन्।कानावा। यथान भावा (परिक्र मानाग मृञ भणा-তবেৎ म्बीः। मृत्य मृथ्छ मालाका शुर्ह शृह ह वाद्यत्य ॥ व्यक्तिह मः मृभी कार्यप्राथ वा मलाकृष्टि उत्दर, **। তৎসজাতীৰ মেকাঞ্চ মেক্ট্রেনা**-পু তা ন্যানে ।। ইতাংপ ভি গ্রে ७० भ्रोजः ॥ 🗱 ॥ क्राजानः गाः व्यक् র্যথা। তিসেঙ্কেল্য জ্রিপর্বালো মৃধ্য-मा रेऽकनर्बिजा। शब्दवयः संवासाया जिक्दानाभकन्नाम् ॥ इरह भ-क्रिंडिश विषय॰ ।। 🗱 ॥ म्यक्रिविषय (मक् यथा। शबेहा ननामाना शिव वरहर देव कराए । शर्ववयः गर्धः भागा उद्धांत्रकः समारुदि ॥ ११-ৰ্বন্যন্ত ভজন্য মেক ভ'দ্বদ্ধি পা-ब्रिजा 🗱 ॥ 🗟 विह्याविष्य प्रक यथा। जनामा संध्यायान्हे मृजागुङ

ख्रा॰ प्रनः। किनिष्ठायाण उर्जन्ता । ख्रानायाण प्रमायाण प्रमाय प्र

भिन्न हः भूः महः। ইত্যমর:॥
रिन्न कन्याः क्षो अवद्यन्याः। हि

तिन। छी सिन है।। मिनः। ই जि सिनिनी।। जा अनः। ই जिस्का हिन्दुः ।। न हानीनी। ই जिज्ञा जनिघक्तेः।। सिनानम्म। छी न न गाथा जः। ই जि हाता विनी।।

बिनाकः की नन्।श्वातः। ইতি । बिनावतः॥

भिनाषुः श्रु नम्याथादः। इंडि भदः द्वावनी ॥

নেব খা ও "দেবনে। ইতি কবিকল্প

कपः॥ य विस्तित्य । **उ सिद्छ ।** इंडिप्रशासानः॥

্যেষঃ পু॰ পশুথিশেষঃ। মেডাইতি **छ । य**े उद्भवीतमः । तिर्ः २ उद्ग ভু: ১ টরণঃ ৪ উপায়ঃ ৫ বৃঞ্চি: ৬ विष्ठः १। इंडापदः ॥ (७५: ৮ হুড: ৯ শৃহ্বিণ: ১০ অবি: ১১ বো-ननः ३२ वली २०। जम् नाःम ख्नाः । मथुत्रज्भा भी उत्। एक द्रभा विष्ठ-ম্ভিত্রণ। কুংল্বল্প । ইতি রাজনি-र्घनैः॥ यिषिष्ठ। भिक्त भ्राया कत्रवः। व्यमुख मारका मन् जाबाद्धा है जि त्राजवहारकः ॥ *छः* ॥ **ज**र्शनसम्बद्धः ॥ ঔষণবিশেষঃ। ইতি মেদিনী।। রা-मिविष्मयः । ७८ शर्यानः ॥ किनः २ । व्यम्तादिश्वज्ञी (स्वज) अन्त्यवश वा-বিধী ভরণা কৃত্তি গাপাদৈকেন মে-ষরাশি ভরতি। খন জাত ইন্শো ভবতি । শেষদশাযাণ নেত্রদুংখী मगाजः धनी गानमशी धार्मिकः धीतः মৎস্য মাংসাশীক ॥ স ত প্রো-मगः। अमार्ग्नः । व्यात्रकः शीउक । ध्या कृतः । शिरेखाक ब जादः । कान्त्रिक्षाः। समास्य सः। शर्वे उ हाती। अबिरिगिष्मिणिङः। रिवमाऽवर्गः । जन्नुक्षीत्रक्षः। यन्नगुरानः। सृष्टः । অতিরবস্চ । ইতি জ্যোতিষ্ণ।।

#।। রব্যাশ্রিত তদুগশি জাত ফল। यथा। तर्व क्तिन्य भूक्यः भूत्यः: न्दनार्मः म्यात्र्भाष्टः मनानः। বৃদ্ধ্যাযুত্ত: পিত্তকৃতা চপীড়া বজুো ভবা বা সতত নহৌজা: ॥ # ॥ চন্দুাশিত তদুাশি জাত ফল থথা । छित्रकाना द्रशिक: यक्करेन नंद्रः সুত্যুতঃ পুমদা বিজিতো ভবেং! অজগতে দিজরাজ ইতীরিত বি-ভূতरा ভূতरा স**হিতঃ শূ**रा ॥≉। नम् ८ भग करला मानी धनी मुजः। কোণী স্বন্ধনহন্তা চ বিক্ৰমী পাই বৎসলঃ।। ইতি কোষ্ঠাপুদীপঃ।। क्षा। उन्नगुन्न ज्व मान । ०। ८१। ইতি জ্যোতিস্তৰু ॥ 🗱 ॥ বিতা-রক শরাকৃতি শুরণা নক্ষত্রস্য गगन मस्यानस्य (मयनगुम्र) ज्ञेशः দশপলাধিক দভৈকোগতো ভ বেৎ। নথা। ভারকা ত্রম্ নিভে শताकृत्जो (कमृत्व भगर मयुव র্ত্তিনি। মত্তবার্দগতে ২ জলগ্নতে। निर्ववृर्णजमशेषु विश्विकाः॥ #॥ মর্বাকৃতি,পঞ্চারক ধনিষ্ঠান-भग्र बढे विश्वरूप शना विकास खन्न वर विज मार । यथा। मछद्वाभित्र । (समाखः भूः हेन्द्रः। हेि भूत्रावः॥

সমাগতে ধনে নদ্যাকৃতিনি : ঞ্চারকে। যাভি াভিম্ভিত नगु उ: मात्रमाधिः तम धमु लि কা:।। ইতি কালিদাসকৃত রাটি वाग्निक्मग॰ ॥ भिषकः भू कीवनाकः। ইতি রাজ নিঘণ্ট: 11 भिषकञ्चनः शृ॰ भिष्यामिनिर्मिज वजः। उट्लयंत्रायः। हिनायः २। ইভ্যমর: 11 छल्लाः का ७ कन • यथा। त्यवनाः (स्वात्नाः भू• ठक्रमर्पः। ইঙি ভावभूकाणः ॥ भिष हक्तु खन्। ह-क्षूण ॥ भिष्यति जी अजम्त्री। इंडि जात-शकाषः॥ प्यवियानिका जी प्यम्भी।इंडि बङ्गाना ॥ মেষশৃকঃ পু॰ স্থাবরবিষভেদঃ। इंडि :इमहन्मुः ॥ (त्रपृक्ते की अक्षूश्रीतृकः। (यहा-णि दी इंडि जाया। उट्मर्गायः। नन्तिकृषः २ । स्विविधानिका ० ठकः ४ हक् वर्न ६ (पृष्की ७ शृह्भमा १। इंजित्स्माना ॥ क्वमा नयकाशमू अस्य सम्ब स्वा की ब्रिश अन्तानी अनाईह ইতি ভাষা। ইতি শব্দন্ত্রা।।

মেবাস্ত্রী বস্তাস্থ্রীবৃক্ষ:। ইভি রাজনির্ঘণ্ট: !! श्वानुः भू• वर्षदावृक्तः। २७ **म**फ **ठिन्तुका** ॥ भिषाञ्चयः भू॰ চकमर्नः। ই**তি त्राब** निर्घण्डः ॥ त्मवाकिम्यूमः भू ठकमर्मः। ইতি बद्धनाणा ॥ নেবিকা জ্রী মেবী।ইতি শব্রত্না-वनी ॥ स्यो खी जिनियत्कः॥ जहामा॰ भी ্তি রাজনির্ঘণ্টঃ। নেবন্ত্রীজান তিঃ। তৎপয্যায়ঃ। জাল্কিনী ২ অবি: ৩। ইতি ত্রিকাওশেষ; ।। व्यम् । मृक्ष छनाः। मध्यकः। नाष ত্ব'। সিপ্ধ হ্ব'। কফাপ হত্ত্ব'। বাতা भयकत द्वर । (ऋोन्। द्वा माना-यारम्हर एक वृ॰। वृष्टित वृक्षा 🗱 ॥ व्यम्। मधिखनाः। मूजिकाः। कक পিত্ত করত্ব। গুরুত্ব। বাতে ব্ল 5 5 4 4 5 1 5 1 5 1 5 30 2 1 1

निव्य भवा सम्माग्द ी इ ख्याः

। दिल १०० में लगहर भारतातुन ।

बिक्षा एक प्राप्त राज्य हुए

लाणिरोलभन्न , सह १६० : भाः

क विश्वकः। १०३० आणि भूदः

🏋 े वार्क मुनामि ह हिज्बुक ॥

मूर्नाप्ति ञ्चात खरम्एल इंडि भूछ-কান্তরে পাঠ:॥ #॥ তদ্যা ঘৃত গু-णाः । च**ी**व भोत्रवाट जूसमात्र (महिना॰ वर्ब्का पु॰। तुष्तिभारिवहत्र-ष्। वनावर्षः। वश्रवाः विम्रशिक्त কারিত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ त्ममूत्र**ा क्री मण्यवशः।यथा।कर्या** স্থানঞ্চ দশন খ বেস্রণ নাস্দ্ত । ইতি জ্যোতিস্তন্ত্ব• ॥ **ारः भुः भुष्यस्ता**गः। ইভাগরঃ ॥ (भवः। है। डे नद्रहिन्द्रका॥ शु-সু1ব:। ইতি হেমচন্দু:॥ मिर्मी खी रित्रिम्। ইতির নুমালা।। গেছন জ্লী শিল্প:। ইত্যমর:। মৃত্র• । इंडि (मिनि)।। ভাবে १नऐপুড/-(प मृद्धारमर्गक ॥ মেদনঃ পু॰ মুষ্কবৃক্ষঃ। ইতি রাজ-निर्यक्तः । भरुना जी महिना। ইতি কেটিৎ।। विकास की यक्कीय**भा**वविश्वास यथा । भिक्रगातीनारः ছल्हागन-िःः। देश्यका श्रीय नियार्क्त ^{ামাণ}ে **মেক্ষণ** ভবেৎ। বৃত্ত• वान्य भृथुगु भवनोन किया कृत्। । देश कि भुमानः। भुारमः वविन-খাস্য পুমাণ পরিকল্পিত মিতি। **उर र्कः । अरेवर महीं ।** दिल्लवस्र

महानु त। पदी द्वाक्रम भृथ्गा उ जीयन ज्राकान । मृषलाम्थल बार्क्क सायरजः त्रुम्रह उथा॥ इंजि সংস্কারতভু•॥

देनवः क्षी जनवाशानकवः ३१। यथा । নৈত্ৰাৰ্য পাৰে স্ব**পিতীহ** বিফ্ র্ষৈষ্ণর্য নধ্যে পরিবর্ত্ততে চ।পৌ कारमात ह मुजाबिरुष्ठा भुवृष्ठाउ मात्र हर्छः। म । इंडि डिप्रापि **७** वृः॥ **॥ भ** ॥ भ द्रीरषाट्यमः। यथा 1 उठः कनाः ममूर्याम **स**र्गारेमजः नात था। रेन अं जा नियु विष्कृत न-তীত্যাভ্যপিক ভ্বংম কল্য উষঃ কাল । নৈক নিত্রদেবতাক পা-यूनव्रकाट भूबीरवाटमर्गः। इंड्रा-ক্লিকাচারতক্ত্ব।। অপিচ। ব্রান্ধ্যে नुश्र हा जि: हैर जुर्छ। तकार्थ নাগ্য:। শরীরচিন্তা নির্বর্ত্য নৈত্র• कर्च मनाहाद्व ॥ रेमज मन मृ ত্রেৎসর্গ:।ইতিরান্তবল্লভ:॥ 🗱। उब निविक्त इनाहि यथा। ह 🖽 कून मती (गाष्ठ रिजाञ्जः भिष्टिवातकः । अत्यवकार हिन्ताः ভন্স। অগ্নে চৈষ শ্মশানে ह ন দৃষ্টে বা নহাবৃক্ষে চ লাছলে ॥

न्मीति कराइन । न সসञ्ज्य गर्छः यू न गहन् वा मराष्ट्रतः ।। ज्वाः कात्र कथालय जाजगाल उरिष्व চ। ন ক্ষেত্ৰে ন বিলে বাপি ন তী-থে ন চত্য়থে॥ নক্যানদ স্নীপে বা নোষরে ন পরাশুচৌ। ন সো-পানত পাদুকো হি ছত্ৰী বা নান্ত-রীক্ষকে॥ ন চৈবাভিনৃথ: দ্রীণা अक बाजागरमा गवा । न (नव (नव)-वगरमा द्रभामिश कराइन ॥ न-·(बराडी•िव नित्रीक्षन् वा न वायुडि-নুথো থবা। পু ত্যাদিত্য॰ পুত্যনল॰ পুতিসোম তথৈব চ।। ইতি 済-ष्पं डेनिविভागে ३२ व्यव्यागः ॥ मान्। विखातस भारम डे बतथा ७ े अ॰ व्यवप्रत्य मुक्टेबाः ॥ 🛊 ॥ निज-अशंकिनि जिन्ना

মৈত্র: শু॰ রান্ধণঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেৰ: য়

रेन वच ी लानुग्रधानक्षवः। इंडि की स्थाप

ब्रह्मकरी ।

বিন্নুত্রে নুসনাচরেৎ া। ন গোষ্টা 🍴 মেত্রাবকাণীঃ 👵 💎 🗥 💢 🕏 ১৮-498 i

न जिध्न वा न निर्वाणा नह शर्बंड | रेगवो 🍇 🙃 📆 📁 🤭 सबन्ध मञ्चल ॥ न जीर्गाव वाय वाय वाय विष्य । इठामन्न जन्न ।। वाङि

विष्णिय रेग्जीकत्र निरिष्ण यथा
। विष्ठि পতি उाच ख वल् देवता कि
की र्षे रिकः । वक्ष की वक्ष की ख्रु के प्राम्य मुक्तियः महा। ज्या कि वर्षा मा क्रिकेश महा। ज्या कि वर्षा मा क्षिय ।। इकि विक्ष्ण वार्ष ज्ञी । विविद्धा कि रेग्जी में मही कि वर्षा के विविद्धा कि राम अपने । कि विविद्धा कि प्राप्त ।। कि विविद्धा कि राम अपने । कि विविद्धा कि प्राप्त के विविद्धा कि राम अपने । कि विविद्धा कि प्राप्त के विविद्धा कि विविद्धा कि प्राप्त के विविद्धा कि प्राप्त कि विविद्धा कि प्राप्त के विविद्धा कि प्राप्त कि विविद्धा कि प्राप्त के विविद्धा कि प्राप्त कि विविद्य कि विविद्धा कि प्राप्त कि विविद्धा कि विवि

নৈত্রীবলঃ পৃ• বুদ্ধ:।ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ॥

গৈত্রেশঃ প্ বৃদ্ধভেদঃ। ইতি ত্রি চা-গুশেষঃ।। ন্নিবিশেষঃ। যথা। এবং বুরাণং নৈত্রেণ দ্বৈপাধন স্ এতা বৃধঃ। প্রণাদির ভারত্যা বি-দুরঃ পুত্রভাষত।। ইতি শ্রী ভাষ বতে ৩ ফাড়ে স্বধ্যাঃ। বিক সম্বাদি বিভা

রতেথিক। জী নিজ্ক । ইতি তিকা গ্ৰহণ

নিঃ ক্লী জী িবন্যভাবঃ।। নিঞ্ ন্যক্ষা: ইডানৰ ভয়তৌ।। বিশী জী সীতা। ইডি হেম- हिन्दुः॥ दिव्यनः क्ली व्यक्तशासनः। यथा। सन्-

শাতাতপৌ। অনপিণ্ডা চ যা মা-তুরসগোত্রাচ যাপিত্র:। সাপুশস্তা षिजा जीनाः मात्रकर्णाः रेमथ्रन ॥ रेनथ्रन निथ्न मद वार्छ। जी भ्रम मास्य जागीयान भूष्यारभन्ताः দৌ। ইত্যুদ্বাহতভু॰।। #॥ সঙ্গত॰ ॥ রত। ইত্যের:॥ সঙ্গতি: मঙ্গ-त्ना मात्रम'रयागः विवार इंडिक-लिक्शा व्रज्ञ भूवज्ञ। स्नत्या देर्म-थ्न । निथ्नाट मक्त इनमार्थ স্বার্থে রতৌনিয়ান্যার্থে বা কঃ। সম্ব-क्ष मृत्र या हाली मिथ्न मि-ষ্যতে। ইতি ব্যাডি:॥ ইতি ভট্টो -काया॰ ভরত:॥#॥ (नषमऽभर्यऽ।-यः। সুরত । অভিনানিত । ধর্ষি ত ৪ সংপ্ৰোগঃ ৫ অনারত ৬ অবুন্দচর্য্যক ৭ উপসৃষ্ট ৮ ত্রিভ-দু•৯ কীডাররু ১০ মহাস্থ• ১১। ইতি ত্রিফাণ্ডশেষ: ॥ ব্যবাব: ১২ गुरामाध्याः २० ब्र छ॰ २८ निधुवन॰ २० । ইত্যনর: ॥ অস্য গুণা: ।³ধাত্-ক্ষযকারিত্বণা রতি সম্ভান দাতৃত্বঞ্চ ॥ অতিশ্বনৈথ্নস্য স্বাস কাস बुद्रकादिस् ॥ यदिन्युनम् भुत्रह भिर गुन्तिताग यशिनामा कात्रि-

द्रशा जी मःमर्ग ब्रह्जिम् आयू ব্লজ্বা শরীর বল বর্ণ স্থিরোপচিত মা সানি ভবন্তি॥ প্র্জালাশু চিহান সেকস্থান লোক সমীপ প্রাতঃকাল সন্ধ্যাকাল পর্বকালেষ্ ভস্য ভ্যাজ্যত্ব•।।এতৎকর্মণি রজ यलाकामा मलिना वक्ता वर्गाकाशी वर्षारकाक्षा वहाधिय् का क्रीना म তী বেশ্যা যোনিদোষযুক্তা সগো ত্রা গুরুপরী ভিক্ষ্ নী কপট্রুত্থা রিণী বৃদ্ধাচ ভ্যাক্যা ॥ রঙ্গরলা गमत्न मृष्टेऽायु एउडाः करमा २५मा मह ভবতি ॥ কপট্রু হযুক্তা ৩ৰু গত্নী সগোত্রা বৃদ্ধা গমনে এবং পরিকা লে সন্ধ্যাকালে চ জ্রীনৈথনে পাপ মাযুঃ ক্ষমশ্চ ভবতি ॥ বয়ে। ৰূপ গুণোপেতা প্রশীল সমন্বিতা 🖠 অধিকানা• জ্ঠা নলস্কু তা• বাজী-করণ পীডিভাঞ্চ পুমদাণ হৃষ্টো **ৎ**ধিকান • চ পুৰুষঃ সেবেত।। শুক্র वर्षक पुवाः नगकतः भी उल्बल या शीषा कानवागः क्वाः मुक्तशः मिन्स्ति इडी॰ शुमरा मार রে জ্ঞ: কান্কো গত্বা তদনু সুখ ञ्चलिट ॥ जामकृष्णमान जूनाता ধাতুবৈষম্য নেতিয়া নতান্তে স্নান• সশ্বরক্ষীরপান নিদুগোডিকরস

ভোজনঞ্ হিত । ইতি রাজবল্প ।। # ।। व् अभिवत्म अक्षेत्र रेमथुनः ज्याबादः यथा। स्वत्ननः कीर्डनः त निः (भुक्तनः अञ् जायनः। महरः **২ব্যবসাযশ্চ ক্রিয়ানিয়ান্তি রেব চ** নৈথন বিবিধ ত্যাজ্য বুতে কীং विवृष्ट्य। इंजि वृक्षरिवदर्ज गनश्रि থণ্ডে ৪ অধ্যায়ঃ।। 🗱।। অস্য বি निख्यो यथ।। अजातुनगमः भरु স্বপন্ন্যা মবনীপতে। পুলামর্ক্ষে শু ভে কালে (জ্যেষ্ঠ যুশ্মাসু রাত্রিষু। नामाञा॰ जु खिय॰ गरहवाजुदा॰ व রজৰলা। নানিষ্টা। ন পুঞ্সিতা। नाश्रमञा॰ न छर्विगी॰॥ नामिक्रगाः नाने/कामा॰ नाकामा॰ नान/साविः ত । ক্ংকানা মতিভুক্তা বা স্থ रिषि र्छ रेन यु जिः ॥ माजः जुन्ननम् ধৃদ্ পুরীভো নাগ্রাতঃ ক্ষিভোপি-বা। সকাম: সানুরাগশ্চ ব্যবায় প্ৰধ্যে 🕬 🔠 চত্ৰণ্যপ্তনী চৈব আমাত সাম্প্রিমা। পরাণ্ডোতা-কিমিপ্রাংশ (জিল্ভ জি**রেব চ**॥ ंड । १ मान्य सम्बंध वेल्प्स**्यान-**र के कुन्या, जिल्ला राज्य र स**म** ल् 😘 महत्रा भृतः । भरत्य भर (मार्क् उपाट अर्थितिक मेरिका) ভাষ্য ক্ষা নাবেল্যা ধ্যান জপ্ত

भरित्र न रिद्धः ॥ नानप्रयानाव्ययानीः । বা নোগ ভ্কৌষ্ব স্তথা। দেব দিজ क्षाक व्यवायी नाम्यी ज्या ।। চৈত্য চত্ত্র তীর্থেষু নৈব গোঙে চ তুর্বথ। নৈব শাশানোপবনে সলি-লেযু মহীপতে।। প্ৰোক্ত পৰ্ব মশে (यष्टेनव ज्भान मक्त्रायाः। ग्रह-স্থ্যবাষ মতিমান মুৰোলার পীডি-**७:।। श**र्बविधगरमा १६रन्ता दिवा भाभभुरता न्भा। जूवि রোগাवस्ता न् वा मश्रभेरखा जलाभरम। **भवनाता** লগছেত মনসাপি কদাচন। কিমুবা-চাৰ্ছিবন্ধোপি নাস্তি তেম্ ব্যবাযি-না॰।। মৃতে। নরক নভ্যেতি হীয়তে আপি চাযুষ: ৷ পরদার গতি: পু•সা মূভযত্রাপি ভীতিদা ॥ ইতি ন্তা-मनातिषु भाजू मटमू वृश्वा वृत्कट । गर्थाक (मायशीत्मयू मकासम्बन्छा-ৰপি ॥ ইভি বিষ্ণুপুরাণে ৩ অংশ 🔊 ञथ्यायः ॥ 🕸 ॥ श्रद्धप्रानिकारः म् एका यथा। नाम्नानः महार्वत्वा देवनाः, **भव** तिहे १०४५ (३४५) तुप्रस् पर १८ जिल्ला के **स्टब्स** A STATE OF THE STA 31 7 13 , , .. ूजा। देव-हिस ४, --

भार्ष्म दिस्ता द्रोजन् कविय जिस्ता তথা।। বান্ধণশ্চ ভবেদ্ভা তথা त्राकः **म्हजूर्खनः। अखस्राम् ज्**रवद्मस्यः স্বভণ্ডামধিকো ভবেৎা৷ মাতা মাতৃ-यमा यमु गांज्वानी भिज्यमा । পিত্ব্য স্থি শিষ্যন্ত্ৰী ভগিনী তৎ मथी उथा ॥ ভागितियी उथा हित बाबभन्नी उरेथव ह। उथा भु वुक्किंछ। नात्री वर्ताटक्ट्री उरेथन ह।। इंड्रिंग-म्यास निर्मिष्ठी खामास गमान नदः। শিশুস্যোৎকর্ত্তন• কৃত্বা ততন্ত বধ মৰ্হতি ॥ ভ্ৰাতৃ ভাৰ্য্যাগমে প্ৰাদ্দ-**अस्र विखाना ज्यार । ठा आनीक** अभाकी वा गइन् वर मवाश्रू शर।। ভির্য্যানৌ চ গোবর্জ্য মৈথুন যো হতিসেবতে। স পণং পুাপু যাদ্ভে॰ जमहाक्त यवरमाहकः॥ मूर्वर्गक्ष छ-विष्र (अ)। गाः वृहन् मन्राह्मा छम्। दि-मारागाभी दिखा मख्या रेवला मूल সম-পণ ॥ গৃহীত্বা বেতন বেশ্য लाञापनाब गह्निः (वजन विख-१ १ मि । प्राप्त अक विद्यास्था ॥ अन्। अधिकार वा परडाए नवापनामः ্রণাৎ। তস্য দণ্ড ভবেদাজন্ ृ (पंत्र) ह सायकः।। नीवा ভागामः (या मन्द्राम्हारभूता विखन (वजन । ता छ क दिल्प एख ख्या श्रमा न

शिया ।। वर्नाः वृष्ठा (नकाः रिमनः भूः विक्वधान्यू विकार সর্বে তে দ্বিশুণ দম। দদুয় পৃথক্ श्वक् मार्स म ७ १ वि ७१ भार ।। ইতি মাৎস্যে২০১ অধ্যাयः॥ মৈনাকঃ প্ৰপৰ্ববিশেষঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ। হির্ণ্যনাভঃ ২ সুনাভঃ ০ হিম্বৎসূত: ৪। ইতি জটাবর: ।। म जु हिमानयमा (कार्ष्ठभूयः। যথা। ততো ভগবতী প্ৰাছ গেন-का॰ मृति मिन्छा॰। मिन्छ পूर्व॰ তদা তস্যাঃ প্রযন্তী মনোর্থণ।। গ্রীদেব্যবাচ। **শত**ণ প্রা: সণভব-ন্ত ভবত্যা বীৰ্য্য সংযুতা:। তবৈকো वनवाग्याः भूषमः मः ভविषा्ठि ।। এব মুক্তা জগদ্ধাত্রী তত্রৈবান্তর थीय उ। स्निका ह मूर विद्या यहाः न পুৰিবেশ হ ॥ তত: কালে তু मः शुरि रेमनाक महत्वाखन । পক্ষেণ সহ যোদ্যাপি সিফুমখ্যে পুবর্ত্ত ।। মেনক। সুসুবে দেবী

ইতিকালিকাপুরাণে৪০খং 😘 ্ভারাক 👢 (२१७म:॥

(मरवन्तुः म्लक्ष्यागठः । अन्तरः

নৈনিকঃ পুং জালিকঃ।ইতি সিদ্ধান্ত क्लोगूनी ॥

हैं इंग्डिस्ट ।। अस्मितिल्ल ইতি রামায়ণ• 🔢 रिमन्दर्भ मु॰ क्षिक्ष किछ एस ठन्मः ॥

বৈরেয়- ল্লী মদ্যবিশেষ:। ইত্যমর: ।। यहानि जीश्राक्तकारमः शर्देव भंदिकामत्वा जत्यः। रेमद्रयः था-তকীশ্য় ওড ঘানার সংহিত। इंडि मादावन (छप्तः कृतः। उथा-**शि मृत्रा मनाकृत्कार महामात** काम॰ जनया दिनात्वयः (क्यः। नि-পাতনাদাত ঐত্বং। ইভি ভরত: ॥ মোঘণ তি নির্থক। ইত্যনর:॥ शीन । इंजि (पतिनी ॥ भाषः श्रु भाजीतः। इंडि मयः

নোবপুয়া জী বন্ধ্যাইতি রাজ-विद्धः।।

गाना ॥

ল জী পাটলাব্ফ:।ইতি মে-ৈ ি দঙ্গ। ইতি শব্দালা॥ শত পূলান্কমাৎসাসুষুবেচ হয় । ২ শাচীর । ইভি

रिमनाकश्वमाँ खी भावर्षः २००४मा । तत्त्वः ॥ CONTRACTOR OF STATE O

(स्थानकः ू १५ ११ कर में ।।

শিশু: । বিরাগী। ইতি ছেমচন্দু: ॥ मुक्कब्कः। ইতি द्राजनिर्विः॥ रमाहम॰ क्षी भाकः॥ कल्पनः॥ एसुः ।। भागे । इंडि मूहशाङा र्जाद २ न दे পु छ । एव न न न न न ।। माठनी जी कछकाती।इंडिकंटी ধর:॥ মোক্ষকত্রী চ।।

भाग्याम् भाग्यामिर्विश्वा **७८ भर्य । भा**ठमु ८ २ भाठ **जाूदः २ (नाठनियानः ८ निह्नि** नातः ৫ मूत्रमः ७ मान्यनी ८२ हैः १ নোচসার: ৮। অস্য গুণা:। ক্যা যত্ত্ব• । কফ বাত হরত্ত্ব• । রসায়ন-प् । वन भूष्टि वर्ग वीर्यं भुक्कायु (में रिमिषितपुरे। गु।हिद्का हेि ब्राजनिर्घणेः॥

भाग जी भाना निर्कः॥ करनी वृक्तः । ইত্যমরः ॥ नीलीवृक्तः। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।।

भाषाद्रः भू क्षकीतः॥ द्रञ्जानि ॥ भनायाच्छतः। इंडि स्ट्रिक्

মালা :

भारत का एक विश्वन के विश् म्बंबविकः।श्रुकृत्यः वार्थं त्यानकः सूर् क्री थान्।वित्ययः।

(मार्विको जो जानिगीविष्णवः। इंडि र्नायुषः॥ (मार्वन क्री ठ्वी कत्रन ।। आक्रमः । इंडि मूदेशा दर्शनर्मना ।। মোটনঃ পু॰ বাযুঃ। ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥

মোটনক ল্লী একাদশাক্ষরছন্দো-विष्यः। यथा। न्यात्याहेनकः छ ज जाक न भो। द्राव्ह थन महा कला बनानम्हान्त महा छहे लाहे. न हरा यः किल नायन छकात मान সংসার রিপু পুতি মোট্যত্।। हेि ए न्तामक्षती ॥

भागे। खी वला। इंजि बाक्र निर्यण्येः॥ মোউ। বিত॰ ক্লী জীণা স্বাভাবিক-**मणविधानका**ता छर्ग डालकात वि-শেষ:। ইতি হেনচন্দু:॥ তল্ল ক্ষণ• रथा। काष्ठ मात्रन वार्खासी श्रमि-**ওজাব ভাবতঃ। পা**কট্য মভিলা-ন্য মোজাবিত মুদীর্য্যত। ইত্যু-ज्यवनीवमिशः॥

भाष्ट्री की हिला कि विकास कि व ী । ইতিনেদিনী

क्षत्र । जिल्लामञ्जू ।। त्याया इति जाया। इज्ज्या ।।

व्यम् प्रानमस्त्रा यथा। (नामकः ষাদু সংযুক্ত শর্করাদি বিনির্ঘিত। ম্যা নিবেদিত ভক্ত্যা গৃহাণ পর মেশ্বর।ইতিদুর্গোৎসবপদ্ধতি:।। শুডঃ ॥ যবাসশর্করা। ইতি রাজ निर्घ है।। मर्क्त्राहिषात्राभाक्षेष्य वित्मयः। अभा भूर्ववीर्याः वग्रामः তিষ্ঠতি। ইতি সথবোধ:।। হ্যু (ক ত্রি। ইতি মেদিনী॥

(भारक: भ्॰ वर्णमञ्जूषा छिविरणवः । মযর। ইতি ভাষা। স চ শুদাবা॰ ক্ষবিধাজ্জাত:। ইতি সৃতি:।।

মোদন ক্লী শিক্তুক। ইতিবাজ-निर्दरिः ॥ इतः । मून्यापूर्वनर्भः नार ॥

भारतारिनी खी बद्ध इंडि त्राज-निर्घ है: 11

भारयन्त्री जी बनम्झिका।कार्रम-ল্লিকা ইতি ভাষা। যথা। মদযন্তী গন্ধবতী নোদবন্ডী খরস্বরা।ইতি **मग**डी ज्नमी समयष्टिका । ইতি भद्दञ्चावनी ॥

भाषा की शक्रामा। ইভিরাক निर्घक्तः ॥

(मामायाः भू ताकृतिर्घणेः ॥

(मानाष्ट्रा जी व्यवस्ति । इति রাজনির্ঘণ্ট:॥ হর্ষযুক্তা চ॥ **मारिउः** वि इर्ययुकः। मूर्याउाः कर्खद्रिक भुजारयन निञ्चमः॥ (नारिनी खी व्यक्ताना॥ महिनकः ॥ यूथिका ॥ कछूती ॥ भित्रा ॥ मिल्लकाभू ब्रविष्मयः । उद्भर्याः यः। वर्षभञी २ सभात्रिका ७ वृख-মল্লিকা ৪। অস্যা গুণা:। নেত্র-(ब्रागा**भर्ड्दः।** कर्दूदः। উक्षदः ।বুণস্ত্র । গদ্ধবহুলত্ত্ব । আস্যুদ্ধ রোগনাশিত্বঞ। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।: নোরট ল্লী ইক্ম্ল।। অক্ষোঠপুর

(विदिनी।। भारतेः पु॰ नजाभु (जनः॥ कीतः भात्रही इंडि ভाषा। उৎপर्यतायः । কর্ণপুল্ল: ২ পীল্পত্র: ৩ মধুসুব: ৪ ঘনমূলঃ ৫ দীর্ঘমূলঃ ৬ পুৰুষঃ ৭ क्वीत्रस्मात्रहेः ৮। कृष्टि भुखरक तद्भाना।। अशिष्ठ। ज्गम्ना भाः व्यर्गभूष्ठ हात की ब्रभूष्ठ हें जिल् सबैद्धान भीवभुक इंडिह भाठे। या अधाः। भीतत्वन्यतः। मध्-াঞ্ । তলা ১ জ । কিন্তু দ্ হ বুর भाक्षा । ४०,७०१ वस्तिवस्तिन्

। मध्राबार्भक्रिका । इंडि

व्याम्य क्रिक्ट । इति । विकास क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक

निर्घणेः॥

तावि जी मूर्य। ইত্যमतः॥

तावकः पुः जक्षतः। ইত্যमतः॥

नावनः क्षी वृष्टेनः॥ ह्लानः। वदः।

हेि ग्ववाठा जीव १ निर्देशकः।

त्यन निष्ठकः॥

नाविक्यं जि त्यावनकर्ता। होतः।

हेि ग्ववाठा छन् भुज्यवन

निष्ठकः॥

াহঃ পু॰ মুছা। ইত্যমরঃ॥ অ विन्ता ॥ इंडि जिन्नि ॥ मृःथः। **३७ भद्रद्वावनी ॥ (एक्। रियू** णाञावृिकः। इंडि गीडाम्(वािष-न्तराः श्रीभवस्यामी ॥ व्यत्मोः तुकारा বৃদ্ধিতো জাত:। যথা। বুদ্ধে মো रः नग जवम रक्षाता मज्यमः। न মোদ শ্চাভবৎ কণ্ঠান্ম্ভ্যু র্লোচন।। তো নৃপ।। ইতি মাৎস্যে২ অধ্যা-यः॥ (मारुत्रक्षणः यथा। नम् नाजा मन निजा नम्बर गृहिनी गृह । এতদন্য মমত্ব যৎ স মোহ ইতি भैखिंगः॥ इंजि भारम् दिस्पार्या गमात ३५ व्यवगरः ॥ 🗱 ॥ धर्मः বিম্চত্ত্ব। যথা। অকামতঃ কৃত্ত পাপু, বেদাভ্যাসেন নশ্যতি। কানপ্ৰস্ক কৃত গোহাৎ প্ৰায়শ্চি ্ভঃ পৃথগ্বিধেরি 🍮 ॥ নর্ত্র নোহা 📗

দিতি কো মোহ:। অত্র, মোহ শ-ন্দেন দেবেন্দু বুদ্ধি পূর্বো ব্যতিক্রমঃ েউচ্যতে পণ্ডিতৈ নিভ্যুণ পুরাণে সাংশপাষন:॥ ইতি ভবিষ্য পুরাণ বচনাৎ জাভ বৃদ্ধি প্রো ব্যতিক भा भारः। ইতি জিকनः। उन कामना मामर्थाएतव वृष्ट्य र्वहाया । উচ্যতে। শ্দুস্য ব্ৰাহ্মণী মোহা-म्गह्उ इंख्यामी मूर्वेदिहाल्य इंखि ধাত্বর্থানুসারাৎ অজ্ঞান মাত্র মো-रः। यब जू कामना भएका २ छि छङ ভবিষ্যপুরাণ শক্ষেত্তিত মোহশ स्ता न गुाशः। किस धर्माविम्**ए**वः भारः महावर्ष कृष्को मन्त्रा मन्त्रः कर्न्डावा द्वागाट कर्न्डवाञा जुमः । यथा वरामः। भारत्। धर्यविग्रज्यः মানস্ত্রাত্মানিতা। এবঞ্চ ভ-विष्णभुद्रागीय वृक्षि भारमाभाष्य জ্ঞाনমেবাভিধত্তে সত্যুধর্মজ্ঞানে পাপগৌরবার্থ মিদমূক্ত মোহাদি-তি। ইতি পুাযশ্চিত্তবিবেকঃ॥ 🐉॥ মোহকৃক্ষো যথা। সুমনোবাচ। শুন্ন-তা মভিধাস্যামি সর্বসনেহে নাশ-नः। चन्न गून(एमनः) गर्व विद्धाः न मर्मन ॥ (माडः भाभम) वीः जा १य॰ भाष्ट्र। मूल इ उम्र हि। य नुजु॰ जनः ह काक्षा मागा माथा

जूविखद्रः॥ मस्य कोर्दिमा श्वानि ज्कृत्रा भूब्रिजः मरा । रिभ्नुन्रः ত্য্যপৌগন্ধ্য মজ্ঞান কল মেব-हि॥ इस भाव छ छोत्राक क्षाः কুরাক পাপিন:। পক্ষিণো মোহ व्कन्ध माया भाषाः नमानिजाः .र्यः ফলস্য হি। ভাবোদকেন সং-वृष खमा मङ्गाद मजू भियः॥ वा-थर्य छम्। मृत्रज्ञिः (क्रुरेन्ट मधुताय-তে। जाम्रेमक कोन्टिक मुक ला लाज भारभः॥ उम्र हायाः সমাশ্রিত্য যোনরঃ পরিবত্ততে। ফলানি ত্ৰস্য যো হ্ৰমাতি সুপত্না-नि मित्न मित्न। कनानान्त ब्रामरेनव অধ্যেণ ভূপোধিতঃ ৷৷ সুসংপুঙৌ ভবেমর্ত্য: পতনায পুষছতি ।। ইতি পাদ্মে ভূমিথণ্ডে১১অধ্যায়ঃ।। भाइन की मृद्र छ। इंडि एक् महन्तुः ॥ (क्रामगञ्जावभुगितिषात्रामृश्वजा করণ ৷ তত্র হোনে ২ঞ্চলিনিশনে৷ यथा। (भारुमः वन्तीकामः 🤫 **गञ्चक्रन ७१।। भुरतिमने** कि ভ্যা॰ সর নেত**ং পু**সিষ্যাভ शाइनाकय-रेक्टव क्लाज्याहाई-गः ज्या किनिष्ठा संयुक्ताक्ष सः-ातान जुलीलया ॥ विविशू कन

শোহরা रहारमन उथा मुव्यान्यां भाषः। मर्ब नवाः भुनिशासि मृमा मज भूयाः গত:॥ ইতি তক্তসার:॥ মোহন: পু॰ পুসূরকৃক্ষ:।ইভিরাজ-निघण्टः ॥ कामारत्वम् शक्षवानाञ् গতবাণবিশেষ:। ইতি ত্রিকাও; শেষ: ৷৷ মোহকারকে ত্রি ৷৷ (माहना जी जिलुत्रमानील्यः । ইতি রত্নালা।। নক্রালা। ইতি भद्रभाषा ॥ मार्गी की উপाम्की ।। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ॥ বটপত্রী। ইতি ভা वश्काणः ॥ भारताविः क्वी रेमनिस्न भूवयः। यथा। এবং পঞ্চामस्य ह गर्छ जू ्रुक्षा नृष। दिननित्यस श्रुवा १ (व-**(स्य পরি চীর্তিত** ॥ गোহরাত্রিশ্চ मा (शुक्ता (वरविक्तिः भूता ज्या । छञ मर्ख शुग्हाक हन्माकां मि मि-পীশরাঃ॥ আদিত্যা বসবো ক্রা-

मिनिन्ता भागवाष्यः। श्रायत्या मु-नियरेक्टव गन्नती ज्ञाकमानयः ॥ মানেঙে ্ৰ' লোমশশ্চ পেচক শ্চি-র জী 😥 - জিম্মানুস্ক নগণ 😸 শ্রা-क्षाणक १६ छ। महिल्ली क करेन्द्रव महा - ८, म्ह ७ व 🙉 🖂 📆 लाकारथः महा (ाक् नामः नग

खथा।। वृक्षालाक ययुः मर्स दुक्ष लाकामध खथा। गाउ रेमनिमान युका (नाका॰ म मम्राह्म भूनः ॥ এव॰ भाजाद भाग्रञ्ज भारतायुक्त तुन्नाः। বুন্ধণাঞ্চ নিপাতে চ মহাকল্পে৷ ভ-বেদৃপ্যাপুকীর্ত্তিতা মহারাত্রি: সা विव ए भूता छरिनः। इं छि वु ऋरिवदर्ख भुक्**डिथा** ७ विशायः ॥ 🗱 ॥ মোহ: কর্ত্তব্যাগৃহ: স এব রাত্তি রিব রাত্রি: বুদ্ধিমোহকরামিদাক পা। ইদানীস্তন জনানা• রাত্রি রি **তি বা. इं जि (नवीमाङ्ग्र) हो का गा॰** विम्रावित्नामः ॥ अ। जन् । छन्। छन्। ত্রিঃ। যথা। দীপোৎসব চত্রদশ্যা-সম্যা যোগ এব চেৎ। কাল্রাত্রি র্নহেশানি তারা কালী পুসন্ধরী॥ क्यार्रभी मर्ल्यानि माह्राबिः भुकी डिंडा। ज जीया नायत भुक्ता क्वतातक मःग्रा।। साक्गा की र्ভिटा **(**मर्वि मर्बनिष्क्रभद्गीशद्गा । ইতি শক্তিসক্ষতন্ত্ৰ।। नारमाञ्च॰ क्षी अविष्ठाकत्रकपुर्छः। यथा। (गामिणि श्राह वित्भुन्तु। ना-लाका जगवान् इतिः। नविषवाश भुक्रव भूगाजामाभि महत्र॥ म भहर ऊनस्रांपर क्षामा दिमानि नि इ: हो। उवाधि ङक्तारमन्।पू

ক্ষিতব্যা নহেশ্বর ॥ অমাতিক্ষে-র্বএবেনে গন্তারো নরকানপি ৷ অ-मारिष (वनवाकानाः व्रक्रनाग् ह नाः পিনা ।। বিমোহনাব শাস্ত্রাণি **थि** (ज) कप्ना भाषत्वन सूत्रादिशा । চকার মোহশাস্ত্রাণি কেশবোপি नि(दद्रिज: ॥ काशानः नामनः বাম ভৈরব পূর্ব পশ্চিম ।। পঞ্ রাত্রণ পাশুপত তথান্যানি সহ-जु**मः**॥ ইতি कोर्ग्य >८ व्यव्यायः॥ भारिनी खी जिलद्रमानीलुझ । इंडि রত্নালা॥ সমুদুনস্থনকালে দেবানা নমৃত পানাযাসুরাণা• নোহনায় চ ভগবদবতারবিশেষঃ । यथा। बानु छत्र॰ बारणानः जरगाः मन्म (भव छ। अभाषय मुद्रान-न्डान् (माहिन्डा भाइयन् जिया। ইতি শ্ৰীভাগৰতে ১ ফদ্ধে ৩ আ-ध्रायः ॥ ऋखिन्याविष्नयः। यन्याः শাপাৎ বুন্ধণো ২প্রাড় জাত । যথা। যতো হসসি গরেণ ভভো २भूष्ट्या खरावित्र । अविताप्तर्भ ভঙ্গ• তে করিষ্যতি হরি: শ্বয• ॥ निदाध भवन दुकन् यदिभाग्या भव সান্সুত । তবৈব কবচ স্তোত্র ম-व्यः गृह्याठि (या नद्रः ॥ ভবিতা জ-

(नी क्षीव

স্য বিঘ্ৰণ্ড স যাস্যত্যুপহাস্যতা॰ । ভবিতা বার্ষিকী পূজা দেবতানা॰ যুগে যুগে॥ তব নাঘ্যাঞ্চ সংক্রান্ত্যাণ ন ভবিষ্যতি সা পুন:। ইত্যুক্ত্বা भारिनी भीषु कगाम गरनाजयः ।। তেন সার্দ্ধ রক্তি ক্রা বভ্ব বিজ্বা পুন:। ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে 🗐 कृष्ण्डन्म थए७ ०० व्यष्ठागः॥ दिख त्रख्युकान्नाद्म मुष्ठेवाः ॥

নোক্ষ কি কেপে। ইতিকবিকল क्यः ॥ कि यो क्यं जि यो क्यं जि । ইতি দুর্গাদাস:॥

भाकः भ् मूकिः॥भावेनिवृकः॥ भावन । इंजि सिमिनी ॥ मृजुरः । ইতি হেমচন্দুঃ।। মোক্ষথর্মস্ত ম হাভারতে শান্তিপর্বণি দুষ্টব্য: ॥ भाक्षकः श्रु मूहकृत्कः। इंडि **द्राजनिर्घ**णेः ॥

(भाष्काभागः भू मूकिमाधनः। **ज्जू जनः। म**मानिः। (यागः। জ্ঞানঞ্চ। ইতি হেমচন্দু:॥

इन्मः ॥

रमें किन की मुका। इंडामद्रः॥ भिक्तिक उथुनः भू धवन्यावनानः। ইতিরাজনির্ঘট:॥

भोकिक्युमवा जो . मुक्तिः। इंडि

त्राजनिर्घर्षः॥

भोकिकण्किः स्री णुक्तिः। मूर রঝিনুক্ ইতি ভাষা। ইতি রা निर्घण्डः ॥

নৌথর্য্য ক্লী নুথরত্ব । নূথরস্যভ इंडार्थ का भुडारान निम्म 11 মৌথিক ত্রি মুখসন্ধন্ধি। মুথসে प्रभि डार्र्श कि के भू डार्यन निस्न म॰ भोक्षी जी गुक्षनिर्घि उपयंगा यथा। विभूत्र क्वियत्रां भि क्षी माप्रक्षिगायत । मिक्सा বিশা॰ কাৰ্য্য নানধ্যাবে ন সংক্ৰমে ।। मनुः। भोछी विव्य नमा सङ्गा कार्य। विभुमा (मथना। क्ववियमा **চ भोर्बी जा रिक्मामा भन्डा छवी** ॥ মুঞ্জালাভে ত কর্ত্তব্যা হালাশ্ম-ন্ত চ বলুজৈ:। ত্রিগৃতা গুড়িনৈকেন বিভি: পঞ্চি রেব বা ॥ ইতি সংস্থারতক্ত ॥

জীত্ণাখ্য: পু• মুঞ্জ:। ইতি ब्राजनियंके ।।

भोजनिः पु॰ काकः। ইতি एसन ्योङीभर्म छ। वनुका। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট: !!

> भोक्षीवन्नः भू मुख्यम्थनादन्तनः। উপন্যন মিতি যাবং। যথা। জ্ঞা ভাৰপ্তমে সিংহে নীচছে শতুভি छातो । मोक्षीवकः मुङः (भुक्

শ্চত্তে দীনগতে রবৌ ॥ ইতি জ্যো-তিনিবন্ধে নারদ্বচন ॥ নীচ্য ক্লী মোহ:। ইতি হেমচন্দুঃ॥ নিক্লি: পু॰ কাকঃ। ইতি ত্রিকাও-শবঃ॥

ेश्वित्रहः शृ॰ युष्त्वयूनिभूवः। म ह शावकातकः । स्मार्ग्यस्युवताः यथा। खेर्व हर्वन ভार्गव कामन्यरा-स्रवसः। इंडिस्ननीभिका॥ श्रीन॰ की युष्त्वस्वरिक्तः। इंडरमतः॥

नि की मद्रश्रागत्राङ्गाउट भर्यायः। अजायगः २। ज्कीः १ ज्कीकाः १। इज्यादः ॥ कर्यादः लाख मोनाहद्रभः यथा। छहारद्र रेमथून हित भुगाद म्ह्रश्रादन। द्वान जाका काल ह्रष्ट्रेम् मोनः न्याहरद्रणा इजि जिथामिजङ्गा। नेनी भुः यूनिः। इजि इक्षाद्रः॥ भोना भुः यूनिः। इजि इक्षाद्रः॥ भोना भुः यूनिः। इजि इक्षाद्रः॥ भोनगुर्क जि। यथा। मिनीवानी क्रम् द्वाभि यि भागित्व ज्वादः शामम्मुक्कः महाद्र मानः य-स्मोनिना क्जः॥ अजह स्मोन मकः भाग्य नाद्रकान्यः। वजह स्मोन मकः भाग्य नाद्रकान्यः। वजह स्मोन मकः भाग्य नाद्रकान्यः। इजि जिथा। क्रिज्वः॥

ोरनयः भू॰ शक्षद्यंगनिवरणयः ।

यथा। गञ्जर्बाञ्चवमः भूगा भौनि गान्छ निरवायन। विज्ञरमनागुरम-नोज् উर्गाय ब्रनिथ खथा।। ध्नताष्ट्र खर्यामा क मूर्यत्व हां खर्यवव। यूग् खल्गिष्ट कार्या निषि किञ्जय ख्या।। ज्ञर्यापणः मालिनिताः भर्यत्व क्रिक्षणः। ইर्ज्य प्रव गञ्जर्व क्रिक्षणः। ইर्ज्य प्रव विश्वापः।।

भोत्रिकः वि मृत्रज्ञवानकः। ३७९ भन्नः॥

মৌর্থ্যণ ক্লী জাড্যণ। ইতিক্মেচন্দু:॥ মৌর্বি জ্ঞী ধনুর্গুণ:। ইত্যমর:॥ অজশৃঙ্গী। কোঁগা ইতি ভাষা। ইতি রত্ত্বমালা॥

त्मीतः श्रुः ज्मारिम् विद्याता ।

त्माउन्हें जिल्ला साम्या। यः भन्नस्मान्या भोनाः मामलाः स्नामिनः
विषुः। जम्न्यमाग्रजमा माठवाः
त्मान्यक मही। हेजि मायज्वः॥
जमा नक्षाः भन्मार्मालनः गजाः।
जम्मान्याः भन्मार्मालनः गजाः।
जम्मान्याः अन्यार्मालनः गजाः।
जम्मान्याः अन्यार्मालनः भनाः।
विकीर्विजाः॥ हेजि मिजाक्षना ॥
त्मीनः भूः खी ह्जा॥ किन्नीहः॥
मायज्ञान्याः। हेजामनः॥ मखकः।
हेजि ह्महन्दः॥

মৌলিঃ পু• অশোকবৃক্ষ: 1 ইভি মেদিনী !।

मोलः जी ज्ञिः। इंडि मिनी।। भोलिकः भू ज्लीनिकः। यथा রাটীয় বারেন্দু ব্রাহ্মণস্য শুোভিযঃ ख्या कायञ्चमा भोनिकः। **अ**व॰ দাক্ষিণাত্য বৈদিক ব্ৰাহ্মণস্য অ-ন্যপূর্বাপরিনেতাপি তৎপদবাচ্যঃ ।। বঙ্গু কা যস্থ সচ মধ্যন্য শব্দ वाह्यः। यथा। अथ नथ्याः वक्ष মাহ। নধ্যন্য শব্দে। ক্ত ইত্যন্য:। फिय छिविष्यव । नश्रनाः अवान ধ্যন্থ স্থানস্য বিশ্যেক্ল নিত্য र्थः । मध्रम् नम्भागः नक्षाख्रः । হলানে হর সিদ্ধা বংশ জাতকত্ত্ব সতি দশপুৰুষ বধি খনবছিল **জ** काईनद्वः मथानाद्वः। त्र ह विविश्वः। সিদ্ধ: সাধ্যক্ষ । সিদ্ধর্ পুকৃত মধ্যন্তব্ব । পুকৃত সিদ্ধবংশজা-**ত**ে সতি দশপুক্ষাবধি **क्**ला-র্চকত্ব সিদ্ধত্ব। সিদ্ধপদাকাদ্ধিত্বে गिक म्माशृक्याव**धि अवा**ईकद्व লাধ্যত্ব•। অন্য পুন•শা নাহ। व्यनीन व्यवत्रकार्थः दिवारम्यू भी-भाग्या। এ:उदाः छन भामिुडा নধ্যন্যঃ হল মূভ্য• 11 ইতি **হ**ল-धीतिका ॥ 🗱 ॥ मिक्निवनाणीयकाः

यञ् महाडे मत्योगिका यथा। लोख-ঙৌ কীর্ত্তিমন্ত শির বস্তি কৃতা भोनिका (य हि जिस्ता (उपछा: (त्र-ন দাসা: কর শুহ সহিতা: পালি-जा: ति'रू (एवा:) (य वा शर्गांडि মুখ্যা: স্থিতি বিন্যযুষ: সপ্ততি স্তে दि প्रवास्त्रा वीका बाळा ठ-রণ গুণ্যুতা মৌলিকত্ত্বেন সাধ্যা: ॥ অপিচ। সেনো দত্তঃ করে। জেবো मारमा (मर्वः भुजिष्ठिज:। शानिज: নি হ ধর্মজ্ঞে। গুহ: সন্মৌলিকা: মৃতা:।। 🕸 ।। দ্বিসপ্ততি সাধ্যমৌ-লিকা যথা। হোড: স্বর প্র প্রণী বাণ আইচ **সোন: পই সুর সাম:।** ज्ञा वित्नत छह वन लायः नर्या वर्मा इरे ভূरे हन्मुः ॥ क्ष्मा त्रकिङ রাজাদিত্যে বিষ্ণু নাগ: খিল পিল ग्ठः। इत्त्रा छक्षः भारता छन् अम म्ठाक्तुत्र वक्तुत्र वाथः । नाहे (ई(ना **মানো গণ্ডো রাহ্য রাণা রাহ্ত সা-**ना। पारु। पाना गण উপनाना। · थामः (काया घत्र रेव ७वः वीर ত্তেজ শ্চাণৰ আশ:। শক্তি ভূতো वुष्का नानः (क्ष्टन्या एक्सा वर्षन রঙ্গ:। গুইঃ কীত্তি যশঃ স্বণ্ডো নন্দ্রী শীলো ধনুর্গণঃ। ইতি দ্বিসপ্ত থে। **विकाः॥ #॥ व्यन्तरहः। ५२८५। ज्**रस्य

क्रकां ेंध्र मन्न थःश माम हैं भानसीमः (मत्ना प्रखः मृपखा म-িহিত জন চয়ঃ পালিতো ধর্মপালঃ । **বি হ: বি হপুতাপ:** ক্ষিতি বি क्त क्त्रा मान मकः क्त्रा श्रमो গ্রোডেপ্টো সংস্থিতা তে ওণগণ নি भूगा भोनिकद्वन मिकाः॥ 🛎 ॥ হোড বাণ ধরণী খিল সোনা ভুঞ विन्त धर दाज दाए जाः। कर् भा ল বেল সাম রিফিড। লোধ শম্ম खूँिय वर्षा वद्यादाः ॥ वन्तु नायि গুৰি ভদু পৈসুর। গণ্ড গুপ্ত ঘর কীৰ্ত্তি বৰ্দ্ধনা:।কেন হেন গণ নাথ विकरता वुक्त ब्रक्त शिल एई धर्कः भाः ॥ তেজো श्र्व यत ध्रायिष्ठ শক্তি ভূতা: কোনৌষ শান বিদ भीव यरभाग नन्ती। पाक्षाकृदा-नु भुज इश्व मताशमाना मानाभ **ग्**ত বিদিতা ভূবি কীর্ত্তিনন্ত: ॥ হে- 🛚 সাদিত্যো রাণ রাহা সানাচ খা-মক স্তথা। দ্বিসপ্ততি মিতা: সাধ্যা মৌলিকা বিদিতা: ক্লিতৌ।। ইতি ब्लाठार्य्यकातिकः । #॥ म्लन्यः স্ধিনি মৌলুস্ম্রিনিচ তি ॥ ाविक क्षित्र । यथा। शक्ता

যা মৌষল সান মহাপাতক না

শন। ইতি পুাৰ্শ্চিত্ততত্ত্বতভ

विवाज्यां हिन्नः ॥ सहाजात्रज्ञः नाडोप्तम्भवं छर्गज्ञ विद्यान्यः ।
यथा। भोषणः भवं हि। प्रिष्ठेः ज्ञाः
व्यात्रः मृपाक्षः । सहाज्यानिकः
भवं चर्गाद्राह् निकः ज्ञः ॥ इजि
सहाजात्र ज्ञाप्तिभवं ॥ म्य्लमः
चित्रं वि॥

নৌষ্ঠা জ্ঞী মৃষ্টিপুহরণকীডা। ইত্যমর:। মৃষ্টিপুহরণ অস্যাণ কীডাযাণনোষ্ঠা ফ: ণিত্তেবি রিতি বৃদ্ধি:
যযোলেপি ইতি ইকারলোপ:।
জিযামত ইত্যাপ। ইতি তড়ীকাযাণভরত:।।

মৌহ্র্ত:) পু॰ জ্যোভির্বেত্তা। নাহ্রিক:) ইত্যমর: ॥

। অভ্যাসে। ইতি কবিকল্পদ্ম: ॥ অভ্যাস: পৌন:প্ন্যেনানুশীলন । ননতি সন্ধ্যা বান্ধন:। ইতি দুর্গা দাস:॥

मूर यम ७ (कारि। ইতি कितिक न्नकरः।। (त्रक्यूकः। (कार क्नी कत्राः।। त्रक्यूकः। (कार क्नी कत्राः। म मूर्या य मुरा ७ मुरु (ठ
काननः रही। ইতি पूर्णारामः॥
मूरिमा भू मृर्जा। मृरू कारिमन्
भू ठुऽयन निय्नमः॥
मुरिष्ठः वि অভিশ্यमृर्। मृरू करारिष्ठभु जुऽयन निय्नमः॥

CHE

अनीयान् वि वि वि विश्वसम् । मृद्भवातीयम् भुज्ययन निम्नमः ॥
अक् क मुक्कारा ॥ (स्वरुद्धादिः । सु
कि विकन्नक्रमः ॥ (स्वरुद्धादिः । सु
करा मुद्यम् पुद्याद्धाद्या (साक्षनः ।
क मुक्कयि च् एउनामः (लाकः ।
है जि मुर्गामानः ॥

मुक्क मः घाउ। इंडि किविक्सक्रमः ॥
त्रिक्युकः हिः । मुक्कि अयमा मः
क्रिवाकः । इंडि हुर्गाहामः ॥
मुक्कः भुः यत्रायग्रमः । इंडि विकाश्रामयः ॥ मुक्काकः ॥

मुक्तन क्री रेडन । इंडि स्मिन्नः ॥
द्वाप्तर प्राप्त द्वाप्त का निक्त । इंडि मुक्त
थाउ। डांद २नि भुडारयन निग्रम ॥

मुाठन क्षी किवडी मूखक । ইভি भद्रुका॥

मुह छ देव गठाः। ইতি कविकन्न क्यः॥ छ प्याहिद्या पाळ्या देव व्यः मुह्द व्यायाहीद। ইতি मूर्गामात्रः॥ मुह्द व्यायाहीद। ইতি मूर्गामात्रः॥ छ मुह्द्वा गुङ्गा। ইতি मूर्गामात्रः॥ एहे व्य छेन्नारम। हेठि कविकन्नक्रयः ॥ व्य व्यायाहेद। प्युहेटि व्याकः॥ छेनामुठी गुर्थः। ইতि मूर्गामाना। पुष प जैमारि। देखिकिति । क्षेत्र विश्व वि

ন্নক• ক্লী চোরিত•। যথা। চোরিত• মূবিত• ন্নক• পুতীতস্ত পুতীছিত্ত•। ইতি ভ্রিপুযোগ:॥

মান ত্রি মলিন। যথা। মলিন কছর মান কমল কমল কমলি নলীম সং ।
ইতি হেনচন্দু: ।।

মানি: দ্রী কান্তিক্ষয়:। ইতি মুধা-তো র্ভাবে জি পুত্যবেন নিয়ন।। মিষ্ট ক্লী অস্পাইবাক্য:। তৎপর্য্যা-য:। অবিস্পাই ২ ৷ ইত্যনর:।। মিষ্ট: ব্রি অব্যক্তবাক্।। ম্লান: । ইতি মেদিনী।।

মুচ উ ইর গভ্যা°। ইতি কবিকল্প-ক্রম: ॥ উ মোচিত্বা মুক্ত্বা । ইর অমুচৎ অমোচীৎ । ইতি দুর্গা-দাস: ॥

्र उड़े हिंचा पूर्शा जातकार्यद्वाप-वाक माद्यां । उथा हा महा । ज्य हिंडे विश्व हिंचे हिंचे । हिंचे वाका-याः वाहि देखि भाष्ट्रः । उब ब्रमा-नाथ खाहि हिंचे हुँ वं किः वपकी छः र्थः । जावाका वाहि भारि व्यट-मिंडायाः वाही छार्थः ।। उट माप्-भाग मंडावका छप्तमाद्वः छप्तन् ।। जाभाग छा विद्यादक मक्याः यहे भूकी विंडाः । देखि जायावहत्वन नाका रुभा मंडा श्रिका क्रमा इच्चान् थानाय ह्या प्रशाक मुपा इच्चान् । देखि पूर्णा पाता ।।

িছ॰ লী হিজুল॰। ইতি রাজনি-র্ঘটঃ।।

हाः भू किता उभवत भू लिम्सा हिका ि । इंडा मतः ॥ भागत उन्ह ।
॥ भाभत कः ॥ जभ जाव १ । इंडि
स्मिती ॥ स्मृहा हो ना । भर्व वर्म तः ।
हिंडा मूक इति व । भगत छा ।
भागत का । स्मृ का वा । स्मृ का ना ।
हिंदा मूक हिंदा वा । स्मृ का ना ।
हिंदा मूक हिंदा वा । स्मृ का ना ।
हिंदा मूक हिंदा वा । स्मृ का ना ।
हिंदा मा स्मृ वा हिंदा । दि । स्मा दा ।
हिंदा भा मा स्मृ वा हिंदा । दि । सा दा ।
हिंदा मा सुन वा हिंदा । दि । सा दा ।
हिंदा सा सुन वा हिंदा । दि । सा दा ।

বষট্কারা: কৃতা স্তেন মহাত্মমা।। শকা জবন কাখোজা: পারদাঃ পার-वा ख्या । कालिमभाः गमहिया मार्जा (कालाः जल्ब्रलाः ॥ दणिष्ठ वहनामुाकन् नगः त्र । महाजाना শকানা শকদেশোন্ডবানা ক্ষত্রি-অত্র জবন শব্দ স্তদ্দেশেক্তিব বাচী চবৰ্গ ভূভীয়াদিঃ। জবনো দেশ বেগি নো রিতি ত্রিকাণ্ডশেষাভিধান দর্শ-নাৎ ৷৷ 🟶 ৷৷ ভেষা ৷ শ্লেছত্ব মপুত্তক বিষ্ণুপুরাণে। তথা কৃতান্ জবনাদী-नृशकना (उठावाधर्म भविज्यागाए ল্লেছত্ব যযু রিভি। বৌধাযন:। গো-भाभ थामरका यक विक्क वर् ভাষতে। সর্বাচার বিহীনশ্চ শ্লেন্ত ইত্যভিধীয়তে॥ ইতি প্ৰায়শ্চিত্তত-जु॰ ॥ 🗱 ॥ जिभिष्ठ । (प्रवेशान्तर्भा॰ ययात्र हो भूषी यमुः जृद्यमूण्डा শর্মিষ্টাযাণ এবঃ পুলা: জহ্য: অনুঃ পুৰুণ্চ। তত্ৰ যদু পুভূত্য শচ্বার: পিতৃ রাজ্ঞাহেলন কৃতবম্ভ: পিত্রা শপ্তা:। জ্যেষ্ঠপুত্র যদ্ শশাপ তব বংশে রাজা চক্রবন্তী মাভূদিতি । তুর্সু (कश्नून भणाल युद्याक॰ वः भाग (वस्वाक्या (सहा ভविषाष्टि । ইতি 🗐 ভাগবতমত: 🛚 🛊 🗓 অন্য

। শক্ত জবন কাষ্ট্রেজ পার্দ পত্নবা **हन्याना छ**९ अन खबर विषिष्ठः শরণ যযু:। অপৈতান্বশিঙো জी वस्टकान् क् द्वा नगद्रमाह् । वट्न द भान (मिंड की वम् उरेक व्रम्म তৈ:। এতে চ নগৈব দ্বং পুতিজ্ঞা भाननाय निष्ठय्या विष्ठमञ्र भित ত্যাগ কারিতা:। স তথেতি তদ্ গুকু বচন মভিনন্ধ্য তেষাং বেশা: ন্যন্ত্র নকারয়ং। জবনামুণ্ডিত শি রসো १क মুণ্ডা করে। পুলৰ-किणान् भावमान्। भश्वाः क भा-শু,রামি অব্যাদ ব্যট্কারানেতান ন্যা॰ চ্চ ক্তিয়া॰ স্চকার। ভেচাক্স ধ্যা পরিভ্যাগাদ্ধাদ্ধণেশ্চ পরিভ্য ক্তা স্লেছ হা॰ হয়ঃ। ইতি বিষ্ণপুরাণে ৪ অংশ ৩ অধ্যায়: ॥ 🗱 ॥ পুকা রাম্বরেণ তদ্যোৎপত্তি র্যথা। সূত উবাচ। বংশে স্বাধান্ত্রবৈ স্থাসীদঙ্গে। ৰান পুলাপতিঃ। নৃত্যিন্ত দুহিতা তেন পরিণাভাতিবৃদ্ধী॥ সূতীথা নাম ভদ্যান্ত বেণো নাম সুতঃ পুরা । व्यवगं निवजः कानी वनवान् वजुः थाविषः॥ भारतः २ १ प्रवर्गक्काः एः भा नार्याभहाबकः । ध्याठात পুনিজ্ঞ লগতে৷ ২স্য নহৰিভি: ।। अनुसीरका १ शि न एरेन नुद्धाः स

यमा ७७:। भारभन महिरिद्वन मता जक जगापि जाः ॥ भगश वार् क्षा उम्र वलाएए भवन्याः। তৎকাযামথ্যনানাত্ত নিয়েত লে-ছজাত্য:।। শরীরে নাভুর শেন क्षाक्षन সमभू गः। इंडि गेर-इ जाया जाम निरम्पा दथा। न गाउरपिष्ठिकाछिः कलानि वे कः লেন তু। ন স্লোধাণ শিক্ষেত্র ना करवह भरा जन ।। इंछि कीर्ब्या উপরিভাগে ১৫ অব্যায: ॥ ₩ ॥ তস্য মধ্যনাতান্সীগতি হথা। হ স্তাশ্চ ত্র্বাশ্চ শ্রা মেলাশ্চ গহিতাঃ। সিংহা ব্যাহ্যা বরাহাশ্চ নধ্যনা ভানসীগভি: ॥ ইতি নান-व :२ अधायः ॥

মেছকন্দঃ ত্রি লাশুন্ । ইতি রাজ-নিঘণটঃ।।

सहकातिः वि शामाः स्थानक वर्षः
विश्वा काम क वर्षणा विद्या काम क वर्षणा विद्या र स्था वि
विश्वा काम क वर्षणा विद्या र स्था वि
विश्वा काम क वर्षणा विद्या । केवि विद्या विद्या काम विद्या काम

অন্যন্ত ঠ পৌণ্ডকা শ্চৌডু দুবিতা कार्ख्यका जवनाः सकाः। भात्रहाः भञ्ज्ञ वा भीवाः किताला प्रत्रहाः খশা:।। মুখ বাহ্ত পজ্জানা বা লোকে জাতথো বহিঃ। স্লেগুবাচ শ্চার্থ্যবাচঃ সর্বেতে দস্যবং মৃতা: ॥ इंजि नानत्व २० व्यव्यायः ॥ सुहारमाः भू ठाजूबर्वत्रवञ्चारितः-**हिउङ्गनः। उ**्भर्ग्रायः। পূত্रहः ২। ইত্যনর:।। ভারতব্যস্যন্ত পুতিগঃ পুত্যন্তঃ। মেছ্যতি শিষ্ঠা-চার হীনো ভবত্যক্র স্লেছ: অল্। স-চাभो (मण: कि सहस्म:। कि ত্বা নেন্ত্ৰন্তি অসংস্কৃত• বদ**ন্তি শি**-ষ্টাচার হীনা ভবর্ম্ভাতি বা পচাদ্য-নি শ্লেছা নীচ জাত্যঃ তেষা দেশো ল্লেছদেশ:। ভারতবর্ষস্যান্ত: শি-ষ্টাচার রহিত: কামৰূপ বহু।দি:। উক্ঞ। চাত্রণ্য ব্যবস্থান যথিন্ (राष्ट्र न विष्टुर । श्लिष्ट्र एषः मवि জ্ঞেৰ আৰ্য্যাৰ্ব্ত স্ততঃ পব্ন মিতি। ইতি ভরত:॥

মেছভোজন• গ্রী বাবকঃ। ইতি শব্-

नद्वास्त्री क्ष्णाः । **इंडि** विकासमाः १९०० व्याप्**नः । इंडि**

ভিৰণ্ডন সা এ, গৰা। ইতি

ছে মচন্দু:।।

মেছমুথ ক্লী ভারু। ইভ্যমর:।।

মেছাশ: পৃ মেছভোজন:।গোধ্ন:

। ইতি কেচিৎ ।।

(महात्र) ही **जाम्। इंजि हाता** वनी।।

শ্লেছিত জী শ্লেছভাষা। অপশ্দ:। তৎপর্য্যান:। পরভাষা ২। ইতি হারাবলী॥

(सर्वे व उचारि। इंडिकिविक्सुक्रमः

। व व्यक्तिहें । स्त्रेडि लाकः

उचार्वे डेब्र्यार्थः। इंडिर्व्यार्गानाः॥

स्र व उचारि। इंडिकिविक्सुक्रमः

।। व व्यक्तिस्प्रद्याः स्वर्डि। उचा
रेडिव्यं । इंडिर्व्यार्गानाः॥

स्त्र व व उपार्वे । इंडिकिविक्सुक्रमः॥ व व्यक्तिस्त्रद्याः । इंडिक्विक्सुक्रमः॥ व व्यक्तिस्त्रद्याः । इंडिर्व्यार्गाः॥

हेडिर्व्यारामः॥

ন্ন কান্তিস**ংক্ষ**যে। ই**তি কবিকল্প-**জন: ॥ স্লায**িত চল্দ্যে দিবসে ।** ইতি দুর্গাদাস:॥

घ

য অন্তঃ স্থার:। সচ ষ জ্বিংশ হলবর্ণ:। অবিগ্রান্তারণ জান- তাল্:।
তস্য স্বৰূপণ যথা। যকারণ শ্ণু
চার্লি চতুয়োণ ম্যণ স্বা। প্

लालध्म महाण स्वरं भन्न हरः
छली।। भक्षभाग नयः वर्गः भक्षः
(मव नयः महा। जिण्णकि महिङः
वर्गः जिविनम् महिङः छथा।। भूगः
नामि महा वर्गः मृर्जिमस्माक नः
वर्गः। इिंड कामस्मृ छल्ज ६ भिः
लः।। उम्र (लश्चन भूकाता यथा।
छक्षः सः क्रम्या (तथा हज्सागः
नयी णूडा। नातायत णविश्यसम्
डिक्षंडि निड्याः।। माडा क्रस्तिः
नी (द्ध्या श्रान नम्र भूहक्षातः।।
इेंड वर्गाक्षात्र उद्धः।।

यः भूः वागः॥ यणः॥ यागः॥ यानः॥ याजा। इजि भवत्रज्ञावली ॥ अर्द्वनाम। यम्भवार्थ इजि याद । इजि विषः॥

যক: ত্রি য:। যে ইতি ভাষা। যদ্ শব্দা টেরত্বে টে: পূর্ব অকাগ নেন নিম্লম:।।

चक् ली क्राक्रमंकित जात हमा म च छ । उ थ भ र्यायः। का न च छ । २। इ उ अ तः।। का न च छ । ० का न व । ८। का न क । ६ जि हम ह न पुः।। क त -छ । ७ म हा ना पुः १। इ जि त ज मः ।। १।। ज थ म ती ता त र व ति ए म म म च क उ : इ क म मा ह । च (था म कि न -छ का नि क म सा म र क उ : हि जि : । जबु तक्षक निष्ठमा स्रान्थ यंकृत् वारु । क्षीरागयमा एर्डापि में खंग् प्रान्थ । क्षीरागयमा एर्डापि में खंग् प्रान्थ । क्षीरागयमा एर्डापि में खंग पक्षागयमा किस स्रिज स्रिज स्रा ज्या वाम पिक्षण भार्ष्याः क्षा व्या पक्षाण किकिट मा । क्षे रिटापि होः कियाः मर्दा यक्षा विद्या क्षित वाद ज्या क्षित वाद विक्र मा क्षा क्ष्य क्षा क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य विद्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य विद्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य विद्य स्व क्ष्य क्ष्य

यक्राजिका छी उन्नभाविकाः इंडि भक्तिम्यका ॥ यक्षित्री भू॰ (द्राह्डिकवृक्षः। यथः । श्लीहरम्। ना॰ मन्नता यक्रेष्ट्रीः व्यह्मः। इंडि भक्तिम्यका ॥ यह्म जि मानकर्खा। उभद्रमकर्खा। मानथार्डा र्यम्थार्डाण्ड मञ्भुड्ऽ (यन निम्नमः॥

যজ ঐ ঞ ও দেবার্নানসঙ্গতী
। ইতি কবিকল্পদন: ॥ সঙ্গস্কৃ
তিঃ সঙ্গকৃতিঃ ঐ ইজ্যাৎ । এ
যজতি যজতে বিষ্ণু দুবী:। পূজ্য
ভীত্যর্থঃ। পশ্ন। কদু মজক পশু
ক্রোয় দদা গীত্যর্থঃ। যজতি সন্ত

সন দিল্লী সহ সকং করোতীত্যর্থ:

। ক্রিট্রা ইতি দুর্গাদাস: ॥

নাত্তঃ পুং কাদিক। যথা। ভূমৃ দৃশি

যজিপরি পচ্যমি ভানি হর্য্যভ্যো

হতে । দশভ্যো হতচ্ স্যাৎ ।

ইতি নিক্ষান্থ কৌমুদী।।

মজতিঃ প্রাণঃ। যথা। যজতিষ্
ব্যক্তিক সর্ব্যানানুযাজেষু।ইতি
মলত সতজ্পতাশুতিঃ।।
ব্যক্তঃ প্র অগ্রিহোত্রী। ইত্যাদি
কাষঃ।।

यहान ही यागः। उख्यान्नगर्यहे कराष्ट्रगंड कर्यविष्णयः। यथा। অব্যাপন অধ্যয়ন যজন যাজন ভার। দান পুতিগৃহদৈব ব্রাহ্ম-ानामकशय्य ॥ इंडि मानत्रः 🕽 व्यवभागः । वामा लक्षणः यथा। পশু ক্রীরাজ্য পুরোডাশ সোমৌ-य दे हक भुज्ि ईविजि: थिनत भनामाध्य न्यापाष्ट्रपत भुक् िङ्किः अभिष्छिः मुक् मुर्ताम्थल भूषण स्टी**त थनिवयूशमाक मर्छ** ্ৰালা পাবিত্ৰ ভাজনাদিভি দু'-व्यान छरेन ब्झाक् स्थावश्यूर तु कानि छ अङ्गिणः काम्य रेनमिङि कानाः भ कारि भूईकानाः यथाक प्रश्मिनानाः ननाश्रनः यजनः। ইতি।

শুজিবিবেকগৃত দেবলবচন ।। বজন্ পু• বাগকর্জা। বজগাতোঃ শত্পুত্যবেন নিম্নমঃ।।

यञ्जन्नः भू॰ यागकर्ता। यञ्जभारा विद् পুত্যযেন নিম্নদঃ। ইতি সিদ্ধার্ত-কৌমুদী।।

यसमानः भृ अभूरत्रजारमञ्जा ७८ भर्यायः । तु शे २ यक्षा २ । ই छ। भद्रः॥ वुड्राप्तिखयः यज्ञभात्न। च-ধ্বরে যাগ বিষয়ে মম ইষ্ট সম্পা-मनाय यथार्थ कर्म इस इंडि अद्भि-ন্ধা নাদেশকো যাগৰামী বুড্যাদি-**मद्भव**य वाह्य इंड्युर्थः। वुड्यमगाङ्गिः नारिधाद्रगः विष्ठारा रुगा वुजी हैन् । यक्काल इंकि ज्ञि यक्षी। मानि यक्क মানঃ। স বুতী সোমপানবতি অ-थुरत यजमानः मन् नीक्कि उठारा व्यम् ज्ञाभू । भीक स्मी-(७)(ब्रागनमन व्यादियुक्तः ही-ক্ষাশব্দাদিতো বা। ইতি ভরত:।। यकाकः কি দানকর্ত্তা। ইত্যুণাদি-কোষঃ ॥

यक्कः भ् यद्वा। इज्रुगाहित्कायः ॥ यक्कः क्ली त्वहित्ययः। इज्रमदः॥ इक्ष्रत्ज श्राम्यक्ष्यः। यद्वि व्यक्षे रह्याई। हान मक्ष्र्वा। वामुनि-म इजि उम्। इजि छत्रजः॥ क्षा

व्यनिह। यबुद्राष्ट्र विभिनिः। त्यर्व वा यबुः नदः। लिख सक् नाम-ভিন্নে মন্ত্ৰজাতে তত্ত্ত বন্মন্ত্ৰজা-छ नुन्तिया भविष्ठ गानामि विष्ट्-প রহিত• তত্মজ্ রিভি। ইভি ভি• थ्राम्छिङ्गः॥ 🗱॥ यजूर्द्यम्मः युष् শীতি র্ভেদা ভবস্তি। তত্র চরকা না ম দাদশ ভেদা ভবস্তি। চরকা: ১ षाखद्रकाः २ कठाः ७ शुाह्यकठाः ८ কপিষ্ঠলকঠা: ৫ ঔপনন্যা: ৬ আ-श्रानकोः १ हात्रायगीयाः ৮ वात्राय-ণীযা: ১ বার্ভান্তবেয়া: ১**০ খেতাখ**া তরা: ১১ মৈত্রাযণীয়াক্ষেত্তি১২। ত-ত্র মৈত্রায়ণীয়া নাম সপ্তভেদা ভবস্তি । भानवाः > पृत्यु जाः २ टिक्याः ० वात्राहाः ८ हात्रिमुरवयाः ৫ मारामाः **৬ শ্যানায়নীয়াক্তেতি ৭। তে**ষান-ধ্যয়ন মঙ্কৌশত । যজু: সহসাণ্য ধীত্যশাখাপারো ভবতি। তান্যে ব দ্বিগুণান্যধীত্য পদপারো ভবতি ৷ ভান্যেব বিশুণান্যধীত্য ক্রমপারো ভবতি৷ বডকান্যধীত্য বডক বিজ্ঞ বতি। শিক্ষা কল্পোব্যাকরণ নিৰুক্ত• ভ্ন্দো জ্যোতিষ মিত্যঙ্কানি। তত্ৰ श्रारु प्रामी हुए। रेनर्स हुए। निर्स हुः । তত্র বাজসনেখা নাম সপ্তবিশ ভেদা ভৰঙি। कावालाः ১ ঔবৈবাঃ ২ কা-

शेः ७ माधानित्नाः ६ मृश्नीयाः ए ভাপাবনীযা: ७ काभूमा देशनी ७. वें नाः ৮ चाविकाः र्रे भागाविषे-काः >० भावानर्गाः >> देवस्याः >२ रेवरनयाः >० छ (चयाः >८ गानवाः २० रेवबवाः २५ काउप्रायनीयारक्रि २१। পुं जिभम मनुभमः ছामरा ভाষा धार्या भीभा ना नजा उक इंज्ज़िशा-ব্যানি ভবস্তি। উপজ্যোতিষণ ১ সা-*ক্ষকণ ২* পুতিজ্ঞা ৩ অনুবাক্য ৪ পরিসংখ্যা ৫ চরণবৃত্ত ৬ শাজকলঃ १ भुवदाधायण ৮ माञ्च २ कज्ः २० नःथा १२ अन्गमः १२ यक्तः १० পাশ্বান: ১৪ ছোত্রকণ ১৫ পাশব: ১৬ উক্থানি ১৭ क्यंनकन १४ इंडा ষ্টাদশপরিশিষ্টানি। ছে সহস্তে শ-তে ন্যনে নম্বে বাজসনেথকে। ইতু ১-ক্ত• পরিসংখ্যাত মেতৎ সকল• স শুক্রিয়ণ।। গুস্থাণ্ট পরিসংখ্যাত। वाकानक हजूर्यन । जानावात्रज्ञ (वनाष्ठः वुक्त व्याकृष्ठि भूबंकः ॥ (वन-মধ্যায় এতেষা ছোমান্তে তু সমা-त्रर**ड्यं।** ७७ टिब्बितीयका नाम बि ভেদ। ভবন্তি। ঔখ্যাঃ থাণ্ডিকেযা-শ্চেতি। তত্র খাণ্ডিকেয়া নান পঞ্ছ ভেদা ভবান্ত। আগত্তী ১ বোধা-যুনী ২ সভ্যাষাত্তী ৩ হিরণ্যকৌষী ৪

ভিৰে ্চতি ৫। তব কঠানান্ত্ৰপ পাৰ্শ 🔭 । চত্শ্চ হারিণশত্য भगुष्टा 💎 🦪 दनरया र्वन 🖫 छनः यञ्ज भार्रेऽरु । यङ्क्तर्वनः न वि জ্ঞেয়ে খনে; শাখান্তরা: মৃতা:॥ খুজুরেনিস্ত ধন্রেদি উপবেদঃ। य জরেদস্য ভারদাল গোত্র । কুদু रेस्व ५,५१ रेडिड छ इन्तः। यजूर्बनः क्षः। दीर्घः। क्षाणी। जामुवर्गः। काक्षमनयनः। जाति छ दर्गः वर्णन । ক্ষঞ্জর ব্রিনাবঃ। অস্য ধ্যানং। ব-🖙 🔞 ে 😝 ষ্ট্রভ• ভাম্বর্ণ• ভার-ভ জালত ব**াহ• কৃশাঙ্গ । যজুৱে**। नः मोध बारिडादर्गः काशानीनः শक्काब 🗒 माजः ॥ य इमः रेमवङः कणः अक्षान्यानः **इत्तरावर्गः वर्ग-**্ৰত স্থ বিদ্যা**ণ লভতে স** বিদ্যা**ণ**॥ या अधिक विश्व विष्य विश्व विष्य विषय ^{ভারতির} জন্মনিবেদধারে। ভব ্ড। গ্রুডোবুতী ভবতি। অপুষ-া প্রতে ভবতি। অবুন্ধচারী ্ষচারী ভবতি। জাতিময়ো জা-. মতে: ইভি চরণব্।হ• ॥ ুর্বেদঃ 🦠 বেদবিশেষঃ। ভস্যা-विभक्ति यंगा । यापुता विभक्ति जी विः भारतः : अ जः। यजःत्रा ं **मिला ५**थर्वत्वस्ता।

ह् ॥ इंडि (ब्रांडिय॰॥ चन्र) यङा रिवनन्भायनः। म जू बाहारवक वः वानी । यथा । याप्त मावकः रिनन बगुार न मराम्निः।यज्र्विः দ পুৰক্তার বৈশস্পায়ন মেব চা জৈনিনি সামবেদস্য শাবক সো २१ नम् । তথৈবাথ র্ববেদ স্যু-মন্ত মৃবি সত্তমণ ॥ এক আসীত্ম-कुर्वित खक्ष रूर्व। वाक्सग्र । ठाज्-হোত্র মভ্দিমি তেন যক্ত মথা-করোৎ ॥ অধুর্যব॰ যজুর্ভি স্যাদৃগ্রি र्शाब दिखालगाः। डेग्नाब मान মভি শুকে বুন্ধবৃঞ্চাপ্যথৰ্নভি:।। ততঃ স খাচ উজ্ভ্য খাণ্বেদ• ক্ত-वान् शृङ्ः। यज्ः वि ह यज् दिनः ना-মবেদঞ্চ সামভিঃ ॥ এ হবি শতি ख्रिन अश्वर कृ उवान् भूता । শাখানান্ত শতেনাথ যজুর্বেদ ম-थाकरतार ॥ मागरवरः महरम्प শাখানাঞ্চ বিভেদতঃ। অথৱাণ माथा (वपः विष्यम नवाकन जू। ইতি কৌর্ম্যে ৪৯ অধ্যায:॥

যজ্ঞ: পু॰ ইজ্যতে হবিদী যতেৎত্র।
তৎপর্য্যায়: । সব: ২ অধুর: ৩
যাগাঃ ৪ সপ্ত তন্ত্র: ৫ নথা: ৬ ক্রতু: ৭।
ইত্যনর: ।। ইপ্তি: ৮ইপ্ত: ৯ বিতান•
১০ নন্য: ১১ আহব: ১২ সবন• ১৩

इवः ३८ गिंजियदः ३৫ (हामः १५ হ্বন ১৭ মহঃ ১৮। ইতি শব্রত্ন। वनी।। म जिविषः। माजिका बाज সিক স্তামসিকশ্চ। সাত্ত্বিক্যজ্ঞো 'यथा। चफनाकाङ्कि जि र्याञ्चा वि-विन्रक्षे। य ইक्षाउँ । यक्षेत्र भारति मनः ममावाय **म मा**ज्विकः ॥ द्राज-সিক্যজ্ঞে। যথা । অভিসন্ধায় তু क्ल म्यार्थ मिल हित यट । इ জ্যতে ভরতশ্রেষ্ঠ ত॰ যক্ত॰ বিদ্ধি রাজসা। ভাষসিক্যজ্ঞো যথা। विधिशीन मम्श्रीमः मखशीन मन-ক্ষিণ । শুদ্ধা বিরহিত যজ্ঞ তা মস॰ পরিচক্ষতে।। ইতি শ্রীভগ-वज्ञी जाया॰ ১१ व्यव्यायः ॥ 🗱 ॥ नह नानाविधः। यथा। मुव्ययका उर्ला-यका यागयका ख्या भारत । सा-श्राय ज्ञानयञ्चान्छ यजयः नः निज বুতা: 11 ইতি শ্রীভগবদ্গীতাযা• ৪ व्यथायः ॥ # ॥ शक्षयञ्जा यथा। অধ্যাপন• বুন্ধযক্তঃ পিত্যজ্ঞ ত র্পণ•। হোমে। দৈবে। বলি ভৌতে। ক্ডে ১১৫ অখ্যায়ঃ।। #।। তস্যেৎ-পত্তি যঁথা। খাষন উচুঃ। কথং যজ্ঞ । रुन्। (मर्ट्। यञ्जव नाथवान्। ः अञ्च मगमन् लू वा बदा हम। कथः

বঁবঃ ॥ তলো ২৮, শোদ্ধসাণানা। कथरम भहामछ । भिनानः खिर हे-वाह। मृग्धु हिंक मार्म् ना यट म्-ষ্টোহ• মহাজুত•। যজেষু দেবা ন্তি-ষ্ঠন্তি যজ্ঞে সর্ব: পুতিষ্ঠিত: ॥ যজ্ঞেন ধ্বিযতে পৃথী যজ্ঞ স্তারয়তি পূজা:। অনেন ভ্তা জীবন্তি পর্যাদ্র সং स्रुवः ॥ भर्यः(ग्रा काय्र विकास সর্ব যজ্জনয় ততঃ। স বজ্জো হভূদ बारमा कागां मञ्ज विमान्निजां ।। यथारु॰ कथरय जन्नः मृतस्त्रविरुजा দ্বিজা:। বিদারিতে বরাহস্য কাথে ভর্গেণ তৎক্ষণাৎ।। বুন্ধ বিষ্ণু শিবা (एवा: मरिवम्ठ भूगरेष: मरु। निन्ऽ-র্জলাৎ সমৃদ্ত্য তৎ শরীর নভঃ পুতি ।। তদিভেজ: শরীরন্তে বিকো শ্চক্রেণ খণ্ডশং। তস্যাঙ্গ সন্ধ্রে। यक्डा जाजा एउ रि भृथक् भृथक्।। যমান্দ্রমাচ যে যক্তা স্তৎ শৃনুদ্ভ মহ-ৰ্যঃ। ভু নাস। সন্ধিনা জাভো জ্যো-তিষ্টোনো মহাধুর: 11 হন্ শুবণ সং क्ष्यास विश्वास्य विष्ठारमा विष्ठारम् । हकः ৰ্জবোঃ সন্ধিনাতু ব্ৰাত্যপ্তোমো ব্যজা-যত ৷৷ রাজঃ পৌনর্ভবষ্টোম স্তস্য পোত্রোষ্ঠ সন্ধিনা। বৃদ্ধীেম বৃহ্টো। ো জিস্থানুলাদ্যজাত্ত ৷৷ অতি-द्रावः मरेवदां व मत्या किन्ता वृज्ञानः

ज्रा जीवा भन• तुक्षगळः निव्यः ॥ कुछ उन्नर्भा शामा रेनरवा विव ভৌতো ন্যজ্যে ২তিথিপুজন। স্থা-ন তপ্ন পর্য্যন্ত নিত্যবক্তাশ্চ স র্বশ:।। কণ্ঠ সদ্ধে: সমূৎপদ্ম। জিস্থা-**ं छ।** विषय खथा। वाजित्मार्था महाः (मार्क्ष्वव्रतमध् खरेषव हा। भागिहिः नाः कता (य श्रात) (उ जाउा: भारमिक्त-**७:। त्राष्ट्रम्**या २५ कादीया वा क्राभग खरेषव ह ॥ मृक्षमाक्षी मनूष-পরা গুহযক্তা তথেব চ। পুতিষ্ঠোৎ-ञर्ग बळाण्ड मान गानाम्य ख्या॥ **জ্ৎস্ক্ষিতঃ সমূ**ৎপ্রয়াঃ সাবিত্রী **ব**-জ্ঞ এব চ। সর্বেষাণ সাধকা যক্তাঃ প্রাযশ্চিত্তকরাশ্চ যে।। তেমেটু সন্ধি-(ठा काठा यञ्जा अम्। महाज्ञनः। त्रकः भयः मर्भभयः मर्दे रिक्षवा ভि চারিক।। গোনেধো বৃক্ষজাপত খু-রেভ্যে হুভবন্ধিনে। নামেপ্তি: পর। মেষ্ট্রিচ গীয়্বতি র্ভোগ সম্ভব:॥ वाङ्वमस्त्री मः ङा छ। यश्रिष्टीम् স্তথৈৰ চ। নৈমি ত্তিকাশ্চ যে,যক্তাঃ मःकान्द्राहि भूकीर्खिजाः॥ नात्र्न मस्त्रो (उ का जा खथा दार में वार्षिक॰ । जीर्थभुरयाग मामोज यज्ः मक्तर्यः ়ণ স্তথ্যা: আৰু নাথৰ্বণঞ্চৈব নাভি-

यक्तः भक्षमार्गाजियाबनः ॥ निक् স·স্থান হৈর**ৼ** যজ্ঞা জাতাশ্চ জানু-नि। এरमञ्जाधिक बाउ महमु हि-লসত্তমা: ॥ যজানা সতত লোকা থৈ ভাব্যন্তে ২ধুনাপি চ। সু,গস্যপো-ত্রাৎ সংজাতা নাসিকাযাঃ সুবো १ जब्दा पाना मुक् मुद्र (जना (य ভে জাতা: পোত্র নাসবো:। গুীবা ভাগেন তস্যা ভূৎ প্ৰাশ্বংশা মূনি जखगाः॥ इष्टे। পূर्खः यङ्ग र्थागा जा-তা: শুবণরন্ধুত:। দণ্ট্রাভ্যে হভ-বন্ যুপা: হশা রোমাণি চাভবন্।। উন্গাতা চ তথাধুযুৰ্গ হোতা সমিধ এব চ। অগু ए किन वामाक भन्हार भारिष् मञ्जाः ॥ भूरताजामाः সচরবো জাতা মস্তিয় সঞ্বাৎ। কষ্ৰ্নেত্ৰযুগাজ্জাতা যজ্ঞকেতু স্তথা খুরাৎ। মধ্যভাগো ভবদ্বেদী মে-ঢ়াৎ হুণ্ড মজাযত।। রেতো থারা खरेषवाकाः चत्रामखाः मगूप्तठाः। यकानगः পृष्ठजाबाद क्रशमाद यक्ड এব চ ॥ তদাত্ম। यक्क পুৰুষো নুজা: कक्षा সমৃদ্ধতা:। এব যাব-ন্তি যক্তানা ভাণ্ডানিচ হ্বী বিচ ।। তানি যক্তবরাহস্য শরীরাদে गायः मनूत्र जाः। वाहा ८ वर्षः । क्व 📑 तः यक्क जानगारः ॥ यक्क वाल ग

কল মাপ্যাযিতৃ মিদ॰ জগৎ। এব॰ " বিধায় যজ্ঞন্ত বুন্ধ বিষ্ণু নহেশ্বরা:॥ भृत्वः कनकः (वात्र मास्मर् यंज्ञ ७**८** পরা: ৷ তত তেখা শরীরাণি পি-खीक् हा भ्वक् भ्वक्।। बिरम्वा ज्ञि भारतिदानि वाध्यमञ्जूथ वायु जिः। मू वृज्ञमा भन्नीत्रस्य वाष्ट्रमा । স্বযমেব জগৎসুপ্ত। দক্ষিণাগ্নি স্ততো **९७**व८ । कनकमा भन्नीवस श्वाभ-যামাস কেশব: ॥ ততে। २ ভূদার্হ-পত্যাগ্নঃ পঞ্চ বৈতান ভোজন:। धातमा ज् वनुः मसु धानयामाम रिव अपः॥ ७ ७ जा स्वनीरया १ प्र उट क्रगां नमकाय । यो ज खि जि গৎ ব্যাপ্ত বিমূল সকল জগৎ।। এতং যত্ৰ তাং নিচ্যু ভিষ্ঠতি দ্বিজ সত্তবাঃ। সমস্তা দেবতা স্তত্ত্ব বসন্তে २नूठरेतः गर्।। ७ उ छ पू भू पः नि ७ ५ १ -छारत जगाञ्च हः। अ उट जगी विश्व সান নেতৎ প্ণ্যকর পর ।। যিমন্ **জनপদে हिट्ड कृवस्त्र अन्नव ज्ञयः।** ভিমান জনপদে নি ভ্যা চতুৰ্গে। বি-বৰ্দ্ধতে ॥ এতদ্বঃ কথিত সৰু যুৎ পৃष्ठे विज्ञ म उतिः। यथा यक्क व রাহ্ন্য দেহো যজ্জ র নাপ্তবান্।। তথা চ ভ্ৰম্য প্ৰাণাং দেহা ক্সেভাত্ব শাগন্। ইতি কালিকাপ্রাণে ৩০

व्यवग्रयः ॥ 🗭 ॥ वुकान औ नियुक्त यथा। भूनखाउँ वाह। मृद्याय अयः খ্যাত যদা স্বায়সূবো মনু:। জাত পরমধ্যাত্মা শতক্পাণতিঃ স্বন্ধ ॥ সুঠা পুজাপতিঃ পূর্ব সৃষ্টি । গাঁও যোজয়ৎ । বৎস ত্বনেব স•কলু∫ ই-न्नाः मृष्टिः वक श्या। यगः र्र्न भूकः तः गद्मा क्द्वा यञ्ज्ञ विखतः। <u>त</u>्काः माञा रहाजावृग्र क्वाता यञ्चता-হকাঃ।। একৈক্স্য ত্রয় ক্যান্যে প্-রিবারা: স্বয• কৃ হা:। এতে বৈ যো-ডশ পোক্ত। ঋত্বিরো বেদচিম্বকাঃ।। শতানি बीनि य कि रखाः मृष्टाः স্বয়স্ত্রবা। ভীমাটবাচ। যজ্ঞস্য বু-कारण विश्रु मनाधि वह माम्यु उ । পুলস্ত্য উবাচ। মনুম্বরে ব্যক্তীতে ভু यक्रमायञ्खा १७वट । मिक्स বুন্ধণা দন্তা পাচী হোতৃৰ 🥌 🖖 অপ্বৰ্য্যবে প্ৰতীচী ত উদ্ধান্ত 💎 👵 उथा। वित्नाकाः महनः তেষান্ত দক্ষিণা- ॥ ধেনূৰ 📑 😗 नाष्ट्रे॰ माजवार यञ्च मिकाय। अधुः যুৰ্গা সহসাণি ষেছ্যা দান নিষ্য-তে।। ইতি পান্মে সৃষ্টিখ ও ১১ জ भागः ॥ 🗱 ॥ तुःकतः 🗀 🖰 🦠 यक्का यथा। व्यातस्य 🧎 🤭 🐡 🗈 স্যু হবিষজ্ঞা বিশঃ মৃত 🕬 💯

यकाः मृपुास क्रम यखास वाक्राः ॥ इंडि नाट्रात्र ७३४ वर्षायः॥ ॥ हि॰मा यद्धमा जनकवु॰ यथा। **७था विश्व**ञ्गिनमुद्ध यद्धः भावर्त्तं यट भुज्ः। रिवरेजः मरु मः ऋज्य मर्ब-্ৰসাধন স•ভ্ত• ॥ ভস্যাখনেধে বি-**ততে সমাজ**्म संহर्षयः । सहसंय क जान् मृष्ट्री मीनान् श्रम्भगगाः समा॥ বিশ্বণভুজন্তে ত্বপূহন্কোশ যজ্জবিধি खव। ज्यक्षया वनवात्मय हि॰ना व মেপ্লিয়া তব।। ন ন: পশ্বধ স্তিষ্ট স্তব **र**ক্তেশরোক্তম।অধর্মো ধর্মধাতায भातकः भम् कि खुगा।। नायः धः ग्रां-আগমেন ভবান্ ধর্মণ পুকরেণতু য দী ছতি ॥ বিধিদৃষ্টেন যজ্ঞে**⊕ ধ**ৰ্ম্মেণা-ব্যয় সেত্না ৷এব• বিশ্বভূগিন্দুক্ত ঋ বিভি স্তত্ত্বদৰ্শিভি:।। উক্তো ন পুতি-জগুাহ মানমোহ সমন্বিতঃ।ভেষা विवादः नगरान् यद्धः हेन्द्र गर्व गाः॥ कक्रोनः ज्ञाब्रोतः (कन यश्चेत्र নিতি চোচ্যতে। তে তু থিমা বিবা-(पन उथ्र मृङ्गा महर्ययः ॥ म॰ श्राय বাক্য মিন্দুেণ পপুচুঃ খচর বসু । भवग केंद्रः। सहाभाक्त कथः मृष्टे खव यक विभि म् भ। उँ जानभारि भ तुहि च॰ भन्न । ন্দ পুভো।। সূত উবাচ।

नित्र विकार वम् (ख्या मिति गर्ध वनावनः। (वर नाज मनुम्ड) यक्छ
छ म्वाह ह।। यक्षेत्रः भन्छि
प्रमेश त्रथ म्न केल त्रि। हिः:
भा यकार्वा यक्षमा हेिछ प्रमर्भः
नाभमः।। এवः कृष्ठाख्या एउठ्
युक्ताचानः उत्छा विया। ज्यमाः
धा विनः पृथ्वे। जन्नावा म्निकः भृतिरम्भः
त्रमाजनः। धर्मागः मःभगरह्छा
न्नाहा वम् त्रश्वा गठः॥ छन्मान वाहि।एएरकन वल्क्ष्यनी निमःभयः।
ख्यान हिःमा यक्षमा यप्त मुक्त मृविः
छ्यान हिःमा यक्षमा यप्त मुक्त मृविः
च्यान हिःमा यक्षमा व्याप्त मुक्त मृविः
च्यान हिःमा यक्षमा व्याप्त मुक्त मृविः
च्यान हिःमा यक्षमा व्याप्त मुक्त मृविः
चिः भृता ॥ हि मार्थमा अभागः।

যক্তক্ পৃ• যাগকর্ত্তা। যক্ত করো-তি ইত্যর্থে ক্বিপ্ পুত্যুযেন নিয়মঃ॥ যক্তপশুঃ পু• ঘোটকঃ। ইতি শব্দ-মালা॥ ছাগক্ষ॥

यक्तन्यः भ् विष्ः। ইভি হেন-

যক্ত ভাজন• ল্লী যক্তপাত্র•। ইতি জটাধরঃ॥

यक्छ ভ্ষণঃ পু॰ খেতদ্র্ভ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

यंद्धारमात्रः .श् उपुष्ठ व्यव्यकः। इंडि त्राक्षनिर्वणेः॥ यागार्व्ह वि॥ यञ्जवली जी भागवली। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট: ॥

यद्धवार्धः भू• यङ्गञ्चान•। ইতিহেন-हन्मः॥

যক্তবৃক্ষঃ পূ• বটীবৃক্ষঃ। ইতি রাজ-নির্ঘণটঃ।।

যক্ত শুষ্ঠা স্ত্রী সোমবল্লী। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

যক্তসাধন: পু• বিষ্ণ:।ইতি তস্য সহসুনানভোত্র• ॥

যজ্ঞসার: পু॰ যজ্যেজুম্বরবৃক্ষ:।ইতি রাজনির্ঘণী:॥

ইতি কল্পিরাণে ৪ অধ্যায়ঃ ॥ জ্ব স্য খারণে মন্ত্রো যথা। যজ্ঞোপ-বীত নসি যজ্ঞস্যবোপবীতেনো-পন্যানি। ইতি সংস্থারতত্ত্বস্থ ভউভাষ্যং ॥ যজুষাস্ত । যজ্ঞো প্রবিতং পরমং প্রিত্তং বৃহম্পানে যথ সহজং পুরস্তাথে। আল্ফ্য-শুল পুতিমুঞ্চ শুলুং যজ্ঞোপবীতং বল-নস্ত তেজঃ॥ ইতি পশুপতিঃ ॥ যজ্ঞানং জী যক্ত্রবাটঃ। ইতি জটা-ধরঃ ॥

যজ্ঞাক: পূ॰ উড়ম্বর:।ইত্যমর:॥ খদিরবৃক্ষ:।ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ ব্রাহ্মণযঞ্চিকা।ইতি শদ্চন্দ্রকা॥ যাপাব্যবে ক্লী॥

यक्राऋषि खी (मामयली। ইভিরাজ-নির্ঘণীঃ।)

यक्कायः भू॰ व्यवज्थः। इंडि (हम-हन्दुः॥ यागामयम्हः॥

यञ्जातिः भू॰ भिनः। ইতি धनक्षयः॥ त्राक्षमण्ड॥

यिक्जिकः भू॰ भनासम्बद्धाः उ कठोषतः॥

যক্তিয় জি যক্তকর্মার । ইউস্ময়ঃ া। যক্তাযহিত । ইবি মুখ্নোব ব্যাকরণ ॥

জেন বিধ্ হ॰ যন্ত সূত্ৰ॰ বলপুদ• ।। বিক্তিয়ঃ পু• দ্বাপারযুগ• । ইঞি

যজো**গ** ইতি ভাবপুকা**শ:** ॥

যজিবদেশ: পৃণ যাগকরণোপযুক্ত দেশ: । যথা । কৃষ্ণসারস্ত চরতি মৃগো যত্র স্বভাবত: । সজেযো ম জিযো দেশো স্লেছদেশ স্তৃত: পর: ।। ইতি মনু: ।। যজিবশালা জী যাগমগুপণ। ইতি

कहोषदः ॥ यद्धीयः भू उष्ट्षत्रत्यः । ইতি त्राक्षनिर्यक्तः॥ यागमञ्ज्ञिनि जि॥ यद्धीयनुक्षभाष्त्रः भू क्षिक्

वृक्तः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

যজ্ঞে ধর: পু॰ বিষ্ণু:। যথা। যজ্ঞে শরো হব্য সমস্ত কব্য ভোক্তাব্য বা আ হরিরীশরোক্ত। তৎ সৃদ্ধিধা নাদপযান্ত সদ্যো রক্ষা•স্যশেষা গ্যসুরাশ্চ সর্বে।। ইতি শান্ধত ত্ত্ব•া।। যজ্ঞেষ্ঠ লী দীর্ঘরোহিষকত্ব•।। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

याकाउम्रतः भू छेषुश्वतर्कः। यकुः
छुन्त इंडि ভाषा। छट्भर्यायः।
रश्मृशी २ यक्कणनः २ यक्डामः
८ रम्भूशी २ यक्कणनः २ यक्डामः
१ विक्रणम् तक्कणनः १ विक्रणाः।
१ विक्रणाः। छेषुश्वता श्विमां कः
एका श्वरः भित्र ककाम्न्ट । मध्व
स्वरता वर्त्या वृत्ताधन द्वाभनः॥

যজ্ঞোপবীত স্লী যজ্ঞসূত্র।পৈতা ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়:। পৰিত্ৰ ২ বুন্ধসূত্র ও দ্বিজাবনী ৪। ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেষ:।।#॥ তস্য নিৰূপণ• **বথা। উপবীত মাহ গোভিলঃ। य-**জ্ঞোপৰীত প্ৰত্ত সূত্ৰ বস্ত্ৰ বা অপিব। সশরজ্জমেব। যজ্জোপবী-ত বিশিষ্ট বিন্যাস ধারণ কর্মত্যা অৰুতে।কি· তৎ সূত্ৰণ সূত্ৰ· বিশে-ষয়তি ছল্দোগপরিশিষ্ট : উজ্ব স্ত ত্রিবৃত কার্য্য তন্ত ত্র্য মধো বৃত । ত্রিবৃতক্ষোপবী **ড॰ স**্যান্ত**ৈস্যকো**-পুছি রিষ্যতে ।। বামাবর্ত্ত বলিত॰ **उ**न्जबर बिरुग क्षा मिक्नगावर्न বলিত• কাৰ্য্য• এব• ত্ৰিবৃত• ত্ৰিস-व उपवीज नाए। এका गृष्टि ब्रिजि नानाच निरम्भार्थ । उथा বৌধায়ন:। কৌষ সৌত্র ত্রি ক্রি-বৃত । যক্তোপবীত নানাভে:। কৌ-ব ক্নিকোষোল্ডব গউসূতাদি ম্য মিত্যৰ্থঃ। সৌত্ৰণ কাৰ্পাসো-ভবং। তথা মনুঃ। কাপাস মু**প**-বীত স্বাৎ বিশুস্যোদ্ধ বৃত কি বৃৎ। শনসূত্র নয় রাজ্যে বৈশ্যস্য বিকসৌ ত্রিক ।। ত্রি ক্রিব্ত দিত্যু-কত্বাৎ মনুবচনেপি ত্রিকুমাত্র তি-

जवरवन विश्मिष्ठ । यञ्जू रेभठीनिम || वहनः। कार्भाम मूनवीजः यहेजञ्ज बिव्ड॰ वाञ्चनम्। क्लोम॰ बाबन्।-**স্য। আবিক বৈশ্যস্য। ভন্নবতম্ব** সম্ভবে ষট্ভস্ত বিধাযক । নবভন্ত হ্ব॰ वाङ्गाह (प्रवाधाः । यङ्गाभवीजः ছব্ব ত স্ত্রাণি নব ভন্তবঃ। একেন গুন্থিনা তন্ত দ্বিগুণ ক্রিগুণো হথবা।। একেন পুছিনা যুক্ত ইতি শেষ:। দ্বিগুণ ক্সিগুণোথবেতি। তন্ত বলেন **দ্বিসব জ্রিস**বো বা কর্ত্তব্য: । দ্বিসব ত্ব॰ ত্রিসবত্বাসম্ভবে। গোভিলে বা শব্দে বিকল্পার্থ:। অপিশব্দে। বস্ত্র ञ्चद्राः म्बान्कन्न भूरणनार्थः। এবকার স্ত্রিসবত্ব ব্যবছেদার্থ:। দ্বি-তীযো বা শব্দে। ২নুক্ত মৌঞ্জ বালা-कि **म**मूहयार्थः । তথা निगम**প**द्रि-শিষ্ট•।বাসসা যক্তেপেবীতানি স্ব-ৰুতে তদভাবে ত্ৰিবৃত। সূত্ৰেণ। **স**্ শ মৃঞ্জ বাল পুতিসব রজ্জৃভি রা। বালে। ९ত গোবালঃ। যথা দেবলঃ। কার্পাস ক্ষৌন গোবাল শররজ্জু তৃণোক্তব**। সদা** সম্ভাতো ধার্য্য মুপবীত দ্বিদ্যাতিভিঃ। তদভাব ইতি করণাদস্ত্রাভাবে সশরজ্ঞভি-্রী রিতি বোদ্দন্য ইতি শুংদ্ধানিবেকঃ 1 क्षता व्यव्याकत्त्वक्रिमः । अद्यक्षति ।

र्ভाष्ट्रसम्ब वाक्रगरम्। नगनः भरा । ক্ষত্রিবস্য গর্ভ্তৈকাদশে। গর্ভদ্বাদ-শে বৈশ্যস্য শন্ত । অত্রাসামর্থ্য ব্ৰাহ্মণস্য বোডশ বৰ্ষ পয্যন্ত মেৰ क्वविषम्। द्वावि॰णि वर्ष भर्यहरू । বৈশ্যস্য চতুৰি শতি বৰ্ষ প্ৰয়ন্ত ভদনুষ্ঠান কাল:। তত্ৰ মাসা: i गांच कालून हिन्न विणाश क्षित्री ষাঢ়া বিহিতা:। তত্র 🕏 👓 🕶 षिञीरेयकारमी प्राप्तमी शक्ती ए-শনী ভৃগীবাবিহিতাঃ তেত্ৰ বারাঃ । বৃহস্পতি শুক্র রবীণার পুশস্তাঃ नागगानाः गक्लवादाः शि । उन्न न **ক্ষত্রাণি। স্বাভী জ্যেষ্ঠ** ধ্রিষ্ঠা অস্থি-নী অনুরাধাহস্তারেবভী পুজ্য িত্রা শুবণা মৃগশির: শতভিষা পরভিল্ল: नी উखद्रकलुनी भूदं छ 🕮 🔻 छन्न-**त्रज्यम्गमा त्राहिनी भृ**र्वायाः नगानि। व्य जि॰ इ जुना थ्य भी के जिल জ্ঞকানি। তত্ৰ পক্ষঃ শৃত্ৰ । তচ্চজুন **দি শোভনে অনধ্যাযাদী**ন পরিজ্য জ্য কর্ত্তব্য । ইতি জ্যোতিষ্যভূমতং ।।।।। অথোপন্যন। তত্রগোলিকা গর্ভাপ্তনেষু ব্রাহ্মণমূপনতে ঐতিকা-म्राम्यं कविषः गर्चवाम्राम्य हिन्त वारगंडणार द्वाक्तानजी ন্যালে। তবতি আদ্বাবিংশাৎ ক্ষত্রি

যস্য আচতু ৰি শাৎ বৈশ্যস্য অত উদ্বৰ্ণ পতিত সাবিত্ৰীকা ভবস্তি। বৈভানুপন্যেয়ু নাধ্যাপ্যেয়ু ন্এভি-र्बिवाश्ययुः॥ व्यारवाष्ठभाविज्ञा বিধাবাড়। তথাচ বিফুধর্মোত্তর । वाउनायदारि विभुगः ताजनामः ছিবি শতিঃ। বি শতিঃ স চতুথী চ रिक्पामा भविकीर्खिंग ॥ माविकी नांजिवर्र्वेज अञ्डेष्ट्वं निदर्व्हे । অত্ৰ যোড়শব্যাণামুপন্যনাক্তা পুতীযতে। পতিতা যস্য সাবিত্রী म्मवर्यानि भक्ष ह । वाञ्चनमा वित्म-ষেণ তথা রাজন্য বৈশ্যযো: ।। পুায-শ্চিত্ত ভবেদেষা প্রোবাচ বদতা বরঃ : ইতি যুন্বচনেন তদনস্থতা পু **ভীযতে অনযো গর্ভব্বর্যপুভ্তিগণনা** ভ্যা মবিক্জভা। यबु विजानाभिः ত্যুপক্ষন্য পৈঠীনসি বচন। দ্বাদশ বোডশ বি•শতি শেচদতীতা অবক্-ষ্মকালা ভবন্তি। তদ্বাদশবর্ষাদ্যুপ-রি বাহ্মণাদীনা• মহাব্যাহ্নতিহোম भागिक डार्थः (वाउमवर्याभित्र छः ৰুপুাযশ্চিত্ত মিতি। তথা চ শান্ত্ৰলি-थित्तो। बुाका कान्नायन हात्र शाभुनानक अर्गाए। ठान्नायनानः জৌ **ধে**ৰ্প্তক তম্ল্য বা সাৰ্দ্ধ দা বিশেতি কাষাপণাঃ গোমূল্য কাষা

পণ এক: মিলিত্বা সার্ভত্রযোবি শে ভি কাৰ্যাপণা দেখা:। পিতৃ মাত রহিতস্য নি:ম্বস্য দেশোপপ্লবাদি-না পতিত সাবিত্রীকস্য বা বিষ্যেতৃ नन्तिकृ। (यया विजाना नातिजी । নানুষ্ঠেত যথা বিধি। তা॰ শ্চারবিত্বা बीन् क् ह्यान् यथा विश्वाशनायरय ।। কৃ हु॰ প্ৰান্ধাপত্য । তদশক্তো ধেনু-ত্রয়ণ তন্মল্য বা নব কার্যাপণাঃ। व्यक्ष भाषिकतः भुजाह रेनजानि-ত্যাদি। তত্র বহুবচন তৎ কর্তৃ-ज·जर्भिभा• भागकित भुम्मनार्थ• । তথাচ মৃত্যন্তর । ব্রাত্যাচার্য্যস্য ভূ-ক্তাম॰ কৃ ছুপাদেন শুধ্যতি। যদেচা-পন্যতে বাত্যান্ ত্রিভি: ক্ছৈ: স শুধ্যতি।। ভুজবলভীম কৃত্যচিস্তাম-মণ্যো:। স্বাভী শক্ত ধনাশ্বি নিত্র করভে পৌঞ্জে চিত্রা হরিশ্বিন্দৌ ভোযপতৌ ভগে হদিতিসূতে ভা-**मु दर्य সাগরে।** किन्मुङ् ভৃগু**জ ংক্সিরঃ শশিসুতে চন্দ্রে** চ তারে শুভে কৰ্ত্তব্য বুতকম মঙ্গল ভিথৌ বারাঃ সিতার্কেজ্যকাঃ।। অদিতি-मूड উত্তরফল্লুনী। সাগর: পূর্বা-याछ।। मीलिकायाः। जीवार्त्वन्तृषु শ্দ্ধৌ হরিশ্বন বহি ভাস্করে চো-खद्राख् श्राद्याय (यहदेशां विश हेर

भू उत्प कोत्र (छ नामित्वो छ। भू कार्किका के नाम त्रवि भवन जिथि॰ প্রোজ্ব্য ষষ্ঠাষ্টমেন্দু নো জীবাস্তাতি চারে হর্ক সিত শুক্দিনে কাল শুদ্ধৌ বুত• স্যাৎ ॥ রবি মদন ভিথি• সপ্ত भी व्यानभी । यक्षेष्ठरमञ्जू व्यालन क्या। क् अहिडामानी। मार्य मुनिन भीनाएं। कानुत ह मृत्युं । हिद् ভবতি মেধাবী বৈশাথে কোবিদো **ख**र्य ।। क्षित्रक्षे गश्न नी जिञ्ज या-বাঢ়ে ক্ৰুভাজনঃ। শেষেয়নে যু রাত্রি: স্যান্নিবিদ্ধ নিশিচ বুত ॥ রাজমার্ক্তঃ। পুনর্নসৌ কৃতো বিপু: **পুন: স**·স্কার মহতি। <mark>আখলায্ন:।</mark> উদগयन या भ्यंत्रभाग भाक कला। ণে নক্ষত্ৰে চ্ডোপন্থন গোদান বি-বাহাঃ। বিবাহ: সার্ত্তালিক ইত্যে (क) चा भू ग्रंजाति भरक मुद्धभक्ति। ব্ৰাণ্ঠঃ। ফৃতিষ্কাননধ্যাযান্স श्रीक जारारणी । शक्कारा माच सामग्र विजीयाः भविष्कःयः ॥ भ उत्रावशात्रमगृहत्य। कार्निक न्याधिवन्याति कानुवायाप्रया त लि।क्क**शक्ष्म विजीयाया मनव**्राय বিদু র পাং।। ভ্রবলঃ। হৈত্র কৃষ ছিভীযাযা। ভিস্যেবাষ্টকাসুচ। মা

পেচ ফাল্লুনে চৈৰ সাধানে কাৰ্ত্তিকে 🖔

ख्या ॥ भक्तर्या मायम मन्। वि याः भत्रिवर्द्धारायः । नःकाव वृह **वर्शी ७ वुठवक मुङकियां ॥** छ नयत्न উত্তরায়ণ শুক্লপক্ষযো विश ना८ कार्खिकारों कृषभाक ह हि তীয়া নিষেধ্য পুনা সংস্থান্ত মঞ্জ ইত্যুক্ত পুায়ণ্চিত্তৰ্পোগন্মন तः। वित्माशनयन शतकः। उक्षाः गर्भः । विभुमः क्वांत्रमः न क्षीमप्रामुखद्रायस्य । मक्किश्य ह 🎋 **ना**॰कार्यप्रः नानश्रास्य न नाकरः । व्यनवशासिक ब्रह्मी उ यहा सिन् ব্রিক ভবেৎ। অপিনা দাক্ষণায়ত क्षशकत्याः जगृहयः। दिन्नि द्वि 🎓 शुगिष्ठिखक्रभः। हिब 👸 📑या व्यावात मुक्तरमंत्री सन्न 🔆 🤻 निविषा। विणाय मृत जु शिया युगः वि **ज्ञि निविका। यक्ष्यानम्**हिक् सर्वत রিক্তাসু বহুদোষভাক্। সভে গুনাং **ञ** बदारत्र शुरुभनयनः । भारा िल-दाए। उथार। भाथाधिल विनि किन्मुगछ २थ वास्त्रिन् वाद्य ६ याऽ-চোপন্যন কথিত ছিলানা । नी-চন্থিতে হরিগৃহগেথ পরাজিতে বা बीर्व ज्गावुभनयः सृष्ठि कर्मारीनः 🗆 অস্য শাখাধিপস্যাক্ত্যটিস্তানটো । इत्यान्त्य बयम् ठाइकाम् सात्य

र्थन कमनि कमण्ड न। नुष्ड्न विल्यान वस्युः जिलि विद्याविष्य रेथः श्रुथिङः श्रुथिन्।। श्रुष्ठः गः एउ रिष्ठु। श्रुथित्।। श्रुष्ठः गः वा भागमूखिन्। नुष्डाभनीः वा भागमूखिन। नुष्डानि रिते जिलि किल्छ। यः ॥ पेराय नाम नुष्ड्य जेनन्यरमन । इंडि मःस्वात-जुः ।।

वजुरः शृ यज्ञ (विषया वाष्ट्राक्षा । विज्ञानिक । विज्ञानिक । विज्ञानिक । विषया है है वार्या । विषया है है वार्या विषया । विज्ञानिक । विषया है है वार्या । विज्ञानिक । विज्ञानि

विक क (धाराभिक्षत्रायाः। ইতি क विकल्लकनः॥ (धार हेरू जाउनः। क या उपि भूषः भिष्ठा जाउपि हेर्जुर्थः। या उपि गृरुः गृहिनी उपक्षत्वा जि हेर्जुर्थः। निद्राः भुर्जुः भीत भुर्जुर्भनः भत्नी वर्षः। निर्याज-यजि धात्मन साधान (लाकः धान्मः) पद्मा साधान गृह्या जि हेर्जुर्थः। हेर्जि पूर्णामा भाः॥ यज के जुराद्ध। हेर्जि किविकल्लकनः॥

ঈ যব্তঃ। ড যততে পঠিতু 'শিষ্যঃ।

इंडि पूर्णाहामः ॥

यञ् वर (खड़ः। यथाट । इंडिश्नबः ॥

यञ् वि वृक्षिण्याभाविक्ष्ण्ययादहिनः। (य इंडि छाता। इंडि नग्रय

गडः निकास्टर्कोमूमुगाहिवृद्धिणः ॥

यडः वर (एजुः। यथाट । इंडिश्नबः ॥

यडमः वि वर्गाः मध्याद । इंडिश्नबः ॥

यडमः वि वर्गाः मध्याद । व्हण्याद एउग्र

भुजप्रमन निम्नमः । इंडि मुक्तवाधवर्गाक्रमः ॥

यञ्जः जि षरयार्गस्य निर्माद्वरे छकः। ञनरयार्गस्य यः। यम्भदार एजत भुज्यस्य निज्ञमः। ইजि मूक्यस्य स्-व्याकद्वभः॥

वितः भू निक्किं जिनुष्यगुप्तः। छ ८भर्यश्रयः। यजी २। इज्यम्तः।।
जिक्कः ७ मान्यानिकः ८ कप्रान्ति। १
ब्रक्त्वमनः ७ भित्रपुष्तकः १ जाभमः ৮ भत्रामत्री २ भाद्रिकाङ्की २०
गक्षती २२ भाद्रितकः ३२। इजि
स्म्यान्तः।। निकादः।। निव्रजिः।
इजि उद्वित नानार्थ्।। ३ ॥ उम्यान्तः।। विव्रजिः।
वात्राम्यशाः नात्मा यथा। ज्यक्षीनाःमान् विद्याद्रम्य यजीनाः मःयजाञ्चानाः। এक व हज्द्रा नामान्दः व।
निवरम् भनः॥ अविमुक्तः भुविद्रीनाः विद्याद्रस्त न विष्युकः। यजि-

ভি ৰ্মাক্ষকানৈ চ অবিমুক্ত নিষে ব্য:তা। ইতি মাৎস্যে অবিমুক্ত মা-হাব্যোগেরে অধ্যায়:।।ঞ্চা যতিধর্মো। খথা। অলাব্ দাকপাত্রঞ্ মৃম্য । देवरण उथा। এ उानि यञि পाञानि भनुः सायग्राता • त्वी ।। अ क्काल• हातरे छक्का न भूमा छन् । ভৈক্ষ্যে পুসক্তে।হি যতি বিষয়েম্বপি সজ্জতি।। বিখ্মে সমন্যলে ব্যক্ষারে ভুক্তবজ্জনে। বৃত্তে শরাব সম্পাতে ভি ক্ষাণ নিত্যু যতি করেশ। অলাভে न वियानी माञ्चार छ रेहत न स्वंदर् পুণিয়াত্রিকমাত্র: স্যান্মাত্রা সক্ষা দ্বিনিৰ্গত:।। অভিপুজিত লাভা•স্ত জুগুপ্পেতৈব সর্বশঃ। অভিপুদ্ধিত লাভৈশ্চ যতি মুক্তা হলি বধ্যতে য় অল্লামা ভ্যবহারেণরহ:স্থানাসনে-न ह। द्यिमाणानि विषये क्रिनिष्याणि निवर्खरंय ।। इन्तियाना निरत्रास्त्रन द्वाग (श्वर क्रायन ह । अश्-नया ह ভূতানা মমৃতত্বায বল্পতে ॥ অবে-क्षिञ्गजीन् नाः कर्याताय ममुख्याः । नित्रय रेहव भजन याजनाक व्म करय॥ विशुरवागः शिर्य टेन्डव मः. যোগঞ্চ তথা প্রিয়ং! জর্মা তাভি-ভবন ব্যাধিভি শেলপ্রসীডন ॥ (महामूटकम्क् यार भून गर्ड ठ

স্ম্ভব•। যোনি কোটি সহসেষ্ সৃজী म्हाम् ।। अथ्य भुर रिक्व पृष्ठस्यागः नात्रीतिनाः । वर्धाः भुखवेद्यव मूथ मः स्थान महिन्। **ज्ञाकादादरक्**छ (या। 🖂 📆 মানান:। দেহেষ্চ সমুভ াভি মুক্ত भिष्यथ्रम् ह ॥ मृषि छ। नि যত্ৰ ততাশুনে রত: 1 সন: নৱেযু **ज्राव्यू न लिङ्गः धर्मा का**त्रपः ॥ क्रमः কতক বৃক্ষস্য যদ্যপ্তমু পুঞাদ্ক। न नामगुरुशास्त्र उन्। दावि अनी-দতি॥ সংরক্ষণার্থ• জন্তুনাং ব্লাক্রা-वर्शन वा मन्।। भारी द्रम हो का १४ हिन मनीका वम्या हात्र ॥ अङ्गादाः बा ह यान् अस्न् श्निडाकानाका যতি:'।তেষা সাত্ম বিশ্বস্থা প্রা **गायानान् जनाहरद्र ॥ भुरतायान**ः ব্ৰাহ্মণস্য ত্ৰযোপি বিধিৰ্থ কৃতা, : ব্যান্থতি পুণবৈ যুক্তা বিজ্ঞেশ 🕬 भ· ७भ: ॥ म्हार श्रायम्बन्ति। **धाज्ना•िङ् यथा मलाः। ७१थनिर्या•** णा॰ मञ्ख्य पावाः भागमा निग्रुः हाट ॥ भागायारेन फंट्सियानान् ধারণাভিক্ষ কিল্বিষণ। পুত্যাহারে। **সः স**র্গান্ধ্যানেনানী ধরান্ধ্যান্থ উচ্চাবচেষ্ ভূতেষু দুজেলি নজুতাজ্ব ভিঃ। ধ্যান শোগেন সম্পদ্যেত্র

भित्र विज्ञानजाः। ইদম্মিहजाः सर्ग

ि नम्राख्याञ्चनः ॥ मन्राप्तनं मः म्मामः क्यां अ में निवधार । मर्मानन विश्वनश्च मःमात्रः भुजिभराउ।। शक्ति भाषानिष्यामिक रेविनरेक रेम्ठव কর্মাভঃ। তপস করণৈ কোগোঃ माध्यक्षीर उत्भरः ॥ चहि द्रुगः স্থায় যুক্ত মাণন শোণিত লেপন। इर्चावनका पूर्णिक शूर्ण न्ब श्रीयः (गाः ॥ ६ । (भाक जनाविष्टे॰ तिशः গাযতন নাত্র•। রজম্বল ননিত্যঞ্ ভূতাবাস মিম ত্যৱেৎ।। নদীক্ল यथा व्रका वृक्षः वा मझिन यंथा। ख्या उऽज्ञात्तमः (५२ क् ह्यान्ग्राहावि মুচ্যতে।। প্রিয়ের স্বেষ্ সূক্ত মপ্রি-(ययू प्रमुख् ७ । विम्क । ध्रान (यारगन বুন্ধাভ্যেতি সন্যতন•।। যদা ভাবে-ন ভবতি সর্বভাবেষু নিষ্কৃ:। তদা সুথ মবাপে।তিপ্রেড্য চেহ্ন চ শা-শ্বত।। অনেন বিধিন। সর্বাণ স্ত্যক্ত্বা मकान् भरेनः भरेनः। मर्ब द्वन्तः विनिः মুক্তো বুন্ধণ্যেবাবভিষ্ঠতে ॥ ধ্যা-निंदः मर्ब (मरिवज्य यरम्जन्छिणः दि उ॰। न इए न श्राजाविद किन्दि ্ৰেয়া ফল নুপাশুতে।। অধিযক্ত क्रामनाधिरिविक भव ह। च-া বিৰুপ্ত সতত বেদান্তাভিহি-🍄 रुट्री। इन भवन मुख्याना निम

भिष् भानस्र भिष्ठाः॥ अतन क-ন্যোগেন পরিবুজ্তি যো দ্বিজ: 1 न विथ्यक् भागानः भन्न वुकाधि गहाँ ।। इंजि मानत्व ७ व्यथायः॥. यिः जी भावे विष्हृमः। इंडि म-रिनी ।। विथवा ।। ज्ञागः ।। अक्तिः **।** ইতি শদরবাবলী।। জিস্বেষ্টবি-मान्यानः। यथा। यजि किंत्रिहे বিশামস্থান কবিভি ক্চ্যতে। সা विष्हर विद्रा मारेम्डः भरेम बीह्या निष्क्रह्या ॥ कृष्टिह्न्स्म्राट्ड यङि রভিহিতা পুর্কৃতিভি: পদাস্তে সা শোভা• বুজতি পদমধ্যে ত্য-कि 5 । भून खें विवासी अब वि-হিত সন্ধিঃ শুয়তি তা যথা কৃষ্ণঃ পুঞাত্ত্ল মহিমা মাণ কৰণযা।। **খে**তমাগুৰ্য নুখ্যাস্ত নেছন্তি মুন-(या यिंज । इंज्राह जिप्तः स गुरह **ख्यार्भ পूक्रावाख्यः ॥ इ** छि ছान्ति। मक्षत्री ॥ वान्ताक् भुवन्नविष्णयः । यथा। यि द्वाषाभारतहामा गन-রো ৰূপক । গুরু । গনপঃ সারিগো-ी ह नामक कथिउ॰ उथा॥ शुरुद्धः ণ বৃদ্দনঞ্চ পুৰন্ধা দ্বাদশ স্তা: ! যথা দ॰ থাত:। ইত্যেকভাল্যা• यि:। ইতি मङ्गी उत्रात्नात्रः ॥

, २। यथा। भुवृखिण्ड निवृखिण्ड उ

युक्तिः वि दङ्बहनाड्यम्भदार्थकः। यज्छनि इंजि ভाषा। यम्भदा८ নিপাতনাৎ ডতি পুত্যযেন নিম্নমণ । ইতি সুঞ্বোধব্যাকরণ ॥ यिकान्यायन क्री वुखिरानयः। यथा । जहाराष्ट्री ममन्त्रीयाट शिखान् মধ্যদিনে ছিতে। নিযভাত্ম। হবি-बामी यिकामु।यगः हत्रन्॥ इंडि मानत्व ३३ व्यव्यायः ॥ विकानन्।-বনে পাদোন ধেন্চতুষ্ট্য তদশ क्ति मनारिकारण कार्यामनाः। তি পাৰশ্চিত্তবিবেকঃ॥ यिजनी जी विश्वा। वशाविश्वा কানিকারণ্ডা বিশ্বস্তায়ভিনী যৃতি: । ইতি শব্দরত্নাবলীনা যতিমৈথুন ক্লী যতিগোপ্যন্নভি:। **७८ প**र्यऽायः । **५%** नत्र ७ १ २ । इंडि ত্রিকাওশেষ:।। यञी जी विश्वा। ইতি भद्रजावनी यञी भू यिषः। बिखिनुषः। ইত गद्रः ॥ यञ्का । खी वृक्षविष्णयः। यथा। द्रज-যত্কা) নী স্যাৰ্যত্কা **যত্কা জ** ननी ि ह। इंडि न सत्र जावली ॥

यः प्र क्षािरिह्युर्दिः णिउँ धाः ।

र्गड ७ १ दिए । भ ह जि दिशः।

भूवृङ्धिः । निवृद्धिः २ कीवनरगानिः

था की बनका द्रगः। क्षेत्रः भूषकुरिकः विष्रु जान्तिकः भन्निकीर्निज्।। **उदाः काद्रगः यथा।** हिकीवी कृष्ठि সাধ্যেষ্টসাধনত্ব মতি গুপা। উ-भारानम् वाष्ट्रकः भुवृत्ती बनकः खरवर ॥ निवृक्तिस खरंबरम्बाभिक्षे नाथनजा थियः। यत्त्रा कीवनरयानि-स्त मर्बरा जीनमुत्या जत्य ॥ मही রে প্রাণসঞ্চারে কারণ তৎ পুকী-र्खिङ । इंडि ভाষাপরিছেদ:॥ উন্মোগঃ। यथा। উন্মোগিন পু-क्विंगि व गूरेशिक वाची रिर्मादन (एय गिञ्जि का नुक्षः) वहि । देहव॰ নিহত্য হৰু পৌক্ষ নাম্মশক্যা ্যত্নৈ কৃতে যদি ন সিধ্যতি কোত্ৰ **मारः ॥ इन्रा**फिः ॥ बङ्गतान् वि यद्गविनिष्ठः। यङ्गदा বত পৃত্যযেন নিষ্কন্ন: ॥ ॥ যত্র ব্য যিমান্। যেখানে ইতি ভাষা । यम्भदार मध्या जल भुजायन নিয়ুদ। ইতি সিদ্ধান্তকৌম্দী।। **যত্র ইক সংকো**চনে। ইতি কবিকল্প क्यः ॥ म्डावर्गाम्याभयः । इ क যন্ত্রথতি মন্ত্রেণ সর্পণ জাঙ্গলিক:। यञ इंडारनरेनरवर्ष्ट शिष्कु इंगन्तर ষো বেদেষ্টারণ ভেদার্থ:। ইতি

मूर्गामा मुशी

वर्ष क नाम्मारः। नामारः। छट भर्यरायः। तट १ वा ७ छथा ६ वव दः ववः ७। इंडरमतः।।

मधाकाभी जि (यहाठाती। उटनर्गायः। यक्ठिः २ यहन्मः ० रेयती

8 जभाव् जः ६ यज्ञः ७ नित्रवण्डः

१। ইতি হেমচন্দুः।। निर्यञ्जनः ৮।

ইতি कটাধরः।।

ষথাক্রন॰ ক্লী ক্রমানুর্পণ। ক্রমমন-তিক্রম্যেতি ব্যাকরণণ।। অপিচ। বথাক্রমেণ পুঞ্রেণ কার্য্যাপুত্রকি-যা সদা। পতিতাপভিতা বাপি একোদিষ্ট বিধনতঃ।। ইতি শুদ্ধ-ভত্ত্বণ।।

यथार्जाणः जि मूर्थः। इज्जानतः॥ नीहः। इजि किंगिषतः॥

যথাতখ^ন ব্য যথার্থ । ইতি হারা-বলী ॥

यथान्दं वर न्दिष्यमकालान् क्रमः। यथा। अक् जायाः भु ि ही-याः भागानाः भु ि जाजू ह। यथा-न्दं उथा जावः यगानीनाः न वि-क् जा॥ इंडि जिथ्यान् ज्वृष् का-लिकानुद्राग वहनः॥

यथामूथीनः जि मूथ्नुिविश्वाम्यः । मूथम्य मम्मः यथा मूथः नुिवि- यः जिशाउना मान्ति १वानि छातः । यथाज्ञ मान्तिः यथाज्ञ थीनः । ইতি সিদ্ধান্তকৌ जूनी ॥ অপিচ। তত শিক্তী যমাণো হসৌ হেম রত্ত্বযো স্গাঃ। यथाज्ञ थीनः সীভাষাः পুপুবে বহু লোভযন্।। ইতি ভত্তি:।। মুখস্য সদৃশাং যথা: মুখং দর্গণাদিস্থ পুতিবিশ্ব মুচ্যতে সাদৃশ্যার্থে হব্যযীভাবः । ইতি ভরত:।। নির্মালত্বাৎ সীভাষা অ-গুতো যথানথীন: পুতিবিশ্বাশুষ ইব ভূত্বা পুপুবে ভুমন্তিম ইব শক্ষ লোপো দুপ্তব্যঃ।ইতি জ্ञমন্ত্রলঃ।। যথাযথা ব্য যথার্থণ। ইতি মুদুক্তি-ভামরঃ।।

यथार्थः वर् यथाउथः। ইত্যমর:॥

(व অব্যভিচারিণি। অর্থমনতিকা
ন্ত: यथार्थः स्थावकणः यथाउथः

उভ्यक অব্যথীভাব:। यथार्थ।

(वरः। यथाउथः विक स्वाम वि
हान्। ইতি ভরত:॥ তৎপ্য্যায:।

सव्याउथः। यथान्ति स्वः उथ्युः

यथाउथः। यथान्ति स्वः उख्युः

श्वीति जू विज्यान्ति ॥ ইতি

ह्महन्मुः॥

यथार्शः वर्ष यथारयागरः। यथा। क्दा ्र (ठो यथान्। यः यथार्श्व अन ৰিদ•। উপবিষ্টো কথাঃ কান্চিচ-ক্ৰতুৰিশ্য পাৰ্থিবো॥ ইভি দেবী-মাহাত্ম্য• ॥

यथाणाञ्च श्ली णाञ्चानुमाति। णाञ्च भनिज्ञम् । यथा । यथाणाञ्चकः निनी তো यथावग्राधि विकिट्मिनः । नणमः याजिरया वग्राधिः म रञ्जयः कर्माजावृर्थः॥ ইजिम्ममा मञ्जुः॥ यथाञ्च जि मज्गः। ইजि रहम-वस्तुः॥ यथाञ्च व यथार्थः। ইजि मृमाहिः

ভামর: 11

याथिकिः क्री यथावाकिः। छटः भग्रायः। कानः २ भुकामः ० भ र्याछः ४ निकामः ६ इक्षेः ७। इक्षः मतः ॥ यहे इक्षेत्रिकित्म सहन्तः भृत्रिको कामानीनि भागः किया-वित्नयगानि कियावित्मयनदाटक्री ॥ यह स्वाः। देश्विष्ठम्यानिकत्मा यह विक्षः भिक्षावर्षी अविः। इकि

स्थिष्टे की देशे निक्किम् ग्रथिक्षिज

। यथा। अगुर्यायके इंट्रनबंबी भा स्ट स्थनमार दे। इंटि भारतकार्यः यथ्डेठाती मु॰ शकी। इंडि भारति टिन्द्रिका।।

যথেষ্টাচরণঃ তি যথেষ্টাচারী। যথা।
কিষাহীনস্য মূর্থস্য মহারে ্রি
এর চা যথেষ্টাচরণস্যান্ত মরণান্ত
মন্দৌচকং ॥ যথেষ্টাচরণস্য দুলার
বেশ্যাদ্যাসক্তম্য । ইতি শুদ্ধিতক্তং ॥

যথেষ্ঠাচারী পু॰ সেদ্বাচারী। যথেষ্ঠ-নাচত্ত্ৰ্ণীলনস্য ইত্যর্থে ইন্পু-ত্যযেন নিম্নমঃ।।

যথেচিত তি যথাযোগ্য যথা-প্রান্ত । যথা।ভূষো ভূশো যথো-চিতাে ইত্যনর:।।

যথোদিত - শ্লী যথোক । যথা।
খথোদিততে পিত্ভি: স্কু দারপরিগুহ । ইতি মার্কণ্ডেযপুরাণে কচিন্তোক ।।

য়দা ব্য যিন্সন্ধোষ্ণা। যদা

থদা সভা হানি রেদ্যাগানসঃ

বিণা ৷ ভদা ভদা কলে বৃলি এন

নেযা বিচক্ষণৈ: ॥ ইভি ভিথ্যাদি
ভত্ত্ব্বব্দা ।।

यि वर्ष शकास्त्रः ॥ अस्त्रावन् । उद्भग्रायः । हिद् २ यमुत्रा २ । हन्तु म्य पुरश्नामान्। पुाठः द्वाची हन्तु म्य पुरश्नामान्। पुाठः द्वाची ह्या म्य पुरश्नामान्। पुाठः द्वाची ह्या म्या हिल भाषामान हु।। व्यक्ति हिल मुम्द्राहाद्वा छळ छ मामनम् किल स्वा हिला मा मेहिल किलावनी हिला हिला है मः। हेिल किलावनी हिला हिला है मेहिल क्या हैिल क्या हैिल हिला हिला है हैिल हैिला हिला हैिल हैिला मुम्हाद्वा विश्व हिला हैिला हिला हैिला ह

स्या जि. स**्मश्वि । यथा । यशीय** नामः ि**लाकः विभरः कलिन्स** च्या । पाला**क्ष्र गिरुः । विलाम** स्या । या विदयं**ण महमा** कर्त्राञ् अस्या १ वी म क्रमुं ।। हेलि हरन्तः सङ्खी ॥

े भू (स्वकान्ताः काला ययात्व कि) हे भूकः । जम्र वः स्म निज्माः भार ब्रह्मकवन्ति नामीट । जदः-स्म प्रायत्रग्रम्यास्य व्यक्रस्य १व-हेलि हेलि बिलागवजमकः ॥ कम्र माज्यकन्त्रा विवाह कात्रगः व्या । क्रताः भाग्र य्याजिस सः भूति भाग्र हेव्य ह । भूकः (क्रिके वृद्धिक यम् मिज्युवीद्यहः ॥ पुः भूजिभम्यस्य भाग्रानः क्रत्रगा

जरु । योवत्वन पुनीयन **हरत्रय**॰ विषयानहः ॥ भूर्ण वर्ष महस्र जू भून ए योवन वृश्। मद्या मः भु-তিপৎস্যামি পাপ্মান জর্যা সহ ।। যদু কবাচ। সিতশ্মশুপরো দী-নো জর্যা শিথিলী কৃত:। বলী সন্তত গাত্ৰক দুৰ্দ্ধৰ্যা দুৰ্বলঃ কৃশঃ ।। অশক্তঃ কার্য্যকরণে পাপভূতক্চ (योवान । जार्शभदीविज्ञि टेक्टव তা॰ জরা॰ নৈব কাম্যে॥ সম্ভি তে বছবঃপ্ঞা মত্তঃ প্রিয়তরা নৃপ। জ-রাণ গুহী ভূণ ধর্মাজ্ঞ পুঞ মন্যা বৃণী-म्र देव ॥ ययाञ्चि क्वा । या मि पुः क्रयाब्ह्नारा वयः सः न भूगहिन। পাপান্মাতুল সম্বন্ধাৎ পুজা বৈ তে ভবিষ্যতি॥ ইতি মাৎস্যে ১১ व्यथायः ॥ 🗱॥ र नार्श्तनः । यथा । यनवस्र नमार्शः मृत्र मात्रुजाः सन्दर রাশ্চ তে। ইতি হেমচন্দু:।।

वृन्तिः शृ श्रीकृषः। यथा। यन्वृन्तिः शृ श्रीकृषः। यथा। यन्त्राउः कृ गठा मधुतानुती त्रघूनाउः
कृगाठा खत्राकाणना । इठि विहिखा क्ष्य मनः स्त्रिः न मिनि । सन्गिनि ठावनात्रय ॥ इठि कृत्रमिनाउन गामामिनो ति

षम्नाथः পু॰ ত্রীকৃঞ:। ইতি ছেম-

यम्हा जी স্বাভস্ত্য । তৎপর্য্যায:। বৈরিভা২। ইভ্যমর: ।। স্বরিভা ৩ । ইভি ভটীকা।।

যদ্যবা ব্য যদি। যথা। যদ্যবাল্পতর
সম্ভার: স্যাদিপি পশুনৈব অর্য্যাৎ
। যদ্যবৈতি নিপাত সমৃদাযো যদ্য
থোঁ। অপিচ। যদ্যবা উভয় চিকী
র্যেন্দ্রেন বৃদ্ধান্ত তেনৈব ক
লেন ছণ্ড মুত্তরাসক সোদক ক
মণ্ডলু দভ্যটু বা বৃদ্ধাসনে নিধায
ভৌনব পৃত্যাবৃত্যান্যচে ইত্। ইতি
ভিথ্যাদিতত্ত্ব ।।

यहा छी वृष्धः। ইতি সংক্ষিপ্তমারোণাদিবৃত্তি:।। পক্ষান্তরক্ষ।।
यञ्च। পু॰ সারথি:।। হন্তিপক:।
ইত্যমর:।। বিরতিকারকে ত্রি।।
যত্র॰ ক্লী দেবাদ্যধিষ্ঠান॰।। পাত্রভেদ:।। নিযত্রণ•।ইতিহেমচন্দুঃ।।
তারিযত্র•। কামান্বন্দুক ইত্যাদি
ভাষা। ইতি মহাভারত টীকাষা॰
নীলকগ্রঃ। বাদ্যং। যথা। যত্রস্ত্রণ
দোষৌন বিচার্য্যো মধুস্দন। অহ॰
যত্র• ভ্রান্যজীন মে দোষান মে
াঃইতিনহাভারত•।।দাক্যজানি
ক্লিইতি ভাষা। যথা। ইশ্বরঃ
ব্লিক্লান্য ক্লেন্সে হজ্জুন তিষ্ঠবিজ্যান্যন সংক্লানি যত্রাক্রে।।

'নি মাযযা।। ইতি 🖺 🔊 🏦 उ ১৮ অধ্যायः॥ অস্যार्थः । जुर्दङ्ः ना॰ श्रम्यास्य में यात्रा र ष्टरामी जिलाज । कि॰ अर्दन् महीि ज्ञानि भागग নিৰশক্ত্যা ভাময় স্তত্তৎ কর্মসূ পু-यर्खंगन् यथा माक्यखनाक्रानि कृबिः মাণি ভূতানি সূত্রধারো*লো*কে ভাূ-ম্যতি ভদ্বদিতি ৷ যদ্বা য**ন্ত্ৰাণি শ**ু রীরাণি আক্টানি ভ্তানি দেহা ভিমানিনো জীবানিত্যর্থ: । ইতি 🗐 ধরস্বানী ।। 🗱 ।। অথ পূজাবার যন্ত্র-। ভত্র নারদীয়ে। আপো 🕈 🛊 র্হ্বৰণ চক্রণ বিক্ষো: ক্ষেত্র সমুদ্ভব। यञ्जक পুতিমান্থান মর্চনে সর্বদা र्दाः॥ भाजभीय। भाजगुरम मानी যজে পুতিমা মণ্ডলেষু চ।। নিত্যু পূজা হরে: কার্য্যান তু কেবল ভূত-ल ॥ (यागिनी छाज । निक्रा भू-काराप्त्रवी॰ भूखकञ्चा॰ **उरेश**व ह। म-ওলস্থাণ মহানাযাণ যন্ত্ৰস্থাণ পুতি-মাসুচ জলস্থা বা শিলাস্থা বা প্-জযেৎ পর্যেশ্বরী•॥ এতৎ সর্ব• य ব্ৰাভাবে ॥ কৌলাবলীযে। ব্ৰাপ রাজিতা পুয়ু• জবা পুষ্লঞ্চ বিদ্যুতে ৷ করবীরে শুক্ল রক্তে দ্যোণ বা যত্র তি ষ্ঠতি॥ ভত্র দেবী বসে মত্যুণ উদ্মৃত্র **চ**ণ্ডিকাছन•। এउৎ সর্ব• रखाजाद

গ্ৰুতথাচ। যুক্ত মন্ত্ৰময়ণ পোক্ত। मर्जे।जा भवेरे उद हि। पर शायाना र्यथा (छिर्मा यञ्ज रम्य छ्या ।। ७था। जारने नित्थलक्षेत्राहः रह-वजागाण विशुष्ट् । काम काशामि रिताय महतूःथ नियव्यवाद ॥ यक मिजाइ द्रिज्यिन् (एवः श्रीना-তি প্ৰিত:। বিনা যমেণ প্ৰাযাণ (विज्ञान भूजी पिछा। पू:थ निर्वेखनाः অ্জ নিত্যাহ্ স্তক্তবেদিন:। ইতি यखभूबाभाषाना ।। 🗱 ॥ व्यथ था-ব্লণযন্ত্রাণি । তত্রাদৌ ভূবনেশ্বরী बज्जः। भात्रनायाः। ज्यानिथ्याष्टे नि-गर्गवानुप्रद्रगः भागाम्किः बाक्सद्रः । (का (४ व क मन् म् भारत यू विविध्यम-क्षेर्ग मञ्जवयः॥ यह भूवाभन्न यहेक युग् व य व वान् (व्यामाननानर्गत्वः यानिर्धान्तु जना विभा निख्य मः भः ক্তির্যান্ত**্পর•। কো**ষ্টেম্বস্ট যুগার্ণ-মাত্ম সহিতা বৃশাৰরান্তর্গতা মা-याः (कनत्राः मल्यम् विविध्यम्वः | ত্রিপ'ক্তি কমাৎ।। ত্রি:পাশাস্ত্রশ বেঠিতঞ্চলিপিভি হী তি কনাষ্ট্ৰ ক্ৰমাৎ পদ্মস্থেন ঘটেন পক্ষত্ৰ মূখে नारविष्ठेउ॰ उन्नि:। यहार्गन मिन् যত্র প্রতিবাণ ত্রী পুদ । মহৎ। পাশ 🔊 🗝 🌣 क्यार्ल कान चकी निरद्रा 📗

ন্তুশাঃ।। পুথমোঠাক্ষরোমন্ত্র স্ততঃ কামিনি রঞ্জিনি। স্বাহান্তো হুষ্টাক্ষ-র: সক্তিরপর: পরিকীর্ত্তিত: ॥ ত্রী॰ গৌরি ক্দুর্যিভে বোগেশ্বরি স বর্মা कर्। विठाउः वाउणार्णायः नजः मिक करीविजः॥ इंडि घरार्गन যজ্র ।। 🗱 ।। ভারে হুঁ বিলিখেৎ স **রোজ সহরে সাধ্যাভিধানা**বিত । मञ्जानान् वमू मःथाकान् वमूमलाञ्चाः লি**থ্য তদ্বাহ্যতঃ। শ**ক্ত্যা ক্রি: **প**-রিবেন্ডিত ঘটগত পদাস্থ মন্ত্রানন শস্ত্র বশ্যকর পুহাদি ভযজ্লক্ষী-পুদ• কীর্ত্তিদ• ৷৷ ইতি ত্বরিতা যন্ত্র• ॥ 🗱 ॥ भग्नः जानूमलान् उः भूदि-निर्थं ७८ कर्निकायाः भून खादः শক্তিগ বীল্প সাধ্য সহিত তৎ কে: भारतम् कमार । मर्मिना मन् मञ्जवा-न् य्गलामा वर्गान् भूनः भवगान् भ-व्यानीन् खनाना विषाय विनिध्यनः **ख्र**॰ **७**नख्र म**ल** ॥ मञ्जस्र । উत्तिष्ठ পুৰুষি কি•ৃষ্পিষি ভয় মে সমূপস্থি ত । যদিশক্য মশক্যমা তল্মে ভগ-বতি শম্য স্বাহা। মাত্ৰাৰ্ণেন সং ষীত ভূপুর ঘয নখ্যগ । যক্তঞ্চ বি-क्तार्वात्रिन्ताः (भाकि नर्व नम्किम्भा রক্ষাকর বিশেষেণ ক্ষুদুভূত্যদি না मनः। दाक्रांरः जुन्ने दार्क्षानाः वनाः

इ॰ वण्ड मिह्ञा॰ ॥ সূতার্থিনীনা॰ সূতদ রোগিণা রোগ শান্তিদ। বহুনাকি সিহোক্তেন যত্ৰ• তৎকাম (म। मिन: ॥ इंडि वनमूर्गा यखः ॥ 🗱 ॥ অথ লক্ষীযন্ত্র•।বেদাদি স্থিত সা-ধ্য নাম যুগশঃ এশক্তি মারাদ্বিত কিঞ্জ:লুষ্ দিনেশ পত্র বিলসন্ মন্ত্রা-ক্ষর॰ তদ্বহিঃ। পদ্ম॰ ব্যঞ্জন কেশর॰ ষর লসৎপত্রাপ্ট যুগ্ম• ধরা বিয়া-ভ্যা• ব্ৰডন্ত্ৰণা ত্বব্ৰিত্ৰণা যুক্ত• লি থেছেষ্টিত ।। ভূপুরদ্বকোণেষু হ-(क्वी (व(थ)) भूनः भूनः। महावक्वी यञ भिरः मदिन्धर्यं कलभूमः॥ मर्ब मृःथ भूममनः नदीभविनिवात्रकः। বহুনা কি নিহোক্তেন পরম্মান্ন विम्राञ ॥ अथ जिन्द्रविज्ञवीयञ्ज॰ ।। 🗱 ।। भवतान्तरः नवरयानियु भुवि লিংখন্বীজানি বৰ্ণা ছিশো গাযত্ৰ্যাঃ পুনরপ্ত পত্র বিবরেম্বালিখ্য লিপ্যা-ব্ত॰। ভ্ৰিয় দ্বিত্যেন নল্প য্জা ॥ কোণেষু সংবেপ্তিত যজ্ঞ তৈপুর মী রিত বিভ্বন প্রেচাভণ শ্রীপুদ ।। গাযত্রী ত্।নম্প ত্রিপুরাদেবি ॥ িলাহে পদ মুদ্ধরেৎ। উক্ত্যাকামে-पति यक शुरुत्तम्**य धीमहि ॥ य-**स्ट प्रत्यत्याः समः क्लिम **भूति। ए** মান্ত লাক্তিয়েম্ব **স্বাখ্যাতা কৈ**

भूती **नर्शनाक्ता ।** क्षेत्र वाक्स (र्गर यूगा अब है रिप्न 🎻 **निर्थिषा १४० वर्षे का**र्शकार के পুविनिर्थि ए का नाविश्वितः खी॰ वीरजन मभी तिकः जिन्तन क ক্ষোভণ ত্রৈপুর বস্ত্রণ পঞ্চ বন্যে वाजाक शिषः भोन्तर्यं। मह्न क्र ইতি ত্রিপুরা যন্ত্র•।। 🐲 🗀 আথ 🖗 বিদ্যা যক্ত•। বিশেষ• া 🛶 🖂 **भुमका ८ कथ्यामि (छ**। व्रिक्त १का **द्राया मंद्रि (५वीना म**िन्ना সাধ্যনাম দ্বিতীয়ান্ত তল্যে দ্বিবি नित्थंगनु । তবৈব মাতৃকা अर्वा বিলিখেছক বাহ্যতঃ ৷৷ পঞ্চাব্যা **भ्राउदेनव भूलिन পরিবে**ইলে 🕠 उब পূাণ পুভিষ্ঠাপ্য বিদ্যা মঞ্চোত্তর **শত•॥ ७८ म्मृक्ष्मे भुकः शत्राक्षः** (रर्दे ধ্যান পরায়ণঃ। ছেম্রে মৃধ্যুগত কৃ ত্বা রজতস্যাথ বা পুন: 🖯 🏋 ধৃত্ব জগদ্বশ্য হৃদথে জীবু ব্যাভণ। করে थनः वाख्यात्व सञ्चनः कञ्चनः छ (तर ॥ मिथाया॰ (माक् माल्यादि তমাদ্দত্ত্বেন ধারযেৎ। 🗱 🛭 অথ গ **११मा यद्धः ॥ वीजः य**ऐकान अस्तु স্কুরদনল পুরে তারগণ দিক্ষু লক্ষ্য भागा कन्तर्भ जूभी उपन् अस्त স্বালিখেদ্বীজ ষট্ক•। তৎ, সন্ধি 🔻

म्खान् रम्र्ष्ट्र कमला म्ल मखरा वर्गेन् मिट्टीन् পखिषु विद्यान् विवि-থত্ ত্রণশ ক্ষান্ত্য মন্ত্রে পলাশে।। আবীত লিপিভি: ক্রমেণ্ডেম ব শাৎ পাশাকুশাভ্যা মপি ভ্বিয় দ্বিতয়েন বেপ্টিত মিদ• যত্ৰ• গণাধী-শিতু:। লাকা জন্ধুন রোচনা মৃগম-रि ज्रिजाम्य एम् वा मः निथ्रा-ভিবহন লভেড সকলৈ: अंशुर्थः নীযা॰ শূিয়•।। উক্ত॰ মহাগণপতে রিধান সুর প্জিত। সর্বসিজিকর भू भा भगख भूक्षार्थम ॥ #॥ অথ এরামযন্ত্রণ।। তারণ মধ্যে বি লিখতু ননু ষট্স কোণেষু সন্ধিষ্ক मायाः स्वत्र मिल वित्थे काशगर्खः यु भन्ठा । किञ्जल्वयु स्रत्नग मत्या পত্ৰ মধ্যেষু মালা মন্ত্ৰস্যাৰ্ণান্ গুছ-মুখ মিতানষ্টমে পঞ্চবর্ণান্।। দশা-क्रांत्रन अंतिक्षेत्र काहि वर्तिक ज्नूत्र । निएमिक् वित्थिषीरक नद्रिनिः स বরা**হ**যো: ॥ নমো ভগবতে ব্রুযাह जूर्था त्रयूननरन । त्रकाम विषरायाः **ए मधुद्राप्ति मभीद्राय्य ॥ शुमन्नवर्तः** নাযেতি পশ্চাদমিত তেজসে। ব-লায় পশ্চাদামায় বিষ্ণবে তদনন্তর• ॥ भुभवाहि नस्मात्त्र। १यः मालामञ्जः पुर्विविजः। 🕬। जाय नृत्रिः ह यदः।

বীজ সাধ্য সমন্বিতা প্ৰবিলিখিয়া-খ্যেষ্ট পরেম্বথো মন্তার্ণান্ শু, ভিশো विज्ञा विलिए ज्ञिना विश्विष्टर । বাহে কোণগ বীজ বন্ধ বসুধা গেহ बर्यनावृत्र यद्ध कृष् विवशुहाभय तिन् नुष्वः भनः श्रीनुष्वः ॥ अ ॥ अ व गाभाव यज्ञ।।भिष्धः मृत्वन वीज पर्न भूत यूरा कान जाजर यहर्न অর্থ্যাত্ পদ্ম দেশার্ণ সূত্রিত দশদ্ ল কাম বীজেন বীত। পদ্ম কিঞ্জন্ गः इ यत्र विक्छि मन (भा ल्लान र रकाः **७णार्गः किञ्जन्न वाञ्जना**णाः विकृष्ठि युग मत्त्र विश्व जा मक्षेत्र्गान् ॥ भाषा ऋँ-শাভ্যামাবীত কোণী পুর যুগা শুষু । অষ্টাক্ষরেণ লসিত॰ যত্র• গোপা-न रिवजः॥ धर्मार्थ काम कन्नमः अर्ब রক্ষাকর শুত । পঞ্চান্তকো ধরা-সংস্থে। মনু বিন্দু বিভ্ষিত: ॥ পি-গুৰীজনিদ প্ৰোক্ত সৰ্বসিদ্ধি কর• **शतः। मातः** क्काग ठेवनमः वऊर्गा মনুরীরিতঃ ৷৷গোপী জনান্তে পূর্বদে-षञ्चायात्रि वञ्चा । व्ययः मामा রো মন্ডো দৃষ্টাদৃষ্ট ফলপুদ: 11 পূণ-বং হৃদয় কৃষ্ণ ডেম্ভ নৃক্তা তত্তঃ পরু । তাদৃশ দেবকীপুগ্র হু ফট্ স্বাহা नमद्विष्ठ•॥ याउनाक्षत्र मह्या १य• গোবিন্দ্স্য জগণ্পতেই। পিণ্ড র-

তিপতে দ্বী ঞ ননো ভগবতে ততঃ ॥ नन्तभू आय वालापि वशुर्य नाजा भनाय है। (गानीकन नम्म्याउ व-ल्लाग विठाविध ॥ अनुरुष मञ আখ্যাতো গোপালন্য জগৎপতেঃ । यनदः कृष भावित्नो (उष्ठावश्ची-ক্ষরে। মনু:॥ ইতি গোপাল্যক্ত।॥ ॥ 🗱 ॥ व्यथ (गानानम्) यञ्जाखद्रः । भाक् भुज्रक् मिक्शामक् विधि ৰদভিলিখেৎ স্পষ্ট রেখা চতুষ कार्णामाह्न युक्कः वनययूग युकः मध् भूर्वः जिन्छः । त्याकन्तर्गान् भूत्र खादम् भद् विवाद मुश्चेवर्गः नि-थिदा उदाश्य द्वारमार्टिन उदनू भ-রিবৃত দেবকী পুত্র যক্ত।। ত সুকী দেব দেবেত ত বেদে বরতো বত । ত॰ বতো ৰুদতো খ্যাত**॰ ত॰ খ্যা**-তো দেবকী সূত্রণ।। লিখিত ভূৰ্জ্জ পত্রাদৌ যন্ত্রমেতদ্মথা বিধি। বি-ধৃত বাহুনা নিত্য সর্বকাম ফল-পুদ•া৷ পলাশ বৃক্ষ ফলকে লি: थिउ॰ माधु माधिउ॰। (गाञ्चात निथरनरहरू गवाः वृक्ति र्जरवन्ता ।। # ।। অথ শিব যক্ত: । তত্ত্বাদৌ ষট্ে ে শগুল কৃত্বা তদন্ত: সাধ্য নান-যু_{ৰ্}ড প্ৰাসাদ্ধীজ বি**লিখ্য** খ্য ায়ু পুণব মহিত পঞ্চাক্ষর

वर्गान् विविथा विवस्त्यु यत्पक्ष न् उष्विः शक्षभः 🗀 विद्रहर्गः प्रत्वयु ७ देणानाय नमः ७ उर भू-क्षाय नमः खँञाशात्राय नमः खँम-(ए)। जाजाय नमः खेवागरम्याय नमः । ইতি পঞ্চনস্তান্ প্রাগাদি ক্রমেণ निर्थर। उद्दि ब्रहेम्लानि ब्रह-विदा उपलब् माउका वर्गन् वि थ्र । उन्हरि वृंखः का भरतन तः डेरार । এउचाल जभ (श्रामादिना नम्भूबा शावरयट । जायू वाद्यारेन श्वर्यादि निषि र्ज्वि ।। 🐐 ।! 🔻 थ मृजुऽक्षयमः । मर्थः माधाक्ताः ধুব মভিবিলিখেরাধ্যম দিখুলে যু কোণেষ্বস্ত্যু भाग खर कि कि जुरन भाषा किक् हन्तुः विकिक् । विश्व য্ত্র• ভদুক্ত• সকল ভত্ইর ফেড ভূ তাপ মৃত্য ব্যাধি ব্যক্ষনিই দুর্ব भुमयन यूरिकः जीलुमः बोलिस यि ॥ 🗱 ॥ व्यथ कानी सञ्चः । योः मला । जाराः वीजः समाधाः शु ·**থম বসুগৃহে তদ্বহি ক্যা**ইবোণে প্রাদ্য চাপ্তবীজ তদনু ব্দুগ্র ष्ठनमृत्क वीष्ठवर्षः । किञ्जन्नः एट **चत्राष्ट्रः वम्हल विवास चारु**या वीक षष्ठ कृष्टां छ। यत क्षेत्रः ক্ষিতি গৃহগুগধো রন্তরে ধজরাজ 🖟

দেবী বীজ ত্রফ তৎ প্রতিদিশ মপ্না র শক্তিবী জ দ্বাণ তৎ কোণে কোণে लिलेन्यं जिन्नगि गएकः महन विष्याः ॥ 🗱 ॥ व्यथः मान्ति-তারাধারণ যত্ত। তদুক্ত। ফেং ারীযে । যোনিযুগ্মে লিথে-মঙ্গ মন্ত্ৰী হেমশলাক্যা। ক্লীবছী-नान् रीर्घवर्गान् क्यूकारा विविध्य ভঙঃ।। অষ্ট পৰেষ্বষ্টবৰ্ণান্ তদ্বহি ভূ পুরদ্বয়ণ। অষ্টবজুণভূপুরে চ বিলিখ্য भाषरकाखमः ॥ भूवनः भरषे ज्ःड्ज ৰা ৰূপ্যে ৰাপ্যথ সূত্ৰতে। বিলি-_॥ থেজেম লেখন্যা গন্ধাপ্তক সমন্ত্ৰিত ।। দूर्वाकारअन वा निथा क्रमग्रानन বা প্নঃ। একবীরাকল্পে। বেস্টিত भी ज्वेराञ्चन अजुना भन्निरवर्ष्टरंग्ट । वक्षीयादः अङेमृखन निम्ना के जू यन ।। जीना नामजूरक रेवन मरना বাং দক্ষিণে ভূজে। বন্ধ্যাপি লভতে পুত্র• নির্ধনো ধনবান্ ভবেৎ।৷ ইমা• র**ক্ষা॰ পু**রা বধু৷ জ্ঞানার্থ• গোতমা-দিভি:। প্রীত্যর্থণ পার্থি বৈ ক্টান্যৈ: म•गुाम करकाङ्किछः ॥ अमु।र्थः। যোনি যুগ্মে ষট্কোণে। ভন্মধ্যে হেন मनाकारिना ज्ञ्लेभवारि असुम রোচনা রক্তচননে জটামাণসীনাণ স-नाः भः विधाय পह्लि करमण मूलमञ्जः।

লিথিতা তস্য হলেখা রেফ মধ্যে অমৃকস্যরক্ষা প্রক্ স্ক অম্কীনা শৃভ পুত্র মুৎপাদযেতি বা অস্য জ্ঞান প্ৰক প্ৰক ইত্যাদি বা সাধ্য সহিত• বিলিখ্য বট্কোণে ল্লীব ভি-मान् नीर्घ वर्गान् व्या के छ अ छ वाः ইত্যেকৈক• লিখেৎ। তদুক্ত•। স্ব-রাণাণ মধ্যগণ যह ভচ্তুষ্কণ নপুণস-क मिछि। अडेश (अष्टेश (अर्थ) কুী ওঁ ঐ কুী ফট্ স্বাহেতি লিখেৎ । তদুক্ত। বাগুবং স্বলদেবীঞ্চ তার-ক· বাযুব· তথা। হল্লেখা চা**ত্র ন**-खोरि वङ्गिषायिषि मेनुः ॥ अक्षे-ক্ষরো ননুঃ প্রোক্তো নজ্ঞাণাণ সার क्षेत्रिजः ॥ 🗱 ॥ व्यथ यञ्ज निथन मृत्रुः ৷ কাশ্মীর রোচনা লাক্ষা মৃগেভ মহ **इन्हरेन:। विविध्यक्तिम (वर्थन्)। यन्त्रा-**ন্যেতানি দেশিক:।। ডুমিস্পৃষ্ট শব म्मृष्टे॰ यञ्च॰ निर्मान्। मञ्चल। विही-র্ণ লব্বিত মন্ত্রী যজ্র নৈব চ ধার-বেৎমসৌবর্ণেরাজতে পাত্রে ভ্রের বা সম্যালিথে । অথ বা তামুপটে वा छिका॰ क्छा धाद्रव्य ॥ याव-জ্জীব• সবর্ণে স্যাৎ ব্লৌপ্যে বি•শতি वार्षिकः। ज्रङ्कं बाह्म वर्षाण जह-র্দ্ধ তামুপউকে॥ ইতি ভক্তসারঃ ॥ # ॥ जना९ कानिकाभूतात ११।।

१४ । १२ व्यवहार्य मुद्धेवहः ॥ 🗭 ॥ অথ যজ্ঞ সংস্কার: ৷ বাসকেপ্টাইজে । त्राद्या न कन्नरयद्यानी अत्रा तहन মাচরেৎ। পঞ্গব্য ততঃ কৃত্বা শি-বমস্ত্রেণ মক্ত্রিত ।৷ তত্র চক্র 🖚 (भगन्ती भुगरवन मनाञ्चनः। उन्ध् ত্য তত শ্চক স্থাপথেৎ স্বৰ্ণপাত্ৰকে ।। পঞ্চামৃতেন দুংখন भी তলেন জলে न छ। हन्द्रान्त जूगास्त्रन कल्त्री सङ्कुर (भन ह।। भरगा पिश घु छ क्लो मु मर्क-রাদ্যৈ রুক্কমাৎ। তোয ধূপান্তরৈঃ ঙ্গর্যাৎ পঞ্চামৃত বিধিণ বুধ:।। হা-हेरिकः कलरेन प्रवी मष्टे वि वीति भू तिरेजः। कषाय जनमञ्जासः कात्र-(यट ज्ञान मुंबम ॥ ज्ञान जनान) তা॰ দেবী॰ স্থাপফেৎ স্বৰ্ণ পীঠকে। যজ্ৰরাজায় বিদাহে নহাযজ্ঞায় ধী-महि जाता यञ्च॰ भुकात्यार ॥ स्भृ-ষ্ট্ৰ। য**ন্ত্ৰ॰ হৃশাণে**ণ গায়ব্ৰ্যা চাভিম-ব্রথে**। অস্থোত্তর শত**ণ দেবি দেব-তাভাব সিদ্ধয়ে॥ আত্মশূদ্ধি ততঃ কৃত্ব। ষডকৈ দেবতা খন্ধে । তত্ৰা वाश महारिवी॰ कीवन्यामक कावः त्य ॥ डेभगांदे : त्याउनां कंशा मू पुारि छि: मरा। कल जास्ल तेन व्दिम्ड (मंबी॰ उज ममहादट ॥ शक्र म्वारिक रिराट वजानकात्र भवः

ह। अस्क हामत्र एकी ग्रथाए . गा। महत्रका । मह त्मर भूग দদ্যাদাত্ম হিতে রত:। তওঁ। জ-পেৎ সহসুঞ্চ সকলেপ্পিত সিদ্ধয়ে ॥ विविदान ७७: कृदा भुगमहक রাজক•। অস্টোত্তর শত• হৃত্বা স-ম্পাতাজ্য বিনি:ক্ষিপে**।। হোন**ক र्यगुणकाण्ड प्रिथम इस्राहित्तः । (धनुरमका॰ ममानीय अन म्झाकः नक्षाः।। खत्राव मिक्षाः मम्।। 🤃 তো দেব্যা বিসজ্জন ॥ ।। অস্য যোগঃ। কৃতনিত্য ক্রিয়ঃ স্বস্তিবাচন भूर्वक महन क्या । वामार रि अन्करगाबः श्री अनुक त्रवस्या অমুক দেবতাযা: পূজার্থ অমুক यखं मःकात मरुः कतिया। ইति সংকল্প্য পঞ্চগব্য মানীয় হৌ নিভি নত্তেণাপ্টোত্তর শত অভিনন্ত্র্যু ণবেন যক্ত্ৰণ ভত্ৰ ক্ষিপেণ 👙 🤫 🖰 ৰোল্য স্থাপয়েশ। তত 🗝 ওছ **जल इन्सन गन्न** कसुन्नी 🗆 क्रेन्सर 🗸 🦠 যিত্বা পঞ্চগব্য মানীয 🍪 লিভি 🗃 **ত্রেণাপ্টোত্তরশত মভিম্কর পু**ণ্টা প্রবৎ শোধ্যিত্বা স্থাপরে । ত ক্রনঃ। পুথন ক্ষীরেণ স্থাপ্যক্রি প দদ্যাথ। এব দ্বা গতেল রপু শকর্ষা চা ততো ২৪ 🖘 কট্ট

অন্ধ্র গোরে চনা চন্দন মিশ্রিত रखारेयः न्नाभरय<। সর্বত न्नान मृल | মন্ত্রেণ ততো যত্র মৃত্তোল্য স্লা-शुन उৎ म्मृक्षे यखत्राह्य विदाह মহাযজায় ধীমহি তল্পে যক্ত পু-চোদ্যা**্ । ই**ত্যষ্টোত্তরশত নভি मखा भागमु ि हा । सर्गार । सम्र পুাণ পুভিষ্ঠা মজস্য বুন্ধ বিষ্ণু মহে-শ্বরা ক্ষ্য ক্ষ্মন্তু: সামানি ছন্দাণ সি চৈতন্য দেবতা প্রাণপুতিষ্ঠাযা বিনিযোগঃ। তদ্মথা। আ: ত্রী কো যে রে ল ব শ যে স হো হ সঃ অনুক দেবতাযাঃ প্রাণা ইছ প্রাণাঃ ৷ এব মামিভ্যাদি অমূক দেবভাষা कीব ইহ স্থিত:। এব আনিত্যাদি অমুক দেবতাযাঃ সর্বেন্দ্রিয়াণি। এব আমিত্যাদি অমুক দেবতাযা বাজ্মন শক্ষ: শ্ৰেত ঘাণ পাণা ইহা-গত্য সুখ চির তিষ্ঠন্ত স্বাহা। ইতি প্রাণান্ পুতিষ্ঠাপ্য তত্র পুকৃত দে-বতা নাবাহ্য ষোডশোপচারে: প क्षाभगादेत दा भूकत्य । उठः পউসূত্রাদিক• দত্বা অস্টোত্তর শত• কপ্তা শক্তশ্বেৎ বলি দদ্যাৎ। ত তো ২স্টোত্তরশত হোন কৃত্বা পু-় <u>শ্যাহুতি সম্পাত দদ্যাৎ। হোনা-</u> াৰে দ্বিগুণ জপ: কাৰ্য্য:। ততো

मिक्गा॰ मद्या व्यहि पावशात्रग॰ च-য্যাৎ। ইতি তজ্ঞসার:।।#॥#॥ ঔষধ পাকার্থ যজ্ঞাণি যথা। ভাণ্ডে-বিতন্তি গম্ভীরে মধ্যে নিহিত কুপি-কে। কৃপিকা কণ্ঠপর্য্যন্ত বালুকা-ভিশ্চ প্রিতে॥ ভেষত্ত কৃপিকা স'স্থ' বহি না যত্ৰ পচ্যতে। বালুকা যত্ৰ নেতৰি যন্ত তন্ত্ৰ বুগৈ: মৃত ।। वालुकायद्ध ।। #।। निवक्त भोवश সূত্র• ভ্রের্জে তঞ্জিণান্তরে। রসপো-টলিকা॰ কাঙে দৃঢ় বধ্বা গুণেন হি।। সন্ধান পূৰ্ণ সম্ভান্তঃ স্বাবলম্বন সং-श्चिष्ठ•। व्यवसाब्हानायमञ्ज• <u>उ</u>त्त-मुक करमण हि ॥ (मानायन्त्र मिमः প্ৰোক্তণ স্বেদনাখ্যণ তদেব হি। স-স্ধান কাজিকাদি ইতি দোলাগন্ত ॥ 🛊 ॥ नाषु ङ्वानी मूर्य वर्षः वरञ्ज (सः দ্য নিধায় চ। পিথায় পচ্যতে হত্ৰ তদ্মস্ত (স্বদন সৃত ।। স্বেদনযন্ত্রণ ॥#॥ অধ: স্থাল্যা• রস•ক্ষিণ্ডা নিদ-धाउन्याभित । इनो मूर्कन्थी॰ नगुक् निक्धा मृषू मृष्मया।। উদ্ধृ ञ्चान्याः बनः किञ्चा पूल्या भारतान्य यञ्जञः । ञक्षष्ठाङ्कानत्यमधः याद পুহর পঞ্চ ।। স্বাঙ্গণীত ততো यञ्चामगृशीयामुन मुख्यः। विम्ता-ধ্রাভিধ• যত্র মেতত্তজ্জৈ ক্না-

হ্বত ॥ বিদ্যাধরযন্ত্র ॥ 🛊 ॥ বালু-কাসু সমস্তাক গর্ভে ম্যারসাহি-**छ। मीरक्षाभौनः मः**तृग्याम्यखः ज्**षत्र नामकः ॥ ज्षत्रय**खः ॥ #॥ ला। मृ पिएंड मूर्थ । उमक्रवंडः। ইতি ভাবপুকা**দা:** ॥ যত্ৰক• ক্লী যত্ৰকাপ্ত•। ঈদ ইতি ভাষা। যম্যতে কাণ্ঠমনেনেতি যম ধাতো জ্র পুত্যযেন যত্রণ ততঃ স্বা-র্থে ক পুত্যযেন নিম্নন্ন।। যস্গৃহ• ল্লী তৈলিশালা। ঘানিঘর ইতি ভাষা। ইতি হেমচন্দু:।। शञ्जाताः भुः कनायविष्णयः। अवैव ইতি ভাষা। ইতি শব্চন্দ্রিকা॥ ষত্রণ ক্লী ব্লহ্মণ ।। বন্ধন ।। নিয-মন•। ইতি মেদিনী॥ यखना जी भीषा। यथा। महनजाभ ভরেণ বিদীর্য্য নো यদুদপাতি ভূদা ममनश्रम्ः। निविष्ठ शीन क्रव्हय य-ন্ত্রণা তমপরাধ্মধাৎ প্রতিমর্বতী । इंजि रेनव्य ८ मर्गः ॥ বস্ত্রপেষণী ক্রী পেষণার্থযক্ত । যাঁতা इंजि ভाষ।। ইंजि क्रोप्तः॥ যক্তিকা জী পন্ন্যা:কনিষ্ঠাভগিনী। यथा। कनिश्वामाजिका श्रांनी य ত্ৰিকা কেলিস্ঞ্চিকা! ইতি হেম-

চন্দু: ।।

যজিত: ত্রি বন্ধ:। ইতি ধরণি

যজী পু॰ যজবিশিষ্ট:। যজশদ্দা
দস্ত্যর্থে ইন পুত্যুযেন নিয়ম:॥

যভ ঔ নৈথুনে। ইতি কবিকল্লছম:

॥ ঔ অযাপ্নীৎ যভতি যুবা। ইতি

দুর্গাদাস:॥

यम 'ঔ উ বিরতৌ। ইতি কবিকল্প ক্ষমঃ।। 'ঔ যন্তা উ যমিত্বা যান্ত্বা। বিরতি নিবৃত্তিঃ। যন্ততি পাপাৎ-সাধুঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

যম ক মি পরিবেষণে॥ তদভাবে। ইতি কবিকল্লজমঃ॥ ক নি যমযতি ষাময়তি পরিবেষণ অন্নাদে রর্পণ ।বেষ্টন নিভেয়কে। বিষভ্যব্যাপ্তা-বিত্যস্য ৰূপ মিতি রমানাথ:॥ কেচিত্র পরিবেষণ এবায় মানুদ-कः। यभयजामः विवाय गृशी। অন্যত্র নিযাম্যতি **স**ংযাম্যতি ই-ত্যাহু:। অন্যে তু অগরিবেষণ এ-बायः मानुवद्धः। नियमयि विमार्ग পুস্থিতানান্ত দণ্ডণ। ইতি **শাস্**ন্ত-লে। পরিবেষণে তু যানযত্যম• षिकाय गृशी ইত্যাহः। তেন উ-ভয়স্য প্রামাণিকত্বাদুভয়ত্র বিকঃ क्काभनार्थकानुवद्यः क्षः 🚶 🦥 मूर्गामाञः ॥

यमः भू मकिनिक्भावः। उरः পর্য্যায়:। ধর্মারাজ:২ পিতৃপর্তি: ১ সমব্বী ৪ পরেতরাট্৫ কৃতাম্ভঃ ৬ यमूना जाुं छ। १ भननः ৮ यमदा है २ कावः २० मध्यमः २२ मुक्ताप्तरः **১**২ বৈবশ্বতঃ ১৩ অন্তকঃ ১৪। ইত্য मतः।। धर्मः ১৫ धर्मता है १५ जीवि (ভেশ: ১৭ মহিষধৃজ: ১৮ ঔডম্বর: ১৯ म् अथातः २० कीनामाः २**)** म्य २२ महिषवाह्नः २० भीर्गारः २८ ভীমশাসন: ২৫ কন্ধ: ২৬ হরি: २१। इंडि भपत्रज्ञावली ॥ कर्णक्रः २৮। ইতি को । । । । । । ठ जूर्य भ यम जर्भग यथा। या काश्वि সরিত পাপ্য কৃষ্পক্ষে চতুর্দশী । यम्नायाः विष्णस्य नियं छर्न-(यम्यमान्।। यमाय धर्म्यत्राज्ञाय मृ-**ज**ारव हा छका यह । रेवव ब जाय का वाय नर्ब च्डक्क याय ह ॥ श्रेष्ठ प्र-ज्ञाय पद्भाय नीलाय नाजरमिश्रत । वृत्कामद्राय विज्ञाय विज्ञ ७ ४ १ व नमः ॥ একৈকস্য ভিলৈ মিশু। खी॰ खीन पराए जनाक्षनीन्। गःवट्मत क्**ड॰ भाभः उट्या** দেব নশ্যতি।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ধৃত ভবিষ্যপুরাণব্চন ।। 🗱 ।। ত अग्राद्भिंख र्यथा। मः छा ह ब्रविः

ना मृक्षा नामी नयङ (नाहरन । यङ **ख**डः माद्राया **९कः मःखाः व**ठन म्युवी ।। भयि मृष्टि जना यमा । ब्रक्ष (নত্ৰ সংযম। তথ্যাজ্জনিষ্য-श्य मूर्ण भुका मःयमनः यमः ॥ मार्क-ণ্ডেয উবাচ। তত তুস্যান্ত সংজ্ঞে ভতৃশাপেন তেন বৈ। যমশ্চ যমুনা **ष्ट्रियः भूथ्याञा जूमहानही॥इ**छिमाः কণ্ডেয় পুরাণে বৈবস্বত মনুম্বরাধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ পুণ্যাত্মনা॰ সম্বন্ধে তস্যৰূপ• यथा। जानागठा॰ छाठा मृध्वे। नद्रान् थर्मभद्रायगान् । ভाক্ষत्निः भ्रीजिम। नाम् अयः नात्रायः ।। ह-ज्वाहः भागमवर्गः भुक् सकमालकः ণঃ। শহ্ন চক্র গদা পদ্ম ধারী গৰুড-वारुनः ॥ अर्गयः छाभवीजी ह स्यत **टाक्** उदाननः। किद्रिही **ब** खनी टेटव वनमानाविज्यिजः॥ 🗱॥ भाभि-না॰ সম্বন্ধে তস্য ৰূপ• যথা। ত্ৰি•শ-আেজন দীৰ্ঘাঙ্গোবাপী সদৃশলোচ-नः। थू मुवर्णा महारउकाः भुनयास्त्रा-ধরধ্বনি: 🛚 ভ্ণাধিরাজ লোমা চ জ্ব-वर्षा निथागुरक्ष नामा बक् सुबर् श्वात्र खेत ब्लिंड सहानिवः॥ जुहीर्य দশনশূণি: স্পোপন নথাবলি:। **পুচও মহি**ষাৰ্চ: স॰দ্প্রদশন্তদ:॥ **দণ্ডহন্ত শুম্ম্বাসা ভুষ্টী ষটিলান**-

নঃ।।ইতিপাদ্মে ক্রিযাযোগসারে২২ व्यव्यायः ॥ 🗱 ॥ व्यम्यानिष्काद्वा यथा (भावाह धर्मा यम इ॰ व्वीम कार्य) ज्या ७८ थन् धर्मत्राज । तुष्कावाह ৷ যে ভক্তা: পুণ্ডগ্লীকাক্ষে কৰ্মণা ম-নসা গিরা। স্বকর্ম নিরতা দাস্তা ন নিয়ন্যাহি তে ত্বা॥ কৃষ্ণ: সংপ্ क्रिटा रेग्स रेगः क्षः ममूनानिजः ্বৈশ্চ নিভ্যু স্মৃতঃ কৃষ্ণোন ভে वृद्धिययाभगाः ॥ नमः क्काह्रजा नष्ठ वामुप्तरवज्यभीविजः । रेय जीव ভাবিতা ধর্ম নতে ত্বদ্বিষযোপগাঃ ॥ मान ममिक र्यं कक महु छः श्री-যতা নিতি। শুজা পুর:সরৈ ধর্ম ন তে ত্বদ্বিষযোপগা:।। উত্তিষ্ঠক্তি: अशिक्ष क वृक्ष किन्द्र कनार्ननः। रेय भृउस भरा धर्म न ७ दुहिषरा**ग**ः गा:॥ मर्बराषामु (य क्ॐ मः मतसु) চুরস্থি চ। ভদ্জাব ভাবিনো যে চন তে ত্বিব্যোপগা: ৷৷ সএব ধাতা লর্বা তলিযোগকরা বয় । যম সং-যমনে ত্যক্তঃ সো হমত সংযমকো ছরিঃ।। ইতি বহি পুরাণে নারসি॰ रु शुम् डावाधायः ॥ 🗱 ॥ व्यालिह । ব্ৰাহ্মণ উৰাচ। যৎকৃত্বা সুম**হৎপু** णाः वर्गाक्षमं विनिर्वास । भूमाणः पुः व्हि लाकानाः क्**लः (म.तुहि उद्यन**

॥ যমউবাচ। যমো । যম ইতি 📜 र्वेथा कुरिविकाल हनः। आजा ह य-**बिटा एक न उरि**गुद यम: श्रृजः॥ আনৃশংস্য ক্ষমা সত্য অহিংসা म्म बार्जवः। बडानः नुत्रादि। माध्यंहः माखायक यमा मना। यरमक नियः रिमरेक्टव यः करत्रा छ। जा मःयमः। मः চাদৃষ্টা ভুনা যাতি পর বুন্ধ সনাত-ন ।। ইতি তবৈব যন শৰ্মিলোপা थ्यान ॥ #॥ मा विजी कृ उ॰ यना छै-क॰ एषाञ॰ यथा। जाविज्यवाह। তপসাধর্মনারাধ্য পুষরে ভাক্তরঃ পুরা। ধর্মাংশং যং সূতং প্রাপ ধর্ম व्राज्ञ नगानाङ् ॥ १ ॥ भगठा भवं ভূতেষু ষস্য সর্ম্য সাক্ষিণ:। অ-তো যন্ত্ৰান শন্ন নিতি ভং পুণমান্য-**হ•।।২।।যেনান্তশ্চ কৃত্যোবিশ্বে সর্বে** या॰ की विना॰ भद्र॰। कर्मानुक्रभ कारलः **ठ ७**॰ क् बाद्यः नगाम प्रश् ॥ ०॥ वि-ভরি দণ্ড দণ্ডায় পাপিনা শুদ্ধি र्ट् अत् । नमानि ७ मध्यतः यः भाः छ। मर्बरहर्श्वा॰ ॥ ८॥ वित्थं ३ क्वय-ভ্যেব যঃ সরামৃশ্চ সন্তত। অতীব षुनिवार्याक्ष उ॰ काल॰ भुगनागाइ॰ ॥ ৫॥ उन्नर्श्वी रिक्षरवा श्रमी निश्यवी **विक्रिटिन्**यः। की विभाः क्यांक्यार ख॰ यमः भूगताम् २०११ ७ ॥ १७००

দ্বামশ্চ সৰ্বজ্ঞো মিত্ৰ: পুণ্যকৃতা• ভবে। পাপিনা ক্লেশদো য তত পুণ্ড भिज नगाम । १।। यब्हिस वृक्षः ণো বংশে জ্বন্ত বুন্ধতেজসা। যো-ধ্যাযতি পরত্রুক্ষ বুক্ষবংশ নমা-माइ॰।। ৮।। ইजुङ्ग मा ह मारिबी भुगनाम यमः मूरन। यम खाः विकु ज-জন• কর্মপাক মুবাচ হ ।। ইদ• যম।-क्षेक निजु भा अ कथाय यः भारेट । যনাত্তস্যভয় নাতি সর্বপাপাৎ भुग्ठाउ ॥ महाभाभी यमि भारे थ নিত্য ভক্ত্যা চ নারদ। যন: করো-তি ত॰ শদ্ধ• ফাযব্দুহেন নিশ্চিত•।। **ইতি বুন্ধ**বৈবৰ্ত্তে পুক্তিখণ্ডে ২৬ **অ** थ्रायः ॥ 🗱 ॥ भात्रि ভाषिक यम एडा यथा। कार्जिकमा दिनानाष्ट्री विद्याद-গুহাযণস্চ। যমস্য দশনা এতে লম্বাহারী স জীবতি।।ইতিবৈদ্যক• ॥#:#॥ শরীর সাধনাপেক্ষ নিত্যক র্ম। ইত্যমর:। উপাযান্তর নিরপেক্ষ• শরীর নাত্র সাধ্যু নিত্যু যাবজ্জীব भवना । कार्य । यदकर्म मञ्जास्य गानि তদ্দা:। যনেরল্। অহি সা. সত্য वচন॰ বুক্ষচর্য্য নকল্পতা। অত্তেয় খনক॰ ল্লী শক্ষালস্কার:। ভস্যল-নিতি পঞ্চৈতে যনা শৈচৰ বুতানি D 11 ইতি बनुः 1 ইতি ভটोकायाः **७**इर्डं: ॥ म **ठ अक्टाक्**रियागान्तर्ग

ভাঙ্গবিশেষ:। সভু দশবিধাে যথা । वुक्तवर्गुः प्या कास्ति र्थानः अडा मक्तु जा। अहि॰ मा १८ छय माधुर्य। मन रेन्ट्रां यनाः मृजाः ॥ इंजि गाक्ए ५०६ व्यथ्रायः ॥ 🗱 ॥ म ह পঞ্বিধাে যথা। অহি•সা সত্য ম ख्यः वुक्रवर्गानित्रगुरहो। यमाः नकाथ नियमाः (मोठ हिविध मी-রিত ।। ইতি ভবৈব ২০০ অধ্যা-यः ॥ 🗱 ॥ म • यमः । यथा । विद्यारमा वियमा यामा यमः मःयान मःय-মৌ। ইতি চামর:।। কাক:।। শনিঃ । ইতি মেদিনী ॥

यमः वि यमजः। इंडि मिरिनी ॥ ত্তযো র্জ্যেপ্তত্ত্ব নিৰুপণ যথা। বহি ৰ্ণেষ্ চারিকাঅন্যোঃ প্রভন্মতঃ । यम् बाजम । यमस्याः भणा जि भू-থন নৃথ ।। সন্তানঃ পিতর শৈচব তিমান্ জৈ। ৪॰ পুতি গিড॰। জন্ম श्राथनग्रा है। इंग् यम्याः नजू निन् विक भाषमा बन्न भाषमा म-न्मार मूथरणंन शुष्नाए। इंडि উদ্বাহতকু•॥

क्रगामि यथा। मङ्ख्य भ्यगर्था-याः यत वाञ्जन मः श्टाः। करन्त **छ रेनदावृद्धि यंनकः (दिनिशम्)एछ।।**

অত্ৰ দ্বয়ো ব্লপি পদযোঃ কুচিৎসা र्थकष् वृद्धिमत्रर्थकष् वृद्धित्वमा সার্থকন্ত্ব মপরস্য নির্থকত্ব মত উক্ত• সভ্যর্থ ইতি। তেনৈব ক্রমেণে তি দমো মোদ ইত্যাদে বিভক্ত বি वयवः স্চিত। এउह भर भारार्क **भाकावृ**खिद्वन भाषाम्यावृख का নেক বিষয়ত্যা পুভ্ততম ভেদ• দিল্লাত্র মুদান্ত্রিতে। নবপলাশ পলাশবন পুর: সুট পরাগ পরা-গত পদ্ধ । মৃদু লভান্ত লভান্ত भाषाक्यन् अभूत्रिः भूत्रिः भूत्र नाचरेतः ॥ **अब भ**नावृद्धिः भना শ পলাশেতি সূরভি• সুরভি মি- 🛚 **७) वह हर्याः मार्थकवु॰ वजान्न व**-তান্তেত্যত্র পূথ্মস্য নির্থকত্ত্ব প রাগ পরাগেত্যত্র দ্বিভীয়স্য এব मन्द्रवाभुष्राशार्यः। यमकारते छ (वरिकार एता इति नित्रा ख्या। ইত্যক नयाए। ভুজলতা कउं মবলা জন ইত্যত্র ন যমকত্ব হানি: । ইতি সাহিত্যদর্পণে দশ্মঃ প রিছেদঃ ॥ 🗱 ॥ যুসজে ত্রি। ইতি (मिनि ॥

यमकः भू॰ मःयमः। ইতি मिनी।। यमकानिन्ती जी मःज्जा। माहमू योभनी। ইতি শদরন্নাবলী।। यमकीर्टः भू॰ घृष्ट्रव्यामाकीर्टः। इंडि ' जिकाश्रम्भयः॥

यमत्कारिः श्वी नक्षायाः भूर्बः भृषि-वंशक्षञ्ञ्ञारम् दिन्यः। यथा । नक्षा स्मर्था यमत्कारि त्रम्याः भुक्त शिक्षभूतः यमत्कारि त्रम्याः भुक्त शिक्षभूतः मूरमकः (मोरम्य भ खाः मिक्षभूतः मूरमकः (मोरम्य भ्य यारम्य वर्षवाननकः ॥ स्वृख्य भाषाञ्चतिकानि जानि स्थानि य-द्यानिविद्या वर्षाः ॥ देनि मिक्षा-स्थानिवासिः॥

यमघन्देः श्रु॰ यागिविष्णवः।यथा। ष भवा প्रकृत्वान्त्री भूष्रारम्भवा ह ठन्मुरयाः। (क्राक्षानुदाश ভद्गनी ठा-श्विनी अबवामत्त्र ।। इस्ताम् हन्मुः জে মূলা পূৰ্বাষাঢ়। চ রেবতী। জी-বে হ্যান্তরভাদুক্ত শ্কাহে স্বাতি-রোহিণী।।শনিবারে শতভিষা শু-বণা যমঘণ্টক:। ইতি সারসংগৃহ: ।। অপিচ। ঘণ্টো ২থগুর্ক্নযুক্তে স্ব-গৃহপতিদিনেসৌন্যবারে র্যামাপি । यम् वङ्ग्रंकान निर्णय। यथा। यभयाणे जारा कारा में मिला कारा मारा नाफिकाः। अत्मिषाः भाभरयागाः ना॰ मधाद्वार भव्रतः मूछ ॥ অস্য দোষা যথা। এভি র্নাতো জীবেত যদি শক্ত সমো ভাষেং

विश्व विश्व नात्री याजायाः म त्रा छ्दर ॥ नियुगः कृषि वाणि छाः विष्ठात्रास्त ह मूर्थ । गृष्ट् भूति । न्यानात कनः नास्ति वु ॥ पात ह नियुगा । मूछकर्माणि म बाणि तेन कर्या पिहक्यः ॥ ইति क्षा जिख्लुः ॥ त्रविवाद २०।२२। भागवाद ४।२। मक्नवाद ११ भागवाद ४।२। मक्नवाद ११ भाजवाद १६। ॥ निवाद । २६। २१। ইति यमयक्तियानः ॥

यभजः वि এककामोरिनकगर्द्धकाछ-जञ्जानहरः। यथा। यभा १ नऽमि स्थायनहान। कारक मनदा महिनी। इंजि निमिनी॥ व्यम् ८ हाऽ १ द्वा यम भारक मुश्रेवऽः॥

যনদগ্নি: পু: জনদগ্নিম্নি:। সভূপ রশুরানপিতা। ইতি ভরত দ্বিপ কোষ:॥

यमपूजः भू यममाठतः। यथा।
धर्मप्रजेवाठ।(क ग्रा विक्ञांकाताः
भाग ग्रुत्र भागयः। मः छु। कत्राज्ञा
वनना अञ्चात महण भू जाः।। ग्रा
ऋर्षि महावीताः ज्ञा भाग्याक नियः।
हनाः। क्ञा उथाभि गुमाक नियः

(कन मृष्णिकः ।। यमप्ठा छितः । यमप्ठा वयः महर्ष यनाञ्चा कातिनः महा । जुम्हरङ। १यः विज्ञास्याकः मृस्णान् कन्यात्नाहयः ॥ ইতি প-पान्तात कियार्यानमात्त ७ जः भागः ॥

यमम् उकः भुः काकः। ই जि भाषः-त्र इति विशेषा समम् उन्ह ॥ यमम् जिका स्त्री जिख्छि विश्वः। ই उऽ-मतः॥

यमाप्तवजा जी जतनीनकावः। इंडि व्याहनुतः॥

यमकाः भू भागातिव्कः। ইতি রাজনির্ঘটি:॥

यमिष्ठीया जी कार्डिकण्या विशेषा।
जुःकृषिठीया देठि था। उटकृछा॰ यथा। लिक्ष्ण्यारा। कार्डिक
जुषिठीयाया॰ ण्याया॰ जुःक्ष्ण्यन॰। या न क्र्यापिनमा हि जुःख्यः
मश्रद्धान।। जमा देठि लियः।।
महा जायत् । कार्डिक ण्यापकः
मा ज्यापिक ग्रंथि हित । यरमा
यम्नया पूर्व । जार्डिक ग्यापकः
मा जमापिक ग्रंथि । यरमा
यम्नया पूर्व । यरमा
यम्नया पूर्व । यरमा
विभाविक ग्रंथि । यरमा
जिमापिक ग्रंथि। यरमा

তঃ। তথা যমঞ্চ চিত্রগুপ্তথ্য যমদু তা॰ চ প্রযেৎ।। অর্ঘ্য শ্চাত্র পু-माउत्तर्भा यभाष महब्बरियः । मह-জন্ববৈ ভণিনী ভাুত্ভি: ॥ অর্ঘ্য মন্ত্র:। এছেহি মার্ডির পাশহন্ত যমান্তকা লোক ধরামরেশ। ভ্রাতৃ দ্বিতীয়া কৃত দেবপ্তা গৃহাণ চার্য্য ভগবন্ধনন্তে ৷৷ ধর্মারাজ নম স্তভ্যুণ ন ম তে যমুনাপুজা পাহি মা কিন্ধরৈ: সাৰ্দ্ধ সূৰ্য্যপুত্ৰ ননো হস্ত তে ॥ यम् नाक जः भूका नमजूर्याए । यमबन र्नन एड २ छ यमूरन लाक भूबिए । বরদা ভব মে নিত্যু সূর্য্যপুত্রি নমো **२** छ। यम म्बा भारेट । जाउ স্তবানুজাতাহ• ভূড্ক ভক্ত মিদ• मुड । श्रीज्य यनताक्रमः यनुनाया বিশেষতঃ।। জ্যেষ্ঠা চেন্ডদা পুরা-তাহ মিতি বদেশ। অত্ত ভোক্তব্যণ পুষ্টিবৰ্দ্ধন মিতি বিধি সম্ভিব্যাভৃত ফল শু,চ্যা ভোজন নিযমস্য পুৰ্ধা ন্যান্তন্য মৃখ্যকালো হষ্টধা বিভক্ত मिन शक्यां भा गास: 1 यथा मकः । পঞ্চনে চ তথা ভাগে সম্বিভাগো यथा ईजः। পिত्रित मन्द्रानाः की-টানাঞ্চোপদিশ্যতে ৷৷ সম্বিভাগ• **७७: कृदा ग्**रुष्ट: (भव जूएवर । केंजिकाम भूजागोम्यः वेश्वक मध्य-

न्यय ॥ त्रश्चिलाला विज्ञानित्र **পু**তिপाদन । (দবো ২ত্র বৈশ্বদেব नक्षी। পঞ্মाः मानाः जु। न जू-ঞ্জীতোদ্ভ স্নেহ• নাতি সৌহিত্য মাচরেৎ। নাতি পুগে মাতি সায• নাতি সন্ধ্যা সমীপত:।। ইতি মনূক্ত भगूर्वस्य भूर्यराप्त्यास्य**ञ्ज कात्ना**-পি গ্রাহা:। সৌহিত্য তৃপ্তি:। অত্র ভোজনস্য রাগ প্রাপ্তত্ত্বেপি তৎকা-লস্য। মূনিভি দ্বিশন প্রাক্ত বি-পুাণাণ মর্ত্য বাসিমাণ নিত্যণ। অহ-নি চ তথা ভমষিন্যা সার্দ্ধ পুহর यामान्यः ॥ इंडि काउप्रायनीत्यन नियनि उदारकाञ्चन कालम् १ देव-(द्वन भाजीयदार न जामाना भा-खनुष्ध्रभन्नेवि भगूर्मामामक्तिः ॥ अज्ञानश्रयनः जाञ्चानाः । (भुज-পক্ষো ভর দিতী যাযা • ভনিষেধাৎ । তথাচ রাজমার্ত্ত:ও। পেুকো চৈ চা ৰিতীয়া স্তা: প্ৰেতপক্ষে গতে তৃ যা । যাতু কোলাগরে যাতে চৈত্র্যাব-न्।ः भारत २भि ह ॥ हार्ज्यात्म সমাপ্তে চ দ্বিতীয়া যা ভবেত্তিথি:। পরাধেতা স্বনধ্যায়: পুরাণৈ: পরি-कीर्खि उ: ॥ क्ष्यां जिर्ष । उव। यम -वि**ञीनायाः या**वायाः सद्रगः ভरितः। ইতি তিথ্যাদিতভু• ॥ 🛊 ॥ অস্যা•

ব্রত বিধান যথা। নারদউবাচ। ভ गवन् शुष्टु भिहाभि खामरु विनया-বিভ:। তদুত বুহি মে স্বামিন্মৃত্ (यन न भगऽि ॥ जन्नदायः मरू পুণ্য শোভন বৃত মুক্তম। পুসাদ **জ**ৰু মে স্বামিন্ যথাহ• তৎ করো-মি ভো:।। বুক্ষোবাচ। যদি চেছসি বিপ্রেন্দু বুতানা বুত মুত্তম । বুত যমদ্বিতীয়াখ্য শৃণু দ্ব মৃত্যুবারণ।। কাৰ্ত্তিকে মাসি শুক্লাযাণ দ্বিতীযায়াণ মুনীশ্বর। কর্ত্তব্যু তদ্বিধানেন হৃপ মৃত্যু নিবারণ ॥ বান্ধ্যে, মৃসূর্ভে চো-ত্থায চিন্তবেদাত্মনোহিত । প্রাত: क्षा विषः त्रानः मख्यायन शृर्वकः ॥ ততঃ শুক্লাম্বর ধরঃ শুক্লমাল্যানুলে-পন:। কৃত নিত্যক্রিবে। হৃষ্ট: স্পু লাক্দ ভূষিত:।। বিধিণ বিষ্ণুঞ্চ ক দুঞ্চ সংস্থাপে)। তুষরে শুভে। পদ্মণ मक्षरण क्षा भूकत्य मृश मानमः ।। इन्त्राच्य कर्त्र असूरि विंब गडम । भूरिम्न धूर्रभक्त रेनावरेम्। नां द्रिक्नां पि छि: क्रेनः ॥ अद्रयः তীক্ষ বরদা॰ বীণা পুস্তক ধারিণী।। धाराय मृद्राचत्र धताः इःमवारुन স-স্থিতা।। ততো মৃত্যু বিনাশার্থ नालकाद्राः शयस्रिनीः। विशुगयत्वनः विमूर्य गाक मन्त्राट मवटमका ।

অপমৃত্যু বিনাশায় সংসারাণ্য তারি: কাণ। বিপু তুভ্য নিমাণ রৌব্রীণ ধেনুণ मप्पुम्राम श्रष्ट्र ॥ इंडि वाक्य विहा-द्रिग (ध्रनु • एम्) विकाउरम। स्लीनाय न्मा खाय द्वाग श्रीन दिकाय देव।। छम- · ভাবে চোদসম্ভ সবস্ত্র সহিরণ্যক । ঔषुषत विधातन मिल्नुपन्ता प्रिका-**उर्य ॥ उम्राभ**रवार्ड विरभुन्द्र वि-भाग ममुभानःहो। एम्या कार्त्विक শুল্লাযা॰ দ্বিতীযাযা॰ বিশেষত:।। জ্ঞাতি শুেষান্ তথা বৃদ্ধান্ সংপ্রা ठाखिवानरयः । नान्निरकवानि ना-নেন ভোষযেৎ স্বজনানপি ॥ ততঃ সোদরসম্পন্ন। ভগিনী যা ভবন্মনে । जन्ता गृहः ननागज्य मुप्तशानाः-**ভि রাজ্ঞান্ছ।। ভদু ভগিনি শুভগে** द्वरहित्र मत्रमीकरह। (भुगरम रेम्) নমক্ষৰু মাগতোহ॰ ত্বাল্য ॥ ইতি শুত্রা ভগিন্যাদিঃ সোদর বি-नगान्विः । মृদ्वारेका छठ छना भूकन किया मह्य ॥ यम्। <u>ज</u>ाकृ मञी जाउ खु॰ भा वयिम वाक्षवः । ভোক্তব্য ভোদ্য নদ্ধেহে ত্বাযুষে वन्तीनक ॥ कार्जिक मूक्तभक्त मु षिञीयायाः नाहापत्रः। याना यमून-या পূৰ্ব ভোজিত: স্বগ্ছেছিত: ॥ অমিন্ দিনে খনেনাপি প্জিতা ভ-

গিনী শুভা। স্বস্নরো বেশানি যো ন ভুছকে যমদ্বিভীয়া দিনমেব লক্ষা।। ত পাপিন সর্বস্রাঃ পুর্ব্য সংসা-त्रभार्ण त्रहेगन्डि विभु ॥ उत्पास्त्राजा ষস্গৃহে ভোক্তব্য নাসি কার্ত্তিক। मुद्रायाक विजीयायाः नर्दियर्गाय (छ) विज्ञः ॥ दार्य दार्य ठ कर्खवऽ॰ य-শসে আযুবে শি্যে। ততঃ সম্পূাপ্য সুমতে ভগিনৈ স্বিধানত: ॥ স্বর্ণ। नकात्र वजारि मान अथकात्र माम-ता । शुन्द्राचि मार्व शुमुरा-वन उ: मुधी: ॥ में जानियः भुगृञ्चा-न्। नमक्रु अक्नाभाष्ट्। जर्दा छः गिनाः माखाया। ब्लाकान्कमण खरा ॥ বজ্ঞান্ন পান সৎকারে র্ভোন্ধনৈঃ পুষ্টিবৰ্দ্ধ নৈ:। করোত্যেব নরে। বি-बाम याजियम याजनाः ॥ व्यश्मृजुरः নচাপ্নোতি সত্যু সত্যু হি নান্যথা। रिय र्जिगनाः সুবাসিন্যো বক্তালক্ষার তোষিতা:॥ ন তেষা বৎসর যা-বৎ কলছে। ন রিপো র্ভয়ণ। বুভস্যা-স্যুসাদেন ভূতাঃ প্রেতাশ্চ রাক্ষ-नाः ॥ प्राप्ति भनायस्य धर्मनाकन তाডिजाः। या मिला म**हिमाक्**रि। দণ্ড মুদ্দর পারক: II বেপ্তিত: কিন্ধরৈ দু স্থি স্তমৈ কালাতানে নম:। ইত্থ॰ षः विव मार्न सक्ष उषु उ मूछ।।

- রন্য যনদ্বিতীয়াখ্য অপমৃত্যুনি বারণ । বুতস্যাস্য পুভাবেন প্র পৌএ সমৃদ্ভিঃ॥ সভ্য-বদামিতে विशु गृहद्रः महाटमरेषव हि। गाई **স্থ্যেন সমোধর্ম্মো ন ভূতো ন ভ**বি-याजि॥ मन्मरहाज न कर्जना इहर लाक भन्न है। य वि यम मिडी-याथाः तुष्ठः अर्वस्थि मानवाः ॥ मः थे बचा क् उ॰ भाभ॰ उ८ क्ना (प्र নশ্যতি। অপুণো বভতে পুণ্র धनशीता वाज्यान । जार्गाशी-ता लाख्छार्यशा॰ मुक्का॰ क्रमा॰ প্তবা । यम্যা তিথো यमूनय। य-মরাজ দেব: সংভোজিত: সক-ল লোক নিপাত দক্ষ:।। তস্যা• ভূনক্তি স্তিথৌ চ গৃহে ভগিন্যাঃ প্রাপ্নোতি বিভ নভুল স চিরাযু রেব। ইতি পাম্মে উত্তরথণ্ডে ১২৫ व्यव्यायः ॥

यनधातः পু॰ পার্ম্বরধারযুক্তান্ত্র-বিশেষ:। কিরীচ কাটার ইত্যাদি ভাষা।

यमन॰ क्ली वक्षन॰॥ উপद्रजिः। ইजि मिनि ॥

यमनः भू॰ यमः। ইতি मिनिनी।। यमनिका जी यवनिका। क्रानाद ইতি ভাষা। ইত্যনরটীকাষাণ बें। भाणुमः ॥

यम भन्ने जी यम म । जिल्ला । जिल्ला । जिल्ला । भिर्माणी २ विज्ञाया । विज्ञाया । विज्ञाया । विज्ञाया । विज्ञाया ।

वमिश्वः भू• विव्कः। ইতি मदः त्रञ्जावनी।।

যমভগিনী জী যমুনা। ইতি হেম-চন্দুঃ।।

वनवाजः भू॰ यमः। ইতি (इमहन्तुः॥ व्यम् भूर्यामि यथा। भूती मःयमनी ভস্য চিত্রগুপ্তস্ত লেখক:। ভৃত্যে) চণ্ড মহাচণ্ডৌ ধুমোণা বিজয়ে প্রিয়ে ।। বিচার ভ্নিকা নীচিঃ স श्याः कालभूक्षाः । इंडि करो-ধর:।।।।। সচ বিমাতা हायय। শপ্তः ত ছাপান্ত যথা। স্বৰ্ণধারিণী। हिमा मानिनाय निकानुमः ॥ जः জ্ঞা• ভার্য্যা• প্রীতিমতী• ভাস্ক রো বারিভক্ষর:। ততঃ প্রস্তো (या २म्राः (मा ভ्रिववश्रका मनुः॥ विजीयस यगः भाभाक्तमं पृष्टि त ভ্ৎসুতঃ। ক্রিমধো মাণ্স মাদায পাদত তে মহীতল•।। পতিষ্যন্তী-তি শাপান্ত তস্য চক্রে পিতা স্বয় । धर्मन्षि यं उ काम् मत्मा मिव তথাহিতে ॥ ততো নিযোগ• ত• বান্যে চকার তিনিরাপহ:। যমুনা

চ নদী জজ্ঞে কলিন্দান্তর বাহিণী। ইতি মার্কণ্ডেযপুরাণে বৈবৰত মন্বন্তরে ।।

যমরাট্ পু॰ যম:। ইত্যমর:।।

যমল॰ ল্লী যুশ্ম॰। ইতি হেমচন্দু:।।

যমলপত্রক: পু॰ অশ্মন্তকৃক্ষ:।।

কোবিদারবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘট:

যমলাজু নহা পু॰ প্রীকৃষ্ণ:। ইতি
হেমচন্দু:।।

यमनाङ्क्र्राने भू (गायनशङ्क्र्न বৃক্ষদ্বয় । তৌ সবেরপুণ্রৌ নলকু-वत्र मिण्यीरवी । नात्रम माभाए वृ-ক্ষতা॰ গভৌ। গ্রীক্ষেন উদ্ধারি-छो। यथा। यिदानी लाकभानमः পূএে। ভূদা তম: প্লুতৌ। न বিবা-नन भाजान विकानीजः नृपूर्याती रैनव॰ यथा भूनः। मृजिः म्यान्य भुनारम्न जवाशि ममनूगुहाद ॥ वाजुरन्वमः जामिधः नक्षा निवः শরছতে। বৃত্তে স্বর্লোকতা॰ ভূযে। লব্ধ ভক্তী ভবিষ্যত:।। শ্ৰীশুক উবাচ। সএব মৃক্তা দেবর্ষি গতে। भारतायगाणुमः। नलक्वत मणिगीवा-वामञ् र्यमलाब्ज् तो ॥ अत्य र्जाग-বত মুখ্যস্য সত্যু কন্ত্রণ বচে৷ হ-तिः। जगाम मनरेक खेव यव खो

यमना यमनाबन्दि । एत्यर्थि भिष्यु । মো যদিমৌ ধনদাত্মকৌ। তত্তপা नाधविष्ठामि यम्गीजः उद्यश्या ना ॥ इंड्रेड्डद्रिगाड्ड्न्नरयाः कृक्छ यभाषा र्यायो । आजा निर्दाण भा-ত্রেণ ভীর্যুগ্ গত মুদ্থল ।। বা-**लिन निष्कर्य जानु छम्थल॰ ज**रमा-মোদরেণ তর্ষোৎকলি তাঙ্ঘ্রিবন্ধৌ । নিস্নেততুঃ পরম বিক্রমিতাতি-বেপ ক্ষম্ন পুৰাল বিটপৌ কৃত চ-**७णको ॥ ७व जि्रा भव्रम्या** कः ব্দভ সু রন্তৌ সিদ্ধাবুপেত্য কল্পযো রিব জাভবেদাঃ। কৃষণ পুণম্য শির-मा थिन (नाकनाथ विषाञ्जनी वि-রজসা বিদ মৃহতুঃম।। বাণী গুণানু कथान भुवाने कथाया इत्ति ह क-यांनू वन खब भाषाया नंः। सृ अाः नित्रं खव निवान जगट भुगान দৃষ্টি: সতা॰ দশনে ২স্ত ভবত্তন্না॰ ॥ औजगवान्वाह। उन्नहुड म८-পরমৌ নলক্বর সাদন । সংলা-তো ম্যি ভাবে৷ বা মাপ্রিত: পর-মো হভব:।। প্রীশুক্টবাচ। ই ।।

ত্যুক্তৌ ত॰ পরিক্রম্য পুণম্য চ

भूनः भूनः । वर्षान्यन मामञ्ज

জন্মতু দিশ মুভরাং॥ ইতি 🗐

ভাগবতে ১০ ককে ১০ অধ্যায়ঃ।।

यभानि

यंगली खी काढ़िकाइयः। १७० . त्यिनी॥ काढी नाढी नाढी नाढी नाढी नाढी नाढिका॥ काटनुर गिनडा देन काढिका॥ यगवाहनः भूः महिषः। ইভি ह्य-

যনবুত শ্লী রাজধর্মবিশেষ:। সত্ পক্ষপাত বিনা পাপিনা শাসন কপ:। ইতি পুরাণ ।।

यमस्मा खी यम्ना॥ पूर्गा। इंडि भिन्नी॥

यमानिका छी यमानी। उৎপर्यतयः । व्यक्ताना २ উन्नुगन्ना २ तुक्तम् डी ৪। ইত্যমর:।। চত্ত্বারি যমান্যা• য-মানী দ্বিবো একা ক্ষেত্রযমানী সা অন্ত্রমানা ইত্যের খ্যাতা। **অপ**রা যন্নী ইত্যেব খ্যাতা অবিশে-বাৎ দ্বযো রপীতি সুভূতি:। কে-**ठिखु अक्षरभारामि एय॰ वनयमा**-न्याः तुकार्छारि हरः यभान्या भि-**ত**्राङ्ः। উगुगक्ताकस्मानाथ्या सृजा क्किवयनानिका इंजि। यमानी मी-পকো দীপ্যো ভূতিকক্ষ য্যানিকা ইতিচ রত্ন:। यहতি বিরম্ভি নি বৰ্ত্ততে অগ্নিমান্দ্য মন্যা যমানী यस्मो छ विद्राली नामी छ अन देश यमानी सार्थ (क यमानिकाण **मानी शक्ष्मवर्ग शक्ष्म स्वतः ।**्ट

नी जिजडाङ हेजूर्य मध्या है जितन हिट । है जिज जब जः ॥ ऋ॥ जम्म खगाः। ऋष्ठ मृत्र ना निद्धः। हिम्युः । शिखाणिकातिष्धः। वायू कक क्मि ना निद्धः। है जिज्ञा बवल्ला छः ॥ मानी जी यमानिका। है जिन्म-बद्धावनी ॥

यमाञ्चरः भू भिवः। ইতি भवतः। वनी ॥ यभी जी यमूनानमी। ইতি जिकाशः भिवः॥

यमूना जी पूर्ण। यथा। मर्दाण करय ञ्चानि मञ्जानि मुजानि । एना जि চেপ্লিতান্লোকে তেন সা সর্বা क्ला।। नक्षाप्त्रनाम्गक्षा त्नारक দেবী বিভাব্যতে। যমস্য ভণিনী যাতা যমুনা তেন সা মতা ॥ ইতি प्ति वी भूबारा ८७ व्यवतायः।। 🗱।। नहीः বিশেষ:। সাত হিমালয় দক্ষিণ দেশান্নিৰ্গত্য পুযাগে গঙ্গাযা । মি-निुजा। उৎ भर्यप्रायः। कालिन्सी २ স্য্যতন্যা ৩ শননম্বসা ৪। ইত্য মর:।। তপনতনূজা ৫ কলিন্দ্ কন্যা ৬ যমস্বসা ৭। অস্যা জলগুণা:। शिख **राह वर्ग मुनाशह दुः।** स्रा-দুর্ণ। বাতজননত্ত্বণ। পাবনত্ত্বণ। विङ्गिशनकब्रद्धः। (ब्राहनद्यः। यन

भुमपुषः। ইতি द्राजनिर्यणेः।।इ।। ना यमम् जिनी। यथा। मादर्गि र्मक् পৃষ্ঠে ভূ তপো ঘোর॰ চকার হ। অ-দ্যাপি ভবিভা লোকে মনুঃ সাবর্ণি-কেম্বরে॥ ভ্রাতা শনৈশ্বর শাস্য গ্র-रुष् अञ् लक्षवान् उत्था यंवीयती या उयम्बना यमित्री। अভव अभन পরিপুরাণে সাগরোপাখ্যান ।। #11 नाठ वृन्त्। यस मूमुनाथा भन्नामिकिः । यथा। अङगवान्वाह। इतः वृनता-বন রম্য মন ধায়ৈব কেবল। তত্র (य श्रम्पदः माकाष्ट्रकाः की है। नदा-খনাঃ ॥ যে বদভি মনাধিষ্ট্য মৃতা-যান্তি মমান্তিক। তত্র যা গোপপ-बुउन्छ निवमस्त्रि समालएय।। रयागिनऽ স্তাত এব হি মন দেবা: পরাযণা:॥ পঞ্যোজন মেবংহি বনং মে দেহু ক্র-**११कः।** कानिन्तीयः जूजुनाथा। ११द्र-মাম্ত বাহিনী ॥ ইতি পাঘে পা-তালখণ্ডে ৭ অধ্যায়ঃ ৷৷ 🕸 ৷৷ অস্যা जलमा क्षवर्ण कात्रनः यथा। भून-স্ত্য উবাচ। যদা দক্ষস্ত। বুজন্স-**ी याजा यमक्य । विनामा एक्** যক্ত ত বিচচার ত্রিলোচন: !! ততো ব্ষধ্জ मृक्षे। कन्तर्भः सम्मा।-युदः। अभन्नीकः छनाद्धने 'छेन्नादन

गाथ ঔद्यारिना ভिতা ডিত: । विह- ∥ চার তদোমন্ত:কাননানি সরা সি ह ॥ श्रव्य अञी॰ सङ्गादिव खाला॰ মাদেন ভাডিতঃ। ন শর্ম লেভে **म्बर्स वागविष देव दिश: ॥ ७७:** পপাত দেবেশ: কালিন্দী সরিতে ग्ता निमान महात्र हाल पका ক্ষত্ব মাগতা॥ তদা প্রভৃতি কা-निन्ता मृगक्षन निजः बनः। ইতি वामत्न ७ व्यवग्रायः॥ 🗱॥ देवा 🕏 मूक् षाम्मारियमाः ज्ञान भिखनान कनः यथा। यहेन्त्रिष्ठ भूक्षवानभागः সাত্ব। বৈ যমুনাজলে। মথুরাযা। হ রি• দৃষ্টা প্রাপ্রোতি পরমা• গভি•॥ যমুনা সলিলে সাতঃ প্ৰযো মুনি সভম:। জ্যোষ্ঠা মূলা ২মলে পকে बारमा मूनवाम क्टा। ममजा ह्या हु। छ॰ स्राया स्वाया स्वारी विश्वासी विश्व विष्य विश्व विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य হিত:৷ অখনেধস্য যজ্ঞস্যপুংগ্লো-ত্যবিকল ফল ।। জ্যেষ্ঠা মূলে সি তে পক্ষে मन ভাई। जनार्मन । ध-त्या नः शिख निर्दाभ यमूनाया[•] পুদাস্যতি॥ ইতি বিষ্পুরাণে ৬ অ•শে ৮ অধ্যায়ঃ॥ যমুনাজনকঃ পু॰ সুর্য্য:।ইতি হেম-॥

ज्यः ॥

নাভ্যতাডয় । তিতা হর: শরে । যমুনাভিত পুণ বলদেব: । ইতি হেন-গাথ ঔন্মাদেনাভিত্যডিত:। বিচ-

> यमूनाजा । পু॰ यमः। ইত্যমর:॥ যমেককা জী দওঢ়কা। ইতি বি हা-ওশেষ:॥

> ययाजिः भूः नस्यक्रासभूयः। ७९-পর্য্যায়:। নাভ্ষি: ২। ইতি ত্রিকা अल्बाः॥ नाल्यः ।। ইতি क्रोधितः ॥ उरमहाभारहानः यथा। नङ्क्त्रह পुरक्रामि भूधान् मरिश्व शामिकाः न्। यि यंगाजिः मः याजि कफ्ताः পঞ্চম তথা।। সর্যাতি র্মেঘ্যাতিক সম্ভিতে বংশবর্জনাঃ। য্যাতি র करत्रामुख्यः श्रीर्यकनद्रन उना ॥ শর্মিগ্ন তস্য ভার্য্য ভূৎ দুহিতা व्यभर्वनः। ভार्गवम्याक्षका उत्रः फ्रिवरानी ह मृत्ञा ।। यशां कि र्फ्व-यान्। छ भूधावजनयम्भः। यम्क তুর্সুষ্পৈব শক্ত বিকু ইবাপরে।। তমাদেব তুরাজয়ে: শর্মিধা বার্ষ-शर्वी। कर्षान्य भ्रक जीन् व्यनात्रानकीकनञ् ॥ ७७: कार्ल ह কন্মি॰শ্চিদ্দেব্যানী শুচিম্মিতা । য্যাতি সহিতা রাজন্জগান বি হিত বন ।। দদর্শ চ তদা তত্র স্ব-भातान् (मदक्रिनः । की उभानान् भूविभुक्तान् विधिछ। (हम भुववीर ।।

কিলামধেয় গোতো বং পূএকা বা-ন্ধনঃ পিতা। বিব্ৰুতমে যথা তথ্য শ্ৰেত্ মিছামি ত হহ।।। তে १ मर्भः यन् भूरिमिन। ज्याव नृशमखनः। বুদ্ধাচ ভব্তুতো দেবী শর্মিষ্ঠা মিদন-বুবীৎ ৷৷ মমাধীনা সভী কমাদকা-यी विश्विषः मम । भिर्माश्वादाह । यमा ज्या वृत्जा जाजा वृज्य जमा ম্যা। ব্ৰোহি সে প্জ্যতমো রা-क्विं: किः नख्टिंग उटे ॥ भोनक উবাচ। শুনু। তদ্যা স্ততো বাক্য• (स्वयान) श्वुवीतिषः। त्राज्ञवारमः र वर महानि विशिषः भ प्रा क्ष ॥ অবিবুরন্তী কিঞ্চির রাজান সাশু लाहना। अहिद्रादिव मःभाक्षाका व्यान्त्राभनत्मा २ खित्क ॥ प्रविषा-ন্যুবাচ। শুমি ধ্বাতিবৃত্তামি দুছিত্রা ব্ৰপৰ্ণ: ৷ ত্ৰেণা ইস্যাণ জনিভাঃ भूमा ब्राड्डाप्नन ययाजिना ॥ पूर्व গায়া মম দ্বৌ তু পুএৌ ভাত বুবীমি বঃ। শুক্র উবাচ। ধর্ম জ্ঞঃ সন্মহা त्राज्ञ (या २४र्म नक्षा: भिरा- 1 उ याञ्जदा चान्छित्राक्षयंयिवाजि पृ-र्ज्जिगा। ययात्रि कवाह । भुविकामाः जिय॰ यस गन्।। वहिन याहिनः। নোপৈতি স হ ধর্মেণ জুণহেত্যুচ্য 🍴 उ त्रेंयः ॥ व्यथमं ख्य म•विगः **ण**ः ∥

ৰ্মিঙা মুপল্লিবান্। অভ্ঙো যৌব-नम्यारः प्रविधान्या ज्यूषरः । भूमाः मः अकारम युक्तन् अत्रयः भा विष्ण-उ मा॰ ॥ भूक उवाह । नाइ॰ स्वा व्वीमाउट बद्राः शुरक्षांत्र ভ्विश ॥ बद्रा॰ ব্বে তা॰ ব্মন্যমৈ সংকাম-य यहीहमि। दर्या माम्राजि भूट्या यः **সতে রাজা** ভবিষ্যক্তি॥ ইতি নাৎ-স্যে ৩২ অধ্যায়ঃ ।। 🗱 ।। শৌনকণ্ট-বাচ। জরা। প্রাপ্য যযাতিস্ত স্ব পুর। न्।भरहेव इ।न्यः (बाक्षः विविश्ष यम् भिडात्वीषठः॥ ए॰ यत्ना भुजि-**श**न्ध्रत्र भाष्मानः जत्या मह। योत-त्न वृशीरयन हार्ययः विषयानइः ॥ পূর্ণে বর্ষসহসে তু পুন স্তে যৌবন॰ ष्रः। पष्। मः शुजिशः मानि श्रा भानः **बत्रा मह** ॥ यम् क्राह। मः ष्टि তে বহব: পুঞা মত্তঃ প্রিয়তর। न्भ। बताः गुरीज् भर्मक भूधमनाः वृगीय देव।। यया जिक्वाह। या वा ত্ব' হৃদ্ধাজ্জাতো বয়: স্ব' ন পুষত্বসি । भाभागाजुल मक्काए भूका देव তে ভবিষ্যতি॥ তুর্নো পুতিপদ্যর পাপ্মান জর্যা সহাটোবনেন চরে-य॰ वि विवशा॰ खत भू भक्ता। ज्ज्भू-ক্বাচ। न কাম্য জরা॰ তাত কান্ন-ভোগ পুণাশিনী। বলক্পাতকরণী

वृक्षि मान विनामिनी ।! यशां छ कवा চায স্তৃ'নে ক্ৰয়াজ্জাতো ব্য: স্থ' ন भुगहिन। उमार भुका ममुरहम जू র্বাসাতব যাস্যতি॥ জহো ত্ব পুতি अम्। स्वर्ग क्ष विनामिनी । **बद्रा** वर्ष महमुानि योवन अः श्वह ह॥ क्टू क्वाछ। न गकः न द्रयः ठायः कीर्ला ज्रहाक वृत्रियः। मात्रागः শ্চাস্য ভবতি তাং জরাং তে ন কা-भारत ।। यया जिक्ता । य खु • भ क्र-याद्धारा वयः सः न भुगहनि । छ-माए करहा शियः कारमा न उ न ম্পৎস্যতে কৃচিৎ ।। অনো ত্ব**ণ প্রতি**-পদ্যম্ব পাপ্মান জর্বা সহ। এই বৰ্ষ সহসুদ্ভ চরেষ ধৌবনেন তে। অ· नुक्वाठ। जीर्नः मिणु दिवापर का লে হন মশুচি ৰ্যথা ৷৷ ন জুহোতি চ कारण श्री: जाः बनाः रेनव कामरय। यगाजि क्वाह। य सु• भ क्रयाब्हाः তো वयः सः न श्रवहिता अता (नामः सुर्वास्काय समाद्वः भुजिभू मानि ।। পূরোনে ত্ব প্রিयः পু 🛚 ত্ব বরীযান্ खिवर्राम ॥ काव्यामा**न्या न**ा পাম চ তণ্ডোমি বৌবনে।। পুরো ত্ব-পুভিপদ্যৰ পাপ্যান জর্যা সহ। किष्किटकालः ठात्रयः रेव विषयान् व यमा उव ॥ भूरने वर्ष महरमु जु भुजि-

माम्यामि योवन ॥ स्रव्येव भूछि পৎস্যামি পাপ্মান জয়য়া সহ শৌনক উবাচ। এব মুক্তঃ পুতুগুৱাচ প্ৰ: পিতর মঞ্জসা। যথাতা चुः মহারাজ তৎকরিষ্যামি তে বচঃ॥ ষ্যাতি ক্বাচ। প্রে। পুরোস্ তে বৎস প্রীত শ্চেদণ দদানিতে। সর্কাম সম্দা তে পুজা রাজ্যে ভবিষ্যতি ॥ ইতি মাৎস্যে ৩৩ অ-শ্ব্যায:॥#॥শোনক উবাচ। পৌর-<दगाथ वयमा य्याजि र्वष्याञ्**बः**। শ্রীভিযুক্তো নরশেষ্ঠ শচচার বিষ্ যান্সূথী॥ পূর্ণ মন্বা ততঃ কাল। প্ৰ॰ পুত্ৰ মুবাচ হ। প্রোপ্রীতো-मि जुन् राज गृहात्ममः यस्मेवनः॥ ब्राबाधानि गृशानमः यद प्रा পক্ত পুরা। শৌনক উবাচ। এ বে স নাভ্ষো রাজা য্যাতিঃ পুএ সীপ্রিক। রাজ্যেভিবিচ্যমুদিতো वानभूष्ट्रा २७वद्यनिः ॥ উविद्रा वनवामः न वाक्रातः नह मः निुउः । एन ग्लाना पाउ। यथा अर्ग भिष्ठा गडः ॥ इंडि मार्म्। ३६ व्यथ्रायः ॥

যবী প্ মহাদেব:। ইত্যুণাদি-কোষ:॥

ययुः शुः वायस्मिशीयायः॥ माशानाः

যোকিঃ। ইতি দেদিনী॥ यवः भूः स्यामथ्याजम्कथान्यः। **७८न**र्यायः। मिउन्कः २। ইड्रा मद्रः॥ भी उम्कः १। इंडि भद-त्रज्ञात्रनी ॥ (नश्रः ८ मिन्रः ৫ अ-ক্ত:৬ কঞুকী ৭ ধান্যরাজ: ৮তী ন্ধুশ্ক: ৯ ত্রগপ্রিয়: ১০ শক্তু: ১১ মহেষ্ট: ১২ পবিত্রধান্য ১৩। ভস্য खनाः। कवायद्यः। मध्यद्यः। मून्नीः ভলত্ব• । পুনেহ পিত্ত কফাপহা-तकद्भः ॥ यम्क म् अ यर खगाः। वलभुम्बः। वृष्ठाबः। नृगाः वद्यीः र्य) भुष्टिर दृष्ध । ইতি রাজনিঘণ্টঃ॥ व्यालिङ । यदः कषाय मधुद्रा वर्छः वाउ मकृर् ७वः। बक्कः रेष्ट्रयं। क्कः শীভোম্ব মেদ কফাপহ: ॥ ইতি রাজবল্লভঃ॥ৠ।পরিমাণবিশেষঃ। সতু চতুর্ধান্যমানৰূপ: ।ইতি শুভ-क्रद्रः ॥ यदेमर्यभभद्रिमागाञ्चक्ष्ठ । যথা। জালান্তরগতে ভানৌ यहा-নু দৃ**শ**্তে রক্ষ:। তৈ শতুর্ভি র্ভবে-लिथा निथा यष्टिक मर्यभः॥ यहे नर्व रेभ यंव रखुरका खेरिक्ष का कू सरेव जििं। ইতি मद्य निमुका ॥ #॥ जकू तिङ् यवाकात्र (त्रथाविष्णयः 1 यथ। 1 उजनी मृत्व मः भृत्को यत्वी भूवार्थामो कमार । मध्यमायाः य-

व रैक्टवाकु १८ १ मूर्च धन भुषः ॥ व्य-शिष्ठ । सथा सायाः यि यादा ए नाः -उठ मूल्या छनः । छना नाः मिक्छः पुताः भार्था छात्र भुष्ठः यद ॥ य-नाः नाः । छनः भकु १४ यद भूष्थः ए-नाः । छनः शि छा सहानि । सर्छिः छ॰ वा छ छ धनः ॥ हे छि मा सूष्ठः ॥ यदकः भू॰ यदः । हे छा सब्दि । । या साम् सः ॥ यदकः कि यद छदा । । । ।

हैठामतः ॥ यवगश्वः श्रु॰ यूवगश्वः। वयम्एकाण हैठि ভाषा। हैठि सम्बद्धावनी ॥ यवज्ञः श्रु॰ यवकातः। हेठि त्रष्ट्रभाता। ॥ यवानी। हेठि तासनिर्घणेः॥

ব্বজোদ্ভব জী ত্বক্ষীর । ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

यविका जी नजाशुरुपः। महनीकि यरवि है डिह था। जा। जटभर्यायः। महाकिका २ मृहिशामविमर्भिती २ नामनी ४ तिक्रीना
६ महिनी ४ भध्य खूनी १ उखूनी
৮ सम्भी ४ मध्य खूनी १ उखूनी
৮ सम्भी ४ मार्स्थिती ३२ किककना ३२ यावी ३४ किका ३६।
समा ख्री । मिन्
भन्दा। कहिका तिद्वः। कृति मुक्ठ

यवनाहार्याः शृ॰ (कार्गानिः भाञ्चकर्ज् गृनिवित्मयः। ইতিবরাই गिहित्रो ॥ यवनानी जी यवनगानिशः। ইতি गृष्ववाधीकायाः हुर्गामानः॥ यवनातिः शृ॰ श्रिक्षः। ইতি बिकाः श्रुभयः॥

यवनानः भू॰ थानऽवित्मवः। (नथान् इठि ভाषा। उৎপर्यऽायः। (यानाः नः २ जुर्नाञ्चयः ० (नवथानऽ॰ ८ (जाडानः ६ वीजभृज्ञिका ७। ইতি (इन्हन्मः॥

यवनालकः भू॰ यवकातः। ইতিহেম-हन्द्रः॥

यवनिका खी জवनिका। কানাত্ইতি ভাষা। ইত্যনন্ত্রীকা।।

यवनी खी यवानीनामकोविधरछमः।
इंजि निम्नी।। यदमङाग्री हः।।

यवत्न्ष्टे॰ क्ली भीनकः। इंडि ह्म-हन्मः ॥ मत्रीहः ॥ गृञ्जनः । इंडि त्राजनर्घन्तेः ॥

यदान्धः भू॰ लण्नः॥ द्राह्मभनाशः ॥ निष्यः॥ भनाशः। ইতি द्राह्म-निर्यन्तेः॥

থবনেষ্টা জ্রী । ইতি রাজ-নির্ঘন্ট:।।

दवकनः भु॰ वःभः। ইত্যনর:॥ कोगाःनी॥ कोजः। ইভিনেদি- 'नी ॥ श्रक्षवृकः । इंडि भद्रज्ञा-वनी ॥

यवनश्रः क्ली ठान्मायनभुरक्षः। यथा

श्री निम्ठान्मु।यनः (भ्राकः यिकाः
न्मायन छथा। यवनश्रः उथा (भ्राकः
उथा भिभी निकाक् छि॥ ইछि भ्राः
यन्ठिख उद्युः॥

यवनयः वि यवनिर्मितः। यवणसार नयदे भुज्जायन निञ्चमः॥ यवलामः भ्॰ यवकातः। ইजि सम्-त्रञ्जावली॥

যবশ্ক: পু॰ যবকার:।ইতি ত্রিকা-শুংশয:॥

যবশূনজ: পু॰ যবক্ষার:।ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:।।

যবস॰ ক্লী ত্ণ•। ঘাস:। ইত্যমর:॥ যবসুর• ক্লী যবজাতসূরা। ইতি সিদ্ধান্তকৌনুদী॥

यवकातः भू॰ काति विष्णयः। (णातः विकासः। यथा। नत्रमात यवः कात्र स्टिनाति छ अव काठ वक ये किः। वह्णः भाजाः मदः छि वहायणी। छट्भर्यायः। यवागुकः २ भाकाः छ विष्णे विष्णे

म्कः २ कातः २० उक्ताः २२ जिल्न-त्रमः २२ यवनालनः २० । इति तत्र भाला ॥ यवनः २३ यवम् हनः २० यात्रः २५ यवाभ छाः २१ । व्यन्तः ख्याः । कर्रेषः । उक्षत्रः । कक्ष वाः ज्ञापता वि नालितः । व्यान म्ला-व्याक्त क्रम्विष्टा स्त्रवः । म तत्रकः । इति तान्तिविष्टः॥ व्यमः भाम ख्ला गृह्ती भाष् श्लीङ्गानः गनामय नालित्रः । इति तान् वल्लाः ॥

यराकानः भ् यत्र्राः। जर्भर्गातः । চিক্কদ: ২। ইতি ছেনচন্দ্র: ॥ यवाणः जी य एखन बल भन्न चन्मूव-पुर्वातामयः। याउँ इंडि ভारा। তৎপর্য্যয়: । উঞ্চিকা ২ শুণো ৩ বিলেপী ৪ তরল। ৫। ইত্যমর:।। य्या भिणार यवागः यून निन्ता নামীতি আগৃ:গুণঃ।ওঘতি হিনস্তি क्तामि (ताग छिकिका छेष्य वास দহি প্রেণ নিক। শু। যতে পচ্যতে। य गुणा गुलभाक कः मृत्राम्। দিতি নঃ। বিলি স্থাতি বিলেপী ঞি नि:भो मग यः (नःभ भग्नाहिज्याः मन् नरातिदारीश्। उत्रीठ প্লবতি তরল। তূ ভয়ে ২ভিভবে প্লুড্যা• नामि जिल्लाः। यमः भक्षा भाषाः विष्णभी ह हजूर्थः । मख महजूर्षम्खः । यवागः यदः । इह नाम्जः । इति उद्योकायाः ज्वजः ।। जन्माखाः । यवाग् क्वं व्रकाशीं नशे विद्यविष्णाधनी । ज्यज्ञेमात्व ख्रात पार्ष हिजा वहि भुतिभनी ॥ इतिवाकवल्लाः ॥

यवागुकः भुः यवकातः। इंडामदः॥ যবানী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। यवानः जि (वशी। इंडि स्मिनी।। जी अविश्विषः। या-य्वानिका) যুবানী 🔰 আনি ইতি ভাষা। ছৎ-**न**र्गायः। मीनातः २ भीनाः ३ यवनाञ्चः ८ गवागुकः ৫ भीननी ७ উগুনন্ধা ৭ বাতারি: ৮ ভ্রদম্বকঃ ৯ यवजः ১০ भीभनीयः ১১ শ্লহ-ন্দ্ৰী ১২ যবানিকা ১০ উগু৷ ১৪ তী-व्याक्षा २०। जामता खनाः। कर्षेषः । তিকত্ব। উকত্ব। বাতার্শ: শ্লেম भ्वाधान किन हिन्नि ना निद् । मीलनज्या इंजि ब्राजनियंग्रः॥ अ॥ অপিচ। অথ যবান্যা নাম গুণাঃ। ব্বানিকোগুগন্ধাচ ব্লদভান্ধনো-**मिका। रेन(वाङ्ग मील)**रका मील)• ख्थान्त्राव्यवनाञ्चया ॥ यवानी नाः हनी कहा। जीव्हाका करूका वयुः

। मीननी ह उथा जिंका निखना भूक भ्ल रूट ॥ वाउ (मुख्यारद्रा-नार छला श्रीह क्मि भुष्र । #। व्यथ बद्धानाया नामानि खगा क । अन्नत्माना थ्वाश्वा ह मग्द्रा ही প্যক তথা। তথা বুন্ধস্পা প্রো-ক্তা কারবী লোচমন্তকঃ।। অজ-भारा कर्ट् खीका **रोश**नी कक वा छन्८। छैका विराहिनी क्रा व्-या वनकती नघुः॥ (नवाभय क्भि हर्नि हिम विख करबा हरद्र । #। व्यथ थवानानी यवानी नाम खनाः। भावनीक यवानी जू यवानी नम्भी छोतः। विरम्यार भावनी क्रमा गुहिनी भाषिनी धकः ॥ इंछ छ। বপুকাশ: 11

য্বাপভ্য ক্লী য্বক্ষার:।ইতি রাজ নির্ঘণ্ট:॥

यवामुक क्ली (मोवीत्रकः। ইতি त्राकः निर्घण्टः ॥

यवात्रकः भू॰ पूत्रालाञा। ইতি শব-त्रज्ञावली॥

যবাসশর্করা দ্রী যবাসরস্থাটিতশর্করা। তৎপর্য্যায়:। সুধানোদকঃ২ নোদকঃ ৩ তবরাজঃ ৪ খণ্ডসরঃ ৫ খণ্ডলঃ ৬ খণ্ডমোদকঃ ৭।
অস্যা গুণাঃ। অভিমধুরত্বং। পিভ শুন ত্বাপহত্বং। ব্যান্ত্বং। বিদাহ মূর্চার্ভি ভান্তি শান্তি করত্বং।
সরত্বং। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

য্বাসা জ্রী গুণ্ডাসিনীতৃণ । ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

যবাহ্য: পূ• যবক্ষার:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:।।

যবিষ্ঠ: ত্রি অভিশয্বা। অযমন গোরভিশযেন্যুবা ইত্তর্থে ইষ্ট প্র-ত্যযেন নিয়ম: ।। কনিষ্ঠভ্যুত্রি পূ• । ইভি হেন্চন্দু: ।। यवीयान् जि कनिष्ठः॥ युवा। ইতি (विकिनी।।

यताव्यः क्ली भोवीद्रकः। इंडि द्राबः निघंकः॥

যব্য তি যবাদিভবনোচিতক্ষেত্র। ख्र अर्थ)। यवकाः २ राष्ट्रिकाः ० । ইক্র্যুনর:।। যবোচিত্র ৪ যবকো हिन्छ । इन्डि **नद**द्रश्वनी ॥ यद्रः भू भामः। यथाः यद्राह्मयः भावगानि मर्वा नान्। तज्ञवनाः।

তাসুসান ন স্বী ত বজ্যবা স মৃদুগাঃ ॥ ইভি পুাবশিষ্তভত্ত্বেগ कामाश्वारः॥

यमः हो मुथािकः। उट्भर्गायः। স্মাথ্যা ৪ কীত্তনা ৫ অভিখ্যান ৬ সাজ্ঞা ৭ সন্জ্যা ৮ ৷ ইতি শব্ ब्रङ्गावनी।। मानामि श्रुञ्जा कीर्खिः भोर्गापि शुख्य यमः। ইতি मा-थी। अञ्चव गणः कीर्त्वता र्ज मगानि ममनाए यणः की जिन রিভ্টো জীম্মপি ন জীবতি।ইতি कमाहित भुरमानः। जीवजः था।-ठि यामा गृजमा था। जिः की वि নিতি কেটিং। তম সাধু কীর্ন্তি স্তে न्भ मां उत्के जि भूर्याम मर्भनाट । यमम् । जी कीवडी ॥ श्रीकारनी रेञ्जनबरोकाया॰ खन्नजः॥ 🗱 ॥

कीर्खिनाम (माया यथा। इष्टियः **প**ग्नकीर्जिक च कीर्जि॰ मानवाधनः । স কৃতমু ইতি খ্যাত স্তৎ ফলঞ্ निশामय ॥ यक्षक्ष्य वरमः (मा श्मि याविष्मु। कञ्चला । कीरेंगे र्नम्मभारेनण जिक्काः मञ्ज न्न ॥ उक्षकादाहकः नानी नि-ত্য পিবতি খাদতি। ততঃ সর্পো জন সপ্ত কাকঃ পঞ্চ ততঃ শুচি:।। ইতি বৃদ্ধবৈৰৰ্ভে পুকৃতিখণ্ডে ৪৯ व्यथ्रायः॥

युणःপটহ: পু॰ एका। ইত্যমর:॥ यमः स्थः वि मृजः। इंजि एमः **ठन्मः ॥ गर्ताग भ॰ ॥**

कीर्खिः २ गमळा २। इंड्रामद्रः ॥ यणपः क्षी क्षाञ्चित्मवः। एस इंडि ভाষा। यथा। यभान अञ्चल्मा রীতিহেতৃশ্চ তন্মত। নশদ जু-वतः जिकः भोजनः कक शिख हर ॥ চক্ষ্য পরন গেহান্ পাঞ্ भामक नामात्र । इंडि ভात-পুকালাঃ ॥

यणकाः वि कीर्डिकात्रकः। मुच्छा-তিজনকঃ। যশক্ষরোতি যই 5 এর্থ ট পুত্যযেন लिञ्जमः॥ यशकती वि-**प**रा इंडि व्याक्रवण ॥

यिषः। ইতি द्राक्षनिष्णः।।

यणशन् जि की खिविणिष्ठः। याणा **९** छ। म। इंडार्थ वज् श्रुरायन नि य्रमः। ইতিব্যাকরণ ॥ रमंत्रिनी जी वनकाशांत्री। इंडि नप्रदावनी ॥ यविङ्का ॥ मह।-জ্যোতিয়াতী। ইতি রাশ্বনিষ্ণী:।। यणवी वि यस्पाविभिष्ठेः। कीर्वि मान्। यणः भक्षात्रस्थार्थं देव भुक যেন নিয়নঃ। ইতি ব্যাকরণ ।। राणामः পू॰ भावतः। ইতি রাজ-निर्घ छै: ॥ यामाना छित जि ॥ यमाता क्वी नन्त्राती। यथा। नन्तः কিন্তরোদুকন্ শে্ব এব নহোদয• । यह्माता वा महाजागा भाष्ट्री यः স্য! उन হরিঃ।। ইতি শ্রীভাগ বতে ১০ হ্বস্ক; ॥ रक्षे सः यानवर्जा उद्भरीयः। यजपानः २। ইত্যার:॥ यक्षः शृ॰ शृज्ञत्थः। ইতি विश्व पितिनो अम् । इतिनाः ॥ जुजन्छः । इंडिग्राहिड (नित्नी॥ যষ্টিঃ পু॰ জ্রী তন্তঃ। ইতি শব-मावा ॥ शतवा ॥ जागी ॥ नव्या भञ्जल्यः। ইতি यानिनी ॥ व्यवनाष्ट्रयोगः। म्खः २ वर्ष्ट ৩। ইতি হেণ্চন্দুঃ॥ 🗱।। তদ্বে कृषः यथा। यश्चिः (य ज् भ्रवहृष्टि॥

নেত্রহীনে সুদুর্বলে। ভেষান্ত নিপু-णः शृःगाः जडातः ताह्यक्रितः ॥ ইতি বহি পুরাণ ॥ यिक्षितः भूः जनक्रुतः। ইতি मद बङ्गावनी ॥ म्ख्रा यश्चिका ज्ञी हात्राज्यः। यथा। यश्चि কা দণ্ডিকা তৈব তিলকা সারিকে: ত্যপि। ইতি জটাধর: ॥ वाभी। यथा। भारता मी धिका वाशी यहिः का भीनागाधिका। इंडि जिकाखः (भवः ॥ यष्टिमधका। यथा। जय यही नव्दं नगाम्यव्यही जू यहिका । इंडि भ्याद्वावसी।। वश्यः।यथा । अथ मिलिफ मिकी ह गरि वंशी ह যস্তিলা। 🖽 লাওে। হলি লগুড়ঃ भग्या मखाय श्री है।। इंडि भवत्रवावनी ॥ यिश्विष्टः शुः यिश्वात्रकः। वर्षः गु। ही । हैं जि मुकताब जी नागा। मूर्गभागः॥ यदिन्ध ही यदिन्युका। इंडि इनाः य्यः ॥ यश्चित्रयुका जी यश्चित्रय्। उट भर्गायः । ही उक• २ सङ्क• o सङ्ग्रिका 8 । ইত্যানঃ ॥ যইসার। ৫ যপ্তি ৬ ज्दाजां छ॰ एट द्शीमधु १ कन-

का (हद अजित्रमा ৮। ইजि तङ्ग

माना।। चिति । रिष्ठा हो मधु उशा यही नयु रु॰ क्लोडक । उथा। यना क्लोडनक उड़ जित्र जिल्ला ।। यमा खनाः। यही हिमा खकः साबी रुक्ष्या वन वर्ग क्टा मूनि का मकना किमा स्रांत नि ज्ञानि नामुकिट ॥ युग भाष विस हिम्म ज्या मानि क्ष्यानशा हिंड जाव भूकामः॥

यक्षे जी यहिन्य। ইতি ভাবপুकाणः यक्षेकः ज्ञी ५ हिन्धः ইতি রাজ-নিব॰টঃ॥

रश्लो পুয়ঃ প্ প্এজীববৃ**ক্ষঃ। ইতি** ভাৰপ্কাশঃ।।

यश्चीमयू की निष्ठम्न विष्णयः। किशे मयू इं जिम्म ने इं जिम्मी जाया। जर्भाग्रायः। नयद्शी २ मयूवजी अस्म नुगा ८ नयुक्त २ मयु ७ रश्चीकः १ यश्चे । अप्त ५ । अप्त ५ एगाः। मयुवज् । किष्मिनिक्यः। भीजमङ्गः। मयुवज् । किष्मिनिक्यः। भीजमङ्गः। मयुवज् । शिन्न इत्यः। । मम्ब्रिं। (भाष ज्या नुगाश्च वृष्णः। । इनि जाजनियंकः॥

क्षेत्रच की यक्षित्रध्। इं**डि ब्राज**

क श्री यहात। **इंडि** कवि-क्षित्र ॥ देव भगम**् भगामी** णगनी । जमा भ्राविदानि जुः ७ ३ जुः तुः । य भुगना जि । क्रम क्रम ३ जुः विना किर्मा मान् भूवी ह जमा भाग् विक्छा थः मिज यमा जिम्मा अभा । यजन यहः । १ विम्ना यसा । यजन यहः । ३ जिम्मी हा ।

যক্ষ: পূ• মুনিবিশেষ:। ইতি মুঞ্জ-বোধব্যাকরণ•॥

^{যৃহ্বঃ} পু• যজ্মানঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ॥

यक एक महि। ইতি কবিকল্ল क्रमः
क ए यक्षणाटा महि श्वायाः ।
इंडि प्रांतामः॥

কাঞ্চন শুঝা। নেখনাদী চ ব ক্ষাণাণ গণ এব উদাহতঃ। ভস্য ব্যুৎপত্তি র্যথা। খাতু র্যক্ষত্যথো-ক্ত শুদ্দনে ক্ষপণেচ সং। যদ্দক ত্যুক্ত বানেষ ত্যাত্মকো ভবত্য যণ।। ইতি বহি পুরাণে কাশ্যপীয বংশং॥

যক্ষকর্মনঃ প্রত্ কপ্রাপ্তক্ষত্নীকরোলানা নিশ্ত সমভাগঃ।
ইত্যমরঃ। কপ্রাদিভি র্গর্নিরঃ
সমভাগৈ সাধিতো হনুলেশন
ভেদে। যক্ষকর্ম উচ্যতে। যক্ষ
প্রিঃকর্মনা যক্ষক্ষমঃ। ক্ষমা
গুক কর্মী কপ্রা চন্দন ভথা।
মহাদুগন্ধ মিত্যক্ত নামতো যক্ষকর্মাঃ।। ইতি ধন্তরিঃ।। অন্য
তাপি কপ্রাগুক কর্মী করোল
ঘর্ষণাদি চ। একীক্ত নিদে সর্বা
যক্ষকর্মে ইষ্যতে।। ইভি তটা
কাযা ভরতঃ।।

যক্ষতকঃ পু॰ বটবৃক্ষঃ।ইতিরাজ-নির্ঘটঃ।।

যক্ষপ: পুল ধূপসানাস্য ।। ধূনক ঘূপঃ। ইতি কেচিৎ ।। ধূনা ইতি খ্যাত ইতি কেচিৎ । ইতি ভর-ভঃ ।। তৎপর্যাকঃ । সর্জর নঃ ২ ভারালঃ ৩ঃগ্রহ্মঃ ৪ বছরপঃ ৫ । स्वामितः ।। झानः ७ यूमकः १ विक् वहाणः ৮। हेन्जि ज्ञानः ।। जान-मातः २ माननः २० मानिर्यामः २२ मर्जाः २२। हेन्जि ज्ञानाना ॥ मजनवृक्तज्ञमः । होज्ञिम्बर्णन हेन्जि जामा। उर्देशभागः। भाषमः २ ज्ञीवामः २ मजनपुरः ६। हेन्जि (इमहन्यः ।।

यक्ततमः भू॰ भूग्नगमऽ॰ । ७९-भर्यऽायः । मधामयः २ । ইতি ত্রিকাওশেষः ॥

यक्षत्राजः भू अत्वतः। हेि अप-त्रज्ञावसी ॥

यक्षत्राहे अर् व्यवद्रः ॥ तक्षम ७४: । इक्ति भिनि ॥

যক্ষরাটপুরী স্ত্রী অলকা। সাচ কৈলাসপরতন্তিত অবেরপুরী। ইতি জটাধরঃ।।

यऋत्राजिः जी कार्न्तिने निर्मा। তৎপর্য্যায়:। দীপালী ২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

যক্ষণাথন ক্লী যক্ষোপাসনা। যথা
। যক্ষাণা বিদিনীনাঞ্চ পৈশাচী নাঞ্চ সাধন । ভতবেতাল গান্ধ র প্
নারণোচাটনানি চা। অধ্যোগনন বিদ্যাল সাধনে ইহিক হিত !
ইতি বারাহাতত্ত্ব ।।

যক্ষানলক ক্লী পিণ্ডথজ্রকলং।
ইতি শব্দালা॥

যক্ষাবাস: পুং বট্ফা:।ইতি রাজনির্ঘট:॥

যক্ষিণী জ্ঞী স্বেরপত্নী।ইতি শব্দ রজাবলী॥ যক্ষভার্য্যা চ॥

যক্ষিণী জ্ঞী ক্রেরপত্নী।ইতি শব্দ রজাবলী॥

যক্ষেণ্ডার্রনং ক্লী অশ্ব্যক্ষণ।

ইতি ত্রিকাণ্ডংশ্বঃ॥

यश्वरी जी पाका। ইতি শদমালা।। যক্ষা পু॰ রোগবিশেষঃ। তৎ-भर्गायः । क्यः २ (भावः 👁 । ইত্যনর:। রাজযন্ত্রা ৪ রোগরাট্ ৫। यथ রাজশক্ষাধিকার;। তব द्वाजयस्वा विश्वकृष्टे मिक्षेष् निमान भारु। (वगत्राधार क्रगः-हिर नाइनाहिरमाणनाट । जि দোকো জাযতে যক্ষা গদো হেতু চত্ইয়াৎ ৷৷ বেগো হল বাত মূল পুরীষাণা । বাত মূত্র পুরীযাণি निशृङ्गाञि यहा नदः। ইতি চরক বচনাৎ ৷৷ ক্ষবাৎ ক্ষীবতে হনেনে **जि क्वरः (ज**नाजिव)वायान**म**तन र्यानत्या शाज्कन (र जवः कन् म-ব্দেনোচ্যন্তে। সাহসাৎ বুলব্তা সন সল্পুদাদিতঃ। বিষদাশনাৎ

বহু ব্যেক মকালে বা তদ্ক্ত বিৰ-মা শন•। ভমাৎ। ত্রিদোব: সামি• পাত্তিক:। হেতু চতুষ্টবাৎ অন্যে-পি হেতবঃ হেতু চতুষ্টয এবাস্ত র্ভবন্তি। যক্ষণঃ পর্য্যাশাঃ রাজযক্ষ क्षय (भाषाः ॥ क्ष ॥ यद्मानीनाः भा-सानाः निक्कि नार। रेवरम्। वग्रि म जा॰ यमा ८ वजा १४ व्यापन यक्त १८७। স যন্ত্রা প্রোচ্যতে লোকে শব্দা-खवि**भा**त्ररेरः ॥ यक्ष्यरं अभू कारं । রাজ্ঞ **শ্চন্দুমসে। य**त्याप्रज्या कि-লাময:। ভমাত্ত রাজযুক্ষেতি কে-किनाङ् स्नीविनः ॥ किनाक्षयक्तः षाञ् क्रय इंजुऽहऽएउ वृदेशः। ज॰: শোষণারুসাদীনা পোষ ইত্যভি-शीयाउ ॥ # ॥ म• श्राप्ति भार । कक भुवारेन जीरियञ्च कप्त्रम् व्रमवर्ज्यम्। णाजित्रवायित्ना वाशि क्वीराद्मा**उन्।** নন্তর।।। ক্ষীযন্তে খাতবঃ সর্বে ততঃ भ्याजि गानवः। कक श्रुवादेन प्या-रियः तनवर्षाम् कष्किष् व्यनस्तरा भरति थाजवः क्रीयस्त्र उत्जा नामनः सूध्र-তি। কারণ ভূতস্যরসম্য ক্ষযে কা-र्य्यागाः बङ्गाशीना मनुकरमग कीय-मागञ्जाद्याका। मार्गानाहाए ब्रमक्त হেত্মাছ চর 🔻 গ্রম প্রেডঃসূক জেষু বস্থানৰে ব্যক্ত সভজু

কাস বেগেন বহুৰপঃ পুৰৰ্ভতে ॥ अञ्चलकः इत्यत्रः। कानः विनाः পি রসক্ষধে৷ ভবতি মার্গাবরোধ হ্বপিত বাতেন ব্লস্ত্য শোষণাৎ। উক্তঞ্চ। বাধে। ৰ্দ্ধাত্ৰ ক্ষৰাৎকোপে। হার্গস্যাবরণেন চেতি ॥ #॥ অনুলো-यक्षय मर्भायदा अ्ठिलामक्षय-সপ্যাহ। অতিব্যবাযিনো বা রেড-সি ক্ষীণে পুতিলোম ক্রমেণানন্তর। সর্বে ধাতবো রসপর্য্যন্তা: ক্ষীবন্তে। তদ্মথা। শুক্তে ক্ষীণে নজ্জা ক্ষীয়তে मज्जिनि कीए • इ कीयछ । এ१॰ পূৰ্ব॰ পূৰ্ব॰ ক্ষীয়তে। ননু কাৰ্য্যস্য শু कम। क्राय कथ॰ काद्रग ভূडाना॰ न ब्हाभीनाः कयः। উচ্যতে। मृकक्याः দ্বায়ু: স্বপ্ততি। যদুক্ত । বাথো পাতৃ ক্ষ্যাৎ কোপো মার্গস্যাবরণেন চে-তি। স বায়ু: সান্নিধ্য ক্রমেণ মজ্জা-भीन मदीन थाजून मः भाषयि । তত স্তদনস্তর• মানবঃ শুষ্ঠতি।।🛊 🛭 পূর্বকাপ নাহ। খাসাক্ষাদ কফ সংস্ব ভাল্শোষ বন্যগ্লিসাদ নদ-পীনস কাস নিদাঃ। শোষে ভবিষ্য-তি ভবস্তিস চাপি জন্ত: শুক্লেক্ষণো ভবতি না**·সপরো রির**·সু: 11 স্বপ্নেযু काक मूक मञ्जिक नी नक्षे गृथा छ रिथव कमस् क्रमामका का छ। उ। वाह

युष्डि न मही विज्ञनान्छ भाषा ८ महा। স্তকন্পবন ধূন দ্বাদি ভা॰ চ ॥ 🕬।। रकाता नकत भारा जन्म भारा:-ভিতাপশ্চ সম্ভাপঃ ক্রপাদযোঃ। जुद्रः महीक्ग (क्ठि लक्ष्णः द्राज-यञ्चनः॥ অ•শযোঃ পার্শ্বযোঃ অভি-তাপঃ পীড়া। অত্র সকল ধাতক্ষ্য পূর্বকঃ সকল শরীর শোষোপি বো-क्षत्रः। कीयस्य वाउतः मर्स उउः শুষ্যতি নানব ইতি সংপ্রাপ্তে:। এবং ষড়ুপে একাদশব্ধপে চ বোদ্ধব্য । এতানি ত্রীণি লক্ষণানি প্রাযো ভা-বিত্বেন চরকেণোক্তানি । সুশুতেন **যন্ধণি ষট্ লক্ষণান্যুক্তানি** ৷ ভক্তদ্বে-বো জুরঃ কাসঃ স্থাসঃ শোণিতদ-र्भन । अञ्चलक जाया यपुरम রাজয়ক্ষ্ণি॥ 🗱 ॥ উন্থণভয়া দোষা-गाः (जराप्तकारम वक्षगान्। इ। **अ**त्राज्याश्तिनाष्ट्रन अरकाठ का अ পার্ম্ববা:। জ্বরো দাছো ২তিসার-**क शिखानुकम्र ठागमः ॥ मित्रमः** नितिभूर्वे मञ्क इन्ह अव ह। का-नः कथेनऽहाष्त्रु रत्ना विरद्धयः कक কোপত:।। অনিলাদুল্ণাৎ এব পিত্তাৎ কফাচ। যত আহ সুশু, দঃ। এই এব মতঃ শোষঃ সলিপাতাঝু-কে। গদঃ। উদুকাত্তত্ৰ লিম্বানি দৌ

নাণা- নিপভণ্ডিচ।। # ॥ অসাধ্য যক্ষিণ মাহ। একাদশভি রেভি র্বা ষত্তি বাপি সমন্বিত । ত্রিভি র্বা পী ডি э॰ वि? श्रु कात्र का मामृगावरेयः॥ कशाहायापि उ जन्ड भिरह ८ मूबि পুল যশ:।। #।। তত্র বিশেষমাহ। नर्रि देखें जिन्नि दांशि विरेक् मांग्न বলক্ষবৈ:। যুক্তে। বর্জ্য শ্চিকিৎস্যস্ত **ज**र्बक्षाश्राह्माश्राह्म ।।। महिर्वि द्भि (तकारणञ्जः । ञद्धिः ष हैः । बि ভ ज्रंत काम क्षित्रवन्ति:। अ**खा ২**ন্যথা মা•দে বলে সতি সর্বর্নে। **২**পি পুত্যাক্ষায চিকিৎস্য:। মহা **णनः** क्रीयमान मजीमात्र निभीष्ठि-७ । भूनम् द्धान्त्रत्भव यित्रतु भ-तिवज्ञाय**् ॥ गङ्गाननः कीयमा**न মিত্যেক নসাব্য লক্ষণ। অতীসার নিপাডিত মিতি দ্বিতীয়ণ যত উক্ত । নলাযভা বলা প্ৰসাণ শুকাযভস্ত ক্রীবন । তথা বড়েন সংরক্ষেত্র স্থি-ণো নলরেতসী ॥ শ্নমুদ্ধেদের মি-তি তৃতীয•।। ৠ।। অরিঔনাহ। শুঙ্লা-ক্ষ নমছেষ্টার মৃদ্ধু স্বাস নিপীডিত । कृ'हुन वर्छ त्रस्टु यस्त्रा रही ह ना नवः॥ (प्रवृष्ठः भूकः क्षत्रवः। भूक्षाकः षानीन अरेक भ्रमा १ तिष्ठे नक्षनानि অব্ধিমাছ। পর দিন সহসুস্ত

यि जीविज मानवः। সুভিষ্টি क्-পক্রান্ত স্তব্দণ: শোষ পীডিত: ॥ শোষপীডিভো মানব শ্চেত্তকণো **ভবতি। সৃতিষণ্ডি কপ**ক্রান্তো ভব-তি ৷ তদা পর• দিন সহসু•। দ্বি তীয• দিন সহসু যদি জীবতি তত্ৰ জীবন বিকল্প ইত্যৰ্থ:। এতেন শোষপী-ডিভো মানব শেচন্তক্ণো ভবতি । সদ্বৈদ্য শ্চিকিৎস্যে। ভবতি। তদা **পূর্বন দিনসহসু** জীবেদের ইত্যুক্ত্বা চিকিৎস্য মাহ। জ্বানুবন্ধ রহিত• বলবস্ত ক্রিয়া সহ। উপক্রমেদা-স্বাবস্ত দীপ্তাগ্র মকৃশং নরং ॥ আ-তাবস্ত যন্ত্রত। ধৃতিন্ত বা।। #।। व्यथ निमानवित्नरेयः (नायवित्नया-নাছ। ব্যবায শোক বাৰ্ছ্ক চ্য ব্যাযা-মাধু পুশোবি ভান্। বুণোর:ক্ষত স• জ্ঞৌচ শোষিণৌ লক্ষণৈ: শৃণু। বু-**शाद्राञ्च अगरङ्गे (मायित्ये । जुन-**(मावी डेंद्र:क्रड(मावी ह ॥ 🕸 ॥ ভত্র ব্যবায়শোষিণো লক্ষণ মাহ। द्यागरणायी णुक्रमा क्रय निर्देश-ক্পড়তঃ। পাঞ্দেছে। যথা পূর্ব• क्षीयत्व हाम। शाजवः ॥ मृकम। क्य *विदेशः সুশু,* ভোকৈ:। তানি यथा । শ্কক্ষে নেডু ব্ৰণ্যো শেৰৰা অশ্-ক্তি মৈথুনে চিরা-প্ৰেক

চাল্ল শুক্র দর্শন নিতি। যথা পূর্ব। कीयास हाम। शा उदः भूथमः म्कः ক্ষানতে প-চাৎ শুক্রক্ষয জনিত বাঘুনা মঞ্জাদযোপি ধাতবো যথা शूर्वः क्षीयाष्ठ ॥ क्षा। लाकलावि-ता बक्कन बार । भुवरान मीतः जुखादः (भाकाभाव)शि लाम्भः। विना णुकक्षयक्रि विकारित क्ल विकिष्ठः॥ शुर्गानणीवः यम्गा छ। বেন শোকে৷ জনিত স্তদ্ধ্যান পর: ৷ সুস্তাঙ্গ: শিথিলাক: তাদৃশ: ব্যবা-यमायि मर्मः। (छन मुकारि मर्ब ধাতৃক্ষযুক্তা ভবতি। পর শুক काक्टि विकारित मिंदू व्यव (वस्ती-দিভি বর্জিতো ভবতি। ব্যাধিষভা वार ॥ अ ॥ जत्रात्माविता नक्षन भार । জत्रात्माची क्.मा नन्स्वीर्यं বৃদ্ধি বলেন্দ্রিঃ। কম্পনোংকচিমান্ ভিম্কা স্পাত্র হু তম্ব: ৷৷ ধ্বীবৃতি শ্লেম্মণা হীন গৌরবাক্চি পীডিতঃ৷ अः अमु ठाम। नामाकः मृष कक नव-हितः॥ भुम्छ गाजावयवः मुक्क क्रिमं गनाननः। मन्त्रभदः चन्नार्थः। णुक कक भवहितः भुक्ष क्रक भवहिती यम। मः। भुम्छ गाञादयदः भूम्छः পার্শাক্তঃ।লোন ভিলক পিপা**না** ञ्चानः ॥ 🗱 ॥ ज्यश्वासिता ज्ञन

মাহ। অমু ু পৰুষ্ছবিঃ। স'ভ্১. वियंग्र नः ॥ 🖘॥ वृश्याम् वक्र भार। गागम (नाषी जृाद् भिञ्ज दिन ममन्जः। विदेश क्रक्रे ক্তৈ: সংযুক্তশ্চ ক্ষতং বিনা। এভি-রেব সুস্তাক্তাদিভি রবুশোবিণো नकरे । इयिष्ठः अ अर्थः ॥ 🛊 ॥ निनान वृश्माय मार्। तकक्याः षिरनाजि खेरेथवा हात्र यखना ८। जुनि তস্য ভবেছোষো যাপ্যো হসাধ্যক সমৃত:॥ৠ। উর:ক্ষতস্য নিদান মা হ। ধনুষা যস্যতো ২ত্যর্থ ভার মৃদ্ধ-राजा एक । युष्रमानम् विविधिः পত্তো বিষমোচতঃ॥বৃষ হয বা-ধাবন্ত দন্য চান্য নিগৃহত:। শি লাকাপ্তাশ্যনিঘাতান্ ক্ষিপতে৷ নি-मुजः भवान् ॥ अवीयानम्। काकुरेह प्तः वा वुक्ताक छ। गरानमी वा-তরতো হথৈ রা সহ ধাবত:।। সহ-সোৎপতভোদ্র• তুর্ণঞাতিপুনৃত্য-जः। अथारेनाः कर्माञ्चः क्रेंत र्ज् ना নপ্যাহতম্য বা ॥ স্ত্রীযু চাতিপুস-क्रम्य क्षान्न भूनिजाभिनः। विक्राञ वक्किन वर्राधि बंगवान् ममूनीर्यराज्या 🖰 व्यायाम्य व्यायामः व्यवं वः। प्रमार वृशानिक । व्यन्त्रक शाहार्द्धानिक -

लिला नीर्च शाया ११ अन्य शुरु इथे ७३ ।। নির্ঘাতো হস্ত্রবিশেষ:। ব্যাধি: উ র:ক্তাথ্য: ॥ #॥ উর:ক্তস্য ল ক্ষণ নাহ। উরো বিৰুদ্ধ্যতে হত্যর্থণ ভিদ্যতে চ বিভন্ধ্যতে। পুপীড্যতে-ততঃ পার্যে শুষ্যত্যক পুরেপতে॥ क्रभाषीर्यं वन वर्ण कि त्रीनि शिया । जुद्रा वाषा मत्ना रेपना विर्देश र विषय स्था ।। पूर्वः मारायः সুৰ্গন্ধ: পীতো বিগুথিতো বহু। কাস্থানস্য চাভীশ্ব ক্ষঃ সাস্ক্ প্রব্তে ৷৷ স ক্ষত: ক্ষীয়তে ২ত্যর্থণ তথা শুকৌজসোঃ ক্ষযাৎ। অব্যক্ত• লক্ষণ ভস্য পূৰ্বৰূপ মিতি মৃত ।। বিৰুজ্যতে পীড্যতে। ভিদ্যতে বি-দার্য্যত ইব। বিভঙ্ক্যতে দ্বিধা ক্রি-यु इव। म भूकवः। कु ः উदःक-खवान्। अज्रर्थः क्रीयख क्रीला ভবতি। ন কেবল পাসু কফ ক্ষ্যা-দেব ক্ষীণো ভবতি। তথা শুক্রোজ-(मा: क्रयार । ख्राजित्मवनामिना भूको बलाः क्यामि कीला खर-তি।। #।। উরঃক্ষতস্য বিশিষ্ট• वक्र भार। উরো কক্শোণিত ह-দ্দি: কাসো বৈশেষিক: ক্ষতে। ক্ষীণে সরক্ত ন্তর্ণ পার্ম পৃষ্ঠ কটিগুহ: ॥ **ফ**তে উর:ফতবতি। উরো কক্।

শোণিত ছফি: কাসে৷ বৈশেষিকঃ বিশেষতো ভবভ্যেব। ভিমামেবো-রঃক্ষতবভি সাসু কফ শুকৌজসা• क्रगर कील नद्रक मृबद्द नार्थ, পৃষ্ঠ কটি গুহুণ্ট ভবভি।।ঞ্চা। নিদান বিশেষেণার:ক্ষতস্য লক্ষণ বিশেষ मारु। वुगात्राधा एक गारिह व (का हा ८ পুতিমলাভথা। क्षात्रक्षमाध-পাকে নি:খাসো বাতি প্তিক:।। ক্ষণাৎ ধাতুক্ষ্যহেতো ব্লভিব্যবা-বাদিত: কোষ্ঠাৎ প্ৰতিমলাৎ কো-ষ্ঠাৎ পুতিলোম বাতেন পুতিলোম[া] वनार न्जिकः न्जिगन्नः॥ # ॥ উর:ক্তস্য সাধ্য যাপ্যাসাধ্য ল-क्का भार। यम लिक्ना मीक्षामः সাধ্যো বলবতো নবঃ। পরিসম্বৎ-সরো যাপ্য: সর্বলিক্স্ত বর্জয়েৎ ।। # ।। # ।। व्यथ ब्राज्यक्त हिकिए जा । विवास वर्णायम् अक्ष कर्यापि कात्रायः । यित्राः कीन (पर्म) ७८ कृष्ठ• महादिखाभग• ॥ मना-यख वन भू भा भूका यख छ जीव-না তব্যান্তরেন তা রাক্ষেত্রিশা মল রেডসী॥ শালি বঙ্কি গোধুন यव मुन्नामरण विज्ञा भम्जानि को-क्वाः शिक मृगाः मञा विष्माविगः ।। म लिश्नलीकः भयवः म अल्यः म

নাগর•। দাডিনানলকোপে**ত** স্থি জ মারু রস পিবেৎ।। তেন বিহি निवर्न्डल्ड विकादाः शीनमाम्यः । দুব্যতো দ্বিভণ মাণসণ সর্বতো ২৪ গুণ জল•॥ পাদস্ত সংস্তঞ্চাজ্যে य उत्का यय उठाउ । उप्यथा । यव **भव । ञ्वल्यभव । हामभा•मभन** ৪ জলপল ৪৮ শেষপল ১২ ডভঃ পলনিতে ঘৃতে সংকরণীয়া ওত্র কর্ষ সিত্ত সৈন্ধব দেয় সৌরভার্থ श्चि ह (एयः । शिश्चनी नागद्रक भृषक् भाषभि**उ**॰ कल्ली कृ ७८ (१य॰ । माजिगामवकान्त्रा महात्र नाथ्र 1 यप्रयूषः ॥ 🗱 ॥ कञ्च ज्वक् नाभः वन। वानजीवीजः विष्ठ्रिंडः भयता। পীত মধ্যুত যুক্ত সসিত যক্ষাদি কাসহর ।। ছাগমা সে প্রশাগ ছাগ নিশিচ নাগর ৷ ছাগো**পসে**-वा मधन हा गन्या ज्यक्ष पृथा मधु जा १। दिउसामाः बज् लार घृजाज्या । মুন্তি ৰক্ষাণ মত্যুগু পেৰ্যমানা হি-তাশিন:।। তাপ্যং সুবর্ণনাক্ষীক।। শকরা নধু সংযুক্ত• নবনীত• লিহন্ ফ্যী। **ক্ষীরাশী লভতে পুষ্টি মত** ল্যেচাজ্য নাঞ্চিকে॥ **সিভোপলা**-ত্ণাক্ষীরী পিপ্লনী বহুলাব্চ:। अस्मान्क् विधनिज। मन्निजा मृत्जा मृत्

সর্গিসা ।। লেহ্যেদ্রান্তরোগার্ভ কা-স খাস জুৱাতর । পার্খশ্লিন **নল্লাণ্নি• সু**গুজিল্ব• ক্চিচুতে• ॥ হত্ত পাদাঙ্গ দাহে চ জ্বে রক্তে তথোজ্ব গৈ। সিতোপল। মিশ্রী। বহুল। সূদ্ধেল। গিতোপলাদি রব-লেহ:॥ রা । জাতীকল বিডঙ্গানি চিত্রক• ওগর• ভিলা। ডালী**স**• **ठनरमः मु**ठी वयन म्थर क्षिका ॥ কপ্র শ্চাভ্যা থাত্রী গ্রীচ পপ্র-লী তুগা। এবা মক্ষ স্থা ভাগা শ্চাতুর্জাতক সংযতা: 🕦 পলানি সপ্ত ভক্ষেদ্য সি হা সর্ব সমা মৃতা ৷ চূৰ্ণ নেত< ক্ষয় কাসং স্থাসঞ্ গুছ-भी भरेगा अधाहक शुक्तिगाय তথা চানল নন্দ্ভাণ এভান্ রোগা-न् निरुष्डिऽव वृक्ष भिन्दुः भनि यंथा ॥ बाजीकवार) हूर्न ।। 🗱 ।। वावादा-गाधिकाद्माऊ रेउन नाकारि या-জবেৎ। অভ্যক্তে যক্ষিণো নিভ্যুণ वृष्क विरम्यानरमञ्ज्ञः ॥ वानकम्य রস পুত্র মাণিকা সিত শকরা। পিপ্ললী দ্বিপল তাবৎ সলিষ্চ শনৈ: প্ৰতেশ্য ভিমিন্ লেহত্ব নায়া-लंहिङ कोन् भनाष्ट्रकः ॥ मञ्जाः वजाद्रविष्टाः नीराः लाहाय मू-खनः। १ । १ ए छ द्राजयस्त्रानः कामः

यात्रक माकन ॥ भा र्व म्लक वृहने ब्रक्कभि**ख• ज़्रब्र**था । वामावलहः ॥ 🛊 ॥ অথ ব্যবাধাদি ছেতুক শো-ষ্টিকিৎসা। তত্ৰ ব্যবাযশোষ हिकि**र्म। । व**ऽवायरभाषिग॰ क्रीब अन ना नाका (जाबरेन:। नुक्रेन मधुरेत कृ रेम्ड जी वनीरेय क्लाहर्त्वर ॥ द्रात्र। माः नवमः मृक्रेल हिं रैजः ॥ 🛊॥ শোকশোষ চিকিৎসা॥ হ र्यना खामरेनः कीरेतः निर्धं गंधुत भीउरेनः। हीश्रीन जंगनि भारेमः (काकत्वाच भगाउर३८ ॥ 🕸 ॥ बुग्रयाग्रामाय हि िक मा। बुग्रयाम-শোষিণ দ্বিক্তিঃ হাত হৃত হিতৈ हिं कि: । छेशाव्यक्तीयनीरैंग वि-**विना** ः शिक्तिकन जु ॥ 🗱 ॥ जाश्रुरणाः य ठिकिएमा। यामग्रमुरेथ निवाः अरिशः मीरिङ मध्द तृःश्रोनः। यम **मा॰म त्रमाहादि तक्षः भाष मृशाह**ः द्रिष्ट ॥ # ॥ तुन्तमाय विकिष्ट मा । वुगरमाय॰ करवट द्विषा मी शतिः चामू भी उरैनः। देवमरेय त्रनरेय र्वाः यृष भा•म तमाहि 😇 ।। 🕸 ।। অথো-রঃক্ষত চিকিৎসা। বলাশ্বসদা 🕮-लगी वह्लु भी जूनने वा। लगना नि ্ত্য নভ্যস্তা: শমযন্তি ক্ষত ক্ষৰণ।। शिभगी गञ्जाती । वर्भूभी मञा

वती । वनापिष्णं ॥ 🗱 ॥ अना भ-এ पुरा मुक्ता भिन्नगुर्क्शनः भृ-थक्। भिडा मध्क थर्ज्व मृघीका-শ্চ পলোমিতাঃ ॥ সংচ্ণ্য মধুনা-युक्ता विविध मःभुकन्नयः । वाकः गांजा ७७ रेण्डव जक्रायह मित দিনে ।। ফত ক্ষয়ণ জ্বরণ কাসণ খাস হিক্কা বিমি ভুম। সূর্চ। মদ ত্ব। শোব পার্যশূল মরোচক । श्लीशन गामवाज्यः ब्रक्तनिखः च-द्रक्रय । बनामि **७ हिका रु**डि व्**र**ा मञ्जनी भन्ना ॥ 🗱 ॥ मुक्तायाः পুত भिक्छ मधूकमा भना हेक श পঢ়েব্ৰোযাষ্ট্ৰকে শুদ্ধে পাদশেষেণ তেন जु॥ পলিকে नधुक माक्क निः (ष्ठे क्का भन घर । भूनाय मर्निय: পুস্থ• পচেৎ ক্ষীরে চতুর্গুণে॥ সিদ্ধে नीत्ज भनानात्ही नक्तायाः भुना-পথে । এতদাক্ষাঘ্ত मिक्क क्रांड ক্ষীণে সুখাবহ।। বাত পিত্ত জ্বর श्वाम विद्धारिक रूलीमकान्। शुनद्र. র ङ**পি उक्ष हर्ना ज्ञाः** म वन शुप्तः ॥ मुक्कारिष्ठ ।। 🗱।। क्वीरत थाजी वि-मात्रीक्ष् वत्रीगाध्य उथा त्राम । भारत नाम घ्र नुङ् भश्रेतः कर्य मिरिष्ठः ॥ मुक्का वि इन्हरनाभीत् नर्करताथ-পল পদ্মকৈ:। মধুক সমুমনান্তা

কাশ্মরী তৃণ সংজ্ঞকৈ:॥ পুস্থার্দ্ধণ মধুন: শীতে শর্করার্ছ তুলান্তথা। भनार्ककाः क जःह्र्ग्र जुराना भव কেশরান্ ৷৷ বিনীয ওত্র সংলিছা 📗 ন্মাত্রাণ নিভ্যা সুবজিত:। অমৃত शुग भिष्ठ। उरिष्ठाः भित्रकीर्वि তে।। ক্ষীর মাংসাশিনাং হন্তি রক্ত পিত্ত ক্ষত ক্ষয়। তৃঞাক্চি খাস काम इपि मूई। भुमम्न ॥ मूबक् हु জुत्रमुक्ष वला की ति जिवस्ति। जाम् **७ श्रामावलकः ॥ # ॥ यन्यह उर्भ** ণ শীত মবিদাহি হিত লঘু। অয় भानः निरवराष्ट्र कड कीरेनः मूथा থিভি:।। শোক জিয় কোৰ মস্ य उाक्ष उप्रक्रम् मात्रान् विषयान् ज-জেয়। তথা দ্বিজাতী দ্রিদশান্ শু कः क वाहक भग्राः मृग्या फिर जा छ। ॥ 🗱 ॥ व्यथ् द्राज्यक्त्रित्र माः । द्रम ভষাম্তা সৰু লৌহ মধু ঘৃতা বি छ॰। अगृज्यत्र नामाय॰ यएजू রাজ্যক্ষজিৎ ৷৷ রসভম্ম মারিতো त्रमः ॥ #॥ অমৃতাमञ्जः ७५५ी मञ्जः । (लोरु: मादिञ:। অমৃতেশ্বরোর সে। রাজ্যক্ষণি রসেন্দু চিন্তামণৌ। ত্রযো হ শা নারিতাৎ স্তাদেকো শো হেম ভষত:।। একো শো মৃত ভামুক্ত শিলা গন্ধক্ষ ভালক । পু-

७८० जागगुग्राः म्रारमञ् सर्वः विर्वृत्यर ॥ वद्राष्टी भूद्रायखन छ। গীক্ষীরেণ টক্ষণ। পিখ্বা তেন মুখ ৰপ্বা মৃদ্ভাণ্ডে তাক্ষ পূর্বেৎ। ততো গন্ধপুটে পক্ত্বা চূৰ্ণবেৎ স্বাঙ্গ শীতল ।। রসোগার মৃগান্ধো ২য় চতুর্গঞ্জ: ক্ষ্যাপহ: ॥ মরিচৈ জনবি শত্য क्पां कि मंगि खिथा।। मध्ना मर्लि ষ। চাপি দদ্যাদেত রস ভিষক্। অনেন নশ্যতি ক্ষিপু॰ বাত শ্লেম ভব ক্ষয: ৷৷ রাজমূগাক্ষো রসে৷ রা-जयन्त्रित द्रामनुष्टिष्ठावरनो ॥ 🚓 ॥ मुक्तम् उ॰ विधा गन्नः कर्गाए খल्लिन কজ্জলী• তথো: সন• তীক্ষ চূর্ণ• মর্দ্ধ· (यट कन)का मुरेवः ॥ विया म मा उर्भ গোল-তামুপাত্তে বিধারবেৎ। আ हारेराइ ७ मध्या नामूचा यामयू-গ্মতঃ।। ধান্যরাশৌ ন্যসেৎ পশ্চাদ-रहात्राजाखरूकात्र । मः हुर्ग्र गाल-যেদ্বক্তে সত্যু বারিতর ভবেৎ ॥ ত্রিকটু ত্রিফ**লৈলাভি জাতীফল ল**-বঙ্গকৈ: ৷ নব ভাগোন্মিতৈ রেতৈ: স ম এষ রসে। ভবেৎ।। নিম্বদ্ধয় মিত॰ निज्यः मधुना मह (लष्ट्रायः । व्ययः মগ্রিরসো নাশ্রা কাস ক্ষয হর: পরঃ ॥ অগ্নিরস: শার্কধরে। ইতি ভাব-**পুকাশে রাজ**যুক্সাধিকার: ॥

व ाउ। इंडि कविक्यक्षर।। न याजि। ইजि मूर्गामानः॥ यागः भू॰ यद्धः। ইভागतः॥ তব শ্ৰোতাণিক্তা হবিৰ্যক্তা: সপ্ত। যথা। অগ্ন্যাধান তদেবাগ্নিহোত্র।) पर्मालोर्गमास्त्रो २ निखनि**ञ्**य-क्कः ७ चागुरा ४ ठाज्यामाः ६ নিৰুচপশ্বন্ধ: ৬ সৌত্ৰামণি: १। মার্ত্তাগ্রিক্ত্য পাক্যজ্ঞা: সপ্ত । यथा । जिभामन > देवश्वरत्वः २ ञ्चानीभाकः ७ जागुरान ८ मर्भव-लिः ৫ देगानवलिः ७ जन्नेकान्नहेका १। (मोजागिनधमः इाः। यथा। সোম্যাগ: সএবাগ্রিষ্টাম: ১ অ-ত্যবিষ্টোম: २ উক্থ্য: ৩ वाउणी ८ वाकाभयः ৫ म दिविधः मः इ। স্কৃক। অভিরাত্তঃ ৬ অপ্তূর্য্যা-ম: १। উত্তরক্রতবো বহুব:। যথা। মহাবৃত > সর্তামুখ ২ রাজসূ-यः ७ (भो अब्रीकः ८ व्यक्तिष्ट ৫ বিশ্বজিৎ ৬ অশ্বনেধ: ৭ বৃহস্পতি अतः ৮ लाक्तित्वः > हयनान्। द्वापः শ্বে ইভ্যদি শৌতসূত্রণাঞ্চা স-রনেবামা• যাগকালো যথা ৷ শুক্র-ेवाठ। ब्राह्मदेनव ज् मुरवान मञ्चा-भगाः यथा ভवटा **उत्रः (मा**जू निहानि गुरुगागः जूतस्वत ॥ व

(काराह । ण्पू वर्म भुवक्रामि यथा दु॰ शत्रिभृहिन । चन्नत्कन न-शानुगाः गुरुक् जिथि योगिकः ॥ ভ্**छ न्**र्नाष्ट्रमी स्वानः व्यवस्यारमञ् চোৰস। মৃদ্বৰ্গঞ্চ ভাগ্যঞ্ উমাবা ज्खवा**न**त्त्र॥ रेमव (गागाट्यमा वधी शूष्ठक द्रविवानद्र । ऋन्त्याग छन्। कार्यः जर्बकाम शुजासकः ॥ वाद्मन वा यना मृर्य्यः मध्यी विक्रया मञा। তদা ভু ভবতে ভানে। র্যাগঃ সর্ব গুণাবহ: ৷৷ শব্দ রিক্তানুসংযোগে অর্কক্ষে সোত্তরাসু চানব্ম্যাণ মঞ্জ-ना (यार्गा जानू मून दिन॰ यहा ॥ व्यष्टेग्रा॰ वाथ वन्तुरङ् मुवरान म्-ভাবহণ ৷ অহি বুগ্নে স্বজাহে তু গণে-**(म उ**न्ध्र वारुनि ॥ भूनई(मो छात्र) র্বারে দ্বাদশ্যা শুবণেন বা। সোম गुल यहा (यागः विस्थाः महार्थ সাধক ।। শ্বিতীয়ায়া যদা সৌমের क्खिकर्क्कः ভবেৎ कृष्टि । गुरुशाग खना कार्याः সर्वभाष्ठि शुनायकः ॥ याजी भोमी हजूथी ह जैयायाला वदा मृजा । উত্তরাসু চ সর্বাস্ ভানু পৌৰ্ণাষ্টমীযু চা৷ শান্ত্যভিষেক यारायू नर्स कामार्थमाष्ट्रभी। एता-(वकामभी भूषि। जाहिगा वा यम শর্নি: ৷৷ সূত্র সৌভাগদ কানায যা-

 $\mathcal{N} = \mathcal{N}$

গো ৰুদু বিনাযকে। পূর্ণিনাসু চ স-र्बाम् अष्टेमी हारणीयु ।।। हजूर्मणाः ত্ তীযাসু গুহু ঋকে শুভেষু চ। সর্বে-ৰা• ভবতে যাগো ভক্তিগ্ৰো ম-श्राभूति ॥ सञ्जनाथन मृत्राराश कृष्या-গাদবাপ্যতে। 🕮 মেখা জ্ঞান বাৎ-नन मूमायागाच शमूत ॥ (याग জ্ঞান যশ: সিদ্ধি নহাদেবাদবা-পু যাথে আরোগ্য সপুতাপত্ব ভা-ক্ষরাৎ পাু প্রতে ধুরে।। গতি নিষ্টাণ যথা কাম॰ পুষছতি তিবিক্রম: । বিম্নোন ভবতে তস্য যস্ত পশ্যেদ্বি नायकः ॥ विश्व जात्रि र्छ्य र यक्ष्याः मृष्ट्री कनर मत्थ कनाट । माज् যাগান্হানিদ্ধি: সর্বোন্পি জা-या ।। ख्वा धनवान श्राम: भ्रथमा হে হু তাশন ে। স্বৰ্গাপ বৰ্গ সংসি-क्ति पूर्गायागार भूकायरा ।। भाषारेम् भक्लाः भाषा दिन्न कि अ कायल । त्रेगारेन्धः कानिकान्यास यष्टेवता विधिना मूरन ॥ इंडतारहत एक ব্যবতারে উদ্ধ তিথ্যক্ষ যোগ মা हाजा की डंन ॥ # ॥ अथ गुरुयान विविः। भूगमा नव ववानीन मृजा णुङ कनपुरान्। गुरुयाग विधि॰ नगात् दिक श्रीतयूननरनः ॥ व्यथ গ্রহ্যাগ প্রয়োগ:। তত্র রবি সোম

বুধ গুৰু শূক বারেষু চিত্রানুরাধা মৃগশিরে৷ রেবতী পুষ্যাখিনী হস্তা রোহিণ্যুত্তরা ত্রযেষু চন্দ্র তারানুক্-ल मूडना यागः कार्यः । अब বালগুছ ভূতগুছ পুবলতর নরাধিপ শত্রু দুংসহ রোগাভিভবান্ড্ত দুঃস্ব-श्वावत्वाकन गुरुरहो इति विभि छक॰ भाष्ठिकः भवभागामाविन कर्खवाः। व्यवगुरु विना किवन वृष्टेरायुः भूष्टि পুত্র ত্রীকামাদি পৌপ্তিকন্ত মলমা-गारी उद्र काल এव कार्याः। # । उज যন্ত্ৰসানাদিঃ গোমযোপ-निश्च (मान महर्चा माना गिर्देश केंद्र-ভ্যুথ: শ্বন্তি বাচ্য সূর্য্য: সোম ইতি পঠিত্বা ফল পুন্ন তিল দৰ্ভত্ৰয় স-হিত জলপূৰ্ণ তামুপাত্ৰ• গৃছীত্বা ওঁ তদ্বিষ্ণে। ব্লিভি বিষ্ণু• স•স্মৃত্য ওঁ তৎসদিত্যুদ্বার্য্য ঔঅদ্যেত্যাদি অ-मूक (गाव: बी यमूक (हरणमा व्यमूक कारमा गुरुयक्त नरु कतिरस्य रेजि मक्षन्ना ७ छन्न स्मित्भान्याः निःकिः পেৎ। অন্যার্থত্বেগোত্রনাশ্লাঃ ষষ্ঠ্য-ন্ততা। করিষ্যে ইত্যত্র করিষ্যামীতি বিশেষঃ। ভতঃশ্বেতসর্যপানাদায ওঁ বেতালান্চ পিশাচান্চ রাক্ষসান্চ मत्रीमृभाः। अभमर्गस्र তে मर्द्धा (य চান্যে বিমুকার কাঃ।। ওঁবিনাযকা বি-

নুকরা মহোগা যক্তদ্বিষা যে পিশি ভাশনাক। সিদ্ধার্থ কৈ বঁজু সমান करेल्ल भेषा निज्ञन्ता विक्तिन: भुषान्ता। ইভ্যেতাভ্যা• নম্ৰভ্যা• শ্বেত্তস वंभ भुष्किभ विंगुकात्रकानभगात्रः যেত। ততঃ সগণাধিপ ষোডশ মা-ভূকা পূজা বসোধারা আযুষ্য জপ• उरद्धात गायबी ज**न** वृक्ति गुक्ति ক্রা তদশক্তো ভোজ্য মৃৎস্জ্য বা হ্মণান্ পরিভোষঃ ততঃ স্বযনশক্তৌ कर्ना भाषायः छमः छँमाव् ज्वाः नाषा नििं वर्पट अँ मावृह्मास ইতি পুতিবচন । ততো গদ্ধপুত্র मिकिन जानू म्लूछे। अँ याम जामि म८ महिल् उ गुरुयाग कर्मान गुरु পুরা হোম কর্ম করণায় অমুক গোত্র অমুক দেব শর্মাণ গন্ধাদি-ভি রভ্যচ্য ভবস্তমহ॰ বৃণে । ওঁ বৃতো ধ্মীতি পুতিবচন । ওঁ যথা विश्विः भूजामि कर्म अक। ७ यथा জ্ঞান• করবাণীতি পুতিবচন•া ততো মণ্ডপোত্তর পূর্বভাগে বিতন্তি দ্বয विख्ठाया॰ विज्युष्टि जाया॰ छेनक् ध्रवाचाः 'तक्ताः त्यस्मरयरमाभनि भाग्रङ्ग कला किया संस्था यह वि ्रां : । बाद्मयप्राः स्थ ७ मर्काठन्तुः

কার পোম। দক্ষিণ স্যাণ ত্রিকোণ। त्रकः मक्षा। अभानाः भीजः धन्-রাকার• বুধ•। উত্তরস্যা• পীত• পদ্মাকার বৃহস্পতি। প্রাচ্যাণ খে-ত চতুষোণ শুক। পুতীচ্যা শ্যা-भ· नर्भाकाद्र· भनि·। रेन्थं छ्राः শ্যাম॰ মকরাকার॰ রাভ্। বায-ব্যাণ পুমুবর্ণান্ খল্লাকারান্ কেত্ন বিলিখ্য স্বগৃহোক্ত বিধিনা অণ্ম-ञ्चाननाहि वृक्षञ्चानन भग्रंड॰ कर्य क्षा म ७ त शुराना वा र एय ।। # ।। তত্র ক্রমঃ।মধ্যে।ওঁক্ষ্তিব কাশ্যপ• त्रकः कालिकः चारमाञ्चलः। भग इस वयः भूबीननः मधायवाइनः॥ निवाधिरेविंउ भारयहिङ भुज्रिब-रित्व । मक्षम्या बायमान विना-খ। নক্ষত্র• রক্তনাল্যায়রখ্র•। ইতি थााजा ७ ज् ज्वः सः भ्रागुरु ইহা গছ ২ ইহতি ৪২ ইতি শুক্ল ত-ণ্ডুলৈ রাবাহ্য স্থাপথেৎ।। ১॥ আ-त्त्रय। **७ नामु मुः रेवना**। भाव्यर श्ख মাত্র• মিতায়র•। শ্বেত• দ্বিবাহৃ• व्यवः मक्किनः अगरम्ख्यः॥ मन्ना-শ্ব শ্বেভগদাস্থ বিচিন্ত্যোমাধি रैनवज्ञा कल भुज्यश्वरेषदेक मृ-यात्रात्र नाख्यख्या ॥ ठठकंभााः জাও ক্তিকা নক্ষত্ৰ নৈতি ধ্যাত্বা

ওঁভূভ্ব: ম্বঃ সোমগুহ ইহাগছ ২ ইহ তিধ্ব ইতি শুক্ল তণ্ডুলৈ রাবাহ্য ङ्गाभारययः ॥ २ ॥ मिक्निमाताः। उ আবস্ত্য: ক্ষত্রিশ রক্ত: মেবস্থ: চতু রস্থুল ৷ আরক্ত মাল্য ব্সন ডার · দ্বাজ চতুভুজ।। দক্ষিণাছ ক্মা-ছক্তি বরাভ্য গদাকর•। আদিত্যা-ভিমুখ · (দব · ভদ্বদেব সমাস্ত্র্যেৎ)। ক্ষন্দাধিদৈবত ভৌন ক্ষিতি পুত্য विरेनवज् । मणना काज भूर्वाः ষাঢা নক্ষত্ৰ মিতি ধ্যাত্বা ওঁ ভূ ভূ বি: ষঃ নৰ্লগৃহ ইহাগছ ২ ইহ তি ৪২ ইতি শুক্ল তওলৈ বাবাছ স্থাপথেৎ ॥ ०॥ ঐশान्ताः ७ नागशः घाकः লাত্রেয় বৈশ্য পীত চত্ভু জ। বামোদ্ধ ক্রমত শ্চর্ম গদা বরদ খঙ্গি নং॥ স্র্য্যাস্য সিংহগংসৌম্য পীত वद्यः जथास्र्ययः। नात्रायगाधिरः-বঞ্চ বিষ্ণুপুত্যধিদৈবত ।। দ্বাদশ্যা জাত খনিষ্ঠা নক্ষত্ৰ নিতি খ্যাত্ম ওঁ ভূ ভূবিঃ মঃ বৃধগুহ ইহাগছ ২ ই-হ তি ১ ২ ইতি শৃত্ন তণ্ডুলৈ রাবাছ ङ्गभाष्य ॥ ८ ॥ উত্তরস্যা । वि-क नाक्षित्रमः भीडः रेमक्करक यऊ नः। ध्राचा भी जायतः कीवः म রোজস্ত চত্রু জে॰।। দক্ষোদ্দ ददन दद्रकी मध्य भाष्ट्रीय । वेका-

क्षिएव॰ म्यंत्राम् अनुमु भुज्यिषिकः ত ।। একাদশ্যা কাত উত্তর্কল্লু-नी नक्क मिछि श्राद्वा उँ छू जू वः ষঃ বৃহস্পতে ইহাগছ ২ ইহ তিষ্ঠ ২ ইতি শুক্ল তণ্ডুলৈ রাবাহ্য স্থাপ ষেৎ।। ৫।। ততঃ প্রাচ্যা। ওঁ শুক্র। ভোত্তকট বিপু ভাগবঞ্চ নবাঙ্গুল । পদ্মস্থ নাহ্য । শুৰ্য্যনূথ দেও। **ठ**ञ्जू ब•॥ সहाक वद कदका एखः **रुष्ठः नि**ञाञ्चद्रः। मकाशिरिद्युष्ठः थारवर मही भुडाधिरवडः॥ नवः ন্যা জাত পুষ্য নক্ষর মিতি ধ্যাত্তা ওঁভূভ্ব: য: শুক্ত ইহাগছ ২ ইহ ভিষ্ঠ ইভি শুন্ন তণ্ডুলৈ রাবা-य इशिय ।। ७॥ भिन्हमागाः। भोताष्ट्रे॰ कामाऽभ॰ मृतु॰ স्र्रामाऽ॰ **ठ्युक्ता।** क्षे क्षात्रवा गृध्याउ. সৌরি চতুরু জ।। তদ্বাণ বর শ্ল थनुर्रेख ममास्र्रायः । यभाश्वितवङ পুজাপতি भुज्यभिरेषवङ ॥ कृषः চতুর্দশ্যাণ জাতণ রোহিণী নক্ষত্র নিতি ধ্যাত্ব। ওঁ ভূ ভূবিঃ স্বঃ শনৈ-শ্বর ইহাগছ ২ ইহ ভি% ২ ইভি শুন্ন তওলৈ রাবাহ্য স্থাপথেছ।। १ ॥ रेनर्थाङ्गाः । त्राङ्ः, भन्यकः म् पु॰ रेशठीन धारमाञ्चलं। क्ष क्षाञ्चतः मिःशामनः थ्राषा उथा

। চতুৰাহু খন বর শ্ব চর্ম क्रव • जथा। काना शिरित्व मूर्ग्रामा नर्भ भुज्यविरम्बज्या (भोर्गमान्या জাত ভরণীনক্ষত্র মিতি খ্যাত্বা ওঁ ভু ভূ বি: স্ব: ভগবন্ রাছে। ইহাগছ্ ২ हैर जिष्ठ २ इंडि मूक्न उञ्जूरेन बावा श साभारवर ॥ ४॥ वायवता । কৌশদ্বীপ কেতুগণ জৈমিনীয় ক एक् नः। ध्रा॰ गृध्गठः म् म् मास्रायः षिक्ञानन ॥ স्र्यामा श्रम्यमन बद्रमः शमिनः छथा। চিত্ৰগুপ্তাধিদ বঞ্চ বুন্ধ পুত্যধিদৈবত।। অনাবা-স্যায়া জাত অশ্লেষা নক্ষত্ৰ মিতি ধ্যাত্ব। ওঁ ভূ ভূবি: স্বঃ ভগাবন্ত: কেতৰ ইহাগছত ২ ইহ বিধত ২ ইতি শূন তঞুলৈ রাবাহ্য স্থাপথেৎ ॥ २ ॥ अविरेनवङ भुज्यिकित्वङ भृजनकाग्ठ शामासी। उठ छख ৰৰ্ণবস্ত্ৰ ভত্তৰৰ্ণপুষ্ণ দ FSIC। #1 ध्रा विष्णयः। त्रवराय खन्नुः नुष्ण । (भागाय **मद्रनः। भक्ना**य প্ৰদাক। বুধাৰ ঘৃত মিশ্ৰিত দেব-शिक । व्रुग्ण अत्य मणात्रः। णंकाय ण छक्। भरिनम्बराय काला छक्। রাহবে গুডব্বচ•। কেতুভ্যো নধ্নি-শ্ৰিত গুণ্ড হচ। অভাবে ধােড শাস্ত । वा॥ 🕬। गरक्षिव्यम् वः। मूर्यप्राय तक

ठन्तन । त्मामाच (थंडठन्तन । स्न-क्लार बङ्गः। तूथार अद्भनः। छ-রবে রক্তচন্দ্র শ্বেতচন্দ্র জ্বন্ধুন্ন স वनः भिन्छ नमञागात्वन हर्गाट । भरिनम्ब्राय कलुद्री । द्राष्ट्रत भ-মকাধ্ব। কেতুভান্ট পদ্মকাষ্ট্ৰ । অধিদেবজা পুত্যধিদেবতাঃ পুত্র-(यट । अ। अधिरहत्या भुज्यधिरहत्या यथा। मूर्यामा निव वशी। (माममा উमा बन्। मक्लम् ऋन्तः कि जिः । तूथमुऽ नातायम विक् । वृहम्माटः वुका हेना का भूकना भकः भंगी। भरिनकत्रमा यमः भूजाशिकाः। वारहाः कानः मर्भकः। (करनः कि এগুপ্ত: বুকা চ। এতভু অব্তাদি रहाम (छत्त्व^न। #। मूर्ग्याय खर्डोहन বলিঃ। এবং সোনাদীনা মপি। সতি नामर्थाः स्वाज्यानकात्राहिन। ॥ वत्तो जु। मूर्वताय खरडोरन । (मा-भाग घ्रत्रायमः। भक्ताय भन्नयव **ट्**र्भाञ्चक यावक । वृथाय क्वीबाम । खद्रत्व परशापन । मूकाय घृरकोपन । भरिनण्डताय क्वत्र। ब्राह्रत हात्र-মা•স•। কেতুভ্যো অজাক্ষীর সাধি তাজকর্ণর ক্রমিশ্রিত যব তিল ভঙ্-क जन विद्योहन। उ उर पुन्याना इनाउन प्राथाका उठ क्य.

म्नार्य । उव जामगानाः कमः । व्याः निक्यायाः दिनि भागगान् म्मानासीर्ये जपूर्वा भुकानि उ वाक्ष मृष्यनः दिनवक मूर्भः वाक्ष हममञ्बन (भाकिन न न ज्ञाभ) वीशीन् यदान् दा अन्यको भानि **७ ७ नान् मूर्ल निधाय ७ म्यं। यदा** জুষ্ট নিৰ্বপানি ইতি গৃহীত্বা উদ্থ ल इाभाय । এব । भागाय। এব मक्वारीना मिल निर्देशन क्षा উদ্থলে সাপযে । हि खुछी । ততো দক্ষিণ হস্ত মৃপরি ক্রা মূব लनावइंड जूर्लन भुरक्तां हेरार । ইত্থমেব বারত্রয় । তত শচক্সাল্যা মনজক ক্তোত্তরাগু পবিত্র নিঃ-ক্ষিপ্যত্র পুকালিত তণ্ডলান্ নি-शाय जुमुन वि मुंबा मंद्री यथा नायन চৰু ভ্ৰতি তথা স্তোক সেদ कः रदा उत्रास्त थित्र भनामापुः মরাণা মন্যতমস্য প্রাদেশ পুমাণ উভ যথা সাৰ্দ্ধাঙ্গুধ্ব পুনাণ চতুদ্ধোণ शूष्ठवः भिक्षनः पिक्षनावर्खिन ज्ञान-यिदा उथा भटित यथा व्यष्टद्वादाना সম্যক্ পাকে৷ ভবতি মণ্ডগালন দাহত্ব ভবতি। সম্যক্ পাকে ভূতে চৰা মধ্যে ঘৃত সুরা দল্পা পু गापि मिक् विद्शिष्ठः क् इ। वद मव

তার্য্য অশ্নে কত্তরত: সপৌপরি ছা-शयिदा भून गर्था मृ ज मृत पर्वा १ ততো ভূমি জপাদি সুর সংস্কার প-यं हु॰ कम्यं क्षा व्याः शिन्छ्य उः छ-রণ অশোপরি পূর্নাল্ড পশ্চাচ্ক নিধায উদকাঞ্জলিদেক কৃত্বা বিক্ক-পাক্ষ জপান্তা জশন্তিকা সনাপ-<
 <!!*॥यज्वादिनास वाक्रश्रावः।
</p> गाका निर्वेशनाम्बद्धः मूर्शः भूद्राजा দিক্ষিণভাগে সংস্থাপ্য ত্রোদ্থল বিন্যস্য বীহ্যাদ্যন্যতম্ তত্র নিধায अँ मूर्य) यद्वा छ छ॰ मृङ्गामि ইতে ১ का॰ মুষ্টি গৃহীত্ব। ওঁস্ব্যাযত্বা জুষ্ট নি-र्द्दभागीि उप्थाल इाभियदा अंम्-यं।। यद्या ज्रष्टे प्राकानी जिल्लाक-ণী জলেন পোঞ্চয়েত। এবং সোমা-যত্বা ইত্যাদি। তত ওঁ অণ্নয়ে শ্বিষ্টি ক্তেত্বা ইত্যাদিনা গুছণ নির্ৱপণ (भाक्षणानि क्षा वि खुकी वर्षार। **७७:** भ्वंदर णुभनः। भक् छादा जुनम्ति गृशेच्। हक्मस्य मिक्ना-वर्खन जामगिषा जगन्न जरेतवाली ক্ষিপেৎ। তত সাঘারাজ্য ভাগান্ত• कर्म क्रिंग्राथा अविवास (श्राक ণী পাত্র স্থাপনানন্তর প্রিভ্রান স্থি তে ওঁদুৰ্য্যায় হ্বাজষ্ট নিৰ্মাণীতি 📳 शारानाजा म्हि भुक्तिना धन्या-

ব্ৰু জুষ্ট প্ৰোক্ষামীতি পুণীতা करने न (भाकरवर । जव मानायदा इं उरापि। उठ: बिश्वि क्पर्थ किक्षि मधिक ज्की ज्या कृदा भविवास हिं उ क्वा न् बंगी (वाष्ट्र लाभ क्का-জিনে উদ্থল নিধায তত্ৰ স্প্স্ বীহাদ্যন্যতম পুঞ্চিপ্য মুষলেনাব হ্ব সূর্পণ বিত্যীক্তা পুয়োট্য বি: পুক্ষাল্য পবিত্রণ চক্স্থাল্যাণ প্ৰক্ষিপ্য তথৈব শাপ যিত্বা উদীচ্যা• দক্ষিণভাগে ওঁসোমাধ স্বাহেতি হোমপর্য্যন্ত সর্য্যাত। ততঃ শান্তি कर्मा वारा पु॰ वत्र नामानी डि নাম ক্রা ওঁ পিঙ্গ ভুশাশুকেশাক্ষঃ शीनाक कठे:द्रा २वनः। ছागृहः मा ক্ষ সূৰোগ্নি: সপ্তাৰ্চি: শক্তিধারক:।। ইত্যাদিপুরাণীয় ধ্যাত্বা ওঁবরদ না-মাগ্নে ইহাগছ ২ ইহতি ৮২ ইত্যাবাহ্য भारापिना भूकायट ॥ ॥ (भोडिक कर्षा जु वन नामा दिः। गुरु हा स चारीनाञ् रगाजिनः। चारिराज्य क-পিলে৷ নাম পিক্ল: সোম উচ্যতে। ध्याक्ष्र खथा ভৌমে कठे त्राप्ति वृ (ध মৃত: ।৷ বৃহম্পতৌ শিথী নাম শুকে ভবতি শুটকঃ। শনৈশ্যরে নহাতে জা রাহৌ 'দব হুতাশন:। কেতুযু ব্যোহিতো হয়িঃ স্যাদিতি বহি বি-

নিৰ্ণয়: ৷৷ ভতঃ স্বগৃছোক বিধিনানেন हक्ना ज्रापि गुर्छ। अ्राउरकारः তি॰ দদ্যাথ। 🗱। অত্ত মন্তাঃ। স্-র্য্যস্য আকৃঞ্চেনেতি নত্রস্য হিরণ্য-স্পাঙ্গিরা ঋষি সৃষ্টু প্ছন্দ: সধিতা দেবতা আদিত্যস্য পূজা হোম ক-র্মাণি বিনিযোগ:। ওঁ মাক্ষেন রজ-সা বর্ত্ত্রানো নিবেশ্যন্ত নত্য-ঞ্চ হিরণ্যযেন সবিতা রথেনাদেবো याजि ज्वनानि भागान् साहा। इपः **স্**र्यऽाय **ইভি দেবভোদেশ: সামগে**-**जितः कार्य्यः ॥ ५॥ (मामम्) इमन्स्** বেতি মন্ত্রস্য ব্রুণ ঋষি রগ্নি দেবতা (नामन) भूजा (हाम कर्मां विनि-यागः। उँइमल्प्ता व्यमभन्नः मृतः ৰ भহতে কৰাৰ মহতে জ্যেষ। हेम मम् ममूरा भूध ममूराः भूध-गरेग। विल्य याहा। इतः त्यामाय ॥ ২॥ মঙ্গলস্য অগ্নিম্র্জেভি মন্ত্র-मः चभाव्हिता श्वास गायजी इत्सा **হ**্মির্দেবতা মঙ্গলস্য প্জা হোম ক-र्यान विनिर्यागः। अञ्चलि म् का दिनः ক**ল**ৎপতিঃ পৃথিব্যা জ্যমপাণ ব্লে-তা পি জিন্নতি স্বাহা ইদ সঙ্গলায ॥ ৩॥ বৃধন্য উদ্বুধ্যম্বেতি মন্ত্ৰন্য करम्डिथं**वि उद्देश्हानता श्वार्त**न व्डा ुनाउ भूका (शमः कर्यांनि विनि-

(यागः । ७ उष् का सारा शुक्तिकाम् हि ज निष्ठा भूर्खं मः मृरबंशा मयक यमिन् मध्य यथुऽ इस्मिन् विष्य দেবা যজমানত সীদ**ত স্বাহা। ইদ**॰ বুৰায় ॥ ৪ ॥ বৃহস্পতে: বৃহস্পতে ण जे जि अञ्चमा गृ< मगम अवि सु-क्षेत्रामा वुका (पवना जीवमानू-का रहाम कर्मान विनिर्यागः। ज বৃহস্পতে অতি যদর্য্যে ২হাদ্যুমদ্বি ভাতি কতু मक्कात्मयू। यमीमय**्म** রস খত পুজাত তদমাসু দুবিণ থেহি চিত্ৰ• স্বাহা।। ইদ• বৃহস্প তথে ।। ৫।। শুক্রন্য অয়াৎ পরিশুত ইতি নত্ত্ৰন্য পুলাপতি খবি রতিজগভী-हत्मः ११ त्र त्रवि जी मुन्ति । भूकः স্য পূজা হোম কর্মণি বিনিযোগ:। ওঁ সন্নাৎ পরিশুতো রসণ বুন্ধণা ব্য পিবৎ ক্ষত্ৰ পথ: সোমণ পুজাপ তিঃ। শতেন সত্য মিন্দ্রিয়ণ বিপা-नः गुक्रमञ्जम देनुरम्।निषुर निषः शार्या २मृडः मधु श्वारा ॥ इतः मुका-य ॥ ७॥ मरेनम्बत्रम् भाषादिवी जि मखना प्रधायार्थन अवि नायजी-ष्ट्र निकारिया में निकास मार्थिया में प्राप्त की किया में प्राप्त की किया में किया में किया में किया में किया में का रहाम कर्यांग विनित्यायः । उँ स्वास्त्री त श्रीष्ठरच जाला जवस्र भीःय मध्या ति मृदस्य नः सारा।

हैन • मति महबाय ॥ १॥ ब्राह्मः ণ্ডাৎ কাণ্ডাদিতি মন্ত্ৰস্য অগ্নি শ্বি র্গাযত্রী ছল্দো দুর্বেষ্টকাদেবভারাহোঃ পূজা হোম কর্মণি বিনিযোগ: 1 ওঁ কাণ্ডাৎ কাণ্ডাৎ প্রোচ্ম্বী পা-ৰুবঃ পৰুষঃ পরিএবানো দ্রেপুতনু সহসেণ শতেন চ স্বাহা। ইদ॰ রাহ্-বে॥৮॥ কেত্ৰা• কেতৃ• কৃথ্বিতি नखना ग्रुहन्त अघि त्रनिक्यायजी-इन्सि। ९१७ (पंत्रजा কেতো: পূজা (हान कर्यान विनियागः। ७ (कडु॰ ক্ৰুল কেতবে পেৰে। নৰ্য্যা অপেষ্সে । नमूष जि द्रहा यथा चाहा ॥ इतः কেতৃভ্য:।। ১।। তভো মধু ঘৃতাক্তা• ष्ठाकाः कीवाकाः वा भारतम भु-नागा॰ नागा नकं निम नामाय उँ व्याकृत्कन इंड्यां मि माखन मूर्यप्राया-ষ্টোভরশত অষ্টাবিংশতি মন্তৌ বা व्यम्बरा। मङ्रा गुरुमराजिभीषा-করত্বাদ্বা অষ্টোক্তর সহসু• জুল্যাৎ ॥ अ। निभव मारु गाळ्व सः। व्यर्तः পলাশ: খনির স্তুপামার্গো ২থ পি-श्रमः। উতুषदः मनी मूर्वा समाम् मनिषः कगार ॥ हामा गुरामि প্রাযা॰ শতনষ্টোত্তর॰ ত্বেৎ। অ-ষ্টাবি শতি রক্ষৌ বা যথা শক্তি বি-ধীয়তে॥ অভিগীডাকরে। যুদ্ধ তম্ভ

थाल्न भूषायथ। उत्ता स्थानस्तरः छेरीहाः क्या सर्गार । उठा खरा मनामीन् अविश्व (जावस्य । जड দুব্যালাভে ভোজ্যান্তরাণি বা দ-म्डाट् । ভোজনাসামর্থ্যে ভরুব্রা-णि भागिना <u>भ</u>ु जिगु। इत्यर । उत्जा मर्मार्भुवालाकि मं कि मंकिना॰ मन्त्रार । (धनुः भई ख्यानदान् (इम वारमा इय ख्या। कृष्ण (गो द्वायम॰ ছाগ এ जा रेव मिक्काः क्रमा था। उ-क किलल मर्बरिवानाः भूजनीयामि রোহিণী। তীর্থ দেবস্থী যথাদতঃ শান্তি পুষহ নে ॥ ইতি পঠি দ্বা ওঁ वाराजामि क्रिज्ड मूर्गमु यक्ड कर्माः भुजिष्ठार्थः निक्षनाः कलिनाः ধেনৃ কুদেৰতাকা অনু কগোছায়া-নুক দেবশ মণে ব্ৰাহ্মণায় ক্ষত্তিতে ত ভ । सरु न शुरार । अन्। थर्क्ष ६ मे माभी अनुयाद । किनवा जात (भा মাত্রাণ বা। তদভাবে কাঞ্চনণ। তদ-ভাবে রজভানিক বা দদ্যাৎ। কাঞ্চ नात्तिक्छ भङ्गापि एकिनाভाव १७ मम्प्राट ॥ १॥ वयः श्र्मा सुः मह श्र-ग्रानाः यक्षानाक सक्षा । विक्रुना বিধ্তো নিত্যনতঃ শান্তি পুষ্চু নে॥ ইতাছাৰ্য প্ৰোক্ত ক্ষেণ সোন গুহ य ७३ ने ५ मिना १ ॥ २॥ ७ मर्ग सु

व्यक्राभग जगमानम् कात्रकः। जाङ्ठ म् (र्ड दिविधान ग जः भाष्ठिः भुगह (म ॥ इंजूडार्या भक्तपाळ व्या परा। ॥ ৩॥ ওঁ হিরণ্য গর্ভ্ত গ দ্ভ স্থ হেম-क्र विভावसाः। यन्त्र भूगा कं-वर मण्डः भाष्ठिः भुगह म। हेजूऽ-हार्य) तूथ यरब्ब काक्षन मन्। ८ ॥ ॥ अंभी जवञ्च यूगः यमाचा मूरहव मह বল্লভ । বরপুদানাভদিকো রভ: **णान्तिः भुवह (म ।। इ**ज्रहार्य) अक्य-জ্ঞে পীতবন্ত্ৰ যুগ• দদ্যাৎ তদভাবে **e্ন্যবর্ণবাসো** যুগম্পি দদ্যাভারিটি विक् ख्रु मश्रक्तश्रन गमादर्गत मञ्जदः । हन्त्रार्क बारुन खु॰ वि व्य जः नास्ति॰ भुगह्रम् ॥ ইত্যहार्यः मुक्रगण्डः जाय॰ मन्त्राद् ॥ ७॥ ७ यमा दुः भृथिवी সর্বা ধেনু: কেশব সম্ভবা। সর্বপাপ হর। নিত্য মতঃ শান্তি পুষ্চ মে॥ ইত্যুদ্বার্য্য শনৈশ্চর বজ্ঞে কৃষ্ণা• (धन्॰ जनप्रवर्गा॰ वा ममप्राष्ट्र ।। १ ।। ख यमानायुथ कर्मानि जनशीनानि गर्ब-मा। वाञ्चाम्रायुदामीनि ७७: मा-স্তি• পুষস্থ মে॥ ইত্যুদ্বার্য্য রাজ্যতে लोर् प्राट्या ।। ।। । । व यमा हु সর্ব ভূতানা মঙ্গলায় ব্যবস্থিত:। যান বিভাবসো নিড্য মৃতঃ শান্তি **पु**म्ह्रम् ॥ **३** चू १ हार्ये ४ कर्ष्यस्त्र हा ११ ।

महार ।। ३।। मिक्किना कक भाषि वस्तु कालन मः भिन्नु भाषिः स् र्यार । उउ: क् ठाञ्जिलः। उँ गह्यु भगवाः मः वं गृशेदाहां स्वभाणयः । मस्त्रे। यत भगाकः मस्त्रुमाने मू भूकिठाः।। ইতি বিষ্ণু स्याखितीयः भित्रेद्वा गृशान् विमर्जस्य ।। मिक्किना ठ भूमा उद्या गृशानाकः विमर्जन मि उपाराधः विविद्य गृश्यागभुस्याः गः ममार्थः ।।

যাচ ট্ডু ঋঞ যাচনে। ইতি কবি কল্লজন: ।। যাচন মাত্মনে দানার্থণ প্রেণা। টু যাচথুঃ । ডু যাচিত্রিমণ । ঋ অয়যাচৎ । ঞ যাচতি যাচতে নৃপণ বিপুঃ । গুহণার্থণ প্রেরণেপি যাচতি বিত্তা গুরবে শিষ্যঃ । ইতি দর্গাদাসঃ ।।

याहकः जि याहु। कर्छा। उर्भर्गा यः। वनीयकः २ याहनकः ७ मार्गनः ८ व्यथी ८। इज्यादः ॥ वनीलकः ७ जिक्कृकः १ जिक्काकदः ৮। इजि अस्द्रज्ञावनी ॥ जम्य नघदः यथा। ज्ञामिल नघू ज्ञ ज्ञामिल ह याहकः। वायूना कि॰ न नीर्जा १८मो किक्षिर भार्यन भक्ष्या॥ इजि भा-होनाः। । व्यालिह। ज्ञुम्य की है घा जित्र वाजाविक्या निजन है । निष्
थरत वन उत्तर अन्य वद्य अन्य अन्य वद्य अन्य वद्य अन्य वद्य अन्य व्या विद्य वीमनजार नजः । कारन्य विद्य वीमनजार नजः । कारन्य व्याव व्याव अन्य व्याव व्याव । इंजि नाक्य की जिनास अन्य व्याव व्याव व्याव । व्याव व्य

वि चाठकः। यथा। मूथ्रुन् यदा हीता गाउद्यक्ति मङ्ख्य मद्रुप्त गानि हिङ्कानि जानि हिङ्का नि चाठजः॥ इंजि गाक्ष्य नीजिमा (त) १६ अक्षायः॥

याहनः क्री याहु।। याह शास्त्रार्थः व्यनहे शुरु (यन नियमः ॥ याहनकः व्याहकः। इन्छ प्रमानः ॥ याहना ज्ञी याहु।। इन्छ प्रमानः ॥ याहना ज्ञी याहु।। इन्छ प्रमानः ।। याहनानः व्याहनानः व्याहनानम् प्रानिनः । यहा ज्ञीति उत्याहनानम् प्रानिनः । यहा ज्ञीति उत्याहनानम् । यहा ज्ञीति उत्याहन वाहनः ।। इन्छ वत्रकृ हिः ।।

43 11

· क्लो याहनवृज्धिः। **उर्भ**र्या-यः 🕝 १। यथा। 🖙 याहिजायाः চিত্রে। র্বা সংখ্য মৃতামূতে। इंड्रनद्रः॥ (घ । याहन वृक्ति र्मद्रग भिव मृःथजनक द्वार मृजः। व्यवाहि ত অম্তমিব অম্ত । যাচিত। যাচিত্তয়ে ভাবে কর্মণি বা ক্তঃ। 🏾 ইতি ভরত:॥ পু। র্থ তবস্তনি তি॥ 🎚 याहि उक की याद्वा भू। १३ उ मदः ॥ याष्ट्रया । शुक्तार्भिगयान्त्रन याद्भग र८ शुर्छ मधकातामि वस्र ७८ यावि उकः। कार्यप्रानन्दनः वस्र **স্বানী य**ू भूनमृद्गां जि जिन्हि प्रथ: যাচিতেন পুাপ্ত মিতি ঢবে হাদিতি কঃ। ইতি ভরতঃ॥ याद्भा खी याहनः। उट्शर्यप्रायः। অভিশক্তি; ২ যাচনা ৩ অর্থনা ৪ ভিক্ষা ৫ অর্থনা ৬। ইত্যুমরঃ ॥ जानमा १। इंडि बढ़े (४द्र: ॥ याजः भू व्यज्ञः। इंडि (इमहन्द्रः॥ या जकः भू॰ या ज्जिकः ॥ त्रा रङ्जा गङः । ইতি मिरिनी ॥ मखरुखी । ইতি क्रिविदः ॥ अञ्चिक्। यथा। अशीः धारा। धीन दी या। अ जिल्ला या जका-क छ। इंडानद्रः॥ युक्रमात्नन श्रेन-

बाग्राः धनानि एका इक्षेत्रन्यापनाय

ব্ৰিয়ম্ভে পাূৰ্থ্যম্ভে যে অগ্নীপ্ৰ পুভূত্য-ख अविका याजका**ण कथ्रखा** व्याप्तिः इक्षयंत्रि मीशयंत्रि व्याप्तीषाः ইন্ধী ঞি ধ ড দুতৌ ঞি: নান্নীতি-, র: মনীবাদিত্তা**ে ন লোপ:।** স্মা: দিনা বুক্ষোদ্বাত্ হোত্র ২প্বযুর্গন্ধ-ণাছ সি পুভৃত্য: যোডশ গৃহস্তে। বার্য্যা ইতি হস্যাসো ব্লিভি ঘ্যণ্ म् ज् ज्राव डारातो वृक्ष हेडि कानू-বন্ধ নিৰ্দেশাৎ অন্যুগ্ধাতো নক্য-প্ খা छो यज छि च जि बः कि भ्। य-জন্তি যাজকা: ণক:। ইতি ভরত: ॥ 🗱 ॥ वरूयां बक शामयां बकरया र्निन्ता यथा। व्यवाद्मनाञ्च यदे (भा-ক্তা ক্ষষিভি স্তত্ত্ব দশিভি:। আদেয়া द्राज्ञ इंड एक्षा दिनीयः क्रय वि-क्यी।। ज्ञीया वल्याकाः नाह-जुर्था गुानयाक्षकः । शक्षमञ्ज ভৃত (खरा॰ गुामम्। नगद्रम्। <u>च्या</u>-**मि**ञ्डाक यः भूदी मामिञ्डारेक्ष्व পশ্চিমাণ নোপাসীত দ্বিজঃ স-ন্ধ্যা॰ স বঙো হ্বান্ধণ: সৃতঃ ॥ ইত্যাহ্নিকভত্তৃণ।। অপিচ। শূদু সপ্তোদিক যাজী গুামযাজীতি কী-র্ত্তিঃ। শূদুপাকোপজীবী यः সূপ-কার; পুকীর্ভিতঃ।। সন্ধ্যাপূজা বি-হীনশ্চ পুমন্তঃ পত্তিতঃ মৃতঃ।

যান্তিক

এতে মহাপাতকিনঃ সম্ভীপাক।
পুযান্তি তে॥ ইতি বুদ্ধবৈৰক্তে পুকৃতিথণ্ডে ২৭ অধ্যায়ঃ ॥
বাজন। ক্লী যাগকিবাকারণা। যাগ
করান ইতি ভাষা। তত্ত্বাহ্মণস্য
বট্কর্মান্তর্গত কর্মবিশেষঃ। যথা।
অধ্যাপন মধ্যয়ন। যজনন্ত।
ধা। দান। পুতিগৃহকৈব ব্রাহ্মণান।
না মকল্লাৎ ॥ ইতি মানবে ১

यां शि: शृ: यक्तः। इंडि मः कि श्रमाः (त्रागां पितृ जि:। या गकर्जा । इंड्रा गां पित्वायः॥

व्यथ्रायः॥

याजूर॰ তি यजुर्विरमधिक । ইতি যাত ক্লী নিষাদিনা॰পানকর্ম । ইতি
সিদ্ধান্তকৌমুদী ॥ (হুন্তুন্দু: ॥ পত্তকান্তরে যত নিতি

যাজ্ঞ কুঃ পু• ধর্মশাস্তপুযোজক মুনিবিশেষ:। তৎপর্য্যায:। বুক্ষ রাক্রি:২ যোগেশ: ১। ইতি হেন চন্দু:॥ যোগীখর: ৪। ইতি নি-তাক্ষরা॥

याञ्चरमनी खी यञ्चरमनमाञ्चान छाः। मा हासुनिनी। इञ्डि हम हमुः॥

याञ्चिकः भू॰ मर्ज्यञ्गः॥याजकः॥ यञ्जकः। ইতি भपतक्षवनी ॥ त्रकथिमतः॥भनाभः॥ अत्रथः। ইতি রাজনির্ঘটিः॥ যাত্ত্য। বিজ্ঞাই ডি

যাজ্ঞিকৃত শ্লী যক্তঃ। ইভি। কৌমুদী।। যাচ্য শ্লী ৰাগলদ্ধনাদি। ইভি

সিদান্তকৌমুদী !! যজনীয়ে জি ॥ যাজ্যা স্ত্রী যাগনজ্ঞঃ।ইতিমুগ্ধবোধ-ব্যাকরণং ॥

यार वर आध्या उभु उर्यविष्मयः।

मह विश्विष्ठा मीर्लिष्ट भड़े मान्यः
भूषमभू करें वक वहनः।

हर्णिक आमीर्वा हार्षिकः। इन्ति

वर्या कर्याः। मूक्ष वाष्म्यकः विद्याः

हर्णि वम्र श्री मः इत्या कर्याः।

हर्णि में इत्या ।।

ाउ॰ क्ली निषारिभा॰ भारकर्य। इंडि इस्मान्त्रः ॥ भूखकास्टात यञ्ज निर्वि भारतः । यथा । यभस्रे बुक्क् ममागुः याज मक्क्षमवात्रभः । निषारिभाः भारक्रमये यञ्च भारत्रस्य । ।

যাত: ত্রি গতঃ। যাধাতোঃ ক পু-ত্যযেন নিম্ননঃ।।

যাতনা স্ত্রী গাচবেদনা। তৎপর্তায়ঃ
। কারণা ২ তীবুনেদনা ৩। ইভ্যমরঃ
।! অতিব্যথা ৪। ইতি শব্যন্তাবলী॥ নর কফ্জা। ইতি কেচিদিতি
ভরতঃ।।

যাত্যান বি জীর্ণ।। পরিভুক । ইত্যারঃ।। উল্লিভ । ইতিনেদিনী

ক্ষাত্র স্ত্রী পতিভাত্পদ্নী। যা ইতি যাত্রা স্ত্রী বিজিগীবোঃপুযাণ। তৎ-্র জ্ববা। ইত্যমরঃ॥ গমনকর্ত্তরি ত্রি याजायाज॰ क्ली गमनागमन•।यथा। न्ध जागारमन्त मन्तत गिति गु।-বাগু কণ্ড্যনা নিদ্যলো: কনঠাক্তে र्जगवन्धः भागानिनाः भाष्ठ वः। यथमःकात कनान्वर्तनवनात्वः লানিভেনামুসা বাতাবাত মত निमु छ॰ कलनित्थ नीम्। नि विभा-माि ॥ इंडि श्री नागवाङ ४२ कष्क ३० वर्षायः ॥ याजिकः भू॰ भाष्ट्र। देजि भपत्रः। वनी ॥ याञ् क्ली ब्राक्तनः। ইত্যনৱः॥ याजूः भु• कानः॥ यद्गः। इंडि मिकाञ्डकोमूम्याम्यामिवृज्ञिः॥ वा যু:। ইতি স-ক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ याजुः वि गन्ना। ইত্গোদিকোষः॥ ক্রিবাপন চেৎ গছতু॥ याउँ : भू ख्युन्:। ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥ गाज्यानः भ् ब्राक्षमः। इंडाबदः॥ या 🤊 है। भू॰ भाइ:। ইতি भद्रक्षाः वनी।। या गुः वि य छि ठवाः। य छनीयः।

गजवाटाः कर्चाने घुन् भुजायन

निश्चम• ॥

भर्यतायः। वृज्ञता २ चानिर्वागः ३ नुष्टान । १ गमन । १ गमः ७। ইडा-নর: ॥ পুছিতি: ৭ যান ৮ প্রাণন ৯। ইতি শহরত্বাবলী ॥ যাপন ॥ উৎসব:। ইতি নেদিনী ॥ উপাय: । ইতি বিশ্বঃ ॥ #॥ অথ যাত্রাদি-না ভাদু পৌৰ চৈত্ৰেতর মাসেষ্ मूत्रयाजा कर्डवा।। शृत्रमा किना রবি শুক্র বারস্য পুশেস্ত্যণাদক্ষিণ-म्रा॰ गञ्चल वात्रम्र शुम्बरुः। श-শ্চিমাযা পোন শনিবারস্য প্রাশ-ন্ত্য । উত্তরস্যাণ বৃহস্পতি বারস্য शुभखाः॥ भूर्वमाः मिभि माम भनि वादा नगस्रवाः। मिक्निननाः বৃহস্পতি বারে কেষাঞ্চিন্মতে বুধ वादा ह नगस्वाः । शन्हिमायाः রবি শুক্র বারে। এবং উত্তরস্যাণ वृथ मञ्चल वाद्य मगन्नवाः ॥ विजी या ज्ञीया भक्षती मधनी मणनी **अकारणी जरगारणी ह जुडा गा-**ব্রায়া• পুশস্তাঃ ॥ অব্যেত্তন নক্ষ-वाणि। अधिनी अनुताक्षा (त्रवजी गृगामात्रा ग्ला भूगर्यमुः भूषता হতা জ্যেষ্ঠা।। মধ্যম নক্ষত্রাণি। রোহিণী প্রাত্রয় চিত্রা স্বাতী .পাত্তিবা'শুবেণা ধনিধা ॥ অখন

দক্ষরাণি। উত্তরাত্রব॰ বিশাখা মধা আদুর্ভিরণী কৃত্তিকা অশ্লেষা।। তত্র নফত্রশূল কথন•। স্বাত্যা• জ্যেষ্ঠা याक भूर्विनिःग्रमन निविक्त । अवः भूर्ब जामुनाम जाश्वित्राक्ष मिक्ति मि গ্নন- পুষ্যে রোহিণ্যাঞ্চ পশ্চিন-**मिश्रमन• উ**डब्रक्ज़ुन्गा• इसायाक উত্তরদিগ্নমন । निषिष्त ॥ ত্তানুক করণানি। গর• বণিজ• বিষ্টিঃ। গর মিপি কৈশ্চিছস্ত মন্যতে ॥ অত্র উ खग नगानि । नि• ह वृष **म**ञ्ज कन्ता মিথ্নানি ॥ তত্র যোগিনী নির্ণয:। পুতিপদি নবন্যাঞ্ পুচ্যা যোগি-नी । তৃতीयाया॰ এकामणाक्षात्र-क्लाल। शक्षम् । व त्यामण्डाक म-किता बादमा ठठूर्याक रेन्यं उ काला यक्षा॰ ठजूर्मनाम् शक्तिम । मश्रमाः भ्वितायाकः वायुकातः। षि शेयायाः मन्मगाकः উত্তরদিশি। व्यष्टे न जा माना वा माजा वा क्षेत्र मान कारण l তা॰ দক্ষিণে সন্মূথে চ কৃত্বা ন গন্ত-वाः। भाभवाग वाङ्ग्यनं माजन-काषिव्याञा न कलवे ।। दात्र दला काजरवना ऋजिऋरवना वृश्चि छमानिय **চ याजा न कर्डव्या॥ चित्रागननिम्न** नयवस्मात्म मुष्ठेवऽ ।। कः ।। व्हाय (गा ব্যক্রা পুবেশ বিজ্যাঃ। তত্র তিথ্যঃ

। यमावम्यादेशी हजूनेनी विश्वि माः। তত্ত नक्क जानि। त्राहिनी ब्र क्लूनी প्रवाशाः। श्रवं जाम्भः छेख वक्तुनी উखवायाण উपत्याम्भट শুবণা ভরণী চিত্রা এতদ্ব্যতিনি 🙄 নি । যোগাঃ । ব্যতীপাত ভিন্না: । বা-রা:। কুর ভিনা:।। 🗱 ॥ অথ নৌ-কাযাত্র। তত্র বিহিত নক্ষত্রাণি। **जिथिनी इसा भूष्य गृगणितः भूर्ब**-क्ज़ुनी भूबीषात। भूबं जापुभारनुद्रा-ধা ধনিষ্ঠা শুরণাঃ। বারাঃ শুভ গু-হাণা•। তত্ৰ লগ্ন• শোভন•। তত্ৰ শোভনকন্দু:। তারা চ শোভনা বিহিতা। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বণ ॥ 🗱 ॥ व्यथ याजायाः भू जनकम्वरम् नारि यथा। (धन वं८म भुगूका वृष গজ ভুরগা দক্ষিণাবর্ভবহ্নি র্দিব্য-ন্ত্ৰী পূৰ্ণসম্ভা দ্বিজ নৃপ গণিকাঃ পুত্ৰ-মালা পভাকা। সদ্যোমাণসং ঘৃত বাদধি নধু রজত কাঞ্চন শুক্লধান্য দৃষ্টা শুদ্ধা পঠিত্বা ফলনিহ লভতে মানবো গন্ত কাম:।। ইতি সমযপু-দীপঃ ৷৷ ঋ ৷৷ তত্ৰাশুভলনক দশন• यथा। मस्ययं त्रज्ञकः भन्ता । कृति-ণ यनि পশ্যতি । ন গন্তব্যু তদা তমাৎ তৈল বাপ্যগগো ংশু ভঃ।। पत्जा नुवेडि लोः कानो कुँउ वा

क्ष्युं नवः। भणान् याता नकर्ववा ক্লীব-পশাতি বাগুভ:॥ ইতি জ্যো-ভিহাকরঃ॥ঋ॥ যাত্রাকালে বিশেষ मुर्भन क्षा गया। नृगाहि किन मा-জ্জার স্থান: শ্কর পক্ষিণঃ। নঙ্গলো मूचिकरेक्टव याजाया॰ मक्किरा मुजाः । विश्वकन्ता भावा कृत् भाइ (जती वमुक्तताः। जमुरकाष्ट्रे थत्राम्धान्त सा-ত্রায়াণ বামকে শুভাঃ।। বেণু স্ত্রী পূর্ণ ष्युानाः राजायाः मन्ननः मुजः। कार्भारमोषध टिनक्ष श्रहास्रात जुः **জञ्**याः॥ युक्तकामा ब्रक्तगानाः नः शाराम् छ नक्र १ । । । गावाकाल ছिक्कायाः कनः यथा। ছिक्काया नः ক্ষণ বক্ষ্যে লভেৎ পূর্বে মহাফল । আগ্নেযে শোক সন্তাপৌ দক্ষিণে श्राम मानुवार ॥ तेन्थरं छ । लाक সন্তাপৌ মিপ্তানঞ্চৈব পশ্চিমে। অন্ন• প্যুপ্নোতি বাষব্যে উত্তরে কলহো ভবে ৷৷ ঈশানে মরণ পুোক্তণ (পु।क• ছिद्धा फनाफन•॥#॥ व्यथ याजायाः मिश्विरणाय विरागय नकः बागि। कृडिकारि जु भ्रविंग मध अकाशिरेव बुर्छ । नघारने निकरन शहरन्त्रावारि शन्त्रिसः। भुगछ। চোত্তরে যাত্র। ধ্রিপ্তাদিযু সপ্তসু। पाँचनी রেবতী চিত্রা খনিষ্ঠাঃ সংল-

স্কৃতা:।। মৃগাখি চিত্রা পুৰ্যাক্ত মূল रुखो मूखो महा ॥ 🕬। याबाही व-गामियु गुरुङ्खि कनः यथा। कन्। পুদানে যাত্রাযা• পুতিষ্ঠাদিযু কর্মসূ। भूक हत्नु ह बबाङ्गे भ् उत्ने ह बि-তীৰগৌ ৷৷ শশি জ্ঞ শুক্ৰ জীবাস্চ রাশৌ চাথ তৃতীযকে। ভৌম মন্দ শশাস্কার্কা বুধঃ শেষ্ঠ শচতুর্থকে।। শুক্রজীবৌ পঞ্নৌ চ শুেষ্টো সন্ডি कराक्छो। मन्तार्कन् अजाः यक्ष खक हत्नु ह मध्या। मुक द्वावश्रम **म्**एष्ठी नवमस्त्र। धकः मृजः। जर्का-किं हन्द्रा मणाम अकामरेण शिका गुराः ॥ वृत्या २थ द्वापतम रेठव छा-र्गतः मूथामा ভবেৎ। ইতি গাৰুডে ७०**। ७) अ**ध्यायः ॥ **३॥ अथ द्राज** याजा। ইদানী সর্বধর্মাক্ত ধর্মশাস্ত বিশারদ। যাত্রাকাল বিধান । মে कथयम्र मशीकि जाः ॥ यमा मत्ना छ न्পতि द्राक्तत्म्न वनीयमा। भाकिं-গাহাভিভ্তো ২রি স্তদা যাত্রা• পু. याजयर।। याथायजा भुज्जा म পুভ্তঞ্বল । ন্ল রক্ষা সমর্থো-मि उना याजा॰ भूरगाइरयए।। जम् জ্পাঞ্চিন্পতিন তুযাত্রাণ প্যোজ-(यट। नारिक्याका विक रेमना मूल निःकिश्य वा नुरह्य ॥ रेठब वा मा-

র্গলীর্য বা যাত্রাণ যাযামরাপিপঃ। চৈত্ৰী নশ্যতি নৈদাঘণ হস্তি পুঞ্জিঞ্চ भावनी ॥ এতদেব বিপর্যন্ত মার্গ-भीर्यः नद्राधिभः। भावा द्या व्यन्तान थागांट कालः न जू नुमूर्वा छः ॥ पि-वा बन्नीक कि जिंदन क्र भारेजः भी-ডিত পর। সদৃক পীড়া সণ্ডপ্ত পীডিতঞ্চ তথা গুইং।। জ্বলন্তীব **७**रेथियान्। मि**न•** यम् भुनम् । ভূকস্পোল্পা দিশ• যান্তি যাঞ্চ কেতুঃ পুস্যতে ৷৷ নির্বাত চ পতে আত্র ত • यायावनुषाविभः। भवल वाभानाः পেত তথা দুর্ভিক্ষ পীড়িত ॥ সমূ তান্তরকোপঞ্জ ক্ষিপু• যাযাদরি• नृशः। गुक भाक्षीक वर्षन वर्ष कर ७था विनः ॥ नाउिकः ভिन्ननर्ग्रामः তথা মঙ্গল বাদিন ৷ অপেত পুক্ তিঞ্চৈব নিরাশঞ্জ তথা জযেৎ ॥ বিদ্বিষ্ট নায়কাণ সেনাণ তথা ভিন্নাণ পরস্পর•। ব্যসন্সক্ত নৃপতি• বল• व्राज्ञा जित्या कर्य ।। रेन निकानाम मञ्जानि ऋतन्त्रभानि यञ हः मुः व প্রান্যপি পশ্যন্তি বলন্তদভিযোজ (११८ ।। उँ९ नारु वल मन्त्रम महानूत-क वन खथा। ज्ञे পृष्ठे वरना दाजा পরানভিন্থো বুজেৎ ॥ শরীর मुद्राण क्षा पुरुष द्वानाता

निमिखं मक्षा धना कार् में ब् भूतः वुद्धः ॥ अरमः यू यहेन आकृष शुर्वसम्बर्धा व । भून माल भूष्ट-জাতে পরান্ যায়ালরাধিপ: ॥ এবস্ত দৈব সম্পন্ন স্তথ্য পৌৰুষ সং-যুতঃ৷ দেশ কালোপপদান্ত যাত্রাণ यायामदाधिभः ॥ উन्कन्र निम ধৃক্ষে: সচ তস্য দিবা বশে। এব• দে-শঞ্চ কালঞ্চ জ্ঞাত্বা যাত্ৰাণ পুযোজ-(य८ !! भराजि नाग वद्याः (भनाः हिन इथ नाजि जनाक्ष्माः ॥ श्रदाः-ष्ट्रे तल्ला॰ (प्रना॰ उथा गुीत्म नद्गा-থিপ:। চত্যস্বলোপেতা বসন্তে वा শরদ্যথ । নেনা পরাতি বছলা यम्। স্থিবিপতেঃ। অভি-যোজ্যো ভবেত্তেন শত্রু বিষয় মা-नि्डः॥ गत्म वृक्षावृत्त प्रत्म श्चि-ত শত্ৰু তথৈব চ। কিঞ্চিৎ পঞ্চে उथा यायावल् नारम। नदाविमः ॥ রথাথ বছলো যাযাৎ শত্ৰু সন্প-থাশ্বিত । তথাশুন্তো বহুলা স্তথা ब्राज्ञाजिभृक्रस्य ॥ थरब्राष्ट्रे बङ्खा রাজা শত্রু বন্ধন সংস্থিত া বন্ধন-ছোপি বোজ্যে পরি তথা পুার্ষি ভূভুজা।। হিনপাত শ্তে দেশে ছি-**७**॰ श्रीत्पा जित्रा इत्य । नत्र हमत्त्री

वर्षक काली नावात्रानी मृत्नी ॥ विक्रीय दाजा विज्ञ (मनकाली रेपव॰ विकामक उरेथव वृष्ट्रा । भाराष्ट्र পর• কাল বিদা• মতেন সঞ্চিষ্ট্য नार्कः विक्र मञ्ज विक्तिः॥ इंडि मा-८(म) २/८ व्यथुगयः ॥ 🕸 ॥ याजा-काल मात्रन पुराणि वथा। (भो-ৰ্বাপৰ্য্য স্বৰ্ভান্ত ভানুকা চ শ্ভ-करा। ठिः त्रव मार्कः वनवान् वज्वः मन्तान्यः॥ हर्म मङ्गल तामः म् भाव खगम्हकः। वृत्य मनम। मर्बः विजा रेवित मः क्यः ॥ याजाकाता চ পুরতঃ শৃশুবে সহসামূনি:। হরি मदः महारयः यदी मृन्तू जितामनः॥ আকাশবাণী সঙ্গীতা জয় স্তেভ বিতেতি চ। নরোক্ত॰ তঞ্চ কল্যাণ॰ (मराभंदः जगावरः ॥ ठकात्र गाजाः जगवान् गु.(बुरङ)विश्वयः मूजः। एक র্শ পুরতো বিপু বন্দি দৈবজ্ঞ ভিক্ষ্ কান্ ॥ জ্লৎ পুদীপ বিভুন্তী পতি পূপ্রবভী॰ সভী॰। পুরো দদর্শস্মের। স্যাণ নানা ভ্ষণ ভ্ষিতাণ।। শিবণ निवा॰ भृतंब्रञ्ज॰ চাসঞ্চ नव्यवस्था । शहन परमां द्वारमामा याजा मक्ल म्हकः ॥ क्षमात्रः गजः मिःह ত্রগণ গণ্ডকণ দ্বিপণ। চনরীণ রাজ र नक ठकवाक मूक निका। मर्

র॰ খঞ্জনবৈধ্ব শহু চিল্ল ক্ষকোরক। পারাবত বলাকাঞ্চ কারণ্ড চাত-क रहे ।। (मोमाभिनी भक्रांश न्र्याः न्यानाः म्जाः। नामानः সং সজীবঞ্চ মৎস্যু: শহ্নু: সূবর্ণকণা मानिकाः ब्रज्ञठः मुक्ताः मनीन्त्रक श्वानकः। पि नासः म्ब्रानाः म्ह भूम्रक अक्रमः॥ मूम्रह्यः भठाकाक मर्भागः त्यं उठामद्रः। (धनुः वट्म भू-যুক্তাঞ্চ রথস্থ ভ্রিপণ তথা ॥ দু-পঞ্রোচনা মাজ্য নম্ত পায়সং उथा। मानगुामः भङ्कनः ऋखिकः नक्ता॰ मधु॥ मार्ड्जात्रक व्रवन्तुक নেষ পর্বত মূবক । মেবাছ লস্যচ त्राव कपय हन्म्य खला।। कस्त्री · कः জ্জল তোয হরিদা তীর্থমৃত্তিকা िमिकामः मर्यभः पूर्वाः विभुवालक्ष বালিকা॰।। মৃগ॰ বেশ্যাঞ্চ ভুমর॰ কপ্র॰ পীতবাসস। গোমূত্র• গো. भूतीयक (गाध्वि· (गाभ्याक्षिত·॥ গোষ্ঠ গৰা বৰ্জা নন্য গোশাল গোরতি॰ শ্ভা॰। তামু॰ স্কটিক॰ রৈ-**७**७४ मिन्म्द्र द्वक्रवन्तनः ॥ शक्त्रस्थ श्रीव्रकः ब्रञ्जः परमं पिकारा मुख्या मृगिक्षि वार्या ब्राघान भाग विभा-**नियः णूजः ॥ ই**ত্যেবः मञ्चलः कृत्वा शुव्यो न मूनाविजः। ইতিবৃদ্ধবৈৰ उ

গণপতিখণ্ডে ৩৩ অধ্যায়ঃ ॥ 🛱 ॥ যাত্রাকালে অনস্ব সূচকানি য**থা।** রাজা জগান সমর হক্দেবেন বিদ্যতা। भार्क्ष रेमन्। मज्रेह्म् वाम् 🔊 रेख 🛪 -সংখ্যকৈঃ।। দদর্শামস্থলং রাজা পুরো বৰ্জ্মনি বৰ্জ্মনি। যদৌ তথা পি সমর ন জগান গৃহ• পুনঃ ৷৷ মুক্তকেশী•ছিন্ন नात्राः करडीक रिगद्रतीः। कृष्वयञ्ज পরীধানা মপরা বিধ্বা মপি।। মু থানুষ্ঠা গোনিদুষ্ঠা ব্যাধিশুক্তাঞ্চ স উনী•। পতি পুত্ৰ বিহীনাঞ্চ ডাকি नी॰ शु॰ "हली महा ॥ ब्रञ्ज हातः তৈলকার• ব্যাধ্ সর্পোপদ্ধীবিন•। अलि विकास ना का वार वाशिनः॥वट्म विक्यिगरेक्षवकन्रा-বিক্রবিণ তথা। চিতা দক্ষশব ভন্ম নির্বাণাকারমেব চা। সর্পক্ষত नतः त्रर्भः (गाथायः मन्तकः विषः। শান্ধপাকঞ্চ পি গুঞ্চ মোদকঞ্চ তি-ला छथा।। (एनल न्यवास्थ मृ मु শাৰান ভোজিন ৷ শূদানপাচক म्प्याजकः ग्रामयाजकः॥ कम्म् ख'नकारिक्षव भावनाञ्चकात्रियः। শ্ন্যক্ষণ চৰ্বজ্ঞ তৈল• লবং মস্থিত। কাপাসংকর্ম-চূর্ণ হলে। ত শন্ক। তিশ । দক্ষিণে চ শৃগাল ् अवधः देशदः अवः। क्षभिक्यः।

, ু খাত্ৰা क्षित्रक छित्रकण नवा नक्।। क-मर्क विचाशक विचाशकारिक 🕒 **नः। व्यनक्रांनः व**ाक्षाः वरान्याः কারিণ ॥ নিখ্যাসাক্ষিপুদাভারণ চৌরঞ্চ নরখাতিনা। পুণ্টলী পতি नुष्यो ह भू॰कत्वप्राप्तनः ।। দেবতা শুক বিপাণা বস্তু বিত্তাপ-হারিণ । দত্তাপহারিণ দস্যু হিং-সক সূচক খল। পিতৃ মাতৃ বির-ক্তঞ্চ দ্বিলাখত্থ বিষাত্তিন ॥ সত্য-মুঞ্জ কৃত্যুক্ত স্থাপাস্থারিণ জন• ৷ নিপ্রক্রহণ মিত্রমুঞ্চ ক্ষতণ বিশ্বাস্থা। **তिनः।। ७**कप्पत् विज्ञानाक निमत्कः बाक् घाडकः। क्षीवानाः घाडकरेक्षव बाक्हीनक निर्मय ॥ नुरजाभवाम-श्रीनक मीकाशीन नशु मकः। गनि-তব্যাধিগাত্রঞ্চ গুরুলম্বন নেব চা৷ পুরুসং ছিম্বলিঙ্গঞ্জ সুরামত্ত সুরাণ তথা। ক্লিপ্ত বমন্ত ক্ষির মহিব গৰ্মভ• তথা ৷৷ মূত্ৰ• পুরী**ষ•** শ্লে<u>ষ্যা-</u> ণ কছিন নৃকপালিন । ঝঞাবাত। রক্তবৃত্তি॰ বাদ্যঞ্চ নৃপ্যাতক ॥ বৃজ্ঞ শুদর গুপু শোন কম্বও ভ-ল্লুক । পাশঞ্ শুক্ষকা ধ্ৰুষ্ণ বাবস शक्ष छ ।। षागुनानी ताकानक **उज्ज मञ्जाशकी विनः। दिन्। १४** तङ शुद्धरिक्षवीयव खय (भन् ।। अदा डी॰

मृज्यार्जाक विभूगामक माक्पः। मूर्गक वाज मृः मद ताजा मः भाग वर्जानि॥ मनण स्टिनिड भागाः क् ভিতাশ্চ নিরন্তর• । বামাক্স^{সান্}দেন• (महबाए) बारका वज्वह ॥ इंडि বুন্ধবৈবৰ্ত্তে গণপতিখণ্ডে ৩৫ অধ্যা-यः ।। 🗰 ।। 🗐 कृष्ण्मा नयूत्रायाजा यथा। द्राधिकायाक मूछायाः मूछाम् (गानिकामू ह । भूझ हन्सन उत्त्र ह বাযুনা সুর ভী কৃতে।। ভৃতীযপুহরে **ৎ**তীতে নিশাযাক শুভক্ষণে। শুভ-চন্দুৰ্ক্ষ যোগে চামৃতযোগ সনন্তি ।। সৌম্য স্থামিযুতে লগ্নে সৌম্যুক্ বিলোকনে। পাপগৃহ সমাসক্ত দৃষ্টি रायामि विर्क्ति ॥ यामामा वा-थ्यामान कात्रयामान सक्तः । वक्र्नाचामगामाम मगूष्याय इतिः चयः। वार्रः निरवध्यामान द्राधिका ভযভীতবং ।। স্ব হক্ষো বিশ্বকর্ত্তা চ পাতা ভর্তা স্বতন্ত্রবং । পুকাল্য পাদ যুগল পৃত্বা থৌতে চ বাসসী।। উবাদ সংস্কৃতে স্থানে বিলিপ্তে চন্দ बाहिना। कन शल्लव जःयुक् जःक् छ कन्त्रना दि छि: ॥ वादम कृष् भूर्न-ब्दाः वहिः दिशुः स महित्। शः ि भुधवा) भीता सभा भावा खया ॥ न्याना अक मुजिक भू भू

धानाः निजः मुखः । खक्पखः गृशी-ত্বা চ পুৰদৌ মন্তকোপরি ॥ ঘৃত• मन्म भाषीकः त्रज्ञ काक्षनः निष् । हन्द्रन॰ (लभन॰ क्ञ्र। भूज्ञभावा॰ गत्न परिने।। एकवर्गः वाक्रनः वन्त-যামাস ভক্তিতঃ। শন্ত্রধ্বনি বেদপা-ठेः मन्नीजः सङ्गाष्ट्रकः ॥ विश्रामी-वंচन बगुः भूग्व भवगास्त्र । भाषा मक्त क्रक मर्बव मक्त शुक्र ।। हिटक्रिश किक्ष शाहर मृ-न्द्रतः चाञ्च विशुहः। विश्वः नामि কা বামভাগ মধ্যম্য। বিভূঃ।। বি-मृक्ष्य वायु निष्ठेक नामा प्रक्रिन ब्रक्तु उः । उट्डा ययो नन्दनत्न्द्र। नन्दन्र शु-व्यन वद्ग ।। इंडि नुक्तरेवरार्ख श्रीकृष জন্বতে ৭১ অধ্যায়: ৷৷ 🗱 ৷৷ অথ যাত্ৰা যুক্তি:। তত সময:। যাত্ৰাযা• षिविशः कारना रिकातः সহজ उथा । প্রোক্ত আত্যযিকে কার্য্যে বিকা-রো নাত্র নির্ণয় ।। সহজঃ স্বেছ্যা রাজ্ঞা• তস্য নির্ণয উচ্যতে। যাত্রাজ সি হ মধ্যা শবৈশ্চর বুংধাশনসা शृष्ट्यू । ভानो अनीत व्य वृन्ठिक গোভি দীৰ্ঘা শস্তস্ত দেবলনতে হধু-নি প্ৰহেণ হৰ্কঃ।। অশ্বিনী রেবন্তী (काष्ठा **তथा भूरा** भूगर्वम् । तेम बन म्भिलिदा म्ला याकाया मूलमाः

সৃতা:।। ভরণী কৃত্তিকাশ্লেষা বিশা থাটোত্তরাত্রয় । মহাপশুপতিশৈচ व याजायाः मद्रम भुनाः ॥ भूर्व व (वर्त पश्न मिणार्ट यम करनाण পবনে মহেশে। ত্যাজ্য नরস্য পু তিপৎ ক্রমেণ যুণ্ম• তিথীনা• পুর-দন্তি তজ্জাঃ॥ স্যাৎ সংমূথে যান ममूक्षराय भागा छत्य मर्ब मुजाय পু॰সা॰। সুর্য্য: শুক্র: স্কোরাহ र्भना कान्तु। एक वृष्तः। अगुजः।मा-खना याजा भृष्ठा मद्रगः धुदः ॥ श्र्वरानमुः मिकरा यानशामः रता हिर्गा उहार्य। माथा थ ग्ल । काम যাযাৎসাম্পরাযেষু কার্য্যেন্যন্তাপি পুক্ষ্য শ্লানি ভানি।। 🗱 ॥ তত্ত मिक्ण्लः। यष्ट्राष्ट्रभी ठजूषी ह नवभी षारणी उथा। ठजुर्मणी अर् खाबा याजाया मण्डलुमाः ॥ नुगर्या बलः সহজ শতু দশায সংস্থাঃ পাপাঃ শুভা: সবিভ্জ॰ পরিমৃচ্য খস্থ । नर्बजगाः मुख कलः जनयस्र मोग्रा স্ত্যক্ত্রারি সংস্থ মমরারিগুক্ জি शीरवाः॥ नाकान वर्ष विमुख् स्वनि-তেম্বিষ্ট কথঞ্চিদি যান। আস-গুংহাদিব্যান্তরীক্ষ ভৌনৈ ত্তথোৎ-পাতৈ:।। #॥ তত্র ক্রম:। রাজ্ঞা• याजा विधि व्यक्ता किशीसूना शहाः

यांबा

वनीः। नीर्वाजना विधिः कृषा रेमनिका महानरयञ्जः॥गजाननऽ।न् मृगाननऽ।-নিতি যাত্ৰা ক্ৰমো মতঃ ৷৷ 🗱 🛚 তত্ত্ৰ নীরাজনাবিধি:। বর্ষান্তে १ভ্যুদিতে শুকে চন্দে পূর্ণে শুভক্ষণে। অখনী-वाबन अर्येऽ। एयरथाक मृवि अखरेनः ॥উদীচী• পুস্থিতে ভানৌস-কান্ত্যা• वा मुख्ड फिला शक नीवाजन अर-र्याए महीभारमा किगीविवान् ॥ বৃশ্চিকছে রবৌ জর্য্যাৎ পবিনী-ब्राजना विधि॰। (नोका नीवाजन॰ ক্র্য্যাৎ দক্ষিণাশাণ পুতিষ্ঠতি ॥ व्यानावार्थिव यानानाः विजया मण-भी তিथि॰। धृजानीनाथः मर्खिषाः भ-ক্রেণ্যানে নিরাজন।। ছত্রস্য নব-দপ্তন্য তথা সি-হাসনস্চ। গৃহস্য নগরস্যাপি নহাবিষুব সংক্রমে।। আল্লাে যুবরাজস্য মহিষ্যা মব্সি-गान्तथा। **य जग्रित्य ताजा अ**र्यान মীরাজনা বিধি॰।। অভিষেক দিন॰ পোক্ত মেষা॰ জন্মদিন॰ ন্যা। তদ্ম-'থা। অশ্বানা• ভাস্করো দেবো ব্লেবস্ত নিতি সংজ্ঞযা। গলানাং দেবজা-শক্ৰ: नेखीना॰ কালিকা মতা ॥ भोकानाः वरूणा (मरवा यानाना<u>ङ</u> জ্বস্তক:। অন্ত্রাণাণ দেবতা রানো यनः थङ्गा भूकाराउ ॥ धृकानाः

স্বান্প্জ্যে বৃহস্পতি রিভি ক मार। जान् भूकियिदा विविवाहका-मीत्राज्ञरयम्भः ॥ खामम शश्रिकः शुरिष्ठे कामत वर्णा श्रनामि ज्वारेष्ठाः 1 हागरेन मंहिय दिखरेगः भूकरेव স্তদ্দিগুণৈ শাৰু দীপিকাভি:॥ ভ-वाः वा अभ्रमाः मृ दित्व नीवाक्रयः मुाजा। दारण वारेश् किरितः मारमा भारेक त्राजार्का अन्तरिष्ट्रेः ॥ जम्रा-ৰ্দ্ধতো ব্যায়ৈ গ্ৰহণত নীরাজন স-ম্ভবতি। ছাগল শত বৃষভ শত। শতঞ্ নেষাণা।। তরগা দশ হৃপ্তা-ক।ব্যাহ্রা: পঞ্চ দ্বিপশ্চৈক:। ভল্লুকা হি স্কুরালৈচকৈকাঃ পত্তি লক্ষণস্য ।। নৌকা শতক॰ সাক্ত নব দশক। কাঞ্চনাদিভি ঘটিত। বহুশতমপি জন্তুনা॰ নৌকা নীরাজনে রাজ্ঞা॰॥ যদ্ব। দ্বিপদ । যান সর্বেধা নিষ্যুত্ত जूत्ररैगः। সুদশা व< সন্নবসিতৈ र्याः ग्रादिक रयाग्रवरेनंक ॥ अक्षां रिक् जुिः अर्यापञ्ज नीत्राजना विधि। গ্ৰাম্ব নর নৌকাভি দ্বিগুণাভি র্য थाखद्र• । इति नानाविदेव द्वाला थी-ত ि वंगरेन खथा ।। जि॰ हार्नरेन क यारिगा क वर्गामी ताजना विश्वि । গৃহ নীরাজনাপ্যেব নরস্যাথ নিগ-म्राज ॥ यकिः थरेतः मृगारेनम्

वर्शायु करिष्टुं खर्लाकरेजः। भूतः नी-রান্ধযেদানা চির সম্পত্তি হেতবে 🛭 यारमाथ उरार्जन नद्रोक्टव जर-र्षा छः । व्याद्यानीनाः उरेथरेवकः तुङ्गः নানা বিধ স্তথা।। অক্তাণি ধাতক ৈচৰ বস্তাণি চ ফ্লানি চ। বনজাঃ इनकारेण्ठव कनकारेण्ठव कछवः ॥ नवगुराम्ह मूर्यप्राम्याः रेमालाः मध घटे। खथा। याग्र भाज् मम् जुडा नोकाथ **७** वर राष्ट्र ।। निक एरेट्स नि-ত• স্বৰ্ণ-ব্লভ• ভামুমেৰ বা। আত্ম नीवाज्ञतः मन्त्राव्यमित्हिहित मः छि তি॰॥ অক্তৈ নানা বিধৈঃ স্বর্গাদ্ম্ব রাজ निরाজन। অলফারৈশ্চ বিবি-रिष (र्मवी नीव्राजन भज।। मञ्जि नी-वाजन वाजा इर्यरेनव ननाहरत् । व्यमाञ्जानाः रेमनिकानाः विश्वानाः थनिना छथा। वरिख नी त्राजन अर्या। দিতিভোজস্য সম্মত্যা নীরাজনাযা বস্তুনি ন পশ্চেম পুনঃ স্পৃশেশ্য সপ্ত क्वः পরিভাম্য অর্য্যামীরাজনা বি-षि॰। नऽःमधा भववार्ष्ट्रेषु गङ्दि वा জলে পিবা।। দৈবক্তবৈদ্য দীনেভ্যঃ পুৰছে ৰা যথ। যথ। ইতি সংক্ষেপ **उः (भारका भ**या नीवाजना विवि:। অনেন বিধিনা রাজা সুচ্রিণ স্থ ম-शु उ ॥ उथाहि गर्नः मे नीवाजना

মহীন্দাণা নিহন্তি বিপদে৷ থিলাঃ িষেব সমহন• রাজ্ঞা• কণ্ডুকেনেব ज य उ: ।। नी द्रा खना व निर्ठाना वन ভয় বিদ্যুতে ক্বচিৎ। নীরাজনা বি शीनानाः नत्मार्यः भर्व मन्नातः ॥ তথা চ বাৎ স্যঃ। যে ভূমিপালাঃ পুতিবৎসরাম্ভে সর্বন্তি নীরাজন কর্ম সম্যক্। তেষা न লক্ষ্মী: ক্ষতা-মুপৈতি সামুজ্যে লক্ষ্মী: করণৈব তে याः॥ এवः नीत्राज्ञनः कृद्वा द्वाजा नु স্থান নাচরেৎ। ইতি নীরাজনাবিধি: ।। 🗱 । ज्ञाथ याजा। खनाजिनय मन्त्रमः भावुः याया क्जि ीयया। यि शण्डार अंकारणा न यमि द्रार्ष्ट्रे न कणेकाः॥ नः छ। यान्य पाशवा भाकिंगु। इन গালুগা। রাজ্যেলুকো বিনিহ্তি কা ः । करका १भाव्यकान् ब्रह्मनी वर्रः प्या. श्रीक वका**ल अम्रीक**र्याः पार कारण कल डोह मगीहिंछ।नि । প্रव दामः नात्मान मृर्जिकानि পুপীডিত । সমু সম্বকোপেত न यायाट भृषितीभाजः॥ निकरि वानुज्या हि भाजिक्षा भन्न ह। यावाक्कृत्भा वर**ा रेपवः वल**्यः 📗 তৎপর• নত•॥ অন্যত্র তু। নিরা खर्ल निक्ट्भार**ङ निक्**षिया निद्रामः (यः विभाक्ष अवभिष्ठा त्राजाता

विकिशीयकः ॥ इंजि युक्तिकन्नुज्यः ॥ 🗱 ॥ युष्पयाञाया सगक्त मणन॰ যথা। তস্য নিৰ্গছতো গেহাৎ শ্বা-নেছে নুখতো ২ভবৎ। ধ্বন্ধে হ-রোহ কাপোতঃ শিবা শ্যামাচ দ-किना॥ शिक्षनाहक्ष्राका ह म्कती কেবলী তথা। গল বানর সেনাজ শিখি ছিক্লাশ্চ বানতঃ॥পথ বিভি-माउ नर्भः नामानक वामीर्याउ। করাব বানরো থকো নাজারো হুতি ভৈরব ।। তৈল ভক্র ভূণ কেশ যুক্তা-**छाकारि हर्मनः।** वाखान्न इंड-मूक क्ष्णाम नकक त्रव ।। जूब कार्भाम नवगानाः निनित्जानाकः ह-র্শন । রক্তাম্বর ধরে। মণ্ড: পক্ষানিষ তথা वना ॥ जनारे नक्क कान উল্লাপাত ধু নাৰুণা:। দিশা॰ দাহ महीकष्णाः मत्रज्ञः कल्यः नजः ॥ निरञ्ज रखभरा जानू निराः भुजि-মুখাবহাঃ। উফোদক মহাকৃপ দ-इप ो कानू हा। यकान विक्छिः 🤏 ফলান! মধুভূত্তলা। শীত উষ্ণ विभव्यामा (अवनासाक माक्गाः ॥ অরেণ্য সভ্। গ্রামেষু গ্রামজারণ্য-বালিমঃ! কে: ষ্টু ল**র্প স**মূহা**ন্দ শশ** स्थानः लिशील हाः॥ यकानाः नङ्-তীপেনা মৃগানাঞ্চ তথৈব চাঞতে চ

্রিকারাকারে নিপতভূ**েপতন্তি চ** ॥ || कर्नतः भाकं द्वा यायू **मी ना (याया হ-** ∥ ত গুলঃ। শক্মুত্রাশুপাভানি গজা অখাঃ পুচকিরে ॥ ধুর ছএ পতা-काना शुरेन एउडिन्सन । कनक মসি চক্রে চ হতা দুন্দুভি রেব চ ॥ कता उनाक् हैनका नि नाजा हा नाक इक्का । जलानाः मृज्ञद्रागाकः नीर्न িত। হানুভিন্দতা।।শৃষ্পুরোহণঞা-ৰ্কসাৰু পাত স্তথৈব চ। পুতি মাৰু **দিত• (बार्सा गृजकानाथः बङ्गन॰ ॥** गवाः इत्त्रज्ञ मादाहः जीगाकः বৰ্ব বত্যতা। স্ত্ৰীসূতে **অবি ছাগা**-पि श्कावि **निम्**रमाजन ॥ वाना নাং ঘাতনং যুদ্ধে নিজ্ঞি শাঃ প্ৰকলাঃ পুজা:। নিফি চা দংশ নপূক বহু शानाम मणन ॥ निख्डा न वर्ट-षश्चिः मधूमः सुरुटि ग्रङ्ः। এविष शान् उत्थादभाजान् मृष्टान् (घारत्रन বাসব।। পপুছ নারদ পো ২থ किरमञ्चिक्**छ॰ विजा ই**ङ्धर्पर्। (मः ब्रवजाद्ध (वाद्य विवाद्यायः ॥ 🤏 ॥ व्यवारण याजा।

পুণমা জগতা॰ নাথ॰ কলি কৈ মুফ্ নাশন॰। ছাদশ মাতা তথাতি ততি প্রিয়নশনন বালা কালমা মুখ্যেন ব্যেক্সেন্

कम्पूर्वात हेन्द्रमु उवाह। रेव-শাথাদিষ মাসেষু যাত্ৰা পুজা বি-षि मूत ॥ শुञ्जिहामि (मरवरण यथावष्टकु मर्शन। दिविभिनिक्वार । रिवनाथानियू भारमयु (स्वरम्बन) नार्किनः। यायाद्याहम याजाः मु ত। হি বক্ষ্যামি তে শৃণু ॥ বৈশাথে ठानरनी याज किंद्रिक शामन् भी विका । यावार प्रथमाजा महार मृतिरा म-यनी उथा।। ভাएंद्र मिकन भाषी या व्याचित्व वाम भाषिका । উत्थानी कार्जिक मानि ছारनी मार्गमीयर्क ।। পৌৰে পুৰ্যাভিষেকঃ স্যান্সাঘে नालात्रनी उथा। कालुत (राज यावा महादेहात महन छिका ॥ अ কৈকা মৃক্তিদা সর্বা ধর্ম কামার্থ সা थनाः। 🗱। व्यथमावाः विधिः। कात्नत াবৈশাখন্য নিতেপক্ষে ভূতীয়াক্ষ্ স-জ্ঞিতা। তত্ত্ব মাণ লেপযেদ্গন্ধ লেপনৈ রতিশোভনৈ: ৷৷ বৈশাখ-महानत्वभव्य ङ्डीया भाभनानि-নী। স্বয়মাবিষ্কৃতা হৈয়া প্রাক্তাপত্য র্ফ সংযুকা।। यः পশ্যতি তৃতীযা্যা ক্ক চনৰে ভূবিত। বৈশাখন্য . ५ वर्गा 💎 📑 अनुभाव वर्गा ाकता जनगरेमण्ड भूजी द्वा उसा

হরি । নানা স্কোপনিষদৈ রিখে । **म॰ म**•स्रविष्ठ ह ॥ विगू वीगाहि 🛚 वारिएम्ह उथा नाताशशादिकः। नरक्षाव एन् जगमाथ • ज्जीयाको वि लिभाष्ट ॥ रिवमाथम्। ज्जीयायाः জব্দমধ্যে বিশেষতঃ। লেপন মণ্ড (भ अर्य)ाचा थान व। वृत्र्वत । हन्त-ना ७क द्रीरवद • कश्च क्सून (दावनाः ।। बढीमा भी मूत्रा हिव विस्था र्शका-श्वेकः विदूः। अरेज गंरेन खथारेना क विष्या गांबानि (लभारयः ॥ घृउक जूननीकाष्ठः अर्ग्याह्मभन कर्मान 1 🕽 ॥ 🗱 ॥ व्यथ ज्ञानगावा। कन्त् भूत्रानः। किन्धा महकावजीनं खट পুণ্য জন্মবাসর । তস্যাঞ্চ স্নাপন কাৰ্য্য মহাস্থান বিধানত: ॥ তস্যা भाउमानकाल युक्तना महिउक मा॰ । রাম• সুভদাু• সৃশাপ্য মম লোক मवाञ्चया ।। उथा। मानि कारह जू সংপ্রাপ্তে নক্ষত্রে শত্রু দৈবতে। পৌ-ৰ্ণমাস্যাণ হয়েঃ স্থানণ সৰ্ব কাম ফল-পুদ•।। সর্বতীর্থ সমঃ কৃপ স্তদা স্তে নির্মাল: শুচি:। তদা ভোগবতী তত্র পুত্যক্ষণ ভবতি দিলা: ।। তমাৎ জৈঙিয়া॰ সমুদ্দ্ত হোমাজৈঞ কল-िम ब्ह्नं दिशः भागयोज २५। व्यक्तः स् १ अ. व. ह्यापूर्य १ स. १८८७ १ ४ हैं।

न्नान मूट्यावः भव्रमाच् छः। উट সবো বৈ ন হীয়েত তমাত্ত অনুতঙ্গ-त्र ।। क्रम्ना॰ क्रम्कात्रिष्ठान्ज्ञम-যাত্র। পুতিপ্তিতা। জৈগ্র স্থান ভগ-বভোষে পশ্যন্তি মুদান্বিভাঃ ।৷ ন ভে ভবান্ধৌ মজ্জন্তি যাত্রাঘাণ যতমান-नाः। জ্যৈষ্ঠে চ সুপন স্বর্য্যাৎ ত্রী विष्ण जन्मवाभाव ॥ रिमनिम्बङ দুরিত পক্ষ মাসতু বর্ষজ । বুন্ধ হ ত্যা সহসাণি জ্ঞানাজ্ঞান কৃতানি চ ॥ মর্ণস্কো সুরাপান গুরুতল্ল যুতা-নি চ। কোটি কোটি সহসাণি ফু দু-भाभानि यानि ह ॥ अर्दात्मुव भूग-শ্যন্তি পৌর্ণনাস্যান্ত বাসরে। প্রু-ষস্ক্ত নজেণ পাৰনান্যা তথৈৰ है।। नां त्रिक्टलां म्र कनाथ उथा जान क-नाष्ट्रना । পঞ্চামৃতৈ: भी जভारिय **म्** ब्री कर्न् त्रवाञिष्ठः ॥ यतामत्कन শুদ্ধেন তথা পুষ্মোদকেন চ। সাপ-यिज्ञा कगनाथः भू करय भ त्रामध्रतः ॥ ७ व॰ वक्षिय नमः इंडि चक्षाया-मु । निर्वेष्ट्यः । ये अव **अक्ट** वि-षान् वाञ्चनः का जियः मू िः ॥ नर्व পাপৈ: পুমুচ্যেত বিফুলোক স গছ-जि । एकर्नम_{् । वि} न्था नाबयिष् A(4) - 11 44 + 1 - 4(3) 2-स ना छ। ना कि उ । पर नर

नुिक्षा कनमानिक्षामण्य ॥॥ সুবাসিত জল পূর্ণ পাবক কলস ন্যাসং। জয়শক্ষৈশ্চ স্তাক্তিভি নী য তে জগদীশবঃ ৷৷ জযস্ব রাম কৃষ্ণেতি স্ব্ৰভদুতি চোদিতে। নীয়তে মঞ্চ एमन्ड निमीएथ <u>वाका</u>गारि**जः**॥२ ।। #।। व्यथ तथ याजा। ऋन्त्रभूत्रांग॰ । গুণ্ডিকাখ্যা॰ মহাযাতা॰ পুসরী থাঃ ক্ষিতীশ্র। আষাচস্য সিতে পক্ষে দ্বিতীয়। পুষ্য সংযুতা ॥ ত-স্যা॰ রথে সমারোপ্য রাম॰ মা॰ ভূদুবা সহ। যাত্রোৎসব• পুর্ব্ত্যা**থ**ী शीगरयह विकान् वर्न्।। सका जारव ভিথৌ कार्या भना भा श्री उरव सन। সপ্তাহ• সরিত স্তীরে মম যাত্রা ভবি-यऽि ॥ अष्टरम निवरम मद्यान् द्रथान् भारेला क्विं कृषरयर । नवम्या भानरय-ष्प्रवारत्वयु श्रीजः मगृष्किरान् ॥ म-ক্ষিণভিমুখী যাত্রা বিক্ষোরেষা সূদু-ৰ্জভা। যথা পূৰ্বা তথা চেয় তেছে মুক্তি পুদাযিকে।। অষ্টাহে বিসূজে ছক • তদৰ্জেন তু পাৰ্বতী । ইতিবং তিথিনা একাংছা বোজ্বয়:। তিথি रिनरकन दिवन का नामाना की खिंड: । ইতি বিফুধর্মো তরাৎ।: যন্ত। আ मार्गत) ितन शाक एक अर अर न युका बाखाद नतः श्रुव है। भारु

ভাবে পুৰ্য এব ছি ॥ ইতি ইখর স•হিতাযা• বচনান্তর•। তদ্বৈকল্পিক भुरवागास्त्र विवायकः ॥ शास्त्र । व्यावाष्ट्रमः विजीयायाः तथः अर्गः।-দ্বিশেষত:। আষাত শৃক্লৈকাদশ্যা॰ জপ হোম মহোৎসব ৷৷ নাতঃ পরু হি কৃঞ্স্য যাত্রান্তর মপেফ্রতে । অब य्रयः जिल्लाक्नः मान्स्रम **ञ्ड्ला** ॥ नामयन् अर्वेशांशा-नि वर्ष वर्ष वुष्करमो। द्रथञ्चि उ বুলন্ত॰ ত॰ মহাবেদী মহোৎসবে ॥ যে পশ্যন্তি মুদা ভক্ত্যা বাস স্তেষাণ रुरतः भए । भजुः भजुः भूगः भः ত্যু পুতিজ্ঞাত দিলোভ্যা: ।৷ না-তঃ শূেষঃ পদে। বিষ্ণে কৎ সবঃ শাস্ত্র সন্ম তঃ। রথগাত্রৈব যাত্রাণা মুখ্যে-ত্যাহ পূজাপতিঃ।। মহাবেদী বুজ-**७॰ ७॰ রথङ्॰ পু**क्रमान्त्रमः। यदा-**जुन्** मू जुनुष्य मृक्षे। युक्ति नेतानाथा ॥ আষাচন্য সিতে পক্ষে দিনে বি-ফোঃ শুভপুদে। পুতিষ্ঠাপ্য সমৃদ্ধে-न विधिना भूईविष्टुकाः॥ त्रथः नदाः। ह्रातः ह्र्येश ८ सामन मुश्रतिष्ठ् ७ । ज्**षर्याविदिश जं**ङ्गा वद्याण सात्र भान्त्रदेकः ॥ मृत्यः भगवारित्रम्छः **'क**ही एक्शक्य स्था। 🖒 वर्षत मू-थ्या ः गावना वस्त् ख्या ॥ यन्त्र

 श्वीयन प्रभागा क्षानकात प्रानः ভাঃ। ধুকাশ্চ বহুব স্তত্ৰ পতাকাধি विजाउताः॥ गक्उक वृक्त वर्णार ब्रक्डन्त्व मि**न्डिं।** मीर्घना**नः** भीः उपरं **र** अवास्ताः विव्विजः॥ চঞ্গু দপ্ত ভ্রগ সর্বালক্ষার ভ্ৰিত । (स्वा: भग्नध्वः अर्थाः भग्नका विनिर्धि उ॰ ॥ जश्रहम्भयः व्यर्गही-द्रित्। लाक्लथुक । भाद्रिष वाकि नरेक्षव वनः वन मूनाविकः॥ श्रीतः रिक मंद्रील मीरेड बिलिवरेर्गः मृत्मा-ভন•। ইত্থ• সু ষটিত• তন্ত রপ•দেব ज्यम्। व्यक्ताम्य (वनायाः ए-वं उमार भून्इत्यर। वाकरेन दि ফবৈঃ সজে বভিভিশ্চ তপদ্বিভিঃ ॥ विज्ञानायाम्बरम्बः याजारेय ज কৃতাঞ্জলি:। ততঃ কপুর পর্ণিন্চ যুমনোভি রবাকিরৎ।। পথি শো-ভন স্কানি পুণঠ জি দিলাত্য: 1 কেচিমঙ্গল গাথান্ড কেচিজ্জন জ থেতি চ।। জিতন্ত ইতি মন্ত্ৰ• বৈ কে-हिट भाग्न क्षति है। मूड मागव मुथाण की खिं काकी • मूमा इ.७:॥ **इहं द्री कर्यादी विश्व दीना भाव दिकार** यः। भद्रायस्त्र मञ्जूद्रः (गा विनम् वि क्यां उत्र ॥ ७१० भुव् छ भगत्य क्ष द्राम প्रामद्र । नयश्चि विश्वा छन्।

थ क्विवाण विण उथा ॥ करह **ध्वा जगमाथ** जागिष्या त्रथवरः। त्रामः जुनुष्क कृष्ण्क तथनात्र। नित्न-भारक्त ॥ भूकारम् भागति रेखः भुका ভক্তি সুসংযতঃ । রথছাযাণ সম্ব কন্য বৃদ্ধহত্যা ব্যাপাহতি॥ ত-(दुन् मःमक उन् खारकोष भाग मः क्छि॰॥ धनाष् वृश्चि िकन स्र^{त्}का म्बानक कन ॥ (य भूगाम भूक्व वि ্তেপি নোক্ষ মবাপ্র यः। অনুগছস্থি বে কৃষণ তে দেব ভ্ল্য বিগ্ৰহা:॥ (वरिष खविष (वनानाः वक्तावा मा-क्ष अभिनः। ইতিহাস পুরাণাদ্যৈ স্তোত্তৈ ৰাণি সুসংফ্তৈঃ॥ স্তব্ি পুগুরী কাক্ষণ যে বৈ বিগত কল্মষাঃ : তে दि सर्वि शाशानि सर्मदि खरिखरा। नर्जन वक्ट वाशि गा-यञ्जाश नातालगाः । रेवकावालग সংসর্গানুক্তি॰ পাুপোত্যসংশব॰॥ নামানি কীত্তবিষ্যন্তিন তে যাতি ব-गानगः। जय बाग क्षाति अव छ-দুতি যো বদেশান নাতৃগতে বাসো १मा म ह प्रवच्न माञ्च याट । हामरेत वाकतमः भरेन खन्ति कीनावनिकः ারখন্যাগে জিলে যোবৈ বীজ भूक्षां खाः । मः वीकाशांना **९%** ब्रांडि (मंद भक्ष ई (या कि छान्।। जू हैं,

ভূতোণান্থিস:ন্যাবদীভূত**স**পু ব•। নাতঃ পর তরো লোকে মহাবে· भी ग्रहाटमवाट ॥ मर्बनानहरत्रा (गामः मर्बजीयं कन नुषः। क्षम् फिन्छ (य छञ मान ममि दि नदा া৷ য়ৎকিঞ্চিদ্মায় ফল মেৰুদানেন সংমিত। গুলিকামগুপেয়ান্ত ভুদা কৃষ্ণ সহাগুজ•া। ভত্ৰভেপশ্ভি গা-खर्री प भरिव विज्ञाय उत्तर । भक्षामृटिजः শীততোথৈ: পুত্র কপূরি বাসিতৈ:॥ নারিকেল জলেনাথ তথা ভাল ফ नार्मा। तङ्गानका मृष्यम् उथा भू ह्याप्रका है।। नदीक मन्विला इन्हरनमू मृत् प्रेवः। मूगिक्क भानाः। ভরণৈ की नहिंदाः मृत्मा हरेनः॥ हा-नरित्रक कवारिङक की उरेन र्वा करिन ख्या। वीबयय भुखबीकाक भुज-দুা॰ বলমেব চা। সিতাভিঃ পানকৈ ক্র দৈয় স্তথা খণ্ডবিকারকৈ:। খজ্জু-रेत्र नातिरकरेलम्ह नाना ब्रञ्जाकला-দিভিঃ।। তথা ক্ষীরবিকারৈশ্চ পন-সৈ বিক্ষৃতি তথা। বাসিতৈঃ শীত ভোষেশ্চ গদ্ধ তাদূল পত্ৰকৈঃ ॥ স कर्त्र नवकारिनाः भूखरायः भन्नाम ধর॰। রথত্রয স্থিত॰ দেব ত্রয়॰ যে ूक्रव जाउ॥ शुम्रकिनः शुम्रविष्ठि वि कु भन्न भन्न है।। छत्ना क्षत्रहाहा

(एरवर्भ मिक्शिविय वीक्रिउः॥ भ-तिः भरेन नर्यिष्ठकुः स्थक्ता ह स्थाः स्म। এব॰ বুজ তি দেবেশে সূর্য্য শচান্ত॰ গতে। ভবৎ।। দীপকানা সহসাণি জ্বালিতানি নরৈ ততঃ।মণ্ডপে বাস-राष्ट्रवान् ७७७कारथः मरनाङ्द्र ॥ চাক্চন্দাভপে চাক্মাল্য চাম্র ভ্-বিতে।পুত্রযিত্বা জগন্নাথ তোষ্থেৎ গীত নৃত্যকৈ:॥ উপহারাদিভি স্ত-व मधारानि जनार्यन । मधार य পুপশ্যন্তি গুণ্ডিকানপ্রপে ছিত।। নাঞ্চ রাম• স্ভদাঞ্চ বিফুসাযু**জ্** माञ्चार । दिवा उपत्रभन भूगाः त्राको ममञ्चन छत्तर।। यरकिकिट ঘৰতে কৰ্ম কোটি কোটি গুণ ভ (तर । मर्ब । प्रकाम नाम गार्ब-ব্যাসসমা দ্বিদ্ধাঃ!! মহাবেদ্যা• গতে क्ष्क (यारमा १य॰ थलू मूर्ल जः । चार्खामयामिका (यागाः ऋत्मिन श-রিভাষিতা:॥ মহাবেদ্যাথ্য যোগ-मा कला॰ नाईडि खाउनी। यहा-হে চ পুন: কৃত্ব। দক্ষিণাভিনুখানু-थान् । पिक्रगानिमुथी याजा विस्था दिया भुकी विंठा। कार्यता भुयञ्ज ः... স। হি ভুকি মক্তিপুদা ভৰে ॥ দক্ষিণাতিম্থা নাস্ত কৃষণ গাশ্যন্তি যে নরাঃ। নতেবা॰ পুনরার্ভিঃ বভঃ

भिज्ञ मारा ।। भूतावित्न विष-স্থেতা থাতা নবদিনাগ্মিকা **छम्याः मः**कीर्खनाएव निर्मा**ला** ब युष्ट नद्रः ॥ ভাবতীयः महायाव যো যথা কর্ত্নিছতি। সোপি বি अञारवन रिम्मर्थ खरनः व्राह्म ।। **उ** ভ্ত্য সপ্তপ্ৰবান্ পাপাবলি সম বিভান্।।৪।। 🕸।। অথ শ্যন যাত্র। क्यान्त । आवार मुद्ध द्वारम्। व र्गाट यान महाटमवः। मञ्जल त চযেত্তত্র শ্যনাগার মৃত্তমণ।। দেবস भूत्रजः भग्रा॰ तज्ञामि निर्मित्जा॰. ति। वाङीर्य भृष्टिवामि भृष्ठीताः 📗 खत्रह्नाः ॥ कभ्त्र ध्नि विकिछा সাধু চন্দুাতপা॰ শুভা॰। পুষ্কগছ যুতা মুক্তা রঞ্জিতা চন্দ্রান্ধিতা ।। जाबू हार्ताः मुङाः त्रिकाः नान চিত্তোপশোভিতা । এব স্বাপগৃ इ॰ क्वा निभीत्थ माभरयिष्ठ । नःभृष्ठ, ভाবयरिकः, ভেষाः कृ ঞাদিভিঃ সহ। এ: হৃহীতি চ সং প্রার্থ্য স্বাপার্থ- পরনেশ্বর-11 নযে ह्रगागृरुषात वागाय घिकाज ্ৰুষ• ৷ পঞ্চামৃতৈ: স্থাপ্যেক্তান্ পৃথান্ शन णडाधिकः॥ मृगक्ति इन्हरैन निश्चान् दञ्जानक्षत्रभागि जिः । भू-कविदा यथा न्यायः भाक्षित मंत्र

महातर ॥ नगवन्त्र इंड्रानि। मुर् कात्रायकातः विष्णाः मयन विश्वान া স্বাপথিত্বা জগন্নাথণ লভভে সু गूडम॰॥ ৫॥ 🗱 ॥ व्यथ भार्थभन्नि বর্ত্তন যাত্রা। অথ তে সংপ্রক্ষ্যারি পার্শ্বস্য পরিবর্ত্তন । নভস্য বিম্ব शक्क मः भारि इत्रिवामत्त्र ॥ विर्मा साभग्रहातः मरेन गंदा भुविन्।। । নমক্ত্র জগন্নাথ পর্য্যক্ষ শক্তি भूमा ॥ व्यवचारि मति स्रीतः भूकत्य দুপচারকৈ:। পুণম্য ভক্ত্যা তর্থ পা भी साभारामुखद्रामुश्रा मञ्जलकः भारेट्। खँरिवरहर जगनाथ कन्तरा পরিকল্পয়। পরিবৃত্ত মিদ সর্বণ যথা ञ्चावत्र कक्षम•॥ य८ मृष्ट्रीरहिंहे ठेउत्तर জাগুৎ স্বপ্ন সুসৃগুভি:। জগদ্ধিতাহ সুগোংসিপার্ফেনপরিবর্ত্তগাপরি, বত্তন কালে। ২য় জগত: পালনায়তে । ত্বসগুজো ২য• শক্রো হপি ধ্বজে তি-(४८ महूरमूकः ॥ मृष्टे वर शानकः মলং বিনৃঞ্ মুদ্ধি তজ্জলং। মহীং কল প্লাবশতি পুজাপালনহেতৃকণ। रिं में भूर्था (मर्विण विनयास्त्री-यशिख डः। वा अति महासदि देशव वी-कतार भवता यव ।। मृगिक्ष हन्ति न রস্যসর্বাহ্রণ পরিলেপণেৎ। স্বাদ্নি **७क्कान्त्राणि भाषमानीनि माभव्य**

ा। भग्रागृहवाति विष्णाः भूरेन ड क्ता निरवमरण्य । एमव मू मिर्मा यथ अर्याप मर्व मक्षयजा वृत्वया। लार्स्ट बग्रस्टिंग उन्वानगरका छात्र ।।।।।।।। वन यात्रिम मुद्र कामणाः शृद्धां छ विधातन श्रीकृ न्यनाः वामनार्थं निव्ववंतः कार्याः ্রা ৬ ॥ 😝 ॥ মতান্তরে । শুভে চৈবা-- वित्न मानि महामायाः भूभूकायं ८। সৌবণী'• রাজতী• মাক্তী'• বিষ্ণুমা-या॰ मरक्षत्री॰।। वि॰न।रेहव न कर्ड वता कराहि विकु भू बरेकः ॥ ७ ॥ 🕸 ॥ অথোত্থান যাত্ৰ।।একদেশ্যান্ত কা-ত্তিক্যা॰ শঙ্লাষা॰ পৃথিবীপতে। কৃষ্ণ मूथानारय छक्ता भूष्रविद्धा जनम्थ-ৰ ।। পূৰ্বৰ প্ৰাণিত্ব। তু পাত মাঞ্জ সনুচরেৎ। মজস্তা। ওঁ উত্তিপ্ত দেব-দেবেশ ভেজে। রাশে জগৎপতে। বীক্ষ্যৈতৎ সকল দেব শুসপ্ত তব भाषया॥ পुक्ज পुछत्रीकाक 🗐 इ-ं दि मेयतन देव। ज्या मृष्टे॰ जगिनिन॰ পরন সুথ নেষ্যতি॥ যেতে মার্ভাঃ ক্ৰিয়া: সৰ্বাঃ প্ৰভ্তিত ততে। ধ্ৰু । इंजुलाना जगनायः (वन वीनारि निः बरेनः॥ जगमरिक खथा (मव नरम् न्[/] ङ। मख्य•। डिल्बिसाङ्रिका छ। पन ज्ञाभाष्ट भूकाषाज्यः॥ भः

काम्रेज नातिरकन त्रीमः कन द्रीम ख्या। भूगक्षामणकिनाय यवकान्त्रन (नगरयटः ।। धर्यत्य ज्नमी हूर्न (र्लभ-भाराम्य हम्स्रीनः । भूत्रवामिछ छा-বৈশ্চ জ্বশ রক্ষোদকৈ তথা ॥ স্থাপ-বিত্বা ক্ষ্যেৎ পাপ বহুজ্যোপপা-দিও । নহোপচারৈ: সংপ্রা বিষ্ণু भीत्राकायखळः ।। क्ञाञ्ज विश्राही कृषा भार्थायेद अत्रया गुना ॥ १॥ 🖚 ।। अथ शुवित्रण याजा। गार्गनीर्य সিতে পক্ষে সর্য্যাৎ পুষরর গোৎ সবং । कृषा मृष्ट्री नात्रा ज्का विकार ला-कराशुवार ॥ वास्त्रा २विवामः छ-वी उ निक्मा निक्ष कर्यादि । शु जारक मखनः सर्गाए भग्न मक्षेत्र-वात्रिज ॥ दिक्तालान् भू कायिष्त-ক্ষু ক্ষেত্রপাল গণানিপ। চও পু-**ठाओं ठ विश् कार्जिक नुभू**हराएं ॥ उत्रास्थ इतिरायवाचः कानाय-मुक्षवादिना । भूजयिषा क्रममःथ॰ **११८७ तन मीशकः ॥ म**ञ्च कृष्णाय ख्का ज् भी जवारेना नंत्य मिना । श्राजः भुभृक्षरयस्त्रवः नानामुरेवाः मृ **मा छेति: ॥ म**श्रजि: मश्रजि (फ्रेंदान् वारनाजिः পরিবেট্টবেই। নুর্থবৈর্জ थ मर्वात्य भीज शानत्रीन विकास म्बाक्रेदः भुभूकाम कांग्रामीवाक-

না॰বিভোঃ। ভগবন্ত সমুদ্দিশ্য বু। ক্ষণেভ্যঃ পুদাপথেছ।। গুৰুভ্য नहां। न्। (हरवरञ्जा दीनानात्थञ्ज এव ह । भीड भावत्रन मम्याद मक्ट भन्न-मया मूना ॥ हमाजि. जगवान शुक खिम दब्र मनुखमः॥ ৮॥ 🗱॥ व्यथ **পু**ष्णनान याजा। भूष्णनात्नारमदः বক্ষের যথোক্ত বুহ্মণা পুরা। পুষ্র-(ऋंग ह मःयुका (भोर्गमानी यहा छ-वट् ।। भोरष मानि ज् उट मर्याट भूषाञ्चात्नारमयः इतः । हर्जुर्मणी **निनागास कछाना मधिराजनः ॥ त्र!** ত্রৌ দ্বাগরণ কৃত্বা প্রাত বহিং পুকী-ব্লবেৎ । বুন্ধ বিষ্ণু **শি**বেভ্য**ন্চ পু**ত্যের ক॰ সমিধ॰ ক্রমাৎ।। জুত্যাৎ পূজ-যিত্ব ওদন্তে পুৰুষোত্তন । পূ জ্বেদুপচারৈস্ত আদর্শে পুতিবিশ্বি ত ।। ততঃ পুৰুষসূক্তেন হয়ে। স্তা-নভিনত্ত্রেং। ক্রনাদেবস্য শিরসি माभराविधिन ख छः ॥ मूक सूह बन् । ভত্তঃ পঞ্চামূতে নৈব বাসুদেবঞ্চ ক্ষা-वार । वक्षा युक्त भून विभू छे-भठःदेवः भूभूवायर ॥ मृबाङ्क्वारेम्ऽः স্তৃতিভি বাদ্যৈ: সংগ্রা কে**শ**বং। , লন্ডাদ্বিকিরেদেব• কপ্রাদ্যৈ সু **७ ७ नान् ॥ नी दाक (यब्ह्य गमाथ क** পূর যুত বর্ভি:।। ততঃ পুদক্ষি 🛚

ণ কৃষ্ণ দণ্ডবৎ পুণমেৎ কিতৌ 🛚 🖈 भूष। मातार मदः भूगाः (य भनाः-ष्ठि मुराविजाः। সর্বসম্পন্ন কাসা ख वुरबग् देवकवः भरः॥ ५॥ ॥ ॥ व्यथ नवणमा याव।। व्यर्गापयन न कान्त्रा मन्ना भरहार नन । ज कारतः भूदि रियम नदाः भाविः जुक्जिमा ।। जानाम नूर्व (मर्स् **जू ज्ञानयिदाधिवामस्य । उथा है**ं शाष्य । नःकाष्ठाः नावगानम् माधिवामिञ उञ्जान्। नित्वम्। वि-ফবে ভক্ত্যা ইন নজ মদীরহেৎ ॥ प्रिय जूष्ट्रे बन्ध्य मर्ब नामन भुजित-ব্যতি। রক্ষ সর্বণ জগদ্বাথ গৃহত্যাণ পিষ্টক॰ শুভ॰ ॥ ব্ৰাহ্মণান্ ভোজ্বে-**ভ**ক্ত্যা দেবদেব পুরস্থিতান্। আ-ভার্চ্য ভগবন্দকানিত্যাদি॥ নবে-न वाममा (वड्डे) पूर्व। मर्थेश शृह्धकः । পূজবিদ্বাভিনন্তেণকৃঞ্জ্বামভির-कर्।। भूनः भुजाल (मर्यमः भूनि-(भन्नक् ठन्मरेनः। बज्जानकात्र भारेम ५-क श्रृष्ठिय । यथा विवि ॥ नीत्राख-যিত্বা দেবেশ• তণ্ডলানধিবাসিভান্ । ङालीयू भाकभाष्ट्रम् अर्थाकऽ भिक्षिकान् ॥ भिद्धिभः ङाभरयम्स्य গন্ধপুয়াক্ষতাবিভান্। **সপ্প: পা**-यमः क् वः पर्शाः व ठक्रभागाय ॥ पः

राष्ट्र

भवर्गक निष्ठे विद्याः निष्ठि । न्नः। ॐ कोवनः मर्वज्ञानाः बनकद्यः व्यगम्ख्रा। उद्यया नाविता स्ट्रां च्रियव कनिजाः পुरन्।। वाकान्गु-श्नार्थाय गृशेषा हिज विगुश्। उव পুতিঃ ক্তানেতান্ গৃহাণ পরমে-, थत ।। ज्वि ज्रहे खगट नर्व मानन পুভবিষ্যতি। স্বাহাকার স্বধাকার द्ववर्गात्र। दिखोकनाः ॥ व्यानग्राय ना ভবিষ্ঠতি তেনৈবাপ্যায়িত क-गर। त्रक्र मर्वः जगन्नाथ उत्रयः म চরাচর• ॥ ইতি সংপ্রথ্যে দেবে**শ**• भानी खान् विनिविषय्याउ ।। अ।। व्यथ (राज गाउ!। कानूत मानि वर बीं ७ (पाना (द्रार्ग गृखनः । यव ক্ষীড়তি গোবিন্দে। লোকানুগুহণায व ॥ भुजाहां। स्वरत्वमा शावि-न्तिथाङ काद्रायः । कल्गूटमवः ्ञ दी उ नकाशानि वाशानि वा॥ াল্লুন্যা: পূৰ্বতো বিপু। ক্চতুৰ্দশ্যাণ ीं नामूर्य। दङ्गुष्टमद॰ भुक्रदी छ ाषम्७भ भूईछः॥ भाष्य । (भी-र्गाम्याः मगात्रच्य शक्षम्याकः मः नाभारत्या ३३॥ 🗱॥ व्यथमस्य ভঞ্জি দা যাত্র।। বাসন্তিকাণ সমা-र्थात्रा याञाः सरमञ्जाकाः। य ाः क्ञायाः मृक्षायाः श्रीपाठि भू

करवाजमः ॥ टिज मङ्ग बरवानमा भाइदिख्य नम्लकः। (एवन्।ाशु বিরচিতে মণ্ডপে সাধিবাসিতে 11 >२॥ । । इंडि यो बाउदुः॥ यारः न्नी अनक्षः। ইত্যমরः॥ 🎾 यापत्रमः भू जम् मुः। ইভি एमः ठमुः ॥ যাদ:পতি; পু॰ সম্দু:। ইভামর:॥ বৰণঃ। ইত্যন্ত্ৰ পাল:।। यास्यः पूर 🗐 कृषः। ই 🤊 मद्यः ब्रङ्गावनी ॥ यगाउँ क्लिं अभू धा यमू **ন্তস্য বংশঃ।** যথা। যযাতে র্জ্যেঙ भू अत्राधि यापार्यः मार्ग्यः । इत्र পক्रमा भाषवा वृक्षया ब्राजन् गार-বাশ্চেতি সণজ্ঞিত ।। ইতি খ্রীভা-गव्डि रुक्ति २० वश्रामः ॥ याम्व॰ क्ली (गामश्चित्र) दिश्व- 1 ইত্যমরঃ ॥ याम्बी দুর্গা। ইতি ত্রিকাণ্ড-अो শেষঃ ॥ यारमाःनाथः भूः वक्षः। इंडि इ-वायशः॥ यानमाः পতिः भू मग्मः। इंडाः मद्रः॥ वस्तः। इंडि (मिनि)॥ यामृक्) जि य इत मृणाऽएउ मः। यि-" যাদৃশ: } মৰ্ইতি ভাষা।ইতি মু-याम्कः) अत्वाधवातकः ॥

शास्त्रानाथः शृ अगुपुः। ইতিরাজ-নির্যণটঃ।। शास्त्रानियात्रः शृ जलः। ইতিহেন

हिन्द्रां ।

यांन क्री बाड्डा नक्ता पित्र ज्थना-ু স্তৰ্গত গুণবিশেষঃ। ডজু উপটিজ শক্তিঃ কৃতমূল রাষ্ট্রক্ষম্য শতো व्राक्रमानाय याजा। ইতি ভরতঃ ॥ इस्रिवंदशामानि । खर्म-र्यायः। बाह्न २ यूग्र ७ शब ह খোরণ ৫। ইত্যনরঃ॥ বিমান ৬ চল্কুর ৭ যাপন ৮ গভিমিত্রক ১। हेकि **मद**बद्वावली ॥ **#॥ यथ ठ**जू-अस्यातारम् नः। य वुक्त को छा पि বিভেদতো খ্মী নযা নিক্তা ইহ-বাজি মুখ্যা:। দিশান্যা সর্ব চতু-ম্লদানা ভেদো বিধেয়ে। বিদুষাদরে-ণা৷ যথা যথা স্বাদিক পোষণেন যা-নেন বাদোৰ গুণৌ ভবেভাণা তথা তথৈবান্য চতুম্মদানা পুঞ্চীর্ত্তিতৌ माय खरनो बुर्यम ॥ यत्र गराम मः পোষণ নেব বা বর নিবান্য শারীত্র মগোষণ । ন খলু দোষ যুত চতু-্মদং স্শতি পশীতি শোভন টে-তবঃ ॥ সুরাবিন্দু দ্বিষতি পযো-ष्ठे म उ॰ येथा। ख्या गर्ड॰ मृष्यिङ নোৰ দুষ্ট শত্ম্বদঃ।, ইতি চতুম্বদ

यात्नारफणः ॥ कः ॥ अथ विभारं यारमार्फ्णः। मान्रेयः পकि जि र्वानि छंबारिन विनिष्ठ विनिष्ठ विनिष्ठ স্যান্ত্রিপদ্শ নাম তস্য ভেদে। ছনে-क्या ति नामामाक विरम्परंक उने (जर्मा विया जर्दर । एक मामानाः यथा। यान योद्धिलेला छत्र मर छ-क्रांगारिक मृह्यां । हजूर्जि युक्ति मन्यूटिक पंख थांजू खनाम्रोतः ॥ तीन-লৈতি কথ্যতে তেষাণ নিযমে । ২য় भूरमी उ। उब मनयः। উপেन्तु मू-লাহি শিবাগ্নিবর্জণ শন্তেন্দু ভারা **তি**थियाग नत्। दिष्टि क्वानू अयं मारु वर्जः (नामानिकासार्ग नार) নিষ্ট:।। দণ্ডকাষ্ট্র স্থানিবমে নিয়মশু এ मखर८। कनकः त्रज्ञछः ভागुः लोइः খাত চতপ্রশা চত্রিধানা মুদিষ্টে वुकारीनाः यथा कपः। जूबागा म-সুরাণাঞ্চ চাতুর্বর্ণ্য স্দাহত ।। ত্রি-হন্ত সমিতো মধ্যে তদর্জণ পার্মযোগ দ্বশোঃ। বিজ্ঞান্য দোলেয় বিজ-याय नशिक्षि छा॰॥ विषया सदना কুরা শিবা দ্রেশা শূভা ক্রনাৎ। বিভন্তেইকক লাবৃদ্ধ্য দোলভ ষট্ স্যুঃ স্থান্দা: !৷ সমুণ্ট পান্নকো-যক্ষ শান্ত্ৰঃ পদ্মত এন চ। চত্ৰিধা नाः (नावाम् कव्यानाम् ह्वूडेयः ॥

a 🗝 🔏 📢 মাকো ভূপ শচত্প্ৰয় মি-कार्काट । ऋष्ठाराज्य निशाजवाः চতুৰি । **মহীক্ষিতা ।। অত্যাপি বৰ্ম** विन्ताः विष्क्रत्य। नवम् ७व८ । ভোজন্ত। गृङ: भुष्टाम (नानायाः तनामाम् क्नित्री ॥ मृत्रा जुनन अस्तानार कीडा सामामू यद्**शरः।** গ্ৰ্ন: শত্রাজ্যে বৃষভো দান रंभीना (नात्वाभयुर्भित्र न्राम्। वरुष्टि गृति भागनः। यषक म्खः मान नहाद उद्भर्याङ्ग भिठि मृउ।।। িন্ত সমিতো যান স্তদৰ্গ পরিণা-क्यात्। भर्याकाः (क्या नामायः छर्जुः अवःर्थ रायकः॥ कात्मा मृज्रु र्जाया , क्षेत्र 🖘 जिल्ड यथा कमना दिउएस्टर ेक्क कल्बार यथा हानू नंत्रक्रिनः ॥ ा धार् खगारीना॰ नियमः भूर्वतः परः जिल्लस मथ वक्तानि भर्गः ा मान्य स्थाकम ॥ मुक्तिम ग्राहर छ। क मृत्रक्ष खरेष्य छ। अनुशाहिक काकानाः भर्गास्त्रमु नामः कमार ॥ পদা 🍇 গজাখালি হ•म কোক भारत क्यार। णारिजाित स्माः शिन्मुशाः विरमायन त्रिःश्रासिव तिकारकार्य मूथमुनाः ॥ उरमदादक

म् अनु थे जायान विकि स्**उ** । अन म्रालि পूर्ववयान मणि थावादि निर्गयः ॥ विष्मव कत्राताहायः भ-विनाहार्ख मिष्डः। उत्पव हिनिः শ্চরণ: পীঠ্যান মিতি স্বৃত**ং**।। তস্য ভেদে৷ দ্বিধা দণ্ড বকাবক भुजिरकः। मानारिकः भूर्वजूनाः मिणाणि यानानि विविधानि ह। मामान्यार्थान कानीयाट मिल्ल-जि निर्मिठानि देव्।। मताङ्बद्ध[ः] লমুতা দৃঢ়তেতি গুণত্রমণ। প্রোক্ত॰ দ্বিপদ যানানা সহজ ভোজ তু-जूबा ॥ इंजि मामान्य विभएगान-कथन•। ইতি गुक्तिकन्नु छकः॥ 🕸 ॥ विश्निष विश्वनयान्छ ठजुर्माल्य-क् निञ्चन्यात्नाष्ट्रमञ्ज्ञत्नोकामास्य मुश्चेवाः ॥

क्षण स्थानमा ॥ मूकिन्छ गहारख्य यानभावः ही निम्नरगानितामाः।

कालानः भर्गारख्य नातम् क्रमा क्षण विकास क्षण क्षण स्थानमा विकास क्षण क्षण स्थानमा विकास क्षण क्षण क्षण स्थानमा विकास क्षण विकास । व्याप्त क्षण विकास । यानम्थः ही त्रथापः भूतानः।।

कालाः नात्रकाभः। मूकिन्छ गहारख्य व्याप्त क्षण विकास विकास ।

कालाः नात्रकाभः। व्याप्त क्षण विकास । यानम्थः ही त्रथापः भूतानः।।

कालाः नात्रकाभः। व्याप्त क्षण विकास । यानम्थः ही त्रथापः भूतानः।।

कालाः नात्रकाभः। व्याप्त क्षण विकास । यानम्थः ही त्रथापः भूतानः।।

कालाः नात्रकाभः।।

कालाः विकास विकास । व्याप्त व्याप्त

যাপ্তা জ্রী জটা ইতি ভূরিপুযোগ: व्यथमः । निन्मिजः याभाः इंडामद्रः॥ याभनीयः। (कभनीय कानापिः। ইতি मिनी ॥ वरावि विष्णयः। यथाः। जास्त्र याण्या व नाभक्षण दर्भवय खिविषा / भृजाः ज्यमाष्ट्रः कडेमार्य्या विविधः न श्र উচ্যতে ॥ यान्य **नक्र**ग माङ् যাপনীযন্ত ত॰ বিদ্যাৎ ক্রিযা॰ ধা র্যতে হি তা । কিয়ায়ান্ড নিবৃত্তা याः जत्त्रा यक्त विनन्तर्राज्याः भा প্ত। ক্রিয়া ধার্যতি সুথিন যাপ নাত্র-। পুপতিষ্য দিবাগার- স্ত ন্ত্রে। যত্ত্বেন যোজিতঃ ॥ সাধ্যা যা প্যত্ত্ব নাবান্তি বাপ্যা কাসাব্য তা॰ তথা। মুন্তি প্রাণনিসাধ্যান্ত নর।ণ। ম্ক্রিয়াবতা ।। অক্রিয়াব-তা চিকিৎসা ব্লিতানা। ইতি ভাবপুকাশ: ॥

খাপ্যয়ান ক্লী শিবিকা।মহাপায়া ইতি ভাষা। ইত্যনরঃ।।

याङ क्री मिथन । यथा। वृषायत्या र्याछ शर्थ मन । इंडि विश्वनार (वान्नाप्त्वः ॥

यानः श्र॰ दिवादाख्राण्डवर्य बोर्ग्रक वाना वाँ श्र॰ कामा वा। पूरिवृः भिडः ভাগ:। তৎপর্বাম:। পুক্র:২। **ইত। प्रदाश क्या शही जारियो ।**

॥ योगर्यायः भू॰ ज्ुष्टः। है कि भव गना॥

यामधाया खी यव्यविष्णयः। घडी हैं जिया। उट्मर्यायः। नाली २ वर्षी ७ यामनानी ८ यस्वका ६ শুওচক্কা ৬। ইতি ত্রিকাওশেব:।। যামৰালী জী যামঘোষা।ইঙি ত্রিকাণ্ড:শধঃ ॥

यामरनिमः भू॰ हेन्द्रः। हेडि विकाल-(मयः॥

यामन॰ क्री युगनः। ইভি হেন্দ্র ।। তত্রশাস্ত্রবিশেষঃ । তস্য লক্ষণ यथा। সৃষ্টিण জ্যোতিষাথ্যান• নিত্য কৃত্য পুরীপন । ক্রমসূত্র বর্ণ ভেদে। জাভিভেদ ভথৈব চ।। যুগ थ्याक मन्यारिश यामनमाष्ट्रे व-क्रा । उबु विश्विश आदियामनः > तुक्रयामनः २ विकृयाननः ७ सप्-यानन 8 गलनयामन द जापित `ভাষামল• ৬। ইতি বারাহীভূম• ॥ এবা॰ শ্লোক সংখ্যা ভক্তশব্দে <u> मु</u>ष्टेब्रा ॥

शाधवानी ন্ত্রী বাবি:। ইতি রাজ-निंदिष्टः ॥

। इंडानबढ़ीका भवत्रावनो हा। बागाञ विक ज्वादः उमा शृहर

খাসিক

ভিষ্ডত্তু ॥

বামার্জ कन्यामाञ्च को दिख जननार शाक् क्रिक निरम्भक यथा । कामरथ-নাবাদিত্যপুরাণ বিফু খামাজ व- मत्तु जम्र मनुरः न कः वर्षः । व्यभुकायास कन्यायाः मान्नीयास् मऽरिव गृरह् ॥ इन्। बाह्य इन्। ॥ यामार्षः ज्ञी शुरुवन्यार्षः। उन्या-धिशा यथा। वाद्यणाम्क्यामम् ্ক্লাত্ৰ্য়ে: পঞ্চ ষট্ ক্ৰমাৎ। অধি-পাঃ সুঃ পুঁহা স্তত্ত্ৰ যথাকাছে ভবস্তি হি ৷৷ র বিজ্যেন্দ্ ভ্ও ক্ষাত্র শনি क्छ त्रवरमा निमि। तवि भूक क्छ রাত্রীশ শনীজ্য হরে ভাকরা:॥ দিনে জৃজাঃ পরেয়েব• ভত্রাধ্য**ক্ষা**-শত্যু হাঃ গোপদণ্ডে ভ্ৰেদুষ্টিঃ णुजराख मुज जार ॥ मुजगुर-স্য দণ্ডেত্ কর্মারস্তাচ্বত ভবেৎ।

আরম্ভাৎ পাপদণ্ডে তু কর্ম নিয়

ज्ञा• वुरह्नथा यम्यार्क्ष याम खरेम्य

व भाराखः अमुराइजः। २६ वर्ष

পরীত্য দণ্ডাশ্চ ত্রয়ে রাত্রৌ মতা

खया।। यामार्काविभ मःच्याउा

षिठीगस उपधंजः। छप्टांबु ज्

छीयमऽ।खम्ब्बाख् ज्रीयकः ॥ व्या

ন্ধাভাবে ত্রাহু: স্যান্তদক্ষো বসু

সংখ্যক:। ভগ্নাঙ্কস্য পরিত্যাগ্য

फिराम आधित्रा यथा।। इंजि क्या-

याभिः जी समा। वनजी। इंडा-মর:।। শ্বসা ভগিনী। স্বলন্ত্রী স্বল-বধু: । পুছুৱে সংখ্যে যামে৷ যামিঃ ৰণ্ কলজিফো রিত্যন্ত্যস্পদৌ স্ব-ভদঃ ্যা ক্লিকান্ত ফটিলে নিন্দ্রে জাক্ষি স্বল্ স্কলব্রিয়ো রিভি চবর্গ ত্ গীবাদাবজন ইতি ভরত মূজটৌ ॥ यथा। कान्या यानि रगङ्गनि শপস্থ্যপুতিপুজিসা: । ইতি স্বামী । कि क्या वाङ्चकान्धिः। यदा कमू चम्रत वाङ्लकामिण् कानि রিভি। অন্ত্যন্থাদৌ যা প্রাপণে ধা-ভূর্বোধ্য:। ইতি রানাশুম:।। 🗱।। यामिनी। इंडि भफ्तक्षेत्रकी ॥ ६-র্মদ্যপত্নী। তস্যা: কন্যা নাগবীথী । यथा। अरूक्डी वम् वीमि लीय। ভान संकड्छी। मक्त्रा ह स्ट्रें। ह गाया विश्वा ह नागुडः ॥ अर्घान-ব্যোদশ ত্বেতা স্তাম্বপত্যানি মে मृत्। वद्याचा टेक्टव (घारषः) १८नो নাগবীথী তু যামিজা।। ইতি বহি भूतात कन्डिशीय भूकामर्गः॥ यागिकछहेः भू॰ भुरुतिकः। हो ही-मात्र इंडि ভाषा। यथा। উनिसाः

भूम दिखि अञ्चलभगः भुल्छे मिद्य-

अल काल कागुनूमगु राभिक च्हे

याभिनी

পারন্ধ কোলাহলে। কর্ণস্যাসূহ্ मर्न वाष्ट्रवाष्ट्रवी वाङ्ग यम्बः भूत्रामाः যাতাসি যদমূজাক্ষি কৃতক মনেঃ ভয় গোষিতা ৷৷ ইতি পাচীনা: ৷৷ यामिज क्री विद्यादमधमदाणिः। यथा। श्रीक्षानः शक्षमः छ्वयः या-भिजः मधमः य्उः । मूतः मूतः **ख्याखाथाः यद्वानः त्रिभूमनित्तः** ॥ # ॥ याभि बदिरक्षा यथा। भा-भार मधप्रशः मणी यनि ভবেर भारभन यू का २थ वा यहनाण् वि-বৰ্জযেন্মুনি মতো দোষো ২প্যয়• कथ्राञ । याजायाः विभामा गृह्ह मुज्यसः क्लोदियु द्यारगान्हत्या ২পুগ্লাহে বিশ্বা বুতে চ মরণ म्लक भु कर्मा । इदि नम अजा কান্ত মৃগাঙ্কাৎ সপ্তমণ ত্যুত্তেৎ। বিৰাহ যাত্ৰা চ্ডাসু গৃহকৰ্ম পুৰে-শনে ॥ ইতি यामिजरवधः ॥ 🕸 ॥ অদ্য প্রতিপুসবো যথা। মূল ত্রি-कांग निक मिनद्रागा २० भूर्गा निवक्तं भोग्रगृहरगा १थ उतीकि তোবা। যামিত্রবেধ বিহ্নিতানপজ্-उऽদোষান্ দোষাকর: সুখ্মনেক –শিষ্ণবিধ্বন্ত ॥ ইতি জ্যোতিস্তন্ত্বুণ। ।भिनी जी दाबिः।। इदिमा। ইउ मद्रः ॥

यागाव याभिनीन्जिः भू हमूतः। 🕦 🗷 त्रज्ञावनी ॥ कर्न तः। इंडीमहरू॥ याभी जी पिक्पिक्। इंडिवाङः निर्यण्डः॥ व्यवजी। इति व्यवजी वनी ।। যামুন প্লী শ্রোতোহঃ বং ৷ ইড্য ग्रः॥ यगुनामप्रक्षिनि 🕮 🕦 यामूरनञ्जर क्री भीभक र िक अहें। थ्यः ।। यास्मयः भू जागित्यः रथा याभिः त्रम् अलिख्या 🦥 उन्ना ननाए याम ब ना । विषय (क्ष পুত্য্য নিম্নন্ধ:।। यामाः भुः जगन्धाम् निः ॥ हनान वृक्तः। इंजि (मिनी।। যাম্যা জ্রী দক্ষিণদিক্ ভর্ণী-नक्षवः। इंजि (मिनी।। याम्रायन क्ली मिक्किगायन । यथा याम्यायत इत्री मूख मर्बकणानि বৰ্জ্জবৈ**। ইতি মলমাসত**্ত্বণ । याम्याक्तः भू श्रीजानवृष्णः। ইতি ब्राक्रनिर्घण्डः॥ यागय्कः भू भूनःभूनर्यात्रकः उट्भर्यायः । इक्रामीनः 🗧 ! ইভ্যমর:।। गायावतः भुः अश्रस्थीर श्रः। ইতি कोषतः ॥ कत्रद्भकाकः ः। ইতি

किंगिषतः ॥ कत्रद्भकाकः ः। ইতি

विकाश्रमयः ॥ भूनः भूमर्गमनणी-वक्षम् म्था । यायावद्राः भूद्रकालन हिर्मित्र भागहू वर्ष्ट्रा क्षणपहनीयः । इंडि ভर्णिः ॥

ावः भू चलकः। इंडामतः॥ ावकः भू• बन्मानः। इंडामदः॥ দ্বে বোরো ধানের। স্বল্থ ইত্যনের ।। নাষাকৃতি পত্তে কাশ্মীরেষু তু ্লসীতি খ্যাতে। ইতি স্ভূতিঃ ॥ 👊 িষ্ব ইব গুণেন ইতি য্বক: বিকার म'रविक कः। यवक এव यावकः স্বার্থে ষ:। স্থলেন মৃস্যুতি পরিণ মতি সন্মাস: মসীর্য ঈ পরিমাণে পরীণামে धঞ ননীষাদিত্বাদলুক্। बन्मात्मा पञ्चामकात्रवान् मुर्कान्य र কার বা॰ চ। স্ল্যাসো রভসম্চে তি দন্ত্যান্তে রক্ষিত ইতি মধু: ॥ সন্মাযোষাৰকে পু•সি কাঞ্জিকে তু নপু সক নিতি মূর্জন্যান্তে রভদ:। ইভি ভরত:।। যবক: স্যান্ত্র সন্মা-यः बन्यारम। यातरका २भि छ । বোরবাথ্যে यश्चिकে वा अल्पा का-भीत (मणका। मानिशान)युष्ठ-ত্বার ইতি কেচিৎ পুচক্ষতে। ইতি **भ**दतज्ञावली ॥ #॥ यावान । हेजि (र्भव्युः। यनक्वः। ইতি भयः ब्रङ्गावनी ॥

यावक्तीव ही यावनायः। कीवनभर्यः ष्ठः। यथा। याकुक्कीव मरुः भोनी বুন্ধচারী চমে পিতা। মাতা চ মম বন্ধ্যাসীদপুপ্রশ্চ পিতা মম।। ইতি वाइड नद्दीकायाः ভরত:॥ नाकनार ॥ व्यविशः॥ यावट वड मानः ॥ व्यवधात्रमः । इंडामदः ॥ नाकंत्ना निव्रवानाय। यथा। याद-फ्रड॰ जावम्जूरहु॥ व्यवस्थी मर्यऽ।-मायाः। म्लाट नाथाः यावट भूका-७: ॥ मानः भुमानः । यावम्गृङानि তাবন্দিকব:।। অবধারণ নিযভা-পরিছেদ:। ইযতো ভাব ইযত্তা প রিমাণ ভদ্য পরিছেদে। নিশ্চয:। যথা যাবৎ পাত্ৰ• ভাবল্ৰাহ্মণানা-मञ्जयम् ॥ यावट काः त्र १वधात्रत भूभे भाषा श्रीतहरू मानाविका-র সমুনে পক্ষান্তরে চেতি নেদিনিঃ । ইতি ভরত:।। यদ্ শব্দাৎ নিপা-তনাশ্বতু পুত্যয় নিষ্কলে ত্রি। তত্র यावान् यावजी यावट इंजि क्रभ ৰয় ভবভি। ইতি ভদ্ধিতপাদে (वानारमवः।। যাবতিথ: বি যাবৎপরিমাণ । ইতি मुख्यवाषवज्ञाकद्रनः ॥ यावनः भू भिङ्गाथाशक्षमुवाः। इछः भन्नः ॥

यानगणनः शृ भंतरहरः। का हत्र नो इंडि हिन्दी हारा। उट-श्यागः। नद्दी झः २ एए दुक् २ वा-तिमञ्जाः ३ वादनाणनि हः ৫ धन श्रद्धः। यग्र म्न ख्वाः। स्वम धूत्रद्धः। यह्यद्धः। भोजद्धः। शिख ज्वा नामिद्धः। श्रम्भाववनशूद्धः थः। इंडि जाकनिर्यक्षः॥

यावनानी जी यावनानमकंता। उट श्रायः। हिरमाद शक्ता २ हिमानी ० हिनमकंता ८ क्षु पुमकंत्रका ६ क्षु पाठ शंड छ। १ क्षाविना ६ । १ या श्रा ख्याः। शोगाउद्देश । श्रिक्त देश या विशिह्न व्या भ्राप्त भारत्रक्ष । क्राउद्देश । श्रिक्त प्राप्ति व्या हिल्ल १ हिल्ल

भावा॥

यावमः ' भू" यवममः हः। हिन्दिनकास्रकोगृशी॥

यावा कि निर्मार्शयः। यूग्रक रहाः

देवि मूक्षवादवाकत्रगः॥

यात्माद्यत्रः भूः भाकाम् विभू कर्णः

देवि हमहन्मुः॥

याश्चोकः भूः यश्चित्रातियाः दः

रोता देवि ভाषा। छह्यातः

यामः १९ पुताल छ।। ইত্যাল यामा खो सरनमलाकाशक्षीः है हि मस्माला॥

যুল নিশ্বে।। অনিশ্বে। ইতি
কবিকল্পন: ।। ল যৌতি। নিশ্বে

যথা। যৌতি কালে জলপ্রীভিঃ
ক্ষত্রসন্তান বৃদ্ধ্যে। ইতি হলাযুধঃ
।। অনিশ্বে সনবাযলক্ষ্যে। ভারুত
সিদ্ধানা নিতি নিলিত সিদ্ধানা
নিত্যর্থঃ। ইতি দুর্গাদাস: ।।

যু এগ বন্ধে। ইতি কবিকল্পন্তা
এগ যনাতি যৌবয়স্থো হলি ন-

ঞ গ যুনাতি যোবৰস্থে। ২পি ন-বেশ্যা বন্ধ দীজনৈ রিতি হলাযুগঃ। ইতি দর্গাদানঃ।।

বুজি
ব্যাকর্ণির যুগ্য । ইতি শবর্মা: ॥ १क् र, 🐬 🤼 युज क ए नित्न इंडा পাছে বে । পুপুত্যুযেন নিয়ম।। ्रागुः। उडुन्रायाग्ड ^{দুর্}। ४। ই**ভ্যমরঃ।। অপ্থ**গ্ভূত• িল প্তমিত্যৰ্থ:। ইতিমেদিনী॥ ्य े एक ज्लुष्टेय । इंडिस्मिमी॥ শভ্যন্তবোগঃ যেথা। 📖 ু দ্বিধঃ প্রোক্তো যুক যুক্ষা ভেল্ডঃ। যুক্তন্য **সর্**দা-ভাৰ চিল সহ ক্তো হপরঃ॥ ইতি জ্ঞানশাস্ত্ৰ•॥ ्करमा औ बाद्या । केंग्रियान क्ली ইতি ভাষা। ইত্যনরভরতৌ।। युका जी वृष्टविष्मयः। এवानी देखि ভাষা। ইতি রত্নালা।। युक्तिः क्षी नुग्रयः। ইতি मिरिनी ॥ লোকত্যবহার: া ইতি ব্যব**হার**-নাত্ 🌯 !৷ ধর্মশান্ত বিরোধে তু যুক্তি দুক্লে বিধিঃ মৃতঃ। ইতি मृक्तिण्यः । जन्मानः । यथा। युक्ति श्रुशानवान् मानायान मानाया । वृक्तित्। मः। अनुमारनन विरद्धिः ন্দা জং প্রসাক্ষিণী। ইতে वा राज्ञातिक विवयगः॥ जाथग् धनामधा उन्हाराखा श्रीता

যঃ শত্রপাণিচ ঘাতকঃ। কেশা किन गृशेजण गृगुभए भाद्रमा-विकः ॥ मजानभागि विस्कृतः সেতৃভেত্তা সমীপগঃ। তথা দঠা-त्रश्यक वनरहन्न। **প्कीर्निङः ॥** भुउनक हिरेक् विरक्तरया मखना-क्या क्वतः। श्रमाकि भुजाया-ছেতে পাৰুষ্যে তু পরীক্ষণ ॥ পুত্रक हिरेश क्षित्राक थन्नामिः ভিঃ। পাক্ষ্যে বাক্পাক্ষ্যে। भद्यः। लाश्च श्खम्म होत्रे इंडि। নারদঃ। অভীক্ষ দিশ্যমানো হপি পুতিহ্ন্যায় তত্বচ:। ত্রি চতুঃ পঞ্-ক্ত্বো বা পরত্যে হর্থণ তমাবছেৎ । যদা ধনিকেনাধ্মণিক জি: চতঃ भक्षकृत्वा वा वः भ वानः श्वाहय मी-**ि भूनःभून मिमानाता शीन न** তদাক্য পুতিহন্তি তদোত্তরকাল ননেনাভ্যুপগতো হ্যমর্থ ইত্যব: उनर्थ मृशिकाय माभायिषि-ঃ॥ ইতি ব্যবহারতত্ত্ব।। #॥ ग्रानकात्रविष्णयः। छम्। वक्-। यथा। युक्ति त्रथीवशात्र । उपाञ्जल यथा। यपि नमज मना-ন্য নাস্তি মৃত্যো ভঁব নিতি যুক্ত মিতো হন্যত: পুষাত । অথ মরণ নবশ্য মেব জভোঃ কিমিতি মুধা

নলিন যশং জ্বধু ।। ইতি বেণী ।।
সংহার: । ইতি সাহিত্যদর্পণ ।।
যুগ ই বর্জনে । ইতি কবিকল্লজন: ।।
অন্ত্যস্থাদি: । ই যুস্যতে । ইতি
দুর্গাদাস: ।।

यूग॰ क्ली यूग्पः॥ क् जानिकालहजूहे-यः॥ वृद्धिनास्मीयवः॥ इस्त इनुकः । इंडि (मिनी।। (एवानाः हाम्भ সহসূবৎসরেণ চতুর্গণ ভবতি। নন্ব্যমানেন চতুর্গ পরিমাণ বি•শতি সহস্যাধিক তিচত্বারি• শল্লক । তত্ৰ সভ্যযুগস্য মান । ১৭২৮০০০ বর্ষা: 1 ভেতাযুগস্য >२৯७०० वर्षाः । द्यानत्रगुगनऽ ৮৬৪০০০ বর্ষা: ৷ কলিযুগস্য ৪ ৩২০০০ বর্ষা:। ইতি 🕮 ভাগবত-নত ।। তেষা ভারতবর্ষবর্ভিত্ব বিবরণঞ্চ যথা। চত্ত্বারি ভারতে दर्स्य गूगानि श्रवस्या २ तुतन्। कृष्ठ•ी ত্রেভা দ্বাপরঞ্চ কলিস্চেতি চতুর্থ-গ ।। পূর্ব কৃত্যুগ নাম উত্ত স্ক্রেভা বিধীয়তে। দ্বাপরঞ্ কলি-रैक्टव यूगानि পরিকল্পযন্।। চত্ত্বা-र्ग्याहः महमुानि वर्षानास क्उ॰ যুগ । তস্য তাবৎ শতী সন্ধ্য সন্ধ্যা শশ্চ তথা বিধ:।। ইতরেষু नम्बार्य नमक्रां भ्यू व विष्।

একাপায়েন বৰ্ত্তন্ত সহস্যুণি শভা-নি চ।। তেতা॰ ত্রীণি সহস্থাণি যুগ স'খ্যাবিদে। বিদু:। তস্যাপি ত্রিশ-**ो मक्ता नक्ताः मः नक्कारा नमः ॥** দ্বে সহসেু দ্বাপরে তু সন্ধ্যাণশৌ তু চতু:শতে। সহসুমেক বর্ষাণা দি वा करनी भूकी खिंठ ।। एवं भएउ ह उथात्तर रेव मः খरा उक्ष मनीविज्ञिः । এব। দ্বাদশ সাহসূী যুগ সংখ্যা তু স•জ্ঞিতা।। কৃত• ত্রেতা দ্বাপরঞ্জ ক-লিশ্চেতি চতুযু গং। তত্র সম্বংক্ষর 🟗 **ज्हा बान्या छाबिरवायछ ॥ हजा-**রি শত্তথা ত্রীণি কৃত যুগ মথোচ্য তে। বি**শভিশ্চ সহ**সুাণি কালো-ছেষ চতুৰ্গ: ।। পৃথক্বেনেছ ব-ক্ষ্যানি যুগানি তু নিবোধত। নিযু-जानि नम (व ठ शक रेठवाव मः भरे যা ৷৷ অষ্টাবি**·শ সহ**সু1ণি কৃত• যুগ নথোচ্যতে । অযুতন্ত তথা পূর্ণ-ছে চানের নিযুতে পুন: ।৷ ষট্ত্রিংশ চ সহসু।ণি সংখ্যাতানি তু সংখ্যবা । ত্রেতা যুগস্য সংখ্যৈষা মানুষেণ তু कीर्बिजा।। यक्षी भ उनस्मागि वर्षा-ণা মান্যাণি ভু। চতু:यष्टि সহসূণি বর্ঘাণা॰ দ্বাপর॰ যুগ॰।। চত্ত্বারি नि-যুতানিসুর বঁধাণান্ত চতুর্পণ। দ্বাবি-শছ তেথান্যানি সহসাণি তু সংখ্যা

॥ अर्जुर के नियुगः (भाकः मान्यग भुन्तिः। এवा हजूर्गावस् मान् (यन भुकी खिंडा।। हज़्रू नमा माथा তা সন্ধ্যা সন্ধ্যা শকেন চ। এবা চত্ত্বুগাথ্যা তু সাধিকা ত্বেকসপ্ত-তি:।। কৃত বেতাদি যুক্তা সামনো-রম্বর মৃচ্যতে। ইতি মাৎস্যে ১১৮ काब्रायः ॥ 🚓 ॥ यूगवर्षा यथा । ্ধুনে পর কৃত্যুগে বেতাষা জ্ঞান মধুর:। দ্বাপারে বক্ত মেবাহ मान भिकः करनी यूर्ण ॥ तुन्ना कृष्ठ যুগে দেব ক্সেতাঘা ভগবান্ রবি: ১ बाभाव रिवजः विकः करको कर्षा गरम्बदः ॥ वुका विकृ ख्या न्र्रः সৰ্ব এব কলিম্বপি। প্ৰগ্ৰেডগ-वानुमु म्हजूर्वि निनादश्क् ॥ व्याप्तरुक्त यूरंग वर्ष कतुन्नामः न-নাতন:। ত্রেভাযুগে ত্রিপাদ: স্যা **ष्ट्रि**शामा हाशद श्रिजः ॥ विशाम **হীন স্তিব্যে তু সন্তামাত্ত্রেণ**,তি**ঠতি**। ইতি কুর্মপুরাণে যুগধর্ম কীর্ত্তন নাম २७ व्यथायः ॥ 🗱 । यगावकाता यथा । क्उ यान भन्न उद्योग किलिनानि सक्त ज्रा । प्राठि महक्तावा। मः विज् ३ हिए इ द ।। इ इ व ि व ब राम । जिल्लामा निश्च न भूकृः। मूडाना॰ निगुरः स्वा भित्रभाष्ठि बगध्यः

॥ (वरमकः ठजुर्जनः कृषा मारा निक विं छू:। करता कि वह म॰ ज्या (वस्वराम सक्निष्क्।। (वना ख हा-পরে ব্যুস্য কলে রিস্তে পুন হরি: l किन सक्ती मूर् जाकार्ण ज्ञानगिङ भुज्ः॥ এव भिषे कगर गर्वः भित्रभा-তি করোতি চ। হন্তি চান্যেম্বনন্তাত্মা नारु/माम्। जित्रिक य८ ॥ ই कि विकू भूत्रात ३ जः म २ जश्रायः ॥ #॥ युगधर्माखद्र॰ यथा। क्रिमिनि क्वाह । करनो यूर्ग महाजान ममायाउ मूराक्षा । ভবিষ্যप्ति बनाः मर्ख कीम्मा उद्यस्य (म।। ब्राम छेवाछ। আদ্যে সভ্যযুগ পাল্ ন্তভ ক্ষেতা-স্বয় যুগ। তভক দ্বাপর বিপু किन भस्ताः विदू वृं थाः ॥ कृष्ठ धर्म भारत्रातः अवध्यात्रात्रा सनाः। वर्गाः भुभावात्रत्रा खरमा युजमत्रायगाः ॥ नात्रायगार्हनभद्राः त्नाक व्यासि বিবর্জিতা: ৷ সত্যোক্তিভাবিণঃ अर्ख अम्या मीर्घजीवनः ॥ थन था-न्यापि मन्त्रमा हि॰मा एस विवर्ड्डि-তাঃ। পরোপকারিণ সৈচব সর্বশা-জ্ববিদ তথা ॥ এবিশ্বিধা: সত্যযুগে मर्ख (नाक) बिरकाउन । त्राकथर्य गुाहिनक ज्लाना बनलानिनः ॥ অহো সত্যুগস্যান্তি কঃ সংখ্যাতৃ

लगान् कनः। व्यवर्गाहद्रगः उब क-না: কেচিমনৱ (ত ।। 🗱।। তেতাযুগে সমাযাতে ধর্মা: পাদোনতা গতঃ । অল্লক্ষেশান্ধিতা লোকা: কেচিৎ **८क**िष्त्याभायाः ॥ विक्**रानद्र**ञा লোক। যজ্জদানপরাযণাঃ । বর্ণাশু মাচাররতা: সৃথিন: সৃহচেতস:া कवा ज्यिल्लाः मृताः नर्स वाका সেবিন:। ব্ৰাহ্মণাশ্চ মহাত্মানো বে-मर्विमाक्षभावणाः ॥ भुजिगुरु निवृ-ন্তাশ্চ সভ্যসন্ধা জিতেন্দ্রিযা:। ত-বপা বুতরতা নিত্যু দাতারো বিষ্ণু সেবিন: ।। কালব্বী তডিত্বাণ্চ জিয়ং সর্বাঃ পতিবুতা: 1 বসুন্ধরা চ শার্গাচ্যা পুতাশ্চ পিত্সেবিনঃ।। 🕸 ॥ ত্রেভাযুগস্যাবসানে দ্বাপরে যুগ আগতে। দ্বিপাদে। ভূতবান্ পর্যা: সুথ দু:খান্বিত। নরা:।। কেচিৎ কেচিৎ পাপরতাঃ কেচিদ্ধর্যরতা खया। (किंहिट किंहिट खेंग ही नाः কেচিৎ কেচিন্মহাগুণা: ॥ অভ্যস্ত দু:থিন: কেচিৎ কেচিচ্চাভিধনা স্ত থা। পুতিগুহে বান্ধণান্চ কদা-हि**८ व**र्तरं अश्हाः ॥ जूज्जा भ लाखन कराहिष्यभुष्ठ रू বিষ্ণুপ্জাপরা বিপ্রাঃ শূদাক 🕻 🗻 সেবিনঃ ৷৷ তদা বিষ্ণ ব্যাসক্রপী বেদ

তাগ চকার হ।। # 11 বলে গে: विर्**नुन् गर्वभारिकमान्त्र** कर পাদে৷ ২ভবন্ধর্ম: সর্বে 💎 প্রক্র बनाः ॥ द्राक्षणाः कवियः 🕬 🙃 **ण्**षुः भाभभद्रायमाः । 🐔 💯 🗟 বিহীনাশ্চ ভবিষ্যন্তি কলে 🚊 🦭 🛚 বিশ্বা বেদবিহীনাশ্চ প্রতিগুখ্পরা যণাঃ। অত্যন্তকামিনঃ আ ভারি याडि करनो गूर्णा। भद्राहरा नुस् নি**ত্ত্য॰ তপো বুতপরামুখ্য:। প**ি यश्चम् वृक्षाण ভविष्ठा करली যুগে।। বিভার্থ• ব্রাহ্মণাঃ কেচিম্মহ কপটথমিশ:। বল্গাধর। ভবিষ্যন্তি किंदिनाः भागुशात्रिनः ॥ कत्नो यूर्व ভবিষ্ঠান্ত ব্ৰাহ্মণা: শূদুধৰ্মিণ: ৷ শুদুৰণ্ড দীক্ষাগুরবো নিত্যং ব্রাহ্মণ **थर्मिंगः ॥ कलो याम्राप्ट ि**्सा উত্তম। অপি নীচতা । নীচ্চে ধন मन्ममा यामाञ्जूहभर भुन्छ।। भुः দাস্যন্ত্যুপকারিভ্যো দানানি লক **ল। জনঃঃ ।** যুজাদপি চ নেব্যন্তি বৃষ লা বিপু বৰ্ত্তৰ-।। নিত্ৰ স্থেন্ত্ৰদিৰ न नाक । क ता क न

ন্ত্রিকা**ভারে। ধর্ম**বুদ্ধিবিধাত ावक्ष ॥ **श्रद्धाक्ष्मिनस्काः** अनुसह ज•मूथ शिवुषवामिनः । शब हिस्टि-मका रेक्टंब सिथ्याव्हन खाँवनः ॥

श्वा । अकन मनमा विभ मृद्र कथा । विष्टु छिङ-मठा भूगा न किकि विकत छ-विष्ट । इंडि छ कथिङ मर्ब वाङ वाङ नाक्षा मछन ।। यह मुद्रा छिङ छादन नद्रा भाक मवाश्च याह ।। इंडि भाष्म कियायागमाद २६ अ-धायः।। क्षा जिम । क्छ धर्म क-छुन्नाह मछा नान छला ह्या। धर्म भाजा हिंदि । कु वर्ष महम्मानि नद्रा कीव छि वे छन्।। कु वाछ क्ष किये विष्टु।

विद् भूमुम्म बिजा विकिः ॥ भूतम्। পুণতি: পুলো বিশ্ব: ক্ষত্ৰ ক্ষান হ ॥ 🗱॥ व्यञायूर्ण फ़िलाक्सं: जञ्ड **मान म्याञ्चकई। नेद्रा यञ्जलद्रा ख**-মি• তথা ক্ষরোঁউব• জগৎ ৷৷ রক্তে৷ হরি ন রৈ: প্জেগ নরা দশ শতাযুব: । তত্র বিষ্ণু ভী সরথ: क्र ত্রিযোরাক-मानरन्॥ #॥ विभाइ वाभात वर्षः পীততাঞ্চাচ্যুতে গভে। চত্: শতাযু (वा (वाका वित्र कत्वाखद्राः शुद्राः ॥ उमा मृक्षान्नवृक्षी । विकृ वंतान बक्रभध्क्। छारक्छ यकुर्द्धर हजू-र्थ। विভन्न भूनः ॥ नियानशान-यामाम नामछ खान्निरवाश स्म । अ-एक नथ लोलखाः नामत्वस्य रेज-भिनिः॥ अथवीतः मूमलुख यज्रुर्वदः মহামুনি । বৈশস্পায়ন সংজ্ঞন্ত পু-রাণ স্তমেব চ।। অপ্তাদশ পুরা-ণানি যেযু বৈ হরি রেব হি। সর্গক পুতিসর্গন্চ বংশো মন্বন্তরাণি চা वः भानुहित्र उरिक्षव भूत्रागः भक्ष ल-क्षनः। दाक्षः भाग्नः रिक्षवक्ष रेणवः ভাগবত स्था। ভবিষ্য नात्र नीयक भूत्रानत्कि विखत्न ॥ मार्क(खय-তথাগ্নেয়• ব্ৰহ্মবৈবৰ্ত্ত দেব চ। কৌৰ্যা• गादमाः गाक्उक वाग्वीय नग्डतः ।। অপ্তাদশ সমূদিত বুকাও নিতি

অ জিত। অন্যানু পেপুরাণানি মু-निज्ः कथिजानिङ्ग जाम्। जन्द-क्रमाह्माङ न व्योष ह मथा शतः। ত্তीय कामत भूषिक्र मनाविश जू ভাষিত।।চতুর্থ निवधर्याथा मा ক্ষায়ন্দীশ ভাষিত। দুৰ্বাসসোক माण्डयं। नात्रामाक गठः भन्नः ॥ कानिन वात्रनीक्षव खेखावानमान ব্লিত। ৰুদ্ধান্ত বাৰণকাৰ কালি-কাহ্যয় মেব চ॥ মাহেশ্বর তথা শায়• সৌর সর্বার্থসক্ষ্য•। পরা-শরোক মপর• মারীচ• ভার্গবাহ্ব-य- ॥ भूत्रानः श्रयंनाञ्चक (तमा ज्य-क्रानि युज्युरन । नुरायः स्मीनक भी-**नाःत्रा जायूर्वनार्थमाञ्चकः।। गा**क्ष र्ज्ञण व्यूर्सिए। विष्णा श्रष्टाम्य गृजाः । ঘাপরান্তে স চ হরি ভূবে। ভার মপাহর ।। 🗱 ।। একপাদ স্থিতে ঋর্মে কৃষ্ণভাঞ্চাচুয়তে গতে। জনা .. खना मुद्राठाता ভविष्ठां ह निर्फ्याः া সভূ রজ স্তম ইতি দৃশ্যন্তে পুৰুষে छ्गाः । कालमक्षापिका एउ २भि भद्रिवर्डंड याजानि ॥ भुज्उक यना जङ्ग माना वृक्षीन्द्रियानि ह। **उ**द्या-কৃত বুগণ বিদ্যাদানে তপসি যদুতি: ॥ यम कर्मम् कार्यपृ मक्ति र्यमि ॥ দেহিনা । তদা বেতা র্লোব্ভি

ব্লিতি জানীহি শৌৰক।। यह खुमरखारियां नारना मरञ्जा 🕫 🤐 🥕 **সরঃ। কর্মণাঞ্চাপি কান্**যালে আগ **ब्रुडम्ड खबः॥ यमा जमा**न्छः उन्ही নিদা হিংসাদি সাধন ৷ পোঞ भाइ खय॰ रेपनाः न कविद्य उपा আৰ্তঃ।। যমিন্জনাঃ কানিলোপি भेषट कर्टूकडाविनः । एक्कि बनभरा (वराः भाषअपूरि 🔧 🧦 রাজানক পুজাভকাঃ শিত 🕬 পরা দিলা:। অবুতা বটবো ধশৌচা ভিক্ষৰক স্কটুম্বিন: ৷৷ ওপম্বিনো গুানবাসা ন্যাসিনো নিত্য খাজুপাঃ । ভুৰকাষা নহাহারা শ্চৌগ্র নাযোগ ৰসাহসা:॥ ত্যক্ষ ন্ত ভ্রাক প-তি॰ ভৃত্যু॰ ভত্তার এব চ । শ্ বুঃ भुडिगुशेषात्रि **उत्भा**विष्या বিনঃ ৷৷ উদ্বিশ্না শ্চানলকার 🕾 🏁 🕦 **চ সদৃশা: পূজা:। অস্নাত** ভোজনে নাগ্ন দেবভাতিথি পূজন ৮ ক বি याजि करको भारत नह शिरकामक किया। खीभद्राक्त खनाः मर्ख मृ भाषाक भौनक॥ वरुभुकान 🖘 গ্যাশ্চ ভবিষ্যম্ভি কলৌ ব্রিবঃ শি রঃ কণ্ডুগনপরা আজ্ঞাণ ভেংমণ্ডি নৎপতে:।। বিষ্ণু ন পুছানিষ্যন্তি পাৰ্ভোপহতা জনাঃ। কলে টেন্ট

নিবে বিপু অন্তি ফেকো নহান ও-পর• বুজেৎ। কৃতে যজ্যাশতো বি-ষ্ণু (ত্ৰতাযা যজভঃ ফল ।। দ্বা भारत भारत हार्यायाः करनी उद्धाति कीर्जनाथ। जमाक्छिया इति नि गाक्छ गुगवर्गाः २२१ व्यव्यागः ॥ मृगः भू त्रथङ्वाम् अर्। बायावि रें इंठि ভাষা। ইতি মেদিনী॥ युगकी नकः भू युगका क्षेत्र की नकः। জোবালেরথিল ইতি ভাবা। তৎ-পर्यप्रायः । भग्रा २ । ইত্যুদরः ॥ यूगक्षतः भू यखत्रथम् पूगकाक्षमामः জ্যতে তত্র। রথস্যাখা যত্র বৃধ্যন্তে তদ্মুগকাপ্ত তদ্মুগ ধরতি যুগন্ধর:। ইতি ভরতঃ।। তৎ পর্য্যায়ঃ। ক্রয়ঃ ২।ইত্যমরঃ॥পর্তবিশেবঃ।যথা । नियाया भाना वान् विस्त्रा एक मक् हि। यूगन्नतः। ইতি **শ**দ্র নাবলী।। यूगगर वा अकरा। अकवालीनः। इंड्राइबः ॥ यूगमः भ् कावितावर्कः। इंडि यूगाः मकः भ् वरमतः। इंडि হেমচনদু: ।। गूग्राপर्ণक्कमा এক ।। হারাবলী ॥ মুগবিভা জক ।। যুগপত্রকঃ পু• **ই**ज्यात्रः ॥

ত্রিকাও**শেষঃ**॥ गः ॥ कीर्डनारम्य क्कना गूर्कयकः । यूगमार्थगः भू अञ्चामार्थनाक्ष नार्चवाकारोः में भारिवाधानक इंडि ভाषा। इंट्र भग्रायः। भूष्ठ-वार् २। इंड्रायद्रेर 🗓 🗸 -युगन की युग्रा। ইডामदः॥ छा (वायः भूबाम भोनक।। इंडि यूगनमञ्जः भू वन्त्रीनाह स्पृशाहिक मजः। यथा। हेन इल्नुः भन्नमः वन्त्री नात्रायगाव्ययः। त्राकः खवा-পি বক্ষ্যামি পুপত্তি শরণাগতিত ।। দ্ববাৎ পরতর সক্র নান্তি স ত্যে বুবীনি তে। ছবাৎ পরতর ধর্মণ নাস্তিলোকেষু কিঞ্চন।। সর্স্বে-याः क्ष मञ्जागाः मास्य यूगल मः-জ্ঞক । মন্ত্ৰ হি সর্বতঃ শেু क्ष जभा मनुखम ।। मई छ। यूग-व नख कार्क भन्न जन । গুহাদ্গুহতম জাতু জ্বেশ তত্ত-मूनामरेकः॥ ইতিপাদ্মোত্তরখণ্ডে २৫ व्यथ्रायः ॥ युगवाथाः भुः वर्त्रग्कः। ইতি े द्राजनिर्दण्टः॥ यूग्मनामकण्ठ ॥ काविषात्रवृक्षः। यूगान्तः भू भूलयः। इं इलायू थः ।। युगत्मवन्ह ॥ যুগপ্ৰিকা জ্ৰী শিংশপাবৃক্ষঃ।ইতি যুগ্ম লী ছবং।যোডাইতি ভাষা।

खर भर्गायः। हम्म · २ यूगन · ७ यूग · 8 । इंडानद्रः 🖟 विजीय চजूर्थ वश्रक्षेम म्मम बार् त्र राणयः। यथा। क्रा २० (मोम्डिक् विष्या १ अना ह अला २ थ गूप्र शुर्वेषेभः नगणः। छत्र छित्र ष्ठाञ्चक नामस्वता (भवानस्या २ भी ক্র**্যাপ: পু**দিষ্টা: ॥ ইতি জ্যোতি-खडुः ॥ भिननः । यथा। यूगानि क्ठ ज्ञानि व्यात्रा व्यू ब्रक्त्याः। क्राम्न बारणी युका ठज्रमाशय श् र्शिमा ॥ शुक्तिनराभामावाना कि (थ्रा यून्मः महाक्तः। এउष्रुखः भशासात रिष्ठ भूगा भूताक् उ ॥ দ্বিতীয়াতৃতীয়য়ে শতুর্থ পঞ্চ (म्याः वृष्टीमक्षत्म्या ब्रह्मीनव्रम्या त्रकारमीबारत्मता कठूर्ममी (भी र्गमात्राः भुजिनस्मादाम्याया यू-ণ্য- মেলন-। তত্তত্তিথি মাত্র নি মিত্তকে কমণি মহাফল । এতৎ পুযোজনস্ত তিথিবিশেষ বিহিতে ক্মাণ ভিথিখগুবিশেষ নিয়মন । खिंख्या क्यानिदार जहार ভাবেনান্য তিথ্যনুপুবেশাদুপবা-जाम्याह्य । इंडि टिथ्यामि-

তভ় ॥ রুম্পন্ন: পু॰ ব্লকাঞ্নত্ক:।ইতি अद्भावा।। यूगवभाग क्री।।

যুণ্মপঞ্চি । জী শিশপাবৃদ্ধ। ইতি শব্দরত্বাবলী॥ युग्राभर्गः भू काविषात्रवृक्षः॥ म-खनर्कः। इंडि রাজনির্ঘট: ॥ यूग्रकनः खो इन्मुहिर्ভिष्ठी।। वृष्ठि-काषी। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ গন্ধি কা। ইতি রত্নমালা॥

তিথিখ ওবিশেষ महा एत १ वश् १ भक्षमी मधमी हिट्दिजादिना वि-**(मर्य): जाराङ्**वताशिखिए ग्र्ट. পাদুপবাসে পপি ন রাত্রি যুগ্মাদরঃ । ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব।। অস্য বিব-त्रनः यूग्राम्यस्य मुष्ठेवाः ॥

यूगारत्व को गुगा जिथिभ्काजा। यथा। जिनका वता भिनी या जुटेनव পূজ্যা সদা তিথি:। ন তত্র যুণ্মাদ-त्त**ा सम्राय रुद्रियामदाए ॥ इ**जि **डिथ्रा**म्डिब् ॥

यूगार की वाइन । यान । इंडामद्रः ॥ যুগ্য: পু॰ যুগবোচ।। ইত্যমর:।। (यागकछ।। (मननकडा। ইতি মুধ্ব:বাধব্যাকরণ ॥ যুর্গ পু॰ বণদহঃরজাতিবিশেষ:। সত্ গস্থাপু একন্যায়া (ব**ল্পারি**-

(१। काउ:। यथा। गक्राभू धनाऽ कग्रायाः वीर्याप विश्ववादिगः ।

वज्रवमधात्री ह भूत्या युक्री भूकी-র্ভিত:।।ইতি বুদ্ধবৈবর্জেবুশ্বথণ্ডণ। যুছ পুমাদে। ইতি কবিকল্পজন:॥ व्यष्टशाहिः शक्षमस्त्री । भुमाः দো eনবধানতা। যুছতি পাপেসা-धुः। ७४।वर्गाम्। मि त्रिजि त्रमानाः थः। भठारिजादिन भूहा वाक्षः। ওধ্যবর্গশেষাদি রিতি ত্রিলোচনঃ मूहि । ইতি দুর্গাদাসः ॥ युः कि मःयम् ॥ यूष्ठो । इंडि ः विकन्नक्रमः ॥ जारुङ्गाम् ।। कि যোজয়তি। যোজতি। সংখ্যো ব श्वनः। ইতি দুর্গাদাস: ॥ যুদ্ধ ইর ধঞ ঔ যুতৌ। ইতি কবি-कन्नकभः ॥ इत्र व्ययुद्धः व्ययोक्षीः । ४ यूनिक युर्द्ध घ्राजनामः लाकः। ঔ যোকা। ইতি দুর্গাদাস:॥ यूज य 🗟 ७ अभार्यो। इंडि कवि क्लुक्नः ॥ मनाधि (यीग्र) ভावः। য উ স্বযনুমা নিযুজ্যতে। ইতি হলা-. यूदः। उरिवाका। इंडि पूर्वानामः॥ যুজ ড ক নিন্দে। ইতি কবিকল্লজনঃ ।। ক উ যোজবতে। ইতি দুর্গাদাসঃ যুজান: পু॰ সারথি:। ইতি সংক্ষিপ্ত-नारत्रानामिन् जिः ॥ यूष्को श्र अधिनी समातो। इंडि जि का अःगयः॥ विज्यदिव्हनारश्चायः॥

युक्षानः भु गात्रभिः॥ विभुः। ইতি (मिनिनी ।) ভাবनामहकात्रामर्ब-छः। यथा। ∏ागरज्ञा दिविधः পোকে। যুক্ত নি'তেদত:। যু-ক্তম্য সর্বদা কিন্তাসহ ক্তো श्नतः ॥ इंडि जीवामेब्रिह्मः ॥ যুক্তস্যেতি যোগাভ্যাস্থ্রসূত্রা-বশীক্ত সমাধি সমাসাদৈতো বি-বিধ সিদ্ধিযুক্ত ইত্যুচ্যুতে অয়নেব বিশিষ্ট যোগবস্থাৎ যুক্ত ইত্যুচ্য-তে। সর্বদেতি চিম্বাসহকার বি-(नळार्थः। ज्ञानः मर्वविषयानाः शु-ত্যক্ষণ। অপরো যুক্তান:। বিষয वराव्डरा मानम ममाधिष्टः। व्यवस् যুজ্ঞান উচ্যতে । চিন্তা ধ্যান ত-দেব কারণ তৎসহকারাৎ স্থা সূক্ষ ব্যবহিত বিপুক্ষানর্থান্ মনঃ পুত্যক্ষীকরোভীত্যর্থ:।ইতি সি-জান্তম্কাবলী।। यूट, क्ली निन्ता। यु ड क नित्नत इंड्र-

यू श्री निम्ता। यु ड क नित्म हैंडऽश्री खाँ खाँ शुं अंदिन निष्ठमः ॥
यू खी यूकः। हेंडऽनतः ॥
यू अ ड मीछो। हेंडि किविक प्रक्रमः
॥ अ व्यापाउट। उत्पाउटि। हेंडि
मूर्गामानः ॥
यू उ॰ श्री हल्डिड्रेगः। हेंडित्निनी॥
यू उ॰ श्री हल्डिड्रेगः। हिंडित्निनी॥
यू उ॰ श्री हल्डिड्रेगः। स्न्थ्गल्डः।

इंड मिनी ॥

युडकः क्री नः गिराः ॥ यूगः ॥ नाती

युडकः क्री नः गिराः ॥ यूगः ॥ नाती

युडकः ॥ इंडि विश्वस्मित्ति ॥

रमेडीकत्र १० हिंडि ने मस्त द्वादली ॥

क्रीवस्र जिन्दे । इंडि स्मान्न ॥

नः स्मान्ता मूर्ना गुः ॥ इंडि नानार्थः ॥

वुद्धाला ॥

युष् अति युष्तः। ইভামরः॥ যুদ্ধ প্লী যোধন । লডাই ইতি ভाষা। তৎপর্য্যাयः। আযোধন॰ २ जन्यः ७ भूषनः ८ भूषिनाद्रगः ৫ मृथ•७ बाऋन्स्न• १ मन्थुऽ ৮**म**नी-क २ जाम्भद्राधिक > जनद >> ञानीकः १२ द्रगः १० कनरः १८ বিগুহঃ ১৫ সংপুহার: ১৬ অভি-ज्ञाङः ४१ कलिः ১৮ मःस्यारिः ৯ সাযুগ: ২০ অভ্যান্দর্য ২১ স नावाजः २२ मःशुामः २**० वा**जाः পনঃ ২৪ আছবঃ ২৫ সমুদায়ঃ ২৬ সণ্যৎ ২৭ সমিতিঃ ২৮ আজি:২৯ मिष्ट ७० यूट ७५। ইত্যমরः ॥ न•तावः ၁२ जानारुः ၁၁ मण्डाताः गकः ७३ विमातः ७६ मात्रगः ७५ मः য়িৎ ০ুণ সম্পরায়:০৮। ইতি শদ রত্বাবলী।। তীক্ষু: ৩৯ সম্বরীষ: ৪০ বলম ৪১ আনর্ত্ত: ৪২ অভিসুর:৪১

नगुन्यः ८८ । ইতি करीषदः ॥ 🕸 🛭 यूष्क वर्गनीयानि यथा। हम्मं ५ वर्ष २ वन ० हतः ८ श्राः ७ ज्रां प्रयनः ७ निः इनामः १ णवम् ७ व ৮ व्रक्त-निभी २ हिमह्यः २० तथः २२ हामतः ১২ হন্তী ১৩ অখঃ ১৪ কেতুঃ ১৫ বিদীৰ্ণসম্ভ ক্ষত্তিসম্ভানুকা ১৬ ব্যু-হরচনাবস্থিতসেনা ১৭ সুরপৃষ্ণার্-ষ্টিঃ ১৮। ইতি কবিকল্পনতা।। #।। অথ যুদ্ধ ফল•। অগ্নিষ্টোমাদিভি र्य छि दिश्वे। विश्व मिक्ति । म তৎফল মবাপ্নোতি সংগ্রানে যদবা-श्रुयाए। इंडि यख्डविमः भुाइ र्यङ कर्णविभावनाः। उचाउटा भूव-ক্যামি যৎফল শস্ত্রজীবিনা ।। 🕸 ।। युष्क मत्रन कल यथा। धर्मनाञा २र्थनाज्य यामाना उरेथत है। यः म्(द्रा वद्राट यूष्क विम्हन् भद्र-বাহিনী ।। যস্য ধর্মার্থ কামৌ চ যক্তকৈব সদক্ষিণঃ। পর হু ভি-মুথে হত্বা তযোঃ পন্থাধিরোহতি।। ্বিষ্ণোঃ স্থান নবাপ্মোতি এবং যুধ্য-ন্ রণাজিরে। অখনেধানবাপ্নোতি চতুর ত্তেন কর্মণা ॥ যস্ত শস্ত্র• স-मु ए मुक्र वीर्यावान् वाश्वि गृथि । সন্ম্থে৷ বর্ত্তে শ্রঃ স মর্গায় নিব-রতে ॥ রাজা বা রাজপ্থো বা

সেনাপতি রুথাপিবা। হতঃ ক্রেণ यः मृत उत्तर्भाताता २क्स्या धुतः ॥ ষাবন্তি তৃস্য গাত্রাণি ভিন্দন্তি **শত্র**-মাহবে। ভাৰতা লভতে লোকান্ সর্ব कामपूरका २क्कगान् ॥ वीत्रामनः वी-রশ্য্যা বীরস্থান ছিতি: স্থিরা। গ[্] ৰাৰ্থে ব্ৰাহ্মণস্যাৰ্থে গোস্বাম্যৰ্থে চ বে হত্য: ।৷ তে গছন্তানরস্থান য়ে-সুর: সুকৃতিন স্তথা। অভয়ো য: পর• रेमनाः ७११ भित्रक्षि ॥ भृष्ठ হিত: পাল্যতি সোপি গছ উ ত मुं जि॰। व्यनु छीर्ग खथा महाः श्रामा-ন্য স্তাজতে যুধি॥ হতক স্বপতে युष्म न वर्गाम निवर्ज्छ । म्रिङ् শৃঞ্জিভি ৰ্বাপি তথা শ্লৌছক্ষ তন্ধরৈঃ ।। স্বাম্যথে যে হতা রাজ স্তেষা श्वर्गा व मः भाः । भाद्याश्विता मूनिर्फ्र-**षः** चग्र्ह र हुर्रञ। यमि ॥ म•्ग्रा-**মান্মি্যতে** রাজ স্তস্য মর্গো **ন স•শ**-যঃ। ভবেন লজ্জ্যা বাপি স্নেছেন চ রণাজিরে ।। সমূখে। মূিষতে রাজু उपायर्गान मः गयः। यमु जिमीक् उ পাজ্রণ শর শ ক্তৃঃপ্টি ভোনরৈ: ।। দেব কন্যান্ত ত॰ বীর॰ রাম্যন্তি রন্ধি চ। বরাপ্সরঃ সহস্যাণি শুর মাবোধনে হত ।। ত্রিতান্যভিধানন্তি নম ভ র্ত্তা ভবেতি চ। যত্র তত্র হতঃ শ্রঃ

मजुङिः পরিবেপ্তिकः ॥ व्यक्षरान् मः ভতে লোকান্ ধ্ৰি ক্লীৰ ন ভাষতে । बिराउन मञ्जूष्ट कृती मृराउनानि ज्बाक्तनाः ॥ कृष्य विश्वः जिनि कारय কা চিন্তা মরণে রণের ত্তস্যাভি मूबङ्ग्र (य रैक्सका न निर्देशिनः ॥ इ.ज शाश्रामि विश्राविष्ट प्रमुद कन हि उ९। श्रामिक्शाउ भद्र-**ণানতে চ রাজ্ঞে। বিপত্তৌ দিজ সা-**र्थवाट ।। खी वान वृक्षाकन शागु-रू ह भक्र मुनीनाम् श शावनीय । याः यद्धः मःदिव खन्नमा ह विश्राः सरेर्गविता यव न देव नुवा छि।। कृत-ম তা মেব গতি৽ পুষান্তি মহাহবে याः जन् मःज्यात्रः। मर्वाः क (वः मान जूमक्ष्डि इत्निः जाः थ क खा-গঞ্চ বনে বিবাস।।। এতে গুণা এক-পদে পুবিষ্ঠা মহাহবে ৰাণ তনুণ সুণ-ত্যজেদ্য:। ইমাণ গিরণ বেছবিদঃ শুভাক্ষরা পুভাষিতা বৃত্রভিদা किरवोकमा ।। हम् मूर्थ यः स्रवाङ দৃঢ় মৃতি ৰ্হন্যতে হস্তি চসে। পি বৈ-রিণঃ। সদা পুণ্যতমঃ স্বর্গ্য: সুনজ্জঃ সরতো মুখ: ৷৷ সর্বেষা মের বণানা ক্ষত্রিয়স্য বিশেষতঃ। ভ্ৰ শৈচৰ তু **वक्क्ष्रांभि जनवर्षाः जना**खनः ॥ गामृ-नाय भूवर्खवाः याम्नः भन्निवर्जायः

। व्याकटाविन नावास मिन (वहा-स्वान विक्राः। विवान्त्रस्थः विवान्त्री-याम (उन क्ष्यंद्राः ज्यादः। (काहस्य मजनानिस मुद्दर्गः विकः यहि॥ सन्। जन्महा कायस्य रेग्स हरेन

े ब्रिश्वास ॥ वहः मः १४/न्भ-**ल्लु**ष्ठ काय यद्धि जनाज्यन । वित्रथ॰ বিগত ব্যস্থ বিবর্ণ বিমুখস্থিত। ।। यूका८भार्ठा रुवा वृक्षश कारए अतः। विषक्तः विश्वनुक्रकः जः खील। श्योजि वाहिन• ॥ वर्ष **मा**र्थ। মুতা তাত্ত হত্বাস বুক্কছা ভবেৎ । थन्। एडा न रहरत्। वाला वृत्का नशुःमकः ॥ छवादः भुवहः মূত্র শক্ৎক্তো হথ ভীরব:। जमारिकान् **পরিহ**রেছুরে। থর্ম कृ **ा॰ वत्रः ॥ नमार्ग्**यक्क कलङ्गीरन् स्वारमो वृक्षरा ७१व८ । नक्रास्त्रर नम्रेष्य येकः कव् मरे म् भाः॥ আতা দেহ পরিত্যাগ: কর্ কুক দেহ ভ্যক্তা রণাজিরে॥ ন শৃক্ষী রণ ভগানা পতে কুচিমহাপথা । স ्रगामं गुवारा वजीः कीर्जिः नार স্বৰ্গতি তথা ৷৷ ভগ্নসতে হপি নশ্য खि **महाम**ङ्गाचाहाद्गगाए। ङमाए

সভেগ্ন বৃৎ কিঞ্চিৎ ক্রিয়তে ভত্তত शुरः॥ यद्धः मानः वुद्धः वाशि ज्ञः-गुरम न्थ नखम। इंड्यारम् विश्-न्त्रात जन्गाम भूभ-मा॥ स॥ वाष युक्त निर्गयः। यजायुक्त धुनः नात्ना यूष्क बीविज मः मयः। जः कान म-क युक्त मा अवगंडि मनी विगः ॥ जा-(ज्यामरम विश्रीयार क्लांखा नाज्य বলে যদি। ব্যসনেচ পুহর্ত্ব্য শরে न जू विभर्य्य ।। ऋग ताड्डा न त्या-ষ্ব্য থেপি শজাজকোবিদঃ। মৃত্য যুদ্ধের দৃশ্যন্তে শক্তি চ্যু: শক্তিমত্ত-जाः ॥ ज्ञथगुष्तः मत्मत्मा विवास रुखिनक्तः। वाश्रयूकः भारतीतः। পত्তिगुष्कक मूर्गाम ॥ व्यक्तारा गर्ब-युकः नामाभायुकः जनश्रात । न· इंडर (याष्ट्यम्नरान् काम वि-खाद्रायदृष्ट्न ॥ স্তীনুথ मनीकः जतः দল্ল হি বহু ভিঃ সহ। অপি পঞ্চা-শতঃ সূরান্ নিমুন্তি পরবাহিনী ।। যেপি ৰা পঞ্বট্ সপ্ত সহিতা: কৃত निक्रयाः। अ।। अथ युकामन निर्गयः । जन्र हादा विशक्ष विश्रानन মুচ্যতে। অগ্নি॰ বিগৃহা বা ছান॰ বিগৃহাসনমুচ্যতে !! অরেশ্চ বিজি-গীখোল্চ বিগুছে হীযনানযোঃ । স-क्षाव यस्त्रष्टानः सकायामन मूठ्या

११ उमात्रीत मध्यम वा नमात शुन्ति भक्ष्या । এकी ज्य वावशांन ने अ যাসন মুচ্যতে।। সর্বেবাণ পুর্তিজ ननः निष्कत्राष्ट्रेगः लक्ष्यः। এउ८ श्रीज्ञामनः नाम जदामन मरुखदः श 🛊 ॥ व्यथ घन्म युक्तिः । द्राख्डा ब्रलः निष्ट् रलः धन्मु (भव वलः वलः। ष्मभान वलवान् द्राका शिदा धनम् वनाफादर ॥ उथाह । এक: শত॰ যোধ্যতি প্রাকারছো ধনূর্ধরঃ। শত॰ দশসহসাণি ভমাদুগণ বিশিষ্যতে II অক্ৰিম° ক্ৰিমঞ্চ তৎ পুৰ দি-विषे । योग्य म्हिं मृत्र গিরি নদ্যাদি সংশিতং॥ অকৃতিন भिनः (छः यः मृलङ्का भिन्नः जुज्काः। প্রাকার পরিখারণ্য সংশ্রুণ যক্ত-विष्टि ॥ कृषिम॰ नाम विष्ठिय॰ व-ह्यानहास देवित्रगाः। 🗱 🛚 व्यथाकृ बिभ इम्प्रु गुक्तिः। अञ्रह विखीर्ग भित्रा पूत्राद्वारुः जकाननः। ज छ-লাশ্য সম্ভার ভোজ্যদূব্য সমাশ্যঃ ॥ मूथिनः मद्राणा हमः भईजात्या मरीज्ञाः। नरम्। भजीत्र विखीनी শ্চতুর্দিক্ষু ব্যবস্থিতা: ॥ তন্মধ্যে ভূ-भुरम्रामा (या नहीं बन्तुः न उठ्या यरानाहित्र कालीन मूलङ्ग विशि-নাদিক ৷৷ তম্ধ্য রচিতা ভূনি দ্বন্দু-

(प्रांगि छिष्ठा । वनेतृम् निर्विथ्रा-उ॰ यथा शृब्ध महत्वत्र । मा कृतिम हम्द्र युक्ति यथा । येसिन्। कृतिम नालि नाम् । वा श्रहानुस्काः । उन्नः नालि नाम । यहान्यकाः । उन्नः नालः महीनानः कृति । वन्द्र नाब-(७८॥ निक तन्द्रा

द्राः भूर्व वाद्रयः। इन्दृत्वन स्मापि-क्षाः नित्रभा वङ् यापनः ॥ विनान শাল সুঘন বহুকটকৈ সন্ধটা। षन्तृत्वन जमाहिष्ठे विखीर्ग विषम वन-॥ व्यार्था वध्याताणि कन्त-त्रान्न खन·<u>भ</u>्दन्। हमृत्वन ममृद्रिक्षः न मूर्काञ्चा कि ज्जूबा ॥ नर्वाः भ-রিখা॰ কৃত্বা নিবন্ধোপরি কন্দরে॰। তজ্ঞল প্লুত দেশত্বাজ্ঞল দ্বন্ধ ত-দুচ্যতে ॥ এবামভাবে নিম্ন্য ভূপু-দেশন্য বন্ধনাৎ ৷ বর্ষা সূপগতে বা-**রি জগদন্দু॰ ততো ভ**বে**ং**॥ এত-যো রপি সংমিশাৎ সংমিশু দ্বন্দু মাচরেৎ। আশ্রিত্য কৃত্রিম•দ্দদৃ•ব-লবদৈরিণো দিশি॥ অন্যত্ত্র কৃত্রিম॰ षन्तृ॰ कृदा नद्रभाक विरामे । द्रथ-পতি यह। दिन्नी इन वन्तुः जहा हात्रद ॥ गजायनाथ (फरिब्री जनवन्तृ • उ माठात्र । गितिष्वनमुः नृगः (मरवर यम् अज्ञाहि विरक्षा दिशुः ॥ मर्द्वा हि विविरक्षा यूषः ममामानूभि निक्र १७।

अव ह ॥ इत्वास रेमनिकान् द्राक्ष পুকটে নিৰ্বিশ্বৰ । অপ্ত জ্ৰীকো-य मञ्जातः भ्राम्बिनिङ निष्मयः ॥ 🕸 ।। जुध-गिनिहाडाः खगाः । छथा-हि मेडिनाञ्चः। जन्दनाभगत्वः बन्द 📲 इस नहारक। अनाव दिन्त भाषित नजामृग् तक मानुराय 11 थनूर्चम्मु नशीष्ठनमु शितिष्ठम्मु छरेष ्वह । अनुष्ठावन्तृ जः जर्भः वनवन्तृकः **छानि यहे ॥ जात्म जू। न बन्दः बन्दः** निजाङ (याष्ट्रमः भुकी विंउ। । रशक् भूनाः हि यम्बूकः मृउकाय नग हि उ८ ॥ 🗱 ॥ व्यथान/वाशि । यावद भुमाग नगत हि ताछा। ততো ভবেদুত্তন মধ্যমান্ত্য ।। ত্রি--শজ্জল আই গুণোন্তরেণ ত্রিদেশজা-नाः भन्नभीभञ्जीनाः। भर्भसः। यहन्। ঘিবিপ দন্দ প্রোচ্যতে ধরণীভূজা• । তেভ্য এবাতিরিচ্যেত **মত্রধন্দৃ**• विष्णयकः ॥ जान्यु देनवान्तिसय अञ्चनन्त्राम्बरयम्भः। अञ्चन्नतम् वि ভিমে ছি ন চান্যৎ কার্য্য কারক• श यरेहव देवब्रिमूर्लङ्गः विखीर्नः वि যমঞ্চ তথাস পুরেশাপসরণ ত চন্দ্রা। দ্মুদ্ধ মুত্তমণ বিদুঃ।। ইতি যুক্তিকল্প বিদ্যানঃ।। ধনুঃ। ইতি **एकः**॥

युवा

युष्तत्रयः श्॰ कार्खिक्यः। है जिल्लाः **व्हिन्द्रश ।।** 🐃 🧻 🔠 💯 💯 युक्तमातः भू॰ याहेकः। इंडि मद-**जिस्**का ॥ Print Contract যুধ য ও ড যুদ্ধে। ইতি কৰিবল্পজন্ম: ।। य उ वृक्षात्छ । 😵 योषा । म॰. मुथिङ् उत्या र्वाचाः । मांग्यानिक-রীত্যা পরম্পরাভিভবেছা যুক্ত। यू४) एउ (याद्य: कमाहित्सकम् जरू ভাব বিৰক্ষাৰা ৰুধ্যতে বোধ: भारते । कराहिष्कनःनिभ युवारङ চৌর- রাজা হন্তীত্যর্থ:।যো ভক্ত 🍻 পিওন্য কৃতে সংধ্যদিতি অমা-জ্ঞাবে দ্বিপি ভটোড়ীতি ক্যে তণ करवाञीञ कञ्जानि इन् (कृ) वा माध्रः। ইতি দুর্গাদাসः॥ ক্ষবিयः। ইত্যুণাদি-(कारः॥

युधिकः जि याषा। युध नदा शिक পুত্যযেন নিয়মঃ ॥

युविधितः भ् भाखवताकः। म मधी गर्ज धर्याङ्काञः । उट्भर्यायः । অজাভশতঃ ২ শল্যারিঃ ৩ ধর্ম-পুত্ৰঃ ৪ অজমীচঃ ৫। ইতি হেম-**ठ नम**ः ।।

भित्नि। वापः। इज्रागितिकायः ॥

युवयो

যোদ্ধা। ইতি সিদ্ধান্তকৌর্দ্যা-मुनाहिवृक्तिः ॥ (भवमःगुनाः ॥ শরভঃ। ইভি সংক্ষিপ্তসারোণ্যদি वृद्धिः ॥

युषीयः जि याका। यूष्याटा दीय-**পু**ত্যযেন निष्ठमः॥

যুপ য ইর বিনোছে। ইতি কবিকল্ল-क्रमः ॥ वित्मारु वाञ्रनीकद्रगः । य युभाउ । इत्र व्ययभट व्यया शेट. । भूषाविद्यार ७ इंडारना। ইতি বুর্গাদাসঃ॥

म्युः 👦 🌣 व्यथः। इंडि इनायुशः॥ रूपूर्य्याः शुः कृषुराशः। इविभक् हिंद्या।

युग्धानः शृ जाजः किः। यथा रिण-नियस्त लियः निधा युग्धानणः जा ত্যকিঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ **रेन्द्रः ॥ क**िवयः। रे **ि ग**िक्छ भारत्रागापिवृद्धिः॥ याष्ट्रा ह ॥ যুবগঞ্জঃ পু॰ যূনোগগুস্থ বুণবিশেষঃ । ব যস্কোডা ইতি ভাৰা। যথা। यूवगाखा यवगखः महाट वयामारी-खाय हरा। इंडि नदद्र जावनी।। युवकः भू य्वा । मृदन् मद्याध कन् পুত্যযেन निञ्जनः ॥

यूवयानिः भू॰ यूवजीभिजिः। यथा ।

যুব জী

রিণ:। রামো যজ্জদুরে। হস্তি কাল कन्निनीग्थः एरेजि ७ छिः ॥ युविकः) की भार्धरयोह्नना। उद्भर्या। यूवजी रेयः। य्नी वे जबके द जन्ने व निक्की ७ धनिका १ धनीके b म-थामा र मृष्ठेतकाः २० मथा विका ३२ । इंडि मदत्र्वावनी ॥ देखती १२ वर्ग्रा २० । इंडि (इगव्यु: ॥ व যস্থ। ১৪। ইভি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ **७मऽ। लक्ष्मगिर यथा। आर्या** ७-; শা ভবেদ্বালা তৰুণী ত্ৰিংশতা ম-**छ।। न**क नकाम उः (भोषा वृद्धा ভবতি তৎপরে। ইতি কালীদা-স: ॥ বালা ত পুাণনা প্রোক্তা যুবতী প্রাণহারিণী। প্রোটা ক-রোতি বৃদ্ধত্ব বৃদ্ধা মরণ মাদিশেৎ ॥ निराय भन्नरमा बीला (भ्रोज বর্ষা বসন্তবোঃ।ছেন্তে শিশিরে (याग्रा न वृष्कः कृष्ति सम्बद्धः ॥ যোগ্যা যুবতী। ইতি রাজবল্পভ: ।। खीनामान्। यथा। नुमनाटि जि বিজ্ঞেণা যুবতিশ্চ তথা সৃতেতি ভাগুরি:। প্রাশ্নৌবনা যুবতি রিতি वाष्ट्रगायनः । इकानक्रीकानाः ভরত:॥ 🛊 ॥ হরিদু।। ইতি শব-ठिन्मिका ॥ यूवयानि र्वज्ञानि ज्भिष्ठः चित्रा- । य्वजिष्ठा जी वर्गय्थिका। ইতি রাজ-

युवनायः वृद्धिक भीयद्राक्षितः सः । न ह (१३ हो गः र्ड भूरमन किर्डा किर्मा हा यथा। उन्युक्त किर्मा किर्म किर्मा किर्म किर्मा किर्म किर्मा किर्मा किर्मा किर्मा किर्मा किर्मा किर्म किर्मा किर्मा किर्म क

যুবনাশ্বজঃ পু॰ নাস্কাত্রাজঃ।ইতি হেনচন্দুঃ।।

नाथ्रायः ॥

युक्ताकः ल् जिविक्कितिस्वः। उट् लग्नागः। निज्यः र सक्किनः १। इति जिकाश्रम्भाः। त्राक्कश्रमः। उद्देशयः। स्मातः र स्कृतिन कः ११३ स्त्रातः। युक्तावाता त्राका यूनाः वाद्राका युक्ताकः। नथ्रहाः त्राक्त हित्यः। स्मात्रयिक स्मान् दः। नग्रद्ध स्मात्रयिक स्मान् दः। नग्रद्ध स्मात्रयिक स्मान् रक्षे यन्। स्कृति मात्रकः शृदः स्वित्रकः। मात्रका स्मान्दक किन्। रिक्तिनानः। हिति स्त्रकः। यग्रम्

व्वा 'जि ' जक्यः ॥ (मुक्ठः ॥ निमर्गः विमानी । इंजि मिरिनी ॥ युवा मु (योवनाव हा विमान्धः । योवनाव हा विमान्धः । योवनाव हा विमान्धः । वेजि (कहित् ॥ (याजमवर्षात् निष्ठः । यथा । याजमवर्षात् निष्ठं वर्षात्रः । यथा । याजमवर्षात् निष्ठं वर्षात्रः । यथा । याजमवर्षात् वर्षात्रः । यथा । याजमाज्यात् । वर्षात्रः । वर्षात्रः । वर्षात्रः । वर्षात्रः । वर्षाः । वर्षः वर्षाः । वर्षः वर्षाः । वर्षः । वर्षः वर्षाः । वर्षः । वर्

ষে ভরনে। ইতি কবিকল্পজন: ॥ সৌত্রধাত্রধ । ধোবিৎ যুম্মদ্। ইতি দুর্গাদাস:॥

प्रम् निर्मान स्वास्तः। जमा विष्ट्र् विष्ट्रियु नमानि क्षाणि। यथा। प्राः ग्रान् २:०। प्राः २० य्वाः २: य्यान् २:०। प्राः २० य्वाञ्याः २: य्यान् २:०। प्राः २० य्वाञ्याः २: य्यान् २:०। प्राः १ प्राः १ य्याञ्याः १: य्याकः ४:०। प्राः १ य्याः १: य्याम् १:०। प्राः १ य्याः १: य्याम् १:०। प्राः व्याक्षाः १: य्याम् १:०। गृः जी य्यः। इंडि (इमहंमुः ॥

य्कः भूः मट्लाः। इंडि क्रि। प्रयः॥

य्का जी मट्लाः। यूकी इंडि डेला

हेडिह डावा। उट्शरंगयः। क्लाकींटः र (यह कः ० विह्न पः ॥ इंडि

प्राक्रिक्तिः॥ शाली ६ वालक्रिः

शहिः जी निज्यः। हेडि मुक्रावायः

व्याक्रवः॥

्थि क्री मात्र शिवनमृहः। ই ग्रुमदः॥ श्यनाथः श्रुप्त वन्तर क्षित्राः नित्र स्तर स्थितः। ज्यन्तर्यक्षायः। यूथनः २। इत्यदः॥

्यशः भ्ः व्यवगुरुखिना-भूभानः। **इंडिमद**ब्र्वावली॥

थ्जुष्टेः भृ• ग्था८भनाविज्रस्ती। इजिमदमाना॥

्षिका जी भागा इंडि ता जिन्दिंग् ।। यम्नानकः। इंडि मिहिनी।। भू में विष्णवः । यू इक्न इंडि जावा। जिल्लां । यू इक्न इंडि जावा। जिल्लां । या भी जाहित हम-भू मिश्रिका। इंडि जिका अल्लां ।। विश्वि । इंडि जिका अल्लां ।। विश्वि । विश्व । विश

ख्नाः । सामृद् । निनित्र प् । म कत्रार्खि निड प्रश् क्या नाना द प्राय ना निष्ध । इंकि ताल निर्ध हैः ॥ व्यनिष्ठ । यूथी यूग दिन । डिक । कहेनाक मत्र वयू । मधूत जूवत करिं। निख्य कि नित्रात्वाग विया-मुन्य प्रशक्ति नित्रात्वाग विया-भर । इंडि डाव भूका । ॥ यूथी खी यूथिका। इंडि मद्द व्यावनी यूथीनः भू यूथभः । इंडि मद्द-हिन्दिका ॥

ग्निः की यागः। निणुनः। ইঙি

সিদ্ধান্তকৌনুনী।।

गृनी जी यूवजी। ইঙি শদরকাবলী।।

यशः পু॰ क्री याक्किल गुवसनकारेः।

ইত্যমর:।। তস্যপরিমাণাদি র্যথা।

ম্তৌ। চতুর্হন্তো ভবেদ্যুপো যজ্জন সমুদ্ধর:। বজুল: শোভন:

তুল: কর্বাব্যে বৃষ মৌলিক: ।।
ভবিষ্যে। বিলুস্য বন্ধলনৈয়ৰ কলি যুগ: পুশস্যতে। ইঙি সামবেদিব্যেথ সুগতন্তু॰।।।

रृभः भु॰ जयसञ्चः ॥ यागसञ्चः ॥
इज्जामित्कायः ॥
यूभकष्ठकः भु॰ यद्धमभाश्चिम् इक॰ भणूवम्मान् प्रथ॰ यद्धज्यो यद्काश्वमा(द्राभाष्ठ न यूभः जमा जिन्न

वनगक् छ जंभककाक् छ वं यः काक्षेतिक विं गः। यूश्रम् निहिं छ लाइवनग्रेडि कि कि । इंडि । जंदा । जंदा श्री । हिंदी । जंदा । जंदा श्री । हिंदी । कि । जंदा । जंदा । ।

गृभकर्तः भू॰ गृरेभकरममः। उ९ भर्यक्षयः। घृडावनिः २। ইভি হেন हन्दुः॥

যুপদ: পু॰ খদিরবৃক্ষ:।ইতি ত্রিকা ওশেষ:॥

यूशक्यः भू॰ थिनत्रवृक्षः। ইতি भपः রত্নবিলী॥ রক্তথদিরः। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ॥

य्**भवकाः भुः भक्षी।**ইতি भक्षः भाषा॥

य्भागुः की य्भमागुं जागः। उट भगं ग्रायः। उर्घ २। इंडा प्रदाः।। य्व द्या इंडिक दिकल्लक्षः।। वर्ष स्द्री। य्विडि। इंडि पूर्गापामः।। य्वः भूः की यूगापिकाथत्रमः। इंडा भदः।। य्या १ खङ्गापिः। ठ्यगीपि (क्डि प्र्याः। इंडि ज्वाः।। क्षा।।। व्यथ यूगुं युग्धाः। यूगुं युग्धा १ पिपा इत्रः कृष्णानाः वृतिनामि। भर्था। देनाक भिडित्। ज्वाका ठ क्ञा कृष्टः।। जात्रक्ष व्यतः भवं मक्षः कर्षे दिना। दिष्ठ्यः व्यतः (प्रक्

कर्रिकः मञ्जू उ॰ क् उ॰ ॥ म जू मा **ডिग मृ**षीका यूकः म्यामागवाउवः । কচিক্লয়ু পাক চ দোষাণা म-विद्याधक्ट ॥ 🗱 ॥ समृत्रमृष छनाः । नमृतगृषः मःगु। श वृ-श सामुः পুনেহজিৎ। পিত্ত শ্লেম্য জ্বহর खणाजीमात्र नामनः ॥ 🗱 ॥ व्यनः गृष्णगाः। अलल्थग्रा १निजश শর্করাশ্মরি নাশন:। ত্ণী পুত্ণী কাসাশো গুলা মেদঃ কফাপছ: ॥।।।। অন্নেন সহ মাব্যুব গুণাঃ। অনু মা-বে গুৰু র্ভেদী বাতম্মে দিপনো মতঃ । 🗱। অথ থড়যুষঃ। ভক্র• কলিত্থ চাস্থেরী সরিচাজাজি চিত্রকৈ:। সু পক্ত খডগুৰো ২য ময় কান্তলিকে৷ ৎপরঃ॥ # । খডকান্ব লক্ষ্য গুণাঃ । দধ্যমো লবণ স্নেহ তিল নাম বি-পাচিতঃ। খডকাম্বলিকৌ যুষৌ গুণুই বাত কফাপহৌ॥ ইতি রাজবল্লভঃ ॥ 🗱 ॥ अभिष्ठ। अथ गुषम्। विश्वि र्श्याण्य । यक्षारम खत्य नीत्र मनी-ধান্য শৃতে। রসঃ। বিরলামে ঘনঃ কি-ঞ্চিৎ পেয়াতো যুষ উচ্যতে 🛭 উক্তঃ সূত্ৰৰ নিযুহি। কচিক্**চ** বিশেষতঃ ॥ 🗱 ॥ यूषमा भुकाता छत्र भार । कन्न-म्या भवः म्थोः भिश्नवीकार्क कार्य-কী । বারি পুষ্টেন বিগচেভন্ডবো

श्रम• II

यूव उठाउ।। व्ययमर्थः। यूवाम॰ পলনিত তৎ কল্পীকৃত শুগীণি পুলী চ সমুদিতার্চ্চ কর্যমিতা কল্পী-ক্তা উভয় মপি পুস্থমিতেন বা-ব্নিণা পচে । ভদ্জবো যুষ:। যুষো वरना नमूः भारक स्टाः क्थेाः क-काश इ:।। इ।। अथ महत्य विधिः। वृन्दिं कायाः जञ्जान्यतः। मूक्षानाः দ্বিপল তোথে শৃত মন্ধাঢ়কোমি-ভে। গাদছ সর্মিত পৃত দাডি মস্য পলেন ভৎ ॥ যুক্তণ সৈশ্বৰ विश्वास्त्र धानहेकः भानकाः गिरिकः ी फ्लाबी द्रकर्या म्ह्ला हारे गरकना व **চ্**ণিত । সःऋ । মুদ্দাবা १४ পিত্ত শ্লেম্ছরে। নতঃ।। 🛊 ॥ অথ मून्य्य दिनाः। मृह्माना मुख्यमा यूर्या मीनाः भी उत्ना नघः। त्राक्त ষত্র কথাহ কফ পিত্র জ্বাসু হৎ ॥ 🗱 ॥ অথ মুদানলক যুব গুণাঃ। मूनामनक य्यस (जरी **পिखा**नि-লাপহঃ। তৃড্দাহ শ্মনঃ শীতো मूही भून निमालहः ॥ 🗱 ॥ मनूत म्य खगाः भूर्वदः । इंडि ভावः প্ৰাশ: ॥

यूषः भुः तुक्षराकृष्णः। ইতি मक् त्रज्ञावनी ॥ विष अ ७ यद्म। ইতি ক্ৰিক্লুজ্মः॥ व्यञ्चाि । श्र व्यायय । उत्यः या विषय । इनि पूर्णा पानः ॥ याकुः क्षी यूर्णनमङ्क्ष्माप श्र व्यावः युर्ण व्यान छ । या पि ए हिन्छ जाय।। ज थ्यांगाः। व्यावकः ३ याकः ०। इन्यायः॥ याकः वि याणकः । इनि युक्तः थालाः कर्त्वति ज्न भुन्युर्यन नि

(यागः भू अन्न अन्न ।। उभागः॥ **थ्यानः॥ सङ्**जिः। युक्तिः। ইज्य मद्रः ॥ जन्दार्थमञ्जािकः ॥ वनुः-रेक्यं ।। भूरया गः ॥ विक्रञ्जानः ॥ ভেষজ ।। বিসুদ্ধবাতক: ॥ দুব্য ।। कार्याः। ইতিনেদিনী ॥ देनयायिकः ।। थनः। इंकि (इसहन्पुः॥ हाद्रः॥ সূত্র'। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ ॥ 🛊 ॥ **অথ স**প্তবি•শতি যোগানা• নামা-नि यथा। विश्वष्ठ श्री जि तागूमान् সৌভাগ্যঃ শোভন তথা জভিগ-**७:** मुक्या ह ४ जि: मृज खरेशव ह ।। गएडा वृष्टि धु वरेम्हव व्यावार्छ। হর্ষণ তথা । বজু শ্চাসূক্ ব্যতীপা-তো বরীবান্ পরিঘঃ শিবঃ॥ সি-ধ্যঃ সাধ্যঃ শুভঃ শ্কো বুল্ফেল্যে বৈধৃতি उथा। 🗱। उसा॰ बर्ह्स-নীয় ভাগা যথা। পরিষদ্য ভ্যক্তে-

हर्स म उकर्य उठ: भद्र ।। जुड़ाही লঞ্ বিষ্ণ ম্লু সপ্তশ্লেচ নাডিকাঃ। गछ व्याय अत्याः यह ह नव स्वन यकुरमाः ॥ देव्युक्ति व्यक्तिभाको ह नगरछो भद्रिवर्जरयः । (नवा यथार्थ नागाता वानाः कार्यायु माछः नाः ॥ 🕸 ॥ व्यानन्तर्यात्म। यथा । जीनभवाकत्। यश्विनी नर म्र्यं ণ সোঘে মৃগশির তথা। অশ্লেষা (जोसवारत्रग वूर्य इख: **भुकी**र्खिज: ।। यन्त्राधा छःत्रा वीरत विधरनवस्त्र ভাগবে। বাফণ শনি সংযুক্ত মান-न्ता २व॰ भू हीर्खिङः ॥ 🗱 ॥ रया ग-वता यथा। मीलिकायाः । ज्ञिलू আর্জাণা রক্তি নন্দ। নক্তাকণা দভিঃ িতাহি মুলাগ্নভিঃ। ভার্য रेवना इत्या बाङ्क जुन्ना ज्वर कन्नु যুগ্মাড় সংযুতা।। সোমপুএস্য বা व्र जगाम्याम् (गार्**भम् खिनम** या-ম্যাভিজিঘাজিভি:। গীল্লতে রহি রিকা চ যুক্তা যদা বিধ শকাগ্রিক পিত্র। দিত্যযুক্তিঃ।। সূর্য্য সূত্রস্য দি-त्व यमि श्व। युक्त मिनाधिशिक म বিণ: স্যাঁৎ যোগবর। স্ত্রিভি রেব স্থেতা: নৰ্ব স্বীহিত সিদ্ধি নিয্ তাঃ। অগনেৰ ভ্ৰানৃত যোগঃ॥ 🛊 ॥ ष्यभाग् उद्यानाः । ध्रुत खक कत्र ग्ला

लोक्छानार्कवात्र इतियूग विवि युग्प कहानी जानुगुग्पा। हिरमकत जूतको नईतीनाथवात एक गूगनन বাতোপান্ত্য পৌষ্ণানি কৌরে।। দহন বিধি শতাখ্যা নৈত্ৰভ সৌ-भारतात्र सक्रमि जिल शुष्रा रेमकल জীববারে। ভগযুগলযুগখো বিষ্ণু रेमा मिजार येत्रन करणायानी स्तोति वात १म् जानि ॥ यनि विश्वि ব্যত্তীপাতৌ দিন বাপ্যশূভ ভবেৎ **। হন্যতে হৃদ্ভ**যোগেন ভান্ধরেণ **ত**-(मा यथ।।। मईरिकाविरमायग कन महाह ज्यागक । अग्र कि निकारी-গশ্চ যদ্যেকিষান্ দিনে ভবেৎ 1 ত प्रिनेख ভবেष्ट्रे॰ मधूमिन यंथा বিষণা #॥ অথ নিদ্ধি দ্ধা পাপ यमचन्ते (यानाः । यथः । नन्ति । मा निकिरगाना ज्छन तूर कना की का वादिः भूमखाः। मृत्यं भाभागि वङ् দৃহানি নিভ ভিপ্যোকানি বারৈ: भूरकाः ॥ त्राक्रमार्डए । माना क्-मुारित्ना तामा यहेशक मूनय खथा। দহান্তে তিথ্য: সপ্ত রব্যাদি সপ্ততি र्गु है: ॥ अभिष्ठ। द्वारमाक मुखा ভবেদশভদা সোমেন চৈকাদশী ভৌমে চালি যুতা তথৈব দশমী (नष्टा ज्जीया तृत्य। यथी (नष्टे **क**न-

পুদা সুরশুরৌ শুক্তে দ্বিতীয়া তথা जर्बाव्य विनाण विष् कननी म्यंताः ष्त्राज मध्यो ॥ भाभाकाए वि-শাখাত্রয় যম মৃডুপ স্যাহ্নি চিত্রা চতুষ ভোষ বিশাভিন্ধিন্ত বৃথ अब निवाम अवयु विश्व कार्मु । क्खार्ट मृना विभाशा यम वन ज्रा-গান্ত্যানি জৈবেহ্নি পিত্র রোহিণ্যা দু৷ বিনেন্দ ভভ নথ ভূগো রহি भूषा बरात्मो ॥ भोतार इस य ग्रार्थ्य यम जनयूक् लीक भूष्रा धनानि घण्टे। २थ ७ कं याक अगृह-े शिक्ट हिस्न (मोग्रावादा १र्य)माशि ॥ ॥ অথেৎপাটाদ यागाः। त्र-।। व्यापि पिवरेम यूका विभाशापि हजू শ্চতু:। উৎপাটা মৃত্যুব: কাঁণা অ মৃতানি যথা ক্রম• ।। 🗱 🛚 অথ কর-কচাযোগ:। বাজি চিত্রোভরাযাত। भून भाभीका जासकाः। भूर्याति বার সংযুক্তাযোগা: করকচা: মৃতা: ।। #।। অথ মৃত্যু যোগ:। আদিত্য ভৌনযো नंनता ভुग मुक मामाकः েযোঃ। বধে জয়া গুরৌ রিক্ত। শনৌ शूर्गा ह मृजुर्गा । # । । अथ यमवर्षाः **फीना॰ वर्ज्यकाल निर्णयः । यम्बर्ण्ड** छ। इन हो नृष्ठी दारण ना फिकाः । व्यत्याः भागसानानाः न्या

हार भत्रकः भूकः ॥ सः ॥ व्या भू अ हानु वित्रका वि भा हिः । व्या । (गय ह मर्ख्य भू य्या मः भित्र छ । व्या गा कि विन में हिं हिन्मू मृक्षिः । व्या गा कि हिन प् मृक्षिः । वित्रका विक्षाः । वित्रका विक्षाः । वित्रका विश्वा विद्या । सः ॥ वित्रका (या गा माः । वित्रका (या गा माः । वित्रका मां । वित्रका ना छ। वित्रका मां । वित्रका वा । वित्रका । वित्रका । वित्रका मां वा । वित्रका । वित

व्यक्षियायागः।

मूनय উठ्: । पूःथाय मग्नाः श्क्षाः
भूनय উठ्: । पूःथाय मग्नाः श्क्षाः
भूनय उत्र महानयः । उत्तर्य उन्तर्याक्षः उथा प्रमृतिष्ठय ॥ हेजुः
कः म उना भाह कियायागः महाप्रानाः । नद्राना मुभकाद्राय पूःथ विहि कित्राद्रकः ॥ विह्न क्वाह । व्याद्राथ्यथः विरथणः जगञाः काद्राः भ्राथ्यथः विरथणः जगञाः काद्राः भ्थ्यम् प्रान्त उत्तिभाः । वृद्रिज्ञ भवादिः भ्याम् । हेक्षाः श्रृ श्रृ । वृद्रिज्ञ भवादिः भ्याम । इक्षेत्रा भूना नमकादिः भ्याम । हेक्षाः श्रृ । वृद्रिज्ञ भवादिः
विविदेश वा भानाभः जभ ते । विविदेश वा भानाभः वा भानाभः । विविदेश वा भानाभः ।

ধ্যত কেশব ।। ত্রিষ্ঠা জন্তবি্য खट कर्मात् खनानुगः । उन्हेश्र खग्रनमः मर्वभिन् म इंडि झिडः॥ अमलानार्थं क्यांनि छड अद्वाजाना-ज्ञिति। मःनामार्थः म दः कर्छ। ममलाः वंद्रग ऋगः॥ भद्रः भद्रांगाः भद्रमः সএকে৷ নরোত্তমো যস্য পদম ভিন্ন• চরাচর
 বিশ্বনিদ
 সন্তাদ্চিত্ত্য क्रशतुर्भातर्गुरः यः ॥ छमात्राध्य अगमाथ किंगार्यागन वाउवाः। অগ্রো মোক্ষণ পরণ জগ্না স্তমান্তরো-क काद्रपः ॥ मःमाद्रार्भव मग्नानाः ॥ বিষ্যাক্রান্ত চেতসাণ। বিফুপোতণ विना नानु८ किक्षिमिख भन्नायन ॥ উভিষ্ঠ শিচন্ত্র হরি বুরু শিচন্ত্র (कणद । जुक्ष किष्ठस भाविन्त त्रभः किन्नय भाषवः॥ यूय (भकागुः हिला हि मः श्विजा मधूमूहनः । बद्य মৃত্যু জরাগাহে সংসার সভরিষ্য থ।। ক্রিনা বোগ পরাণীই মুক্তিকা-ব্যাণ্যনেকশ:। সমারাধ্য জগন্ধাথ॰ त्राजाता भाक्ष गान्नुगः ॥ इंडि विज्ञिश्राणः॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥

তথ্য যোগসাধন । কেশিধুল উবাচ।যোগ স্বৰূপ থা-ভিন্য শুষতা গদতো মন। যত্ৰ স্থি-ভোন চাবতে পুাপ্য বুক্ষল । মুনিয়া।

মন এব মনুষ্যাণা কারণ বন্ধ লো-कर्यशः । वक्षमः विषयामिक मूर्त्कः নিরিব্যুণ তথা ॥ বিষ্যুভ্যঃ সন্।-হুত্য বিজ্ঞানাত্মা মনে। চিড্ড-যেন্মুক্তযে তেন বুক্ষ ভূয়ণ পরেশ্বরণ।। আত্মভাব• নযভ্যেব• ভদ্মন্ধ্যায়িন• मूत्न। विकार्य्यकाञ्चनः मञ्जा लाह भाकर्यका यथा।। आजा भुगत्र मान পেক্ষা বিশিষ্টা যা মনোগতিঃ। ত म्रा वुक्षि मःयामा याग इंड्र-ভিষীয়তে ॥ এব মৃত্যন্ত বৈশিষ্ট্য युक्यस्या भवक्ताः । यभः त्यातः स देव (यागी मूम्यु ब जिवी गर जनार विशि युक् श्रुथमः रयाभी युक्तानः रक्ष रू ভিধীয়তে। বিভিন্নন সধান্ত্রি পঞ্ वुष्कार्णलिकागन्।। यम् । अत्र । । ষেণ দুষ্যতে চাস্য মানস•। জন্মান্ত-রৈ রভ্যসতো মুক্তি: পূর্বস্য জাযতে ।। বিনিম্নন সমাধিস্ত মুক্তিণ তবৈব জন্মনি। প্যাপ্নোতি যোগী যোগান্নি एकक्षा **ह या श्हित्राट ॥ वृक्ष**हर्य गहि नाक नजारिया नित्र श्राम्। সেবেত যোগী নিদ্বামো যোগ্যতা॰ श्वः मत्ना नयन् ॥ श्वः अगयः (भो ज्ञः मः স্তোষ ভপা॰সি নিষ্ভাত্মবান্। अ-বী তি বুন্ধণি তথা পর্যনিন্ পুরণ मनः ॥ এতে यमाः मनियमाः भक्

🕬 ুকীর্ত্তিতা:। বিশিষ্ট ফলদা: कान विकामाणा विमुक्तिनाः ॥ अक जुरानमानीना नमाशाय खेरा बुं अ:। वमारेश नियमारेश के गूकी छ निक्रका यिकः॥ भागाचा निन्तः वन्। मन्त्रामार स्कल् न् यर । श्रानासभः न विद्धयः नवीता १-বীয় এব ।। পরস্পরেণাভিভব পুা नानात्वे यहानिली । अक्**ठः न**ि **श**रनन ज्ञीयः **ज**ण्यनाखरयाः॥ जन् **हानघुनवजः ज्नक्**भः दिस्काखमः। আলম্ব ম্বস্তুস্য যোগিনো হভ্য-भठः मृष्ठ॰॥ **भ**दारिष्ठनुत्रकानि নিগৃহ্যাক্ষাণি যোগবিৎ।। স্বর্যাচি-স্তানুকারীণি পুত্যাহার পরাযণ:॥ খশ্যভা পরমা তেন জাযতে হতিচ-वाज्यनाः। इन्द्रियाना मदरेणा देख न स्याणी (यागनाथकः ॥ भागायात्मन भदरेनः भुज्राहारद्वन किन्तुरेयः। व-শীকৃতি ব্ৰতঃ মুৰ্য্যাৎ স্থিত চেডঃ শৃভাশৃযে ॥ এখাণ্ডিক্য উবাচ। ৰুথ্যতা[,] মে মহাভাগ চেতসো য: শৃভাশুব:। यहाशात्र মশেষ॰ তদ্ধভি प्ताय कर**नाञ्चर॰ ॥ ञ्रीत्कन्निथुक উ**-বাচ । আ**শুব শেত তলো বুন্ধ দ্বিধা**-**७** इ. ४ जावजः । ज्ल मूर्व ममूर्वक পরকাপর মেব চ।। ত্রিবিধা ভাবনা

विनु विश्व मिजबि वाश्वारा । वृश्वारा कर्म मुखा ह ज्या हैहरवाज्याज्य-কা।। বৃদ্ধভাৰাত্মিকা ছেকা কর্ম-ভাবাজ্মিকা পরা। উভবাজ্মিকা ভ থৈবান্যা ত্ৰিবিধা ভাব ভাবনা।। সন্দ न्मनामरया वुक्रकाव जावनया यूजाः । कर्य जावनया जात्ना (स्वाम्ताः इ।-বর। শ্চরা: ॥ হিরণ্যগর্ভাদিব্চ বুক্ষ कर्षाञ्चिका विथा। वाशाधिकात्र यू-কেষু বিদ্যুক্ত ভাব ভাবনা।। অক্ষী-(१वृ ममस्वयू विश्मय ख्वान कर्मामू। বিশ্ব মেতৎ পর• চান্যক্তেদ ভিন্ন দৃশা॰ নৃপ ॥ পুত্যন্ত মিত ভেদ॰ ষৎ সত্তা মাত্র মগোচর । বচসা মাত্ম সংবেদ্য তজ্জ্ঞান বুহ্ম সং-জ্ঞিত ।। ওচ বিকো: পর कপ ম-क्षिम्। ब मक्र व । विश्व स्क्षि वि-ৰূপ্য লক্ষণ পরমাত্মন:।। ন ড-দ্যোগ যুজা শক্য নৃপ চিন্তযিতুণ য**়: ৷৷ তত: স্লুণ হ**রে ৰূপণ চিন্ত্যুণ যদ্বিখগোচর• । হিরণ্যগর্ভো তগ-वान्वामावा १४ भूकाभिः মকতো বসবো কৃদ্যু ভাঞ্চরা স্তার-का गुराः। गञ्जर्व यक रिरुप्रमृतः नकना (एव(यानयः ॥ ननूष)ाः श-শব: শৈলা: সমুদা: সরিতো জনাঃ । ভূপ ভ্তান্যশেষাণি ভূতানা থে

८ (रूउदः ॥ भूषानारि विश्लिषाञ्च চেত্ৰ। চেডৰাতাক ॥ একপাদ विभारक वङ्गार मनारकः। मूर्ख মেতজ্বে ৰূপ ভাবনা ত্ৰিত্যাত্মক ।। এउ९ जर्ब भिनः विश्वः बगान्छह त्राहतः। भव्रः वृक्ष चक्रभगः विष्याः শক্তি সম্বিত ।। বিষ্ণুশক্তিঃ পর। পোকা ক্ষেত্রজ্ঞাখ্যা তথা ২পরা। অবিদ্যা কর্ম সংজ্ঞান্যা তৃতীয়া শ-ক্তি রিষ্যতে ॥ য্যা ক্ষেত্রক্ত শক্তিঃ न। (ठिष्टिज। न्भ नर्वगा। नःमात তাপানখিলানবাপ্নোত্যনুসম্ভতান্॥ ত্যা তিরোহিতত্বায় শক্তি: কে-ব্ৰক্ত সাভিডা। সর্বভ্ভেষ্ ভূপাল তারভগের লক্ষ্যতো অপুণেরং সু বল্ল লিং স্থাবের মু ততোধিক। স রাণ্পেপি তেভ্যোপি অতিশক্ত্যা প্রত্রিষু । প্রতিভোগ ম্গান্তেভাঃ স্থশক্ত্যা পগবো হধিকা:। পশু-ভো মন্জা শ্চাতিশ্ভা পুংসঃ পুভাবিতাঃ ॥ এভ্যেপি নাগ গ-सर्वा यक्षारा (हवडा नृপ। শক्र: সমস্ত দেবেভ্য স্ততক্ষাপি পূলাপ-তি:।। হিনিপ্যতেতি তভ: প্ণন: **ण**कुभविक्वितः । अञान्यत्मव क পস্য তস্য ক্রপাণি পার্থিব ॥ যুত্র- 🖔 🐯 🖯 🕏 (यारगन यूकानि न ७७)। यथा

। बिजीयः विक् मः ब्ह्नमः (यानिएमः)यः महांगरंछ।। व्यम्र्डः वृक्तालाकनः वट निक्रिहाउ व्रेथः। नमसाः नक्त ৈত। নৃপা যত্ৰ পুতিগিডা:।। ভদ্বি-चक्त करा रि क्रमनाक्र मंहर । সমস্ত শক্তিক্পাণি তৎ করে।ভি कतम्बत्र ॥ एव जिर्वे अनुवादि (ह्रेश्विष्ठ स्वीव्या । खगडा मून-কারায় ন সা কর্ম নিমিন্ডজা।। চেঠা जगानुरमयम्। व्याभिन्यग्रह्ण-আ্বিন। তদুপণ বিশ্বৰূপস্য তস্য रयागगुरका नृश ॥ ठिख्य माजा विणू-क्तुर्थः नई किल्वि नामनः। यथान क्ष जिथः ककः म्हिजानिनः ।। তথা চিত্তে স্থিতো বিষ্ণু র্যোগিনা नर्व किन्त्रिष्। उत्राप् नम्ड मकी না মাধারে তত্র চেতস: !৷ স্বর্গত স স্থিতি সাতৃ বিজেয় শূজ্ধারণা । मृ जामुगः महिखमः मर्बगमः छ-থান্মন: ॥ ত্রিভাব ভাবনাতীতো মুক্তবে যোগিনা॰ নূপ। অনে। চ পু-क्षवग्रायु (५७८मा (य ब्राभानुगाः॥ वाग्का एउ ममसास (हवाह्याः कर्प যোনবঃ। মূর্ত্তণ ভগবতো রূপণ সর্বা-পাৰুব নিস্পৃহ়ণ। এষা বৈ ধারণা <u> छ्विया यहिन्द्रः ७७ भाग्री ७ । ७ ह</u> मूलं इति कथः याम्क् हिन्छाः नदा-

दिशा जुद्दुवजा मनावाद्रा वाद्रगा-रनार्नेमध्र । भुमन हाक्ष्रनः भग्रभवायरक्रमः ॥ मूक्रभानः मृविद्यीर्ग ननारं कनरका ब्लून । म এ কর্ণান্ত বিন্যুক্ত চাক্তকর্ণ বিভূষণ ।। क्ष्ग्रीव भृविखीर् श्रीवट्गाह्मि । वक्तर । वली जिल्लिना मण ना ভিনা চোদরেণ বৈ ॥ পুলম্বাপ্ত ভুক বিষ্ণু মথবাপি চতুর্জ। সম-ক্তিতাক ভল্লক সুস্থিরান্তি করা-স্থ ।। চিন্তবেদ্রুক্ষ ভূতণ ত॰ পীত নিমল বাসসং। কিরীট চাক কেযুর কটকাদি বিভূবিত ।। লার্স শত্র গদা খুদ্ধ চক্ৰাক্ষ বলবান্বিত ৷ চিম্ভ-<u> রেওর্যো যোগী সমাধাযাত্রমা-</u> नमः ॥ जावन्यावपृतीज्ञा छरेबव নৃপ ধারণা। বুজত স্তিষ্ঠতো হন্যদ্বা (बह्या कर्ण व्यर्बछः ॥ नाभयाजि তদা চিত্তাৎ সিদ্ধাণ মন্যেত তাণ তন। ততঃ শত্ত্ব গদা চক্ৰ শাৰ্কাদি রহিত বৃধ:।। চিন্তবেদ্ধগবদুপ পু-भाष्ठ नाक्रम्बक । मा यहा थात्र-१। जन्नरव्यानवजी जजः ॥ किन्नीहे কেয়র মূখৈ ভূষণৈ রহিত । মারে । তদেকাব্যবং দেবং চেত্ৰসাপি পুন বুৰ: ॥ স্বাভাতা ২ব্যবিনি পুণি-थानभात्रा **ভ**विष् । जुनुभ भुजारेयः

रेदक मङ्खि फान्य निम्पृहा ॥ ७-ष्गानः नुष्रेम ब्रोकः वडि निज्ञा-म्राज नृश । छरेन्य कन्ननाशीनः चः क्रश्रुह्ग हि यट श मनमा ध्रान নিষ্ণাদ্য সমাধিঃ সো হভিধীয়তেন বিজ্ঞান পাপক পাপ্য পরে বৃন্ধ नि भार्थिव॥ भाभनीय खरेथवाचा পুক্ষীণাশেষ ভাবন:। ক্ষেত্ৰক্তঃ করণী জ্ঞান• করণ• তেন তস্য তৎ ॥ निष्ठारा मुक्ति कार्याः रेव क्छ क्-ত্য নিবৰ্তে। তন্তাব ভাবমাপদ ন্ততো হসৌ পরমাত্মনা।। ভবত্য **ভেদী ভেদক ভস্যাজ্ঞানকৃতো ভ**-বেৎ। বিভেদ জনকে হক্তানে নাশ মাত্যম্ভিক গতে॥ আত্মনো বুক্ষণো ভেদ মসম্ভ কঃ করিষ্যতি ৷ ইত্যক্ত ख मया रयागः चा खिका भित्र शह-তে।। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৬ অংশ ৭ व्यथ्रायः ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

तुक क्छ यार्गा यथा।

मूथः यागामनः कृदा वज् मःभूटोक्षिनः। भूलकाह्मिछ मर्वाकः

मामुम्बाः स्थाक भिक्षना निल्नीः

युताः। नाष्ठी यहेकक यार्गन निक्थः

ह भूयञ्जः। गूलाधातः साधिष्ठानः

मिन्द्र मनाङ्खः। विम्मूकः भत्रमा-

ज्ञारा बहेठकक निक्षा है। बहुने कातिया ह उ॰ बहेहक क्रमाधियः । तुक्त ब्रक्तुः जनानीय वायूववा हकात र ।। निक्ध वाकु भिधाषा मानीय क्रवाष्ड्र । ७ तायु जामविषा ह যোজযামাদ মেধ্যযা।। এবং কৃত্বা তু নিয়ান্দা যো দত্তো হরিশা পুরা । **জ্ঞাপ পরম• মব্র• ত• তল্যৈ**কা-म्णाक्रवः ॥ गूर्वक बनः क्षा काः यः भागः भमाष्ट्रकः। पमणं क्रम्याः স্তোতে সর্ব তেকোম্য মুনে ॥ ভত্তেজসে৷ ২ম্বরে ৰূপ মতীব সুম (नाश्त्रः। विज्ञः भूत्रनी श्रुः ज्वि-७ शीउवाममा ॥ मु. छि मृत इत न् अ ज्वास्य क्रम् अवः । स्यव्हामा পুসন্নাস্য ভক্তানুগৃহ কাতর মা नवीन जनहाकान्न मात्राममुनहन्न वि-गुरु । इं उ॰ बहुतू मर्बित् निर्मिश्र॰ गाकि किषन ॥ बाजाताम भून কাম জগদ্যাপি জগৎপর । সর্ব-ৰদপণ সৰ্বেষাণ বীজৰূপণ সনাতনণ ॥ मदीवाद्र• मर्दवद्र• मर्दणकि मन-ব্ৰিত । স্বারাধ্য সর্ব ওক সর্বন-क्ल क्रांज्ञ ।। मर्बमञ्ज यक्रभः मर्डमण्ये १ कद्र । यमृष्टे तुक्त-ब्राक्त हरू हि उद्घि द्विव है। मृक्ष्व ह পরনাক্তর্য্য ভুষ্টাব পরমেশ্বর ॥

रेजि वृक्षरेवनार्ज निक्क विद्या २० व्यवज्ञयः ॥ 🖝 ॥ 👫 ॥ 🙀 ज्य श्रामत्या भः। ছরিকবাচ। অথ যোগণ পুরক্রান্

ভুক্তি মুক্তিকর॰ পর॰। ধ্যাবিভিঃ (भाष्ट्राह्य (थ) यहारा महिन्नी-भन्नः॥ ७८ मृगृषु मर्हमान मर्द्रमा-श विनाणनः। विकुः गर्त्तश्रेष्ता १न-**खा यज्भि भन्निविद्धितः॥** यात्रुरमः বো জগমাথো বুহ্মাত্মা অচনেব ভূ । (मर्टि (मरुक्टि) निक्तः अर्द्वापरु विवर्खिजः ॥ ८ए इथर्म विशीन मह ज्ञा-রাক্ষর বিবর্জিত:। তদ্ধর্যা রহিতঃ সুষ্টা নাম গোত্র বিব্রজিতঃ।। মন্তা মনস্থিতো দেবো মনসং গরিবজি **७:।** मत्नाथमं विश्वीतभः विकासः ব্যয় এব চ ॥ বোদ্ধা বৃদ্ধিস্থিতঃ माकी मर्वरवाथ विवर्क्षिउः। युष्ति-ধর্ম বিহীনশ্চ সর্বঃ সর্বাত্যে খ্ম-षः ॥ मर्द्रभागविनिम् 🖘 🔻 विवर्जिङः। भाग भागो वामाप्सा **खर्यन পরিবর্জিত: ।। ७ २**ङ्गाর**्**দि হীনশ্ট ভদ্ধর্ম পরিবর্জিত:। ভং-**माफी** उधियद्या **८ भद्रमानन्स** क्ष्यः कः ॥ जागूर अर्थ अम्हान्त उर সাক্ষী ভদ্বিৰ্জিত। তুরীয়া পরনো था जा मृगुरमा खन विक्रिः ॥ भूरका

ब्रिस् ब्रिक्राभी मडा जाजामार जियः। अवः स्व भागवा विक्रां पंतावः कीण भन्नः भनः ॥ भाग्नु यू एक ह खन्नभः नाव कार्याः विहात्रभा। हेडि भागः भना थाङ ठव जकत मृत्रु ॥ भारत्रेष्व अवट मड्डः विकृत्वाकः मगह्नि। हेन्डिगाक्ए ५८ यथायः॥

व्यथाड्डाक्रागः।

मुकि ब्रह्राक विद्धानार मण्कणा-खद्दार मृत्। यमाः शक् व हिः मान्त অহিংসা প্রাণ্ডহিংসন ॥ সভ্যা ভূতহিত বাক্য নন্তেয় স্বাগৃহ প तः। व्यानिथूनः तुन्त्रवर्गः नर्वे छाः গো ২পরিগৃহ:।। নিয়নাঃ পঞ্ স ভ্যাদ্যা বাহ্য নাভ্যম্ভর• हिशा। मोऽ ज्षिक माखाव छन किन्य निगुरः॥ याध्यायः म्यान्यस कानः शुगिषानः हत्त्र यंजिः। यामनः शमाः कामुङ शुागायास्या सक्छ्यः ॥ মন্ত্রধ্যান যুতে। গর্ভো বিপরীতো **गगर्डकः। घगर्डा**ङ् मगर्ड**रः ना**-गागम खर्जा २ विकः ॥ এवः विवा ত্রিধাপুত্রঃ প্রণাৎ প্রকঃ স চ। वसुका निम्ववाट्न अ । अठकापुठः क खिशा। वसू बीरण माजः माइः তুর্বি:শতিক: পর:। ষট্তি:শন্মা-बिकः (मुक्तः भुउग्रहात्रण (त्राधन·॥

कुषाचा विखाष्ठान महार धात्रण मनामा शृष्टिः। व्यष्ट्- दुरम् छ। वहा-न जमाबि वुक्रमः हिन्छः ॥ व्यह-মাত্মা পর• বুল্ন সভ্য· জ্ঞান মন· **७क**ा विकान मानत्म। वृक्ष गर्छ-ভুমসিকেবল ৷৷ অহ বুন্ধাম্যহ *वुका जा*नदीत मनिन्मुय । जारु भत्न। वृद्धि भक्षम् इत्राप्ति वर्षिष्ठ ॥ बागुर बन्न मुमुख्रामि मुक्क कारी-**डि छरीयकः। निज्यः मूकः** राज्यः कः जल्रभानन्त महरः॥ (या १जा-वारिका भूकवः (मा रमावर मथक ওঁ। ইতি ধ্যায়ন্ বিমচ্যেত বান্ধণো ভववन्ननार ।। ইভি गाक्ए १৯ অধ্যাব:।। 🕸 ।। অপিচ। এতত্তে কথিত জ্ঞান যোগঞ্চেম নিবোধ (न। र॰ भाभ। वृक्षण (यामी भाष-তানন্যতা॰ বুদ্ধে ॥ পুাগালৈবা-जाना काया याणिना नहि मूर्अयः। षदी उ उद्धार यङ्ग उरम्याभायः मृग्य (स्था भागायारेम मंत्रत्मायान् ধারণাভিশ্চ কিল্বিব । পুত্ত্যাহারেণ मः मर्गान् यातनानी यङ्गान् छनान् ॥ যথা পৰ্ত ধাত্না প্ৰাত্তানা দ-**क्टाउ मण । उर्धिन्द्रिय क्ंजा (माया**) **म्बा**ख भागिनगुरा ॥ भुषम॰ नाधनः वर्गाए भागायामना वाकः

वि८ । भागाभान निर्त्ताथ्छ भागा-याम উपाइ ७: ॥ मधु मरभ्याखद्री याथाः भाषायाम जिल्लामिकः । ভস্য পুমাণ বক্ষ্যামি ভদলক শৃণুষ (म।। वयु बीरण माञ्छ विखनः म ज् मध्रमः। विख्णानिक मावानि अब्बोय উ**रा**ज्ञः ॥ निम्यास्त्र ৰণে মাত্ৰা তালো লঘুক্রে। মতঃ। भुगगयाममा मः भार्थार्थः म्राजा चार-माभावकः ॥ भुषसम ब्रायट (यमः मध्याम ज् तिश्रपुः। विवापः इ ज्ञीरान **ब**राष्ट्रायाननुकमार ॥ मृष्द्र (मव्यामाञ्च मिः नाप्न व्यक्षताः। यथा याखि उथा भाषा বশ্যো ভৰতি যোগিনঃ ৷৷ বশ্যু• সম্ভ• यत्यहात्जा नाग॰ नयाज इस्त्रिनः । **छरियव रयागी इल्लान भाग नय**ि সাধিত।। যথা হি সাধিত: সিংহো स्थान् रुखि न मान्यान् । **उ**ष्टिषि कः भवनः किल्विषः न नृगाः छन्।। **७माप्यकः** मना यागी भागायान-॥ পরে। ভবেং। শ্রুযতা॰ নুক্তি ফলদ॰ **७**मऽावङ्गः ठजुष्टेगः ॥ श्वास्तः भासि खणा मिन्न भूमाएक महीभाउ! . चक्र १० अप्ति वि (उदा॰ कथा भाग म-मुक्रमार ॥ कर्यना मिष्ठे मुक्षाना॰ कार्यं कृत मःक्यः । (छ्छामा

বিক্ষায়ত্ব॰ যত্ৰ সাধৃষ্ঠি **बेरिकामू भिकान काः** व लाउ भाशाञ्चकाःक यान्। । यक्षा (उ मना यागी भाष्ठिः मा म ईकामिकी ।। অতীতানাগতানথান 🕆 পুকৃষ্ট তি ब्राह्जिन्। विज्ञानाजी मू भ्यं। क् गुरु। गाः ज्ञान जन्मरा। जुना भु-ভাবস্ত যদা যোগী প্রাজ্যেতি সম্বি-দ। তদা সম্বিদিতি খ্যা ক্লাপা-यामम् ना इन्छिः। यान्ति भुनामः (यनाज) मनः शक्ष ह वायवः।। इन्त्रि-यागीनिषुयार्थाक मनुमाप इछि म्छः । मृग्य ह भशिभान भागायामम्। लक्षन ।। युक्त उन्ह यथा (यान यान मृथिहिङ गानमः। भग्न नक्तांत्रनः বালি তথা স্বস্তিক নাসন।। আ স্থায় যোগী युक्षीত कृद्धा 🤛 🕾 क्रि। त्रमः नगात्राना जूर চরণারুভৌ। সংবৃতাস্য 🕬 नग्रिष्ठेड्य दावुडः ॥ 🕶 लिक व्यवावस्त्र्वन् श्रवः । इ. उ. किश्विमुद्याभिङ नित्र! मरेख परंखान निष्मृ (मेर ॥ निष्मु मानिका भू य॰ पिण प्ठानवरनाक्यन्। ब्रजना जगरमा वृद्धि॰ माजून ब्रह्म खथा।। সংস্থাপ্য নির্মালে সাত্ত্ব স্থিতো যু-अीउ यागदिए। इन्द्रियाणील्युका-

र्स्डाः श्रुंगामीन् यन এव ह।। नि-গৃহ্য সমবাযেন পুত্যাহার মুপক (यट। यस भुजारदाट कामान् क्र्या १३ ानीव नर्बणः ॥ नदाजा রতি রেকস্থ: পশ্যমাত্মান মাত্মনি ৷ স বাহ্যভ্যন্তর পৌচ নিষ্নাদ্য कर्थ नाजिजः॥ भूत्रयिष्। वृर्था (१३° नुकारात्र मूनकरम् । नुगगमामा म्बन्दि ह बाद्रना जान्त्रियाय ॥ বিধারণা মৃতো যোগো যোগিভি खबुम्डि छि:। जथा देव याग युक-স্য যোগিনে। নিযভাত্মনঃ ॥ সর্বে दिनायाः भूगमाहि सङ् रेकारवाभका-যভে। বীক্ষতে চ পর বুন্ধ পুাক্তা। ण्ड ख्वान् भृथक् ।। (वर्गमापि **भव्रमा**-মুণ্চ তথাত্মান মকলাবং। ইথং থোগী জিতাহার: প্রাণাযাম পরা-য়ণঃ।। জিতা॰ জিতা॰ শনৈ ভূমি মারোহেত যথা গৃহ । দোবান্ ব্যাধি তথা মোহ মাক্রান্তা ভ্রানি ৰ্জিতা।। বিবৰ্জ্বতি নাব্যোহেত্তমা-क्षि मनिर्क्षिजाः। পुागाना मृत्रमः রোধাৎ প্রাণাযাম ইতি স্ত: ॥ ধারণেভুচেতে চেয় পায্যতে যন্মনো १नया। भदारिख्यः भुवृखानि यहः कानि किञाञ्चिः ॥ भुज्याङ्गस्य यारगन भुग्राहात छनः मृजः। छे

পায় শ্চাত্র কথিতো যোগিভি: প^ त्रभविं छि: ॥ (यन वृह्मध्राम् रहाः या न कायस्त्र हि रयाणिनः। यथा ভোষার্থিন স্তোষ্ণ মন্ত্র নালাদিভিঃ भरेनः॥ चाशित्रगृ ख्या वायुः शि-विष्यां निष्युमः। भागान्त्राः इ-দ্যে বাথ তৃতীযা চ তথোরসি।। কণ্ঠে মূখে নাসিকাগ্রে নেত্র ভ্রমধ্য मूर्षम् । किथिखमार भविमा क ধারণা পরমা ফৃতা।। দলৈতা ধার-ণাঃ পাপ্য প্রাথ্মাত্যক্ষর সাম্যতা• । নাখ্যাতঃ ক্ষুবিতঃ শাুভো ন চ ব্যা-द्यव (वाहनः ॥ बुक्षी छ (याश॰ রা-**(अनु** यागी निकार्थ गाञ्चनः। ना-তিশাতে ন চৈবোঞে ছন্দ্রে নাম্বনি-লাত্মকে ॥ কালেয়েতেষু যুঞ্জীত न र्यागः स्तान उर्भवः। न मास् **ংগ্নি জলাভ্যাসে** জীর্ণে গোপ্তে চত্ত্ ञ्चत्य ॥ भूक्षभर्ग हत्य नम् ॥ भ्यानात्ने সসরীসূপে। সভবে কৃপতীরে বা চৈত্য বল্মীক সঞ্চযে। দেশেয়েতেষু **उ**बुद्धा यागान्तामः विवर्क्कारः ।। जनुम्रान्भभाखी ह एम काल বিবজ্জিতে। না সতো দর্খনে থোগে **जमान्ड॰ भद्रियर्क्का**य्य ॥ (मेरिया नि-**जाननाम्छ। म्**एजाप्या यनकि देव । । বি**ন্নায তস্য যে দো**ষা জায়ন্তে ভা-

মিবোধমে ।। বাধির্য্য **কডভা লোপঃ** ম্তে ম্কল্মশ্ভা। জুরক্ জায়তে जर् उदरकान यागिनः ॥ भूगाः मात्यानिता (मरवा यरेथा अनु । कि-किट्निजः। (ज्याः नामाय कर्डव्रः বোগিনা ত॰ নিবোধ মে ॥ স্থিকা॰ য গাগ্ মত্যুক্ষাণ ভুক্তা ভবৈৰ ধার-বেং.। বাত গুলা পুশান্ত্যর্থণ গুদা-বৰ্জে ভতো দধি॥ যবাগু ৰ্বাপি প-বনে বাযগুন্থীন পরিক্ষিপেৎ 1 ত घट करूल गहारेणन छित्र गनिम ধার্যেৎ ৷৷ বিঘাতে বচসো বাপি वाधिरमं भुवत्रानुष्य । उरेथवान्नः कनः प्रायकृष्णार्जा त्रमतन्त्रिय । যিমান্ যিমান্ কজা দেহে ভিমাণ ভ म् श्रकातिनी ।। श्रातरम्बातना मुस्यः नी जा॰ भी उ विमाहिनी । की न॰ শির্সি সংস্থাপ্য কান্ত কান্তেন তা-एएए ॥ नुश्रम्**एः म्डिः मान्।** (याभिन एउन कायरा । म्रावाभू-थिति वार्यो वाशिनावन्धात्रत्थः ।। অমানুবাৎসভু জাতাদাধা ছিতি **विक्टिमिङ** । अभानूषः मखुमस र्याणिन श्रुविरमध्यमि ॥ वायुन् थात्रभार्टेवन (पर म·इ॰ विनिर्माहरू) । এবং সন্থাত্মনা কার্য্যা রক্ষা যোগ विषा नृशा। धर्मार्थ काम भाकानाः

मतीत्रः माध्यः यउः । पुर्हे स्त्रः
ना थाजा वागिता दियया उद्या ।
विज्ञानः विनयः वाङ ज्याद्धाः
नगः भवृत्वयः । जालोका माद्रामा
मिठ्ठवः गकः मृत्वा मृत्र भृतीयः
मत्रः । काङः भृमारः प्रतामगुष्ठः
ह याग भृवृत्वः भृथमः हि हि ।।
ज्यत्रागः जता गाङि भागः विविश्वः ।।
ज्यत्रागः जता गाङि भागः विविश्वः ।।
ज्यत्रागः जता गाङि भागः विविश्वः ।।
ज्यत्रागः वाषा न जायः विविश्वः ।।
ज्यत्रागः वाषा न जायः विविश्वः ।।
ज्यत्रिकः मावावावः ।
ज्यां विविश्वः मावावः ।
व्यां विविश्वः मावावः ।
ज्यां विविश्वः ।

श्री जगवानू वाह । (या गा विकास कर्या क्षान कर्य ह जिल्क कर्य ह जिल्क कर्य ह जिल्क कर्य है। कर्य कर्य कर्य है। कर्यों कर्

र्बिटिं उ यावजा। न ८ कथा न्वनाहरी

वा भुका यावम जान्छ ॥ यथर्यास्।

यकन् योख्ड प्रनामीः काम उष्कर। न याजि वर्ग नहरको यम्। नुष्त्र मभा-हात्र ॥ व्यक्तित्वारक वर्षमामः वश्यां एन वा भू हिः। उतानः वि **म्क** भारताजि भक्तकिक यमृह्या ।। ইতি 🕮 ভাগবতে ১১ কদ্ধে २० व्यवतायः ॥ सः॥ जाःश्रद्यागः २ कर्मायागः ७ ज्ञानकर्मन्यागरमा া:৪ সংব্যাসংখাগঃ ৫ খ্যামখোগঃ ७ विद्धानयागः १ वृक्षयागः ৮ রাজগুহাযোগ: ১ বিভূতিযোগ: ১০ ভক্তিযোগ: ১২ পুক্তিপুৰুষবিবে-करवानः ১৩ छ। बयरवानः ४८ भूकः (बाखग्रवागः ১৫ व्याठात्रवित्वक-(यानः ১१ (स्वाक्तर्यानः ১৮ একে যোগা এতেম্বধ্যাযেষু ভগবদ্দীতা-या॰ मुष्टेवताः ॥ 🕸 ॥ व्यथ दिश्वञ्चानि ्यागानयन कभः। त्रवीनमू याग লিপ্তাভ্যো যোগা ভ ভোগ ভা ভিতা:। গত গম্যাশ্চ বৃদ্ধিলা নাড্যে ভুক্তাম্বোচ্তা: ॥ ইতি **ज्यं।जिकान्डः** ॥

र्याणेह्दः भृ सन्भान्। इज़ि नदः द्रञावली ॥

যাগজ স্থী অগুৰু। ইতি ভাব-পুকাশা। যোগজাতে ত্ৰি।। যাগজঃ পু• অলৌকিকসন্নিকৰ্ষ- विश्वान । म व विविधः । युक्तः
युक्तान । यथा । আज्ञोकिकः मेविकर्ष जि विधः भित्रकी विष्टः। माभाग न कर्णा । ज्ञान न करणा (यागक ख्या ।। ज्ञान विष्ठा । जिन्ननिम्यक ज्ञाम (वाष्ट्र मानगुर्शनकर्णा । विषयी यम् । विग्रव वर्णाना ।
भारता ज्ञान न करणा । वाण ज्ञान

ংপ্রোক্তো যুক্ত যুঞ্জান ভে-प्र**ः**॥ यूकमा मर्बना ভान हिस्राः সহক্তো হপরঃ ॥ ইতি ভাষা-পরিছেদঃ।। ঞ্চা। যোগজ ইভি। যো-গাভ্যাস জনিত ধর্মবিশেষঃ৷ শুক্তি পুরাণাদি পুমাণক ইত্যর্থ:। যুক্তে-তি। যুক্ত যুঞ্জান ৰূপ যোগ দ্বৈবি খ্যাৎ ধর্মস্য দ্বৈবিধ্য মিতি ভাবঃ । যুক্তস্যেতি। যোগাভ্যাসাবগ-ত্যা বশীকৃত সমাধি সমাসাদি ত বিবিধ সিদ্ধিযুক্ত ইত্যুচ্যতে। व्ययम् विभिष्ठेरयागवद्वारं गूक ইবুচ্চাতে। সর্বদেতি। চিন্তাসহ-काब्रे॰ विदन ठेऽर्थः । ভान॰ मर्ब विष-যাণা॰ পুত্যক্ষ•। অপরো যুঞ্জানঃ । विवयवताव्खत मानम संस्विधः व्ययक गुळान উচ্যতে। চিडा ब्रानः उप्ति काइन छर महकादार ज्व

भूषा व्यवाह्य विशुक्के । वर्षान् मनः भुग्नाके विद्याजी जार्थः । देखि नि भारत्यकावनी ।।

रगणनान की हलननान। यथा।
रगणनान विकी छ रगणनान भू
रिज्युर । यञ वालु अधि भरणा ।
राणना विकी छ रगण । देखि
सानत प्र प्र विनिवर्त्य ।। देखि
सानत प्र प्र प्रापः ।। रगणा प्र प्र विनिवर्त्य ।। रगणा प्र प्र विनिवर्त्य ।। रगणा प्र प्र विनिवर्त्य प्र विनिवर्त्य प्र विनिवर्त्य प्र विनिवर्त्य प्र विनिवर्त्य ।
राण प्र प्र प्र विनिवर्त्य । देखि स्था कानीया । वस्र विकास प्र विनिवर्त्य । देखि स्था कानीया । स्र विवर्त्य । देखि स्था कानीया । स्र विवर्ण स्था ।

याननिकः भ् मः मानिस्यः। जिल्लागायः। गगारः २। इंडि कालादनी॥

तियानित्र की मृग्री यथा। यः नि-ते के रणावश अयम ए कशानकः । विक्रित्र भूकवः याकि यागनि-तुकि साठारक ॥ देखि का निका-भूत्रात्व अवश्यः ॥

रयागनिकः क्री नृजासीयार्य। छ त्रीयविष्मयः । रयागनाते इंडि ভाषार्थिया। जिविषः रयागनिक स्रान्तः वर्षामुखित्मा खुवः। विडीयः म्गर्णाणुः ज्वीयः खडनिर्मितः
।। रुव्यां अपूर्विष्ठातः रेपर्यं यस्त्रः
म्बद्धः । रुव्यां बः रुव्यक्षा माबः
। ইতি বীর নিজোদ্যধ্ত সিক্ষান্ত ।
रूप्याः ।।

रगामनीठे॰ क्ली (प्रयाना॰ रगामामन॰
1 यथा। मखन॰ रगामनीठेख नमा॰
नानीह हजार्यान विविध्यय । नावादीनामननेह हजार्यान विविध्यय । नावादीनामनेह हजार्यान विविध्यय ।।
रगामनीठे॰ न्यथाना मखना मखना मखना निर्माणनीठे॰ न्यथाना मखना मखना निर्माणनेह लगा मुद्रा प्रयापनीठेमा थामनीठेमा भूम रायामनिक्ष्य । प्राप्त प्रयापनीठेमा मखना मखना महार महारा हुए । प्राप्त प्रयापनीठेमा मखना महारा मुझना हुए । हि॰ जिला न्यामनीठेमा मुझना । हि॰ किला न्यामनीठेमा मुझना । हि॰ किला न्यामनीठेमा मुझना । हि॰ किला न्यामनेह ।

ागभाय। खी खगवजी। जा ह विक् भाषा। यथा। ठउक लोजि जग-यू भुटाहिछ: जुङ जमाहाय ज जुङिका गृहार। यहा वहि र्गस्त भि-य्य उर्चका या (यागमाया कनि म-क्लायया। इंडि बीडागवरड २० क्लाय अस्तय: ॥

शान्तर-वर्गायाजित्नाख्व•। विज्ञाय• | त्यागत्रवः श्र• नात्रवः। ইতি द्वाजः

निर्यण्डेश

शानकाः भू (यागार्थमहर्णादनकार्र्यदाषकणमः। यथा। यागकार्र्यदाषकणमः। यथा। यागकार्राण्ड कार्राण्ड (विशाद क्याण्ड (विशाद क्याण्ड (विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड (विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड (विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड (विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड (विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड (विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड (विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड विशाद क्याण्ड (विशाद विशाद विश

যোগবাহী জ্ঞী ক্ষারবিশেষ:। যথা।
বিজ্ঞান্ত স্বিজ্ঞান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত বিশ্বন্ধ ।
ক্ষান্ত হৈ ক্ষান্ত হৈ ক্ষান্ত ।
ক্ষান্ত হা

যাগসার: পৃ• সর্বরোগহরোপায:

। যথা। ধন্তরিক্বাচ। সর্বরোগ
হর• সিদ্ধাং যোগসার• বদাম্যহ•।
শৃণ সুশুত সংক্ষেপাৎ পাণিনা•
লীবহেতবে ।। নিমেষাদি ইবিঃ
কাল শিচন্তাভিঃ যান্বথো ভবেৎ।
ক্বায় কটু তিক্রাম্ম ক্ষাহারাদ-

ভোলনাৎ।। हिन्दी वेऽवाय वेऽायामे खर लाक भुबागद्राद्ध । छेहि र्जा-**ব্যতিভাবা**ই কর্মযোগাতিকর্য-गार ॥ वायू: स्नार्डि नर्याख जी-र्नाक्ष किन मःकृष्य। उँकान्न व्यवग ক্ষার কটুকালীর্ণ ভোজনাৎ ।। ভীক্ষাতপাগ্নি সন্তাপ মদ্য ক্রোধ নিষেবনাৎ। বিদাহ কালেভ্ক্তস্য मन्तरः जननागम ॥ ग्रीयका-**जि**र्फ द्राखिशि शि दः स्रश्_ि (पः श्निः। याद्य **ल**वन जिन्न एक मी-তাতিভোজনাৎ 🛭 নবাল পিত্লা-न्भ माराजिमानिर (मदनाए । व्यवहवाद्या स्विष्यं श्रुवहात्रन मू-খাদিভি:॥ কফ: পুদোৰে ভূক্তে চ বসন্তেচ পুস্প্যতি। পাক্ষ্য নূল সঙ্কোচ ভোদ বিষ্টায় ভোজনাৎ ॥ খরতা সৃগুতা হব রৌক্ষ স্তম্ভন শোষণ । শ্যাবত্ব মঙ্গবিশ্লেষ বল-नामामवर्खन ।। वारया विकानि छि যুক্তি রোগ বাতাত্মক বদে । দাহোম্ম পাদ সঙ্গেদ কোপ রাগ পরিসুবা: ॥ कद्देश नद्दिशक्षर ষেদ মূর্চাভিত্ট শুমাঃ। হারিদু• হরিতত্ত্ব পিত্ত লিক্সানি তৈ ল্যঃ ॥ স্লেহোপদেহ মাধুর্য্য চিরকীরিত্ব वक्षन । रिङ्मिण्ड मृष्टि मः याज

শোথ শীভত্ব গৌরব ।। ৰঙু নি-দুভিযোগ চ লকণ কফ সম্ভব। হেতু লক্ষণ দিশগাছিদ্যাছ্যাৰিং हिरायकः॥ नर्दस्यू नमूर्भमः बिनिक् नामिशाञ्जिः। (माय ধাতু মলাধারো দেহিনা দেই উ क्षय वृष्ती विशर्यप्रशः। त्रमामृद्याः म মেদোস্থি মজ্জ শুক্রাণি থাতব: ॥ বাত পিত্ত কফা দোষা বিমূত্রাদ্যা মলা: মৃতা: ৷ বাযু: শীতো **লযু**: স্ক্র: থরো ককো १ ছিরো বলী ।। भिन्न गृन्न कर्षिक भान्ता । রোগ কারণণা মধুরো লবণঃ সিংস্কা ভক্ষ: শ্লেমাভিপিছিল:।। গুদশ্যে-ণ্যাশুয়ো বায়ুঃ পিন্ত পদ্বাশয ছি-ত । কফস্যামাশ্য স্থান কঠো-ৰু মূৰ্দ্ধ সন্ধয়: ॥ কটু তিক্ত কৰাযা-শ্চ কফ পিত্তাদি সংশ্বা:। কইমু লবণা: পিত্ত স্বাদ্ফ লবণা: কফ ॥ এতএব বিপর্য্যন্তা: नमारेयवा॰ रिष्ठ। मूक्षाना॰ मूथ(क्ववः॥ क्वाः मि गाक्रां ३१० व्यथायः॥ यागक्कम॰ क्री अनागजानयनागज-

त्रक्षां। यथा मनुः। दिवा वक्तराजा

शाल दावो समिन उन्गृरह।

(यागाकाम १न)था (हज भारता वक्ताका मिनार । चूरुन बिनाः । व्यक्ताका मिनार । चूरुन बिनाः । व्यक्तान हारमका का गठमा है। वक्ता मानी न (मामकाक । केंकिः भूमिनिक क्ष्युः ॥ व्यनिक । कन-भूमाम नक्ताम आवनः (यागः । भनीताम वक्ताम आवनः (यागः । भनीताम वक्ताम आवनः (यागः । मेनीताम वक्ताम आवनः (यागः । मेनिक क्षित्रीकामाः क्ष्रकः ॥ (या-गाकाम भनीन हिन्छ भानाम रागाकामकनः कृषा मीठाया न-काः उठः मृगम्यान्भी नारमा कन् भाम गन्न विक्रमः ॥ देखि क्षिः कार्वि ६ वर्गः ॥

रवागाध्यमः क्ली ছरणमवस्तकः। यथा।
रवागाध्यमं विकीजः रवागदान शुजिगुरः । यद्ध वान् प्रभिषः नर्मादः
जिथ् सर्वः विनिवर्ख्ययः । देजि मन्ः
।। जम् विवद्याः रवागदान नरमः
मुद्धेवाः ॥

পুযোজিতাঃ। ভবন্তি রোগিণা॰ শা- বোগারকঃ পু• নারকঃ। ইভি রাজ-ন্তৈঃ সুস্থানা॰ সুথহেতবঃ॥ ইভ্যা- নির্ঘটঃ॥

> रगानाकाः श्रृ हेन्प्रियार्थंडर मादव कर्मानामङः। यथा। यहा हि तन-निष्पार्थयु न कर्मत्रनुमञ्जलक। मर्व मःकन्न मःन्याभी रगानाका छहाः

हारङ । ই जि जिल्माक स्वागान छ व्यथायः।। की मृत्माक स्वागान ए। यमा भनः काइन मृहारङ ইजा-वार यद्गित । हिम्मुकार्श्व विमुद्ध रखारगान भन्ना निष्कु उर्थ माध्य स्वृह कर्माम् यमा नान्यकारङ ज्ञामिक व्य ज्ञान मर्वान रखाग विष्कु योन कर्मविषयां मह मकतान मन् ना ज्ञान स्वान रखाग विष्कु योन कर्मविषयां मह मकतान मन् ना व्यागान हिहारङ। ই जि ज्ञोने कायां जिथ्न समिते ॥

भ्यागामनः क्री तुष्कामनः। ध्रानामनः । ইতি ह्महन्मुः॥

যোগিদণ্ডঃ পু॰ বেকঃ। ইতি রাজ নির্ঘণ্টঃ।।

विशा की वागय्कानाती। जग-वजाः मधीक्ता वावत्रगाप्त्व।। मा काहि विशा । जामा मधा ह-जूःविष्टः भुशानाः। यथा। नाताय गी) गोत्री २ माकस्त्री ७ जीमा ८ तक्तिका ६ जामती ५ मार्वजी १ मूर्गा ৮ काजायनी ३ महाप्त्वी २० हखवणे। ३२ महाविष्ठा १२ महाज्या २० मार्विजी २८ वृक्त्वा-पिनी १६ जुक्तानी १५ विमानाकी ११ कपूरागी १४ क्कि महागी ३ व्यान यागिनी

জালা ২০ মৌদুনুখী ২১ কালরাত্রিঃ ২২ তপদিনী ২৩ মেখদনা ২৪ সহ-বিকুমাধা

२१ मरहारती

वात्रक्शा ७० महारका ७७ मु.जिः **०२ मृ**जिः ०० वृंजिः ०६ जूडिः ०६ शृक्षिः ३५ मिषा २१ विष्णा २४ वाषीः জ সরমভী ৪০ অপর্ণা ৪১ অশ্বিকা धर रगानिमे ४० डाकिमी ४४ माकि: नी 8৫ स्वातिनी 8५ स्वाकिनी 89 वा-কিনী ৪৮ তিহলেশরী ৪৯ মহাবঠী ৫० नर्बभक्षा ७३ वड्डा ७२ (को-मिकी co वृक्षांगी ca मार्च्यती cc कोगात्री ७५ रिक्मवी ७१ वेम्मी ७৮ নারসিংহী ৫৯ বারাহী ৬০ চামুখ্রা ৬১ শিবদূতী ৬২ বিষ্ণুমাধা ৬৩ মাতৃ: का ७८। ইতি वृष्मिनिक्षत्रभूत्राः ণোক্ত দূর্গাপ্রা পদ্ধতিঃ।#। অপিচ । वुकाणी विकालो ही लोबीन्तानी उरेथव है। कोमान्नी रेक्क्वी पूर्गा नात्रिनि ही ह कालिका ॥ हामूखा निवम्जी ह वादाशी कोनिकी छथा । भारक्षेत्री भाक्त्री ह क्यही जर्ब-भक्षा।। काली क्लानिनी (भक्ष শিবা শাক্সবী তথা। ভীমা শাস্তা जामत्री ह क्पानी हाषिका उथा।। क्या थाजी छथा माहा मधाशनी

शहाती। वात्रक्षा मराकाषी ভদুকালী ভাষ্টি ই কেন্দ্রী টো-शुहुला ए खा । इन्सायिक । हुला **চ**खवंजी हंखी बहादगर। शिवकंत्री ग वनविकातनी स्वी वनभूमिशनी छथा। मरनामार्थिनी रहती ह नर्व ভূতস্য দামিনী।। উমা ভারা মহা-निम्। विस्रवाह स्वा उथा। भ्राकाः रेननभूधान्या सामिनाको ह याः ক্রমাৎ।। তাভি রাভিষ্ণ সহিতা শ-তৃঃৰপ্তী ক যোগিনীঃ। পুৰুষে মঞ্জন न।। यः नर्वकामार्थनिकाय।। ইতিক। লিকাপুরাণে ৬২ অধ্যায়ঃ॥ 🗱 ॥ অ ্ষ্টবোশিন্যো ফ্থা। ততোষ্টপত্ৰেস্কুল न। भूकरपम्करपानिनीः रेमलभूबीः চণ্ডঘণ্টা॰ স্বন্দমাতর নেব চ ।। का नता विक भ्वां रि ठ्यू रिक् भुभ्क বেৎ। চণ্ডিকান্থ ধ্বাণ্ডীণ তথা का छ। पनी मूं छा ।। महारणोदी का प्रांकाल रेनर्थंड्यामिषु भूनदार । ইতি তবৈৰ ৫০ অধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ **তিথিবিশেষে দিখিশেষাবফিভ**ো গিন্যো যথা। বুঙ্গাণী সংস্থিতা পূর্ব भुजिभवनी जिल्लो। णाइयकी। চোক্তরে চ দ্বিতীয়া দশনীতিথে।। **इ** अाध्यय ह की बाबी क् किटेन

र्गानिदी

ठेव्यो बारणी जिल्लो। मध्यमाक बरगम्भाः वाताही मिन्ना छथा। यष्ठारिकव हर्ज्मणा विमानि गिन्हि মে ছিতা।। সন্তম্যা ানিমাস্যান্ত চীনুপ্তা বায়গোচরে । শুইম্বর্ম 📳 न्तरया क महानन्त्रीक वाहरवा व्या निनी मध्यार्थ रेनव गा हिंदु हि त्यर । इंडि गाक्तः 🖖 अपूर्णणः 🏗 🛊 ॥ व्यक्ति । भू 🗀 वर्गी रहाई जीना क्रांक भागः अब पाना मणी यारगऽ रवना स ाक है। जाक ॥ यश्री हर्जानी न 👙 वा ान অনি পূর্ণিনা। দিজী 💛 শন্ 💛 लेगान्धाः हार्द्धनी अल्ला वार्य न **७** बी (मदी मृठ)मा वन वक्त क्वी कार्यु कु । ३३, दस हि नी॥ इंडि (क्ष्रांडिक्ट) ।। 🕸 ॥ छ८ कानरवाणिनी यथा । लातः विमान দশং ধাতি ততো যালক ভুকিকা হ **ज़ाडी (उन मार्शिक अवस्थित)** যোগিনী॥ পুাঠী খালের ভ্তাশান ८भेग्यम् वास्त्रास्य वार्यस्थ मान राज्युं अयु क्याहि 🔂 पूर्विष নবলে গাং পৃষ্ঠে জিতে, ব্ দক্ষী গৈরি बाजभूबी।। क्रांक मजापम् छ ।। 🐠 🖰 অথ গোলিনী গ্ৰহ্ম क्षणी जिल्लो ॥ नादायनी ह रेन्स्र उ। ७ उपानः । अथानः मानुस्का

THE STATE OF THE S

रयानिशी क्षिति माध्याख्य । । अर्थार्थ जावन नाः हरिनाः नर्शनिष्करः॥ ण उल्हा भराविष्ठा (प्रवानामिश ু দুল ভা। বা সা মভ্যছন ক্ৰা যকে-रमा २ ज्झानिशः ॥ जामा मार्गः शुक्का वि भूतानाः मृन्सत्रीः निर्य। অন্যাস ভার্চনে নৈব রাজত্বশুভাভতে নর:॥ অথ পাতঃ সম্পাব ক্ত্রা সা व्यक्तिक मुज्य भागात्य नमानारः व्याप्रमाहश्य- ७ जः ॥ भूगवात्व मर माद्ध हूँ र करें दियक्षन हात्र श्रामा यामः ७७३ अर्थेऽ।८ मृतमाखन चख विद्या **र**्पर• भायया **अ**ग्राट• भन्न মন্ত লে লেখে। ভিমান্পদ্মে ন্ছ। ा अ॰ कि ान ममाहरत्र ।। भीरहे बरवी॰ महावाश श्वारयाम् वी॰ बनटः প্রিয়াণ পূর্ণচন্দ্র নিভাণ গৌরীণ বি-্টিরার্ব শারিণী ।। পীনোতু**ক জ**ন ा अल नर्स्या मञ्च नुना । 🦥 🐠 🕟 🗗 मृत्वन मम्यार भा-. १९४ विक प्र १। भून ध्रभः निरव-ेन्ध्र के एष्ट मूनमञ्जलः। शक्त ह े अध्याप्याः मकेश्रवः मूर्णाञ्चनः । भूष एउ जूबतमी जागह मृत गुम्पति । राष्ट्र जीगंत्रा कालग्रखः जिमकाल दित्त हित्त ॥ महोनुक श्रुमालन शादा (स्वी: भरा वृष: ।

माशास्त्रवालक विवय अवि । स्था जूला भाषा । विस्ता ह सुका महत्त निणीख ताजि जुलीकी । जूल्लाजा-্ষক মুদ্রা রাতি লা সাধকালাকে। जुनुवा जावकार्य जरा सार जुनी-७३: । पृद्धाः (मर्वीः नाश्वरतम् प्र-म्। भार। मिक म् छ।। मूहनरन সুমনসো জ্ঞাত্বাভিলসিত বদে । भाउतः ভितिनीः वाशि ভार्गाः वा ভক্তি ভাৰত: ৷৷ যদি মাতা ত ्षा विञ्चः प्राथः मूमानाहतः। ज्ल-िवः भार्थिङ यद्यम्माङ मित দিনে ॥ পুত্রবৎ পাত্তি ত লোকে সত্য সত্য সুনিশ্চিত। স্বসা দদা-व्याः कन्याः म्यानीय नागकन्याः हि-নে দিনে। যদ্ম দ্ভবতি ভূতঞ্চ ভবিষ্য-তীতি যৎপুন: ॥ তৎসর্ব• সাধকে-ন্দায নিবেদয়তি নিশ্চিত। যৎ ধৎ भार्शयर**७ मर्बः हरा**छि मा हित्व हिन् নে॥ভাত্ৰ**ংপাতিত লোকে কাম**-नानि मताभरेनः। जार्यात्राप्राप्ति ना (रवी नाथकम्। सत्तावृत्ता ॥ द्वा-(जन्मू: नर्ब बाजाना ने नाब ना ধকোত্তন:। ষর্গে মর্ত্যেচ পমতালে গতিঃ সর্বত্র নিশ্চিত।। যদ্দদ্দাতি ना (पर्वी कथिज्ः रेत्रव मकुर्ड ।

ত্যা সাৰ্দ্ধ্য সংভাগ করোভি সা 'भरका खमः स्चनाजी भमन छ।कृ। व्यम् था नव्य छि थुन । भाका छङा र्नेट गायन व्यक्त निर्मिंड वुक्तना भूता। नहीं जीतः नमानाम्। सर्गार श्वानां दिक छड: ॥ भूबंवर नकन कार्याः हन्तरिन र्यञ्जनः निरथट् । य न ख॰ उद्ध म॰ निथ्यारा श्र्यारा श्रास्त्रा र्त्रः ।। स्त्रम्रत्वाः भत्रित्मृ वङ्गाः विश्वाधवाः हन्त्व गञ्ज लिखाः। हीनाः भूकाः भीन **स**ठाः महाञ्जाः भाग-माः मरा काममूषाः विविवाः॥ ७वः याजा जाराप्ति । मधक थून मीन कि:। गन्नः भूञ्च त्रमरिक्षव जान्नामीः क म्लजः ॥ जात्र भागा गह मता-হরে পাবকবল্লভা। ক্তা যুত্ত প্র তিদিন জপেয়স্ত্রণ পুসন্নধীঃ।। মা-नार वाभा दिवम स्वाह जभ भूडमः। जानिमीषः कालग्रङ छादा ह माधक पृष्टा गदा ह मा-थका छात्र मृभुमन्। मत्नाह्र । ততো १ ई ত। পুসন্ন। সা পুঞাতি भार्थिङ ह यए।। यर्गमङ नाथकाय मनाठि नां मित्न मित्न। नावाभवः ব্যয় পর্য্যাৎ ছিত্তে ভতু ন্দাস্যতি ।। অন্যন্ত্রী গমন তস্য ন ভবেৎ न ग्र भी द्रिङ । यद्रार्डगिङ सम्

खबडी डि न **मः भयः ॥ इ**यः **७ क**ि छ। विका म्राभागा या मुत्राम्रेकः। खर दिस्त खक्ता ह वत्का १३ भः क्रायचित्र ॥ २ ॥ 🗭 ॥ जाजा 🕫 नाट् नाथनः व्यक्तः मृगूरेष्ठकमनाः श्रितः। भद्मा विष्ठनः (एवीः भूबायः नाष-कालमः॥ भागायामः यडक्क् मा-ययाथ मनाहरद्र । मरम् । माःमः विनः पद्मा शृक्षयिताः मगार्शितः। व्यर्घा महिष्ठे ब्रास्क्रन एक ग्रास्ट्रीमा सिर्देश पित्न ॥ भूठ **अवस्ताः** भोतीः भङ्ग विश्वाक्षताः लिएय । त्रकाषत्रवताः वाः णा॰ সর্বকানপুৰা॰ **ण्**ভा॰। এব॰ ধ্যাত্বা জপেন্মন্ত্ৰ নয্ত্ৰ সাধকোত্ত-भः। मश्रमिन जग डाई। ठाईम वि-विवहदार ॥ कारयन मनमा वाहा भू-बर्यह दित्न दित्न। जात्र॰ मागा ज्या क्ई : त्रक कर्या । उन्न हिः । आगह কনকান্তে তু বঙি: স্বাহা মহামনু:॥ जानिभीय अलग्रञ तिन एद्रा भरनारुव । भाषरकन्तु मृह भद्या व्यागाठि नावकानाय।। नाव्यकान्तु। रिन जा मृथ्वे। पर्जापर्यापिक छउ: । তত্ত: সপরিবারেণ ভার্য্যা স্যাৎ কান ভোজনৈ:॥ বস্ত্ৰ ভূবাদিক ভ্যু-ক্ত্বা যাতি সা নিজ মন্দিরণ এবং ভা-ৰ্য্যা ভবেষিত্য সাধকাজ্ঞানুৰপতঃ

া পাণ্ডাৰ্গা॰ পরিব্যব্য ত্রে-खाक विहक्षा । ० ॥ क ॥ जनः कारमध्दी वाक्र गर्वकाम कन शुन सार । भूगवर खुवरनणानी हागह कारमणिक छछः॥ वरङ् छार्या महा-मखः माधकानाः मुशायकः । भूईवट भवन क्षा एकंशत्व मूल्लाखन ॥ शिरद्वाहनासिः भुजिमाः विनिर्माय सत्वकृताः। भग्रा माक्क भुक्ताः भक्त भक्षना उठः ॥ महरेमुक नुः মাণেন নাসমেক **জপেছুধ: 1 ঘৃতে**ন भूमा भी भः भराहि मुमनाव्उः॥ कारमधी ननाकामी हन थ -श्वन (वाठनाः। मरा ताल गिंडः काष्टाः जन्माख निनीमूशीः॥ वरः ধ্যাত্ব জলেয়ন্ত্রণ নিশীথে যাতি সা তদা। দৃষ্টা ত্ সাধকঃ শেষা মাজ্ঞা• (रही ७ जा॰ वारट ॥ खी जादान भूना अरेना मम्बाद भामामिक छ-छः। मून्भम छना (नवी माधकः छावयय जना ॥ व्यवारेना ब्रिड (ভाग्नि भाउतः **भागारट जना।** गोड़। ब्राटः महिन्यरियं। मंड्रा ह वि-शूल भन ।। ानकात मुवामीन् পুভাতে যাতি নিশ্চিড । এব পু जिनिन जम्र मिषिः म्राट काम কপতঃ ॥ ৪॥ ঋ॥ ততঃ পটে বিনি- ∥

यान भूखनि बान ज्ञानकः। भूका वर्गाः शोबाकीः नर्वामकात्रः स्व णाः ॥ न्श्रवाक्तरः हात्राष्ट्राः वस्तरी-क शुक्रप्रकाशि । अव विभिन्न विश्व मञ एवं ह निर्मे मूख्ये ।। नह-म्तिन भूष्मिन बाजी भूष्मिन यञ्च । क्शुंक् व्न मीलो ह सम्। ग्रंकन ना षकः ॥ अञ्चल । जान्न नागा जला गह ब्रिजिनुमाबि भार ७७: विक्रि काया ठाडेमरुम् संस्थित्रकः वित्य पित्ना। भागाए पित्र शुन्। क्र-र्याट भूजारिकः भूछः। घ्उरीनः ख्या गद्गः शुक्रः खात्र्वा (भव ह II **जावसञ्च** काम विद्यान् गावनायां डि मुम्दवी। ब्हादा मृदः माश्कन्पुः नि-শীথে যাভি নিশ্চিতণা ভত স্তা মৰ্চ্ (राष्ट्रक्ता काठी समूग गालया। **म्मस्**क्षे। माध्यक्तुः ভावरयुन्छि ভোজনৈ:॥ ভূত্বা ভার্য্যা চ সা তমে ममाजि वाक्ष्ठि वद्ग । ज्यामिकं পরিত্যন্ত্য পুভাতে যাতি সা ধুর• ॥ नाथकाञ्जानुकालन भूगां जिल्ला दिन। निर्द्धान भाषात दिनि **विश्वः** न्यामाव नः भयः ॥ छाङ्ग छार्य्याः ख्**क छाक्षः व्यन**्था नन्गु छि भूत• । ৫॥ 🗱 🏿 छाउ। ९ न ८ माथन व्यक्त चग्रह भिव निवासी। (वहार्) जू-

अतमी कागृह भिषानि रञ्जा।। भावकम्। महोमञ्चः भूर्वयः मकनः **७** जः। मखन हमस्यः क्वा मून মস্ত্র বিথেত্ত ।। পদ্মাননা শ্যা-भवर्गाः भीताजुकः भरगवताः । (कामनानी ध्यातम्थी त्राकार भन म्राज्याः ॥ ५१ श्राज्या ब्रायञ्चः जर्मुक दिन दिन । मानाउ भूर्नि माः शाम्य विविवट भूकत्वट अमा।। म्यानिमीथ जलचा च मृहा छ। यन नाषकः। नद्रव न्नानः ज्वाद्। ना याि नाधकानमः ।। जूदा जार्यत गाथकः शिजाषदामिविदेश जलि । ভোগৈ मिं रेर्व ज्वगरिनाः शन्मनी সা দিনে দিনে ৷৷ প্ৰতিবৎ পাতি ত লোকে নিত্য স্বর্গেচ সর্বর। ত্যক্তা ভार्याः ভढाउ। भ नाथकन्तः नहाः रिभूरय ॥ ७ ॥ १ ॥ ७ र जा वरक र महा বিদ্যাণ বিশ্বামিত্রেণ ধীমতা। জ্ঞা-प्रायाः जाविका विष्ण वन् । हाकि-दन। निर्य।। मञ्जुष्ठ। भूपरास्त्र मङ्ग भाषा निवित्त भाषकि भूषा । सङ्ग বিদ্যেহ কথিতা গোপনীয়া পুষর ড়ঃ। অন্সেকেস্য তল্প গড়া স্থান भृर्वदराहरतः । मूलमाखा **नकन**ः बर्गाह भूमसारिङः ॥ विकाला নোহিনী গৌরী বিচিত্রান্তর্গারি

गी॰। विषिवासङ्जा॰ त्रम्या॰ नर्खनी विनश्चादिनी ।। এव भारा करनामः ত্র॰ সহসুঞ্চ হিনে দিনে। না শসাপ-शिक्षः मःभूबाश्याः मीनः नित्यमः (य८ ॥ शक् ठन्सन जाष्ट्रमः प्रमाखः रिमा मुना व्यः। मान (मकक जा॰ छ-क्या भूबस्य जाध्यकाखमः॥ मा-मारख रिवमः भागा सर्याह भूवनः महर्।। चर्कतारको छय 'मेजा कि किट नादक जलाम !! जूएए गाद² ক মত্বা যাতি সা সাধকালয় বি-দ্যাভি: সকলাভিশ্চ কিঞ্চিৎ মো-র মুখা ততঃ ॥ বর॰ বর্য শীযু• ত্ব যত্তে মনসি বৰ্ত্তে। তৎ শুত্ৰা সাল ধক শুেষ্ঠো ভাববেন্মনসা বিযা !! माजद्र जिल्ली वाशि जार्या। वा প্রতি ভাবতঃ। কৃত্বা সম্ভোব্যেন্ড-**छ्या निव्नी ७९ क्राज्य ।। मा-**जामग्राच्यि मा प्रवी भूववट भा-ভি তংমুদা। স্বৰ্ণত সিদ্ধিবুব্ং मनाजि ना नितन मितन।। जिनिनी यरि आ कन्या (एवम्र नागकन्रकाः । त्राक्तकार अभागीय प्रपाठि गा দিনে দিনে ॥ অতীভানাগভাণ वार्डा नर्दा कानाजि नापकः । ভारता नता यमि ना प्तवी ममाजि विश्वाधनः ॥ व्यव्यति । क्षिणि

দদাতি কামভোজন। ধর্ণশত সদা छोम दराजिमा धुत शिर्य।। यर्थ वाक्षि ७९ मर्बः ममाजि नाव मः भयः ॥ १ ॥ 🗱 ॥ सङ्खिन्ताः भुव-क्रांशि সাवश्रानावशात्रय। अस्याम मभानिथा जुड्डंशाख खिय भूमा ॥ **७**ट्डाष्ट्रेम्य बा**लिश्य क्**र्यग्रम्याना-किकः भिर्य। कीवन्यामाहिकः क्वा भार्यस्व गुममधीः॥ मूबद्धिक मः ক্ষাশাং নানা রত্ন বিভূবিতাং। মঞ্জী-র হার কেযুর রত্ন হণ্ডল মণ্ডিতা । , এব॰ ধ্যাত্বা इপেন্মস্ত্রণ সহসুস্ত দিনে দিনে ॥ পুতিপদিন নারভ্য পুন্ধ-्षट अनुमारिजिः। धूश मी**श वि**ः श्रातिक जिमका भूकत्यग्रुरा ॥ भू र्निमाः नाला गक्षारिनाः न्बरय ना-ধকোত্তম:। যৃত দীপণ তথা ধুপণ देनद्वमुक्ष ग्रानात्रम् ।। त्रात्वो ह पि-वरम क्रमा व्यापाह मुममाहितः। পুভাতসমযে যাতি সাধকস্যান্তি-कं धुतः ॥ भुनमयमना ज्वा छायः यमुखि ভোজনৈঃ। দেব দানব গন্ধ-र्ब विम्राष्ण् यक बक्रमाः।।कन्रां छी तम् ज्याजिः माधाकन्तुः मूछ मूर्छः। व्यं क्षिणानिक मुन् मिन् मन দাতি সা ধুর•॥ স্বর্গে মর্ত্ত্যে চ পা-তালে যদ্বস্ত বিদ্যতে প্রিয়ে। আনী

य मीयाञ्च मञ्जः नात्रकाञ्चान्कर्यः उ: 11 वर्गणंड॰ मर्रा ठरेय परा डि म। हित्न हित्न । माध्काय वद्गः पद्मा याजि ना निज मन्दित्र ।। उन्ता वद भुजारमन विव्रक्षीयी निवासयः। अः र्बछः जुन्दतः श्रीमान् नर्दाणा छव-**डि धुतः ॥ दिशा मार्चः उया ५ दि** माध्रक्तामु। प्रित्न दित्न। मञ्जु । তी-व्र भाषा छथा गहानुवाणि तिथ्न প্রিযে। বহিভার্য্যা মনু: প্রোক্ত: সর্বসিদ্ধি পুদাযক: ॥ এদা মধুনতী ত् मा अर्विमिक्षि भूमा शिया। छन् হ্যাৎ গুহুতরা বিদ্যা তব স্লেহাৎ **পुकीर्खिजा।। ৮** ॥ 🗱 ।। स्टब्रुवाह । भुउक माधन भूगा यक्तिरीना म्य পুদ॰। যমিন্কালে পুকর্ট্য বিধি-না কেন বা পুভোগ। অত্যাধিকারিণঃ क्वा नगारमन वमश्र (म् । क्षेत्रत छ -वाह। वमास माधायक्षीवाय स्वि-याणी जिल्लियः॥ जना यानश-রো ভূত্বা তদ্দর্শন মহোৎ সূকঃ। উজ্জ छि भागवा वाणि कामकाण विष्ण-य उ: ॥ ङ्रानिस्युक् उम॰ भूगि। मा-थराट मुममास्ठिः। जतन विधिना माक्षां अविष्ठां न मन्ययः॥ (ए-ব্যান্চ সেবকা: সর্ঘে পর চাত্রাধি-কারিণঃ। তারকরুন্ধণো ভৃত্যু বি-

যোগিনী

নাপ্যতাধিকারিণ:।৷ ইতিভক্তসারে र्यागिनीयार्थन भुकद्रगः जमार्थः ॥ ।।#।। मणविष्रम्भाउर्गङ्मभाविष्य-यः। यथा। च नक्कवः धुतः कृषा अव .তৰ বিমিশুবেং মক্ষেন হড়ঃশে-(वा मक्वाहि विविक्तः।। यक्का পিক্লা ধন্যা ভামরী ভদুকা তথা । উन्नः निष्का मक्ति। व त्यामिन्त्रश्ले **প**कीर्खिंगः॥ जरिएक सङ्गा शख **भि**या खुरेकक विश्वकाः। भून काः क्।िमवर्ज्डा ठकवट भन्निवर्जनाटः॥ षिष्ठ । রোহিণ্যাদী विद्वावृज्या मक्लारने यथा कमः। उन्। निका नक्ष्णे व अधिनाहि ज्य भूनः ॥ विज्ञाना मल्लम्या। मणा वर्षे छ वर्षे-ত্রি-শক্তাগ• কৃত্বা বিনির্দিশেশ। যস্ত यम्। हि यद्यरं छङ्खागः भुकीर्खि ত ।।।। ফল যথা। মক্লা মক্ল ধত্তে হতুল ভোগ সূথ তথা।গো গজাম্ব সহস্যাণি গৃছে তস্য দিনে मित्न। शिक्ना विविधः मृःथ महिः ন্তাদি সম্ভবণ। দদাতি নাশণ শত্ৰু **(**ज्या थन थान्य शका दिकः ॥ **थ**न्या ह अञ्ज मञ्ज भर्तज विषयामिकः। भवुष्डा तक्ष निडा भाव्य **अक्षिशानायर ॥ ज्ञामजी विविधः** मू: थ मड: महम मसुव । व्यवसा

हमागा

खग्र मूर्किक विधिना (भूतिज छ त्रं।। जिष्का विविशाम् शत्रातं त्र मानाहि मानाइथान्।। जुडे। क्र-धुका निजा पूर्ण इः मृग्हावाछ। উল্লা ব্যাধিকলী লোকা নিজ্য माना खरलुरा।। उन्न यकि जना-्याजि मुन्दा मृगु श्वाराज। विका क नाश्याद नर्ब मञ्जाद्व श्रम-रिकः ॥ यम्। जुडे। खत्व मिन्ना ननी उना करत दिया। महत। म करें। पर उ छाड़ याना धनाहिक।। रेनव खावडा नमा निज्यः गृही कृकः क्रे यथा। इन्त्राप्यागर्गम् म।। (यागी पु॰ (यागयुकः। उमा वामः नामि.सथा। सर्गत्वार हे गृह १३-(१) जुनित्क ठमंत उथा। नम ভাবনা যস্য স যোগী পরিকীর্ভি ড: ।। ইতি বুন্ধবৈধর্ত্ত গণগতি খণ্ডে ৩৫ অধ্যাব:।। অপিচ। আ-ত্মোপয়েন সর্বত্ত সম্প্রাতি (या २० न। मूथ वा यमि वा मृत्येण न रयानी नद्रस्य नुष्टः ॥ इंडि

ভগবদ্ধীতাযা। १ ७।६९७। व्यनाह। क्षवयकेतूः। जगदर् एव তারিম্ব ছিরণ্যাদি নিস্না চর্ রো স্থাশুনা: প্রোক্তাযোগীনান ক উচ্যত।। कूर्य उवाह। मर्बकर्याणि

जन्त्रजा नमाधि नव्यः निजः। य व्याख विकला सागी ज जब्रामी न नक्षमः॥ नर्द्वा मानुमागास्र दि বিধ্যু শু,ভি দলিভণু। বুক্ষচায়ু/প क्रवार्गा निश्चित युक्त ख्रु भारत ।। वा २ थी ७ । विधिव (चरान गृह इ। -नुम मानुरबर । उनक्रवीगका रख रवा रेनिष्ठरका मन्नगास्त्रिकः ॥ छेनाः भीनः **भाषकण्ठ गृह** छ। विविश्वा জবেৎ। খণানি ত্রীণু গণা ছত্য ত্যক্ত ভार्या धनाहिक ॥ এकाकी यस वि हरत्रपुराजीनः ज स्वाक्रिकः। बहुष া ভরণাযত্তঃ লাধকোসৌ গৃহী ভবেৎ ।। ভপ ত্তপ্যতি যো হন্যেন যজেদে वान् जुरहाि ह। यायार्यं हिव नि. রতো বন্ছ ভাপসোমতঃ।। তপ-সা কর্বিতো হভ্যর্থ যন্ত ধ্যানপরে; ভবেৎ । সংन্যাসিক: স বিজ্ঞো ৰানপুস্। শুনে স্থিত:।। যোগাভ্যা मद्राठा निष्ठा माक्ककू बिंखिनुगः r खानाय वर्डाउ ভिक्कुः (भावार 📗 পর মেষ্টিক:।। যশ্চাতা রভিরেব স্যা∙ ∦ যোগেশ্বর: পূ॰ ত্রীকৃষ্ণ:। যথা। বুহি মিভ্য তৃপ্তো মহামুনি:। সম্যাদর্শন সম্পন্ধঃ স যোগী ভিক্কু ৰচ্যতে।। क्कान मन्त्रामिनः किहिद्दम्मन्त्राः সিনঃ পরে। কর্মসম্যাসিনঃ কেচি-षिर्विथाः भवस्मिष्ठिकाः॥ यागी ह | याम्यद्री जी वक्षाकर्काहेकी।

ত্রিবিধা জ্ঞেবো ভৌতিক: সাংখ্য **এर ह। ज्जीरया २न्डाम्मी (मा-**কো যোগ মুত্তম মাস্থিত:।। ইঙি किष्पं २ व्यथ्रायः ॥

रवानीयतः ज्ः रवानिनारमुक्षः। मञ् याद्धवद्गामृनिः। यथा। या-गीयवः याद्धवद्याः जःभूषा मुनरग श्युवन्। वर्गाभुष्यज्ञानाः वा दृष्टि थर्यान(नवडः ॥ यागिनाः जनकाः मीना॰ स्थारः (मुष्ठ सः याख्यवद्गारः जिल्हा है जिलाकता॥

रवाणीयत्री जी मूर्गा। यथा। रवाणि **णकारया (रवा: मन**हास खला-वनाः। (ठवाः यामी उथा (यागी केषती भुज् भावना।। जारवासिय भनाषीना॰ সংযোগো यात्र उठ्ड-**७। ७वा॰ वा या** अनात्वागी (यारेग वर्ष) विरवाश्या ॥ इंडि (ए-बी भूबारा ८० व्यवप्रायः ॥

(यारामः भू याङ्करम्। ३७ (र्भव्युः॥

रिशारमञ्जा कृष्य नुमारा। धर्म नर्मान । सा॰ काष्ठा मधुरनारभर धर्माः क॰ শরণ গভ:।। ইতি শ্রী ভাগবতে ১ करक > अथ्यायः ॥

ইভি ভাবপুকাশ:॥ खारगर्ड॰ क्री जीजकः। ইভানর:॥ रवागाः ज्ञी अकिनास्मीयश् ॥ वृक्ति-नामिष्यः। ইত্যনরः।। (याग्रः जि भूवीगः॥ (यागार्यः॥ উপायी॥ भकः। इंजि मिरिनी (रुप्रहम्पुण्ड ॥ भूष्रमक्ता भू । ইভি মেদিনী।। বোগ্যতা জী ক্ষমতা।ইতি লোক-शुनिष्दिः ॥ भाद्रात्वाधकात्रगविष्मः বঃ। স তু পদার্থানা॰ পরস্পরস্থ-দ্ধে বাধা ভাব:। ইতি সাহিত্যদ-र्नाः ॥ न्यायमाज उर्भागार्थ उर भमार्थरखा । यथा । भमार्थ ठव ভৰভা যোগ্যভা পরিমীর্ভিতা। ইতি ভাষাপরিছেদ:॥যোগ্যতা॰ निक्नयं निमार्थ इंड्यारिना । এक्পদার্থে হপর্গদার্থ সম্বাদ্ধা যোগ্যতা ইভার্থ:। তজ্জানাভা বাচু বহিনা সিঞ্চ হীত্যাদৌ ন শা-क्रवाधः ॥ नत्त्रज्ञा (ाग्रजाया জ্ঞान भाषात्राधार भाक् नर्वे न সম্ভব্তি বাক্যার্থস্যাপুর্বত্বা-**पिंडि किन्न उडिं भरार्थ खरा**रा जि कृति न भाग क्षा क्षा कृति-মিশ্চয ক্পস্যাপি যোগ্যতাযা कानमा मस्यादा । नवास (याः

गंडा खान न मामखात कान गः विक्रिना निक्छि इंड्यामी माक विक्रिना निक्छि इंड्यामी माक् विक्रिन क्षितकाम माम्स्वा-या निक्सिन क्षु जितकाम माम्स्वा-यः । छम् जान निक्यमं लोकिक मिक्योंकन (माय विल्यांकन) खानमात्व क्षित्रक्षकदा मास्स मुजिवक्षकदा निक्स स्वाग्रज खा-न विल्याह माम् विल्या १ निक्स इंडि वम्सि। इंडि निक्सासम्ब्रूमः वनी ॥

याग्रा जी व्यन्तामः॥ व्यक्तिविद् १ इति भिष्टि ॥ निजान्तामः ख्रियायः। चूत्रनी २ नुभः ० व्य- १ ख्रामः ६। ख्र्ष्ट्रः थन्द्रिका। हैति (हमहन्मुः ॥

(पाकन की भवमात्रा।। हर्श्काणी
।। यागः। ইতি मिहिनी।। सः।।

हाहणाकृतिकः नक् स्वयस्य णयः

मृजः। उह्नज्कः धनः (भाकः का
एना धनः नक्षिकः।। उह्नज्कः या
हनः नग्राहिन्गाहि मानणाकः।। अ
न्यात्र (वाजनम्म्यूरेस (याकनः

निविधाविः न्यः मर्मुरेस विका याकनः। यथा। यावाहरेत व्रक्ष्णा मर्गुर्तिः। द्रस्य क्रुन् वि व्वजीर যোটক

म्थः (काणः जर्म विजयन (ज्याः ।
। न्याम्याजनः (काण द्रज्देयन
ज्या क्रांगाः म्लाकन दःणः ।।
इंजि नीनावजी ॥

श्वासनगक्का की कल्ती। जीना। जन्नवि। इनि मिहनी।। श्वासनगिक्का की जन्नवि। इनि स्वि। स्वासनगक्का जिल्लाना सः।। जीना। श्वासनगक्का जिल्लाना शार्थिक शुन्तार्यन कान्नवार्था। क्रमभि की मिक्षिष्ठा। इनि

... **ज्ञिका जी म**िक्षेष्ठा। ইতি

ाक्षिता हो। यागकात्रना। ইखि व्युष्ठ
रूक्षणाणा त्रन भुजारयन निष्कः॥
रमाष्ठनवृद्धी जी मिक्षिष्ठा। ইजामतः॥
रमाष्ठिकः जि कात्रिज्याकनः। व्यान स्यूक्षणाणाः कर्मान क भुजारयन निष्नमः॥

यावः भू यावेन। यान भिडि यावः विवारः त्राणियावेक गुरु-यावेक नक्ष्ययावेक गगर्यावेक व-र्गावेक यानियावेक वर्ग्यावेक जिल्ला मध्यिषा यावेकः। उन त्राणि यावेक युष्ठेक नव भक्षम विवारण विवय मुख्क यागा नि-

विवाः । छरार श्रेमितिरा যা। বডষ্টক বিকোণক বি বাদশক মেব চ। পরস্পর জন্মরাশে ভ্যক্তা कन्ता क्रमात्रायाः ॥ वष्डेरक खर्वः क्तारवा देवधवाः मृज्र द्वव वा । बि-कारा भूध हानिः म्राट धनहानि र्धनवराय ॥ भूक्षत्र मा हेर्स कन्र। क-न्यायाः वध्यक भूमान्। भूजः वजः क्षेकः (क्रवः (नाषार्ह म्वनः ভरद् ।। नव शक्षाम । भूषमा गृहा८ मूख গৃহে সুতহা চকন্যা ধর্মো স্থিতা সু-তবতী পতিবল্লভা চ। দি দাদশে ধনগৃছে ধনহা চ কন্যা রিপ্তে স্থিতা थनवर्जी পভিবল্লভা চ !। (यार्टेक मक्षक (भव जूलो युग्रहरही उबा। नि इ यही मना वाक्री मृजि खबा-<u> व्</u>वीहिवः॥ त्राज्ञत्याठेक मारु भीलि-, ण्ड॰ ना९ नग मश्रक । हर्जुर्च मन्यक रेवव ज्ञीरेयकामान ज्या ।। ইতি রাশিযোটক বিচার:।। 🕸 ।। গুহযোটকে গুহুশত্র যোগে। নিধি-षः। कन्ता वत्र त्राम् । विश गृहरयाः শত্ত্বে গুহ শত্ যোগঃ। ভত্ত বিবা-र्ट द्यागारि: कनः। उहाइ **गर्गः।** নরণ ভাব বিরোধে গুছ রিপুভাবে ठाहिरद्रेन (द्रागानिः । इंडि गुरू-

CAIDS.

रवाहेक विहा**त्रः॥ #॥ जल्रारवाहे**-काः পুर्यक्षवयामनिथिखाः। ইঙি হ্যোতিষ ।। পুছান্তরে জোটকশব **म्हदर्शञ्**ञीयाहिम्ह ॥ যোতু: পু॰ পরিমাণ। ইত্যুগাদি-কোশঃ য় যোত্র• ল্লী যোক্ত•। ইত্যমর:॥ याका पुः यूक्कर्खा। उदमर्यायः। किरे: २ (वाष: ०। इंडापद: ॥ याथः पु॰ याषा। ইত্যমর:॥ रगाधन की यूका। व्यक्त। यूव दाः তো ভাবে कরণে চানট্ পুত্যযেন निश्चम ॥ र्यायमः द्रावः भू चार्यानाः रयाधाः ना॰ युष्कायाञ्चान॰ । उৎ भर्यप्रायः । ক্রন্দন•২। ইত্যমরভরতৌ ॥ र्यात्थयः भुः याका। यायणदार কেয পুত্যযেন নিয়ম:॥ ध्यानलः भू॰ मम्यावित्मयः। ७८-**প**र्यऽायः । यदना**तः** २ जूर्नाञ्चयः ० (एवशानाः ८ जाषानः ६ वीखनु-শ্লিকা ৬।ইতি হেমচন্দু:॥ यानिः श्रुः जी चाहतः। इंडि सि **पिनी ।। काद्रशः ॥ खनः। ই**ভিছেম-চন্দু:।। উৎপত্তিস্থান । ইতি ত্রি-কাওশেষ:।। ভগ॰। ইভ্যমুর:।। **७८** भर्यायः । वद्राक्षः २ ५ भञ्रः ०

म्बर्गिनित । ३ कि वासनिर्यक्तः ॥ व्रिजिग्र॰ ६ अग्रवर्ष ७ व्यथ्र १ অবাচ্যদেশঃ ৮ পুক্তিঃ ৯ জপথ-**२० मत्रकृषकः ३३ ष्यनुरम्भः ३२** পুক্তি: ১০ भुद्धी ১৪ ज-সারমার্গ-कः १८ मःमान्नमार्गः १५ ७ ७ ११ यदागातः १४ यद्रथुबः १२ द्रज्ऽ-क् २० व्रक्तिक्व २२ क्वाब १२ व्ययः २०। इंडि भद्रवृद्वादनी ॥ त्र जिमन्तितः २८ बात्र गृहः २৫ कन्म-প্ৰকৃপ: ২৬ কন্দৰ্পসম্বাধ: ২৭ কন্দ্ৰ-র্পসন্ধি: ২৮ জীচিত্র : ২৯। ইভি करोक्तः॥ म जू गर्जश्रायाः मक्षजि र्गाम ভॅबि । ইकि मुचरवादः ॥ शा जग्र नक्षण यथा । णुजः क्यं ठे পৃষ্ঠাভো গঙ্গন্ধন্ধোপমো ভগ: ৷ বা-**भाष** (क्ष्ट्र कन्याबः भूबाबा प्र-ক্লিণোমত: ৷৷ আখুরোমা গ্রেমণিঃ সুশ্লিষ্ঠ: সংহত: পৃথু:। তুস্থ: कमन वर्गा जः मृत्जा श्यापा नाक् जिः॥ स्त्र-কথ্র কপোয় শুলিকোদর **স**ন্ধিভঃ । রোমশো বিবৃতাস্যত দৃশ্যনাসো **২**তি দুর্ভগ: ।। শহ্বাবর্ত্তো ভগো य-স্যা: সা গৰ্ভ্ত মিহু নেছতি। চিপিটঃ कर्भवाकावः किश्ववी श्रम्हा छगः ॥ বৃংশ ব্ভেস পত্রাভো গলরোমো-इनानिकः । विक्रेः अविवाकाता

वरगद्ध खथाण्डः ॥ इंडिकाणीथ (७ ०१ व्यथायः ॥ इ ॥ व्यभित्र । णद्दनान्डाक्डि योनि खावर्डा नात्र कीर्डिंडा । उन्ना ख्डीय दा-वर्ष्ट्र गर्डणया भुडिश्विष्ठा ॥ # ॥ व्यथ यानिद्धागाधिकातः।

७क त्यानित्राभागाः निमानान्। रा मिथ्राक्षत्र विदाताच्याः मृश्टिर्पादिः পুদ্বিতাং। আর্ত্রাদ্বীযাত শ্চাপি रिश्वाका मूर्र र्जाण गराः ॥ # ॥ ह्या-शिनीना॰ यानीना॰ नामान्या**रु**। উ দাবর্ত্তা তথা বন্ধ্যা বিপ্লুতা চ পরি-भुजा। वाजना (वान(या क्या वाज <u>र्मोर्यन भक्षशा। भक्षश भिङ्का मि</u> (यन जवामी लाश्जिक द्रा। भुमुः সিনী বামিনীচ পুত্মী পিৰুলা তথা ॥ व्यञ्जानन्तः कर्निने ह हद्रगानन्त প্रिका। অতিপ্রাপি সাজেয়ালে याना ह कका पिनाः ॥ थए। छिनी ह गर्जी मृठी वळ्ना जिल्लाविनी ॥ अ-रिक्ठा रयानयः (भुक्ताः अर्बरमाय পুকোপতঃ ॥ ৠ॥ অথ ভাসাণ লক্ষ-गान्। ना एक निन मृतावर्जा तकः क्र्ह्न मूक्छ । वक्षा नक्षार्वता (छः-যা বিপ্লুতা নিত্যবেদনা।। পরিপ্লু-তা या ভবতি গ্ৰাম্যখৰ্মে ৰুকা ভূশ । वाउना कर्मण उन्ना भ्वनित्छाम

পীডিতা ৷৷ চতস্মূপ চাদ্যাসূ **७**वड/निण (वरनाः। चनिण(वरन) **স্তোদাদ্য:।। বাতলাযা**ণ ত্বভিশযি-তা বাত বেদনা বোদ্ধব্যা। বাতলা हे**ज्यार्थाक्षात्रनाहः कत्राख्यकः** যস্যা: সালোহিতক্ষরা। পুসু সিনী সু-সভেচ কোভিতা দু:পুদাযিনী॥ ক্ষোভিতা বিমর্দিতা সু•সতে মহা-नार हाराउ पृः शुकारिनी पृष्ठे शुक्रनः नभीवा ॥ भवाउ मूर्प्तरब्धीर्यं वा-भिनी ब्रबना यूउ·। शिउ· शिउ• হন্তি গর্ভ পুএত্নী রক্ত সংস্বাৎ।। পুএ শদে৷ ২ত্রাপত্যোপলক্ষকঃ ॥ অত্যৰ্থ পিত্তলা যোনি দাহ পাক জ্বান্তি। চতস্ম্পি চাদ্যাসু পি-ख निक्षाहुर्या ज्वर ॥ ॥ यज्रा-नन्ता न मस्डायः शुामाध्यस्यं विन्त-**তি। कर्निग्राः कर्निका खास्त्रीत्मन्त्राः** সৃষ্ট্যा পুরাষ্তে । কর্ণিকা **মাণসস্** কর্ণিকাকারে। গুস্থিঃ। মৈথ্নে চরণা-পূর্ব পুৰুষাদভিরিচ্যতে। অভিরি-চ্যতে রলোমুঞ্জি ইত্যর্থ:। বহুশ শ্চাতিচরণা তথাে স্বী জ্বণ বিষ্ঠিতিঃ বহুশ: বার• বার• অতিরিচ্যতে ভ-যোঃ চরণাভিচরণযোঃ। শ্লেমুলা পিছিলাযোনি: কণ্ডুযুক্তাতিশীতলা । ठउम्यनि ठान्।। मू (न्य निव्य)

भूषा ভবে८ ॥ 🛊 ॥ ष्यनार्खवा सनी थ की अबनीमां ह रेमणूरन। व्यवनी देव ए उरने युज्या जा व्यव वक्ता थे ।। चिषिनी मार । महासिंदु गृशेजाया वाबाया व्यक्तिनी खरवर । महासिद्ः भूकवः (उन गृशेजाया बालायाः मृज्ञयानि ছिनु।या व्याख-नी व्यथवल्लयमाना त्यानि र्वदि ॥ বিবৃতাতিমহাযোনিঃ স্চী বজুাজি-भःवृठा। मर्वनिक् ममूर्थानार मर्वः দোৰ পুকোপনা।। চতসৃষ্পি চা म्राम् मर्वित्र निष्मंन ॥ 🕸 ॥ व्य-नार्ता यानी ब्राह्। शक्षानार्था ज वडीरु रयानयः जर्दासायकाः। शक् थञी পুভৃতयः॥ 🗱 ॥ व्यव यानिक मरग्र निरान भाष्ट्र। रिवासशाहः ভিক্রোধাদ্যাধাদভিদৈথনাৎ । का जाइ नथ महारेन्ड ब्राजान्डाः व-**लि**जा यथा ॥ वाजान्ताः क्लिजा यथा।यथा निरान स्रिशा वा जाराः ।।।।। রপমাহ। প্য শোনিত সঙ্কা-**ण वज्रहाकृ जि न**विज् । जनयस्ति यहा (यात्ने नाया कन्तः न त्यानिकः য়া **লস্চাকৃতি সন্ধিভ লস্চাকার**। কারণ। গুড়ক মত্র বিশেষ্যে বােন্ধ-वाः ॥ 🗱 ॥ वाजनाति (ज्यान क्रा **८७६ मार । क्कः** विवर्गः सुविजः

वाञ्चि छ विनिर्मित्। मार् द्वान ম্বুর মূক্ত বিদ্যাৎ পিত্তাত্মক ভূ ক্ত ॥ ভিলপুত্র পুতীকাশ- কণ্ড্মন্ত क-काञ्चरः। সर्दविक् सभागूकः निः भाषाज्ञक खर्दि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ व्यथरवानित्रागानाः हिक्टिना । ভর বন্ধ্যা চিকিৎসা। ভস্যা লক্ষণ भारु। वक्षा नडीर्खना एकत्वि । **७७: পু**थमाञा नष्टार्खेबा हिकिट्**मा**। ष्यार्ज्या पर्यात नात्री मूट्म्याम् (मृद्ध-ত নিত্যশ:। কাঞ্জিকঞ্ তিলান্মা-यानुरियह उथा पिता हैकान वीज मडी हशना ७७ म्मन किन्न यवण्-रिकः। সমু क्कीरित ई खि (यानिगर्जा षम् नम् अनेनी । रेकालः करू जूबी । **চপ**ला शिश्लनी । स्माना मस्नक्ल॰ । কিশ্ব সুরাবীজ।। পীত জ্যোতি-ঘুতা পত্ৰ• রাজিকোগাসন• ত্র্য-হে । শীতেন প্রথম। পিষ্ট জ্মুমণ कनरमञ्जूद ॥ (ज्याजियाजी करेजी वृक्कवित्मयः कत्रशे इंडि लाकि। श्यमा मूर्या ॥ 🕸 ॥ व्यथ वक्षा চিকিৎসা। বলা সিতা সাভিবল। मध्कः वर्षेत्रः णुक्षः शक्षरकणत्रकः । **७ ज्या है की त** घृटि निंशीय वक्षा जून्यः नियठः भुज्**छ । अ**थगङ्गा क्षायि। मिक्षः मूक्षः घ्छादिछः।

बर्गाणक्ता भाठः भीषा गर्ज वशां हि॥ भ्रायाष्ठ जन्मामा मूल ्यम कन्या। शिक्षा शीषा 🐃 🗿 গর্ভণ থক্তে ন সংশয:।। 🕶-😥 🌼 পাতক্যা জসুমানি বটাল্পু-_মা বালোৎপল পথে। যুক্ত মে-ু দ্গ**ু হ• প্রুব• ilঞ্চা যাবলা পিব**ু ি প্রাপ্তল জীরকেণ সহিত্ত ়। শেভযা বিশিথপুর্যা 🍯 ५॰ जनयञीष्ट नानार्था। ब्या भव्रशृःथया जरु ॥ भनाममा भिट्ठा मूर्यान াবা প্ৰমবাপ্নোতি বী-्रः भयः ॥ भ्रविभित्रीभूवः हिंब कलमा मन्यस्यः। ज्य निक्रीवीकः कन्ताः न ः। প্ৰমঞ্জারী মূল॰ विकृ ाकिनी महिजा। वज्र-🎋 🦯 शीजा कन्ताः न नर्द्वथा অমজারী পতজিব্যা ত্র-কন ব্যাপ । ইশালিছিনী পচভারি-🐃 🕕 🗯 ॥ गर्जभुदद्र (खबक कथ-ভালেক **গভাৰনক নপি ভেবৰ** १८७ । निश्ननी विषक् देखन अमः 💯 😗 शिराष्ट्र शयमा । अङ्गमरा বহি ভদ্যা গৰ্ভ: সংজায়তে হালি॥ ्वितान **भ**द्रिश्मिष्ठ- बाह्- या

बना समूत्र मिलिशू किंगी। मध्नूकान च्छ मूडिएमविनी मापवाछि नहि गर्छ मक्ना॥ ।। ।। जान् यानिव हार्। ण् (न्रहामि कम हेव। (७। वर्ष) छ। ऋ পরীষেক পুলেপ পিচুধারণ ॥ বিত্ত व्रवाखदविः। क्रम किक्ट्मा ॥ नज बार्जाकिनी क्ष रेमक्षवामद्रमा-কভিঃ। ভিলভৈল পচেমারী পিচু ভদ্য বিধারযেৎ ॥ বিপ্লু তাযা। স-मा (याती वृश्या (उन भूगाम) जि । नुजः जगद्रः। वाजनाः कर्कनाः सः क्षा मन्नम्भर्मा ७ विष ह । बद्धी (स्र रिन क्षाहरद्वम्यनि मःवृष्ट ॥ **धात्ररयहा निष्ट्• रयोरनो जिन्नरेजनम**ु ना नना। शिखनानाक (यानीनाः সেকাভ্যক পিচু ক্রিবা: ॥ শীভা: পিত্তহরা: কার্য্যা: স্নেহনার্থণ ঘৃতা-নিচ। পুসু সিনী ঘৃতাভ্যকা কীর श्विमा अत्वर्णाय । शिथाय विश्वान রেণ ভভো বন্ধ সমাচরেৎ।। শুগ্রী মরিচ কৃষ্ণাভি র্ধান্যকাজান্ধি দাড়ি-रेगः। भिश्नवीम्व मःगूर्क (र्वनवा-तः मृत्जा वृत्यः ॥ **धा**जीत्रमः मिजा-যুক্ত যোনি দাছে পিবেৎ সদ।। সূৰ্য্য ক্ৰান্তা ভব• মূল• পিবেদ্ব। ভণ্ডু -वाष्ट्रना ॥ यान्। छ भूयभाविन्।। म्पाधन मुत्र निर्मि रेजः। मागाम्रेकः

अनवरेगः शिरेषः मः भूद्रगः शिष्ठः।। (माध्न पुर्वेशित निष्मावादीनि । मूर्गकाः निहिनाः वानि हूर्गः नक्क यायरेकः । भूतरयकात्ररयम्। कर्कानि क्षिञाचूना ॥ शक्षकवायाः । वहा वामा भरिताल शियम् निषाः॥ त्रा-अव्कानि । धनवरङ्का । लिञ्जन्ता भद्रिरेह मीरियः मजास्वा मध रेमक्ररेयः । वर्खि खन्तरा भुष्मिनरा वातो एमः : 🖘 विष्णाथिनी ॥ जूना भुरहणिना रिएर्घान भित्रनार्चन ह । कर्निनान বৰ্ভয়ে। দেয়া: শোধন দুব্য নিৰ্মিত্য: । শুডুচী ত্রিফলা দন্তী ক্বথিতোদক ধারবা।। যোনি পুক্লালযেন্তেন ডত্র कुः भुभागऽि।। गूर्गभूम् जथिर-্র॰ পথ্যা ,জাভীফল ভখা। বিশ্বী न्गक मः ह्र्ना वश्र म् उ किश्न खरग।। যোনি ভবতি সংকীৰ্ণা ন সুবেচ্ন জল ততঃ। কপিকছ্ ভব॰ মূল॰ স্বাথবে-ছিখিনা ভিষক্।। যোনি: সংকীৰ্ণতাং याजि कार्यमारनन शादनाट । जीतः क षिउयः क्षा भृष्वी भूत्र जि र्वा । वाजकः रेजक्षव काणि यवकारता यवानिका॥ अधा॰ हुर्न घ्उ किकिट ज्क्षे। थाखन भारकः । कृत्वा थारिः দ্মথা বহি যোনিরোগাদ্বিমূচ্যতে ॥ মজিষা নধুক অন্ত বিক্লা শক্রা

वना। स्मार भवना कारकानी मून-रिक्षेतायगन्नकः॥ अवत्यामा स्तित् कि भियम् कर्रेत्राहिनी। छेट भनः मः मून माना कारकारना हन्तन धरा ॥ अरजवाः कावि के जीर्गः घ् ज भुष्ट[•] विभाहत्यर । मजावती त्रम• क्रीतः घ्ठाज्ञ छ य । ठर्छन ।। मर्नि রেভদর: পীত্বা জ্রীষু নিভ্যা বৃষাবা ७ । भूजान् बनगर्छ तीत्रान् (मधा-छ्यान् श्रियमर्भनान् ॥ या रेहवाञ्चित्र गर्जामा १ भूषः वा इनयम् छ । व्यन्नायूव वा बनाय र वाह कन्रा नु-ज्यक्ताकानिद्यारग ब्रह्माकार **ग** রিসাবে চ শদ্যতে। পুজাবর্জন স্থা-युष्रु गर्बगुरु निवाद्रगः। नामा कल ষ্ত হে এদখিভ্যা পরিবর্ত্তি ॥ অনুক্তণ লক্ষণা মূলণ ক্ষিপন্ত্যব্ৰ চি-किट्नकाः। बीवष्ट्रिक वर्गाग श्-ভঞ্চাত্র পুযুক্তাতে।। অরণ্য গোমধে-निर विद्याला ह नीयरछ। साम (मरा मरु।(मरा उत्या बजाद भेडा-বরী দ্বিশুণা দেয়া। প্রস্যাত্র ক্ষীর-কাকোলী কাকোলী যুগলাভাবে অ-चगन्ना विख्या (एवा । श्रियकुक्रात किष्टिक् भवेष्ठि । भवम्य कात्काः লীভ্যক্ত্বা পুন: কাকোল্যাবিতি কা-(कानी कीत्रकारकारन) दिख्णार्थः

শ্ৰভন্য ক্ৰম্ভন্য পাঠে৷ নানা ভ· ব্ৰেৰু নানা বিখঃ। তত্ৰ হিন্দু বচা ভূগর बीयकर्य उका अवाधिकाः। उब बीव कर्ष छरग। ब्रजारव विषाबीकल्पर। वि গুণো দেয:। ফলঘৃত সকল যোকি द्वारमक् ।। 🛊 ।। ज्यन्य रमानिकनरमः विकिटमा। रेगद्रिकामाहि बखप्र द्र-कन। अन कर्कक। भूतरयामानि । छियाः हूर्गः क्लोम् नमिद्दे छः॥ बिक वाराः क्याया जत्कीतृत ह स्नह-यट । भूमरा यानिकत्मतन वराधिना भद्रिमुह्या । क्षा व्यथः भुनवार ७-विंग्राद्मागानाः हिकिष्मा। बीरवद्माः ভিবিষা মৃস্ত মোচ শকৈ: শৃত জল 🗝 । पर्माप्तर्छ भूवित्व भूपत्र स्रक्रि क्षाति ॥ इकिक्क उपित्रवाशा **ठलि**ङगर्ভङ्गाभानः ङ्गीर्वद्रादिङ्गार्थः ১৯৯ বৰ গৰ্ভসাবপাত্ৰো নিদান-1 <u> शु</u>ाब ४ वर्षा थुगन न याना मन भूनी छतेनः । জ্রোপবাসোৎপতন পুহারাজীর্ণ थावरेनः ॥ वसनाह विद्यकाह अञ्चा-মুর্ভপাতনাৎ। তীক্ষ থারোক্ষ কটুক তিক্ত কৃষ্ণ নিষেবণাৎ ৷৷ বেগাভিঘা-**जाविकाराजनाह्यनाच्छ्याट्या** র্ভেপততি রক্তন্য সশ্লং দর্শন ভ বেং।।গর্ভপাতনাং নিয়মে গর্ভে পা-जन भीनः मुवाः जमाध्य गर्छमा मान

भारताः भ्रंकण भाष् । भार्छ भार ভীভ্যাদি। পত্তভি সাবেণ পাতেন ৰা পভিৰঙতি। সাবপাত্যো রবধি मार। बाहजूर्शांखरा मात्रा८ भुतु-বেদ্বর্জ বিদুবঃ। ভতঃ ছির শরীরস্য পাতঃ পঞ্ন ষষ্টায়োঃ।। আচত্-थां माना हजूर्य माननगंहः। गर्जम्र विष्यः। भागिष्ठक्रभगर्यः। সুবতি শোণিত মিতিভোম্প বচনাৎ । ज्ञिन्नजीवम् क्ठिन्नजीवम् ११-र्चम्। गर्चमाजम्। दृष्टासः दर्भवि। গর্ভোভিষাত বিষমাসন পীডনা-रिर्धः। পङ्गः अनाहित कवा भउडि क्रापन । यथा वृष्ठ वर्गः भष्नः कव य-ভিষাতেনাকাল এব পত্তি ভ**ৰা** পর্ভোপ্যভিষাত্তাদিনা হকালেপি পত্রতি।। 🚓 ॥ অথ গর্ভুদাবস্য চি-किट्मा॥ श्रविगा गर्छा त्रकः मु বেঅদি মৃহ মু ছিঃ। তদিরোধায় সৃদ্ধি अमूरभगापि मृङ नित्रर ॥ उर-भवारिगन भार । उट्भवः नीनमा রক্ত॰ কল্লার॰ জমুদ॰ তথা। খেতা-ख्याबक मधुक मूर्भनामि त्रयःगः भः ॥ **मःभी** विरक्षः इत्रकाव माङ् ज्याः इतायः। तकाशिखक्ष गृहीकः ख्या इमि महाइक ॥ 🗱 ॥ यथ গর্ভপাক্তমঃ উপদুবানাছ। পুসু-

भगः । गर्क महामासः भ्राक शाः र्श्वराना भृष्ठिकक् भुषद्राना को मूब সক্ষ কাষ্তে। পুসুপিমানে পত खि॥ # ॥ **অध्** गर्डम्य **हाना**खन्न ग মনে চোপদুবানাছ। হানাৎ হানা-ভর• ভঞ্মিন্ পুষাভ্যপি চ জাযভে। जाम नदानगाती जुक्तां अ श्रं म्राम्याः ॥ भ्रांश्राम्याः भाष **ण्वारयः॥ #॥ उहिकि शामारु।** দ্ৰিঞ্জীতা: ক্ৰিয়া স্তেৰু দাহাদিৰু সমাচরেৎ। জল কাংশাক্বৃকাণা॰ भूरेन (गीक्तकम) ह II म्ङ मृषः वि **७। यूकः गर्जिग्राः म्न इर्नद्र**। चर्छ। मधुक कृषामारिनः मिखः शयः लिख्दा मक्त्रा मध्म ग्यूक धर्मिनी ८ र द ना ल हु । ज्यानः ल्याना অবং বাণপুত্র ইতি গৌডাদৌ পু-সিদ্ধ:।। মৃৎকোষ্ঠাগারিকা গেছ সং ভবাত্র সৃত্তিকা। সমস্বা থাতকী भूञ्च॰ रेगब्रिक्**ष्** द्रमाञ्जन•॥ ७९॥ मः क्कंत्रम रेक्डान् यथा नाचः दिह्र्गः (यथा उहुर्गः नध्ना निशामात्री शुन्त শান্তবে ॥ মৃৎকোপ্তাপারিকা স•ভ-বা মৃৎকোষ্ঠাগারিকা বরটী ভলিমি-**७ ग्र ज्या मृ** बिका। मनदा वद्धालुः ॥ करमक्रभन मृक्षा कन्नः वा भय-मा भित्दर। भक्ष वहा ब्रामाना छा।

हिन् भोवईनाविजः। जानीह जु शिर्वे पूर्वः **खर्तिनी जूबिनी छ**रवर ॥ সৌবছল চৌহার ইতি লোকে। ত্ণপঞ্চ মূলানাং কল্পেন বিপচেৎ, পৰ: ৷ তৎ পঞ্চো গুৰিণী পীত্ৰা মূদ্ৰ সক্ষাদ্বমূচ্যতে ।। শালীকু দশ জা-रिनः नाहाद्रग ज्नं नक्षकः। व्यवन মূল তৃষা দাহ পিতাস্থ্ৰ সঞ্-क्ट ॥ 🗱 ॥ व्यय भुम् जाया (यात्ः ক্ষতাদে শ্চিকিৎসা। তৃষীপত্ৰ তথা लाषु नमजान मूलवरार । (उन লেপে। ভগে কার্য্য: শীঘু স্যাত্যো नि बक्क छ।।। भवाष्णापुत्रक कक् **जिन्देज्य म**मन्त्रिङ । यात्मे विनि প্ত: বিধিনা গাঢ়ীকরণ মুক্তম্ণ !৷ ইতি ভাবপুকাশ: ॥ 🚓 ॥ 🗱 ॥ 🗯 🏥 व्यथ द्रानिशाधिकातपानि।

स्व क्रिजि नात्मे य त्मित्मः नाहराह रा । लाज्य नाज्य विष्णाकः मुजीर्थ विमुश्याकः या ॥ कर्मः बक्र जाम्मः तज्ञ समः कनः कर्मा क्ष्मः अ जाम्मः तज्ञ समः कनः कर्मा क्ष्मः अ व्याप्त मुग्रहाड मर्थ मुक्ठ माह्यकाः ॥ वृक्ष मक्ष्म ज्ञीधनानि लाज्यक्षित् क त्रह्य । वत्म म्याना वाणि श्रृष्टिकः भह्न वक्षकाः ॥ नाजिकाः स्रक्षाः क्ष्मः ज्ञा ज्ञीयू निर्म्याः मज्यविद्धिलाः

व्यक्तिरा भन्नमा (य ह (यहात्न) क्हेमाः क्रिनः। जनम्या गामिनः नार्त् (व हारन् श्रामयाबिनः॥ व्यावाहद्रग नः न्त्रज्ञा वर्गाहि धर्म वर्क्किङाः। দেবোপ (एव एनूब द्राष्ट्र) यकारि (नविनः ॥ अर्बरा भारकपुर्य भानमञ्जा रुद्रिः দ্বিঃ। দেবতোহিই পতিত নৃপ শা कावं (ভाविनः ॥ व्यय-कर्म त्रडा নিভ্যা সর্বপাতক পালিন: ৷ পাবও धर्माहब्रगाः भूदारमा वृक्ति कीविनः ॥ निज् माठ् समानठा समात्रजा-गिनक (य। (य कर्याक लुकाक नास्त्रिका धर्मात्वकाः ॥ जासस्य सा মিন যুদ্ধে ত্যুত্ত শিরণাগত । গবা ভূনেশ্চ হর্তারো যে চান্যে রত্নদূষ: काः ॥ गशाकात्वर् मार्बवृ পुछि-গুহরতাক্ষ যে। পরদ্রোহ রতা যে চ ज्ञथात्य भागि**हिः मकाः** ॥ भन्नाभः हारिनः भाभा (एवजा धक्निम्हकाः ष्ट्रभुजिगुाहिनः मर्ख मसुविष्ठ युनः भूनः।।.(भु ७ द्राक्त म रेभणाह्य-डेर्ग्रग् वृक्त व्यानियू। न उचा॰ ্থলেসো হস্তি ইহলোকে পরত্র চ उमा८ ठाकु। निविकार्थः विश्-े कर्म कात्रय्थ। यद्धः मानः उभ ोर्थ• मख• (५व• ७३• ७१३८ ॥ हिर्दे बर्गिक क्या निवम ह

कराठन। विशाकः कर्मागः मृक्षे। (साः নি কোটিযু দু:সহ• ॥ চতুর্ভি র পি ব পৈন্ত সেব্যে ধর্মে। নিরম্বর । ইতি भाष्माखत्रथः७ ১৮ वर्गयः॥ 🗱 ॥ वानिम्डाया व्यमायीवः यथा। जाधी, জী মাতৃত্ব্যা চ সর্রথা হিতকারি-गी। व्यमाधी रेवत्र ज्वात ह न थर न खान माविका ॥ मूथनूळा (गानिम्डा চৈবাসাধীতি বিশুন। ইতি বুন্ধ-रिवरार्ख गनभिज्यित्थ २ ज्यागायः ॥ 🗱 ॥ भाभ भूगु कंनः व्यथसाख्य यानि भाषि र्यथा। भाभ भूगा क-ল লোকে পুত্যক্ষণ থলু দৃশ্যতে ৷ (एव मानव मान्य) जियाक्ष कृति (यानिङा । नाना (यानियू अमानि नाना व्यापि श्रुभीषिजाः । मज्ञुन वान व्काना मक्क प्रतु छ। उथा ॥ वैचर्याः मृत्रिषुष् नाष्टिजाः मृर्यजा তথা। এতা শ্চরাচরে লোকে ভবস্তি কথ মন্যথা।। ইতি পান্মোত্তরথণ্ডে २) व्यव्यायः॥ 🕸 ॥ श्र किर्यानि 📶 -·প্তিকারণ যথা। ইতি শুভকথে। বি-शु नात्रमः शुरू वानतः। नग्रायः ৰ্ভি ভবাদুন ত্ব কথ পক্ষিতা গভঃ ॥ বৃক্তান্ত নে জ কথ্য শোত্নিছানি नात्रम। नात्रम उँवाह। कथ्यिया-मि उरक्या (यना ए॰ पूर्विः गठः।

भक्तियानिः गर्छ। यम छट नर्कः (भाज् मर्शन ॥ शान्य थात्री **मङ**्र जान बृद् मृद्धे हि एवा भूता। वह ভেप्न वाकात्वा का नर्य नायाः **अति** গুহে ॥ পৌরোহিত্য সদালোভা बक्षयिषा विद्याः ख्या। किक्षिम् द्वा তু তেভাক গৃহীত মধিল মযা।। विभुजाबाद्यन पुष्ठा गुरुरनाथ भन्न भी खकार। शिव**ः कालम्**रब**रः** नद्रः क ब्रक्डकर्गम् ॥ वक्ष्यक व भारतामि षुःथः वानत्र नाइकः। रेनवाद कथः মূপি প্রাপ্ত উত্তারে। নরকাষুধে: ।। मया यपि उथा शीर मञ्जा मुन হৈত। অপজ্তা পুরা কাণস্যভা कनः ভगिनी शृहार। पूरवक्त नया **म्खः (उन (म्राज्य) गिजिः** ॥ इरक दासनी भूर्व का मा होती मू माक्या। (उपनर् भावनी काठा भ-कार्या मस्यूर्यिनी ॥ इंडि डरेंबर ৯ । २० व्यव्यायः ॥ 🗱 ॥ नानिनाः নর ক ভোগানম্বর স্থাবরাদি যোনি त्रां छि यंथा। सारद्राः कृमरया २ उडा শ্চ পক্ষিণ পশ্বো নরাঃ। থার্মিঞা দ্রিদশা স্তম্বন্মাক্ষিণশ্চ যথা ক্রমণ।। नश्नु जाग भुषमा विजीयानुकमा ख्या। मर्स्व (श्रुड महाजाग याद-मुक्ति नभाषुताः। ইতি विक्श्रवात

गान्वा॰ नत्र (जागानसमः स्विताम्। ज्ञान क्रालब म्टक्डाम् नवषा विदान् शा निष् अध्यक्तम भार । शावता हेखि। व्यक्ता मद्राप्त्यः। शिक्षका महत्राक्षः व भूग्र विरम्पयग (किटिस्) किन्न মুমুক্ষবক্ষ বথাক্রমণ ভবতীতি শেষঃ । (उराक भूब वाहला मूल हा हाई द्भएकार मरुत्रु । 🗺 📆 नाः विठीत्या २नुकम छ परामा त्य बाः विजीयकात २ नुका उत्यक्त भयः **ভে সহস্তাগ পূথ্যা:** নাংস্ভাগাঃ जर्मुखगाः भूषमाः भूषम निक्षिति স্থাৰরা বেষা তে। কৃষি ভ্যঃ সহসু स्था मिकाः ज्ञावद्राः । उट् महेम् **७म जागाः क्मिय ३७**७७%। भक्ष ग्रह পাঠেপি বিভীয় স্থানে ধ্নুক্রান্তাৎ कृषि वर्गाट महमु खनाः शावरः ইত্যেবার্থঃ। তথা সর্ফে ছেভ ইত্তি । यथा इतिद्राः इतिश्वत निर्मिष्टे কৃনিভ্য: সহসু গুণ মধিকা: 📒 😇 क्षयः ज्ञानाखद्र निर्मिष्टेरज्य भएक ভঃ সহসূত্রণ মধিকাঃ (এবং পঞ্জ **रिवृशि पृष्ठेवऽः। (भाकः म**र्साणान् তে ইতি মোক সমাশুৰা মুখ্জ জ্ঞাননিষ্ঠা স্তৎপর্য্যন্ত ফেবং প্রাঞ্ ृष्वत्राखन्नम्।नरद्वन कच्या

भव मुक्तिः। এउह जःगावि बीव बाह्ना कथन भाकना पूर्वाइडा ज्हनार्थः । व्ययकः नवशा निर्फित्हा क्रमक्रमः शायिक এव। उमुक मारि-छ। भूतात । व्र् कामगाभि मानू-भा भागास भूगा भोत्रवाद । वि-॥ विवा गडरः भू मा कर्मा अक नायरेवः । इंडि उष्टीका ॥ 🗱 ॥: क्रावित्राक्षण यथा। वात्राष्ट्र उ বাচ ৷ যেন গৰ্ভ ন গছেত তথ্মে শৃণু ছি নাধবি। কথবিব্যামি তে ছেব॰ नर्ब क्यं विनिक्ष्य ॥ क्षानि विनू ল কর্ম আত্মান ন পুশ সভি क्रबंट वङ्क्यां । भूक्तिवाष्ट्रता ज्यना ॥ क्षाशि नम कर्माणि न शियाणि वमूकात । रेनव अवंडाह-कामः काथरिकत् न गृहाजि॥ जनः **গশ**্যতি চিত্তেন লাভালাভ বিব र्किउ:। भक्षाना मिनित्यागाक मम-र्था निगुरह ब्रजः ॥ कार्यप्राकार्यप्र ৰজানাতি সৰ্ব থৰ্মেষ্ নিষ্ঠিতঃ। भी-जाक वाज वर्वारि क्यूट निभामा रुण्ठ यः॥ (यः पत्रिष्मः। नित्राणमः)ः उऽवागनम्यकः। य मात्र नित्राजा त्रेड्ड भन्नमात्र विवर्ष्टिङ ॥ मन्ड াদী বিশ্বাত্মা নিত্য ভাগৰত त्रुयः। मिश्रजागी विष्णवरळा नि-

छाः वाक्रण व< मनः॥ श्रियवानी वि ुकानाक सम कर्षा भद्रायगः। करवा-निङ न गहिल मम लाकाव गहिल ।। 🛊 ।। दिर्यानियाक्ता वर्षा । व्य-न्रह एव भुवक्तराभि उहुन्य वनुस्रत । (या विरयानि॰ न गहि ज मन कर्य भ-রাষণঃ ৷৷ জীবহিংসা নিবৃত্তম সর্ব ভ্ত হিত: শুচি:। সর্বত্র সমতা-যুক্তঃ সম লোষ্টাশ্ম কাঞ্চনঃ !৷ বা-*(वा)* क्रिडा १ शि वयित क्वास्त्र मास्त्रः শুভে রতঃ। কৃষ্য নৈব বিশানাতি পরেণাপকৃত ক্রিৎ ॥ কৃত্যঞ্চ সংম্যারেৎ হোডদসভ্যঞ্চ ন জন্মতি ৷ ব্যলীকেষু নিবৃত্তো যঃ পর্য্যেতি কৃত निण्वः॥ निज्यक्ष वृजिमान् किष्टि পরোক্ষেপি নচ किल्टा अजुका-ल २७१८६७ जभउग्रर्थ स्का जिय॰।। बेम्मास नद्रा छत्नु मम कर्य পরাযণা: । তে বিবোনি ন গছন্তি मन गहिं मुन्हित्र ॥ 🗱॥ जिर्यप्राधिन भाकन यथा। वादाह देवाह। গুহানা পরম গুহা ও ছুণ্য বসুদ্ (ब्र) **डियं**)(य्रानि गडा नहानि (य् न गह्रि किन्तियः ॥ अक्षेम्याकः हजूर्मः শ্যা॰ নৈথন থে। ন গছতি। ভুকু। পরস্য চানানি य कित न विद्यर সভি।। বাল্যে ব্যস্যাপি চ যে। মুম

निडा मनुवृद्धः । यन स्वनिति मन् । स्वः । तिङ्ग मान् भूतिङ्ग । तिङ्ग स्वः । तिङ्ग स्वः । तिङ्ग स्वः । विङ्ग सिङा । विङ्ग सिङ्ग सिङ्ग

स्यानिकन्तः भू॰ स्यानिद्धागिविष्टमयः।
छम्। निरान॰ यथा। दिवायशाहः
छिक्काथाधायायायाविष्टमथूनाट।
क्राञ्चाह नथ रञ्चादि। व्याञ्चाहः क्रालेखा यथा॥ वाज्यद्धाः क्रिलेखा यथा॥ वाज्यद्धाः क्रिलेखा यथा विद्यान क्रिलेखा वाज्याव्या व्याच्या विद्यान क्रिलेखा वाज्याव्या व्याच्या व्याच व्याच्या व्

पिर्मिट। मार प्राण खुत यूछ हि-माट मिलाज्यक छट ॥ डिल-मूझ मुडीकाम कक्ष्य कका ज्य-म । नर्वतिक ममायूक मिला-छाज्यक खत्य ॥ अ ॥ अग्र हि-किटमा व्यानिम्ह मुद्देवता । इकि छावनुकामः ॥

यामिक कि सानिनः गृज्भनीन ।
यथा। मा व जिवा अत्याप्त है निमुय॰ विषय छथा। सानिकापि र्जतएक हे निमुय॰ याग नक ग॰।। है जि
छावाभनिष्ठाह १ ।। यानिकापि जि
सानिक मरयानिक (क जुर्थः। यानिक्र मिना ग्राया में अवक्ष । अनु।यूक मानुवापीना अवक मर्भाः
पिना । अर्यानिक । स्पार्था कि प्रभाष्ण ।
पिक । स्वरकाः क्मि पण्णाप्ताः
जिक्त छक छन्याप्ताः। नान कि
ना । भन्नीन मन्त्रार्थानिक । है जि
निक्रा छम् ज्वा वनी।।

रानित्रवर्शे खी शूर्वयन्तुनीनकः । इंडि रहमहन्मुः॥

(यानिश्रृता क्वी जगवजाः भूकायाः भूदर्भनीयाञ्ची द्रिक (यान) काद सूद्राविष्णवः । यथा । भक्ष भूगाः सान् कृद्राथ के क्वी क्विमिकि में स्विकः । अस्तुषाः भूद्रक रेक्ष व्यक्षिकाल्ला यत्यह्या ॥ त्यानिम् मुा॰ छड: भण्डाट मर्भयिद्या विमञ्जूरयट। वोभागी भुमृजी क्छा क्द्रा जूलान

• ॥ अत्रुष्ठाशु हरः नात्रा कः ॥ निष्ठागुष्ठा उठः । अनाभिकायाः वामनः ७८ किन्धाः भूति। नारम ॥ मिक्किनम्यानाभिकायाः कनिष्ठाः मिक्किनम् । अनाभिकायाः भृष्टि जू मध्राम विनिर्याक्षरयः।। एव उद्ध (न)ो कनिष्ठार्यु जनर्युरेनव स्यामस्य । (यानिमू मू। **जभा**र्था जा (एव)।: श्री-তিকরী মতা॥ ত্রিবার॰ দর্শবেদগ্রে म्बम् जिन् नाथकः। जाः मृ पाः बि-त्रिन न्रम्र मर्थनः विन्रामख्यः ॥ इंडि कानिकाभूत्रात ७० व्यव्यायः ॥ #॥ भाति जाविक (यानिमू मा यथा १ मञ्जूकावन्तराः । উপविশ্यागत् मजी भुष्मात्था वानुप्रस्मुथः । बह **ठक** ि छ्रायास्वि शानायाम श्रवः जतः ॥ ठजुर्ननः म्यानायात्रः साविः क्षनम् वर्षन्तः। नाष्ट्रो मणम्बः भगः भ्रां भःथा मलः ङ्मि॥ करिः न्। । वाउभरनः जुन्तर्यः दिन्न 🛚 ख्या। मरमुनन माथ्याठः वुक्तव्राकु मराभव्य ॥ व्यावादा कन्त्रवाद्यः बिकान मिल्यूनरङ्ग । बिकान गरवा (एरविण कानवीजः मूलक्षाः)

। कामवीरबार्ख्य एवं इयद्य निव ुमूखमः ॥ अस्मानित ने नवं।रिष्ट क्रिट कनाः स्था भागुजाः । शाः विद्या अधिकी वित्वी विश्व विश्व विद डिजा।। हिट्कन्या म् अनिमी (ज्-**काक्रा॰ कगच्यी॰। आधादाही**नि পদ্মানি ভিদ্বা তেন্ধ: স্বৰূপিণী ৷৷ रुरमन मन्ना पियी वुक्तवकु नर्य मुधीः। जमानिद्यम (मर्दिन क्रम भावः त्राप्तः शिर्य ॥ अन्उः काः या एवि उर्क्षार भन्नाभि । তদুভবা মৃত দেবি লাক্ষার**স স**-মোপন ৷৷ তেনামৃতেন দেবেশি **उर्भायः भवारवजाः । य**हेवक रह-বতা স্তৰ সন্তৰ্প্যাস্ত ধার্যা॥ আ-नरारखन मार्गिंग मूलाधात्र शुनः मूथीः। ७७ छ भद्रासमानि व्यक्ष-भानाः विविद्यस् ॥ विविनी विन তত্ত্বাভা বুক্ষৰাড়ী গভান্তরা। তথা म•गुथिजा (ब)या माक्षाड्डागुर यः किंशि । अन्ताम निवासन म-खर्य विख्या है। मखिगा इति छान् वर्गान् वर्णनाउति छ॰ समू॰ ऋर्ग्याघर्न-मगी॰ मालाः भई मञ्जभुकालिनी॰। **ठ**त्रभार्गः (सब्ब्ल् अः वङ्गनः रेनव काः. त्राय ॥ निवम् वर्ग नूहार्यः भन्छा-गर्जः बाराट मूथीः। वाक्षाज्य

গোদতা

वर्गानार्श्व देशान मध्यात्र । यो किकः वर्गानार्श्व दर्गान च क क के के का मण व्याप्त का मण वर्गाः । या नि मुणा वर्गान के वर्णान के वर्गान के वर्यान के वर्गान के वर्गान के वर्गान के वर्गान के वर्गान के वर्यान के वर्गा

(यानिद्रागः भू॰ ভगगमः। अम् निमानामि (र्यानि मास्त पृष्ठेत्रः॥ (यानप्रमः क्री (यानिकाञ्द्रागित्रिम यः। उৎभर्यप्रायः। कन्त्रन॰ छः॰ २। ইতি ভিकाश्रम्यः॥ (यावा क्री नाजी। ইত্যমরः॥

বোধি জী নারী। ইভ্যনর:।।
তদ্যা অবধ্যত্ব: যথা। ত পুক্ষ্য
ভরত শুষ্ঠ শত্রু হো বাক্য মৃবু
বীৎ। অবধ্যা: সর্ব ভ্তানা যো
বিত: ক্ষম্তা নিতি।। ইতি বত্নি
পুরাণ ।।

याविष्णुया खी रुतिम्।। इंडि ভारभुकानः॥

रगिविज खी नाती। यथा। खी वध्-त्रदना नाती श्रिया द्रामा किन्छिनी । रगिवः सावित्याविजा ह क्षावि-क्षावा ह क्षाविजा।। ইতি শব त्रज्ञावणी ॥

योक्तिकः भू॰ नर्ममहिदः। इंडि
भद्मत्रज्ञावणी ॥ युक्तियालाऽवि॥

योगकः वि यागमञ्ज्ञी । इंडि
निकास्त्रोगुरी ॥

(योगिक: ত্রি পুক্তিপুত্যযুযোগলভ্যার্থবাচক: । यथा। যোগাম পুভবতি। ইতি যোগ্য: যৌগিক:।
ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ॥ যোগকা
ঢাশ্চ কঢ়াশ্চ যৌগিকা শ্চেভিত্তে
ত্রিধা। আদিতে যাদি শব্দা যৌ
গিকা: অদিতে রপভ্যানাভি ঢক্
পুত্যযেন কেবল যোগার্থ এব ।
ইভ্যলস্কারকৌস্তভ্নে কিরণ: ॥
যৌজনশভিক: ত্রি যোজনশভগমন

कर्ता। ইতি निकासको मूनी।।

(योजनिक: जि अकरया जनगमनकर्ता
। ইতি निकासको मूनी।।

(योज निक: जि अकरया जनगमनकर्ता
। ইতি निकासको मूनी।।

(योज या नवला। ইতি কবিকল্প
कर्नाः।। চতুর্বশ্বরী খা অযুযৌটেৎ।

विद्धिक । इंडि मूर्मा-मामः॥

योज क नम्नाता इंजिकविकन्नकमः॥

हिन्द्रभाषती वा व्यापीजि दोजि काक्षः जका। इंजि हुर्गानानः॥

योजकः ज्ञी योज्कः। इंजि हनाः

युव तायमून्यको ॥ ब्रीडव क्री श्रिकान । इंडाबर ॥ योजुक द्वी योजुक।विवाहकीलम नाननारिजाकात्रकाननस्मिन। যুতক যোনিসময়: তত্ৰ ভৰ নিতি त्क वोजकः। युज्या वंध्वद्रया ব্লিদ নিতি বা কণি যৌতক। যৌ ভক মুকার মধ্য মপি। যৌভক[ু] যৌত্ৰঞ্ভ তথা ইতি বাচম্পতিঃ।। যৌতকাদি ভূ যদেয় সদাযো হর ণঞ্চ তদিত্যবামর টাকাযাণভরতঃ ।। 🕏 ॥ জ্রিया যৌতকখনস্যাধিকার करमा यथा। यञ्ज मूहिक् माना थि-কারার্থ গোভম বচন । জীধন দুহিতৃণা মপুঞানা মপুডিগ্ঠিতানা थः। यह नात्रभम्। भाज् पूर्वनः ভরে। ২ভাবে দূহিতুণা• তদম্য:। यह काउडायनमडाभि । मूहिज्ना ৰভাবে তু বিক্থ∙ পুত্ৰেষু ভড वट । यह याद्धवसुत्रात्रा माजू ্হিতর: শেষ মৃণাক্তাভ্য ঋতে मगः। जानि भूर्याक (एवल वहन রো**থেন যৌতক ধ**ননাত্র বিষয়া-। অতএব মনু:। মাতৃশ্চ যৌতক॰ -मार क्यादी जाग वर मः। उकः अद्रिगयन नकः ग् निश्रुन উ ধাতে। যু ত ইতি পদ। নিশু

তা চ প্রাপুণদধ্যে রেক শ্বরীরভা ভট विवाकास्वि । यहि । विवाकास्वि मार्भ यां नानि वृत्त वृत्त मिछि 🏋 **छि:। चर्छा दिवाङ् काम जन्नः (दी**ः তক । তত্ত পরিণ্যন লল জী: ধন দুহিতু রেব ন পুত্রাণা। তবৈ-ৰ ক্ৰমাৰ্থণ গোভম বচন । জ্ৰীখন দুহিত্শা মপুতানা মপুতি গিডানাঞ) পुषम मभुखानाः जनভाव भुः ত্তানাণ তদভাবে সম্ঢানাণ। দ্ৰীধনণ দুহিতৃণামিতি সামান্যত: প্রাপ্তত্বাৎ । यनु जाना भिज्यादि स कर्मार्थपार। ख्या याद्धवन्त्राः । व्यनुबः जीवन खः र् वृ कामिय ठजूवि। पृहिर्गः भुम् जा हिट्हर वर्ष निज्यामि छ ।। তক্র ব্রাক্ষ্যাদিষু বিবাহেষু যল্লব্ধ ম-ধ্যাগ্ন ধনং ক্সিয়া তৎ ভস্যাণ মৃত্যায়াণ পূথ্য দ্হিত্ণামের ভক্রাপি পূথ্ম কন্যায়া স্তদভাবে পুক্তাৰা স্তদভাবে পরিণীতায়া: সর্বদুহিত্রভাবে চপুত্র স্যাধিকার: অপুজ: দ্রীধনে ভর্ব-'ধিকারা**ৎ। বৃহস্যতিনা অপু**স্তা**প**্ रिन अनुजाराजात गम्हाया अ-भाषिकातः मृष्ठिः। वाका रेनवार्व গান্ধর্ব প্রাক্ষাপত্যেষ্ যদ্ধন । তাল জায়া মতীতায়া• ভৰু ব্লেব কৰি: वारा ॥ यवुनाः नामनः मरा

दिवारस्वात्कारियं। अञ्जेषाया मः लुबारा॰ माजा निखा उपियाउ ।। व्यम्ताः न्याप्त मिठि नदाहीनः প্ৰতান্মজ্যতে। তেন বিবাহেৰু य-জন দত্ত মিক্তি সম্বদ্ধাৎ বৈবাহিক **খনমাত্র পুতীতে র্ম বাবজন বিষয়ত্ব**• 1 उथा यमः। आमूद्राप्तिष् यमुवाः वि-বাহেৰু পুদীৰতে। বিবাহ ক্ৰিয়াযাণ भ्दांभद्रीज्ञाकाः यम्बरः भ्रीयाज ইতি ঘৌতক ধনসাত্র গোচরত্বনেব পুরীয়তে।ইতি দায়ভাগ:॥ৠ। ঊ-**ঢाया यो कक्षान भूथनः अ**नात्री जन-ভাবে বাশ্ত। অধিকারিণী। এতথা । योध्यः भू याद्या। ইতি निकार ব্ৰভাবে উচযো: পুত্ৰবতী সম্ভাবিত भूजरमा यू गशरिषकातः। এका ভाবে চাপরাধা: এতথো রভাবে বন্ধ্যা বিশ্ব-বধো স্তল্যাধিকার:৷ একাভাবে চা-পরা্ধা:। তত: পুত্র দৌছিত্র পৌত্র। পুপৌত্র সপত্নীপুত্র পৌত্র পুপৌ-ত্রাণা॰ ক্রমেণাধিকার:। গুন্থকৃন্মতে जनदी भूबानछद्र सोव्बिम्याधि কার ইতি বিশেষ:। ততে। ব্যক্ত্যানি विवार भक्षक जनय लक्ष (यो उक्धान ভত্তা ভ্ৰাভা মাভা পিতা চেতি ক্ৰম: श्वामुद्रापि विवाह वय नमय जक्त যৌত্তব্বনে নাতা পিতা ভাতা ভৰ্তা চেতি ক্রন:। ততো দেবর: কডো

দেবরপুত্র ভ্রাতৃখশুর পুত্রৌ তাো গুণিনীপুত্র: ততো ভর্ভাগিয়েয়ঃ ততো ভাঙ্পুৰ: ততো জানাতা **ভত: খশুর: তভো** ভাতৃ খশ্র: ভঙ আনম্বর্য্যক্রমেণ সপিতরভঙ্কঃ স-ব্দব্যা: ভতঃ সমানো 🧀 🖘 ইতি **उड़ोकायाः श्रीकृष्ठकारः होत**्रा योधिष्ठित जि यूधिष्ठित श्रोक । यथा । ना ह योषिहिती देनमा नारक्य শরতাডিতা। পুতিপ াগাঠশী-লানা বিদ্যেব ভনুতা গভা। ইতি महाजात्रजः॥

क्रोयूरी ॥

योन क्री यानिमञ्काचीन नि यथा । (वोशायनः । अर अरद्भादनः পত্তি পতিতেন সহচেন্ন যা जनाष्ठाभनाष्योगः अस्त्राः 🎨 भारताभनार ॥ जूनछः। य त्किः यो न जीय जीव जीवर गाउ না মন্ত্ৰেমন সহ সম্প্ৰ বিষ্ ভদ্যা প্রেড়দেব পুর্যাদ্যন্ত 🌃 थ्राविजि। ইयाद क्षतीदा अ **(एर्ट्डिइ) रण वार्टिक नि**क्र **अब गानना रोना म**े সরেণ পততীত্যবগন্ধতি। शुायिक्छिवरवकः ॥

*न्*शोवना

सीव के ग्विजिम्हः। ইত্যमतः॥ । ইতি ভটोकावाः॥

ा जातः। जर भर्यायः।

जात्रावाः। जर भर्यायः।

जात्रावाः। जर भर्यायः।

जात्रावाः। जर मात्रावाः

जात्रावाः। जर्यायः। जात्रावाः

जात्रावाः। जर्यायः। जात्रावाः

जात्रावाः। जर्यायः। जात्रावाः।

जात्रावाः। जर्यावाः। नवस्योवन

विकास स्वास्त्रावाः। नवस्योवन

विकास स्वास्त्रावाः। नवस्यायः।

विकास स्वास्त्रावाः।

विकास स्वास

भीवशः यथा। श्रायः

श्रीवशः यथा। श्रीवशः

श्रीवशः श्रीवशः श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

श्रीवशः

शा इंडिन्स् शा व्याधः। वय-शा इंडिन्स् साना॥ निवादः वा नावगुः॥ छनः। जिल्हि । जाकगुतिङ्गंशः॥ श्राकाज्ज्ञानः। इंडि श्राकाज्ज्ञानः। इंडि शा व्याधिकाः। व्याधिकाः। जा क्वावर्ज्ञान्। श्रुष्टः शा व्याधिकाः। व्याधिकाः। विकास

योवनाथकः भू नाक्षाञ्जातः। इति क्रिवितः॥

सोगाक॰ १ जि युगाम्माकि! युगा।
सोगाकि॰ १ जि युगाम्माकि! युगा।
सोगाकीन॰ किनिष॰ इडार्थ क मुडार्यन गीन गुडार्यन ह ज्ञार्थ
निम्ना । इडि मुक्षर्यायवातकाका ।
। सा युगाम् भाषा जानिथिउ। पानवमामम् भाषा जानिथिउ। पानवमामम् भाषा जानिथा ।
युगाममामा मूथार्ष गोगा युगाममाम्
भाषा भाषाणा १ ज निथार्छ ।
युगाममामा मूथार्ष गोगाः ह ।
युगाममामा मूथार्ष गोगाः ह ।
नि सम एड हमा॰ युग वस जूडाः
नि सम उपामाः मुरायस। मि समारम्

क्षमान त्रामकारिक म्बाद अवन-हत्व भारत प्रमामी बिन्हरन भारत युवाको वरुवहान शाद बक्लानाच স্থান । গৌণত্বে তুপরবিভক্তি ম-नाम्छ। युदानमामा (त्रकाषु व्यासी बिख् युवादो वहर्ष मक्लागावसान মিতি।#৷ যথা ত্বা মতিকান্তঃ অতি-ত্ব॰ অতিহাণ। অতিযুবণ অভিহাণ অতিত্বা• অতিত্বান্। অতিত্বা 🖘 -তিত্বাভ্যা• অতিত্বাভিঃ অভিত্ৰত্য অতিবাভ্যা• অতিবৃভ্যু• অতিবৃৎ অতিত্বাভ্যা• অভিত্বং । অভিতৰ অতিব্যো: অতিব্যাণ। অতিব্যি অতিব্ধো: অতিবাসু ॥ 🗱 ॥ যুবাম তিকান্ত: অতিবৃ• অতিযুবা• অতি-যু্য• ৷ অতিযু্বা• অতিযু্যা• অতিযু বান্ অতিযুবযাঅতিযুবাভগ**ংঅতি** যুবাভি:। অতিত্ভ্যু অতিযুবাভ্যা অভিযুবভ্য । অভিযুবৎ অভিযুবা ভ্যা॰ অতিযুব্**। অতিতব অতি** युवरयाः अञ्जिष्वयाः । अञिपूर्वि অভিযুবযো: অভিযুবাসু।। #॥ यू-যানতিকান্তঃ অতিমুণ অতিযুদ্মাণ অভিবৃ<u>ষণ। অভিযু**ন্মাণ অভি**যুদ্</u>মাণ অভিহুমান্। অভিহুম্যা অভিহু মাভ্যা॰ অভিবৃমাভি:। অভিতৃ ভ্য অতিব্যাভ্যা• অতিব্যাভ্য• । 📗

स्वीधाका मिंदिरार मिंदिरप्रीक्षा मेडि भूषी । अविजय असिव्यादाः भू-जियुपायाः अजियुपायि *व्यार्जि*श्ची-राः चित्रयात्र्॥ **॥ ॥ माम** किकाः हः वाज्रहः वाजिमाः वाजित्यः। वा তিমাণ অভিনাণ অভিনান্ অভিনা-যা গতিমাভ্যা• অভিনীডিঃ অভি-মহা• অভিমাভ্যা• অভিমভ্য•। আ-তিমং অভিনাল্যা অভিনুত্। অ-তিন্দ অভিন্থোঃ অভিন্থাণ। স্প তিমবি অভিনযো: অভিমাসু।।।।।। আৰামতিকান্ত: অত্যহ্ণ অত্যাবাণ অভিবয়• ৷ অভ্যাবা• **অ**ভ্যাবা• **অ**-ত্যাবান্। অত্যাববা অভ্যাবাজ্যা• অত্যাবাভি:। অভিনন্থ• অত্যাবা-ভ্যা॰ অভ্যাবভ্য•। অভ্যাবং অ-क्रावाच्याः ष्यक्यावटः। ष्यक्रियम অভ্যাবযোঃ অভ্যাবশা । শভ্যা-विष वाजावरयाः वाञ्चायाम् ॥ 🛊 ॥ **অমান**তিকান্তঃ। অত্যহ: অভূ<u>ুমা</u>ণ অভিব্যা। অভ্যস্মা। অভ্যস্মা। অ ভাষান্ অভাষ্যা অভাষাভা অভ্যমাভি:। অতিমহা অভ্যমা **ल्याः अल्यायर । अल्यायर अल्याः** মাত্যা অভ্যম্থ। অভিমন অভ্য নাগো: অভ্যেশাণ অভ্যম্যি অভ্য মধো: অত্যমানু। ইতি দুর্গাদাসঃ॥